कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

र्षिक मूल्य—७५ रुपये
ीवन—५०० रुपये
ागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशो मे ३० पौं० या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक १८
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, १ जुलाई, २००१
आषाढ शु०-११-वि० स०-२०५८
सप्ताह १ जुलाई से ७ जुलाई

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी : एक ज्योतिर्मय जीवन

□ प्रो० बलराज मधोक, पूर्व सासद

डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी की ान यात्रा ६ जुलाई १९०१ को कलकत्ता शुरू हुई और २३ जून १९५३ को ागर (कश्मीर) मे समाप्त हुई। उनके ान, उपलब्धियो, खडित देश की एकता लिए दिये गये उनके महान बलिदान पर ार करने से लगता है कि उनका जीवन अर्थो मे ज्योतिर्मय था

एक दिन भी जी,
पर ताज बन कर जी।
अटल विश्वास बन कर जी,
अमर युगगान बन कर जी।

स्वी पिता के पुत्र

उनके पिता श्री आशुतोष मुखर्जी कत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति और कत्ता उच्च न्यायालय के जज रहे थे। सरस्वती का अवतार कहा जाता था। श्यामाप्रसाद ने उच्चतम शिक्षा प्राप्त थी और ३३ वर्ष की आयु मे कलकत्ता वविद्यालय के उपकुलपति बनाये गये सक्रिय राजनीति मे उनकी रुचि नही परन्तु घटनाचक्र और राष्ट्र के प्रति व्य भावना उन्हे सक्रिय राजनीति मे र लाई।

वे १९३७ के चुनाव मे कलकत्ता वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप मे चम बगाल की विधान सभा के सदस्य गये थे। मुस्लिम लीग के कट्टरपन और ास की उसे तुष्ट करने की नीति ने उन्हे नीति मे सक्रिय भाग लेने के लिए बाध्य दिया।

ग्रेस ने मुस्लिम को बढावा दिया

१९३७ के चुनाव मे ब्रिटिश भारत ११ प्रदेशो मे से ८ मे काग्रेस को बहुमत ना था। पजाब मे यूनियनिस्ट पार्टी को मत मिला था। मुस्लिम लीग को किसी प्रदेश मे बहुमत नही मिला था। बगाल काग्रेस और फजल-उल-हक की कृषक ार्टी और सिध मे काग्रेस और खान दुर अल्ला बख्श की नेशनलिस्ट पार्टी सयुक्त रूप मे बहुमत था। उनके तालमेल उन दोनो प्रान्तो मे मुस्लिम लीग को । से बाहर रखा जा सकता था। परन्तु ्रेस ने उन दलो से तालमेल नहीं किया। वहा मुस्लिम लीग सरकारे बनी।

बगाल मे मुस्लिम लीग ने सत्ता मे आते ही शिक्षा नीति और कलकत्ता विश्वविद्यालय का इस्लामीकरण करना शुरू कर दिया। तब राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय हितो की रक्षा के लिये डा० मुखर्जी ने सक्रिय राजनीति मे उतरने का फैसला किया। काग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण उन्होने काग्रेस मे शामिल होने का निमत्रण ठुकरा दिया और हिन्दू महासभा, जो वीर सावरकर के नेतृत्व मे सक्रिय हो रही थी, मे शामिल होने का फैसला किया। उसके बाद उन्होने बगाल विधान सभा के गैर काग्रेसी सदस्यो को राष्ट्रवादी मच पर इकट्ठा करके और कृषक प्रजा पार्टी के नेता श्री फजल-उल-हक के साथ तालमेल करके मुस्लिम लीग को सत्ता से उखाड फेका और बगाल मे राष्ट्रवादी सरकार बनाई, जिसमे मुख्यमत्री फजल-उल-हक और वित्त मत्री डा० मुखर्जी बने।

डाक्टर मुखर्जी ने शीघ्र ही एक कुशल प्रशासक, योग्य वित्त मत्री और प्रभावी वक्ता के रूप मे अपनी धाक जमा ली। परन्तु दूसरा महायुद्ध शुरू हो जाने और जापान की सेनाओ के बर्मा मार्ग से भारत मे आने की सभावना को ध्यान मे रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने बगाल मे घर फूक और दमन की नीति अपनाई। उसके विरोध मे डा० मुखर्जी ने वित्त मत्री पद से त्यागपत्र दे दिया और सरकार से बाहर आ गये।

१९४१ और १९४५ के बीच जब काग्रेस के सभी नेता जेलो मे बद थे और ब्रिटिश सरकार मुस्लिम लीग और इसकी राष्ट्रविरोधी मागो का खुला समर्थन कर रही थी, डाक्टर मुखर्जी राष्ट्रवादी हिन्दुस्तान के एकमात्र प्रवक्ता थे। उन्होने जिस दृढता और योग्यता से उस काल मे पूर्ण स्वतत्रता की माग की वकालत की और राष्ट्रीय हितो की रक्षा की उससे उनकी प्रमुख राष्ट्रवादी नेता के रूप मे देश भर मे धाक जम गई।

काग्रेस का छल

१९४५ मे गाधी जी के नेतृत्व मे काग्रेस की कार्यसमिति ने अपने पूना मे पारित प्रस्ताव के द्वारा मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की माग को अपनी स्वीकृति दे दी। इस प्रस्ताव के पहले भाग का, जिसमे अखड भारत की वकालत की गई थी, तो खूब प्रचार किया गया, परन्तु उसके दूसरे भाग को, जिसमे कहा गया था कि यदि भारत के किसी प्रदेश ने बहुमत से यह फैसला किया कि वह भारत सघ मे नही रहेगा तो काग्रेस उसे भारत मे रहने के लिए बल प्रयोग नही करेगी, प्रकाशित नही किया गया। इस प्रकार काग्रेस ने देश की राष्ट्रवादी जनता के साथ स्पष्ट धोखा किया।

देश विभाजन मत होने दो

वीर सावरकर की तरह डाक्टर मुखर्जी का स्पष्ट मत था कि देश विभाजन को रोकने के लिए गृह युद्ध समेत किसी भी हद तक जाना चाहिए क्योकि विभाजन से मुस्लिम समस्या हल होने के बजाय और अधिक गम्भीर और खतरनाक रूप धारण कर लेगी और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच युद्ध अनिवार्य हो जाएगा।

१९४६ के चुनावो के बाद बनी प्रादेशिक विधान सभाओ द्वारा प्रस्तावित सविधान सभा के लिए सदस्य चुने गये। डाक्टर मुखर्जी बगाल विधानसभा द्वारा सविधान सभा के, जिसे अतरिम ससद् का भी काम करना था सदस्य चुने गये।

१९४६ के चुनावो के परिणाम आने के बाद भारत का विभाजन लगभग निश्चित हो गया। इसके अनुसार ९३ प्रतिशत मुस्लिम मतदाताओ ने मुस्लिम लीग के पक्ष मे मत डाले थे। जिन ७ प्रतिशत मुस्लिम मतदाताओ ने इसके विरोध मे मत डाले थे, वे मुख्यत सीमा प्रान्त के पठान, कुछ सिधी और कम्युनिस्ट पार्टी से जुडे कुछ पजाबी मुसलमान थे। खडित भारत मे रह गये मुसलमानो के ९९ प्रतिशत मत मुस्लिम लीग और पाकिस्तान के पक्ष मे पडे थे। ये आकडे आखे खोलने वाले थे। परन्तु काग्रेसी नेताओ की आखे नही खुली। मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति जारी रही। सरदार वल्लभ भाई पटेल काग्रेस के एकमात्र नेता थे, जिन्होने विभाजन के तर्कसगत फलितार्थ और सबक को समझा। काका साहिब गाडगिल द्वारा यह पूछे जाने पर कि क्या वह खडित भारत के किसी मुसलमान को राष्ट्रवादी नही मानते सरदार पटेल ने कहा था कि मै खडित भारत मे केवल एक राष्ट्रवादी मुसलमान को जानता हू और उसका नाम जवाहरलाल नेहरू है। श्री गाडगिल ने अपनी जीवन कथा मे इसका उल्लेख किया है।

नेहरू जी ने मत्री बनाया

आजादी के बाद गाधी जी चाहते थे कि खडित भारत के पहले मत्रिमडल का स्वरूप राष्ट्रीय हो और देश की आजादी के लिये काम करने वाले काग्रेस के बाहर के कुछ नेता भी उसमे शामिल किये जाए। उनके दबाव के कारण ही श्री जान मथाई, डा० भीमराव अम्बेडकर और डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी केन्द्रीय मत्रिमडल मे शामिल किये गये। डाक्टर मुखर्जी को उद्योग मत्री बनाया गया।

मत्री पद छोडा

८ अप्रैल १९५० को डाक्टर मुखर्जी ने वैचारिक और नीतिगत मतभेदो के कारण श्री नेहरू के मत्रिमडल से त्यागपत्र दे दिया। उन्होने लोकसभा मे एक वक्तव्य १८ अप्रैल को दिया। इसमे उन्होने श्री नेहरू की राष्ट्रविरोधी और हिन्दू विरोधी नीतिया का पर्दाफाश किया और देश को चेतावनी दी कि यदि नेहरू पर अकुश नही लगाया गया तो देश मे १९४७ के पूर्व की स्थिति से भी बदतर स्थिति पैदा हो जायेगी। उनके इस वक्तव्य से सारा देश सकते मे आ गया। तब तक सघ से प्रतिबध हट चुका था। दिल्ली के राष्ट्रवादियो ने डा० मुखर्जी का सार्वजनिक अभिनन्दन करने का फैसला

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित लेखो मे व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

विपत्तियों को प्रणाम और मृत्यु को भी

**नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजो,
अयस्मयान् विचृता बन्धपाशान्।**

**यमो मह्य पुनरित् त्वा ददाति तस्मै
यमाय नमो अस्तु मृत्यवे॥**

अथर्व० ६ ६३ २

❑ आचार्य अभयदेव विद्यालकार

अर्थ– (**निर्ऋते**) हे कृच्छ्रापत्ते, हे भारी विपद्, (**ते नम अस्तु**) मै तुझे नमस्कार करता हू (**तिग्मतेज**) हे तीक्ष्ण तेजवाली, तू मेरी (**अयस्मयान् बधपाशान्**) बडी सुदृढ बाधने वाली बेडियो को (**विचृत**) काट डाल। (**यम**) नियमन करने वाला परमेश्वर (**पुन इत्**) फिर भी (**मह्य**) मेरे लिये (**त्वा**) तुझे (**ददाति**) दे रहा है (**तस्मै**) उस (**मृत्यवे**) मृत्यु रूप, सहारक (**यमाय**) नियमन करने वाले परमेश्वर को भी (**नमो अस्तु**) मेरा नमस्कार है।

मनन—हे मुझ पर आई हुई भारी विपत्ति! मै तुझे नमस्कार करता हू। मै जानता हू कि इस ससार मे हम पर जो कष्ट, क्लेश, दु ख-दर्द आते है वे हमारे भले के लिये, हमे हल्का करने के लिये ही आते है। अत मै तेरा स्वागत करता हू। हे भारी से भारी विपत्ति! तुम आओ, और मेरे भारी से भारी बन्धनो को, पाशो को, काट जाओ। तुम तो बन्धन काटने के लिए ही आया करती हो। हमने पाप करके अपने आपको बाध लिया होता है। तुम दु ख भुगा कर हमे उस उस पाप के बधन से छुडा जाती हो। हे विपत्तियो! तुम तो बडी कल्याणकारी मगलकारी वस्तु हो। हम जो पहले बडे बडे पाप कर चुके है, उनके कारण हमारी उन्नति रुक जाती है, उनके बोझ से हम दब गये होते है। जब तक कि वह बोझ न उतर जाय, वह ऋण न अदा हो जाय, तब तक हम आगे बढने से वचित हो जाते है। विपत्तिया तो हमे आगे बढने से रोकने वाली हमारी इन बेडियो को काट जाती है। इसलिये हे भारी विपत्ति! तू मुझ पर अपने पूरे तीक्ष्ण तेज के साथ आ। तू मेरे किसी बडे भारी पाप समूह का फल दीखती है। इसीलिये तू इतने तीक्ष्ण क्लेश सताप वाली है। परन्तु तू आकर मेरे उतने ही बडे सुदृढ, उतने ही बडे कठोर और उतने ही भारी बाधा डालने वाले पाश को काट जा। तेरा जितना ही तीक्ष्ण सताप है, उतनी भारी मेरी बेडी कटेगी, यह मुझे विश्वास है। अतएव मै, हे घोर विपत्ति! तुझसे घबराता नही हू। मै तेरा प्रसन्नता से स्वागत करता हू। पहिले भी मुझे कई बार घोर कष्ट आ चुके है। पर उस सर्वनियन्ता प्रभु ने आज फिर मेरे लिये तुझे भेजा है। पिछली विपदो से भी मै कुछ हल्का हुआ था, पर आज उस यम प्रभु ने फिर से मेरे लिये ऐसी भारी विपत्ति को दिया है कि इसकी असह्य तीक्ष्णताओ से तो मेरे वे सब लोहमय दुर्भेद्य पाश, जो और किसी तरह कट नही सकते थे, वे भी कट जायेगे। अत मै उस मृत्यु रूप प्रभु को भी आज नमस्कार करता हू। उसका रुद्ररूप भी शिव होता है, सहारक रूप भी कल्याणकारी होता है, यह मै जानता हू। उसके सुख-शान्तिदाता सौम्य रूप को तो मै सदा नमस्कार करता ही रहा हू, पर आज तुझ घोर विपत्ति के भेजने वाले उसके मृत्युरूप को भी नमस्कार करता हू। हे उसकी भेजी हुई विपत्ति! तू आ, तेरा स्वागत है। ❑

निर्ऋति का अर्थ है घोर दरिद्रता, दु ख, कष्ट, विपत्ति। यह राय , सम्पत्ति, लक्ष्मी का विलोम है।

जैसे लोग मृत्यु से डरते है, वैसे ही विपत्ति से, दरिद्रता से भी डरते है।

ऊचाई से गहरे कुड मे कूदने वाला व्यक्ति कुछ डरता है, कुछ हिचकता है। परन्तु जब हिम्मत करके कूद पडता है, तब उसे लगता है कि वह व्यर्थ ही डर रहा था। डरने की कोई बात नही थी। उल्टे कूदने मे कुछ आनन्द ही आया।

यही हाल विपत्ति का, दरिद्रता का है। सम्पत्ति और ऐश्वर्य मे पले लोग विपत्ति से बहुत घबडाते है, चाहते है कि वह दूर ही रहे। पर जब निर्ऋति आ जाती है, तब पता चलता है कि यह भी बहुत कुछ भला ही कर गई।

सम्पत्ति मे, विलास मे रहते रहते मनुष्य बहुत से बन्धनो मे पड जाता है। वह वाहन मे चलने का आदी हो जाता है, मोटा सस्ता कपडा नही पहन सकता , मोटा सस्ता भोजन नही कर सकता। अपनी पद-प्रतिष्ठा से नीचे का कोई काम, शारीरिक परिश्रम नही कर सकता। जब विपत्ति आ पडती है, तब ये सब बन्धन टूट जाते है।

सन् १९४७ मे देशविभाजन के समय लोगो पर विपत्ति पडी थी। करोडपति एक दिन मे कगाल हो गये थे। जो उस विपत्ति मे समाप्त हो गये, वे तो सुख-दु ख से परे हो गये। परन्तु जो बच गये, वह विपत्ति उनकी मीठी याद बनी हुई है। उनमे से कितनो मे ही सुप्त ऊर्जा जाग उठी। उद्यम करके वे अपनी स्थिति उससे भी अच्छी बनाने मे सफल हुए, जैसी कि उनकी पजाब, सिध और सीमा प्रान्त मे विभाजन से पूर्व थी। ऐसे लोगो की सख्या सैकडो मे नही, हजारो मे है।

ऐसे लोगो से यदि पूछा जाये कि क्या वे वैसी ही विपत्ति मे पडना चाहेगे, तो वे यही कहेगे 'बिल्कुल नही। एक ही बार बहुत हुआ।'

पर यदि विपत्ति फिर आ पडे, तो वे फिर पहले की भाति बन्धन-मुक्त हो जायेगे और फिर वैसी ही सफलता प्राप्त करेगे और फिर उसकी यादे वैसी ही मधुर होगी।

इसीलिए निर्ऋति को प्रणाम किया गया है।

'अकर्त्ता' नाम परमेश्वर का नहीं

❑ सुश्री सूर्या देवी

विद्यालय मे पत्र द्वारा अभी एक प्रश्न उपस्थित किया श्री हरिजन सोमनाथ जी त्यागी ने कि वैदिक वाड्मय मे ईश्वर को अकर्त्ता नाम कहा दिया है? क्योकि स्टीफन डब्ल्यू हाकिग आदि ने अपनी पुस्तक मे ऐसा ही प्रतिपादित किया है। उन्हे उत्तर दे दिया। अब सब जाने अत यह उत्तर प्रकाशित करने का प्रयास कर रही हू। सृष्टि मे तीन अनादि सत्ताए है– ईश्वर, जीव और प्रकृति। यह सर्वविदित है। ईश्वर को वेद तथा वैदिक ग्रथो मे सर्वत्र कर्त्ता प्रतिपादित किया गया है।

इय विसृष्टिर्यत आ बभूव।

ऋ० १० १२९ ७

यतो भूमि जनयद् विश्वकर्मा।

ऋ० १० ८१ २

द्यावा भूमी जनयद् एकदेव।

ऋ० १० ८१ ३

विश्वकर्मा विमना आद्विहाया धाता विधाता परमोत सदृक्। *ऋ० १० ८२ २*

प्रणेतार वस्यो अच्छा कर्त्तार ज्योति समत्सु। *ऋ० ८ १६ १०। अथर्व० २० ४६ १*

त्वष्टेद विश्व भुवन जजान बहो कर्त्तारमिह यक्षि होत । *यजु० २९ ९*

आदि मन्त्र वेद मे भरे पडे है, जो परमात्मा को सर्वकर्त्ता सिद्ध करते है।

इसी प्रकार दर्शनशास्त्र भी परमात्मा को सर्वकर्ता सिद्ध करते है, बतलाते है

स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता। सा० ३ ५६

वह परमात्मा सर्वज्ञ तथा सर्वकर्त्ता है, ससार की रचना करने वाला है।

रचनानुपपत्तेश्चानुमानम्। वेदा० २ २ १

अर्थात् उस परमात्मा के बिना प्रकृति मे रचना की उत्पत्ति न होने से प्रकृति जगत् का निमित्त कारण है, सृष्टि रच सकती है, इसका अनुमान नही किया जा सकता।

इस सूत्र के माध्यम से बादरायण ने स्पष्ट किया कि परमात्मा ही सृष्टि का कर्त्ता है।

ईश्वर का सर्वकर्त्तृत्व अपनी आधिकारिक सीमा की अपेक्षा से है। महर्षि बादरायण ने 'सर्वधर्मोपपत्तेश्च' वेदा० २ १ ३७ सूत्र के द्वारा स्पष्ट किया है कि वेदो मे जिस प्रकार का सृष्टिकर्ता वर्णित किया गया है, उस प्रकार के सभी धर्म, ईश्वर मे होने से वह सर्वकर्त्ता है। वह सर्वकर्तृत्व आधिकारिक होगा, जैसे अपने जैसा ईश्वर उत्पन्न कर लेना, अपने को मार डालना, जीवन को उत्पन्न करना, जीव के कार्यो को उत्पन्न करना आदि वेद-विरुद्ध बाते होने के कारण से न उसके साथ जोड सकते है, न उसे अकर्त्ता कहा जा सकता है अर्थात् जैसे– ओ३म् अग्नि, विराट् आदि उसके नाम है, तद्वत् अकर्त्ता उसका नाम नही हो सकता।

अब रही बात जीव की, सो जीवात्मा भी अनादि है और उसके कर्म भी अनादि है यथा–

न कर्माविभागादिति चेत् न अनादित्वात्। वेदा० २ १ ३५

इस सूत्र मे स्पष्ट किया है कि कर्म अनादि है जीव के, अत उन कर्मो का विधाता परमात्मा नही हुआ। इसी बात को गीता मे कहा–

न कर्त्तृत्व न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभु । गी० ५ १४

अर्थात् परमात्मा जीव के पुरुषार्थ को=कार्य करने को, तथा उसके कर्मो को नही बनाता। हा–

चातुर्वर्ण्य मया सृष्ट गुणकर्मविभागश ।
तस्य कर्त्तारमपि मा विद्ध्यकर्त्तारमव्ययम्।

गी० ४ १३

इस श्लोक मे जो अकर्त्तारम्' पद आया है, वह जीवात्मा की दृष्टि मे है, परमात्मा की दृष्टि से नही।

यहा पर श्री कृष्ण महाराज ने कहा है– मैने ब्राह्मण इत्यादि चारो वर्णो का गुण, कर्म के अनुसार विभाग बनाया है। उसका कर्त्ता मै ही हू, ऐसा जानो। 'अकर्त्तारमव्ययम्' पर मै वस्तुत अकर्त्ता ही हू, विकार रहित हू, क्योकि कर्म अनादि है, तो यह वर्ण व्यवस्था भी अनादिकाल से चली आ रही है। मेरे से पहले भी रही है वर्ण व्यवस्था, अत मै इसका कर्त्ता नही हू, न मै इसमे कोई व्यय=बदलाव कर सकता हू। (जैसे मै अर्थात् ईश्वर 'अनादि', वैसे ही वर्ण व्यवस्था भी अनादि, अत ईश्वर भी इसका वस्तुत कर्ता नही। — स०)

इस प्रकार कही पर भी वैदिक वाड्मय मे परमात्मा को अकर्त्ता नही कहा गया है। मेरी दृष्टि मे कोई भी मत्र, श्लोक, सूत्र नही है, जहा परमात्मा को अकर्त्ता कहा गया हो।

**आचार्या, पाणिनि कन्या महाविद्यालय,
वाराणसी-१०**

क्षत्रिय और ब्राह्मण

विवाद बहुत पुराना है कि क्षत्रिय श्रेष्ठ है कि ब्राह्मण? वशिष्ठ, परशुराम, अगस्त्य, भृगु, भरद्वाज, कपिल, गोतम आदि अनेक प्रसिद्ध ब्राह्मण ऋषि हुए, तो मनु, भगीरथ, जनक, राम, कृष्ण जैसे क्षत्रिय ऋषि भी हुए। बहुत बार ब्राह्मणो ने अपना उत्कर्ष प्रमाणित किया, तो बहुत बार क्षत्रियो ने अपना दबदबा जमा लिया।

वर्ण और प्रजाति

ब्राह्मण या क्षत्रिय वर्ण होता है, प्रजाति नही। इसे यो समझे कि मनुष्य, वानर, श्वान, बिडाल आदि प्रजातिया है। वानर की सतान वानर होगी, बिडाल की बिडाल। ब्राह्मण क्षत्रिय आदि वर्ण है, जो जन्म से नही, गुण, कर्म और स्वभाव से होते है। ब्राह्मण की सन्तान शूद्र हो सकती है।

व्यक्ति मे बुद्धि अधिक हो, (सुशिक्षित हो, सूझबूझ वाला, चिन्तनशील, नई खोज करने वाला, समस्याओ का सही समाधान ढूढने वाला हो), जिसकी रुचि अध्ययन-अध्यापन मे हो, जो धनोपार्जन की चिन्ता न करके परहितकारी कार्यो (यज्ञो) मे लगा रहता हो, उसे ब्राह्मण कहा जाता है। आग जला कर, मत्र-पाठ करके आहुतिया देना मात्र यज्ञ नही है, यदि जीवन मे श्रेष्ठ कार्य नही किये जाते है। श्रेष्ठ कर्म करना ही यज्ञ है।

क्षत्रिय वह व्यक्ति होता है, जो लडने–भिडने मे तनिक न घबडाता हो, दुष्टो का दमन करने और निर्बल, पीडित की रक्षा करने को जो सदा उद्यत रहता हो, ?,ले ही उसके कारण उसे अपने शरीर पर घाव ही क्यो न झेलने पडे, शासन और न्याय करने मे जिसकी रुचि हो, और जो सदाचारी हो। न्याय और सदाचार से शून्य लडाकू व्यक्ति गुडा, डाकू होता है। उसे क्षत्रिय नही कहा जाता।

गलत धारणा

यह मान लिया गया कि बुद्धि और बाहुबल साथ नही रह सकते। कोई व्यक्ति या तो बुद्धिबली (ब्राह्मण) होगा, या फिर बाहुबली (क्षत्रिय), जबकि यह वक्तव्य पूरी तरह सत्य नही है। ऐसा हो सकता है और अनेक बार होता है कि कोई व्यक्ति बाहुबल और बुद्धिबल, दोनो से ही सम्पन्न होता है। वह क्षत्रिय होते हुए भी ब्राह्मणो से ऊपर उठ जाता है, ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रियो को नीचा दिखा देता है। समाज मे प्रभुत्व के लिए ब्राह्मणो और क्षत्रियो मे स्पर्धा रहने लगी। ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनो ही समुदायो के रूप मे अलग अलग एकजुट हो गये।

सामान्य नियम यह है कि क्षत्रिय माता पिता की सन्तान क्षत्रिय गुणो वाली होगी। परन्तु मनुष्य स्वभाव चचल है। पुरुष और स्त्री, दोनो ही कभी कभी परिस्थितिवश भिन्न वर्ण वाली स्त्री या पुरुष से सहवास करते रहे है। उस दशा मे सन्तान भिन्न गुणो वाली हो सकती है। अन्य दशाओ मे भी यह सम्भव है कि क्षत्रिय मा-बाप की सन्तान क्षत्रियोचित गुणो से सम्पन्न न हो।

यही बात ब्राह्मणो पर भी लागू है। कोई ब्राह्मण भी इन्द्रिय-लोलुपतावश अपने वर्ण से भ्रष्ट हो जा सकता है और उसकी सन्तान ब्राह्मणोचित गुणो से शून्य हो सकती है।

वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई

किसी समय यह व्यवस्था रही होगी कि राजशासन या बिरादरी अनुचित आचरण करने पर व्यक्ति को वर्ण से बहिष्कृत कर देती होगी और उसे भिन्न वर्ण मे स्थान दिया जाता होगा, परन्तु अब कई सौ वर्ष से भारत मे यह व्यवस्था नही है। ब्राह्मण के घर मे जन्म लेने वाले बच्चे ब्राह्मण और क्षत्रिय के घर मे पैदा होने वाले बच्चे क्षत्रिय माने जाते है, भले ही उनमे उन वर्णो के गुण हो, या न हो।

ब्राह्मण ऊचे बन गये

अध्ययन-अध्यापन और ग्रथ-लेखन ब्राह्मणो का कार्य था। इसका लाभ उन्होने यह उठाया कि उन्होने जो स्मृतिया, पुराण तथा अन्य धर्मग्रथ लिखे, उनमे ब्राह्मण को समाज मे सर्वोच्च स्थान दिया गया। ब्राह्मण को देवताओ के तुल्य पूजनीय कहा गया। यज्ञो मे पुरोहित बनने का अधिकार केवल ब्राह्मणो को है, ब्राह्मणो को दान दिया जाना चाहिए, ब्राह्मणो को श्राद्ध-भोजन कराया जाना चाहिए, बडे से बडा अपराध करने पर भी ब्राह्मण को प्राणदंड नही दिया जाना चाहिए। राजा ब्राह्मण की गाय न छीने, राजा ब्राह्मण की पत्नी को न छीने, छीनेगा तो भयकर आपदाए आयेगी। इस प्रकार शास्त्रकारो ने ब्राह्मणो के लिए ढेरो सुविधाए जुटा दी।

विश्वामित्र का वर्ण बदला

राजा गाधि के पुत्र विश्वमित्र ने कहा 'मै ब्राह्मण बनूगा। मै बुद्धि मे किसी ब्राह्मण से कम नही हू।'

गाधि ने कहा 'ठीक है कि तुम ब्राह्मणो जितने ही मेधावी हो, परन्तु ये ब्राह्मण तुम्हे अपने समुदाय मे सम्मिलित नही होने देगे। यह राजनीति है, जीवन की सुविधाओ का प्रश्न है।'

विश्वमित्र ने कहा 'हो राजनीति। बल धर्मोऽनुवर्तते। धर्म तो बल के पीछे पीछे चलता है। हम राजा तो है ही, हम ब्राह्मणो से विवाह सम्बन्ध करेगे।'

'उससे कुछ नही होगा। हम अपनी कन्या उन्हे दे भी दे, वे नही देगे।'

विश्वमित्र के आग्रह पर गाधि ने अपनी पुत्री रेणुका का विवाह जमदग्नि के साथ कर दिया। उससे परशुराम पुत्र उत्पन्न हुआ। जमदग्नि बडे शस्त्रवेत्ता थे। उन्होने परशुराम और विश्वमित्र दोनो को ही युद्धविद्या मे निष्णात बना दिया।

विश्वमित्र विश्वामित्र बनाये गये

विश्वमित्र ने शस्त्रविद्या के साथ साथ वेदाभ्यास भी शुरू कर दिया। वेदो की ऋचाओ का साक्षात्कार (इलहाम) उन्हे होने लगा। इससे ब्राह्मण समुदाय मे तहलका मच गया। राजपुत्र विश्वमित्र ऋषि बनने का प्रयत्न कर रहा है। ब्राह्मण समुदाय के नेता वशिष्ठ थे। उन्होने छूटते ही कहा 'यह विश्वमित्र (सबका मित्र) नही, विश्वामित्र (सबका शत्रु) है।' ब्राह्मणो ने यह वाक्य पकड लिया और विश्वमित्र उसी दिन से 'विश्वामित्र' कहलाने लगे।

विश्वामित्र इससे विचलित नही हुए। उन्होने वशिष्ठ को ब्रह्म-विद्या मे भी नीचा दिखाने की ठान ली। ब्राह्मण-क्षत्रिय विरोध इतना उग्र हुआ कि परशुराम ने अपने पिता के आदेश से अपनी माता रेणुका की हत्या कर दी। पुत्र द्वारा माता की हत्या किये जाने के विरले उदाहरणो मे से यह एक है। परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियो का समूल नाश किया, पर वे फिर पनपते रहे। अन्त मे विश्वामित्र द्वारा शिक्षित किये गये राम ने परशुराम का समस्त तेज हर लिया। ब्राह्मणो ने शिव को अपना आराध्य देव माना था, जो परम ब्रह्म की प्रलयकारी शक्ति के प्रतीक माने जाते है। क्षत्रियो ने विष्णु की उपासना की, जो ब्रह्म की पालन पोषणकारी शक्ति के प्रतीक है।

विश्वामित्र पर लाछन

विश्वामित्र को कलकित लाछित करने मे ब्राह्मणो ने कोई कसर उठा न रखी। कहानिया रची गई कि कैसे कल्मापपाद को विश्वामित्र वशिष्ठ के आश्रम मे लाते थे, और वह रोज उनके एक पुत्र को खा जाता था। इस प्रकार वह उनके सौ पुत्रो को खा गया।

एक कहानी यह भी है कि वशिष्ठ के पास सुरभि नाम की एक गाय थी, जो मागने पर हर कोई चीज प्रस्तुत कर देती थी। उसी के बल पर वशिष्ठ ने अतिथि के रूप मे आये विश्वामित्र का सेना सहित बढिया सत्कार किया था। विश्वामित्र ने वशिष्ठ से सुरभि को मागा। वशिष्ठ के इनकार करने पर उन्होने बलपूर्वक उस अद्भुत गाय को छीन लेना चाहा। तब गाय ने अपने शरीर मे से ही अनेक योद्धा जातियो की सेना उत्पन्न कर दी, जिसने विश्वामित्र की सेना को हरा दिया। कहना कठिन है कि इन कहानियो मे कितना सार है।

तपस्वी और उद्यमी

विश्वामित्र कितने मनस्वी, तपस्वी, उद्यमी, दबग, महत्त्वाकाक्षी और अनथक पुरुष थे, यह राजा त्रिशकु की कहानी से स्पष्ट है। एक बार राजा त्रिशकु के मन मे इच्छा हुई कि जीते जी स्वर्ग मे जाया जाये—मर कर तो सभी जाते है।

स्वर्ग जाने का उपाय था—यज्ञ करो। यज्ञ पुरोहित करवाते थे। पुरोहितो ने कहा 'स्वर्ग तो मर कर ही जाया जा सकता है। जीते जी स्वर्ग भेजने की विद्या हमारे पास नही।

अन्त मे खोजबीन करने पर ऋषि विश्वामित्र ऐसा यज्ञ करवाने को तयार हो गये, जिससे राजा त्रिशकु जीते जी स्वर्ग पहुच जायेगे।

कहानी है कि यज्ञ शुरू हुआ। मत्रो के साथ आहुतिया पडनी शुरू हुई कि राजा त्रिशकु आसन समेत ऊपर अन्तरिक्ष मे उठने लगे। जब काफी ऊपर पहुच गये, तब स्वर्ग के राजा इन्द्र ने उन्हे ऊपर आते देखा और आदेश दिया 'ऊपर मत आ। जहा है, वही रुक जा।'

त्रिशकु वही रुक गये। विश्वामित्र ने फिर आहुतिया दी। त्रिशकु फिर ऊपर उठे। पर इन्द्र ने फिर उन्हे रोक दिया। देवताओ मे हडकम्प मच गया। मत्रो के प्रभाव को रोक पाना किसी के बस का नही था।

सब देवता मिल कर विश्वामित्र के पास आये और बोले 'आप यह सृष्टि-नियम के विरुद्ध यज्ञ बन्द कीजिये।'

विश्वामित्र अटल रहे 'यज्ञ जारी रहेगा। त्रिशकु सशरीर स्वर्ग मे जायेगे।'

देवताओ ने कहा 'इस सृष्टि मे नही जा सकते।'

सारी सृष्टि नई

'तो मै सारी सृष्टि नई बनाऊगा। मै नये सूरज, चन्द्रमा और तारे बनाऊगा। मै नई अग्नि और वायु बनाऊगा। मै नये मानव और नये देवता बनाऊगा। पर त्रिशकु सशरीर स्वर्ग जायेगे। मै नया स्वर्ग बनाऊगा।'

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्य समाज के लेखकों के लिए दिशा बोध

❑ डा० मदनमोहन जावलिया

(गताक से आगे)

पौराणिक सेठो के पत्र धर्म-विरोधी

जनवादी वामपथी एक कहानीकार श्री कमलेश्वर आजकल एक पौराणिक सेठ रमेशचन्द्र अग्रवाल के दैनिक समाचार-पत्र के जयपुर सस्करण के प्रधान सम्पादक है। वह आर्य वैदिक हिन्दू धर्म के विरोधी है। ८-१० दिन मे वह प्रधान सपादकीय लेख लिखते है। एक लेख मे वह फरमाते है कश्मीर का जितना भाग जिसके कब्जे मे है, उतना उसी के पास रहने देना ही कश्मीर समस्या का स्थायी हल है। उनके एक लेख का शीर्षक है 'वेद-विरोध का मधुर-मधुर स्वर था कबीर। एक अन्य लेख 'बैल को घोडे मे बदलने की सास्कृतिक साजिश' मे वह महर्षि दयानन्द एव आर्य समाज का तो नाम नही लेते, किन्तु राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ को मुख्य अपराधी मानकर लिखते है 'इसलिए यह कहना कि आर्यो ने हडप्पा पर आक्रमण करके उसे नष्ट किया था, गलत है, परन्तु यह तो मानना ही पडेगा कि हडप्पा सस्कृति और आर्य सस्कृति अलग-अलग थीं। लेकिन अपने अतिरिक्त हिन्दूवादी उत्साह मे सघ परिवार ने आर्यो को भारत का मूल निवासी घोषित करने के क्रम मे आदिकालीन हडप्पा सस्कृति मे प्राप्त अधोभाग मे टूटे हुए वृषभ को घोडे की आकृति मे सपूर्ण करते हुए जो साक्ष्य और सबूत पेश करने की कोशिश की है, वह शर्मनाक, जघन्य और सस्कृति-विरोधी है। यह एक सास्कृतिक साजिश है।'

यज्ञ वेदी या रसोईघर?

एक अन्य सपादकीय लेख मे श्री कमलेश्वर लिखते है 'आखिर हडप्पाकालीन नर्तकी क्यो स्वीकार नही?' अपनी इसी इतिहास-विरोधी और साक्ष्य-विरोधी जिद के तहत वह कभी बैल को घोडा बनाते है और कभी हडप्पाकालीन रसोईघरो को यज्ञ की वेदिया घोषित करते हैं यदि ऐसा ही था तो आर्यवादी उस हडप्पा-कालीन नर्तकी को क्यो मजूर नही करते, जो खुदाई मे हासिल हुई है। इसीलिए हडप्पाकालीन नर्तकी को लेकर वे खामोश है।'

बौद्ध-हिन्दू विवाद

बहुजन समाज पार्टी का अनुयायी यह अम्बेडकरवादी लेखक म्यामार (बर्मा) की सत्ताधारी कौसिल के उपाध्यक्ष जनरल मोग आई के बोध गया मे आगमन पर भारत सरकार द्वारा उनके स्वागत का विरोध करता हुआ लिखता है 'भारत मे बौद्ध दलितो और हिन्दू ब्राह्मणवादियो के बीच आज भी अधिकार और न्याय को ले कर भीषण सघर्ष की स्थिति है, पर म्यामार मे हिन्दू और बौद्ध सैनिक शासको ने एक राजनीतिक माफिया बना लिया है क्योंकि हिन्दुओ की मदद मे वे सत्ता मे बने रह सकते है।'

मैने उल्लिखित कबीर सम्बन्धी लेख के प्रतिवाद मे जो लघु लेख उक्त पत्र को दिया, वह नही छापा गया। क्या आर्य समाज के लेखको, धनपतियो एव सर्वोच्च या प्रान्तीय सगठनो के लिए यह विचारणीय विषय वस्तु नही है कि आपकी मान्यताओ एव सास्कृतिक राष्ट्रीय हितो पर चोट होती रहे और आप खर्राटे लेते रहे?

भाजपाई हिन्दू और भारतीय हिन्दू?

भास्कर के ११ दिसम्बर २००० के नवीनतम सम्पादकीय 'प्रधान मत्री जी! हमे मूर्ख मत समझिए' शीर्षक लेख के अन्तर्गत वह लिखते है 'क्योंकि अयोध्या का यह विवादित स्थल तो खडहर है, आपकी पहल से यहा मन्दिर तो बन जायेगा, पर कश्मीर चला जायेगा। यह धर्म-प्राण देश है, इस देश का हिन्दू किसी भी धर्मस्थल को गिराने का आदेश कभी दे ही नहीं सकता था यह देश भाजपाई हिन्दुओं का नही है, यह भारतीय हिन्दुओ का भी देश है, जो भाजपाई हिन्दुओ से कतई सहमत नही है।' पुन कमलेश्वर जी भास्कर १८ दिसम्बर के सपादकीय मे लिखते है 'यदि उसी जगह मदिर बनाया गया तो हिन्दू राष्ट्र भी बनाया जायेगा और तब लोकतत्र ढह जायगा।'

फूस की आग

उक्त पत्र जैसे अनेक पत्र आर्यो हिन्दुओ के इस खडित महादेश मे सक्रिय है, जिनके पाठको की सख्या करोडो मे है और राष्ट्रद्रोही, हिन्दूद्रोही एव अन्तत आर्यसामाजिक मान्यताओ एव प्रवृत्तियो को हानि पहुचाने वाली शक्तियो को बल प्रदान करते है और आर्यसमाज के साप्ताहिक तथा मासिक पत्र कितना भी जोर लगा ले, कुछ हजार आर्य समाजियो तक अपनी आवाज पहुचा कर फूस की आग की तरह शान्त हो जाते है।

अत यह सभी को हृदयगम करना चाहिए कि दूरदर्शन का हर कार्यक्रम आर्यो के इस देश की पुरातन, मध्यम एव नवीन पीढियो को क्षत-विक्षत कर रहा है। उधर सेठो के इन दैनिक पत्रो के मुख्यत वामपथी, गाधीवादी तथा मुसलमानो व ईसाइयो के प्रेमी सम्पादक और लेखक अपने हिन्दू विद्वेषी तथाकथित धर्मनिरपेक्ष तथा अम्बेडकरवादी सविधान के पक्ष-पोषण से सर्वदलितो की आड मे कतिपय स्वार्थी, अभिजातवर्गीय दलित जातिवर्ग और व्यक्ति का हित-साधन करके भारत राष्ट्र के उज्वल स्वरूप का अपने अपने ढग से पुनर्निर्माण करने मे सलग्न शक्तियो को कितनी हानि पहुचा रहे है। ऐसी अवस्था मे वीर अर्जुन जैसे आर्यत्व के सर्वतोभावेन समर्पित दैनिक पत्र एव पत्रकारो की आवश्यकता है, साथ ही ऐसे शोधरत इतिहास-पुरातत्वविद् प्राचीन एव आधुनिक राजनीति के मर्मज्ञ, विवेचक, रणारूढ लेखको की भी एव धन द्वारा ऐसे पत्रो की आर्थिक समस्या हल करने एव उसे व्यावसायिक रूप प्रदान करने वाले सेठ साहूकारो की भी आवश्यकता है। यह कार्य मात्र राजस्थान मे नही, देश के हर राज्य मे किया जाना वाछनीय है। ऐसे लेखक, सपादक न काग्रेस के, न समाजवादी तथा अन्य ऐसे राजनैतिक दल के पिट्ठू बने, जो मुस्लिम ईसाई षड्यत्रो का प्रत्यक्षत अथवा परोक्षत समर्थन अथवा पोषण करते हो।

'पाठको के पत्र' स्तम्भ के लिए लिखे

दैनिक पत्रो मे 'पाठक पीठ' या 'पाठको के पत्र' स्तम्भ भी होते है। क्या हमारे आर्य लेखक या छोटे-मोटे अथवा प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध सपादक, पत्रकार हर सामयिक ज्वलत विषय पर आर्योचित विचार नही प्रकट कर सकते? दैनिक भास्कर दिनाक १२ दिसम्बर २००० मे पृष्ठ ८ पर समाचार छपा है कि कर्नाटक के वीर शैव मतावलम्बी सप्रदाय के १ करोड लिगायत हिन्दुओ से अलग होगे तथा अपने को अल्पसख्यक मनवाने के लिए उनकी महासभा जोरदार आदोलन छेडेगी। अन्य हिन्दू सगठनो की तरह ही यह आर्यसमाज के लिए भी घोर चिन्ता का विषय है, न आर्य लेखको, उपदेशको एव कार्यकर्ताओ के लिए कार्य सेवा की कमी है और न हमारी प्रान्तीय, केन्द्रीय एव अन्य सस्थाओ के लिए।

लेखन की विषय-वस्तु

आर्य लेखको के लिए विषय-वस्तु विस्तार की सीमा का अन्त नही है। समाज, राजनीति, साहित्य, धर्म, जनता के दुखदर्द, स्वास्थ्य, चिकित्सा, निर्धनता, भुखमरी, पशुपक्षियो, जन्तुओ की हत्या, वृक्षो, झीलो नदियो की दुर्दशा, सृष्टि के घटको की पहचान, भौतिक, रासायनिक, भूगर्भीय आदि-आदि विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र, राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय समस्याए प्रवृत्तिया, गतिविधिया सभी हमारे लेखको, पत्रकारो, सपादको, विद्वानो, सस्थाओ एव पत्रिकाओ तथा पुस्तको द्वारा ध्यानाकर्षण तथा सस्पर्श हेतु व्याकुल है। क्या हमारे आर्यसमाज के लेखक, विद्वान्, विषय-विशेषज्ञ अपनी ओर से आर्यसमाज की छाप लगाकर कृषि-नीति, अर्थनीति, शिक्षा नीति अथवा नये सविधान की रूपरेखा प्रस्तुत करेंगे अथवा मात्र शास्त्रो के निर्वचन मात्र ही करते रहेगे?

कुछ सुझाव

पत्र-पत्रिकाओ, सपादको व पत्रकारो से सम्बन्धित मेरे सुझाव निम्न प्रकार है ईर्ष्या, द्वेष मुक्त होकर हमारे सपादक नये पुराने सभी लेखको की रचनाओ को छापे। आत्मविज्ञापन की सीमा क्षेत्र सकीर्ण रखे। अपनी आलोचना वाले पाठको के पत्र के शिष्ट अश को अवश्य यथास्थान छापे। अपने सहायक सपादको को तैयार करे तथा सस्थागत पत्रो के सम्पादक पद का अधिक से अधिक ५ वर्ष पश्चात् त्याग कर दे।

कविता, कहानी, सस्मरण, गद्य गीत, एकाकी आदि के लिए तथा बालको, महिलाओ एव शिक्षा, कृषि, अर्थ, राजनीति, वेद आदि के लिए सुनियोजित वर्गीकरण करे। बगला, मराठी, पजाबी, गुजराती, राजस्थानी, उडिया, कन्नड आदि क्षेत्र के पत्रो मे ३-४ पृष्ठ उन उन भाषाओं की रचनाओ के लिए भी रखे। आर्य जगत् की गतिविधियो के प्रकाशन के लिए पर्याप्त स्थान रखे। आर्य पत्रो मे आर्य, महर्षि दयानन्द, वैदिक सिद्धान्त विरुद्ध लेख, कविताए आदि न छपने दे, न अन्य किसी नेता या धार्मिक पुरुष का ऐसा गुणगान करे कि वह दयानन्द के लिए अवमाननाकारी हो।

शुद्ध प्रूफ

हमारे सपादक मात्र उपाधिधारी पत्र-पुरोधा नही है। लेखो, कविताओ, कहानियो को विषय-वस्तु एव भाषा-शैली की दृष्टि से शुद्ध कर छापना भी उनके कर्तव्य मे सम्मिलित है। समयाभाव हो, तो किसी आर्य समाजी विद्वान् एव लेखक की सहायता भी ले। मुद्रणालयो मे कम पढे-लिखे प्रूफ रीडर होने से आर्य पत्रो के लेखो मे वर्तनी की अशुद्धियो का दृष्टिगत होना लेखक की क्षमता एव पत्र की गरिमा पर प्रश्नचिह्न अकित करता है। आर्य लेखकों, विद्वानो का भी कर्तव्य है कि वे सस्थागत पत्र-पत्रिकाओ अथवा निजी पत्रो मे प्रूफ सशोधन नि शुल्क रूप मे करे। सामान्य आर्यजनो एव आर्य सस्थाओ का कर्तव्य है कि वे अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार स्वय ग्राहक बने, दूसरो को बनावे, विद्यालयो आदि मे अपने व्यय मे अथवा उनके व्यय से मगवाने की व्यवस्था करे। जितनी अधिक ग्राहक-वृद्धि होगी, उतनी ही पत्र की स्थिति सुदृढ होगी एव आर्यो एव आर्यसमाज-बाह्य लोगो तक आर्यसमाज का सदेश पहुचेगा।

आर्यजन लेखो, कविता, कहानी आदि को पढे, अपने ज्ञान को समृद्ध करे। लेखक विद्वान् भी पढ कर प्रामाणिक बात लिखे। वेदवाणी जैसी वेद, पुरातत्व, इतिहास, साहित्य प्रमुखता वाली पत्रिकाए भी प्रारम्भ की जावे। आर्य लेखको के ग्राम, जिला व प्रान्तीय स्तर के सगठन नियमित रूप से अपनी गोष्ठिया करे जिसमे कि अखिल भारतीय आर्य लेखक परिषद् अपनी स्वतत्र पत्रिका प्रकाशन के अनुकूल स्थिति मे आ सके।

९७२, किसान मार्ग,
बरकतनगर-टोक रोड,
जयपुर-३०२०१५

आर्य समाज की महान् विभूति —स्व० पंडित देवप्रकाश जी अमृतसरी

❑ सत्यबाला देवी, एम. ए., बी टी

दीनानगर के एक उपनगर धर्मकोट बग्गा, तहसील बटाला, जिला गुरदासपुर पजाब मे आचार्य देवप्रकाश जी के पिता श्री मुशी जी एक सरकारी हाई स्कूल मे मुख्याध्यापक थे। श्री मुशी जी की गुण-सम्पदा के कारण उक्त नगर निवासी उनके प्रति अगाध प्रेम और अपार श्रद्धा रखते थे। ऐसे ही शिक्षित और सम्पन्न परिवार मे सवत् १९४६ विक्रमी, तदनुसार सन् १८८९ मे प० देवप्रकाश जी के जन्म का समाचार सुनते ही समस्त नगर निवासियो ने घर-घर मे दीपावली का आयोजन किया।

यह एक अद्भुत सयोग का विषय है कि उसी नगर मे उसी रात्रि को ही स्वामी श्रद्धानन्द जी का भी जन्म हुआ। एक ही नगर मे, एक ही रात्रि मे जन्म ग्रहण करने वाले ये दोनो बालक प्रेमपूर्वक बाल क्रीडाए करते हुए पारस्परिक खेलकूद मे व्यस्त रहे और फिर कालान्तर मे घनिष्ठ मित्रता के बन्धन मे बध गए।

अभी बालक देवप्रकाश जी केवल दो ही वर्ष के थे कि उनके पूज्य पिता जी का स्थानान्तरण बागबगा (गुरदासपुर) मे हो गया। पर मुख्याध्यापक महोदय अपने परिवार और नन्हे-मुन्ने शिशु को इस नए अपरिचित स्थान मे ले जाना नही चाहते थे। अत उन्हे परिवार को अपने ससुराल चित्तौडगढ , जिला फतेहगढ चूडिया मे छोडना पडा। इस प्रकार शिशु देवप्रकाश जी का पालन-पोषण ननिहाल के प्रेममय स्निग्ध वातावरण मे हुआ। पर कुछ समयोपरान्त उनके पिता भी परिवार और नन्हे शिशु के स्नेह के वशीभूत हो, मुख्याध्यापक का पद त्याग स्वय भी अपनी ससुराल आ गए।

शिक्षा— शिक्षा-प्राप्ति की आयु होने पर श्री देवप्रकाश जी को फतेहगढ के एक मिडल स्कूल मे प्रविष्ट कराया गया। पर इस तीव्र-बुद्धि बालक की शिक्षा केवल मिडिल तक ही सीमित नही रही और वह तत्कालीन प्रचलित भाषा उर्दू, फारसी, अरबी, सस्कृत, हिन्दी आदि मे भी पारगत हो गए। युवक देवप्रकाश जी ने शिक्षा-प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहना अपने जीवन का प्रमुख ध्येय बना लिया।

सयोगवश एक ही नगर मे, एक ही रात्रि मे जन्म ग्रहण करने वाले दोनो बालको का पुनर्मिलन हुआ और मुशीराम जी का फतेहगढ मे आवागमन प्रारम्भ हो गया। प्रेमपूर्वक, हास्यविनोद और विभिन्न क्रीडाओ मे रत दोनो मित्रो में घनिष्ठता बढती गई। दोनो युवक मित्र प्राय आर्यसमाज के प्रमुख सिद्धान्तो पर विचार-विमर्श करते और कभी-कभी वाद विवाद मे भी सलग्न हो जाते। इसी बीच हमारे चरितनायक के हृदय मे आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य मत-मतान्तरो के सिद्धान्तो के सम्बन्ध मे भी अनुसधान करने की तीव्र इच्छा जागृत हुई और अपनी समस्त प्राप्त शिक्षा, प्रभु-प्रदत्त प्रखर प्रतिभा एव सम्पूर्ण बुद्धिचातुर्य के आधार पर वह इस महत्वपूर्ण कार्य मे रत हो गए और ९२ वर्ष की दीर्घायु तक इसी ध्येय की पूर्ति मे सलग्न रहे।

कार्य-क्षेत्र—इसी बीच आर्य समाज के उन्नत सिद्धान्तो के पृष्ठ-पोषक देवप्रकाश जी ने फतेहगढ मे '**वैदिक धर्म सभा**' के नाम से आर्यसमाज की स्थापना की। तीन वर्षो के अनन्तर फतेहगढ के निकटवर्ती क्षेत्रो और देहाती कस्बो मे आर्य समाज के प्रचार की धूम मच गई। इसी बीच फतेहगढ मे स्थापित वैदिक धर्म सभा का नाम परिवर्तित करके '**आर्यसमाज कुमार सभा**' कर दिया गया और वहा बडी धूमधाम से आर्यसमाज के तीन वार्षिक उत्सव भी सम्पन्न हुए, जिनमे श्री प० पूर्णानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी आदि उच्च कोटि के विद्वानो ने पधार कर अपने भाषणो द्वारा जनता मे आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रति प्रेम और उत्साहवर्धन किया।

कालान्तर मे अपने पिता जी के निधन के उपरान्त आचार्य देवप्रकाश जी परिवार सहित अमृतसर आ गए और वही अपना स्थायी निवास बना लिया। अमृतसर मे भी आचार्य देवप्रकाश जी ने **आर्यकुमार सभा** की स्थापना की और वह सभा के मत्री नियुक्त हुए। आर्यकुमार सभा की विचारधारा, प्रचार-शैली, कार्य प्रणाली, सदस्यो का पारस्परिक स्नेह, भ्रातृत्व एव परदु ख-निवारण-प्रवृत्ति आदि सद्गुणो से प्रभावित होकर नगर भर के उत्साही, कार्यकुशल, ध्येयनिष्ठ, बलिष्ठ युवको के समूह इस सगठन मे सम्मिलित होकर आर्य समाज के प्रचार और प्रसार मे सहायक सिद्ध हुए। एक प्रकार से यह आर्यकुमार सभा आर्य युवको के निर्माण की एक अनुपम फैक्टरी अथवा निर्माणशाला थी, जिसके सचालक और निर्माता लौहपुरुष श्री प० देवप्रकाश जी और उनके घनिष्ठ मित्र श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी थे।

संघर्षमय सेवा

उस समय मुसलमानो और गुडो के उपद्रव अपनी चरम सीमा पर थे। वे प्राय अल्पायु हिन्दू बालको और देवियो को अपहृत कर या तो उनकी हत्या कर देते थे अथवा देवियो की इज्जत लूट कर उन्हे धर्म-परिवर्तन हेतु विवश करते थे। पर समाजसेवी, परदु खकातर प० देवप्रकाश जी को जिस क्षण इस प्रकार की किसी दुर्घटना की सूचना मिलती, वह तत्काल अपने युवक साथियो सहित निर्भीकता से उन दुष्टो के गढ मे प्रविष्ट हो जाते और अपने प्राणो को जोखिम मे डाल कर उन असहाय, अपहृत बालको और देवियो को उन आततायियो के चगुल से मुक्त करा लाते। महात्मा आनन्द स्वामी जी के मतानुसार प० देवप्रकाश जी का जीवन भारत के युवक वर्ग के लिए आदर्श जीवन है। युवाकाल मे ही उन्होने धर्म, देश और नि सहाय व्यक्तियो की सेवा और सहायता करना अपने जीवन का प्रमुख ध्येय बना लिया था।

१३ अप्रैल १९१९ को जब जनरल डायर के नृशस सैनिको द्वारा बैशाखी के अवसर पर जलियॉवाले बाग, अमृतसर मे एक अधिवेशन मे बैठे हजारो निरपराध निरीह व्यक्तियो को मशीनगन की गोलियो से भून दिया गया और घायल कर दिया गया, तब पीडित, त्रस्त, क्षत-विक्षत, दुखित और आतकित जनता की सहायतार्थ श्री प० देवप्रकाश जी मई-जून मास की प्रचड भीषण गर्मी मे बीसो मील पैदल चल कर, दूर स्थित अज्ञात व्यक्तियो के अनजाने ठिकानो पर पहुच कर उनको ढाढस बधाते और उनकी सहायता करते रहे।

अरबी-सस्कृत महाविद्यालय

कुछ समयोपरान्त गण्डासिहवाला अमृतसर मे सरदार अमरसिह जी, मालिक अमृतसर शूगर मिल द्वारा प्रदत्त विस्तृत भूखड पर भवन निर्माण कर वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा पाणिनि विद्यालय की स्थापना की गई, जिसमे श्री प० शकरदेव जी, श्री प० बुद्धदेव जी और श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु अध्यापन कार्य करते थे और आचार्य देवप्रकाश जी उसके प्रबन्धक थे। कालान्तर मे प्रस्तुत विद्यालय का शाहदरा (लाहौर) मे स्थानान्तरण हो जाने पर उन्हीं भवनो मे **श्रीमद्दयानन्द अरबी सस्कृत महाविद्यालय** की स्थापना की गई, जिसके आचार्य श्री प० देवप्रकाश जी बने। उक्त महाविद्यालय मे सस्कृत मे शास्त्री, अरबी मे मौलवी फाजिल और अग्रेजी मे बी ए की परीक्षाए दिलाने का भी प्रबन्ध था। पडित साधुराम जी शास्त्री, मौलवी फाजिल, बी ए , श्री प० त्रिलोकचन्द जी शास्त्री, बी ए महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्री प० सत्यदेव जी, सुविख्यात वैदिक स्कॉलर त्यागी ब्राह्मण श्री प० गगाराम जी शर्मा ब्राह्म विद्यालय, लाहौर से आ कर अरबी भाषा की शिक्षा प्राप्त करने हेतु इसी महाविद्यालय मे प्रविष्ट हुए और आचार्य देवप्रकाश जी से शिक्षा प्राप्त करते रहे। ऐसे ही अनेक विद्यार्थी-रत्न इस महाविद्यालय मे शिक्षा प्राप्त कर विविध स्थानो पर आर्यसमाज का प्रचार करते रहे।

आततायी मुस्लिम युवक द्वारा घातक आक्रमण— आचार्य देवप्रकाश जी द्वारा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार एव मुसलमानो द्वारा किए गए निकृष्ट कार्यो का विरोध करने पर मुसलमान बौखला उठे और उन्होने उनकी हत्या करने हेतु एक मुसलमान युवक को छद्मवेश मे सस्कृत पढने के बहाने महाविद्यालय मे प्रवेश दिलाया। पर अवसर पाकर उस नृशस हत्यारे ने आचार्य जी का गला पकड लिया। सौभाग्य से उधर से निकलते समय एक विद्यार्थी ने उक्त दृश्य देखा। वह स्वय भी भाग कर आचार्य जी के पास पहुचा और शोर मचाकर अन्य विद्यार्थियो को भी बुला लिया। इस प्रकार आचार्य जी को उक्त हत्यारे के चगुल से मुक्त करा लिया गया, पर बहुत आग्रह करने पर भी आचार्य जी उक्त आततायी को पुलिस मे देने के लिए सहमत नही हुए।

महात्मा हसराज के अनुयायी

महात्मा हसराज जी के अनन्य श्रद्धालु भक्त आचार्य देवप्रकाश जी उनके एक इगित पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने हेतु उद्यत हो जाते थे। फिर चाहे वह विपत्ति कोटली (जम्मू कश्मीर) की हो अथवा अल्पसख्यक हिन्दू जाति के गृह निष्कासन की हो, किसी महामारी से पीडित जनता की हो, अथवा दूर दक्षिण के केरल मे मोपला विद्रोह के दिनो मे बलात् धर्म-परिवर्तन की हो या नरसहार की हो, या हिन्दू ललनाओ के अपहरण की हो, पटना के विनाशकारी भूकम्प की हो, अथवा सीतामढी (बिहार) की भयकर विनाशकारी बाढ की हो या क्वेटा मे भूकम्पग्रस्त जनता की हो अथवा मध्यप्रदेश मे धर्म-विध्वसक ईसाइयो की हो, यह शूरवीर महारथी प० देवप्रकाश जी अपना घरबार, कुटुम्ब-कबीला, कार-व्यवहार सबको तिलाजलि दे कर घटना स्थल पर पहुच जाते और जी-जान तथा तन, मन, धन से दु खित, पीडित व्यक्तियो के कष्ट निवारण हेतु जुट जाते। आचार्य देव

(शेष पृष्ठ ९ पर)

पत्र–जगत्

बहुकुंडीय यज्ञ?

मधुर लोक, मई २००१ मे आपका सम्पादकीय "बहुकुडीय यज्ञ वैदिक और वैज्ञानिक है" पढा। प० युधिष्ठिर जी मीमासक, आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास, प० रामदयालु जी शास्त्री, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री और प० भूदेव जी शास्त्री आदि बहुकुडीय यज्ञो को पाखड बताते-बताते चले गए। केवल पुराने विद्वानो मे एक जीवित है, वह है– स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती। इन सभी से मेरी कई बार चर्चा हुई है। हर बार इन्होने इन यज्ञो और इनके जैसे अन्य शतधार और सहस्रधार महायज्ञो आदि को भी अवैदिक ही बताया था।

आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की ओर से २१ ३ १९८२ के सार्वदेशिक पत्र मे एक विज्ञप्ति निकाली थी, जिसका शीर्षक था "बहुकुडीय यज्ञ अवैदिक" (आर्य जनो को निर्देश)। विज्ञप्ति निम्न प्रकार है

"आजकल शतकुडी, १०१ कुडी, चतुर्दश कुडी आदि नामो से अनेक कुड बनाकर यज्ञ करने का एक नाटक सा चला हुआ है और लोग वैदिक यज्ञो के वास्तविक स्वरूप को तोड कर अपने निश्चित उद्देश्यो की पूर्ति के लिए जनता मे इस प्रकार के यज्ञो का प्रचार कर रहे है। ऐसे यज्ञो के लिए कोई भी शास्त्रीय विधान नही पाया जाता है। यज्ञ के नाम पर एक प्रकार का यह ढोग पनप रहा है, जिसका उद्देश्य पैसा बटोरने के लिए है। यह प्रथा अवैदिक, शास्त्र विरुद्ध और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो के सर्वथा विपरीत है। अत समस्त आर्य सामाजिक जन, आर्य समाजे, आर्य प्रतिनिधि सभाए तथा अन्य आर्य सस्थाए एव सगठन इस प्रकार के यज्ञो के फेर मे न पडे, न आयोजन करे और न इसे प्रोत्साहन दे।"

हस्ताक्षर आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, धर्माधिकारी सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली–२

मान्यवर! प० मीमासक जी ने श्री रगनाथ कृष्ण जी सेलूकर के सहयोग से आर्यसमाज पानीपत तथा कोटा सहित कई स्थानो पर श्रौत यज्ञ करवाये थे। मै भी दो स्थानो पर इनमे सम्मिलित रहा था। वह चाहते थे उपर्युक्त प्रकार के अवैदिक यज्ञ बन्द होकर आर्यसमाज मे श्रौत यज्ञो का आयोजन हो।

तीन वर्ष पूर्व हैदराबाद मे दिल्ली के श्री राजसिह जी आर्य आदि के साथ प० मदनमोहन जी विद्यासागर से मिलने का अवसर मिला था। बहुकुडीय यज्ञो पर चर्चा चलने पर उन्होने कहा था "अपने दामाद के बडे भाई के कहने पर मै अन्तरराष्ट्रीय वेद जयन्ती समारोह, दिल्ली मे १०१ कुडीय यज्ञ का ब्रह्मा बना था। अब पछता रहा हू कि मैने बडी भारी गलती की थी। बहुकुडीय यज्ञ ऋषि दयानन्द की वैदिक यज्ञ पद्धति से बिल्कुल बाहर है। बहुकुडीय यज्ञ कर, दयानन्दीय और वैदिक यज्ञ पद्धति को विकृत मत कीजिये।"

जहा तक बहुकुडीय यज्ञो के प्रमाण का प्रश्न है, जब उपर्युक्त विद्वानो को कोई प्रमाण नही मिला, तो मुझे कहा से मिल सकता है। खैर, इनकी और मेरी बात छोडिये, आप ही वेद या वैदिक प्रमाण बता दीजिये। यो मैने यह तो बता ही दिया है कि मात्र पाच अग्निया ही यज्ञाग्निया है। उनमे भी आहवनीय अग्नि एक ही होती है। (देखे अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त श्रौत यज्ञो का सक्षिप्त परिचय– लेखक प० युधिष्ठिर जी मीमासक)

यज्ञो से आर्यसमाज के प्रचार के विषय मे आपने श्रीराम शर्मा (गायत्री परिवार) की चर्चा की। आप भी किसी वेद-मत्र की या स्वामी दयानन्द की मूर्ति बनवा कर, लगवा कर और उन्हे शकर का अवतार बता कर, गायत्री की मूर्ति की पूजा की तरह, उनकी पूजा शुरू करवा दीजिये, खूब प्रचार हो जाएगा।

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह, दिल्ली के समय मे आप भी थे। वहा क्यो नही बहुकुडीय यज्ञ करवा दिया? ५-६ लाख के स्थान पर १०-१२ लाख लोगो की उपस्थिति हो जाती। श्री विश्वश्रवा जी, श्री वैद्यनाथ जी के समय मे आपने सार्वदेशिक धर्मार्य सभा से क्यो नही बहुकुडीय यज्ञ प्रमाणित करवा कर उसका प्रचलन करा दिया? सदैव सदैव के लिए आपका कार्य पूर्ण हो जाता और आर्यसमाजो मे यज्ञ-प्रेमी माता-बहिनो और सज्जनो की भीड लग जाती।

यज्ञ को तमाशा मत बनने दीजिये। पहला ऋषि, महर्षि दयानन्द हुआ है, जिसने यज्ञ को पाखड से निकाल कर तमाशा बनने से रोक कर, उसकी विज्ञानपरक और अर्थशास्त्रपरक परिभाषा और व्याख्या की है।

आर्य समाज के प्रचार मे रोडा हम और हमारा कथनी और करनी मे अन्तर है। परन्तु दोष दिया जा रहा है उनको, जो यज्ञ-पद्धति को विकृत होने से बचाना चाहते है। श्रद्धा पैदा करने के नाम पर कब तक सिद्धान्तो और पद्धतियो मे ढील दी जाती रहेगी? इस विषय मे बहुत कुछ लिखा जा सकता है, परन्तु अधिक लिखने का कोई फायदा नही है।

आर्य समाज के १० नियमो और २८ उपनियमो आदि तथा महर्षि के साहित्य और सम्पूर्ण पत्र-व्यवहार का गम्भीर अध्ययन करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि महर्षि ने आर्यसमाज को धार्मिक सस्था के रूप मे स्थापित नही किया था। यह तो प्रारम्भ मे अग्रेजो की वक्र-दृष्टि से बचाव करने के लिए कहना शुरू किया था कि आर्य समाज तो एक धार्मिक सस्था है। "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" इसमे कहा है धार्मिक सस्था? धार्मिक सस्था, धार्मिक सस्था, धार्मिक सस्था के रट लगाने का ही यह परिणाम हुआ है कि आर्यसमाज का आन्दोलनात्मक क्रान्तिकारी स्वरूप लोगो की नजरो मे तिरोहित हो गया और हिन्दी शब्दकोषो मे आर्यसमाज को हिन्दू धर्म का एक सम्प्रदाय बता दिया गया। (देखे राजपाल हिन्दी शब्दकोश–डा० हरदेव बाहरी)।

मन्दिर शब्द का अर्थ तो बहुत ही शुद्ध और पवित्र है। परन्तु मूर्ति पूजा के अर्थ मे रूढ हो जाने से अर्थात् मन्दिर वह, जिसमे पूजने वाली मूर्तिया स्थापित हो। इसीलिए महर्षि ने आर्यसमाज स्थापित करते समय "आर्य समाज" के साथ मन्दिर शब्द नही लगाया था, तो हमे क्या अधिकार है कि हम लगाए? आर्यसमाज भवन और यज्ञशाला को उपासना गृह के रूप मे स्वच्छ, साफ और सुन्दर रखना एक बात है। परन्तु इसके लिए आर्यसमाज को आर्यसमाज मन्दिर बना देना दूसरी बात है। महर्षि ने तो समाज के स्वरूप मे ही आर्यसमाज स्थापित किया था। हमने इसे सम्प्रदाय बना दिया।

आर्य विद्वान् महर्षि मार्ग न छोडे

मैने २९ ४ २००१ के आर्य जगत् मे प्रकाशित लेख "बहुकुडीय यज्ञादि अवैदिक और अवैज्ञानिक है" मे जो कुछ लिखा है, उसका एकमात्र प्रयोजन आर्य विद्वानो से यह प्रार्थना करना है कि अपने अपने स्वार्थ मे प्रेरित होकर साम्प्रदायिक लोग चाहे जो करे, परन्तु आर्य विद्वानो को महर्षि द्वारा बताये गये मार्ग से विचलित न होकर पाखड मे समझोता करने मे एकदम इन्कार कर देना चाहिए। क्योकि थोडा थोडा सा ही समझौता कालान्तर मे बहुत ही उग्र रूप धारण कर लेता है। सस्कृत के एक महाकवि के शब्दो मे बार बार यह कहना चाहूगा हे हस! दूध और पानी को अलग अलग कर देने के विषय मे यदि तुम ही आलस्य करने लगोगे, तो बताओ, ससार मे अपने कुल-व्रत का कौन पालन करेगा? यदि आर्य विद्वान् ही पाखड से समझौता कर लेगे, तो पाखडखडिनी पताका कौन फहराएगा?

डा० रामकृष्ण आर्य, ४-भ-२७, विज्ञान नगर, कोटा-३२४००५

स्वामी दयानन्द 'ब्रह्मर्षि से अधिक राजर्षि' के सम्बन्ध में

आर्य जगत् के २० मई से २६ मई के अक मे उपरोक्त लेख पढ कर बडी ग्लानि हुई, क्योकि

१ लेखक का नाम एव परिचय नही दिया गया, ताकि उसकी योग्यता का पता चल सकता।

२ १८५७ के स्वतत्रता सग्राम को सभी भारतवासियो ने 'स्वतत्रता सग्राम' का नाम दिया, पर अग्रेजो ने इसे विद्रोह कहा। विद्रोह अपनो के प्रति होता है, विदेशियो के प्रति 'स्वतत्रता सग्राम' होता है। आप पता नही किस वर्ग के है, जो आपने इसका नाम 'महाविद्रोह' बार-बार दिया।

३ स्वामी जी को ब्रह्मर्षि या राजर्षि बताना भी अपरिपक्व मस्तिष्क की खोज है, क्योकि लेखक का ध्यान सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास पर तो गया, पहले या अन्य समुल्लासो पर नही गया, जहा ईश्वर के सम्बन्ध मे ही सब कुछ है, फिर अन्त के ११ मे १४ समुल्लास तो मात्र विभिन्न मतो पर ही व्यय हुए है।

४ जहा तक स्वामी जी द्वारा मौरवी शहर कहना और परवर्ती लेखको द्वारा मौरवी राज्य मे बदल देने की बात है, उसका कोई महत्व नही और लेखक ने स्वय भी अपने लेख मे मौरवी को राज्य माना है। देहली को देहली राज्य या शहर कहने मे कितना अन्तर है?

५ नाना साहिब की समाधि मौरवी मे है और स्वामी जी नाना साहिब को लेकर मौरवी गए होगे, यह दूर की कौडी आपका अखबार या डी० ए० वी० वाले ही ला सकते है। पूना के जिस व्याख्यान मे स्वामी जी ने अपना परिचय दिया, उसमे यह भी कहा कि घर छोडने के बाद, पिता से बिछुडने के उपरान्त मै कभी फिर अपने क्षेत्र मे नही गया। अत या तो लेखक महोदय सच्चे है और स्वामी जी व्यर्थ झूठ बोल रहे थे या फिर लेखक कोई विक्षिप्त है।

६ जहा तक आपके 'पत्र' (आर्य जगत्) की बात है, इसमे बडे अच्छे अच्छे लेख आते थे। हम सभी को उसके पढने मे आनन्द आता था। पर अब आपकी नीति के बदलने से यह पत्र विपरीत मान्यताए स्थापित करने या सामान्य व्यक्ति को भटकाने का साधन बन गया है, कृपया इससे बचे।

राम निरजन, पूर्व प्राध्यापक, प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा नारायणगढ (अम्बाला)

बैंकाक में आर्य समाज

❑ श्री रामपलट पाडेय

आर्य समाज से मेरा मम्बन्ध सन् १९५६ से बैकाक प्रवास के ममय से है। मेरे अग्रज स्व० बकेशमणि पाडेय 'ब्रह्मचारी जी' आर्य समाज बैकाक के विशिष्ट सभासद थे। उनकी प्रेरणा ही मुझे आर्य समाज में खीच लाई। यह ईश कृपा रही।

पुराने कार्यकर्ता

आर्य समाज बैकाक (थाईलैड) के तत्कालीन आर्यजन जो प्रधान, मत्री, कोषाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष तथा विशेष सभासद् के रूप मे कार्य करते रहे, उन मभी का स्नेह मुझे प्राप्त रहा। विशेषत स्व० श्री महदेव सिह जी का, जिनके माथ मत्री के रूप मे अनेक वर्ष काम करने व सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्व० श्री सीतारामसिह 'आजाद' जी प्रधान व मत्री, स्व० श्री सुन्दरचन्द जी 'मास्टर', स्व० श्री बाबूलाल सिह जी, स्व० ठाकुर इन्द्रदेव सिह जी, स्व० श्री रामजी सिह, स्व० श्री रामसिह जी (जो आई० एन० ए० मे श्रद्धेय नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के साथ रेडियो उद्घोषक रहे) स्व० पडित बृजनाथ राय जी, स्व० श्री राममणि पाडेय जी, स्व० श्री शीतलप्रमाद पाडेय जी सदृश समाज के अनन्य सेवको की प्रेरणा व स्नेह का ही प्रभाव है कि मै इस समाज से एकदम लगा रहा। श्री सहदेव सिह जी, श्री सीताराम सिह जी 'आजाद', श्री बाबूलाल सिह जी एव भ्रातृवर श्री बकेशमणि पाडेय जी का विशेष प्रभाव रहा। सभी लोग अब स्वर्गीय है, पर मेरे लिए अभी भी प्रेरणा-स्रोत है। इन्ही कडियो मे एक विशेष नाम जिनसे मुझे प्रेरणा मिली और अब भी मिल रही है, श्री रामबेलास शाही जी है।

प्रचारक आर्य

सन् १९६० के दशक मे वेदज्ञ स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती जी (तत्कालीन प्रधान, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली), उपनिषद् कथाकार महात्मा आनन्द स्वामी जी, मथुरा (अस्पष्ट—स०) के शकराचार्य पडित तुषारबुद्ध जी (अस्पष्ट—स०) के विचारो से प्रभावित व उनके दर्शनो का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सन् १९७० के दशक मे मेरे एकमात्र प्रेरणा-स्रोत मिशनरी पडित नन्दलाल जी 'वानप्रस्थी' (जो क्रमश तीन बार तीन- तीन माह रहकर प्रवासीय जनो मे वैदिक ज्ञान का प्रचार करते रहे, जिनकी लिखी यात्रा सम्बन्धी पुस्तक "अपना देश पडोसी देश' तथा "सागर पार देशो मे" देशाटन के लिए यात्रियो का मार्गदर्शन करती रहेगी)। स्व० श्री रोशनलाल जी आर्य अलवर, राजस्थान ने ३ वर्षो तक स्थानीय आर्यसमाज मे पुरोहित रहकर बडी कर्मठता से कार्य किया। आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के तत्कालीन प्रधान प० प्रकाशवीर शास्त्री जी तो आर्य समाज बैकाक के विशेष स्नेही रहे। स्वामी ओमानन्द जी ने भी यहा पधार कर अपने ज्ञान द्वारा आलोकित करने का प्रयास किया। अन्यान्य अनेक विद्वानो के सम्पर्क मे आकर उनसे सीखने व प्रेरणा लेने का सौभाग्य इन पक्तियो के लेखक को प्राप्त हुआ।

स्वामी अग्निवेश आये

इनके अतिरिक्त १९७५ मे सर्वप्रथम स्वामी अग्निवेश जी का पदार्पण हुआ थाईलैड की धरती पर। आप व्यक्तिगत तौर पर "ए सी एफ ओ डी" सस्था के विचारको की गोष्ठी मे भाग लेने आए थे। स्व० पडित नन्दलाल जी वानप्रस्थी द्वारा पूर्व सूचना से आप से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ और प्रथम साक्षात्कार मे ही आपने प्रभावित कर लिया। विचारगोष्ठी से दो दिन का अवकाश ले कर, मार्च १९७५ मे स्थानीय आर्यसमाज के ५५वे वार्षिकोत्सव 'होलिकोत्सव' मे उपस्थित हो कर, आपने जिस भावपूर्ण ढग से आर्य वैदिक सिद्धान्तो को जोरदार शब्दो मे रखकर सम्बोधित किया, उससे जनसमूह अति प्रभावित हुआ। वार्षिकोत्सव के अतिरिक्त आपने आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर भी सम्बोधित कर आर्य विचारो की बृहद् व्याख्या से लोगो को ज्ञान कराया।

हिन्दू धर्म सभा विष्णु मन्दिर के सत्सग मे और हिन्दू समाज देव मन्दिर के रविवारीय सत्सग मे वेदो की पुन स्थापना की जानकारी देकर आपने सबको स्तम्भित कर दिया।

सत्यार्थप्रकाश का थाई भाषा मे अनुवाद

आपकी प्रेरणा से ही आर्यसमाज बैकाक ने सत्यार्थ प्रकाश का थाई भाषा मे अनुवाद कराने का सकल्प लिया, जिसे पूरा करने मे अर्थाभाव के कारण ११ वर्ष लग गए। १९८६ मे अनुवाद का कार्य सम्पन्न हो गया। सौभाग्य या सयोग ही कहे कि १९८६ मे भी आपका आगमन थाईलैड हो गया और हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के परीक्षार्थियो को (आर्यसमाज बैकाक केन्द्र है हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओ का) प्रमाणपत्र-वितरण तथा थाई भाषा मे सत्यार्थप्रकाश का विमोचन भी स्वामीअग्निवेश जी के कर कमलो द्वारा ही सम्पन्न हुआ। तत्कालीन आपके एकमात्र सहयोगी श्री कैलाश सत्यार्थी जी ने भी कई यात्राओ मे बैकाक पधार कर आर्य समाज को सम्बोधित किया।

भजनोपदेशक स्व० जोरावरसिह 'कुवर' जी ने अपनी पत्नी श्रीमती प्रभावती जी के साथ यहा ३ माह तक रह कर भजनोपदेशो द्वारा जनता को लाभान्वित किया। भारत मे कदाचित् सूचना मिलने पर आर्यसमाजो के सम्मेलनो, कार्यक्रमो मे आर्यसमाज बैकाक का सहयोग निश्चित रूपेण रहता है। वैदिक विद्वान् डा० हरिश्चन्द्र जी सिकदराबाद मे दयानन्द इस्टीट्यूट आफ वैदिक स्टडीज के माध्यम से वैदिक प्रचार मे सलग्न है। उनकी पत्नी श्रीमती कविता वाचक्नवी भी प्रचार मे सलग्न रहती है। विगत वर्षो मे आपने भी २ माह बैकाक मे रहकर वैदिक नाद गुजाया। सस्कार आदि कराने मे आपने अपनी योग्यता का परिचय दिया। लोगो मे बडा प्रभाव रहा।

उपदेशको की कमी

चूकि हम जीविकोपार्जन हेतु आप्रवासी होकर यहा रह रहे है, अत विशेष अवकाश तो मिलता नही। मात्र रविवारीय सत्सग मे एकत्रित होकर कुछ चर्चा, विचार-विमर्श कर अपने कर्तव्यो को समाप्त समझ लिया जाता है। भारत से कोई स्थायी भजनोपदेशक, पुरोहित बुलाने का विचार था पर अपनी शिरोमणि सभा से कोई सहयोग नही मिला। उपदेशक विद्यालयो से उपदेशक निकल कर सम्भवत भारत मे ही पूरे नही होते होगे या अब मिशनरी भावना का अभाव हो गया है, जिससे हम लाभ उठाने मे वचित रह जाते है। फिर भी कुछ पुरोहित रख कर आर्यसमाज की प्रगति के लिए उद्यम किया परन्तु वे हमारे लिए उपयोगी नही सिद्ध हुए। अतत धोखा ही देकर गए। आप अपने स्वार्थो के लिए ही रहे। उनके निकृष्ट विचारो का पता उनके जाने के बाद चला। यह जानते हुए भी कि ऐसे लोग जहा भी जायेगे, धोखा ही देगे, कभी इच्छा होती है कि उनका भडाफोड कर अन्य सस्थाओ को धोखा खाने से बचाया जाय, पर अभी तक पहल नही कर सका। हमारी समाज ने ऐसे ही एक पुरोहित को दो वर्ष अपने यहा रखा। अधिक से अधिक उनका सहयोग किया, परन्तु वे सत्यता के स्थान पर असत्य का ही सहारा लेते रहे। आर्यसमाज के ऊपर ५०००/- रुपये का दूरभाष का बिल भी छोड गए।

बैकाक आर्यसमाज की स्थितियो से दु खी व निराश होकर बडी उदासीनता के साथ यहा की चर्चा मैने लिपिबद्ध कर परोपकारी के सम्पादक धर्मवीर जी के पास भेजी थी, जो परोपकारी के जनवरी १९९३ के अक मे प्रकाशित हुई। उसे पढकर डा० भवानीलाल भारतीय ने मिल कर कोई मार्ग ढूढने का सुझाव रखा, पर पुन पत्राचार नही हो सका। सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन मत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री जी ने भी पहल की। फलत उनके बैकाक आने की व्यवस्था की गई। आपने करीब ५० दिनो तक यहा हमारे साथ रह कर अध्ययन किया किन्तु कोई ठोस कार्यक्रम नही बन पाया। उनका भी क्या दोष? सार्वदेशिक सभा तो स्वय के झगडे मे उलझी है। न्यायसभा तो समाप्त है, अब कोर्ट कचहरियो मे भी तत्कालीन उपप्रधान **श्री वीरबहादुरचन्द**, मत्री श्री लालबहादुर सिह, समाज के शुभ चिन्तको मे श्री रामवृक्षचन्द्र, श्री दयानन्द सिह, श्री वीर बहादुरसिह, श्री वेदप्रकाश मौर्य, श्री भानप्रतापसिह, श्री रामबेलास दुबे, श्री उमेशसिह, श्री राधेश्याम उपाध्याय तथा अन्यान्य सभासद् हमारे साथ रहे। इन्ही मे एक विशेष व्यक्तित्व के धनी थे सरल प्रकृति, मधुरभाषी, समाज के वरिष्ठ अधिकारी, कोषाध्यक्ष श्री रमेश शाही, जिनके आकस्मिक, असामयिक देहावसान ने अपने वियोग से पूरे आर्य समाज को विक्षिप्त सा कर दिया है। निकट भविष्य मे बैकाक आर्यसमाज इस अपूरणीय क्षति से उबर नही पायेगी।

अति महत्वपूर्ण निर्णय

हिन्दी मे प्रस्तुत याचिका पर विचार हो सकता है : सर्वोच्च न्यायालय

नई दिल्ली, ८ जनवरी। उच्चतम न्यायालय ने व्यवस्था दी है कि न्यायालय की कार्यवाही के नियमो के तहत अग्रेजी भाषा मे ही याचिका तैयार करने के प्रावधान के बावजूद उच्च न्यायालय मे हिन्दी भाषा मे पेश चुनाव याचिका पर विचार हो सकता है।

मुख्य न्यायाधीश डा० आदर्श सेन आनन्द, न्यायमूर्ति आर० सी० लाहोटी और न्यायमूर्ति शिवराज वी० पाटिल की तीन सदस्यीय खडपीठ ने पिछले सप्ताह इस सम्बन्ध मे मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के ४ फरवरी २००० के निर्णय को सही ठहराते हुए महेश्वर विधान सभा सीट से निर्वाचित डा० विजय लक्ष्मी साढो की याचिका रद्द कर दी।

न्यायाधीश ने अपने १७ पृष्ठ के निर्णय मे कहा कि चुनाव याचिका के बारे मे उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित नियम केवल प्रक्रिया सम्बन्धी ही है और वे कोई महत्वपूर्ण कानून नही है। न्यायाधीशो ने कहा कि सविधान के अनुच्छेद ३४८ (१) मे स्पष्ट है कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयो की कार्यवाही अग्रेजी भाषा मे होगी, परन्तु अनुच्छेद ३४८ (२) मे इस सम्बन्ध मे अपवाद का भी प्रावधान है। न्यायाधीशो ने विधायक डा० विजय लक्ष्मी साढो की याचिका निरस्त करते हुए कहा कि अनुच्छेद ३४८ (२) मे स्पष्ट है कि राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से किसी भी राज्य के राज्यपाल उच्च न्यायालय मे हिन्दी अथवा किसी अन्य भाषा के प्रयोग की अनुमति दे सकते है, बशर्ते सम्बन्धित राज्य मे ही उच्च न्यायालय की प्रधान बैच हो।

इस मामले मे मध्य प्रदेश के राज्यपाल ने राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से १८ सितम्बर १९७१ को एक अधिसूचना के द्वारा उच्च न्यायालय के फैसले, आदेश और डिग्री के अलावा अन्य सभी कार्यवाही मे हिन्दी भाषा के प्रयोग की अनुमति दे दी थी।

न्यायाधीशो ने कहा कि अनुच्छेद ३४८ (२) के साविधिक प्रावधानो को निष्प्रभावी करने के लिए उच्च न्यायालय के नियम २ (बी) का प्रयोग नही किया जा सकता है। न्यायाधीशो ने कहा कि नियम २ (बी) को अनुच्छेद ३४८ (२) के अधीन राज्यपाल की अधिसूचना के आलोक मे देखना होगा। इसके अनुसार चुनाव याचिका हिन्दी भाषा मे दाखिल की जा सकती है, लेकिन उच्च न्यायालय के नियम २ (बी) पर अमल नही होने के आधार पर इसे जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा ८५ के तहत शुरू मे ही खारिज नही किया जा सकता है। इस प्रकरण मे महेश्वर विधान सभा सीट पर चुनाव हारने वाले जगदीश ने चुनाव मे भ्रष्ट तरीके अपनाने के आरोप लगाते हुए डा० साढो के निर्वाचन को चुनौती दी थी। श्री जगदीश ने अपनी याचिका और शपथपत्र हिन्दी भाषा मे प्रस्तुत किया था।

(साभार हिन्दुस्तान ९ १ २००१)

भ्रम निवारण

❑ श्री सोहनलाल शारदा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र "आर्य सन्देश" के ५ मार्च सन् २००० के अक मे श्री कवि हरिदत्त जी आर्य समाज प्रशान्त विहार ए ब्लाक दिल्ली-८५ ने "शिव की खोज" शीर्षक कविता के अन्तिम चरण मे कहा है कि

"आखिर पापी जगन्नाथ ने काच पीस कर पिला दिया।"

इस पद्धति मे दो भ्रमपूर्ण शब्दो का समावेश है।

प्रथम "जगन्नाथ" और द्वितीय है "काच पीसकर"।

इसके निवारणार्थ हम महर्षि के समय मे ही जिस जीवन चरित्र के दो खड सवत् १९३८ मे ही प्रकाशित हो गये तथा अन्य तीसरा खड भी स्वर्गारोहण के पश्चात् शीघ्र ही तत्मय प्रकाशित उपलब्ध सामग्री प्राप्त कर सवत् १९४२ विक्रमी मे ही श्री प० गोपालराव हरि प्रणतगर शास्त्री शर्मा ने प्रकाशित किया, प्राचीनतम होने से ही विशेष रूप से प्रमाण भाग मे ही है।

इस पुस्तक के तृतीय खड सप्तम मयूख के "अनिष्टयान" शीर्षक मे जो वर्णन है, उस पर ध्यान देने की कृपा करे। यहा वर्णन है कि "आश्विन कृष्णा एकादशी को श्री स्वमी जी महाराज को जुकाम हो गया। वह शमन नही हुआ और चतुर्थ दिवस आश्विन कृष्णा चतुर्दशी को सवत् १९४० के रात्रि मे घूड मिश्र पाकाध्यक्ष शाहपुरा से दूध पीकर सोये। पीछे श्री स्वामी जी महाराज को रात्रि पर्यन्त तीन वमन हुए।"

यहा "धूड मिश्र" नाम है। इसे हमारे इधर मेवाडी भाषा मे 'धूला' यह नाम ही सर्व व र्णो मे विद्यमान है वर्तमान मे मिश्र कहते है दो कार्य, याने भोजन निर्माण व साथ मे पुरूस्कारी भी कर देवे, उसे उपनाम 'मिश्र' से पुकारते है।

इसी का सकेत करते हुए श्री महाराजाधिराज सर नाहरसिह वर्मा से सी आई ई ने मथुरा जन्म शताब्दी के शुभ अवसर पर अपने भाषण मे जो शताब्दी विशेषाक सार्वदेशिक मे प्रकाशिता है, कहा कि

"स्वामी जी रसोइया हमारे यहा से ले गये थे। वह अभी तक हमारे यहा ही कार्यरत है।"

श्री शाहपुराधीश ने एकमात्र महर्षि के राजनैतिक शिष्य थे। इसी नरेश ने महर्षि के चरणो मे बैठकर मनुस्मृति के सप्तम, अष्टम, नवम तथा पातजल योगशास्त्र व न्यायशास्त्र का भी बहुत कुछ अध्ययन किया था।

इसी नरेश ने शाहपुरा आने पश्चात् धूड मिश्र, जिसे यहा की भाषा म धूला जोशी (ब्राह्मण वर्ग) कहा जाता था, के बयान श्री भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण, जो परोपकारी सभा व आर्य प्रतिनिधि सभा राजसथान तथा वैदिक यत्रालय अजमेर के वरिष्ठ कार्यकर्ता रहे, के द्वारा लिखवाकर पूज्यपाद श्रद्धास्पद स्वामी श्रद्धानन्द जी की सेवा मे प्रस्तुत किये।

श्री स्वामी जी महाराज ने इसे स्नातक मडल गुरुकुल कागडी के मुखपत्र 'अजगर' के सन् १९२५ के मई अक के पृष्ठ सख्या ३७६-३७८ पर प्रकाशित कराया। इसी की समीक्षा श्रद्धेय भवानीलाल भारतीय जी ने 'नवजागरण के पुरोधा' के पृष्ठ सख्या ५३४ पर की है।

यहा वर्णन है कियह "धौल मिश्र" वह यह नाम आर्य भाषा के उर्दू और उर्दू से पुन आर्य भाषा मे लिखने वाले की असावधानी मे धौल मिश्र हुआ है। वास्तव मे इसका नाम धूला जोशी था। अपने बयान मे कहता है कि

"मेरे सिर ाय अन्य कोई भी स्वामी जी के रसोई वन । मे नही था।"

अत रात्रि मे दूध भी इसी रसोइया ने पान कराया ाि। यह स्वत ही सिद्ध है। अन्य कोई था ही नही, अत यही रसोइया धूला जोशी ही था।

आगे जो दुग्ध मे काच (शीशा) पीसकर देना लिखा है, वह अपनी पूर्णतया अल्पज्ञता ही है। इसलिए कि काच घुलनशील पदार्थ ही नही है कि वह दुग्ध मे मिल जाय। सृष्टि नियामानुकूल नही होने से सर्वथा त्याज्य है।

कृपया लेखक महोदय भेडचाल छोड सत्य की परीक्षा कर उसे ही ग्रहण करने का प्रयास करने की कृपा करे। असभव को सभव वा निश्चयात्मक नही लिखे।

वस्तुत सत्य तो वही है जो आर्य मुसाफिर श्री प० लेखराम जी कृत महर्षि जीवन चरित्र मे है। वहा जोधपुर प्रसग मे वर्णन है कि

"मुझको स्वामी जी ने जोधपुर से तार किया या आदमी भेजा है। कथन किया है कि मुझे सखिया दिया गया है। इसका उपचार हो।"

ये शब्द कहे थे आर्य समाज अजमेर केतत्कालीन मत्री श्री कमलचरण शर्मा ने अजमेर के प्रसिद्ध हकीम पीर इमामअली को। पीर इमाम अली स्वय पं० आर्य मुसाफिर जी को कहते है कि "मैने इसके उपचार निमित्त शर्बत आनार वे एक पुडिया औषध की दी थी और यह भी कहा था कि इन्हे अजमेर ले आओ। हम सखिया निकाल देगे।

अत महार्षि के वचनानुसार सखिया ही घुलनशील पदार्थ व सृष्टि-नियमानुकूल है। यही दस ग्राम करीब दूध मे पिला दिया था। निश्चय से है। अत लेखक महोदय अपने लेख पर पुनर्विचार कर शुद्ध सत्य सृष्टि-नियमानुकूल ही लिखने की कृपा करे इसे सुधार कर। सखिया आयुर्वेदानुसार भयकर विष है।

शाहपुरा (भीलवाडा) राजस्थान

भगवान् मनु और यज्ञ

❑ प्रो० जयदेव आर्य

वेदो के बाद आर्य धर्म मे मनुस्मृति का स्थान बहुत ऊचा है। प्राचीन ऋषियो ने माना है कि जो कुछ स्वायम्भुव मनु ने कहा है, वह दवा की भी दवा है।[1] व्यावहारिक रूप मे मनु विश्व के प्रथम सविधान-निर्माता और शासक ऋषि थे। पर आज भी कम्बोडिया की ससद् के द्वार और राजस्थान उच्चन्यायालय के प्रागण मे मनु की प्रतिमा लगी है। स्वय को राम का भक्त कहलवाने वाले लोगो को इस बात का पता होना चाहिए कि राम के सूर्यवश और श्रीकृष्ण के चन्द्रवश— दोनो के मूल पुरुष भगवान् मनु ही थे। मनु के वश मे ही इक्ष्वाकु हुए, जो राम के बहुत पुराने पूर्वज थे। उधर मनु की पुत्री इला के पुत्र होने मे पुरूरवा "ऐल" कहलाते थे, जिनके वश मे ययाति के पुत्र यदु और पुरु हुए। यदु के वशज यादव थे, तो पुरु के वशज दुष्यन्त, जिनके पुत्र 'भरत' के नाम पर इस देश का नाम "भारत" पडा और इसीलिए कौरव और पाडव सभी लोग "भारत" केनाम से पुकारे जाते थे। श्री कृष्ण ने इसीलिए गीता के **"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत"** वाले सर्वप्रसिद्ध श्लोक मे अर्जुन को "हे भारत" कह कर पुकारा है। जब श्री राम ने बाली को मार गिराया, तो बाली ने राम से इसका कारण पूछा। इस पर श्री राम ने अपने इस आचरण के समर्थन मे भगवान् मनु के नाम से दो श्लोक कहे, जो आज भी मनुस्मृति मे पाये जाते है।[2]

श्रीराम के इस उदाहरण से मनु और उनकी मनुस्मृति का महत्त्व सिद्ध होता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने भी अपने सत्यार्थ प्रकाश मे वेद के पश्चात् सबसे अधिक महत्त्व मनुस्मृति को देते हुए उससे अनेक श्लोक उद्धृत किये है। वह मनुस्मृति यज्ञ के विषय मे क्या कहती है, आइये यह देखे— मनुस्मृति ४/२१ मे लिखा है "ऋषियज्ञ देवयज्ञ, भूत (बलि वैश्वदेव) यज्ञ, नृ (अतिथि) यज्ञ तथा पितृयज्ञ को मनुष्य यथाशक्ति कभी न छोडे।"[3]

मनु ४/२५ मे कहा है "दिन और रात्रि के आरम्भ तथा अन्त मे अग्निहोत्र (यज्ञ) तथा प्रत्येक अमावास्या तथा पूर्णमासी को भी "दर्शपूर्णमास" यज्ञ सदा करे।"[4]

मनु ४/१४५ मे कहा है "उत्तम आचार से युक्त हो, सगत आत्मा तथा जितेन्द्रिय होकर आलस्य छोड सदा जप करे और अग्निहोत्र भी करे।"[5]

इस प्रकार मनु ने यज्ञ-हवन, पच महायज्ञ तथा मौन होकर ओकार और गायत्री का जाप करने का विधान सर्वत्र किया है। कहना नही होगा कि मनुस्मृति मे अनेक अश मिलावटी होने पर भी उसमे मूर्ति पूजा तथा ईश्वर के अवतार या उसके साकार होने का कही भी कोई निशान तक नही है।

टिप्पणिया

१ यत्किञ्च वै मनुरवदत् तद् भेषजम् भेषजताया ।

२ (क) श्रूयते मनुना गीतौ श्लोकौ चारित्रवत्सलौ।

गृहीतौ धर्मकुशलैस्तत्तथाचरित हरे॥

वाल्मीकि रा०, किष्किन्धा का० १८ ३०

(ख) 'राजभिर्धृतदण्डास्तु मनु ८/३/१८, शासनाद्वा विमोक्षाद्वा मनु० ८/३/१६, वा० रा० मे कि० १८ ३१-३२

३ ऋषियज्ञ देवयज्ञ भूतयज्ञ च सर्वदा। नृयज्ञ पितृयज्ञ च यथाशक्ति न हापयेत्॥

४ अग्निहोत्र च जुहुयादाद्यन्ते द्युनिशो सदा। दर्शेन चार्द्धमासान्ते पौर्णमासेन चैवहि॥

५ मङ्गलाचारयुक्त स्यात्प्रयतात्मा जितेन्द्रिय । जपेच्च जुहुयाच्चैव नित्यमग्निमतन्द्रित ॥

फ्लैट २४९, कादम्बरी अपार्ट., सै०-९,
रोहिणी, दिल्ली-८५

आर्य लेखकों से निवेदन

आर्य विद्वान् प्राय 'भारद्वाज विमान शास्त्र' का गौरव-गान करते हैं परन्तु स्व० स्वामी सत्यप्रकाश जी ने 'गगाप्रसाद अभिनन्दन ग्रथ' मे उसकी प्रामाणिकता को सदिग्ध माना है। यदि कोई विद्वान् इस विषय मे प्रामाणिक लेख भेज सके, तो सादर आमन्त्रित है। बालोपयोगी आर्य साहित्य भी अपेक्षित है। —*जयदेव आर्य*

(पृष्ठ ५ का शेष)

आर्य समाज की महान् विभूति .....

प्रकाश जी का पर-दु खकातर, कुसुम-कोमल हृदय जहा पीडित व्यक्तियो के कष्ट देख द्रवित हो उठता था, वहीं दूसरी ओर उनका कर्तव्य-परायण हृदय वज्र-सम कठोर हो जाता था और वह नाना कष्टो, क्लेशो, आपद्-विपदाओ और बाधाओ की विशाल वाहिनी का सामना करने हेतु वीरतापूर्वक कटकाकीर्ण पथ पर अबाध गति से बढते चले जाते थे।

साम्प्रदायिक दगे— मुलतान और मालाबार काड

१७ फरवरी १९२२-२३ को काग्रेस द्वारा पोषित खिलाफतनामक मुसलमानो की सस्था द्वारा दिए जाने वाले भाषणो से पजाबी मुसलमानो ने तूफान मचाना आरम्भ कर दिया और बहुत से निरीह हिन्दुओ को बलात् धर्म-परिवर्तन करने हेतु विवश किया। उनके घर लूट लिए गए और जला भी दिए गए। हिन्दू देवियो पर भी नाना असह्य अत्याचार किये गए। इस उत्पात से दुखित श्री प० देवप्रकाश जी ने आर्य समाज मन्दिर, हींग की मडी मे आर्य समाज की बैठक मे निर्णय लिया कि समस्त भारत के प्रतिष्ठित आर्य सज्जनो को आमत्रित किया जाए और उनके मत्परामर्श और सहयोग द्वारा स्थापित एक नवीन सस्था के माध्यम मे विशाल स्तर पर शुद्धि का अभियान सचालित किया जाए। अत १७ फरवरी १९२३ की बैठक मे विशेष आमत्रित श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री लाला खुशहालचन्द जी खुरसन्द तथा अन्य विशिष्ट आर्य सज्जनो की सहमति से “भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा” का सगठन किया गया, जिसके प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, उपप्रधान महात्मा हसराज जी, महामत्री ठाकुर माधोसिह जी, अर्थ मत्री श्री नाथमल जी और मत्री श्री देवप्रकाश जी बनाये गये। प्रस्तुत शुद्धि आन्दोलन मे आगरा, मथुरा, वृन्दावन, भरतपुर, ब्याना, अलीगढ, बुलन्दशहर, पलवल, कोसी, फरीदाबाद, बल्लभगढ, मेरठ, एटा, इटावा, मैनपुरी, कासगज, फर्रुखाबाद, बलिया, गोरखपुर, बदायू, अमेठी, अवध आदि स्थानो के एक लाख से अधिक मलकानो को आर्य धर्म मे दीक्षित किया गया। अखिल भारतीय स्तर पर इस शुद्धि-आन्दोलन का सफल सचालन करते समय श्री प० देवप्रकाश जी की सहायतार्थ कोई क्लर्क भी नही था। उन्हे तीन घटे से अधिक कभी सोने का अवसर नहीं मिलाता था। उस विशाल शुद्धि आन्दोलन के ३०० से अधिक कार्यकर्ताओ का आवागमन प्रतिक्षण बना रहता था और श्री प० देवप्रकाश जी प्रत्येक आने वाले कार्यकर्ता को बिना समय नष्ट किए उसका प्रोग्राम देते और वह सुविधापूर्वक अपने अभीष्ट स्थान पर पहुच जाता।

मीरपुर कोटली मे सहायता-कार्य : जम्मू कश्मीर की उक्त रियासत के मुसलमानो द्वारा हिन्दुओ पर किए गए अमानुषिक अत्याचारो से अवगत होने पर महात्मा हसराज जी अत्यन्त उद्विग्न हो उठे और उन्होने उन पीडित हिन्दू परिवारो की सहायतार्थ पहले मेहता सावनमल जी दत्त, उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को भेजा, पर बाद मे महात्मा हसराज जी के आदेशानुसार श्री प० देवप्रकाश जी भी वहा पहुच गये और उनके आदेशानुसार पीडित हिन्दुओ का कष्ट निवारण करते रहे।

बिहार प्रान्त मे विनाशकारी भूकम्प— १९३४ मे जब कई क्षेत्रो मे प्रलयकारी दृश्य उपस्थित हो गया तब पुन महात्मा हसराज जी के आदेशानुसार प० देवप्रकाश जी अविलम्ब उक्त विपत्तिग्रस्त क्षेत्रो मे सहायता-वितरणार्थ पहुच गये और सीतामढी को कार्यक्षेत्र नियत कर उन्होने अत्यन्त महानुभूति और सद्भावनापूर्वक दक्षता से पीडित जनता की सेवा और सहायता की। बिहार की जनता उनके प्रति सदैव कृतज्ञता प्रदर्शित करती रहेगी। प० जी प्रतिदिन बीसियो मील पैदल चल कर कही कमर तक गहरे पानी मे घुस कर— तो कही रेतीले क्षेत्रो को पार कर सुदूर क्षेत्रो मे सहायतार्थ पहुचते रहे। प० जी के सहायतार्थ उनके साथ डी० ए० वी० कालेज लाहौर के विद्यार्थी भी होते थे। श्री प० देवप्रकाश जी की अभूतपूर्व सेवाओ से कृतज्ञ बिहार की जनता ने अपना आभार प्रदर्शित करने हेतु सार्वजनिक रूप से उनका अभिनन्दन किया और मुद्रित अभिनन्दन-पत्र भी उन्हे भेट किया, जिसमे प० जी के सेवा, चातुर्य अनूठी लगनशीलता एव तप-त्याग की भूरि-भूरि प्रशसा और जगन्नियन्ता से उनकी दीर्घायु के लिए प्रार्थना की गई।

(शेष अगले अक मे)

डी ११३, शिव विहार, रोहतक रोड,
दिल्ली-८७

पाठक कृपया ध्यान दें

नीचे आर्य जगत् के उन ग्राहको की सूची दी जा रही है, जिनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है। कृपया अपना चन्दा तुरन्त भेजे, जिससे आपको 'आर्य जगत्' भेजना जारी रखा जा सके। यह सूची क्रमश प्रकाशित की जायेगी। —प्रबन्धक

ग्राहक स०	समाप्ति की तिथि
३४५६८	२६-६-९९
३४५६९	३०-६-९८
३४५७४	७-७-९९
३४५७५	२१-६-९८
३४५७६	९-७-९८
३४५७७	९-७-९८
३४५७८	९-७-९८
३४५८३	२८-७-९८
३४५८४	२८-७-९८
३४५८६	३१-७-९८
३४५९०	१-८-९८
३४५९४	२६-७-९८
३४५९६	६-८-९८
३४५९९	१२-८-९८
३४६०९	१६-८-९८
३४६१४	२३-८-९८
३४६१६	२६-८-९८
३४६२३	१-९-९८
३४६२४	२-९-९८
३४६३८	८-९-९८
३४६३९	९-९-९८
३४६४१	१२-९-९८
३४६४५	२३-९-९८
३४६४६	२५-९-९८
३४६४८	२९-९-९८
३४६५५	७-१०-९८
३४६५८	३०-११-९८
३४६५९	१३-१०-९८
३४६७९	२२-१०-९८
३४७५८	१९-११-९८
३४७८३	३-११-९८
३४७८६	६-११-९८
३४७८७	६-११-९८
३४७८८	६-११-९८
३४७९१	६-११-९८
३४७९२	६-११-९८
३४७९३	६-११-९८
३४७९४	६-११-९८
३४७९५	६-११-९८
३४७९६	६-११-९८
३४७९८	६-११-९८
३४८००	६-११-९८
३४८०१	६-११-९८
३४८०२	६-११-९८
३४८०३	६-११-९८
३४८०४	६-११-९८
३४८०७	६-११-९८
३४८०८	६-११-९८
३४८०९	६-११-९८
३४८१०	६-११-९८
३४८४१	११-११-९८
३४८४२	११-११-९८
३४८४३	११-११-९८
३४८४४	१-११-९८
३४८४५	११-११-९८
३४८४६	११-११-९८
३४८४७	१५-११-९८
३४८४९	३-११-९८
३४८५०	२०-११-९८
३४८५१	२०-११-९८
३४८५६	८-१२-९८
३४८६१	१०-१२-९८
३४८६४	२२-८-९८
३४८८०	१५-१२-९८
३४८८४	२२-१२-९८
३४८८५	२७-१२-९८
३४८८६	२७-१२-९८
३४८८८	२९-१२-९८
३४८८९	२९-१२-९८
३४८९०	२९-१२-९८
३४८९२	२९-१२-९८
३४८९३	२९-१२-९८
३४८९५	२९-१२-९८
३४८९६	२९-१२-९८
३४८९७	२९-१२-९८

(पृष्ठ ३ का शेष)

क्षत्रिय और ब्राह्मण

देवताओ ने विश्वास नही किया। नई सृष्टि कौन बना सकता है?

पर विश्वामित्र जुट गये। ब्रह्मा ने गाय बनाई थी, उन्होंने भी गाय बनानी चाही। पूरी ठीक नही बनी, नील गाय बनी। घोडा बनाना चाहा, पर बन पाया गधा। आदमी बनाने का यत्न किया, पर बन गया चिम्पाजी। विश्वामित्र जुटे रहे।

देवता काप उठे। यदि यह महाव्रती इसी तरह लगा रहा, तो यह न केवल नई पृथ्वी बना लेगा, अपितु नया स्वर्ग, नया इन्द्र और नये देवता भी बना लेगा। माना कि वे घटिया होगे, परन्तु यदि वे बन गये तो भारी सकट उपस्थित हो जायेगा। आधी दुनिया उन्हे पूजने लगेगी।

देवताओ ने लल्लो-चप्पो करके विश्वामित्र को मनाया कि वह नई सृष्टि का निर्माण न करे। यह तय हुआ कि राजा त्रिशकु को भूमि पर नही लौटना होगा, वह जहा है, वही अन्तरिक्ष मे बने रहेगे।

ऐसे दृढ-सकल्प और अथक उद्यमी थे, ऋषि विश्वामित्र। अन्त मे उनके प्रतिद्वन्द्वी वशिष्ठ को भी मानना पडा कि **वह ब्रह्मर्षि बन गये है। क्षत्रिय के ब्राह्मण** बनने का यह शायद पहला उदाहरण था।

सफलता मिली

फिर भी विश्वमित्र और विश्वामित्र का अन्तर तो बना ही रहा। अन्त मे व्याकरण-गुरु पाणिनि को अपनी अष्टाध्यायी मे एक सूत्र लिखना पडा **विश्वामित्रे चर्षो**। (विश्वामित्र शब्द यदि ऋषि के लिए प्रयुक्त हुआ हो, तो भी उसका अर्थ विश्वमित्र ही रहता है।)

सच तो यह है कि ब्रह्म और क्षत्र को पूरी तरह अलग कर पाना कठिन है। हर व्यक्ति मे ब्रह्म और क्षत्र, दोनो ही कुछ कुछ मात्रा मे मिले रहते है। वैश्यत्व और शूद्रत्व भी हर व्यक्ति मे रहता है। किसमे किसकी मात्रा अधिक है, इसी पर व्यक्ति का वर्ण नियत होता है। ये मात्राए परिस्थितियो और व्यक्ति के प्रयत्नो या प्रमाद के कारण घटती बढती रहती हैं। उसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति न केवल ब्राह्मण से शूद्र बन सकता है, अपितु देवता मे राक्षस भी बन जाता है। इसी प्रकार राक्षसो का भी देवताओ मे रूपान्तर सभव है और इतिहास तथा पुराण कथाओ मे होता भी रहा है।

(पृष्ठ १ का शेष)

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी .....

किया और इस आयोजन का सयोजक मुझे बनाया गया। यह आयोजन दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान मे, जिसके एक कोने मे अब डाक्टर मुखर्जी की प्रतिमा लगी हुई है, हुआ।

डाक्टर मुखर्जी ने उस अवसर पर दिये गये अपने भाषण मे श्री नेहरू की साम्प्रदायिक और राष्ट्रहित के प्रतिकूल नीतियो का खुलासा किया और घोषणा की कि काग्रेस का विकल्प बनाने के लिए उन्हे सारे राष्ट्रवादी तत्वो और सगठनो, विशेष रूप से राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ और आर्य समाज के सहयोग की अपेक्षा है। आर्य समाज ने तो चद दिनो मे ही प्रस्तावित दल को पूरा समर्थन देने का फैसला कर डाक्टर मुखर्जी को उससे अवगत करा दिया, परन्तु राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के नेता शीघ्र कोई सकारात्मक निर्णय नही कर पाए। जब १९५० के अन्त तक सघ की ओर से कोई सकारात्मक उत्तर नही मिला, तब डाक्टर मुखर्जी ने १९५१ के शुरू मे अपने नये दल की घोषणा कर दी। इसका नाम "पीपल्स पार्टी" रखा गया।

इसके बाद सघ के अधिकारियो को लगा कि उन्हे अपना फैसला करने मे और विलम्ब नही करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सघ नये दल को पूरा सहयोग देगा। साथ ही कहा कि सघ के लोग चाहते है कि नये दल का झडा भगवा अथवा केसरिया हो और इसका नाम हिन्दी मे हो। डाक्टर मुखर्जी ने ये दोनो सुझाव सहर्ष मान लिये। दल का नाम भारतीय जनसघ रखने का फैसला किया गया। इस नाम का प्रस्ताव भी डा० मुखर्जी ने किया।

दृढ आत्मविश्वास

जनसघ के बनते ही श्री नेहरू ने इसे अपने और काग्रेस के लिए प्रमुख चुनौती मानकर इसे अपना निशाना बनाया। वे इसे एक प्रतिक्रियावादी, साम्प्रदायिक और मुस्लिम विरोधी दल कहते थे और अपने हर भाषण मे इन आरोपो को दोहराते थे। डा० मुखर्जी इन आरोपो और आलोचनाओ का नोटिस भी नही लेते थे। एक दिन मैने उनसे कहा कि वह नेहरू के आरोपो का खडन क्यो नही करते? उनका उत्तर बडा सारगर्भित और आत्मविश्वासपूर्ण था नेहरू स्वय साम्प्रदायिक और मुस्लिमपरस्त है। वह आत्मकेन्द्रित है और राष्ट्रवादी भावना उसमे है नही। जनसघ राष्ट्रवादी है और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखेगा। इसलिए नेहरू की आलोचना पर ध्यान न दो। उनके जनसघ पर आरोप एक बीमार और आत्मविस्मृत मानस की बहक मात्र हैं। वास्तव मे हमे उसका आभारी होना चाहिए। उसके द्वारा जनसघ को अपना प्रमुख विरोधी सिद्ध करने और इसकी प्रतिदिन आलोचना करने से मीडिया मे जनसघ का नाम तो छपता है और हमारा प्रचार होता है। वह हमारे अवैतनिक प्रचार मत्री का काम कर रहा है। बाद मे यही बात उन्होने एक सार्वजनिक भाषण मे भी कही। एक और भाषण मे उन्होने कहा 'जब मै भारत के इतिहास पर दृष्टि डालता हू, तो मुझे एक भी व्यक्ति नजर नही आता, जिसने भारत का इतना अहित किया हो जितना नेहरू कर रहा है।'

परन्तु हमारे जीते कुल ३ उम्मीदवार। वे थे डा० मुखर्जी, बैरिस्टर उमाशकर त्रिवेदी और श्री बैनर्जी। यह सख्या निराशाजनक थी। परन्तु ससद् का सत्र शुरू होते ही एक महीने के अन्दर डा० मुखर्जी ने जिस प्रकार अनेक छोटे दलो और कुछ स्वतत्र सदस्यो को मिलाकर लोकसभा मे 'राष्ट्रीय लोकतात्रिक पार्टी' का गठन कर दिया, वह एक अभूतपूर्व घटना थी। इस काम के लिए मै लगातार उनके साथ घूमता रहा। जब यह ससदीय पार्टी बन गई, तो इसकी सदस्य सख्या कम्यूनिस्ट पार्टी के २९ सदस्यो से अधिक हो गई और इसके नेता के रूप मे डा० मुखर्जी लोकसभा मे विपक्ष के नेता माने जाने लगे। उनकी सगठन कुशलता और विभिन्न प्रकार के लोगो को एक साथ जोडने और अपने साथ लेकर चलने की क्षमता से मेरे जैसे युवा कार्यकर्ता दग रह गए।

अशोक मेहता की पेशकश

कुछ समय के बाद प्रजा समाजवादी पार्टी के ससद् मे नेता श्री अशोक मेहता ने उन्हे पेशकश की कि यदि वह हिन्दू सभा को अलग कर दे, तो उनकी पार्टी भी ससदीय पार्टी मे शामिल हो जाएगी, जिससे उन्हे विपक्ष के नेता की सरकारी तौर पर मान्यता मिल जाएगी और उन्हे कैबिनेट मत्री का पद तथा सारी सुविधाए मिल जाएगी। डा० मुखर्जी ने इस पेशकश को ठुकरा दिया। उन्होंने अशोक मेहता को स्पष्ट शब्दो मे कहा कि वह स्वय भी भारत को हिन्दू राष्ट्र मानते है और हिन्दू सभा को साम्प्रदायिक नही मानते। इस प्रकार जैसे उन्होने १९५० मे सिद्धान्त के लिए मत्री पद को लात मार दी थी, वैसे ही अब उन्होंने सिद्धान्त के लिए इस पेशकश को भी स्वीकार नही किया।

एक वर्ष के अन्दर विपक्ष के गैर-सरकारी नेता के रूप मे डा० मुखर्जी की ससद् मे ऐसी धाक जम गई कि न केवल अनेक सासद, अपितु जनसाधारण भी उन्हे प्रधानमत्री पद के लिए नेहरू का विकल्प मानने लगे और जनसघ का प्रभाव तेजी से बढने लगा।

जुलाई १९५२ मे वह पहली बार जम्मू कश्मीर की स्थिति का अध्ययन करने के लिए जम्मू और श्रीनगर गए। मै उनके साथ गया। सीमावर्ती नगर कठुआ से लेकर जम्मू तक ५५ मील की यात्रा मे जम्मू की जनता ने उनका अभूतपूर्व स्वागत किया और

एक देश मे दो विधान,
एक देश मे दो निशान,
एक देश मे दो प्रधान,
नहीं चलेगे, नहीं चलेंगे।

आदि राष्ट्रभक्तिपूर्ण नारो से वातावरण को गुजा दिया। उससे डा० मुखर्जी बहुत प्रभावित हुए और उन्होने उनकी इन राष्ट्रभक्तिपूर्ण मागो को मनवाने का भरसक प्रयत्न करने और उसके लिए अपना सर्वस्व होम देने का आश्वासन देकर जम्मू के लोगो को प्रफुल्लित कर दिया।

कश्मीर को विशेष दर्जा मत दो

१९५३ के शुरू मे प्रजा परिषद् ने इस माग को मनवाने के लिए जम्मू मे सत्याग्रह शुरू कर दिया और जनसघ ने इसे देशव्यापी बनाने का फैसला किया। कानपुर मे इसके सचालन की जिम्मेदारी मुझ पर डाली गई। परन्तु दिल्ली लौटते ही सरकार ने मुझे गिरफ्तार करके अबाला सैंट्रल जेल मे नजरबद कर दिया। जब मेरी हेबियस कारपस याचिका को स्वीकार करके सुप्रीम कोर्ट ने मुझे मई के शुरू मे रिहा कर दिया तब जम्मू सत्याग्रह जोरो पर था और वहा पर २० से अधिक सत्याग्रही शहीद हो चुके थे। जम्मू के लोगो और विशेष रूप से पडित प्रेमनाथ डोगरा की इच्छा थी कि डा० मुखर्जी स्थिति को देखने के लिए पुन जम्मू आए। मेरे आग्रह पर ससद् का बजट सत्र खत्म होने के बाद डा० मुखर्जी ने पुन जम्मू जाने की स्वीकृति दे दी।

श्रीमती सुचेता की चेतावनी

डा० मुखर्जी के जम्मू जाने के प्रोग्राम से जम्मू मे तो आशा की लहर दौड गई, परन्तु काग्रेस के कुछ राष्ट्रभक्त लोगो के मनो मे चिन्ता पैदा हो गई। श्रीमती सुचेता कृपलानी ने, जो लोकसभा की सदस्या भी थीं, स्वय डा० मुखर्जी को मिल कर अपनी इस चिता से अवगत कराया। उनका कहना था कि नेहरू उनके बढते प्रभाव और लोकप्रियता से घबराने लगे है और वह कश्मीर मे आपको जीवित लौटने नही देगे। इस पर डा० मुखर्जी ने श्रीमती सुचेता को कहा कि उनका नेहरू से कोई व्यक्तिगत वैर या वैमनस्य नही है और वह उनकी आलोचना नीतिगत आधार पर करते है, व्यक्तिगत आधार पर नही। इस पर श्रीमती कृपलानी ने उन्हे कहा कि वह नेहरू को नही जानते। श्रीमती कृपलानी के अनुसार नेहरू उनसे ईर्ष्या भी करता है और उसमे उनके मुकाबले मे हीन भावना भी है। ऐसा व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। कुछ और लोगो ने भी डा० मुखर्जी को न जाने की सलाह दी। परन्तु वह अपने जाने के फैसले पर अडिग रहे।

बलि पथ पर

१३ मई १९५३ को हम दिल्ली से निकले। उनके साथ दिल्ली प्रदेश जनसघ के अध्यक्ष वैद्य गुरुदत्त और मै था। वीर अर्जुन दैनिक के एक प्रतिनिधि श्री टेकचद शर्मा भी हमारे साथ गये। श्री अटल बिहारी वाजपेयी उन दिनो वीर अर्जुन मे सह-सम्पादक का कार्य करते थे। तब तक वे जनसघ मे शामिल नही हुए थे। रास्ते मे हर स्टेशन पर डा० साहब का स्वागत हुआ। उस रात हम अम्बाला मे रहे। वहा उन्होने एक बडी जनसभा को भी सम्बोधित किया। दूसरे दिन दोपहर तक हम जालधर पहुच गये। वहा डा० साहब को गुरदासपुर जिले मे ही तार मिला, जिसमे कहा गया था कि उन्हे बिना परमिट जम्मू नही जाने दिया जाएगा और गुरदासपुर जिले मे ही उन्हे गिरफ्तार कर लिया जाएगा। पठानकोट गुरदासपुर जिले मे ही पडता है। तब तक जालधर से पठानकोट तक सीधी रेल लाइन नही बनी थी। इसलिए पठानकोट जाने के लिए रेलगाडी को अमृतसर और गुरदासपुर होकर जाना पडता था।

यह तार मिलने के बाद डा० मुखर्जी ने मुझे कहा कि क्योकि अब यह तय है कि मै जम्मू नही जा सकता, इसलिए तुम दिल्ली लौट जाओ और सत्याग्रह का सचालन करो। मै जालन्धर से लौट आया।

उन्हे गुरदासपुर जिले मे ही गिरफ्तार न करके जम्मू की सीमा के अन्दर लाने का फैसला कब और क्यो किया गया, इसकी तब मुझे कोई जानकारी नही थी। यह बाद मे पता लगा कि यह एक सोच समझे षड्यत्र का अग था। यदि वह पजाब मे पकड लिये जाते, तो निश्चित ही सुप्रीम कोर्ट उन्हे शीघ्र छोड देता। तब तक जम्मू कश्मीर सुप्रीम कोर्ट के अधिकार—क्षेत्र से बाहर था। इसलिए रियासत मे पकडे जाने के बाद उन्हे शीघ्र छुडा पाना सभव न होता।

नेहरू जी ने जाच भी नही होने दी

दिल्ली लौटने पर मुझे फिर बदी बनाकर दिल्ली की तिहाड जेल मे नजरबद कर दिया गया। उसके बाद मुझे उनकी मृत्यु का ही समाचार मिला। जेल से छूटने और शेख अब्दुल्ला की गिरफ्तारी के बाद मै जम्मू और श्रीनगर गया। बैरिस्टर त्रिवेदी, जो कश्मीर हाई कोर्ट मे उनकी हैबियस कारपस याचिका के लिए श्रीनगर गये थे, वैद्य गुरुदत्त और पडित प्रेमनाथ डोगरा से भी मैने जानकारी ली। अपनी छानबीन के निष्कर्ष पर मैने अपने द्वारा लिखित डा० मुखर्जी की जीवनी मे जो कुछ लिखा हुआ है, उसका सार यह है कि वह मरे नही, मारे गये थे। उनकी मैडिकल हत्या की गई थी। उनकी रहस्यमय मृत्यु की अदालती जाच की ससद् के अन्दर और बाहर लगभग सर्वसम्मत माग की गई, फिर भी नेहरू जी ने जाच नही होने दी। इससे यह सदेह और पक्का हुआ कि डा० मुखर्जी अब्दुल्ला-नेहरू षड्यत्र का शिकार हुए।

कश्मीर को भारत का अभिन्न अग बनाये रखने का दृढ सकल्प ही उनके प्रति उचित श्रद्धाजलि हो सकती है।

जे-३९४, शकर रोड, नई दिल्ली-६०

समाचार जगत्

आर्य समाज डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, सैनिक कालोनी, सें०-८९ फरीदाबाद

जात पात, दहेज, अन्धविश्वास, भ्रष्टाचार इत्यादि बुराइयो को दूर करने के लिए निम्न कार्यक्रम विद्यालय मे चलाये जाते है

१ विद्यालय मे प्रात कालीन सभा वैदिक मत्रो के द्वारा प्रारम्भ होती है।

२ सप्ताह मे एक दिन हवन होता है, जिसमे सभी अध्यापक एव अध्यापिकाए भाग लेती है और छात्रो को वैदिक सिद्धान्तो के बारे मे बताया जाता है।

३ वर्ष मे दो बार छात्रो मे वैदिक ज्ञान प्रदान करने के लिए चरित्र-निर्माण सप्ताह का आयोजन किया जाता है।

४ आर्य सस्कृति से जुडे सभी पर्वो और महापुरुषो के जन्मदिन, आर्य समाज स्थापना दिवस बडे हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते है।

५ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस और ऋषि बोधोत्सव पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जाते है।

६ विद्यालय मे समय समय पर छात्रो को वैदिक सस्कृति एव भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास, जात-पात इत्यादि बुराइयो से अवगत कराने के लिए विद्वानो को आमत्रित किया जाता है।

भारत की अखडता को खतरा

कश्मीर मे पिछले २ मास से हमारे सुरक्षा बल आतकवादियो को ठिकाने लगाने मे बहुत प्रशसनीय काम कर रहे थे। कभी ८, कभी १०, कभी १५-१५ और २०-२० आतकी मारे जाने के समाचार आ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि यदि २, ३ मास और ऐसा चलता रहा तो जम्मू कश्मीर मे आतकवाद का मूलोच्छेद हो जायेगा, डोडा आदि स्थानो के हिन्दू जो हताश, निराश होकर पलायन करने लगे थे, अब आश्वस्त होने लगे थे। किन्तु आतकवादियो को मरते देख हमारे कुछ नेताओ के पेट मे दर्द होने लगता है। हमारे प्रधानमत्री श्री वाजपेयी जी भी, पता नही क्यो, सदा पाकिस्तानी तत्वो को प्रसन्न करने मे अलौकिक आनन्द का अनुभव करते है। दिल्ली के शाही इमाम, जमायते इस्लामी और नेशनल कान्फ्रेस के नेताओ मुफ्ती मोहम्मद सईद, फारूक अब्दुल्ला, श्री जार्ज फर्नांडीस और न जाने किन किन का दबाव प्रधान मत्री जी पर पडा कि उन्होने रमजान के महीने के नाम से युद्ध-विराम की घोषणा करके उग्रवादियो को अभयदान दे दिया, ताकि कम से कम एक महीने तो उन्हे फिर से सगठित होने, नये सिरे से युद्ध की तैयारी करने का समय मिले। अब जबकि उग्रवादियो के पाव उखड गये थे, उनका दम फूलने लगा था, आई एस आई परेशान थी और भारतीय सैनिक पूरे मनोबल और उत्साह से अपने मिशन को पूरा करने के निकट थे, प्रधानमत्री जी की घोषणा से सारा खेल बिगड गया। इस युद्ध-विराम से जितना नुकसान पहुचा है उतना शायद किसी और बात से नहीं। जनवरी १९४९ मे जवाहलाल नेहरू ने युद्ध-विराम की घोषणा करके एक तिहाई कश्मीर पर पाकिस्तानी कब्जे की मोहर लगा दी थी। नागालैड मे युद्ध विरामो ने ही वहा ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि कहने को वह भारत का भाग है, किन्तु सत्ता चर्च-प्रेरित उग्रवादियो की है।

लोग सोचने लगे है कि क्या हमारे वर्तमान प्रधानमत्री और रक्षा मत्री के हाथो मे भारत की अखडता सुरक्षित है?

ईश्वर निराकार और अजन्मा है

आर्य समाज प्रतापनगर दिल्ली के प्रागण मे आयोजित सत्सग समारोह मे कवि प नन्दलाल निर्भय शास्त्री ने अपने भजनोपदेश मे श्रोताओ को बताया कि ईश्वर तो निराकार और अजन्मा है, वह ज्ञान रूपी चक्षुओ से नजर आता है। इन चर्म-चक्षुओ से तो केवल कुछ साकार वस्तुए ही नजर आती है। परमात्मा योगियो को दर्शन देता है, रोगियो और भोगियो को नही दीखता।

श्री ओम्प्रकाश शास्त्री गाधी नगर, दिल्ली ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को महान् ईश्वरभक्त बताया। उन्होने ही विश्व को पुन वेदो का पावन ज्ञान दिया था। ससार सदैव महर्षि का ऋणी रहेगा।

श्री वीरेन्द्र शास्त्री पुरोहित प्रतापनगर ने ईश्वर-भक्ति व महर्षि दयानन्द जी की महिमा के भजन सुनाए। कई युवको ने धूम्रपान छोडने का व्रत लिया।

अन्त मे श्री छावडा जी प्रधान आर्य समाज ने सभी उपदेशको का धन्यवाद किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने नाम के पूर्व झारखड राज्य जोड़ा

छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा राची ने आर्य समाज राची मे सम्पन्न अपनी अन्तरग बैठक मे सर्वसम्मति से निश्चय किया है कि बिहार के छोटानागपुर क्षेत्र के पृथक् झारखड राज्य बन जाने के कारण इस क्षेत्र मे कार्यरत इस सभा का नाम बदलकर अब झारखड राज्य आर्यप्रतिनिधि सभा कर दिया जाय। बैठक मे यह भी निश्चय हुआ कि सस्था के नाम-परिवर्तन की सूचना निबधन कार्यालय को भी दी जाय। अन्तरग बैठक मे झारखड मे आर्य समाज की गतिविधियो को आगे बढाने के साथ साथ लोहरदगा मे आर्य समाज द्वारा सचालित गुरुकुल की उन्नति के लिये प्रतिनिधि सभा द्वारा हर सम्भव सहयोग करने का निश्चय किया गया। स्मरणीय है कि सन् १९८७ ई० मे ही झारखड की आर्य समाजो ने पृथक् प्रतिनिधि सभा का निर्माण किया था। झारखड राज्य मे एक सौ से भी अधिक आर्य समाजे है। इनकी सही स्थिति की जानकारी और इनकी समस्याओ के समाधान के लिये प्रतिनिधि सभा ने विशेष प्रयत्न करने का निश्चय किया है। झारखड आर्य प्रतिनिधि सभा ने आशा प्रकट की है कि बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा पटना और सार्वदेशिक (अन्तरराष्ट्रीय) आर्य प्रतिनिधि सभा इस प्रतिनिधि सभा को अपना सहयोग प्रदान करेगी। झारखड आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाजो से भी अनुरोध किया है कि वे अपने साधनो से आर्य समाज के आन्दोलन को आगे बढाए।

आर्य जगत् साप्ताहिक पत्र के सम्बन्ध मे सुझाव

आपने हमसे आर्य जगत् नामक साप्ताहिक पत्र को रोचक, आकर्षक एव गरिमामय बनाने के लिए सुझाव मागे है। आपका यह प्रयास सराहनीय है। निम्न सुझाव प्रेषित है

१ विद्वानो, विचारको द्वारा प्रस्तुत खोजपूर्ण लेखो को पूर्ववत् प्रमुख स्थान दिया जाये।

२ आदर्श महान पुरुषो के जीवन चरित्रो से सम्बन्धित घटनाओ को प्रत्येक अक मे अनिवार्यता से स्थान प्रदान किया जाये।

३ समय समय पर वेदमत्रो के शीर्षक सहित अर्थ, व्याख्या प्रस्तुत की जाये। आध्यात्मिक लेखो का समावेश भी आवश्यक है।

४ दीपावली पर महर्षि दयानन्द विशेषाक, हसराज दिवस पर हसराज विशेषाक, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर श्रद्धानन्द विशेषाक, आकर्षक लेखो, कविताओ एव चित्रो सहित प्रकाशित किये जाये।

५ वर्तमान समय के अनुभवी, ज्ञानवृद्ध आर्य भद्र पुरुषो के साक्षात्कार प्रकाशित किये जाए।

६ डी० ए० वी० एव आर्य समाज की ससार भर मे होने वाली गतिविधियो का पूर्ववत् आकर्षक चित्रो सहित विवरण दिया जाये।

७ आर्य जगत् से सम्बन्धित समस्त पत्र व्यवहार आर्य भाषा अर्थात् हिन्दी भाषा मे ही होना चाहिये।

चित्रा नाकरा, प्रचार्या

प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा श्री ए० आर० कोहली को बधाई

पूर्व प्रशासनिक सेवा अधिकारी तथा वर्तमान समय मे डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के अन्तर्गत डी० ए० वी० इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेट के प्रिंसिपल डाइरेक्टर श्री ए० आर० कोहली को मिजोरम प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किए जाने पर डी० ए० वी० कालेज मैनेजिग कमेटी कर्मचारी यूनियन की ओर से भारत के प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को बधाई दी गई है।

प्रधानमत्री के नाम भेजे गए बधाई पत्र मे यूनियन के प्रधान श्री सोहनलाल 'मधुप' तथा महासचिव श्री अशोक बसल ने अपने सयुक्त वक्तव्य मे कहा है कि मिजोरम प्रदेश के राज्यपाल जैसे प्रतिष्ठित पद पर श्री कोहली की नियुक्ति से समस्त डी० ए० वी० परिवार का गौरव बढा है।

अपने सयुक्त वक्तव्य मे दोनो नेताओ ने श्री कोहली को भी इस सम्मानपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित किए जाने पर उन्हे डी० ए० वी० कालेज मैनेजिग कमेटी कर्मचारी यूनियन की ओर से हार्दिक बधाई दी है।

धर्मशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण--प्रवेश सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के तत्वावधान मे डी० ए० वी० नैतिक शिक्षासस्थान द्वारा वर्ष २००१-२००२ के लिए १४ जुलाई २००१ तक प्रार्थना पत्र आमत्रित है। १४ जुलाई २००१ को सायकाल ५ बजे तक प्रार्थना पत्र लिये जायेगे। प्रार्थी की योग्यता शास्त्री, सस्कृत एम० ए०, आचार्य होगी। प्रार्थी की पृष्ठभूमि आर्यसमाजी होनी चाहिए।

मूल प्रमाण पत्रो सहित २८ जुलाई प्रात ९ बजे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे पहुचने का कष्ट करे। प्रात ९ ३० बजे लिखित परीक्षा होगी। लिखित परीक्षा मे उत्तीर्ण प्रार्थी ही दोपहर २ बजे साक्षात्कार मे सम्मिलित होगे। धर्मशिक्षक का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् "धर्म मार्तण्ड' की उपाधि दी जायेगी। प्रशिक्षण काल मे आवास, भोजन, बिजली, पानी की नि शुल्क सुविधा होगी। पुस्तके भी नि शुल्क दी जायेगी। प्रशिक्षण के पश्चात् डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल मे धर्मशिक्षक ही नियुक्त किया जायेगा। अधोहस्ताक्षरी के नाम आवेदन करे

प्रबोध महाजन
महामत्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६३७१८, ३३६२११०

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R No D L 11082/2001
POSTED AT N D P O ON 27/28-6-2001 दिनांक १-७-२००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

२८ अप्रैल २००१ की गोष्ठी मे कार्यक्रम पत्र स्वीकृत हुआ

आर्य समाज की गतिविधियो पर विचार करने तथा उन्हे आज की आवश्यकताओ के और अधिक अनुरूप बनाने के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने वर्ष १९९९-२००० मे तीन गोष्ठिया कीं। इनमे अनेक विद्वानो ने अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किये। आ० प्रा० प्र० सभा ने इन सभी सुझावो पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया। ये सुझाव मुख्यतया समाज सुधार तथा वेद प्रचार के विषय मे है। इन सुझावो मे इस बात पर जोर दिया गया है कि आर्य समाज सामाजिक सुधारो के मामले मे सदा सबसे आगे रहा है और राष्ट्रीय आपदाओ के समय महत्वपूर्ण राहत कार्य करता रहा है। इसलिए आपके विचार के लिए निम्नलिखित दो विषय प्रस्तुत किये जा रहे है।

१ **सामाजिक सुधार**—दहेज, जात-पात तथा भ्रष्टाचार के विरोध मे जन चेतना जगाई जाये।

२ **वेद प्रचार**— युवा वर्ग मे (विद्यालयो और महाविद्यालयो मे)।

आज की इस सभा मे इन विषयो पर विचार विमर्श करके यह निश्चय करना है कि इन सुझावो को किस प्रकार क्रियान्वित किया जाये। यह विचार विमर्श परिणाम-उन्मुख होना चाहिए। कुछ विचारणीय विषय निम्नलिखित है

क. कार्य क्षेत्र ये हो सकते है
(अ) **आर्य समाज मन्दिर**
(ख) **हमारी शिक्षा सस्थाए**

आर्य समाज मन्दिर हमारी गतिविधियो के मूल केन्द्र है। परन्तु इस समय दुर्भाग्य से अधिकाश समाजे अधिकतर वृद्ध सज्जनो के सहारे टिकी है। समाजो मे आने वालो की सख्या कम और कम होती जा रही है, इसलिए अधिकाश आर्य समाजे अपनी गतिविधियो को प्रभावशाली ढग से बढा नही पा रही है। सच तो यह है कि वे घट रही है।

दूसरा कार्य क्षेत्र है हमारी शिक्षा सस्थाए। ध्यान से देखा जाये तो पता चलेगा कि हमारे विद्यालयो और महाविद्यालयो मे छात्रो के रूप मे विशाल सभावित ऊर्जा विद्यमान है, जिसका उपयोग किया जा सकता है। प्रश्न केवल इतना है कि हम उसमे मे कितनी का उपयोग कर पाते है। इसके लिए आवश्यकता है समर्पण और प्रेरणा की। बडी सुविधा यह है कि विद्यालयो मे हमारे पास आधारभूत ढाचा विद्यमान है। इस क्षेत्र को और भी निम्नलिखित श्रेणियो मे बाटा जा सकता है

(i) अध्यापक और वरिष्ठ छात्र— सामाजिक सुधारो तथा वेद प्रचार के लिए।

(ii) कनिष्ठ छात्र— नैतिक शिक्षा के लिए (यह कार्य विद्यालयो मे किया जा रहा है।)

कार्य योजना—इस कार्य योजना को व्यावहारिक रूप देने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने के विषय मे विचार किया जा सकता है

१ कुछ एक ऐसे विद्वानो ओर सेवा-निवृत्त प्राचार्यो का चयन, जो अच्छे भाषण दे सके। वक्ता प्रतिभाशाली होने चाहिए।

२ विद्यालयो मे शिविर-प्रणाली को प्रोत्साहन देना और उसका विस्तार। इस समय होता यह है कि शिविर मे भाग लेने वाले लोग शिविर के बाद शिविर से कोई वास्ता नहीं रखते। कुछ ऐसे उपाय किये जाने चाहिए, जिससे बाद मे भी आर्यकुमार सभा और आर्य युवक समाज का सगठन करके उनके साथ पूरे साल नियमित सम्पर्क बनाये रखा जाय।

३ यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे समाज मे फैली कुरीतियो को हटाने के लिए स्वामी दयानन्द के सुधार आन्दोलन पर जोर दिया जाये। हमारे युवाओ, अभिभावको और शिक्षकेतर कर्मचारी वर्ग को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने का यह एक उपाय हो सकता है।

४ धर्म शिक्षा का इस समय जो रूप है, उसे और उन्नत करने की आवश्यकता है। विद्यालयो और महाविद्यालयो के प्राचार्यो के लिए भी शिविर लगाये जाने चाहिए।

५ जनसाधारण मे चेतना जगाने के लिए हमे हिन्दी, अग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओ मे भी सरल और आकर्षक पुस्तिकाए छापनी चाहिए, जिसमे वैदिक ज्ञान तथा स्वामी दयानन्द की शिक्षाओ को सही ढग से दर्शाया गया हो।

६ धर्मशिक्षा की पुस्तको तथा साहित्य की इस दृष्टि से समीक्षा की जाये कि सरल भाषा और क्रियात्मक शैली द्वारा वह बच्चो के लिए और अधिक रोचक बन जाए।

७ ५ से १५ वर्ष की आयु वर्ग के सभी विद्यार्थियो के लिए, हमारे उन सभी विद्यालयो मे, जहा अभी तक यह नही हो रहा, नैतिक तथा चरित्र निर्माण कार्यक्रम पर जोर दिया जाये।

८ हमे अपने सभी हिन्दी, सस्कृत, सगीत तथा अन्य विषयो के शिक्षको को धर्मशिक्षा का प्रशिक्षण देना चाहिए। सगीत महर्षि दयानन्द सरस्वती के सदेश का शक्तिशाली माध्यम हो सकता है।

९ टी वी चैनलो पर विचार गोष्ठिया आयोजित की जाये।

१० आर्य समाज और डी० ए० वी० के हमारे राष्ट्रीय नेताओं के उपदेश और लेख हमारे विद्यालयो और महाविद्यालयो के पाठ्यक्रम की न केवल हिन्दी, पजाबी और अग्रेजी की, अपितु धर्म शिक्षा तथा सामाजिक अध्ययन जैसे अन्य विषयो की पाठ्यपुस्तको मे भी सम्मिलित किये जाये, जैसे कि इसके साथ सलग्न महात्मा हसराज के लेखो की पुस्तिका तथा छोटी कहानियो की पुस्तिकाए।

११ व्यावसायिक प्रशिक्षण की और जो लोग बीच मे ही पढाई छोड बैठते है, ऐसे वयस्क लोगो को शिक्षा देने के लिए सस्थाए खोली जाये, और मानसिक दृष्टि से पिछडे और गरीब बच्चो के लिए भी।

१२ देशभक्ति, सादा जीवन और उच्च विचार नित्य प्रति की सच्ची शिक्षा हो।

यह कार्यक्रम पत्र आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

आर्य विद्वानों, लेखकों, वक्ताओं व शोधकर्ताओं से अपील

प्रादेशिक सभा द्वारा स्वीकृत तथा इसी पृष्ठ पर मुद्रित 'कार्यक्रम-पत्र' आपने पढा। सभा ने इस कार्यक्रम को मूर्तरूप देने के लिए भी कुछ पग उठाए है। उनमे एक है— आर्य समाज सै-६, रामकृष्णपुरम् मे स्थापित **'वैदिक अनुसधान केन्द्र व पुस्तकालय', जिसके माध्यम से एक अच्छा पुस्तक-सग्रह बनाना और अच्छा प्रचार-साहित्य भी लिखवा कर प्रकाशित** व प्रचारित करना प्रस्तावित है। साथ ही डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ के प्राचार्यो, अध्यापकों, विद्यार्थियो तथा कर्मचारियो के शिविर व गोष्ठिया आयोजित करना। इसी वर्ष जुलाई के मध्य मे दिल्ली के विद्यालयो से चुने हुए प्राचार्यो की एक तीन दिवसीय गोष्ठी का कार्यक्रम बनाया गया है, जिसमे वेद से आरम्भ कर सत्यार्थप्रकाश तक आर्यसमाज के सभी मान्य ग्रथो तथा आर्यसमाज के इतिहास आदि का आरम्भिक स्तर पर पूर्ण परिचय दिया जायगा और विद्यार्थियो तक इस सदेश को पहुचाने के व्यावहारिक उपायो पर गम्भीर चर्चा होगी।

इन सब तथा अन्य कार्यो को सुचारु रूप से चलाने के लिए शीर्षक मे दिये सभी वर्गो के आर्य महानुभावो के पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता है, जो अवैतनिक या वैतनिक रूप से या मानदेय के रूप मे कुछ राशि लेकर इस 'कार्यक्रम-पत्र' के कार्यो की पूर्ति मे सहायक हो सके। कुछ लोग सरल-सुबोध तथा रोचक भाषा/शैली मे छोटे-बडे ट्रैक्ट/ग्रथ लिखें तथा कुछ लोग मौलिक शोध— (यथा 'वेदों मे विज्ञान') परक पुस्तकें लिखें। विद्यालयो/महाविद्यालयो/शिविरो मे जाकर आवश्यकतानुसार सरल व गभीर विषयो पर भाषण/विस्तार-भाषण दे। आर्यसमाज के सिद्धान्तो पर कथा, कहानी, बाल साहित्य (विभिन्न भाषाओ मे) भी लिखे। इस ज्ञान-सेवा मे रुचि रखने वाले सभी कार्यरत/सेवानिवृत्त आर्य महानुभाव कृपया अपने जीवन-वृत्त, योग्यता, रुचियो, शर्तो आदि के उल्लेख सहित शीघ्र सभा को विवरण भेज कर अनुगृहीत करे, ताकि उनकी योग्यता और क्षमता का प्रचार मे समुचित उपयोग किया जा सके। आशा है आपका सहयोग मिलेगा।

—प्रो० जयदेव आर्य
कृते श्री प्रबोध महाजन, सभा मत्री

आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, नरेला, दिल्ली-४०

प्रवेश सूचना

प्रमुख विशेषताए

- दिल्ली से २५ कि मी ३०० बीघा विस्तृत परिसर।
- नरेला रेलवे स्टेशन/बस स्टैड से २ ५/२ कि मी।
- दिल्ली सस्कृत अकादमी द्वारा सर्वश्रेष्ठ गुरुकुल का सम्मान।
- भव्य विस्तृत यज्ञशाला, गोशाला, कृषि फार्म, बगीचे, पुस्तकालय, सभा-भवन, खेल परिसर एव सुरक्षित छात्रावास।
- प्राचीन आश्रम पद्धति, छात्रावास मे रहना अनिवार्य।
- महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त।
- पूर्वमध्यमा से शास्त्री एव व्याकरण, दर्शन, वेद साहित्य एव राजशास्त्र मे आचार्य पर्यन्त शिक्षा
- गणित, विज्ञान, इतिहास, अग्रेजी, हिन्दी आदि की शिक्षा की उचित व्यवस्था।
- कम्प्यूटर शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
- भाषण, वाद-विवाद, योगासन, व्यायाम, अस्त्र सचालन, कृषि कार्य, बागवानी, सिलाई आदि का प्रशिक्षण।
- शिक्षा पूर्णत नि:शुल्क। भोजन व्यय केवल ३६००/- वार्षिक।
- निर्धन असहाय कन्याओ के लिए १२००/- वार्षिक की सीमित छात्रवृत्तिया।
- नया प्रवेश जून, २००१ से आरम्भ। ● पाचवी कक्षा उत्तीर्ण अनिवार्य
- केवल योग्य कन्याओ के लिए सीमित स्थान उपलब्ध

निवेदक

चौ० देवीसिह मान (निगम पार्षद)	**मा० सत्यवीर सिह**	**श्याम ला**
प्रधान	मत्री	प्रचार मत्री
(७२०२३४५, ७२०२९०४)	(७७८१३४० गुरुकुल ७२८२९३७ निवास)	(७०४७५४५)

विद्वान् पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज सै०-१६-डी, चडीगढ मे एक विद्वान् पुरोहित की आवश्यकता है। प्रत्याशी विवाहित, आचारवान् एव अनुभवी होना चाहिये। अपना पूर्ण विवरण लिखकर भेजे तथा एक जुलाई २००१ के रविवारीय सत्सग में प्रात ९ बजे साक्षात्कार हेतु पधारे। मार्ग व्यय स्वय वहन करना होगा।

मंत्री, आर्य समाज सै० १६-डी, चंडीगढ़

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय **'आर्य जगत्'** मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718 3362110) सम्पादक—**उदयवीर 'विराज'**

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशो मे ३० पौं० या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक १९
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, ८ जुलाई, २००१
श्रावण कृ०-३-वि० स०-२०५८
सप्ताह ८ जुलाई से १४ जुलाई

धरती मां को बुखार चढ़ रहा है

हम मनुष्यो के शरीर का सामान्य तापमान ९८ ६ फारेनहाइट (३७ ४ सैल्सियस) रहता है। यदि इससे एक अश भी ऊपर हो जाये, तो हमे अस्वस्ति (बेचैनी) अनुभव होने लगती है। शरीर टूटने लगता है, सिर मे बेचैनी या दर्द होने लगता है, प्यास लगती है। कई बार बुखार कष्ट देने के बाद उतर जाता है, पर कभी कभी मृत्यु का कारण भी बन जाता है।

पृथ्वी भी देवी है

अग्नि, वायु और जल की भाति पृथ्वी भी एक देवी है। देवताओ की कालगणना हम मनुष्यो से भिन्न होती है। हमारे लिए जो एक वर्ष है, वह देवताओ के लिए एक पल होता है। जिसे हम एक शताब्दी समझते है, वह देवताओ के लिए एक दिन से भी कम होता है। अपने विषय मे हमे जो घटनाए एक मिनट मे या घटे मे दिखाई पडने लगती है, पृथ्वी के विषय मे वे हमे पचास वर्ष, सौ वर्ष या इससे भी अधिक मे दृष्टिगोचर हो पाती है।

उदाहरण के लिए, हमारे बाल और नाखून प्रतिक्षण बढ़ते रहते है, परन्तु हमे प्रतिक्षण बढते अनुभव नही होते। सप्ताह भर या पन्द्रह दिन बाद अनुभव होता है कि बाल और नाखून बढ गये है, कटवाने चाहिए।

गगोत्री ग्लेशियर पीछे हट रहा है

गगा का उद्गम गगोत्री हिमनद (ग्लेशियर) पिघल कर निरन्तर पीछे हटता जा रहा है। किसी समय यह वर्तमान गगोत्री मन्दिर तक था। अब यह गगोत्री से १८ किलोमीटर दूर गोमुख मे चला गया है। यह गोमुख, जहा भागीरथी हिमशिलाओ के नीचे से निकलती है, पिछले तीस चालीस वर्षो मे ही लोगो के देखते देखते ४ या ५ किलोमीटर पीछे हटा है। यह इस बात का द्योतक है कि पृथ्वी का तापमान बढ रहा है, जिसके कारण हिमनदो की बर्फ पिघल रही है। यही धरती मा का बुखार है।

हिमालय पर सर्दियो मे हर वर्ष बर्फ पडती है। गर्मियो मे वह पिघल जाती है। परन्तु उसका हिमनदो की बर्फ से कुछ लेना देना नही है। हिमनदो की बर्फ तो व्यक्ति के सचित धन की भाति है, जो बैक मे जमा पडा रहता है और घर खर्च के लिए उसे छुआ नहीं जाता। घर खर्च वेतन या व्यवसाय से होने वाली आय मे चलाया जाता है। प्रतिवर्ष गिरने वाली बर्फ वेतन की भाति है। हिमनदो की बर्फ अब से लगभग १० हजार वर्ष पूर्व पिछले हिमयुग मे पडी थी, और इतने समय से पृथ्वी के जलवायु को प्रभावित करती रही है।

पृथ्वी हमें ऐश्वर्य और तेज दे

यस्या पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्या देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वाना वयसश्च विष्ठा भग वर्च पृथिवी नो दधातु।

अथर्व १२ १ ५

जिसमे पूर्व काल मे हमारे पूर्वज पराक्रम दिखाते रहे और जहा देवो ने (लोकहितकारी शक्तियो ने) असुरो (स्वहित के लिए परशोषक शक्तियो) का मुकाबला किया और हराया, और जो पृथ्वी (दूध घी देने वाली) गौओ, (शक्ति के प्रतीको) अश्वो और (आकाश मे उडने वाले) पक्षियो का विश्राम स्थल है, वह पृथ्वी हमे ऐश्वर्य (कीर्ति, धन, बल) प्रदान करे।

उस युग मे हिमालय पर ही नही, यूरोप, अमेरिका, जापान, अफ्रीका के ऊचे पहाडो पर भी हिमनद जमे थे। सबसे बडे हिमनद उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव क्षेत्रो मे जमे, जहा सैकडो मीलो तक बर्फ की मोटी तह जम गई थी और अब भी जमी हुई है।

सभी हिमनद पिघल रहे है

बुरी खबर यह है कि ये सब के सब हिमनद कम या अधिक मात्रा मे पिघल रहे है। जब हिमनद जमे थे, तब समुद्रो का स्तर नीचा हो गया था, क्योकि उनका पानी पहाडो पर जा कर बर्फ के रूप मे जम गया था। अब जब पृथ्वी का वायुमडल गर्म हो रहा है, तब बर्फ पिघल रही है, और समुद्रो का जल स्तर ऊचा होता जा रहा है। पर्यवेक्षको ने गणना करके बताया है हैट्टेरास अन्तरीप पर सन् १८७० मे एक प्रकाश स्तम्भ जब बनाया गया था, तब समुद्र का जल उससे ४६० मीटर दूर रहता था। सन् १९८५ मे वह बढता हुआ प्रकाशस्तम्भ के ५० मीटर निकट तक आ गया। प्रकाशस्तम्भ को वहा से हटाना पडा।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय (सन् १९४४ मे) जापानियो ने दक्षिण पश्चिमी प्रशान्त महासागर मे कोसारी द्वीप पर सभावित अमेरिकी आक्रमण की रोकथाम करने के लिए जो मोर्चाबन्दिया बनाई थी, वे तब पानी से बहुत दूर थी। आजकल ज्वार के समय वे पानी मे डूब जाती है।

ब्राजील मे रैसाइफ क्षेत्र मे समुद्र तट पर स्थल भाग सन् १९१५ के बाद प्रतिवर्ष २ मीटर के हिसाब से पीछे हटता चला गया। १९८५ के बाद यह चाल २ ५ मीटर प्रति वर्ष हो गई है। फ्लोरिडा मे और मेरीलैड के पूर्वी समुद्र तट पर समुद्र का खारा पानी ३०० मीटर तक स्थल भाग पर चढ आया है और वहा अब खेती नही हो सकती।

तापमान क्यो बढा?

जब पृथ्वी पर गर्मी बढेगी, तब बर्फ पिघलेगी। बर्फ पिघलेगी, तो सर्दी कम होगी और गर्मी बढेगी। धरती मा को यह बुखार क्यो चढा? वायुमडल मे गर्मी क्यो बढी?

जब १८वी शताब्दी मे यूरोप मे औद्योगिक क्राति शुरू हुई, तब बडे पैमाने पर कारखाने बनाये गये। उनमे लकडी और पत्थर का कोयला जलाया गया। उससे कार्बन डायौक्साइड गैस बडी मात्रा मे बनती थी। यह कार्बन डायौक्साइड गैस एक ऐसा आवरण बना देती है, जिसके कारण पृथ्वी की गर्मी आकाश मे विकीर्ण नही हो पाती।

पैट्रोल और डीजल

कार्बन डायौक्साइड गैस की मात्रा तब और कई गुनी बढ गई, जब पैट्रोल और डीजल से चलने वाली मोटर गाडियो का आविष्कार हुआ और पृथ्वी के पेट मे से पैट्रोलियम निकाल कर बडी मात्रा मे उसे जलाया जाने लगा। न केवल मोटरे, ट्रैक्टर और विमान पैट्रोल और डीजल से चलने लगे, यूरोप मे घरो का गर्म करने के लिए भी मिट्टी के तेल का प्रयोग शुरू हुआ।

दो विश्वयुद्धो मे बडी मात्रा मे गोला बारूद का प्रयोग हुआ। अन्त मे परमाणु शक्ति ने भी पृथ्वी के गर्म करने मे बडा योग दिया है। कमरो को ठडा करने वाले प्रशीतक यत्र भी वायुमडल को गर्म करने वाली गैसे छोडते है। कार्बन डायौक्साइड और मिथेन वे गैसे है, जो वायुमडल की गर्मी को बढाती है।

बढती जनसख्या

फिर मनुष्य अपने आपमे कार्बन डायौक्साइड बनाने का चलता फिरता कारखाना है। वह सास मे आक्सीजन लेता है और कार्बन डायौक्साइड छोडता है। जब पृथ्वी पर जगल अधिक थे और मनुष्यो की सख्या थोडी थी, तब पृथ्वी का वायुमडल सतुलित था। मनुष्यो के लिए ही नही, अन्य सभी जीवो, पशुओ, पक्षियो, जलचरो, सरीसृपो के लिए हितकारी और सुखदायक था। अब मनुष्यो की जनसख्या छह गुनी से भी अधिक हो गई है। छह अरब मनुष्यो के शरीर की गर्मी ही पृथ्वी के तापमान पर काफी प्रभाव डालती है।

वैज्ञानिको ने पुराने अभिलेख देख कर बताया है कि पृथ्वी के माध्यिक तापमान मे ५ अश फारेनहाइट की वृद्धि हो चुकी है, जो अब ५.७ अश है। यदि इसे रोकने के लिए तुरन्त कार्रवाई नही की गई, तो मामला काबू से बाहर हो जायेगा।

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

वेद-सुधा

सर्वोत्तम फल की कामना से किया गया कर्म यज्ञ है

❑ श्री मनोहर विद्यालकार

यज्ञो वभूव, स आ बभूव, स प्रजज्ञे,
स उ वावृधे पुन ।
स देवानामधिपतिर्बभूव सोऽस्मासु
द्रविणमादधातु। *अथर्व ७ ५ २*

अर्थ – (**यज्ञ**) यज्ञ (**वभूव**) हुआ। (**स**) वह (**आ बभूव**) सब ओर फैल गया। (**स प्रजज्ञे**) वह उत्पन्न हुआ। (**स उ पुन वावृधे**) वह फिर खूब बढ गया। (**स देवाना अधिपति वभूव**) वह दिव्य शक्तियो का स्वामी बन गया। (**स**) वह (**अस्मासु द्रविण आदधातु**) हमे समृद्धि, ऐश्वर्य प्रदान करे।

मनन– यज्ञ शब्द अत्यन्त व्यापक है। अनेक अर्थो को अपने मे लिये होने के कारण इसका क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इसे मनुष्य के जीवन और सम्पूर्ण सृष्टि मे व्याप्त माना जा सकता है। यास्क के अनुसार यज्ञ शब्द '**यज् देवपूजा सगतिकरण दानेपु**' मे निष्पन्न माना गया है। इसलिये सभी दृष्टियो से विशिष्ट कहलाने वाले वृद्धजनो (देवो) के सत्कार, प्रत्येकप्रकार केसगतिकरण अथवा सगठन की रचना और सभी प्रकार के आदान प्रदान के कर्म, यज्ञ मे सम्मिलित है। इसी वात को शतपथकार ने इस रूप मे कहा है–कि किसी भी क्षेत्र मे किया जाने वाला श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ है। अथवा यह कह सकते है कि ऐसा प्रत्येक कर्म यज्ञ है– जिसके द्वारा मानव किसी भी क्षेत्र मे श्रेष्ठत्व की कामना करता है।' जैसे '**यज्ञो वै मख ।** शत० ६ ५ २ १ को गोपथ ३ ० २ ५ मे '**मख इत्येतद् यज्ञनामधेयम्**' कहकर स्पष्ट किया है, वैसे ही '**यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म**' शत० १ ७ १ ५ का स्पष्टीकरण होगा '**श्रेष्ठतम कर्म इत्येतद् यज्ञनामधेयम् ।**'

परमात्मा को भी यज्ञ कहते है

श्रेष्ठतम कर्मो का आदिकर्ता तथा उपदेष्टा होने से परमात्मा को भी यज्ञ कहते है।' और परमेश्वर के कर्मों का अनुकरण करने वाले, अतएव उसके सखा (समान ख्यान) कहलाने योग्य, तथा किसी भी क्षेत्र मे श्रेष्ठत्व की आकाक्षा करने वाले मनुष्य को भी यज्ञ कहा जायेगा। इसीलिये ऋग्वेद मे कहा है कि उस परमेश्वर का सख्य बडा स्वादिष्ट है, उसकी नीतिया बडी सुन्दर है, और उसका सृष्टि यज्ञ अत्यन्त विस्तृत है।' इसलिये जो विद्वान् विप्र उस सुख स्वरूप को पाना चाहते है, वे विश्व को धारण करने वाले यज्ञ रचाते है। अपने लिये न कोई कामना करते है, न किसी से कोई अपेक्षा करते है। परार्थ के लिये अपने प्राणो की आहुति देने को भी उद्यत रहते है, इसलिये वे त्रिलोकी मे सर्वत्र निर्बाध गति से चलते चले जाते है। उन्हे कही कोई बाधा अनुभव नही होती।'

अग्निहोत्र

अग्निहोत्र भी एक यज्ञ है। इसमे सुगन्धित ओषधिया, स्वादिष्ट तथा मधुर हविया और गोघृत डाला जाता है, जिससे रोगकृमि विनाशक और स्वास्थ्यवर्धक सुगन्ध बडी दूर दूर तक फैल कर पृथ्वी, जल और वायु मे उत्पन्न प्रदूषण का प्रतीकार करती है। वायुमडल के प्रदूषण को दूर करने का सरल और श्रेष्ठतम उपाय होने से यह भी यज्ञ कहलाता है।'

इसीलिये हमारे शास्त्रकारो तथा स्मृतिकारो ने अग्निहोत्र या देवयज्ञ की गणना पचमहायज्ञो मे की है, और इसे नित्यकर्मो मे सम्मिलित किया है। मनुष्य क्योकि प्रतिदिन कुछ न कुछ प्रदूषण फैलाता है, इसलिये उसे सतुलित करने के लिये उसके प्रतिकार स्वरूप, उसे प्रतिदिन अग्निहोत्र करके थोडी बहुत सुगन्ध भी फैलानी चाहिये।

अग्निहोत्र का प्रचलन बढने के बाद १२ दिन १२ सप्ताह १२ मास और १२ वर्ष के बडे बडे यज्ञ होने लगे। इनमे भिन्न भिन्न प्रकार की ओषधियो के हवन द्वारा महामारियो को दूर करने का प्रयत्न होता था। सूखा पडने पर ऋतु अनुकूल ओषधियो के हवन द्वारा वृष्टियज्ञ कराए जाते थे। नि सन्तान व्यक्तियो के लिये व्रत-सयम की दीक्षा, वीर्यवर्धक ओषधियो का दुग्ध के साथ सेवन और पुत्रेष्टि यज्ञ कराए जाते थे। ये बडे बडे अग्निहोत्र सत्रयज्ञ कहलाते थे। बहुत बार इनका अभीष्ट फल भी दृष्टिगोचर होता था। ब्राह्मणो मे यज्ञो की बडी महिमा गाई गई है। एक स्थान पर लिखा है कि–' सभी यज्ञ भवसागर से पार लगा कर स्वर्ग मे पहुचाने वाली नाव हैं।' दूसरे स्थान पर लिखा है कि– जो लोग यज्ञ करते है, वे ऊपर ही ऊपर चढते हुए स्वर्गलोक मे पहुच जाते है।' और तीसरी जगह लिखा है कि यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है।' यज्ञ जहा पहुच जाता है वहा कल्याण ही कल्याण होता है।'

सत्रो, यज्ञो की प्रायिक सफलता, ब्राह्मणकारो के प्रशसात्मक वाक्य और स्वार्थी ब्राह्मणो केप्रचार के कारण, सामान्य जनता ने यह मान लिया कि स्वाहापूर्वक अग्नि मे घृत और हवि डाल कर किया जाने वाला अग्निहोत्र ही यज्ञ है। और यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म कहा, इसलिये धारणा यह बन गई कि केवल अग्निहोत्र ही यज्ञ अथवा सर्वश्रेष्ठ कर्म है और अन्तत लोगो ने अग्निहोत्र करने या इसमे सम्मिलित होने को ही श्रेष्ठतम कर्म समझ कर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान ली। परिणाम यह हुआ कि जैसे मूर्तिपूजक, मूर्ति को भगवान् मानकर उसकी अर्चा पूजा मे ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते थे, और समझते थे कि हमारे शत्रुओ और लुटेरो को भी यह मूर्ति ही भगा कर हमारी रक्षा कर लेगी, वैसे ही अग्निहोत्री (आर्यसमाजी) यह मान बैठे कि हम अग्निहोत्र करके जगत् का सर्वश्रेष्ठ कर्म कर रहे है। शेष सब काम तो यह यज्ञ (भगवान्) स्वय ही पूर्ण कर देगा।

सृष्टि के नियम अटल व सम है

इस जगत् की व्यवस्था करने वाला भगवान् पूर्ण और यज्ञरूप है।'' इसलिये उसके नियम भी अटल और पक्षपातरहित हैं। उसके प्रतिनिधि अग्नि, वायु, जल आदि देव सबके साथ एक सा व्यवहार करते है। इनकी अनुकूलता मे सुख और प्रतिकूलता मे दु ख होता है। यह नही हो सकता कि हिन्दू को आग जला देगी, और मुसलमान को नही जलाएगी, या यूरोपियन को जल प्रवाह बहा ले जाएगा और एशियन को नही बहाएगा। जैसे हमारी आख सुन नही सकती, और कान देख नही सकते, वैसे ही यह सभव नही कि किसी दूसरे देश या जाति के लोग कान से देख लेगे, और आख से सुन सकेगे। ठीक इसी प्रकार यदि सनातनियो की मूर्ति शत्रुओ से रक्षा नही कर सकती थी, तो आर्यसमाजियो का अग्निहोत्र भी देश मे गरीबी और भ्रष्टाचार को कम नही कर सकता, और न ही शत्रुओ को भगा सकता है।

जिस तरह पत्थर से बनी मूर्ति जड होने से हमारी प्रार्थना को न सुन सकती है, और न उसे पूरा कर सकती है, उसी तरह अग्निहोत्र भी जड होने से न हमारी प्रार्थना सुन सकता है, और न उसे पूरा कर सकता है। यदि आप समझते हो कि अग्निहोत्र से कम से कम वायु का प्रदूषण तो दूर होता है, इसलिए मूर्ति पूजा से अग्निहोत्र बेहतर है, तो यह समझे कि वायु प्रदूषण का प्रतिकार अग्नि के विभाजक और वायु के प्रसारक गुण के कारण होता है, आपके मत्रो मे की गई प्रार्थनाओ के कारण नही होता। वैसे ही मन्दिरो मे चढने वाले फूल और वहा जलने वाली धूप, अगर और गुग्गुल भी वायु के प्रदूषण को दूर करते है। इस प्रकार अग्निहोत्र को सर्वश्रेष्ठ कर्म मानकर अपने सब कर्तव्यो का पर्यवसान समझ लेने और मूर्तिपूजा करके, अन्य सात्विकतथा परार्थ के कर्मों से उपरत रहने मे जरा भी फर्क नही है।

यज्ञ की व्यापकता

अग्निहोत्र ही यज्ञ नही है। अग्निहोत्र भी यज्ञ का एक बहुत ह्रस्व किन्तु स्थूल रूप है। यज्ञ तो बहुत व्यापक है।'' हमारे शास्त्रो, स्मृतियो और महर्षि दयानन्द ने पचमहायज्ञो को दैनिक कर्तव्य माना है।'' इन पाच यज्ञो के स्वरूप को देखने से पता लगता है कि इनमे से केवल एक ही अग्निहोत्र है। इनमे **प्रथम**– ब्रह्मयज्ञ है, जिसके द्वारा मनुष्य सात्विक, आध्यात्मिक व नैतिक बन कर अपने जीवन को विशिष्ट या श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करता है। इसे स्वाध्याय या ऋषियज्ञ, और सध्या या ईश्वर-प्रणिधान भी कहते हैं। **द्वितीय**– देवयज्ञ या अग्निहोत्र है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने द्वारा प्रदूषित किये हुवे वातावरण को सुगन्धित, पौष्टिक तथा स्वास्थ्यकर द्रव्यो के होम द्वारा, सुवासित करके स्वस्थ रहने का प्रयत्न करता है। **तृतीय**–पितृयज्ञ है। इसके द्वारा मनुष्य को अपने परिवार के वृद्धजनो का आदर सत्कार तथा उनके भरण-पोषण की व्यवस्था का निर्देश किया गया है, जिससे उनका कृतज्ञता ज्ञापन भी हो जाए और समाज मे समस्वरता भी बनी रहे। **चतुर्थ**–अतिथियज्ञ है, इसे नृयज्ञ भी कहते है। इसमे मानवता के नाते अज्ञातजनो के भोजन, वसन की व्यवस्था, उनके कार्यो मे सहयोग तथा आवश्यकता होने पर आर्थिक सहायता करने का भी निर्देश है। **पञ्चम**–भूतयज्ञ या वलिवैश्वदेवयज्ञ है। इसमे समाज से अपेक्षित, रोगपीडित, विकलाग मनुष्यो तथा पशु पक्षी, कीडे मकौडे तक प्राणीमात्र की सहायता करने का आदेश दिया गया है। महर्षि दयानन्द ने इन पाच यज्ञो को ही महायज्ञ की सज्ञा दी है, और इन्हे नित्यकर्म मे सम्मिलित किया है। इससे स्पष्ट है कि अग्निहोत्र करने वाला ही विशिष्ट व्यक्ति या सर्वश्रेष्ठ कर्मकर्ता नही हो जाता, अपितु समाज का प्रत्येक व्यक्ति, जो अपने कर्तव्यो का पालन करता है, यज्ञकर्ता यजमान है। इस प्रकार आत्मिक उन्नति के साथ साथ दूसरो की सहायता, सेवा और सहयोग का प्रत्येक कार्य यज्ञ अथवा श्रेष्ठतम कर्म है। यदि विचार करे तो तुलना करने पर केवल एक देवयज्ञ अथवा दो ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ करने वाले की अपेक्षा, इन दो यज्ञो को न करके शेष तीन महायज्ञो को करने वाले का पलडा भारी रहेगा।

वर्तमान काल मे जो लोगो की सेवा करना नही चाहते, स्वाध्याय के अभाव मे सिद्धान्तो को अच्छी तरह न समझते है, और न उन पर बोल सकते है, फिर भी ब्रह्मा बन कर यज्ञ कराते है, और अनपढ लोगो मे या स्त्री समाज मे महत्वपूर्ण बन कर अपनी आजीविका का प्रबन्ध भी कर लेते हैं और आदर सत्कार भी पाते है तथा इसी तरह वे लोग, जो केवल धनार्जन मे लगे है, उसके अर्जन के साधनो या सुपथ-कुपथ का विचार नही करते, नित्य अग्निहोत्र करके अपने को श्रेष्ठतम कर्म का कर्ता समझ कर दूसरे विद्वान् और

(शेष पृष्ठ १० पर)

चरित्र बल

यह जो कहा जाता है कि 'चरित्र गया, तो सब कुछ गया', बहुत गहरी बात है। पूरी उक्ति इस प्रकार है 'धन चला गया, तो समझो कि कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य चला गया, तो समझो कि काफी कुछ चला गया, चरित्र चला गया, तो समझो कि सब कुछ चला गया।'

धन चला गया, तो कुछ नही गया, यह बात सुनने मे विचित्र और असत्य लगती है। धन से सब काम सिद्ध होते है। धनी के अवगुण छिप जाते है और गुण उजागर हो जाते है। धन से आप बुरी ही नही, अच्छी इच्छाए भी पूरी कर सकते है। वह धन यदि छिन जाये, तो आप कहते है कि धन चला गया, तो कुछ भी नही गया। धन ही तो सब कुछ है। धन न रहे, तो जीवन बोझ ही बोझ है।

धनी लोगो के घर चोरिया होती है, डाके पडते है, आग लग जाती है। विभाजन के समय लाखो लोग विस्थापित हो कर अपना सारा धन गवा बैठे। जैसे घास काट ली जाने के बाद कुछ ही समय मे फिर फैल जाती है, उसी प्रकार हमने निर्धन, कगाल, मुहताज हो गये लोगो को फिर ऐश्वर्यशाली होते अपनी आखो से देखा है, दस पाच को नही, हजारो लाखो को। जिनकी कोठिया छिन गई थी, उनके महल बन गये, जिनकी बग्घिया छिन गई थी, उनकी मर्सिडीज कारे आ गई। इसी को कहा जाता है कि धन तो हाथ की मैल है, वह तो आता जाता रहता है। वह हमारे शरीर का अग नही बनता। इसलिए उसका कोई मूल्य नही। वह चला गया, तो कुछ नही गया। फिर आ जायेगा।

परन्तु शरीर का स्वास्थ्य हमारे शरीर का अग है। हमारी बांहे सशक्त हो, हमारे पैर बलवान् और वेगवान् हो, हमारी आखे, कान, नाक, गला, सब स्वस्थ, सही दशा मे हो। चेहरे पर चमक हो, आखो मे चमक हो, ओठो पर मुस्कराहट और हसी हो, वाणी मे शक्ति और माधुर्य हो। यही स्वास्थ्य है।

इसका बडा मूल्य है। जब तक शरीर स्वस्थ है, यह ससार स्वर्ग है। स्वस्थ मनुष्य ही सब इन्द्रियो के सुखो का आनन्द उठा सकता है। खाने-पीने का, घूमने-फिरने, सुन्दर दृश्य देखने, मधुर सगीत सुनने का आनन्द स्वस्थ पुरुष ही उठा सकता है। जहा बुखार चढा, दस्त लगे, सिर दर्द या जुकाम हुआ, सब आनन्द गये।

बुखार, दस्त, जुकाम कुछ देर कष्ट देकर चले जाते है, पर खासी, दमा, गठिया, क्षय जैसे रोग तो डेरा लगा कर जम जाते है, टलने का नाम ही नहीं लेते। यह स्वास्थ्य गिरना है।

स्वास्थ्य चले जाना इससे अगली सीढी है। भूख नही लगती। खाया नही जायेगा, तो शरीर को पोषण कहा से मिलेगा? पोषण नही मिलेगा, तो शरीर सूखता जायेगा। पैरो से चला नही जायेगा, हाथो से काम नही होगा। आखो से दिखाई न देना, कानो से सुनाई न पडना स्वास्थ्य का चले जाना है। यह भारी हानि है। इसकी पूर्ति होना कठिन है। गया हुआ स्वास्थ्य किसी विरले का ही लौटता है।

अस्वस्थ मनुष्य की न केवल उपभोग-क्षमता क्षीण हो जाती है, बल्कि उपभोग की लालसा बढ जाती है। ज्यो ज्यो शरीर क्षीण होता है, स्वभाव चिडचिडा होता जाता है। सेवा की आवश्यकता अनुभव होती है और उसे लगता है कि यथेष्ट सेवा नही हो रही है। वह परिवार पर बोझ बन जाता है। इसीलिए वेद मे प्रार्थना है **पश्येम शरदः शत, शृणुयाम शरद शत, प्रब्रवाम शरद शत, अदीना स्याम शरद शतम्** (हम सौ साल तक आखो से भली भाति देखते रह सके, कानो से स्पष्ट सुनते रह सके, वाणी से स्पष्ट बोलते रह सके, और सौ साल तक बिना दूसरो के सहारे के मुहताज हो कर जीते रह सके)। यह उत्तम स्वास्थ्य की ही प्रार्थना है।

परन्तु स्वस्थ, पुष्ट शरीर ही सब कुछ नही है। यदि मनुष्य अकेला बियाबान मे रहता होता, तो स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट शरीर मात्र से उसका काम चल जाता। परन्तु उसे रहना पडता है समाज मे। समाज मे भले-बुरे, परोपकारी-अत्याचारी, सब तरह के लोगो के बीच उसे अपना स्थान बनाना है। हृष्ट-पुष्ट शरीर कुछ सीमा तक व्यक्ति को समाज मे आदर का पात्र बना सकता है, पर शक्तिशाली व्यक्ति दुष्ट और अत्याचारी भी हो सकता है। वह अन्य लोगो का आदर प्राप्त नही कर सकता। उसके लिए आवश्यक है—चरित्र।

यह चरित्र क्या वस्तु है, जो इतनी अनमोल है कि उसके छिन जाने को सर्वनाश बताया गया है? नीतिकार के एक श्लोक से इसका कुछ अन्दाजा हो सकता है

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम ।

यशसि चाभिरुचिर्व्यसन श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिद हि महात्मनाम्॥

विपत्ति मे धैर्य, विजय में, सफलता मे क्षमा कर देना, सभा मे भाषण कौशल, युद्ध मे पराक्रम, यश कमाने की इच्छा और ज्ञानार्जन की लत, महापुरुषो मे ये गुण जन्मजात होते है।

सबसे बडा चरित्र का गुण बताया गया है—विपत्ति आ पडने पर धैर्य बनाये रखना। विपत्तिया अनेकरूप मे आती है— लडाई झगडा, चोरी हो जाना, आग लग जाना, दुर्घटना, सगे सम्बन्धी की मृत्यु, कठिन रोग आदि। सामान्य व्यक्ति उनसे घबडा जाता है और उनसे बचने के लिए उचित-अनुचित कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। परन्तु चरित्रवान व्यक्ति विपत्ति मे चट्टान की तरह दृढ हो जाता है। अपने यम-नियमो पर अडिग रहता है और तूफान के गुजर जाने की प्रतीक्षा करता है।

एक बात समझ लेने की है कि सच्चरित्रता दुनियादारी मे सफल होने का उपाय नही है। बहुत सभव है कि चरित्रवान् व्यक्ति सघर्ष मे हार जाये। परन्तु हारने पर भी उसका यश उज्वल रहेगा। चरित्र यशस्वी होने का नुस्खा है, विजय पाने का नही। औरगज़ेब ने वीरता से, छल-कपट और विश्वासघात से भाइयो को मार कर विजय प्राप्त की थी। परन्तु बाद की पीढिया उसे घृणा के साथ ही याद करती है।

चरित्र का एक अन्य आवश्यक गुण है— विजय पा लेने पर प्रतिद्वन्द्वी के प्रति क्षमा का बर्ताव किया जाये। नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया। वह जीतता हुआ दिल्ली तक आ पहुचा। मुगल बादशाह मुहम्मदशाह ने आत्मसमर्पण कर दिया। नादिरशाह ने दिल्ली मे कत्ले-आम (जो भी मिले, उसे मार दो) का आदेश दे दिया। बीस हजार नर नारी मारे गये, ऐसा इतिहास की पुस्तको मे लिखा है। नादिरशाह के नाम पर कालिख पुत गई।

जो व्यक्ति विजय के बाद क्षमाशील नही हो सकता, वह चरित्रवान् नही है। सिकन्दर ने युद्ध मे पुरु को हरा दिया, परन्तु उसकी वीरता से प्रभावित हो कर उसका राज्य उसे वापस दे दिया। नादिरशाह सिकन्दर की तुलना मे कही ठहरता ही नही।

निर्भयता चरित्र का बडा गुण है। निर्भयता दो रूपो मे प्रकट होती है शत्रु आक्रमण कर दे, तो वीरतापूर्वक उससे लडने मे और दूसरे, पराजित हो जाने पर कोई भी अनुचित शर्त स्वीकार न करने मे। भय चरित्र का सबसे बडा शत्रु है। भयवश कायर लोग युद्ध से कतराते है, बिना लडे ही अपमानजनक शर्ते स्वीकार कर लेते है। चरित्रवान् लोग आवश्यकता पडने पर निडर हो कर जी जान से लडते है।

चरित्रवान् व्यक्ति प्रबल शत्रु से हार भी सकता है। मुसलमान विजेता पराजित शत्रुओ के सामने विकल्प रखते थे या तो मुसलमान हो जाओ, या फिर मौत के लिए तैयार हो जाओ। चरित्रवान् व्यक्ति दूसरे विकल्प को ही चुनते थे। पहले विकल्प को चुनने वालो का नाम ही किसी ने याद नही रखा।

वचनपालन चरित्र का अत्यावश्यक अग है। बडी से बडी हानि उठा कर भी वचन का पालन करना चाहिए। रघु कुल अपनी इसी आन के लिए विख्यात था कि प्राण भले ही चले जाये, परन्तु उनका दिया हुआ वचन कभी टूटता नही था। ऐसा वचन पालन यश तो दिलाता ही है, दुनियादारी की दृष्टि से भी लाभदायक रहता है, क्योंकि वचनपालक पर लोग आसानी से विश्वास कर लेते है।

ऐसे भी हैं और ऐसे भी

❑ श्री सीतेश आलोक

कुछ लोग
कमाते कमाते मर जाते है।
कुछ है, जो पडे पडे खाते है।
और कुछ, जो सिर्फ दूसरो का
माल उडाते है।
कुछ लोग पढते है, पढते ही जाते है।
कुछ बिगडते है, बिगडते चले जाते है।
कुछ लडते है बात बेबात,
और कुछ अपनी खुशी के लिए
दूसरो को आपस मे लडाते है।
दुख मे भी हसते रहे, ऐसे भी लोग होते है,
और कुछ कारण-अकारण रोते ही रहते है।
कुछ है, जो अपना दुख
चुपचाप सहते है,
और कुछ, जिनके आसू
दूसरो को दुखी देख बहते है।
कुछ लोग दो जून की भी
रोटी जुटा नही पाते,
और कुछ, जो सात पुश्तो के लिए
जोड कर भी सन्तोष नही पाते।
कुछ लोग धकियाते कुचलते औरो को
आगे बढ जाते है,
कुछ है, जो राह मे रुक
गिरतो को उठाते है,
कुछ ऐसे भी है,
जो ऊपर उठने वालो की
टाग खीच कर महासुख पाते है।
कमी नही, लोगो की,
तरह तरह के लोग पाये जाते है।
कही शिकार, तो कही शिकारी-
पर कुछ लोग कहते है कि
सब लोग बराबर है
एक जैसे सम्मान के अधिकारी।

प्राचार्य निवास, इन्द्रप्रस्थ कालेज,
दिल्ली-५४

वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार मे

आर्य युवक समाज का चरित्र निर्माण शिविर

शिविर का आयोजन दिनाक ३ ६ २००१ से १० ६ २००१ तक वैदिक मोहन आश्रम में किया गया जिसमें विभिन्न डी ए वी स्कूलों के ११० छात्रों एव २० शारीरिक एव बौद्धिक प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

उद्घाटन समारोह

शिविर का उद्घाटन श्री शान्ति लाल सूरी उपप्रधान डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने ओ३म् ध्वज लहराकर किया। सभी आर्य युवक एव प्रशिक्षक मण्डल निर्धारित गणवेश में थे। इस अवसर पर श्री शान्ति लाल सूरी ने वेदमत्र सुनाकर कर्त्तव्य की प्रेरणा दी तथा युवकों को मातृ-पितृ भक्त गुरु भक्त ईश्वर भक्त बनने का आशीर्वाद दिया एव अनुशासन की उपयोगिता बताई तथा बच्चों के ऊपर पुष्प वृष्टि कर श्री शान्ति लाल सूरी एव श्रीमती सरला सूरी श्री रामनाथ सहगल श्री यशवीर आर्य आदि ने आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि श्री रामनाथ सहगल ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज एव वैदिक मोहन आश्रम का ऐतिहासिक परिचय दिया।

श्री रामस्नेही आर्य ने सभी आर्य

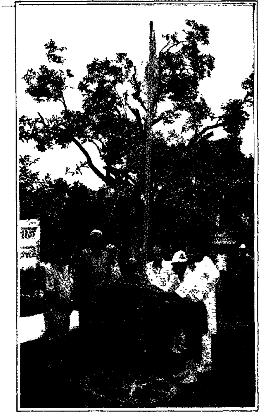

वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार मे लगे चरित्र निर्माण शिविर का उद्घाटन करते हुए श्री शान्तिलाल सूरी, उपप्रधान डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति साथ मे हे श्री रामनाथ सहगल, श्री रामस्नेही आर्य एव श्री यशवीर आर्य

हुए अतिथियों व युवको का धन्यवाद किया।

आर्य युवक समाज के मत्री एव शिविर सयोजक श्री यशवीर आर्य ने भी माननीय श्री सूरी श्री सहगल, श्री रामस्नेही जी का आभार व्यक्त किया एव शिविर की रूपरेखा सबके सामने रखी।

शिविर के मुख्य शिक्षक श्री कृष्ण पाल जी की देख रेख मे शारीरिक एव श्री सूर्यदेव जी की देख रेख मे बौद्धिक कार्यक्रम चले, जिसमें जूडो, लाठी, योगा, व शारीरिक व्यायाम आदि सम्मलित थे।

दिनाक ४ ६ २००१ प्रात ४ बजे से शिविर का सुचारु रूप से सचालन शुरू हो गया, जिसमे रोजाना यज्ञ व भजन आदि कार्यक्रम के साथ बौद्धिक विषयों मे विशेष कर प्रात जागरण का महत्व, अनुशासित जीवन का महत्व, मौन, सावधानता संस्कृति से सम्बद्ध विचार, मातृ-पितृ भक्ति, वेद भक्ति ईश्वर भक्ति, आर्य समाज का इतिहास एव नियम आदि पर विशेष ध्यान दिया गया।

साय काल भ्रमण के समय का सदुपयोग करते हुए एक दिन शान्ति कुज मे Electronic मशीनो से गायत्री मत्र के प्रभाव का अनुभव प्रयोगो द्वारा कराया गया। इसी कडी मे बच्चो को वैदिक साधनाश्रम तपोवन कन्या गुरुकुल द्रोण स्थली व गुरुकुल कागडी का भ्रमण कराया गया जहा स्वामी सत्यपति जी का प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि हम आज भी मानसिक रूप से गुलाम है। तथा अनुशासन का महत्व बताते हुए भारतीय संस्कृति को अपनाने के लिए प्रेरित किया एव कहा कि ईश्वर भक्त व्यक्ति ही देश भक्त हो सकता है। उन्होंने विद्यालयों मे योग शिक्षक की परमावश्यकता पर जोर दिया।

शिविर का मुख्य आकर्षण दिनाक ७ ६ २००१ को आश्रम से गगा तट तक शोभा यात्रा, हर की पौडी की सफाई एव हर की पौडी पर यज्ञ रहा। सभी आर्य युवक ओ३म् ध्वज के साथ गीत गाते हुए निकले। वही आस्था चेनल वालो ने पूरे कार्यक्रम की रिकार्डिग की।

हर की पौडी पर आर्य युवक समाज का भव्य यज्ञ

समापन समारोह

१० जून को निर्धारित कार्यक्रमानुसार यथासमय सभी यज्ञवेदी पर अग्निहोत्र करने के लिए उपस्थित हुए। पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा एव श्रीमती चोपडा श्री यशवीर आर्य एव श्रीमती यशवीर श्री पूनम सूरी एव श्रीमती सूरी यजमान बने। यज्ञ प सूर्यदेव जी ने सम्पन्न कराया। स्वामी दीक्षानन्द जी ने यज्ञमानो को आशीर्वाद दिया। स्वामी जी ने अपने प्रवचन मे कहा कि मनुष्य को दो वरदान वाणी और पाणि मिले है। इनका दुरुपयोग करने से मानव चोला छिन सकता है। वाणी और पाणि जब मिल जाते है, तो यज्ञ बन जाता है।

श्री पूनम सूरी, राष्ट्रीय सयोजक आर्य युवक समाज, ने आर्य युवक समाज का परिचय दिया और आर्य युवक समाज के क्रिया कलापो का वर्णन किया, गुजरात भूकम्प राहत कार्य का वर्णन किया, युवको को प्रेरणाप्रद कहानी सुनाकर प्रसन्न किया एव आर्य वीरो का कर्त्तव्य मार्ग पर डटे रहने के लिए आह्वान किया।

युवको के शारीरिक प्रदर्शन के पश्चात् श्री ज्ञान प्रकाश जी चोपडा का उद्बोधन हुआ।

पद्मश्री जी पी चोपडा जी ने युवकों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा हमारा देश कितना सुन्दर है! देवभूमि है। सबसे सुन्दर रचना है। देश मे आयी आपदाओ के समय डी ए वी आन्दोलन के सहयोग की चर्चा की। नारी शिक्षा, पिछडे वर्ग के लिए किये गये कार्यो का विवरण किया पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षारोपण कार्यक्रम पर जोर दिया। देश की बिगडती हालत को सुधारने के लिये शिविरो के आयोजन पर जोर दिया तथा अपनी सभ्यता एव संस्कृति के पोषण के

आर्य युवक समाज के कार्यकर्ताओ का प्रभावशाली प्रदर्शन।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य समाज की महान् विभूति —स्व० पंडित देवप्रकाश जी अमृतसरी

(गताक से आगे)

❑ सत्यबाला देवी, ऐम ए, बी टी

भील आश्रम रावटी मे घटित दुर्घटना

भील क्षेत्र मे ईसाई पादरियो द्वारा बहका फुसला कर निर्धन व असहाय भीलो को धर्म परिवर्तन हेतु विवश किए जाने पर आचार्य देवप्रकाश जी उनके चगुल से उन्हे मुक्त कर पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित करने हेतु डट गये। उनके इस साहसिक आन्दोलन मे बौखलाकर ईसाई मिशनरियो ने उनकी हत्या करने हेतु अपना एक विश्वासपात्र व्यक्ति भील आश्रम मे भेजा। सयोगवश जब वह हत्यारा रात्रि के समय भील आश्रम के पाचक से आचार्य जी को दूध मे विष मिश्रित कर उन्हे पिलाने के मम्बन्ध मे योजना बना रहा था, तब अकस्मात् भील आश्रम के अध्यापक श्री जुगुल किशोर जी उधर से आ निकले और उन्होने आश्रम के अन्य अध्यापको को भी बुला लिया और उम नृशस हत्यारे का षड्यत्र विफल कर दिया। उस आततायी को पकडने के उपरान्त उसके पास से विष के अतिरिक्त एक छुरा और पिस्तौल भी मिली। तब उसने अपने वक्तव्य मे बताया कि वह येनकेन प्रकारेण आचार्य जी की हत्या करने आया था। भील आश्रम के अध्यापक वर्ग द्वारा हत्यारे को पुलिस मे सौपने हेतु अत्यधिक आग्रह करने पर भी उन्हे यह कह कर कि आप किस किस को पुलिस मे देगे, उम हत्यारे को स्वतत्र कर दिया।

भीलो के क्षेत्र मे

दोबारा आगरा पहुचने पर आचार्य देवप्रकाश जी को पुन महात्मा हसराज जी का पत्र द्वारा सदेश प्राप्त हुआ कि पाच हजार अकाल पीडित भील हिन्दू धर्म त्याग ईसाई बन गए है और अभी निकट भविष्य मे उनकी अगणित सख्या के पतित होने की आशका है अत आप अविलम्ब वहा पहुचे। महात्मा जी का आदेश पाते ही आचार्य देवप्रकाश जी आगरा से सीधे रतलाम पहुचे। आर्यसमाज का रविवारीय साप्ताहिक अधिवेशन चल रहा था। अधिवेशन समाप्ति पर उन्होने आर्य समाज के मत्री जी से रावटी का मार्ग पूछा पर उन्होने उन्हे यह कहकर निरुत्साहित कर दिया कि वहा ईसाई मिशनरी लाखो रुपये खर्च करके भीलो मे अन्न वस्त्र वितरण कर उन्हे ईसाई बना रहे है आप वहा क्या करेगे? पर धुन के पक्के आचार्य जी निरुत्साहित नही हुए और झाबुआ निवासी श्री बालेश्वर जी से रावटी का मार्ग ज्ञात कर अपने आत्मविश्वास के बल पर वहा पहुच गये और राजकीय भवन मे डेरा डाल दिया और महात्मा जी द्वारा प्रदत्त धनराशि द्वारा शुद्धि का कार्य प्रारम्भ कर यिा। अकाल पीडित भीलो को अन्न वस्त्र वितरण करने हेतु अपने आत्मबल, दृढ निश्चयात्मक बुद्धि के आधार पर, ग्रीष्म ऋतु के प्रबल प्रकोप मे प्रतिदिन कभी चने चबा कर तो कभी निराहार हीं बीसियो मील पैदल चल कर वह भीलो के निवास स्थानो पर पहुच कर उनकी अन्न वस्त्र वितरण द्वारा सहायता करने के साथ साथ उन्हे आर्य धर्म मे भी दीक्षित करते। यही नही उन्होने भील बालको और बालिकाओ की शिक्षा हेतु रावटी, रतलाम, बासवाडा, सैलाना तथा अन्य कई क्षेत्रो मे भील आश्रमो की स्थापना की और उन अशिक्षित, असभ्यतापक मे पालित बालको की अन्तरात्माओ को ज्ञानालोक से आलोकित किया। इन्ही आश्रमो मे शिक्षा प्राप्त कई भील बालक प्रभुदयाल जी, श्री शकरदेव जी लोकसभा और राज्यसभाओ मे तथा मत्री पद पर विभूषित हुए।

गन्धर्व जाति की शुद्धि १९४५ मे भूपाल निवासी श्री गोरीशकर जी कौशल द्वारा आचार्य महोदय को भूपाल और नरसिंह गढ स्टेट के मध्य मे निवसित गन्धर्व जाति के शुद्धिकरण हेतु आमत्रित किया गया। सन्देश पाते ही आचार्य देवप्रकाश जी आर्य वीरदल के एक कर्मठ सैनिक और एक उपदेशक महोदय सहित गन्धर्वो के ग्रामो मे पहुच गये और उक्त क्षेत्र के समस्त गन्धर्वो का शुद्धिकरण कर पुन सैलाना लौट आए। पुन उज्जैन से आचार्य देवप्रकाश जी को बलाई जाति के सैकडो लोगो द्वारा बहाई मत स्वीकार किए जाने पर उन्हे पुन हिन्दू धर्म मे दीक्षित करने हेतु आमत्रित किया गया। अत निमत्रण मिलते ही आचार्य जी उज्जैन पहुच गये और अपनी अकाट्य युक्तियो द्वारा बहाई मतावलम्बियो को पराजित कर बहाई मत मे प्रविष्ट बलाई जाति के समस्त लोगो को पुन हिन्दू धर्म मे दीक्षित किया। बहाई मत का प्रभाव उन्मूलन करने हेतु उन्होने **बहाईमत** दर्पण नामक पुस्तक भी लिखी और धब्बा नामक स्थान पर बहाई मत की वास्तविकता पर प्रभावशाली व्याख्यान भी दिया जिसके द्वारा समस्त सशयो का समाधान हो गया और आचार्य जी पुन रतलाम लौट आये।

शास्त्रार्थो की धूम आर्य युवक समाज अमृतसर के मत्री प० देवप्रकाश जी के तत्वावधान मे बीसियो शास्त्रार्थ मुसलमानो, अहमदियो, ईसाइयो और पौराणिको के साथ हुआ करते थे जिनमे आचार्य देवप्रकाश जी की अकाट्य युक्तियो द्वारा उन्हे पराजित होना पडता था।

आचार्य देवप्रकाश जी साहित्यकार के रूप मे कहना न होगा कि तपत्यागमय और व्यस्त जीवन मे भी उन्होने कई पुस्तके लिखी (१) **मैदाने महशर** (भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली से प्रकाशित) बहाई मत आलोचनात्मक ग्रथ, (२) **यथार्थ दर्शन**, (३) **बहाई मत दर्पण**, (४) **बहाईमत इस्लाम की शाखा है।** (५) **दाफा-उल-औहाम—मिर्जा** गुलाम अहमद कादियानी ने शेखी बघारी थी कि प० लेखराम जी की मृत्यु उस के श्राप से हुई है। इस पुस्तक मे आचार्य जी ने सिद्ध कर दिया कि मिर्जा ने षड्यत्र रचकर उन्हे शहीद किया था। (६) **बहाई मत प्रदर्शन** तथा (७) **यथार्थ प्रकाश** नामक पुस्तके छद्म वेशधारी ईरानी कृष्ण वहाउल्ला और उसके अनेक क्रीतदासो का भडा फोडने के उपरान्त उज्जैन, शाजापुर, देवास, धार तथा ग्वालियर के सवा लाख पथभ्रष्ट हिन्दुओ को वापिस हिन्दू धर्म मे दीक्षित करने का कारण बनी। (८) **मानव धर्म व्यवस्था** नामक पुस्तक साधु रूपधारी कालनेमियो के दुष्प्रचार को विफल करने मे सफल हुई। (९) **कुरआन परिचय** (तीन भाग) मे कुरआन पुस्तक के वास्तविक अर्थो का स्पष्टीकरण किया गया। इस पुस्तक का प्रकाशन श्री ओम्प्रकाश आर्य द्वारा आर्य समाज रतलाम के तत्वावधान मे २६ जून १९७० को किया गया। (इस पुस्तक के सम्पादित पुनर्मुद्रण की आवश्यकता है—जयदेव आर्य) (१२-१३) **'घोर आक्रमण'** और **'इजीलो की परस्पर मिथ्या विरोधी बाते'** नामक पुस्तको ने ईसाई कैम्प मे हलचल मचा दी।

१४ **आस्तिक विचार**—ईश्वर सिद्धि का अनूठा ग्रथ। कट्टर, नास्तिको को प्रभु भक्त बनाने वाला दार्शनिक चमत्कार।

१५ **आर्य समाज के दिवगत महापुरुषो का इतिहास अर्थात् जीवन परिचय।** लगभग १७५ आर्य महापुरुषो का जीवन परिचय।

१६ **ख्वाजा हसन निजामी का वास्तविक रूप** (भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, लखनऊ से प्रकाशित)। घोर आक्रमण पुस्तक मे ईसाइयो के प्रचार की व्यापकता और भयानकता का स्पष्टीकरण किया गया। **आर्य समाज के दिवगत महापुरुषो के द्वितीय भाग** मे आर्य समाज की विभिन्न कार्य प्रवृत्तियो, आन्दोलनो आदि का परिचय दिया गया है।

अभिनन्दन समारोह आर्य समाज की दीर्घकालीन सेवा के फलस्वरूप उनका विभिन्न स्थानो— अजमेर, उज्जैन, बिहार, रावटी, रतलाम मे और २९ अक्टूबर १९७२ को आर्य समाज लोहगढ अमृतसर मे अभिनन्दन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री आनन्द स्वामी जी महाराज ने की और आचार्य जी के जन्म, कार्यक्षेत्र तथा अन्य अनथक सेवाओ को प्रकाशित करने वाला एक विशाल अभिनन्दन ग्रथ भेट किया गया जिसकी एक प्रति मेरे पास सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रशस्ति पत्र भी भेट किये गये जैसे — डा० सूर्यदेव एम ए, पी एच डी डी लिट् अजमेर ने लिखा—

कहा कोटला, कहा मीरपुर और कहा मुलतान है।

कहा मोपला देश कहा मलकाना शुद्धि वितान है।

भील प्रदेशो मे, बिहार मे, अमृतसर रतलाम मे। इत्यादि

श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, प्रधान, हिन्दू सेंटर लदन ने जलियावाले बाग काड के समय उन द्वारा की गई सेवा का बखान किया और कहा कि आचार्य देवप्रकाश जी शास्त्रार्थ समराङ्गण मे नरसिंह की भाति दहाडते और देश के किसी भी भाग मे हिन्दुओ पर विपत्ति आते ही महात्मा हसराज जी के एक इशारे पर अपना सब घर बार, कुटुम्ब कबीला, कार व्यवहार एक ओर फेक घटना स्थल पर पहुच जाते।

श्री ओमप्रकाश जी त्यागी के अनुसार श्री प० देवप्रकाश जी मे अद्वितीय विद्या, अनुभव, त्याग एव मिशनरी भावना है। उनकी महानता और विशेषता इस बात मे है कि वह मूक रूप से रचनात्मक कार्यो मे लगे रहने मे ही आनन्द और सतोष अनुभव करते है। वह लोकैषणा से सर्वथा मुक्त है और अपने त्याग, तप एव सत्य प्रवृत्ति मे देवत्व के गुणो के अधिकारी है।

प्रभु दयाल एम ए, एल एल बी उपमत्री जनजाति एव राजस्व विभाग, मध्य प्रदेश शासन, भोपाल कहते है "आज मै जो कुछ हू उसका सम्पूर्ण श्रेय परम

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पत्र-जगत्

पाइप लाइन पाकिस्तान में हो कर न आये

वाजपेयी जी द्वारा पाकी अधिनायक परवेज मुशर्रफ को वार्ता के लिए निमत्रण दिये जाने की सभी ओर से आलोचना हुई है। लोगो को डर है कि पाकिस्तान के प्रति नरम कोना रखने वाले वाजपेयी जी कही भारत के हितो की बलि न चढा दे। पहले जो सीमाओ की रक्षा के लिए घोषणाए की जाया करती थी, उनकी जगह अब शान्ति स्थापित करने की ही बाते होने लगी है। पहले जो देशद्रोही आतकियो का सफाया करने के सकल्प दोहराये जाते थे, उनकी जगह अब आतकियो, हत्यारो के समक्ष युद्ध-विराम किये जाते है, मस्जिद या मकबरे मे फसे हत्यारो को सुरक्षित भाग जाने का मौका दिया जाता है। कश्मीर घाटी से भगाये गये भारत-भक्त कश्मीरी पडितो की पूर्ण उपेक्षा कर घाटी मे इस्लामी नजामे-मुस्तफा कायम करने के लिए भारत के विरुद्ध जेहादी जग छेडने वालो से वार्ता चलाने के प्रयास किये जाते है।

होना तो यह चाहिये था कि कशमीर मे सक्रिय देशी-विदेशी आठ दस हजार उग्रवादियो को ऐसा घेरा जाये कि एक भी बच कर न निकल सके। उन्हे समर्पण के लिए विवश कर दिया जाय। सारे देश मे जो उग्रवादियो के अड्डे बन चुके है, उनका सफाया कर दिया जाये। घाटी से पलायन कर चुके पडितो और डोडा से निकाले गये हजारो डोगरो को भारी सख्या मे सेना मे भर्ती करके सुरक्षा को दृढ किया जाये। फिर देखे उग्रवाद कहा रहता है और भारत के जिन पाक-परस्त तत्वो के भरोसे पाकिस्तान हमे आखे दिखा रहा है, वे तत्व कैसे बिल्ली की भाति दुबक जाते है।

कश्मीर भारत का अभिन्न अग है और उसकी रक्षा के लिये करोडो भारतीय सर्वस्व की बाजी लगाने को तैयार है। यदि नेतृत्व शौर्य और सकल्प दिखाये और राष्ट्र-रक्षा के लिये युवको का आह्वान करे, तो सम्पूर्ण देश मे राष्ट्र-भक्ति की ऐसी लहर पैदा होगी, ऐसी तीव्र भावनाए उत्पन्न होगी कि सारा अलगाववाद, जातिवाद समाप्त हो जायेगा। क्षेत्रीय आन्दोलनो की बजाय राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र रक्षा के आन्दोलन देश के कोने-कोने मे उठेगे। पाकिस्तानी और बगलादेशी घुसपेठिये भागते दिखाई देगे। बस एक बार देश को ऐसा नेतृत्व मिल जाये।

हम प्रधानमत्री जी से अब इतनी प्रार्थना अवश्य करना चाहते है कि जैसे पहिले बस से लाहोर जाकर नवाज शरीफ को आर्थिक सकट से उबारने के लिए चीनी आयात का सौदा करके भारतीय चीनी उद्योग को सकट मे डाल दिया था, वैसे ही कही अब पाकिस्तान की कगाली दूर करने के लिए ईरान से तेल लाने वाली पाइप लाइन पाकिस्तान की भूमि पर से लाने का सौदा न कर बैठे। ऐसा न हो कि इस प्रकार भारत की गर्दन पाकिस्तान के हाथ मे आ जाये।

डा० कैलाशचन्द्र, ३३१, सुनहरी बाग अपार्टमेट, रोहिणी-१३, दिल्ली-११००८५

यह कैसी राजनीति?

श्रीनगर के निकट एक छोटे से गाव की मस्जिद मे दो-तीन उग्रवादी घुस कर २० घटे हमारे सुरक्षा बलो पर गोलिया चलाते है, २-३ सैनिको को मार डालते है और तब शायद जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा के लिए बनी युनाइटिड कमाड, जिसके प्रमुख डा० फारूक अब्दुल्ला है, के आदेशानुसार गोला-बारूद खत्म होने पर जो आत्मसमर्पण करने पर विवश होने वाले थे, ऐसे हत्यारे सुरक्षित चले जाते है, क्योकि सेना को उन्हे मारने या पकडने की अनुमति नही दी जाती, ताकि वे पुन गोला-बारूद लेकर हमारे सैनिको और नागरिको की हत्या करने यहा आए। और इस पत्र के लिखे जाने के बाद वस्तुत तभी वे आ भी गये और दूसरी एक ऐतिहासिक मस्जिद पर कब्जा जमा लिया। यही तमाशा वर्षो से जारी है। यह है गत पचास वर्ष से हमारे नेताओ की गाधीवादी राजनीति। हमारे सभी राजनीतिज्ञो और राजनीतिक दलो (इस समय केवल हिन्दू महासभा और शिवसेना को छोड कर) की यह सर्वसम्मत एक बिन्दु राष्ट्रीय राजनीति बनी हुई है। भाजपा काग्रेस और समाजवादी दलो से भी अधिक गहरी निष्ठा से इस नीति का पालन कर रही है। हम यह बात सोचने पर विवश है कि ये हमारे राजनीतिज्ञ भारत के सेवक है या हमारे शत्रुओ के हितरक्षक एजेट। ये देश को बचाने के लिए हमारे नेता बने है या उसे नष्ट करने के लिए? और हमारे जनता के निरन्तर मौन रह कर ऐसे राजनीतिज्ञो को निरन्तर सहन करते रहने का क्या अर्थ समझा जाय?

जहा एक ओर हमारे राजनेता हमारे सैनिको और नागरिको के हत्यारो को क्षमा करने मे लगे है, वहा एक समाचार के अनुसार गत आठ मास मे जहा इस्राइली यहूदी केवल ११० मरे, वहा मरने वाले फिलस्तीनी व इस्राइली अरबो की सख्या ४६३ रही है अर्थात् ४ गुणा से भी अधिक। तभी सब ओर से कई गुणा मुस्लिम जनसख्या वाले देशो से घिरा छोटा सा इस्राइल, जहा गत ५३ वर्षो से आज तक वीरतापूर्वक अपने शत्रुओ को पीटता आ रहा है, वहा हमारा इतना बडा देश हमारे शाति-अहिसा मत्रपाठी राजनीतिज्ञो के कारण तभी से हमेशा अपने हर छोटे-बडे पडौसी देश से पिटता आ रहा है और अपने क्षेत्र, धन, पानी, सप्रभुता, सम्मान और जनता के जीवन को वीरतापूर्क नष्ट करने मे लगा है। जहा इस्राइली प्रधानमत्री अपने दो सामान्य नागरिको के मारे जाने पर अराफात को समझौता भग करने की कठोर चेतावनी देते है, वहा हमारे राजनेता बार बार हमारे कितने ही सैनिको और नागरिको के क्रूरतापूर्वक मारे जाने पर भी निर्लज्जतापूर्ण तरीके से पाकिस्तानी और बगलादेशी प्रधानमत्रियो से अपनी मित्रता बनाये रखने की कसमे खाते है। धन्य है उनकी यह राजनीति।

प्रो० जयदेव आर्य, सयोजक प्रगतिशील आर्य मच, २४९, कादम्बरी अपार्टमेट्स,
सैक्टर-९, रोहिणी, दिल्ली-८५

आर्य को हिन्दू न कहा जाये

मान्यवर मत्री जी, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सादर नमस्ते।

आर्य जगत् पत्रिका आर्य जगत् मे अपना विशेष स्थान रखती है। इसका प्रचार-प्रसार भी अच्छा है। परन्तु तदनुसार गम्भीर लेख अब इसमे देखने को नही मिलते, जबकि कई सिद्धान्तहीन लेख छपते रहते है। इसकी एक विशेष बात जो अनेक लेखो मे आती है और खटकती है, वह आर्य शब्द की अपेक्षा हिन्दू शब्द को महत्व देना और हिन्दू शब्द को प्राचीन सिद्ध करने की कुचेष्टा करना। ऐसे लेख ऋषि दयानन्द की मान्यताओ पर सीधे कुठाराघात है। इसकेलेखो मे प्राय एक कुतर्क होता है कि हिन्दू नही थे, तो आर्य कहा से आये? जबकि वास्तविकता उल्टी है। यदि यहा आर्य नही होते, तो हिन्दू कहा से आते? हिन्दू नाम किसको दिया जाता? इसे तो सभी मानते है कि हिन्दू शब्द का प्रयोग नया है और उसका कोई स्पष्ट अर्थ भी नही और आर्य शब्द का अर्थ स्पष्ट है। आपसे इतना नम्र निवेदन है कि आप ऐसी व्यवस्था करे कि आर्य जगत् मे ऐसे भ्रमपूर्ण लेख नही छपे।

आशा है आप मेरी बातो पर गम्भीरता से ध्यान देगे।

व्रतानन्द सरस्वती, प्रधान, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

सन्त, महात्माओं एवं धर्माचार्यो से निवेदन

अति प्राचीन काल से ही भारत ऋषि मुनियो की पहचान रहा है। उन्होने ही अपने तपोबल से सत्य सनातन हिन्दू धर्म को पल्लवित किया है। अनेक सन्तो व गुरुओ ने इसे अपने रक्त से सीचा व सवारा है तथा विभिन्न कालो मे अनेक प्रकार से हिन्दू समाज का मार्गदर्शन किया है, जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दू सस्कृति विश्व मे सिरमौर रही है। एक तरफ जहा अनेक मत धर्म के नाम पर मानव सहार कर रहे थे, वही दूसरी ओर हिन्दू सस्कृति समता, ममता और मानवता के आधार पर विश्व बन्धुत्व का पाठ पढा रही थी।

मगर गत तेरह सौ वर्षो से हिन्दू क्रूर विदेशी आक्रान्ताओ, मुस्लिम सुलतानो, ईसाई मिशनरियो और ब्रिटिश शासको के अमानवीय उत्पीडन का शिकार रहा है। सदियो से हिन्दुओ का लोभ, लालच और बलात् धर्म परिवर्तन होता रहा है और आज स्वतत्र भारत मे भी हिन्दुओ का तेजी से धर्मान्तरण हो रहा है। परिणामस्वरूप कभी विश्वव्यापी हिन्दू धर्म आज बचे खुचे भारत मे भी सिकुडता जा रहा है। सैक्यूलरिज्म और मुस्लिम तुष्टीकरण की आड मे हिन्दू और हिन्दू सस्कृति उपेक्षित हो रही है। हिन्दुओ की प्रतिपल घटती जनसख्या के फलस्वरूप आज हिन्दू विनाश की ओर बढ रहा है। १९९० की जनसख्या के आधार पर लक्षद्वीप, मिजोरम, नागालैड, मेघालय, जम्मू कश्मीर तथा अरुणाचल मे हिन्दू अल्पमत मे आ चुका है तथा अन्य आठ राज्यो जैसे मणिपुर, केरल, गोआ, अण्डमान निकोबार, सिक्किम, पश्चिम बगाल, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश मे हिन्दू भारत की औसत (प्रतिशत) हिन्दू जनसख्या से कम मे आ चुका है।

आश्चर्य तो यह है कि राजनैतिक सत्ताधारी तथाकथित हिन्दू ही हिन्दू सस्कृति के विनाशक सिद्ध हो रहे है। उन्हे हिन्दुओ की रक्षा की अपेक्षा किसी भी प्रकार से गैर-हिन्दुओ के वोट अधिक प्यारे है। वही दूसरी तरफ धर्मान्ध कट्टरपथी बम विस्फोटो व आतकवाद द्वारा भारत का इस्लामीकरण करना चाहते है।

ऐसी विकट परिस्थिति मे हिन्दू समाज एक बार फिर सन्त महात्मा और धर्माचार्यो से अनेक आशाए लगाए बैठा है कि वे आदि शकराचार्य की भाति एक बार फिर दिग्विजय का आह्वान करे तथा समस्त हिन्दू समाज को धर्म के एक झडे के नीचे इकट्ठा करे तथा इस्लाम व ईसाइयो के हिन्दू व हिन्दू धर्म को नष्ट करने के घातक इरादो को सदैव के लिए नष्ट कर दे। आज का नारा हो 'धर्म रक्षा ही सर्वोपरि ईश्वर पूजा है, धर्म रक्षा ही राष्ट्र रक्षा है, स्वराज्य मे ही स्वधर्म सुरक्षित रह सकेगा। आध्यात्मिकता स्वराज्य की ही छाया मे पनपती है' आदि आदि।

साथ ही हमारा धर्माचार्यो से विनम्र निवेदन है कि वे आध्यात्मिक सत्सगो के साथ-साथ राजधर्म व धर्मरक्षा पर बल दे। धर्मान्तरण के विरुद्ध धर्मयुद्ध छेड दे तथा आध्यात्मिकता की भूमि भारत से विदेशी पादरियो का भडा फोड कर उन्हे यहा से भगा दे। वे हिन्दुओ के सैनिकीकरण और राजनीति के हिन्दूकरण मे जुट जाए तथा महाभारत मे भगवान् वेदव्यास के निम्न वचन के अनुसार ब्राह्मबल व क्षात्रबल से धर्म रक्षा का प्रयास करे। इसी मे भगवा वस्त्र की सार्थकता है।

अग्रत चतुरो वेदा पृष्ठत सशर धनु। इद ब्राह्म इद क्षात्र शास्त्रादपि शस्त्रादपि।

डा० कृष्णवल्लभ पालीवाल, १२९ बी, एम आई जी, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७

सिख अलग धर्म है या वैदिक धर्म ही है?

❑ प० महेन्द्रपाल आर्य

कई दिनो से पढने व सुनने को मिल रहा है कि पजाब के किन्ही सुदर्शन चौहान जी ने सिखो को हिन्दू धर्मावलम्बी कह दिया तो उस पर विवाद खडा हो गया। कुछ सिख सगठनो के विरोध करने पर वर्तमान राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सर सघचालक श्री सुदर्शन जी ने तथा श्री ऐम सी वैद्य जी ने राष्ट्रीय अल्पसख्यक आयोग के अध्यक्ष जस्टिस माननीय मुहम्मद शमीम साहब के सामने स्वीकार किया कि सिख एक अलग धर्म है। १७ जनवरी २००१ के दैनिक जागरण के प्रथम पृष्ठ पर बडे अक्षरो मे पढने को मिला।

१५ जनवरी के दैनिक जागरण मे सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन जी ने सम्पादकीय मे 'हिन्दू धर्म की परिभाषा' शीर्षक मे लिखा है कि हिन्दू शब्द तो भारतवर्ष का नही है, यह शब्द विदेशियो द्वारा भारत मे रहने वालो के लिए प्रयोग किया गया था।

धर्म क्या है?

पहले हम विचार करेगे कि धर्म क्या है? ओर फिर विचारेगे कि वह किसके लिए है?

धर्म शब्द सुनते ही मानव मात्र के शरीर मे बिजली जैसी दौडने लगती है, मन तथा मस्तिष्क मे, क्यो कि बिजली दिखाई नही देती, छूने पर पूरे शरीर मे झटका लगाती है, ठीक इसी प्रकार बिजली झटका मारने मे भी भेदभाव नही रखती, बच्चे हो या बूढे, पिता हो या पुत्र, ठीक यही भाव है धर्म का, जो दिखाई नही देता। धर्म शब्द को सुनते ही रोगटे खडे हो जाते है, जैसे बिजली के करण्ट से।

धर्म के लक्षण

धर्म वह शब्द है, जो मानव मात्र से सम्बद्ध है। मनु महाराज ने धर्म के लक्षण **"धृति·क्षमा, दमोऽस्तेय, शौचमिन्द्रियनिग्रह , धीर्विद्या, सत्य, अक्रोधो, दशकम् धर्म लक्षणम्"** लिखा। तथा

'वेद , स्मृति. सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन·। एतच्चतुर्विध प्राहु साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्' लिखा तथा **"यतो अभ्युदय नि.श्रेयस सिद्धि· स धर्म '** भी कहा गया। हमारे धर्माधिकारी महामानवो ने किसी व्यक्ति-विशेष का या किसी वर्ग-विशेष का नाम नही लिखा और न ही किसी वश-विशेष का ही नाम लिया गया। अगर किसी का नाम लिया जाता, तो ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लगता, क्योकि धर्म ईश्वर-प्रदत्त होता है, तथा मानव मात्र के लिए होता है, जिससे मानव अलग ही नहीं हो सकता।

आहार निद्राभय मैथुन च,
सामान्य मेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मोहितेषामधिको विशेषो,
धर्मेण हीना· पशुभि समाना ॥

मानव मात्र के साथ, आहार, निद्रा, भय व मैथुन जुडा है और पशु मे भी यही खूबी है। परन्तु मानव के साथ लगा है धर्म। पशुओ मे धर्म नही है। जो मानव धर्म से अलग हो जाता है उसे पशु के समान कहा गया।

धर्म जीवन का आवश्यक व अनिवार्य अग है, जिसे अलग नही किया जा सकता। मानव जीवन का जो भी श्रेष्ठतम कार्य है, वह धर्म के माध्यम से ही प्रकट हुआ है। जिस कार्य को करने से भय, लज्जा, शका न हो, वह धर्म है, और यह मानव मात्र मे होता है। सृष्टि का निर्माण एव उसका सचालन कुछ नियमो से हो रहा है, जिनको जानना अध्यात्म कहा जाता है तथा इन नियमो को जानकर इनके अनुसार जीवन चलाने की विधि का नाम ही धर्म है।

ऊपर दर्शाये गये सभी नियम मानव मात्र के लिए है, अन्य प्राणियो के लिए नही।

धर्म और मत

अगर मानव इस मनुष्यपन धर्म को छोड दे, उसे ही शास्त्र मे पशु कहा है।

अब विचारे कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन व बहाई क्या है? धर्म को जन्म किसी खास समय किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नही दिया गया। धर्म का जन्म तो सृष्टि रचना के साथ हुआ तथा सृष्टि की रचना भी धर्म के अनुसार हुई है। सृष्टि की रचना एव सचालन जिन नियमो के अनुसार हो रहा है, वही उसका धर्म है। बिना धर्म व नियमो के सृष्टि चल ही नही सकती। सृष्टि अपने गुण, धर्म एव नियमो के अनुसार ही सचालित हो रही है और यह गुण ही उसका धर्म है। यहा हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध कोई भी खरा नही उतरता, क्योकि इनमे से कोई भी सृष्टि के प्रथम से नही है, और न ही ईश्वर प्रदत्त है। यह सब किसी न किसी व्यक्ति-विशेष द्वारा ही चलाया गया है। जो व्यक्ति द्वारा चलाया जाता है, वह मत कहाता है, न कि धर्म?

हिन्दू कोई धर्म का नाम नही है, एक वर्ग-विशेष का नाम है, और वह भी दूसरो के द्वारा दिया गया नाम है। दैनिक जागरण के सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन जी ने १८ १ २००१ के सम्पादकीय मे लिखा कि इस्लाम या मुस्लिम भी कोई धर्म का नाम नही है, और न अल्लाह ने मुसलमान बनाया, अपितु कुरान मे खलाकल इन्सान कहा है, कि अल्लाह ने इन्सान बनाया। इसी प्रकार सिख, ईसाई, बौद्ध, जैनादि ये सब मत है, धर्म नहीं, क्योकि हजरत मुहम्मद साहब से पहले धरती पर कोई मुसलमान नही थे, जिसका प्रमाण कुरान मे सुरा अनआम की आयत न० १४ मे 'कुलइन्नी उमिरतो अन अकूना अव्वला मन असलमा' कहा है कि 'ऐ मुहम्मद' तुम कह दो सबसे पहला मै मुसलमान हू, यानी मुहम्मद साहब से पहले धरती पर एक भी कोई मुसलमान नही था। हजारत ईसा से पहले कोई ईसाई भी नही थे। महात्मा बुद्ध से पहले कोई भी बौद्ध नही था, और न महावीर स्वामी के पहले कोई भी जैनी था, और गुरुगोविन्द सिह से पहले कोई भी सिख या खालसा था क्या?

भिन्न भिन्न मत

प्रकृति, जीव और ईश्वर तथा इनके सह सम्बन्धो को लेकर दुनिया मे विभिन्न मत प्रचलित हुए, जिनको लेकर सम्प्रदायो का जन्म हुआ। जैसे– इस्लाम एव ईसाई मतो ने ईश्वर तथा जीव को पृथक् माना, तो बौद्ध मत मे सृष्टि की उत्पत्ति शून्य से मानी गई। जैन मत ने जीवात्मा को परमात्मा माना है, हिन्दू मत के रामानुजाचार्य ने जीव को ईश्वर का शरीर स्वीकारा है तथा शकराचार्य, तुलसीदास तथा हिन्दू धर्मगुरु स्वामी विवेकानन्द ने प्रत्येक आत्मा को अव्यक्त ब्रह्म माना या 'ईश्वर अश जीव, अविनाशी' कहा है।

ये सब मत व्यक्ति-विशेष द्वारा ही चलाये गये है, इसलिए ये सब धर्म नही, अपितु मत है और मत होने से सत्य से परे है, और विमुख भी है। धर्म मे भेद-भाव नही होता। वह मानव मात्र का है और मत एक दूसरे के विरोधी है, जैसे– ऊपर दिखाया जा चुका है तथा **'वेदो अखिलो धर्म मूलम्'** कहा कि, सभी धर्मो का मूल वेद है। जो वेद ईश्वर, प्रकृति तथा जीव तीनो को मान्यता देता है, यही सत्य है, क्योकि वेद स्वत प्रमाण है।

सिख खालसा वैदिक धर्म की रक्षा के लिए बनाये गये

खालसा सम्प्रदाय को गुरु गोविन्द सिह ने तैयार किया था। इसी वेद तथा सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षार्थ। खालसा शब्द उर्दू के खालिस से बना। खालिस अर्थ शुद्ध, जिसमे कोई भी मिलावट नही। श्रेष्ठ अर्थात् आर्य। इसी सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिये ही उन महापुरुषो ने गुरु परम्परा को चलाया, जिससे वैदिक धर्म न मिटे, और यहा तक कि हमारे गुरुओ ने अपना शीश कटवाना उचित समझा, किन्तु धर्म मे विकृति सह्य नही हुई। इसी सत्य सनातन वैदिक धर्म तथा वेद की रक्षा हेतु गुरुओ ने जो बलिदान दिया है, धरती को कागज तथा समुद्र को स्याही बनाकर लिखा जाय, तो समुद्र का पानी तो समाप्त होना सम्भव है, किन्तु हम गुरुओ के द्वारा दिये गये इन बलिदानो की गाथा जन्म-जन्मान्तरो मे भी लिख कर समाप्त नही कर सकते।

अगर आज हमारे खालसा या सिख कहलाने वाले भाई अपने गुरुओ की जीवनी को पढते, उनके बलिदान की गाथा को जानने का प्रयास करते व अपने नाम मे सिह जोडने की सार्थकता को समझते, तो सत्य सनातन वैदिक धर्म आज विश्व के आगन मे होता और विश्व के सभी मत-मतान्तर रूपी दुकानदारो की दुकानो मे ताले लग जाते। पर हो गया उल्टा। हमारे लोग गिरगिटो को देख कर रग बदलने लग गये और गुरुग्रथ को धूप धूनी या आरती तक सीमित छोड दिया। प्रथम गुरु गुरुनानक देव जी से लेकर दसवे गुरु गोविन्दसिह तक सभी ने अधविश्वास, ऊच-नीच व समाज मे प्रचलित कुप्रथाओ को मिटाने हेतु मृत्यु पर्यन्त सघर्ष किया, दुष्टो व विधर्मियो का नाश करते हुये गुरु गोविन्दसिह ने कहा 'सवा लाख से एक लडाऊ–तभी गोविन्द सिह नाम कहाऊ'। गुरु ग्रथ मे तीन सौ तीस बार वेद का गुणगान किया गया है। एकेश्वरवाद व ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् ही कहा गया है। **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** का प्रचार होने से आज तक किसी भी गुरुद्वारे मे किसी भी देव-देवी की मूर्ति नही है। वेद को मानने हेतु इस्लाम मतावलबियो से लडाई लडी, शीश भी कटवाये। पचम गुरु अर्जुनदेव जी के बलिदान के बाद गुरु हरगोविन्द ने पाच बार मुगलो से लडाई लडी, दो तलवारे धारण की–मीरी व पीरी के नाम से। धार्मिक तथा राजनैतिक व्यवस्था को साथ-साथ लेना होगा जैसा वेद का आदेश है। नवम गुरु तेगहादुर ने अपने सम्प्रदाय के लोगो को बचाने तथा सत्य सनातन वैदिक धर्म को अक्षुण्ण रखने के लिये अपनी गर्दन को कटवा दिया और कश्मीर के उन पडितो को मुसलमान बनने से बचाया।

सिखो के बलिदान

नवम गुरु के शहीद होने पर दशम गुरु गोविन्द राय ने, जो बाल्यावस्था मे अपने पिता तेगबहादुर जी के बलिदान को देखा तो मन मे सोचा, जब शास्त्र कहता है वीर भोग्या वसुन्धरा, तो वीर बनकर ही धरती पर जीना चाहिये। अत सगठन बनाना आवश्यक है। वैदिक धर्म की रक्षार्थ लोगो को तैयार किया तथा सर कटाने हेतु उनका आह्वान किया, जिसमे लाहौर से दयाराम, दिल्ली से धर्मदास, द्वारिका से मोहकम चन्द, जगन्नाथपुरी से हिम्मत राय व साहबचन्द्र नामक पाच प्यारे तैयार हुये। धर्म की खातिर सर कटाने को इन महान् शिष्यो के नाम मे सिह लगा और गुरु गोविन्दराय से गुरु गोविन्द सिह बने व सब धर्म पर मर मिटने से खालसा या खालिस शुद्ध या आर्य ही कहलाये।

दु ख के साथ लिखना पडता है कि जिस जाति को गुरु जी विधर्मी होने से बचाना चाह रहे थे, उसी ने गुरुजी को

(शेष पृष्ठ ८ पर)

(पृष्ठ ७ का शेष)

सिख अलग धर्म है या ....

दुश्मन जान कर उनसे युद्ध किया। गुरुजी की मागठनिक शक्ति व पगक्रम पहाडी गजाओ को रास नही आया। अपनी स्वार्थ-मिद्धि के लिए अपने धर्म के एक जीते जागते प्रहरी को ममाप्त करने के लिए उन मुगलो को अपना सहयोगी माना, जो इन्हे इम्लाम की दावत दे गहे थे, मुमलमान बना रहे थे। उन पहाडी गजाओ मे राजा भीमचन्द्र, गजा अजमेरचन्द्र, राजा जसबालिया, राजा केमगीचन्द व राजा घमडमिह आदि ने गुरु गोविन्द मिह को आनन्दपुर छोडने को कहा और उनसे लडाई भी की। धर्म का जय और अधर्म का नाश हुआ। राजा बलियाचन्द मारा गया। अलीमचन्द गजा ने अपना हाथ कटवा कर, दिल्ली के मुगल बादशाह मे अनुनय-विनय करने पर दीन वेग व पैदे खा की बीम हजार मेना को माथ लेकर लडाई की। '**धर्मो रक्षति रक्षित**' सिद्ध हो गया। गुरु गोविन्दसिह ने कहा

सूरा सो पहचानिये, जो लडे धर्म के हेत।
पुरजा-पुरजा कट मरे, कबहू न छॉडि खेत।

आगे लिखने मे हृदय काप उठता है। गुरुजी आनन्दपुर छोड कर आगे चले। परिवार बिछुड गये। गगागम नामी मतान्ध ने गुरुजी के दो मासूम जिगर के टुकडो जोगावरमिह व फतेह मिह को नवाब वजीर खा को सौप दिया। नवाब ने इस्लाम कबूल करने को कहा। दोनो भाइयो के अस्वीकार करने पर दीवारो मे चिनवा दिया गया। अगर अपने आस्तीन मे माप न होते, तो यह मब कुछ नही होता। गुरु गोविन्द सिह ने कहा

इन पुत्रन के शीश पर वार दिये सुत चार,
चार मुये तो क्या हुआ? जीवित कई हजार।

गुरु जी के ज्येष्ठ दो पुत्रो ने भी दुश्मनो के दात खट्टे करते हुए शहादत पाई थी। गुरुनानक देव मे लेकर दशम गुरु तक ने असत्य, और अधर्म, समाज मे भेद-भाव को मदा सर्वदा के लिये मिटाने व सत्य मनातन वैदिक धर्म की रक्षा करने के लिए मात्र अपना मर्वस्व ही निछावर नही किया, अपितु खालसा नामी सिह नाम धारी शिष्यो को भी उपदेश दिया कि गलती से भी मत्य मनातन वैदिक धर्म मे विकृति आने न देना, क्योकि यह धर्म हमारा निजी नहीं है, मानव मात्र का धर्म है। इसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। नवाब वजीर खा के भेजे गये गुल खा के खजर के घात से ७ अक्टूबर १७०८ मे आर्यवीर हमे दिशा देने हुये सदा के लिये अमर हुये। अत मिख कोई अलग धर्म नही मत्य सनातन वैदिक धर्मी ही है।

आर्यसमाज आर्यपुरा, पुरानी सब्जी मडी,
दिल्ली–७

पाठक कृपया ध्यान दें

नीचे आर्य जगत् के उन ग्राहको की सूची दी जा रही है, जिनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है। कृपया अपना चन्दा तुरन्त भेजे, जिससे आपको 'आर्य जगत्' भेजना जारी रखा जा सके। यह सूची क्रमश प्रकाशित की जायेगी। —प्रबन्धक

ग्राहक स०	समाप्ति की तिथि	३४९३०	१९-१-९९
३४८९८	२९-१२-९८	३४९३१	१९-१-९९
३४९०१	२९-१२-९८	३४९३२	१९-१-९९
३४९०२	२९-१२-९८	३४९३३	१९-१-९९
३४९०३	२९-१२-९८	३४९३४	१९-१-९९
३४९०६	२-१-९९	३४९३५	१९-१-९९
३४९०८	९-१-९९	३४९३६	१९-१-९९
३४९०९	१३-१-९९	३४९३७	१९-१-९९
३४९१२	१४-१-९९	३४९३८	१९-१-९९
३४९१३	१६-१-९९	३४९३९	१९-१-९९
३४९१६	१९-१-९९	३४९४०	१९-१-९९
३४९१७	१९-१-९९	३४९५१	२४-१-९९
३४९१८	१९-१-९९	३४९५२	२४-१-९९
३४९१९	१९-१-९९	३४९६३	२४-२-९९
३४९२०	१७-१-९९	३४९६५	२६-२-९९
३४९२१	१७-१-९९	३४९६६	२७-२-९९
३४९२१	१७-१-९९	३४९६९	३-३-९९
३४९२२	१७-१-९९	३४९७०	४-३-९९
३४९२३	१७-१-९९	३४९७६	६-३-९९
३४९२४	१९-१-९९	३४९७८	११-३-९९
३४९२५	१९-१-९९	३४९८०	११-३-९९
३४९२६	१९-१-९९	३४९८१	११-३-९९
३४९२७	१९-१-९९	३४९८४	१६-३-९९
३४९२८	१९-१-९९	३४९८५	१६-३-९९
३४९२९	१९-१-९९	३४९८६	१६-३-९९

(पृष्ठ ५ का शेष)

आर्य समाज की महान् विभूति .....

आदरणीय प० देवप्रकाश जी को है। रावटी मे उनके द्वारा मचालित भील आश्रम मे मैने उच्च शिक्षा प्राप्त की। मैने एम ए (ममाजशास्त्र, अर्थशास्त्र मे और एल एल बी) पाम किया। इम इलाके का यह भील पडित देवप्रकाश जी की मेवा, कर्मनिष्ठा एव महान् मानवतावाद को कभी नही भूल सकता।"

धर्मपाल जी बी ए पूर्व प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, अमृतसर ने लिखा

देख तपस्या साधना गूज उठा आकाश,
धन्य, धन्य तुम धन्य हो पडित देवप्रकाश।
गर्वित तेरे कार्य पर सारा आर्य समाज,
श्रद्धा के यह कुछ सुमन, तुम्हे समर्पित आज।

श्री ख्यालीराम आर्य रत्नाकर जनकपुरा, मन्दमोर के अनुमार 'उनके ममान त्यागी, तपस्वी पुरुषार्थी, विद्वान्, दम नियमो का अक्षरश पालन करने वाला मेरी नजर मे मच्चा आर्य और दिखाई नही देना।'

शान्तिस्वरूप कपूर (दिल्ली) ने लिखा, 'प्रभु की बडी कृपा है कि जो आज घोर अन्धकार मे हमे 'देव' जेमा 'प्रकाश' प्राप्त है और इम प्रकाश मे मार्ग दर्शन पाकर कर्मठ वीर शुभ कार्यो मे डटे है। देव शब्द का अर्थ— बिना अपने आपको मामने लाए, बिना दूसरे के मामने अपने को बडा दिखाए चुपचाप मारा काम करते जाना और इम प्रकार अलौकिक शक्ति प्राप्त करना ही देवत्व है। यह यदि माक्षात् देखना हो तो प० देवप्रकाश जी के जीवन मे मिलेगा।"

"सुमन' देवव्रत जोशी, पोस्ट रावटी ग्राम रतलाम ने लिखा प० जी अखड कर्मयज्ञ मे अपने प्रत्येक सार्थक सास को ममिधा बना कर आहुति दे रहे है। ऐसा मूक तपस्वी इतिहास के पृष्ठो मे न पढा न आज तक देखा। श्री कनकमल जैन (रावटी), प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रो० उत्तमचन्द शरर, प० बिहारीलाल जी शास्त्री, वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री, प्रो० माधुराम, प० आनन्द प्रिय जी, रामगोपाल शालवाले, अमर स्वामी जी आदि आर्य ममाज के उच्च कोटि के विद्वानो, नेताओ ने इन देवप्रकाश नाम वाले 'देवपुरुष' के गुणो की अद्वितीय प्रशस्तिया गाई।

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" और मानवतावाद के आदर्श सिद्धान्तो को क्रियात्मक रूप देता हुआ महर्षि दयानन्द का यह अमर मेनानी २४ दिसम्बर १९४० के दिन श्री मद्दयानन्द मठ, दीनानगर मे इम नश्वर असार ममार का परित्याग कर परमधाम को मिधार गया।

डी ११३, शिव विहार, रोहतक
रोड, दिल्ली–८७

(पृष्ठ ४ का शेष)

आर्य युवक समाज का चरित्र निर्माण शिविर

सभा प्रधान श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी को स्मृति चिह्न भेट करते हुए । साथ मे है श्री पूनम सूरी, श्री हरवशलाल कपूर और आर्य युवक समाज के प्रधान आचार्य दिनेश एव मत्री श्री यशवीर आर्य।

लिए शिविरो को छात्रो मे बीजारोपण की सज्ञा दी तथा युवको को उद्बोधन देते हुए कहा कि ये आपके जीवन के महत्वपूर्ण दिन हैं, हिम्मत, परिश्रम मे कार्य करे और आगे बढे। समय की पाबन्दी का महत्व तथा सत्यभाषण का महत्व युवको को बताया। पुरस्कार वितरण प्रधान जी द्वारा किया गया। स्वामी आत्मबोध जी ने अपने प्रवचन मे महर्षि दयानन्द के वाक्य "मनुष्य का जीवन मत्या मत्य के निर्णय के है' की भावपूर्ण व्याख्या की।

स्वामी दीक्षानन्द जी ने अपने आशीर्वाद मे वैदिक मोहन आश्रम की व्याख्या एव महत्व को एक भजन केद्वारा समझाया और कहा कि अग्रेजी पढो, लेकिन अग्रेजियत मे बचो।

आर्य युवक ममाज के प्रधान आचार्य दिनेश ने मभी का धन्यवाद किया।

— **यशवीर आर्य**

के० आर० एम० डी० ए० वी० कालेज, नकोदर

शानदार परीक्षा परिणाम २०००-२००१

कुमार गौरव
विश्वविद्यालय में द्वितीय
स्नातक द्वितीय (१०३९/१६००)

श्वेता गुप्ता
विश्वविद्यालय में द्वितीय
स्नातक तृतीय (१८६३/२४००)

मल्लिका
विश्वविद्यालय में पचम
स्नातक विज्ञान तृतीय (१८०३/२४००)

शिल्पा विज
जिला जालन्धर में प्रथम
बारहवीं वाणिज्य (३६०/४५०)

कला, विज्ञान (प्रथम वर्ष) में वरीयता

कामिनी मोंगिया
(५९१/८००)

शिवाली जैन
(५८८/८००)

शैली
(५७९/८००)

गगनदीप
(५४९/८००)

कला(ततीय वर्ष) में वरीयता

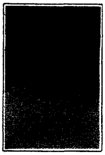
रेखा आनन्द
(५४०/८००)

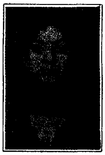
मीनू गुप्ता
(५३१/८००)

रन्तु गुप्ता
(१७२२/२४००)

ज्योति रानी
(१७०५/२४००)

कला(द्वितीय वर्ष) में वरीयता

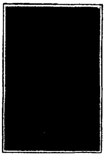
शिल्पा
(११४८/१६००)

सपना
(११०२/१६००)

ऋतु अरोडा
(१६५८/२४००)

धनीराम
प्राचार्य

(पृष्ठ १ का शेष)

धरती मां को बुखार ....

धरती मा के इस बुखार के भयावह परिणाम होगे। हम मनुष्य ही ४ अश तापमान बढने से घबडा जाते है और कष्ट अनुभव करते है। परन्तु हमसे बहुत अधिक सुकुमार अनेक फूल, पौधे, कीट, तथा अन्य प्राणी है, जो तापमान का इतना परिवर्तन सहन नही कर सकते। वे तेजी से लुप्त होने लगे है और सौ से अधिक प्रजातिया तो लुप्त हो भी चुकी है।

भविष्यवाणिया

वैज्ञानिको ने हिसाब लगा कर भविष्यवाणी कर दी है (यह भविष्यवाणी फलित ज्योतिषियो की सी अटकल पच्चू भविष्यवाणी नही है, अपितु पूछताछ खिडकी मे विलम्ब से आ रही गाडी के विषय मे मिली जानकारी जैसी भविष्यवाणी है, जिसके गलत कम और सही अधिक होने की सभावना रहती है) कि अफ्रीका के माउट किलिमजारो की बर्फ अगले १५ वर्षो मे बिल्कुल समाप्त हो जायेगी। सन् १९१२ से अब तक उसका ७५ प्रतिशत भाग लुप्त हो ही चुका है। दक्षिणी ध्रुव मे हिम पिघलने का मौसम गत २० वर्षो मे तीन सप्ताह प्रतिवर्ष बढ गया है। साइबेरिया मे बैकाल झील के जमने का मौसम १०० साल पहले की तुलना मे ११ दिन कम हो गया है। वैनेजुला मे सन् १९७२ मे ६ हिमनद थे, अब केवल दो ही बाकी है।

ये सिमटते हिमनद और बढता तापमान क्या सकेत दे रहे है? वैज्ञानिको का अनुमान है कि अगले १०० वर्ष मे पृथ्वी का माध्यिक तापमान २ ५ फारेनहाइट से १० ४ फारेनहाइट तक बढ जायेगा। यह माध्यिक तामपान है, कही इससे कम हो सकता है और कही इससे काफी अधिक हो सकता है।

अब से ५० साल पहले जर्मनी मे गर्मियो मे बिजली के पखे नही चलते थे। मौसम इतना ठडा होता था कि पखा लगाने की बात सोची ही नही जाती थी। अब वहा पखो की आवश्यकता अनुभव होने लगी है।

गगा सूख जायेगी

यदि किलिमजारो की तरह गगोत्री ग्लेशियर भी किसी दिन सूख गया, तो क्या होगा? यदि वर्तमान चाल बनी रही, पूरे भूमडल मे कोई रोकथाम न की गई, तो वह सूखेगा, अवश्य। तब गगा वैसे ही लुप्त हो जायेगी, जैसे कभी सरस्वती लुप्त हो गई थी और उसके तट पर गाव, नगर और तीर्थ उजड गये थे। गगा और यमुना के सूखने के साथ साथ पूरे उत्तर भारत का हाल क्या होगा, कल्पना कर पाना आसान नही है।

अकेले भारतवासी इस विषय मे कुछ कर सके, ऐसा नहीं लगता। वायुमडल के हिसाब से पूरा विश्व एक है और हानिकारक गैसो का विमोचन उन्नत देशो मे अधिक हो रहा है। पर्यावरण के विषय मे उन्नत देशो के लोग ही अधिक शोर मचा रहे है।

उल्टे चोर साह को डांटे

कैसी विडम्बना है कि कल तक जो दूसरे देशो को अपने अधीन करके उपनिवेश बनाये हुए थे, वे आज लोकतत्र के हामी बने हुए है। जो कल तक दासो का व्यापार करने मे अग्रणी थे, वे आज मानव अधिकारो का ढोल पीट रहे है। जिन्होने परमाणु बम सबसे पहले बनाया था और दो बार प्रयुक्त भी किया था, वे आज परमाणु अप्रसार का आग्रह कर रहे है। जिन्होने पर्यावरण को सबसे अधिक प्रदूषित किया है, वे पर्यावरण रक्षा की ध्वजा उठाये फिर रहे है।

यह सब जानते हुए भी कुछ करना हमे ही होगा। कारण यह है कि हम सभी एक ही नाव मे बैठे हैं। नाव की तली मे छेद चाहे जिसने किया हो, उसे बन्द करने मे शक्ति हमे लगानी पडेगी, क्योंकि नाव डूबी, तो हम भी साथ डूबेगे।

स्थल भाग डूब जायेगे

पृथ्वी का बुखार बढने, हिमनदो के पिघल कर समाप्त हो जाने से जहा एक ओर बारहमासी नदियो के स्रोत सूख जायेगे, वहा समुद्रो मे जल स्तर ऊचा हो जाने से बगला देश का बडा भाग, नील नदी का डेल्टा, तटीय फ्लोरिडा, लुइयाना का काफी बडा भाग जलमग्न हो जायेगा, यह तब, जब समुद्री जल का स्तर केवल डेढ से साढे तीन मीटर तक बढे। आशका इस बात की है कियदि सारे हिमनद पिघल जाये, तो समुद्रो का स्तर ७० मीटर तक ऊचा हो सकता है। वह काफी कुछ जलप्रलय का सा दृश्य उपस्थित कर देगा, जिसमे कृषि भूमि बहुत कम रह जायेगी।

इस दशा मे क्या किया जा सकता है? सबसे पहले तो जनसख्या घटाने के लिए कठोर उपाय बरते जाने चाहिए। यह कठोर सत्य है कि पर्यावरण का सारा प्रदूषण, जिससे पृथ्वी का तापमान बढा है, मनुष्य का किया हुआ है।

दूसरी बात यह है कि हमे पत्थर के कोयले और पैट्रोल, डीज़ल आदि ईधनो का प्रयोग बन्द करना चाहिए। पर इस बात की सभावना कम ही है कि विमान यात्राए, और कारे बन्द की जा सकेगी। इनसे प्राप्त सुविधाओ को त्यागना बहुत कठिन है, यह जानते हुए भी कि ये विनाशकारी है। आशाजनक बात एक ही है कि पैट्रोलियम के भडार अनन्त नही है, और वे कुछ ही दशाब्दियो मे समाप्त हो जाने वाले है।

पैट्रोल, डीजल के स्थान पर जल विद्युत् जैसे ऊर्जा स्रोतो का दोहन किया जाना चाहिए, जिनसे वायु प्रदूषण न होता हो। परन्तु हमारे देश मे सुन्दरलाल बहुगुणा और मेधा पाटकर जैसे आन्दोलनजीवी नेता है, जो जलविद्युत् परियोजना को चलने ही देना नही चाहते। टिहरी बाध और सरदार सरोवर बाध उनकी बाधा के कारण बरसो अटके रहे।

धरती मा के बुखार के उतारने का प्रयत्न हमे करना ही होगा, क्योकि मा के रुग्ण रहते उसके दुधमुहे बच्चो का भविष्य अन्धकारमय हो जाता है। और हमारी स्थिति दुधमुहे बच्चो से अधिक नही है।

(पृष्ठ २ का शेष)

सर्वोत्तम फल की कामना .....

सदाचारी लोगो का अनादर करने और उन्हे उपेक्षित बनाने मे नही झिझकते, याज्ञिक कहलाने के सच्चे अधिकारी नही है।

वेद तो यहा तक कहता है कि जो यज्ञिय विद्वानो मे अधिक यजनीय है, फिर भी सबकी शान्ति के लिये भजनीय परमेश्वर की उपासना और अपने भाग मे आए कर्तव्य का पालन करते है, किन्तु अग्निहोत्र नही कर पाते, उन्हे अपने को कर्तव्यच्युत या हीन नही समझना चाहिये, अपितु अपने जीवन यज्ञ का निर्वाह करने के लिये इन आहुति रूप हवि, घृत, मधु का स्वय पान कर लेना चाहिये।'[13]

टिप्पणिया

१ श्रेष्ठत्व ताम्यति आकाक्षति येन कर्मणा तत्—श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ ।

२. यज्ञो वभूव स आ वभूव
स प्रजज्ञे स उ वावृधे पुन ।
स देवानामधिपतिर्बभूव
सोऽस्मासु द्रविणमादधातु ॥ *अ० ७ ५ २*

३ यस्य ते स्वादु सख्य स्वाद्वी प्रणीतिरद्रिव । यज्ञो वितन्तसाय्य । *ऋक् ८ ६८ ११*

४ स्वर्यन्तो नापेक्षन्त आ द्या रोहन्ति रोदसी। यज्ञ ये विश्वतोधार सुविद्वासो वितेनिरे ॥ *अथर्व० ४ १४ ४*

५. समिधाग्नि दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन ॥ यजु० ३ १ स्वाहा यज्ञ कृणोतन। *ऋ० १ १३ १२*

यजूषि यज्ञे समिध स्वाहाग्नि प्रविद्वानिह वो युनक्तु। अ० ५ २६ १ यज्ञो वै स्वाहाकार । शत० ३ १ ३ २७

६. तद्वै सर्व एव यज्ञो नौ स्वर्ग्या। *माश ४ २ ५ १०*

७ ऊर्ध्वा वा एते स्वर्ग लोक रोहन्ति ये यजन्ते। *जै० १ १७३*

८. यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म। *शत० १ ७ १ ५*

९ य क च लोकमगन्यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत्। *यजु० ८ ६०*

१० सर्वै पूजनीयो जगदीश्वरो यज्ञ । *यजु० २३ ६२* यज्ञेन प्रशस्तधनप्रापकेणेश्वरेण। यजु० *१८ १०* (स्वामी दयानन्द भाष्य)

११ यज्ञस्य दोहो वितत पुरुत्रा सोऽअष्टधा दिवमन्वाततान। *यजु० ८ ६२ तथा ८ ६०*

देवहूर्यज्ञ आ च वक्षत् सुम्नहूर्यज्ञ आ च वक्षत्। यक्षदग्निर्देवॉ आ च वक्षत्। *यजु० १७ ६२*

१२ ऋषियज्ञ देवयज्ञ भूतयज्ञ च सर्वदा। नृयज्ञ पितृयज्ञ च यथाशक्ति न हापयेत्। *मनु० ४ २१*

अध्यापन ब्रह्मयज्ञ· पितृयज्ञश्च तर्पणम्। होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्। *मनु० ३ ७०*

स्वाध्यायादर्चयेदृषीन् होमैर्देवान् यथाविधि। पितृन् श्राद्धैश्च नृनन्नैर्भूतानि बलिकर्मणा। *मनु० ३ ८१*

१३ ये देवा देवाना यज्ञिया यज्ञियाना सवत्सरीण भागमुपासते। अहुतादो हविषो यज्ञेऽस्मिनस्वय पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ यजु० १७ १३ सवत्सरो वै सर्वस्य शान्ति । ताण्ड्य ९ ८ १३

क्या कोई बता सकता है?

कहते है कि महर्षि दयानन्द के एक भक्त वैदिक विद्वान् बापू शिवकर जी तलपदे ने सर्वप्रथम १९०३-४ मे केवल १२० फुट तक विमान उडाने वाले राइट बन्धुओ से भी ११ वर्ष पूर्व १८९३ के लगभग मुम्बई मे चौपाटी पर बडौदा के महाराज सयाजीराव गायकवाड के सभापतित्व मे अपना बनाया विमान 'मरुत्सखा' उडाया था। वैदिक सम्पत्ति मे भी इसका उल्लेख आया है। प्रश्न यह है कि यह समाचार सबसे पहले कब, किस दैनिक पत्र मे छपा? उस समय मुम्बई से छपने वाला शायद एक पत्र 'टाइम्स ऑफ इडिया' रहा हो। उसमे या अन्यत्र यह समाचार छपा होना चाहिए। क्या कोई इस समाचार का मूल बता सकता है?

कहा जाता है कि महाराज ने तलपदे जी को इस विमान मे और सुधार करने को कहा था, पर क्योकि शीघ्र ही उनकी पत्नी, जो उनके अन्वेषण मे भी सहायक थीं, चल बसी, अत उन्होने निराशा की स्थिति मे यह विमान किसी विदेशी कम्पनी को बेच दिया।

ध्यान रहे कि श्री तलपदे प० सातवलेकर जी के कलागुरु थे और उन्होने अपने सस्मरणो मे कही यह लिखा है कि उनके विमान का एक कला नमूना उनके घर पर रखा रहता था, पर फिर उसका क्या हुआ, यह नही लिखा। इस पूरे तथ्य की विस्तृत खोज की जानी चाहिए।

समाचार जगत्

शिक्षकों के लिए वैदिक प्रशिक्षण शिविर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा (हि० प्र०) के तत्वावधान मे अध्यापिकाओ एव अध्यापको हेतु "वैदिक प्रशिक्षण शिविर" का आयोजन दिनाक ८ जून २००१ से १० जून २००१ तक प्रिंसिपल श्री ऐम० शर्मा की अध्यक्षता मे किया गया। प्रतिदिन प्रात ७ बजे से ८ बजे तक हवन व यज्ञ आचार्य श्री उमेश यादव और आचार्य तिलक राज की अध्यक्षता मे किया गया। तदुपरान्त इसका शुभारम्भ शिक्षा निदेशक एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा (हि० प्र०) के प्रधान श्री ऐस० के० शर्मा ने ओ३म् ज्योति प्रज्वलित करके किया तथा स्त्री शिक्षा, आचरण, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् और श्रवण, मनन, निदिध्यासन पर बल दिया। शिविर का मच सचालन आचार्य तिलकराज ने किया। लठियाणी से आये विद्वान् श्री वेदप्रकाश ने प्रत्येक मनुष्य द्वारा सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन किये जाने पर बल दिया। उन्होंने विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष (नवम समुल्लास) आचरण भक्ष्याभक्ष्य (दशम समुल्लास) और प्रथम समुल्लास मे आये ईश्वर के विभिन्न नामो की व्याख्या की। आचार्य श्री भद्रसेन जी ने वेदो की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है, स्वत प्रमाण है। उन्होंने चारो वेदो के विषयो का विस्तार से वर्णन किया, जो अतिरोचक, प्रशसनीय और ज्ञान से युक्त था।

डा० रामसुभग सिह जी ने "वर्ण आश्रम व्यवस्था" पर व्याख्यान देते हुए कहा कि चारो वर्णो का विभाजन उनके गुण, कर्म, स्वरूप और स्वभाव के अनुकूल होना चाहिए तभी हम और हमारा समाज उन्नति की ओर अग्रसर होगा। उन्होंने कहा कि डी० ए० वी० के प्रत्येक शिक्षक को धर्म एव अपनी सस्कृति से अवगत होना चाहिए और सभी छात्र एव छात्राओ को भी धर्म और सस्कृति की शिक्षा देनी चाहिए, तभी उनका सर्वागीण विकास होगा और वे अन्धविश्वासो से दूर रहेंगे।

डा० उमेश यादव (हिसार) ने त्रैतवाद का आध्यात्मिक स्वरूप, 'शिक्षा सस्कार और सेवा', सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे वर्णित बालशिक्षा और सस्कारो की महत्ता पर प्रकाश डाला। सेवा को उन्होंने 'परमो धर्म' की सज्ञा दी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा (हरियाणा) के प्रधान एव डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल श्री आर० के० चौहान ने "हवन का वैज्ञानिक दृष्टिकोण" प्रस्तुत करते हुए यज्ञ का आकार, समिधाओ का चयन आदि विषयो पर अपने विचार रखे जो अति प्रशसनीय थे। डी० ए० वी० कालेज चडीगढ के प्राचार्य श्री आर० सी० जीवन ने यज्ञ और कर्मफल व्यवस्था पर विभिन्न ग्रथो के प्रमाण देते हुए 'किए हुए कर्म का फल अवश्य भोगना पडता है' इस सिद्धान्त की स्थापना की। अन्त मे डी० ए० वी० पब्लिक विद्यालय के प्राचार्य श्री ऐम० शर्मा ने "वैदिक प्रशिक्षण शिविर" मे आये हुए शिविरार्थियो, अतिथियो एव गणमान्य व्यक्तियो को सम्बोधित किया और डी० ए० वी० कालेज चडीगढ के प्राचार्य आर० सी० जीवन के कर कमलो द्वारा आचार्य श्री भद्रसेन, आचार्य श्री उमेश यादव तथा श्रीमती शान्ति देवी को शाल देकर सम्मानित किया। अन्त मे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल लठियाणी, अम्बोटा, हमीरपुर नगरोटा सूरिया, लक्कड बाजार शिमला, डी० पी० एस० शिमला, मन्नई, डी० ए० वी० सीनियर सैकेण्डरी ऊना और डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल ऊना के शिविरार्थियो को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। निस्सदेह आज के दूषित वातावरण मे ऐसे शिविरो की महती आवश्यकता है, तभी हम समाज को अच्छी सन्तान और श्रेष्ठ समाज सुधारक और राष्ट्र निर्माता देने मे सहायक सिद्ध होंगे।

धर्मशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण—प्रवेश सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के तत्वावधान मे डी० ए० वी० नैतिक शिक्षासस्थान द्वारा वर्ष २००१-२००२ के लिए १४ जुलाई २००१ तक प्रार्थना पत्र आमत्रित हैं। १४ जुलाई २००१ को सायकाल ५ बजे तक प्रार्थना पत्र लिये जायेगे। प्रार्थी की योग्यता शास्त्री, सस्कृत एम० ए०, आचार्य होगी। प्रार्थी की पृष्ठभूमि आर्यसमाजी होनी चाहिए।

मूल प्रमाण पत्रो सहित २८ जुलाई प्रात ९ बजे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे पहुचने का कष्ट करे। प्रात ९ ३० बजे लिखित परीक्षा होगी। लिखित परीक्षा मे उत्तीर्ण प्रार्थी ही दोपहर २ बजे साक्षात्कार मे सम्मिलित होगे। धर्मशिक्षक का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् "धर्म मार्तण्ड" की उपाधि दी जायेगी। प्रशिक्षण काल मे आवास, भोजन, बिजली, पानी की नि शुल्क सुविधा होगी। पुस्तके भी नि शुल्क दी जायेगी। प्रशिक्षण के पश्चात् डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल मे धर्मशिक्षक ही नियुक्त किया जायेगा। अधोहस्ताक्षरी के नाम आवेदन करे

प्रबोध महाजन
महामत्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६३७१८, ३३६२११०

आर्यवीर दल टकारा का १८वा स्थापना दिवस सम्पन्न

पिछले सत्रह वर्ष मे अपने क्षेत्र मे निरतर सेवा कार्य कर रहे आर्य वीर दल टकारा का १० जून को स्थापना दिवस अत्यन्त उत्साहमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। इक्कीस कुडी यज्ञ मे प्रत्येक गृहस्थ आर्य वीर दम्पती को यजमान के रूप मे बिठाया गया। इस बृहद् यज्ञ का सचालन महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के आचार्य रामदेव जी शास्त्री एव श्रीमती वरुणादेवी आर्या ने किया। ज्येष्ठ आर्य वीरो ने आर्यवीर दल को सस्कार-धाम बताते हुए प्रत्येक नये विद्यार्थी को नित्य उपस्थित होने के लिए प्रोत्साहित किया। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य ने दम्पतियो को आशीर्वाद दिया और आर्य वीरो के निरतर सक्रिय रहने के लिए मार्गदर्शन किया। प्रात काल प्रभातफेरी एव दोपहर को प्रीति भोज के बाद शाखा विसर्जित की गई। कार्यक्रम का सचालन वरिष्ठ आर्यवीर केतन कटारिया ने किया तथा इसे सफल बनाने मे वर्तमान आर्यवीर दल टकारा के सचालक श्री रञ्जनीकात मारसाणीया एव सहायक सचालक देवकुमार पडसुबीया ने बहुत पुरुषार्थ किया।

दूरदर्शन पर बच्चो के लिए वेद शिक्षा

भुवनेश्वर दूरदर्शन द्वारा "बच्चो के लिए वेद शिक्षा" शीर्षक से एक कार्यक्रम उडिया भाषा मे प्रारम्भ किया गया है। इसकी प्रथम रेकार्डिंग भुवनेश्वर आर्यसमाज उद्यान मे २४ मई को तथा प्रसारण १ जून को हुआ। आर्य विदुषी श्रीमती शन्नोदेवी ने बच्चो को शिक्षा प्रदान की। उन्होंने वेद का प्रारम्भिक परिचय देने के उपरान्त बच्चो के लिए उपयोगी कुछ मत्रो की व्याख्या की।

आर्य समाज वैबसाइट का शुभारम्भ

श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने आज आर्यसमाज, बी-६९, सै० ३३, नोएडा के परिसर मे एक वैबसाइट wwe aryasamaj org का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर स्वामी जी ने कहा कि सदियो से भारत विश्व गुरु रहा है। आज भी विश्व को भारत की आवश्यकता है और उसे सही दिशा देने का एकमात्र यही मार्ग है।

श्री अनुपम बक्षी (एन० आर० आई) के द्वारा बनाए गए इस साइट का उद्देश्य भारतीय आर्ष पद्धति का व्यापक प्रचार-प्रसार करना है। इस वैबसाइट से देश विदेश मे फैल रही तरह तरह की भ्रान्तिया एव अधविश्वासो को दूर करने का प्रयत्न किया जाएगा। वेद एव दर्शन शास्त्र के गूढ विषयो के साथ ही दैनिक जीवन मे भी उपयोगी लेख, प्रवचन, भजन इत्यादि इस साइट पर उपलब्ध कराए जाएगे, जिनमे स्वास्थ्य एव सामाजिक समस्याओ के समाधान भी शामिल होगे।

इस वैबइट की मुख्य विशेषता एक ऐसी योजना है, जिसके अन्तर्गत वेद मत्रो को अर्थ सहित आन लाइन किया जाएगा जिससे, वेदो का पठन पाठन आम जनता के लिए सुलभ हो जाएगा। इसके साथ ही भजनो को सगीतमय तथा शुद्ध उच्चारण के लिए मत्रो एव प्रवचनो को भी साइट पर सस्वर डालने का प्रयत्न किया जाएगा।

इस वैब साइट को आर्य समाज के कई अन्य वैब साइट जो बन चुके है, उनमे भी जोड दिया गया है, जिससे विश्व भर मे हो रही आर्य समाज की गतिविधियो का पता लगाया जा सकता है। इनमे से कुछ वैब साइट इस प्रकार है

१ आर्य प्रादेशिक सभा २ आर्य अमेरिका ३ आर्य समाज, ह्यूस्टन ४ आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका ५ सस्कृत ट्यूटर ६ सामवेद रिसर्च साइट ७ आर्यसमाज टकारा ८ One true religion जहा पूरा सत्यार्थ प्रकाश इग्लिश मे आन लाइन कर दिया गया है।

आप अपने सुझाव व उपयोगी लेख देकर भी सहायता कर सकते है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया वैबसाइट देखे या अनुपम बक्षी से दूरभाष ४५२२६८५ पर सम्पर्क करे।

वेद प्रचार के लिए उपदेशक

श्रावणी पर्व मे पूर्व आर्य समाजे वेद प्रचार का आयोजन किया करती है। प्रादेशिक सभा के पास भजनोपदेशक उपलबध है। उनकी सेवाए प्राप्त करने के लिए सभा कार्यालय मे सम्पर्क करे। टेलीफोन ३३६३७१८।

प्रबोध महाजन
मत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

भूल सुधार

'आर्य जगत्' के १७ जून २००१ के अक मे पहले पृष्ठ पर ही राजकुमारी जयन्ती के परिचय मे 'वीरेन्द्र वीर विक्रमशाह देव के भाई ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह देव की पत्नी' छप गया है। ६४ हार्मनी ग्रोव रोड, लिलबर्ग, अटलाटा जी ए ३००४७ मे सेनुका ने लिखा है कि जयन्ती शाह स्वर्गीय राजा वीरेन्द्र के छोटे चाचा श्री वसुधरा वीर विक्रम की लडकी है। वर्तमान राजा ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम की पत्नी रानी कोमल राज्य लक्ष्मी देवी है, जो इस काड मे घायल हो गई थी। पाठक कृपया नोट कर ले।

—स०

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R No D L 11082/2001
POSTED AT N D P O ON 4/5-7-2001 दिनाक ८-७-२००१

36583 पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार - 249404
उत्तरांचल

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा मे

डी० ए० वी० का ११६वा स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

इस अवसर पर प्रात आयोजित हवन-प्रार्थना-भजन कार्यक्रम मे विद्यालय की प्रधानाचार्या सुश्री सतीश शर्मा के साथ अन्य शिक्षक-शिक्षिकाओ एव विद्यार्थियो ने भी भाग लिया। श्रीमती मजू तिवारी व श्री पी० सी० जोशी इस समारोह मे मुख्य अतिथि थे। पहले विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओ एव विद्यार्थियो ने डी० ए० वी० विद्यालय के कर्णधार एव सस्थापक महात्मा हसराज तथा जस्टिस मेहरचन्द महाजन और बाबू दरबारी लाल का जीवन परिचय दिया। प्रथम डी० ए० वी० विद्यालय के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान तक आन्दोलन की सम्पूर्ण कार्यप्रणाली एव विभिन्न डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ के सम्बन्ध मे अपने विचार प्रस्तुत किये। विद्यार्थियो द्वारा अनेक रगारग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गये। विद्यालय की शिक्षिकाओ ने ऋषि दयानन्द की महिमा पर आधारित भजन 'जग मे वेदो की बासुरिया बजायी ऋषि ने' तथा छात्रो ने 'दयानन्द देव वेदो का उजाला लेकर आये थे' भजन प्रस्तुत किया। नन्हे मुन्ने छात्रो द्वारा फैन्सी ड्रेस कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमे विद्यालय की यू० के० जी० की छात्रा कु० दीपा फर्त्याल (प्रथम), कक्षा तीन की छात्रा सुरभि नज्ञौन (द्वितीय) व कक्षा छह के छात्र मयक नौटियाल व करन नज्ञौन (तृतीय) को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

अन्त मे प्रधानाचार्या सुश्री सतीश शर्मा ने विद्यालय की उत्तरोत्तर होती उन्नति के विषय मे अपने विचार प्रस्तुत कर मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया। मच का सचालन शिक्षिका कु० अनुपमा साह ने तथा फैसी ड्रेस मे मच सचालन कु० भावना साह द्वारा किया गया।

ऐस० बी० पी० डी० ए० वी० शताब्दी पब्लिक स्कूल, फतेहाबाद-१२५०५०

मार्च २००१ मे सम्पन्न 'केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड' की दसवी कक्षा की परीक्षा मे अपना प्रथम स्थान बनाये रखने मे हम पुन सफल रहे।

विशेष उपलब्धि . कुल परीक्षार्थी—७२, उत्तीर्ण—७२, प्रथम श्रेणी मे ६०

हमारे वरीयता प्राप्त छात्र ·

१	नैन्सी नारग	८९ ४%	२	नितेश जैन	८९ ४%
३	ज्योति मेहता	८९%	४	रमणीक मेहता	८८ ८%
५	अमित सिघला	८८ ४%	६	मजरी	८७ २%
७	ईशा नारग	८७%	८	पारुल मलिक	८४ ६%
९	सिम्पी बजाज	८२ ६%	१०	पीयूष मेहता	८२ ४%
११	शैली बत्रा	८१ २%	१२	दीपिका	८१ २%
१३	प्रियका जैन	८० ६%	१४	दीपिका	७९ ६%

विषयानुसार विशेष योग्यता :

१ अग्रेजी—१८
२ विज्ञान—५५
३ गणित—२१
४ हिन्दी—२४
५ सामाजिक विज्ञान—३१
६ सस्कृत—१६ (१००%)

आर० के० सेठी
प्राचार्य

आर्य समाज मन्दिर मिन्टो रोड, नई दिल्ली का पुनर्निर्माण

दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की एक विशेष बैठक रविवार २४ जून २००१ को आर्य समाज मन्दिर ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली मे हुई, जिसमे निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये गये

प्रस्ताव

१. **श्री जगमोहन जी, शहरी** विकास मत्री, भारत सरकार के आदेश से १४ अप्रैल २००१ को आर्य समाज मिन्टो रोड, नई दिल्ली को बुल्डोजर द्वारा ध्वस्त कर दिया गया। यह मन्दिर लगभग ५० वर्षो से स्थापित था। इस मन्दिर मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की लाखो रुपयो की पुस्तके, वेद और अन्य धार्मिक ग्रथ, एक कमरे मे वहा रखे हुए थे। दूसरे कमरे मे दिल्ली प्रदेश आर्यवीर दल का बहुत कीमती सामान रखा हुआ था। एक अन्य कमरे मे गुरुकुल के ब्रह्मचारी रह रहे थे उनको भी गिरफ्तार करके पुलिस स्टेशन ले गये और उनके लिए जो लगर का सामान आटे की बोरी, घी का कनस्तर और यज्ञ का सामान आदि वहा रखे हुए थे, पुलिस यह सारा सामान उठा कर ले गई और आज तक आर्य समाज को वापस नही किया है।

हम श्री जगमोहन जी के इस गैर कानूनी कार्य, आर्य समाज मन्दिर को तुडवाने की घोर निन्दा करते है और भारत सरकार से अपील करते है कि इस मन्दिर को दुबारा बनवाने के लिए तुरन्त कार्यवाही करे और आर्य समाज का सारा सामान पुस्तके आदि जो पुलिस ले गई है, वह तुरन्त वापस किया जाये।

२ आर्य समाज मिन्टो रोड का निर्माण उसी स्थान पर होगा, जिस पर स्वामी ओमानन्द जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने २२ अप्रैल २००१ को शिलान्यास किया था।

३ यदि भारत सरकार ने हमारी मागे स्वीकार नही की तो सारा आर्य जगत् सघर्षपूर्ण आन्दोलन व सत्याग्रह आदि शुरू कर देगा। इसकी सारी जिम्मेवारी भारत सरकार एव श्री जगमोहन, शहरी विकास मत्री पर होगी।

महामत्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा

योग के स्वरूप पर विचारगोष्ठी

योग के श्रद्धालुओ के लाभार्थ वेदादि सत्यशास्त्रो की जिन मान्यताओ को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वीकार किया है, उनकी जानकारी हेतु इस सगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आप सपरिवार आमन्त्रित है।

विषय १ समाधि प्राप्ति के साधन। २ समाधिस्थ व्यक्ति की पहिचान। ३ समाधिस्थ व्यक्ति की कार्यक्षमता। ४ वर्तमान यौगिक प्रक्रिया की अनुपादेयता।

उपरोक्त विषयो हेतु निमन्त्रित विद्वान् १ स्वामी सत्यपति जी, रोजड २ स्वामी श्री दिव्यानन्द जी सरस्वती योगधाम, ज्वालापुर ३ स्वामी श्री धर्मानन्द जी सरस्वती आबूपर्वत, ४ डा० श्री सोमदेवजी शास्त्री मुम्बई, ५ आचार्य विद्यादेव जी टकारा, ६ डा० श्री धर्मवीर जी अजमेर।

समय . शनिवार व रविवार, दिनाक २८-२९ जुलाई, २००१

स्थान . ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थान)

अध्यक्षता स्वामी श्री ओमानन्द जी सरस्वती, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली करेगे।

आर्य विद्वान् की पुत्री का यज्ञोपवीत संस्कार

डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री की सुपुत्री कु० प्रभा का यज्ञोपवीत सस्कार काशी की सुप्रतिष्ठित शैक्षणिक सस्था पाणिनि कन्या महाविद्यालय मे २० जून २००१ ई० को सम्पन्न हुआ। प्राचार्या मेधा देवी ने पूर्ण सस्कार कराया। इस कार्यक्रम मे आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी के सदस्य भी सम्मिलित हुए।

आर्य नेता भगवानदीन को श्रद्धांजलि

१२ जून २००१ को आर्य समाज प्रतापगढ (उ० प्र०) के कर्मठ, लगनशील एव प्रखर प्रचारक श्री भगवानदीन जी का देहावसान हो गया। उनको श्रद्धाजलि देने के लिए उनके निवास स्थान पर शान्ति यज्ञ एव शोक सभा का आयोजन किया गया। दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और उनके शोकाकुल परिवार से समवेदना प्रकट की गई।

श्री भगवानदीन जी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। उन्हें आर्य समाज के प्रचार की लगन थी। वह अपने स्वास्थ्य और थकान की परवाह न करते हुए भी अनवरत प्रचार कार्य मे लगे रहते थे। उनके निधन से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। उनके सुयोग्य पुत्र डा० शम्मित्र ने आर्य समाज तथा आर्य सस्थाओ को मुक्तहस्त से दान दिया।

मुद्रक व प्रकाशक - श्री **प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409 5751330) दिल्ली मे छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 मे प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718 3362110) सम्पादक—**उदयवीर 'विराज'**

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशो मे ३० पौं० या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक २१
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, २२ जुलाई, २००१
श्रावण शु०-२-वि० स०-२०५८
सप्ताह २२ जुलाई से २८ जुलाई

समझौते के लिए बेचैन लोग दास बनते हैं

❑ श्री दत्तात्रेय तिवारी

दुर्बोध पहेली थी यह देश आर्यावर्त, भारत, हिन्द, हिन्दुस्तान, इडिया शताब्दियो तक, सहस्राब्दियो तक पराजित और पराधीन क्यो रहा? यहा के लोग सुसस्कृत और धर्म परायण थे, फिर वे आक्रान्ताओ के सम्मुख बार बार क्यो हारते रहे? महमूद गजनवी के आक्रमण तो बहुत बाद के है, उससे पहले, यूनानी, शक, हूण, और कुषाण इस शस्य श्यामला भूमि को रौंदते रहे। सिकन्दर से ले कर रुद्रदामन्, कनिष्क, गजनवी, गोरी, खिलजी, तुगलक, बाबर, नादिरशाह और अब्दाली तक एकलम्बा शोचनीय पराजयो का इतिहास है। मुट्ठी भर लोग आते थे और इस सिरे से उस सिरे तक जीतते चले जाते थे। गाजर मूली भी इतनी आसानी से नही कटती।

पराजय ही पराजय

दिग्विजयो, अश्वमेध यज्ञो, चक्रवर्ती राज्यो के विवरण लिखित इतिहास से पूर्व के है, कथाए है, गाथाए है, पुराण है। लिखित इतिहास तो पराजयो का एक लम्बा चिट्ठा मात्र है।

१० वर्षो तक कश्मीर मे अघोषित युद्ध लडते रहने, अरबो रुपये और ५० हजार से अधिक लोगो की जानें गवाने के बाद भारत के प्रधानमत्री ने पाकिस्तान के सैनिक तानाशाह को जो सधि निमत्रण दिया, उससे यह दुर्बोध पहेली सुलझ गई। यह समझ आ गया कि भारतवासी आक्रान्ताओ के सम्मुख क्यो पराजित होते रहे।

भारतवासी गोवशी

भारतवासी गोवश या मृगवश के प्राणी है। ईरान, अफगानिस्तान तथा अन्य म्लेच्छ देशो के निवासी वृक या श्वान वश के प्राणी है। गोवश या मृगवश घास चरने और परभक्षियो के हाथो मरने के लिए ही बने है। भेडिये और जगली कुत्ते समूहबद्ध हो कर गौओ या हिरनो के झुड पर हमला करते है। बैल और हिरन मिल कर उनका सामना नही करते। अपनी अपनी प्राण रक्षा के लिए भाग खडे होते है। भेडिये या जगली कुत्ते अपने से आठ दस गुने बडे बैल को थका कर मार गिराते है और खा जाते है। बैलो के वे दात और पजे ही नही है, जिनसे वे प्रतिद्वन्द्वी को चीर फाड डाले।

पहेली फिर उलझी। आक्रान्ता यूनानियो, ईरानियो, तुर्को, और अफगानो मे शारीरिक दृष्टि से भारतवासियो से कोई ऐसा अन्तर नही है, जिसके कारण भारतवासियो को गोवशी या मृगवशी माना जा सके, और आक्रान्ताओ को वृकवशी। उनके भी वे ही दो हाथ और दो पाव होते है, जो भारतवासियो के होते है, वे अधिक शक्तिशाली या बुद्धिशाली भी नही होते।

अन्तर तन में नहीं

फिर समझ आया कि अन्तर शरीर रचना मे नही, मन की रचना मे है। नवजात मानव शिशु गीली मिट्टी के लौदे के समान होता है, जिसे शिक्षा और सस्कार द्वारा चाहे जैसा ढाला जा सकता है। उसे बैल या हिरन भी बनाया जा सकता है और भेडिया या बाघ भी। हमारे मनीषी लोगो को घास चरना सिखा गये है, खून पीना नही। बुद्ध, महावीर, कबीर गाधी, सभी अहिसा का उपदेश दे कर गये है। महाभारतकार का यह वाक्य बिल्कुल ही भुला दिया गया

अहिसा परमो धर्म. ब्राह्मणस्य प्रकीर्तित.।
क्षत्रियस्य तु दुष्टाना दलन पालन सताम्।

(अहिसा को ब्राह्मणो का परम धर्म बताया गया है। परन्तु क्षत्रिय का परम धर्म है दुष्टो का दलन, सहार और सज्जनो का पालन)।

पापी से समझौता नही

हमारे दो महान ग्रथ रामायण और महाभारत एकही शिक्षा देते है— दुष्ट से, दुष्टता से, पाप से समझौता नही करना। जब तक शरीर मे प्राण रहे, तब तक पापी से लडना है। इस धर्मयुद्ध मे प्राण चले गये, तो परलोक मे स्वर्ग (सुख) मिलेगा। विजय हुई, तो भी सुख मिलेगा।

युद्ध से डरना नही है, क्योकि मृत्यु केवल शरीर की होती है, आत्मा अजर, अमर है।

इस सबके बाद भी भारत के प्रधानमत्री ने पाकिस्तान के सैनिक शासक को दिल्ली आ कर सन्धि वार्ता करने के लिए निमत्रित किया।

सधि किस काम की?

सधि वार्ता किस बात पर? पाकिस्तान का कहना है कि केवल कश्मीर पर। १९४८ मे युद्ध के बाद सधि वार्ता हुई, १९७२ मे शिमला समझौता हुआ, सन् १९९९ मे बस यात्रा के बाद अटल बिहारी वाजपेयी और नवाज शरीफ ने लाहौर मे समझौते की घोषणा की। जब नवाज शरीफ लाहौर मे शान्ति वार्ता कर रहे थे, तब जनरल परवेज मुशर्रफ कारगिल मे अपने सैनिक बडे पैमाने पर भेज रहे थे। उन पाकिस्तानी आक्रान्ताओ को भगाने मे हमे अपने सैकडो सैनिको से हाथ धोना पडा। कुछ समय बाद जनरल परवेज प्रधानमत्री नवाज शरीफ को अपदस्थ करके स्वय ही पाकिस्तान के शासक बन बैठे। क्या ऐसे व्यक्ति को सधि के लिए आमत्रित करना उचित हुआ?

सधि कब की जाती है?

यह सही है कि युद्ध सदा नही चलता रह सकता, कभी न कभी तो शान्ति स्थापित होती है। पर यह भी सही है कि प्रतिपक्षियो मे जो पहले धैर्य छोड देता है, घबडा जाता है, वह हार जाता है, चाहे बाद मे यह पता चले कि यदि वह कुछ देर और समझौता न करता तो उसका विरोधी पक्ष हथियार डाल देता।

इस समय भारत के लिए क्या विवशता थी कि वह सन्धि के लिए समझौते के लिए पहल करता? पाकिस्तान की आर्थिक दशा जर्जर है। अफगानिस्तान मे तालिबान की सहायता करने के कारण रूस और ईरान उससे रुष्ट है। ओसामा बिन लादेन को ले कर अमेरिका तालिबान से और उसके सहायक पाकिस्तान पर कुपित है। इस परिस्थिति का लाभ न उठा कर उससे समझौते की बातचीत करना कौन सी बुद्धिमत्ता है?

बातचीत किन विषयो पर हो सकती है? श्री मुशर्रफ का कहना है कि कश्मीर पर, बाद मे और विषयो पर भी जैसे कि ईरान से गैस की पाइप लाइन पाकिस्तान की भूमि पर हो कर आने देने के बारे मे।

(शेष पृष्ठ १० पर)

वचन भंग करने वाले से समझौता न करें

सत्यधर्मविहीनेन न सदध्यात्कथञ्चन।
सुसन्धितोऽप्यसाधुत्वादचिराद्याति विक्रियाम्। पचतत्र *काकोलूकीयम्*, २४

(**सत्य धर्म विहीनेन**) सत्य धर्म से रहित (असत्यभाषी या वचन से मुकरने वाले) व्यक्ति से (**कथचन**) कभी (**न सदध्यात्**) सन्धि या समझौता न करे। (**सुसन्धित अपि**) अच्छी तरह, भली भाति सन्धि कर लेने के बाद भी वह (**असाधुत्वात्**) दुष्ट होने के कारण (**अचिरात्**) शीघ्र ही (**विक्रिया याति**) बिगड जाता है, समझौते से मुकर जाता है।

रिपुरक्तेन ससिक्ता तत्स्त्रीनेत्राम्बुभिस्तथा।
न भूमिर्यस्य भूपस्य का श्लाघा तस्य जीविते। पचतत्र, *काकोलूकीयम्*, ३४

(**यस्य भूपस्य भूमि**) जिस राजा की भूमि (**रिपुरक्तेन**) शत्रुओ के खून से (**तथा**) और (**तत् स्त्री नेत्राम्बुभि**) उसकी स्त्रियो के आसुओ से (**ससिक्ता न**) तर नही होती (**तस्य जीविते का श्लाघा**) उसके जीवित रहने मे प्रशसा की क्या बात है?

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित लेखो मे व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

उपनिषत्सुधा

आत्मा को कहां खोजें, कैसे खोजें?

☐ प्रो० वेदव्रत वेदालंकार

न वा अरे पुत्रस्य कामाय पुत्र प्रियो भवति, आत्मनस्तु कामाय पुत्र प्रियो भवति आत्मा वा अरे द्रष्टव्यो श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य·।

बृहदारण्यक उप० २५

अर्थ– (**अरे पुत्रस्य कामाय पुत्र प्रिय न भवति**) अरे, पुत्र के लिए पुत्र प्यारा नही होता, (**आत्मनस्तु कामाय पुत्र प्रियो भवति**) अपितु आत्मा के लिए अर्थात् अपने लिए, स्वय के लिए पुत्र प्यारा होता है (पत्नी, माता, पिता, धन सब आत्मा अर्थात् अपने लिए प्यारे होते है), इसलिए (**आत्मा द्रष्टव्य**) यह देखने की कोशिश करो कि वह आत्मा या मै स्वय क्या हू? (**श्रोतव्यो निदिध्यासितव्य.**) मनन करो, बार बार ध्यान चिन्तन करो। लक्ष्य यह जानना है कि आत्मा अर्थात् 'मै' क्या हू? कौन हू? कैसा हू? कहा से आया हू?

मनन—जून १९४२ की बात है। उस समय मै गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी मे इतिहास का प्राध्यापक था। जिला स्यालकोट (अब पाकिस्तान मे) के अन्तर्गत अपने जन्मस्थान जफरवाल से समाचार आया कि बडे भाई साहिब की धर्मपत्नी अर्थात् मेरी भाभी की अवस्था चिन्ताजनक है, आ कर मिल लो। मेरी धर्मपत्नी शकुन्तला देवी आठवे मास मे थी। कभी कभी छोटी-सी भूल का बडा दुष्परिणाम हो जाता है। सभवत यह सोच कर कि परिवार वाले क्या सोचेगे या कहेगे, उसने आग्रह किया कि वह भी चलेगी। नारोवाल रेलवे स्टेशन से जफरवाल तक बस द्वारा जाना पडता था। सडक कच्ची और ऊबड-खाबड थी। परिणाम हुआ कि जब हम लौट कर आये, तो धर्मपत्नी को कष्ट हो गया और आठवे मास मे ही प्रसव हो गया।

अठमासे का बचना कठिन

शिशु साफ सुथरा और सम्पूर्ण था, परन्तु अत्यन्त सूक्ष्म और लोथ मात्र। सुनने मे आया कि सातवे मास का बच्चा बच सकता है, परन्तु आठवे मास वाले की सभावना बहुत कम होती है। गुरुकुल के आयुर्विज्ञान महाविद्यालय के आचार्य वैद्य धर्मदत्त जी मेरे पडोसी थे। उन्होने तथा महाविद्यालय के अन्य डाक्टर उपाध्यायो ने इस बात की सम्पुष्टि मे ग्रथो के सदर्भ मुझे दिखाये। उस परेशानी की घडी मे मैने धर्मपत्नी से कहा कि यह हमारा परीक्षा का समय है। ईश्वर ने एक चुनौती सामने रखी है कि यदि तुम इस बच्चे को पाल लोगे तो यह तुम्हारा होगा, अन्यथा मेरा (ईश्वर का) तो है ही।

क्या अभी वह जिन्दा है?

आयुर्विज्ञान महाविद्यालय के एक योग्य डाक्टर रामदयाल जी सेवानिवृत्त होकर हरिद्वार मे प्रेक्टिस कर रहे थे। मै उन्हे लेकर आया। उन्होने सब देखकर नुस्खा लिख दिया। अगले दिन मे परामर्श करने गया, तो छूटते ही उनके मुख से निकला "क्या वह अभी तक जिन्दा है?" मै सकपका गया, परन्तु कुछ सभल कर मैने कहा "डा० साहिब, मै जब कभी उसकी आखो मे आखे डालकर देखता हू तो उनमे मुझे जो ज्योति नज़र आती है, उससे मै समझता हू कि इसकी आत्मा इसे छोडना नहीं चाहती, वह सघर्ष कर रही है, आप दवाई दीजिये।"

शिक्षा और विकास

नाना अभिव्याधियो के बीच वह पली, बडी हुई और एक सुन्दर सुघड, सुशील कन्या के रूप मे विकसित हुई। उसका नाम हमने मीनाक्षी रखा। दिल्ली के हिन्दू कालेज से उसने ऐम ए किया। उसे सबने कहा कि तू शिक्षा के क्षेत्र मे ऐम ऐड आदि कर ले, कैरियर की दृष्टि से अच्छा रहेगा, परन्तु उसे न मालूम क्यो समाज सेवा मे अधिक रुचि थी। उसने दिल्ली विश्वविद्यालय के कालेज आफ सोशल वर्क से दूसरा ऐम ए किया। दिल्ली सरकार के पुअर हाउस मे जाती रही। बम्बई के टाटा सेवा सस्थान मे अनुभव प्राप्त करती रही। १९६८ मे एक योग्य इजीनियर नवयुवक जगदीश मित्र कालरा के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। जगदीश जी के दृढ आर्यसमाजी पिताजी के मुख से अनायास निकला "मीनाक्षी के रूप मे लक्ष्मी आई है।"

समाज सेवा कार्य

जगदीश भारत सरकार के रक्षा मत्रालय के रक्षा सामग्री उत्पादक विभाग मे उच्चाधिकारी थे। वह बराबर उन्नति करते गये। बडे बडे रक्षा सामग्री उत्पादक कारखानो के जनरल मैनेजर रहे। सेवानिवृत्त होने से पूर्व वह जबलपुर स्थित सबसे पुराने और प्रतिष्ठित गन कैरेज फैक्टरी के चीफ जनरल मैनेजर थे। उसके बाद रक्षा उत्पादन फैक्टरीज बोर्ड के सरकार द्वारा सदस्य नियुक्त किये गये। जहा जहा भी जगदीश जी गए, वहा मीनाक्षी ने महिला क्लब बनाये। कर्मचारियो के परिवारो व समाज के अन्य कमजोर व पिछडे वर्गो मे सेवा कार्य किया। आर्य समाज के कार्यो मे विशेष दिलचस्पी लेती रही। हम एक बार जबलपुर गये, तो रविवार के दिन हमे भी आर्यसमाज ले गई और उसके कार्यो को दिखाया।

मीनाक्षी जगदीश जी की सन्तान दो सुपुत्रिया है। बडी सुपुत्री मोना डाक्टर बनी और उसका एक डाक्टर नवयुवक के साथ विवाह सम्पन्न हो गया। दोनो उच्च शिक्षा के लिए सयुक्त राज्य अमेरिका चले गए और सौभाग्यवश दोनो एक ही नगर के दो अच्छे बडे हस्पतालो मे काम पर लग गये। भगवान् ने मीनाक्षी की इच्छा पूर्ण की। जब गत मार्च मास मे मोना के पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ, वह तुरन्त मार्च मास मे ही पति के साथ अमेरिका चली गई और वहा नवजात दौहित्र के साथ खेलने का आनन्द प्राप्त किया।

मस्तिष्क में गाठ

मई के प्रारम्भ मे उसने कुछ सिर दर्द की शिकायत की। जब दर्द बढती गई, तो बच्चो ने उसे आयोवा राज्य के सुप्रसिद्ध हस्पताल में दाखिल करा दिया। अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वहा के डाक्टरो ने सब प्रकार के टैस्ट करके बताया कि मस्तिष्क में ट्यूमर है और तुरन्त सर्जरी का परामर्श दिया। आपरेशन सफल हुआ। रैडियेशन आदि का कोर्स भी किया गया। कुछ प्रारम्भिक प्रगति के बाद अवस्था धीरे धीरे गिरती गई। चिकित्सा और सेवा मे कोई कसर नहीं छोडी गई। हमारा एक सुपुत्र, जो कि टैक्सास के एक बडे विश्वविद्यालय मे प्रोफ़ैसर है, और दूसरी सुपुत्री जो अटलाटा मे डाक्टर है, सपरिवार वहा पहुच गए। मीनाक्षी की दूसरी लडकी सोनिया, भी जो आर्किटैक्ट है, वहा पहुच गई।

एक दिन सुपुत्र अरविन्द महाजन ने मुझे फोन पर कहा "डैडी, बहिन जी बहुत कमजोर हो गए है। भोजनादि भी नली के द्वारा दे रहे है। अन्दर से कुछ सचेत लगते हैं, परन्तु बाहिर कुछ प्रकट नही कर सकते। हस्पताल मे सवा मास हो गया है। डाक्टरो ने कोई कसर नही छोडी है। अब वे भी कहते है कि इससे अधिक हम कुछ कर नही सकते, हा, चमत्कार हो सकता है।' डैडी, मालूम नही इनको जीवनी शक्ति कहा से मिलती है।"

मैने कहा "बेटा उसकी आत्मिक शक्ति बहुत बलवती है। जीवनी शक्ति जो भी है, वही से आ रही होगी।' बेटा बोला "आपने तो वही बात कह दी, जो इनके जन्म के समय डा० रामदयाल जी से कही थी।" मैने कहा "बिल्कुल ठीक है। पहले दिन से अन्तिम दिन तक उस देवी का जीवनाधार उसकी आत्मिक शक्ति ही रहेगी।"

शान्तिपूर्वक अपने पास बुला लो

८ जून को मीनाक्षी देवी का ६०वा जन्मदिवस था। हमने यहा घर पर मालवीय नगर आर्यसमाज के पडित आरक्षित शास्त्री जी को बुला कर सध्या हवन प्रार्थना आदि किये। मैने भगवान् से प्रार्थना की "अब तक मै उसके शीघ्र ठीक होने की याचना करता था, अब इतनी कृपा करो कि यदि इसका जीवनकाल समाप्ति पर है, तो इसे शान्तिपूर्वक अपने पास बुला लो।" वहा बच्चो ने भी जन्मदिवस की प्रार्थना आदि की। क्योकि उसे ईश्वर-भक्ति मे बहुत रुचि थी, इसलिए बच्चो ने उसके सिरहाने ईश्वर भक्ति का कैसेट लगा दिया। बच्चे कहते है कि इस पर उसकी आन्तरिक चेतना की इतनी प्रतिक्रिया हुई कि उसने दो एक दफा हाथ और पैर हिलाये। डाक्टरो का कहना था कि मस्तिष्क के ट्यूमर के आपरेशन के बाद आमतौर पर रोगी को कई प्रकार की बेचैनी, परेशानी और कष्ट मे से गुजरना पडता है, यह परमात्मा की देन है कि वे अभी तक इस सब से बची हुई है, अब उनके कृत्रिम उपकरण हटा देने चाहिए, ताकि वह शान्ति पूर्वक जा सकें।

ऐसा कर दिया गया। सभवत मीनाक्षी देवी की आत्मा को भान था और उसकी अन्तश्चेतना ने भी इस इगित को समझ लिया। बच्चो के अनुसार कुछ देर बाद दो चार भारी सास लेने के बाद मीनाक्षी की दोनो आखो से अश्रु प्रवाह हुआ। मालूम नहीं, यह उसका विदाई का अन्तिम चेतना इगित था या आखो के पानी की अचेतन भौतिक प्रतिक्रिया थी।

अन्त्येष्टि

जन्मदिन से अगले दिन ९ तारीख की प्रात मीनाक्षी देवी ने प्राण त्याग दिये। वहा के विधि विधान के अनुसार सब काम सम्पन्न करने के बाद सलग्न Funeral Home मे बडी सुपुत्री मोना और बहिन डा० मृदुला ने मीनाक्षी के पार्थिव शरीर को स्नान करवा कर साडी पहनाई और हिन्दू परम्परा के अनुसार प्रसाधनो द्वारा सुसज्जित किया। फिर सबने मिल कर गायत्री मत्र का उच्चारण किया, जय जगदीश हरे आरती गाई, मोना ने एक भक्ति गीत गाया। तदनन्तर साथ के दाह कक्ष मे पार्थिव शरीर रखा गया। बच्चो ने साथ मे लिली के फूल और धूपबत्ती के कुछ पैकेट रख दिये। शटर गिरा दिया गया। लाल बटन दबाने के साथ पार्थिव शरीर भस्मीभूत हो गया।

माता-पिता के जीते जी सन्तान न मरे

जितना भी जीवन भगवान् ने प्रदान किया, मीनाक्षी ने उसे बडे उत्साह, परन्तु सहिष्णुता से सानन्द और सार्थक जिया। सब इच्छाए पूर्ण हुई। पति की सर्विस के कारण सारे देश का पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण मे भ्रमण किया। तीन चार दफा अमेरिका का भ्रमण किया। अन्य देशो मे भी गई। सबसे प्रेम और सहयोग किया। परमात्मा की लीला है कि जाने से पहिले दौहित्र की प्राप्ति हुई। मार्च मास मे अन्तिम बार अमेरिका जाने से एक दिन पूर्व छोटी सुपुत्री का, जो कि आर्किटैक्ट है, सगाई सम्बन्ध भी कर गई। उसे कोई परेशानी नही थी। परेशानी तो हमें हुई है, जिनको अपने सामने अपनी सतान का वियोग भुगतना पड रहा है।

भारत की भांति पुराना यूनान (ग्रीस) दार्शनिक चिन्तन के लिए प्रसिद्ध रहा है। वहा भी छोटे छोटे गणराज्य आपस मे लडते रहते थे। प्रसिद्ध दार्शनिक और फिलास्फर सुकरात घूम घूम कर युद्ध के विरुद्ध प्रचार करता था कि इससे बुरी कोई बात नही। कभी एक शिष्य ने पूछा 'आप युद्ध का इतना विरोध क्यो करते है?' उत्तर मिला 'इसमे माता-पिता के रहते नौजवान सन्तान चली जाती है।" हमें भी अन्य अनेक माता-पिताओ की भाति, इस कष्ट का सामना करना पड रहा है। परन्तु नियति को टालना अपने को सर्वशक्ति सम्पन्न मानने वाले मनुष्य की शक्ति से बाहिर है। ऐसी

(शेष पृष्ठ ५ पर)

इस टोकरी के सब आम सड़ गये हैं

सम्पादकीय

सन् १९५० मे हमने इस देश का सविधान बना कर स्वय को अर्पित किया। बहुत ढोल पीटा गया कि यह सविधान संसार का सर्वोत्तम संविधान है। श्री जवाहरलाल नेहरू, डा० भीमराव आंबेडकर आदि न जानें किन किनको ऐसा सर्वगुण सम्पन्न, निर्दोष सविधान बनाने का श्रेय दिया गया। आज ५१ साल बाद पता चल रहा है कि इस मोटर के तो सभी पुर्ज़े टूटे हुए है।

लोकतत्र, बालिग मताधिकार, मौलिक अधिकार, अवसर की समानता, धर्म निरपेक्षता, लिंग, जाति, धर्म के आधार पर भेदभाव का अभाव, सरकारी कर्मचारियो की नौकरी की सुरक्षा, अल्पसख्यको के हितो की विशेष रक्षा आदि कितने ऊचे ऊचे सिद्धान्त इसमे रखे गये। ये मबके सब अन्य देशो के सविधानों से उठा कर रखे गये थे। अच्छा खासा भानमती का पिटारा बन गया था।

दूरदर्शिता की कमी

परन्तु उस पीढी के सविधान निर्माताओ ने अपने देशवासियो की भावी पीढियोंके चरित्र को पहचानने मे भारी भूल की। स्वाधीनता सग्राम के दिनो मे घर छोड कर थैला कन्धे पर लटकाये सत्याग्रह करने, जेल जाने, बम फेकने और प्राण तक बलिदान करने को उद्यत रहने वाले लोग किसी प्रकार यह सोच ही नही पाये कि आने वाली पीढी के लोग अपनी क्षुद्र लालसाओ की पूर्ति के लिए चरित्र को, सिद्धान्तो को, देशहित को, सब कुछ को बलि चढा देगें।

यूनिट ट्रस्ट का छल

अभी हाल ही मे यूनिट ट्रस्ट आफ इडिया (यू०टी०आई०) ने यह घोषणा की कि वह यू० ऐस० ६४ स्कीम की यूनिटो की पुन खरीद अगले छह महीने तक नही करेगा। सुनने मे यह बात मामूली प्रतीत होती है, परन्तु यह लगभग वैसा ही है, जैसे कि कोई बैक कहे कि वह अपने खाताधारको को छह महीने तक कोई भुगतान नही करेगा।

यूनिट ट्रस्ट भारत का सबसे बडा म्युचुअल फड है, जिसमे लाखो लोगो ने इस विश्वास पर धन लगाया है कि वह डूबेगा नही। यह सरकारी जैसा ही ट्रस्ट है।

यूनिट ट्रस्ट की कुछ योजनाओ की यूनिटे शेयर बाजार मे बिकती है, परन्तु यू० ऐस० ६४ की यूनिटो की खरीद और बिक्री यह ट्रस्ट स्वय करता है। बिक्री और पुन खरीद की दरे भी यह स्वय ही तय करता है। जून २००१ मे बिक्री की दर १३५० रुपये थी। पुन खरीद की दर लगभग ५० पैसे कम होती है। जुलाई महीने मे खरीद बिक्री इसलिए बन्द की गई कि उसमे खाते ठीक किये जायेगे। इसी अवधि में यह घोषणा की गई कि यूनिट ट्रस्ट छह महीने तकइन यूनिटो की पुन खरीद नही करेगा।

शेयर बाजार धोखा ही धोखा

वैसे तो सारा शेयर बाजार का काम ही धोखाधडी का है। प्रसिद्ध अमेरिकी कहानी लेखक श्री ओ० हेनरी ने अब से १०० से अधिक साल पहले कम्पनी बना कर उनके शेयर बेचने को खुल्लमखुल्ला ठगी कहा था। बहुत थोडी कम्पनिया ऐसी हैं, जो ईमानदारी से व्यापार व्यवसाय करके लाभ कमाती है और अशधरो को लाभाश देती है। अधिकाश कम्पनियो के प्रबन्धक अशधरो के पैसे से मौज उडाते है। शेयरो के भावो को चतुराई से बहुत ऊचा उठा देते है और महगे दामो पर बेच लेने के बाद कम्पनी मे घाटा दिखाने लगते हैं। अन्त मे कम्पनी फेल हो जाती है और शेयर का दाम कौडी भी नहीं रहता।

यह ठगी कई दशक से चल रही है। सब लोग इसे जानते है, पर सब काम कानून के दायरे मे हो रहा है। कम्पनी न्यायालय मे चली जाती है। कहती है कि उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही है, उसे अपने शेयर का दाम आधा या चौथाई करने की अनुमति दी जाये। अशधरो का कोई सही प्रतिनिधि न्यायालय मे होता नही है। दोनो पक्षो की बात सुन कर न्यायालय कम्पनी का अनुरोध स्वीकार कर लेता है। बहुत बार यह भी नही किया जाता। कम्पनी के शेयर का बाजार मे ही मूल्य घटते घटते शून्य रह जाता है।

यू० ऐस० ६४ बहुत अच्छी यूनिट मानी जाती थी। इसने २६ प्रतिशत तक भी लाभाश दिया था। उसके प्रलोभन मे लोगो ने इसे भारी मात्रा मे खरीदा। इसकी शेयर पूजी ५८००० करोड रुपये हो गई। इसकी दशा क्यो बिगडी, इसके अनेक कारण होगे, परन्तु एक यह भी कहा जाता है कि इस स्कीम मे कुछ कम्पनियो केशेयर (अश) बहुत ऊचे भाव पर खरीदे गये, जिससे कम्पनी को घाटा हुआ।

यह प्रमाणित कर पाना बहुत कठिन है कि मछली ने कब पानी पिया, पिया या नही पिया। ईमानदार प्रबन्धक का भी भविष्य का अनुमान गलत निकल सकता है और रिश्वत ले कर महगे दाम पर शेयर खरीदने वाला प्रबन्धक भी यह कह सकता है कि मैने ईमानदारी से काम किया है। जब शोर मचा, तब यूनिट ट्रस्ट के प्रबन्धक श्री सुब्रह्मण्यम ने इस्तीफा दे दिया। मामला खत्म हो गया।

घोटालो की लम्बी सूची

इससे पहले भी अनेक घोटाले प्रकाश मे आये है, जिनमें बोफोर्स तोप खरीद घोटाला, बिहार मे चारा घोटाला, जिसमे मुख्यमत्री श्री लालू यादव भी अभियुक्त है, हर्षद मेहता का शेयर बाज़ार घोटाला, यूरिया घोटाला, चीनी खरीद घोटाला बहुत प्रसिद्ध हुए। पूर्व केन्द्रीय मत्री श्री सुखराम के यहा ३ करोड रुपये नकद पाये गये। वर्षो बीत जाने पर भी किसी मामले मे अभियुक्तो को दड नही मिला।

ठगों को दड नहीं मिलता

इस प्रकार की करोडो रुपये की धोखाधडी होती है, यह एक आम का सडना है। मामला सामने आने, सी० बी० आई० द्वारा जाच होने, मुकदमा चलने मे इतनी देर लगती है कि किसी को सजा नही होती, यह दूसरा आम सडना है।

हमारे यहा न्याय इतना लगडा, मन्दगति क्यो है? अमेरिका मे जब श्री अलगोर और श्री जार्ज बुश मे राष्ट्रपति के चुनाव को ले कर विवाद छिडा था, तब मामला टैक्सास राज्य के उच्चतम न्यायालय और सयुक्त राज्य अमेरिका के सघीय उच्चतम न्यायालय तक एक से अधिक बार गया था। उन न्यायालयो ने फैसला करने मे तनिक देर नही लगाई। फैसले तीन चार दिन मे होते रहे।

तमिलनाडु में हास्य नाटक

यहा तमिलनाडु विधान सभा के चुनाव हुए। सुश्री जयललिता के नामाकन पत्र चार निर्वाचन अधिकारियो द्वारा इस आधार पर रद्द कर दिये गये कि उन्हे आपराधिक (भ्रष्टाचार) केमामले मे सज़ा हो चुकी है, अत वह चुनाव नही लड सकती। वह चुनाव नही लडी।

परन्तु उनकी पार्टी अन्ना द्रमुक भारी बहुमत से जीत गई। जीते हुए विधायको ने तीन साल की सज़ा पाई हुई जयललिता को अपना नेता चुना। नेता चुने जाते ही जयललिता ने राज्यपाल श्रीमती फातिमा बीवी के सम्मुख जा कर दावा किया कि विधान सभा मे बहुमत के दल का नेता होने के कारण उन्हे मुख्यमत्री बनाया जाये।

फातिमा बीवी की तीव्र गति

राज्यपाल श्रीमती फातिमा बीवी अनपढ राजनीतिज्ञ नहीं थी। वह उच्चतम न्यायालय की न्यायाधीश रह चुकी थीं। उन्होने तुरन्त, चटपट जयललिता को मुख्यमत्री पद की शपथ दिला दी। कानून मे प्रावधान है कि जो व्यक्ति विधान सभा का सदस्य नही है, वह छह महीने तक मत्री या मुख्यमत्री बना रह सकता है। राज्यपाल को यह अधिकार प्राप्त है कि वह ऐसे व्यक्ति को मत्री पद की शपथ दिला दे। परन्तु जितनी जल्दी जयललिता को शपथ दिलाई गई, उससे लोगो को लगा कि दाल मे कुछ काला है। पश्चिम बगाल के श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य भी चुनाव जीते थे, परन्तु उन्होने दो दिन बाद शपथ ली। राज्यपाल फातिमा बीवी ने न राष्ट्रपति से सलाह की, न निर्वाचन आयोग से। सलाह करने की कोई बाध्यता नही थी, परन्तु सलाह कर ली जाती, तो अच्छा होता। निर्वाचन आयोग ने जयललिता को चुनाव लडने के अयोग्य माना था।

क्रूर प्रतिशोध

मुख्यमत्री बनते ही जयललिता का पहला लक्ष्य यह रहा कि उनके प्रतिद्वन्द्वी श्री करुणानिधि ने उन्हे जेल की जिस कोठरी मे भिजवाया था, उसी मे उन्हे भेजा जाये। इसके लिए खानापूरी की गई और ३० जून की रात को दो बजे उनके घर पर छापा मार कर दरवाजा तोड कर धक्का मुक्की करके अपमानपूर्वक उन्हे गिरफ्तार किया गया। सन टी वी ने उसके जीते जागते चित्र प्रसारित किये। उधर जया टी वी ने कुछ अन्य दृश्य प्रसारित किये, जिनसे यह प्रकट होता है कि केन्द्रीय मत्री श्री मुरासोली मारन तथा श्री टी० आर बालू ने पुलिस से हाथापाई की। राज्य पुलिस ने दोनो मत्रियो को सरकारी कर्मचारियो के कर्तव्य पालन मे बाधा डालने के अपराध मे गिरफ्तार कर लिया।

जयललिता ने निजी बदला लेने के लिए पुलिस तत्र का उपयोग किया, यह तीसरा सडा आम है। पुलिस तत्र इतना चापलूस और मेरुदडहीन निकला कि सब औचित्यो को तिलाजलि दे कर आधी रात मे ७८ वर्षीय करुणानिधि को गिरफ्तार करने जा पहुचा, यह चौथा सडा आम है। पाचवा सडा आम यह है कि केन्द्रीय मत्रियो श्री मुरासोली मारन और श्री टी० आर० बालू ने पुलिस से हाथापाई की, जबकि हाथापाई मे कुछ लाभ नही था।

केन्द्र और राज्य सरकार की झडप

केन्द्र सरकार की नाक कट गई। राज्य पुलिस केन्द्रीय मत्रियो को गिरफ्तार कर ले, डूब मरने की बात है। जयललिता को सबक सिखाने की चर्चा चली। राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया जाये। परन्तु राज्य सभा मे राष्ट्रीय जनतात्रिक गठबधन का बहुमत न होने से वह विचार त्याग देना

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सभी धर्मों तथा संस्कृतियों का आदि स्रोत : वेद

❑ श्री प्रतापसिह शास्त्री

गताक से आगे

यहूदियो मे एक कथानक प्रचलित है कि जिहोवा ने मूसा को दो पट्टियो पर "खुदाई फरमान" लिख कर दिया था, जिसमे यहूदियों के लिए १० आज्ञाए थी, वे १० पाच यम और पांच नियम ही थे। इस प्रकार प्राय सभी धर्मो मे इन यमो व नियमो का पाया जाना यह सिद्ध करता है कि इस विचारधारा का एकही स्रोत है और वह स्रोत है "वेद"।

जेन्दावेस्ता का स्रोत भी वेद

महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य मे जहा चारो वेदो को सूचित करने के लिए एक-एक मत्र दिया है, वहा अथर्ववेद को सूचित करने वाला मत्र **ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शयोरभिस्रवन्तु न** यह है। उक्त वेद-मत्र के सम्वन्ध मे "जेदावेस्ता" (पारसी धर्मग्रथ) के एक अध्याय "होमयश्त" मे लिखा है कि ईरान मे राजा करेशानी के राज्य मे अथर्ववेद का पाठ होता था, जिसे "अपा अभिष्ट मे या अभिष्टश" का पाठ भी कहा गया है। जब उसने यह पाठ बन्द कर दिया, तो वहा के राष्ट्राध्यक्ष व धर्माचार्य होम ने करेशानी को राजसत्ता से हटा दिया था। इमसे सिद्ध होता है कि "जेन्दावेस्ता" का आदि स्रोत भी वेद है।

सृष्टि की उत्पत्ति

सृष्टि-उत्पत्ति के समय का वर्णन वेदो मे बहुत सुन्दर ढग से किया गया है। ऋग्वेद मे सूक्त ३२, मडल १ मे कई मत्र ऐसे है, जिनमे वृत्र और अहि, इन्द्र और अहि शब्द आए है और इनमे सृष्टि के आरम्भ मे जो वाष्प बनते और उठते है, बादल मडराते है, बिजली चमकती है, कभी धुध छायी रहती है, उनका रोचक वर्णन है। यहा अहि का अर्थ बादल है, साप नहीं। इन्द्र का अर्थ सूर्य है। यथा— **अपादहस्तः अपृतन्यद् इन्द्रम्** (ऋ० १ ३२ ७) **अहि· शयत· उपपृक् पृथिव्या.** (ऋ० १ ३२ ५) वेदो मे इन्द्र और अहि का, सूर्य और बादल का, सोमरस के लिए अर्थात् जल के लिए झगडा होता है। बादल जब पृथ्वी पर आ गिरा, तब नदिया बहने लगी, अर्थात् बादल जब जल को अर्थात् (सोमरस को) अपने पास रखने लगा, तब इन्द्र अर्थात् सूर्य ने उसके टुकडे-टुकडे करके उसे पृथ्वी पर ला पटका। बादल को अर्थात् "अहि" को बिना हाथ-पैर वाला बताया है। बस इन्ही मत्रो के रूढ अर्थ करके ईसाइयो ने, मुसलमानो ने, यहूदियो ने अपने धर्म ग्रथो मे "अहि" का अर्थ "साप" और "शैतान" लिख लिया, "बादल" नही लिखा। "इन्द्र" का अर्थ "खुदा" लिख लिया "सूर्य" नहीं लिखा, "सोमरस" का अर्थ वर्षा या पानी या "ज्ञान" नही लिखा, "ट्री आफ नौलेज" लिख लिया और कहानी गढ दी कि खुदा ने अदन के बगीचे मे "ट्री आफ नौलेज" को रोपकर आदम से कहा कि इसके फल को मत खाना। शैतान ने, जिसकी शक्ल साप की थी, आकर आदम को बहका कर उसे फल खाने को कहा, जिसका परिणाम यह हुआ कि शैतान और खुदा मे तू-तू मै-मै हो गई और खुदा ने शैतान को शाप दिया कि तू जमीन पर जा गिरेगा और पेट के बल रेगा करेगा। यह कहानी ईसाई और मुसलमानो मे समान रूप से है। "खुदा" और "साप" का "ट्री आफ नौलेज" के लिए झगडा होता है, खुदा चाहता है "ट्री आफ नौलेज" उसके पास रहे, किन्तु "साप" पृथ्वी पर आ रेगने लगता है। वैदिक धर्म मे "इन्द्र" और "अहि" का "सोमरस" केलिए झगडा होता है, "अहि" पृथ्वी पर आ सोता है। इन सब बातो का आदि स्रोत "वेद" है।

मनु की कथा

सृष्टि उत्पत्ति के बाद शतपथ ब्राह्मण मे मनु के तूफान का वर्णन कथानक के रूप मे है और गलतफहमी के कारण "जेन्दावेस्ता"— पारसियो के धर्मग्रथ— मे "यम" का तूफान, ईसाइयो की बाइबिल मे व मुसलमानो की कुरान में नूह के तूफान का वर्णन है। इससे प्रमाणित होता है कि वेद रूपी गगोत्री से निकली ज्ञान-गगा की धारा कूडा-कर्कट मिलने से गदा पानी बनती चली गई।

पुनर्जन्म

अब हम पुनर्जन्म और मृत्यु, इस विषय मे जब विचार करते है, तो पाते है कि पुनर्जन्म का सिद्धान्त वैदिक सिद्धान्त है, जो वेदो से ही अन्य धर्मो मे गया है। यहूदी तथा ईसाई इसे "रिसरेक्शन" कहते है और मुसलमान "कयामत" कहते है। मृत्यु के बाद तीन दिन तक आत्मा भ्रात अवस्था मे रहता है यह विचार भी सबमे एक समान है, परन्तु इनका मूल भी उपनिषद् मे है। जब नचिकेता यम के यहा गया, तब उपनिषद् कहती है कि तीन रात तक उसका मृत्यु से साक्षात्कार नही हुआ— **"तिस्रो रात्रीः यदवात्सीः गृहे मे"**। कठोपनिषद् के आचार्य यम का अपने शिष्य नचिकेता को दिया गया उपदेश अन्य धर्मो मे क्या-से-क्या बन गया? पारसियो के धर्मग्रथ "जेन्दावेस्ता" में लिखा है कि मरने के तीसरी रात बाद आत्मा "मिथ्र देवता" के यहा पहुचता है। ईसाई लोग भी ईसा का मरने के तीसरे दिन बाद उठना मानते है। मुसलमानो मे मरने के तीसरे दिन बाद कब्र पर जाते है। हिन्दुओ मे तीसरे दिन फूल चुने जाते है। आर्य समाजी भी तीसरे या चौथे दिन भस्मी इकट्ठी करते है और तेहरामी को तो शाति यज्ञ अथवा श्रद्धाजलि के रूप मे मनाया जाना आम बात है। इन सबका आदि स्रोत भी वेद है।

स्वर्ग और नरक

अब स्वर्ग और नरक विषय को देखिए। वैदिक विचारधारा के अनुसार इस शरीर में स्वर्ग है, इस शरीर मे ही नरक है, क्योकि सुख-विशेष का नाम स्वर्ग और दु ख-विशेष का नाम नरक है। अथर्ववेद मे कहा है— **अष्टचक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या। तस्या हिरण्यःकोशः स्वर्गो ज्योतिषा वृतः।** (१० २ ३१) अर्थात् इस देह मे आठ चक्र है— कुडलिनी, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा तथा सहस्रार और नौ द्वार है— दो आख, दो कान, दो नासिका के छिद्र, एक मुख, एक गुदा द्वार और एक मूत्र द्वार। इस शरीर को ही अयोध्या कहा है जिसका अर्थ है, जिस पर कोई आक्रमण नही हो सकता, जिसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, घमड आदि शत्रु जीत नही सकते। इसमे सुवर्ण की प्रभा से युक्त एक खजाना है, अर्थात् हृदय मे ब्रह्म की अनुभूति होती है, उसी को इस शरीर की स्वर्गपुरी का हिरण्यकोश कहा गया है।

स्वर्ग का वर्णन

इसके अतिरिक्त **भौतिक** दृष्टि से भी अथर्ववेद मे स्वर्ग का वर्णन है, यथा मत्र देखिये— **"घृतह्रदा मधुकूला सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना एतास्त्वा धारा उपयतु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणी· समन्तात्।"** (अथर्व० ४ ३४) इसमे साधन-सम्पन्न समृद्ध गृहस्थ का वर्णन किया गया है। घी, दूध, दही, शहद, मक्खन की नदियो का बहना, इनकी कमी न होना ही नदी बहना है। कुनबे मे नाना सम्बन्धो वाली स्त्रिया हो, बहिने, भावजें, दादी, चाची, ताई, माता आदि हो, तो **"स्वर्गे लोके बहुस्त्रैणमेषाम्"** अर्थात् स्वर्ग लोक मे (समृद्ध गृहस्थ मे) मनुष्य अनेक स्त्रियो के सम्पर्क मे आता है। कठोपनिषद् में भी आचार्य यम अपने नचिकेता शिष्य की परीक्षा लेने के लिए जो स्वर्ग का प्रलोभन देता है, उसका वर्णन इसी प्रकार है यथा— **"इमाः रामाः सरथाः सतूर्या नहीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः। आभिः प्रमत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरण मानुप्राक्षीः"** (कठो० ९ २५) किन्तु आध्यात्मिक ज्ञान के इच्छुक नचिकेता ने अपने आचार्य यम द्वारा कहे हुए इस लोक की सुख-सुविधा, मौज-बहार को ठुकरा दिया था। किन्तु यही वर्णन कुरान व बाइबिल जैसे धर्मग्रथो मे अवैदिक ढग से ले लिया गया, क्योकि उनके धर्माचार्य वेदो को नहीं जानते थे। जैसा किसी ने बताया, मान लिया। इस प्रकार इन सब बातो का भी आदि स्रोत "वेद" है। कुरान मे इसी के आधार पर लिखा कि बहुत स्त्रिया रखो, कई-कई शादिया करो, बहिश्त मे (स्वर्ग में) भी स्त्रिया मिलेंगी, हूरें (अप्सराएं) मिलेगी, वहा घी, दूध, शहद की नदिया बहती है। अथर्ववेद के **"त्रिततो बहिष्ठ"** (४.३४ ५) मत्र का "बहिष्ठ" शब्द ही अपभ्रश होकर इनका "बहिश्त" "स्वर्ग" बन गया है।

ईसाई धर्म बौद्ध धर्म से बना

ईसाइयत बौद्ध मत से कैसे निकली, इस विषय मे एक विद्वान् लिखता है "फिलो" नाम के एक इतिहासकार हुए है, वह लिखते है कि "इजिप्ट मे एक सम्प्रदाय था, जिसका नाम थेराप्युट था। यह बौद्ध धर्म की शाखा था। इनसे ईसा मसीह के गुरु "जॉन दि बैप्टिस्ट" ने शिक्षा ग्रहण की और "पैलेस्टाइन" नगर मे एक धर्म-सम्प्रदाय चलाया जिसका नाम "ऐसिनीज़" था। यही से ईसा मसीह ने शिक्षा लेकर ईसाई धर्म का प्रारम्भ किया। तभी तो बौद्ध धर्म तथा ईसाइयत मे अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि सिद्धान्तो की इतनी समानता पाई जाती है कि इसके आधार पर विद्वान् यह सिद्ध कर चुके है कि ईसाइयत बौद्ध मत से निकली है और इन दोनो का आदि स्रोत वैदिक धर्म ही है।

मध्य एशिया मे एक जाति थी, जिसका नाम "कस्साइत" था। इसने "बैबीलोन" को जीत कर उसे अपनी राजधानी बना लिया था। यह १६वी सदी ईसा पूर्व की बात है। इस जाति के देवता "सूर्य" तथा "मरुत्" थे, जो वैदिक धर्म मे वैदिक देवता हैं। वेद मत्रो मे इनका सर्वत्र वर्णन है। इस जाति के राज्य मे उत्तर पश्चिम के हिस्से पर एक मित्तनी तथा दूसरी हित्तिति दो जातिया भी राज्य करती थी। ये दोनो आपस मे लडती रहती थीं। ईसा से १३८० वर्ष पूर्व इन दोनो जातियो की आपस मे सधि हो गई। यह सधि मितानी जाति के राजा दशरत और उसके पुत्र "मतिउत" तथा हित्ति जाति के राजा "सुबुलुलिम" के बीच हुई थी। जो अभिलेख मिलते हैं, उन अभिलेखो पर सधि की साक्षी के रूप मे मित्र, वरुण, इन्द्र आदि वैदिक देवताओ का उल्लेख है। इनका आधार भी **"ओ शन्नो मित्रः शम् वरुणः"** यह ऋग्वेद मत्र है। इससे सिद्ध होता है कि ये जातिया आर्यो की ही शाखाए थीं और इन सब जगह वेदो का प्रचार-प्रसार था। ये अभिलेख इतिहासकारों को "बोगाज़क्यूई" स्थान पर मध्य एशिया में मिले है। ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध मंत्र है जो "ईश्वर, जीव, प्रकृति" तीनों को "अनादि" सिद्ध करता है— **द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं**

(शेष पृष्ठ ९ पर)

वेद अपनाइए—मानवता बचाइए

❑ **डा० कृष्णवल्लभ पालीवाल**

यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्य अनेक राष्ट्र निर्माणकारी और धर्म रक्षा कार्य न भी करते और केवल इन्हीं शब्दो की पुष्टि मे जीवन लगा देते कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है" तो भी वह विश्व मानव कल्याण के उच्च शिखर पर विराजमान होते। मानवता की रक्षा और मानव धर्म में मत्य की स्थापना मे उनका स्थान मर्वोच्च होता, क्योकि यदि हम महर्षि के कार्यकलापो और उनके ग्रथो को गम्भीरता मे देखे, तो वह कदम-कदम पर सत्य धर्म की स्थापना एव उसमे कानवीय मूल्यो की रक्षा करते दिखाई देते है। जैसा कि उन्होने मत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे लिखा है कि "मेरा इस ग्रथ के बनाने का मुख्य प्रयोजन मत्य के मत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है क्योकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नही है।" मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिए है।" अत स्वामी जी मत्य धर्म की स्थापना और मनुष्य जाति की उन्नति को अपना जीवन लक्ष्य मानते है।

स्वामी जी की पीडा थी कि अज्ञान सम्प्रदायवाद व धार्मिक अन्धविश्वासो मे फसी मानव जाति को सत्य धर्म का दिग्दर्शन कैसे कराया जाए? उसके लिए उन्होने विश्व धर्मो के प्रमुख ग्रथो को पढा, उनके उद्देश्य व कार्यविधि पर गम्भीरता से मनन किया, और सैकडो धर्मशास्त्रों के पढने के बाद वह इस निर्णय पर पहुचे कि 'वेद सब सत्यविद्याओ का पुस्तक है, यह मानव मात्र का पुस्तक है। इसमे मनुष्यो को मोमिनो और काफिरो तथा विश्वासियो और अविश्वासियों के बीच नही बाटा गया है। इनकी शिक्षाओ मे पक्षपात, द्वेष व अपना-परायापन नही है। वेदो की शिक्षाए तो सार्वकालिक, सार्वदेशिक व समस्त मानव मात्र के लिए है। इनमे अन्तर्विरोध व अवैज्ञानिक बाते नहीं है। ये ही मानव मात्र के धर्मग्रथ हो सकते है, क्योकि इनमे मानव मात्र की साम्प्रदायिक घृणा, द्वेष व वर्गवाद नहीं है, जैसा कि हम कुरान व बाइबिल मे देखते है।

इसीलिए सभी प्राचीन आर्ष ग्रथो ने वेदो को प्रामाणिक धर्म ग्रथ माना है। ब्राह्मण ग्रथो, उपनिषदो, स्मृतियों, पुराणो व अन्य अर्वाचीन ग्रथो मे वेदो को प्रामाणिक धर्मग्रथ माना है। "धर्म के जिज्ञासुओ के लिए वेद परम प्रमाण है" (मनु० २ ३)। "लोग वेदो के अनुसार अपने अपने धर्म का पालन करे" (मनु० २.८)। 'वेद से बढ कर कोई धर्मशास्त्र नही है' (अत्रिस्मृति)। इसीलिए महर्षि ने वेदो की सत्यता, निष्पक्षता, उदात्तता व मानवता के कारण मानवमात्र को उन्हे पढने-पढाने को परमधर्म निर्धारित किया है।

वेदभाष्य : इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए देववाणी में विद्यमान वेदो का उन्होने भाष्य किया तथा वेदो के रहस्यो को समझने के लिए वेद भाष्य परम्परा के सूत्र ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे स्थापित किये। यह मानव जाति का दुर्भाग्य है कि वह चारो वेदो का भाष्य सम्पूर्ण न कर सके, मगर उनके अनुयायियो ने वह कार्य अपनी-अपनी योग्यता, क्षमता, दृष्टि व शिक्षा-दीक्षा के अनुसार पूरा किया। परिणामस्वरूप आज चारो वेदो के भाष्य हिन्दी व अग्रेजी व कुछ अन्य प्रान्तीय भाषाओ मे मिलते है।

वास्तविक स्थिति क्या है?

महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य ने धार्मिक जगत् मे एक क्रान्ति ला दी, मानवता को नया स्वरूप प्रदान किया। शक्ति, निर्माण, आत्मविश्वास और पुरुषार्थ की नवीन लहर सचारित की। उन्होने मानव मात्र को भाग्यवादी व पोपवादी व कठमुल्ला अरबी सस्कृति से मुक्ति दिलाने के लिए एक अद्वितीय प्रेरणा स्रोत वेद विश्व मानव मात्र के सामने रखा, जिसका निष्पक्ष विचारको, दार्शनिको ने देश-विदेश की सीमाओ को लाघकर स्वागत किया। मगर इतना होते हुए भी मानव मात्र मे तो क्या आज स्वय आर्यसमाज मे भी वेद प्रचार की लहर अपेक्षाकृत कम है। सार्वदेशिक, प्रान्तीय एव पाच हजार के करीब आर्य समाजो के होते हुए भी आम जनता मे वेद प्रचार की पहुच कम है।

इस शिथिलता के कई व्यावहारिक कारण है। पहला, आर्यसमाज के अनुयायियो की सख्या कम है। दूसरा अन्य सभी हिन्दू धर्माचार्य वेदो को हिन्दू धर्म का आदि स्रोत मानते हुए भी गीता, पुराण, भागवत व उपनिषदो की मिलीजुली बात करते है, वेदो की नही, क्योकि वेदो तक उनकी पहुच भी नहीं है। तीसरा, वेदो की शिक्षाए अथवा उनका स्वरूप कथानक व रामायण महाभारत की तरह ऐतिहासिक कथा न होने के कारण नीरस, शुष्क व गम्भीर है। चौथे, चारो वेदो का कोई एक सर्वमान्य, यहा तक कि आर्यसमाज के क्षेत्र मे भी कोई एक प्रामाणिक भाष्य नही है और जो भी है, वे १०-१५ जिल्दो मे होने के कारण बडे महगे है। पाचवे, चारो वेदो का हिन्दी/अग्रेजी व प्रान्तीय भाषाओ मे भाष्य एक जिल्द मे न होना भी वेद प्रचार की प्रगति मे बाधक है। छठे, विभिन्न आय वर्ग के लोगो के लिए सरल क्षेत्रीय भाषा मे व्यावहारिक मत्रो की छोटी-छोटी पुस्तके नहीं है। सातवे, वेदो के सूक्त किसी विशेष क्रम मे नही होने के कारण वेदो की शिक्षाए विषयानुसार नहीं है, जिससे पाठक भटक जाता है।

फिर क्या करे?

सबसे पहली आवश्यकता है कि सार्वदेशिक सभा अथवा वेद विद्वज्जन चारो वेदो के एक प्रामाणिक भाष्य का सम्पादन करे। वेद प्रचार को विश्वव्यापी बनाने के लिए एक अन्तरराष्ट्रीय वेद अनुसधान सस्थान स्थापित करे, जिसमे विभिन्न विभाग हो, जो कि सरकारी व आर्यसमाज सगठन के नियत्रण से मुक्त हो। फिर उसमे उपरोक्त समस्याओ के निराकरण के लिए कार्य किया जाये।

एक प्रामाणिक भाष्य बनने पर उसके अग्रेज़ी व क्षेत्रीय भाषाओ मे अनुवाद किये जाए और उसे एक जिल्द मे प्रकाशित किया जाए, जो कि आज के पतले कागज की उपलब्धि व कम्प्यूटर तकनीक के होते हुए सभी बीस हजार मत्रो को एक जिल्द मे सामान्य मूल्य पर दिया जा सकता है। क्या यह हमारे लिए लज्जा की बात नही है कि हमारा धर्मग्रथ एक जिल्द मे हमारे ही घर घर मे नहीं है, जबकि बाइबिल व कुरान की करोडो ही प्रतिया विभिन्न आकार-प्रकारो मे मिलती है। मेरे विचार से न विद्वानो की कमी है और न साधनो की। यदि कोई कारण है तो सस्थाओ के कर्ताधर्ताओ की उपेक्षा। यदि सभाए नही करना चाहती, तो वेद प्रेमी व धनाढ्य बन्धु अपना सगठन बनाकर इस मानव हितकारी कार्य को अपने हाथ मे ले और अपने प्राणप्रिय धर्म की पोथी कम से कम मूल्य पर मानव मात्र के हाथ मे पहुचावे। यह न केवल धर्म प्रचार बल्कि मानवता की रक्षा का कार्य है, क्योकि पिछले दो हजार वर्षो के ईसाइयत के खून खराबे मे सारा यूरोप तबाह हो गया। उन्होने पोप को त्याग दिया, जो कि अब भारत के ईसाईकरण मे लगा है। उसी की पूर्ति के लिए ओपस जी नामक सस्था विभिन्न रूपो मे कार्य कर रही है।

इस्लाम का तालिबानी आतकवाद विश्वविख्यात है। भारत सहित अनेक देशो मे इस्लामी आतकवाद एक समस्या है। आज भारत के हिन्दू ही नही, विश्व के निष्पक्ष मानवतावादी विद्वान् इस धार्मिक कट्टरता से परेशान है। वे तो वेदो के सार्वदेशिक, सार्वकालिक मानव कल्याण सन्देश व व्यवहार की प्रतीक्षा कर रहे है।

ज्ञान के आदान-प्रदान की सीमाए समाप्त हो गई है। वेदो का ज्ञान सर्वत्र सुलभ है, जिसने सिद्ध कर दिया है कि वेदो की शिक्षाए सकुचित, विघटनकारी, विभेदकारी, आतकवादी और अशान्तिकारक न होकर प्रगतिशील, रचनात्मक, मानवतावादी एव मानव मात्र को जोडने वाली है, तोडने वाली नही है। इनमे धर्म के नाम पर जिहाद या क्रूसेड का आह्वान नही है। मानवता की मगलकामना ही वेदो का एकमात्र लक्ष्य है। पिछले हज़ारो वर्षो के इतिहास से स्पष्ट है कि वेदानुयायियो ने किसी देश पर अपना धर्म मनवाने के लिए चढाई व हत्याए नही की है, जैसा कि हम इस्लाम व ईसाइयत के इतिहास मे देखते है। मगर इस मगलकारी मानवता रक्षा अभियान का सूत्रपात तो आर्य समाज को ही तेजी से करना होगा।

(पृष्ठ २ का शेष)

आत्मा को कहां खोजें .....

घटनाये मनुष्य को उसकी सीमा का ज्ञान करा देती है।

अनुत्तरित प्रश्न

मीनाक्षी बेटी के असमय देहावसान मे जो कुछ शकाए मन मे उत्पन्न हुई, उनके निराकरण व समाधान के लिए मुझे यह लेख लिखने की प्रेरणा हुई। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के वातावरण मे शिक्षित बच्चो के मन मे भी शकाए उत्पन्न हुई। यहा तक कि सर्व सामान सम्पन्न अस्पताल के ख्यातिप्राप्त डाक्टरो व कर्मचारियो के मन मे भी शकाए उत्पन्न हुई, जिनकी न केवल हमारी पारिवारिक परम्पराओ मे, अपितु धार्मिक व दार्शनिक परम्पराओ मे भी दिलचस्पी थी। प्रासगिक शका है कि सत्-चित गुणो वाला 'आत्मा' कोई तत्व है भी या नही? नही है, तो 'मै' मेरा-तेरा', 'अहम्' का व्यवहार क्या है? है, तो यह आत्मा कब, कहा से और कैसे आई है? बाद मे कब, कैसे और कहा चली जाती है? ये रहस्य अनादिकाल से चले आते है— 'कोऽसि।' क्या ये अनन्तकाल तक रहस्य ही रहेगी— आत्मा वाऽरे ज्ञातव्य श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य। आयुर्विज्ञान के Anatomy एव Physiology के ग्रथो मे शरीर के सब अगो का वर्णन मिलता है, परन्तु मन, दिल, चेतना, आत्मा के विषय मे ज्ञान शून्य है।

इस सम्बन्ध मे अन्य अनेक प्रश्न मन मे उठते है। आत्माए है, तो कितनी है? क्या ये सब एकरूप है या उनके अलग अलग स्वरूप है? मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव मे उनका क्या सम्बन्ध रहता है? क्या वे भारतवर्ष, पाकिस्तान, चीन, जापान, रूस, यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका आदि मे सर्वत्र मडराती रहती है? क्या उनका आदान-प्रदान और विनिमय होता रहता है? यदि हम अनेक जन्म धारण करते है, तो हमारी आत्मा का उनके साथ क्या तारतम्य रहता है और वह कैसे निर्धारित होता है? इत्यादि। मै चाहता हू कि 'आर्य जगत्' के कोई विज्ञ और अनुभवी पाठक, हो सके तो इस विषय मे कुछ प्रकाश डाले।

शिक्षा सस्थाए शोध करें

विकसित देशो मे विश्वविद्यालय और अनेक प्रतिष्ठान चामत्कारिक शोध कार्य कर रहे है। क्या गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी, डी० ए० वी० सस्थान व ऐसे अन्य प्रतिष्ठान अध्यात्म क्षेत्र मे चिन्तन, निरीक्षण और परीक्षण के आधार पर नये कीर्तिमान नही स्थापित कर सकते? दार्शनिक एव आत्मिक चिन्तन से दिशादर्शन और सहायता मिलेगी। परन्तु यह सहायता पीछे की ओर नही, आगे की ओर ले जाने वाली होनी चाहिए।

सी-१९८, सर्वोदय ऐन्क्लेव, नई दिल्ली-१७

पत्र–जगत्

'आर्य जगत्' को दैनिक किया जाये

२४ जून २००१ का "आर्य जगत्" का अक प्राप्त हुआ। आर्य जगत् के आगामी अक की प्रतीक्षा कहने को एक सप्ताह की है परन्तु इसका इन्तजार इतना लम्बा है। यह कहावत है कि इन्तजार मे स्वाद होता है, परन्तु "आर्य जगत्" के लिए यह सही नही बैठती। यह इन्तजार कष्टदायी प्रतीत होने लग जाता है। जिस ढग से यह साप्ताहिक पत्र समाज, राष्ट्र, विश्व की सभी समस्याओ के कष्टो को सुलझाता चला आ रहा है उसके लिए सम्पादकमडल, अधिकारी एव सभी कर्मचारी व सहयोगी बधाई के पात्र है। इस पत्र से जो साहित्यिक सेवा की जा रही है, वह अपने आप मे अनूठी है।

'आर्य जगत्' के जब साप्ताहिक शब्द को पढता हू, तो यह शब्द कचोटता है और मिटा कर दैनिक शब्द को देखने की तीव्र लालसा होती है। इसकी पूर्ति के लिए आप जैसे कर्मठ कार्यकर्ता, आदरणीय श्री प्रधान जी, मत्री जी की ओर ही आर्यो की आखे लगी है। यह मै मानता हू कि दैनिक समाचार पत्र बनाने के लिए अपार धन की और सगठन की आवश्यकता होती है, परन्तु इनसे ऊपर लगन और दृढ सकल्प की आवश्यकता होती है, जो आपमे पहले से ही है। अब तक जब भी समाज पर, राष्ट्र पर किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदाए देश के किसी भाग मे आई है, तो आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने हरसम्भव सहायता की अपीले जारी करके "आर्य जगत्" के माध्यम से रुपया, वस्त्र, अन्न, औषधिया इकट्ठी करके सहायता प्रदान की है। मेरा अभिप्राय यह है कि आर्य जगत् को दैनिक पत्र बनाने के लिए भी सभी से अपीले जारी की जाये। आपने जिस कार्य को करने की ठानी है, उसे समय अवधि से पूर्व ही पूरा किया है। प्रत्येक आर्य जगत् के अक मे अपील निकाले और साथ सुझाव भी मागे। दानी महानुभावो के नाम आर्य जगत् मे छापे। विद्वानो का मडल गठित करके इस कार्य को सद्अजाम दिया जाये। जो भी हो, जैसे भी हो इस सदिच्छा को पूरा करने की योजना बनाये। इसे शीघ्र आरम्भ कराये, जो देर होनी थी, वह हो चुकी और आने वाला कल इसकी योजना बनाने व सफलता प्राप्त करने वाला हो।

राजेन्द्र आर्य, हासी (हिसार)

अभी तक आर्य समाज का एक भी दैनिक पत्र नही है। एक भी ऐसा साप्ताहिक य. मासिक पत्र नही है, जो स्टालो पर बिकता हो और जिसे लोग खरीद कर आग्रह से पढते हो। 'आर्य जगत्' ऐसा पत्र बन सकता है। यदि टी वी चैनल पर २० मिनट के प्रवचन के लिए ढाई लाख रुपये प्रतिमास जुटाये जा सकते है, तो दैनिक पत्र के लिए भी जुटाना क्या कठिन है। केवल इच्छा चाहिए।—स०

ऋषि के ग्रंथों पर उंगली न उठायें

५ नवम्बर २००० के आर्य जगत् पत्रिका के अक मे एक लेख आप द्वारा प्रेषित पढा जो शायद इस शीर्षक से छपा हुआ है कि (शूद्र अनार्य नही, ब्राह्मणों जितने ही आर्य है) इसको पढकर हमारे ज्ञान चक्षु खुल गये, क्योकि लेख के अन्त मे आपने लिखा कि आजकल जो सत्यार्थप्रकाश बडे पैमाने पर प्रचारित किया जा रहा है, उसमे निम्न अशो का शीघ्र ही सशोधन किया जाये और आपने वे अश भी लिखे है।

आप शायद हमारे गुरु देव दयानन्द से कही अधिक विद्वान् हो गये है, केवल एक विद्यालकार की डिग्री ही प्राप्त करके, जो उनके द्वारा लिखित ग्रथो मे भी आपको कमिया दृष्टिगोचर होने लगी है। क्या अच्छा होता यदि आप उनके द्वारा अधूरे कार्य को आगे बढाते जो उनकी मृत्यु के पश्चात् अधूरे रह गये। आप किसी गुरुकुल से वदालकार कीजिए और साधना कीजिए, अपने को उस पथ का अनुयायी तो बनाइये और फिर वेदों के अधूरे भाष्य को पूरा करके हमे दिखाइये। हम देखे कि आप कितने विद्वान् है और रही ब्रह्मचर्य साधना की बात' उसके विषय मे क्या अधिक लिखू। यदि आप उसकी साधना करते, तो फिर आपको स्वय ही उनके प्रति श्रद्धा हो जाती। ब्रह्मचर्य के अर्थ ही ये है— ईश्वर चिन्तन, वेद अध्ययन, ब्रह्मचर्य पालन आदि। जब स्वामी जी ने शूद्र शब्द की व्याख्या ही अनाडी से कर दी है, फिर तो इसमें कुछ सदेह ही नही रह जाता है। अनाडी अर्थात् किसी विषय मे अनभिज्ञ होना। इसमे कोई भी हो सकता है। रही शूद्र को नीच या मूर्ख कहने वाली बात, तो यह कम बुद्धि वाले मनुष्यो की देन है। आर्य लोग शूद्र को कब नीच या मूर्ख आदि मानते है और रही इधर उधर जाने वाली बात, जिसने जहा जाना है, वह जा रहा है। आप चाहे लाख यत्न कर ले, वह तो जायेगा ही। जब तक उसको सहमति के साथ साथ स्व की प्रेरणा नही होगी कहने से तो और उसके साथ मे विरोध ही बढता है। हम भी जानते है और आप भी जानते है, हम समाज मे कार्य करते है। जब आप लोगो के (राजनेता) ही समाज को योजना बना कर पथ भ्रष्ट कर रहे है। हिन्दू सस्कृति की तो बिल्कुल ही धज्जिया उडा कर रख दी हैं। किसी की सस्कृति के कुछ चिह्न हुआ करते है। आज आप मुझ जैसे चन्द लोगो को छोड किसी हिन्दू के सिर पर चोटी और गले मे जनेऊ नहीं मिलने का। बेचारे बस गये बैठे है। जैसे पहले हुआ आगे भी वैसे ही दिन आने वाले हैं।

आपसे अनुरोध है कि आप स्वामी जी के ग्रथो पर आपत्तिया मत उठाइये, यदि अपने को आर्य कहते है।

अजयसिह आर्यवीर, मु०+पो० चन्देना, सहारनपुर

बहुकुंडीय यज्ञ और ओ३म् स्वाहा

आर्य जगत् ३ जून के अक में विद्वान् श्री इन्द्रजित जी का लेख पढा। बहुकुडीय यज्ञ का समर्थन इसी अक मे आर्य प्रादेशिक सभा ने भी किया है। इसमे लाभ बहुत हैं। हानि नहीं। जहा तक आर्य सम्मेलन मे चार मेखलाओं का प्रश्न है— हमने विद्वान् महोदय को पत्र भेज दिया था। मेखलाए तीन ही थीं। हमने मैदान की भूमि ठीक न होने से पहले ईटो का फर्श बना कर उस पवित्र भूमि पर ३ मेखलाए बनाई थीं।

ओ३म् स्वाहा के सम्बन्ध मे आर्य विद्वानो मे चर्चा चल रही है। मैने निष्काम परिवर्तन मे बहन जी के लेख का उत्तर दे दिया है। इस लेख व उत्तर की प्रति धर्मार्य सभा के प्रधान जी को भी भिजवा दी है। आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् श्री ज्वलन्तकुमार जी का लेख बहुत ही सुन्दर है। आशा है धर्मार्य सभा शीघ्र ही एक विद्वत्सभा बुला कर इस पर चर्चा करेगी। दोनो प्रकार की पद्धतिया चल रही हैं। हम एक दूसरे को विद्वन्मन्य, अज्ञानी आदि शब्दो मे सम्बोधित करने के स्थान पर महर्षि के अनुसार कोमल शब्दों मे चर्चा करे, तो बहुत अच्छा रहेगा। ये सब विचार भेद है। कोई भी "इदम् इत्थम् एव" की घोषणा चर्चा के बाद ही होनी चाहिए। श्री पंडित जी के लेख मे भी शकाओ की गुजाइश है। उदाहरण के लिए

१ सस्कारविधि के जो उदाहरण है, वे सस्कारो से सबधित है, ब्रह्मपारायण यज्ञ मे "ओ३म् स्वाहा" का निषेध महर्षि ने कहा किया है?

२ "प्रणवष्टे" मे यज्ञ कर्मणि की अनुवृत्ति है। उसमे विभाग मे होने वाले प्रणव को प्लुत का विधान है। क्या यज्ञकर्म बिना स्वाहा के भी होता है? यज्ञ कर्म मे प्रणव बोला जाएगा, तो उसके बाद स्वाहा बोला जाएगा न?

३ महाभाष्य का "अतिप्रसग" वचन ये यज्ञ कर्मणि के लिए है, प्रणवष्टे के लिए नहीं। जहा तक "यज्ञ पद्धति प्रकाश" का सम्बन्ध है, वहा बहुत से विद्वानो का विचार महर्षि के विचारो से नही मिलता। इस अवस्था मे हम महर्षि का अनुगमन करे या विद्वानो का?

धर्मार्य सभा मे विस्तृत विचार अधिक अच्छा रहेगा।

डा० स्वामी सत्यम्, कुलपति, वैदिक यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका

'विद्वन्मन्य' 'अज्ञानी' आदि शब्द पं० युधिष्ठिर जी मीमासक के है, लेखक ने केवल उद्धृत किये है, अन्यथा वे 'आर्य जगत्' मे न छपते।

सार्वदेशिक सभा की ओर से २१ ३ १९८२ के सार्वदेशिक पत्र मे विज्ञप्ति प्रकाशित हो चुकी है, जिसमे बहुकुडी यज्ञो को अवैदिक, शास्त्र विरुद्ध और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो के विपरीत कहा गया है। फिर भी ऐसे यज्ञ क्यो हो रहे है?

कुछ प्रकाश वैदिक यूनीवर्सिटी आफ अमेरिका के कुलपतित्व पर भी डाले। कुलपति विश्वविद्यालय का होता है। यूनीवर्सिटी का वाइस चासलर होता है। इस यूनीवर्सिटी मे कितनी फैकल्टिया है, कितने प्रोफेसर, रीडर, लैक्चरर हैं? कितने छात्र है? अमेरिका के शिक्षा विभाग मे इसकी क्या मान्यता है? कहीं यह वनरूम यूनीवर्सिटी तो नही? कही यूनीवर्सिटी शब्द भ्रामक तो नही?—स०

टंकारा या मोरवी

इस विषय मे आर्य जगत् के इतिहासवेत्ता श्री भवानीलाल जी भारतीय ने मेरे लेख मे दिये गये प्रमाणो व तर्को, जो कि महर्षि दयानन्द की हस्तलिखित आत्मकथा से दिये थे, का कोई उत्तर न देकर केवल श्री देवेन्द्र बाबू के लिखे मात्र को प्रमाण मानकर लिख दिया कि टकारा ही महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि थी। उनकी ये सारी बाते तो मैने उनके द्वारा लिखित 'नवजागरण का पुरोधा' मे पढकर लिखी थीं। कृपया भारतीय जी यह बताये कि महर्षि के हाथ से लिखी आत्मकथा ज्यादा प्रामाणिक है या बाबू देवेन्द्र जी द्वारा लिखित जीवनी?

सीताराम आर्य, बालसमन्द रोड, हिसार

धन्यवाद

१० जून २००१ के आर्य जगत् मे 'इस्लामी जिहाद का सिद्धान्त और व्यवहार' श्री बी० एल० शर्मा का यह लेख छपा है। आर्य पत्रिकाओ मे इस प्रकार के लेखो की आवश्यकता है। आर्यसमाज समाज का प्रहरी है। उसके अनुयायियों द्वारा वर्तमान स्थिति मे देश, समाज, धर्म आदि के सदर्भ मे मार्गदर्शन किये जाने की आवश्यकता है। इस प्रकार के लेख छपने से आर्यसमाज अधिक व्यापक रूप से अपना काम करेगा। अध्यात्म के साथ देश-समाज के बारे मे भी प्रबोधन होना चाहिये।

प्रा० एकनाथ नाणेकर, उपमत्री, आर्य समाज पिपरी, पुणे-१७

महापुरुषो का कीर्ति दर्पण

नवनिर्मित "राष्ट्र—वन्दना भवन"

देशभक्त नागरिको को यह जानकर हर्ष होगा कि अलीगढ से कानपुर की ओर जाने वाले जी टी रोड, राजमार्ग पर एटा से पूर्व पड़ने वाले नगर सिकन्दराराऊ मे एक प्रेरणा पूर्ण भव्य सस्कार केन्द्र—"राष्ट्र वन्दना भवन" स्थापित किया गया है। भारतवर्ष के इतिहास मे यह एक नवीन प्रयोग भारतीय पुलिस एव क्षेत्रीय जनता के सहयोग से कोतवाली सिकन्दराराऊ जनपद हाथरस के परिसर मे किया गया है। "राष्ट्रवन्दना भवन" एक ऐसा स्मारक है जिसके द्वार-दीवार एव पत्थर निर्जीव नही, प्रत्युत जीवन्त और मुखर है। इसके अन्तर्गत यज्ञशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, शहीद स्मारक एव शहीद वाटिका स्थापित हैं। भारतीय स्वातन्त्र्य-युद्ध के वीर पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती के समग्र दर्शन को अपने जीवन मे ढालने वाले अमर शहीदो के स्मरण हेतु अनेक द्वार इस स्मारक मे खुलते और खिलते दृष्टिगोचर होते है। अमर शहीद प रामप्रसाद बिस्मिल, अमर शहीद अशफाक उल्ला खा, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम के द्वार शोभायमान है। यत्र तत्र पत्थरो पर अर्थ सहित वेद मत्र, वेद महिमा के सन्देश तथा अमर शहीदो की वाणियाँ उत्कीर्ण की गई है। बहुत ही आकर्षक यज्ञशाला बनाई गई है।

पुस्तकालय मे चारो वेद, वैदिक साहित्य, शहीदो के बलिदानी इतिहास, तथा आधुनिक प्रगतिशील सामान्यज्ञान एव वैज्ञानिक जानकारी का साहित्य सकलित है। इसी पुस्तकालय मे महर्षि दयानन्द, गुरु विरजानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, प लेखराम, महात्मा हसराज, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगिराज कृष्ण, भारत रत्न डा अब्दुल कलाम आदि की लम्बी चित्र-वीथिका बनाई गई है। प्रतिदिन किसी न किसी विद्यालय के छात्र एव छात्राए इस भवन मे आकर कुछ घण्टे व्यतीत करते है। इस प्रकार उनके मन मे आस्तिकतापूर्ण देशभक्ति के सस्कार जाग्रत होते है।

एटा मे जहॉ विश्व प्रसिद्ध सबसे विशाल यज्ञशाला आर्ष गुरुकुल मे है, उससे ३० कि मी के अन्तर पर ही यह सस्कार केन्द्र "राष्ट्र वन्दना भवन" भी दर्शनार्थियो को अपनी ओर आकर्षित किए बिना नही रहता। शहीद स्मारक भारत-वीरो के लम्बे इतिहास को स्वय मे समेटे हुए है। इसमे अपने आदर्श महापुरुषो, भारत रत्न की उपाधि से अलकृत पूर्वजो, परमवीर चक्र विजेताओ, महावीर चक्र विजेताओ, उत्तर प्रदेश पुलिस के अमर वीरो तथा क्षेत्रीय स्वतत्रता सग्राम सेनानियो की भावपूर्ण स्मृति दर्शको की ऑखो मे झलक कर हृदय को उद्वेलित कर देती है।

अभूतपूर्व लोकार्पण समारोह

"राष्ट्र वन्दना भवन" का लोकार्पण समारोह शुक्रवार २० अप्रैल २००१ को कोतवाली परिसर सिकन्दराराऊ मे किया गया, जिसकी अध्यक्षता शहीदे आजम सरदार भगत सिह के अनुज सरदार श्री कुलतार सिह जी ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री महेशचन्द्र द्विवेदी पुलिस महानिदेशक उ प्र , विशिष्ट अतिथि कारगिल युद्ध के परमवीर चक्र विजेता ब्रिगेडियर श्री योगेन्द्र यादव के अतिरिक्त अमर शहीद अशफाक उल्ला खा के पौत्र, जिनका नाम भी अशफाक उल्ला खा है, तथा अमर शहीद रोशन सिह के पौत्र कुँ जगदीश सिह सम्मानित अतिथि के रूप मे उपस्थित हुए। कई हजार की सख्या मे स्त्री-पुरुष नागरिक समारोह स्थल पर लम्बे समय तक उपस्थित रहे। आर्य कन्या इण्टर कालिज सिकन्दराराऊ की प्राचार्या एव छात्राओ ने देश भक्ति के गीतो का प्रभावी मचन किया। सरदार कुलतार सिह जी ने भाषण मे अपने पितामह स्व श्री अर्जुन सिह का वर्णन करते हुए बताया कि उनका यज्ञोपवीत सस्कार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया था, और उन्हीं की प्रेरणा से उनके पूर्वजो ने वैदिक सस्कारो को ग्रहण कर प्रचार किया था। उन्होने पूज्य पजाब माता विद्यावती एव अपने अग्रज स्व सरदार भगत सिह के अनेक जीवन सस्मरण एव बलिदान भावो को रेखाकित किया।

श्री अशफाक उल्ला खा ने आर्य समाज शाहजहॉपुर मे प रामप्रसाद बिस्मिल के साथ खा साहब की सौहार्द पूर्ण मैत्री का वर्णन किया और उस घटना को भावपूर्ण ढग से चित्रित किया, जब मुस्लिम समुदाय आर्य समाज मन्दिर पर चढाई करने को आगे बढ रहा था तब खा साहब ने आगे बढकर उसका सामना किया था और घोषणा की थी कि मुझे मारकर ही आप लोग आगे प रामप्रसाद बिस्मिल तक पहुँच सकते है। इसी प्रकार अमर शहीद ठा रोशन सिह के पौत्र कुवर जगदीश सिह एव उनके सहयोगी ने मार्मिक सस्मरण प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय स्वातन्त्र्य सग्राम के वयोवृद्ध सेनानियो ने भी वीरता के भाव प्रस्तुत किए। "राष्ट्र वन्दना भवन" के स्वप्नद्रष्टा श्री विद्यार्णव शर्मा के अग्रज पद्मश्री भारत भूषण ने बताया कि उनके पूज्य पिता, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित शिक्षक स्व श्री विश्वम्भर सिह जी अपनी मृत्यु शैय्या पर भी यही गीत गाते चले गये—"दयानन्द के वीर सैनिक बनेगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे।" राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति, मानवीय सस्कार निर्माण का दिव्य प्रेरणा पुज "राष्ट्र वन्दना भवन' स्थापित करके मेरे अनुज ने न केवल राष्ट्रोद्धारक दयानन्द का काम ही पूरा किया है, प्रत्युत पितृ ऋण से मुक्ति भी प्राप्त कर ली है।

श्री असीम अरुण अधीक्षक हाथरस ने हजारो की सख्या मे उपस्थित स्त्री-पुरुष नागरिको का भवन की स्थापना मे सहयोग एव समारोह की सफलता के लिए आभार प्रकट किया।

आर्य समाज पूण्डरी का वार्षिक विवरण

आर्य समाज पूण्डरी (कैथल) अपने स्थापना वर्ष से ही आर्य समाज के प्रचार-प्रसार मे अग्रणी भूमिका निभा रहा है। आर्य समाज के उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए समाज के नायको ने एक ठोस कार्ययोजना तैयार कर नगर-नगर, ग्राम-ग्राम व जन-जन तक आर्य समाज के सन्देश को पहुचाने का प्रयास किया है।

गुजरात भूकम्प त्रासदी-सेवा कार्य

इस दिशा मे बढे हुए आर्य समाज पूण्डरी ने गुजरात भूकम्प त्रासदी मे मानव सेवा का आदर्श उपस्थापित किया। आर्य समाज पूण्डरी के प्रधान श्री गोपाल शर्मा के नेतृत्व मे भूकम्प त्रासदी के सेवाकार्य के लिए आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओ ने नगर-ग्राम-गली-मोहल्लो मे जाकर सहायता राशि इकट्ठी की। अन्न-वस्त्र,द्रव्य इत्यादि एकत्रित कर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग के माध्यम से ११४ क्विटल खाद्य सामग्री आर्य समाज, पूण्डरी ने गुजरात मे सेवार्थ भिजवायी।

कार्यकर्त्ताओ की भूमिका

वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार के वार्षिकोत्सव मे आर्य समाज पूण्डरी की ओर से लगभग ४० कार्यकर्त्ताओ (एक बस) ने सोत्सह भाग लिया तथा कार्यक्रम मे सेवाकार्यो मे बढ-चढकर भाग लिया।

इसी तरह क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन, नारायण गढ मे यहा के युवा कार्यकर्त्ताओ ने बढ-चढकर भाग लिया। यहा के कार्यकर्त्ताओ ने द्विदिवसीय क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन मे विशेष भूमिका निभाई।

एक हजार एक कुण्डीय विश्वशान्ति महायज्ञ

यज्ञो के प्रचार-प्रसार के लिए आर्य समाज पूण्डरी के नेतृत्व मे नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए एक हजार एक कुण्डीय विश्वशान्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया। १५ अक्टूबर रविवार को १००१ कुण्डीय विश्वशान्ति महायज्ञ का ब्रह्मसरोवर कुरुक्षेत्र के तट पर ऐतिहासिक आयोजन, हरियाणा ही नही, अपितु सम्पूर्ण देश मे विशेष चर्चित रहा, जिसमे नगर-ग्राम व सुदूर प्रान्तो के सहस्रो गणमान्य नागरिको ने भाग लिया।

यज्ञो के प्रचार-प्रसार, अन्धविश्वास उन्मूलन, सेवा व परोपकार के कार्यो मे आर्य समाज पूण्डरी सदैव अग्रणी रहा है।

वार्षिकोत्सव – प्रचार कार्य

आर्य समाज पूण्डरी ग्राम देहात के क्षेत्रो मे आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयत्नशील है। एतदर्थ ग्राम-ग्राम मे आर्य समाज की स्थापना के लिए प्रयास कर रहा है।

आर्य समाज पूण्डरी ने इसी दिशा मे बढते हुए अपना १०१वा वार्षिकोत्सव १८, १९, २० मई को मनाया। इस अवसर पर स्थानीय निवासियो के अलावा ग्राम, देहात के क्षेत्रो से सैकडो लोगो ने भाग लिया।

आर्य समाज पूण्डरी, आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील है और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष के साथ ऋषि दयानन्द के सन्देशो के प्रचार मे सलग्न है।

गुजरात में हाजियों की संख्या में वृद्धि

पिछले साल सन् २००० मे गुजरात से २२७८ मुसलमानों को हज यात्रा की अनुमति मिली थी। इस साल सन् २००१ मे वह बढाकर ७५०० कर दी गई है। पिछले साल सरकार ने प्रति हज यात्री को १६,६६६ रुपये की सहायता राशि दी थी, जिससे उसका यात्रा बोझ कम हो जाये। उसका ही यह परिणाम है कि प्रतिवर्ष हाजियो की सख्या बढती जा रही है। हज यात्रा का सारा व्यय डालरो मे करना होता है, जो देश पर एक भारी आर्थिक बोझ है।

सार्थक नामकरण के प्रति उदासीनता

❑ पडित वेदप्रकाश शास्त्री

ससार की प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई नाम अवश्य है, चाहे वह जड हो या चेतन। क्योकि यदि उसका नामकरण न किया जाता, तो भला हम उसे सम्बोधित कैसे करते? उसके बारे मे चर्चा बिना नाम के नही हो सकती थी।

आज भी अनेक वस्तुओ का आविष्कार होता है, तो सर्वप्रथम उनका नामकरण ही किया जाता है। वस्तु चाहे देशी हो या विदेशी, उसका नामकरण भी उसी सभ्यता सस्कृति के अनुसार होता है, क्योकि बिना नाम के उन्हे प्रचार-प्रसार एव व्यवहार मे लाना असम्भव है।

कीट-पतग, पशु-पक्षी, सूक्ष्म, स्थूल, दृश्य, अदृश्य जीवो, जीवाणुओ, विषाणुओ—सभी के कोई न कोई नाम अवश्य है। फिर भला मनुष्यो के नाम क्यो न होते?

चाहे किसी भी मत-मतान्तर, सम्प्रदाय, धर्म का आस्तिक व्यक्ति हो अथवा कोई नास्तिक, अपनी अपनी परम्परा या रुचि के अनुसार नामकरण अवश्य करता है, क्योकि इसके बिना निर्वाह नही।

नामकरण सस्कार

नाम का इतना अधिक महत्व होने के कारण ही ऋषि-मुनियो ने इसे सस्कारो के अन्तर्गत समाहित किया है। आधुनिक काल मे महर्षि दयानन्द ने भी सोलह सस्कारो मे नामकरण को सम्मिलित करके प्राचीन पद्धति का समर्थन किया है। महर्षि का कहना है कि नाम सार्थक, सरल, सुबोध होना चाहिए।

महर्षि दयानन्द से पूर्व लोग क्योकि कोई न कोई नाम रखना होता था, इसलिए जैसा समझ मे आया, वैसा ही रख लेते थे। सार्थक, निरर्थक के बारे मे विचार नही किया जाता था। ग्रामीण क्षेत्रो के नाम तो बडे ही अजीबो-गरीब हुआ करते थे। यथा— तोतासिह, कालासिह, कीकरसिह, पीपलसिह, छनकासिह, अग्रेजसिह, मेजरसिह, करनैल सिह, गडाराम, झडाराम।

उर्दू का प्रभाव

महर्षि दयानन्द के पश्चात् नामो मे काफी सुधार हुआ और शुद्ध, सार्थक, शिक्षाप्रद नामो का प्रचलन हुआ। लेकिन इतना होते हुए भी ये नाम इस्लामिक एव पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव से बच न सके। इसीलिए अनेक लोगो के नाम आरिफ, साहिल, महक, तमन्ना, अर्श, शकील, स्टैफी, पैसी, नैमी, विक्की, मोनू, मोनू, पिकू, शीनम, शेफी, मैडी आदि दिखाई पडते है।

आर्यो मे भी अनेक लोग ऐसे हुए है या हैं, जिनके नाम सुसस्कृत प्रतीत नहीं होते। महर्षि दयानन्द की जीवनी के लेखक श्री घासीराम का नाम सभी ने पढा व सुना है। डा० दुखनराम का नाम आर्य जगत् मे प्रसिद्ध है जो बिहार के थे। मिठाईलाल और शादीलाल के नाम से अनेक आर्य परिचित है। भूलनराम और रुलदू भी पढ़ने को मिले हैं। छाजूराम, चचलमल, खण्डूराम, पोपटभाई का नाम भी पाठको की दृष्टि मे आया होगा। न जाने ऐसे कितने नाम है, जो महर्षि दयानन्द के अनुसार अनुचित है। परन्तु इन नामधारियो के नामकरण मे उनका क्या दोष? नामकरण तो उनके माता-पिता एव सम्बन्धियो ने किया होगा।

वैसे वर्तमान समय मे शिक्षाकाल मे नाम समाचार पत्र मे प्रकाशित कर शिक्षाबोर्ड या विश्वविद्यालय के माध्यम से बदले जा सकते है।

नपुसकलिगी नाम

परन्तु आजकल भी आर्यो मे ही अनेक ऐसे नाम रखे जा रहे है, जिनके अर्थ और औचित्य पर विचार नहीं किया जाता। पुरोहितवर्ग भी नामकरण करते समय ध्यान नही देता। यथा— बालक का नाम रखा गया 'शिवम्'। देखने सुनने मे यह नाम बडा अच्छा प्रतीत हो रहा है, सार्थक भी है, सरल और सुबोध भी। परन्तु मुख्य बात जिस पर ध्यान देना चाहिए था, वह है उसके लिग पर। 'शिवम्' शब्द सस्कृत का होने से नपुसक लिग का है, जबकि बालक पुलिग है। अत नाम भी पुलिग का होना चाहिए, न कि नपुसक लिग का। लेकिन इस पर किसी ने विचार करने की आवश्यकता ही न समझी। अत जिन्होने अपने बच्चो के नाम सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, मगलम् शुभम् इत्यादि रखे है, वे अभी बाल्यावस्था मे सुधार कर विद्यालय मे प्रवेश दिलाए जिससे ऐसा न हो कि अशुद्ध नाम ही चलते रहे।

निरर्थक नाम

अनुज, तनुज जैसे नाम सार्थक होते हुए भी उचित नहीं है। क्योकि अनुज का अर्थ 'छोटा भाई', तनुज का अर्थ 'पुत्र' है। अनुज और तनुज सभी के लिए भाई और पुत्र नहीं हो सकते। पत्नी के लिए तो विशेषकर नही। इतना होते हुए भी अर्थ की ओर ध्यान न देकर अनेक लोग एतादृश नामकरण कर रहे है।

आधुनिकता के प्रभाव मे तुकबन्दी करके रखे गए नामो मे भी अनेकबार त्रुटिया हो जाती है। यथा— नवनीत, अवनीत, परनीत, रवनीत। इसमे नवनीत नाम तो ठीक हैं, परन्तु शेष नही। अवनीत—जो पतन की ओर ले जाया जाय, परनीत—जो दूसरो से ले जाया जाय तथा रवनीत शब्द का पूर्वार्ध निरर्थक होने से यह ठीक नहीं। गौरव—सौरव मे दूसरा शब्द उचित नहीं। अत ऐसी तुकबन्दी करते समय नामार्थ का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

कुछ ही दिन हुए एक ईसाई युवती को आर्य धर्म मे दीक्षित करके उसका नाम 'अमीषा' रखा गया। पर यह नाम बनता नही। सभवत यह नाम 'मनीषा' के आधार पर बनाने का प्रयास किया गया। अत विद्वानो को चाहिए कि वे सोच विचार कर नामकरण करे।

बुरे अर्थ वाले नाम

एक सज्जन ने अपने पुत्र का नाम बडे प्यार से 'अक्षम' रखा। यद्यपि यह परिवार शिक्षित है, फिर भी अक्षम के अर्थ की ओर ध्यान नहीं दिया गया। केवल अपनी रुचि और पसन्द को ही प्राथमिकता दी। एक बार विवाह सस्कार के अवसर पर उनके यहा जाने का मौका मिला। प्रसगवश बच्चे का नाम पूछने पर 'अक्षम' बताया। लेकिन मेरे यह कहने पर कि इसका अर्थ तो 'कमजोर, असमर्थ' है। अत इसके स्थान पर 'सक्षम' कर ले तो अधिक उचित रहेगा। प्रसन्नता की बात है कि उन्होने तुरन्त सुझाव को मान लिया और 'सक्षम' नाम रख लिया, जिसका अर्थ 'समर्थ, शक्तिशाली' है।

नाम चाहे प्राचीन हो अथवा अर्वाचीन, उसकी सार्थकता, शुद्धता, सरलता, लिग, औचित्य, सस्कृति आदि का पूर्णरूपेण ध्यान रखा जाना चाहिए। न कि उसके प्रति उदासीन बने रहे।

अशुद्ध नाम

अशुद्ध नामो का प्रचलन भी पर्याप्त मात्रा मे है। यथा—वरुन, बरमानन्द, रजिन्द्र, राजिन्दर, रविन्दर, किरशनचन्द, कृष्णचन्दर, कृश्नचन्द्र, किशनचन्द, रितु, रिति, परवीण, प्रवीन, वीना, पारवती, वनीता आदि।

सन्यासियों के भी

जहा बालक बालिकाओ के सार्थक, शुद्ध, तर्कसगत नामकरण की आवश्यकता है वहा वानप्रस्थ और सन्यासियों का भी सर्वत शुद्ध एव सन्यास आश्रम के अनुकूल नामकरण होना चाहिए जिससे हास्यास्पद स्थिति न उत्पन्न हो। क्योकि यह त्याग, बैराग्य और परिपक्वता का काल होता है। अत वानप्रस्थ सन्यास दीक्षा के समय उनका भी नामकरण सर्वथा शुद्ध और औचित्यपूर्ण होना चाहिए।

डा० स्वामी सत्यम् का नाम आर्य जगत् में प्रसिद्ध है। अब विचारणीय यह है कि स्वामी जी का नाम नपुसक लिग मे है। सन्यास की दीक्षा के समय सभवत इस ओर किसी का भी ध्यान नही गया, स्वय स्वामी जी का भी नही। क्या इसमे सुधार की कोई गुजाइश नहीं? मेरे विचार से है। इसमे सुधार करके सत्यानन्द, सत्यार्थी, सत्यान्वेषी, सत्योन्मुख आदि नाम भी रखा जा सकता है। जबसे चेतना आए, तब से ही सही। समाचार पत्र पत्रिकाओ मे सूचना देना ही पर्याप्त है। कोई बोर्ड या विश्वविद्यालय से अनुमति/प्रमाणपत्र तो लेना नही जो अडचन आने का डर हो।

मनोजानन्द भी सन्यासी का नाम उचित नही। इसका अर्थ काम मे आनन्द मानने वाला है। परन्तु सन्यासी तो इससे निवृत्त होकर ही सन्यास लेता है फिर मनोजानन्द नाम कहा तक उचित है, यह वह स्वय सोचे।

अत जहा बालक-बालिकाओ के सार्थक, शुद्ध, सरल, उद्देश्यपरक नामकरण की अत्यन्त आवश्यकता है वहा वानप्रस्थ और सन्यासियो के सर्वशुद्ध नामकरण की उससे भी कही अधिक आवश्यकता है। क्योकि परिपक्व अवस्था मे पहुच जाने के कारण 'यथा गुण तथा नाम' रखा जा सकता है। यदि सोद्देश्य रखना चाहे तो 'यथा नाम तथा गुण' की उक्ति का भी अनुसरण किया जा सकता है। यथा— सकल्पानन्द अर्थात् जिसने आनन्द प्राप्ति हेतु सकल्प ले लिया है। सुमेधानन्द भी उचित है।

विद्वान्, पडित, पुरोहित, उपदेशकवर्ग का यह कर्तव्य है कि अपने उपदेशो और व्याख्यानो मे नामकरण का विषय भी सम्मिलित करे। आर्य समाज के सभासद् भी इसके प्रति जनसामान्य को प्रेरित करे। समय-समय पर आयोजित होने वाले योग, व्यायाम, नैतिक, चारित्रिक, शारीरिक, सिद्धान्त परिचय के विभिन्न शिविरो मे भी सभी आगन्तुको को शुद्ध, सार्थक नामकरण के लिए प्रेरित/उत्साहित किया जाय।

आशा है समस्त आर्यजन शुद्ध नामकरण के प्रति सदैव सजग एव सचेत रहेगें। इसके लिए उल्लिखित पते पर "वैदिक बालनामावली" हेतु भी सम्पर्क किया जा सकता है।

४-ई, कैलाशनगर, फाजिल्का (पजाब)

(पृष्ठ ४ का शेष)

सभी धर्मो तथा संस्कृतियों .....

स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥" (ऋ० ९ ९६८ २०)। इस मत्र में कहा गया है कि प्रकृति-रूपी वृक्ष पर दो पक्षी बैठे है। एक फल खा रहा हे, जबकि दूसरा केवल देख रहा है। यही चित्र मोहन जोदडो की खुदाई से मिलता है, जिसे "आर्यो की सभ्यता" या "सिन्धु घाटी की सभ्यता" का नाम दिया गया है। इतिहासकार लिखते हैं कि यह नगर श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर ने आबाद किया था। "बोगाजक्यूई अभिलेख" को पढ़ कर डा० याकोबी का, जो बेबीलोनियन भाषा के विद्वान् थे, कहना है कि इनका स्रोत "ऋग्वेद" है। तथा सिधुघाटी की खुदाई से प्राप्त "वृक्ष पर बैठे दो पक्षियो के चित्र" को समझने वाले, २० वर्ष तक इस विषय मे अनुसधान करने वाले उज्जैन विक्रम विश्वविद्यालय मे पुरातत्व विभागाध्यक्ष डा० विष्णु श्रीधर ने इस सभ्यता का मूल वैदिक आर्यो की सभ्यता को माना है, जिनका स्रोत "वेद" ही है।

वह मै हू

पारसियो की धर्म पुस्तक "जेन्दावेस्ता" मे परमात्मा कहता है कि मेरा नाम 'अम्हि' तथा 'अम्हि यदम्हि' है। 'अम्हि' शब्द मस्कृत के 'अस्मि' शब्द का अपभ्रश है। पारसी मे 'स' को 'ह' बोलते है। इसका अर्थ हुआ 'मै हू', 'वह मै हू।' ईसाइयो के धर्मग्रथ बाइबिल मे भी परमात्मा मूसा को कहता है— I am तथा I am that I am यहूदियो ने ये दो बाते पारसियो मे ली है। यजुर्वेद मे आता है **"योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि।** (यजु० अध्याय ४०) तथा यजुर्वेद के अध्याय २ के २८वे मत्र मे आया है— **"इदमह य एवास्मि सोऽस्मि।"** इनका भी ऊपर वाला ही अर्थ है, जो ईसाई, पारसी, यहूदी कर रहे है। उपनिषदो मे भी **"सोऽहमस्मि"** जगह-जगह है। "मै शरीर नही हू, आत्मा हू।" इन सबका आदि स्रोत वेद है, मगर ये धर्माचार्य अब भूल सुधार नही कर रहे।

लोकमान्य तिलक अपनी पुस्तक 'वैदिक ज्योतिष' या "वेदाग ज्योतिष" मे ऋग्वेद का मत्र देकर सिद्ध करते है कि "यह्व' शब्द वेद मे अग्नि के लिए है और यहूदियो मे 'जिहोवा' नाम परमात्मा का है। यह नाम धातु जिससे "जुहोति" बनता है तथा यह्व शब्द का अपभ्रश है। तब यहूदी भी हवन करते थे, क्योकि बाइबिल मे लिखा है "मूसा जब उन्हे मिश्र से निकाल कर कैनान ले जा रहा था, तब जिहोवा अग्नि का रूप धारण कर उनका मार्गदर्शन कर रहा था, अर्थात् उन्हे यज्ञ के समय वेदोपदेश दिया गया होगा। आश्चर्य केवल इस बात का है कि वेद रूपी गगोत्री से निकली वैदिक विचारधारा की गगा देश देशातरो मे फैली, लेकिन एक ही स्रोत मे जन्म लेने वाले विचार, धम व सम्कृतिया एक दूसरे के विरुद्ध वैमनस्य का, शत्रुता का, कट्टर विरोध का, रूप क्यो धारण कर गये? सम्भवत इसका कारण विभिन्न धर्माचार्य व उनके धर्मग्रथ तथा उनके निजी स्वार्थ है।

२५, गोल्डन विहार, हिसार (हरियाणा)

पाठक कृपया ध्यान दें

नीचे आर्य जगत् के उन ग्राहको की सूची दी जा रही है, जिनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है। कृपया अपना चन्दा तुरन्त भेजे, जिससे आपको 'आर्य जगत्' भेजना जारी रखा जा सके। यह सूची क्रमश प्रकाशित की जायेगी। —प्रबन्धक

ग्राहक सं०	समाप्ति की तिथि	३५६४१	१८-१२-९९
३५६११	२६-१०-९९	३५६४२	१८-१२-९९
३५६१२	२६-१०-९९	३५६४८	२४-१२-९७
३५६१३	२६-१०-९९	३५६५४	१८-३-९८
३५६१५	२७-१०-९९	३५६५६	२३-७-९१
३५६१६	२७-१०-९९	३५६५९	१०-८-९७
३५६१९	२९-१०-९९	३५६६१	९-६-९१
३५६२०	३०-१०-९९	३५६६२	२४-३-९६
३५६२२	६-१०-९९	३५६६३	६-७-९४
३५६२३	४-११-९९	३५६६५	२१-१२-९९
३५६२४	५-११-९९	३५६६७	२८-१२-९९
३५६२५	५-११-९९	३५६९१	२६-६-९९
३५६२६	५-११-९९	३५६९२	३-११-९८
३५६२९	१२-११-९९	३५७०२	२६-४-९८
३५६३०	१९-११-९९	३५७०६	८-४-९८
३५६३२	२१-११-९९	३५७०७	८-५-९८
३५६३३	२१-११-९९	३५७१०	८-९-९८
३५६३४	२६-११-९९	३५७११	२२-११-९८
३५६३६	७-१२-९९	३५७१५	३०-११-९७
३५६३८	१४-१२-९९	३५७१६	३०-१२-९७
३५६३९	१५-१२-९९	३५७१७	१३-५-९७
३५७२१	२-४-९८	३०५६५	२-१२-९७
३५७३१	१८-६-९७	३१२१०	१२-८-९८
३५७३९	४-९-९१	३१८२५	२७-३-९८
३५७७४	२५-१०-९८	३१८५७	२३-४-९८
३५७९१	१२-८-९८	३१९७४	१५-१२-९९
३५८६८	१०-१०-९७	३१९८३	९-१२-९९
३५८७०	८-१०-९७	३२२१३	६-१२-९९
३५८७५	२१-८-९७	३२२२५	२१-१२-९९
३५८७७	१७-८-८७	३२२४१	१४-१२-९९
३५८७८	२१-८-९६	३२२५२	१५-१२-९९
३५९००	८-११-९८	३२२५४	१४-१२-९९
३५९०५	२७-१२-९९	३२७२९	६-११-९९
३५९१४	३-८-९७	३२७७९	२९-१२-९९
३६०५०	६-१-९८	३२७९९	२३-१२-९९
३०४२७	१६-७-९७	३३२२५	१६-६-९८
		३१२३०	१३-४-९७

(पृष्ठ ३ का शेष)

इस टोकरी के सब ....

पडा। राष्ट्रपति शासन की घोषणा को दो महीने के अन्दर ससद् के दोनो सदनो से पुष्ट कराना आवश्यक होता है। यदि दो महीने बाद फिर जयललिता को ही मुख्यमत्री बनाना पडे, तो और बुरा होगा। अत फातिमा बीवी को इसलिए पद से हटाया गया कि उन्होने करुणानिधि और दो केन्द्रीय मत्रियो की गिरफ्तारी के विषय मे स्वय तो रिपोर्ट भेजी ही नही, मागने पर भी राज्य मरकार द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट ही भेज दी। राज्यपाल की मुख्यमत्री पर असाधारण कृपा दृष्टि थी इसमे तो कोई सदेह नही, परन्तु कुछ लोग उनके हटाये जाने को अवैध बता रहे है। यह एक और सडा आम है।

न्यायालय मे बड़ी देर

अगला सडा आम यह है कि कुछ सगठनो ने चेन्नई उच्च न्यायालय तथा नई दिल्ली मे उच्चतम न्यायालय मे लोकहित वाद याचिकाए दाखिल की है कि ३ वर्ष की मजा प्राप्त जयललिता को मुख्यमत्री पद पर कार्य करने से रोका जाये। उच्च न्यायालय मे दायर याचिका को भी उच्चतम न्यायालय ने अपने यहा विचार के लिए मगा लिया है और अन्य सभी न्यायालयो को इस विषय मे विचार करने से रोक दिया है। सडा आम वह न्यायिक व्यवस्था है, जिसमे इतने महत्वपूर्ण विषय पर विचार करने मे इतना अधिक विलम्ब लगता है। इस विषय पर एक सप्ताह या दस दिन के अन्दर क्यो फैसला नही सुनाया जा सकता? बाबरी स्मारक का मामला बरसो से न्यायालय मे विचाराधीन है। यदि न्यायालय मे कोई फैसला हो गया होता, तो उसके ध्वस की नौबत ही न आती।

मानवोचित सजाए अभिशाप

हमारे वर्तमान शासन तत्र का एक और सडा आम यह है कि हम अत्यधिक मानवतावादी, आदर्शवादी नारे लगाते है मृत्युदड नहीं होना चाहिए, बेतो की सजा जैसी पाशविक सज़ाए बन्द की जाये, सजा का उद्दश्य कैदी को सताना नही, अपितु उसे सुधारना होना चाहिए, आदि। ये नारे सुनने मे अच्छे लगते है। परन्तु विडम्बना यह है कि जब मानवतावादी नारो के चक्कर मे मृदु दड दिये जाने लगते है, तब समाज पर दानव हावी हो जाते है।

हमारी सबसे बडी समस्या है बढती हुई आबादी की समस्या। भगवान ने हमे यह सुअवसर दिया है कि हम अपराधी, दानवीय, पापी तत्वो का उन्मूलन कर सके। न सुधरने वाले पापी तत्वो को मृत्यु दड दे कर स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहिए। घटती जनसख्या वाले देश तो मृत्यु दड दे पाने की स्थिति मे ही नही है। हम है, हमे उसका लाभ उठाना चाहिए।

मृत्यु दड आजीवन कारावास से अधिक मानवीय और दयापूर्ण है और कारगर भी है। अपराधी स्वभाव के लोगो के लिए कारावास तो कोई दड ही नही है। बेत मारने, (वह भी सार्वजनिक चौराहो पर) जैसे दड अपाधियो को वश मे करने मे सफल हो सकते है।

इस टोकरे के सब आम सड गये है। इनके प्रति कुछ भी ममता रखना व्यर्थ है। आवश्यकता इस बात की है कि सविधान को आमूलचूल बदला जाये। दुष्टो को कठोर दड तथा कानून का पालन करने वाले नागरिको को सुरक्षा एव सान्त्वना प्रदान की जाये। न्यायालयो मे फैसले तुरन्त हो। अत्यधिक विलम्ब से हुआ फैसला अपने आप मे अन्याय है। अपराधी वृत्ति के लोगो को इतना आतकित कर दिया जाये कि वे अपराध करने की बात सोचते ही काप उठे। सदेह का लाभ अपराधी को नही, अपितु पीडित वादी को दिया जाये। हर व्यक्ति का आचरण इतना बेदाग होना चाहिए कि सदेह की सुई उसकी ओर मुडे ही नही।

तमिलनाडु काड की बुराई मे से एक अच्छाई यह उभरी है कि अभियुक्तो को पहली बार शारीरिक दड और अपमान सहना पडा है। अब तक तो बडे बडे अभियुक्त जेल मे शाही बगलो मे काटते थे।

(पृष्ठ १ का शेष)

समझौते के लिए बेचैन ....

कश्मीर भारत का अभिन्न अग था

कश्मीर पर भारतीय ससद् का सकल्प स्वीकृत हुआ था कि समूचा कश्मीर भारत का अभिन्न अग है। समस्या केवल इतनी है कि पाक अधिकृत कश्मीर वापस कैसे लिया जाये? दूसरी ओर श्री मुशर्रफ ने घोषणापूर्वक कहा है कि कश्मीर के स्वतत्रता सग्रामियो को पाकिस्तान का नैतिक, राजनीतिक समर्थन जारी रहेगा। ऐसी दशा मे कश्मीर पर बात क्या होगी?

विनाशकारी प्रस्ताव

गैस की पाइप लाइन पाकिस्तान की भूमि पर हो कर भारत आये, इससे बढ कर विनाशकारी प्रस्ताव और कोई हो नहीं सकता। यदि किसी तरह यह प्रस्ताव स्वीकृत हो जाता है, तो भारत इस सुविधा को प्राप्त करने के बदले २० करोड डालर प्रतिवर्ष किराये के रूप मे पाकिस्तान को देगा। 'साप को दूध पिलाना' और 'अपने पैरो पर कुल्हाडी मारना' इसी को कहते है। इस २० करोड डालर का उपयोग जिहादियो को आधुनिकतम हथियार, आर० डी० ऐक्स आदि देने के लिए किया जायेगा और १०० करोड भारतवासियों मे से प्रत्येक १० रुपये इस मद मे दे रहा होगा कि जिहादी आ कर उसे गोली मारे।

हमारी जनसख्या बढ रही है। उसके भोजन, निवास, शिक्षा, चिकित्सा आदि की सुविधाए जुटा कर उनका जीवन स्तर सुधारने के लिए हम ईरान से गैस मगा रहे है। उसके लिए पाकिस्तान को बैठे बिठाये हम प्रतिवर्ष २० करोड डालर देगे। बलिहारी है इस चिन्तन की!

सभी प्रधानमत्री एक ही राग अलापते है

इस तरह के सुझाव कहा से आते है? प्रधानमत्री की कुर्सी पर बैठते ही ऐसी विश्व मैत्री, सर्वभूत दया, पडौसी से सद्भाव की सुकुमार भावनाए कैसे जागने लगती है? नेहरू जी भी ऐसी उडाने लेते थे। मुलायम सिह २००० करोड रुपये पाकिस्तान को शान्ति स्थापना के लिए रिश्वत के रूप मे दे देने की बात करते थे। इन्दिरा गाधी ने बगला देश मुक्ति सग्राम जीतने के बाद भी शिमला समझौते मे सब कुछ गवा दिया। श्री जुल्फिकार अली भुट्टो की जबानी बातो पर हमने विश्वास कर लिया। श्री इन्द्रकुमार गुजराल भी पाकिस्तान मैत्री के गीत गाते थे और इकतरफा मैत्री आन्दोलन चलाना चाहते थे। श्री अटल बिहारी उनसे भी बडे कवि है। कवि कुल गुरु कालिदास के विषय मे किम्वदन्ती है कि वह जिस डाल पर बैठे थे, उसी को काट रहे थे। भारत के कवि प्रधानमत्रियो के अलोक-व्यावहारिक आचरण को देखते हुए लगता है कि यह कहानी नही, शाश्वत सत्य है। भारत का प्रधानमत्री कवि कालिदास होता है।

कविता नहीं, नीति

भारत के शासकीय पद पर कवियो का स्थान नही, नीतिकुशल इतिहासवेत्ताओ का स्थान होना चाहिए। सन् १९४७ से २००१ तक के इतिहास का अध्ययन करना कठिन काम नही है। इस अवधि मे पाकिस्तान चार बार भारत पर सशस्त्र आक्रमण कर चुका है। अघोषित युद्ध एक दिन को भी बन्द नही हुआ। अभी कारगिल मे जो हुआ, उसके शहीदो की चिताओ की तो राख भी ठडी नही हुई। हम इतनी जल्दी कैसे भूल जाते है?

कहानी की सीख

एक बार एक शेर किसी भैंसे को मारने हुए बुरी तरह घायल हो गया। भैंसे ने सींग मार कर उसका पेट फाड दिया और खुद भाग गया। घायल शेर कुछ दिन तक शिकार नहीं कर सका और भूख से तडपने लगा। एक गीदड पास से गुजरा, तो शेर ने कहा 'मित्र, मै शिकार करता था और मुझसे बचा खुचा खा कर तुम्हारा काम चल जाता था। अब मै तो चल फिर नही सकता। किसी जानवर को बहला फुसला कर मेरे पास ले आओ, तो मै उसे मार डालूगा। उससे हम दोनो का पेट भर जायेगा।'

गीदड राजी हो गया। वह एक गधे के पास पहुचा। गधा हरी हरी घास खा कर मुटिया रहा था। गीदड ने कहा 'गधे मामा, तुम खूब स्वस्थ, सुन्दर हो। शादी क्यो नही कर लेते?'

'कोई सुपात्री मिलती ही नहीं,' गधे ने कहा।

'सुपात्री मेरी निगाह मे है। बहुत ही सुन्दर और गुणवती! मै तो कहता हू, अभी चलो। **शुभस्य शीघ्रम्** (शुभ काम मे देर न करे)।'

चतुर गीदड ने मीठी बातो से गधे को ऐसा लुभाया कि वह तुरन्त गीदड के साथ चल पडा। जब वह छिप कर बैठे शेर के पास पहुचा, तो घायल शेर ने उस पर वार किया, पर वार ओछा पडा। गधा घायल तक हुए बिना साफ भाग निकला।

गीदड ने शेर को बहुत धिक्कारा 'मै तो एक ऐसे जानवर को बहला कर लाया, जिसके न सीग थे, न लम्बे नाखून। और तुमसे वह भी न मारा गया। अब मरो भूखे।'

लज्जित शेर ने अपनी कमी स्वीकार की और कहा 'मै कमजोर हो गया हू, इसलिए चूक गया। एक बार और कोशिश करो। अब की नहीं चूकूगा।'

गीदड ने कहा 'मै एक बार फिर उसी को लाता हूं। अबकी चूके, तो मुझसे बुरा कोई न होगा।'

'वह फिर कैसे आयेगा? वह मुझे देख गया है। किसी और को लाओ', शेर बोला।

'वही आयेगा। वह भारतीय है। और कोई नहीं आयेगा।'

इतना कह कर गीदड फिर उसी गधे के पास पहुचा और लज्जित होने के बजाय गधे को धिक्कारते हुए बोला 'वाह दूल्हे मामा, तुम ऐसे डर कर भाग क्यो आये?'

गधे ने डाटते हुए कहा 'तुमने मुझे कहा ले जा फसाया था? वह काल के समान क्रूर कौन जानवर मुझ पर झपटा था?'

गीदड बोला; 'कोई नहीं झपटा था। वह तो तुम्हारी होने वाली पत्नी थी, जो सोलह शृगार किये तुम्हारे गले मे वरमाला डालने आई थी। तुम भाग आये, इसलिए वह बिलख बिलख कर रो रही है।'

'वह सोलह शृगार किये रासभकुमारी थी? मुझे तो वह शेर जैसी लगी।'

'प्रेमियो की दृष्टि ऐसी ही होती है। चलो, जल्दी चलो। उसने मुझे बहुत आग्रह करके तुम्हे बुलाने भेजा है।'

पंचतत्र मे यह कहानी बहुत लम्बी है। सक्षेप मे, गीदड के बहकावे मे आ कर मुटियाया हुआ गधा दुबारा शेर के पास आ गया। शेर ने उसे मार डाला।

'मै जरा नहा आऊ। तब तक तुम इस शिकार की रखवाली करना। कोई इसे छूने न पाये', यह कह कर शेर नहाने चला गया।

चतुर गीदड ने इस बीच गधे का दिमाग और दिल निकाल कर खा डाला। जब शेर ने लौट कर देखा, तो क्रुद्ध हो कर पूछा 'इसका दिमाग और दिल किसने खाया', तो गीदड ने ढिठाई से कहा 'इसमे दिमाग और दिल था ही नहीं। होता, तो अपनी आखो से एक बार आपको देख जाने के बाद दूसरी बार यहा क्यो आता?'

हम अपनी आखो से श्री मुशर्रफ को कारगिल मे देख आने के बाद दुबारा उनके पास पहुच रहे है।

आगरा शिखर सम्मेलन मे कवित्व और वक्तृत्व की उतनी आवश्यकता नही है, जितनी कि अखिल विश्व इस्लामी आन्दोलन के उद्देश्यो, और उसके साधनो एव संगठन की जानकारी की आवश्यकता है। ससार के अनेक देशो मे मुसलमान आतकवादी जिहाद चला रहे है, उसे समझने की आवश्यकता है।

पाकिस्तान की जनता भी धर्मान्ध है

एक यह मिथ्या प्रचार बन्द होना चाहिए कि पाकिस्तान के लोग तो भारत के साथ मिल जुल कर रहना चाहते है, पर वहा की सरकारे अपने स्वार्थ के कारण भारत से शत्रुता ठाने रखना चाहती है। पाकिस्तान मे तीन ही पक्ष है पाकिस्तान पीपल्स पार्टी, पाकिस्तान मुस्लिम लीग और सेना। इन तीनो के ही शासन कालो में पाकिस्तान की भारत विरोधी नीतिया एक दूसरे से बढ कर रहीं। इन तीनो से भिन्न वे कौन से 'पाकिस्तानी लोग' है, जो भारत से मिलजुल कर रहना चाहते है? यदि ऐसे कोई लोग हो भी, तो वे आटे मे नमक से अधिक नहीं हैं। उनका कोई महत्व नही है।

पाकिस्तान को लड कर दुर्बल करें

हमारी नीति स्पष्ट रूप से जन्मजात, घोषित शत्रु पाकिस्तान को दुर्बल करने की होनी चाहिए। आगरा शिखर वार्ता का विचारणीय विषय केवल एक होना चाहिए पाक अधिकृत कश्मीर समझौते मे वापस मिलेगा या युद्ध से।

पाइप लाइन का कोई भी ऐसा समझौता नहीं होना चाहिए, जिसमे हमे पाकिस्तान को एक भी नया पैसा देना पडे।

हमारी समृद्धि के साधन अपने देश मे जुटने चाहिए, न कि ईरान से मगाये जाये। अपने देश मे पनबिजली योजनाओ का विरोध करके ईरान से गैस मगाना समझदारी नही है। सन् १९६५ के युद्ध मे ईरान ने पाकिस्तानी वायुसेना को शरण दी थी।

पैट्रोल और गैस का विकल्प ढूढ कर ही विश्व से आतकवाद को समाप्त किया जा सकता है, क्योकि इन्हीं की बिक्री का धन ही आतकवाद को पनपा रहा है।

टी-८, ग्रीन पार्क ऐक्सटैशन, नई दिल्ली

गंगाजल चढ़ाने वाले कांवड़िये

साल मे दो बार कावडिये गगा जल ले जा कर अपने इष्ट मन्दिरो मे चढाते है। श्रावण कृष्ण चतुर्दशी को और उधर शिवरात्रि पर यह जल चढाया जाता है। कुछ उत्साही लोग गगोत्री या वहा से भी आगे गोमुख से गगा का जल लाते है, सारा रास्ता पैदल चलते है। उसे रामेश्वरम् मे जा कर चढाते है। तपस्या का काम है, आनन्ददायक भी है।

किसान लोग फसल बोकर इन दिनो खाली होते हैं। इसलिए सावन की फुहारो मे यात्रा करना आसान होता है।

भेड चाल से कावडियो के दल बहुत बडे हो गये है। दिल्ली-हरिद्वार मार्ग पर सवारियो का चलना असम्भव हो जाता है। पहले रास्ते पर दानी लोग कावडियो की सुविधा के लिए भोजन, पानी, और विश्राम की सुविधा जुटाते थे, अब कावडिये उन सुविधाओ को पाना अपना अधिकार मानने लगे है और न मिलने पर उत्पात भी करते है।

गगा जल ला कर मन्दिर में चढाने मे कोई पुण्य या धर्म नहीं है। तीर्थ यात्रा और तपस्या से मिलने वाला सन्तोष अवश्य है। परन्तु उसके लिए व्यक्ति को अपने धन और सामर्थ्य पर निर्भर रहना चाहिए, न कि औरो की भिक्षा पर। भिक्षा चाहे, तो भिक्षुक की तरह रहे।

अन्धविश्वासो से छुटकारा पाना चाहिए। इन जमघटो का उपयोग प्रचार कार्य के लिए किया जा सके तो भला हो।

समाचार जगत्

चरित्र उत्थान शिविर
डी० ए० वी० सी० सै० स्कूल, अमृतसर
दिनाक ४ जून २००१ मे ९ जून २००१

इस शिविर मे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल पटियाला के ६ विद्यार्थियो और एक अध्यापक ने भाग लिया। उनके नाम– १ वरुण जिन्दल नौवीं २ सुनित बावा नौवीं ३ पाहुल शर्मा ४ योगेश बासल ८वीं ५ गगनेचर ८वीं ६ विकास गुप्ता ८वी और अध्यापक श्री बिजेन्द्र शास्त्री।

यह शिविर बच्चो मे भारतीय सस्कृति के प्रति श्रद्धा एव विश्वास पैदा करने तथा उनमे चारित्रिक गुणो का विकास करने मे काफी सफल रहा। समय-समय पर शिविरार्थियो को अनेक विद्वानों ने सम्बोधित किया। दिनाक ४ जून को उद्घाटन श्री आर० ऐम० शर्मा उपप्रधान डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली ने किया। समारोह को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि सुविचारो और सुकर्मो से ही व्यक्ति के चरित्र का विकास होता है। उन्होने बच्चो को महर्षि दयानन्द की शिक्षाओ को अपने जीवन मे अपनाने के लिए प्रेरित किया। ६ जून को मुख्यातिथि श्री ऐम० ऐल० शेखरी, सलाहकार डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली तथा श्री विजयकुमार शास्त्री, उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने बच्चो को सम्बोधित किया। ७ जून को श्री राजपाल, परामर्शदाता आर्य विद्यासभा डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली तथा श्री ओमप्रकाश जी आर्य ने बच्चो को सम्बोधित किया। इसके अतिरिक्त प्रि० श्री ऐम० ऐल० ऐरी, प्रि० जे० पी० शूर, प्रो० श्री कुलदीप आर्य, डा० विनयकुमार आर्य तथा अन्य कई विद्वानो ने शिविरार्थियो को सम्बोधित किया।

दिनाक ९ जून को शिविर के समापन समारोह के मुख्यातिथि श्री आर० पी० बासल, उपप्रधान डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली तथा प्रि० डी० आर० गुप्ता, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब ने यज्ञ मे यजमान के रूप मे भाग लिया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री डी० आर० गुप्ता ने आर्य समाज और डी० ए० वी० सस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर अपन विचार रखे तथा बच्चो को महर्षि दयानन्द और महात्मा हसराज के जीवन आदर्शो पर चलने के लिए प्रेरित किया। श्री आर० पी० बसल और डा० रामप्रसाद आर्य भूतपूर्व मत्री, हरियाणा सरकार ने भी समारोह को सम्बोधित किया।

इस शिविर मे विभिन्न डी० ए० वी० सस्थाओ के १७५ विद्यार्थियो ने भाग लिया। यह शिविर वास्तव मे एक बहुत ही महत्वपूर्ण शिविर था। इसमे बच्चो के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान दिया गया। शिविरार्थियो की दिनचर्या एक आदर्श दिनचर्या थी। प्रात ५ बजे उठकर वैदिक मत्रो से प्रार्थना की जाती थी। शौच स्नानादि से निवृत्त होकर योगाभ्यास किया जाता था। तदुपरान्त सन्ध्या हवन होता था। प्रातराश के बाद वैदिक व आध्यात्मिक प्रवचनमाला प्रारम्भ होती थी। इस प्रकार बच्चे प्रात ५ बजे से रात १० बजे तक व्यस्त रहते थे।

प्रि० जे० पी० शूर, जो इस शिविर के सयोजक भी थे और सचालक भी, बहुत ही कठोर परिश्रमी, विनम्र और धार्मिक व्यक्ति है। वह शिविर मे बच्चो के साथ सुबह ५ बजे से रात १० बजे तक अतिव्यस्त रहते थे।

इस शिविर मे बच्चो ने भारतीय सास्कृतिक विचारधारा, आर्य समाज की मान्यताओ और सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध जागृति तथा अच्छे सस्कार प्राप्त किये, जो उनको एक आदर्श नागरिक बनाने मे सहायक होगे।

झुग्गियों में आर्य समाज व शिक्षा का प्रसार

पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा जी के नेतृत्व मे आर्य युवक समाज के प्रधान आचार्य दिनेश, मत्री यशवीर आर्य तथा उनके सदस्य अनूप शर्मा, ओमपाल, जितेन्द्र, सुनील, सजीव तथा आर्य युवक समाज के कर्मठ सदस्य दिनाक २७६ २००१ से सदर लोकसभा क्षेत्र, तिमारपुर मे लगभग १०,००० झुग्गियो के बच्चो को नि शुल्क शिक्षा दे रहे है तथा सभी बच्चो मे आर्यसमाज के सस्कार डाल रहे है और उनके माता पितागण को शराब पीना, जूआ खेलना आदि बुराइयो को छुडाने का कार्य आर्य युवक समाज के प्रधान आचार्य दिनेश जी कर रहे है। साथ ही झुग्गियो की सफाई तथा रहने वाले व्यक्तियो को स्वास्थ्य सेवा भी उपलब्ध कराई जा रही है।

आर्य युवक समाज के प्रधान का मानना है कि दिल्ली की झुग्गियो के १०,००० बच्चो को सन् २००२ तक शिक्षित एव वैदिक सस्कारो से सस्कारित कर दिया जायगा।

वैदिक दम्पति निर्माण सस्कार प्रशिक्षण शिविर

स्थानीय आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ मे २४ जून रविवार साय ४ बजे यजुर्वेद पारायण यज्ञ, ध्यान योग शिविर, वैदिक दम्पति निर्माण सस्कार प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन स्वामी श्री इन्द्रवेश जी पूर्व सासद, कार्यकर्ता प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ।

शिविर मे दिल्ली, हरियाणा, पजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि प्रान्तो से पधार कर ७२ साधक साधिकाओ ने शिविर मे भाग लिया।

निर्वाचन

आर्य समाज अशोक नगर, नई दिल्ली
प्रधान—श्री जसवत राय ढीगरा
मत्री— श्री मगतराम जी आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्रकुमार वधवा

आर्य समाज, १९ विधान सरणी, कोलकाता
प्रधान—श्री विश्वनाथ जी पोद्दार
मत्री— श्री राजेन्द्रप्रसाद जायसवाल
कोषाध्यक्ष—श्री अच्छेलाल सेठ

आर्य समाज हासी
प्रधान—श्री देवदत्त
मत्री—श्री सतीशकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री पवनकुमार सैनी

आर्य समाज मयूर विहार फेज-२
प्रधान—श्री चरनजीत लाल मोहन जी
मत्री—श्री हरवशलाल जी
कोषाध्य—श्री रामदेव चोपडा

महिला आर्य समाज
प्रधाना—श्रीमती सन्तोष भारती
मत्रिणी—श्रीमती कमला मोहन
कोषाध्यक्ष—श्रीमती निर्मलराज

आर्य समाज रामनगर (महाराष्ट्र)
प्रधान—श्री एस० आर० मोरे
मत्री—श्री ज्ञानकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री दिलीप कधारे

आर्य समाज वीर सावरकर नगर (जयपुर हाउस) आगरा
प्रधान—श्री मुरलीधर डैम्बला
मत्री—श्री कुलदीपकृष्ण महाजन
कोषाध्यक्ष—श्री देसराज वर्मा

आर्य समाज सैक्टर ४, गुरुग्राम
प्रधान—श्री रामदास सेवक
मत्री—श्री ओमप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष— श्री नरवीरलाल चौधरी

आर्य समाज, चित्रगुप्त गज, लश्कर (ग्वालियर)
प्रधान श्री मनीराम गुप्ता
मत्री प्रकाशचन्द्र अग्रवाल
कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र गुप्ता

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, ज्योतिबा फुले नगर
प्रधान . श्री देवेन्द्र कुमार आर्य
मत्री · श्री अशोक कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष प हरिराम शर्मा

आर्य समाज सगरूर, (पजाब)
प्रधान श्री वेदपाल टुटेजा
मत्री श्री रामशरण आर्य
कोषाध्यक्ष श्री शिवराम महाजन

आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०)
प्रधान—डा० सोमदेव शास्त्री
मत्री—श्री यशप्रिय आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल

आर्य युवक समाज के कार्यकर्ता हर की पैडी पर।

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R No D L 11082/2001
POSTED AT N D.P O ON 18/19-7-2001 दिनाक २२-७-२००१

आर्य युवक समाज के कार्यकर्ता चरित्र निर्माण शिविर मे।

श्रावणी महोत्सव धूमधाम से मनायें

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली समस्त आर्य समाजो, गुरुकुलो, दयानन्द ऐंग्लो वैदिक शिक्षण सस्थाओ, स्कूलो/कालेजो तथा आर्य सभाओ/सस्थाओ के अधिकारियो एव कार्यकर्ताओ को यह स्मरण कराना अपना कर्तव्य समझती है कि श्रावणी महोत्सव वैदिक सस्कृति का एक महत्वपूर्ण उत्सव है, जिसके अन्तर्गत श्रावणी मास मे वेद प्रचार, आर्य सन्यासियो और विद्वानो को आमत्रित करके सार्वजनिक स्थानो एव आर्य समाजो मे कराया जाता है।

आर्यसमाज का आधार वेद है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के तीसरे नियम मे निश्चित किया है कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना, सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।" इसी श्रावणी मास में वेद प्रचार, परोपकार के साथ-साथ श्रावण पूर्णिमा, रक्षा बन्धन, सस्कृत दिवस और हैदराबाद सत्याग्रह विजय दिवस आते है, जिनका आयोजन हर्षोल्लास और धूमधाम से आर्यजनो को करना कर्तव्य है। बृहद् यज्ञ, यज्ञोपवीत परिवर्तन, वेदो का स्वाध्याय एव वेद प्रवचन कराये जाय। बच्चो के कार्यक्रमो, प्रतियोगिताओ, मत्रोच्चारण, वैदिक चेतना दिवस मना कर वैदिक सस्कारो का प्रचार-प्रसार करे।

इस सम्बन्ध मे यदि भजनोपदेशक/वैदिक विद्वानो की आवश्यकता हो, तो सभा कार्यालय मे सम्पर्क करके लाभ उठाये।

ज्ञानप्रकाश चोपडा
प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज कलकत्ता का वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज कलकत्ता की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन दिनाक २४ जून २००१ को प्रात १० ३० बजे से आर्य समाज मन्दिर १९ विधान सरणी कलकत्ता-६ में प्रधान श्री विश्वनाथ पोद्दार की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, जिसमे आर्य समाज कलकत्ता तथा सम्बन्धित विभागो, आर्य महिला शिक्षा मडल ट्रस्ट, आर्य कन्या महाविद्यालय, महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय, रघुमल आर्य विद्यालय, आर्य स्त्री समाज कलकत्ता, आर्य युवक सभा और आर्य विद्यालय ट्रस्ट के विवरण आर्य समाज कलकत्ता के मत्री श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल एव सम्बन्धित विभागो के मत्रियो एव विभागाध्यो ने पढ कर सुनाया। वर्ष २०००-०१ का हिसाब तथा आडिट रिपोर्ट एव वर्ष २००१-०२ का आनुमानिक आय-व्यय का बजट पास किया गया।

फलित ज्योति पढ़ाने का विरोध

हाल ही मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भारत के विश्वविद्यालयो मे फलित ज्योतिष पढाने का जो निर्णय लिया है, वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। इसके पढाने मे पाखड और अन्धविश्वास का और अधिक प्रसार होगा, जो देश की प्रगति मे बाधक व घातक सिद्ध हो सकता है।

फलित ज्योतिष न कोई शास्त्र है तथा इसका न कोई आधार है। केवल अनुमान पर आधारित इस विषय को पढा कर अनुदान आयोग देश को किस ओर ले जाना चाहता है? फलित ज्योतिष तर्क और सत्य की कसौटी पर कभी भी खरा नही उतरता। दैववाद, अन्धश्रद्धा और पाखड को बढावा देने वाला यह विषय राजमान्यता से पढाने का अर्थ है ढोंगी, पाखडी, तात्रिको और मात्रिको द्वारा भोली-भाली, अन्धश्रद्ध जनता को लूटने का मौका देना। फलित पर विश्वास करने के अनेक दुष्परिणाम हमारे देखने मे आते है।

इन सब कारणो से आर्यसमाज शुरू मे ही फलित ज्योतिष का विरोध करता आया है। आर्यसमाज रामनगर, औसारोड, लातूर (महाराष्ट्र) ने अपनी १७ जून २००१ की कार्यकारिणी की बैठक मे उपरोक्त निर्णय का घोर विरोध किया है और माग की है कि यदि सही अर्थ मे देश को २१वी सदी मे ले जाना है तो इस निर्णय को तुरन्त रद्द करा दे। साथ ही महाराष्ट्र सरकार ने अपने राज्य के विद्यापीठो मे इस विषय को न पढाने का निर्णय लिया है। इसलिए आर्यसमाज रामनगर की ओर से महाराष्ट्र शासन का अभिनन्दन भी किया गया है। इस विषय के पत्र सब सबधितो को भेज दिए गए है।

प्रवेश प्रारम्भ है

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी
आर्ष पाठ विधि केन्द्र

शिशु कक्षा से आचार्य, पी एच डी तक। अष्टाध्यायी, वेद, सस्कृत, हिन्दी, गणित, विज्ञान, सगीत आदि। वात्सल्य प्रधान स्वावलम्बन शिक्षा। निर्धन छात्रवृत्तिया।

सम्पर्क सूत्र . आचार्या, डी ४५/१२९, नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी (उ० प्र०)

श्री सावन्त की पुत्री का विवाह

आर्य जगत् के लोकप्रिय लेखक ब्रिगेडियर श्री चितरजन सावन्त की पुत्री आयुष्मती ऋचा का शुभ विवाह आयुष्मान् सुधाशु भूषण के साथ वैदिक विधि से समुदाय भवन, अरुण विहार, नोएडा मे १ जुलाई २००१ को सम्पन्न हुआ। नवदम्पति के लिए मगल कामनाए।

१८५७ के शहीदों की याद में हवन

आर्य समाज श्रद्धापुरी की ओर से १८५७ स्वतत्रता सग्राम के शहीदो की याद मे तीस हजारी न्यायालय मे हवन यज्ञ द्वारा उन्हे श्रद्धाजलि दी गई। यहा पर मगल पाडे, तात्या टोपे, रानी झासी इत्यादि तीस हजार सैनिको ने देश की स्वतत्रता के लिए अपने आपको बलिदान किया। इसी बलिदान स्थल को आज तीस हजारी न्यायालय के नाम से पहचाना जाता है। खेद की बात है कि जनसाधारण को इस नाम के बारे मे कोई जानकारी नही है क्योंकि वहा पर कोई सूचनापट्ट नही है। यदि प्रशासन वहा पर कोई नामपट्ट लगा देता है, तो इससे प्रत्येक आने वाले व्यक्ति को उन तीस हजार सैनिको के बारे मे जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

आर्य समाज श्रद्धापुरी की ओर से पिछले कई वर्षो से न्यायालय के प्रागण मे हवन यज्ञ द्वारा शहीदो को श्रद्धाजलि भेट की जाती है।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी विदेश यात्रा पर

श्री ज्ञानेश्वर जी आर्य आगामी अगस्त मास मे प्रचार यात्रा पर इग्लैड जा रहे है। आचार्य जी की इस विदेश यात्रा से सम्बन्धित समस्त आयोजन, प्रबन्ध आदि का कार्यभार इग्लैड स्थित श्री शामजीभाई वेलाणी, श्री नागजीभाई वेलाणी, श्री दीपक जी वेलाणी, श्री विमल जी वेलाणी (यू एम ए) तथा इनके पारिवारिक सदस्यो द्वारा वहन किया जायेगा।

ब्रह्मवती आर्या नहीं रही

'स्वर्गीया ब्रह्मवती आर्या आर्यसमाज की एक निष्ठावान कार्यकर्त्री थी। वह स्त्री आर्य समाज की प्रधान, मत्राणी व अन्य महत्वपूर्ण रूपो मे महर्षि दयानन्द के मतव्यो व वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे आजीवन सलग्न रही' ये उद्‌गार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डा० जयनारायण 'अरुण' ने स्व० ब्रह्मवती को हार्दिक श्रद्धाजलि देते हुए व्यक्त किये।

आर्य समाज अमरोहा की वरिष्ठ कार्यकर्त्री श्रीमती ब्रह्मवती (६८ वर्ष) का असामयिक निधन लम्बी बीमारी के बाद २५ जून को नई दिल्ली मे हो गया। स्वर्गीया ब्रह्मवती आर्य समाज के प्रमुख स्तम्भ वीरेन्द्रकुमार आर्य की भाभी थी। वह कुशल सगठक थी। उनका जीवन यज्ञमय था।

शोकसभा मे श्री हरिश्चन्द्र आर्य, आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री, श्री सुरेन्द्रनाथ मित्तल आदि ने उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

मन्दिर में मूर्ति के लिए स्वर्ण मुकुट

समाचार है कि दक्षिण भारत मे एक मन्दिर मे प्रतिमा को सजाने के लिए एक भक्त ने हीरो से जडा एक स्वर्ण मुकुट भेट किया है। इसका मूल्य ९० लाख रुपये है।

इस मुकुट से प्रतिमा का क्या हित होगा?

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रबोध महाजन, सभा मत्री द्वारा राकेश भार्गव के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199 63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 मे प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718 3362110) सम्पादक—उदयवीर 'विराज'

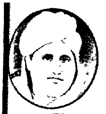

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वयं श्रेष्ठ वनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशो मे ३० पौं० या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक २३
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, ५ अगस्त, २००१
भाद्रपद कृ०-१-वि० स०-२०५८
सप्ताह ५ अगस्त से ११ अगस्त

स्वाध्याय और प्रवचनों का पर्व—श्रावणी

फाल्गुन और चैत्र वसन्त ऋतु के मास है, वैशाख और ज्येष्ठ ग्रीष्म ऋतु के मास है, आषाढ और श्रावण वर्षा ऋतु के माम है। वेद मे इन्हे क्रमश मधु और माधव, तप और तपस्य, नभ और नभस्य नाम दिया गया है।

फूलो का मौसम वसन्त

वसन्त ऋतु मे फूल खिलते है। शिशिर मे पतझर हो कर पेड पौधो की डाले नगी हो जाती है। वसन्त मे उन नगी, सूखी सी डालो पर फूल खिलते है, देखने मे सुन्दर और सूघने मे सुगन्धित। आम्र वन, शाल वन, मधूक (महुआ) वन फूलो से लद जाते है और हवा मे मादक गन्ध भर जाती है। फूलो मे न केवल मधु होता है, अपितु कुछ उन्मादक तत्व भी होता है, इसीलिए न केवल पशु पक्षी, अपितु नर नारी भी प्रणयातुर हो उठते है। यह सृजन की भूमिका है।

ग्रीष्म मे फल लगते है

वसन्त के पश्चात् ग्रीष्म आता है। फूल फलो का आकार ले लेते है। उन नन्हे फलो की रक्षा के लिए डालो मे नवपल्लव फूटते है, नरम, चिकने, चमकीले और नाजुक, जैसे नवजात शिशु की रक्षा के लिए तरुणी जननी की सुकुमार अगलिया हो। वैशाख मे फल बढते है और ज्येष्ठ के उत्ताप मे वे पकते है। आम, आड़ू, सेव, अलूचो और नाशपातियो से डाले झुक जाती है।

झुलसाने वाली धूप और तपती लूओ के बाद आता है आषाढ— वर्षा का पहला महीना। महासागरो से जो विशाल वाष्पपुज उठते है, वे आकाश मे ऊचाई पर ठडे हो कर बादलो का रूप लेते है। पूर्वी पवन भेडो को हाकने वाले कुत्ते की तरह उन्हें पश्चिम-उत्तर की ओर दौडाता है और भारत भूमि मेघाच्छादित हो जाती है। गज समूह की भाति वे मेघ गरजते है, बिजलिया कौधती है और आकाश से झमाझम वर्षा होने लगती है। जब पहली बूदे पडती है, तब भूमि मे से एक विशेष गन्ध उठती है, जो सभी चराचरो को बहुत प्यारी लगती है।

☐ प्रो० जयपाल विद्यालकार

शिशिर से वसन्त मे, वसन्त से ग्रीष्म मे ऋतुओ का सक्रमण शनै शनै होता है, परन्तु ग्रीष्म से वर्षा मे ऋतु सक्रमण एक दिन मे होता है। जिस दिन वर्षा हो गई, उसी दिन वर्षा का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। पोखर पानी से भर जाते है और उनमे मेढक टर्राने लगते है। झिल्ली झकार से वन भूमि गूजने लगती है और मखमली वीरबहूटियो से धरती लाल हो उठती है। नदी नाले उमड कर बहने लगते है। रातो रात करोडो अरबो बीज अकुरित हो उठते है। प्यासी धरती पानी पी कर तृप्ति का सास लेती है।

आषाढ मे फल पकते है

आषाढ मे फल पकते और टपकते है। कृषिजीवी लोग हल चला कर मावनी फसल धान, ज्वार, बाजारा, मक्का बो देते है और उसके बढने की प्रतीक्षा करते है।

तब आता है श्रावण मास। इसका रूप निराला ही होता है। आकाश बादलो से घिरा रहता है। झडी लगती है, तो कई कई दिन तक रुकने का नाम नही लेती। तीन तीन दिन तक सूर्य के दर्शन नही होते। घर से बाहर निकलना कठिन। रास्ते टूट फूट जाते है। पैदल यात्रा करना भी कठिन हो जाता है, फिर गाडी का तो कहना ही क्या। घर मे बैठे बैठे क्या करे?

स्वाध्याय और प्रवचन

इसका उपाय निकाला गया **'स्वाध्याय प्रवचने च'**— अध्ययन करो और प्रवचन करो, अर्थात् पढो और पढाओ।

वेद का अर्थ है ज्ञान—सब सत्य विद्याओ का ज्ञान। इसे धर्म ग्रथो का ज्ञान ब्राह्मणो, पडो, पुरोहितो ने बना दिया। गणित का ज्ञान, ज्योतिष का ज्ञान, वैद्यक का ज्ञान, भूगोल, इतिहास, राजनीति, अर्थ शास्त्र, कृषि विज्ञान, युद्ध विद्या, शस्त्र निर्माण, आदि ज्ञान के सभी अग-उपाग वेद हैं। वह ज्ञान (वेद) धर्म का मूल है। **(वेदोऽखिलो धर्ममूलम्)**। उस ज्ञान के बिना मुक्ति नही मिलती (**ऋते ज्ञानान्न मुक्ति**)। मुक्ति भय से, कष्ट से, अभाव से, रोगो मे, धूर्तो के छल कपट से। मृत्यु के बाद होने वाली मुक्ति बाद की अवैदिक कल्पना है। यह बौद्धो के निर्वाण की नकल है।

उसी ज्ञान चर्चा को श्रावण से शुरू होने वाले चार मासो का कार्यक्रम बनाया गया। मनीषी, चिन्तक, विचारक पढते, सोचते (स्वाध्याय) ओर अन्य जिज्ञासुओ को सुनाते।

ऋषि और जिज्ञासु

ऋषि और जिज्ञासु का सम्बन्ध मा और शिशु का सा है। शिशु दूध पीने के लिए जितना बेचैन होता है, मा भी दूध पिलाने को उतनी ही बेचैन होती है। शिशु को दूध पी कर जितनी तृप्ति मिलती है, दूध पिला कर मा को उससे अधिक तृप्ति मिलती है। ऋषि या कवि को अच्छे श्रोता मिल जाये, तो उसके आनन्द की सीमा नही रहती।

तो श्रावण के महीने मे, जब आकाश मे काली घटाए घिरी होती थी, छप्परो पर, पेडो पर कभी तेज और कभी हल्की वर्षा हो रही होती थी, तब यज्ञशालाओ मे, चौपालो मे लोग एकत्र होते थे। कडाही मे पूडे तले जाते थे और दलिया (यवागू) बनाया जाता था। खा पी कर लोग कविताए गाते थे, पुराने उपाख्यान सुनते थे और ज्ञान विज्ञान की रोचक चर्चाए करते थे, आपबीतिया सुनाते थे, कृषि के, स्वास्थ्य के नये उपाय बताते थे। जो भी कोई समस्याए लोगो के सामने उपस्थित हो, उनके समाधान सुझाते थे।

रोचक ज्ञान चर्चा

ये बेहद रोचक सम्मिलन होते थे। हर कोई इनमे आग्रहपूर्वक सम्मिलित होना चाहता था और वहा से उठना ही नही चाहता था। उपयोगी ज्ञान को हर कोई सहेज लेना चाहता था। लोग अपने बेटे-बेटियो को भी साथ लाते थे किवे भी विद्या सीखने मे रुचि ले। इसी को उपनयन या वेदारम्भ कहा जाता था।

धर्म ग्रथ नही, ज्ञान ग्रथ

श्रावणी उपाकर्म का यही मूल और हितकारी रूप था। कालान्तर मे पडे-पुरोहितो के हाथ मे पड कर वह रूढिग्रस्त हो गया। स्वाध्याय और प्रवचन का अर्थ धार्मिक ग्रथो का अध्ययन और प्रवचन बना दिया गया। मूल मे केवल वेद अर्थात् सत्य ज्ञान के अर्जन और अध्यापन की बात थी।

जब बात केवल धार्मिक स्वाध्याय और प्रवचन तक सीमित हो गई, तब ऋषियो (मनीषियो और चिन्तको) का स्थान पेशेवर उपदेशको ने ले लिया। ऋषि केवल धर्म का ज्ञाता नही होता, हर विद्या को जानना, गहराई से जानना उसका धर्म होता है। ऋषि की बुद्धि अकुठित होती है, उसका मस्तिष्क उदार और दृष्टि सूक्ष्म होती है। सकीर्णता और क्षुद्रता उससे कोसो दूर रहती है। उसका तेज अद्भुत होता है।

ऋषि गुरु है

ऐसे ऋषि जिज्ञासु बालको को विद्यार्जन के लिए अपना शिष्य बनाते थे। इसे उपनयन सस्कार कहते थे— शिष्य का गुरु के पास ले जाया जाना और गुरु का उसे अपने पास रखना। यह प्रथा बन गई कि शिष्यो का उपनयन श्रावणी पर्व पर हो।

श्रावणी पर्व श्रावण मास की पूर्णमासी को होता था। पूरा चन्द्रमा आकाश मे हो और आकाश घने बादलो से घिरा हो। कभी बादल छटते हो, कभी फिर घिर आते हो। ज्ञान-अज्ञान के सघर्ष का इससे और अच्छा रूपक क्या होगा?

ज्ञान मेला

श्रावणी पर्व एक प्रकार का ज्ञान मेला था, जहा से ज्ञान की गगा फूटती थी। पहले यह ज्ञान गगा सभी लोगो की प्यास बुझाती थी। बाद मे नदी तट पर अपने अपने घाट बना कर कुछ सशक्त, समर्थ लोगो ने कुछ पिछडे दुर्बल लोगो के लिए ज्ञान तक पहुचने का मार्ग रोक दिया।

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित लेखो में व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

वेद-सुधा

मेरे संकल्प बल के आगे चारों दिशाएं झुक जायें

❑ आचार्य अभयदेव विद्यालकार

अवधीत् कामो मम ये सपत्ना उरु लोकमकरन्मह्यमेधतुम्।

मह्य नमन्ता प्रदिशश्चतस्त्रो मह्य षडुर्वीर्घृतमावहन्तु। *अथर्व० ९ २ ११*

अर्थ— (**काम**) मेरे सकल्प बल ने (**मम ये सपत्ना.**) मेरे जो प्रतिद्वन्द्वी बाधक है, उन्हे (**अवधीत्**) नष्ट कर दिया है, (**मह्य**) मेरे लिए (**उरुलोक**) विस्तृत खुला हुआ लोक (**अकरत्**) कर दिया है, (**एधतु अकरत्**) मेरे लिए वृद्धि व विस्तार कर दिया है। अब (**मह्य**) मेरे लिए (**चतस्त्र प्रदिश·**) चारो उपदिशाए (**नमन्ता**) झुक जाये और (**षट् उर्वी·**) छहो विस्तृत दिशाये (**मह्य**) मेरे लिए (**घृत**) क्षरित हुए इष्ट फल को (**आवहन्तु**) ले आये।

मनन—मेरा सकल्प बल जाग गया है। मनुष्य के सकल्प मे बडा बल छिपा हुआ है। भगवान् जिस अपने 'काम' मे—ईशण-शक्ति मे सब जगत् को उत्पन्न करते और चलाते है, वह ससार की असीम शक्ति मनुष्य के सकल्प मे आयी हुई है, यह बात अब मुझे अपनी सकल्पशक्ति के जागने पर अनुभव हो रही है। मेरे जागे हुए सकल्प बल ने, उस काम ने, सबसे पहिले मेरी बाधाओ को, रुकावटो को हटाने मे अपनी शक्ति लगाई है। मेरे सकल्प ने काम क्रोध, लाभ आदि सपत्नो को, रिपुओ को मार गिराया है। इच्छामूलक (वासनामूलक) काम क्रोधादि दुर्भाव ही मेरे एकमात्र सपत्न थे, जो कि मेरे आत्ममूलक देवभावो के मुकाबले मे आते थे और उन्हे दबाये रखते थे। पर मेरे दृढ सकल्प ने इन्हे बडे यत्न से अब मार दिया है, बेजान कर दिया है। इन बाधाओ को हटा कर मेरे सकल्प ने मुझे एक विस्तृत निर्बाध खुले लोक मे पहुचा दिया है। मेरे लिए एक नया अमित क्षेत्र खुल गया है। मै बढ गया हू, इस विस्तृत क्षेत्र भर मे फैला हुआ मै अपने को अनुभव करता हू। अब मै जो सकल्प करता हू वह सीधा वेग मे बेरोकटोक अपने दूर से दूर स्थित लक्ष्य पर जा पहुचता है और उस पर अपना प्रभाव करने लगता है। जब मै तृष्णाओ का मारा काम क्रोधादि सपत्नो से आक्रान्त रहता था, तब मै जो कोई सकल्प किया करता था, उनका शीघ्र ही व्याघात हो जाता था। इधर एक निश्चय करता था तो उधर दूसरी तरफ का ध्यान न रहने से उधर से मुझे चोट पहुचती थी। इस तरह बडी मुश्किल मे रहता था। पर अब मेरे आत्म-सकल्प ने मुझे इनसे ऊपर उठा दिया है और मुझे एक खुले लोक मे पहुचा दिया है। अब मेरे बढते जाते हुए सकल्प बल के सामने कौन ठहर सकता है? इस विस्तृत लोक मे प्रतिष्ठित होकर मै अब जो सकल्प करूगा, उसे प्रकृति को, सब ससार को पूरा करना होगा। ये विस्तृत छहो दिशाए और चारो उपदिशाए मेरे सामने झुक जावे, इन सब दिशाओ का ससार मेरी सकल्पित वस्तु को क्षरित करने के लिए तैयार रहे। पूर्व मे, पश्चिम मे, उत्तर मे, दक्षिण मे, नीचे या ऊपर जहा भी मै अपने आत्म-सकल्प को चलाऊ, भेजू, वहा का ससार मेरे सकल्प से क्षरित हुए उस अभीष्ट फल को (घृत को) मेरे लिए उपस्थित कर देवे। ससार मे अब ऐसी कौन सी दिशा या स्थान रहा है जहा से कि मेरा महान् सकल्प आत्म-सकल्पित वस्तु को क्षरित नहीं कर सकता? ❑

सकल्प की शक्ति अपार है। यदि मनुष्य पक्का निश्चय करके जुट जाये, तो असभव को सभव कर दिखाता है। सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि किसकी भावना (सकल्प) कितनी प्रबल है। सिकन्दर, नैपोलियन, हिटलर और सुभाष ने वे काम कर दिखाये, जिनकी पहले कोई कल्पना भी नही कर सकता था। सुन कर लोग आश्चर्य से मुह बाये रह जाते थे।

यदि सकल्प प्रबल होगा, तो चारो दिशाए तो उस नर रत्न के सम्मुख झुकेगी ही, द्युलोक भी नीचे उतर कर उसके पैरो मे लोटेगा।

तीव्र इच्छा, चाहे वह कितनी ही दुष्प्राप्य क्यो न प्रतीत होती हो, पूर्ण हो कर ही रहती है। —स०

रक्षा बन्धन का पर्व

आचार्य धर्मवीर विद्यालकार

श्रावण की पूर्णिमा को रक्षा बन्धन का पर्व मनाया जाता है। इस दिन बहने अपने भाइयो के हाथो मे राखी बाधती है। राखी का अर्थ है रक्षा करने का सकल्प।

इस पर्व का प्रचलन मुसलमानी आक्रमणो के काल मे हुआ, जब अत्याचारी विजेता युवतियो का अपहरण करके ले जाते थे। कन्याए शारीरिक बल की दृष्टि से पुरुषो की अपेक्षा कमजोर होती है, अत बहन भाई से अपेक्षा रखती थी कि वह आततायियो से उसकी रक्षा करे।

बहिन की रक्षा

भाई बहन का सम्बन्ध ही ऐसा है कि कोई भी भाई अपनी बहन की रक्षा के लिए यो ही लडने मरने को तैयार हो जायेगा, फिर भी भावना को सुदृढ बनाने के लिए इसे एक औपचारिक पर्व का रूप दे दिया गया।

श्रावणी के दिन बहने तिलक करके भाई के हाथो मे राखी बाधती है। विवाहित बहने अपने मायके जा कर यह रस्म पूरी करती है या सुविधानुसार भाई बहिन के घर पहुच जाते है। आजकल रक्षा के नाम पर भाई बहन को कुछ रुपये भेट करते है। बहन भाई को मिठाई खिलाती है। आनन्द विनोद मे पर्व समाप्त होता है।

मध्यकाल मे युवती कन्याओ को रक्षा की जितनी आवश्यकता थी, आज उससे कुछ अधिक ही है। गत पचास वर्षो मे नवधनाढ्यो की सख्या बहुत बढ गई है। राजनेताओ, उद्योगपतियो और नौकरशाहो ने तरह तरह के घोटालो मे लाखो करोडो रुपये बैठे बिठाये प्राप्त किये है। उस धन के मद मे गली गली मे बिकती मदिरा का नशा और मिल जाता है। तब इन प्रभुताशाली लोगो के किशोर पुत्र जो गुण्डागर्दी करते है, उससे सर्वत्र 'त्राहि त्राहि' मची है। इतना अत्याचार नादिरशाह और अब्दाली के दिनो मे भी नही था। सडको पर, बसो मे, या अन्य सार्वजनिक स्थानो पर लडकियो का चलना बैठना मुश्किल है। जहा देखो, वही मजनू आ टपकते है। शिष्टाचार उनके बापो ने भी नही सीखा होता।

ऐसे समय आवश्यकता इस बात की है कि हर भारतीय युवक हर भारतीय कन्या केशील की रक्षा करने के लिए स्वय को उसका भाई माने। यदि किसी गुडे को किसी युवती से अभद्र व्यवहार करते देखे, तो लडने मरने को तैयार हो जाये। यदि १० प्रतिशत युवक भी इस बात के लिए कमर कस ले, तो गुडागर्दी समाप्त हो जायेगी।

गुडे मे दम नही होता। उसे केवल एक बात का भरोसा रहता है कि आम आदमी इतना कायर और असगठित है कि कोई भी व्यक्ति उनके काम मे दखल नही देगा। इसीलिए तीन चार छुरेबाज़ भरी बस मे से यात्रियो को लूट कर सकुशल बच निकलते है। रेलगाडिया लुट जाती है।

यदि पता हो कि गुडे को देखते ही सभी लोग उस पर टूट पडेगे और थाने मे न ले जा कर स्वय ही उसका न्याय कर डालेगे, तो किसी गुडे की लडकियो को छेडने की या यात्रियो को लूटने की हिम्मत नही होगी।

हमारी सस्कृति, हमारा चलन यह होना चाहिए कि गुडागर्दी को सहन नही करना है। यह बात बचपन से सिखाई जानी चाहिए, कूट कूट कर दिमाग मे, दिल मे जमा दी जानी चाहिए कि गुडागर्दी को सहन करना पूरे समाज पर विपत्ति बुलाना है।

मामूली हाथापाई से आदमी मर नही जाता। एक दो चाकू लगने से आदमी मर ही जाये, यह भी आवश्यक नही है। चोट लगने के भय को, घाव होने के भय को, हड्डी टूटने के भय को जीतना होगा। इस भय को जीत कर यदि दो चार युवक भी गुडो से उलझ पडेगे, तो हवा बदल जायेगी। यह निर्भयता और यह साहस हमे जगाना ही होगा।

जिस लडकी पर गुडे आवाजे कस रहे है, अशिष्ट आचरण कर रहे है, वह मेरी बहन नही है, इसलिए मुझे क्या लेना देना, यह सोचना ठीक नही है। आप अपनी बहन की सुरक्षा के लिए सदा उसके साथ नही रह सकते। न जाने कब किस पर क्या आपत्ति आ पडे। इसलिए हमारे नीतिकारो ने यही उपदेश दिया है कि अपनी पत्नी के सिवाय सभी नारियो को अपनी मा, बहन, बेटी समझो, उनका आदर करो, उनकी रक्षा करो। हम दूसरो को बहन बेटियो की रक्षा करेगे, तो दूसरे ही हमारी बहन-बेटियो की रक्षा के लिए उद्यत रहेगे।

दूसरे रक्षा के लिए उद्यत रहे, या न रहे, पर हमे उद्यत रहना है, क्योकि यह धर्म है, पुण्य कार्य है। इसमे हमारा कोई स्वार्थ नही है। यह बैठे बिठाये विपत्ति बुलाना है। थाने जाना पडेगा, हो सकता है अस्पताल भी जाना पडे। सकल्प तो श्मशान तक जाने का रहना चाहिए। जब हम मरने को उद्यत हो जाते है, तब हम मृत्युजय बन जाते है। शैतान केवल मृत्युजय से ही डरता है।

अपरिचित नारी भी यदि विपत्ति मे पड कर रक्षा के लिए पुकार करे, तब भाई की तरह नि स्वार्थ, निष्काम हो कर जो व्यक्ति उसकी सहायता न कर सके, वह पुरुष कहलाने योग्य नही है। इतिहास मे लिखा है कि जब गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने चित्तौड पर चढाई की, तब रानी कर्मवती ने दिल्ली के मुगल बादशाह हुमायू को राखी भेजी और सहायता मागी। हिन्दू मुस्लिम का भेदभाव भुला कर हुमायू बहादुरशाह से लडने के लिए चित्तौड पहुचा। उन दिनो मनुष्यत्व और वीरत्व आज की अपेक्षा कही अधिक था।

आज हमारी भीरुता और कायरता की सीमा नहीं है। अपनी प्रतिष्ठा और स्वाभिमान के लिए हम तनिक सा भी कष्ट सहने को, आर्थिक हानि सहने को तैयार नही हैं। कुछ ही समय पहले

(शेष पृष्ठ १० पर)

हमारे यज्ञ बुद्धिसंगत होने चाहिए

'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' (श्रेष्ठतम कर्म को यज्ञ समझना चाहिए)। यज्ञजीवी लोगो ने इसका अर्थ कर दिया यज्ञ 'श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ करो, अन्य कुछ करने की आवश्यकता नही। यज्ञ से सब आवश्यकताए, कामनाए पूरी हो जायेगी।

'वै' का प्रयोग

'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' मे ध्यान देने योग्य बाद 'वै' है। 'वै' का अर्थ है अवश्य ही, निश्चय से। इसी अर्थ मे **'हि'** और **'नून'** शब्द भी प्रयुक्त होते है। परन्तु तीनो मे अन्तर है।

शतपथ ब्राह्मण मे 'वै' का प्रयोग वहा किया गया है, जहा वह किसी शब्द का कोई नया, अप्रचलित अर्थ सुझाता है, जैसे **अश्वो वै राष्ट्रम्** (राष्ट्र को अश्व समझना चाहिए)। अश्व शब्द सामान्यतया घोडे के अर्थ मे प्रचलित है, परन्तु इस प्रसग मे अश्व का अर्थ घोडा करने से सगति नही बैठती, इसलिए अश्व का अर्थ राष्ट्र समझो। इसी तरह **यज्ञो वै विष्णु** (विष्णु का अर्थ यज्ञ समझो)। इस प्रकार के ढेरो शब्द है, जिनकी 'वै' शब्द का प्रयोग करके अर्थ सगति बिठाई गई है।

अन्धविश्वासो का युग

स्वामी दयानन्द जी के आविर्भाव के समय देश मे जो हिन्दू समाज था, और जिसे स्वामी जी 'आर्य जन' कहते थे (उन्होने लिखा कि **'इस देश मे पच्चीस करोड आर्य जन बसते है'**। उनका आशय हिन्दुओ से था, क्योकि २५ करोड आर्य समाजी या श्रेष्ठ जन। उस समय अविभक्त भारत मे नही थे।) उसकी आखो मे मोतियाबिन्द हो गया था। उसे आखो मे दीखना बन्द हो गया था, सब कुछ धुधला धुधला अस्पष्ट सा दीखता था। इसलिए जो कोई कुछ भी सुझा देता था, लोग उसी को सत्य मान लेते थे। अन्धविश्वासो का बोलबाला था।

मोतियाबिन्द का आपरेशन

ऋषि दयानन्द ने कुशल शल्य चिकित्सक की भाति हिन्दू समाज की आखो का आपरेशन कर दिया और कहा कि अब अपनी आखो से देखो और अपनी बुद्धि से सोचो।

लोग मूर्तियो को नहलाते थे, कपडे पहनाते थे, हलवा पूरी खिलाते थे, झूला झुलाते थे, सुलाते जगाते थे। सबको पता था कि मूर्ति न खाती है, न सोती है, न जागती है, फिर भी करोडो लोग सैकडो साल तक इस मिथ्या प्रपच मे फसे रहे। भेड चाल का सिद्धान्त बहुत शक्तिशाली है। लोगो पर कुछ सम्मोहन सा हो जाता है और उनकी बुद्धि काम करना बन्द कर देती है।

पाच प्रकार के यज्ञ

स्वामी दयानन्द जी ने कहा कि मूर्तिपूजा छोडो और यज्ञ करो। वैदिक आर्य यज्ञ करते थे। वही ईश्वर उपासना की सही पद्धति है। उन्होने आर्यजनो को पाच यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया ब्रह्म यज्ञ (सध्या उपासना), देव यज्ञ (अग्निहोत्र), पितृयज्ञ (माता, पिता तथा आचार्य की सेवा), बलिवैश्वदेव यज्ञ (कुत्ते, कौए, कोढी जैसे असाध्य रोगी, कीट चीटी आदि के लिए भोजन प्रदान करना) और अतिथि यज्ञ (अकस्मात् आ पहुचे अतिथि की भोजन निवास आदि द्वारा सेवा। इसमे सगे सम्बन्धियो, इष्ट मित्रो का आतिथ्य सम्मिलित नही है, क्योकि वे अतिथि नही है)। इनमे से एक भी कमाई का साधन नही है।

इनमे से प्रथम अर्थात् ब्रह्म यज्ञ मनुष्य के शारीरिक आरोग्य एव आत्मिक उन्नति के लिए है, बाकी चार सामाजिक कर्तव्य निर्वाह एव लोकोपकार के लिए है। यज्ञ स्वस्थ, सशक्त, समृद्ध व्यक्ति करता है और वह अपने अर्जित साधनो मे से कुछ अश परोपकार के लिए देना चाहता है। यह यज्ञ की भावना है। परोपकार के लिए निःस्वार्थ भावना से किये जा रहे श्रेष्ठ कर्म ही यज्ञ है। जहा कुछ ले लेने की भावना आई, यज्ञ लुप्त हो गया। यज्ञ दान ही दान है।

आखो पर पट्टी बाधने वाले

स्वामी दयानन्द जी ने हिन्दू समाज की आखो के मोतियाबिन्द का आपरेशन अवश्य कर दिया, परन्तु बाद मे आखो पर पट्टी बाधने वाले कई आ गये। उन्हे 'वृत्र' कहना चाहिए। 'वृत्र' सत्य पर आवरण, पर्दा डाल कर उसे छिपा देना चाहता है। ऋषि सत्य को देखता है और उसे औरो को दिखाना चाहता है। ऋषियो और वृत्रो मे सदा विरोध रहता है।

स्वामी दयानन्द जी ने पाच यज्ञ बताये थे। बाद मे चतुर पुरोहितो ने वृष्टि यज्ञ, पुत्रेष्टि यज्ञ, राष्ट्रभृत् यज्ञ, राष्ट्र समृद्धि यज्ञ आदि का आयोजन शुरू कर दिया। नये यज्ञ शुरू हो, इसमे कोई दोष नही है, परन्तु वे बुद्धिसगत होने चाहिए।

बुद्धिसगत हो

यदि वृष्टि यज्ञ किया जाता है, तो उसकी कोई बुद्धिसगत व्याख्या होनी चाहिए कि अमुक ढग से यज्ञ करने पर वर्षा हो जायेगी। गीता मे लिखा है कि **'यज्ञाद् भवति पर्जन्य·'** (यज्ञ से बादल बनता है)। गीता मे ही नही, किसी भी ग्रथ मे लिखा तब तक प्रमाण नही है, जब तक कि उसे प्रयोग (परीक्षण) करके सत्य न पा लिया जाये। कितना बडा यज्ञ करने मे कितना बादल बनता है, उसमे किन किन वस्तुओ की कितनी आहुतिया डाली जायें, बादल बनने मे मत्र पाठ का भी कुछ योग है या नही, आदि प्रश्नो का उत्तर बार बार प्रयोग करके ढूढा जाना चाहिए।

जब अनावृष्टि होती है, तब वृष्टि यज्ञो का आयोजन अन्धभक्तो की भाति किया जाता है। कभी कभी वर्षा हो भी जाती है। बहुत बार नही भी होती। यज्ञ द्वारा वर्षा होती है, इस बात को वैज्ञानिक ढग से इतना पुष्ट किया जाना चाहिए कि सूखा पडने पर यज्ञ को सरकारी कार्यक्रम के रूप मे अपनाया जा सके। इस दिशा मे हमारा प्रयत्न शून्य से अधिक नही रहा। जब भी अनावृष्टि हो, चन्दा बटोर कर यज्ञ करना एक धन्धा बन गया है। श्रद्धालु भक्त लोग चन्दा दे ही देते है।

यही हाल पुत्रेष्टि यज्ञ का है। रामायण मे राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ करवाने का उल्लेख है। जिन दम्पति को सन्तान नही होती, उन्हे पुत्रेष्टि यज्ञ से कैसे हो जायेगी, इसकी तर्कसगत व्याख्या होनी चाहिए। नही तो पुत्रेष्टि यज्ञ तिरुपति या वैष्णव देवी मे जा कर मनौती मनाने जैसा ही हो जायेगा।

राष्ट्रभृत् यज्ञ से युद्ध मे विजय?

कारगिल युद्ध जीतने के लिए किये गये राष्ट्रभृत् यज्ञ और मुम्बई आर्य महासम्मेलन मे किये गये राष्ट्र समृद्धि यज्ञ की भी कोई बुद्धिसगत व्याख्या होनी चाहिए कि इन यज्ञो से युद्ध जीतने मे या राष्ट्र को समृद्ध बनाने मे किस प्रकार सफलता मिलेगी। नही तो राजनेताओ के चुनाव जीतने या मत्री पद पाने की इच्छा से करवाये जा रहे पौराणिक तात्रिक अनुष्ठानो मे और इन तथाकथित यज्ञो मे क्या अन्तर है?

आज के विज्ञान युग मे हम अन्धविश्वासो और अबुद्धिसगत धारणाओ के सहारे देर तक नही टिक सकते। गायत्री परिवार वाले शतकुडी 'अश्वमेध यज्ञ' करते है। पौराणिक सनातनी पडित भी शतचडी यज्ञ आदि अनुष्ठान करते है। विश्वशान्ति के लिए यज्ञ किये जाते है। उनके लिए धन भी यथेष्ट प्राप्त हो जाता है। भीड भी इकट्ठी होती है। परन्तु उस प्रकार की भीड इकट्ठी करना और यज्ञ को तमाशा बनाना आर्य समाज का कार्य नही है। मजमा तो ताबीज बेचने वाले भी लगा लेते है।

यज्ञ प्रचार साधन नही

अन्य सस्थाए या सम्प्रदाय तमाशे दिखा कर भीड इकट्ठी करते है और अपना प्रचार करते है और लोकप्रिय हो रहे है, यह इस बात के लिए यथेष्ठ कारण नही है कि हम भी शतकुडी और सहस्रकुडी यज्ञ करके भीड इकट्ठी करे, जब तक कि यह स्पष्ट न हो कि इससे लोकहित किस प्रकार होगा। यज्ञ करने से विश्वशान्ति किस प्रकार हो जायेगी? किसी छोटे से नगर मे कुछ सामान्य लोगो द्वारा मत्र पाठ करके हवन कुड मे आहुतिया डालने से युद्ध भडकाने वाले, शस्त्रो का व्यापार करने वाले राष्ट्र किस तरह शान्त हो जायेगे, जब कि युद्ध छेडना या रोकना प्रभुता सम्पन्न राजनेताओ या उद्योगपतियो के हाथ मे है? विश्व शान्ति यज्ञ यदि करना ही हो, तो उन राष्ट्रनायको से सम्पर्क स्थापित करके उन्हे युद्ध से विरत होने की प्रेरणा द्वारा करना उचित होगा। राजनीति से दूर, यज्ञ मडप मे आहुतिया डाल कर विश्वशान्ति स्थापित करने का प्रयत्न सोमनाथ मन्दिर के उन पुजारियो की उस देवपूजा से भिन्न नही होगा जो वे महमूद गजनवी की लुटेरी सेनाओ को पराजित करने के लिए कर रहे थे। हमारे प्रयत्न और लक्ष्य सिद्धि मे कारण-कार्य सम्बन्ध स्पष्ट लक्षित होना चाहिए।

अन्य सस्थाए और सम्प्रदाय अधिक लोकप्रिय हो रहे है, इसलिए हम भी उन उपायो को अपनाने लगे, जिनसे लोकप्रियता प्राप्त होती है, सही मार्ग नही होगा। छल कपट द्वारा बहुतो ने भोले लोगो को ठगा है। उन्हे वचना से बचाने के लिए आर्य समाज ने कमर कसी थी। हमे लोगो की आखे खोलनी है, सोतो को जगाना है। यदि हम भी अफीम खिलाने लगे, तो वह भारी विश्वासघात होगा।

दूध बनाम शराब

दूध की दूकान के बजाय शराब की दूकान पर भीड अधिक होती है, मुनाफा भी अधिक होता है, इसलिए हम दूध की दूकान बन्द करके शराब की दूकान खोल ले, तो हम आर्य नही होगे। बीडी सिगरेट, पान मसाला, कोला पेप्सी आज भी कमाई का अच्छा धन्धा है। यज्ञ का उद्देश्य कमाई करना नही है। अपनी कमाई को सत्कार्यो मे लुटाना है।

यश के लिए यज्ञ

जब कोई सदाशयी व्यक्ति यज्ञ करता है तब उसकी ख्याति होती है। कोई रोक नही सकता। परन्तु ख्याति प्राप्त करने के लिए यज्ञ का आडम्बर किया जाये, आयोजक लोग मच पर खडे हो कर एक दूसरे को माल्यार्पण करे, एक दूसरे की स्तुति करे और प्रशस्ति पत्र, सम्मान चिह्न भेट करे, उसकी फोटो अखबारो मे

(शेष पृष्ठ ४ पर)

यज्ञोपवीत के तीन तार

❑ डा० वन्दिता अरोडा

श्रावणी पर्व पर नया यज्ञोपवीत पहना जाता है। यज्ञोपवीत मे तीन धागे होते है, जो तीन ऋणो के द्योतक है पितृऋण, मातृऋण, आचार्य ऋण। यज्ञोपवीत हमे स्मरण कराता है कि हमे आजीवन इन तीन ऋणो को उतारते रहना है।

यह एक प्रकार की प्रतीक पूजा है। ये तीन ऋण निराकार है—विचार मात्र। उन्हे स्मरण रखने के लिए यज्ञोपवीत के तीन धागे बना लिये गये है। यदि ये तीन धागे न हो, तो नित्य इन ऋणो को स्मरण रखना कठिन होगा।

यज्ञोपवीत धारण करने पर भी इन ऋणो का स्मरण कितनो को रहता है? स्मरण रहने पर भी कितने लोग उन्हे उतारने का यत्न करते है? न करे, परन्तु यज्ञोपवीत धारण करने का प्रयोजन यही है।

पितृ ऋण कैसे उतरे?

पितृ ऋण का क्या अर्थ है? पिता ने हमे जन्म दिया है, हमारा पालन पोषण किया है, हमे जीविकोपार्जन योग्य बनाया है। उसका बदला हमे चुकाना है। कैसे? उनके सुख दु ख का ध्यान रख कर? उनके खाने पीने की सुविधाए जुटा कर? उनके पाव दबा कर? सेवा शुश्रूषा करके?

नही। यह सब तो घर मे साथ रहने के कारण आप को करना ही है। आप खायेगे, तो पिता को भी खाने को देगे। आप वस्त्र पहनेगे तो पिता को भी पहनने को देगे। आप मोटर गाडी मे घूमेगे, तो पिता को भी घुमायेगे। इसमे पितृऋण नही उतरेगा। फिर कैसे उतरेगा? शास्त्रकार कहते है सन्तान उत्पन्न करने मे और उसका उचित पालन पोषण करने और शिक्षा दीक्षा देने मे। '**प्रजातन्तु मा व्यवच्छेत्सी**' पिता के पुत्र पुत्रिया, फिर उनके पुत्र पुत्रिया, यह जो क्रम मानव सृष्टि के आरम्भ से चला आ रहा है, इसे टूटने नही देना है। उचित आयु होने पर परिवार के लोगो और समाज (कानून) की सहमति से विवाह करना है, सन्तान उत्पन्न करनी है, और उसे योग्य बनाना है। पितृऋण को उतारने का यही उपाय है।

उपाय कष्टदायक नही है, परन्तु तपस्या अवश्य चाहता है। आजन्म ब्रह्मचारी नही रहना है, अविवाहित नही रहना है। घर परिवार बना कर रहना है। कुल मिला कर यही सुख शान्ति का मार्ग है। अपना, परिवार का, समाज का हित इसी मे है। पितृऋण उतारना है, तो ब्रह्मचर्य से सीधा सन्यास लेना मना है। गृहस्थाश्रम से गुजरे बिना मनुष्य अपूर्ण रहता है।

मातृ ऋण

मातृ ऋण उतारने का तरीका भिन्न है। मा ने जन्म से पहले नौ महीने हमे अपने गर्भ मे रखा। हमारा सृजन करने के लिए अपना यौवन निछावर कर दिया। जन्म के बाद हमे छाती का दूध पिला कर पाला। अन्य कितने कष्ट सहे, उनकी गणना मे क्या होगा? सब जानते है।

वृद्धा मा को दूध घी खिला कर, फलो का रस पिला कर उस ऋण को उतार पाना किसी प्रकार सभव नही है। उसने हमे अपना रक्त, मास और हड्डिया दी है, तब हम बने है।

फिर वह मातृ ऋण कैसे उतरे? मा की पूजा करो, मातृत्व की पूजा करो। केवल अपनी मा की नही, जगन्माता की, जगत् की सब माताओ की पूजा करो। पूजा का अर्थ तिलक लगाने, फूलमाला पहनाने और आरती उतारने मे नही है। हर मा की, चाहे वह पशु हो, पक्षी हो या मानव हो, पीडा को समझो और शक्ति भर जितनी सहायता कर सकते हो, करो। जो कुछ भी तुम करोगे, वह अत्यल्प होगा, पर वह घडे को भरने वाली एक बूद अवश्य होगा, इसलिए उपयोगी होगा।

हर मा हमारे आदर की, श्रद्धा की, सहायता की, सेवा की पात्र है, जब यह भावना मन मे दृढ हो जायेगी, और आचरण मे आ जायेगी, तब मातृ ऋण उतरना शुरू हो जायेगा।

आचार्य ऋण

आचार्य ऋण भी बडा ऋण है। जब हम आचार्य के (गुरुओ के, शिक्षको के) पास पहुचे, तब हमे किसी विद्या का ज्ञान नही था। गुरुओ ने हमे गणित व्याकरण, साहित्य, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, नीति शास्त्र आदि विद्याए सिखाई, जिनसे हम जीवन सग्राम मे सफल हो सके, अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करने मे समर्थ हो सके।

इस ऋण को उतारने का उपाय यह है कि जा कर गुरु जी को भोजन सामग्री, वस्त्र और कुछ नकद राशि भेट की जाये? कुछ बुरा नही है। यदि सामर्थ्य और सुविधा हो, तो अवश्य करे। गुरु जी प्रसन्न होगे। परन्तु इससे आचार्य ऋण उतरेगा नही।

आचार्य ऋण तब उतरेगा, जब आप उस परम्परा को जारी रखने मे कुछ योग देगे, जो निरक्षरो को साक्षर बनाने और अज्ञानी को ज्ञान प्रदान करने के लिए बनाई गई है। गुरुकुलो और विद्यालयो की स्थापना मे आपका योग होना चाहिए। कितना योग हो, यह आपके सामर्थ्य पर निर्भर करता है। गुरुओ के प्रति, (अपने गुरु ही नही, सभी गुरुओ के प्रति) आपके मन मे आदर होना चाहिए। यहा आशय धर्मगुरुओ से नहीं, वेद (विद्या) गुरुओ से है। ज्ञान का प्रकाश दिखा कर अविद्या का अन्धकार मिटाने वाले अध्यापको से है। धन के लोभ से रहित, विद्याव्यवसनी, शिष्यो की उन्नति से प्रसन्न होने वाले अध्यापको का आदर, सम्मान और सेवा करके हम आचार्य ऋण से उर्ऋण हो सकते है।

यही यज्ञोपवीत के तीन धागो का सदेश है।

यज्ञोपवीत परम पवित्र प्रजापतेर्यत्
सहज पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्य प्रतिमुञ्च शुभ्र
यज्ञोपवीत बलमस्तु तेजः।

यह परम पवित्र यज्ञोपवीत, जो दीर्घ आयु प्रदान करने वाला है, अग्रणी बनाने वाला है, वह हमे बल और तेज प्रदान करे।

यदि मनुष्य सद्गृहस्थ बन कर, वृद्धो और माताओ के प्रति सहृदय और सेवाभावी रहे और अनपढो को विद्वान् बनाने के लिए यत्नशील रहे, तो न केवल उसका मनोबल और आत्मबल बढ जायेगा, अपितु उसका तेज और यश भी दूर दूर तक फैलेगा।

इन्द्रप्रस्थ महिला कालेज, अलीपुर रोड,
दिल्ली-५४

(पृष्ठ ३ का शेष)

हमारे यज्ञ बुद्धिसंगत होने चाहिए

छपवाये, यज्ञ की भावना का ठीक विलोम (उलट) है। यदि अपने ईमानदारी से अर्जित धन मे भी यश की लालसा से यज्ञ किया जाता है, तो वह श्रेष्ठतम कर्म नही है, लोगो से चन्दा करके अपना ढिढोरा पीटना चतुराई, प्रबन्ध कौशल भले ही हो, यज्ञ नही कहा जा सकता। यज्ञ की भावना ही और है।

हास्य विनोद का स्वास्थ्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो लोग स्वस्थ प्रसन्न होते है, वे हसते मुस्कराते रहते है। परन्तु जब स्वास्थ्य पाने की लालसा से अजीर्ण, गठिया, दमा से पीडित चिडचिडे लोग 'हो हो' करके जोर जोर से नकली हसी हसते है, तब वे विडम्बना के ही पात्र बनते है। ऐसे ही यश की लालसा से किये गये यज्ञ अपसश का भी कारण बन जाते है।

ऐसा कोई उपाय नही है कि हम अन्दर से भले, उदार, परोपकारी, सेवाभावी, तपस्वी (आर्य) न होते हुए भी यज्ञ का आडम्बर कर सके। यज्ञ की भावना व्यक्ति के अन्दर से फूटनी चाहिए। अहिसा (सज्जनो के प्रति), सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह मे से किसी एक या एकाधिक व्रतो को धारण करके दृढ सकल्प मन मे जागना चाहिए। जिसमे ऐसा सकल्प जागेगा, वह अकेला यजमान बनेगा, चार या दस या सौ आदमियो के साथ यजमानो की भीड मे शामिल नही होगा।

बहुत लोगो को भी कुछ समय के लिए मूर्ख बनाया जा सकता है। इसलिए असली सोने और नकली सोने की पहचान आवश्यक है, नही तो ठगे जाने का भय है।

फूलनदेवी की दिल्ली में दिनदहाड़े हत्या

२५ जुलाई २००१ को नई दिल्ली मे अशोक रोड पर स्थित सासद बगले के द्वार पर दस्यु सुन्दरी विरुद से विख्यात श्रीमती फूलनदेवी की तीन अज्ञात व्यक्तियो ने दिन के लगभग १ ३० बजे गोली मार कर हत्या कर दी।

किसी समय फूलनदेवी चम्बल के बीहडो की कुख्यात डाकू रही थी। उन पर कुछ अत्याचार हुए थे, जिनका प्रतिशोध लेने के लिए उन्होंने बन्दूक उठाई थी। बहमई गाव मे २० ठाकुरो की हत्या के बाद उनका आतक दूर दूर तक फैल गया था। बाद मे उन्होंने इस शर्त पर पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था कि उन्हे फासी नही दी जायेगी।

११ साल जेल मे रहने के बाद उन्हे क्षमा करके जेल मे रिहा किया गया। उन पर पुस्तके लिखी गई, फिल्म भी बनी और वह चुनाव लड कर दो बार सासद भी बनी। उन्होने पीडितो का मसीहा बनने का बाना भी पहना। परन्तु शायद वह कुछ ऐसी गतिविधियो मे लिप्त थी, जिनके कारण उन्हे प्राणभय बना रहता था। उन्होने पिस्तौल का लाइसेस मागा था। उसके मिलने से पहले ही उनके शत्रुओ ने उन्हे समाप्त कर दिया। सरकार द्वारा प्रदत्त सुरक्षा से प्राण नही बचते, यह प्रकट हो गया।

यद्यपि नई दिल्ली के हृदय समझे जाने वाले इलाके मे उनकी दिनदहाडे हत्या से पुलिस की अक्षमता प्रकट हुई, फिर भी दो दिन के अन्दर एक हत्यारे को पकड कर पुलिस ने अपनी कुशलता भी प्रमाणित कर दी।

वेदों में पर्यावरण संरक्षण

❑ 'पद्मश्री' डा० कपिलदेव द्विवेदी

(गतांक से आगे)

जल सरक्षण

वेदो मे जल को जीवन, अमृत, भेषज, रोगनाशक और आयुवर्धक बताया गया है।

अप्स्वन्तरमृतम् अप्सु भेषजम्। ऋग्० १ २३ १९

आपो विश्वस्य भेषजी तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात्। अथर्व० ३ ७ ५

आपो हृद्द्योतभेषजम्।

अथर्व० ६ २४ १

ऋग्वेद के एक महत्वपूर्ण मत्र मे कहा गया है कि वृक्ष-वनस्पतिया वन, जल, झरने आदि मानवमात्र के लिए परमात्मा के वरदान है, क्योकि ये भूगर्भ मे विद्यमान महान् रत्न आदि खनिजो के भडार की रक्षा करते है।

पूर्वीरस्य निष्षिधो मर्त्येषु,
पुरू वसूनि पृथिवी बिभर्ति।
इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो,
रयि रक्षन्ति जीरयो वनानि॥

ऋग्० ३ ५१ ५

ऋग्वेद और अथर्ववेद के अन्य मत्रो मे कहा गया है कि जल, वृक्ष, वनस्पतिया तथा वन मानव के रक्षक है।

आप ओषधीरुत नोऽवन्तु, द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशा। ऋग्० ५ ४१ ११

यदप्सु यद् वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदसमा कृतम्।

तेन माविष्टमश्विना। *अथर्व० २० १३९ ५*

अतएव यजुर्वेद मे निर्देश है कि जल और वृक्ष-वनस्पतियो को हानि न पहुचाओ और इनकी सुरक्षा करो।

माऽपो हिंसी, मा-ओषधीर्हिंसीः। यजु० ६ २२

अप· पिन्व, ओषधीर्जिन्व। यजु० १४ ८

यह आश्चर्य की बात है कि हजारो वर्ष पूर्व भारतीय मनीषियो ने प्रदूषण की समस्या पर ध्यान दिया था। पद्मपुराण के क्रियायोगसार खड के अध्याय ८ मे श्लोक ८ से १३ मे तीर्थयात्रा से सम्बद्ध कतिपय महत्वपूर्ण नियम दिए गए है। इनमे कहा गया है कि गगा के जल मे थूकना, मूत्र करना, कूडा करकट डालना, गन्दा जल डालना तथा गगा के किनारे शौच आदि करना महापाप है। ऐसा करने वाला नरक मे जाता है और उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है।

मूत्र वाऽथ पुरीष वा गगातीरे करोति य·।
न दृष्टा निष्कृतिस्तस्य कल्पकोटिशतैरपि।
श्लेष्माण वापि निष्ठीव दूषिताम्ब्वश्रु वा मलम्।
उच्छिष्ट कफक चैव गगागर्भे च यस्त्यजेत्॥
स याति नरक घोर ब्रह्महत्या च विन्दति।

पद्मपुराण, क्रियायोग० ८ ८ से १०

मनुस्मृति मे जो जल-वायु को प्रदूषित करने के कारण बडे कारखानो को लगाना पाप बताया गया है।

महायन्त्र-प्रवर्तनम् उपपातकम्। मनु० ११ ६३ से ६६

वृक्ष-वनस्पति सरक्षण

वेदो और ब्राह्मण ग्रथो मे वृक्ष-वनस्पतियो को पर्यावरण का अभिन्न अग बताया गया है। इनमे कहा गया है कि वृक्ष-वनस्पति मनुष्य को जीवनी शक्ति देते है, ये मनुष्य को जीवित रखते है। मनुष्य को जीवित रहने के लिए आक्सीजन की आवश्यकता होती है और उसकी पूर्ति वृक्ष-वनस्पति करते है, अत उन्हे माता कहा गया है।

(क) **वीरुधो वैश्वदेवी उग्रा पुरुषजीवनी·।** *अथर्व० ८ ७ ४*

((ख) **उग्रा या विषदूषणी ओषधी।** *अथर्व० ८ ७ १०*

(ग) **ओषधीरिति मातर.।** *यजु० १२ ७८*

(घ) **प्राणो वै वनस्पति।** *ऐत० ब्रा० २ ४*

वृक्ष-वनस्पति शिव के मूर्तरूप

शतपथ ब्राह्मण मे स्पष्ट रूप मे कहा गया है कि वृक्ष-वनस्पति (ओषधिया) पशुपति अर्थात् शिव के रूप है। यजुर्वेद के रुद्राध्याय (अध्याय १६) मे शिव को वृक्ष, वनस्पति, लता-गुल्म, क्षेत्र, वन आदि का स्वामी बताया गया है। शिव का शिवत्व यही है कि वे विष पीते है और अमृत प्रदान करते है। वृक्ष कार्बन-डाई-आक्साइड रूपी विष पीते है और आक्सीजन रूपी अमृत (प्राणवायु) छोडते है। वृक्षो की रक्षा करना शिव की उपासना है।

(क) **ओषधयो वै पशुपति।** *शत० ब्रा० ६ १ ३ १२*

(ख) **नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्य। क्षेत्राणा पतये नमः। वनाना पतये नम। ओषधीना पतये नम। कक्षाणा पतये नम।** *यजु० १६ १७ से १९*

वृक्षो को लगावे

ऋग्वेद का कथन है कि वृक्षो को लगाओ ओर इनकी सुरक्षा करो। ये जल के स्रोतो की रक्षा करते है।

वनस्पति वन आस्थापयध्वम्,
नि षू दधिध्वम् अखनन्त उत्सम्।

ऋग्० १० १०१ ११

वृक्षो को नष्ट न करे ऋग्वेद मे कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते है, अत इन्हे न काटे।

मा काकम्बीरम् उद्वृहो वनस्पतिम्, अशस्तीर्वि ही नीनश। ऋग् ६ ४८ १७

प्रदूषणनाशक वृक्ष-वनस्पति आक्सीजन की मात्रा अधिक छोडने के कारण पीपल को पवित्र और देवो का निवास बताया गया है।

अश्वत्थो देवसदन। *अथर्व० ५ ४ ३*

तुलसी को भी पूज्य मानने का कारण यही है। तुलसी से आक्सीजन की मात्रा अधिक निकलती है। अथर्ववेद मे प्रदूषण-शोधक वृक्षो की सख्या बहुत अधिक है। उनमे कुछ ये है कुष्ठ (कूठ), भद्र और चीपुद्रु (देवदारु और चीड), अपामार्ग (चिरचिटा), सोम लता, नलद (खसखस), उदुम्बर (गूलर) आदि। अपामार्ग के विषय मे कहा गया है कि जहा अपामार्ग है, वहा कोई भय, रोग, प्रदूषण नही आ सकता। इसी प्रकार गूगल के लिए कहा गया है कि जहा तक गूगल की गन्ध जाती है, वहा तक कोई बीमारी और प्रदूषण नही रह सकता।

(क) **अपामार्ग न तत्र भयमस्ति, यत्र प्राप्नोष्योषधे।** *अ० ८ १९ २*

(ख) **त यक्ष्मा अरुन्धते।**

य भेषजस्य गुल्गुलो सुरभिर्गन्धो अश्नुते। *अ० १८ ३८ १*

वृक्षादि के काटने पर दड का विधान

मनुस्मृति और विष्णुस्मृति आदि मे हरे वृक्षो को काटने पर दड का विधान है। मनुस्मृति मे हरे वृक्षो को काटना पाप माना गया है और इसे वृक्षो की हिसा कहा है। विष्णुस्मृति मे इस दड का विवरण भी दिया गया है। तदनुसार फल देने वाले हरे वृक्षो को काटने पर १ हजार रुपया, फूल वाले वृक्षो को काटने पर ५ सौ रुपया और लता-झाडी आदि काटने पर सौ रुपया दड देने का विधान है। विष्णुस्मृति मे पण शब्द का प्रयोग है, जिसका अर्थ रुपया है।

इन्धनार्थमशुष्काणा द्रुमाणामवपातनम्। हिंसौषधीनाम् .. उपपातकम। *मनु० ११ ६३ से ६६*

फलदुमच्छेदी उत्तमसाहस दण्डच। पुष्पद्रुमच्छेदी मध्यमम्। वल्ली-गुल्मलता-छेदी कार्षापणशतम्। *विष्णुस्मृति अध्याय ५*

यज्ञ—प्रदूषण समस्या का सर्वोत्तम समाधान

यज्ञ या अग्निहोत्र एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा वायुमडल मे आक्सीजन और कार्बन-डाइ-आक्साइड का सतुलन बना रहता है। प्रकृति मे एक चक्र की व्यवस्था है, जिसके अनुसार प्रत्येक पदार्थ अपने मूल स्थान पर पहुचता है। इसी के आधार पर ऋतुचक्र, वर्षचक्र, अहोरात्र चक्र, सौर चक्र, चान्द्र चक्र आदि प्रवर्तित होते है। इस प्राकृतिक चक्र को ही पारिभाषिक शब्दावली मे यज्ञ कहा जाता है। इस प्राकतिक यज्ञ का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वर्षचक्र रूपी यज्ञ मे वसन्त ऋतु घी है, ग्रीष्म ऋतु समिधा और शरद् ऋतु हव्य। वसन्त के बाद ग्रीष्म और ग्रीष्म के बाद वर्षा और वर्षा के बाद शरद् ऋतु, फिर वसन्त। इस प्रकार यह वर्षचक्र पूरा होता है।

यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्य ग्रीष्म इध्म शरद् हवि.। *ऋग्० १० ९० ६ / यजु० ३१ १४*

इसी प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए ऋग्वेद मे कहा गया है कि यज्ञ के द्वारा द्युलोक को प्रसन्न किया जाता है और द्युलोक वर्षा के द्वारा पृथिवी को तृप्त करता है, अर्थात् यज्ञ से मेघ और मेघ मे वर्षा।

भूमि पर्जन्या जिन्वन्ति, दिव जिन्वन्त्यग्नय। *ऋग्० १ १६४ ५१*

छान्दोग्य उपनिषद् मे यज्ञ का पर्यावरण प्रदूषण के निराकरण का सर्वोत्तम उपाय बताया गया है। यज्ञ सारे प्रदूषणो को दूर करके पवित्र बनाता है।

एष ह वै यज्ञो, योऽय पवते।

इद सर्व पुनाति, तस्मादेष एव यज्ञ। *छान्दो० उप० ४ १६ १*

भैषज्य यज्ञ

ऋतु परिवर्तन के समय वायु प्रदूषण के कारण अनेक रोग उत्पन्न होते है। इनके निवारण के लिए गोपथ ओर कौषीतकि ब्राह्मणो मे भैषज्य यज्ञो का विधान किया गया है। इस भैषज्य यज्ञो मे ऋतु के अनुकूल गिलोय, गूगल, अपामार्ग, कूठ, मुलहठी, खसखस, सोमलता, चदन, अगर, तगर, आदि ओषधिया डाली जाती है।

भैषज्ययज्ञ वा एते यत् चातुर्मास्यानि, तस्माद् ऋतुसन्धिषु प्रयुज्यन्ते।

ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते। गोपथ ब्रा० २ १ १९। कौषी० ब्रा० ५ १

यज्ञ मे प्रयुक्त द्रव्य यज्ञ मे शुद्ध घी का प्रयोग होता है। घी, रोग नाशक, विषनाशक और वायुमडल का शोधक है। यज्ञ मे डाली जाने वाली सामग्री को हव्य कहते है। हव्य वस्तुए चार प्रकार की है

१ सुगन्धित कस्तूरी, केसर चदन, अगर, तगर आदि। ये सभी वायुमडल को शुद्ध करते है।

२ पुष्टिकारक पदार्थ घी, दूध, फल, कन्द, गेहू, जौ, चावल, तिल आदि। ये शरीर को पुष्ट बनाते है।

३ रोगनाशक गिलोय, गूगल, अपामार्ग आदि। ये पर्यावरण को शुद्ध करते है और रोगो को नष्ट करते है

४ मिष्ट पदार्थ गुड, शक्कर, चीनी, किशमिश आदि। इनमे वायुमडल को शुद्ध करने की असाधारण शक्ति है।

निदेशक, विश्वभारती अनुसधान परिषद्, ज्ञानपुर (भदोही) उत्तर प्रदेश

डी० ए० वी० कालेज फॉर विमैन

फीरोजपुर छावनी

(डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति के अधीन) *(पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से सम्बद्ध)*

विश्वविद्यालय/बोर्ड की परीक्षाओ मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाली हमारी मेधावी छात्राओ और उनके गर्वित माता-पिताओ को हार्दिक बधाइया!!!

इस वर्ष की हमारी श्रेष्ठ सफल छात्राएं

मीनाक्षी
(७८ ५०%) पजाब वि० वि० मे छठा स्थान। फीरोजपुर जिले मे प्रथम। बी० ए० I मे कालेज मे प्रथम।

जसरीन
(७१ ५५%)
बी ए I मे कालेज मे द्वितीय।

चचलरानी
(७० ५०%)
बी ए I मे कालेज मे तृतीय।

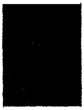

लवलीन सागर
(६७ ८७%)
फीरोजपुर मे चतुर्थ
बी ए II मे कालेज मे प्रथम

मीनाक्षी
(६७ ६२%)
बी ए II मे कालेज मे द्वितीय।

प्रीति
(६६ ३७%)
बी ए II मे कालेज मे तृतीय।

किरण चोपडा
(६९ ४२%) फीरोजपुर मे चतुर्थ
बी ए III मे कालेज मे प्रथम।

गीतू बाला
(६७ ५४%)
बी ए III मे कालेज मे द्वितीय।

मधु गोयल
(६६ ८३%)
बी ए III मे कालेज मे तृतीय।

निशा जैन
(६८ ४४%)
कालेज मे १०+२ मे प्रथम।

मोनिका नरुला
(६८ ४४%)
कालेज मे १०+२ मे प्रथम।

निशी सरीन
(६६ २२%)
कालेज मे १०+२ मे द्वितीय।

सोनम
(६५ ७०%)
कालेज मे १०+२ मे तृतीय।

उपलब्ध पाठ्यक्रम :

☐ बी. सी. ए. नये सत्र, जुलाई २००१ से

☐ बी. ए. निम्नलिखित विषयों में :

कम्प्यूटर ऐप्लिकेशन, मनोविज्ञान, गृह विज्ञान, संगीत (गायन),
अंग्रेज़ी ऐच्छिक, पंजाब ऐच्छिक, गणित, राजनीति विज्ञान, इतिहास, संस्कृत

पंडित सतीश शर्मा
(ऐडवोकेट)
उपाध्यक्ष
दि माल, फीरोजपुर

डा० सतनाम कौर
प्रिंसिपल
टेलीफोन ४४५०९ (कार्यालय)

कश्मीर की करुण कथा

□ श्री विवेक कुमार

कश्मीर भारत का श्रेष्ठ भाग है। हिमालय की गोदी मे और वितस्ता (जेहलम) के आचल मे बसा, झीलो, नदियो और झरनो से हरा-भरा यह प्रदेश सचमुच देवभूमि है। यहा का प्राकृतिक दृश्य मनोहारी और रमणीय है। वायु निर्मल और प्राणदायक है। फलो और फूलो का अक्षय भडार है यह। सेब, बब्बू गोशा, आड़ू, नाशपाती, आलू बुखारा, अखरोट, बादाम यहा प्रचुर मात्रा मे उत्पन्न होते है।

पृथ्वी पर स्वर्ग

यहा के निवासी गौर वर्ण और सुन्दर है। वे सौम्य और मेधावी है, विद्या व्यसनी और कलाप्रेमी रहे है, सहृदय और अतिथि सत्कारी है। वहा की महिलाए अप्सराओ सी सुन्दर है। ये ही देवी और देव है, जो इस स्वर्ग भूमि मे निवास करते आये है।

कश्मीर पृथ्वी पर स्वर्ग है। तिब्बत को छूता यह प्रदेश ही कभी त्रिविष्टप कहलाता था। तिब्बत मे स्वर्ग के कोई सुख उपलब्ध नही है। न वहा प्राकृतिक सम्पदा है, न शारीरिक लावण्य, न विद्या वैभव, न कला कौशल, न सौम्यता व सहृदयता।

सब कश्मीरी पहले हिन्दू थे

कश्मीर के लोग कितनी ही शताब्दियो तक सनातन हिन्दू धर्म के अनुयायी रहे। फिर अशोक के शासन काल मे वे बौद्ध बन गये और सारा कश्मीर बौद्ध विहारो और बुद्ध की अनगिनत प्रतिमाओ से भर गया। औरगजेब के शासन काल मे इन शान्त स्वभाव के लोगो को, जो स्वय को 'पडित' कहते थे, बल छल से मुसलमान बनाया गया। पडोसी अफगान और पठानो ने बार-बार उन्हे लूटा और सताया। आज कश्मीर के अधिकाश निवासी कट्टर मुसलमान है, इतने कट्टर कि उन्होने अपने बीच रह रहे ३ लाख हिन्दू पडितो को मारपीट कर, लूट कर भारत भगा दिया है, जहा वे बडी ही शोचनीय दशा मे शरणार्थी बन कर जी रहे हैं।

आतकवाद की चपेट मे

जिन कश्मीरी मुसलमानो ने अपने पडोसी हिन्दू पडितो को लूट-पीट कर खदेड दिया था, वे भी सुखी नही है। वे भी आतकवाद की नारकीय आग मे भुन रहे है। पहले कश्मीरी युवक आतकवादी प्रशिक्षण प्राप्त करने पाकिस्तान जाते थे और वहा से हथियार लेकर लौटते थे और आजादी की लडाई के नाम पर अपने विरोधियो पर अचानक हमला करके उन्हे मार डालते थे। फिर वे स्वय भी पुलिस से मुठभेड़ मे मारे जाते थे।

जब कश्मीरी युवको का आजादी पाने का जोश ठडा हो गया, तब आतकवाद की कमान विदेशी पठानो, अफगानो तथा सूडानी पेशेवर जिहादियो ने सभाल ली। उनके हाथो भी हजारो कश्मीरी मारे गये। जिस भी व्यक्ति पर यह सदेह होता कि यह भारत का समर्थक है, उसे परिवार समेत मार दिया जाता।

पर्यटन उद्योग ठप

कश्मीर मे पर्यटन बडा उद्योग था। देश-विदेश के सैलानी आते थे, जिनसे कश्मीरियो को अच्छी आय होती थी। आतकवाद के कारण पर्यटन ठप हो गया। यात्री आने बन्द हो गये। फिर भी कश्मीर आज भी भारत के अन्य कई राज्यो की अपेक्षा अधिक समृद्ध है। वहा गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले लोगो का अनुपात केवल ३ ५ प्रतिशत है, जब कि यह पजाब मे ६ २ प्रतिशत, केरल मे १२ ६ प्रतिशत, गुजरात मे १४ १ प्रतिशत, महाराष्ट्र मे २५ प्रतिशत, उत्तर प्रदेश मे ३१ २ प्रतिशत, असम मे ३६ १ प्रतिशत, बिहार मे ४२ ६ प्रतिशत और उडीसा मे ४७ १ प्रतिशत है। कश्मीर मे प्रति व्यक्ति वार्षिक आय ११०६३ रुपये है, जब कि गोआ मे २९५४८, पजाब मे २०९०८, केरल मे १५१९७, गुजरात मे १८३३०, महाराष्ट्र मे २१५४१, उत्तर प्रदेश मे ८९५०, बिहार मे ६२४५, और उडीसा मे ८१४१ रुपये है। भारत सरकार कश्मीरी जनता को अपने पक्ष मे रखने के लिए वहा अन्धाधुन्ध धन खर्च कर रही है, यद्यपि उसका अधिक अश सीधा भारत विरोधी आतकवादियो की जेब मे पहुच जाता है। भारतीय सुरक्षा बल काफी बडी सख्या मे कश्मीर मे है, जिनकी आवश्यकताओ को पूरा करने से कश्मीरियो को खासी आय होती है। अमरनाथ और वैष्णव देवी के तीर्थयात्री भी कश्मीरियो की आय के अच्छे साधन है।

भारत और पाकिस्तान की सीमा पर

कश्मीर के कष्टो की कहानी १५ अगस्त १९४७ को देश के विभाजन से शुरू हुई। कश्मीर भारत और पाकिस्तान दोनो का सीमावर्ती रजवाडा था। हैदराबाद और जूनागढ जैसे रजवाडे, जो भारत के बीच मे पडते थे, चाह कर भी पाकिस्तान मे नही मिल सकते थे। उनके सामने भारत मे मिलने के सिवाय कोई विकल्प ही नहीं था। इसी प्रकार पाकिस्तान के बीच मे पडने वाले सभी रजवाडे पाकिस्तान मे मिलने को विवश थे। हैदराबाद और कश्मीर भारत के सबसे बडे रजवाडे थे। इनके मन मे इच्छा हुई कि भारत या पाकिस्तान किसी मे न मिल कर स्वतत्र राज्य रहा जाये। कश्मीर को आशा थी कि उसका स्वतत्र रहना भारत और पाकिस्तान, दोनो को सह्य होगा।

कश्मीर का शासक हिन्दू था— महाराजा हरिसिह। स्वतत्र भारत के प्रधान मत्री बने श्री जवाहर लाल नेहरू महाराज हरिसिह से बहुत रुष्ट थे, क्योकि कुछ ही समय पूर्व उसने उन्हे गिरफ्तार करके जेल मे रखा था और भारत की अग्रेजी सरकार के बहुत कहने सुनने पर छोडा था। श्री नेहरू ने उस अपमान को मन मे रखा और कश्मीर को अपने पक्ष मे करने के लिए कोई प्रयत्न न किया। गृहमत्री होने के नाते सरदार वल्लभ भाई पटेल देसी रजवाडो की समस्या को सभाल रहे थे, परन्तु श्री नेहरू ने कहा कि कश्मीर मेरी जन्मभूमि है, अत इसका मामला मै सभालूगा। तभी मे कश्मीर का मामला उलझ गया।

स्वतत्र राज्य

१५ अगस्त १९४७ तक कश्मीर ने न भारत मे मिलने का निश्चय किया, न पाकिस्तान मे। उसने स्वतत्र रहने का फैसला किया। उसके सलाहकार गलत थे। कश्मीर की प्रजा का बहुमत मुसलमान था। उसका रुझान पाकिस्तान की ओर होना स्वाभाविक था। भारत और पाकिस्तान, दोनो ने वचन दिया कि वे उसे स्वतत्र रहने देगे।

१५ अगस्त १९४७ से २६ अक्टूबर १९४७ तक कश्मीर सम्प्रभुता सम्पन्न देश रहा। २४ अक्टूबर १९४७ को पाकिस्तानियो ने कश्मीर पर धावा बोल दिया। कहने को कहा गया कि ये पाकिस्तान के कबाइली लोग थे, परन्तु सच्चाई यह है कि इनकी भर्ती पाकिस्तान के सैनिक अफसरो ने की थी, इन्हे गाडिया और हथियार पाकिस्तानी सेना ने दिये थे और इनका नेतृत्व भी पाकिस्तानी सेना के अफसर ही कर रहे थे। कश्मीर की छोटी सी सेना के सभी मुस्लिम अफसर और सैनिक पाकिस्तानी आक्रमणकारियो के साथ मिल गये। बाकी बचे थोडे से डोगरा सैनिक कुछ न कर सके। आक्रमणकारी लूटपाट करते हुए बारामूला तक आ पहुचे। उन्होने वह बिजलीघर उडा दिया, जहा से श्रीनगर को बिजली पहुचती थी। तब महाराज हरिसिह ने अपने प्रधानमत्री श्री मेहरचन्द महाजन को दिल्ली भेज कर भारत से सैनिक सहायता मागी। सहायता तभी भेजी जा सकती थी, जब महाराजा भारत मे सम्मिलित होने की घोषणा कर दे। महाराजा ने विलयपत्र पर हस्ताक्षर भी कर दिये।

नेहरू जी की अशिष्टता

श्री नेहरू ने महाराजा के प्रतिनिधि श्री मेहरचन्द महाजन से अशोभन व्यवहार किया। यहा तक कि श्री महाजन को कहना पडा कि यदि आप तुरन्त सैनिक सहायता नहीं भेजते, तो मै सीधा श्री जिन्ना के पास जाता हू और उनसे सहायता मागता हू। श्री नेहरू ने उन्हे कमरे से बाहर निकल जाने को कहा। श्री महाजन क्रुद्ध होकर बाहर निकल गये और कश्मीर के भाग्य का फैसला उसी दिन हो गया होता और जम्मू कश्मीर का पाकिस्तान मे विलय हो गया होता।

कश्मीर का भारत मे विलय

परन्तु ऐसा होना नही था। कमरे से निकलते ही श्री महाजन की भेट सरदार पटेल और शेख अब्दुल्ला से हो गई, जो बरामदे मे आ रहे थे। उन्होने श्री महाजन को समझा बुझा कर शान्त किया और श्री नेहरू को भी समझाया। परिणाम यह हुआ कि २६ अक्टूबर को प्रात काल १ ली सिख रेजीमेट विमानो द्वारा श्रीनगर भेजी गई। सौभाग्य से हवाई अड्डा तब तक पाकिस्तानी आक्रमणकारियो के हाथ नही पडा था, इसलिए भारतीय विमान सकुशल हवाई अड्डे पर उतरते रहे। पाकिस्तानी हमला विफल कर दिया गया।

मामला सयुक्त राष्ट्र मे

पहले कहा गया था कि कश्मीर पर हमला कबाइली लोगो ने किया है पर जब उन्हे सफलता न मिली, तब उनके समर्थन मे पाकिस्तानी सेना खुल कर सामने आ गई। लगभग १४ महीने तक लडाई के बाद, जब भारतीय सेना ने आधे से अधिक कश्मीर पाकिस्तानियो से खाली करा लिया था, कश्मीर का मामला गाधी जी के मना करते-करते श्री नेहरू ने सयुक्त राष्ट्र सघ मे विचारार्थ भेज दिया। सयुक्त राष्ट्र के कहने पर १ जनवरी १९४९ को कश्मीर मे युद्ध विराम की घोषणा हो गई। जो भाग जिसके अधिकार मे था, उसी के पास रह गया।

५ जनवरी १९४९ को सयुक्त राष्ट्र सघ ने एक प्रस्ताव पास किया, जिसमे कहा गया कि जम्मू-कश्मीर मे जनमत सग्रह कराया जाये, इससे पहले पाकिस्तान को अपने कब्जे वाला कश्मीर का भाग खाली कर देना चाहिए। न पाकिस्तान ने वह भाग खाली किया, न जनमत सग्रह हुआ। कश्मीर का फोडा नासूर बन गया।

कश्मीर के भारत मे विलय के लिए वहा के राजा की स्वीकृति पर्याप्त थी। प्रजा की इच्छा जानने का प्रावधान सत्ता हस्तान्तरण अधिनियम मे नही था। परन्तु श्री नेहरू ने आदर्शवादिता के जोश मे प्रजा के प्रतिनिधि के रूप मे शेख मुहम्मद अब्दुल्ला को बीच मे डाल दिया।

अनुच्छेद ३७०

१७ अक्टूबर १९४९ को भारत के सविधान मे अनुच्छेद ३७० स्वीकृत किया गया, जिसके अनुसार जम्मू-कश्मीर को भारतीय सविधान मे विशेष स्थिति प्रदान की गई।

अक्टूबर १९५१ मे शेख अब्दुल्ला जम्मू कश्मीर विधान सभा मे निर्विरोध प्रधान मत्री चुने गये। २४ जुलाई १९५२ को श्री नेहरू ने भारत और जम्मू कश्मीर के बीच मे हुए समझौते के अनुसार जम्मू

(शेष पृष्ठ १० पर)

खैरातीराम महेन्द्रू डी० ए० वी० कालेज, नकोदर (जालन्धर)

इस कालेज मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पजाब के तत्वावधान मे २६ १२ २०० से ३१ १२ २००० तक लगाये गये वैदिक चेतना शिविर का सक्षिप्त विवरण।

इस कालेज के कन्या प्रखड मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वावधान मे पजाब की शिक्षा सस्थाओ की महिला शिक्षकों के लिए २६ १२ २००० से ३१ १२ २००० तक एक वैदिक चेतना शिविर लगाया गया। पजाब की विभिन्न डी० ए० वी० शिक्षा सस्थाओ की ८२ महिला शिक्षको ने ६ दिन तक लगे इस शिविर मे भाग लिया। शिविर का उद्घाटन समारोह परम पिता ईश्वर की अनुकम्पा प्राप्त करने के लिए किये गये यज्ञ मे २१ १२ २००० को ठीक प्रात काल ९ ३० पर हुआ।

प्रिंसिपल आर० ऐस० शर्मा, उपप्रधान, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, नई दिल्ली, डा० सी० प्रकाश, उपप्रधान, डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति और प्रिंसिपल डी० आर० गुप्ता (डायरैक्टर कालेजिज) ने शिविर का उद्घाटन किया और श्रोताओ के लिए मगल कामना की।

कालेज परिसर को सुन्दर ढग से सजाया गया था और कालेज की छात्राओ द्वारा वेद मत्रो के पाठ मे उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ हुआ। प्रिंसिपल धनीराम जी ने प्रतिष्ठित महानुभावो का स्वागत किया और स्थानीय समिति के अध्यक्ष श्री ऐस० डी० मेहता ने उद्घाटन दिवस पर आये श्रोताओ का धन्यवाद किया। सुन्दरनगर के आचार्य भगवानदेव चैतन्य एव उनकी आदरणीया धर्मपत्नी श्रीमती सत्यप्रिया जी ने वैदिक चेतना शिविर का ६ दिनो तक सफलतापूर्वक सचालन किया। इन छह दिनो मे प्रिंसिपल राजपाल ढड, डी० ए० वी० कालेज, जगराव, प्रिंसिपल वाई० डी० जिज्ञासु, डी० ए० वी० कालेज फगवाडा, प्रिंसिपल विजयकुमार दयानन्द माडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जालन्धर जैसे अनेक विद्वानो/वक्ताओ ने शिविर मे भाग लिया।

श्री आर० पी० बसल, उपप्रधान, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, श्रीमती जे० कार्कडिया, प्रिंसिपल बी० बी० के० डी० ए० वी० कालेज फॉर विमैन, अमृतसर, वैद्य विद्यासागर, कोषाध्यक्ष, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, श्रीमती उषा वर्मा, प्रिंसिपल विद्यावती आनन्द, डी० ए० वी० कालेज फॉर विमैन, करनाल, श्रीमती वीना वतर्ना प्रिंसिपल आर० आर० बावा डी० ए० वी० कालेज फॉर विमैन, बटाला, प्रिंसिपल सुभाष कुमार, डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर, प्रिंसिपल पी० पी० नन्दा, डी० ए० वी० सेन्टेनरी कालेज, फरीदाबाद, प्रिंसिपल बी० के० शर्मा, डी० ए० वी० कालेज, दसूया, और डा० मधुरिमा, दयानन्द आयुर्वेद कालेज जालन्धर ने भी शिविर मे भाग लिया और भाषण दिये।

शिविर के आयोजन और सचालन की सभी ने सराहना की। शिविर का समापन समारोह परम पिता परमात्मा की अनुकम्पा के लिए किये गये हवन यज्ञ के साथ ३१ १२ २००० को ठीक ९ ३० बजे शुरू हुआ।

जस्टिस आर० ऐन० मित्तल, उपप्रधान, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, नई दिल्ली, प्रिंसिपल मोहनलाल जी, सचिव, डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति, और श्री रामनाथ सहगल, सचिव, डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति, श्री ऐम० सी० नन्दा, डायरैक्टर ऐडमिनिस्ट्रेशन, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, श्री रामसनेही, अध्यक्ष, वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार ने समापन दिवस पर श्रोताओ को सबोधित किया।

जस्टिस आर० ऐन० मित्तल और डा० सी० प्रकाश, उपाध्यक्ष, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति ने शिविर के आयोजन की और शिविर मे भाग लेने वाले लोगो के निवास तथा भोजन व्यवस्था की भरपूर सराहना की। उन्होने जोर देकर कहा कि युवा छात्रो मे क्रान्ति लाने और जीवन के नैतिक मूल्यो को बनाये रखने के लिए इस प्रकार के शिविर समय समय पर लगते रहने चाहिए।

प्रिंसिपल आर० ऐस० शर्मा, उपाध्यक्ष डी० ए० वी० का० प्र० समिति, डा० सी० प्रकाश, उपाध्यक्ष डी० ए० वी० का० प्र० स०, और प्रिंसिपल डी० आर० गुप्ता, डायरैक्टर कालेजिज, इस कालेज मे लगाये गये वेदिक चेतना शिविर की पूर्व सध्या पर परम पिता की अनुकम्पा के लिए हवन यज्ञ करते हुए।

जस्टिस आर० ऐन० मित्तल, उपाध्यक्ष, डी० ए० वी० का० प्र० स०, वैदिक चेतना शिविर के समापन पर सम्मान चिह्न ग्रहण करते हुए।

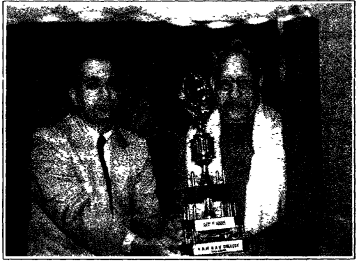

श्री आर० पी० बसल, उपाध्यक्ष डी० ए० वी० का० प्र० स० ने उपस्थित हो कर इस आयोजन की शोभा बढाई।

श्री वैद्य विद्यासागर, अवैतनिक कोषाध्यक्ष, को सुन्दरनगर के आचार्य भगवानदेव चैतन्य द्वारा माल्यार्पण।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

यात्रा अमरनाथ की

❑ श्री प्रवीणकुमार

पुराने भारतीय मनीषियो ने मनुष्य के मानसिक विकास के लिए और देश मे एकता की भावना को दृढ करने के लिए तीर्थ यात्राओ का विधान किया था। हर हिन्दू को तीर्थो का दर्शन अवश्य करना चाहिए। घर के कामकाज से छुट्टी ले कर कुछ समय देश दर्शन मे बिताना चाहिए।

तीर्थ एकता के साधक

पूर्व मे कामाख्या से लेकर पश्चिम मे द्वारिका तक और उत्तर मे अमरनाथ से लेकर दक्षिण मे रामेश्वरम तक फैला हुआ यह हिन्द उपमहाद्वीप एक ही देश है और इसके सब निवासी पजाबी, कश्मीरी, सिन्धी, बगाली, गुजराती, मराठे, तमिल, कन्नड, आन्ध, केरली, सब एक ही मूल के, एक ही संस्कृति के अग है, इस भावना को दृढ करने के लिए तीर्थयात्रा का प्रचलन किया गया। गगोत्री का जल रामेश्वरम मे चढाने का बहुत बडा पुण्य का कार्य कहा गया। चारो धामो की यात्रा हर हिन्दू की लालसा की वस्तु बना दी गई। ये चार धाम है बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम, और द्वारिका। अमरनाथ को पाचवा धाम कहा जा सकता है।

कश्मीर रमणीय स्थान

अमरनाथ भारत के उत्तर मे कश्मीर मे लगभग १५ हजार फुट की ऊचाई पर स्थित है। यहा एक गुफा है, जहा बर्फ एक शिवलिग की आकृति मे जमी रहती है। कश्मीर प्राकृतिक दृष्टि से भारत के सबसे सुन्दर स्थलो मे से एक है। यहा ऊचे, पूरे साल बर्फ से ढके रहने वाले पर्वत शिखर है, उनसे बह कर आने वाली स्वच्छ सलिला नदिया है। बडी बडी झीले है। चीड और देवदार के जगल हैं। हरी घास के विस्तृत मैदान है, जिनमे भेडे पलती है।

अमरनाथ एक ऊचे शिखर पर स्थित है, जहा से दृश्य बहुत सुन्दर दिखाई पडता है। लोग यहा आ कर हिमालय के सौन्दर्य और गरिमा को देखे, इसी उद्देश्य से अमरनाथ को तीर्थस्थान घोषित किया गया। धर्म के नाम पर व्यक्ति यात्रा का व्यय करने को तैयार हो जाता है और यात्रा का कष्ट सहने को भी। अमरनाथ का जो सौन्दर्य है, वह तो है ही, पर ४८ किलोमीटर लम्बे रास्ते मे जो एक से एक मनोहारी जो दृश्य दिखाई पडते है, उनकी तुलना अन्यत्र कही नही है।

दुर्गम मार्ग

अमरनाथ की यात्रा श्रावण के महीने मे होती है और श्रावण पूर्णिमा इसका सबसे शुभ मुहूर्त माना जाता है। श्रीनगर मे ९६ किलोमीटर दूर पहलगाव से यह यात्रा शुरू होती है और ४८ किलोमीटर का दुर्गम और थकाने वाला रास्ता पार करके चार दिन मे अमरनाथ पहुचती है। सारा ही रास्ता नयनाभिराम दृश्यो से भरा है, जिनकी स्मृति जीवन भर बनी रहती है।

रास्ते मे चन्दनवाडी, पिस्सूटाप, शेषनाग, महागुनास दर्रा और पचतरणी पडाव पडते है। १० हजार फुट से अधिक ऊचाई पर वायु मे आक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है, जिससे सास फूलने लगता है। वृद्धो और दमे के रोगियो को इस यात्रा पर न जाने की सलाह दी जाती है। जो लोग इतनी लम्बी यात्रा पैदल नही कर सकते, उनके लिए घोडे, कडी और डाडी का प्रबन्ध रहता है। घोडे पर आने जाने का किराया ३००० और ४००० रुपये के बीच होता है। डाडी और महगी पडती है, क्योकि उसे चार आदमी उठाते है।

आय का स्रोत

यह यात्रा कश्मीर के लोगो के लिए आय का साधन है। डेढ लाख से अधिक यात्री यहा आते है। उनके रहने भोजन, यात्रा की सुविधाए जुटाने मे हजारो लोगो को रोजगार मिलता है। इसलिए कश्मीर के आम लोग तो इस यात्रा से प्रसन्न ही होते है। दुकानदार भी प्रसन्न रहते हैं, क्योकि यात्री कुछ न कुछ सामान खरीद कर ही लोटते है।

परन्तु कुछ वर्षो से कश्मीर मे अशान्ति और उपद्रव चल रहा हे। कुछ राजनीतिक नेता चाहते है कि कश्मीर को पाकिस्तान मे मिलाया जाये कुछ अन्य चाहते है कि कश्मीर को एक अलग स्वतत्र राज्य बनाया जाये। भारत सरकार का कहना है कि कश्मीर विधिवत् भारत का अभिन्न अग बन चुका है और उसे पाकिस्तान मे मिलाने या अलग राज्य बनाने का कोई प्रश्न ही नही उठता।

कई बाहरी देश इस मामले मे बडी रुचि ले रहे है और धन, शस्त्रास्त्र और प्रशिक्षित सैनिक भेज कर कश्मीर मे उत्पात करा रहे है। बम विस्फोटो और गोलीबारी मे ५० हजार से अधिक लोग मारे जा चुके है और अरबो रुपये की सम्पत्ति नष्ट हो चुकी है। इस रक्तपात को 'जिहाद' का नाम दिया गया है।

यात्रियो पर जिहादी हमले

आतकवादी जिहादी मुसलमान है। उन्होने हिन्दुओ की अमरनाथ यात्रा को भी अपना निशाना बनाया है। पिछले साल एक यात्री शिविर पर रात मे हमला करके २५ यात्रियो को गोली मार दी गई थी। इस साल १३ यात्रियो को शेषनाग मे बम विस्फोट और गोली से मारा गया है।

यात्रियो और सरकार ने इस यात्रा को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है। चाहे जो हो, यात्रा जारी रहेगी। यह धर्म का प्रश्न है। हम मर जायेगे, पर धर्म नही छोडेगे।

यह सही मनोवृत्ति नही है। यह ठीक है कि तीर्थयात्रा आनन्द की वस्तु है, परन्तु अशान्ति के दिनो मे सुरक्षा बलो पर एक अतिरिक्त भार डालना समझदारी का काम नही है।

कश्मीर सरकार के बहुत से अधिकारियो की जिहादियो से सहानुभूति है। जनसाधारण आतकवादियो से भी डरते है और सुरक्षा बलो से भी। आतकवादी जिसे सरकारी गुप्तचर समझते है, उसे गोली मार देते है। सुरक्षा बल जिसे आतकवादी का सहयोगी समझे, उसे गोली नही मार सकते। उसे गिरफ्तार भी नही कर सकते। कुछ भी करते ही न्यायालय, मानव अधिकार आयोग, अखबार और विपक्षी सासद ऐसा तूफान खडा कर देते है कि ऐसा प्रतीत होने लगता है कि सरकार अत्याचार कर रही है।

यात्रा स्थगित करना भला होगा

ऐसी दशा मे अच्छा यह होगा कि अमरनाथ यात्रा को तब तक के लिए बन्द कर दिया जाये, जब तक कि कश्मीर मे पूरी तरह शान्ति स्थापित न हो जाये। सुरक्षा बल अपनी सारी शक्ति आततायियो को कुचलने मे लगा सके।

कश्मीर मे आतकवादियो से निपटने का एकमात्र उपाय यह है कि अनुच्छेद ३७० को तुरन्त समाप्त किया जाये। जब सविधान को धता बता कर ३ लाख कश्मीरी पडितो को घाटी से खदेड दिया गया, सविधान और कश्मीर की विधान सभा उनकी रक्षा न कर सकी, तो उस सविधान की और विधान सभा की कोई पवित्रता नही रह गई है। कश्मीर मे हिन्दुओ, सिखो, ईसाइयो को जमीन खरीदने की और वहा जा बसने की छूट दी जाये। तब आतकवादियो के छिपने के अड्डे स्वत समाप्त हो जायेगे।

अनुच्छेद ३७० नागपाश है

अनुच्छेद ३७० एक बडा नागपाश है, जिसने भारत को जकड रखा है। उसकी आड मे कश्मीर को पूरी तरह मुस्लिम प्रदेश बना दिया गया है। इससे जिहादियो को पूरी सुरक्षा प्राप्त हो गई है। अनुच्छेद ३७० को हटाते ही वहा जा कर बसने के इच्छुक हिन्दुओ और सिखो की कोई कमी नही रहेगी। जिहादियो के हौसले तो अनुच्छेद ३७० ने बढाये हुए है।

जब जिहादियो की कमर तोड दी जाये और कश्मीर मे शान्ति एव सौहार्द्र स्थापित हो जाये, उसके बाद ही अमरनाथ यात्रा फिर शुरू करना उचित होगा।

उपहार जनरल स्टोर, रेलवे रोड, हरिद्वार

(पृष्ठ ८ का शेष)

आचार्य भगवानदेव चैतन्य जी डी० ए० वी० का० प्रबन्ध समिति के उन प्रतिष्ठित महानुभावो के साथ, जिन्होने वैदिक चेतना शिविर में भाग लेने वाली महिला शिक्षको को आशीर्वाद दिया।

आचार्य भगवानदेव चैतन्य और उनकी आदरणीय पत्नी श्रीमती सत्यप्रिया जी का इस कालेज मे शुभागमन पर भव्य स्वागत किया गया।

(पृष्ठ ७ का शेष)

कश्मीर की करुण कष्ट कथा

कश्मीर की विशेष स्थिति स्वीकार की। ७ अगस्त १९५२ को श्री नेहरू ने ससद मे घोषणा की कि 'जम्मू कश्मीर के लोग सप्रभुता सम्पन्न' है।

डा. मुखर्जी की जेल मे मृत्यु

२२ जून १९५३ को जनसघ के सस्थापक अध्यक्ष श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी की श्रीनगर मे जेल मे मृत्यु हो गई। श्री अटल बिहारी वाजपेयी तब उनके सचिव थे और उनके साथ पकडे गये।

९ अगस्त १९५३ को शेख अब्दुल्ला को राज्य के विरुद्ध षड्यत्र रचने के आरोप मे गुलमर्ग मे गिरफ्तार कर लिया गया।

चीनी हमला

२० अक्टूबर १९६२ को चीन ने भारत पर आक्रमण किया और लद्दाख मे भारत के १५००० वर्ग मील क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। यह क्षेत्र तब से उसके अधिकार मे है।

३० मार्च १९६५ को जम्मू कश्मीर राज्य के सविधान मे सशोधन किया गया, जिसके अनुसार सदर-ए-रियासत और प्रधान मत्री के पद बदल कर राज्यपाल और मुख्यमत्री कर दिये गये।

पाकिस्तान ने युद्ध छेडा

अगस्त १९६५ मे पाकिस्तान ने भारत पर जोरदार आक्रमण कर दिया, जिसमे पाकिस्तान को तो दिल्ली पहुचने मे सफलता नही मिली, पर भारतीय सेना लाहौर पहुच गई। ११ जनवरी १९६६ को भारत के प्रधानमत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री पाकिस्तान से समझौता वार्ता करने ताशकन्द गये। रहस्यमय ढग से उनकी वही पर मृत्यु हो गई।

८ जनवरी १९७१ को शेख अब्दुल्ला और उनके साथियो को कश्मीर से निष्कासित कर दिया गया। पुलिस ने एक उग्रवादी गिरोह 'अल सफा' का सफाया कर दिया।

दिसम्बर १९७१ मे पाकिस्तान ने भारत पर तीसरी बार आक्रमण कर दिया। उस समय बगला देश मे स्वाधीनता सग्राम चल रहा था। उसमे भारत ने बगलादेशियो का साथ दिया था। उसी का बदला अब पाकिस्तान कश्मीर मे ले रहा है। इस युद्ध मे पाकिस्तान फिर हारा। उसके ९३ हजार सैनिक भारत के पास युद्धबन्दी थे। २ जुलाई १९७२ को श्रीमती इन्दिरा गाधी और श्री भुट्टो के बीच शिमला समझौता हुआ। युद्ध विराम रेखा का नाम बदल कर नियत्रण रेखा कर दिया गया।

फरवरी १९७५ मे शेख अब्दुल्ला का श्रीमती इन्दिरा गाधी से समझौता हुआ और वह सैयद मीर कासिम के स्थान पर मुख्य मत्री बने।

११ फरवरी १९८४ को उग्रवादी नेता मकबूल भट्ट को दिल्ली मे तिहाड जेल मे फासी दे दी गई।

सन् १९८८ मे उग्रवादियो ने ए के ४७ राइफलो से कश्मीर के डी आई जी के घर पर हमला किया। तब से सन् २००० के बीच ३५००० व्यक्ति मारे जा चुके है। हताहतो की सख्या ८० हजार बताई जाती है।

२१ फरवरी १९९९ को लाहौर मे प्रधान मत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और प्रधान मत्री श्री नवाज शरीफ ने लाहौर घोषणा पर हस्ताक्षर किये।

५ मई को पाकिस्तानी सेनाए बटालिक मे घुसपैठ करती देखी गई। ६ मई को उनको हटाने के लिए जो भारतीय टुकडी भेजी गई, वह लौटी ही नही। उनके क्षत-विक्षत शव ही मिले।

कारगिल युद्ध

२६ मई को भारतीय सेना ने 'आपरेशन विजय' शुरू किया। कारगिल क्षेत्र को खाली कराने का यह अभियान २६ जुलाई १९९९ को समाप्त हुआ, जिसमे भारी हानि उठा कर भारत ने विजय प्राप्त की।

कश्मीर मे आतकवादी हमले और तेज हो गये। २६ नवम्बर २००० को श्री अटल बिहारी ने उग्रवादियो के विरुद्ध इकतरफा युद्ध विराम की घोषणा कर दी। उससे क्या लाभ हुआ, यह तो सरकार ही जाने, पर तीन बार उस युद्ध विराम को बढाया गया।

उसे निष्फल समझ कर केन्द्रीय सरकार ने २१ मई २००१ को इकतरफा युद्ध विराम समाप्त कर दिया और पाकिस्तान के सैनिक शासक जनरल मुशर्रफ को बातचीत के लिए दिल्ली आने का निमत्रण दिया।

शिखर वार्ता

१४ जुलाई २००१ को जनरल परवेज मुशर्रफ पाकिस्तान के राष्ट्रपति के रूप मे नई दिल्ली पहुचे, जहा उनका भव्य स्वागत किया गया। श्री वाजपेयी और श्री मुशर्रफ की शिखर वार्ता के लिए आगरा स्थान चुना गया, जो मुगल काल मे भारत की राजधानी रह चुका है।

शिखर वार्ता को विफल करने के लिए पाकिस्तानी जिहादियो ने कश्मीर मे अपने हमले तेज कर दिये। १५ जुलाई को कुछ आशा बधी थी कि शायद कुछ समझौता हो सके, परन्तु १६ जुलाई को यह वार्ता विफल हो गई, क्योकि दोनो ही पक्ष अपने पूर्व विचारो पर अडे रहे।

सम्भावना है कि कश्मीर मे उग्रवादी हिसा और भडकेगी, जिसका कष्ट कश्मीरी जनता को भुगतना पडेगा।

५२२, कटरा ईश्वर भवन
खारी बावली, दिल्ली-६

(पृष्ठ १ का शेष)

स्वाध्याय और प्रवचनों का ..

कहा गया कि शूद्रो और स्त्रियो को पढने लिखने की आवश्यकता नही।

स्त्रियों और शूद्रो का उपनयन नहीं

उपनयन सस्कार, जो एक प्रकार से विद्यालय मे प्रवेश पाने जैसा था, शूद्रो और स्त्रियो के लिए मना कर दिया गया। ध्यान देने की बात यह है कि इसमे सब वर्णो की स्त्रियो को शूद्रो के स्तर पर ला रखा गया।

स्वामी दयानन्द जी ने शूद्रो और स्त्रियो को वेद पढने का अधिकार दिलाया। परन्तु लगता है कि यह अधिकार पूरे मन से नही दिया गया। सस्कारविधि मे उपनयन सस्कार के प्रसग मे लिखा है कि आठवे वर्ष मे ब्राह्मण के बालक का, ग्यारहवे वर्ष मे क्षत्रिय और बारहवे वर्ष मे वैश्य के बालक का यज्ञोपवीत करे तथा ब्राह्मण के १६, क्षत्रिय के २२ और वैश्य के २४ वर्ष से पूर्व यज्ञोपवीत सस्कार होना चाहिए। यदि पूर्वोक्त काल मे इनका यज्ञोपवीत न हो, तो वे पतित माने जावे। यह आश्वलायन गृह्यसूत्र १ १९ १-६ का प्रमाण है।

इसके बाद मनुस्मृति के आधार पर कहा गया है कि ब्राह्मण के लडके का पाचवे, क्षत्रिय के लडके का छठे और वैश्य के लडके का आठवे वर्ष मे यज्ञोपवीत करे।

परन्तु किसी भी शास्त्रकार के वचन से शूद्र के बालक के लिए उपनयन की कोई आयु नही बताई गई। हिन्दुओ (आर्यो) की कुल जनसख्या मे से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य मिला कर ४० प्रतिशत नही होगे। बाकी ६० प्रतिशत शूद्र है। उनके लिए भी उपनयन की कोई व्यवस्था होनी चाहिए। अन्यथा उनके लिए वेद पढने के अधिकार का कोई अर्थ नही रहता।

बालिकाओ का उपनयन क्यो नही?

सस्कार विधि मे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यो के भी बालको के लिए ही उपनयन का विधान किया गया है। कहा जा सकता है कि बालक शब्द मे बालिका का भी समावेश हो जाता है। परन्तु यदि हम मानते है कि स्त्रियो को भी विद्या (वेद) पढने का अधिकार होना चाहिए, तो स्पष्ट कह देने मे भी कोई हर्ज नही है। हमे न केवल **सत्य वक्ता**, अपितु **स्पष्ट वक्ता** भी होना चाहिए। **'अश्वत्थामा हत नरो वा कुञ्जरो वा'** से काम नही चलेगा। स्पष्ट लिखा जाना चाहिए कि ब्राह्मण बालक-बालिकाओ का पाचवे वर्ष मे, क्षत्रिय बालक-बालिकाओ का छठे वर्ष मे और वैश्य बालक-बालिकाओ का आठवे वर्ष मे उपनयन होगा।

शूद्र का भी उपनयन हो

शूद्र का उपनयन होगा या नही, इसे भी अस्पष्ट न रख कर दो टूक सत्य कहना उचित होगा। जब हम जात पात, छुआछूत, ऊच नीच को समाप्त करने के लिए आन्दोलन छेडने की बात करते है, तब स्पष्ट है कि हम इस विषय मे किसी भी वर्ण के साथ भेदभाव नही बरत सकते। सब वर्णो का उपनयन एक आयु मे श्रावणी पर हो। आश्वलायन और मनु अपने समय के लिए प्रमाण रहे होगे। आज के लिए हमे स्वय मनु बनना होगा और स्वामी दयानन्द जी ने स्त्रियो और शूद्रो को जो वेदाध्ययन का अधिकार दिलाया है, उसे सच्चे मन से कार्यान्वित करना होगा। वेद पढने का अधिकार हो और उपनयन न हो, ये आत्म विरोधी बाते है।

यदि इस श्रावणी पर्व पर हम स्त्री और पुरुष का, द्विज और शूद्र का भेदभाव समाप्त करके सबको एक पात मे बिठा सके, तो हमारा श्रावणी पर्व, उपनयन पर्व सफल हो जाय।

२१०, वैशाली, पीतमपुरा, दिल्ली

(पृष्ठ २ का शेष)

रक्षाबन्धन का पर्व

अपनी आखो के सामने कोई भी अत्याचार होते देख कर क्षत्रियो का खून खौलने लगता था और वे दूसरो की रक्षा के लिए जूझने को तैयार हो जाते थे। वे चोट भी खाते थे और मुकदमे भी लडते थे, परन्तु गुडो को रास्ते पर लाना अपना कर्तव्य समझते थे।

क्षत्रियों की वह नस्ल ही न जाने कहा चली गई। सभी लोग बनिये बन गये है। हर बात मे, हर कदम पर नफे नुकसान का हिसाब लगाकर चलने वाले बनियें। बहुत दूर की सोचने वाले बनिये। पैसे के लिए मूछे नीचे कर लेने वाले बनिये।

इन बनियो को फिर क्षत्रिय बनना है। धन सम्पत्ति चचल है, नश्वर है, यहीं धरी रह जाती है। वीरतापूर्वक जीवन ही सुखी जीवन है। वीरत्व का यह आवेश अबलो और अबलाओ की रक्षा मे काम आना चाहिए। रक्षा बन्धन का बहिन द्वारा बाधा गया सूत्र केवल अपनी सगी बहिन की रक्षा का ही व्रत नही, अपितु सभी धर्म बहिनों की रक्षा का व्रत है।

सभी युवको को चाहिए कि वे बहिनो से राखी बधवाये, धर्मबहिनो से राखी बधवाये और रुपये देने के बजाय मन मे यह सकल्प करे कि जब भी, जहा भी किसी बहिन को रक्षा की आवश्यकता होगी, वहा वे तुरन्त सहायता करेंगे, चाहे उसके कारण उन्हे कितनी भी असुविधा और कष्ट क्यो न उठाना पडे। तभी रक्षा बन्धन सार्थक होगा।

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर रोड,
हरिद्वार

समाचार जगत्

सत्यार्थ प्रकाश शिक्षण शिविर

आर्य समाज विवेक विहार दिल्ली मे गत दिनाक ११ ६ २००१ से २० ७ २००१ तक ४० दिवसो का "सत्यार्थ प्रकाश शिक्षण शिविर" आयोजित किया गया, जिसमे प्रसिद्ध धर्माचार्य डा० नरेन्द्र वेदालकार द्वारा प्रतिदिन एक घटा सभी समुल्लासो की विधिवत् शिक्षा प्रदान की गई। साथ ही सभी सम्बन्धित विषयो पर विस्तार से शका समाधान भी किया गया जिससे भाग लेने वाले सभी अत्यधिक लाभान्वित हुए।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज विवेक विहार दिल्ली मे आगामी दिनाक ८.१० २००१ से १४ १० २००१ तक वेद प्रचार सप्ताह आयोजित किया जा रहा है, जिसमे हरिद्वार से प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी पधार रहे है। प्रतिदिन रात्रि मे ८ बजे से १० बजे तक भजन एव प्रवचन कार्यक्रम होगा। श्री गुलाबसिह राघव जी के सुमधुर भजन होगे। दिनाक १४ १० २००१ को पूर्णाहुति दिवस पर अनेको विद्वानो के प्रवचन होगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री वेदव्रत शर्मा जी मुख्य अतिथि होगे।

वैदिक संस्कार शिविर सम्पन्न

आर्य समाज एव डी० ए० वी० कावेट अकोला द्वारा दिनाक ९ ७ २००१ से प्रारम्भ हुए वैदिक सस्कार शिविर का समापन समारोह दिनाक १५ ७ २००१ को साय आर्य समाज भवन मे सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षा श्रीमती डा० विद्या दीक्षित, अध्यक्षा डी० ए० वी० कान्वेट थी। विशेष अतिथि अकोला के विधायक श्री लालजी गोवर्धनजी शर्मा, स्वामी सकल्पानन्द उदयपुर, प्रा० यादव वक्ते, श्री ठाकुर आदि थे। ८वी एव ९वी कक्षा के छात्रो तथा बाहर से आयी हुई कन्याओ ने शिविर मे भाग लिया। शिविर नि शुल्क था। वैदिक विचारधारा का निर्देशन स्वामी सकल्पानन्द जी ने किया। प्रा० वक्ते, प्रा० मजुलता विद्यार्थी, डा० दिलीप मानकर, डप० हुकुमसिह ज्व्हेरी आदि प्रवक्ताओ ने सतवाणी, स्वास्थ्य, स्वामी दयानन्द की देन, तथा आर्य समाज का राष्ट्रोत्थान मे योगदान आदि विषयो पर मार्गदर्शन किया। मा० गोवर्धन जी शर्मा, सदस्य विधान सभा, ने सस्कारो की महता, आवश्यकता एव पोल्यो से तनावग्रस्त वातावरण से छुटकारा, आर्य समाज द्वारा चालित उत्तम-शाला आदि की चर्चा की। सभा सचालन सौ० डाहाके ने किया। आर्य समाज की ओर से शिविरार्थियो को बाड बुक, पेन, दोपहर का नाश्ता दिया गया।

डी० ए० वी० कान्वेट की कु० निशिदा रांदड प्रावीण्य प्राप्त (मेरिट) कर उत्तीर्ण हुई एव इस शाला के ११ विद्यार्थी प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए, यह उल्लेखनीय है।

डा० दिलीप मानकर जी और श्री जयसिह जव्हेरी ने शिविर को सफल बनाने मे बहुत परिश्रम किया।

आर्य समाज जामनगर द्वारा "वृष्टि यज्ञ" सम्पन्न

आर्य समाज जामनगर द्वारा शहर और आसपास के ग्रामो मे दिनाक १ ७ २००१ रविवार से "वृष्टि यज्ञ" का आयोजन किया गया, जिसमे "वृष्टि यज्ञ" के निमित्त तैयार की गई विशेष प्रकार की सामग्री की आहुतिया यजमानो द्वारा प्रदान की गई। परिणामस्वरूप ईश्वर कृपा मे दिनाक ४ ७ २००१ को अच्छी (सन्तोषकारक) वर्षा हुई, जो एक सप्ताह तक निरन्तर चलती रही।

भविष्य मे भी आवश्यकता हुई तो समयानुकूल सभी प्राणियो के कल्याणार्थ जामनगर शहर और आसपास के ग्रामो मे "वृष्टि यज्ञ" का आयोजन किया जायेगा।

माता लीलावती जी का निधन

बडे दु ख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता स्वामी आत्मबोध सरस्वती (पूर्व नाम महात्मा आर्य भिक्षु) जी की धर्मपत्नी माता लीलावती जी का देहान्त दिनाक २३ ६ २००१ को हो गया। वह आर्य वानप्रस्थ आश्रम की ३० वर्षो से स्थायी सदस्या थी। पूर्ण वैदिक रीति से उनकी अन्त्येष्टि की गई, जिसमे आर्य जगत् के महानुभावो ने सम्मिलित होकर दिवगत आत्मा को भावपूर्ण विदाई दी। तत्पश्चात् दिनाक २६ १६ २००१ को उनकी स्मृति मे और आत्मिक शाति हेतु उनकी कुटिया पर शान्ति यज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमे आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध प्रवक्ताओ ने एव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल जी, उपकुलपति डा० वेदप्रकाश शास्त्री जी, कुलसचिव डा० महावीर प्रसाद जी एव योगविभाग के डा० जयदेव जी तथा गुरुवर रामनाथ जी, जिले के आर्य समाजो के प्रधान श्री देवराज जी, व आश्रम के सभी लोगो की ओर से आश्रम प्रधान श्री सुभाषचन्द्र जी, डा० रामकृष्ण जी एव अन्य अनेक विद्वानो ने दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि सुमन अर्पित किये।

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मुजफ्फरपुर द्वारा रक्षाबधन दिनाक ४ ८ २००१ से कृष्णाष्टमी दिनाक १२ ८ २००१ तक आर्य समाज मन्दिर, जवाहर लाल रोड, मुजफ्फरपुर मे मनाया जायेगा। इसमे देश के सुप्रसिद्ध महोपदेशकों तथा भजनोपदेशको के प्रवचन एव भजन होगे।

प्रतिदिन प्रात काल हवन यज्ञ के बाद प्रवचन एव भजन तथा रात्रि मे ७ बजे से १० बजे तक भी प्रवचन एव भजन होगे।

प्रतिदिन अपराह्न ३ बजे से ६ बजे तक नगर के विभिन्न नुक्कडो पर भी वेद प्रचार कार्य होगा। रक्षाबधन की रात्रि मे श्रावणी उपाकर्म रक्षाबधन एव कृष्णाष्टमी की रात्रि मे योगिराज श्री कृष्ण पर प्रवचन होगे

अत अनुरोध है कि निम्नलिखित कार्यक्रमो मे बधु-बाधवो के साथ उपस्थित होकर लाभ उठावे तथा इसमे तन, मन, धन से सहयोग करे।

कार्यक्रम प्रात काल ७ बजे से ९ बजे तक हवन यज्ञ। ९ बजे से ११ बजे तक प्रवचन एव भजन। दोपहर ३ बजे से ६ बजे तक नगर के चौराहो पर प्रवचन तथा भजन। रात्रि ७ बजे से १० बजे तक प्रवचन एव भजन।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सुन्दर नगर कालोनी (हि० प्र०) का वार्षिक उत्सव २५ जून से १ जुलाई, २००१ तक बडे ही उत्साह के साथ मनाया गया। आचार्य भगवान देव "चैतन्य" जी के ब्रह्मत्व मे चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के महामत्री आचार्य रामानन्द जी के सारगर्भित प्रवचन हुए और डा० जीतराम, प० हरिश्चन्द्र, वन्दना सत्यप्रिया, सुषमा और सुमन ने मनोहर भजनोपदेशो एव भजनो द्वारा जनसाधारण को रसास्वादन कराया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश सरकार के वनमत्री माननीय डा० रूपसिह जी थे। उन्होने आर्यसमाज द्वारा किए गए सामाजिक सुधारो की चर्चा करते हुए कहा कि आज भी आर्य समाज ही राष्ट्र का चहुमुखी विकास करने मे सक्षम है। सभा के कार्यकारी प्रधान आचार्य भगवानदेव "चैतन्य" जी की प्रेरणा से उन्होने आर्य समाज को एक लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा भी की। आचार्य भगवान देव चैतन्य ने मत्री महोदय का आभार व्यक्त किया।

आर्य समाज मिटो रोड फिर बनाया जाये

मोरवी, भावनगर, पोरबन्दर, टकारा, कुन्तासी और राजकोट के आर्य समाजो की ओर से १०० से अधिक लोगो की ओर से भारत के प्रधानमत्री एव गृहमत्री को निम्नलिखित पत्र भेजा गया है

आदरणीय, प्रधानमत्री श्री, गृहप्रधानश्री,
भारत सरकार नई दिल्ली

वदेमातरम्। सविनय निवेदन है कि दिल्ली स्थित मिटो रोड पर वर्षो से आर्य समाज स्थित था, जो एकाएक ध्वस्त कर दिया गया है।

हम चाहते है, उस जगह पर सुन्दरतम आर्य समाज का निर्माण हो।

आर्य समाज क्रान्तिकारी, त्यागी व बलिदानी आदोलन है, जो सबको विदित है। वह राष्ट्रीय रक्षा, समाजसेवा जैसे अनेक कार्यक्रम मे सम्बन्धित व सलग्न है।

अत हम आपसे पुन निवेदन करते है, आर्य समाज उसी जगह बने व तोडने वाले को दडित किया जाये।

योग एव प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

आर्य समाज सरस्वती विहार दिल्ली मे १ अगस्त से ११ अगस्त २००१ तक लगाया जायेगा। इसमे असाध्य रोगो— शूगर, हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर, गठिया, बवासीर, दमा, जोडो का दर्द, अनिद्रा, तनाव, मोटापा, पेट आख, कान, नाक सम्बन्धी रोग, चर्म रोग आदि की चिकित्सा की जायेगी।

इस अवसर का पूर्ण लाभ उठाए। शिविर का उद्घाटन दिनाक १ ८ २००१ को साय ४ बजे आचार्य अखिलेश्वर जी करेगे।

वेद प्रचार सप्ताह व वार्षिक उत्सव

आर्य समाज स० पटेल मार्ग, खलासी लाइन, सहारनपुर के सभागार मे प्रतिदिन ४ अगस्त रक्षा बन्ध से १२ अगस्त २००१ जन्माष्टमी तक मनाया जायेगा। कार्यक्रम सध्या हवन ७ बजे से ८ बजे प्रात । भजन व प्रवचन ८ से १० बजे प्रात । भजन एव वेद प्रवचन ८ से १० बजे रात्रि मे होगे।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर नगरोटा बगवा, जिला कागडा (हि० प्र०) मे दिनाक ६ अगस्त से १२ अगस्त २००१ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव गीता कथा का आयोजन किया जा रहा है। इस पावन अवसर पर डी० ए० वी० कालेज कागडा के प्राचार्य डा० मनोहरलाल आर्य, प्रसिद्ध भजनोपदेशक आचार्य प० यादवेन्द्र शर्मा जी (गढी वाले) तथा अन्य विद्वानो का पधारने का कार्यक्रम है। यज्ञ के ब्रह्मा प० रामाशीष शास्त्री जी होगे।

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R. No D L 11082/2001
POSTED AT N D P O ON 1/2-8-2001 दिनाक ५-८-२००१

[illegible]

युवा चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

भिवानी मे आयोजित युवा चरित्र निर्माण शिविर के उद्घाटन अवसर पर डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के उपप्रधान डा० सी० प्रकाश जी को महर्षि दयानन्द का चित्र भेट करते हुए आर्य समाज घटाघर के प्रधान श्री अमृत आर्य और आर्य समाज कृष्ण कालोनी के प्रधान श्री विद्यासागर जी। साथ मे खडे है केन्द्रीय आर्य समाज भिवानी के प्रधान डा० धर्मदेव विद्यार्थी डी० ए० वी० स्कूल भिवानी।

भिवानी मे राज्य स्तर पर आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के उपप्रधान डा० सी० प्रकाश जी ने किया तथा अध्यक्षता भिवानी के अतिरिक्त उपायुक्त श्री आर० पी० गुप्ता ने की। समारोह का सयोजन आर्ययुवक समाज के डा० धर्मदेव विद्यार्थी ने किया। डा० सी० प्रकाश ने अपने भाषण मे कहा कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थान स्थान पर आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविरो का आयोजन किया गया है, क्योकि युवको को आर्य समाज मे ला कर ही हम धार्मिक व देशभक्त बना सकते है। अत शिविर को सफल बनाने का प्रयास करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। उन्होने आर्य समाजो के सभी अधिकारियो को आर्य समाज का एक मच केन्द्रीय आर्य समाज बनाने पर बधाई दी। इस शिविर के अध्यक्ष श्री अत्तर सिह क्रान्तिकारी की टीम ने पूर्ण मनोयोग से कार्य किया तथा श्री रामफल आर्य ने कडी मेहनत कर शिविर को सफल बनाया। शिविर मे डा० अमीरसिह, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी जगतमुनि, प्रो० ओमकुमार, श्री वी० ऐन० चावला, बहन दर्शनादेवी, श्री अमृतसिह आर्य, श्री रामस्वरूप आर्य आदि आर्य नेताओ ने बौद्धिक प्रशिक्षण दिया। श्री रामनारायण सिवानी वाले, श्री जगदीश सर्राफ, श्री निर्मला सर्राफ तथा सुग्रीव सर्राफ व श्री वेदप्रकाश आर्य व बिमलेश आर्य ने धन सग्रह कर उत्तम योगदान दिया। प्रो० सारस्वत मोहन मनीषी ने अपनी कविताओ से देश सेवा की प्रेरणा दी।

आर्य समाज के प्रचार का एक अभिनव प्रयास

आर्य समाज वीर सावरकर नगर (जयपुर हाउस) आगरा मे महीने के अन्तिम रविवार को बच्चो का विशेष कार्यक्रम होता है। उस दिन बच्चे ही यजमान बनते है और यज्ञ पर बैठते है। वही भजन, प्रवचन, सुभाषित कविता आदि बोलते है। एक सौ बीस के करीब बच्चे आ जाते है।

स्कूलो मे छुट्टिया थी, इसलिए जून के अन्तिम रविवार को बच्चो की वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विषय था (१) आर्य समाज के दस नियमो मे से किसी एक की व्याख्या करना। (२) स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की किसी घटना का वर्णन करना। करीब सत्तर बच्चो ने प्रतियोगिता मे भाग लिया। इन बच्चो मे चारो वर्णो के ब[illegible]। सभी आयु वर्ग के थे। प्रथम दस स्थान पाने वाले बच्चो को विशेष पुरस्कार दिये गये। ६ वर्ष से छोटे ६ बच्चो को अच्छा प्रदर्शन करने के लिए उत्साहवर्धन पुरस्कार दिया गया। प्रतियोगिताओ मे भाग लेने वाले बाकी सभी ५४ बच्चो को स[illegible] पुरस्कार दिये गये।

बडी सख्या मे अभिभावक और आर्य समाज के सदस्य उपस्थित थे। उनके साथ आए करीब ६० बच्चो को भी, जिन्होने प्रतियोगिता मे भाग नहीं लिया था, विशेष प्रसाद स्टेज पर बुला कर दिया गया, जिससे आगे भी कार्यक्रमो मे भाग लेने के लिए उत्साह बढे।

इस कार्यक्रम की सफलता के लिए श्री कुलदीप कृष्ण महाजन द्वारा लिखित पुस्तक "प्रेरणा प्रसग" का विशेष हाथ था। इस छोटी सी पुस्तक मे स्वामी जी के जीवन की ६० घटनाओ का सकलन किया गया था, जिससे बच्चो को सहायता मिली।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विशेष अनुयायी श्री राजेन्द्रप्रसाद कुलश्रेष्ठ ने की। उन्होने कहा कि बच्चो के अन्दर आर्य समाज के सस्कार उनको भविष्य मे श्रेष्ठ मानव बनने की प्रेरणा देगे। श्रीमती राजकुमारी जी ने पुरस्कार वितरण किया। वह आर्य समाज शाहगज आगरा की प्रधाना भी है। उन्होने कहा कि बच्चो से स्वामी के जीवन की कोई प्रमुख घटना अछूती नही रही। पूरे परिवार ने बच्चो को तैयार करने मे भाग लिया होगा और स्वामी जी को अच्छी तरह समझा होगा। एक बच्चा 'भालू से मुठभेड' वाली घटना सुनाने को आया था। वह मुठभेड शब्द भूल गया और अटक गया। उसकी मा भी बैठी थी। उसने छोटे भाई को भेजा कि शब्द 'मुठभेड' है। छोटे भाई ने बडे भाई को स्टेज के पास जाकर यह बता दिया। उसके पश्चात् उस बालक ने बडे अच्छे तरीके से घटना सुना दी। इससे प्रतीत होता है कि कैसे सकल परिवार बच्चे को सफल बनाने मे जुटा था। आर्य समाज के विचारो के प्रचार व प्रसार का यह तरीका अनूठा भी है और सफल भी।

शान्ति पाठ के पश्चात् सभी को प्रसाद वितरण किया गया। वार्षिक उत्सव जैसा उत्साह था। बच्चे अगले कार्यक्रम मे और भी तैयारी के साथ भाग लेने की मुद्रा मे विदा हुए।

क्या आप जानते हैं?

क्वेटा के जमात मौलवी नवाबजादा ताबीउल्लाह खान का एक साक्षात्कार फरवरी १९९९ मे पजगड से प्रकाशित होने वाली बलूची मासिक पत्रिका "जमहूरिया इस्लामी" मे प्रकाशित हुआ है। उस साक्षात्कार मे कुछ प्रमुख [illegible] हैं—

पाकिस्तान के सभी हिन्दुओ को मुसलम[illegible] ना "पाकिस्तान मे जमायत-[illegible] के सत्ता मे आते ही महिलाओ [illegible] अल्पसख्यको के मताधिकार समाप्त कर दिए जाएगे। केवल मुसलमान पुरुष ही मताधिकार का प्रयोग कर सकेगे और चुनाव लड सकेगे। अल्पसख्यको पर जजिया (गैर-मुस्लिमो पर धार्मिक कर) लगाया जाएगा। गैर-मुस्लिमो को इस्लाम मे लाने के लिए यह धन बल का काम करेगा। अल्पसख्यको को धन के दबाव या मनोवैज्ञानिक दबाव के तहत मुसलमान बनाया जाएगा।" अगस्त, १९४७ मे बटवारे के समय पाकिस्तान मे हिन्दुओ की जनसख्या १५ प्रतिशत थी, जो अब १ प्रतिशत से भी कम है। "बटवारे के आतक ने पाकिस्तान के हिन्दुओ को मुसलमान बनने पर मजबूर कर दिया।" मन्दिरो की तोडफोड के बारे मे उन्होने कहा "**बाबर ने अयोध्या में राम मन्दिर तोडा, क्योकि वह पक्का मुसलमान था।** इसी तरह पाकिस्तान का हर मुसलमान पाकिस्तान के मन्दिरो को तोडने की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेगा। हमारा मकसद हिन्दुस्तान के मुसलमानो को हिन्दुस्तानी मन्दिरो को भी तोडने के लिए तैयार करना था (जैसा कि घाटी मे राष्ट्र विरोधी मिलिटेंटो ने किया है)।"

पाकिस्तान हमेशा जेहाद का केन्द्र रहेगा। यह उस इस्लामिक हुकूमत का केन्द्र होगा, जिसकी हदे कश्मीर सहित वर्मा से अफगानिस्तान और श्रीलका से ताजिकिस्तान तक फैली होगी। और अन्त मे, जमात काफिर नियत्रित क्षेत्रो मे आतकवाद की सभी तरकीबो और मुस्लिम-नियत्रित क्षेत्रो मे समझौते की तरकीबो का उपयोग करेगी। इस मामले मे बगलादेश और हिन्दुस्तान के जमायती नेताओ ने पाकिस्तान की रहनुमाई कबूल कर ली है।

निर्वाचन

आर्य समाज नरेला दिल्ली-४०
प्रधान चौ० लायकराम जी
महामत्री : मा० पूर्णसिह जी आर्य
कोषाध्यक्ष · श्री ओमप्रकाश जी बागेश्वर

आर्य समाज शाहगज जौनपुर उ० प्र०
प्रधान : श्री सुभाषचन्द्र आर्य
मत्री : श्री प्रेमप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष . श्री सुरेन्द्रप्रसाद आर्य

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
वाजेगाव, नांदेड
प्रधान : श्री स्वामी श्रद्धानन्द
मत्री : श्री सुग्रीव बलीराम काले
कोषाध्यक्ष · श्री उग्रसेन राठौर

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-१
प्रधान—श्री वीरेन्द्र तलवाड
मत्री— श्री यशपाल मिगलानी
कोषाध्यक्ष—श्री विनोदकुमार महाजन

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत (हरियाणा)
प्रधान—श्री वेदपाल आर्य
मत्री—श्री सुरेन्द्रकुमार खुराना
कोषाध्यक्ष—श्री अशोककुमार आर्य

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक—उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशो मे ३० पौं० या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक २४
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, १२ अगस्त, २००१
भाद्रपद कृ०-८-वि० म०-२०५८
सप्ताह १२ अगस्त से १८ अगस्त

पन्द्रह अगस्त १९४७ की वह भाग्य निर्णायक रात

जब स्वतंत्रता देवी भारत भूमि पर उतरी

भारत १५ अगस्त १९४७ को स्वतत्र होगा, यह लार्ड लुई माउटबेटन ने तय किया था (कुछ सोच विचार कर नहीं, यो ही क्षणिक आवेश मे), परन्तु सत्ता हस्तान्तरण का सही मुहूर्त कौन सा हो, यह फलित ज्योतिष धुरन्धरो ने तय किया था। ठीक आधी रात का समय, जब घंटा और मिनट बताने वाली दो सुइया बारह बजे एक दूसरी के ऊपर होगी। इस समय यदि स्वतत्र भारत का जन्म हो, तो वह शान्ति, सुख और समृद्धि मे रह सकेगा। इसलिए प्रभात की प्रकाशभरी वेला के बजाय आधी रात का अधेरा समय चुना गया। बृहस्पतिवार समाप्त हो कर शुक्रवार शुरू होगा। असुर गुरु शुक्राचार्य का दिन।

वेद मत्रो से हवन

भारत की सविधान सभा केअध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद ने अपनी कोठी मे वेद मत्रो से हवन करवाया। इसमे कुछ ही देर बाद मत्री बनने वाले नर-नारी सम्मिलित हुए।

सविधान सभा ठसाठस भरी थी। सदस्य अपनी कुर्सियो पर बैठे घडी की सुइयो को देख रहे थे, जो मन्थर गति से १२ के अक की ओर बढ रही थीं।

नेहरू जी का कवित्वमय भाषण

अस्थायी सरकार के प्रधानमत्री श्री जवाहरलाल नेहरू खडे हुए। उन्होने इस अवसर के लिए कोई लिखित भाषण तैयार नहीं किया था। शब्द स्वत उनके मुख से निकलने लगे 'बहुत वर्ष पहले हमने नियति से एक वायदा किया था और अब समय आया है, जब हम पूरा न सही, उस वायदे को काफी कुछ निभा सकेंगे। बारह बजते ही, जब कि दुनिया सो रही है, भारत जीवन और स्वाधीनता मे जाग उठेगा।'

और भी बहुत से प्यारे प्यारे शब्द धाराप्रवाह उनके मुख से निकलते गये 'इतिहाम में एक क्षण आता है, कभी कभी ही आता है, जब हम प्राचीन से निकल कर नवीन मे प्रवेश करते है, जब एक युग समाप्त होता है और बहुत समय से दबा कर रखे गये राष्ट्र की आत्मा मुखर हो उठती है। 'इतिहास के उषा काल मे भारत ने अपनी अन्तहीन खोज यात्रा शुरू की थी और अनगिनत शताब्दिया उसके प्रयासो तथा सफलताओ और विफलताओ की गरिमा से भरी है। सौभाग्य और दुर्भाग्य, दोनो मे ही उसने उस लक्ष्य को आखो से ओझल नही होने दिया और न उस आदर्श को ही भुलाया है, जिससे उसे शक्ति प्राप्त होती रही है। आज हमारे दुर्भाग्य का एक युग समाप्त हुआ और भारत ने अपने स्वरूप की फिर खोज निकाला है।'

आज जय का गीत गाओ !

आज जय का गीत गाओ।
हर्ष के नारे लगाओ।

विजयिनी सेना हमारी,
शत्रुओ के छीन कर ध्वज,
छीन कर शस्त्रास्त्र उनके,
लिये बन्दी सैनिको को
आ रही है लौट रण से,
लहू से तन-वस्त्र लथपथ।
करो माथे तिलक उनके,
आरती उनकी उतारो।
प्रेम का मधुरस पिलाओ।
गले, छाती से लगाओ।
वाद्य ले कर मातृभू की
वन्दना के स्वर उठाओ।
गगन जिससे गूज जाये,
धरा जिससे सिहर जाये,
वह विजय का गीत गाओ।

स्वाधीनता का शख बजा

ज्यो ही घडी ने १२ बजाये, त्यो ही संविधान सभा का हाल शख की तीखी आवाज़ से गूज उठा। यह माना गया कि इस क्षण एक युग समाप्त हुआ और एक नये युग का आरम्भ हुआ।

उसके बाद नेहरू जी ने प्रस्ताव किया कि अब हम सब सदस्य खडे हो कर भारत और उसके निवासियो की सेवा करने की शपथ ले। शपथ ली ही जा रही थी कि आकाश मे घोर घन गर्जना हुई, जिससे ससद भवन काप सा उठा। साथ ही मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। स्वाधीनता समारोह मनाने के लिए खडी विशाल भीड बुरी तरह पानी मे भीग गई। परन्तु हर्ष के आवेश मे किसी ने भीगने की परवाह नहीं की।

नई दिल्ली मे स्वाधीनता प्राप्ति का उत्सव बडे जोश से मनाया गया। किसी भी होटल मे, रेस्तरा मे एक भी कुर्सी खाली नही थी। लोगो ने खाया, पिया, गाया और नाचे, खूब नाचे।

ससद से बाहर कुछ और रूप

ससद भवन के बाहर भी आनन्द काफी फीका हो गया था। वर्षा ने सारा मजा किरकिरा कर दिया था। रही सही कसर उन टेलीफोनो ने पूरी कर दी थी, जो पजाब, सिन्ध और उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त से आ रहे थे। उनमे भयावनी खबरे थीं कि कैसे शहर लुट रहे है, गाव जल रहे है और लाखो आदमी, मर्द, औरते और बच्चे, बूढे और बीमार जान बचाने के लिए घायल जानवर की तरह भाग रहे है।

यह सिलसिला कई दिन से, बल्कि सप्ताहो से चल रहा था। यह तय हो गया था कि सिन्ध, बलोचिस्तान, उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त तो निश्चित रूप से पाकिस्तान मे जायेगे, पजाब का पश्चिमी भाग पाकिस्तान मे जायेगा और पूर्वी भाग भारत मे रहेगा। परन्तु पश्चिमी और पूर्वी पजाब की सीमा रेखा कहा बनेगी, यह तय नही था।

श्री मुहम्मद अली जिन्ना मुस्लिम लीग के अध्यक्ष थे। वह समझते थे कि पाकिस्तान उनकी इच्छा से बन रहा है। पाकिस्तान बनाने केलिए और उसके प्रथम राष्ट्रपति बनने के लिए उन्होने बहुत प्रयत्न किया था और सफल भी हुए थे। परन्तु पाकिस्तान बनाने वाले दिमाग कोई और थे। श्री जिन्ना ने अपने भाषण मे कहा था कि पाकिस्तान हिन्दुओ का भी उतना ही होगा, जितना मुसलमानो का। यदि यह उनके मन की बात थी, तो यह मानी नही गई। जब से पाकिस्तान बनने की बात तय हुई, तभी से उसे इस्लामी देश बनाने का प्रयत्न शुरू हो गया। गैर मुस्लिमो को मारपीट कर, लूट कर भगा देना उनकी योजना का अग था। वह योजना क्रियान्वित की जा रही थी।

गुडो के गिरोह दूसरे शहरो से आते। परिचित को चाकू मारते थोडी हिचक होती है, अपरिचित को मारते कोई हिचक नही होती। धार्मिक उन्माद और लूट का लोभ जगाया गया। मुस्लिम पुलिस और सेना तटस्थ दर्शक बन कर हिन्दुओ को लुटते मरते देखती रही। हिन्दुओ के सामने बाप दादो के घर छोड कर भागने के सिवाय कोई विकल्प न रहा। जिन्होने अडियलपन दिखाया, उन्हे कत्ल कर दिया गया।

पजाब का रक्तस्नान

गाव देहातो मे हिन्दू आबादी कम थी, इसलिए उन्हे डराना भगाना आसान था। देहातो के हिन्दू इस आशा मे शहरो की ओर भागे कि वहा कुछ सुरक्षा होगी। परन्तु अगस्त के पहले सप्ताह से ही पाकिस्तानी इलाको मे हिन्दुओ के लिए सुरक्षा कही नही थी। आग लगने पर जैसे जगली जानवर भागते है, वैसे ही हिन्दू भारत की ओर भागने लगे।

भागने के लिए साधन नही थे। रेल स्टेशनो पर भगोडो की भीड थी, पर उन्हे ले जाने के लिए गाडिया नही थी। लोग पैदल, साइकिल से, जैसे भी हो सके, भारत की ओर चलते थे। बडे बडे काफिलो मे चलते थे, जिससे लुटेरे गिरोहो से बच सके, पर बचते नही थे। हथियारबन्द गिरोह रात मे और दिन मे भी धावा बोलते थे और न केवल सामान, बल्कि जवान स्त्रियो को ले भागते थे।

खाने को भोजन नही था। पानी था, पर पीने को नही। वर्षा होती थी, भिगोती थी। नदी नाले उमड कर बहते थे। रास्ता रोकते थे। भारत खबर पहुची, तो घर घर से रोटिया बनवा कर विमानो

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

वेद-सुधा

न झुकने के संकल्प वाला वीर प्रतिद्वन्द्वियों को हरा देता है

अहमेतान् शाश्वसतो द्वा द्वेन्द्र ये वज्र युधयेऽकृण्वत।

आह्वयमाना अव हन्मना हन दृढा वदन्ननमस्युर्नमस्विन । अथर्व, १० ४७ ६

अर्थ– (**ये द्वा द्वा**) ये जो दो दो मिल कर आने वाले (**वज्र इन्द्र**) वज्र धारण करने वाले मुझे इन्द्र को (**युधसे अकृण्वत**) युद्ध करने के लिए प्रेरित करते है, (**एतान् शाश्वसत**) उन बलशाली दिखाई पडने वाले (**आह्वयमानान्**) ललकार कर आगे आने वाले, (**नमस्विन**) किन्तु अन्त मे झुक जाने वाले, गिडगिडा कर क्षमा मागने वाले प्रतिद्वन्द्वियो को (**अह अनमस्यु**) कभी न झुकने वाला (**दृढा वदन्**) दृढ और स्थिर वाणी बोलता हुआ मै (**हन्मना**) मार डालने का मन बना कर (**अव अहनम्**) मार गिराता हू।

मनन—दो प्रकार के लोग है—नमस्यु और अनमस्यु। नमस्यु वे गुडे आतंकवादी है, जो छोटे दो दो तीन तीन के गिरोह बना कर शक्ति की धौस जमाते हुए आते है। निर्दोष, निरीह, नि शस्त्र लोगो को लूटते, पीटते, डराते धमकाते है। परन्तु जब शक्तिशाली वज्रधारी से सामना होता है, तो वीरता का मुखौटा उतार कर वे मेमने की तरह मिमियाने लगते है।

उस समय शक्तिशाली शासक का कर्तव्य है कि वह दृढ वाणी बोले। कभी युद्ध विराम की और शान्ति समझौते की मृदु वाणी बोल कर भ्रमित न हो। आक्रमण करने वाले, घर मे घुस कर ललकारने वाले शत्रु को मार डालने का पक्का मन बनाये। सदा अनमस्यु रह कर, कभी न झुकने वाला बन कर दृढ चित्त से आततायी शत्रु को मार ही डाले। आखिर वज्र है किसलिए?

आतकवादी, धौस जमाने वाले शत्रुओ से, चाहे वे पूर्व से आते हो, चाहे पश्चिम से, चाहे वे नगालैड मे हों, चाहे कश्मीर मे, निपटने का एक ही तरीका है सकल्प अनमस्यु रहने का हो, वाणी दृढ और स्थिर रहे, और मन शत्रु का समूल नाश करने का हो।

आक्रमण करने वाला शत्रु है, यह बात स्पष्ट रूप मे समझ ली जाये, पक्के तौर पर मान ली जाये। वह भी अपना ही भाई है, अपना ही खून है, यह बात मन से सदा के लिए निकाल दी जाये। कैसर की गाठ शरीर का अपना अग नही होती। वह मृत्यु का अग्रदूत होती है। उसे काट कर निकाल फेकना ही वाछनीय और परम आवश्यक होता है।

आततायी, हथियार ले कर मारने के लिए आने वाला व्यक्ति कभी भी दया का, समझौते का, शान्ति वार्ता का पात्र नहीं है। बलहीन, निस्तेज, अनिन्द्र लोग ही ललकारने वाले आतकवादी से समझौता करने की इच्छा रखते है। कूटनीति के नाम पर घुटने टेकते है। कभी युद्ध विराम करते है, कभी युद्ध शुरू करते है। न उनका मन दृढ होता है, न वाणी दृढ होती है। इससे प्रतिस्पर्धी हमलावर का हौसला बढता है। यदि दृढवाणी मे कह दिया जाये कि आतकवादी से कोई समझौता नही होगा, उसे मार डालना ही हमारा लक्ष्य है और उसे मार डालने का हम मन बना ले, तो हम आक्रमणकारी को अवश्य ही मार गिरायेगे।

डावाडोल चित्त, गोलमोल वाणी, शान्ति वार्ता, ये विजय मे बाधक है। अनमस्यु नमस्युओ पर सदा विजयी होता है। '**कट जाय सिर न झुकना, यह मत्र जपने वाले, वीरों का जन्मदाता यह देश हो हमारा।**'

विपत्ति में धैर्य, सुख में प्रभु स्मरण

□ **श्री देवेन्द्रकुमार बख्शी**

गुजरात मे भूचाल से आई विभीषिका ने सारे विश्व को झकझोर कर गहन शोक मे डुबो दिया। "इस हृदयविदारक घटना का कारण क्या हो सकता है?" यह एक पेचीदा प्रश्न है और इसके साथ ही उठ रहे है कुछ और महत्वपूर्ण प्रश्न– "क्या मानव की यही नियति है? क्या मृत्यु पर विजय पाई जा सकती है, क्या आपदाओ से उबरा जा सकता है, या फिर निरतर इनसे जूझते हुए इसी प्रकार डर डर कर जीना होगा?

भूचाल के आने का कोई कुछ भी कारण बताए, एक बात तय है कि इसके लिए हम सब उत्तरदायी है। स्वार्थवश किए गए हमारे ही कार्यो का यह दुष्परिणाम है। (क्या सचमुच?–स०) वेद और शास्त्रो मे इन प्रश्नो का सतोषजनक उत्तर दे दिया गया है।

सब प्रश्नो का उत्तर

ईश्वर के विधान मे उसकी श्रेष्ठतम कृति, मनुष्य, के लिए पूर्णत निर्भीक हो कर स्वच्छद विचरण करने की पूरी व्यवस्था है। मनुष्य की सारी समस्याओ, सारे प्रश्नो का उत्तर विद्यमान है। वेद कहता है

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत। अथर्व ११ ५ १९

अर्थात् ब्रह्मचर्य रूपी तप से दिव्य पुरुषो ने मृत्यु को जीत लिया।

तथा **तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्यो** । अथर्व० १० ८ ४४

अर्थात् ईश्वर को जान लेने से मृत्यु का भय नही रहता।

ईश्वर का सदेश हमे बार बार मिलता रहता है। तरह तरह से वह हमे समझाने का प्रयत्न करता रहता है। वह नही चाहता कि हम किसी भी प्रकार से दुख पाए। वह हमारा सहायक है, हर समय वह हमारी सहायता के लिए उत्सुक रहता है। आपदाए न आए, यह तो सभव नहीं, परन्तु किसी भी स्थिति मे हमे दुखी न होना पडे, यह सभव है।

सुख, दुख भी धन, सामान, सम्पत्ति की ही तरह कमाने, जोडने तथा खर्च किये जाने वाले तत्व है। जिस प्रकार शारीरिक धर्म निभाने से बीमारी निकट नही आ पाती (?) उसी प्रकार शारीरिक, सामाजिक एव आत्मिक धर्म निभाने से किसी भी प्रकार की विपदा से हम बच सकते है। "**धर्मो रक्षति रक्षित** "– जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा धर्म अर्थात् ईश्वर करता है। ईश्वर के साम्राज्य मे हिसाब सीधा सादा और स्पष्ट रहता है इस हाथ दो, उस हाथ लो।

सत्याचरण

सत्याचरण के सामने दुख और विपत्तिया टिक नही सकतीं। दुखो से निवृत्ति पाई जा सकती है। वह सत्य ज्ञान, जिससे हम दुखो पर विजय प्राप्त कर सकते है, सरल है, सुलभ है तथा प्रत्येक साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी उसे आसानी से समझ सकता है।

यह एक विडम्बना ही है कि इतना सब कुछ सुलभ होने पर भी हम विपरीत दिशा मे दौडे चले जा रहे है। तब दुखो से हम कैसे छूट सकते है? ईश्वर ने तो हमे निर्भीक बनाया था। यदि हम सुपथ छोड, भीरु बन कर दुख सागर मे गोते खाते रहे तो इसमे विधाता का क्या दोष?

दुखो का मूल कारण अज्ञान मे किए गए हमारे पाप कर्म ही है तथा इनसे निपटने का एक ही उपाय है—ईश्वर की आज्ञा मे रहना। ईश्वर कहता है– "तुम मेरी आज्ञा मे रहो, तुम्हारी सुरक्षा तथा तुम्हारे लिए सुख की व्यवस्था मै स्वय करूगा।"

मेहनत की राह चुन कर अपना सारा ध्यान कर्तव्य पर लगाए। यही पूर्ण निर्भयता का मत्र है। यही हर स्थिति मे निश्चितता का सूत्र है। इसके बिना स्थायी सुख की प्राप्ति नही हो सकती, और आए दिन चिता, डर, घबराहट तथा तरह तरह की परेशानिया आसपास मडराती रहेगी। ईश्वर की सुरक्षा मे रहे। उसकी सुरक्षा पूर्ण है, अभेद्य है। ईश्वर का सुरक्षा कवच पहनिए। इसकी तीन सुरक्षा पक्तिया इस प्रकार है

कष्ट सहन का अभ्यास

सुरक्षा की पहली (अग्रणी) पक्ति है "सुख के अनुपात मे दुख अधिक सहना।" यदि हम पुरुषार्थ करते है तथा सुख भोग की मात्रा हमारी की गई मेहनत से कम आकी जाती है, तब हम पर विपत्तियों का आना सम्भव नहीं होता।

वैसे तो पहली सुरक्षा पक्ति अभेद्य है और अपनी राह मे सुधार लाते हुए सदैव आशान्वित रहना हमारा कर्तव्य है, फिर भी हमे हर स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए और इसके लिए हमे दूसरी और तीसरी सुरक्षा पक्तियो को भी तैयार कर लेना चाहिए। जहा पहली सुरक्षा पक्ति सीधे सादे समीकरण पर आधारित है, वहा दूसरी तथा तीसरी पक्तियो का आधार शारीरिक एव आत्मिक शक्तिया हैं।

सुरक्षा की दूसरी पक्ति है– "शरीर को दोषमुक्त करना।" हम जानते है कि जब हम बीमार होते है और हमारा पेट खराब होता है, तब छोटी छोटी चिताए हमे घेर लेती है तथा छोटी छोटी घटनाओ से हम घबरा जाते है। शरीर मे व्याप्त विष हमारी सहनशक्ति को कम कर देते है। जैसे ही हमारा शरीर विषमुक्त होता जायेगा, हम कठिन से कठिन परिस्थितियो मे भी नही घबरायेगे। अनेक साहसी व्यक्ति ससार मे इस तथ्य के जीते जागते प्रमाण है।

सुरक्षा की तीसरी पक्ति है– "आत्मा के स्तर को ऊचा उठाना।" ईश्वर ने यह मार्ग केवल मनुष्य की सीधी सहायता के लिए ही बनाया है। कैसा भी दुख हो, कैसी भी विपत्ति हो, आत्मिक बल से हम सब कुछ सहन कर सकते है। अनेक वीरो ने इसके ही सहारे कितने कष्ट हसते हसते सहन कर लिए तथा अन्त मे देश पर अपना जीवन भी बलिदान कर दिया।

आपत्ति के समय

● शात रहे। स्थिति को सभालने का हर सभव प्रयत्न करते रहे।

● जब कुछ न किया जा सके, तब केवल ईश्वर का ध्यान करे।

● ईश्वर के प्रति पूरी तरह समर्पित हो कर उसे अपने समीप महसूस करे तथा उस पर सब कुछ छोड कर निश्चित हो जाये। उसे अपना कार्य कर लेने दे।

● मानसिक शक्ति का उपयोग करते हुए इन विचारो को दृढ करे।

● सारे ससार से कही अधिक प्रभावशाली ईश्वर का साथ है।

● दुख जो हमारे हिस्से मे है, वह हमे लेना ही होगा। सुख जो हमारे भाग्य मे है, वह हमे मिल कर ही रहेगा।

● जहा तक हो सके, मन मे प्रसन्नता के भाव लाने का प्रयत्न करे। कहें कि "हे ईश्वर, तेरी लीला निराली है।"

● वर्तमान मे जिये। आगे पीछे की चिन्ता न करे।

● ईश्वर हर समय हमारा भला चाहता है तथा वह कभी गलती नहीं करता। इसलिए जो वह दे, उसे उसकी आज्ञा मान कर स्वीकार करे।

जब जान पर बन आये, तब

कभी न कभी तो हम सभी को मृत्यु

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वाधीनता की तीर्थ यात्रा कैसे पूरी हुई?

इस देश का स्वाधीनता संग्राम कब शुरू हुआ था? जब ईसा से ५०० साल पहले सिकन्दर पजाब मे घुस आया था? या जब शक, हूण और कुषाण आये? या जब तुर्क, मुगल और पठान आये? या जब क्लाइव, हेस्टिंग्स और डलहौज़ी आये?

पहला स्वाधीनता संग्राम

विनायक दामोदर सावरकर ने भावुकतावश सन् १८५७ के महाविद्रोह को 'प्रथम स्वाधीनता सग्राम' बताया है। सावरकर की भावना सराहनीय है, परन्तु सचाई यह है कि १८५७ का सग्राम जनता का युद्ध न हो कर उन राजाओ और जागीरदारो का युद्ध था, जिनके राज्य अग्रेज़ो ने हडप लिये थे। इन नेताओ ने अग्रेज़ो की सेना मे भर्ती हुए भारतीय सैनिको के रोष और असन्तोष का लाभ उठाया था। अग्रेज़ अफसर भारतीय सैनिको को बहुत हीन समझते थे और उनसे पशुओ जैसा बर्ताव करते थे, जो भारतीय सैनिको को बहुत चुभता था।

भारतीय सैनिक किसी भी दृष्टि से अग्रेज़ सैनिको से हीन नही थे। मानसिक और सास्कृतिक धरातल पर वे अग्रजो से कही उत्कृष्ट थे। इसलिए जब उन्हे मौका मिला, उन्होने विद्रोह कर दिया।

विद्रोह का अर्थ है निष्ठा की शपथ का उल्लघन, सेवा की तय हुई शर्तो का भग। भारतीय सैनिको ने ब्रिटिश राजा या रानी के प्रति निष्ठा की शपथ ली थी, बहुत ही क्षुद्र से वेतन के लिए जान लडाने की शपथ ली थी। परन्तु उस शपथ मे अपमानपूर्ण जीवन सहने की बात नहीं थी। अग्रेज़ो ने प्रचार किया कि भारतीय सैनिको ने विद्रोह कर दिया, जैसे विद्रोह कोई बुरी बात हो। अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह करना तो प्रशसा की बात है।

जनता का समर्थन नही

बुरी बात यह थी कि वह विद्रोह विफल हो गया। उसे जनसाधारण का समर्थन प्राप्त नही था। जो हिन्दू जनता ८०० वर्षो तक धर्मान्ध मुस्लिम शासको के अत्याचार सह चुकी थी, वह अग्रेज़ी शासन से इतनी रुष्ट नही थी कि एकबार फिर मुगल सम्राट् बहादुरशाह के शासन को खुशी से स्वीकार करती। मुसलमान ईसाइयो से रुष्ट थे। अनेक बार विद्रोही सैनिको से भयभीत अग्रेजो को भारतीय नागरिको ने ही शरण दी। नाभा और पटियाला के सिख राजा, हैदराबाद का मुस्लिम नवाब निजाम और नेपाल का हिन्दू प्रधान मत्री राणा जगबहादुर अपनी सेनाए ले कर अग्रेजो का साथ देने के लिए आ गये।

भारतीय विद्रोहियो के पास हथियार कम थे, उनमे अनुशासन की कमी थी, विद्रोह सब छावनियो मे एक साथ शुरू नहीं हो पाया, इसलिए बहुत सी छावनियो मे भारतीय सिपाहियो से पहले ही हथियार छीन लिये गये। भारतीय रजवाडो ने विद्रोहियो का साथ नही दिया। ये उस तथाकथित प्रथम स्वाधीनता सग्राम की विफलता के प्रमुख कारण थे।

आर्य समाज और काग्रेस की स्थापना

विद्रोह को दबाने मे और उसके बाद अग्रेज़ो ने बडी क्रूरता से काम लिया। सडको के किनारे खडे पेडो पर हजारो लोगो को फासी दे दी गई। सैकडो को तोपो के मुह पर बाध कर बारूद से उडा दिया गया। स्वामी दयानन्द उन गिनती के कुछ नेताओ मे मे थे, जिन्होने विद्रोह मे भाग लिया था और उसके बाद भी देश के उद्धार मे लगे रहे। मन् १८७५ मे उन्होने आर्य समाज की स्थापना की। उसके दस साल बाद श्री आक्टेवियन ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की स्थापना की।

उस विद्रोह के कुल १८ साल बाद स्वाधीनता की बात चिल्ला कर नही की जा सकती थी, फिर भी दयानन्द जी के 'सत्यार्थ प्रकाश' मे स्वाधीनता और स्वराज्य की बात कई बार कही गई है। दस साल बाद स्थापित हुई काग्रेस भी अग्रेजो से विनय और प्रार्थना की भाषा मे ही बोलती थी, राजभक्ति के प्रस्ताव पास करती थी। उस समय यह सरकार के कृपापात्र धनीमानी लोगो की सस्था थी।

गरमदलियो का नेतृत्व

बाद मे धीरे धीरे काग्रेस मे देशभक्त लोग जा घुसे। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, मदनमोहन मालवीय, देशबन्धु चितरजन दास, विपिनचन्द्र पाल, लोकमान्य बालगगाधर तिलक जैसे गरमदली लोग काग्रेस के नेता बन गये। तब काग्रेस के तेवर बदल गये। उसकी भाषा उग्र हो गई। लोकमान्य तिलक ने खुल कर कहा 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। और हम उसे ले कर रहेगे।'

कुछ लोग इन गरमदली नेताओ से भी आगे थे। उनका कहना था कि अग्रेज लातो के भूत है, बातो से नही मानेगे। उन्हे बन्दूको और बमो से भगाना पडेगा।

शासन सत्ता के मद मे अग्रेज़ भारतीयो को बहुत अपमानित करते थे। अग्रेज साहब का कुत्ता हिन्दुस्तानी अफसर से अधिक आदर का पात्र था। भारतीय 'काले' लोग थे, जो कितने ही धनी और शिक्षित होने पर भी रेलगाडी मे अग्रेजो के साथ प्रथम श्रेणी के डिब्बे मे यात्रा नही कर सकते थे।

विदेश मे शिक्षितो का योगदान

यहा रहने वाले भारतीयो को यह बात चुभती नहीं थी। पर कुछ भारतीय कानून की शिक्षा पाने इग्लैड गये थे, जिनमे विनायक दामोदर सावरकर, मुहम्मद अली जिन्ना, मोहनदास कर्मचन्द गाधी, जवाहरलाल नेहरू आदि उल्लेखनीय है। सुभाषचन्द्र बोस भी आइ सी ऐस पास करने के लिए इग्लैड गये थे।

वहा से लौटे इन लोगो को अग्रेज़ अफसरो का अपमानजनकव्यवहार असह्य लगता था। स्वाधीनता सग्राम की आग मुख्य रूप से इन्होने सुलगाई।

सावरकर और लाजपतराय गरमदली थे। परिणामस्वरूप उन्हे कालापानी और देश निर्वासन के कष्ट भुगतने पडे। लाजपतराय का देहान्त तो उन पर पुलिस द्वारा बरसाई गई लाठियो के फलस्वरूप हुआ। तिलक को माडले मे निर्वासित किया गया।

गाधी जी का आगमन

सन् १९१५ मे गाधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट आये। उन्होने सत्याग्रह और असहयोग के अहिसात्मक शस्त्रो के प्रयोग से वहा बहुत यश पाया था, हालाकि उनके आन्दोलन सफल नही रहे थे। उन दिनो काग्रेस मे गरमदली नेताओ का प्रभुत्व था। परन्तु दुर्भाग्य से १९२० मे तिलक का देहान्त हो गया। काग्रेस की बागडोर गाधी जी के हाथ मे आ गई।

गाधी जी को साथ मिल गया मोतीलाल नेहरू का, जो उस समय के धनी और प्रतिष्ठित वकील थे। मोतीलाल जी ने अपने बैरिस्टर पुत्र जवाहरलाल को गाधी जी के हवाले कर दिया कि इसे आप अपना शिष्य बना लीजिये। यह गाधी-नेहरू गठबधन देश के लिए भाग्य निर्णायक सिद्ध हुआ।

गाधी जी हिन्दू सस्कृति मे पले थे। इग्लैड जा कर वह ईसाइयत से बहुत प्रभावित हुए थे, विशेष रूप से उसके अहिसा सिद्धान्त से। 'यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड मारे, तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो (प्रतिप्रहार मत करो)।' यह गाधी जी के जीवन का ध्येय वाक्य बन गया। उनकी गिनती सन्तो मे होने लगी। ईसाई उनसे बहुत प्रभावित हुए। उन्हे गाधी जी ईसा के सच्चे अनुयायी प्रतीत हुए। इसके बाद भी गाधी जी सस्कारो से हिन्दू ही बने रहे।

नेहरू परिवार की बात इससे भिन्न थी। मोतीलाल जी कहने को ब्राह्मण थे, परन्तु ब्राह्मण के लिए जो आचरण शास्त्रो मे बताये गये है, उनमे से शायद ही किसी का पालन उन्होने किया हो। मास वह खाते थे, मदिरा भी पीते थे, उपपत्निया भी रखते थे, जिनमे एक मुसलमान भी थी। बाइयो के मुजरे भी होते थे। ब्राह्मण समाज मे दम होता, तो उन्हे जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता। पर हिन्दू समाज मे दम नही था।

जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि वह केवल दुर्योगवश हिन्दू है (क्योकि हिन्दू परिवार मे उनका जन्म हुआ), अन्यथा वह पूर्णत अग्रेज़ थे। हिन्दू शब्द मे उन्हे ग्लानि होती थी। मुस्लिम सस्कृति उन्हे अधिक रास आती थी। गाधी जी नेहरू जी को 'हिन्दू' की ओर न खीच सके, नेहरू जी ने उन्हे मुस्लिम की ओर खीच लिया। यही से काग्रेस मे मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का सूत्रपात हुआ।

गाधी जी ने स्वाधीनता प्राप्त करने का गुरुमत्र ढूढ निकाला— हिन्दू मुस्लिम एकता, किन्ही भी शर्तो पर, किसी भी कीमत पर। इसके बिना स्वराज्य नही मिलेगा।

गाधी-नेहरू गुट

हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए गाधी-नेहरू गुट ने मुसलमानो को खुश करने के लिए क्या कुछ नही किया? खलाफत (तुर्की के मुल्तान को विश्व भर के मुसलमानो का खलीफा बनाये रखने के लिए किया गया) आन्दोलन इसका ज्वलन्त उदाहरण था। तुर्की के मुसलमान कह रहे थे कि सुल्तान को हटाओ और लोकतत्र कायम करो और भारत के मुसलमान और उनक समर्थन मे काग्रेस आन्दोलन कर रही थी कि सुल्तान को खलीफा बनाये रखो। यह आन्दोलन अपनी मौत मर गया, परन्तु गाधी-नेहरू गुट ने जो किया, वह इतिहास के पन्नो पर लिखा रह गया।

हिन्दुओ के उचित अधिकारो का हनन करके जब मुस्लिम तुष्टीकरण किया जाने लगा, तब स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, मदनमोहन मालवीय जैसे नेताओ ने इसका विरोध किया। उन्होने कहा कि हिन्दू मुसलमान, दोनो के साथ न्याय होना चाहिए। किसी के साथ भी अन्याय क्यो हो?

मुसलमान तबलीग करके हिन्दुओ को मुसलमान बना लेते थे, तब राष्ट्रीय आन्दोलन पर आच नही आती थी। पर जब स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज ने मल्काने राजपूतो को, जो औरगजेब के शासन मे बलात् मुसलमान बना लिये गये थे, शुद्ध करके फिर हिन्दू बना लिया, तब गाधी नेहरू गुट ने फतवा दिया कि शुद्धि आन्दोलन से स्वाधीनता सग्राम को हानि पहुच रही है। इसे एक साल के लिए रोक दिया जाना चाहिए। तबलीग को रोकने की बात नही कही गई।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जन्माष्टमी पर विशेष

दुर्योधन के दम्भ-विनाशक महात्मा श्रीकृष्ण

❑ श्री मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

कई लोगो का अभिमत है कि श्रीकृष्ण यदि चाहते, तो इस भयकर युद्ध (महाभारत) को रुकवा सकते थे। उन पर कुछ लोग यह भी दोषारोपण करते है कि श्रीकृष्ण ने जीवन भर लडाइया लडी। उनके इस स्वभाव के कारण ही कौरव-पाडवो का यह भीषण महाभारत युद्ध हुआ। युद्ध का परिणाम सभी जानते थे, किन्तु श्री कृष्ण की ओर से जोरदार पहल नही हुई। उसके परिणामस्वरूप यह महान भयकर विश्व युद्ध हुआ। ऐसे दोषारोपण करने वालो के समक्ष हम श्रीकृष्ण का वह रूप और प्रयास प्रस्तुत कर रहे है, जिसे जानकर हम यह निष्कर्ष निकालेगे कि श्रीकृष्ण ने दूत कर्म को स्वीकार कर धृतराष्ट्र, दुर्योधन, भीष्म आदि कौरव दल से युद्ध न करने का प्रयास किया। उनके सत्प्रयासो का यह परिणाम था कि दुर्योधन तथा शकुनि को छोड कर शेष सभी युद्ध न कर पाडवो को उनके अधिकार देना चाहते थे। श्रीकृष्ण के इस महान प्रयास से सिद्ध होता है कि वे विश्व मे प्रथम श्रेणी के शाति सम्स्थापक थे।

द्रौपदी की करुण कहानी सुनकर श्रीकृष्ण का हृदय द्रवीभूत हो गया। उन्होने उसे धैर्य बधाते हुए कहा 'देवी, आसुओ को पोछ लो। तुम्हारे पुण्यो से तुम्हारे दु खो की समाप्ति हो गई है। तुम्हारे क्रोध से सभी शत्रु भस्म हो जायेगे। मै महाराज युधिष्ठिर की आज्ञा से तथा इन सभी भाइयो की सहायता से तुम्हारे क्रोध को शात करने का प्रयास करूगा। देवी, तुम धैर्य रखो।'

प्रामाणिक तथ्यो के आधार पर श्रीकृष्ण कार्तिक शुक्ल पक्ष, रेवती नक्षत्र को सूर्योदय होते ही शैव्य, सुग्रीव, पुष्प तथा बलाह नामी घोडो को अपने रथ मे जोत कर तथा ध्वजा पताका लेकर चल पडे। उनके साथ एक हजार घुडसवार, एक हजार पैदल योद्धा, सात्यकि तथा कृतवर्मा आदि अगरक्षक थे। ब्राह्मणो ने स्वस्तिवाचन कर उनको सफलता का आशीर्वाद दिया।

अभी वह चले ही थे कि धर्मराज युधिष्ठिर ने उनके निकट जाकर कहा 'यदि हमारी जननी जीवित हो, तो उसके पुनीत चरणो मे हमारा प्रणाम कहना।' हमारी माता ने श्वसुर कुल के लिए श्वसुर कुलवालो की ओर से दिये गये अनेक कष्ट सहे। उन्हे हमारा सादर प्रणाम कहना।

दूत ही नही, नेता भी

कई लोग समझते है कि श्रीकृष्ण पाडव दल के सदेश ले जाने वाले 'दूत' मात्र होगे। ऐसा नही, किन्तु वे भारत के प्रभावशाली तेजस्वी नेता थे और शाति स्थापना के लिए सात्यकि आदि यादवो की चुनी हुई मडली के साथ गये थे। श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर जाकर अपने पद की गौरव गरिमा के अनुरूप ही शाति स्थापित करने का प्रयास किया, किन्तु फल सदा ईश्वराधीन होता है।

वृकस्थल मे विश्राम

श्रीकृष्ण की हस्तिनापुर की यात्रा का समाचार गुप्तचरो द्वारा धृतराष्ट्र, दुर्योधन आदि को मिल गया। कौरव राजसभा द्वारा उनके स्वागत आदि का बडे भव्य रूप से प्रबन्ध किया गया। पूरे नगर को सजाया गया तथा उन्हे 'वृकस्थल' पर ठहराने का समुचित प्रबन्ध किया गया। उन्हे भेंट आदि देने का सुन्दर प्रबन्ध किया गया। यहा विदुर जी ने स्पष्ट रूप से कौरव दल के प्रमुखो को समझाते हुए कहा था 'श्रीकृष्ण सब प्रकार से गुणी, मानी तथा पूजा (सत्कार, अभिनन्दन) के योग्य है। विशेषकर अब सारे देश के हित के लिए वह 'शान्ति' कराने आ रहे है। पर स्मरण रखना है कि वह विश्वासी महात्मा और अच्युत महापुरुष है। इन मारे प्रलोभनो का उन पर कुछ भी प्रभाव नही पडेगा। वह कोई भी भेंट स्वीकार नही करेगे।' भीष्म ने भी विदुर से सहमति प्रकट करते हुए कहा 'यह निर्विवाद सत्य है कि वह महापुरुष है। उन्हे सत्कार, असत्कार, मानापमान आदि उनके उद्देश्य से डिगा नही सकते। आप अपने धर्म सम्मत कर्तव्य का पालन करे। हम सभी के वह आदरणीय है।'

श्रीकृष्ण सूर्यास्त समय वृकस्थल पहुचे। सायकालीन नित्यकर्म, स्नान, सध्या, यज्ञ आदि करने हेतु चले गये। वहा के नागरिको ने भी उनका बहुत मान सम्मान किया। उन्होने रात्रि को विश्राम किया तथा प्रात काल उठ स्नान, सध्या, अग्निहोत्र आदि कर वह हस्तिनापुर को प्रस्थित हो गये। उनको आता देख, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि सभी गणमान्य उनका अभिनन्दन करने पहुच गये। उन्हे आदर के साथ महाराज धृतराष्ट्र के भवन मे स्वर्णसिहासन पर बैठाया गया। आवश्यक शिष्टाचार के पश्चात् वह विदुर के भव्य भवन मे विश्राम हेतु चले गये। वहा उन्होने उनके घर पर भी षड्रस युक्त स्वादिष्ट भोजन किया। उसी दिन तीसरे प्रहर श्रीकृष्ण कुन्ती भवन गये। उन्होने कुती माता का दर्शन कर उन्हे धर्मराज युधिष्ठिर का पादवन्दन आदि सन्देश कहा।

उन्हे देखते ही कुन्ती बिलख बिलख कर रो पडी। उसे अपने पिछले कष्ट याद हो आये। श्रीकृष्ण ने उन्हे धैर्य बधाया। इसके बाद कुती ने धर्मराज, सभी भाइयो तथा पुत्रवधू कृष्णा (द्रौपदी) का कुशल-क्षेम पूछा। तब श्रीकृष्ण ने उनके अपने आने का मुख्य प्रयोजन बताया। कुछ देर ठहर कर जब वह वहा से चलने लगे, तब कुन्ती ने कहा 'वृष्णिनन्दन, यदि सधि का अवसर आ पडे, तो जो हित और पथ्य हो, कर लेना। किन्तु '**अविलोपेन धर्मस्य अनिकृत्या परतप**' अर्थात् कोई काम ऐसा न करना जिसमे धर्म का लोप हो या छल का आश्रय लिया गया हो। मैं धर्म मे प्रगाढ आस्था रखती हू।'

दुर्योधन के घर भोजन नही

कुन्ती से विदा हो कर कृष्ण दुर्योधन के भवन मे गये। वहा भी उनका यथोचित सम्मान हुआ। वही पर शाति हेतु विचार विमर्श हुआ। चलते समय दुर्योधन ने 'घरेलू भोजन' ग्रहण करने के लिए कहा। उन्होने इस निमत्रण को अस्वीकार करते हुए कहा 'मै दूत हू। कृतार्थ होने पर भोजन करने का मेरा अधिकार है, बिना कृतकार्यता के नही। भोजन या तो प्रीति से किया जाता है या आपत्ति मे। तुम हम मे प्रीति नही जता रहे और हम आपत्ति मे भी नही है। जो धर्मात्मा और अधिकार वालो का अधिकार दबाते है, वे हमारे द्वेषी है। इसलिए मै आप किसी का अन्न न खा कर महात्मा विदुर के यहा ही भोजन किया करूगा। बस आप हठ न करे।' उन्होने विदुर के यहा आ कर भोजन किया। रात्रि मे उनसे कहा 'मै कौरवो के पिछले कर्मो और स्वभावो को जानता हू। यह निश्चित है कि युद्ध से नाश अवश्य होगा। इस महानाश से बचाने को महान पुण्य समझ शक्ति भर शुद्ध चित्त से मै शाति के लिए प्रयत्न करूगा, क्योकि यह मेरा धर्म है।' इससे और भी स्पष्ट हो जाता है कि श्रीकृष्ण विश्व शाति के प्रबल समर्थक थे।

दूसरे दिन राजसभा मे चलने के लिए दुर्योधन स्वय उनके पास आया। वह अपने साथ विदुर को रथ मे बैठा कर राजसभा मे आये। सभापति की आज्ञा से श्रीकृष्ण जी ने प्रस्ताव रखते हुए स्पष्ट कहा

कुरूणा पाडवाना च शमः स्यादिति भारत।
अप्रणाशेन वीराणामेतद्याचितुमागत ॥

९५ ३

धृतराष्ट्र महाराज, मै शान्ति (सधि) की भीख मागने आपके द्वार पर आया हू। जिस प्रकार कौरव और पाडव दोनो मे किसी का भी नाश न हो, ऐसा उपाय कीजिए। शाति की स्थापना कोई दुष्कर कर्म नही, यदि आप चाहे। यह आपके और मेरे वश मे है। आप अपने पुत्रो को समझावे, मै पाडवो को समझा दूगा। स्वत्व किसी का न मारा जाये, किन्तु दोनो मे आधा घर आधा राज्य बाट कर सधि करा दे। इससे आपका बल इतना बढेगा कि आप (धृतराष्ट्र) सारे जगत् को जीत कर शासन कर सकेगे। पिछली बातो को जानता हुआ भी धर्मात्मा युधिष्ठिर 'प्रजा का नाश न हो' इसलिये सबको भुलाने को तैयार है। हे राजन् धृतराष्ट्र, आप भी अपने कुल, पुत्र और प्रजा के हित के लिए पुत्रो को समझा कर न्यायसगत शाति का यत्न करे। इसका यह भी तात्पर्य मत समझना कि पाडव युद्ध से डर कर तुझसे शाति का प्रस्ताव करा रहे है। वे तो सधि हो जाय तब आपकी सेवा करने को तैयार है, यदि युद्ध छिड जाये, तब वे युद्ध के लिए भी तैयार है।'

प्रस्ताव सुनने के पश्चात् पूरी सभा मे सन्नाटा छा गया। कुछ देर बाद धृतराष्ट्र ने कहा 'कृष्ण चाहते तो हम भी यही है, इस दुर्योधन के हठ से हम व्याकुल हो रहे है। भीष्म, द्रोण, कृप और गाधारी बार बार इसे समझाते है, किन्तु यह मानता नही है।'

यह सुन कर श्रीकृष्ण जी ने दुर्योधन को बहुत समझाया। श्रीकृष्ण, भीष्म, विदुर आदि के समझाने पर भी दुर्योधन नही माना। जब गाधारी उसे समझा रही थी, तब वह राजसभा से उठ कर शकुनि के पास चला गया।

वहा दुर्योधन ने शकुनि से कहा 'इस यादव के आने से हमारे विरुद्ध सबका क्रोध उभर रहा है। अत इसे पकड कर कही बन्दी बना लिया जाये। सात्यकि को इस षड्यत्र की भनक पड गई और उन्होने कृतवर्मा को सचेत कर दिया। यह जान कर श्रीकृष्ण ने सिह के समान दहाडते हुए कहा 'ये मूढ मुझे अकेला समझ आक्रमण करना चाहते है, किन्तु इन्हे मालूम नही, यहा मेरे रक्षक कौन और कैसे है? समझ लो कि पाडव एव सभी यादव यहा विद्यमान है। यह सुनते ही चाण्डालो की घिग्घी बध गई। श्रीकृष्ण सभा से उठ कर माता कुन्ती के पास चले गये और उन्हे सब बाते बताई। वहा से चलकर वह आगे बढ लिये। यद्यपि वह इस प्रयास मे पूर्णत. सफल नही हुए, किन्तु उन्होने मन मे एक और युक्ति सोची।

कर्ण से वार्ता

उन्हे मालूम था कि दुर्योधन की मति मारी गई है और वह केवल कर्ण के आश्वासन के आधार पर ही अकड रहा था। उन्हे यह ज्ञात था कि कर्ण कुन्ती के कौमार्य काल का 'कानीन' पुत्र था। इस कारण वह महाराज युधिष्ठिर आदि का सबसे बडा भाई था। कुन्ती से विदा लेकर वह कर्ण को अपने रथ मे साथ ही बैठा

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पुरानी स्मृतिया

हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह

❑ श्री दत्तात्रेय तिवारी

आर्य समाज ने अपने १२५ वर्ष के जीवन काल मे जो भी आन्दोलन किये, उनमे हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह सबसे बडा और सफल रहा।

निजाम का हैदराबाद दक्षिण भारत मे एक रजवाडा था, जो जनसख्या और वार्षिक आय की दृष्टि से भारत के रजवाडो मे सबसे बडा था। हैदराबाद का नवाब मीर उस्मान अली खा उस समय ससार का सबसे धनी व्यक्ति माना जाता था। आजकल उस रजवाडे का कुछ भाग आन्ध्र प्रदेश मे और कुछ महाराष्ट्र मे चला गया है।

शासक मुसलमान, प्रजा हिन्दू

हैदराबाद का शासक मुसलमान था, जबकि राज्य की ८८ प्रतिशत प्रजा हिन्दू थी। उस समय तक भारत मे लोकतत्र का पदार्पण नही हुआ था। निजाम एक तानाशाह की भाति अपनी हिन्दू प्रजा पर शासन करता था।

निजाम के पडौस मे मराठा राज्य कर रहे थे जो निजाम से अधिक शक्तिशाली थे इसलिए बहुत समय तक हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिकता पनपी नही। निजाम के मत्री हिन्दू भी बनते रहे और हिन्दू मुसलमान सद्भावपूर्वक रहते रहे।

जब सन् १९१९ मे महात्मा गाधी ने घोषणा की कि भारत को स्वतत्र कराने के लिए हिन्दू-मुस्लिम एकता परमावश्यक है, और इसे किसी भी कीमत पर प्राप्त करना चाहिए, तब भारत की अग्रेजी सरकार ने प्रतिक्रिया के रूप मे हिन्दुओ और मुसलमानो को लडाने की नीति अपना ली।

अग्रेज-मुस्लिम गठजोड़

सन् १८५७ मे मुसलमान अग्रेज़ो को हटाने के लिए हिन्दुओ के साथ मिल कर लडे थे और उस विद्रोह के बाद अग्रेज़ो ने मुसलमानो का दमन किया था, परन्तु सन् १९१९ तक स्थिति यह हो गई कि हिन्दू राष्ट्रवादियो का सामना करने के लिए सरकार ने अल्पसंख्यक मुसलमानो को अपने पक्ष मे करना लाभकारी समझा। मुसलमानो को हर प्रकार का प्रोत्साहन दिया जाता और हिन्दुओ का दमन किया जाता। मुसलमानो को पुलिस, सेना तथा अन्य सरकारी विभागो मे उनकी सख्या के अनुपात से बहुत अधिक नौकरिया दी गई।

इस साम्प्रदायिक अलगाव का असर निजाम हैदराबाद पर भी पडा। नवाब स्वय निष्ठावान मुसलमान था। मुसलमान का एक धार्मिक कर्तव्य यह भी है कि वह गैर मुस्लिमो को जैसे भी हो, इस्लाम मे दीक्षित करे। निजाम ने भी अपने राज्य मे हिन्दुओं को मुसलमान बनाने वाले सगठनो को बढावा देना शुरू किया।

बल और छल से हिन्दुओ को पहले भी मुसलमान बनाया जाता रहा था। हिन्दू धर्मध्वजी इतने मूढ थे कि वे तनिक तनिक सी बात पर अपने सहधर्मियो को धर्मभ्रष्ट हुआ मान लेते थे। किसी ने मुसलमान के घडे से पानी पी लिया, या किसी को धोखे से मास खिला दिया गया, तो उसे मुसलमान हो गया मान लिया जाता था। फिर वह कितना ही चाहे, उसे हिन्दू नहीं बनने दिया जाता था।

शुद्धि आन्दोलन

आर्य समाज ने शुद्धि करके मुसलमानो को आर्य बनाना शुरू किया, तो आर्य समाज मुसलमानो की आखो का काटा बन गया। निजाम सरकार ने जितना यत्न हिन्दुओ को मुसलमान बनाने का किया, उतना ही हिन्दुओ मे आर्य समाज का प्रभाव बढता गया।

तब मुस्लिम सगठन हाथापाई और मारपीट पर उतर आये। हिन्दुओ के जलूसो पर वे हमले करते, पर पुलिस दगे का नाम ले कर हिन्दुओ को ही गिरफ्तार कर लेती। वे मुकदमे भुगतते रहते। अनेक आर्य कार्यकर्ताओ और नेताओ की हत्या कर दी गई।

निजाम सरकार ने आर्य समाज के वार्षिक उत्सवो, सभाओ, जलूसो, सत्सगो, आदि पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिये। आर्य समाजी उपदेशको का निजाम राज्य मे प्रवेश मना कर दिया गया। तब पहले हैदराबाद राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने नागरिक अधिकारो के लिए सत्याग्रह शुरू किया। परन्तु सरकार ने क्रूरता बरती और उसे दबा दिया।

तब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने हैदराबाद राज्य मे धार्मिक एव नागरिक अधिकारो की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह करने का निश्चय किया।

मा० नारायण स्वामी पहले डिक्टेटर

सत्याग्रह का पहला डिक्टेटर श्री नारायण स्वामी जी को बनाया गया। २५ से २७ दिसम्बर १९३८ तक शोलापुर मे एक आर्य महासम्मेलन किया गया। सम्मेलन ने निश्चय किया कियदि निजाम सरकार आर्य समाज की मागे न माने, तो सत्याग्रह शुरू किया जाये।

निजाम ने मागें नहीं मानीं। तब ३१ जनवरी १९३९ को सत्याग्रह शुरू कर दिया गया। श्री नारायण स्वामी जी के साथ गुरुकुल कागड़ी के १५ विद्यार्थियो के जिस सर्वप्रथम जत्थे ने सुल्तान बाजार मे सत्याग्रह करना था, उसमें जाने का सौभाग्य मुझे भी मिला था।

हैदराबाद राज्य का निवासी होने के कारण मेरे लिए उस धर्मयुद्ध मे शामिल होना एक कर्तव्य था। मुझे गुरुकुल पढने के लिए भेजा ही इसलिए गया था कि मै निजाम की बदनिजामी का निराकरण करू। हैदराबाद सत्याग्रह की कुछ बाते मुझे आज भी कल की घटना की तरह स्मरण है।

श्री नारायणस्वामी जी हमारे साथ सत्याग्रह नही कर सके, क्योकि उन्हे पुलिस ने पहले ही पकड लिया और सीमा पर ले जा कर छोड दिया। उन्होने ६ फरवरी को गुलबर्गा मे सत्याग्रह किया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने २ फरवरी और ३ फरवरी को सुल्तान बाजार मे नारे लगा कर सत्याग्रह का श्रीगणेश किया।

प्रातः साय सन्ध्या

हैदराबाद सत्याग्रह मे मेरा अधिकाश समय वरगल जेल मे बीता। वही हमे सर्वप्रथम राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सदस्यो तथा उनके कार्यकलापो से परिचय हुआ। सघी जेल मे भी शाखा लगाना चाहते थे। हमसे सहयोग मागा। हमने शर्त रखी कि हम तुम्हारी ध्वज वन्दना मे तभी साथ देगे, जब तुम दोनो समय हमारी सन्ध्या मे साथ दो। उन्होने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। हमने भी वहा 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' का गीत गाया। हमे सस्कृत आती थी अत सस्कृत की यह प्रार्थना अत्यन्त प्रेरणादायी और प्रखर राष्ट्रवादी लगी।

नया यज्ञोपवीत

चचलगुडा हैदराबाद जेल से हमारे जत्थे के साथियो को विभिन्न जेलो मे भेजा गया। हम तीन को– धीरेन्द्र भाई, ओम्प्रकाश और मुझे वरगल जेल मे भेजा गया। बस मे चढने के लिए कैदियो की लाइन लगी थी। तभी एक सिपाही ने मेरे गले के यज्ञोपवीत को खीचते हुए कहा 'यह कैसा धागा बाध रखा है?' खींचतान मे यज्ञोपवीत टूट गया। फिर क्या था, सभी कैदी उसके विरोध मे बैठ गये, कहा 'हम बस मे नहीं चढेगे।' नारेबाजी शुरू हो गई तथा नया यज्ञोपवीत लाने को कहा गया। शोर सुन कर जेलर भागता हुआ आया। उसे यज्ञोपवीत का महत्व मालूम था। उसने सिपाही को डाटते हुए तत्काल यज्ञोपवीत लाने को कहा। लाने वाला यज्ञोपवीत का पूरा गुच्छा ले आया। मैने यज्ञोपवीत मत्र के साथ नया यज्ञोपवीत धारण किया और तब वरगल के लिए बस रवाना हो सकी।

शिवरात्रि का व्रत

वरगल जेल मे हमारे द्वारा मनाई गई शिवरात्रि पर मुझे जहा आश्चर्य हुआ, वहा वह हसी का कारण भी बनी। हम आर्य समाजी शिवरात्रि पर व्रत नही रखते। पर जेल के रोजमर्रा के खाने के बदले कुछ नया खाने को मिले, इस दृष्टि से हमने जेलर से कहा कि आज के दिन हम व्रत रखते है, अत हमारे लिए भी व्रत का सामान मगाया जाय। लोगो ने मूगफली और गुड मगवाया। शाम को व्रत पारणा के लिए मालपूए बनाने के लिए घी और आटा मगवाया गया। जेलर उत्तर भारत का था। उसे इतना ही मालूम था कि हिन्दू दिन भर व्रत रखते है और शाम को उसकी पूरी कसर निकाल लेते है। जेलर ने हमारी माग के अनुसार सारा सीधा हमारी बैरक मे भिजवा दिया। इस बैरक मे ८० सत्याग्रही थे।

सत्याग्रही दिन भर मूगफली और गुड खाते रहे। हैदराबाद की शालीवाडा आर्यसमाज का एक सदस्य हलवाई था। उसने बडे प्रेम से पूए बनाए। रोजमर्रा की ज्वार की रोटी और दाल के बजाय इस राजसी भोजन का जैसा परिणाम होना था, वही हुआ। रात भर मण्डास के आगे लाइन लगी रही। अगले दिन कुछ का डाक्टरी उपचार भी करना पडा। इस त्रासदी के बाद भी रामनवमी को पुन सोत्साह मनाया गया, पर कुछ सयम के साथ।

ब्राह्मण बाटनी

जेल मे दो प्रकार का खाना आता था। इनमे कोई अन्तर नही था। केवल दो नाम थे, बडी बाटनी और ब्राह्मण बाटनी। पता नही, कैसे हम १० व्यक्ति ही ब्राह्मण बाटनी मे रखे गए। हमारा साथी ओम्प्रकाश इस ब्राह्मण बाटनी का इचार्ज बना। खाना बनाना, रोटी सेकना आदि सब काम कडे कष्टदायक थे। सवेरे तीन बजे उठ कर काम शुरू करना पडता था। ओम्प्रकाश ने कुछ दिन तो जैसे तैसे इसे निभाया। वह चतुर था। उसने बडी बाटनी वालो से सौदा कर लिया। खाना बडी बाटनी मे बनता था तथा वह हम १० व्यक्तियो के लिए ब्राह्मण बाटनी के बर्तनो मे लाकर बाट देता था। हम प्रदर्शित यही करते थे कि ब्राह्मण बाटनी का खाना बडी बाटनी से अच्छा, और साफ सुथरा है। ब्राह्मण बाटनी के बहाने हम ओम्प्रकाश के साथ कभी कभी जेल के बाहर भी चक्कर लगा आते थे।

मुसलमान की पहचान

हैदाराबाद मे स्थिति यह थी कि वहा पर शहरी हिन्दू मुसलमानो की तरह

(शेष पृष्ठ ८ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्वाधीनता की तीर्थयात्रा ....

अछूतोद्धार

स्वामी श्रद्धानन्द ने काग्रेस कार्यसमिति मे यह प्रश्न उठाया कि काग्रेस को अस्पृश्यता निवारण और अछूतोद्धार का काम अपने हाथ मे लेना चाहिए, तो गाधी जी के दाये हाथ बने मौलाना मुहम्मद अली ने कहा 'यह काग्रेस का काम नही है। यह धार्मिक मामला है। अछूतो की समस्या का सीधा हल यह है कि आठ करोड अछूतो मे से चार करोड मुसलमान बन जाये और चार करोड ईसाई।' जब काग्रेस बार बार कहने पर भी अछूतोद्धार का काम हाथ मै लेने को तैयार नही हुई, तब स्वामी श्रद्धानन्द ने खिन्न हो कर काग्रेस छोड दी।

जिस जिस भी न्यायप्रिय नेता ने हिन्दुओं के हितो की रक्षा के लिए आवाज उठाई, उसे गाधी-नेहरू गुट ने साम्प्रदायिक बता कर दूध मे मे मक्खी की तरह काग्रेस से बाहर निकाल दिया।

भारत को स्वतत्र होना ही था

गाधी जी और नेहरू जी महान राष्ट्र नायक थे। परन्तु यह जो कहा जाता है 'साबरमती के सन्त तूने कर दिया कमाल, दिला दी देश को आजादी बिना तलवार बिना ढाल', यह पूरी तरह सत्य नही है। गाधी जी यदि भारत की राजनीति मे न आये होते, तो आजादी और पहले मिल गई होती, यह कहना शायद सही न हो, क्योकि दूसरे विश्व युद्ध मे अग्रेजो की कमर टूटने से पहले भारत के स्वाधीन होने की कोई सभावना नही थी। परन्तु यह अब निश्चय से कहा जा सकता है कि गाधी जी का कोई भी आन्दोलन न हुआ होता, तो भी दूसरे विश्व युद्ध के बाद तो भारत को स्वतत्र होना ही था। क्यो? क्योकि इग्लैड के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री ऐटली के कथनानुसार इग्लैड भारत को किसी शर्त पर अपने अधीन रखने को तैयार नही था। भारत को अपने अधीन रखना इग्लैड के लिए घाटे का सौदा बन गया था। उसके लिए जितना जन धन खर्च करना पडता, उतना इग्लैड के पास नही था।

और युद्ध के बाद नई उभरी दो महाशक्तिया, अमेरिका और सोवियत रूस, चाहती थी कि भारत इग्लैड के अधीन न रहे, ब्रिटिश साम्राज्य समाप्त हो। इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य भारत पर से ही नही, लका, बर्मा, ईराक, मिस्र, लीबिया, केन्या, आदि अनेक देशो से कुहरे की तरह उड गया। इसलिए कोई इस भ्रम मे न रहे कि अहिसक या हिसक, किन्ही भी आन्दोलनो के कारण भारत स्वाधीन हुआ। आठ अगस्त का 'भारत छोडो आन्दोलन' जिस प्रकार कठोरता से दबा दिया गया, उसी प्रकार आज़ाद हिन्द फौज का सशस्त्र अभियान भी परास्त कर दिया गया।

आन्दोलनो का महत्व

परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इन आन्दोलनो का कोई महत्व नही है। जो घोडा घुडदौड मे जीत नही पाया, परन्तु दौडा बहुत अच्छा, उसकी अपनी शान है। गाधी जी के आन्दोलनो ने स्वाधीनता की इच्छा को गाव गाव तक मे जगा दिया, इसमे दो राय नही हैं। गाधी जी मृत्यु से नही डरते थे, इसमे भी दो राय नही है। वह बार बार स्वय जा कर मृत्यु के द्वार को थपथपा आते थे। उन्हे जो इतना यश मिला, वह अकारण नहीं था।

परन्तु स्वाधीनता सग्राम मे उनकी भूमिका विचारणीय है। वह घोषणापूर्वक कहते थे कि मै अग्रेजो का सच्चा मित्र हू। 'मै अहिसक युद्ध लडूगा', कह कर उन्होने यह सकेत दे दिया था कि वह अग्रेज़ो को कोई वास्तविक क्षति नही पहुचायेगे। अग्रेजो ने भी उन्हे हर प्रकार की सुविधाए दी। आश्रम बनाने दिये। अखबार चलाने दिया। जेल मे भी सताने जैसा कुछ नही किया। गाधी जी भी कानून के अन्दर रहे और अग्रेजी सरकार भी। दोनो के बीच कटुता कभी नही रही। यहा तक कि जाते समय अग्रेज शासन भी गाधी-नेहरू गुट को ही सौप गये।

उधर गाधी जी ने चरमपथी क्रान्तिकारियो की जिस प्रकार भर्त्सना करके उन्हे जनता की दृष्टि मे गिराने का यत्न किया, उससे क्रान्तिकारियो का दमन करने, उन्हे फासी चढाने मे अग्रेजी सरकार को नैतिक बल मिला। सुभाष बाबू को जिस ढग से काग्रेस छोडनी पडी, वह भी गाधी-नेहरू गुट पर कोई भली टिप्पणी नही है। गाधी जी का यह दावा, कि केवल उनका मार्ग ही सही है, आज ५४ वर्ष बाद गलत दिखाई पडता है।

देश का विभाजन

अन्त मे आया १९४७। अग्रेजो ने कहा 'हम तो चले, जिसे सभालना हो, हिन्दुस्तान को सभाले।' उस समय हमारे नेता बुरी तरह विफल रहे। 'देश का विभाजन नही होने देगे' कह कर भी देश का विभाजन स्वीकार कर लिया गया। इस आशा मे कि इससे रक्तपात रुक जायेगा। कितने अदूरदर्शी और अक्षम थे उस काल के नेता। यदि विभाजन स्वीकार न किया जाता, तो उसके बाद सभावित गृहयुद्ध मे इतना विनाश न होता, जितना कि गाधी-नेहरू गुट द्वारा विभाजन स्वीकार करने के फलस्वरूप हुआ। ३० लाख नर नारी मारे गये; डेढ करोड विस्थापित हुए। देश की सीमाए असुरक्षित, पाकिस्तान से साप नेवले की सी शत्रुता। चार युद्धो के बाद भी शान्ति नहीं। परमाणु बम बना लेने के बाद भी शक्ति नहीं। कहा पहुचना चाहते थे, कहा पहुच गये।

हमारे न्यायालय सुस्त क्यों?

इडोनेशिया की ससद् ने वहा के राष्ट्रपति श्री अब्दुर्रहमान वाहिद के विरुद्ध महाभियोग चलाने का निश्चय किया। श्री वाहिद ने धमकी दी कि यदि ससद ने अभियोग चलाया, तो वह आपात (इमर्जेन्सी) घोषणा कर देगे और ससद को भग कर देगे।

इस धमकी से विचलित हुए बिना ससद ने महाभियोग की सुनवाई शुरू की। राष्ट्रपति वाहिद ने कुछ नये पुलिस तथा सैनिक अधिकारी नियुक्त कर दिये। इससे क्षुब्ध होकर ससद ने २३ जुलाई २००१ को एक ही दिन की सुनवाई मे सर्वसम्मति से राष्ट्रपति को उनके पद से हटा दिया और उनके स्थान पर उपराष्ट्रपति श्रीमती मेघवती सुकर्णपुत्री को राष्ट्रपति पद की शपथ दिला दी।

बदले मे राष्ट्रपति ने ससद् के अधिवेशन को अवैध घोषित कर दिया और ससद् को भग कर दिया।

ससद् की ओर से एक याचिका उच्चतम न्यायालय मे प्रस्तुत की गई। उच्चतम न्यायालय ने उसी दिन सुनवाई करके निर्णय दिया कि राष्ट्रपति को ससद् को भग करने का अधिकार नही है।

राष्ट्रपति को पुलिस या सेना मे कोई समर्थक न मिला। श्रीमती मेघवती सुकर्णपुत्री राष्ट्रपति बन गई।

भारत मे तमिलनाडु मे विधान सभा चुनाव हुए। अन्ना द्रमुक की नेता सुश्री जयललिता ने अलग अलग जगहो से चार नामाकन पत्र भरे। वे सब इस आधार पर अस्वीकृत कर दिये गये कि वह भ्रष्टाचार के मामले मे तीन साल की सजा पा चुकी है, अत चुनाव नहीं लड सकतीं। उन्होने चुनाव नहीं लडा।

पर उनकी पार्टी अन्ना द्रमुक चुनाव जीत गई। पार्टी ने जयललिता को अपना नेता चुना। उन्होने राज्यपाल के पास जा कर मुख्यमत्री बनने का दावा पेश किया। राज्यपाल ने उन्हें चटपट मुख्यमत्री पद की शपथ दिला दी।

इसके विरोध मे उच्चतम न्यायालय मे याचिका दी गई कि सुश्री जयललिता को मुख्यमत्री पद पर काम करने से रोका जाये, क्योकि उनकी नियुक्ति अवैध है।

उच्चतम न्यायालय ने इस पर विचार के लिए सितम्बर की कोई तारीख दी है। अधिक सम्भावना यह है कि इस याचिका का निर्णय होते होते दो तीन महीने और लग जायेगे। छह महीने बीतने से पहले सुश्री जयललिता के लिए विधान सभा का सदस्य बनना आवश्यक होगा, अन्यथा उन्हे मुख्यमत्री पद छोडना होगा।

यदि छह महीने बाद उन्होने अपना पद छोड दिया, तो उच्चतम न्यायालय के निर्णय का कोई अर्थ ही नहीं रह जायेगा।

हमारे देश मे इडोनेशिया और अमेरिका की तरह उच्च न्यायालयो के निर्णय तुरत फुरत क्यो नही हो सकते? अमेरिका मे भी राष्ट्रपति के चुनाव के विषय मे श्री अलगोर और जार्ज बुश के बीच चले कानूनी विवाद मे वहा के उच्चतम न्यायालय तुरत फुरत निर्णय सुनाते रहे।

विद्युत् विद्यालकार
आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली

भारत माता

❑ श्री बाबूलाल शर्मा प्रेम

वन उपवन अनुराग मजरित, मधुमय छटा ललाम है,
शस्य श्यामला भारत जननी, तुझको कोटि प्रणाम हैं।
तेरा कण-कण पुण्यतीर्थ है, मधुर सुधोपम नीर है,
स्वर्ग सुखो को देने वाला, त्रिविध सुगन्ध समीर है।
तू गौरवशालिनी विश्व मे, तेरी कीर्ति महान है,
तू ही चिर साधना, तपस्वी जीवन का वरदान है।
वसुधरा धरती भू मधुरा, तेरे अनगिन नाम है,
शस्य श्यामला भारत जननी, तुझको कोटि प्रणाम हैं।
आलोकित हैं दशो दिशाए, तेरे सुयश प्रकाश से,
उपवन की हर डाल सुशोभित, है तेरे मधुमास से।
नही मृत्तिका, तू चदन है, तुझे चढ़ाऊ भाल पर,
तेरा शुभ आशीष मिले, हम जय पायेगे काल पर।
नव प्रेरक आलोक पुज सी तेरी छवि निष्काम है,
शस्य श्यामला भारत जननी, तुझको कोटि प्रणाम है।
वेद मत्र सी पावन तेरी गीतो की हर एक कडी,
लता द्रुमो की छाव सुहानी, शान्ति रसायन लिये खडी।
धन समृद्धि से पूर्ण प्रफुल्लित, सेवामय हर गाव है।
क्राति श्रांति को हरने वाली, हर तरुवर की छाव है।
पुलकनमय सौभाग्य जगाता भरा पुरा हर धाम है।
शस्य श्यामला भारत जननी, तुझको कोटि प्रणाम है।
तू आराध्य, जुटे तेरी, पूजा मे व्रती किसान है,
कठ कठ से मुखरित तेरी स्वतत्रता के गान है।
मगलमय, उद्योग कर्म की आती मृदुल हिलोर है,
तम की बीती रात विगत मे, आई अभिनव भोर है।
प्राणमयी मा, तू सुहासिनी, चिर सुखदा अभिराम है।
शस्य श्यामला भारत जननी, तुझको कोटि प्रणाम है।

भारत के सर्वश्रेष्ठ महानायक—कृष्ण

❑ श्रीमती सन्तोष परमार

भारत के गाथा पुरुषो और इतिहास पुरुषो मे सर्वोच्च नाम श्रीकृष्ण का ही जान पडता है। वैसे तो राम, मान्धाता, रघु, ययाति, नहुष, महापद्म नन्द, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, विक्रमादित्य, पतजलि, विश्वामित्र, वशिष्ठ, भृगु, अर्जुन, कालिदास, सुभाष, सावरकर जैसे महामानवो के यश से भारत का आकाश देदीप्यमान है, परन्तु जिस नीचाई से उठ कर जिस ऊचाई तक श्रीकृष्ण पहुचे, उतनी लम्बी यात्रा सभवत किसी अन्य ने नही की।

जन्म कारागार मे

श्रीकृष्ण का जन्म कस के कारागार मे हुआ। जन्म से पहले से उनकी मृत्यु आशकित थी। उनसे पहले जन्मे सात भाइयो को कस ने जन्मते ही मरवा डाला था। बचने की सभावना नही के बराबर थी।

श्रीकृष्ण चरित मे कितनी गाथा है और कितना इतिहास, इस बारीकी मे इस लेख मे हम नहीं जायेंगे। वह चरित्र जिस भी रूप मे उपलब्ध है, उसे समग्र देखते हुए वह अनुपम, अद्वितीय जान पडता है।

श्रीकृष्ण राजा के पुत्र थे, परन्तु दास से भी बुरी हालत मे जन्मे। राजमहल के विलासपूर्ण वातावरण मे न पल कर गोकुल के मुक्त वातावरण मे रहे। गौओ को चराते हुए प्रकृति और पशुओ के घनिष्ठ सम्पर्क म बचपन बिताया। गाय का दूध पी कर शारीरिक बल, सौन्दर्य और मेधा अर्जित की। कहते है कि वैसा रूपवान, मोहक, बलशाली, कलाकार वेणुवादक युवक पूरे इलाके मे कोई नहीं था। यह तब, जब उनका रग सावला था। इसलिए कोई आश्चर्य नही कि जब उन्होने किशोरावस्था मे पदार्पण किया, तब सभी किशोरिया उन पर रीझ गई।

गोपियो के साथ रास

कुछ धर्मध्वजियो को इस पर बडा ऐतराज़ है कि कृष्ण गोप गोपियो के साथ रास रचाते थे। तरुण तरुणिया मिल कर हसे, गाये, नाचे, यह बिल्कुल स्वाभाविक और वाछनीय है। कुछ पुराणो के सिवाय कही ऐसा उल्लेख नहीं है कि गोप गोपिया रास मे मर्यादाओ का उल्लघन करते थे। ब्रह्मचर्य की एक सतुलित धारणा वाछनीय है, जिसमे युवक युवतिया स्वस्थ स्वाभाविक जीवन बिता सके।

शौर्य और साहस

श्रीकृष्ण मे वीरता और साहस कूट कूट कर भरा था। चाहे मरखने बैल को वश मे करना हो, या काले नाग को पकड कर उसके दात तोडने हो, या अतिवृष्टि से आई बाढ से लोगो की रक्षा करनी हो, श्रीकृष्ण ही सबसे आगे आते है। उनकी अगुवाई मे औरो का हौसला बढता था। कृष्ण गोपो के स्वामी नहीं थे, सखा थे, गोपियो के पति नहीं, मित्र थे। स्त्री-पुरुष मे पति पत्नी के अलावा भी कोई नाता हो सकता है, इसे धर्मध्वजी लोग समझ नहीं सकेंगे।

ऐसे बली, गुणी व्यक्ति की ख्याति कस तक पहुचनी ही थी। उसने कृष्ण को बुलवा भेजा। सब समझ गये कि यह मृत्यु का बुलावा है। कृष्ण बलराम को साथ ले कर मथुरा गये—अशकित, इस विश्वास के साथ कि विजय उनकी ही होगी। बुलावा मृत्यु का ही था, पर वह कृष्ण की नही, कस की मृत्यु का था। उस समय प्रकट हुआ कि कृष्ण लोकोत्तर पुरुष है।

स्वय राजा नहीं बने

कस को मारने के बाद कृष्ण स्वय मथुरा के राजा बन सकते थे। अपने पिता वसुदेव को राजा बना सकते थे। परन्तु उन्होने कस के पिता उग्रसेन को राजा बनाया।

उसके बाद वह फिर गोकुल मे गौए चराने, दूध पीने, मक्खन खाने, और रास रचाने आ सकते थे। पर उन्होने उधर मुड कर ही नहीं देखा। गोपियो का उनके लिए इतना ही मूल्य था। और धर्मध्वजी उन पर कामुकता का लाछन लगाते है?

शिवाजी के आदि गुरु

मथुरा मे कस का वध करने के बाद कृष्ण राजनीति मे उलझते गये। शाल्व और जरासन्ध से शत्रुता ठनी। इस दृष्टि से कृष्ण शिवाजी के पूर्वज गुरु थे। शक्तिशाली शत्रु के सम्मुख पलायन की रणनीति उन्होने ही शुरू की। 'मर जायेगे, पर युद्ध से पीठ नही दिखायेगे' यह आदर्श उन्होने दूसरो के लिए छोड दिया। उनका कहना था कि लक्ष्य तो विजय है। वह जिस उपाय से प्राप्त होती हो, उसका ही अवलम्बन करना चाहिए।

अपने शौर्य और नीति-कौशल से कृष्ण ने एक एक करके अपने सब शत्रुओ को उखाड फेका। भीम और अर्जुन की सहायता से उन्होने जरासन्ध को मारा। फिर अपने पुराने ईर्ष्यालु प्रतिद्वन्द्वी शिशुपाल को युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे सबकेदेखते देखते मार डाला। उस समय तक उनकी ख्याति इतनी बढ गई थी कि जब सर्वश्रेष्ठ राजा को अर्घ्य देने का प्रश्न उठा तो भीष्म पितामह ने कृष्ण का ही नाम सुझाया। गोकुल के ग्वाले के लिए इससे बडी उपलब्धि और क्या हो सकती थी?

दुर्बल के साथी

कृष्ण के चरित्र की बडी विशेषता यह है कि वह दो प्रतिद्वन्द्वियो मे से दुर्बल पक्ष का साथ देते है। सत्ता पक्ष से उनका विरोध रहता है, क्योकि सत्ता शासक को भ्रष्ट कर देती है। कृष्ण ने कौरवो का साथ न दे कर पाडवो का साथ दिया।

दुर्बल का साथ देना विपत्ति को निमत्रण देना ही है। परन्तु कृष्ण विपत्तियो को झेलने मे समर्थ थे और विपत्तियो से जूझने मे उन्हे आनन्द आता था।

कौरवो की राजसभा मे जब दुर्योधन के आदेश से दुशासन ने एकवस्त्रा द्रौपदी की साडी खीच कर उसे निर्वस्त्र करने की चेष्टा की, और भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, और कर्ण जैसे महारथी उचित अनुचित का निर्णय करने मे असमर्थ रहे, तब कृष्ण को एक पल के लिए भी सशय नही हुआ। उन्होने दस हजार हाथियो केबल वाले दु शासन से द्रौपदी की रक्षा की। भीष्म आदि सभी महारथियो के माथे पर सदा के लिए कलक पुत गया। (कुछ विद्वानो के विचार मे चीर बढाने की बात प्रक्षिप्त है। —स०)

निर्लिप्त जीवन

तालाब के जल मे जैसे कमल का पत्ता होता है, वह पानी मे रहता है, पर गीला नही होता, वैसे ही कृष्ण सब कर्म करते हुए भी निर्लिप्त रहते थे। यही उनका निष्काम कर्म योग था। 'कर्म करो, पर कर्मफल की इच्छा मन करो' यह निष्काम कर्मयोग का गलत अर्थ है। फल की इच्छा के बिना कोई भी व्यक्ति कर्म मे प्रवृत्त ही क्यो होगा? 'कर्म फल मे आसक्ति मत रखो', यह सही अर्थ है। परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की इच्छा से परीक्षा दो, जी जान से यत्न करो कि पास होवो। परन्तु यदि पास न हो पाओ, तो इतने दुखी मत हो जाओ कि आत्महत्या ही कर लो। फल मिल गया तो बहुत अच्छा, न मिला, तो भी कोई वात नही। 'निष्काम' के बजाय 'अनासक्ति' शब्द अधिक उपयुक्त रहेगा।

गीता का उपदेश

कृष्ण के व्यक्तित्व का सर्वोत्तम रूप प्रकट हुआ है उनके गीता प्रवचन मे। यहा उन्होने तत्व विवेचन मे अपना ऋषि रूप प्रकट किया है। अन्य महापुरुषो मे यह बौद्धिक तत्व अत्यन्त अल्प रहा है। गीता का चिन्तन बहुत गहन और अद्भुत है। इसी कारण कृष्ण अन्य सभी योद्धाओ, विचारको, कलाकारो, विद्वानो से उसी प्रकार बहुत ऊचे दिखाई पडते है, जिस प्रकार सरगमाथा (ऐवरैस्ट) हिमालय के अन्य शिखरो से ऊचा दिखाई पडता है।

६०-ए, कमला नगर, दिल्ली-६

एक बार फिर से दोस्ती अपनायें हम

❑ डा० मुजफ्फर मुजाहिद

सगच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम्।
देवा भाग यथा पूर्वे स जानाना उपासते॥
प्रेम से मिल कर चलो, बोलो, सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजो की भाति तुम कर्तव्य के मानी बनो॥

एक बार फिर से दोस्ती अपनाये हम।

न मै तुमको तुम्हारी नफरतो की भीड मे देखू,
न पाओ तुम मुझे अपनेपन के गम से बेगाना।
तुम्हारी दोस्ती की हद से मेरी हद भी मिल जाये,
तुम्हारे रजो गम भर दे मेरी फिक्रो का पैमाना।

मेरे माजी का अफसाना तुम्हारे बिन अधूरा है,
तुम्हारे हाल को मेरे सहारो की जरूरत है।
मै दिल मे कैद अपनी बेरुखी को खाक कर डालू,
तुम्हे भी रास अब आ जाये जो राहे मुहब्बत है।

भुला दो तुम सभी अपने पुराने वे गिले शिकवे,
भुला दू मै भी, कुछ मुद्दत तलक अपने पराये थे।
ये सब दुश्मन के पासे हैं, बगरना हमने और तुमने
अखूबत की धुनो पर जिदगी के गीत गाये थे।

है हम भी महबे ख्वाब इसके, तुम्हे भी इसकी खुशफहमी,
कि हम महफूज है ऐटम बमो के सायबानो मे।
खुशी हरगिज न देगें दिल को ये तखरीब के साये।
कहर बरसायेगे ये जिदगी के आशियानो मे।

चलो, अपने गरेबानो मे फिर हम झाककर देखे।
वहा अपनी ही कमियो के सिवा शायद न कुछ पाये।
चलो, झगडो के ऊपर उठकर कुछ ऐसा करे, जिससे
गिले शिकवे नये रिश्तो की गर्मी मे पिघल जाये।

मोहब्बत के खजाने से पयामे दोस्ती लेकर
तुम्हारे कपकपाते लब पर मेरा नाम आ जाये।
मेरी आखे छलक उठे तुम्हारे इस इरादे पर।
और इन होठो के दामन पर तुम्हारा जिक्र छा जाये।
चलो, एक बार फिर से दोस्ती अपनाये हम।

बॉयज होस्टल, मोतीलाल नेहरू मैडिकल कालेज, इलाहाबाद
(श्री मदनलाल खन्ना, महामत्री, डी० ए० वी० कालेज प्रवन्ध समिति द्वारा प्रेषित)

महर्षि दयानन्द द्वारा गुरु दक्षिणा

❑ वैद्य विजयगुप्त कौशिक, आयुर्वेद रत्न शास्त्री, ऐम.ए

जिन पादपद्मकी रज मे है ऐसो तेज,
स्वर्णमय बनाय देत तुच्छ तन माटी के।
जिनके प्रताप तैं खुले हैं ज्ञान के नयन,
मिट जाय ताप त्रय भूरि भव भाटी के।
वेद को बतायो पन्थ बोध गम्य कीन्हें ग्रन्थ,
शास्त्र को दियो है शस्त्र काटे मूर्ख काठी के।
तिनही के तर्पण को दक्षिणा के अर्पण को,
भाव मे विभोर भये निज घट-घाटी के॥१॥
सौपी ज्ञान गठरी मे जग की अमूल्य निधि,
वाहि तै उर्ऋण होन चित्त चहकत है।
"हो तौ दीन वित्त हीन" मन मे हौ यो मलीन,
जल बिनु जैसे मीन व्यग्र तड़फत है।
एहि छिन बीजुरी सी चमकी तरग एक,
लाये एक पात्र भरि लौग मॅहकत है।
सौपत यौ चरनन मे कण्ठ गहवर आयो,
"स्वीकृत हो भेट ये" यो कहत सहमत है॥२॥
बैन भये मूक मनमाहि उठी गहरी हूक,
नैनन तै बहन लागे परवाह जल के।
एक ओर गग है धारन सौ बहै मानौ,
आन ओर जमुना की धार बहै पलकै।
गग और जमुना के माझ बहै सरसुती,
मानो तीनौ मिलि बैठी नास हित मल के।
मथुरा की गली गली बहन लागो प्रयाग,
मूढता हू जावै मिटि पाप होवे हलके॥३॥
ज्ञान के प्रकाश, चर्म चक्षु के प्रकाश हीन,
दैन्य भरे बैन सुनि भये अकुलाने से।
धीरज अधीर केहू ह्वै कै वे अधीर कछु,
रूप तै विरूप भये अन पहचाने से।
एक पल अन्तर तै अन्तर विलीन ह्वै कै,
हर्ष मे विभोर भये होठ मुसकाने से।
नाही मात्र ब्रज के पै विश्व के आनन्द कन्द,
पूज्यपाद विरजानन्द बोले वेद साने से॥४॥
डारौ एक बार घूमि भूमि सब भारत की,
डूबौ अन्धतमस मे आर्य को समाज है।
वेदन के वेद बिनु नाही मिटै भेद-भाव,
स्वारथ मे डूबे, नाहि आरत सौ काज है।
शूद्र और नारिन की नाडी पहिचान करौ,
वेद दरसन को हू तरसत आज है।
ज्ञान बिन्दु पडित कहावै बहकावै सबै,
तिलक लगाय द्विज बने सिरताज है॥५॥
खण्ड खण्ड करौ तुम पाखण्ड असख्य सब,
धर्म की पताका फहरावौ विश्व कौन कौन।
वेद उक्त पन्थ ही प्रशस्त सब पन्थन मे,
"कृण्वन्तो विश्वमार्य" मन्त्र फैले जौन जौन।
कर्म को ये मर्म "उच्च नीच वर्ण को विधान",
देश मे स्वराज्य हौवै, देव वाणी स्रौन स्रौन।
यजन को धूम घहरावै नभ मण्डल मे,
ईश को भजन गावै नारी नर भौन भौन॥६॥
एतो काम आवौ करि दक्षिणा मै पावौ तब,
सुनि सुनि गुरु बानी ऋषि यो गुनन लगे।
कथनी ते सॉच दूर, करनी तै ऑच दूर,
गुनि गुनि ऋषि के यौ नैनहु चुअन लगे।
दीनो है झुकाय शीश गुरु के चरन वन्द्य,
"देहु विदा" रुँधि रुँधि बैन यो कहन लगे।
"पन्थ होवै शिवमय, शिवमय करौ ये जग,
जग जस फैले गुरु सीस यौ छुअन लगे॥७॥

देशी दवाखाना, देवेन्द्र मार्केट, जनकपुरी, रामघाट रोड, अलीगढ़

पत्रकारिता का चमत्कार

एक पत्रकार मरा और यमदूतो की गलती से स्वर्ग मे जा पहुचा। पत्रकारो के स्वर्ग मे जाने की गुजाइश कम ही होती है। पहरेदार ने उसे रोका, कहा 'तुम यहा कैसे?'

'मै पत्रकार हू। मुझे अन्दर जाने दो', पत्रकार ने रौब से कहा।

पहरेदार ने कहा 'स्वर्ग मे कुल दस पत्रकारो का कोटा था। वह पूरा हो चुका है। आपको जाना हो, तो नरक मे चले जाइये। वहा भी पत्रकारिता की अच्छी गुजाइश है। सनसनीखेज घटनाए खूब घटती है।'

पत्रकार ने कहा 'मै यत्न करता हू कि इन दस पत्रकारो मे से किसी एक को समझा बुझा कर नरक मे जाने के लिए तैयार कर लू। यदि कोई राज़ी हो गया, तब तो मुझे स्वर्ग मे रहने दोगे?'

'यह हो सकता है।'

'तब मुझे अन्दर जाने दो। मै पत्रकारो से मिल कर कोशिश करता हू।'

पहरेदार ने उसे भीतर जाने दिया। पत्रकार ने जो भी स्वर्ग मे मिला, उसी से कहा कि नरक मे एक नया अखबार निकलने वाला है। वहा सम्पादको की आवश्यकता है। वेतन बहुत अच्छा है, बगला और कार साथ मे।

शाम को जब वह पहरेदार के पास लौटा, तो पहरेदार से उसने पूछा · 'कोई पत्रकार बाहर गया या नहीं?'

पहरेदार लपक कर उठा और उसने दरवाज़े का कुडा भीतर से बद कर दिया और कहा 'तुम भाग मत जाना।'

पत्रकार ने पूछा 'क्या हुआ?'

'दस के दस पत्रकार भाग कर नरक चले गये। तुम अब यही रहो।'

पत्रकार सोच मे पड गया। फिर बोला 'सब चले गये? तब तो हो सकता है कि सचमुच ही कोई अखबार निकल ही रहा हो। मैने तो यो ही कह दिया था, पर जब सब गये है, तो कुछ बात अवश्य होगी। मुझे भी जाने दो।'

और वह कुडा खोल कर दरवाज़े से बाहर भाग निकला।

(पृष्ठ ५ का शेष)

हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह

शेरवानी, अचकन व पाजामा पहनते थे। सिर पर भी काले फुदने वाली लाल रूमी टोपी पहनते थे। इस स्थिति मे यह पहचानना कठिन होता था कि कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान। एक काग्रेसी सत्याग्रही के सामने मैने यह समस्या रखी। उसने बडा सरल तरीका बताया। उसने कहा कि व्यक्ति का कान देखो। यदि वह छिदा है, तो हिन्दू है, अन्यथा मुसलमान। पर हिन्दू समाज मे आज जैसी स्थिति है, कर्णवेध सस्कार प्राय समाप्त ही हो गया है। मुझे स्मरण है कि मै जब गुरुकुल मे प्रवेश के लिए गया, तब मैने बालिया पहन रखी थी। भाई वशीलाल जी ने प्रवेश के बाद ये दोनो बालिया दान पात्र मे डलवा दी थी। यह गनीमत है कि अब मुसलमानो ने फुलकानुमा क्रोशिये से बनी टोपी से अपनी अलग पहचान बना ली है।

मार्मिक विदाई

वारगल जेल से रिहाई के समय जो भावुक दृश्य उपस्थित हुआ, वह भुलाया नहीं जा सकता। रिहाई से कुछ दिन पूर्व मुझे टाइफाइड हो गया था तथा नगर के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सजा की समाप्ति के बाद अस्पताल व जेल अधिकारियो मे मेरी कानूनी स्थिति पर विवाद था। अस्पताल वाले मुझे रिहा करने को तैयार नही थे और जेल वालों केलिए मुझे छोडना जरूरी था। अन्त मे मुझसे यह लिखवाया गया कि मै स्वेच्छा से अस्पताल छोड रहा हू। फिर मुझे रिहाई से एक दिन पूर्व जेल लाया गया, क्योकि रिहाई जेल से ही होनी थी।

उस दिन रिहाई हम तीन साथियो की ही होनी थी। हमारी रिहाई की बात सुनते ही पुराने उमरकैद बदी, जो प्राय सबवार्डर बन गए थे, हमे विदाई देने आए। हमे कालीन बनाना सिखाने वाला रामराव कृष्णराव फूट फूट कर रो रहा था। हमारे व्यवहार और आत्मीयता से उनको हमारे साथ बैठना उठना अच्छा लगता था। छोटी आयु के कारण वे हमको लडके ही समझते थे, यद्यपि हम तीनो कालेज के छात्र थे। लगभग १० वार्डर हमे जेल के द्वार तक छोडने आए। पता नही क्यो, अन्य अपराधो मे गिरफ्तार कैदी हमे बडी श्रद्धा से देखते थे। वे समझते थे कि हम किसी बडे उद्देश्य से जेलो मे स्वेच्छा से आए है। हैदराबाद पुलिस का एक जवान हैदराबाद की सीमा तक हमारे साथ रहा तथा शोलापुर की बस मे बैठा कर उसने हमसे विदाई ली। वह हिन्दू था, उसकी आखें भी सजल हो गई।

सत्याग्रह से शिक्षा

हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता पर विजय दिवस मनाते हुए हमे 'युद्धदेहि' की विजिगीषु भावना को प्रज्वलित रखना होगा। हमे आर्य समाज के समग्र कार्यक्रम के रूप मे किसी न किसी ध्येय के लिए पूर्ण समर्पण की भावना से आत्माहुति देने के लिए तैयार रहना होगा। हैदराबाद सत्याग्रह का विजय दिवस हमारा पहला और अन्तिम विजय दिवस न हो। इसके लिए हमें नए 'आक्रमणों' (कार्यक्रमो) के साथ नई नई विजयो को प्राप्त करना होगा।

टी-८, ग्रीनपार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली-१७

डी० ए० वी० सेंटेनरी पब्लिक स्कूल

महम रोड, भिवानी–१२७०२१

(डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, नई दिल्ली द्वारा सचालित)

१०वीं कक्षा की परीक्षाओं मे शानदार परिणाम के लिए

हमारे छात्रों और उनके माता पिताओं को हार्दिक बधाइयां!

हमारे विद्यालय के रत्न

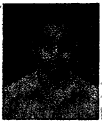
९० २%
अमनदीप वशिष्ठ

९० २%
राकेश कुमार

८९ २%
शिल्पा

८९%
श्रेष्ठा शर्मा

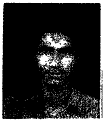
८४ २%
नरेन्द्रसिह

८४%
अर्चना

८२ २%
प्रदीप कुमार

८१%
प्रीति पाराशर

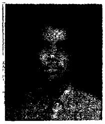
७८ ४%
भूपेन्द्रसिह

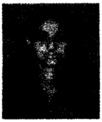
७८ ४%
ललिता

७८%
ज्योति डांगी

७७%
आनन्द प्रकाश

हमारे विद्यालय के गौरव (खेलकूद)

हमारा अन्तरराष्ट्रीय चैम्पियन

गौरव शर्मा
राष्ट्रीय बैडमिटन प्रतियोगिता मे ३रा स्थान पाया, चैकोस्लोवाकिया मे भारत की बैडमिटन टीम के खिलाडी के रूप मे भाग लिया।

राज्य चैम्पियन

रवि
क्रिकेट टीम

राहुल धयाल
क्रिकेट (जिला चैम्पियनशिप)

रोबिन धयाल
क्रिकेट (जिला चैम्पियनशिप)

राष्ट्रीय चैम्पियन

कपिल स्वर्णपदक विजेता
राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता

सौरव शर्मा
राष्ट्रीय बैडमिटन चैम्पियन

आशिष चौहान
राष्ट्रीय तीरदाजी चैम्पियनशिप मे तृतीय

बलराम चौधरी
राष्ट्रीय WUSHU चैम्पियनशिप मे द्वितीय

सन्नी
राष्ट्रीय तीरदाजी प्रतियोगिता मे भाग लिया

हमारे विद्यालय के देदीप्यमान नक्षत्र

पंकज धमीजा
(राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त)
वर्ष २००१ की अखिल भारतीय सस्कृत परीक्षा मे ३रा स्थान और राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त की।

ईश कुमार
आर्य विद्या सभा नई दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सस्कृत परीक्षा मे वरीयता प्राप्त की।

(पृष्ठ १ का शेष)

जब स्वतंत्रता देवी ......

द्वारा पाकिस्तान मे इन काफिलो के ऊपर गिरवाई गई।

स्वाधीनता सभालना कठिन

१५ अगस्त को भारत स्वाधीन हो गया था, परन्तु उस स्वाधीनता को किस पिटारे मे सहेज कर रखा जाये, यह समझ नहीं आ रहा था। इसलिए लार्ड माउटबेटन को ही, जो १४ अगस्त की रात तक वायसराय (ब्रिटिश नरेश का प्रतिनिधि) था, स्वाधीन भारत के प्रथम महाराज्यपाल की शपथ दिला दी गई।

पाकिस्तान मे हो रहे उपद्रवो के कारण आ रही शरणार्थियो की विशाल भीडो को सभालना, उनके रहने, खाने का प्रबन्ध करना नये अनुभवहीन मत्रियो के बस का नही था। अत नेहरू जी ने माउटबेटन से अनुरोध किया कि इस विकट स्थिति को वह ही सभाले। माउटबेटन ने स्वीकार कर लिया, पर एक शर्त पर कि सरकार का कोई भी मत्री (प्रधान मत्री भी) उसके काम मे दखल नही देगा, केवल हा मे हा मिलायेगा। यह शर्त मजूर की गई और माउटबेटन ने जैसा भी हो सका, काम चलाया।

गाधी जी दिल्ली मे नही थे

स्वाधीनता समारोह की तडक भडक देखने के लिए काग्रेस के सर्वोच्च नेता, 'इस शताब्दी के सबसे महान भारतीय', राष्ट्रपिता महात्मा गाधी दिल्ली मे नही थे। अपनी नीतियो का परिणाम देख कर वह दुखी थे। अपनी झेप मिटाने के लिए वह नोआखाली के उन गावो की पदयात्रा कर रहे थे, जहा हिन्दुओ का भारी नरसहार किया गया था।

सीधी कार्रवाई

१६ अगस्त १९४६ को मुस्लिम लीग ने कलकत्ते मे 'सीधी कार्रवाई' दिवस मनाया था। यह दिवस ७२ घटे चलता रहा। सीधी कार्रवाई ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध की जानी थी। परन्तु जैसा कि ऐसे अवसरो पर होता रहा है, यह की गई हिन्दुओ के विरुद्ध। तीन दिन तक कलकत्ते मे मुस्लिम लीगी सरकार के इशारे पर गुडो के गिरोह हिन्दुओ की दूकाने लूटते और जलाते रहे और हिन्दुओ को मारते रहे। तीन दिन मे ६ हजार से अधिक हिन्दू-सिख मारे गये। नौकरो ने मालिको को मार दिया, पडोसियो ने पडोसी को लूट लिया। न पुलिस ने, न सेना ने बचाने की कोई कोशिश की। सरकार ने सेना बुलाई ही नहीं।

बिहार मे दगे

कलकत्ते से भागे बिहारियो ने जब अपने गावो मे इन अत्याचारो के वर्णन सुनाये, तब वहा दगे भडक उठे। नेहरू जी मुस्लिमो द्वारा किये गये उत्पातो की कोई रोकथाम नही कर पाते थे, परन्तु हिन्दू द्वारा किये जा रहे उपद्रवो की रोकथाम के लिए वह कडे से कडा कदम उठाने को तैयार रहते थे। बिहार मे हुए उपद्रवो का कडाई से दमन किया गया। कुछ ऐसी भी चर्चा थी कि विमानो से बम गिराये गये।

नोआखाली मे नरसंहार

बिहार के उपद्रवो का बदला मुस्लिमलीगियो ने पूर्वी बगाल के नोआखाली इलाके मे लिया। यहा से उन्होने हिन्दुओ का समूल ही नाश कर दिया। उन्ही घावो पर मरहम लगाने गाधी जी गये थे। गाधी जी पैदल गाव गाव घूमे। किसी उपद्रवी मुसलमान ने आ कर उनसे, जो कुछ हुआ, उसके लिए खेद या पश्चात्ताप प्रकट नहीं किया।

मजे की बात यह हुई कि श्री हसन शहीद सुहरावर्दी, जो कलकत्ते की सीधी कार्रवाई के सयोजको मे से एक थे, गाधी जी के भक्त बन गये और उनके प्रयत्न से गाधी जी अपनी नोआखाली पदयात्रा निर्विघ्न पूरी कर सके।

गाधी जी ने मुसलमानो की रक्षा की

अब १५ अगस्त १९४७ आ गया था। कलकत्ता भारत मे रह गया था। साल भर पहले सीधी कार्रवाई मे जिन लोगो को आर्थिक या शारीरिक क्षति पहुची थी, वे बदला लेने को बेचैन थे। उन्हे आशा थी कि इस बार पुलिस उनकी अनदेखी कर देगी और वे १९४६ का पूरा बदला चुका सकेगे।

गुप्तचर विभाग से इस आशय की सूचनाए लार्ड माउटबेटन को मिल रही थी और उसकी चिन्ता का पार नहीं था। बगाली भावुक होता है और जल्दी भडकता है। कलकत्ते मे उपद्रव हो गया, तो २० हजार सैनिक भी उन्हे सभाल नहीं पायेगे।

माउटबेटन के चतुर मस्तिष्क ने एक उपाय सोच निकाला। उसने गाधी जी की अहिसा साधना की प्रशसा करते हुए उन्हे लिखा कि इस समय एक आप ही है, जो कलकत्ते के मुसलमानो के प्राण बचा सकते है। श्री सुहरावर्दी ने भी गाधी जी से यही अनुरोध किया कि वह १५ अगस्त को कलकत्ते मे ही रहे।

अच्छे सन्त, अनाड़ी राजनीतिज्ञ

गाधी जी ने माउटबेटन का और सुहरावर्दी का अनुरोध स्वीकार कर लिया। यह एक अच्छे सन्त और अनाडी राजनीतिज्ञ का कार्य था। गाधी जी इन दोनो के हाथो के मुहरे बन गये। पजाब, सिंध और सीमा प्रान्त मे तो हिन्दुओ का सहार नहीं रुका, किन्तु कलकत्ते मे रुक गया। खून की एक बूद तक नही बही। माउटबेटन ने लिखा 'जो काम पचास हजार सैनिको की सुरक्षा सेना नहीं कर सकती थी, वह अकेले गाधी जी ने कर दिखाया, इस स्तुति से गाधी जी का प्रसन्न होना स्वाभाविक था। इससे प्रसन्न होकर गाधी जी ने माउटबेटन के इशारे पर दिल्ली मे साम्प्रदायिक उपद्रवो की रोकथाम के लिए आमरण अनशन किया और पाकिस्तान को ५५ करोड की रकम तुरन्त चुका देने का हठ किया।

गाधी-नेहरू गुट की नीतिया भोलेपन और साधुता पर आधारित थीं। वे समझ नहीं पाये कि उनका मुकाबला किन से और कैसी शक्तियो से है। आज जो अफगानिस्तान मे तालिबानी शासन है और पाकिस्तान मे कट्टरपथी दल है, वे उस समय अकुरित हो रहे थे। गाधी जी उन अकुरो को सही पहचान नहीं पाये। उसकी व्यथा आज देश को भुगतनी पड रही है।

शरणार्थियों का रेला

पजाब से आने वाले लुटे पिटे शरणार्थियो का रेला दिनो दिन बढता ही गया। डेढ करोड विस्थापितो को बसाना भारत सरकार के लिए सबसे बडी समस्या बन गया। पाकिस्तान चाकूबाज की तरह नित नई माग पेश करता गया। अन्त मे गाधी जी की अव्यावहारिक नीतियो से लोग इतने खिन्न हो गये कि खुल्लम खुल्ला उनका विरोध करने लगे। जिन शरणार्थियो ने पाकिस्तान से आते समय भीषण कष्ट सहे थे, वे गाधी जी की कटु आलोचना करने लगे।

१५ अगस्त की आधी अधेरी रात मे जिन ज्योतिषियो ने भारतीय स्वतत्रता का शुभ मुहूर्त बताया था, उनकी भविष्यवाणी गलत रही। उस दिन से आज तक भारत एक दिन भी चैन की सास नहीं ले सका। पाकिस्तान विषैले काटे की तरह उसकी एड़ी मे गहरा गडा है। उसे सऊदी अरब, ईरान जैसे धनी और अमेरिका तथा चीन जैसे शक्तिशाली देशो का समर्थन प्राप्त है।

भारत पाकिस्तान से निपट सकता है, परन्तु उसके लिए स्पष्ट इच्छा चाहिए। लोकतत्रीय भारत में राष्ट्र की इच्छा ही स्पष्ट नहीं है। भाजपा की इच्छा कुछ है, तो काग्रेस की कुछ और है, राष्ट्रीय जनता दल की कुछ और ही है।

चरित्र का ह्रास

उसके बाद चरित्र का तो ऐसा ह्रास हुआ है कि वह कहीं ढूढे दिखाई ही नहीं पडता। अपराधजीवी सासद और विधायक बने बैठे है, न्यायपालिका जू की चाल से चलती है, नौकरशाह रिश्वत और घोटालो मे फसे है।

नेहरू जी ने जो कहा था कि एक युग समाप्त हुआ और दूसरा शुरू हुआ है, वह अब व्यग वाक्य ही प्रतीत होता है।

वैद्य विद्यारत्न

४१३, जागृति ऐन्क्लेव, पटपडगज, दिल्ली

(पृष्ठ २ का शेष)

विपत्ति में धैर्य ....

का सामना करना ही पडेगा। इससे कोई बच नही सकता। जिस प्रकार प्रत्येक कार्य की पूर्व तैयारी हम करते है, उसके लिए सारा सामान जुटाते है, उसी प्रकार इसकी भी पूर्व तैयारी हमे कर लेनी चाहिए। कहा भी गया है— "चलो झूमते सर पे बाधे कफन।" यह निश्चय मन मे कर ले कि चाहे कुछ भी हो, हम हसते हुए प्राण त्यागेगे। जब मृत्यु का सामना हो, तब अपना सब कुछ ईश्वर को समर्पित करके केवल उसी का स्मरण करे।

सुख के दिनों मे

सहने लायक कष्ट सहने की वृत्ति अपनाए। आमतौर पर हम अत्यधिक सुखभोग की अवस्था मे रहते है। आपत्ति के समय से तुलना करने पर पता चलता है कि हम कितने आराम मे रहते है, तब थोडे सुख मे भी हमे स्वर्गीय आनन्द का अनुभव होगा। इसलिए प्रत्येक सुखभोग से पहले मेहनत तथा सहनीय कष्ट उठाने का नियम बना ले। सारा दिन मौज मस्ती और ऐश आराम मे रहना तथा मेहनत से कतराना अपना ही अहित करना है। जीवन मे आने वाली कठिनाइयो को हसते हसते झेले।

पुरुषार्थ करे। जो अपने लिए चाहे, वही सारे प्राणिमात्र के लिए भी चाहे तथा इसके लिए प्रयत्नशील रहे। सबके भले की सोचे, खासकर जो आपके आश्रय मे है, जो निर्बल है, गरीब है, जो पीडित है। भोले भाले बेजुबान जानवरों के बारे मे भी सोचे।

"इद न मम" का अभ्यास करे। शरीर को ले कर सारा साज सामान उसी की सम्पत्ति मान कर चले।

आपत्काल को छोड, नियमित अतिश्रम न करे, चाहे वह किसी के भले के लिए ही क्यो न हो। सारे कार्य उसी के है, ऐसा ही मान कर चले।

सत्य की खोज सदैव करते रहे।

ईश्वर से गहरा तथा ससार से कम सम्बन्ध रखे।

ध्यान, जप, योग आदि का अभ्यास करे। यदि प्रात साय आसन मे बैठ कर ध्यान न कर सके, तब कोई भी कार्य (जो आदतन होता हो) करते समय तथा आराम के समय जप करे। कुछ जप इस प्रकार है—

गायत्री या कोई और मत्र गा कर बोले।

ओ३म् या कोई और ईश्वर का नाम बार बार बोले।

ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना का कोई दोहा या वाक्य दोहराये।

मत्र या शब्द बोलते हुए उसका अर्थ मन मे धारण करते जाए। ईश्वर को स्मरण रखते हुए हर कार्य पूरा ध्यान लगा कर करना भी ध्यान है।

ध्यान का अभ्यास जैसे जैसे बढता जाएगा वैसे वैसे निर्भयता आती जाएगी यहा तक कि मृत्यु का डर भी दूर हो जाएगा।

जब हम पूरा प्रयत्न करते है तो ईश्वर हमारी प्रार्थना भी सुनता है। इसलिए प्रतिदिन नियमित रूप से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना एव उपासना करें।

यदि आपने अपने मन को वश मे कर लिया है तथा जो कुछ भी आपको करना उचित है, वह आप कर रहे है, तब उठिए, मुस्कुराइए और पूरी तरह निर्भय हो कर आगे बढिये। आपकी रक्षा ईश्वर करेगा, आपत्तिया आपको छू भी नहीं सकेगी।

बी-२८ए, सैक्टर २६, नोएडा
(उत्तर प्रदेश)

समाचार जगत्

आर्य समाज शिकागो का भव्य उत्सव

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

यजुर्वेद पारायण यज्ञ का एक दृश्य। डा० सोनी, सरोज सोनी, धर्मवीर गुलाटी, प्रेम सुशील, मधु गुप्ता, मधु आर्य और विनय शर्मा (लाल दुपट्टे मे कुर्सी पर बैठे हुए)।

आर्य समाज की स्थापना के १२५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे अमरीका की सुप्रसिद्ध आर्यसमाज शिकागोलैड ने हर्षोल्लास के साथ भव्य उत्सव मनाया। इस अवसर पर डा० दिलीप जी वेदालकार के ब्रह्मत्व मे द्विदिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। शताधिक यजमानो ने पवित्र ऋचाओ से आहुतिया देकर विश्वशान्ति के लिए प्रार्थना की। डा० वेदालकार ने वेदमत्रो की रोचक एव सारगर्भित व्याख्या की। महायज्ञ मे आर्योपदेशक श्री धर्मपाल जी शास्त्री एव शिकागो स्थित बहन शशि टडन ने वेदपाठ मे साथ दिया।

महायज्ञ आरम्भ करने से पूर्व प्रथम अमेरिकी ध्वज, फिर भारतीय तिरगा झडा और ओम् पताका का आरोहण क्रमश डा० सुखदेवचन्द सोनी, प० धर्मपाल शास्त्री और डा० दिलीप वेदालकार ने फहराया।

महायज्ञ के प्रथम सत्र के बाद डा० वेदालकार द्वारा सम्पादित सुन्दर वैदिक ज्योति' नामक पत्रिका का विमोचन शिकागो के सुप्रसिद्ध भारतीय उद्योगपति श्री भगुभाई पटेल के हाथो सम्पन्न हुआ। उत्सव पर आर्य सम्मेलन, बाल सम्मेलन, योग सम्मेलन, सगीत सम्मेलन तथा सास्कृतिक कार्यक्रम हुए। इन सम्मेलनो का आयोजन क्रमश श्री विनय शर्मा, श्रीमती सगीता मल्होत्रा, श्री मोहन क्षेत्रपाल, श्रीमती उमानाथ तथा श्रीमती मधु आर्य एव श्री मधु गुप्ता ने अत्यन्त सफलतापूर्वक किया।

उत्सव की सफलता मे डा० सुखदेवचन्द सोनी, श्रीमती प्रभा पुरी, श्री विनय शर्मा, श्रीमती सरोज सोनी, श्री आनन्द मल्होत्रा, श्री अजय आर्य, मधु आर्य, मधु गुप्ता, श्री प्रेम सुशील, श्रीमती दुर्गेश हस, श्री बलदेव जी सोनी और श्री अरोडा परिवार का विशेष योगदान रहा।

आर्य समाज शिकागो के पास अपना विशाल भवन और विशाल पुस्तकालय है। समाज मे साप्ताहिक सत्सग के अतिरिक्त नियमित रूप से बालको के लिए 'History and Heritage of India' की कक्षाए, बडो के लिए Introduction to Veda and Upanishad की कक्षा डा० दिलीप जी द्वारा, 'योग' की कक्षा, श्री मोहन क्षेत्रपाल द्वारा और 'हिन्दी' कक्षाए श्रीमती भारती वर्मा द्वारा चलाई जा रही हैं।

आर्य समाज मिंटो रोड पुन: बनाया जाये

आर्य समाज कलकत्ता, १९, विधान सरणी कलकत्ता-६ के रविवारीय साप्ताहिक सत्सग मे एकत्रित सभी आर्यजनो ने दिल्ली स्थित आर्य समाज मन्दिर मिंटो रोड को सरकार द्वारा गिराये जाने पर घोर विरोध व्यक्त किया और सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि

१ आर्य समाज मन्दिर मिंटो रोड का उसी स्थान पर पुन निर्माण कराया जाय।

२ आर्य समाज मन्दिर मिंटो रोड के पुन निर्माण मे आने वाली बाधाओं के विरोध मे घोर आन्दोलन किया जाय।

३ सर्वसम्मति से यह भी निर्णय लिया गया कि इस प्रस्ताव को माननीय प्रधानमत्री, गृहमत्री तथा शहरी विकास मत्री दिल्ली को भेजा जाय और आर्य समाज मन्दिर मिटो रोड दिल्ली का उसी स्थान पर पुन निर्माण करने का अनुरोध किया जाय।

विशाल वेद प्रचार शिविर

हरियाणा के ऐतिहासिक गाव फरल मे फल्गु का मेला १७९ २००१ को लग रहा है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा ने यह तय किया है कि फरल गाव मे १२.९ २००१ से १७९ २००१ तक एक विशाल वेद प्रचार शिविर लगाया जाए, जिसमे दोनो समय यज्ञ होगा, भजनोपदेश तथा विद्वानो के सारगर्भित प्रवचन होगे। श्री जगतराम बसती राम, श्री सुभाषचन्द्र तथा श्री उपेन्द्र जी के भजन होगे। श्री ज्ञानेश्वर भारती, आचार्य रामकिशोर, स्वामी निगमानन्द के वेद उपदेश होगे। श्री जगदीशचन्द्र जी वसु के आचार्यत्व मे यज्ञ चलेगा। उपसभा हरियाणा के अधिकारी डा० आर० के० चौहान, प्रधान तथा श्री चमनलाल आर्य, महामत्री भी इस शिविर मे पधार रहे है। शिविर की सफलता के लिए एक समिति का गठन किया गया है, जो प्रि० कुलदीप गुप्ता के नेतृत्व मे कार्य करेगी। श्री गोपाल शर्मा जी इसके सयोजक होगे। समिति के अन्य सदस्य है श्री श्याम सुन्दर, श्री शमशेर सिंह, श्री मैनपाल जी।

आवश्यकता है पुरोहित की

आर्य समाज कागडा के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। आयु चालीस वर्ष से अधिक हो, तो अच्छा है। अपनी योग्यता, अनुभव, प्रमाणपत्र सहित शीघ्र सूचित करे।

रोशनलाल शर्मा
प्रधान, आर्य समाज कागडा (हि० प्र०)

परली के आर्य कार्यकर्ता प० विनायकराव आर्य नही रहे

आर्य समाज परली बैजनाथ जि० बीड (महाराष्ट्र) की सम्पूर्ण गतिविधियो मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले आर्य कार्यकर्ता एव पुरोहित प० विनायकराव आर्य का गत ५ फरवरी को हृदयगति रुक जाने मे दु खद निधन हो गया। श्री आर्य विगत २५ वर्षो से आर्यसमाज परली के साथ एकनिष्ठ होकर समर्पित भाव से कार्य करते थे। नगरवासियो को प्रतिदिन प्रात ४ ४५ बजे वेदमत्रो द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनाते थे। सिद्धान्तनिष्ठा एव प्रखर आर्यत्व की भावना से उनका जीवन ओतप्रोत रहा। उनकी अकाल मृत्यु से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्य समाज परली की अपूरणीय क्षति हुई।

अपनी आयु के ५२वे वर्ष मे अकस्मात् परलोक सिधारने वाले श्री आर्य के परिवार का उत्तरदायित्व आर्य समाज परली ने लिया है।

जालन्धर में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ, जालन्धर मे वेद प्रचार सप्ताह (श्रावणी उपाकर्म) एव योगीराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्वो का आयोजन ४ अगस्त २००१ से १२ अगस्त २००१ तक बडे हर्षोल्लास से किया जा रहा है। कार्यक्रम मे भाग लेने के लिए डा० उमेश जी, ब्राह्म विद्यालय (हिसार), प० निरजनदेव जी इतिहास केसरी (होशियारपुर), प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु जी (अबोहर), सतीश सुमन एव सुभाष राही भजनोपदेशक को निमत्रित किया गया है।

४ अगस्त, २००१ शनिवार से ११ अगस्त शनिवार तक सामवेद के मत्रो द्वारा यज्ञ प्रात ६ ३० से ८ बजे तक हुआ करेगा। यज्ञोपरान्त भजन तथा उपदेश प्रात ८ बजे से ८ ३० बजे तक तथा रात्रि ७ ३० से ८ ३० बजे तक होगे।

५ अगस्त रविवार को कार्यक्रम प्रात ६ ३. बजे से ९ ५० तक चलेगा।

(पृष्ठ ४ का शेष)

दुर्योधन के दम्भ ....

लाये। उन्होने कर्ण को युद्ध के सारे कुपरिणाम बता कर यह बात कही 'कर्ण, तुम कुन्ती पुत्र होने के कारण बडे और पाडव तुम्हारे छोटे भाई है। यदि देखा जाये तो सबसे बडे भाई होने के कारण राज्य पर तुम्हारा अधिकार है। युधिष्ठिर तुम्हारा बहुत प्रशसक है। अत तुम मेरे साथ चलो। वहा राज्याभिषेक की पूरी तैयारी है। वहा वे पाचो भाई तुम्हारा राजतिलक कर तुम्हे पृथ्वीपति बनायेगे। इससे दो लाभ होगे प्रथम तो विनाशकारी युद्ध नही होगा, दूसरे तुम्हारा अभ्युत्थान हो जायेगा।'

यह सुनकर कर्ण ने माता कुन्ती को जननी तो स्वीकार किया, किन्तु नदी मे बहाने के कारण उसने अपने प्राणरक्षक अधिरथ और उसकी पत्नी राधा को अपना माता पिता कहा। इधर दुर्योधन ने उसे गरिमामय प्रतिष्ठा प्रदान कर रखी थी। इस कारण वह उसके प्रति कृतज्ञता के भाव प्रकट कर कृतघ्नता के पाप से दूर रहना चाहता था। अन्त मे कर्ण ने कहा **'विदित मे हृषीकेश यतो धर्मस्ततो जयः।' १४३ ३६।** कृष्ण, मै अपने साधु भाई युधिष्ठिर के प्रति अपार श्रद्धा रखता हू। किन्तु मै वहा नही जा सकता।'

यह दो टूक उत्तर सुन कर श्रीकृष्ण ने अन्त मे कहा 'कर्ण, यदि बिना युद्ध के धर्मराज को अधिकार नही मिल सकता, तो द्रोण, भीष्म से कह देना कि युद्ध के लिए यह अच्छा समय है। खेती कट चुकी है। आज से मार्गशीर्ष की अमावस्या आने पर ७वे दिन रण-दुन्दुभि बजा कर निपटारा करा लेना। मेरा यही अन्तिम निश्चय है।'

इसके पश्चात् वह प्रसन्न मुद्रा मे पाडवो के पास आये और युद्ध की तैयारी करने का विचार प्रकट किया। सस्कृत के कवि ने दुर्योधन की हठपूर्ण मति परख कर ही कहा था **विनाशकाले विपरीत बुद्धि ।** इन प्रमाणो से सिद्ध होता है कि महाराज श्रीकृष्ण युद्ध के विरोधी और शाति के प्रबल समर्थक थे। वह विश्व मे युद्ध होते हुए देखना नही चाहते थे।

'सुकिरण' अ/१३, सुदामानगर,
इन्दौर-४५२००९ (म०प्र०)

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स नं० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R. No. D.L 11082/2001
POSTED AT N.D P O ON 8/9-8-2001 दिनाक १२-८-२००१

[illegible]

मुम्वई आर्य महासम्मेलन के आयोजकों का सम्मान

मार्च २००१ मे हुए मुम्बई आर्य महासम्मेलन के आयोजक कैप्टेन देवरत्न और श्री ओकारनाथ का दिल्ली की आर्य समाजो की ओर से २९ जुलाई २००१ को सार्वजनिक सम्मान किया गया। मुम्बई सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सम्मिलित रूप से किया गया था।

इस सम्मान समारोह मे इन दोनो नेताओ को अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा ने की। उन्होने इन दोनो आर्य नेताओ को स्मृति-चिह्न भी भेट किये।

श्रीयुत चोपडा जी ने अपने भाषण मे मुम्बई सम्मेलन के आयोजको की मुक्त कठ से सराहना करते हुए कहा कि अच्छे कार्यो के लिए यदि कार्यकर्ताओं का सम्मान और प्रशसा कर दी जाये, तो उनका भार भी बढ जाता है। शहीद आर्य नेता रामप्रसाद बिस्मिल का वजन भी बढ गया था। इस प्रकार के सम्मान से कार्यकर्ता को और अधिक कार्य करने की प्रेरणा और उत्साह मिलता है।

इस अवसर पर इन दोनो आर्य नेताओ को सिक्को से तोला गया। काटे पर बिठा कर दोनो को अलग अलग तोला गया। दोनो का वजन मिला कर ४५ हजार रुपये के सिक्को का हुआ। सिक्को द्वारा तोल कर नेताओ का सम्मान आर्य समाज मे पहली बार हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज, शहीद लेखराम, श्री आनन्द स्वामी जी, महात्मा नारायण स्वामी जी आदि किसी भी नेता का ऐसा सम्मान नहीं हुआ। आशा है, यह परम्परा अब आगे चलेगी। इससे कार्यकर्ताओ का उत्साह बढेगा और आर्यसमाज की दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति होगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि के रूप मे किसी नेता या कार्यकर्ता का सम्मान नही हुआ, क्योकि मुम्बई आर्य सम्मेलन मुख्यतया मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई का आयोजन था। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री वेदव्रत शर्मा ने मुम्बई सम्मेलन की सुव्यवस्था और अनुशासन की भरपूर प्रशसा की।

श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने सुझाव दिया कि इस प्रकार का सम्मान केवल पति या पत्नी, किसी एक का नही, अपितु पति और पत्नी, दोनो का सयुक्त रूप से होना चाहिए। पति की सफलता और असफलता दोनो काफी कुछ पत्नी पर निर्भर होती है।

कैप्टेन श्री देवरत्न ने इस सम्मान के लिए आयोजको का धन्यवाद किया। उन्होने यह भी सूचना दी कि दूरदर्शन के आस्था चैनल पर वेदो का प्रचार शुरू हो गया है और नवम्बर से दयानन्द जी के जीवन पर आधारित एक अन्य कार्यक्रम चैनल पर दिखाया जायेगा।

श्री ओकारनाथ ने कहा कि मुम्बई आर्य सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए जहा हमारी सर्वत्र सराहना हो रही है, वहीं कुछ लोगो ने आलोचना भी की है। अन्य पत्र पत्रिकाओ ने सम्मेलन की प्रशसा की, परन्तु आर्य जगत् जैसे साप्ताहिक ने इसकी आलोचना की। उस आलोचना के स्पष्टीकरण हमने प्रकाशनार्थ भेजे है।

उन्होने कहा कि आर्य समाज के कार्यकर्ताओ मे अधिक से अधिक बडे और भव्य सम्मेलन करने की होड लग जानी चाहिए। इससे वैदिक मान्यताओ का और आर्य समाज का प्रचार होगा।

दिल्ली के इस सम्मान समारोह का आयोजन श्री सोमनाथ महाजन द्वारा किया गया, जो मुम्बई सम्मेलन मे दिल्ली से १००० से अधिक आर्य कार्यकर्ताओ को लेकर पहुचे थे। आज के समारोह मे डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री विश्वनाथ, स्वामी जगदीश्वरानन्द, श्री विमल वधावन, श्री रामनाथ सहगल, श्रीमती शशिप्रभा आदि आर्य नेता सम्मिलित हुए।

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर में नये शिक्षा सत्र २००१-२००२ का शुभारम्भ

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर के नव शैक्षणिक सत्र का शुभारम्भ पावन वेद मत्रो के उच्चारण से हवन यज्ञ द्वारा किया गया। महाविद्यालय की प्राध्यापिकाओं और छात्रो ने मिलकर महाविद्यालय की प्रगति और सफलता के लिए प्रार्थना की।

इस दिन छात्राओ को महात्मा गाधी और विनोबा भावे की विचारधारा से प्रभावित, समाज सेवक श्री श्रीकान्त आप्टे जी के उत्तम विचारो को सुनने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। शतायु श्रीकान्त आप्टे जी ने छात्राओ को तन, मन से सरस्वती की पूजा करने का आह्वान किया। एक पत्थर और मूर्तिकार का उदाहरण देकर उन्होने छात्राओ को विद्यार्थी जीवन मे कठिनाइयो को हंसते हुए सहने के लिए प्रेरित किया ताकि प्राध्यापक उन्हे तराश कर उत्तम मानव बनाने में सहयोग दे सके।

नवागन्तुक छात्राओ का स्वागत करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्या श्रीमती पूर्णप्रभा शर्मा ने नैतिक विकास के साथ शैक्षणिक उपलब्धियों को प्राप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होने सत्र २०००-२००१ मे विभिन्न कक्षाओ मे छात्राओ द्वारा प्राप्त शानदार सफलता पर छात्राओ को बधाई दी।

प्रभात आश्रम में वैदिक शोध संगोष्ठी

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल, मेरठ मे ३० जुलाई २००१ को प्रात ११ बजे स्वामी समर्पणानन्द शोध सस्थान द्वारा एक वैदिक शोध गोष्ठी आयोजित की गई, जिसका विषय था— 'वेदार्थ प्रक्रिया मे कल्प (वेदाग)। गोष्ठी की अध्यक्षता डा० सत्यकाम वर्मा ने की। मुख्य अतिथि प्रो० शेरसिह और डा० धर्मपाल थे। मुख्य वक्ता थे दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० अवनीन्द्रकुमार। गोष्ठी मे स्वामी दीक्षानन्द जी, डा० कृष्णकुमार, डा० जयदत्त उप्रेती, डा० भारतभूषण, प्रो० जयपाल विद्यालकार, डा० महावीर आदि विद्वानो ने भाग लिया। डा० निरूपण विद्यालकार पूरी तरह स्वस्थ न होने पर भी व्हील चेयर पर आये थे। गोष्ठी सफल रही।

प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरण

दिनाक १ जुलाई २००१ को आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई-५४ मे स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम "उपनिषद् सन्देश" के हिन्दी मे स्वाध्यायी छात्रो को प्रमाण पत्र एव पुरस्कार वितरित किये गये। पठनार्थियो मे श्रीमती रेणुका हाण्डा (मुम्बई), डा० भगीरथ आर्य (अहमदाबाद, गुजरात) तथा श्रीमती भावना गुप्ता (मुम्बई) ने क्रमश सर्वप्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त किये। इस अवसर पर "रामायण" पर पत्राचार पुस्तक का विमोचन स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने किया। डा० सोमदेव शास्त्री ने पत्राचार पाठ्यक्रम मे अधिक से अधिक व्यक्तियो को सम्मिलित होने का आग्रह किया।

महत्वपूर्ण वेद-गोष्ठी

आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् व नेता स्व० श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री स्मारक समिति की तीसवीं वार्षिक वैदिक गोष्ठी १३ अगस्त, २००१, सोमवार को अपराह्न ३ बजे रामजस महाविद्यालय, मौरिस नगर, दिल्ली-७ मे सम्पन्न होगी, जिसमे प्रसिद्ध विद्वान् व लेखक डा० सूर्यकान्त बाली अपना शोध निबन्ध पढेगे, जिसका विषय होगा 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे वैदिक सविधान की रूपरेखा।'

सभी सादर आमत्रित है।

आर्य समाज पिम्परी में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्य समाज पिम्परी, पुणे मे शनिवार दिनाक २१ जुलाई से शनिवार २७ जुलाई २००१ तक वेद प्रचार कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभा की ओर से श्री स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर एवं भजनोपदेशक प० शिवपाल जी शास्त्री एटा, प० रामचन्द्र जी आर्य और कुमार संजीव ने वेद प्रचार किया। इन दिनो मे प्रतिदिन तीन चार कार्यक्रमो का आयोजन किया गया।

पिम्परी पुणे क्षेत्र मे पिपरीगाव, चिचवडगाव, सागवी, काळेवाडी, बिबवेवाडी, निगडी प्राधिकरण इत्यादि स्थानो पर कार्यक्रम आयोजित किये गये। आर्य समाज पिम्परी सचालित आर्य विद्या मन्दिर केछात्रो के लिए प्रवचन हुए। वैदिक सस्कृति की महानता, वैदिक धर्म, आकार का स्वरूप, गजानन का सत्यस्वरूप, ईश्वर उपापना इत्यादि विषयो पर मराठी एव हिन्दी भाषा मे प्रवचन हुए। इस वेद प्रचार मे प्रतिदिन सैकडो धर्मप्रेमी लोगो ने लाभ लिया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे आर्य समाज पिम्परी के पदाधिकारियो एव आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओ ने विशेष परिश्रम किया।

निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका

प्रधान—डा० राजेन्द्र सैनी (नैरोबी)
महामत्री—श्री वेद भसीन (नैरोबी)
कोषाध्यक्ष—श्री भगवानदास सोमन

आर्य विरक्त (वानप्रस्थ+संन्यास) आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार

प्रधान—श्री सुभाषचन्द्र
मत्री—श्री यशवत मुनि
कोषाध्यक्ष—माता शान्ति शर्मा

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा वाजेगाव, नादेड

प्रधान—श्री स्वामी श्रद्धानन्द
मत्री—श्री सुग्रीव बलीराम काले
कोषाध्यक्ष—श्री उग्रसेन राठौर

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक—उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ वनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य--७५ रुपये
आजीवन--५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क--५०० रुपये

विदेशो मे ३० पौं० या ५० डालर
इस अंक का मूल्य--२.०० रुपये

वर्ष ६६, अंक २५
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, १९ अगस्त, २००१
भाद्रपद कृ०-१५-वि० स०-२०५८
सप्ताह १९ अगस्त से २५ अगस्त

कश्मीर में जनमत संग्रह की मांग का कोई आधार नहीं

❑ न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द महाजन (जम्मू कश्मीर राज्य के पूर्व प्रधानमत्री)

भवितव्यता कहिये या दैवयोग, या भाग्य, मुझे उस समय कश्मीर के प्रधानमंत्री के रूप में वहा ले गया, जो उस राज्य के इतिहास मे सबसे अधिक संकटमय था।

पठानों का धावा

मैने कश्मीर के प्रधानमंत्री का पद १५ अक्टूबर १९४७ को संभाला। इसके एकसप्ताह बाद ही पाकिस्तान ने कश्मीर को हथियाने के लिए पठान कबाइलियो को भेज कर पहला धावा बोल दिया। पाकिस्तान के सेना मुख्यालय को यह भी आदेश भेजा गया कि वह २७ अक्टूबर १९४७ को या उसके आसपास दो पाकिस्तानी ब्रिगेडे कश्मीर राज्य में भेज दे।

पंजाब और बंगाल सीमा आयोग ने जो निर्णय किया था, उसके फलस्वरूप, श्री जिन्ना को, जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा, 'खंडित पाकिस्तान' ही मिला था। उनकी प्रबल इच्छा थी कि जम्मू-कश्मीर राज्य को हथिया कर उसे एक पूर्ण इकाई बना लिया जाये। इस लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए सुविचारित योजनाएं बनाई गई थीं।

श्री जिन्ना भारत के प्रवीणतम वकीलों में से एक थे। उन्हें 'भारतीय स्वाधीनता अधिनियम' के प्रावधानों का पूरा ज्ञान था और उन्होंने जोरदार ढंग से अपना यह मत प्रकट किया था कि किसी भी राज्य के शासक द्वारा भारत या पाकिस्तान, दोनों उपनिवेशों में से किसी के साथ भी किया गया अधिमिलन पूर्ण और अन्तिम है, और यह भी कि राज्य का शासक अपनी प्रजा की इच्छा जानने के लिए बिल्कुल ही बाध्य नहीं है।

महाराजा पर दबाव

अपने इस विचार पर दृढ रहते हुए श्री जिन्ना ने कश्मीर के महामहिम महाराज हरिसिह को मनाने के लिए कदम उठाये कि वह अपने राज्य को पाकिस्तान में मिला दे। उन्होने वचन दिया कि इस राज्य को पूर्ण स्वायत्तता और राज्य के आन्तरिक प्रबन्ध मे पूर्ण स्वतत्रता प्रदान की जायेगी। महाराजा के निश्चय को प्रभावित करने के लिए मनाने समझाने का काम व्यक्तिगत स्तर पर किया गया और साथ ही राज्य के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री रामचन्द्र काक तक भी पहुच की गई। उन पर मुस्लिम मौलवियो और जागीरदारो द्वारा दबाव डाला गया और उनके (श्री जिन्ना के) निजी तथा व्यक्तिगत सचिवो द्वारा भी, जिन्होने काफी समय कश्मीर राज्य मे बिताया और इसके लिए मुस्लिम जनमत तैयार किया गया।

रेजीडैंसी के कुछ अग्रेज अधिकारियों ने भी महाराजा को इसी प्रकार की सलाह दी।

माउंटबेटन विफल

लार्ड माउटबेटन इस विषय मे महाराजा को सलाह देने के लिए तीन दिन की कश्मीर यात्रा पर गये, परन्तु इस कार्य के लिए जो आधिकारिक भेट होने वाली थी, हो नहीं पाई, क्योंकि महाराजा ने लार्ड माउटबेटन को कहला भेजा कि वह तीव्र उदरशूल से पीडित है, अत. उनसे भेट करने मे असमर्थ हैं।

पाकिस्तान के पक्ष में जो प्रचार किया जा रहा था, उससे महाराजा पर कोई प्रभाव नहीं पडा। उनका विचार था कि वह स्वतत्र रह सकते है और उन्हे भारत या पाकिस्तान, दोनों मे से किसी मे भी, मिलने की आवश्यकता नही है। जो भी हो, वह पाकिस्तान के साथ अधिमिलन के पत्र पर हस्ताक्षर करना नहीं चाहते थे।

जब मैने कार्यभार सभाला, तब सबसे पहले जिस व्यक्ति ने मुझसे मिलने का आग्रह किया, वह थे श्री जिन्ना के राजनीतिक सचिव। वह मेरे आने से एक सप्ताह पहले श्रीनगर पहुचे थे और महाराजा के निश्चय को प्रभावित करने के प्रयास मे जुटे थे। उनके आग्रह पर मैने उन्हे भेट के लिए बुलाया और वह लगभग दो घटे मेरे पास रहे। उनके वार्तालाप का एक ही विषय था कि मै महाराजा को यह सलाह दू कि वह पाकिस्तान मे मिलने का निश्चय करे। मैंने कहा 'मै ऐसी सलाह देने में असमर्थ हू, क्योकि अभी प्रधानमत्री बने मुझे एक ही दिन तो हुआ है। इस विषय मे मुझे किसी निष्कर्ष तक पहुचने के लिए कुछ समय दीजिये और इस बीच आर्थिक नाकाबन्दी हटा ली जानी चाहिए। उन्होने टेलीफोन पर श्री जिन्ना से परामर्श किया, परन्तु उनसे इस विषय मे कोई उत्तर न मिला। जाते समय वह एक छिपी धमकी दे गये कि मेरी टालमटोल के गम्भीर परिणाम होगे। उन्होने मुझसे कहा कि मै लाहौर जा कर श्री जिन्ना से मिल लू, परन्तु यह सुझाव मुझे स्वीकार्य नहीं था।

आर्थिक नाकेबन्दी

कश्मीर राज्य की आर्थिक नाकाबन्दी का उद्देश्य था महाराजा पर पाकिस्तान के पक्ष मे अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए दबाव डालना। अनाज, कपड़ा, पैट्रोल, गोला बारूद और सब प्रकार की उपभोग्य वस्तुए, जो कश्मीर राज्य के वाहनों पर लदी कश्मीर आ रही थीं, पाकिस्तान द्वारा वहोला और स्यालकोट में रोक ली गईं। बाहर से कश्मीर मे आने के ये दो ही मार्ग थे। साफ मौसम मे काम आने वाला पठानकोट-श्रीनगर मार्ग भारी वर्षा के कारण इस समय चालू हालत मे नहीं था।

श्री जिन्ना ने कभी भी इस बात का सकेत तक नही किया था कि अधिमिलन के प्रश्न का निर्णय करने के लिए महाराजा को अपने प्रजाजनो की इच्छा जाननी चाहिए, यद्यपि उन्हे मालूम था कि इस प्रकार का सुझाव उनके उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक हो सकता है। परन्तु वह भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के सावैधानिक प्रावधानो पर दृढ रहे, यह जानते हुए भी कि भारत ने जूनागढ मे नवाब के पाकिस्तान मे अधिमिलन के निर्णय के विरुद्ध जनता की इच्छा जानने के बाद उस राज्य पर अधिकार कर लिया था।

पाकिस्तान के पक्ष मे अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए महाराजा के मन पर समझाने बुझाने और आर्थिक नाकाबन्दी के दबाव का कोई अनुकूल प्रभाव नही पडा।

पाकिस्तान के राजनीतिक विभाग के एक अफसर ने उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्त के अग्रेज़ राज्यपाल की सक्रिय सहायता से लगभग ५००० पठान कबाइली भर्ती किये थे। उन्हे सोना, औरतो, लूट के माल तथा और भी न जाने किन किन चीजो का प्रलोभन दिया गया था। उन्हे राजधानी श्रीनगर पर कब्ज़ा करने और महाराजा को पकड लेने के उद्देश्य से कश्मीर पर धावा बोलने को कहा गया, जिससे महाराजा से श्री जिन्ना की इच्छानुसार अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर कराये जा सके।

पाकिस्तानी सेना भी तैयार

पाकिस्तानी सेना की दो ब्रिगेडो को भी आदेश दिया गया था कि वे २७ अक्टूबर को जम्मू और श्रीनगर पर धावा बोलें और सैनिक बल से राज्य पर कब्ज़ा कर लें और महाराजा तथा उसके मत्रियो को बन्दी बना ले।

परन्तु ये दोनो योजनाए विफल हो गई और श्री जिन्ना को पाकिस्तान के पक्ष मे कश्मीर का अधिमिलन पत्र नही मिल पाया, क्योकि मेरी सलाह पर २५ या २६ अक्टूबर को महाराजा हरिसिह

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

वेद-सुधा

परमेश्वर है और उसका साक्षात्कार होता है

□ श्री मनोहर विद्यालंकार

परमेश्वर को जाने बिना मृत्यु-भय से मुक्ति सभव नहीं।

अकामो धीरो अमृत· स्वयभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोन:।

तमेव विद्वान्न विभाय मृत्योरात्मानं धीरमजर युवानम्। *अथर्व १० ८ ४४*

वह परमेश्वर कामनाओ से रहित है, उसे अपने लिए किसी वस्तु की जरूरत नही है। वह धीर है, जगत् मे होने वाली बडी से बडी दुर्घटना, किसी भी प्रकार की उथल पुथल उसे अधीर या विकल (बेचैन) नही कर सकती। वह कभी मरता नहीं, क्योंकि वह उत्पन्न नहीं हुआ। वह स्वय है, सदा से है, उसके होने मे किसी वस्तु, स्थिति या भाव की जरूरत नहीं, क्योंकि उसे दिशा, काल, स्थान या समय से निर्दिष्ट नही किया जा सकता। वह आनन्द से तृप्त तथा पूर्ण है, सच्चिदानन्द है। उसमे किसी प्रकार की कोई न्यूनता नही है। उस अजर, अमर परमात्मा को, जो सबको दु खो से पृथक् करके सुखी बनाना चाहता है, जान कर ही मनुष्य की अन्तरात्मा मृत्यु के भय से मुक्त हो सकती है। मृत्युभय से छूटने का अन्य कोई मार्ग नही है।

उस परमेश्वर की सत्ता और महत्व को समझने के लिए, वेद मे आए हजारो मन्त्रो मे से कुछ मन्त्राशो को देखिये

देवस्य पश्य काव्य महित्वाऽद्या ममार यो ह्य: समान। ऋक् १० ५५ ५

उस महादेव परमेश्वर की महिमा को देखना चाहते हो तो उसके सृष्टि काव्य को सूक्ष्मता से देखो। जो व्यक्ति अपने को कालविजयी, अजेय मान कर अकड रहा था, निरीह जनता पर अत्याचार करते हुए जरा भी नही हिचकता था, बडे से बडे शूरमा उसके सन्मुख आते हुए भी घबराते थे, वह देखो यह बिना किसी के प्रहार या अस्त्र प्रयोग के मरा पडा है। यह कैसे हो गया?

अशस्तिहा विश्वमनास्तुराषाद्, शूरो निर्युधाधमद् दस्यून्॥ ऋक् १० ५५ ८

इसका उत्तर है— सब प्रकार के अनिष्टो को समाप्त करने वाला, हिसको का शीघ्र पराभवकर्ता, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् परमेश्वर शूरवीरों की तरह इन दुष्ट दस्युओ का बिना अस्त्रो के और बिना युद्ध किये ही सहार कर देता है। धमति वधकर्मा। नि० २.२९

उत वा परिवृणक्षि बप्सद् बहोरग्न उलपस्य स्वधाव.।

उत खिल्या उर्वराणां भवन्ति मा ते हेति तविषीं चुक्रुधाम:॥ ऋग् ५ १४२ ३

हे अग्नि के समान दाहक और शीतनिवारक अग्रनेत। हम तेरी बलवती प्रहार शक्ति को क्रोधित नहीं करना चाहते, क्योकि हे अन्न और दीप्ति के स्वामिन् हम जानते है कि तू दुष्ट कृत्यो से क्रुद्ध हो कर लहलहाती खेती वाली भूमियो को बजर बना देता है, और प्रसन्न होने पर बडे बडे जगलो को जलाते हुए नरम कोमल तिनको और घास को भी बचा जाता है।

आपने परमेश्वर की महिमा का इतना बखान किया। क्या आपने उसे देखा है? हा, उसके लिए बहुत भटका हू और अब देख रहा हू।

परि विश्वा भुवनान्यायमृतस्य तन्तुं दृशे कम्।

यत्र देवा अमृतमानशाना: समाने योनावध्यैरयन्त॥ *अथर्व० २.१ ५*

मैने विश्व के सब लोको की धूल, अमृत के एकमात्र सूत्र उस आनन्द स्वरूप की झांकी प्राप्त करने के लिए, फाकी है। किन्तु एक झलक पाने के बाद से उसे विश्व के अणु अणु मे सदा (दृशे) देख रहा हू। जिस सर्वव्यापक मे दिव्य दृष्टि वाले दर्शनाभिलाषी जीवन (अमृत) के भोगो को भोगते हुए, स्वय विचरते है, और दूसरे साथियो को भी उसके दर्शन करने की प्रेरणा करते है।

अर्थ पोषण—दृशे— देखने के लिए, देखता हू। ऐरयन्त— ईर गतौ, ईरक्षेपे। भुवनानि= रजासि = लोका धूलिकणाश्च। समाने योनौ— एक ही घर मे। अरे ध्यान से देखो ! यह अग्नि स्वरूप परमेश्वर ही इस जगत् के कण कण मे व्याप्त हो कर इसको धारण किये हुए है।

वाचमिव वक्तरि भुवनेष्ठा धास्युरेष नन्वेपो अग्नि:। *अथर्व २ १ ५*

फिर भी सामान्य जन की धारणा यही है कि उसकी कल्पना कर ली गई है, वह वास्तव मे नहीं है। और यदि है, तो दिखाई क्यो नहीं देता। और यदि हम आपके कहने से उसे मान भी ले, तो साथ ही यह कहना पडेगा कि वह बडा घोर और क्रूर है, क्योकि बिना किसी कारण हजारो लाखो प्राणियो को बाढ, सूखा, भूकम्प की विनाशकारी घटनाओ से बेघर, भिखारी और भूखा बना देता है।

य स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुताहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।

सो अर्य: पुष्टीर्विज इवामिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्र:॥ ऋक् २ १२ ५

अर्थ— (य स्मा पृच्छन्ति) जिसके सम्बन्ध मे आम मनुष्य जिज्ञासा करते हैं (कुह स इति) वह है तो कहां? दिखाई क्यों नहीं देता। इसलिए उनकी धारणा बन गई है कि (एष: न अस्ति) यह परमेश्वर आदि कोई कुछ नहीं है। उनका कहना है कि अगर किसी महाशक्ति को मान भी ले (उत घोर आहु:) उसे क्रूर और भयंकर मानना होगा। क्योकि (स अर्य:) वह ईश्वर (पुष्टी:) बसी बसाई बस्तियो को, अथवा समृद्ध पुरियो को (मिनाति) नष्ट भ्रष्ट कर देता है (इव) जैसे (विज) भूकम्प बसी बसाई बस्तियों को नष्टभ्रष्ट कर देता है। (अस्मै श्रत् धत्त) अरे इस परमेश्वर में श्रद्धा करो, और रखो, (जनास: स इन्द्र:) हे मनुष्यो विश्वास करो कि वह परमेश्वर ही इस जगत् का कर्तधर्ता और सहर्ता है।

येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधर गुहाक:।

श्वघ्नीव यो जिगीवॉ लक्षमाददर्य: पुष्टानि स जनास इन्द्र:॥ ऋग्० २ १२ ४

अर्थ—(येन इमा विश्वा च्यवना कृतानि) इस परमेश्वर ने ही इन सब लोको और प्राणियो को प्रगतिशील बनाया है, किन्तु परोक्षप्रिय देव होने के कारण (य: दास वर्णं गुहा अधर क:) उसने अपने दर्शनीय तथा विपत्तियो को क्षीण करने वाले स्वरूप को हृदयगुहा के भी अन्तरतम मे छिपा कर रखा है।

(श्वघ्नीव) कल पर न टालने वाले मनुष्य की तरह (य: लक्ष जिगीवान्) वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, और (अर्य) वही सर्वशक्तिमान् स्वामी, (पुष्टानि) बडे से बडे समृद्धिशाली और शूर वीरो को भी (आदत्) अपने काबू मे कर लेता है, उन्हे खा जाता है, नामोनिशान मिटा देता है। हे जिज्ञासुओ, वही परमेश्वर है।

अर्थ-पोषण— (१) श्वघ्नी— श्व करिष्ये इति य· काल नहन्ति, नहीं नष्ट करता है, 'काल करे सो आज' को मानने वाला (३) दासम्— दसु उपक्षये, दस् दर्शने= विपत्तियो को क्षीण करने वाला, दर्शनीय। (४) वर्णम्—रूपम्, वर्ण प्रेरणे वर्णने च। (२) श्व. हन्तीति— कल की हिंसा करता है, परवाह नहीं करता। केवल वर्तमान मे जीता है। वर्तमानेन वर्त्तयन्ति मनीषिण । योग वासिष्ठ)

जिज्ञासुओं मे से एक विद्वान् पुन उसी युक्ति को दोहराता है—

नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभिष्टवाम। ऋक्० ८.१००.३

(नेम:) दूसरा साधक कहता है, उसे किसने देखा है? किसी ने नहीं देखा अत निश्चय से कह सकते हैं कि (इन्द्र: न अस्तीति) परमेश्वर नहीं है, और जब वह है ही नहीं तो फिर हम (कं अभिष्टवाम) किसकी स्तुति करें। स्तुति तो उसी की होगी न, जो हो। इस पर इन्द्र स्वय उत्तर देता है कि

अयमस्मि जरित: पश्यमेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना। ऋक्० १० १००.४

हे (जरित:) कीर्तन करने वाले भक्त, यदि तू वास्तव में देखना चाहता है तो (पश्य मा इह) ले देख मुझे, मैं तो तेरे सम्मुख खडा हू, बल्कि तुझमे भी हूं। (मह्ना विश्वा जातानि अभि अस्मि) मैं अपनी महिमा के द्वारा प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ के चारों ओर तथा उसके अन्दर भी विद्यमान हूं।

अरे! इतना ही नहीं। मुझे तो सब प्रतिदिन इस स्थूल चक्षु से देखते हैं; तूने भी देखा है, किन्तु वे सब मन से नहीं देख पाते, क्योकि उनकी इच्छा हार्दिक, वास्तविक नहीं है। अरे जैसे घट मे भर कर जल को कहार ऊपर ले जाता है, वैसे ही क्या नदियो का जल आकाश मे ले जाया जाता हुआ तुम्हे नही दीखता। यह जल मेरे सामर्थ्य से ही ऊपर जा रहा है।

ऊर्ध्वं भरन्तमुदकं कुम्भेनेवोदहार्यम्।

पश्यन्ति सर्वे चक्षुषा न सर्वे मनसा विदु:॥

अथर्व० १० ८.१४

परमेश्वर तो, घट द्वारा कुए से पानी खींचने वाला जैसे जल पिलाता है, वैसे ही सबको सब प्रकार के सुख दे रहा है। किन्तु मनुष्य इस बात को मन से समझने के स्थान मे आख से देखना चाहता है, जो सभव नहीं है। क्या किसी ने प्रेम और द्वेष को या सुख और दु ख को देखा है? फिर भी सब उनके अस्तित्व को स्वीकारते है, क्योंकि ये मन के द्वारा जाने जाते है। इसी तरह परमेश्वर भी हृदय और मन से जाना जाता है। आखों से नहीं देखा जाता।

पतङ्गमक्तमसुरस्य मायया हृदा पश्यन्ति मनसा विपश्चित:।

समुद्रे अन्त: कवयो विचक्षते मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधस:॥ ऋक् १०.१९९ १

अर्थ— (असुरस्य मायया) प्राणदाता परमेश्वर प्रदत्त प्रज्ञा द्वारा (विपश्चित:) मेधावी जन (पतङ्गम्) सुपर्ण आत्मा को (हृदा मनसा) भक्ति मार्ग से या ज्ञान मार्ग से (अक्तं पश्यन्ति) व्यक्त हुआ देखते है, साक्षात् करते है। इसी प्रकार (वेधस: कवय:) कर्म मार्ग में प्रवृत्त क्रान्तदर्शी (मरीचीनां पदम्) रश्मियो के अन्तिम पद = (इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमम्। ऋक्० १०.१९०.३) सहस्र सूर्य समज्योति; श्रेष्ठ और उत्तम ज्योतिस्वरूप परमेश्वर की (समुद्रे इच्छन्ति) मोदमय हृदय मे कामना करते हैं, और (विचक्षते) विपश्यन्ति—विपश्यना की प्राण साधना द्वारा देखते हैं—साक्षात् करते हैं।

निष्कर्ष : (१) आत्मा और परमात्मा (द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया। ऋग्० १ १६४ २०) दोनों ही ज्योतियों का साक्षात्कार हृदय या मन से होता है;

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य बनना और आर्य बने रहना

जब हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की बात सोचते और कहते हैं, तब उसमें यह अर्थ निहित रहता है कि ससार में सब लोग आर्य नहीं हैं और जो लोग आर्य नहीं हैं, हमें उन्हें आर्य बनाना है। आर्य का आशय भले, सदाशयी, श्रेष्ठ व्यक्ति और अनार्य का आशय दुष्ट, दुराचारी, व्यक्ति से है।

कितने लोग आर्य हैं?

यदि हम अपने इस संकल्प को पूरा करने के लिए गम्भीर हैं, तो हमें यह सोचना होगा कि हमारा कार्य कितना बड़ा है? अर्थात् ससार मे अधिकांश व्यक्ति आर्य हैं और कुछ थोड़े से गिने चुने लोग अनार्य हैं? या अधिकाश लोग अनार्य है और आर्य तो केवल आटे में नमक जितने ही है?

यदि इनमें से पहली बात सत्य हो, अर्थात् सौ मे केवल पाच व्यक्ति अनार्य हों, तो हमारा कार्य बहुत आसान हो जायेगा। ९५ आर्य ५ अनार्यों को आर्य बना पायेंगे। परन्तु यदि स्थिति दूसरी हो, अर्थात् आर्य केवल ५ प्रतिशत हों, तो ९५ अनार्यों को आर्य बनाने का कार्य बहुत बडा और कठिन होगा।

पांच प्रतिशत की बात केवल विचार के लिए कही गई है। जितने प्रतिशत आर्य अधिक होगे, सबको आर्य बनाना उतना ही सरल होगा।

आर्य की कसौटी

आर्य की कसौटी क्या होगी? सत्य वक्ता हो; बडे से बड़े प्रलोभन में पड कर भी असत्य न बोले। परोपकारी हो। दूसरो को सुखी करने के लिए कष्ट सहने को उद्यत रहे। न्याय के लिए लड़ने को तैयार हो। किसी से दबे नहीं। इन्द्रियों का दास न हो। पेटू, लोभी, व्यसनी न हो।

कुछ लोग जोड़ना चाहेंगे ईश्वरभक्त हो; किन्तु मूर्तिपूजक न हो। सध्या अग्निहोत्र करता हो; पच महायज्ञ करता हो। धनी हो; समाज को दान देता हो। अन्धविश्वासी न हो। यह मानता हो कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है, जो सृष्टि के आदि में चार ऋषियो के माध्यम से मनुष्य जाति को दिया गया था, आदि।

क्या अपूर्ण आर्य भी होता है?

प्रश्न यह उठेगा कि कोई व्यक्ति आधा अधूरा आर्य भी हो सकता है या नहीं? या हर व्यक्ति पूरा आर्य या पूरा अनार्य ही होगा? एक व्यक्ति में आर्यत्व के अन्य गुण तो हैं, परन्तु उसे बीड़ी पीने का व्यसन है; उसे वह छोड़ नहीं पाता। उसकी स्थिति क्या होगी?

छद्म आर्य

दूसरी ओर एक व्यक्ति नित्य प्रात सायं अग्निहोत्र और सन्ध्या करता है; कभी इसमें चूकता नहीं; पर साथ ही आर्य समाज के विरुद्ध [illegible] में [illegible] करता है; उसकी स्थिति क्या होगी? आज भी किसी आर्य समाज की कुर्सियों को [illegible] और [illegible] वालों की स्थिति क्या होगी? उसे आर्य माना जायेगा या अनार्य? इसका निर्णय कौन करेगा?

दो गुट

यदि आर्य लोग ही दो गुटो मे विभक्त हो जाये, तो कौन आर्य होगा, कौन अनार्य? उदाहरण के लिए, मासाहार के प्रश्न पर ही यदि दो गुट बनते है, तो क्या निर्णय होगा? बहुकुण्डी यज्ञों को पाखड मानने को लेकर भी दो गुट बन सकते हैं।

समस्या तो यह है कि हर आर्य मे अनार्य और अनार्य मे आर्य घुसा रहता है। कह पाना कठिन हो जाता है कि उसे आर्य कहे या अनार्य। प्राय सुनने को मिलता है कि 'आदमी तो बहुत अच्छा है, लेकिन '। कोई न कोई दोष बता दिया जाता है। इसी प्रकार बुरे आदमी की भी कोई अच्छाई ऐसी निकल आती है, जो विरोधियो को भी स्वीकार करनी पड़ जाती है।

आर्यत्व का प्रतिशत

इससे यह प्रतीत होता है कि जैसे समाज में अच्छे और बुरे लोगो का कुछ प्रतिशत होता है, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति मे आर्यत्व और अनार्यत्व का कुछ प्रतिशत रहता है।

यह प्रतिशत भी सदा एक सा नही बना रहता। घटता बढता रहता है। वही व्यक्ति कभी बहुत उदार और दयालु बन जाता है और कभी बडा कजूस और क्रूर बन जाता है। कुछ लोग छिपे रुस्तम होते हैं, अर्थात् वे सहमा कोई ऐसा प्रशसनीय कार्य कर डालते है, जिसकी किसी ने उनसे आशा नहीं की होती। इसलिए आर्य और अनार्यत्व का निर्णय कर पाना बहुत कठिन काम है।

अनार्य का आर्य बनना कठिन

अनार्य को आर्य बना पाना बहुत कठिन काम है। 'स्वभावो दुरतिक्रमः' (स्वभाव को बदल पाना मुश्किल काम है)। फिर, यदि सदा टेढ़ी रहने वाली कुत्ते की पूछ को किसी तरह सीधा कर भी लिया जाये, तो इस बात की क्या गारटी है कि वह भविष्य में सीधी ही रहेगी? अनार्य आर्य बनने के बाद आर्य बना रहे, फिर अनार्य आचरण न करने लगे, यह कार्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' से भी बडा है।

फूलनदेवी

उदाहरण के लिए फूलनदेवी को ले। वह पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाव मे एक पिछड़ी जाति माने जाने वाले मल्लाह परिवार में पैदा हुई। बाबू गूजर ने उसका अपहरण कर लिया और उसकी इच्छा के विरुद्ध उससे अनाचार किया। इस पर उसके ही साथी विक्रम मल्लाह ने बाबू गूजर की हत्या कर दी और फूलनदेवी उसके साथ रहने लगी। बाबू गूजर और विक्रम मल्लाह दोनों डाकू थे। फूलनदेवी भी डाकुओ के गिरोह में सम्मिलित हो गई। बहमई गाव में फूलनदेवी के गिरोह ने एक डाका डाला, जिसमें ऊंची जाति कहे जाने वाले २२ ठाकुरों की हत्या कर दी गई। फूलनदेवी का पूरे इलाके में आतंक छा गया। फूलनदेवी ने यह प्रचारित किया कि उसने बहमई गाव मे हत्याएं अपने साथ किये गये बलात्कार का बदला लेने के लिए की हैं। एक ही झटके में वह डकैत से क्रान्तिवीर बन गई। अपहरण और बलात्कार की शिकार हुई अनगिनत युवतिया बेबस और असहाय, अपमानित और लांछित जीवन बिताती है। फूलनदेवी तेजस्विनी नायिका के रूप मे सामने आई, जिसकी लाछना ठाकुरो के खून से धुल गई।

विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण के प्रयत्नो से जिन अनेक डाकुओ ने आत्मसमर्पण किया था, उनमे फूलनदेवी भी थी। आत्मसमर्पण की शर्त यह थी कि उन्हे फासी नहीं दी जायेगी।

रूपान्तरण

११ साल ग्वालियर जेल मे बिताने के बाद वह श्री मुलायमसिह यादव की कृपा से रिहा हुई। वह उनकी धर्मपुत्री बन गई। पत्रकारो के लिए बढिया मसाला तैयार था। फूलनदेवी की सत्यकथा काल्पनिक कहानियो से भी अधिक रोचक थी। फूलनदेवी की जीवनी 'बैंडिट क्वीन' (डाकुओ की रानी) नाम से लिखी गई और खूब बिकी। इस पुस्तक पर फिल्म भी बनी। इन दोनो से फूलनदेवी को धन और यश, दोनो की प्राप्ति हुई। उसने दलित तथा शोषित वर्गो का मसीहा बनने का बाना पहन लिया। वह मिर्जापुर से लोकसभा के लिए सासद चुनी गई। उसके बाद एक बार चुनाव हारी भी, किन्तु अगली बार फिर चुनी गई। अपहृता, बलात्कार की शिकार, हत्याओ की दोषी, ११ साल अपराधी के रूप मे जेल मे रही फूलनदेवी जनता की प्रतिनिधि के रूप मे सासद बनी। धन और यश के अलावा उसे प्रभुत्व भी प्राप्त हो गया। उसकी सुरक्षा केलिए सरकारी सुरक्षा गार्ड रहते थे। अपने काम निकलवाने की इच्छा से बीसियो लोग उसके आगे पीछे घूमते थे। कहा जा सकता है कि वह अनार्य दस्यु से परोपकारी आर्य बन गई। यह रूपान्तरण अद्भुत इतिहास बन जाता। जैसे दन्तकथा मे डाकू वाल्मीकि क्रौंच वध को देख कर अचानक सहृदय कवि बन गये, वैसे ही फूलनदेवी भी शायद दूसरी झासी की रानी लक्ष्मीबाई, स्वातंत्र्य सेनानी बन जाती।

हत्या

परन्तु २५ जुलाई २००१ को नई दिल्ली में, दोपहर को डेढ बजे (दिन दहाडे), उसके अपने सरकारी बंगले के फाटक पर गोली मार कर उसकी हत्या कर दी गई। हत्या करने वाले तीन थे। वे उसके सुपरिचित, विश्वस्त लोग थे। उन्होंने उस पर नौ गोलिया चलाई, जिससे फूलनदेवी की तत्काल मृत्यु हो गई।

मुखौटा उतरा

पकड़े गये हत्या के अभियुक्तो में से एकने कहा कि फूलनदेवी ने उससे दस लाख रुपये यह कह कर लिये कि वह उसे एक पैट्रोल पम्प दिला देगी। पैट्रोल पम्प कमाई का अच्छा माधन समझा जाता है। परन्तु फूलनदेवी ने न पैट्रोल पम्प दिलाया, न रुपये लौटाये।

अधिक सभव यह है कि इस प्रकार ली गई यह एक ही राशि नही होगी। न जाने किस किस से कितनी राशिया ली गई होगी। फूलनदेवी ने मजिस्ट्रेट के यहा रिवाल्वर का लाइसेस लेने के लिए आवेदन किया था। उसका कहना था कि उसकी जान को खतरा है, इसलिए उसे रिवाल्वर की जरूरत है। रिवाल्वर का लाइसेस इसलिए नहीं दिया गया, क्योकि वह डाकू रह चुकी थी और कई हत्याओ मे अभियुक्त रही थी।

फूलनदेवी का दलितो और पीडितो का मसीहा बनना केवल मुखौटा था। हर उपकार के लिए वह प्रतिफल लेती थी। ऊपर मे आर्य बन गई दीखने पर भी वह भीतर से दस्यु ही थी। इसीलिए वह भयभीत थी और हत्यारो की गोली का शिकार हुई।

कितने फूलन देव

फूलनदेवी का उदाहरण हमने केवल इस प्रसग मे दिया है कि अनेक फूलन देव आर्यत्व का मुखौटा पहने आर्य नेता बने हुए है।

जैसे राजनीतिक और सरकारी क्षेत्र मे ऐसा आदमी ढूढ पाना कठिन हो गया है, जो किसी घोटाले, भ्रष्टाचार मे लिप्त न हो, वैसे ही आर्य जगत् मे भी फूलनदेवो की बाढ आ गई है।

अनार्यत्व एक क्षण मे आता है

आर्यत्व लम्बी साधना से प्राप्त होता है, परन्तु अनार्यत्व क्षणिक आवेश मे व्यक्ति पर हावी हो जाता है। सत्य के व्रत की साधना जीवन भर करते रहो, जैसे कि युधिष्ठिर ने की थी, और एक बार कठिन अवसर पर झूठ बोल दो, तो सब किया धरा व्यर्थ हो जाता है। वर्षों का ब्रह्मचर्य दुर्बलता के एक क्षण मे खडित हो जाता है। क्रोध के आवेश मे एक पल मे व्यक्ति हत्या कर बैठता है, चोरी कर लेता है।

इसलिए समस्या लोगो को आर्य बनाने की तो है ही, जो आर्य है, उनको आर्य बनाये रखने की भी है। अनार्य व्यक्ति स्वय को आर्य के रूप मे प्रचारित न कर सके, इसका उपाय ढूढना आवश्यक है। केवल हजार या दस हजार या एक लाख रुपये दे कर कोई 'अघशस' (पाप की कमाई करने वाला) हमारा कर्ताधर्ता न बन जाये। धन आर्यत्व का निर्णायक न बन जाये, इसका कोई उपाय खोजना आवश्यक है।

गुरुकुल मदरसे न बनें

□ श्री कश्यप मौरारेय

विद्या या ज्ञान मनुष्य के जीवन के लिए कितना आवश्यकहै, इसका प्रतिपादन यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय के चौदहवे मत्र मे बडे स्पष्ट शब्दो मे किया गया है। मत्र है

विद्या चा विद्या च यस्तद्वेदोभय सह।
अविद्यया मृत्युतीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

इसका भावार्थ यही है कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनो तरह की विद्या इहलोक मे सुख समृद्धि के लिए तथा परलोक मे मोक्ष प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

ईश्वर प्रणीत वेदो का अर्थ ही ज्ञान है। ईश्वर का सर्वज्ञ विशेषण उसकी समग्र ज्ञानशीलता को भी प्रकट करता है। ज्ञान अनन्त है। **अनन्ता वै वेदा.**। ज्ञान को प्रकाश और अज्ञान को अन्धकार कहा जाता है। विद्या या ज्ञान केइसी महत्व के कारण विद्या दान को सर्वश्रेष्ठ दान कहा गया है। **सर्वेषामेव दानाना ब्रह्मदानं विशिष्यते।** ज्ञानी या गुरु ही लोगो को सन्मार्ग पर चलना सिखाता है। हमारी सास्कृतिक परम्परा मे आचार्य या गुरु का बालक के विकास मे सर्वाधिक महत्व है। कहा जाता है कि आचार्य के यहा जा कर बालक नया जन्म लेता है और तभी द्विज बनता है। व्यास पूजा की परम्परा गुरुओ के प्रति हमारे आदर भाव का प्रतीक है।

भारत मे प्राचीन काल से ही विद्या दान की गुरु परम्परा रही है। गुरुकुल इसके माध्यम थे। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को शिक्षा के लिए आदर्श प्रणाली समझा जाता है। कालान्तर मे यह प्रणाली मन्दिरो के परिसरो मे और धर्मार्थ विद्यालयो मे सस्कृत की पाठशालाओ के रूप मे सिमट कर रह गई। परन्तु हम चिरऋणी है महर्षि दयानन्द के, जिन्होने पुन इस गुरुकुल प्रणाली को अपनाने पर बल दिया।

गुरुकुल कागडी

महर्षि के इस मार्गदर्शन को चरितार्थ किया महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने। उन्होने आज से १०० वर्ष पूर्व हरिद्वार मे गगा के उस पार गुरुकुल कागडी की स्थापना की। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे शिक्षा के लिए दो समुल्लास लिखे है। तीसरे समुल्लास मे दी गई पाठ विधि महर्षि ने प्राचीन वैदिक परम्परा के आधार पर दी है। अत समय के परिवर्तन के साथ ज्ञान विज्ञान के नए क्षेत्र खुलने तथा ज्ञान की व्यापकता के असीमित विस्तार के कारण पाठ्यक्रम मे परिवर्तन आवश्यक है। स्वामी श्रद्धानन्द ने इस बात को १०० वर्ष पूर्व ही समझ लिया था। इसलिए उन्होने गुरुकुल कागडी मे वेद, दर्शन, सस्कृत व्याकरण और उपनिषदो के साथ आधुनिक विषयो यथा रसायन शास्त्र, भौतिकी, अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल आदि को भी पाठ्यक्रम मे रखा। इसका परिणाम यह हुआ कि उस समय गुरुकुल के छात्र एव स्नातक तत्कालीन कालेजो के छात्रो एव स्नातको से प्रतिस्पर्धा कर सकते थे। विभिन्न विश्वविद्यालयो की प्रतियोगिताओ मे तथा क्रीडा स्पर्धाओ मे भी विजयी हो कर आते थे। उनके द्वारा लिखित पुस्तके आज भी विभिन्न विश्वविद्यालयो मे पाठ्य पुस्तको के रूप मे लगी हुई हैं। गुरुकुल कागडी के स्नातक वेदाचार्य भी थे और वैज्ञानिक भी, अर्थशास्त्री भी थे, इतिहासज्ञ भी। स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि के पाठ्यक्रम के व्यापक अर्थ को समझ कर शिक्षा का व्यापक कार्यक्रम निर्धारित किया।

नये गुरुकुल

विश्वविद्यालय बनने के बाद गुरुकुल कागडी का पुराना स्वरूप समाप्त हो गया। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मूल आधार ही उपेक्षित हो गया। पर इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप देश के विभिन्न राज्यो मे आर्यसमाज द्वारा गुरुकुल खोलने की परम्परा जारी रही। आज १०० से भी अधिक गुरुकुल है पर उनमे क्या पढाया जाता है? वे कैसे स्नातक तैयार कर रहे है? समाज के विभिन्न क्षेत्रो मे उनकी क्या भूमिका है? ये ऐसे प्रश्न है जिन पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

महर्षि की प्रारम्भ के १० वर्षो के लिए वेदाग, व्याकरण, शिक्षा, छन्द, निरुक्त, कल्प, ज्योतिष, प्रातिशाख्य और उपवेद की शिक्षा आधुनिक युग मे इतनी व्यावहारिक और उपयोगी नही है जितनी पहले थी। हमारी प्राचीन ज्ञान की परिभाषा आजकल की परिभाषा की तुलना मे अत्यधिक सीमित प्रतीत होती है। धनुर्वेद— धनुर्विद्या के खड्ग और धनुष का स्थान आज ध्रुवान्तगामी प्रक्षेपास्त्रो ने ले लिया है। आयुर्वेद अब भी उपयोगी है, पर चिकित्सा विज्ञान ने शरीर विज्ञान के क्षेत्र मे अकल्पनीय प्रगति की है। परन्तु जो नये गुरुकुल खुल रहे है, उनका पाठ्यक्रम न तो महर्षि के पाठ्यक्रम के अनुरूप है और न नये होने वाले परिवर्तनो के ही अनुकूल है।

एकागी शिक्षा

प्रारम्भ मे विद्या अविद्या के महत्व का उल्लेख किया गया है। पर वर्तमान गुरुकुलो मे न अविद्या को और न ही विद्या को पढाया जाता है। इस समय गौतमनगर स्थित गुरुकुल का काफी नाम है। उसके पाठ्यक्रम को देख कर यह नही लगता कि यहा देश के कर्णधार तैयार किए जा रहे है। यह शिक्षा एकदम एकागी है। यह न तो भोगकरी है, न यशकरी है। जो शिक्षा दी जाती है वह छात्र के मानसिक क्षितिज को व्यापक नहीं बनाती। व्यापार, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि तो दूर की बात हैं। परन्तु भारतीय इतिहास के बारे मे भी जो पढाया जाता है वह न के बराबर है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद, शास्त्री या आचार्य बनने के बाद उनका कार्यक्षेत्र क्या होगा, इस बारे मे क्यो नहीं सोचा जाता? किसी आर्यसमाज का पुरोहित बनना क्या यही उनकी नियति है? सस्कृत कम्प्यूटर के लिए बडी उपयोगी भाषा है, परन्तु सस्कृत आने मात्र से कोई कम्प्यूटर विशेषज्ञ नहीं बन जाता। गुरुकुल मे कम्प्यूटर की भी शिक्षा दी जाय, यह विचार ही घातक समझा जाता है। यहा जितने शिक्षक है, वे सब सस्कृत, वेद, साहित्य पढाते है। एक अग्रेजी का शिक्षक है, एक गणित का। जैसा कि अधिकारी कहते है, ३५० छात्र पढते है। ये क्या पढते होगे और क्या पढाया जाता होगा, इसकी कल्पना की जा सकती है। गुरुकुल के आचार्य और शिक्षक निष्ठावान तथा कुछ लक्ष्य से प्रेरित है, पर दूरदृष्टि का अभाव है तथा शिक्षा के नये आयामो के बारे मे उपेक्षा भाव।

मात्र परीक्षाओ के केन्द्र

गुरुकुल गौतमनगर का नाम दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय की वैदिक ज्योति पत्रिका के अनुसार यहा पर श्रीमद् दयानन्द आर्ष विद्यापीठ के पाठ्यक्रमानुसार शिक्षा दी जाती है, जिसे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ने मान्यता प्रदान कर दी है। इसका अर्थ है कि इनकी अपनी पाठविधि है, जिसे विश्वविद्यालय ने स्वीकार कर लिया है और परीक्षाए भी स्वत ही उमी आधार पर होगी। यहा पर नवी कक्षा के बाद पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा और शास्त्री की परीक्षाओ की तैयारी कराई जाती है। बाद मे जो छात्र चाहे वह आचार्य भी कर सकता है। इसका अर्थ यही है कि यह गुरुकुल इन परीक्षाओ की तैयार कराने वाले ट्यूटोरियल केन्द्र के रूप मे कार्य कर रहा है।

आयु और सस्कार

यहा छठी कक्षा उत्तीर्ण छात्र को १२-१४ वर्ष की आयु मे प्रवेश दिया जाता है। इसका अर्थ है कि ५-६ वर्ष की आयु से ही गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से मिलने वाले सस्कार इन्हे नही दिये जा सकते। ये जिस परिवेश से तथा जिन सस्कारो को लेकर आते है, उनमे परिवर्तन करना कष्टसाध्य प्रक्रिया होगी। यहा कक्षाओ मे पढाने के लिए पीरियड जैसी भी कोई व्यवस्था नहीं है। मध्यमा, शास्त्री आदि की परीक्षाओ मे ऐसी कई पुस्तके है, जिनका पढना स्वामी जी ने निषिद्ध किया है। गुरुकुल को इस बात का श्रेय अवश्य है कि यहा सस्कृत व्याकरण, दर्शन पढाये जाते है।

गुरुकुल मे इतना अवश्य है कि भोजन के लिए एक प्रकार से नगण्य सी राशि ली जाती है। वर्ष भर मे केवल ३००० रु०। भोजन अच्छा ही मिलता होगा क्योकि पर्याप्त अन्न, राशन दान मे प्राप्त होता है। परन्तु छात्रो की वेशभूषा, उनका रहन सहन, उनमे अन्यो से अलगाव के विचार अवश्य उत्पन्न करते हैं। उनमे हीन मनोभावना के पैदा होने की भी आशका है। इसमे भारतीयता को ध्यान मे रख कर परिवर्तन किया जाना चाहिए।

मदरसों के रास्ते पर

कुल मिला कर यही प्रभाव पडता है कि ये गुरुकुल तथा इसी प्रकार के अन्य गुरुकुल मात्र सस्कृत व्याकरण पढ़ाने वाले, विश्व की प्रगति से अनजान, समय के अनुसार अपने को प्रगतिशील विचारो मे न ढालने वाले, पुराणपथी विद्यालय है। मदरसो की शिक्षा छात्र को कूपमण्डूक बनाती है। एक प्रकार से ये गुरुकुल मदरसो के रास्ते पर चल रहे है। मदरसो मे पढे कम से कम कट्टर मुसलमान तो बनते है, पर गुरुकुलो मे पढे कट्टर आर्यसमाजी बनेगे यह सुनिश्चित नही है। आवश्यकता है गुरुकुलो मे दी जाने वाली शिक्षा मे आमूलचूल परिवर्तन की, उसे आधुनिकतम बनाने तथा विद्या से मिलने वाली ज्योति से आलोकित करने की।

टी-८, ग्रीनपार्क एक्सटेशन, नई
दिल्ली-१६

(पृष्ठ २ का शेष)

परमेश्वर है और .....

इन चक्षुओ से नहीं होता। साक्षात्कार कहने का कारण यह है कि मन को भी आन्तरिक इन्द्रिय (अक्ष) माना गया है।

(२) परमेश्वर को कर्म, ज्ञान और भक्ति मे से किसी भी मार्ग से अनुभून या साक्षात् किया जा सकता है।

(३) उस परमेश्वर के अनुभव को विचक्षण (**विपश्यति-विचक्षते**) अद्भुत कहा है, क्योकि इसका दर्शन पशु, पक्षी या वृक्ष-वनस्पति की तरह न हो कर, प्रेम, द्वेष, या सुख दुख की तरह की अनुभूति मे होता है।

इन आखों से परमेश्वर को नहीं देखा जा सकता, किन्तु यदि सदा सुमन रहने का अभ्यास करते हुए, तत्सदृश उदीयमान सूर्य का नित्य दर्शन व सेवन करते रहे तो वह ऐश्वर्यसम्पन्न इन्द्र हमारे अत्यन्त निकट अन्तरात्मा मे अनुभूति रूप मे अवश्य प्रकट हो जाएगा।

विश्वदानी सुमनसः स्याम, पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम्। ऋक्०६.५२५
इन्द्रो नेदिष्ठमवसा गमिष्ठः। मयोभूः सुशंसः सुहवःपितेव। ऋक्० ६ ५२ ६
ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिः। यजुः० २३ ४८

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावली,
दिल्ली-६

सत्यार्थ प्रकाश से क्या पाया मैंने?

❑ ब्रिग्रेडियर चितरंजन सावत, विशिष्ट सेवा मैडल

'सत्यार्थ प्रकाश' मानव मात्र की धरोहर है और है मेरी पैतृक सम्पत्ति। पिछली तीन पीढियो से हमारे व्यक्तित्व विकास का साधन रहा है सत्यार्थप्रकाश।

सन् १८८३ ईस्वी मे महाराणा जी की नगरी उदयपुर राजपूताना मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे सस्करण का लेखन पूरा किया। प्रथम सस्करण की अशुद्धियो को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वय सुधारा था। वैदिक यत्रालय, प्रयाग के प्रबन्धकर्ता, मुशी समर्थदान ने मुद्रित करके जनसामान्य को उपलब्ध कराया, तो समस्त भारत मे वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की नगरी, अयोध्या अछूती न रही। स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वय अयोध्या पधारे थे, किन्तु वह समय था सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन से कई वर्ष पूर्व। फिर भी, नए विचारो का प्रचड वेग अयोध्या के निकटवर्ती ग्राम बरौरा को, जहा सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के आधी शताब्दी बाद मेरा जन्म हुआ, भ्राति भरी निद्रा से जगा न पाया था। अनेक सुधारक आये और चले गये, किन्तु बरौरा ग्राम अज्ञान के सागर मे 'अनत शयनम्' की स्थिति मे रहा। आया प्रथम विश्व युद्ध सन् १९१४ से १८, मेरे पितामह के छोटे भाई, सम्राट् जार्ज की तरफ से हिटलर—पूर्व जर्मनी से युद्ध करने विदेश गये। जब वे लौटे, तो भ्रातियो का भार उतार चुके थे। उनके हाथो मे थी एक पुस्तक, सत्यार्थ प्रकाश, मन-मस्तिष्क दयानन्द सदेश से ओत-प्रोत था। 'जनाब' का लोप हो गया था, 'मुशी' का स्थान ले लिया 'महाशय' ने, महाशय रामलोटन सावत।

सत्यार्थ प्रकाश का सुफल

सत्यार्थ प्रकाश का पठन-पाठन परिवार मे आरम्भ हुआ। परिवार और पडोस की महिलाओ के लिए सत्यार्थ प्रकाश 'श्रुति' समान था। अक्षर ज्ञान का महिला जगत् मे अभाव था। पिछले आठ-नौ दशको मे, सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय और तृतीय समुल्लासो ने महिलाओ मे हलचल मचा दी। उनमे शिक्षा का अभूतपूर्व प्रसार हुआ। मेरी दादी (पितामह की पत्नी), जो पिछली शताब्दी की सध्या मे ससुराल की ड्योढी मे दाखिल हुई थीं, अक्षर ज्ञान से अनभिज्ञ थीं। मेरी मा ने किसी प्रकार हस्ताक्षर का प्रयास किया था और उस समय को देखते हुए प्रयास सफल माना गया था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव मे नारी शिक्षा लोकप्रिय हुई। मेरे बच्चो की मा, मुझसे विवाह के समय सस्कृत मे ऐम ए थीं और अब वेदपाठी है। मेरी बेटियो ने विदेश में पी-ऐच डी और ऐम ए किया, विदेशी भाषा मे। नारी शिक्षा का यह उत्थान ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश द्वारा लाये गये जन-जागरण का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अन्धविश्वासों को हटाया

आइये लौटते है अपने गाव मे सत्यार्थ प्रकाश आगमन काल मे। गाव के बीचो बीच बना बडा शिवालय धार्मिक और सामाजिक सास्कृतिक गतिविधियो का केन्द्र था और है। राम के प्रदेश मे भी शैव मत उतना ही लोकप्रिय था जितना कि वैष्णव। किन्तु काठियावाड स्थित टकारा के शैवो के समान कट्टरता न थी बरौरा मे। तभी तो किसी मूलशकर ने जन्म नही लिया। वर्ष प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि आती रही, उपवास और नीद के दोहरे प्रहार को न सह सकने वाले शिव भक्त आधी रात होते होते सपने मे साक्षात् शिव के दर्शन से सतुष्ट होते रहे। गणेश के वाहन, गणेश के पिता पर चढाया गया छप्पन भोग खाते रहे, मुक्त और स्वच्छद चूहे शिवलिग पर शवासन करते रहे किन्तु कोई मूलशकर समान बालक सच्चे शिव की खोज मे न निकला। हा, बालक मूलशकर से प्रौढ दयानन्द बने आदित्य ब्रह्मचारी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश ने बरौरा के जिज्ञासुओ के ज्ञान चक्षु खोल दिये। गाव मे और आसपास अविद्या और अधकार छाये हुए थे। जड़पूजा का बोलबाला था। वेदोक्त ईश्वर की स्तुति का प्राय लोप हो चला था। चेचक निकलने पर नीम के पत्ते के नीचे हाथी घोडे और स्त्री की आकृति के खिलौनो को रख कर देवी' को भेट चढायी जाती थी। यहा तक कि बच्चो के बीमार पड़ने पर प्रेत, पिशाच शमन के लिए ओझा-सोखा बुलाये जाते थे। इन भ्रातियो के भूतो को भगाने के लिए मेरे पिता महाशय रामनरेश सावत और उनके सहयोगियो को सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास से सहायता मिली।

अछूतो को गले लगाया

भ्रातियो का भार ढोने से युवा वर्ग कतराने लगा। कभी कभी तो पोगापथियो ने जाति बाहर करने की धमकी दी। 'नीम का चौरा' अब शीतला माता (चेचक) के शमन का स्थान नहीं, अपितु नयी लहर की गोष्ठी का केन्द्र बन गया था। होली मिलन मे अछूत भी आमत्रित किये गये। बुजुर्गों ने पोप पथी दबाव मे शूद्रो से होली मे गले मिलने पर हुक्का पानी बद कर दिया। यह सामाजिक दड प्रभावहीन हुआ। देव दयानन्द के दीवाने तो हुक्का पीते नहीं थे। सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास मे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वय लिखा है

बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्य मदकारि तदुच्यते।

जो जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ है उनका सेवन कभी न करे।

एकादश समुल्लास मे अवैदिक मत मतातरो के बारे मे सही स्थिति जानने के बाद बच्चो की बीमारी मे उचित उपचार होने लगा। कपटी और धूर्त ओझा अपने कपोल कल्पित घृणित प्रेत पिशाचो के साथ 'छू मतर' हो गये। नवीन आर्यो के ज्ञान का स्रोत सत्यार्थ प्रकाश सच्चा पथ प्रदर्शक बना।

किरानी-कुरानी का सामना

सत्यार्थ प्रकाश का परिवार मे प्रभावी होना मेरे स्वय के लिए सदैव सर्वहितकारी रहा। आर्यावर्त मे महाभारत उपरान्त पनपे वेद विरुद्ध मत-मतातरो के अतिरिक्त, किरानी-कुरानी पोप लीलाओ से सुरक्षा प्रदान करने वाला कवच रहा सत्यार्थ प्रकाश। किरानी-कुरानी व्यूह और कुचक्र को ध्वस्त करने वाला ब्रह्मास्त्र है सत्यार्थ प्रकाश। मेरे कथन की पुष्टि करते है मेरे जीवन के कई दिन और पल।

शनि शमन

मेरा जन्म शनिवार को हुआ। उस समय शनिवार शुभ नही माना जाता था। मेरे सयुक्त परिवार मे मेरे जन्म से खुशी की लहर दौड गई, किन्तु गाव की बडी बूढियो ने शनिवार को अशुभ मानते हुए मुह बिचकाया। एक अन्य अज्ञानी ने सलाह दी कि सूरापुर के मौलवी पहुचे हुए है और नवजात शिशु की शनि से रक्षा के लिये उनका बनाया ताबीज प्रभावी होगा। स्थानीय पोंगापथी पोप ने तो 'शनिदेव शमन' की विधि लिख कर दे दी। बलि के बकरे की आयु १ वर्ष १ महीना १ दिन १ घटा निर्धारित की गई। दो पीढियो से सत्यार्थ प्रकाश पढने वाले और आर्य पथ के पथिक परिवार को 'शनि शमन' की बाते न भायी। जब मेरे पिता ने पौराणिक पडित को सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास की यह पक्ति दिखाई

यः शनैश्चरति स शनैश्चरः, जो सबमे सहज से प्राप्त धैर्यवान है, इससे उस परमेश्वर का नाम शनैश्चर है। तो वह विद्याविहीन महाशय ऐसे गायब हुए जैसे गधे के सिर से सींग। शैशव मे और बाल्य काल मे मेरी तो चादी ही चादी रही। न गले मे ताबीज लटकानी पडी और न बाजू मे बाधनी पडी। 'बकरे की मा कब तक खैर मनाती' ऐसी कहावत है। किन्तु मेरे सदर्भ मे खैर मनाने से '१ वर्ष १ महीना १ दिन १ घटा' वाले बकरे की जान बच गई। मेरे जीवन मे 'शनिवार' शुभ दिन माना जाने लगा। सेना मे नये स्थान पर नये पद का कार्यभार मैं शनिवार को सम्हालता था। न कभी अनिष्ट की सभावना मन मे खटकी और न कभी कोई अनिष्ट शनिवार को नया काम शुरू करने के कारण हुआ। मन मे यही दृढ विश्वास रहा कि 'शनैश्चर' तो परमात्मा का वैदिक नाम है। 'शनि शमन' की बात तो मूर्ख मस्तिष्क और निर्बल मन की उपज है। इस उपज का अन्न पौराणिक पडित के खलिहान और कोष्ठक मे ही जाता है, किन्तु धूमिल होती है हमारे समाज की छवि। 'शनैश्चर' परम पिता परमात्मा अपने पुत्रो-पुत्रियो का अहित क्यो करेगे? इस अचल सत्य से ही हमारा मन स्थिर है। निःसदेह 'शनि शमन' के भूत रूपी भ्राति को भगाना, सत्यार्थ प्रकाश के पठन से ही सभव हो सका।

भूत प्रेत कभी आये ही नही

भूत-प्रेत पिशाच आदि से कभी भी मेरा लगाव नही रहा, आत्मीयता का प्रश्न ही नही उठता। बाल्य काल और किशोरावस्था मे भी कभी समवयस्को ने तो कभी अविद्याग्रस्त सेवक-सेविका ने भूत प्रेत की मनगढत कहानिया सुना कर मेरे मन को बहकाया। कभी कभी मन मे डर समाया भी। अधकार मे सूखे पत्तो की खडखडाहट से मन भयभीत हो जाता था। अधेरे कोने मे चुडैल के चलने का आभास होता था। यो उस समय 'भटकती आत्मा' का होना या न होना मेरी अपनी कल्पना से परे था। फिर भी रात के बारह बजे 'जिन' द्वारा शाही हलवाई का घटा बजाना और सोने की मुहरे दे कर रसीली चमचम खरीदने की कहानी, काल्पनिक होते हुए भी मन मे मिठास भर देती थी। भय, कौतूहल, आशका और चमचमी मिठास मे झूलते हुए दिन और रात बीतते रहे। रात को कभी कभी इसलिए जागता रहता था कि शायद कोई भूला भटका 'जिन' चमचम का एक दोना हमारे सिरहाने सरका जाए। परन्तु ऐसा कभी भी नही हुआ और हो भी नही सकता था। कल्पना की उडान और कठोर सत्य मे उतना ही अतर है, जितना कि रात और दिन मे।

विज्ञान का सूर्योदय

अपनी उलझन से मैने पिताजी को परिचित कराया और फिर आरम्भ हुआ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास का विधिवत् पाठ, विशेष कर भूत प्रेतादि निषेध प्रकरण' का। फिर क्या था, विज्ञान के समीर ने शका के बादलो का व्यूह छिन्न भिन्न कर दिया। आया नया सवेरा, सूर्योदय और ज्ञानोदय। स्वामी दयानन्द सरस्वती के लिखे शब्द और वाक्य मानस पटल पर अकित हो गए। प्रेत से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं, क्योकि गुरु के प्राणात होने पर उनके मृतक शरीर को ही 'प्रेत' कहते है। भूत कौन है? जो बीत

(शेष पृष्ठ १० पर)

पत्र जगत्

गुरुकुल कांगड़ी की १४४ बीघा जमीन बिकी

आर्य जगत् के माध्यम से आर्य जनता को दु:खद सूचना दे रहा हूं कि विश्वस्त सूत्रो से पता चला है कि पिछले दिनो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की एकसौ चवालीस बीघा ज़मीन सत्तर लाख रुपये मे बिक गई है, जिसकी बाजार कीमत आज दस करोड है। इस बात को जिसने भी सुना, वह दु:खी व बेचैन हुआ है। पहले इस जमीन का सौदा पजाब सभा के महामत्री ने बयाना ले कर किया था। पजाब सभा पहले भी जमीने बेच चुकी है। इस सौदे का हरियाणा और दिल्ली प्रतिनिधि सभाओ ने डटकर विरोध और मुकाबला किया। उनका विरोध रग लाया। जमीन बिकने से बच गई। लोगो ने हरियाणा और दिल्ली सभा की भूरि भूरि प्रशसा की कि आपने स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मा को बचा लिया, उनकी वसीयत तथा विरासत को बिकने नहीं दिया। कई वर्ष निकल गए। पजाब के महामत्री जमीन की रजिस्ट्री नहीं करा सके। जमीन नहीं बिकी।

भगवान् जाने क्या हुआ? क्यो हुआ? कैसे हुआ? किसने किया? जो हरियाणा और दिल्ली जमीन के पहरेदार थे, जिन्होने जमीन न बिकने की वकालत और चौकीदारी की, उन्हीं दोनो सभाओ ने मिल कर (दिल्ली के भी कुछ लोग) उस जमीन को बेच दिया। वर्तमान पजाब सभा के अधिकारियों ने जमीन न बिके, इसके लिए दो दो स्टे लिए हुए थे। फिर भी जमीन बिक गई? इस काड से गुरुकुल हिला है। गुरुकुल की साख व विश्वसनीयता घटी है। इससे कई प्रश्न व शकाए सामने आती है। यदि जमीन नहीं बिकती, तो क्या मुसीबत आ जाती? अचानक ऐसी क्या मजबूरी आ गई? पिछले दिनो ही गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे चालीस लाख के कम्प्यूटर चोरी हो गए। तरह तरह की अटकले लगीं, कम्प्यूटर नकली थे। कम्प्यूटरो के खाली डिब्बे आये थे। असलियत कुछ हाथ नहीं लगी। हरिद्वार के वातावरण मे यह बात आम चर्चा मे है कि गुरुकुल कागडी मे इजीनियरिंग व कम्प्यूटर के प्रवेश मे लेन देन चलता है। नियुक्तियो मे भी पैसा चल पडा है। ये सब बाते गुरुकुल जैसी सस्था के लिए कलक हैं। आज भी जनता मे गुरुकुल शब्द के प्रति श्रद्धा, सम्मान व आदर का भाव है। लोग गुरुकुलो को आदर्श व प्रेरणा की दृष्टि से देखते है। गुरुकुलो को तीर्थ मानते है। गुरुकुल आर्य समाज की पहिचान है।

वर्तमान गुरुकुल कागडी की आन्तरिक स्थिति, व्यवस्था, अनुशासन आदि अच्छे नहीं हैं। सही सोच विचार, सस्थाहित आदि की भावना रखने वाले व्यक्तियो को वहा बर्दाश्त नहीं किया जाता है। जो वहा होना चाहिए, वह नही हो रहा है, जो नहीं होना चाहिए, वह सब कुछ हो रहा है। जिन उद्देश्यो, आदर्शो एव कार्यो के लिए गुरुकुल की स्थापना की गई थी, वे सभी बाते वहा नजर नहीं आतीं। तेजी से गुरुकुल कालेज बन रहा है।

यह सस्था उस महापुरुष की है, जिसने अपने जीवन का सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। गुरुकुल कागडी स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन्त स्मारक है। आर्य जनता के नाम इसकी वसीयत और विरासत है। हम सबका कर्तव्य है इसकी रक्षा और देखभाल करना। आर्य जनता को जागरूक होकर कर्तव्यबोध की दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द के ढहते हुए स्मारक को बचाने का सकल्प लेना चाहिए। गुटबाजी, धडेबाजी, ध्रुवीकरण, समीकरण आदि की राजनीति से ऊपर उठ कर सच्चाई और ईमानदारी से सभा, सगठन, सस्थाओ आदि के हित के लिए सोचने की जरूरत है, तभी ये बच सकेगी। आशा है कि आर्य जनता इस पर गभीरतापूर्वक विचार करेगी।

महेश विद्यालकार, दिल्ली

जानकारी मिली है कि प्रश्नाधीन भूमि का इकरारनामा सन् १९९१ मे हो गया था, और खरीदार को भूमि का कब्जा भी दे दिया गया था। १० साल गुरुकुल ने मुकदमा लडा कि यह भूमि न बिके। गुरुकुल उस मुकदमे में हार गया। वर्तमान मे गुरुकुल के चासलर पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं, जो दिल्ली, हरियाणा और पजाब तीनो सभाओ की सर्वसम्मति से बने है। पजाब सभा पहले ही इस भूमि को बेचने की इच्छुक थी। —स०

वैदिक यूनिवर्सिटी आफ अमेरिका : एक परिचय

यह एक अपने ढग की सर्वप्रथम सस्था है, जो अमेरिका मे १९८७ मे जून मास मे स्थापित हुई। अमेरिका की सरकार द्वारा दो दिन मे पजीकृत, ३ दिन मे आयकर मुक्त, इस लोकप्रिय सस्था की सहायता से अब तक लगभग ४००० छात्रो ने हिन्दी, सस्कृत तथा वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त की है। आधुनिक सभी ससाधनो से सम्पन्न यह सस्था छोटी है, पर पूरे विश्व भर मे काम करती है। इसकी कोई स्थायी या अस्थायी सम्पत्ति नहीं है। वैदिक धर्म, हिन्दी तथा सस्कृत का प्रचार इसका प्रयोजन है। पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से यह सहस्रबाहु बन कर बिना किसी स्वार्थ या भिक्षा के स्वाभिमान के साथ काम कर रही है। आप मुझे कुलपति कहे, वाइस चासलर कहे या कुछ न कहे, मुझे तो काम से मतलब है, नाम से नहीं। इसने हिन्दी मे अपना पाठ्यक्रम बनाया है, जिसे अमेरिका के शिक्षा विभाग ने स्कूलो के लिए मान्यता प्रदान की हुई है। इन पुस्तको के द्वारा व्यावहारिक हिन्दी सिखाई जाती है, जिसे वयस्क भी सीखते हैं। श्री पं० दामोदर सातवलेकर की संस्कृत स्वयं शिक्षक तथा अन्य व्यावहारिक सस्कृत पुस्तकों की सहायता से सस्कृत सिखाई जाती है। वैदिक धर्म के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए १८ पुस्तकें अग्रेजी मे लिखी गई हैं, जिनके आधार पर अब मौरिशस मे भी पत्राचार पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है।

डा० स्वामी सत्यम्, बंगलौर

उपरिलिखित से प्रकट है कि वैदिक यूनीवर्सिटी शब्द भ्रामक है। इस यूनीवर्सिटी का कोई भवन नहीं है, कोई लैक्चरर, रीडर या प्रोफेसर नहीं है, कोई फैकल्टिया नहीं हैं। कोई कक्षाए नहीं लगतीं। यह एक पत्राचार कार्यक्रम है, जिसका सचालन डा० स्वामी सत्यम् अकेले ही सहस्रबाहु बन कर कर रहे है। उन्होने १८ पुस्तके अग्रेज़ी मे लिखी हैं, जिनके माध्यम से संस्कृत, हिन्दी, और वैदिक धर्म का प्रचार हुआ है। यह सराहनीय व्यवसाय है, परन्तु इसे 'वैदिक यूनीवर्सिटी ऑफ अमेरिका' कहने से आम पाठक के मन में भ्रम पैदा होता है। भारत का विश्वविद्यालय आयोग ऐसी सस्थाओ को दूकान कहता है और उन पर रोक लगाना चाहता है। मुम्बई के अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष के रूप मे जो डा० स्वामी सत्यम् को वैदिक यूनीवर्सिटी का कुलपति प्रचारित किया गया, उन पर्चों को छापने से पहले सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस वास्तविकता को जान लेती, तो अच्छा रहता। —स०

आर्य जगत् साप्ताहिक पत्र के माध्यम से कुछ शंका समाधान

मै आर्य जगत् लेता हू। कुछ (पूरा नहीं) पढता हू। कई लेख बहुत ही अच्छे लगते है।

आपके माध्यम से निम्न शका समाधान की प्रार्थना है

(१) शान्ति पाठ के अर्थों मे "शान्ति है" या "शान्ति हो" (होवे) क्या ठीक है?

(२) "ओषधय शान्ति " पहले व वनस्पतय शान्ति बाद मे, "विश्वेदेवा शान्ति ' पहले व "ब्रह्म शान्ति " बाद मे ऐसा क्यो है?

(३) इन्द्रियस्पर्श मन्त्र मे ऋषि ने ओ३म् श्रोत्र श्रोत्रम् के बाद 'ओ३म् पादयो छोड दिया। "ओ३म् नाभि " पर आ गए। ओ३म् पादयोःक्यो छोडा —पाव को छूने से हाथ (अगुली) गदी हो जाएगी, इसलिए?

(४) "बाहुभ्या यशोबलम्" और किसी इन्द्रिय के साथ तो "यशोबलम्" जैसा कुछ नहीं जोडा— बाहुभ्या के साथ ही क्यो जोडा?

ब्रह्मदत्त गुप्ता, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, आर्य समाज मन्दिर हस्तिनापुर (मेरठ)

अल्पसंख्यकों का प्रतिशत ४९ या १०

२२ जुलाई का सम्पादकीय लेख पढा। हम आपके इस विचार से सहमत है कि देश का वर्तमान सविधान सर्वोत्तम नहीं कहा जा सकता, क्योकि (१) धर्मनिरपेक्ष शासन व्यवस्था मे भी जनता को अल्पसख्यक और बहुसख्यक के आधार पर बाटा गया है, जबकि ऐसा धार्मिक राष्ट्र के सविधान मे हुआ करता है। (२) धर्म, भाषा, लिग, जाति के आधार पर कोई भेदभाव न करने की बात कहते हुए भी, जाति के आधार पर आरक्षण दिया गया और धर्म के आधार पर विशेषाधिकार दिये गये। (३) देश विभाजन के दोषी समुदायो को अल्पसख्यक शब्द की आड़ मे विशेषाधिकार देकर पुरस्कृत किया गया। (४) धारा ३६६ मे अल्पसख्यक शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है, अत सरकार ४९ प्रतिशत वाले समुदाय को भी उसी प्रकार अल्पसख्यक मानती है, जैसे ब्रिटिश सरकार मानती थी, जबकि १० प्रतिशत से कम सख्या वाले समुदाय को ही सयुक्तराष्ट्र सघ के चार्टर के अनुसार अल्पसख्यक माना जाना चाहिए।

इन्द्रदेव, सावरकर विचार मच, धर्मशाला छोटेलाल, मामन चौकी के सामने, बुलन्दशहर।

अध्यापक की आवश्यकता

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली द्वारा सचालित डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान में शास्त्री और आचार्य की योग्यता वाले विद्यार्थियो को एक साल प्रशिक्षण दे कर नैतिक शिक्षक के रूप में डी० ए० वी० विद्यालयों/महाविद्यालयो में नियुक्त करता है। इन विद्यार्थियों के अध्यापन के लिए एक योग्य वैदिक विद्वान् की, जो आर्य समाज की विचारधारा से ओतप्रोत हो, आवश्यकता है। वेद और सस्कृत में आचार्य और डाक्टरेट की उपाधि और दस साल अध्यापन का अनुभव होना आवश्यक है।

आवेदन पत्र प्रमाणपत्रो की प्रतिलिपियों सहित ३० अगस्त २००१ तक निम्नलिखित पते पर पहुचने चाहिए

मंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

कन्या भ्रूण की हत्या

भागवत की कथा भगवती की व्यथा

❑ श्री देवनारायण भारद्वाज

हमारे नगर में है एक आचार्य देवीचरण जी, प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ। उन्हे धार्मिक आयोजनों के प्रति बहुत आकर्षण है। वे थोडे थोडे अन्तराल पर कोई न कोई कार्यक्रम करके अपने क्षेत्र की पिछडी जनता में चारित्रिक उत्थान लाने के लिए व्यग्र रहते हैं। पौराणिक रूढ़ियो से खिन्न रहते हुए भी उन्हे पौराणिक अनुष्ठान ही करने पडते है। आर्य समाज से प्रसन्न रहते हुए भी वे शीघ्र आर्य समाज के यज्ञ, वेद कथा नहीं करा पाते है, क्योंकि उन्हे इसके लिए व्यावसायिक पडित मिलते नहीं और स्वयंसेवी पडित इतना समय व श्रम समर्पित कर नहीं पाते। एक बार उन्होने भागवत की कथा रखी। कही दूर बाहर से कथावाचको की मडली बुलाई थी, जो खूब सजधज कर साज-आवाज के साथ कथा कहती थी। प्रतिदिन की कथा के लिए नगर के किसी मान्य व्यक्ति को मुख्य अतिथि बनाया जाता, जो कथावाचकों के साथ ही मच पर मूक बैठा रहता और कथा सुनता रहता। मुख्य अतिथि को एक काम अवश्य करना होता, उसे कथा वाचको को माला पहनानी होती और भागवत ग्रथ का माल्यार्पण के साथ पूजन करना होता। साथ ही आयोजकगण मुख्य अतिथि का भी माल्यार्पण आदि से स्वागत करते।

भागवत कथा के मुख्य अतिथि

आचार्य देवीचरण जी एक दिन का मुख्य अतिथि पद मुझे प्रदान करने की भावना से मेरे समीप आये। अपना प्रस्ताव रखते हुए उन्होंने स्वय ही कह दिया 'आपके साथ एक बाधा है। आप माल्यार्पण करके पूजन आदि तो करेंगे नहीं, फिर भी एक दिन की कथा का मुख्य अतिथि मै आपको बनाना चाहता हू।' मै सहमत हो गया। फलत स्त्री-पुरुषो की भीड़ भरी सभा के कथा मच पर जा कर विराज गया। मूर्तिवत् मै वह सारी कथा सुनता रहा। श्रोतागण आनन्दमग्न थे और आनन्द-हनन की दशा मे स्वय को कोसता बैठा रहा मैं। अन्तिम बेला मे तो दशा और भी अधिक असह्य हो गई, जब कथा के बीच मे बालकृष्ण का जन्म हो गया। कथावाचक के गीत-कीर्तन के साथ सभी नर-नारी भी झूम उठे। वे जितने झूमते जाते थे, मैं उतना ही कुण्ठित होता जा रहा था। पराकाष्ठा तब हो गई, जब एक नन्हें शिशु को टोकरी में एक सज्जन ने अपने सिर पर रख लिया और नाचते गाते हुए जनता के बीच में पहुच पहुंच कर शिशु के ऊपर न्यौछावर का चढावा प्राप्त करने लगे।

कंस द्वारा कन्या वध

मै मन ही मन यह सोच रहा था कि आज मैं मुख्य अतिथि हूं या मुख्य बन्दी हू, जो सब कुछ विवश देख रहा हूं। कार्यक्रम के मध्य मे बहाना बनाकर या चुपचाप उठ कर आ भी नहीं सकता था, क्योंकि इससे आयोजको का अपमान होता और मेरा यह कार्य अच्छा आचरण नही माना जाता। प्रभु ने कृपा की; वेदवाणी माता सरस्वती मुख पर आकर विराज गयी, और जैसे ही मुझे दो शब्द कहने का अवसर प्रदान किया गया, मेरी एक नई कथा प्रारम्भ हो गई। मैने कहा कि कृष्ण जैसी महान् विभूति का जन्म हो, तो हमे प्रसन्न होना ही चाहिए। जरा विचार करे, हम किसका काम कर रहे है? कृष्ण का या कस का? आज इस बालक के जन्म पर हम सभी अपार हर्ष प्रकट कर रहे है, किन्तु उस बालिका के प्रति कौन शोक प्रकट कर रहा है, जिसे कस ने पत्थर पर पटक कर मार दिया था? कस को तो वसुदेव के पुत्र के द्वारा अपने मारे जाने का भय था, फिर उसने पुत्री को क्यो मार दिया? उसने पुत्र-पुत्री मे कोई अन्तर नही समझा था शायद। उसे पुत्री द्वारा भी मारे जाने की उतनी ही आशका रही होगी, जितनी पुत्र के द्वारा मारे जाने की थी। कस ने तो ये बाल हत्याये अपने मारे जाने की भविष्यवाणी के कारण की थी। आज हम लोग उन कन्याओ को मार देते है, जिनसे हमे किसी प्रकार की कोई हानि नही होती। कन्याओ के मारे जाने के अभियान मे हमने कितनी प्रगति की है? पहले राजपूताना आदि मे कन्या को जन्म लेने के बाद मार देते थे, और अब तो जन्म भी नही लेने देते उनकी गर्भ मे ही भ्रूण हत्या कर देते है। कृष्णकाल मे इस प्रकार एक नवजात कन्या की हत्या के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा उदाहरण नही मिलता है। मैने सभा से प्रश्न किया 'इस भागवत की कथा सुनने वाले आप सभी बताये कि आज के आधुनिक युग मे जो घृणित पाप कार्य हो रहा है उसमे कृष्ण का कितना आदर्श है और कस का कितना अनुकरण है?'

इन वाक्यो को सुन कर नाचती झूमती सभा मे मौन छा गया। मेरा काम हो गया। भागवत कथा के अन्तिम समापन समारोह मे भी मुझे बुलाया गया और एक बडी सी यज्ञवेदी बना कर बृहद् यज्ञ किया गया और वहा के समस्त स्त्री-पुरुषो, बाल-बालिकाओ ने यज्ञ मे श्रद्धापूर्वक आहुतिया अर्पित कीं। अनेक व्यक्तियो ने यह प्रतिक्रिया व्यक्त की कि सम्पूर्ण भागवत कथा पर आपकी भगवती यज्ञ कथा भारी पड़ गई।

देवी जागरण

इसी प्रकार एक बार मुझे आग्रहपूर्वक एक देवी जागरण में आमन्त्रित किया गया। सम्पूर्ण रात्रि तो ध्वनि विस्तारक यत्र से देवी के गीतों का फिल्मी धुनों मे शोर होता ही रहा। उनका तो पता नहीं कि जो जागरण स्थल पर गये थे, कितना जागे, किन्तु जो पडोसी वहा नहीं गये थे, वे तो अवश्य ही जागते रहे थे। प्रभात वेला मे जब मैने शैय्या छोडी, शोर तब भी हो रहा था। यह सोच कर चलन-व्यवहार की माग पूरी हो जायेगी, मै भी वहा चला गया। जागरण टोली के प्रमुख गायक परिचित निकल आये। उन्होने तिलकाक्न, माल्यार्पण एव फलदान के साथ मेरा स्वागत करते हुए कुछ विचार रखने का अनुरोध भी कर दिया।

जड देवी की पूजा, चेतन देवी की हत्या

मैने वेदमाता सरस्वती को स्मरण करते हुए थोडे से शब्दो मे उसका सन्देश सुना दिया। मैने कहा 'यहा मै तीन प्रकार के भक्तो को देख रहा हू। एक वे है, जो आराम से लेटे बैठे सो रहे है। वे सभी उत्तम कोटि के है, क्योकि उन्हे यहा क्या हो रहा है, उससे कोई प्रयोजन नही है। वे तो लोकलाजवश पारस्परिक व्यवहार निभाने यहा आये है। दूसरे व्यक्ति वे है, जो सो भी रहे है व जग भी रहे है, अथवा यो कहे न सो रहे है और न जग रहे है। ये सभी सशयात्मा है। तीसरे प्रकार के भक्त वे है, जो प्रारम्भ से अन्त तक एक पल भी सोये ही नहीं। मेरे विचार से प्रथम प्रकार के भक्त उत्तम कोटि के है, दूसरे प्रकार के भक्त मध्यम कोटि के और तीसरे प्रकार के भक्त निम्न कोटि के है।'

'ये सभी निम्न कोटि के इसलिए है, क्योकि ये यहा स्थापित की गई जड देवी की तो पूजा करते है, किन्तु वास्तविक चेतन देवी को मार देने मे कभी लज्जित नही होते है। कभी दहेज, कभी बलात्कार और कभी कन्या भ्रूण हत्या के रूप मे देवी का वध करने से बाज नही आते। ये सभी जागने वाले भक्त यदि सच्ची देवी का सम्मान करने वाले हो—उसकी पालना एव रक्षा करने वाले हो, तो ये सभी भक्त उत्तम कोटि के हो सकते है और उनका यह जागरण वास्तविक धर्म-जागृति लाने वाला सिद्ध हो सकता है।' लिखने मे शायद लगता हो, किन्तु वहा बोलते समय मेरी वाणी मे कोई कलुष एव कठोरता नही आने पायी थी, प्रत्युत यजमानो एव मेहमानो, सभी के लिए मेरी भाषा आशीर्वादपूर्ण थी। जागरण एव भागवत कथा सुनते सुनते भी हमने भगवती का कितना विनाश कर दिया है—यह तथ्य इसी वर्ष सम्पन्न भारतीय जनगणना के आकडो द्वारा भयावह रूप में प्रकट हुआ है। समाचार पत्रो को 'नारी नहीं तो पुरुष नहीं', एव 'यही हाल रहा तो चिराग लेकर भी ढूढने से न मिलेंगी लडकिया' जैसे शीर्षक छापने को बाध्य होना पडा है।

जनगणना के अस्थायी आकडो से पता चला है कि बालक-बालिकाओ का जो अनुपात १९९१ मे १००० की तुलना मे ९४५ था, वह २००१ मे ९२७ ही रह गया है। यह अनुपात १९६१ मे ९७६, १९७१ मे ९६४, १९८१ मे ९६२ था। भारत के विभिन्न प्रदेशो मे तो यह स्थिति बहुत ही चेतावनीपूर्ण है। बालक-बालिका का अनुपात पजाब मे ८७५ से ७९३, (८२ अको की कमी), हरियाणा मे ८७९ से ८२० (५९ अको की कमी) हिमाचल प्रदेश मे ९५१ मे ८९७ (५४ अको की कमी) गुजरात मे ९२८ से ८७८ (५० अको की कमी) चण्डीगढ मे ८९९ से ८४५ (५४ अको की कमी) दिल्ली मे ९१५ से ८६५ (५० अको की कमी)। विशेषज्ञो के अनुसार अनुपात मे इस कमी का कारण कन्या भ्रूण हत्या या बालिका मृत्युदर मे वृद्धि है। देश को इस पतन की दशा मे लाने के लिए वे ही तीन बुद्धिजीवी उत्तरदायी है, जो मानवता को उन्नत शिखर पर ले जाने का दम्भ भरते है— अर्थात् विज्ञानवेत्ता, राजनेता एव धर्मचेता। विज्ञानवेत्ता मानव के रोग-शोक दूर करने वाले जिन अनुसधान आविष्कारो को प्रस्तुत करते है, वे सभी विकास को पीछे छोड कर विनाश पर उतारू हो जाते है। राजनेता अपराधो पर नियत्रण करने के विधिविधान बनाते है, तदनुरूप घोषणाए करते है किन्तु सभी प्रकार अपराधियो को सरक्षण प्रदान करते है और स्वय ही नियम-नीतियो के उल्लघन के माध्यम बनते है। इसी प्रकार धर्मचेता जनता को ऐसे कर्मकाण्डो का परामर्श देते है, जिनसे स्त्री-पुरुष मे भेद की दीवारे खडी हो जाती है। स्त्री को अबला, दीनहीन व घृणा का पात्र समझ लिया जाता है।

आन्दोलन की आवश्यकता

साध्वी ऋतम्भरा की पहल पर दिनाक २४ जून २००१ को दिल्ली मे इस ज्वलन्त समस्या पर विचार किया गया। इसका आयोजन भारतीय चिकित्सा सगठन, सयुक्त राष्ट्रीय बाल आकस्मिक निधिसमूह एव राष्ट्रीय महिला आयोग के सम्मिलित प्रयास से किया गया। कन्या भ्रूण हत्या एव नारी विषमता पर यदि सामूहिक रूप से युद्ध स्तर पर सघर्षपूर्ण अभियान चलाया जायेगा, तभी इस दुष्प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करना सभव होगा। इसके लिए सभी प्रभावी स्रोतो के द्वारा एक साथ आन्दोलन चलाने की तत्काल आवश्यकता को व्यापक रूप से समझा जाना चाहिए।

जन्मपूर्व लिग परीक्षण पर प्रतिबन्ध लगाये जाने का पता चला है। इसके लिए अर्थ व कारावास दण्ड भी निर्धारित हुआ है। इससे बढ कर नैतिक जागरण चाहिए। आइये, इसके लिए हम सभी गम्भीरता से सचेष्ट हो जाये।

'वरेण्यम्' ऐम० आई० जी० ४५पी०,
अवन्तिका (ए डी ए) कालोली रामघाट
मार्ग, अलीगढ, उ० प्र०

कृष्ण की गीता का मर्म

❑ श्रीमती सुनीति

महाभारत को पचम वेद कहा जाता है। कारण यह है कि वेदो मे जो कुछ कहा गया है, जो जीवन मूल्य और आदर्श प्रस्तुत किये गये है, उन्ही को महाभारत मे एक रोचक कथा और बीच बीच मे लम्बे उपदेशो के रूप मे गूंथ दिया गया है। इसीलिए यह न केवल इस देश मे, अपितु सारे ससार मे अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है।

सबसे अधिक लोकप्रिय अश—गीता

महाभारत का अन्य कोई अश उतना लोकप्रिय नही हुआ, जितना भीष्मपर्व के १२८ अध्यायो मे से १८ अध्यायो की गीता। इसने करोडो लोगो को घोर विपत्ति के क्षणो मे सान्त्वना दी है, उनका मार्गदर्शन किया है।

गीता का प्रसग यह है कि राजा पाडु की मृत्यु के बाद उनके बडे भाई धृतराष्ट्र राज्य सभालने लगे। धृतराष्ट्र बडे भाई होने के कारण राजसिहासन के पहले भी हकदार थे, परन्तु अन्धा होने के कारण राज्य उन्हे न मिल कर छोटे भाई पाडु को मिला। पाडु की मृत्यु के समय पाडु और धृतराष्ट्र, दोनो की ही सन्ताने छोटी आयु की थीं। इसलिए धृतराष्ट्र राज्य सभालने लगे।

धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव समझते थे कि राज्य पर उनका हक है, क्योकि धृतराष्ट्र बडे भाई है। पाडु के पुत्र पाडव यह समझते थे कि राज्य उन्हे मिलना चाहिए, क्योकि राजा तो पाडु ही थे। उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्रो का ही राजसिहासन पर अधिकार है।

कौरवो ने पाडवो को सताने, यहा तक कि मार डालने तक के लिए अनेक प्रयत्न किये। धृतराष्ट्र का सबसे बडा बेटा दुर्योधन राज्य पाने के लिए हठ ठाने हुए था। दोनो पक्षो मे शत्रुता बढती गई।

शान्ति बनाये रखने की इच्छा से धृतराष्ट्र ने पाडवो को राज्य का कुछ भाग दे दिया, जहा उन्होने इन्द्रप्रस्थ नगर बसाया, जिसे आज दिल्ली कहा जाता है।

राजसूय यज्ञ से जलन

नये राज्य का उद्घाटन समारोह (राजसूय यज्ञ) किया गया। वहा पाडवो का वैभव देख कर दुर्योधन को बहुत जलन हुई। उसने युधिष्ठिर को जूआ खेलने को निमत्रित किया। जूए मे युधिष्ठिर न केवल अपना सारा राज्य, अपने भाइयो और पत्नी द्रौपदी को भी हार गया। दुर्योधन ने 'दासी' कह कर द्रौपदी का अपमान किया और भरी सभा मे उसे नंगा करना चाहा। तब भीम ने प्रतिज्ञा की कि वह दुश्शासन की छाती का खून पियेगा, और दुर्योधन की जाघ तोड कर दम लेगा। पाडवो को बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास भुगतना पडा।

वनवास के कष्टो ने शत्रुता को और दहका दिया। तेरह वर्ष पूरे होने पर पाडवो ने अपना राज्य वापस मागा, तो दुर्योधन ने युद्ध की तैयारी कर दी। श्रीकृष्ण ने मध्यस्थ बन कर समझौता कराने का बहुत यत्न किया, परन्तु सफलता न मिली।

कुरुक्षेत्र के मैदान मे अठारह अक्षौहिणी सेनाए (ग्यारह कौरवो की और सात पाडवो की) एकत्रित हुई। युद्ध के नियम तय हुए। तब कौरवो के प्रधान सेनापति भीष्म ने युद्ध का शख बजाया। तीर चलने शुरू हो गये।

अर्जुन सर्वश्रेष्ठ योद्धा

अर्जुन ने, जो उस युद्ध का सबसे कुशल धनुर्धर था (उसके पास एक से एक बढ कर विनाशकारी दिव्यास्त्र थे), कृष्ण से कहा कि रथ को दोनो सेनाओ के बीच मे ले चलो। जरा मै देखू तो हमे किनसे लडना है?

कृष्ण रथ को रणभूमि मे ले गये। वहा का दृश्य देख कर अर्जुन को चक्कर आ गया। उसके हाथ मे गाडीव था, और तूणीर मे पाशुपत अस्त्र जैसे प्रलयकारी अस्त्र भरे थे, जो कुछ ही क्षणो मे पूरी रणभूमि को महाश्मशान मे बदल दे सकते थे। और सामने खडे थे दादा भीष्म, जिन्होने उसे गोदी मे खिलाया था, गुरु द्रोण, जो अपने पुत्र अश्वत्थामा से भी अधिक अर्जुन को प्यार करते थे, अपने भाई खडे थे, भतीजे खडे थे, मामा, चाचा, साले, सभी वहा थे।

अर्जुन बौखला गया

'यह क्या हो रहा है कृष्ण? हम यह क्या करने लगे है? इस युद्ध को तुरन्त रोको। नहीं रोका, तो सब नष्ट हो जायेगा। ये सब योद्धा, ये सजीले जवान, सब मारे जायेगे। इनमे से एक भी नही बचेगा। मुझे अपने अस्त्रो का प्रभाव मालूम है। सब ओर लाशे ही लाशे होगी। लाशो की राख ही होगी। ना, मुझसे यह सब नहीं होगा। इतने बडे पाप का भागी मै नहीं बनूगा। कदापि नहीं!'

श्रीकृष्ण हक्का बक्का! ये सब बातें पहले सोचने की थी। शान्ति बनाये रखने के लिए जितना हो सकता था, उतना प्रयत्न करके देख लिया। जब किसी तरह बात नहीं बनी, तभी तो यह युद्ध करना पड रहा है। अब जब युद्ध का शख बज चुका है, तब बनियों की तरह नफा नुक्सान का हिसाब लगाने का समय नहीं है। अब तो 'तू रहेगा या मै' का फैसला करने का समय है।

कृष्ण का बुद्धिकौशल

कृष्ण ने उस घोर सक्रान्ति के क्षण मे अपना सारा बुद्धि कौशल और वाक् कौशल अर्जुन को समझाने मे लगा दिया। वही 'भगवद्गीता' है। उन्होने अर्जुन को फटकारा, धिक्कारा, कहा कैसी अनार्यों, कायरो की सी बात करता है तू? युद्ध का शख बजने के बाद मनन चिन्तन नही किया जाता। अब तो "मारो या मरो" का क्षण है। मारोगे नहीं, तो मारे जाओगे।'

अर्जुन ने कहा 'मै भीख माग कर जी लूगा, पर इतना बडा सहार, सर्वनाश कदापि नही करूगा।'

'तब तेरी कीर्ति अमर हो जायेगी कि अर्जुन रणभूमि मे धनुषबाण त्याग कर भाग गया था। और, तू क्या समझता है कि तू नही मारेगा, तो तेरे ये सब सगे सम्बन्धी बचे रह जायेगे?' इन सबके माथे पर इनके मरने की तारीखे लिखी है। उनके बाद कोई नही बचने वाला। मारना जिलाना तेरे हाथ मे नही है। जिसके हाथ मे है, उस पर छोड। ईश्वर का नाम ले और न्याय के लिए युद्ध कर। अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध युद्ध कर। वारणावत के लाक्षागृह को याद कर, पांचाली के चीर हरण को याद कर। हृदय की इस दुर्बलता को छोड और धनुष सभाल।'

रण का शख बजने के बाद सन्धि नहीं

गीता का उपदेश लम्बा और अटपटा है, परन्तु उसका सार यही है कि जब युद्ध का शख बज उठे, तब एकमात्र ध्येय जी जान से लडना और विजय प्राप्त करना है। कोई आदर्शवाद, कोई पाप पुण्य, धर्म अधर्म का विचार बीच मे नही आना चाहिए। युद्ध मे पराजय सबसे बडा पाप है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तिम दिनो मे अमेरिका ने भी तो जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर दो अमानवीय परमाणु बम गिराये थे। वह विजयी हुआ, तो आज सारी दुनिया को मानव अधिकारो की शिक्षा देने की स्थिति मे है।

पराजित नवाज शरीफ निर्वासन मे भटक रहा है, विजयी मुशर्रफ सैनिक तानाशाह बन कर भारत पर धौस जमा रहा है। विजय ही परम धर्म है।

२७, राजपुर रोड, दिल्ली–५४

हरियाणा राष्ट्रभाषा समिति की कुलपति से भेंट

रोहतक २७ जुलाई हरियाणा राष्ट्रभाषा समिति, रोहतक के एक शिष्टमडल ने स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति मेजर जनरल श्री भीमसिह सुहाग से उनके निवास पर भेट की। शिष्टमडल ने कुलपति के सामने विश्वविद्यालय के कामकाज मे हरियाणा की राजभाषा हिन्दी की उपेक्षा की चर्चा की। कुलपति को बताया गया कि मुख्य सचिव के हिन्दी मे काम करने के स्पष्ट आदेशो के बावजूद अधिकारी और कर्मचारी हिन्दी मे काम नहीं करते। विश्वविद्यालय के सब विभागो मे अग्रेजी छाई हुई है। हिन्दी मे काम करने के लिए देवनागरी टाइप मशीने तथा कम्प्यूटर भी न के बराबर है। हरियाणा राजभाषा अधिनियम १९६९ के लागू होने के ३२ वर्ष बाद तक भी हिन्दी के टाइपिस्ट और आशुलिपिक बहुत ही थोडे है। शिष्टमडल ने इस खेदजनक स्थिति मे सुधार के लिए ठोस उपायो की एक सूची भी कुलपति महोदय को दी।

विश्वविद्यालय के अनेक पाठ्यक्रमो मे प्रवेश के लिए तथा शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी की अनुमति न दिये जाने की समस्या की तरफ भी ध्यान आकृष्ट किया गया। अनेक पाठ्यक्रमो मे हिन्दी की अनुमति न होने के कारण हजारों मेधावी छात्रों को इन पाठ्यक्रमों मे प्रवेश नहीं मिल पाता।

कुलपति महोदय ने स्वीकार किया कि ये समस्याए वास्तविक है और आश्वासन दिया कि प्रशासनिक कामकाज में राजभाषा के प्रयोग मे सुधार के लिए वे सुझाए गए उपायो के अनुसार शीघ्र ही प्रभावशाली कदम उठाएगे तथा विश्वविद्यालय के प्रशासन मे हिन्दी के प्रयोग की गति को बढाएगे। उन्होने मौके पर ही अपने सचिव श्री उमेदसिह दलाल को समुचित आदेश भी दिए। पाठ्यक्रमो मे हिन्दी की अनुमति पर विचार के लिए शीघ्र ही एक विशेषज्ञ समिति का गठन भी होगा। इसके अतिरिक्त आपने शिष्टमडल के अनुरोध पर आगामी हिन्दी दिवस (१४ सितम्बर) पर विश्वविद्यालय मे एक भव्य समारोह रखना भी स्वीकार कर लिया।

शिष्टमडल में स्वामी इन्द्रवेश जी के अतिरिक्त श्री महावीर शास्त्री, श्री श्यामलाल, प्रो० डा० ओमप्रभात अग्रवाल तथा श्री सत्यवीर शास्त्री सम्मिलित थे।

डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति

डा० प्रह्लाद कुमार की छप्पनवीं जयन्ती पर एक वैदिक व्याख्यान का आयोजन मगलवार ११ सितम्बर २००१ को ३ बजे कक्ष संख्या २२, कला सकाय (आर्ट्स फैकल्टी) मौरिस नगर, दिल्ली-७ मे किया जायेगा। इसकी अध्यक्ष डा० उर्मिला रुस्तगी, प्राचार्या मिराडा कालेज, दिल्ली और मुख्य अतिथि प्रो० रमेश कुमार पाडेय होंगे। मुख्य वक्ता डा० सुभाष वेदालकार का 'वेदों मे विविध वाहन' विषय पर भाषण होगा। आप सब आमन्त्रित हैं।

दहेज की समाप्ति किसकी जिम्मेदारी

❑ आचार्य भगवानदेव वेदालकार

कुछ परम्पराए, प्रथाए या रीति-रिवाज मानव सभ्यता, सस्कृति के अग है। इसीलिए भारतीय सस्कृति की परम्पराए अनेक युगो से, विभिन्न सामाजिक रूढियो से, अन्धविश्वासो से पोषित होती रही है। वैदिक काल से चली आ रही कुछ परम्पराओ ने वर्तमान परिस्थितियो के कुप्रभाव से कुत्सित रूप धारण कर लिया है।

दहेज प्रथा भी एक ऐसी ही परम्परा है, जिसने काल व परिस्थितियो के समावेश से बीभत्स और डरावना रूप धारण कर लिया है।

प्राचीन काल में दहेज का स्वरूप क्या था?

वैदिक युग मे, भारतीय समाज मे भी दहेजप्रथा का प्रचलन देखने को मिलता है, लेकिन उसके मूल मे पवित्र भावना थी। जैसे वाल्मीकि रामायण मे हमे यह जानकारी मिलती है कि राम और सीता विवाह के अवसर पर जनक द्वारा असख्य बहुमूल्य उपहार सीता को दिये गये थे। इसका उद्देश्य कन्या के सुखी, समृद्ध जीवन की कामना तथा उसका प्रेम था।

दहेज का वास्तविक और व्यावहारिक अर्थ उपहार विशेष ही किया जा सकता है। प्राचीन काल मे 'विवाह' के बाद घर से सदा के लिए विदा होकर एक पराये और नये घर मे जाने वाली कन्या को शुभ कामनाओ के रूप मे कुछ उपहार भी दिये जाने लगे। कही कही निर्धन वरो की सुविधा और कन्या के सुख-सौभाग्य के लिए कुछ घरेलू सामान भी दिया जाने लगा। पर यह सब करना कोई शास्त्रीय नियम नहीं था। कन्या पक्ष अपनी शक्ति के अनुसार जो कुछ भी देता, वर पक्ष उसे सौभाग्य मानकर स्वीकार कर लेता।

दहेज अथवा कन्या को दिये जाने वाले उपहारों में विकार

धीरे धीरे स्वार्थ और लोभ लालच बढते गये। भावना और आध्यात्मिक पक्षो का लोप होता गया। परिणामस्वरूप देश के कुछ भागो, कुछ वर्गो मे विवाह से पहले ही दहेज की रकम और धारणा निश्चित होने लगी। यह "एक अच्छी प्रथा और पवित्र भावना पर आधारित परम्परा" सामाजिक जीवन के लिए एक अभिशाप बन कर रह गयी। प्राचीन काल का उपहार स्वरूप दिया जाने वाला दहेज, वर्तमान काल तक आते आते वर पक्ष का अधिकार बन गया। अब इस प्रथा मे अनेक बुराइयो का समावेश हो गया और दहेज मे सौदेबाजी होने लगी।

स्वतत्रता के बाद दहेज की बिगडी हुई स्थिति

भारत के स्वतत्र होने से पूर्व तक तो लोगों की आखो मे फिर भी कुछ लिहाज शर्म, कुछ सामाजिकता की भावना और कुछ मानवीयता थी, लेकिन वह अपनत्व तथा सामाजिक पवित्र भावना अब एकदम समाप्त हो गई हैं। आज तो वर पक्ष वालों के मुह इस सीमा तक खुल चुके है कि वे डाकू और लुटेरो जैसा व्यवहार करके कन्यापक्ष को पूरी तरह लूट लेना चाहते है।

दहेज न देने के दुष्परिणाम

दहेज न देने के कारण आज नारी जाति की स्थिति शोचनीय हो गयी है। महर्षि मनु के देश मे नारी ममता की मूर्ति, सम्मान की पात्र, देश निर्माण की आधारशिला, उमा, रमा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि पवित्र नामो से आदरणीय समझी जाती रही। तभी तो कहा है

नारी गुण की खान है, समझे चतुर सुजान।
नारी से नर ऊपजत्, ध्रुव, प्रह्लाद समान॥

कभी हमारे देश मे नारी जाति का यह सम्मान रहा कि

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफला क्रिया॥ *मनु० ३-५६*

अर्थात् "जहा नारी जाति का सम्मान होता है वहा देवता रमण करते है।" लेकिन आज दहेज प्रथा के कुत्सित चलन से नारी वर्ग का सम्मान गिरा है। वह भी नवयुवती वर्ग का। इसके दुष्परिणाम हमारे सामने है

इस प्रथा से अनेक नारियो को नाना प्रकार की यातनाए सहनी पडती है। इस कुप्रथा ने इतना विकराल रूप धारण किया कि कन्याए अपने जन्म को ही अभिशाप समझने लगी। वर्तमान मे ऐसी असख्य घटनाए घटने लगी, जहा स्वार्थी, धनलोलुप, भावनाहीन व्यक्ति अनेक प्रकार मे उत्पीडन देकर कन्याओ को धन लाने पर विवश करने लगे। नव वधुओ को शारीरिक और मानसिक यातनाए दी जाती है। दहेज जुटाने के लिए पिता अपना घर, जमीन, जायदाद तक बेच देते है। कन्याए आत्महत्या तक कर लेती है, या परित्यक्ता जीवन व्यतीत करती है।

लोग धन वैभव प्रदर्शन हेतु बढ चढ कर दहेज देते है। इससे साधारण व्यक्ति इसका कालग्रास बन जाता है। इस दौड मे कन्या के रूप, गुण, शील और कार्यकुशलता का तिरस्कार होता है।

इस दहेज की कुप्रथा से चिन्तित कई माता पिता तो कन्याओ का विवाह तक नहीं कर पाते। कई कन्याए चिन्तित मा बाप को चिन्ता से मुक्ति दिलाने के लिए आत्महत्या तक कर लेती है।

कई कन्याए पथभ्रष्ट हो कर घरो से भाग भी जाती है। बाद मे उन्हे नारी निकेतन, अनाथालय अथवा वेश्यालयो तक मे शरण लेने पर मजबूर होना पड सकता है।

ऐसे दिल दहला देने वाले समाचार प्रतिदिनि समाचार पत्रो मे पढ़े जा सकते है। बेचारी वधुओ के सौन्दर्य, शील, गुण, स्वभाव तथा अन्य सभी प्रकार की सहज मानवीय उच्चताओ को भुलाकर उन्हे दहेज कम लाने पर जला दिया जाता है। गला घोट कर, बिजली के करट छुआकर, मार-पीटकर, भूखे रखकर, छत के नीचे या नदी मे धकेल कर उनके प्राण ले लिये जाते हैं। ओह! यह कैसा घोर और अनर्थकारी कर्म है। ऐसी स्थिति मे दहेज प्रथा को एक अभिशाप और गलित कोढ के सिवाय और कहा भी क्या जा सकता है?

दहेज प्रथा की समाप्ति किसकी जिम्मेदारी है?

अब प्रश्न यह उठता है कि इस कुप्रथा का अन्त कैसे हो? वास्तव मे ध्यान से देखा जाये, तो हर कोई इस कुप्रथा का शिकार है। दहेज प्रया ने दानव बनकर असख्य परिवारो को समाप्त कर डाला है। इस कुप्रथा को दूर करने मे समाज की, राष्ट्र की, युवको की, युवतियो की, राजनेताओ की, शासन की, उपदेशक वर्ग की, सन्यासियो की, समाजसेवी सस्थाओ की, न्यायपालिका की, सभी की बराबर की जिम्मेदारी है। यह किसी एक का काम नही है। काम कठिन अवश्य है, पर असम्भव नही है— उदाहरण के तौर पर दहेज प्रथा की समाप्ति के लिए निम्न उपाय किये जा सकते है

इस कुप्रथा की समाप्ति के लिए सरकार ने कुछ कानून बनाये है, लेकिन केवल इतने से ही काम नही चलेगा।

वर्तमान युवा-पीढी को भी इस कुप्रथा का तिरस्कार करना चाहिए। अपने आत्माभिमान की रक्षा करते हुए स्पष्ट तौर पर दहेज मागने का विरोध करना चाहिए। मै स्वय इस बात का आदर्श हू। मैने अपने विवाह मे दहेज न लेकर एक आदर्श प्रस्तुत किया। इसीलिए मै अपने युवा साथियो से, दहेज न मागने का आग्रह करूगा। इससे नारी जाति की अधिकाश समस्याए स्वय हल हो जायेगी। समाजसेवी सस्थाओ को दहेज प्रथा के निवारण मे आगे आना चाहिए। जैसे अग्रवाल समाज ने तथा आर्य समाज के आर्य भाई बहिनो ने सामूहिक एव व्यक्तिगत दहेजरहित विवाह करके, दूसरो के कराके आदर्श प्रस्तुत किये है। ऐसे ही दूसरी समाज सेवी सस्थाओ को भी इस पुण्य के कार्य मे आगे आकर आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

आज का युग आर्थिक उन्नति का युग है। महान समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा से, आर्य समाज के माध्यम से नारी वर्ग की शिक्षा पर बल दिया गया है। आज कन्याए डाक्टर, इजीनियर, आई ए ऐस, आई पी ऐस, प्रोफेसर और पायलट तक बन चुकी है। इससे उनका आत्माभिमान और सम्मान जागृत हुआ है। आत्मनिर्भर कन्याए स्वय अपने योग्य वर का चयन कर सकती है।

नवयुवतियो को चाहिये कि वे दहेज प्रथा की वेदी पर स्वय की बलि न दे। अपने सम्मान की रक्षा करे। युवक और युवतिया यह पक्का निश्चय कर ले कि वे मा-बाप की इच्छा मे वहा कदापि विवाह नही करेंगे, जहा 'दहेज' माग कर लिया या दिया जायेगा। मानवता का तकाजा यही है कि इस कुप्रथा का जल्दी से जल्दी उन्मूलन किया जाये।

जब तक समाज मे दहेज है।
नारी जीवन काटो की सेज है।
नारी का सम्मान जहा है,
सस्कृति का उत्थान वहा है॥

धर्मशिक्षा एव सस्कृत प्रवक्ता, वेदव्यास डी० ए० वी० विद्यालय, विकासपुरी, नई दिल्ली-५९

एक ईश्वरवाद

❑ ठाकुर दास विद्यार्थी

सब पारगत, सब लालायित मुझे बनाने अपना चेला,
एक अकेला मै अनपढ हू, किसे बनाऊ गुरु मै निज का।
सबके अपने अपने मत है सबके अपने अपने मन्दिर,
सबने इनमे लगा रखे है भगवानो के जमघट अगणित।
सभी अपेक्षा यह करते है मै उन सबकी करूगा पूजा,
मेरे जैसा कहा मिलेगा उनको कोई चेला दूजा।
एक ईश का विधिकृत वदन किया नही है कभी जतन से,
इतने सारे देवो को मै तुष्ट करूगा किस कलबल से।
अब तक यह मै समझ न पाया क्यो भगवान कैद होते है,
ईश्वर तो है सभी जगह पर बद कौन फिर यो होते है?
अरे सभी ये कल्पित विग्रह जिसको जैसे लगे बनाए,
और जहा जिसका मन चाहे वहा वहा पर रखे सजाए।
वदन क्या मै कर पाऊगा उन कल्पित देवो का मन से,
इच्छा गर यह साथ न दे तो क्या होगा केवल सोचे से।
सभी नकारूगा मै न्यौते चेला ही अब नही बनूगा,
केवल एक ईश का वदन मै निशि बासर किया करूगा।

७३०, श्री जी दर्शन देशपाडे ले-आउट, भारतीय स्टेट वैक के सामने, वर्धमान नगर, नागपुर-४४०००८

(पृष्ठ १ का शेष)

कश्मीर में जनमत संग्रह ......

ने भारत के साथ अपने राज्य के अधिमिलन का प्रस्ताव रखा और आक्रमणकारियो को वापस खदेडने केलिए भारतीय सेना की सहायता मागी।

महाराजा द्वारा हस्ताक्षर किया गया अधिमिलन पत्र ले कर मै स्वयं विमान से नई दिल्ली पहुचा। मेरे पास महाराजा का दिया हुआ अधिकार पत्र भी था, जिसमे अधिमिलन को पूर्ण करने के लिए आवश्यक सभी कागज़ पत्रो पर महाराजा की ओर से हस्ताक्षर करने का अधिकार मुझे दिया गया था। सौभाग्य से मेरा यह उद्देश्य सफल रहा। भारत जम्मू-कश्मीर का अधिमिलन स्वीकार करने और कबाइली आक्रमणकारियो को, जिन्हे पाकिस्तानी सेना के अफसरो और कश्मीर राज्य के विद्रोही सैनिको की सहायता प्राप्त थी, राज्य से बाहर खदेडने के लिए सैनिक सहायता देने को सहमत हो गया।

भारतीय सेना विमानो से पहुची

२६ या २७ अक्टूबर के प्रात काल भारतीय सेना की टुकडिया विमानो से श्रीनगर पहुचीं। उन्होने हवाई अड्डे पर अधिकार कर लिया और आक्रमणकारियो का सामना करने के लिए बारामूला की ओर बढी। वे श्रीनगर की ओर उनके कूच को रोकने मे सफल हुई। श्री जिन्ना ने अपने अग्रेज प्रधान सेनापति की सलाह पर पाकिस्तानी सेना की दो ब्रिगेडो के जम्मू और श्रीनगर पर धावे के आदेश को इस आधार पर रद्द कर दिया, क्योकि दोनो उपनिवेश ब्रिटिश ताज के अधीन है, अत उनमे से कोई भी उपनिवेश दूसरे के विरुद्ध युद्ध नही छेड सकता। इस समय तक कश्मीर अधिमिलन द्वारा भारतीय उपनिवेश का एक अग बन चुका था और उस दिन तक अधिनियम के अन्तिम कागज पत्रो पर विधिवत् हस्ताक्षर हो चुके थे। इस प्रकार महाराजा को पाकिस्तान के पक्ष मे अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर के लिए विवश करने या विजय करके उसे हथिया लेने का एकमात्र अवसर पाकिस्तान के हाथ से निकल गया।

जनमत सग्रह का सुझाव जिन्ना का नही

इस राज्य के भारत या पाकिस्तान, दोनो मे से किसी एक उपनिवेश मे अधिमिलन का प्रश्न जनमत सग्रह द्वारा हल किया जाये, यह सुझाव पाकिस्तान के महान निर्माता और उसके प्रथम गवर्नर जनरल श्री जिन्ना का नही था और बिल्कुल अन्तिम समय तक उनका पक्के तौर पर यही मत था कि महाराजा द्वारा किया गया अधिमिलन अन्तिम और पूर्ण था और जनता की इच्छा का विचार करना अधिमिलन के प्रश्न से बाहर का और आनुषगिक कदम है और यह असवैधानिक होगा।

जनमत सग्रह का विचार भारतीय नेताओ के साविधानिक सलाहकारो की ओर से प्रस्तुत किया गया था।

वे लोकतत्रीय सिद्धान्तो मे गहरे डूबे थे और 'जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए शासन' के नारे से प्रतिबद्ध थे, अत उनका विचार था कि लोगो की इच्छा को जाने बिना शासक को किसी भी उपनिवेश मे अधिमिलन का निर्णय नहीं करना चाहिए और उसे उनकी इच्छा के विरुद्ध नही चलना चाहिए।

माउंटबेटन ने शर्त जोड़ी

लार्ड माउटबेटन ने इस गलत सलाह के अनुसार कार्य करते हुए, जम्मू-कश्मीर राज्य के भारतीय उपनिवेश मे अधिमिलन को स्वीकार करते समय एक फालतू और असवैधानिक शर्त इस आशय की जोड दी कि जब राज्य मे स्थिति सामान्य हो जायेगी, तब अधिमिलन के बारे मे जनता की इच्छा का ध्यान रखा जायेगा। यह सलाह स्पष्टतया भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के सुस्पष्ट और प्रबल प्रावधानो के प्रतिकूल थी और यह अधिनियम ही वह एकमात्र साविधानिक प्राधिकार था, जिसके द्वारा भारतीय रजवाडो के शासको को दो उपनिवेशो मे से किसी एक मे मिलने की शक्ति प्रदान की गई थी। लार्ड माउटबेटन द्वारा जोडी गई यह शर्त ससदीय विधान द्वारा भारतीय उपनिवेश के महाराज्यपाल को प्रदत्त शक्तियों के स्पष्ट रूप से बाहर थी। उस विधान मे अधिमिलन को सशर्त स्वीकार करने की बात सोची ही नहीं गई थी।

स्वाधीनता अधिमिलन मे जिस अधिमिलन का प्रावधान किया गया है, वह तत्काल होना चाहिए और उसे अनिश्चित समय तक लटकाये नहीं रखा जा सकता। अधिमिलन का प्रस्ताव बिना शर्त था और उसकी स्वीकृति भी बिना शर्त और प्रस्ताव की शर्तों के अनुरूप ही होनी चाहिए थी। इस प्रकार उस अवैध शर्त की उपेक्षा करनी ही पडेगी।

अधिमिलन को स्वीकार करने के बाद भारत ने अपनी नियमित सेनाओं को पाकिस्तान राज्य द्वारा किये गये अतिक्रमण को हटाने के लिए यह मानते हुए भेज दिया कि जम्मू-कश्मीर राज्य भारतीय उपनिवेश का अभिन्न अंग है। इससे अधिमिलन की स्वीकृति अन्तिम और पूर्ण हो गई। सशर्त अधिमिलन से वह राज्य भारतीय उपनिवेश का अभिन्न अंग नहीं बन सकता था।

अधिमिलन का समाचार सुनने के बाद श्री जिन्ना ने पाकिस्तानी सेना को कश्मीर में कूच करने के लिए दिया गया अपना आदेश वापस ले लिया, क्योकि वह भारतीय उपनिवेश का अंग बन चुका था।

हस्ताक्षर कौन करेगा?

साविधानिक प्रावधानों के प्रतिकूल और विरुद्ध तनिक उन समस्याओं की कल्पना कीजिये, जो उस दशा मे उठ खड़ी होतीं, यदि राज्य का अधिमिलन किसी जनमत संग्रह की शर्त पर स्वीकार किया जाता और उस राज्य के शासक के हस्ताक्षरों से उसे अन्तिम और पूर्ण न माना जाता।

यदि जनमत संग्रह के परिणाम स्वरूप जनता की इच्छा शासक के निश्चय के विरुद्ध हो, तो अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर कौन करेगा, और उस स्थिति में अधिमिलन को किस प्रकार भारतीय स्वाधीनता अधिमिलन की शर्तों के अन्दर लाया जा सकेगा?

(आगामी अक में समाप्य)

(पृष्ठ ५ का शेष)

सत्यार्थ प्रकाश से .....

गया, वही भूत है, जो जीवित है, वही वर्तमान है। अत. वर्तमान को भूत से भयभीत कभी नहीं होना चाहिए।

आत्माए भटकती नहीं रहतीं

भटकती आत्मा क्या है? यह केवल भटकते मन की उपज है। विद्या के अभाव मे अविद्या मन पर हावी हो जाती है। प्रकाश न रहने पर अधकार अपने आप ही छा जाता है। जब सत्य और असत्य के बीच भेद करने की बौद्धिक शक्ति क्षीण हो जाती है तो 'अकाल मृत्यु' और फलस्वरूप 'भटकती आत्मा' की कपोल कल्पित बात से निर्बल मन भयभीत हो जाता है। मृत्यु होने पर मृतक का शरीर भस्म कर दिया जाता है। आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेती हैं; अत 'भटकती आत्मा' का कोई अस्तित्व नही हो सकता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्द है

'और जब शरीर का दाह हो चुका, तब उसका नाम भूत होता है, अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था। जितने उत्पन्न हो, वर्तमान मे आ के न रहें, वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। .. जिसको शका, कुसंग, कुसस्कार होता है उसको भय और शंका रूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी उनके भ्रमजाल दुखदायक होते हैं।' (सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीय समुल्लास.)

इसी संदर्भ में ऋषिवर सत्यार्थ प्रकाश मे लिखते हैं :

'देखो! जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश हो कर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख-दुख के फल भोगने के अर्थ जन्मांतर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है?'

अन्य मतों की समीक्षा

स्पष्ट हो गया सत्यार्थ प्रकाश से कि हमें किसी भी पोंगापंथी दूषित भटकती आत्मा के भ्रमजाल में नहीं फंसना चाहिए। ग्यारहवें समुल्लास में विभिन्न ढोंगी मत-मतान्तरों की पोल खोल दी है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। जैन मत के मानने वाले न केवल घोर नास्तिक हैं, अपितु २४ तीर्थंकरों द्वारा फैलाये गये भ्रमजाल में उलझे हुए हैं, यह मुझे १२वें समुल्लास से स्पष्ट हो गया। वस्तुतः चार्वाक के नास्तिक मत की समीक्षा, ऋषिवर ने १२वें समुल्लास के आरम्भ में ही की और फिर जैन व बौद्ध मत पर वैदिक सूर्य का प्रकाश डाल कर उन मतावलबियो को सत्य सनातन वैदिक धर्म मार्ग पर चलने का निमत्रण दिया। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के सिद्धान्त ने ही सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सस्करण मे दो समुल्लास और जुडवाए १३वे में ईसाई मत का विषय और १४वें में मुसलमानो के मत का विषय है। ईसाई मत और यवन मत, यद्यपि भारतीय मत नहीं हैं किन्तु उनकी समीक्षा से हम भारतीयो की आखे खुल गई। कम से कम मुझे तो विदित हो गया कि भारत मे आ कर ये विदेशी हमारे वैदिक धर्म पर झूठे आक्षेप लगाते रहे जबकि स्वय उनके किरानी और कुरानी मत अविद्या और अधविश्वास की ही उपज है। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से दूध का दूध और पानी का पानी कर देना सभव हो सका। सत्यार्थ प्रकाश का पाठक निडर हो कर अपने वैदिक धर्म पर मिथ्या आक्षेप लगाने वाले को मुहतोड जवाब देने में सक्षम, समर्थ और तत्पर है। जब एक क्रिस्तान पादरी ने कहा कि गौ माता के पति, बैल पिता को मैला खाते देखा गया तो प० रामचन्द्र देहलवी का उत्तर था 'वह बैल ईसाई हो गया होगा'। अस्तु।

सत्यार्थ प्रकाश ने आस्तिक बनाया

सत्यार्थ प्रकाश की मुझे सबसे बडी देन है : आस्तिकता। मैं दृढ आस्तिक हू आज। महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार, उनकी सच्ची आस्तिकता सत्यार्थ प्रकाश मे निहित हैं। अनेक महानुभाव सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ कर नास्तिक से आस्तिक बने। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य महाराणा सज्जनसिंह, मेवाड नरेश, रावराजा सर नाहरसिह वर्मा, शाहपुराधीश उनमें मुख्य थे। पडित गुरुदत्त ने सत्यार्थ प्रकाश पढा किन्तु उनमे नास्तिकता से आस्तिकता आई थी ऋषिवर द्वारा प्राण त्यागने का दृश्य देख कर।

सत्यार्थ प्रकाश ने मेरे समान अनेक मनुष्यों का जीवन सुधार दिया। भविष्य में असीम श्रद्धा से वेदपाठ करने वाले, सत्यार्थ पढ़ने वाले ही होंगे—यह हम आर्यों का विश्वास है—अटूट विश्वास!

[illegible] १०९, सैक्टर-२१,
नोएडा-२०१३०१

समाचार जगत्

नई आर्य समाज का निर्माण

आर्य समाज वैशाली नगर, जयपुर अभी तक अपना साप्ताहिक यज्ञ, हवन, सत्सग आदि डी० ए० वी० स्कूल मे सम्पन्न करता आ रहा है। अब सदस्यो ने निर्णय किया है कि एक आर्य समाज मन्दिर स्थापित किया जाये। इस कार्य के लिए २१७ वर्गगज का प्लाट (२ कमरे बने हुए) विनोबा भावे नगर, आम्रपाली मार्ग वैशाली नगर मे रु० ३,००,००० (तीन लाख) में लेने का निर्णय किया है। समाज के सदस्यों के सतत सहयोग से हम २ लाख रु० एकत्रित कर पाये है। सभी आर्य बन्धुओ से नम्र निवेदन है कि आर्य समाज मन्दिर के लिये भूमि तथा भवन निर्माण हेतु अधिक से अधिक सहायता करे।

सम्पर्क : कृष्णलाल नारग
अध्यक्ष, आर्य समाज वैशाली नगर, जयपुर

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी के साप्ताहिक अधिवेशन मे आज दिनाक २९ ७ २००१ को श्री लक्ष्मी नारायण आर्य प्रधान की अध्यक्षता मे एक शोक सभा आयोजित की गई, जिसमे आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता स्वामी आत्मबोध सरस्वती, पूर्व नाम महात्मा आर्य भिक्षु की धर्मपत्नी माता लीलावती जी के निधन पर शोक व्यक्त किया गया। सभी सदस्यो ने दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित की और मौन श्रद्धाजलि तथा परम पिता से दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की।

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल बल्लभगढ़ में क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के तत्वावधान मे ४ नवम्बर २००१ को प्रात. ८ बजे से १ बजे तक क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन मनाया जाएगा, जिसको भारत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक, विद्वान्, सन्त, महात्मा, सन्यासीगण अपने सारगर्भित प्रवचनो द्वारा सम्बोधित करेगे। समारोह मे सभा प्रधान पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा अपने सहयोगियो सहित पधार रहे हैं। सम्मेलन के सयोजक श्री ऐस० ऐस० चौधरी, प्राचार्य, डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, बल्लभगढ़ रहेगे। समारोह में श्री ऐस० ऐल० गूम्बर, श्री के० ऐल० खुराना, श्री ऐस० सी० नन्दा, श्री पी० पी० नन्दा ने पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। एक भजनमडली द्वारा सभी नजदीक के गांवों में वेद प्रचार किया जाएगा।

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान (दिल्ली) की ओर से प्रतिवर्ष निर्धन, अनाथ एव मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है तथा विद्वान् व समाज सेवी विशिष्ट व्यक्तियो का अभिनन्दन किया जाता है। इस वर्ष भी प्रतिष्ठान की ओर से यह आयोजन १९ अगस्त २००१ (रविवार) प्रात १० बजे से १२.३० बजे तक ११९, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-४९ मे किया जा रहा है।

भजन : श्री ऋषिपाल जी आर्य, शाहपुर (करनाल)। **अभिनन्दन :** आचार्या सुमेधा जी व आचार्या कामजित् जी, कन्या गुरुकुल, (चोटीपुरा) मुरादाबाद (उ० प्र०)। **अध्यक्षता ·** आचार्य हरिदेव जी, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली। **मुख्य अतिथि :** डा० योगानन्द जी शास्त्री, मत्री दिल्ली सरकार। **उद्घाटन भाषण :** श्री साहिबसिह वर्मा, सासद।

आप इस समारोह मे सादर निमत्रित है।

स्वतंत्रता सेनानियो का सम्मान

५ अगस्त २००१ को आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली मे हैदराबाद सत्याग्रह के विजय दिवस के उपलक्ष्य मे स्वतत्रता सेनानियो के सम्मान का आयोजन किया गया। साप्ताहिक यज्ञ एव सत्सग के पश्चात् एक सभा हुई, जिसके अध्यक्ष श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती थे। मुख्य अतिथि दिल्ली राज्य के शिक्षा मत्री श्री योगानन्द शास्त्री थे। उन्होने ही स्वतत्रता सेनानियो को सम्मान स्वरूप शाल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किये। फूल माला भी पहनाई गई।

इससे पूर्व वक्ताओ ने हैदराबाद सत्याग्रह के इतिहास पर प्रकाश डाला और बताया कि आर्य समाज जिस भी आन्दोलन को शुरू करता है, उसे सफल बना कर ही दम लेता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्य समाज मिंटो रोड के ढहाये जाने की चर्चा करते हुए सरकार को चेतावनी दी कि मिटो रोड आर्य समाज जहा था, वहीं नया आर्य समाज बनाया जायेगा। यदि सरकार ने न्यायालय की आड में वचन भंग करने की कोशिश की, तो आर्य समाज आन्दोलन छेडने से भी नहीं हिचकेगा।

श्री योगानन्द शास्त्री ने अपने भाषण मे कहा कि यदि आर्य समाज मे शक्ति हो, तो आर्य समाज मन्दिर उसी स्थान पर पुन बन सकता है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल, प्रिंसिपल चन्द्रदेव, श्री परमानन्द आदि वक्ताओ ने भी सभा को सम्बोधित किया।

अखरने वाली बात यह रही कि जिन स्वतंत्रता सेनानियो का सम्मान किया जाना था, उनमे से किसी को इस योग्य नही समझा गया कि उससे दो शब्द कहने का अनुरोध किया जाये। जल्दी जल्दी नाम बोल कर सबको माला गले मे डाल कर शाल और प्रशस्ति पत्र थमा दिये गये। किसी का कोई परिचय नही दिया गया। न श्रोताओ मे से ही किसी ने किसी स्वतत्रता सेनानी का परिचय जानना चाहा।

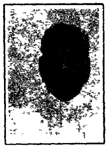

आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री— प्राचार्य डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा सस्थान का दिनाक ३.८ २००१ को हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया। १९३८ को पानीपत जिले के डिडवाडी नामक गाव मे आपका जन्म हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा गाव में प्राप्त करने के पश्चात् गुरुकुल घरोण्डा (करनाल) में आपने शिक्षा प्राप्त की और शास्त्री की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् आर्य समाज कालका मे पुरोहित के पद पर १९६१ से ६५ तक कार्य किया। तत्पश्चात् १९६९ से १९७५ तक आर्य समाज माडल टाउन, लुधियाना मे धर्माचार्य के पद पर, १९७५ से १९८० तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे आचार्य व १९८० से १९९४ तक आर्य समाज करौल बाग मे धर्माचार्य के पद पर कार्य किया।

आर्य समाज के आन्दोलनो मे आपने बढ चढकर भाग लिया। आपके निधन से आर्य समाज, डी० ए० वी० एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने एक कुशल वेद प्रचारक खो दिया है, जिसकी पूर्ति होनी कठिन है।

दिनाक ६ ८ २००१ को आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे साय ४ से ५ बजे तक शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमे सभी वक्ताओ ने आपके वेद प्रचार कार्य की सराहना करते हुए आपके निधन को आर्य समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताया और आपको श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्रद्धाजलि अर्पित करने वाले आर्य समाज के नेताओ मे मुख्य रूप से स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री वेदव्रत शर्मा, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान डा० शिवकुमार जी शास्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री प्रबोध महाजन जी, सहमत्री श्री हरवशलाल जी कपूर, उपप्रधान श्री शान्तिलाल जी सूरी, श्री रामनाथ सहगल, श्री महेश वेदालकार, डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा सस्था के आचार्य श्री धर्मवीर जी शास्त्री, श्री आर० आर० भल्ला, श्री सुरेश वात्स्यायन (लुधियाना), प्रो० रत्नसिह, आचार्य दिनेशचन्द्र शास्त्री, श्री यशपाल जी शास्त्री एव आर्य युवक समाज दिल्ली के मत्री श्री यशवीर आर्य, डा० लीखा जी, आर्य समाज कीर्तिनगर आदि थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली, चन्द्रकान्ता राजेश्वर ट्रस्ट, नई दिल्ली, आर्य समाज वसन्त विहार, आर्य समाज कीर्तिनगर तथा अन्य कई आर्य समाजो व शिक्षण सस्थाओ से शोक एव समवेदना प्रस्ताव प्राप्त हुए है।

राष्ट्रभाषा सम्मेलन, भिवानी

आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा, दयानन्द मठ रोहतक द्वारा राजभाषा सघर्ष समिति, दिल्ली के निर्देशन मे एक बृहद् राष्ट्रभाषा सम्मेलन का आयोजन १९ अगस्त, २००१ रविवार दोपहर २ ३० बजे भिवानी मे किया जा रहा है। इसमें मुख्य अतिथि लाला बनारसीदास गुप्त, भूतपूर्व मुख्यमत्री हरियाणा तथा वक्ता डा० परमानन्द पाचाल, डा० वेदप्रताप वैदिक, प्रो० जयदेव आर्य, स्वामी इन्द्रवेश जी तथा श्री श्यामलाल जी होगे। हरियाणा राज्य मे हिन्दी के व्यवहार को बढावा देने मे यह सम्मेलन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

वर की आवश्यकता

एक ऐडवोकेट की कन्या, आयु ४३ वर्ष, हिन्दी मे ऐम ए, ऐम फिल अध्यापिका नई दिल्ली पब्लिक स्कूल, जम्मू के लिए योग्य वर की, अविवाहित या नि सतान विधुर की आवश्यकता है। निम्न पते पर सम्पर्क करे

वेदव्रत खन्ना, आदर्श कालोनी,
ऊधमपुर-१८२१०१ (जे० एण्ड के०)

निर्वाचन

आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली

प्रधान—आचार्य अमरदेव शास्त्री
मत्री—आचार्य वीरेन्द्र विक्रम
कोपाध्यक्ष—आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा

आर्य समाज अनारकली में हंसराज माडल स्कूल का कार्यक्रम

नृत्य नाटिका प्रस्तुत करते हंसराज माडल स्कूल के बच्चे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी समिति ने प्रस्ताव रखा कि आर्य समाज अनारकली में होने वाले साप्ताहिक सत्सग मे सभी डी० ए० वी० शिक्षा सस्थानो को सम्मिलित करके विद्यार्थियो मे आर्य समाज के कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता पैदा की जाये। इसके फलस्वरूप रविवार दिनाक ५ अगस्त २००१ को हसराज माडल विद्यालय पजाबी बाग ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस अनूठे कार्यक्रम की प्रथम प्रस्तुति थी इस विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती कुसुम अहलूवालिया जी द्वारा रचित कम्पैक्ट डिस्क (सी डी)— सत्यार्थ प्रकाश का सदेश। इस सी डी की रचना उन्होने स्वामी दयानन्द जी के सदेश को जन साधारण तक सरल भाषा मे पहुंचाने के उद्देश्य से की है। इसमे सत्यार्थ प्रकाश के सभी "चौदह समुल्लासो" का सार है।

दूसरी प्रस्तुति विद्यालय के बच्चो ने स्वामी दयानन्द जी के बताये मार्ग पर चलने की शपथ लेते हुए सामूहिक गान के रूप मे प्रस्तुत की।

इन नन्हे मुन्ने बच्चो के भावनाओं से ओतप्रोत तेजोमय स्वरो ने पूरे वातावरण को स्वामी दयानन्द जी के प्रति श्रद्धा भाव से परिपूर्ण कर दिया। वहा उपस्थित जनसमूह स्वामी जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहा था, ये गाते हुए — "भारत का कर गया बेडा पार वो मस्ताना जोगी।" तथा मन ही मन प्रण ले रहा था उनके आदर्शों पर चलने की, ये गाते हुए—

हम दयानन्द के सैनिक हैं, दुनियां में धूम मचा देंगे।

हम हसराज हो जायेंगे और धर्म पर प्राण लुटा देंगे।

विद्यालय की अन्तिम प्रस्तुति थी— 'श्रद्धा सुमन'। यह लघु नृत्य नाटिका स्वामी दयानन्द के जीवन पर आधारित थी। इसका सचालन तथा संयोजन किया. हसराज विद्यालय के ही नृत्य शिक्षक श्री उदय शाह ने। इसके लेखक हैं इसी विद्यालय के शिक्षक श्री अजय ठाकुर। इस नृत्य नाटिका को देख कर सभी बच्चे श्रद्धा से नतमस्तक हो गये अपने शिक्षकों के प्रति।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द को वचन दिया कि गुरु दक्षिणा स्वरूप एक सुखद पारिवारिकजीवन बिताने की अपेक्षा वे सम्पूर्ण भारत को अज्ञान के अधकार से बाहर निकालेगे।

इस गुरु दक्षिणा के अनुपम चित्रण ने वहा उपस्थित सभी दर्शको को भाव विभोर कर दिया। लघु नाटिका में इस बात का भी अनूठा चित्रण किया गया कि स्वामी दयानन्द ने किस प्रकार रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे इत्यादि वीरो को सगठित कर स्वाधीनता सग्राम के लिये प्रेरित किया तथा देश को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस नृत्य नाटिका से आर्य समाज अनारकली के प्रधान श्री शांतिलाल सूरी जी अभिभूत हो गये तथा उन्होंने इसमें भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को पारितोषिक देने की घोषणा की।

आर्य समाज मिटो रोड स्थल पर सकल्प सभा

ढहाई गई आर्य समाज मिटो रोड के स्थल पर ५ अगस्त २००१ को सायकाल ४ बजे दिल्ली की आर्य समाजो की ओर से एक सकल्प सभा हुई, जिसमे श्री स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, स्वामी गोरक्षानन्द जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री वेदव्रत शर्मा, प्रिसिपल चन्द्रदेव, प्रो० शेरसिह, श्री वेदप्रताप वैदिक आदि अनेक नेता सम्मिलित हुए। वक्ताओं ने कहा कि आर्य समाज को ढहा कर सरकार ने दुष्कृत्य किया है। आर्य समाज पुन: इसी स्थान पर बनाया जाना चाहिए। यदि आवश्यकता पड़ी, तो आर्य समाज इसके लिए प्रबल आन्दोलन करेगा।

उत्साही कार्यकर्ताओ ने सकल्प पत्र भर कर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री को दिये, जिनमे इस धार्मिक कर्तव्य के लिए आन्दोलन करने का सकल्प प्रकट किया गया।

आर्य समाज बक्सर में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज बक्सर द्वारा १९ से २१ अगस्त २००१ तक श्री चन्द्रमन्दिर में वेद प्रचार का कार्यक्रम किया जा रहा है। इसमें श्रीमती पुष्पा शास्त्री, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जैसे विद्वान् एव सन्यासी भाग लेंगे। १९ अगस्त को एक विशाल शोभा यात्रा निकाली जायेगी। वेद सम्मेलन, राष्ट्र समृद्धि यज्ञ, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवा सम्मेलन आदि कार्यक्रम होंगे। सब सादर आमन्त्रित है।

मंगलम डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, मोड़क

मगलम् डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, (सी बी. एस. ई) मोडक, कोटा के छात्रोद्वारा आयोजित वर्ष २०००-२००१ कक्षा १० की परीक्षा में सुयोग्य प्राचार्य एवं शिक्षकों के अथक प्रयासों से नवीन कीर्तिमान स्थापित किये गये है।

विद्यालय के प्रखर बुद्धि छात्र कुणाल लूथरा, पुत्र श्री सुरेश लूथरा ने सर्वोत्तम प्रदर्शन करते हुए ९२.२ प्रतिशत अक प्राप्त करके राजस्थान के समस्त डी० ए० वी० स्कूलों एवं सी० बी० एस० ई० द्वारा मान्यताप्राप्त हाड़ोती अंचल के सभी स्कूलों मे प्रथम स्थान प्राप्त किया है। शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रणी स्थान प्राप्त करके कुणाल लूथरा ने आर्य समाज के सिद्धान्तो एवं डी० ए० वी० की शिक्षा पद्धति को समूचे राजस्थान मे प्रसारित करके गौरवान्वित किया है।

उत्तम परिणाम के लिए स्कूल के सुयोग्य प्राचार्य श्री ऐल० पी० शर्मा जी को क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए बधाइया भेजी गई हैं। राजस्थान सरकार में खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री माननीय श्री रामकिशन वर्मा जी ने समाचार पत्र के माध्यम से विद्यालय को बधाई सदेश भेजा है।

यजुर्वेदीय यज्ञ

आर्य समाज अशोक विहार, दिल्ली का वर्षा ऋतु वेद प्रचार कार्यक्रम वीरवार १६.८ २००१ से रविवार १९.८.२००१ तक होगा। सभी धर्मप्रेमी सज्जन इस कार्यक्रम को सफल बनाने की कृपा करे तथा धर्म लाभ उठायें।

कार्यक्रम : वीरवार १६ ८ २००१ से शनिवार १८ ८ २००१ तक सध्या, हवन एव यजुर्वेदीय यज्ञ प्रात ६ से ८ बजे तक, आचार्य श्री अखिलेश्वर और पंडित नन्दकिशोर शास्त्री द्वारा। **भजनोपदेश :** श्रीमती सुदेश आर्या समय . रात्रि ७ ४५ से ८.४५ तक। **गीता उपदेश :** रात्रि ८ ४५ से ९.४५ बजे तक आचार्य अखिलेश्वर जी द्वारा। रविवार १९ ८. २००१ को यज्ञ एवं पूर्णाहुति : प्रात ६ ३० से ८ ३० बजे तक। भजनोपदेश प्रात: ९ बजे से १० बजे तक श्रीमती सुदेश आर्या जी।

अध्यक्ष : पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा जी, वक्ता : आचार्य अखिलेश्वर जी। समय प्रात. १० बजे से १०.४५ बजे तक। विषय "गीता के परिवेश मे वैदिक कर्मवाद"। अध्यक्षीय भाषण : प्रात १०.४५ से १०.५० बजे तक।

वर की आवश्यकता

आर्य परिवार की ऐम ऐस (ऑफ्थेलमोलोजी) प्रशिक्षणरत साढे २४ वर्षीय गौरवर्ण, सुन्दर, सुशील कन्या, कद ५ फुट ३ इंच, गृहकार्यों में दक्ष, खेलों में राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत, के लिए योग्य वर (डाक्टर को वरीयता) की आवश्यकता है। कोई जाति बन्धन नहीं।

यह परिवार राजपूत टांक रोहेला वर्ग का है। विशुद्ध शाकाहारी, आर्य परिवार। पिता ओ ऐन.जी.सी में अधिकारी।

सम्पर्क : आर० पी० वर्मा, १०-ए/१, सुन्दर बाग टावर्स, मकरपुरा रोड, प्रतापनगर, बड़ौदा-३९०००४ दूरभाष : (नि०) ६४०९९४ (का०) ६०३८८२

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रबोध महाजन, सभा मत्री द्वारा राकेश भार्गव के प्रबन्ध में मयक प्रिन्टर्स 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष : 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन : 3363718, 3362110) सम्पादक--उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

स्वयं श्रेष्ठ वनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशों में ३० पौं० या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक २६
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, २६ अगस्त, २००१
भाद्रपद शु०-८-वि० स०-२०५८
सप्ताह २६ अगस्त से १ सितम्बर

आर्य समाज के सजग प्रहरी, कर्मयोगी, सोमनाथ जी मरवाह

❑ श्री विश्वनाथ, उपप्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

यह कैसा दैवयोग है कि सोमनाथ जी मरवाह के निधन से पहले उनके साथ अन्तिम लम्बी भेट वार्ता उनकेनिवास स्थान पर हुई! मै जब उनके घर पहुचा, तो सोचा था कि वे बिस्तर पर होगे, परन्तु क्या देखता हू कि वे अपने आफिस मे अपनी कुर्सी पर बैठे कुछ पढ रहे है। उनके चेहरे पर एक दिव्य तेज था, जो पिछले एक दो वर्षों मे मैने नही देखा। बहुत ही स्वस्थ दिखते थे और उसी शाम उन्होने खुले मन मे आर्य समाज, सार्वदेशिक सभा, गुरुकुल कागडी, लाला दीवानचन्द ट्रस्ट आदि अनेक विषयो पर अपने भीतरी मन की सभी बाते मुझसे की थीं।

आत्म-कथा

पिछले कुछ महीनो से वे अपनी आत्मकथा अग्रेजी मे लिख रहे थे। जब मैने उनसे विदा ली, तो उन्होने २०० से अधिक फूल्सकैप पृष्ठो की अपनी आत्मकथा मुझे पढने के लिए दी। आपको सम्भवत विश्वास न हो, परन्तु यह सत्य है कि मैने उनकी आत्मकथा को शुरू से आखिर तक पूरा एक दिन बैठ कर पढ डाला। वह आत्मकथा तो थी ही, परन्तु एक तरह से आजादी से पहले और आजादी के बाद का आर्य समाज का बहुत ही रोचक और रोमाचकारी इतिहास भी था।

शिक्षा दीक्षा

मरवाह जी का जन्म पश्चिम पजाब के झेलम जिले मे हुआ था। वही उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। आर्य समाजी परिवार और परिवेश मे ही बडे हुए। बचपन से लेकर आज तक उनको आर्य समाज, महर्षि दयानन्द, यज्ञोपवीत, सध्या, हवन-यज्ञ मे अपार श्रद्धा थी। डी० ए० वी० कालेज, लाहौर और महात्मा हसराज जी के सम्पर्क मे आने से उनका जीवन पूरी तरह से आर्य समाज के रग में रग गया। वकालत की परीक्षा मे यूनिवर्सिटी मे तीसरे स्थान पर आये, जबकि उन्हे सर्वप्रथम आने की आशा थी।

सफल वकील

वे एक अत्यन्त सफल वकील थे। रु० ५५०/- की फीस से शुरू करके रु० ५५,०००/- की फीस और तदनन्तर २ लाख रुपये प्रति केस की फीस तक उन्होने ली और उनके मुवक्किल सहर्ष यह फीस देते थे। आर्य समाजी बन्धुओ और आर्य समाजी सस्थाओ के केस वे बिना फीस लिये किया करते थे। अनेकऐतिहासिक मुकदमे उन्होने लडे और जीते, जिनमे विश्व हिन्दू परिषद्, राजमाता सिधिया, आर्य समाजी नेताओ की चुनाव सम्बन्धी अपीलें शामिल है। छोटी कचहरी से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक जहा वे पेश हुए, बडे आत्मसम्मान और दबदबे से। जज भी, यदि गवाही आर्य समाजी दे रहे हो, तो उनकी बात पर विश्वास करते थे। इसे अह भाव नही कहना चाहिए, यह उनकी आत्म सम्मान की भावना थी। मुझे कहते थे कि मैने कभी अपनी फीस किसी भी मुकद्दमे मे कम नही की। बिना फीस लिये कर सकता हू, लेकिन फीस कम नही कर सकता।

मुक्तहस्त से दान

उनके जीवन का एक पक्ष यह भी है कि वे मुक्त हस्त से दान देते थे। उनके यहा कोई भी सस्था या व्यक्ति आर्य समाज के किसी भी कार्य के लिए सहयोग मागने गया, तो उन्होने पूरा आर्थिक सहयोग दिया। अपनी आत्मकथा मे उन्होने लिखा है कि २५ लाख से ऊपर रुपये उन्होने इस प्रकार आर्य समाज के निमित्त विभिन्न सस्थाओ को दान दिया है।

श्री सोमनाथ जी स्पष्ट वक्ता थे, खरी बात कहते थे, इसलिए विवादो मे ही घिरे रहते थे। उनका सार्वदेशिक सभा, गुरुकुल कागडी, गुरुकुल गौतम नगर, आर्य समाज दीवान हाल, आर्य समाज सोहनगज आदि से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा।

अपनी इस आत्मकथा के अतिरिक्त सोमनाथ जी ने पिछले ही दिनो अग्रेजी मे महात्मा हसराज की विस्तृत जीवनी लिखी है, जो अभी हाल ही मे डी० ए० वी० मैनेजिग कमेटी द्वारा प्रकाशित की गई है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की भी एक छोटी जीवनी उन्होने अग्रेजी मे लिखी है।

डी० ए० वी० की देन

मरवाह जी बडे गर्व से यह कहा करते थे कि उनके व्यक्तित्व और चरित्र के निर्माण मे डी० ए० वी० कालेज मे बिताये गये वर्षो का बडा हाथ है। ऋषि ऋण की बात भी किया करते थे, जिसे चुकाना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है। उसी तरह उन्होने डी० ए० वी० का ऋण भी चुकाया, जब कुछ वर्ष पहले कुछ स्वार्थी व्यक्तियो ने, जिनमे डी० ए० वी० के कुछ एक अपने प्रिंसिपल भी थे, मिलकर डी० ए० वी० की सभी सस्थाओ पर गुण्डागर्दी से कब्जा करने का शर्मनाक प्रयत्न किया। उन्हे तो पूरी आशा थी कि वे अपने कुकृत्य मे सफल हो जाएगे, परन्तु वे शायद यह भूल गये कि ईश्वर सदा सत्य पक्ष का सहायक होता है। ऐसे आडे समय मे जब एक तरह से डी० ए० वी० के आकाश पर काले बादल मडरा रहे थे, सोमनाथ जी ने सार्वदेशिक सभा का कार्यकारी प्रधान होने के नाते जो ऐतिहासिक भूमिका अदा की, उसे डी० ए० वी० परिवार भुला नही सकता। उन्होने सभी षड्यत्रकारियो को न केवल बेनकाब किया, बल्कि उन्हे आर्य समाज से भी बहिष्कृत कर दिया। उनके इस सूझबूझपूर्ण और साहसिक कदम से बडी राहत मिली थी। बाद मे दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस विषय पर अपना अन्तिम निर्णय भी न्याय और सत्य के पक्ष मे दिया था।

अनथक समाजसेवक

सोमनाथ मरवाह जी एक अनथक समाज सेवक थे। मै उन्हे कर्मयोगी कहूगा। निष्ठावान् आर्य समाजी तो थे ही। आर्य समाज की लगन उनके हृदय मे धधकती रहती थी। एक सजग प्रहरी की तरह जब भी कभी आर्य समाज पर कोई आच आई, तो वे सबसे पहले उस युद्ध क्षेत्र मे कूद पडे। उन जैसे समर्पित आर्य समाजी व्यक्तियो की पीढी ही समाप्त हो गई है।

परिपक्व आयु

अन्तिम भेट मे उन्होने मुझे कहा था मै १०० वर्ष जीने की आशा करता हू। यह वेद का आदेश है जीवेम शरद शतम्।'

१०० वर्ष तो नहीं, ९२ वर्ष वे जिये और भरपूर जीवन जिये। वे अपने पीछे भरा-पूरा सम्पन्न परिवार छोड गये है और अपना यश और कीर्ति भी। आर्य जगत् की ओर से मै उन्हे अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करता हू।

कष्टहीन मृत्यु

मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भक
मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधी· पितर मोत मातर
मा न· प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिष ।

यजु० १६ १५

हे रुद्र (दुष्टो को पाप का दु खरूप फल दे कर रुलाने वाले परमेश्वर), आप हमारे छोटे, बडे जनो को, युवाओ को और गर्भस्थ शिशुओ को, हमारे पिता को और माता को मृत्यु का ग्रास मत बनाइये। हमारे प्रिय शरीरो को भी मृत्यु का कष्ट न होने दीजिये।

हमे ऐसे मार्ग पर चलाइये कि हमे मृत्यु का कष्ट अनुभव न हो।

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित लेखो में व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

उपनिषत्सुधा विश्व के स्वामी को जान लेने पर मृत्युपाश कट जाते हैं

❑ स्वामी श्रद्धानन्द

स एव काले भुवनस्य गोप्ता
विश्वाधिपः सर्वभूतेषु गूढः।
यस्मिन् युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च
तमेव ज्ञात्वा मृत्युपाशाश्छिनत्ति।

श्वेताश्वतर, ४ १५

अर्थ— (सः एव) वह ही (काले) उचित समय पर (भुवनस्य) इस ससार का, मब चराचर का (**गोप्ता**) रक्षा करने वाला है, (**विश्वाधिप.**) सबका स्वामी, राजा है (**सर्वभूतेषु गूढ**) वह सब बनी हुई वस्तुओ और प्राणियो मे छिपा हुआ है। (**यस्मिन्**) जिस ईश्वर की खोज में (**ब्रह्मर्षयो देवताश्च**) ब्रह्म की साधना मे लगे ऋषि और देवता (**युक्ता.**) जुटे हुए है, (त एव) उसको ही (**ज्ञात्वा**) जान लेने पर (**मृत्यु पाशान् छिनत्ति**) वह मृत्यु के फन्दो को काट डालता है। जो कोई ईश्वर को इस रूप मे जान लेता है, वह मृत्यु के बन्धन से छूट जाता है।

(भूत, भुवन, भविष्यत्, ये तीनो ही शब्द क्रमश सभी अस्तित्व मे आई हुई, अस्तित्व मे आ रही और भविष्य मे अस्तित्व मे आने वाली वस्तुओ के द्योतक है। पहले दो लगभग समानार्थक है और सभी चराचर वस्तुओ को सूचित करते है।—स०)

मनन — दु ख और क्लेश से पीडित पापात्मा यह मान्ने के लिए तैयार नही होता कि सर्वरक्षक शक्ति इस ससार मे उपस्थित है। जब उसका दु ख दूर नही होता, जब पाप का परिणाम उसे क्लेश पहुचा रहा है तो वह कैसे मान सकता है कि सर्वरक्षक की रक्षा के क्षेत्र मे वह भी अन्तर्भूत है? पुराणो को जानने वाले उसे महाभारत के युद्ध मे हाथी के घटे के नीचे पक्षियो के बच्चो की रक्षा का हाल सुनाते है। दुर्योधन की सभा मे द्रौपदी के वस्त्र के बढने का चमत्कार दर्शाते है। पापी फिर चिल्ला उठता है, "यदि परमात्मा सर्वरक्षक है तो मेरा क्लेश क्यो दूर नही होता?" वैदिक मतावलम्बी उसे प्राचीन और नवीन दोनो समयो के दृष्टान्तो से ढाढस बधवाना चाहते है परन्तु उसका वही उत्तर चला आता है, "यदि सर्वरक्षक है तो मेरे दुख क्यो दूर नहीं होते?" इतने मे ऋषि आ पहुचते है और दीन की दशा पर दया करके उसकी अविद्या पर हस कर इस प्रकार उसके भ्रम को दूर करते है, "तू क्यो निराश होता है और यथार्थता को न समझ कर क्यो नास्तिक बनता है? क्या वाममार्ग ने इस देश के अन्दर घोर अत्याचार नहीं मचा रखा है? क्या हजारो लाखो पशुओ की गर्दने धर्म के नाम पर नही काटी जाती थी? क्या धर्म की ओट मे मनन शक्ति रखने वाले मनुष्यो की भी तलवार के वार से बलि नही चढाई जाती थी? क्या उससे बरसो हाहाकार नही मचा रहा? फिर यदि कोई सर्वरक्षक न होता तो बुद्धदेव के कोमल हृदय को कौन प्रेरित करता और इसी बर्तमान समय मे मूर्तिपूजा तथा कब्रपरस्ती का किस प्रकार जोर था? ब्रह्मचर्य का नाश हो चुका था। कौन समझ सकता था कि सीधा मार्ग किधर है? क्या यह सब दु ख एक दिन मे दूर हो गये थे? क्या विक्रमी सवत् के आरम्भ मे ही किसी आचार्य का प्रादुर्भाव हुआ? कदाचित् नही। अपितु १९०० बरसो की दुर्दशा के उपरान्त कहीं ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ जिसने अधेरे को उजाले मे परिवर्तित कर दिया। इस प्रबन्ध के लिए कोई कारण है। मनुष्यो और इसी तरह मनुष्य— समाजो के कर्मो का फल जब तक पूर्ण रीति से न मिले तब तक उनकी अवस्था मे परिवर्तन करने से उनकी अवस्था नहीं सुधरती। इसी प्रकार मूर्ख, तेरी अवस्था है। सर्वरक्षक समय पर ही रक्षा करते हैं। बात स्पष्ट हो गई। परमात्मा सर्वरक्षक है परन्तु उसकी रक्षा का प्रबन्ध हमारे सकल्पो और हमारी इच्छाओ से परिमित नही है, अपितु उसके असीम ज्ञान के अन्दर जैसा प्रबन्ध उपस्थित है वैसा ही कार्य होता है। समय पर ही वह सबकी रक्षा करता है। जिसे हम रक्षा समझते है सम्भवत उसकी दृष्टि मे वह रक्षा नहीं है। उसके प्रवन्ध को वही जान सकता है। हम तुच्छ जीव उसके प्रबन्ध की वास्तविकता को कब समझ सकते है! वही सबका ईश्वर है। उससे बढ कर ऐश्वर्य इस ब्रह्माण्ड मे किसका है? जब सारे ऐश्वर्य उसी के दान के परिणाम है तो कौन धनाढ्य अपने धन से उसका मुकाबला कर सकता है? वह केवल धन का भडार ही नहीं, वह केवल जड जगत् के रचने वाला ही नहीं, वह केवल वायु को चलाने वाला और जल को बरसाने वाला ही नही, अपितु प्राणियो की प्राणक्रिया का आश्रय भी वही है। न केवल यही, अपितु एक एक प्राणी के अन्तःकरण की सब अवस्थाओं का ज्ञाता होने के कारण अगर उसी को परमेश्वर कहें तो यथार्थ है। फिर क्या सन्देह है बिना उसको जाने, बिना उसको प्राप्त किए मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकता। यहा तक तो मामला साफ है परन्तु इससे आगे चल कर ही कठिनाइयो का सामना होता है। यह सत्य है कि बिना उसको जाने हुए इस विक्षिप्त मन को शान्ति नहीं मिल सकती। इसमे सन्देह नहीं कि उसकी प्राप्ति से जन्म-मरण का दु.ख दूर हो सकता है। परन्तु वह है कहा? उसका पता किससे पूछें? गंगा और गोदावरी, काशी और प्रयाग, बदरीनारायण और जगन्नाथपुरी, कोई धाम और कोई तीर्थ तो छोडा नही परन्तु इष्ट की प्राप्ति अब तक कोसो दूर है। गिरजा और मस्जिद, मन्दिर और धर्मशाला, कौन से स्थान को नहीं खोज डाला? परन्तु परिणाम क्या हुआ? यह मन उसी प्रकार अशान्त है। आत्मा उसी तरह अशान्त है। परन्तु वह देखो! सुखासन जमाये, प्राण चढाये कौन शान्तमूर्ति स्थित है? और उसके पास ही दिव्य मस्तक, हसता हुआ मुख किस सज्जन पुरुष का दृष्टिगोचर होता है? अहा! एक नही, दो नही, यह तो अनगिनत मुखो का दृश्य दिखाई दे रहा है। और सुनो उस गम्भीर किन्तु मधुरवाणी को, जो एक स्वर से सहस्रो तथा लाखो उपस्थित महात्माओ की जिह्वा से निकल रही है—"ब्रह्म एक है। वही सर्वेश्वर है। उसी की भक्ति से हमने शान्ति लाभ की है। तुम भी उसी की शरण मे पहुच कर शान्त हो सकते हो।" प्रिय पाठकगण, आओ, हम सब बडे प्रेम से एक दूसरे के साथ मिल कर ऋषियो तथा देवताओ की शरण मे पहुचे और उनके चरणो मे श्रद्धा और विश्वास से बैठ उनसे इस सीधे मार्ग का पता पूछे जिस पर चल कर उन्होंने इन दुर्गम मार्गो को पार किया है, जिसके एक एक पग पर दस दस ठोकरे खानी पडती थीं। ❑

आसक्ति और विरक्ति

एक बार सन्त तान जेन अपने गुरु के साथ जा रहे थे। रास्ते मे एक नदी पडी। पानी घुटनो से कुछ ऊपर था। तली मे गोल, चिकने पत्थर थे। बहाव भी तेज था। फिसल कर बह जाने का डर था। गुरु शिष्य दोनो कपडे सभाल कर नदी पार करने को तैयार हुए।

तभी एक स्त्री की आवाज़ सुनाई पडी 'जरा ठहरिये! मुझे भी नदी के पार जाना है।'

दोनो ने गर्दन घुमाकर देखा। एक स्त्री लगभग दौडती चली आ रही थी। जवान थी, सुन्दर भी थी। बोली 'मुझे भी हाथ पकड कर नदी पार करा दीजिये। अकेली बढी, तो कही बह ही न जाऊ।'

तान जेन के गुरु ने कहा 'हम विरक्त साधु है। हम स्त्री का स्पर्श नहीं कर सकते।' यह कह कर गुरु जी आगे बढ गये।

युवती ने प्रश्न भरी दृष्टि से तान जेन की ओर देखा। तान जेन ने कहा 'चलो। मै नदी पार करा देता हू।' उसने युवती का हाथ पकडा और सहारा देते हुए उसे नदी पार करा दी। युवती अपने रास्ते चली गई। तान जेन अपने गुरु के साथ जा मिला।

पडाव पर पहुच कर खा-पी कर तान जेन तो सो गया, पर गुरु जी को नींद नहीं आई। सारी रात करवटे बदलते रहे। अगले दिन सवेरे गुरु जी ने तान जेन से कहा 'कल तुमने उस स्त्री को हाथ पकड कर नदी क्यो पार कराई? तुम्हे पता नही कि साधु के लिए स्त्री का स्पर्श मना है?'

तान जेन मुस्कराया, बोला 'वह सुन्दरी आपसे अब तक चिपटी हुई है? मै तो उसे वहीं छोड आया था, नदी को पार करते ही।'

आसक्ति और विरक्ति मन की वृत्तिया है, तन की नहीं। तान जेन को स्त्री का स्पर्श करके भी आसक्ति नही हुई, गुरु जी बिना स्पर्श किये ही आसक्त रहे।

माता की पहचान करो

❑ देवराज आर्यमित्र

माता की जय बोलने वालो, माता की पहचान करो।
वास्तव मे जो माता है, उसका ही सम्मान करो।
सच्ची माता को भूल कर, यदि झूठी माता पूजोगे।
पापी और अपराधी बन कर सजा जुर्म की भुगतोगे।
माता प्यार स्नेह रखती है बच्चो की परम हितैषी है।
उसको कौन कहेगा माता? जो रक्त की प्यासी है।
माता भेंट नहीं मागती, माता को मत बदनाम करो।
बकरे, मुर्गे, पशु पक्षियो की हत्या करना बन्द करो।
जगली शेर नहीं है इसके जो मा को ही खा जायेगे।
इसके शेर शिवाजी जैसे जो मां की लाज बचायेंगे।
सारी रात शोर मचा कर, मां का मत बेहाल करो।
मां को सुख से रहने दो, माता का कुछ ख्याल करो।

आर्य समाज कृष्ण नगर, दिल्ली–५१

अन्तर केवल सत् और असत् का है

विद्या विवादाय धनं मदाय,
शक्तिः परेषां परिपीडनाय,
खलस्य, साधोः विपरीतमेतत्,
ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय।

(खलस्य विद्या) दुष्ट व्यक्ति की विद्या **(विवादाय)** बहस या झगड़ा करने के लिए होती है; **(धनं)** धन **(मदाय)** घमंड बढ़ाने के लिए होता है; **(शक्तिः)** शारीरिक शक्ति या पदाधिकार और प्रभुत्व की शक्ति **(परेषां)** दूसरो को (शत्रुओं को ही नहीं, हर किसी को) **(परिपीडनाय)** सताने के लिए होती हैं। **(साधोः)** भले, सज्जन का **(एतत्)** यह सब **(विपरीत)** ठीक उल्टा होता है। **(ज्ञानाय)** विद्या ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान देने के लिए होती है; **(दानाय)** धन दान देने के लिए होता है; और **(रक्षणाय)** शक्ति दूसरो की रक्षा में काम आती है।

तीन वैभव

मनुष्य कहलाने योग्य व्यक्तियों मे तीन ही बाते होती हैं या तो उन्हे विद्याए आती हैं, वे विद्वान् होते है, गणित, भूगोल, इतिहास, विज्ञान जानते है, कानून जानते है, चिकित्सा जानते है। उनका बहुत प्रभाव होता है।

या फिर, कुछ लोगों के पास प्रचुर धन होता है। खाने पहनने लायक धन तो अधिकाश लोगो के पास होता है, परन्तु कुछ भाग्यशाली लोगों के पास इतना धन होता है कि वह उनकी आवश्यकताओ से बहुत अधिक होता है। सारे खर्च करने के बाद भी बचा रहता है, नया नया आता जाता है। उनका भी समाज मे बहुत प्रभाव होता है। अनेक आशाओ को ले कर लोग उनके आगे पीछे घूमते है।

तीसरे लोग वे है, जो बहुत विद्वान् या विद्या सम्पन्न भी नहीं है, और बाप की छोडी धन सम्पत्ति भी जिन्हें नहीं मिली, किन्तु प्रतियोगिता परीक्षा मे बैठ कर या अन्य किसी जोड तोड से किसी सरकारी पद पर लग गये हैं। चाहे पुलिस में दरोगा, या न्यायालय में न्यायाधीश, या कलक्टर, कमिश्नर कुछ भी हो, उनके हाथ मे शासन की शक्ति होती है। उनका भी समाज मे दबदबा रहता है।

तीन वर्ण

विद्या वाला व्यक्ति प्राचीन काल में गुण कर्म के कारण ब्राह्मण कहा जाता था, धन सम्पन्न व्यक्ति वैश्य और शक्ति सम्पन्न व्यक्ति क्षत्रिय कहा जाता था। यही समाज के नेता थे और आज भी समाज को ये ही चलाते हैं। इन तीनों, विद्या, धन और शक्ति से रहित लोग जनसाधारण, आम प्रजाजन कहलाते हैं, जिन्हें प्राचीन भाषा मे शूद्र कहा जा सकता है। शूद्र का आशय यह है कि विद्या, धन और शक्ति से रहित होने के कारण वह स्वतंत्र रूप से जीवन यापन करने मे असमर्थ है, इसलिए उसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के निर्देशों में रह कर जीवन निर्वाह करना पड़ता है। यदि वह स्वतत्र रह कर जीवन निर्वाह कर सके, तो वह शूद्र ही नहीं कहलायेगा।

सत् और असत्

अब प्रश्न आता है सत् और असत् का। कुछ लोग सत् अर्थात् भले स्वभाव के होते हैं। सत् युग मे शायद अधिक लोग भले स्वभाव के होते थे। इसलिए सज्जन प्रधान उस युग को सत् युग कहा गया।

सत् युग में दुष्ट, दुराशयी लोग कम थे, इसलिए उनका वर्चस्व भी कम था। कुछ भी अपकर्म करने पर बहुसंख्यक सज्जनो का तीखी नजर से उन्हें देखना ही उन्हे सत्पथ पर लाने के लिए पर्याप्त होता था। दड की आवश्यकता नहीं पडती थी।

हिंसा, असत्य व्यवहार, चोरी-डकैती, नारी अपहरण और उत्पीडन, और धन सचय की असयत लालसा, ये पांचों पाप उस काल में नहीं होते थे, या बहुत कम होते थे।

त्रेता युग

त्रेता युग मे असत्, दुष्ट लोगो की सख्या बढ गई। भले लोगों का जीना कठिन हो गया। कुछ लोग राक्षस बन गये—दूसरो का मांस खाने वाले और खून पीने वाले लोग। इसे आलकारिक रूप में ही समझना भला होगा। जब कोई मनुष्य अपने सुख के लिए दूसरो की सुख सुविधा का ध्यान नहीं रखता, अपितु बल या छल से उनका अत्यधिक शोषण और उत्पीडन करता है, तब वह राक्षस कहलाता है। लूटपाट करके दूसरे का धन छीन लेना, दूसरो को दास या सेवक बना कर उनसे अमानुषिक श्रम करवाना, जैसे कि मध्यकालीन विजेता और आधुनिक पूजीपति कराते रहे है, राक्षसी कृत्य है। ठगी भी राक्षसी माया है। त्रेता युग (रामायण काल) मे राक्षसो के गिरोह भारत भूमि पर सक्रिय थे। जब रामचन्द्र जी ने उनका दमन करना चाहा, तो राक्षसराज रावण ने सीता जी का अपहरण ही कर लिया।

त्रेता युग मे भी राक्षस कम थे और अल्प साधन वाले राम उन्हें पराजित करने मे सफल हुए। कारण यह था कि तब भी बहुमत भले लोगो का था। वानर, भालू समझी जाने वाली जनजातिया सीताहरण जैसे दुष्कर्म की बात सुन कर भडक उठीं और उन्होने राक्षसो की लका को ध्वस्त कर दिया। ध्यान देने की बात यह है कि सत् के पक्ष मे लडने के लिए अल्पशिक्षित, अल्पसस्कृत जातिया ही अधिक कटिबद्ध होती हैं। वे सोचती कम और करती अधिक हैं। शिक्षित और सुसंस्कृत जातियां प्राय अत्याचारी आक्रमणकारियों से पराजित होती रही हैं।

द्वापर युग

द्वापर युग मे सत् और कम हो गया, असत् और अधिक बढ़ गया। लोगो के जीवन मूल्य ही बदल गये; मान्यताए बदल गईं। रामचन्द्र ने अवसर उपस्थित होने पर राजसिहासन त्यागने में एक पल का भी विलम्ब नहीं किया। वनवास को उन्होने चौदह वर्षों में एक क्षण के लिए भी कष्ट नहीं माना। वह अकेले वन गये होते, तो क्या होता, कहना कठिन है, परन्तु सीता जैसी पत्नी और लक्ष्मण जैसे भाई के साथ उनका प्रत्येक दिन उत्साह और उल्लास में ही बीता। घोर विपत्तियां भी विपत्तिया ही नहीं लगीं।

परन्तु द्वापर के महाभारत मे भाई भाई राज्य के लिए लड़ने लगे। दुर्योधन ने पांडवो को मारने के लिए षड्यत्र रचे। पाडव वनवास के लिए गये, परन्तु वे स्वय को दुखी मानते रहे और बदला लेने के लिए तैयारिया करते रहे। कौरवों की राजसभा आज की ससद से बहुत अच्छी थी, परन्तु वहा भी सत् और असत् का विचार कम हो गया था। सज्जनो और दुर्जनो की सख्या बराबर सी हो गई थी। कौरवो के पक्ष मे ११ अक्षौहिणी सेना थी और पाडवो के पक्ष मे ७ अक्षौहिणी। कौन सत्पक्ष मे है, कौन असत् में, यह भी धूमिल ही था। कृष्ण पाडवो के पक्ष मे थे, किन्तु उनकी नारायणी सेना कौरवो के पक्ष मे लडी थी।

कलियुग में असत् बढ़ा

कलियुग मे असत् का पलडा स्पष्ट रूप से भारी हो गया। सज्जनों की सख्या मे बहुत कमी हो गई और दुष्टो, दस्युओ, कपटियों की सख्या मे भारी वृद्धि हुई है। अब झूठ बोले बिना किसी का काम नहीं चलता। हर कोई घोटाला करके अरबपति बनने के लिए बेचैन है। कोई अपराध अब जघन्य नही समझा जाता। कानून जैसे बने है, उनसे अपराधियो को बढावा मिलता है। न्यायालय मे वकील झूठे किस्से गढ कर अपराधियो को दड पाने से बचा लेते है। अपराधी मोटी रकम दे कर जमानत पर छूट जाते है और नये अपराध करने केलिए स्वतत्र घूमते हैं। चींटी की चाल से चलता न्याय अभियुक्त को जीते जी पकड नही पाता। हत्या के मुदकमे दसियो बरस घिसटते है। सन्देह का लाभ अभियुक्त को मिलता है। पेशेवर अपराधियो के गिरोह योजनाबद्ध तरीके से कार्य करते है। कानून के विशेषज्ञ वकील न केवल अपराध करने के बाद अपराधियो का बचाव करते है, अपितु अब तो अपराध करने से पहले से ही उनका मार्गदर्शन भी करने लगे है। ससद और विधान सभाए अपराधजीवी सदस्यो से भरी है। हर नामी सासद या विधायक के अपने गिरोह है, जो बल प्रयोग मे प्रवीण है। भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, बलात्कार, फिरौती के लिए अपहरण सामान्य बाते हो गई है। सुन कर कोई चौकता तक नहीं।

साक्षरता

५४ साल पहले देश मे साक्षरता लाने की बात कही गई थी। साक्षरता का अर्थ था विद्या का प्रचार, यद्यपि साक्षरता और विद्या मे भारी अन्तर है। वायदे किये गये कि दस साल मे सभी देशवासियो को साक्षर बना दिया जायेगा। आज भी देश मे ४० प्रतिशत लोग साक्षर नहीं है। कोई किसी को विद्या प्राप्त नही करने देना चाहता। प्राथमिक शाला में बच्चे को प्रवेश मिलना कठिन है। कुछ स्कूल तो इसके लिए अभिभावक से हजारो का दान मागते है। मध्य काल मे 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' (स्त्रिया और शूद्र न पढे) कह कर विद्या के प्रसार पर रोक लगाई गई थी, आज 'डोनेशन' (दान) और भारी शुल्क विद्या प्रसार मे बाधक है।

सम्पादकीय

अक्षरज्ञान हानिकर

शायद भला ही हुआ कि साक्षरता आन्दोलन सफल नहीं हुआ। साक्षरता का तो अर्थ ही अक्षरज्ञान है, पर हमारे विद्यालयो और महाविद्यालयो मे भी अक्षर ज्ञान के सिवाय कुछ नहीं सिखाया जाता। प्रतिवर्ष लाखो की सख्या मे जो बी ए, ऐम ए तैयार होते है, वे क्लर्की और अध्यापकी के सिवाय कुछ करने के लायक नहीं होते। नौकरी न मिलने पर वे परकटे कबूतर की तरह इधर उधर लुढकते रहते है। शिक्षा की उपाधिया उन्हे छोटे मोटे काम करके जीविका नहीं कमाने देतीं। वे न घर के रहते है, न घाट के। न जगल मे रेवड चराने के लायक, न बाजार में बोझ ढोने के लायक।

सत् के बिना विद्या, धन, शक्ति बेकार

विद्या उद्धारक तभी बन सकती है, जब वह सत् जनो के पास हो। दुष्टजनो के पास पहुच कर वह विवाद और अपराधो को बढावा देती है। पढे लिखे, कानून जानने वाले, आधुनिक विज्ञानो मे पारगत अपराधी शासन के लिए सबसे बडा सिरदर्द होते है। इसलिए विद्या का केवल सज्जनो तक सीमित रहना आवश्यक है।

इसी प्रकार यदि धन सज्जनो के हाथ मे रहेगा, तो उसका राष्ट्रहित मे उपयोग हो सकेगा। कुए बनेगे, धर्मशालाए बनेगी, विद्यालय और चिकित्सालय बनेगे, शोध सस्थान खुलेगे। अब भी ऐसा होता है। परन्तु यदि विपलु धनराशिया असज्जनो और दुष्टो के हाथ मे पहुचेगी, तो वे लोग मदान्ध हो कर उनका उपयोग भूमाफिया बनने, मादक द्रव्यो की तस्करी करने, लडकियो का व्यापार करने आदि के लिए करेगे।

यही हाल शक्ति (प्रभुत्व केअधिकार) का भी है। यदि शक्ति सज्जन के हाथ मे रहेगी, तो वह उसका प्रयोग कानून का पालन करने वाले दुर्बल लोगो की रक्षा और दुष्टो का दमन करने के लिए करेगा। परन्तु यदि शासन की वही शक्ति दुर्जनो के हाथ मे पहुच जायेगी, तो वे गुडो को पालेगे और उनके द्वारा जनता का शोषण करेगे। जेबकतरो को, अपहरणकर्ताओ को, तस्करो को, गबन करने वालो को उनका प्रश्रय मिलेगा। प्रजा को भेडो की तरह मूडा जायेगा। सब ओर अराजकता और अन्याय का बोलबाला होगा।

इसलिए देश मे विद्या बढे, धन बढे, शक्ति बढे, इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि वह विद्या, धन और शक्ति सज्जनो के हाथो मे हो, दुर्जनो के हाथो मे नही। देश स्वर्ग बनेगा या नरक, यह इसी बात पर निर्भर है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और आर्य समाज

□ श्री कृष्ण मोहन 'हिन्दू'

"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। मत-मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायी नही होता।" — स्वामी दयानन्द सरस्वती (सत्यार्थ प्रकाश)

"ग्रेट ब्रिटेन ने हमे शान्ति और व्यवस्था दी है। उसने हमे रेलवे दी है और सबसे बढ कर पाश्चात्य शिक्षा का अमूल्य वरदान दिया है। पर अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है भारतीयो की केवल यही आकांक्षा है कि सरकार के आधार को और विस्तृत किया जाय और जनता का उसमे समुचित हाथ हो इससे ब्रिटिश सरकार के प्रति हमारी भक्ति मे कोई कमी नही आयेगी।" —उमेशचन्द्र बनर्जी (भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के प्रथम अधिवेशन मे प्रथम अध्यक्ष के रूप मे १८८५ मे दिए गए वक्तव्य का एक अश।)

उपर्युक्त दोनो वक्तव्यो पर विचार कीजिए। भारतीय इतिहास को दिशा देने वाले दो महान सगठनो, क्रमश आर्य समाज और भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के आदिपुरुषो द्वारा ये वक्तव्य दिये गये हैं। प्रथम वक्तव्य का समय १८७५ ई० है, तो द्वितीय वक्तव्य का सन् १८८५ ई०। जरा सोचिये, भारत की स्वतत्रता, स्वराज्य, स्वदेशी के प्रति प्रारम्भ से ही आर्यसमाज की कितनी प्रखर अवधारणा रही है? अपनी स्थापना के ४५ वर्ष पश्चात् काग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य के जिस प्रस्ताव को स्वीकृत किया, उसके पीछे लगभग ५५ वर्षो से आर्य समाज द्वारा जन जन को स्वराज्य के प्रति सजग करने हेतु चलाये गये अभियान का प्रभाव ही कारणभूत रहा है।

अग्रेजो का दबदबा

सवत् १९१४ (सन् १८५७) के प्रथम स्वतत्रता सघर्ष की असफलता की महर्षि दयानन्द ने प्रत्यक्ष अनुभूति की थी। अग्रेजों ने जिस बर्बरता से इस क्रान्ति को कुचल दिया था, उससे सम्पूर्ण भारतवर्ष मे भय और निराशा का घटाटोप अधकार छा गया था। विदेशी शासन के विरुद्ध कोई भी मुह खोलने का साहस नही कर पा रहा था। विक्टोरिया का शासन तेजी से दृढ हो रहा था और समाज के प्रतिष्ठित कहे जाने वाले लोग उसी की जय जयकार को देशभक्ति का नाम देकर अपनी स्वार्थ साधना मे रत थे। सम्पूर्ण भारत मे मैकाले की शिक्षा योजना प्रारम्भ हो चुकी थी। भारतीय नवयुवको मे स्वदेश, स्वधर्म, इतिहास और अपने पूर्वजो के प्रति इतनी हीन भावना भरी जा रही थी कि वे बडी तीव्रता से राष्ट्रीय स्वाभिमान को छोड कर ब्रिटिश महाप्रभुओं की सस्कृति अपनाते चले जा रहे थे। राजा राममोहन राय प्रभृति जिन व्यक्तियो ने समाज की दुर्दशा से दुखी हो कर कतिपय सुधारात्मक कार्यों, आन्दोलनो का बीडा उठाया था, वे भी पूर्णत पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव मे आ कर स्वदेशी ज्ञान-विज्ञान को हेय और पाश्चात्य सस्कृति को ही श्रेय समझ रहे थे।

स्वाधीनता के लिए आह्वान

ऐसी विपरीत परिस्थितियो मे, जब स्वाधीनता की बात कोई सोच भी नहीं सकता था, राष्ट्रीय रगमच पर कोई सगठन दिखाई नही पड रहा था, महर्षि स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना कर सत्यार्थ प्रकाश जैसे क्रान्तिकारी ग्रथ की रचना की, जिसमे पूर्ण स्वराज्य का न केवल उल्लेख किया, अपितु राजनीति (महर्षि के शब्दो मे 'राजधर्म') को पूरा छठा समुल्लास ही समर्पित कर दिया। आर्यो के चक्रवर्ती राज्य की कामना कर और 'अग्रेज़ो के धुर्रे उडाने' की खुली आकाक्षा व्यक्त कर महर्षि और आर्यसमाज ने समस्त भारतीयो का स्वाधीनता हेतु बद्धपरिकर होने का आह्वान किया। इतिहास साक्षी है कि महर्षि के इस आह्वान पर सम्पूर्ण भारतवर्ष मे स्वतन्त्रता के लिए मर मिटने वाले लाखो वीर प्राण हथेली पर लिए पाशविक अग्रेजी सत्ता से न केवल टक्कर लेने को उठ खडे हुए, अपितु उसे भारत मे निकालने मे भी सफल हुए। तभी तो 'काग्रेस का इतिहास' लिखने वाले प्रसिद्ध काग्रेसी नेता पट्टाभि सीतारमैय्या ने भी लिखा कि स्वतत्रता सघर्ष के सेनानियो मे ८० प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे।

वेदों की पुन: प्रतिष्ठा

भारतीय स्वाधीनता सघर्ष मे आर्यसमाज ने समष्टि और व्यष्टि— दोनो स्वरूपो मे अद्वितीय योगदान किया है। भारतवर्ष की दुर्दशा पर आर्यसमाज ने कभी कारयतापूर्ण विलाप नही किया, जैसा कि तत्कालीन कई सस्थाओ और व्यक्तियो का कर्तव्य बन चुका था। इसके विपरीत राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन की बिगुल फूकने वाला आर्यसमाज ही था। परिवर्तन के इस महायज्ञ मे आर्यसमाज की विलक्षणता यह थी कि इसने भारत को पुन उसके मूल से—वेदो से—जोड दिया। वेदो के आधार पर नवीन विज्ञान, समाज नीति, राजनीति, धर्मनीति और शिक्षा नीति का विशुद्ध भारतीय दर्शन विश्व के समक्ष रखने का यह कार्य इतना क्रान्तिकारी था, कि मानसिक दुर्बलता मे ग्रस्त, मानहीनता की स्थिति से त्रस्त हो चुके भारतीयों को सहसा अपने भारतीय होने पर गौरव की अनुभूति होने लगी। एक बार गौरव और तेज की अनुभूति होते ही स्वाधीनता के लिए चतुर्दिक छटपटाहट प्रारम्भ हो गयी। अग्निकणो पर सदियो से पडी राख की परत को आर्यसमाज ने फूक मार कर उडा दिया और तब राष्ट्रीय तेज की चिनगारी शीघ्र ही तीव्र लपटो मे परिवर्तित हो कर समाज का पथ प्रदर्शन करने लगी।

एकता परम आवश्यक

सर्वप्रथम महर्षि ने ही उद्घोष किया कि बिना एक धर्म, एक भाषा, एक विचार और एक राष्ट्र की भावना के मानव जाति का कल्याण सभव नही है। सम्पूर्ण भारतवर्ष मे राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी को अपनाने का मूलदर्शन उन्होने ही दिया था। आर्यसमाज की ओर से हिन्दी मे दर्जनो पत्र पत्रिकाए प्रकाशित हुई। वेदो का भाष्य जनभाषा हिन्दी (महर्षि के शब्दो मे आर्यभाषा) मे प्रथम बार आर्यसमाज के द्वारा प्रकाशित किया जाना एक क्रान्तिकारी कदम सिद्ध हुआ। अहिन्दीभाषी क्षेत्रो मे भी आर्य समाज के प्रचारको, उपदेशको ने हिन्दी मे धुआधार प्रचार अभियान छेड दिया। कालान्तर मे आर्यसमाज के इस अभियान को अन्य राष्ट्रीय सगठनो ने भी अपनाया।

जात पात और अस्पृश्यता

भारतवर्ष की परतत्रता और आपसी फूट का सबसे प्रबल कारण था कथित जन्मना जाति व्यवस्था और अछूतो की समस्या। आर्यसमाज ने तो इसके मूल पर ही प्रहार किया और गुण, कर्मानुसार वैदिक वर्ण व्यवस्था को पुन स्थापित करने का अभियान छेड दिया। इससे न केवल सहभोजो और अन्तरजातीय विवाहों को बल मिला, अपितु तथाकथित पिछडी जातियो और अछूतो के बीच से आए सैकडो व्यक्तियो को योग्यतानुसार ब्राह्मण की भी मान्यता मिली। इसी से प्रेरणा लेकर गाधी जी ने बाद मे दलितोद्धार को स्वतत्रता सग्राम का एक प्रमुख अग घोषित किया।

स्त्री शिक्षा

एक ओर तो अग्रेजी शिक्षा का जहर समाज को चेतनाशून्य बना रहा था, दूसरी ओर पाखडियों द्वारा 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' का घोष करके समाज के आधार को ही मूर्ख बनाए रखने का षड्यत्र जारी था। आर्यसमाज ने शिक्षा के द्वार बिना किसी भेदभाव के सबके लिए खोल दिये। गुरुकुलो की स्थापना तो शिक्षा के इतिहास मे युगान्तरकारी घटना सिद्ध हुई। आर्यसमाज द्वारा सचालित गुरुकुलों, विद्यालयों मे पढ कर विद्यार्थी न केवल पाठ्य विषयों का ज्ञान प्राप्त करता था, अपितु स्वयं राष्ट्रभक्ति की प्रज्वलित मशाल बन जाता था। आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओ ने जितने राष्ट्रभक्त उत्पन्न किए है, उतने अन्य किसी संगठन द्वारा सभव नहीं हो सके। यही कारण था कि अग्रेज़ो की सदैव इन गुरुकुलो पर वक्र दृष्टि ही रही। कतिपय काग्रेसी नेताओ ने बाद मे इसी आधार पर राष्ट्रीय विद्यापीठों की स्थापना का प्रयास किया, जिसकी सफलता अथवा असफलता इतिहास-विदित ही है।

सबने सराहना की

आर्य समाज की इस भूमिका को देशी-विदेशी इतिहासकारो और अन्य महत्वपूर्ण विचारको ने मुक्तकठ से स्वीकारा और सराहा है। दादा भाई नौरोजी, जिन्हे 'स्वराज्य' शब्द का प्रथम उद्घोषक कहा जाता है, ने स्पष्ट शब्दो में कहा है, "मैने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रथो से ही सीखा।" लोक सभाध्यक्ष श्री अनन्त शयनम् आयगर ने कहा "यदि गाधी राष्ट्रपिता है, तो दयानन्द राष्ट्रपितामह है।" गरमदल के आधार स्तम्भो मे से एक विपिनचन्द्र पाल ने अपने ग्रथ 'वर्तमान भारत मे स्वतत्रता आन्दोलन का प्रारम्भ' मे इसे स्वीकारते हुए लिखा है— "यह दयानन्द ही था, जिसने उस आन्दोलन की आधारशिला रखी, जो बाद मे धार्मिक राष्ट्रीयता के नाम से जाना गया देश की जनता को वेद के आधार पर स्वतत्रता, समानता, भ्रातृत्व की भावना प्रदान की।" विदेशी विचारक डी० बैवले ने लिखा है— "वर्तमान स्वतत्र भारत की वास्तविक आधारशिला दयानन्द ने ही रखी थी।" फ्रांसीसी विचारक रोम्या रोला ने लिखा है— "राष्ट्रीय पुनर्जागरण जो इस समय देश मे दीख पड़ रहा है, इसमे स्वामी दयानन्द ने प्रबल शक्ति के रूप मे कार्य किया है। उनके आर्यसमाज ने ही इच्छा या अनिच्छापूर्वक बगाल के १९०५ के विप्लव का मार्ग बताया था।" एक प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान् मौ० हसरत मोहानी ने कहा था . "मैं बडे आश्चर्य से देखता हू कि जो भी व्यक्ति आर्यसमाज में जाता है, वह शीघ्र ही प्रखर राष्ट्रभक्त बन जाता है।" गांधी जी, जिन्होंने मुस्लिम तुष्टीकरण के व्यामोह में कई बार स्वामी दयानन्द एव आर्यसमाज की निराधार आलोचना की है, उन्हें भी यह स्वीकारना पड़ा कि "जहा जहा आप आर्यसमाज को देखेगे, वहा वहा राष्ट्रीय चेतना और प्राण दिखाई देगा।"

ऐसे वक्तव्यों का यदि संग्रह किया जाय, तो एक विशाल ग्रंथ ही तैयार हो जाएगा। ये वक्तव्य स्वाधीनता संग्राम में

(शेष पृष्ठ १० पर)

कश्मीर में जनमत संग्रह की मांग का कोई आधार नहीं

❑ न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द महाजन (जम्मू कश्मीर राज्य के पूर्व प्रधानमत्री)

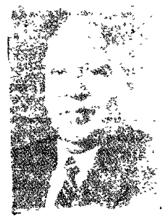

(गताक से आगे)

पाकिस्तान बार बार रट लगाता है कि कश्मीर भारत या पाकिस्तान मे से किसमे मिले, इसका निर्णय वहा जनमत सग्रह करा कर जनता की इच्छा के अनुसार किया जाना चाहिए। सन् १९४७ मे सयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् ने भी जनमत सग्रह की बात कही थी। विद्वान् लेखक ने, जिन्होने जम्मू कश्मीर के भारत मे अधिमिलन मे सक्रिय भूमिका निबाही थी, जो स्वय कानून क बडे विद्वान् थे और भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भी रहे थे, यह बताया है कि भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के प्रावधानो के अनुसार अधिमिलन के लिए जनता की इच्छा जानने का प्रश्न ही नही उठता। इसका पूर्ण और अन्तिम अधिकार राज्य के शासक को था। यह नेहरू जी का गलत और असाविधानिक कदम था कि उन्होने जनमत सग्रह की बात जोड दी। सुरक्षा परिषद् को भी जनमत सग्रह की बात कहने का कोई अधिकार नही था। उसे यह निर्णय करना था कि पाकिस्तान आक्रमणकारी है या नही? वह न करके उसने जनमत सग्रह का असम्बद्ध प्रश्न उठा दिया। कुशल यह हुई कि पाकिस्तान ने ही सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव की शर्तो का पालन नहीं किया। अब ५२ वर्ष बाद उस प्रस्ताव का कोई अर्थ नहीं रह गया है। कानूनी दृष्टि से कश्मीर भारत का अग है। उसके २/५ भाग पर पाकिस्तान ने आक्रमण करके कब्ज़ा किया हुआ है। भारत को पूरा अधिकार है कि वह सैनिक शक्ति का प्रयोग करके पाकिस्तान द्वारा हथियाये गये कश्मीर के भाग को वापस ले ले। इसकेलिए सकल्प की आवश्यकता है।

अधिमिलन के प्रावधान कानून (भारतीय स्वाधीनता अधिनियम) द्वारा बमाये गये है और उस कानून से बाहर उनका कोई अस्तित्व नहीं है। यदि किसी राज्य पर किसी उपनिवेश द्वारा किसी जनमत संग्रह के परिणाम के आधार पर बलपूर्वक कब्ज़ा कर लिया जाता है, तो उसे जीता गया प्रदेश या हथियाया गया प्रदेश कहा जायेगा, अधिमिलन बिल्कुल नहीं। पाकिस्तान ने आक्रमण करके इस राज्य के २/५ भाग पर जो कब्ज़ा किया हुआ है, वह ठीक यह चीज़ है।

अधिमिलन तुरन्त होना था

इसके अलावा, इस राज्य के लोगो का भविष्य अनिश्चित काल तक अनिश्चय की दशा मे नहीं छोडा जा सकता, जबकि सशर्त अधिमिलन का परिणाम यही होगा। यह बडी खतरनाक और विस्फोटक स्थिति होगी। ऐसे लाखो लोगो को, जिनकी साम्प्रदायिक धर्मान्धता को किसी भी क्षण भडकाया जा सकता हो, राजनीतिज्ञो की सनक के भरोसे नहीं छोडा जा सकता। इसीलिए भारतीय स्वाधीनता अधिनियम मे एक पूर्ण और अन्तिम अधिमिलन के सिवाय किसी भी अन्य प्रकार के अधिमिलन की कल्पना या प्रावधान नही किया गया और यह अधिमिलन एक बार और केवल एक बार होना था।

यात्रा-स्फूर्ति

❑ स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

उठ बाध*कमर चल यात्रा पर,
है अधकार पथ दूर घना,
तेरा साथी वह है ईश्वर,
निज जीवन मित्र पवित्र बना।
तेरे पथ मे है बाधाये,
हिम्मत से पग आगे रखना,
पूरी होगी सब आशाये,
निज जीवन परम पवित्र बना।
दुर्गम पर्वत नद नालो मे,
घनघोर तिमिर से मत डरना,
वह रक्षक है सब कालो मे,
निज जीवन मित्र पवित्र बना।
कुछ करते है तेरी हाँसी,
कुछ प्रेम करे प्रिय वचन सुना,
तू होकर ईश्वर-विश्वासी,
निज जीवन परम पवित्र बना।

कुछ निन्दा चुगली है करते,
कुछ द्वेष करे कुछ करे घृणा,
तू पीठ फेर ले, इन सबसे,
निज जीवन मित्र पवित्र बना।
यह दुनिया रग बिरगी है,
निर्भर इस पर तू मत रहना,
तू चगा तो यह चगी है,
निज जीवन परम पवित्र बना।
तू निर्जन मैदानो मे भी,
निर्भय होकर आगे बढना,
वह दूर करेगा कष्ट सभी,
निज जीवन मित्र पवित्र बना।
इस कर्मयोग के मार्ग मे,
नित ओ३म् नाम का जप करना,
हे 'देव' सफल होना जग मे,
तो जीवन परम पवित्र बना।

जब भारत ने इस राज्य का अधिमिलन स्वीकार कर लिया और वह किसी भी अन्य राज्य द्वारा इस पर आक्रमण से इसकी रक्षा करने के लिए जिम्मेदार हो गया, तो उसका दायित्व था कि वह अपनी सैनिक शक्ति का प्रयोग करके जम्मू कश्मीर के क्षेत्र को कबाइली आक्रमणकारियो और पाकिस्तानी सेना से खाली कराता और उनके कब्ज़े मे विद्यमान इस राज्य के २/५ भाग से उन्हे निकाल बाहर करता, परन्तु भारत ने इस दायित्व को निबाहा नहीं।

सुरक्षा परिषद् मे शिकायत

आक्रमणकारियो और पाकिस्तानी सेना की प्रगति को एक निश्चित बिन्दु पर रोक देने के बाद भारत ने एक बहुत ही अनिश्चित और उलझनभरा मार्ग अपनाया। उसने सुरक्षा परिषद् और सयुक्त राष्ट्र सघ के पास इस शिकायत के साथ गुहार की कि पाकिस्तान को आक्रान्ता घोषित किया जाये और कबाइलियो और अपने सैनिको का प्रयोग करके उसने कश्मीर राज्य के जिस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया है, उसे खाली करने को कहा जाये।

शायद उन लोगो को यह विश्वास था कि सुरक्षा परिषद् एक न्यायिक निकाय है और वह इस शिकायत पर इसके गुण-अवगुणो के आधार पर निष्पक्ष हो कर विचार करेगी और किसी भी राजनीतिक लिहाज या अन्य असगत बाहरी बातो को बीच मे नहीं लायेगी। यह नही समझा गया कि इस परिषद् मे ब्रिटेन और अमेरिका के पिछलग्गुओ का बोलबाला है और जब एक बार कोई मामला इसके पास विचारार्थ भेज दिया जाता है, तब यह उस पर राजनीतिक आकलनो के अनुसार ही विचार करती है।

सुरक्षा परिषद् के पास जाने के इस गलत कदम का परिणाम दुर्भाग्यपूर्ण रहा। यद्यपि सत्रह (अब ५२) वर्षो की लम्बी अवधि बीत गई है, फिर भी इस मामले का गुणावगुण के आधार पर निर्णय नहीं हो पाया। इस वाद मे सब प्रकार के राजनीतिक आकलनो को ला घुसेडा गया है, कश्मीर को पाने मे पाकिस्तान की सहायता करने के उद्देश्य से सुरक्षा परिषद् ने पाकिस्तान को आक्रान्ता घोषित करने और उसे उसके द्वारा कब्ज़ा किये गये २/५ भाग को खाली करने को कहने के बजाय राज्य का बाकी बचा ३/५ भाग भी, जो भारत का भाग बन चुका है, सकट मे डाल दिया और महाराजा द्वारा किये गये अधिमिलन पर ही ऐतराज खडा कर दिया।

सुरक्षा परिषद् की आरम्भिक बैठको मे पाकिस्तान की कूटनीति और पैरवी-कुशलता की भारतीय कूटनीति और पैरवी-कुशलता पर विजय हुई और मजे की बात यह थी कि इनमे शिकायत के गुणावगुणो का बिल्कुल ध्यान ही नहीं रखा गया।

सन् १९४७ मे सुरक्षा परिषद् ने यह प्रस्ताव पारित किया कि कुछ एक शर्तो को एक नियत अवधि मे पूरा कर देने पर उस राज्य के अधिमिलन का निर्णय जनमत सग्रह द्वारा किया जायेगा।

भारत ने इस तथ्य की पूरी तरह उपेक्षा करते हुए, कि महाराजा द्वारा किये गये अधिमिलन केफलस्वरूप जम्मू कश्मीर राज्य भारत का अभिन्न अग बन चुका था, इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

यही है वह प्रस्ताव, जिसके आधार पर पाकिस्तान यह माग कर रहा है कि इस राज्य के अधिमिलन के प्रश्न का अन्तिम हल करने के लिए जनमत सग्रह करवाया जाना चाहिए।

मेरे विचार से इस प्रस्ताव मे कोई वैधता या बाध्यकारी शक्ति नही है। सुरक्षा परिषद् को उसके चार्टर (विधान) द्वारा जो शक्तिया प्रदान की गई है, यह प्रस्ताव उनके बाहर जाता है।

सुरक्षा परिषद् कोई ऐसा न्यायाधिकरण नहीं है, जिसे राजनीतिक प्रश्नो का निर्णय करने का या किसी राज्य के घरेलू मामलो से सम्बन्धित प्रश्नो का निर्णय करने का अधिकार प्राप्त हो।

किसी रजवाडे के अधिमिलन के प्रश्न का निर्णय भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के प्रावधानो के द्वारा किया जाना था, न कि सुरक्षा परिषद् के प्रस्तावो द्वारा।

भारत के लिए उचित यह था कि वह कूटनीतिक दबावो मे आ कर इस प्रस्ताव से सहमत होने के बजाय इसे अस्वीकार कर देता और इस बात का आग्रह करता कि उसकी शिकायत पर न्याय निर्णय किया जाये और सुरक्षा परिषद् से यह फैसला करवाता कि कश्मीर के २/५ भाग पर कब्जा करके पाकिस्तान ने अतिक्रमण किया है और उसे वह भाग तुरन्त खाली कर देना चाहिए।

मामला यही समाप्त नहीं हुआ।

जब हमारी सेनाए आक्रमणकारियो को खदेड रही थी और उनके द्वारा कब्जा किये गये २/५ क्षेत्र को वापस ले लेने मे सफल होने ही वाली थी कि तभी भारत युद्ध विराम के लिए राजी हो गया।

सन् १९४९ से १९५३ तक हमारे प्रधानमत्री जनमत सग्रह कराने की बात कहते रहे।

आश्चर्य की बात है कि किसी ने भी प्रधानमत्री के इस मनमाने फैसले पर अगुली नही उठाई। हमारी जनता महानायको की पूजा जो करती है।

हमारे सविधान के अनुसार

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पत्र जगत्

आर्य सम्मेलनों का औचित्य क्या है?

पहले कई वर्षो मे विशेष परिस्थितियो मे आर्य महासम्मेलन आयोजित किये जाते थे पर अब तो एक वर्ष मे ही दो बार महासम्मेलन होने जा रहा है। अभी मार्च मे मुम्बई मे समाप्त हुआ है तो अक्टूबर/नवम्बर मे पुन दिल्ली मे महासम्मेलन प्रस्तावित है। मेरे विचार मे इस तरह के महासम्मेलनो का आयोजन आर्य समाज के लिये न तो लाभदायक है और न ही उपयोगी। पहले जो भी आर्य महासम्मेलन किये जाते थे, उनका कोई उद्देश्य होता था और वे अपने उद्देश्यों मे काफी हद तक सफल होते थे, पर इधर कई वर्षो से जो भी आर्य महासम्मेलन होते है वे अपने उद्देश्यो मे सफल नही होते है। इन सम्मेलनो से आयोजको की जहां कुछ समय तक वाह-वाह होती है वहा आर्य समाज के सगठन के लिये ऐसे सम्मेलन आह-आह भी उत्पन्न करते है। ऐसे सम्मेलनो मे भाग लेने वाले आर्यसमाजियो के लिये इसकी सबसे बडी यही उपयोगिता है कि इसी बहाने वे पर्यटन, देशाटन कर लेते है और आगत लोगो का परस्पर परिचय हो जाता है, तथा इस समय मे वे आर्य समाज के विद्वानो और नेताओ के लच्छेदार भाषण को भी सुन लेते है।

आर्य महासम्मेलनो मे जितना धन, श्रम और समय लगता है, उसके मुकाबले मे उसकी उपलब्धिया न्यून है। दिल्ली और बडे बडे महानगरो मे रहने वाले महासम्मेलन प्रिय आर्य समाज के नेताओ को चाहिये कि वे प्रदर्शनात्मक कार्य की अपेक्षा आर्य समाज के प्रसार के लिए प्रचारात्मक योजना बनाए। भारतवर्ष के भिन्न भिन्न राज्यो या भिन्न भिन्न चारो दिशाओ से वेद प्रचार वाहनो मे प्रचारक एव आर्य समाज का साहित्य लेकर योजनाबद्ध प्रचार होना चाहिये, पर ऐसा कहीं नहीं हो रहा है। छोटी बडी गोष्ठियो मे आर्य समाज के संगठन के सम्मुख जो भी समस्याए हों, उन पर विचार कर उसे क्रियान्वित किया जाना चाहिये। क्या कारण है कि समाज के सभी छोटे बडे सगठनो मे प्रबन्ध सम्बन्धी विवाद बन्द नहीं होते है, आर्य प्रतिनिधि सभाओ और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यो मे पारदर्शिता कही भी नही दिखलाई पडती है। कई प्रतिनिधि सभाओ के अपने अपने पत्र है पर वे अपने से सम्बद्ध आर्य समाजो को अपने परिपत्रो द्वारा पृथक् रूप से अपनी गतिविधियो की जानकारी नही देते है। ऐसा क्यो होता है? आर्य महासम्मेलनो मे इन विषयो पर विचार क्यो नहीं होता है? क्या सभी आर्य समाजे अपने से बडी सस्थाओ (आर्य प्रतिनिधि सभाओ) के तानाशाही अधिकारियो के बन्धुआ मजदूर है? आर्य समाज की नीव लोकतत्र पर आधारित होने के बावजूद राजनीतिक दलो की तरह तदर्थ समितियो का गठन अलोकतत्रीय और मनमाने रूप से क्यों किया जाता है? महासम्मेलन तभी उपयोगी हो सकते है, जब हम उन सम्मेलनो में लिये गये निर्णयो को क्रियान्वित करे। समय समय पर स्थानीय, राज्यस्तर या केन्द्रीय स्तर पर विचारगोष्ठी, पारस्परिक विचार विमर्श करे। यदि हम किसी उचित निर्णय को क्रियान्वित नहीं कर पाते है तो उसके कारणो पर विचार करे। चूकि ऐसे सम्मेलनो मे ऐसा कुछ नहीं होता है, और न ही वहा ऐसा वातावरण होता है कि शातिपूर्वक सम्बन्धित लोग गम्भीर विचार विमर्श कर सके।

अत मेरे विचार मे तो आर्य समाज के सदस्यो को आर्य नेताओ या सस्थाओ के आह्वान पर महासम्मेलनो मे भाग लेकर आर्य समाज के कल्याण की कामना की झूठी मृगतृष्णा मे नहीं पडना चाहिए। उन्हे अपना समय और ताकत स्थानीय परिस्थितियो के अनुसार आर्य समाज का काम बढाने मे लगानी चाहिये। स्थानीय स्तर पर यदि आर्य समाज का सगठन मजबूत होगा तभी उसका लाभ राज्य स्तर या राष्ट्रीय स्तर पर उठाया जा सकता है। क्या इन विषयो पर हम सोच विचार कर कार्य करेगे?

दयाराम पोद्दार, उपप्रधान, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली २००१ क्यों?

१२, १३, १४ अक्टूबर २००१ को दिल्ली मे प्रस्तावित अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के बारे मे आर्य समाज की पत्र पत्रिकाओ मे पढ कर प्रसन्नता हुई कि स्वामी अग्निवेश के सयोजकत्व मे यह सम्मेलन होने जा रहा है। कहा जाता है कि २३ से २६ मार्च २००१ तक मुम्बई मे अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उसमे देश विदेश से हजारो आर्य नर-नारी सम्मिलित हुए, किन्तु हम उसमे आर्य समाज को, आर्य जनता को कोई नई दिशा नहीं दे सके। सचार माध्यमो, समाचार पत्रो, दूरदर्शन, रेडियो आदि ने उस महासम्मेलन को कोई विशेष महत्व नहीं दिया। परिणामत सचार माध्यमो (मीडिया) के द्वारा आर्य समाज का दृष्टिकोण जनता तक नहीं पहुच सका। इसलिए प्रस्तावित महासम्मेलन की आवश्यकता महसूस की गई। आज आर्य समाज को देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एव सास्कृतिक समस्याओ से जोडने की आवश्यकता है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के दूसरे समुल्लास से ले कर छठे समुल्लास तक महर्षि दयानन्द ने इन्हीं समस्याओं की चर्चा की है।

कुछ आर्यजनों का मत है कि यह सम्मेलन बहुत शीघ्र हो रहा है, अक्टूबर की बजाए फरवरी या मार्च २००२ में यह सम्मेलन होना चाहिए। एक पक्ष यह भी सामने आया है कि क्योकि वर्तमान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली) का कार्यकाल अक्टूबर मे समाप्त हो रहा है और नवम्बर में नई कार्यकारिणी का चुनाव होना है, इसलिए भी सभाधिकारी शीघ्रता मे है। यदि यह बात कुछ अंश तक ठीक भी हो, तब भी दिल्ली मे एक अन्य अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने मे हर्ज क्या है? छह महीने बाद तो लोकसभा का सत्र भी सरकार द्वारा आयोजित कराया जाता है। फिर दिल्ली भारत की राजधानी है। सवाल तो इस महासम्मेलन के लिए आर्थिक, सामाजिक ससाधन जुटाने का है? इसके लिए धनबल एव जनबल की आवश्यकता होगी। अकेले दिल्ली मे ३५० आर्य समाजे है। फिर यहा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भी है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भी यहा है। फिर इस सम्मेलन के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने भोजन के लिए ३५ लाख रुपये एव २० लाख रुपये नकद देने की घोषणा की है। अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओ ने भी सहयोग देने की घोषणा की है।

इस प्रस्तावित आर्य महासम्मेलन से यदि देश की जनता को एक नई दिशा मिलती है, तो इसमे आपत्ति क्या है? आज देश मे धार्मिक पाखड एव अन्धविश्वास जिस प्रकार बढ रहे है, सामाजिक क्षेत्रो मे जातिवाद, बिरादरीवाद जिस प्रकार हावी हो रहा है, स्त्रियो के प्रति अत्याचार, शोषण जिस कदर बढ रहा है उसको रोकने के लिए आर्य समाज के अलावा और कोई नही। राजनीतिक क्षेत्रो मे अपराध और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की बात आर्य समाज के अलावा बहुत कम लोग करते है। इसी कारण आज आजादी के ५४ वर्ष बाद भी प्रशासन, राजकाज, चिकित्सा विज्ञान, तकनीकी शिक्षा, प्रशासनिक सेवाओ मे अग्रेजी हावी है। इन सब बातो को आर्य महासम्मेलन के मच से ही उठाया जा सकता है। हा, आयोजको को उन सब त्रुटियो को नही दोहराना चाहिए, जो मुम्बई महासम्मेलन के बारे मे कही जा रही है। फिर दिल्ली मे सचार माध्यमो की, मीडिया सुविधा की कमी नही। फिर दिल्ली के आसपास के पजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान आदि के लोग भारी सख्या मे यहा आ सकते है। अन्य प्रान्तो से भी लोग यहा आयेगे। इसलिए दिल्ली मे होने वाला अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आर्य समाज के लिए एक और सुनहरा अवसर है, जिसके द्वारा वह राष्ट्र को नई जागृति का, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एव सास्कृतिक जागरण का एक नया सदेश दे सकता है।

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिह कालेज, करनाल

न्याय के लिए गुहार

अक्सर समाचार पत्रो के माध्यम से यह सुनने को मिलता है कि लडकी को शादी के बाद और दहेज के लिए उसका पति या ससुराल के अन्य लोग दबाव देकर सताते है। परन्तु लडकी का अपने पति या ससुराल के किसी अन्य सदस्य से मतभेद हुआ नहीं, कि दहेज के लिए सताने का झूठा इल्जाम लगा कर वह सास-ससुर, जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी, ननद-ननदोई, बच्चो यानी सभी सदस्यो को थाने मे केस दर्ज करा कर फसा देती है। ऐसी हालत मे परिवार के सभी सदस्यो को फरार हो कर अज्ञातवास करते हुए बचाव का उपाय करना या गिरफ्तार होकर जेल जाना पडता है। ऐसे में जिन पर ऐसी बीतती है, वही पीडा जानते हैं। सच क्या है, या झूठ क्या है, यह तो जाच का विषय है। परन्तु एक लडकी के झूठे बेबुनियाद इल्जाम लगा देने से ही पूरे परिवार के सदस्यों के जीवन को बर्बाद कर देना क्या जायज है? समाज मे बराबर ऐसे उदाहरण आते है। परन्तु सामाजिक कार्यकर्ता इस विषय पर मौन हैं। कृपया आप सभी ऐसी परिवारो से जुडे और थोडा सा दर्द महसूस करे।

कुछ सुझाव

कुछ सुझाव घर, समाज व देश हित मे इस प्रकार हैं . (१) पूरी जाच के बाद ही दोषी को सजा हो। (२) दहेज और गुजारा भत्ता दोनो बद हो, क्योकि गुजारा भत्ता तो लड़की को दहेज ही देने के समान है। (३) अगर दो परिवारो मे अनबन हो, तो तुरन्त ही दोनो पक्षो को अलग अलग हो जाना चाहिए, ताकि कानून की आड़ मे कोई भी न झुलसे। ऐसी परिस्थिति मे ईमानदारी से लड़के वाले जो सामान शादी के समय आया था तथा लडकी का सामान वधू पक्ष को वापस कर दे। खर्चे के बाबत कुछ ज्यादा देना चाहे तो यह वर पक्ष वालों की मर्जी से दे सकते है। (४) लडकी के घर की चाय-पानी भी न पिये, जैसे कि पहले प्रचलन था।

वेद प्रकाश, हरमू रोड, रांची

एकांकी

आर्यों का 'राजधर्म'

□ श्री हीरालाल आर्य

('राजधर्म' एकाकी वास्तविक घटना पर आधारित है। आर्य समाज के महान प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की आर्य नगरी शाहपुरा मे पदार्पण दिनाक ८ मार्च १८८३ को हुआ तथा यहा से प्रस्थान दिनाक २८ मई १८८३ को। महर्षि के परम भक्त एव अनन्य प्रेमी तत्कालीन आर्य नरेश सर नाहरसिह वर्मा के.सी आई ई को मनुस्मृति के उपदेश, धर्म और राजनीति की प्रेरणा देकर अपना कर्तव्य बोध कराया। इसी घटना का चित्रण इस एकाकी मे है। पात्र सभी वास्तविक हैं, कोई काल्पनिक नही। महर्षि को रेतिया कुएँ के पास नाहर निवास में नई निर्मित कुटिया मे ठहराया गया था जिसे आज महर्षि कुटिया के नाम से पुकारा जाता है।)

प्रथम अंक

प्रथम दृश्य

(ग्रीष्म ऋतु सायकाल ५-६ बजे का समय है। गर्मी का प्रभाव कम हुआ है। हरे हरे वृक्षो की शीतल छाया, शीतल सुगन्धित पवन, फिर पक्षियो का मधुर कलरव मन को आह्लादित कर देता है। नाहर निवास के बाहर महर्षि कुटिया के पास खुले आगन मे महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य नरेश सर नाहरसिह वर्मा दोनो कुर्सियो पर विराजमान है और स्व पोशाको मे सुसज्जित है।) पर्दा खुलता है।

राजाधिराज— (झुक कर) नमस्ते, स्वामी जी महाराज!

महर्षि— (स्नेह भाव से) राजन् नमस्ते!

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, आपका शाहपुरा पदार्पण हमारे लिए परम सुखद एव सौभाग्यकारी है।

महर्षि—राजन्, आपका अगाध स्नेह मुझे यहा खीच लाया है। मै यहां आ कर अतीव प्रसन्नता अनुभव कर रहा हू।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, आज राजधर्म पर कुछ चर्चा कर हमारा मार्ग प्रशस्त करे।

महर्षि— राजन्, राजा प्रजापालक होता है। मनुस्मृति मे कहा है **"क्षत्रियस्य परमो धर्मः प्रजानामेव पालनम्"** अत राजा को सदैव प्रजा के सुख एव कल्याण मे तत्पर रहना चाहिए।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, राजा तो वशानुगत, निरकुश एव स्वेच्छाचारी होता है।

महर्षि—राजन्, यह कदापि सत्य नहीं है। मनुस्मृति का सातवा, आठवा और नवा अध्याय राजधर्म को ही दर्शाते हैं।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, राजा कैसा होना चाहिए?

महर्षि—राजन्, सब सभासदो मे जो सर्वोत्तम गुण, कर्म, स्वभावयुक्त महान् पुरुष हो, वही राजा या सभापति है, जो जनता का प्रतिनिधि होता है।

(बीच मे सेवक का प्रवेश। एक सेवक ट्रे मे शीतल सुगन्धित, मधुर पेय ले कर उपस्थित होता है। स्वामी जी और राजाधिराज दोनो पेय ग्रहण करते हैं। सेवक ट्रे ले कर लौट जाता है।)

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, स्वेच्छाचारी राजा होने मे क्या बुराई है?

महर्षि—राजन्, अकेला राजा स्वाधीन या उन्मत्त होके प्रजा का नाशक होता है। इसलिए किसी एक को राज्य मे स्वाधीन न करना चाहिए, जैसे सिह कई हृष्ट पुष्ट पशुओ को मार कर खा जाता है।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, आपने बहुत अच्छी बात बताई। अब यह बताइये कि शासन कैसे उत्तम रीति से चल सकता है?

महर्षि— राजन्, राज्य शासन को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए तीन सभाओ का होना आवश्यक है। (१) विद्यार्य सभा (२) धर्मार्य सभा (३) राजार्य सभा।

राजाधिराज— स्वामी जी महाराज, इन सभाओ का गठन कैसे होता है? कृपया स्पष्ट करावे।

महर्षि—राजन्, इन सभाओ मे दो प्रकार के सदस्य होते है (१) राजपुरुष (२) प्रजा पुरुष। राजपुरुष से अभिप्राय कुछ राज्याधिकारी तथा कुछ राजा द्वारा मनोनीत विशिष्ट क्षेत्रो के विशिष्ट व्यक्तियो से है और प्रजा पुरुष से अभिप्राय निर्वाचित सदस्यो से है।

प्रजा द्वारा चुने हुए सभासद ही मिल कर एक सभापति या राजा का चुनाव करते हैं।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, ऐसे प्रजातत्र की क्या विशेषता है?

महर्षि—राजन्, राजा जो सभापति हैं, तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राजा-सभा के अधीन रहती है। यही प्रजातत्र का आदर्श रूप है।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, इन सभासदो के चुनाव मे किस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए?

महर्षि— राजन्, इन तीन सभाओ मे मूर्खों को कभी भर्ती न करे, किन्तु सदा विद्वान् और धार्मिक पुरुषो का ही स्थापन करे। सैकडो मूर्खों के बजाय एक विद्वान्, धार्मिक पुरुष की बात अनुकरणीय होती है।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, फिर सभासद् किस योग्यता के होने चाहिए?

महर्षि—राजन्, महाविद्वानों को विद्या सभा अधिकारी, धार्मिक विद्वानो को धर्मसभा अधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषो को राजसभा के सभासद् और उन सबमे जो सर्वोत्तम गुण, कर्म, स्वभावयुक्त महान पुरुष हो, उसको राजसभा का पतिरूप सभापति मानना चाहिए।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, मनुस्मृति मे दण्ड का क्या प्रावधान है?

महर्षि— राजन्, दण्ड ही धर्म है। दण्ड अच्छी प्रकार विचार के धारण किया जाय, तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचारे चलाया जाय, तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, दण्ड किस आधार पर दिया जाना चाहिए?

महर्षि—राजन्, जो अपराध करे उसको सदा दण्ड देवे और अनपराधी को दण्ड कभी न देवे। जब राजा न्यायासन पर बैठ न्याय करे तब किसी का पक्षपात न करे किन्तु यथोचित दण्ड देवे, चाहे पिता, आचार्य, मित्र, स्त्री, पुत्र और पुरोहित ही क्यो न होवे।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, किसको कितना दण्ड देना चाहिए?

महर्षि—राजन्, जिस अपराध मे साधारण मनुष्य पर एक पैसा दण्ड हो, उसी अपराध मे राजा को सहस्र पैसा दण्ड देवे। अर्थात् साधारण मनुष्य से राजा को सहस्र गुणा दण्ड होना चाहिए। मन्त्री अर्थात् राजा के दीवान को आठ सौ गुणा, उससे न्यून को सात सौ गुणा दण्ड हो। जिसका जितना ज्ञान और जितनी प्रतिष्ठा अधिक हो, उसको अपराध मे उतना ही अधिक दण्ड होना चाहिए। यही मनुस्मृति का विधान है।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, धर्म और राजनीति का क्या सम्बन्ध है?

महर्षि—राजन्, धर्म से ही राजनीति विशुद्ध बनी रहती है और उससे कर्तव्य की प्रेरणा निरन्तर मिलती रहती हैं। ससार मे एक धर्म ही सुहृद् है, जो मृत्यु के पश्चात् भी साथ चलता है। सबका सग छूट जाता है परन्तु धर्म का सग कभी नही छूटता। अत धर्म का हनन कभी नहीं करना चाहिए।

हा, यहा एक बात और स्पष्ट कर देता हू। हे राजन्, धर्म का अर्थ सकीर्ण न होकर व्यापक है। विभिन्न मत-मतान्तर धर्म की श्रेणी मे नही आते। मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण बताये है— धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध। इनको जीवन मे धारण कर तदनुकूल आचरण करना ही धर्म है।

राजाधिराज—स्वामी जी महाराज, आज आपने राजधर्म के गम्भीर तथ्यो पर बडा सुन्दर प्रकाश डाला है। सचमुच मे, आपने मुझे कर्तव्य बोध कराया है। मै हृदय से आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हू और यह विश्वास दिलाता हू कि मै अपने इस छोटे से राज्य मे आपके द्वारा निर्देशित धर्म और राजनीति के दिशा निर्देशो की पूर्ण पालना करूगा जिससे एकआदर्श राज्य व्यवस्था कायम हो सके।

महर्षि—राजन्, तथास्तु। (बडी नम्रता और आत्मीय भाव से) एक दूसरे को अभिवादन (नमस्ते) करते हुए राजाधिराज अपने निवास की ओर तथा महर्षि कुटिया की ओर प्रस्थान करते है।

(पर्दा गिरता है।)

शाहपुरा, भीलवाडा (राजस्थान)

भारत स्तुति

□ श्री सुरेशचन्द्र वात्स्यायन

हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से लगभग २२०० वर्ष पहले १७०० ईसा पूर्व मे अरब देश के महान कवि अल्लाब लावी द्वारा लिखी गई कविताओ का सग्रह खलीफा हारून रशीद के दरबारी कवि अस्माई मलेकुम शरीफ ने अपने दीवान सीरुल उकूल् मे किया है। इस दीवान के पृष्ठ ११८ पर दी गई कविता के अरबी मूल हिन्दे फराद कल्लाहो का हिन्दी काव्यानुवाद।

धन्य धन्य तू,
अयि भारत भू!
हिन्द भूमि तू अभिनद्या है,
पावन है तू अभिवद्या है,
अभिवद्या इसलिए, क्योकि तू है
उदयाचल सच के प्रकाश का,
ज्ञानगर्भ प्रभु के प्रताप का,
अयि भारत भू,
धन्य धन्य तू!
वेद चार तेरी कृतिया है,
ये प्रकाश की आकृतिया है,
आकृतिया इसलिए, क्योकि ये
ओज है सौम्य उषाकाल का,
ऋषि जीवन की चालढाल का,
अयि भारत भू,
धन्य धन्य तू
ऋषि मे जगी वेद ध्वनिया है,
ध्वनिया ये तेरी निधिया है,
निधिया इसलिए, क्योकि तू
ऋषि मन मे करती निवास है,
ऋषि कुल का तुझमे निवास है,
अयि भारत भू,
धन्य धन्य तू!
ब्रह्मज्ञान की जो विधिया है,
साम यजुष् वे दो कृतिया है,
कृतिया ये इसलिए, क्योकि तू
जननी इनकी युगल ज्योति की,
कहो सभी, "पूजा इन सबकी,
अयि भारत भू,
धन्य धन्य तू!।
ऋक् और अथर्व ये तुम्हारे,
वदनीय वेद है हमारे,
वदनीय इसलिए, क्योकि तू
ज्योति विश्वबधुत्व की सदा,
ज्योति तुम्हारी है यह सपदा,
अयि भारत भू,
धन्य धन्य तू!

१८०, माडल टाउन, लुधियाना (पजाब)

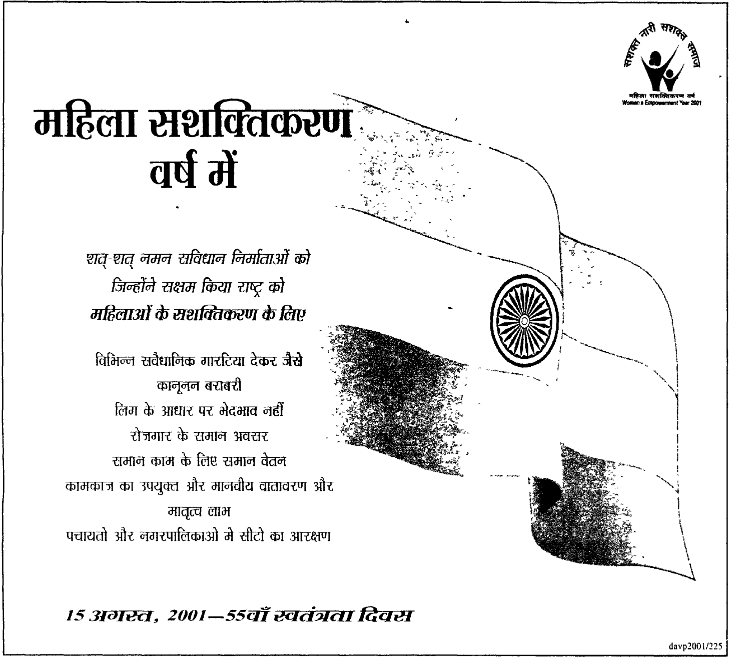

सशक्त नारी सशक्त समाज
महिला सशक्तिकरण वर्ष
Women's Empowerment Year 2001

महिला सशक्तिकरण
वर्ष में

शत्-शत् नमन सविधान निर्माताओं को
जिन्होंने सक्षम किया राष्ट्र को
महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए

विभिन्न सवैधानिक गारटिया देकर जैसे
कानूनन बराबरी
लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं
रोजगार के समान अवसर
समान काम के लिए समान वेतन
कामकाज का उपयुक्त और मानवीय वातावरण और
मातृत्व लाभ
पचायतो और नगरपालिकाओ मे सीटो का आरक्षण

15 अगस्त, 2001—55वाँ स्वतंत्रता दिवस

davp2001/225

जहां हो नारी का सत्कार, देवियां करतीं वहीं विहार!

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता·। —मनुस्मृति

इडा, भारती और सरस्वती का देवियो के रूप मे वेद मे उल्लेख है। ये क्रमश अन्न, विद्या और कला की देविया थी। कालान्तर मे दुर्गा या काली शक्ति की, लक्ष्मी धन·की और सरस्वती विद्या की देवी के रूप मे समादृत हुई।

देवता शब्द सस्कृत मे स्त्रीलिग है, हिन्दी मे पुलिग प्रचलित हो गया है। मनु का आशय देवियो से है, न कि इन्द्र, अग्नि, वायु, वरुण आदि देवो से।

जहा नारी का आदर सम्मान होता है, वहा समृद्धि होती है, राष्ट्र सशक्त होता है और नागरिक शिक्षित, विद्वान्, सभ्य, सुसस्कृत और कलाकार होते है।

मानव जीवन की सार्थकता, सफलता तभी है, जब राष्ट्र इतना सबल हो कि आततायी उसकी ओर आखे न उठा सकें, इतना समृद्ध हो कि कोई नागरिक अभावग्रस्त न हो और सभी नर-नारी स्वस्थ, प्रसन्न, गीत, नृत्य, चित्र आदि कलाओ मे प्रवीण हो और उनका आनन्द लेते हो।

जहा माताए प्रभुताशालिनी, सुशिक्षित, सुसस्कृत होगी, वहा सन्ताने भी सिह के समान पराक्रमी, बृहस्पति के समान विद्वान् और गन्धर्वो के समान कलाप्रेमी होगी।

जो लोग मध्यकाल मे कन्याओ को अशिक्षित रखने, स्त्री को भार्या भोग्या मान कर असूर्यम्पश्या बना कर पर्दे मे रखने का पाप करते रहे, उनकी भूल का फल देश ने एक हजार वर्ष तक दास रह कर भुगता।

इन एक हजार वर्षो मे कितने ही विद्वान्, समाजसुधारक, धर्मगुरु हुए। पर किसी ने नारी की दशा सुधारने के लिए कानी अगुली भी नहीं हिलाई। स्वामी दयानन्द ने पहले पहल इस महाव्याधि को पहचाना और स्त्रियो की मुक्ति का शखनाद किया।

कोई स्त्री पति की चिता पर सती नही होगी, विधवाओ का पुनर्विवाह होगा, पुत्रियो को वैसे ही शिक्षा दी जायेगी, जैसे पुत्रो को दी जाती है। इतना ही नहीं, उन्हे वेदाध्ययन का भी अधिकार होगा, जो उस समय ब्राह्मणो ने केवल अपने तक ही सीमित कर लिया था।

आर्य समाज स्त्रियो की सर्वांगीण उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहा है। बाद मे अनेक सस्थाए भी जागरूक हुई। फलस्वरूप आज भारतीय नारी प्रत्येक क्षेत्र मे पुरुष के समकक्ष हो कर खडी है।

पर अभी मजिल दूर है। गाव देहात मे, और अल्पशिक्षित, अल्प आय वर्ग मे नारियो की स्थिति मे सुधार की बडी आवश्यकता है। सभी को उसके लिए एकजुट हो कर भरसक प्रयत्न करना पडेगा।

रामायण और यज्ञ

❑ श्री जयदेव आर्य

वैदिक साहित्य उपदेशात्मक है, जिसमें मनुष्यो को सब प्रकार के ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ उसके करने योग्य और न करने योग्य कर्मों का उपदेश भी दिया गया है। इस साहित्य के अतिरिक्त एक सर्वथा लौकिक या ऐतिहासिक आदर्श व्यक्ति श्रीराम के जीवन को आदर्श बना कर सबसे पहला रसयुक्त और शिक्षाप्रद महाकाव्य लिखा गया, वह महाकवि वाल्मीकि द्वारा लिखित "रामायण" महाकाव्य है। भारत मे ही नहीं, बाहर भी कितने ही देशो मे रामायण की कथा अत्यन्त प्रसिद्ध और लोकप्रिय है। भारत मे राम और कृष्ण को जो महत्त्व प्राप्त है, वह किसी और व्यक्ति को प्राप्त नहीं है। श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम की उपाधि से स्मरण किया गया है और उन द्वारा किया गया आचरण सभी मनुष्यो द्वारा आचरण किये जाने योग्य माना गया है। ऐसी स्थिति मे भगवान् राम और उनके युग में यज्ञो का क्या महत्त्व था, यह जानना बहुत आवश्यक और उपयोगी है। वाल्मीकि ने स्थान-स्थान पर श्रीराम, उनकेपरिवारजनो, ऋषियो तथा अन्य अनेक लोगो द्वारा यज्ञ किये जाने का उल्लेख किया है। उनमे से कुछ स्थलो का वर्णन हम सक्षेप मे यहा कर रहे है।

जब महाराज दशरथ को कोई सन्तान नहीं हुई, तब उन्होने एक पुत्रेष्टि यज्ञ का आयोजन किया। इसके लिए विशेष रूप से ऋषि ऋष्य शृग को अयोध्या लाया गया। उनकी सहायता के लिए अन्य भी अनेक ऋषि नियुक्त थे। तब महाराज दशरथ ने अपने अमात्यो को आज्ञा दी 'जो यजमान विधि से हीन यज्ञ करता है, वह नष्ट हो जाता है। इसलिए इस विशाल यज्ञ को विधिपूर्वक सम्पूर्ण किया जाए।'

ऋषि विश्वामित्र राक्षसो से अपने यज्ञ की पवित्रता की रक्षा के लिए ही राम लक्ष्मण को दशरथ से मागने आये थे, यह सबको ज्ञात ही है। अयोध्या से चल कर जब वे तीनो सरयू-गगा के मगम पर पहुचे तो ऋषि विश्वामित्र ने श्रीराम से कहा 'हे नरश्रेष्ठ, हम अब स्नान, ईश्वर का जप और हवन करके आज की रात सुखपूर्वक यही बिताएगे।'

जब ताडका मारी गई और ऋषि विश्वामित्र का यज्ञ पूरा हो गया, तो उन्होने श्रीराम से कहा 'मिथिला के राजा जनक एक महान् धार्मिक यज्ञ कर रहे है, अत हे नरश्रेष्ठ राम, हम भी वहा चलेगे।'

जब मिथिला को जाते हुए वे सोन नदी के किनारे पर ठहरे तो सूर्यास्त होने पर उन्होने स्नान करके अग्निहोत्र किया।

वनवास की आज्ञा होने पर जब श्रीराम माता कौशल्या के पास पहुचे तो 'वेदमत्रो से मगलाचरण करने वाली कौशल्या अग्नि मे आहुति दे रही थी।'

वनवास मे जब श्रीराम प्रयाग के पास पहुचे, तो उन्होने यज्ञो के उठते हुए धुए से ही यह अनुमान लगाया कि ऋषि भरद्वाज का आश्रम पास मे ही है। 'हे लक्ष्मण, तुम प्रयाग की ओर यज्ञाग्नि के उठते हुए उत्तम धूम को देखो। इससे मुझे लगता है कि मुनि का आश्रम निकट ही है।' ध्यान रहे कि "प्रयाग" का यह नाम ही इसलिए पडा कि वहा याग अर्थात् यज्ञ बहुत होते थे।

जब भरत व शत्रुघ्न वन मे जा कर रात को श्रीराम के पास रहे, तो अगले दिन 'रात्रि बीत जाने पर प्रात काल मित्रो से घिरे हुए वे तीनो भाई गगा मे स्नान के बाद यज्ञ और ईश्वर का जप करके राम के पास पहुचे।'

यही नही, वानर जाति के लोग भी वेद पढे हुए होते थे, अत यज्ञ भी अवश्य करते होगे। क्योकि वाल्मीकि ने राम वाले वर्णनो मे ही उनके सन्ध्या-यज्ञ आदि करने का वर्णन किया है, अत दूसरे लोगो द्वारा किये जाने वाले वर्णनो मे सन्ध्या-यज्ञ आदि का उल्लेख उन्होने नही किया।

जब हनुमान् जी ने राम-लक्ष्मण का परिचय पाने के लिए उनके पास जा कर अनेक बाते कही, तो श्रीराम ने उनकी विद्वत्ता की प्रशसा करते हुए यह भी कहा 'हे लक्ष्मण, जिसने ऋग्वेद न पढा हो, यजुर्वेद को धारण न किया हो और जो सामवेद न जानता हो, वह व्यक्ति ऐसे नही बोल सकता।' इसी प्रकार जब बाली सुग्रीव से लडने के लिए चला, तो तारा ने उसे भाई से लडने की बजाय प्रेम करने की सलाह दी और जब वह नहीं माना, तो उसकी विजय की कामना करने वाली और वेदमत्रो को जानने वाली उसने स्वस्तिवाचन (कल्याणकारक) के मत्र पढ कर उसे विदाई दी।'

इन प्रमाणो से सिद्ध है कि राम के समय मे सभी लोगो मे साय-प्रात सध्या-यज्ञ आदि करने का सामान्य प्रचलन था और यह अनिवार्य कर्तव्य माना जाता था। अत जो व्यक्ति स्वय को राम का भक्त कहते और मानते है, उन्हे स्वय भी राम के चरण- चिह्नो पर चलते हुए विधिपूर्वक वेदमत्रो के साथ अधिक-से-अधिक वैदिक यज्ञ करने कराने चाहिए।

एक और भीष्म

❑ श्री राजेशकुमार आर्य

भारत की धरती ने ऐसे वीर उत्पन्न किये है, जो अपनी माता की इच्छा के सामने अपनी कामनाओ का गला घोट देते थे, पिता के लिए जीवन दाव पर लगाने को तत्पर रहते थे। समय का चक्र घूमा और इतिहास अपने अगले चरण मे प्रवेश कर गया। महाराणा हम्मीर के वीर पुत्र क्षेत्रसिह का भी मुस्लिम आक्रमणकारियो से संघर्ष चलता रहा। दिल्ली, मालवा व गुजरात के सुल्तानो को हरा कर उन्होने मेवाड की धाक और प्रतिष्ठा मे वृद्धि की। महाराणा क्षेत्रसिह के बाद लक्षसिह (लाखा) महाराणा बने। इन्ही महाराणा के वीर पुत्र चण्ड ने, महाभारत के अजेय योद्धा, महारथी भीष्म के मार्ग का अनुकरण करते हुए भीष्म प्रतिज्ञा कर 'भीष्म' नाम पाया।

एक दिन मन्दौर के नरेश राणा मल्ल जी ने चण्ड से अपनी पुत्री का विवाह करने हेतु नारियल भेजा। ब्राह्मण नारियल लेकर महाराणा लाखा के दरबार मे उपस्थित हुए। ब्राह्मण ने कहा कि राजकुमार के लिए नारियल लाया हूं। तब हसी में महाराणा ने कहा . 'मैने तो समझा था कि आप इस बूढे के लिए नारियल लाए है और मेरे साथ खेल करना चाहते हैं।'

इसी समय राजकुमार चण्ड सभा मे आ गये। यह सुन कर उन्होने बड़ी नम्रता से कहा 'हसी के लिए ही सही, जिस कन्या का नारियल मेरे पिता ने अपने लिए कह दिया, वह मेरी माता के समान है। मै उसके साथ विवाह नही कर सकता।'

राणा ने बहुत समझाया, परन्तु चण्ड तनिक भी विचलित नही हुए। विवश हो कर राणा लाखा को नारियल अपने लिए ही स्वीकार करना पडा और क्रोधित हो कर बोले 'चण्ड, याद रखो, इस सम्बन्ध से जो पुत्र होगा, चित्तौड पर वही राज्य करेगा।' चण्ड ने भीष्म के समान प्रतिज्ञा करते हुये कहा 'पिता जी, मै प्रतिज्ञा करता हू कि मेरी माता से जो पुत्र होगा, वही सिहासन पर बैठेगा। मैं जीवन भर उसकी सेवा करूगा।'

इस रानी से एक पुत्र हुआ, जिसका नाम मुकुल (मोकल) रखा गया। जब वह पाच वर्ष का था, राणा गया तीर्थ की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। चण्ड ने मोकल का राजतिलक करके शासन प्रबन्ध सुचारु रूप से चलाया। प्रजा उनसे प्रसन्न थी।

यह देख कर राजमाता को सन्देह हुआ कि चण्ड मेरे पुत्र को हटा कर स्वय राज्य लेना चाहता है। जब चण्ड को पता चला, तो उन्होने बडे दुखी हो कर राजमाता से कहा 'मां, मैं आपके सन्देह को मिटाने के लिए मांडू जा रहा हू। किन्तु जब मेरी आवश्यकता हो, तो मै समाचार पाते ही आ जाऊगा।'

चण्ड के चले जाने पर राजमाता के भाई और पिता भी चित्तौड आ गये। वे मोकल को मारने का षड्यत्र रचने लगे। राजमाता ने दुखी हो कर चण्ड के पास पत्र लिखा और क्षमा मागते हुए सहायता मागी। सन्देश पाते ही चण्ड अपने प्रयत्नो मे लग गये और शीघ्र ही शराबी-कबाबी, व्यभिचारी राणा मल्लजी के साथ सभी दुष्टो का सफाया कर दिया।

राज्य मे पूरी शान्ति हो गई। भीष्म चण्ड चित्तौड मे ही रहे। आगे चल कर इन्ही मोकल के पुत्र महाराणा कुम्भा उद्भट वीर, प्रकाण्ड विद्वान्, रणनीति के कुशल ज्ञाता और ललित-कलाओ के प्रेमी हुए, जिन्होने मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को ७ बार हराया, चित्तौड का विजय-स्तम्भ उनकी यश पताका को आज भी लहरा रहा है।

तैमूर लंग की कीमत

इतिहास के अनुसार दुनिया के कट्टर और खूखार, महत्वाकाक्षा, अहकार और जवाहरात की तृष्णा से पीडित तैमूर ने बगदाद मे एक लाख मरे हुए व्यक्तियो की खोपडियो का पहाड सा खडा करवाया था। इसी बात से उसकी क्रूरता का पता चल जाता है।

एक समय की बात है कि बहुत से गुलाम पकड कर उसके सामने लाये गये। तुर्किस्तान का विख्यात कवि अहमदी भी दुर्भाग्य से पकडा गया। जब वह तैमूर के सामने उपस्थित हुआ तो तैमूर ने अभद्र हसी हसते हुए उससे दो गुलामो की ओर इशारा करते हुए पूछा—सुना है कवि पारखी होते है, बताओ इनकी कीमत क्या होगी?-

अहमदी ने सरल शब्दो मे कहा— 'इनमे से कोई भी चार हजार अशर्फियो से कम कीमत का नही है।' तैमूर ने अभिमान से पूछा— 'मेरी कीमत क्या होगी? अहमदी ने निश्चिन्त भाव से उत्तर दिया— 'यही कोई २४ अशर्फी। तैमूर क्रोध से आग बबूला हो गया और चिल्ला कर बोला— 'बदमाश! इतने मे तो मेरी सदरी भी नही बन सकती।'

अहमदी ने बिना किसी आवेश या उत्तेजना के उत्तर दिया— "बस यह कीमत उसी सदरी की है, आपकी तो कुछ भी नही। जो मनुष्य पीडितो की सेवा नही कर सकता, बडा हो कर छोटो की रक्षा नही कर सकता, जो असहायो, अनाथो की सेवा नही कर सकता, मनुष्य से बढ कर जिसे अभिमान प्यारा हो, उस इन्सान का मूल्य चार कौडी भी नहीं। उससे अच्छे तो ये गुलाम ही है, जो किसी के काम तो आते है।"

आट्टा (पानीपत)

आर्य नेता सोमनाथ मरवाह का निधन : समूचे आर्य जगत् में शोक

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता और प्रख्यात विधिवेत्ता श्री सोमनाथ मरवाह का १६ अगस्त २००१ को रात दो बजे हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया।

श्री मरवाह पिछले कुछ दिनो से बीमार थे और उन्हे नैशनल हार्ट इस्टीट्यूट मे भर्ती करवाया गया था।

श्री मरवाह की आयु ९२ वर्ष की थी। अपने पीछे वह पत्नी, दो पुत्र, पुत्री और भरा-पूरा परिवार छोड गए। श्री मरवाह के निधन का समाचार सुनते ही समूचे आर्य जगत् मे शोक की लहर दौड गई। उन्हे श्रद्धाजलि देने के लिए बडी सख्या मे लोग उनके निवास स्थान पर पहुचने लगे।

श्री सोमनाथ मरवाह का वर्षो से आर्य समाज से गहरा सम्बन्ध था। वह आर्य समाज की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक सभा केवर्षो तक कोषाध्यक्ष और कार्यकारी प्रधान रहे। वह गुरुकुल कागडी के कुछ वर्षो तक विजिटर और कुलपति भी रहे।

१७ अगस्त को प्रात काल दस बजे उनकी शव यात्रा उनके निवास सी-३ व ४, ग्रीनपार्क ऐक्सटैशन, नई दिल्ली-१६ से चल कर १० ३० बजे आर्य समाज मन्दिर मार्ग पहुची। वहा आधे घटे तक उनकेशरीर को आर्यजनो के दर्शनार्थ रखा गया। वहा डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी तथा सदस्य उपस्थित थे। इन दोनो सस्थाओ के प्रधान श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा, वरिष्ठ उपप्रधान श्री विश्वनाथ, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के महामत्री श्री मदनलाल खन्ना, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री प्रबोध महाजन, श्री हरवशलाल कपूर, श्री रामनाथ सहगल डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के उपप्रधान डा० सी० प्रकाश, श्री आर० पी० सिघल, श्री शान्तिलाल सूरी, आर्य समाज मन्दिर मार्ग के मत्री श्री डी० आर० गुप्ता, श्रीमती शीतल शर्मा, डायरैक्टर पब्लिक स्कूल्स, श्री जी० डी० जिन्दल, डायरैक्टर पब्लिकेशन, प्रिसिपल मोहनलाल, श्री सुदेशनन्दा, श्री आर० आर० भल्ला तथा डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्य कार्यकर्ताओ ने माल्यार्पण करके दिवगत नेता को श्रद्धाजलि दी। स्वामी अग्निवेश भी इनमे थे।

गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो ने स्वस्तिवाचन तथा शान्तिकरण मत्रो का पाठ किया। ११ बजे शव यात्रा आसफअली रोड पर स्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय की ओर चली।

सार्वदेशिक सभा के दयानन्द भवन पहुचने पर सभा के महामत्री श्री वेदव्रत शर्मा, श्री विमल वधावन, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल, श्री जगदीश आर्य श्री चन्द्रकिरण और श्री अरुण तथा सभा के सभी कार्यकर्ताओ ने माल्यार्पण द्वारा दिवगत नेता को श्रद्धाजलि दी।

दयानन्द भवन से चल कर अर्थी आर्य समाज दीवान हाल पहुची। वहा भी पुष्पमालाओ से दिवंगत आत्मा को श्रद्धाजलि दी गई।

१२ ३० बजे शव यात्रा निगमबोध घाट पहुंची। वहां दिल्ली के विभिन्न भागो से पहले ही शोकाकुल आर्यजन पहुंचे हुए थे। यहा भी अनेक संस्थाओं की ओर से शव पर पुष्प मालाएं चढ़ाई गईं। शव को यमुना मे स्नान कराने के बाद चिता पर रखा गया। वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ। वेद पाठ गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो ने किया। डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के लोगो के अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के महामत्री श्री वेदव्रत शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रो० शेरसिह, श्री राज भल्ला, आर्यवीर दल के आचार्य श्री देवव्रत, श्री अजय भल्ला, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, दिल्ली राज्य सरकार के शिक्षा मत्री श्री योगानन्द शास्त्री, श्री दत्तात्रेय तिवारी, श्री रविकान्त, प्रिं० चन्द्रदेव, आदि प्रमुख आर्य नेताओ एव विद्वानो ने उपस्थित रह कर दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धा व्यक्त की।

उसके बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय के समक्ष तथा आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल के समक्ष पुन श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

इसके पश्चात् दोपहर १२ ३० बजे पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्तिम सस्कार निगम बोध घाट पर सम्पन्न हुआ।

अन्त्येष्टि में आर्य जगत् के लगभग सभी प्रमुख नेता सम्मिलित हुए। आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा, सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री वेदव्रत शर्मा, प्रो० शेरसिंह, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के महामंत्री श्री मदनलाल खन्ना, श्री प्रबोध महाजन, श्री हरबश लाल कपूर, श्री रामनाथ सहगल, श्री शान्तिलाल सूरी, श्री डी० आर० गुप्ता, श्रीमती शीतल शर्मा आदि गण्यमान्य लोगों ने अन्त्येष्टि में भाग लिया।

आर्य समाज मन्दिर मार्ग में १८ अगस्त को सायंकाल ४ ३० से ५ ३० तक श्रद्धांजलि सभा एव रस्म पगडी होगी।

श्री सोमनाथ मरवाह का डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओ, दिल्ली आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से भी गहरा सम्बन्ध था। डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी के सुचारु रूप से संचालन के लिए श्री मरवाह निरन्तर सलाहकार के रूप मे काम करते रहे।

श्री मरवाह का जन्म एक सम्पन्न परिवार मे हुआ। उनकी शिक्षा-दीक्षा डी० ए० वी० सस्थान मे हुई। उसी समय आर्य समाज से उनका सम्बन्ध हुआ। वे महात्मा हसराज एव महात्मा आनन्द स्वामी से अत्यन्त प्रभावित रहे।

श्री सोमनाथ मरवाह का विख्यात अधिवक्ता के रूप मे विधि वेत्ताओ मे अत्यन्त सम्मान था। वह चुनाव कानून, कम्पनी कानून, आर्बिट्रेशन कानून के विशेषज्ञ थे। देश के बडे बडे औद्योगिक सस्थान कानूनी मामलो मे उनसे सलाह लेते थे।

(पृष्ठ ४ का शेष)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और ......

आर्य समाज की सस्थागत भूमिका को रेखाकित करने के लिए पर्याप्त है।

सभी आर्यसमाजी राष्ट्रवादी थे

व्यक्तिगत रूप से कितने आर्यसमाजियो ने स्वाधीनता सघर्ष मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भाग लिया, इसकी गिनती करना वर्तमान लघु निबन्ध मे न सभव है, न ही व्यावहारिक। इतना निश्चित है कि आर्यसमाज ने राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत जिन आर्यों का बडी सख्या मे निर्माण किया, चाहे अनचाहे उन्हीं के हाथो मे आगे चलकर स्वाधीनता सग्राम की बागडोर आयी। १८७५ से १८८५ तक के राष्ट्रीय मच के रिक्त स्थान को यदि किसी ने अपने कर्तव्य से भरने का प्रयत्न किया, तो वे आर्यसमाजी ही थे। आर्यसमाज ने प्रखर राष्ट्रवाद की जो लहर चलायी थी, उसके चलते १९०५ के पश्चात् काग्रेस मे भी अग्रेजपरस्तो की बजाय राष्ट्रवादियो का वर्चस्व बढने लगा। लाल-बाल-पाल के युग मे ये तीनो महान उग्रपथी नेता स्पष्टत आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित थे। क्रान्तिकारियो और गरम दल के नेताओ को आर्यसमाजियो का स्पष्ट समर्थन प्राप्त था।

प्रमुख क्रान्तिवीर

कितने क्रान्तिकारी आर्यसमाजी थे या आर्य समाज के प्रखर राष्ट्रवाद से प्रभावित थे, इसके विस्तृत विवरण मे न जाते हुए इतना कहना अभी पर्याप्त होगा कि उस युग के चार प्रमुख आर्यनेताओ स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज, लाला खुशहालचन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) और महाशय कृष्ण— के सुपुत्र सक्रिय क्रान्तिकारी थे। स्वामी श्रद्धानन्द के ज्येष्ठ सुपुत्र हरिश्चन्द्र विद्यालकार १९१४ में ही विदेश चले गए और वहीं से स्वाधीनता के लिए क्रान्तिकारी प्रयास करते रहे। शेष तीनो आर्यनेताओ के सुपुत्रों श्री बलराज, श्री रणवीर एव श्री वीरेन्द्र पर लाहौर बम काड मे मुकदमा चला और उन्हे लम्बी सजाए भी हुई। उस समय इन क्रान्तिवीरो के पिताओ की क्या स्थिति होगी? परन्तु तब भूत और भविष्य की चिन्ता किए बिना आर्य जनता स्वराज्य प्राप्ति के लिए क्रान्ति पथ पर अग्रसर थी।

क्रान्तिकारियों के पितामह एव महर्षि के अनन्य शिष्य श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा या तीन तीन पीढियों तक क्रान्तिपथ के पथिको— जिनमे राजस्थान के केसरीसिह बारहठ, पजाब के सरदार भगतसिह और उत्तर प्रदेश के रामप्रसाद बिस्मिल के परिवार सम्मिलित है— की चर्चा विस्तार से कर पाना यहा सम्भव नहीं है। चादनी चौक पर स्वामी श्रद्धानन्द का गोरी फौज की सगीनो के सामने नगी छाती तान कर खडे हो जाना, लाजपतराय का साइमन कमीशन का विरोध करते हुए शहीद हो जाना, भाई परमानन्द का स्वय को स्वाधीनता यज्ञ मे तिल तिल कर जला देना, हैदराबाद की निजामशाही के विरुद्ध आर्यो द्वारा महान सत्याग्रह का सचालन करना, वीर सावरकर द्वारा आर्य समाज की प्रेरणा पर देश-विदेश मे क्रान्ति की धूम मचा देना, लाहौर में आर्यवीर खुशीराम द्वारा सात गोलियां खा कर भी वन्देमातरम् का उद्घोष करते हुए शहीद हो जाना—आदि घटनाओं और व्यक्तियों की सूची में हजारो नाम जोडने के पश्चात् भी इससे कहीं अधिक अनजाने नाम छूट जाएगे। अत सक्षेप में इतना कहना पर्याप्त है कि सन् १९२० तक, कम से कम उत्तर भारत में स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान के लिए सिवाय आर्यसमाज के और कोई सस्था मैदान में नहीं थी।

सत्याग्रहों में भी

१९२१ में गांधी जी के राष्ट्रीय रगमंच पर आने के पश्चात् तो अहिसा और सत्याग्रह के उनके अभियान में समस्त आर्यसमाज व्यष्टि और समष्टि रूप में प्रत्यक्ष ही सम्मिलित हो कर स्वतंत्रता सघर्ष में कूद पडा। तभी तो पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने अमृतसर मे बोलते हुए कहा था, "जितने देशभक्त आर्यसमाज ने उत्पन्न किए है, उतने किसी अन्य ने नहीं किए।"

परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि आज इतिहास के नाम पर सरकारी पाठ्यक्रमों मे जो कुछ पढाया जा रहा है, उसमें आर्यसमाज के इस महान योगदान को उपेक्षित किया जा रहा है। कुछ वामपंथी इतिहासकारों ने तो स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज को भारत मे तथाकथित 'हिन्दू साम्प्रदायिकता' का जनक भी सिद्ध करने का कुत्सित प्रयास किया है।

खडित स्वतंत्रता प्राप्ति के इस स्वर्ण जयन्ती वर्ष मे आर्यसमाज द्वारा स्वतंत्रता सघर्ष में दिए गए बलिदानों की जानकारी नयी पीढ़ी तक प्रामाणिक रूप में पहुच सके, इसके लिए गम्भीर प्रयास करने की आवश्यकता है।

कालीबाग चौक, बेतिया (प० चम्पारण) बिहार-८४५४३८

समाचार जगत्

आर्य समाज मारिशस के प्रस्ताव पर

डा० भवानीलाल भारतीय का मारिशस में सघन वेद प्रचार

लघु भारत कहलाने वाले हिन्द महासागर मे स्थित मारिशस के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा उस देश मे सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना के सूत्रधार प० वासुदेव विष्णुदयाल की ९५वीं जन्म तिथि पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डा० भारतीय को सपत्नीक आमत्रित किया गया था। तदनुसार डा० भवानीलाल भारतीय तथा श्रीमती शान्ति भारतीय दिनांक १३ अप्रैल को प्रात इस द्वीप के वायुपत्तन पर जब एयर मारिशस के वायुयान से उतरे, तो सर्वश्री राजमन राधाकृष्ण, श्री सत्यप्रकाश भृगु आदि ने उनका माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। तदनन्तर मारिशस के वयोवृद्ध शतवर्षीय आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित से उनके लवानीर स्थित निवास पर भेट कर जब वे राजधानी पोर्टलुइस के आर्यसभा भवन मे पहुचे तो आर्य सभा के प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर तथा मत्री डा० उदयनारायण गजू आदि ने उनका भावभीना स्वागत किया। उनके निवास की सुचारु व्यवस्था दयानन्द भवन के अतिथि निवास मे की गई। सभा के मुख्य प्रबन्धक श्री आनन्द वर्धन ने डा० भारतीय के अगले कार्यक्रमो का निर्धारण तथा निष्पादन किया।

१५ अप्रैल को प० वासुदेव के जन्म ग्राम तायाक मे उनकी ९५वीं जन्म जयन्ती का समारोह आर्यसमाज के प्रधान डा० नीऊर की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि डा० भारतीय ने विस्तारपूर्वक प० वासुदेव की आर्य समाज के प्रति की गई सेवाओं का उल्लेख किया तथा उनके साहित्यिक योगदान पर अपने विचार रखे। तत्पश्चात् सम्पूर्ण मारिशस मे डा० भारतीय का सघन प्रचार कार्यक्रम आरम्भ हुआ। डेढ मास के इस प्रवास मे उन्होंने मारिशस के सभी जिलो की प्रमुख आर्यसमाजो में अपने प्रवचन तथा भाषण किये। जिन आर्य समाजों मे उनके सायकालीन प्रवचन हुए उनमे प्रमुख है— शामुनी, बातवा, माहेबुर्ग, गुडलैंड, त्रियोले, लालमाटी, लेवनीर, बोनाकेई, पाई, आमोरी, बोबासे, लेस्कालिए, क्वाजबाने, सैण्ट्रल फ्लाक, बेलरोज तथा लवांचेर आदि। इन प्रवचनो में वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि के शास्त्रीय एव आध्यात्मिक प्रसगो के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द के जीवन, व्यक्तित्व तथा विचारो पर भी विद्वान् वक्ता ने अपने विचार से इस देश की जनता को अवगत कराया।

मारिशस ब्राडकास्टिग कारपोरेशन के द्वारा डा० भारतीय के लगभग १५ वैदिक प्रवचन रेडियो के माध्यम से प्रसारित किये गये। इनमें से कुछ सीधे प्रसारण की परिधि के थे। मारिशस टेलीविजन पर उन्होने वैदिक उपासना पद्धति पर प्रकाश डाला तथा अमृतवाणी कार्यक्रम में स्वामी दयानन्द के अध्यात्मवाद को प्रस्तुत किया। इस बीच आर्य समाज के अन्तरग सदस्य श्री उग्रसेन देवपाल ने डा० भारतीय की भेट मारिशस की राष्ट्रीय मभा (ससद्) के अध्यक्ष श्री देवरमन्ना से करवाई। इस महत्वपूर्ण भेट मे मारिशस मे आर्य समाज तथा हिन्दी की स्थिति पर विस्तार से चर्चा हुई। मारिशस के प्रसिद्ध साहित्यकार तथा उपन्यासकार श्री अभिमन्यु अनत, आर्य लेखक श्री प्रह्लाद रामशरण, महात्मा गाधी संस्थान मे हिन्दी के प्रवक्ता डा० उदयनारायण गगू, शिक्षा विभाग से सेवा निवृत्त श्री सत्यदेव प्रीतम तथा प० वासुदेव के परिवार से उनकी भेट तथा सम्पर्क विशेष उल्लेखनीय रहे। इस बीच मारिशस की पुरोहित सभा ने प्रति शनिवार को सगोष्ठियो का आयोजन किया। इन गोष्ठियो और कार्यशालाओ में डा० भारतीय ने समग्र वैदिक साहित्य, स्वामी दयानन्द रचित सस्कारविधि का कर्मकाण्डीय पक्ष आदि विषयो पर अपने विचार रखे। ध्यातव्य है कि छोटे से देश (क्षेत्रफल ७२० वर्गमील) मारिशस मे लगभग ४५० आर्यसमाजे है। उनके अपने अपने भवन है तथा सैकडो पडित एव महिला पुरोहित सस्कारादि सम्पन्न कराते हैं। आर्य समाज का राजधानी पोर्ट लुइस स्थित तिमजिला भवन दयानन्द स्ट्रीट पर है, जहा विशाल सभा भवन, कार्यालय कक्ष, अतिथिशाला के साथ साथ डी० ए० वी० कालेज का परिसर भी है। २४ मई की रात्रि को डा० भारतीय ने स्वदेश के लिए प्रस्थान किया।

प्रेषक *आर्यसभा मारिशस*

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, जो कि दिल्ली से जयपुर जाते हुए लगभग १२० किमी पर बहुत ही रमणीय स्थान पर स्थित है, का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष २६, २७, २८ अक्टूबर २००१ (शुक्रवार, शनिवार, रविवार) को समारोहपूर्वक आयोजित किया जा रहा है। समारोह से एक सप्ताह पूर्व यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जायेगा। समस्त आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो, आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि इस समारोह मे अपनी आर्य समाजों के अधिक से अधिक सदस्यो सहित दाधिया पधारने की कृपा करें।

दिल्ली तथा दिल्ली के आसपास की आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो एव आर्य सस्थाओ से विशेष रूप से प्रार्थना है कि अपनी अपनी संस्थाओं की बसो से अथवा अपनी सस्था की ओर से बसो का प्रबन्ध करके उक्त समारोह मे अधिक से अधिक आर्य जनो एव बहनों के साथ पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढायें।

आर्य समाज सोहनगंज में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्यसमाज सोहनगज, सब्जी मडी दिल्ली मे ६३वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर १६ जुलाई से २२ जुलाई २००१ तक वेद प्रचार का आयोजन किया गया। प्रतिदिन प्रात· यज्ञ का आयोजन किया गया। रात्रि को साय ८ बजे से प० गुलाबसिह राघव जी के भजनो का कार्यक्रम हुआ। आचार्य योगेन्द्र कुमार शास्त्री की वेद कथा का आयोजन हुआ। आचार्य जी ने कहा कि हमे बडे लोगो का सदैव सम्मान करना चाहिये तथा परिवार मे सुख समृद्धि के लिये वेदो और गीता मे बताये गये मानवोचित धर्म का परस्पर व्यवहार करना चाहिये। शनिवार दिन मे सामवेद का पाठ व यज्ञ का आयोजन किया गया। महिला सत्सग मे सभा अध्यक्ष श्रीमती कृष्णा रहेजा ने महिलाओ को अपने परिवारो, विशेषकर बच्चो को सुसस्कारवान बनाने के लिये उत्तरदायित्व लेने को कहा।

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मडल के तत्वावधान मे शनिवार साय सरस भजन सध्या डा० सत्यपाल बेदार 'सरस' की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई, जिसमे गायको और कवियो ने श्रोताओ का मन मोह लिया। रविवार २२ जुलाई को मुख्य समारोह डा० ओमप्रकाश मान की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, जिसमे आर्य बाल सरक्षण गृह, पुलबगश के बच्चो ने श्री अखिलेश भारती के सयोजन मे ध्वज गीत प्रस्तुत किया। श्री ओमप्रकाश गर्ग द्वारा लिखित पुस्तक "शेरे पजाब लाला लाजपतराय" का विमोचन स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने किया। श्री गर्ग को शाल ओढा कर प्रशस्ति पत्र आदि देकर सम्मानित किया गया। समारोह का सचालन श्री ओम सपरा ने किया।

रक्षा बन्धन का पर्व मनाया गया

दिनाक ४ ८ २००१ को महर्षि दयानन्द माडल स्कूल (आर्य समाज मन्दिर) अलावलपुर मे रक्षा बन्धन का दिवस बडी धूमधाम से मनाया गया। हवन यज्ञ के पश्चात् एक छोटा सा रगारग कार्यक्रम किया गया, जिसमे स्कूल के बच्चो ने कविता, गीत आदि प्रस्तुत किये।

इसके बाद प्राचार्य महोदय ने इस दिन का महत्व बताते हुए कहा कि रक्षा बन्धन भाई-बहन के पवित्र स्नेह का प्रतीक है। इससे भाई-बहन का सम्बन्ध दृढ होता है तथा हमारी पुरानी परम्पराओ का परिचय मिलता है। इसका हमारे धर्म तथा सस्कृति से गहरा सम्बन्ध है।

कार्यक्रम के अन्त मे स्कूल की छात्राओ ने सभी छात्रो के माथे पर टीका लगा कर उनको राखिया बाधी तथा सभी उपस्थित सज्जनो तथा बच्चो को प्रसाद बाटा गया।

(पृष्ठ ५ का शेष)

कश्मीर में जनमत संग्रह की ......

प्रधानमत्री को यह शक्ति ही प्राप्त नहीं है कि वह सुरक्षा परिषद् के सम्मुख ऐसा वचन दे सके और तय हो चुके मामले को नये सिरे से खोल सके।

जब एक बार जम्मू कश्मीर राज्य महाराजा के अधिमिलन पत्र द्वारा भारत का अभिन्न अंग बन गया, तब कोई प्रधानमत्री यह नहीं कह सकता कि ऐसा नहीं हुआ है और यह कि उसका भाग्य जनमत सग्रह का परिणाम निकलने के बाद तय होगा।

खैर, जो भी हो, बाद मे भारतीय राजनेताओ को सुबुद्धि आ गई और उन्होने अपनी गलती को समझ लिया।

परिस्थितियो के और समय बीत जाने के कारण उनका बचाव हो गया।

पाकिस्तान ने निर्धारित समय सीमा के अन्दर, यहा तक कि कई वर्ष बीत जाने के बाद भी, उन शर्तो मे से किसी को भी पूरा नही किया, जिनके पूरा होने के बाद ही सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव के अनुसार जनमत सग्रह कराया जा सकता था।

तब हमारे प्रधानमत्री ने सुरक्षा परिषद् से कह दिया कि अब जनमत सग्रह कराने की बात ही नहीं रही और यह कि सुरक्षा परिषद् का १९४९ का प्रस्ताव निष्क्रिय और निष्प्राण हो चुका हैं और अब वह लागू नही है।

यह स्थिति सुदृढ है और पाकिस्तान की जनमत सग्रह की माग के उत्तर मे भारत इस पर डटा रह सकता है।

पाकिस्तान भारत के उदारतापूर्ण रुख का लाभ उठाने से चूक गया, क्योंकि उसने उन शर्तो का पालन नही किया, जो उस जनमत सग्रह के प्रस्ताव के साथ जुडी थीं।

क्योकि वह प्रस्ताव समाप्त हो चुका है, इसलिए अब सुरक्षा परिषद् को यह अधिकार नही है कि वह एक नया प्रस्ताव स्वीकार करके अधिमिलन के प्रश्न को इकतरफा ढग से तय कर सके और अब उससे कहा जाना चाहिए कि भारत की मूल शिकायत का उसके गुणावगुण के आधार पर निर्णय किया जाये और पाकिस्तान से कहा जाये कि वह इस राज्य के उस २/५ भाग को खाली कर दे, जिस पर उसने अवैध रूप से और आक्रमण करके अधिकार किया हुआ है। और यदि वह टालमटोल करता है, तो शिकायतकर्ता को सैन्य बल से इस क्षेत्र को, जो उसका अपना राज्य क्षेत्र है, वापस ले लेना चाहिए।

(आगामी अक मे समाप्य)

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स नं० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R No. D L 11082/2001
POSTED AT N.D P O ON 22/23-8-2001 दिनाक २६-८-२००१

कैथल में चरित्र निर्माण शिविर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा (हरियाणा) के प्रधान डा० आर० के० चौहान, विद्यालय की स्थानीय प्रबन्धक समिति के चेयरमैन श्री ओ० पी० गुप्ता व प्रधानाचार्या श्रीमती सुमन निझावन के तत्वावधान मे ओ० ऐस० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, कैथल के प्रागण मे १ जून से ७ जून तक 'व्यक्तित्व एव चरित्र निर्माण शिविर' का आयोजन किया गया। इस शिविर मे कुल ४० विद्यार्थियो ने भाग लिया, जिनमे ५ विद्यार्थी अम्बाला डी० ए० वी० स्कूल के भी शामिल थे। इन सभी के खाने-पीने व रहने का उचित प्रबन्ध भी विद्यालय की प्रबन्ध समिति द्वारा ही किया गया। विद्यार्थियो के सम्पूर्ण विकास के लिए उनकी एक दैनिक चर्या निर्धारित की गई थी। प्रात पाच बजे ही विद्यार्थियो को कुशल शिक्षक के निर्देशन मे शारीरिक व्यायाम करवाया जाता। नाश्ते के पश्चात् उन्हे महापुरुषो के जीवन चरित्र व आर्य समाज से सम्बन्धित पुस्तको के अध्ययन का समय दिया जाता व बौद्धिक विकास के लिए अनेक विद्वानो को बाहर से बुलाया जाता, जो नित्य उनका मार्गदर्शन करते। शाम को जलपान के बाद बच्चो के शारीरिक विकास के लिए लाठी व योगाभ्यास करवाया जाता। शिविर का अन्तिम दिन शका समाधान के लिए निर्धारित किया गया, जिसमे डा० आर० के चौहान ने विद्यार्थियो के प्रश्नो के उत्तर दिये। अपनी दैनिक चर्या मे श्रेष्ठ रहने वाले छात्रो को पुरस्कार व योग्यता प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

डी० ए० वी० बल्लभगढ़ में आर्य महासम्मेलन करने का निर्णय

दिनाक २९ ७ २००१ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा की अन्तरग सभा की बैठक डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, बल्लभगढ मे सम्पन्न हुई, जिसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री राजकुमार चौहान ने की। सर्वसम्मति से ४ नवम्बर २००१ को डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल बल्लभगढ मे आर्य महासम्मेलन करने का निर्णय लिया गया। इस बैठक मे क्षेत्रीय आर्यसमाजो के अधिकारीगण, डी० ए० वी० स्कूलो के प्रधानाचार्यो तथा धर्मशिक्षको ने बडे उत्साह के साथ भाग लिया तथा सम्मेलन की सफलता हेतु अपने सुझाव रखे। स्कूल के प्राचार्य श्री सुरेन्द्र सिह चौधरी ने सम्मेलन की सफलता के लिए पूर्ण निष्ठा से कार्य करने का निश्चय व्यक्त किया। अन्त मे श्री जयपाल शास्त्री ने सभी आगन्तुक आर्य महानुभावो का धन्यवाद किया। इस बैठक मे सभामत्री श्री चमनलाल आर्य, श्री गोपाल शर्मा, प० जगदीशचन्द्र वसु, प्रि० एस० सी० नन्दा, श्री सोहनलाल गुम्बर, प्रि० पी० पी० नन्दा, प्रि० के० ऐल० खुराना, प्रि० अशोक शर्मा, श्यामसुन्दर, मित्रसेन बत्रा, सुशील शास्त्री, जितेन्द्र आर्य, वेदप्रकाश शास्त्री, विजेन्द्र शास्त्री, सुरेश शास्त्री, नरेन्द्रकुमार तथा देवकी नन्दन शास्त्री आदि अनेक आर्य महानुभावो ने भाग लिया।

बेतिया में सस्कृत सम्भाषण शिविर

'सस्कृत अब मृतभाषा नही, अपितु अमृत भाषा' है और अत्यल्प प्रयास से ही इसे आम लोगो की बोलचाल की भाषा बनाना सम्भव है।' इस कार्य को प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिखाने के लिए प्रयासरत सस्था 'सस्कृत भारती' की बेतिया शाखा (बिहार) की ओर से स्थानीय सर्वोदय मध्य विद्यालय मे विगत २६ जून से ५ जुलाई तक दस दिवसीय सस्कृत सम्भाषण शिविर का सफल आयोजन किया गया, जिसमे साठ शिक्षार्थियो ने भाग लिया। कार्यक्रम को देखने एव आशीर्वाद देने के लिए जिले के गणमान्य व्यक्तियो के साथ ही बिहार प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री महेश प्रसाद आर्य एव चम्पारण जिला आर्य सभा के प्रधान श्री जनार्दन प्रसाद आर्य भी शिविर मे पधारे, जबकि शिविर के मुख्य प्रशिक्षक के रूप मे आर्यसमाज, बेतिया के युवा कार्यकर्ता श्री कृष्णमोहन 'हिन्दू' ने इस प्रशिक्षण वर्ग का प्रभावी ढग से सचालन किया। शिविर का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के स्थानीय संघचालक श्री रामावतार सिघानिया ने मध्य प्रदेश के मोहद नामक गाव की चर्चा की, जहा सस्कृत भारती के प्रयास से छोटे छोटे बच्चे भी सस्कृत में ही बाते करते है। शिविर के समापन के अवसर पर एक 'सस्कृत सभा' आयोजित की गयी, जिसमे सम्पूर्ण कार्यक्रम, यथा गीत, नाटक, वार्तालाप, प्रहसन, भाषण आदि, नवप्रशिक्षित सस्कृतभाषियो द्वारा पूर्णरूपेण सस्कृत मे ही सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन दो घटे के रोचक अभ्यास के द्वारा सामान्य व्यक्तियो, गृहिणियो एव छात्रो को सस्कृत बोलने मे सक्षम बनाने वाली इस, आश्चर्यजनक पाठविधि मे अभिनय, गीत, ऑडियो, विडियो कैसेट एव सरल शिक्षण सामग्रियो का सम्यक् प्रयोग किया जाता है। 'सस्कृत भारती' के स्थानीय सयोजक श्री अरविन्द कुमार शर्मा द्वारा चम्पारण (बिहार) मे भी एक गाव को आदर्श सस्कृत ग्राम बनाने की योजना स्वीकृत की गयी है।

आर्य समाज मन्दिर वहीं बनायेंगे

आर्य समाज एक जीवित एवं जागृत संस्था है। इसके असख्य कार्यकर्ताओ को विवश न किया जाए कि वे इसके लिए दिल्ली मे आन्दोलन प्रारम्भ कर दे।

इसलिए हैदराबाद आर्य सत्याग्रह एव श्रावणी उपाकर्म के पवित्र अवसर पर एकत्रित हुए हम आर्यजन यह जोरदार माग करते है कि आर्यसमाज का पुन उसी स्थान पर पुनर्निर्माण किया जाए तथा श्री जगमोहन को आर्य समाज मन्दिर तोडने के लिए दडित किया जाए। इस अवसर पर समस्त जन इसके लिए सामूहिक सकल्प लेते है।

इस सकल्प के द्वारा हम आर्य समाज मल्हारगज, इन्दौर के समस्त आर्यजन घोषणा करते है कि आर्य समाज मिटो रोड के पुनर्निर्माण हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जारी किए गए किसी भी आदेश, कार सेवा, सत्याग्रह, जेल भरो आन्दोलन इत्यादि का हम अवश्य पालन करेंगे।

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई द्वारा बुधवार दिनांक १ अगस्त से रविवार दिनाक ५ अगस्त २००१ तक वेद प्रचा[illegible]। प्रतिदिन प्रात ७ ३० से ९ बजे तक पच दिवसीय यज्ञ तथा भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया। दिनांक १ से ४ अगस्त, २००१ को रात्रिकालीन सत्र मे श्री मामचन्द आर्य पथिक, श्री दीपचन्द आर्य जी के प्रेरणाप्रद भजनोपदेश तथा डा० महावीर सिह जी आर्य के अध्यात्म से सम्बन्धित वेदमत्रो के आधार पर ज्ञानवर्धक सारगर्भित प्रवचन हुए।

रविवार दिनांक ५ अगस्त को ७ ३० से ९ ३० तक यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इसके उपरान्त १० बजे से श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह श्रीमती शिवराजवती आर्या, श्रीमती सरोजिनी गोयल के भजन हुए।

डा० महावीर सिह जी ने अपने ओजस्वी भाषण मे कहा कि जो जाति अपने पितरो का, अपने महापुरुषो का जन्म दिन मना करके उन्हे याद रखती है, वो जाति सदा उन्नति को प्राप्त होती है। श्रीकृष्ण जीवन पर्यन्त अन्याय, अत्याचार एव कुरीति के विरुद्ध सघर्ष करते रहे।

आर्य अनाथालय फीरोजपुर कैंट का अच्छा परीक्षा परिणाम

वर्ष २०००-२००१ की दसवी की परीक्षा मे आर्य अनाथालय के ११ बच्चे बैठे, जिनमे से ७ लडके और २ लडकिया उत्तीर्ण हुई। एक लडका और एक लडकी अनुत्तीर्ण रहे। कुछ बच्चो ने ७८ प्रतिशत अक प्राप्त किये।

१२वीं कक्षा की परीक्षा मे एक बालक और तीन बालिकाए थी। सभी उत्तीर्ण हो गये।

४ अगस्त को श्रावणी पर्व पर यज्ञ करके सब बच्चो को यज्ञोपवीत धारण कराया गया। उसके बाद रक्षा बधन के सास्कृतिक कार्यक्रम हुए, जिनके अध्यक्ष पंजाब के सिचाई मत्री श्री सरदार जनमेजा सिह थे। मत्री महोदय ने अनाथालय को एक लाख रुपये दान स्वरूप प्रदान किये।

निर्वाचन

आर्य समाज मोहल्ला गोविन्द गढ़, जालन्धर नगर

प्रधान—डा० इन्द्रकुमार शर्मा
मत्री—श्री नरेश कुमार
कोषाध्यक्ष—श्री सुमीत महाजन

आर्य समाज हिरणमगरी उदयपुर

प्रधान—श्री जितेन्द्रपाल शर्मा
मंत्री—डा० अमृतलाल तापडिया
कोषाध्यक्ष—श्री पन्नालाल अरोडा

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रबोध महाजन, सभा मत्री द्वारा राकेश भार्गव के प्रबन्ध मे मयक प्रिन्टर्स 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन . 3363718, 3362110) सम्पादक—उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ।

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये
विदेशो मे ३० पौं० या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये
वर्ष ६६, अक २७
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, २ सितम्बर, २००१
भाद्रपद शु०-१५-वि० स०-२०५८
सप्ताह २ सितम्बर से ८ सितम्बर

कृषि और गोपालन : सब सुख के साधन

कृष्ण और किसान एक ही शब्द है। बीच मे किशन एक रूप और बनता है। कृष्ण, किशन, किसान।

किसान भगवान् है। कृषि करके वह नई सृष्टि करता है। एक बीज से बीस दाने बनाता है। उन दानो से सब प्राणी अपना पेट भरते है।

सृजन किसान ही करता है

सृजन केवल किसान ही करता है। व्यापारी, शिल्पी, कारीगर, कल कारखाने सृजन नही करते। वैज्ञानिक, विचारक, मनीषी भी सृजन नही करते। शस्त्रास्त्र ले कर रण मे जूझने वाले योद्धा भी सृजन नही करते। विनाश ही करते है।

कृषि प्रदूषण को घटाती है, जबकि कल कारखाने प्रदूषण को बढाते है।

किसान तप करता है। धूप मे खेत मे हल चलाता है, बरसात मे भीगता हुआ खेतो मे धान रोपता है; सर्दियो की ठडी रातो मे वह गेहू के खेतो की रखवाली करता है।

इस तप मे आनन्द है। जब धान के हरे खेतों मे हवा उन्हे झकझोरती हुई बहती है, और बादलो से नन्हीं बूदो की फुहारे पड़ती है, मोर बोलते हैं, तब किसान को कितने आनन्द की अनुभूति होती है! योगियो का योग समाधि का आनन्द तुच्छ है इसके सामने।

जब मक्का के खेत में भुट्टे हरे दुशाले ओढे खड़े होते है, बाजरे की बाले आकाश से प्रार्थना सी करती होती हैं, तब खेत के स्वामी के आनन्द का पार नहीं रहता।

वसन्त मे गेहू, चने, मटर और सरसो के खेत न केवल सुन्दर दिखाई पड़ते हैं, अपितु सोने का ढेर भी लगा देते है। किसानों का हार्दिक आनन्द होली के गीतों, रंगों और पिचकारियो की धारो मे फूट पड़ता है।

कृषि और गोपालन

कृषि के साथ गोपालन का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। गाय बैल से खेती होती है; खेती से गाय बैल पलते हैं। अन्न आदमी खा लेता है, गाय बैल का गुजारा भूसे से हो जाता है। उनके गोबर के खाद से फसले लहलहा उठती है।

गाय को किसान ने मा माना। दूध भैस भी देती थी, ऊटनी भी देती थी, भेड भी देती थी, परन्तु मा गाय को ही माना गया। पीढी दर पीढी के अनुभव से पता चला कि जो गुण गाय के दूध मे है, वे अन्य किसी मे नही। मा का दूध न मिले, तो गाय के दूध से काम चलता है।

जिस किसान के घर मे गाय होती थी, उसके बच्चे स्वस्थ, पुष्ट और हसमुख होते थे। जितनी गायें अधिक होती थीं, उतना ही दूध, दही, मक्खन, घी अधिक होता था। गोकुल मे कृष्ण के गोपालन का यही रहस्य था। गौओ, ग्वालो और गोपियो ने कृष्ण को कृष्ण बनाया था।

पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम्!

हम (सूर्य) सूर्य को (उत् चरन्त) ऊपर उठते हुए देखे।

सूर्य पृथ्वी पर विद्यमान समस्त जीवन का आधार है। वह सारे (जगत्) चलने फिरने वाले प्राणियो और (स्थावर) एक ही स्थान पर खडे रहने वाले तरु, लता, घास आदि का आत्मा है।

जब सायकाल वह अस्त हो जाता है, हम सो जाते है, विश्राम करते है। जब प्रातःकाल वह आये, तो हमे उसे क्षितिज से ऊपर उठते देखने के लिए तैयार रहना चाहिए। देखेगे, तो बहुत अच्छा लगेगा।

सूर्य प्रकाश और ऊर्जा का स्रोत है। उसे उदित होते देख कर हम इन दोनो से अपनी झोली भर सकते है।

हिमशिखरो पर और सागर तटो पर सूर्योदय का दृश्य महिमामय होता है।

घर मे गाय होती थी। बच्चे उससे खेलते थे। उसे पानी पिलाते थे। उसे चराने ले जाते थे। उसके बछडे बछडियो से लाड जताते थे। उन्हे जोहडो मे, नदियो मे नहलाते थे। उनसे गहरी आत्मीयता होती थी उनकी। और शाम को घर लौट कर जब गौए बटलोई भर दूध देती थीं, तो जैसे उन्हें अपनी सारी सेवा का पारिश्रमिक मिल जाता था।

गाय धन थी। जिसके पास जितनी अधिक गायें, वह उतना अधिक धनी। अच्छे किसान के पास दस दस बीस बीस गाये होती थी। जमींदारों के पास सौ सौ गायें होती थीं। राजा हजार हजार गाये दान मे देते थे। महाभारत मे उल्लेख है कि कौरव सेना विराट् राजा की गौओ का अपहरण करने गई थी।

गाय से ममता

गौ से प्राचीन आर्यो (हिन्दुओं) की बडी ममता थी। वह गृहस्थ का आधार थी। इसलिए पूजा का पात्र बन गई थी। पूजा का अर्थ माला पहनाना, तिलक लगाना और घटे घडियाल बजाना नही, अपितु तन, मन से उसकी सेवा करना, उसकी आवश्यकताओ और उसके सुख दुख का ध्यान रखना था।

हमारा साहित्य गौओ के वर्णनो से भरा पडा है। वशिष्ठ के पास एक गाय थी, जो इच्छा करते ही कोई भी वस्तु प्रदान कर देती थी। वह कामधेनु की बेटी थी। कामधेनु स्वर्ग की गाय थी। जब देवता उससे कोई भी वस्तु मागते, मागने की भी आवश्यकता नहीं, चाहने मात्र से ही, वह क्षण मे उपस्थित कर देती थी।

ये सब कहानिया है, पर ये उस जनमानस की द्योतक है, जो गौओ को इतने आदर और स्नेह की भावना से देखता था। इन कहानियों को बड़े कवियो और ऋषियो ने गढा है और ये कहानिया हमारे मन को और चरित्र को गढती है।

मार्मिक कथा

कालिदास ने राम के एक पूर्वज राजा दिलीप की कहानी लिखी है। दिलीप प्रतापी राजा था, परन्तु उसके सन्तान नहीं थी। इससे चिन्तित हो कर वह अपने कुलगुरु वशिष्ठ के आश्रम मे गया। उसकी बात सुन कर वशिष्ठ ने उसे अपनी गाय नन्दिनी की सेवा का आदेश दिया।

आदेश मान कर राजा गाय की सेवा मे जुट गया। सवेरे बछडे को दूध पिलाने के बाद गाय चरने के लिए वन मे जाती। राजा धनुष ले कर उसकी रक्षा के लिए पीछे पीछे चलता। वह बैठती, तो बैठता, चलती, तो चल पडता। नहलाता, धुलाता। वृक्षो और बेलो से फूल झरते और उन पर गिरते। हवा बासो के वन मे मे गुजरती, तो सैकडो बासुरिया सी बजने लगती। चीतल और सूअर उन्हे कुतूहल से ताकते। कभी कभी हाथियो का टोल पेडो को तोडता खाता मिल जाता। कभी कदास बघेरे की दहाड भी सुनाई पड जाती। शाम को गाय और उसका सेवक राजा, दोनो आश्रम मे लौट आते। इस तरह कई दिन बीत गये। एक दिन वह गाय पहाड की एक हरी भरी घाटी मे चली गई। जगल इतना सुन्दर था कि राजा उसकी शोभा देखने मे तल्लीन हो गया। कुछ खडका सुन कर मुडा, तो देखता क्या है कि एक विशाल सिह गाय को गिरा कर उस पर चढा बैठा है। प्रतापी राजा ने सिह को मारने के लिए तरकस से तीर चलाना चाहा, तो उसका हाथ तरकस से चिपका रह गया।

सिह ने राजा से कहा 'मुझ पर तुम्हारा जोर नहीं चलेगा। मै यहा महादेव की आज्ञा से पहरा देता हू। कहीं आ जा नही सकता। जो शिकार यहा आ जाय, उसे खा कर गुजारा करता हू। कई दिन बाद यह गाय आज मुझे मिली है। तुम लौट जाओ।'

राजा ने कहा 'यह मेरे गुरु की गाय है। यह मारी जाये और मै बिना घायल हुए लौट जाऊ, यह मेरे लिए डूब मरने की बात होगी। तू मुझ पर एक दया कर। मुझे खा ले, और इसे छोड दे।'

उसने सिह के उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की और औधे मुंह इस प्रकार भूमि

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वेद-सुधा

तृप्ति की गंगा बहा दो !

मनो मे तर्पयत, वाचं मे तर्पयत, प्राण मे तर्पयत, **चक्षुर्मे** तर्पयत, श्रोत्र मे तर्पयत, आत्मान मे **तर्पयत**, प्रजां मे तर्पयत, पशून् मे तर्पयत, **गणान्** मे तर्पयत, गणा मे मा वितृषन्। *यजुर्वेद ६ ३१*

अर्थ– (**मनो मे तर्पयत**) मेरे मन को तृप्त कर दो। (**वाच मे तर्पयत**) मेरी वाणी को तृप्त कर दो। (**प्राण मे तर्पयत**) मेरे श्वास प्रश्वास को तृप्त कर दो। (चक्षुर्मे तर्पयत) मेरी आखों को तृप्त कर दो। (श्रोत्र मे **तर्पयत**) मेरे कानो को तृप्त कर दो। (**आत्मान मे तर्पयत**) मेरे आत्मा को तृप्त कर दो। (प्रजा मे **तर्पयत**) मेरे प्रजाजनो को तृप्त कर दो या मेरी सन्तानो को तृप्त कर दो। (पशून् मे **तर्पयत**) मेरे पालतू पशुओ को तृप्त कर दो। (**गणान् मे तर्पयत**) मेरे समुदाय के लोगों को अथवा सैनिको को तृप्त कर दो। (**गणा मे मा वितृषन्**) मेरे गिरोह के लोग प्यासे न रहे।

मनन– यहा तृप्ति के लिए प्रार्थना की गई है। अतृप्ति भूख और प्यास के कारण उत्पन्न होती है। अन्न की भूख और पानी की प्यास शाब्दिक अर्थ हैं, परन्तु आलकारिक रूप से ये तृष्णा के बाचक भी है। पेट भर जाता है, पर तृष्णा नहीं मिटती।

पहली बात तो ध्यान देने की यह है कि यह प्रार्थना जिससे की जा रही है, वह एक ईश्वर नही, अपितु बहुत मे देवता या आप जल है, जिनके लिए बहुवचन क्रिया का प्रयोग किया गया है–तर्पयत। हे देवताओ, मेरे मन, वाणी, प्राण आदि को तृप्त कर दो। वेद मे ईश्वर से प्रार्थना कम स्थानो पर, अग्नि, इन्द्र, वायु, वरुण, सोम, अश्विनौ, सरस्वती, आदि से अधिक स्थानो पर है। एकेश्वरवाद और बहुदेववाद साथ साथ विद्यमान है। बाइबिल या कुरान का एकेश्वरवाद वेद का नहीं है।

आरम्भ मन से होता है। मन की तृप्ति ही सब कुछ है। नासिका, चक्षु और श्रोत्र से जो तृप्ति अनुभव होती है, वह भी अन्ततोगत्वा मन की ही तृप्ति है। नाक से सुगन्धे सूघी जाती हैं, जिनसे आनन्द अनुभव होता है। आखो से सुन्दर दृश्य, हरे भरे पर्वत, घास के मैदान, फूलो के बाग, हसती कन्याए, मुस्कराते बच्चे देख कर तृप्ति होती है। कानो से मधुर सगीत सुन कर, और उससे भी अधिक अपनी (झूठी या सच्ची) प्रशसा सुन कर तृप्ति होती है। परन्तु उसमे भी आधार मन ही होता है। नासिका, आख और कान तो केवल माध्यम होते है। इसलिए सबसे पहले मन की तृप्ति की बात कही गई है।

मन के बाद वाणी की तृप्ति की बात कही गई है। जीभ बोलने और चखने, दोनो का काम करती है। 'वाच मे तर्पयत' का अर्थ जिह्वा की तृप्ति का भी है। प्यास लगने पर जीभ सूख जाती है। तब जल मिले, तो सबसे पहले तृप्ति जीभ पर अनुभव होती है।

परन्तु उससे भी बडी तृप्ति तब होती है, जब कोई हमारी बातो को, हृदय के उद्गारो को सहानुभूति से सुने। लेखक या कवि इसीलिए उसके कृतज्ञ होते है, जो उनकी कृतियो को सुनता और सराहता है। यह वाणी की तृप्ति है।

प्राण श्वास प्रश्वास है। स्वच्छ वायु, फूलो की सुगन्ध से भरा पवन हमारे प्राणो को तृप्त करता है। यह प्राण आत्मा से भिन्न है, जिसका उल्लेख आगे चल कर किया गया है।

चक्षु, आखो की तृप्ति सुन्दर दृश्यो को देख कर तो होती ही है, अपने लगाये पौधो को, अपनी सन्तानो को फूलते फलते देख कर भी होती है।

इसी प्रकार कानो की तृप्ति अपनी यशोगाथाओ को सुन कर उससे कहीं अधिक होती है, जितनी बढिया सगीत को सुन कर होती है। खुशामद से तो देवता भी रीझ जाते है।

ये सब भौतिक तृप्तिया है। इसलिए साधक एक कदम आगे बढ कर मागता है मेरे आत्मा को तृप्त कर दो। इन्द्रिया और मन तृप्त हो भी गये, और आत्मा अतृप्त रहा, तो बात अधूरी रही। आज सारे पश्चिमी देश भौतिक तृप्ति से ऊब कर आत्मिक तृप्ति की खोज मे व्यस्त है। आत्मिक तृप्ति के पश्चात् पाने के लिए और कुछ नहीं बचता।

व्यक्ति के लिए नहीं बचता, किन्तु राजा के लिए बचता है उसकी प्रजा भी तृप्त रहनी चाहिए। जो राजा प्रजा की तृप्ति का ध्यान नहीं रखता, वह देर तक राजा नहीं रहता। वह विप्लव का शिकार हो जाता है। प्रजा अन्न, वस्त्र, आवास से समृद्ध और सुखी हो, तो राजा भी सुखी रहता है।

वैदिक राजा अपने पशुधन की तृप्ति के लिए भी कामना और प्रार्थना करता है। कृषि और पशुधन पर ही राष्ट्र की समृद्धि, सुख शान्ति निर्भर है। पशुओ के लिए चरागाहो मे प्रचुर, हरी हरी घास हो, नहाने और पीने के लिए स्वच्छ जल के सरोवर और नदिया हों, तब राष्ट्र दूध, दही, मक्खन, घी से भरपूर रहेगा और नागरिक स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट होगे। इसलिए प्रार्थना की गई कि 'पशून् मे तर्पयत' (मेरे गाय-बैलो, घोडो, भेड बकरियो को तृप्त करो)।

सबसे अन्त मे सबसे महत्वपूर्ण वस्तु आई–गण। गण गिरोह के वे सदस्य है, जो नेता (राजा) के इशारे पर लडने मरने के लिए तैयार रहते है। राज्य का आधार ये ही लोग होते है। इन्हे सेना के अफसर और सैनिक भी कहा जा सकता है। राज्य की सुख शान्ति के लिए इनका तृप्त रहना परम आवश्यक है। यदि ये अतृप्त और असन्तुष्ट रहे, तो प्रजा तो दुख भुगतेगी ही, राजा भी एक क्षण चैन की नींद नहीं सो सकेगा। सदा शकित और भयभीत रहेगा। गण तृप्त, तो गणेश भी तृप्त।

अन्तिम प्रार्थना है · **गणा मे मा वितृषन्**। इसके दो अर्थ हैं : (१) मेरे सैनिक या राज्य के अफसर बहुत प्यासे (असन्तुष्ट न रहे, और (२) उन्हे मुझसे वितृष्णा, विरक्ति न हो जाये। वि उपसर्ग के साथ तृष् धातु विरक्ति या असन्तोष का अर्थ देती है। इसलिए राजा की प्रार्थना है कि मेरे गण मुझसे विरक्त, खिन्न, रुष्ट न हो। भूखे प्यासे रहेगे, तो असन्तुष्ट होगे, तृप्त रहेंगे तो राजा के प्रति अनुरक्त रहेगे।

इसीलिए राजा ने देवताओं से, जलो से, नदियो, मेघो, कूप, तडागो के जलो से प्रार्थना की है कि सब ओर तृप्ति की गगा बहा दो, जिससे कोई अतृप्त न रहे।

क्या यह जड पूजा प्रतीत होती है? यदि हा, तो कविता क्या होती है?

डा० योगेश्वर देव
१३७, विराट् नगर, पानीपत

अनोखा युवा संन्यासी

□ श्रीराम पथिक

यह बात युवको के हित की है। है पुरानी लेकिन है सदा बहार। आज से शायद ६५ वर्ष पूर्व रावलपिंडी के, जो अब पाकिस्तान मे है, उपदेशक महाविद्यालय मे एक पूर्ण युवा सन्यासी पढाते थे। पढाने का ढग भी निराला था और खान-पान आदि का ढग भी विचित्र था। उनके चेहरे पर हर समय एकनिराली मस्ती छाई रहती। प्रात चार बजे उठ कर शौच स्नान आदि करके सध्या आदि के लिए बैठ जाते। सूर्योदय से आधा घटा पश्चात् ही उठते। कभी आसन पहले कर लेते और कभी बाद मे, लेकिन सध्या केलिए बैठते समय पर, क्योकि किसी भी कारणवश प्रात किसी भी कार्य के लिये देरी न होनी चाहिये।

श्रद्धालु भक्त कुछ दे गया तो ठीक, नही तो बचा हुआ फल आदि खा कर ठीक नौ बजे समय पर ही विद्यालय मे पहुचते तथा दोपहर डेढ बजे तक पढाते और इसके बदले मे न तो विद्यालय से कभी वेतन मागा और न ही भोजन। विद्यालय मे अवकाश के बाद निकट ही ग्राम मे भिक्षा को जाते समय वह अपने साथ दो ही पात्र लेकर जबते। एक कमण्डल और दूसरी झोली। दाल, सब्जी, खीर आदि जो भी तरल पदार्थ होता, उसे कमण्डल मे डाल लेते और शेष जो होता, उसे झोली में डाल लेते। सिख, मुसलमान या हिन्दू जो भी हो, लेकिन गली मे क्रम से मागते चले जाते। जो दे उसका भी भला और जो न दे उसका भी भला। बस अलख जगाने के पाच मिनट तक ही इन्तजार करते। यदि घर से कोई ध्वनि प्रत्युत्तर मे न आये, तो छठे मिनट के पश्चात् वह उस घर से चल देते। माताए, बहने सभी इस बात का ध्यान रखतीं। कुटिया पर पहुच कर जो भी तब वहा उपस्थित होता पहले उसे भोजन करवाते और उसके बाद खुद भोजन करते। यदि कभी अधिक होता, तो विद्यालय के छात्रो को दे देते।

एक दिन भिक्षा के समय एक मकान के वृद्ध सेवक ने कहा 'युवा है, हट्टा कट्टा है, कमा कर खाया कर, मागते हुये शर्म नहीं आती क्या?'

साधु ने हस कर कहा 'बाबा, नाराज क्यों होते हो? बताओ तो सही कौन सा काम करना है। जो कहोगे कर दूगा।'

नौकर ने तुरन्त कहा 'ये लकडिया (जो कि करीब दस मन थीं) दीं। गोदाम मे ढग से लगा दो। यह सुनते ही काम शुरू कर एक घटे मे लगा दी। चलते समय कहा 'अब तो नाराज़ नहीं होगे कभी?' और तभी भिक्षा पात्र उठा कर चल दिये।

सेवक ने पुन कहा 'रोटी खा कर जाओगे या लेकर। अभी लाता हू।' युवा साधु ने कहा 'जहा काम करता हू, वहा का मै खाता कभी नही।'

नौकर सोचता रहा कि अजीब साधु है यह। साधु जी दूसरी गली मे भिक्षा लेने के लिए चल दिये। क्या आप जानते है कि वह युवा साधु कौन था? यह था आर्य जगत् का अनोखा साधु महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का प्रिय शिष्य त्याग, तपस्या, सहनशीलता की मूर्ति स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ, जिन्होने सर्वप्रथम सत्यार्थ प्रकाश को मोटे अक्षरो मे छाप कर उसमे अनेक टिप्पणिया भी दीं। और स्वाध्याय सदोह (दैनिक वेद पाठ) आदि कई छोटी बडी पुस्तके भी लिखीं। वेद प्रचारार्थ कथा भी करते, जहा बुलाते निकट व दूर। खाते पीते वहीं, परन्तु दक्षिणा न लेते थे पहले; फिर जहा से जो भी मिलता, किसी सस्था को देते या भिजवाते अथवा पात्र छात्रो को देते, दिलवाते थे। कभी साहित्य मे लगाते।

वर्तमान के प्रचारको को इससे शिक्षा मिलनी चाहिए। जो गृहस्थी नहीं है, वह तो आजकल की स्थिति देख कर अमल करे।

गृहस्थी प्रचारक भी गुण ग्रहण कर सकता है इस युवा स्वामी से कुछ न कुछ। पूर्व के प्रचारको का सा जैसे प० लेखराम जी आर्य मुसाफिर भी गृहस्थी थे, तो महात्मा हंसराज जी जैसे और भी कई थे गृहस्थी।

जब आये तुम जगत् में, जग हंसा तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हंसो, जग रोये॥

आर्य समाज अजनाला, अमृतसर (पंजाब)

धार्मिक कट्टरता किस हद तक!

सम्पादकीय

चंडीगढ का समाचार अखबारो मे छपा है कि वहा एक विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने एक सिख छात्र को इसलिए विद्यालय से निकाल दिया कि उसने अपने बाल छोटे कटवा लिये थे। बाल इसलिए नही कटवाये थे, कि सिख मत में उसकी आस्था नहीं रही थी, अपितु इस लिए कटवाये थे कि सिर में खुजली जैसा कुछ त्वचा का रोग हो गया था, जिसके कारण बाल छोटे करवाना आवश्यक था। परन्तु धर्मध्वजी लोगो की दृष्टि मे यह पाप, बडा अपराध बन गया, जिसके कारण छात्र को विद्यालय से ही निकाल दिया गया।

प्रधानाध्यापक की भावना

जब छात्र के अभिभावको ने प्रधानाध्यापक से इस विषय पर पुन विचार करने को कहा तो उसने रियायत करते हुए कहा कि छात्र को उस कक्षा में किसी शर्त पर नहीं रखा जा सकता, उसे किसी अन्य सैक्शन मे रखा जा सकता है। अन्य सैकशन मे रहना छात्र को असुविधाजनक लगा। प्रधानाध्यापक का कहना था कि वह अन्य छात्रो पर यह प्रभाव नही पडने देना चाहता कि कोई सिख छात्र अपने बाल कटवा सकता है।

धर्म का चिह्न

बाल न कटवाना सिखो के लिए धर्म का चिह्न है। केश, कघा, कटार, कच्छा कडा रखने का नियम गुरु नानक ने नहीं अपितु दसवे गुरु गोविन्दसिह ने चलाया था। ये पाचो वस्तुए उपयोगिता की दृष्टि से, कुछ लाभ की दृष्टि से अपनाई गई थीं। लम्बे केश और दाढ़ी रखने से पुरुष रोबीला दिखाई पडता है। बाल लम्बे हों, तो उन्हे संवारने के लिए कघा भी रहना चाहिए।

बाल धर्म के अंग नहीं

निश्चय ही गुरु गोबिन्दसिंह का आशय यह नहीं था कि लम्बे बालों के साथ सिख धर्म का अविनाभाव सम्बन्ध है, बाल कटे कि धर्म गया। परन्तु जब धर्म का सार कम हो जाता है, तब रूढ़िया प्रधान हो जाती है। यही कारण है कि रोग की दशा मे बाल कटवाने को भी धर्मध्वजी प्रधानाध्यापक ने बड़ा अपराध माना।

सुन्नत जैसा काम नहीं

बाल कटवाना कोई सुन्नत करने जैसा कार्य नहीं है। सुन्नत में कटा हुआ अग्रचर्म फिर जीवन भर नया नहीं आ सकता। परन्तु बाल तो चाहे, न चाहे, फिर बढते ही रहेंगे। रोग मुक्त होने पर व्यक्ति उन्हे कटाना बन्द कर दे, तो वे फिर पहले जितने ही लम्बे हो जायेगे। परन्तु प्रधानाध्यापक ने यह मान लिया कि एक बार बालों को कैची छू गई, तो सिख धर्म गया।

धर्म इतनी कच्ची चीज़ नहीं होना चाहिए। धर्म मन की वस्तु है। यदि व्यक्ति मन से सिख मत के उपदेशो और आदेशो को स्वीकार करता है, उनके अनुसार आचरण करता है, तो इस बात का कोई महत्व नहीं है कि वह लम्बे बाल रखता है या नहीं। आखिर मोने सिख भी होते ही हैं।

तालिबान जैसी धर्मान्धता

जो काम चंडीगढ़ के इस प्रधानाध्यापक ने किया, वही काम तालिबान अफगानिस्तान में और हिज्बुल मुजाहिदीन कश्मीर मे इस्लाम के लिए कर रहे है। वे मुसलमान पुरुषो को मजबूर करते है कि वे लम्बी दाढिया रखें, दिन मे पाच बार नमाज़ पढने मस्जिद में जायें, स्त्रियो को विवश करते हैं कि वे बुर्का पहने, कोई शृगार सजावट न करे। धर्म के ठेकेदार बन कर दूसरो पर धौंस जमाने का यह उपाय है। इससे धर्म की कोई सेवा नहीं होती। यह असहिष्णुता सगठन को मजबूत नहीं करती, भीतर से खोखला कर देती है। धर्म के प्रति अनुराग व्यक्ति के अन्दर से जागना चाहिए, बाहर से थोपा नहीं जाना चाहिए।

हिन्दू भी असहिष्णु रहे

हिन्दू (आर्य) भी शताब्दियो तक असहिष्णु रहे। जिन लोगो को आततायियो ने बल छल से हड्डी छुआ कर, मास खिला कर मुसलमान बना लिया था, उन्हे उनके लाख विनती करने पर भी धर्मध्वजी हिन्दुओ ने अपने समाज मे वापस लेना स्वीकार नहीं किया। वे मन से हिन्दू थे, हिन्दू रहना चाहते थे, परन्तु अति पवित्र हिन्दुओ ने उन्हे अपना मानने से इन्कार कर दिया; उन्हें विवश कर दिया कि वे पराये बन जाये, कट्टर धर्मान्ध मुसलमान बन जाये। भारत के अधिकांश मुसलमान मुसलमान मौलवियो द्वारा नहीं, हिन्दू पंडों पुरोहितो द्वारा बनाये गये हैं। यदि ये पडे पुरोहित कुछ समझदार, सहनशील होते, दूरदर्शी होते, तो आज इस देश मे ईसाई या मुस्लिम ढूढने पर भी नहीं मिलते।

असहिष्णुता परायों के प्रति

अपने के प्रति सहिष्णुता, परायो के प्रति असहिष्णुता, यह सगठन का, विजय का गुर है। हम उल्टा कर रहे है। परायो के प्रति हम उदार और सहिष्णु रहे, शक्तिशालियो से दबते रहे, परन्तु अपने दुर्बल, असहायो के प्रति हम असहिष्णु और क्रूर रहे। उसी का फल यह है कि आज हिन्द उपमहाद्वीप (भारत, बगलादेश, पाकिस्तान) मे मुसलमानो और ईसाइयो की सख्या ४२ करोड से अधिक हो चुकी है, जबकि हिन्दुओ (आर्यो) की सख्या ८० करोड के आसपास होगी। इन ४२ करोड मे से बाहर से तो ५० हजार भी नहीं आये, सब यहीं के लोग मुसलमान बने है।

चडीगढ के उस प्रधानाध्यापक का यह विचार होगा कि उस सिख छात्र को विद्यालय से निकाल कर वह सिख समुदाय की सेवा कर रहा है और अन्य सिखो को चेतावनी दे रहा है कि वे किसी भी दशा मे बाल कटाने की जुर्रत न करे। हो सकता है कि कुछ लोगों पर इस कड़ी कार्रवाई का असर हो, किन्तु सभी विवेकशील लोगो पर इसकी प्रतिकूल प्रतिक्रिया ही होगी। उसका यह कार्य तालिबान के आदेशो की भाति धर्मान्धता का कार्य समझा जायेगा। स्वयं सिख लोग भी इसका समर्थन नहीं करेगे।

धर्मों की सनक

कौन सा सम्प्रदाय कब किस बात को धर्म और किस बात को अधर्म मान बैठेगा, इसका कोई ठिकाना नहीं है। सिख लोग बीडी, सिगरेट पीना धर्म विरुद्ध मानते है, परन्तु मासाहार को धर्म विरुद्ध नहीं मानते। इससे भी बढ कर वे शराब का सेवन खुलेआम करते है, जबकि शराब सब पापो की जननी है। इसी प्रकार इस्लाम मे गाना बजाना मना है। कट्टर मुसलमान औरगजेब ने अपने दरबार मे सगीत का निषेध कर दिया था, जब कि अकबर, जहागीर और शाहजहा ने सगीत को बढावा दिया था। बाबर ने शराब त्याग दी थी, पर मुसलमान शराब से परहेज़ नहीं करते। अफगानिस्तान मे, जहा इस्लामी शरीया का शासन है, अफीम की खेती और गाजा, हशिश का व्यापार खूब होता है। कहने का आशय है कि धर्मध्वजी लोग चाहे जब, चाहे जिस चीज़ का निषेध कर देते हैं, जबकि निषेध योग्य अन्य चीज़ों की ओर से आखे मूदे रहते है।

सिख मुसलमानों के निकट हैं

सिख लोग उद्यमी और साहसी लोग है। वे जीविका की खोज में भारत ही नहीं, संसार के सब कोनो में फैले है। सिख मत का उदय पजाब में हुआ और पजाब, सिन्ध, उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्त और अफगानिस्तान मे उनका अधिक प्रसार हुआ। वे मूर्तिपूजक नहीं थे, और निराकार ईश्वर की उपासना करते थे, इसलिए मुसलमानो को वे हिन्दुओ की अपेक्षा अधिक स्वीकार्य थे।

परन्तु सन् १९४७ मे जब साम्प्रदायिक विद्वेष की आग भडकी, तब मुसलमानो ने सिखो के प्रति अधिक शत्रुता दिखाई। हिन्दुओ के साथ साथ उन्हे भी लूटा, मारा और खदेड दिया। उनकी दृष्टि मे सिख और हिन्दू एक ही थे। परन्तु बाद मे सिखों ने स्वय को हिन्दुओ से अलग मानना शुरू कर दिया। पहले खालिस्तान की माग की गई, फिर पजाबी सूबे पर समझौता हुआ। पजाबी सूबा बन गया। परन्तु एक स्वतत्र सिख राज्य की बात अब भी जब तब चलती है। परन्तु यह सिख राज्य भारत की जमीन पर ही बनाने की योजना बनती है। सिखों के अनेक तीर्थ पश्चिमी पजाब में है। वहा से उन्हे बेदखल करके भगाया गया है। पाकिस्तान से वे अपने लिए स्थान मागे, तो बात अधिक युक्तियुक्त जान पडेगी। परन्तु वे भारत से ही स्थान मागते है। उन्हे लगता है कि भारत को दबाया जा सकता है।

सिख पाकिस्तान में घुसपैठ नही करते

पजाब की काफी बडी सीमा पाकिस्तान से छूती है। पाकिस्तान से ही भारत मे घुसपैठ के समाचार प्राप्त होते है। पजाबियो की पाकिस्तान मे घुसपैठ का कोई समाचार पढने को नही मिला।

फिर, अभी चडीगढ भारत का भाग है। वह केन्द्रशासित प्रदेश है। सरकार चिल्ला चिल्ला कर धर्मनिरपेक्ष, पन्थ निरपेक्ष होने का दावा करती है। यदि कोई छात्र सचमुच ही धर्म परिवर्तन कर ले, तब भी केवल इस आधार पर उसे विद्यालय से नही निकाला जा सकता। फिर, यहा तो धर्म परिवर्तन की भी कोई बात नही। बालक ज्यो का त्यो सिख है, केवल इस कारण कि उसने बाल कटवा दिये है, उसे विद्यालय से निकाल दिया जाना चौकाने वाली बात है।

प्राय सभी मान्यता प्राप्त विद्यालय किसी न किसी रूप मे सरकार के नियत्रण मे रहते है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस मामले मे अनुशासन का प्रयोग नही किया गया, अन्यथा इस नगण्य से आधार पर छात्र को विद्यालय से निकालने का प्रश्न उठता ही नही।

इस मामले मे गैर सिख लोग कुछ कहे, तो उसे साम्प्रदायिक रग दे दिया जायेगा। विवेकशील सिखो को ही आवाज उठानी चाहिए कि उक्त विद्यालय के प्रधानाध्यापक का यह कार्य सिख हितो के प्रतिकूल है।

विश्व में आसुरी संस्कृति का प्राबल्य और दैवी संस्कृति की रक्षा के उपाय

❑ श्री ज्येष्ठ वर्मन

इस सृष्टि मे प्रत्येक जीव, प्रत्येक मनुष्य सुख और शान्ति चाहता है। किन्तु सुख और शाति के मार्ग पर बहुत कम मनुष्य चलते है।

पशु उन्नति नहीं कर पाते

मनुष्येतर जीवो पर हम यह दोष नहीं लगा सकते, क्योकि ये भोग योनिया है। ये अपनी अपनी सहज प्रवृत्ति के अनुसार मात्र आहार, निद्रा, भय और मैथुन की आवश्यकताओ की पूर्ति तक अपने प्रयत्नो को सीमित रखते है। ये अपने स्वभाव को बदल नहीं सकते। ये उन्नति नही कर सकते। उन्नति के लिए साधना (तप) की आवश्यकता होती है। साधना बुद्धिपूर्वक, योजनाबद्ध, क्रमबद्ध, नियमबद्ध होने पर ही सफल होती है। यह केवल मनुष्य ही कर सकता है।

लगे बधे नियम

कभी कभी हम कई अन्य प्राणियो केजीवन मे भी कुछ क्रम-नियम देखते है, लेकिन इनकी सीमा होती है। ये इस सीमा को पार नही कर सकते। इसी कारण, ये किसी सस्कृति सभ्यता को जन्म नही दे सकते। ये अन्न अवश्य खाते है, लेकिन उनके खाने के पदार्थ निश्चित है। विविध भक्ष्य पदार्थ सिद्ध करने की कला इनमे नही है। ये अपने लिए घर अवश्य बनाते है, लेकिन इनके घरो मे विविधता नही होती। इनके पास विकल्प नही होता। कुछ पशुओ मे जातिनिष्ठा, स्वामी निष्ठा, मैथुन मर्यादा आदि नैतिक मूल्यो का पालन देखने को मिलता है। लेकिन इसमे परिवर्तन देखने को नही मिलता।

कभी कभी हम गलीकूचे मे कुत्तो को आपस मे लडते देखते है। कभी कभी कई सारे कुत्ते एक साथ किसी एक अकेले कुत्ते पर आक्रमण करते है। तब वह अकेला कुत्ता चारो ओर से घेर लिये जाने पर, असहाय की स्थिति मे, जमीन पर पीठ लगाकर, चारो टाग उठाकर, आकाश की ओर फैला कर, 'कुई कुई' आवाज़ करते हुए लेट जाता है। यह उसका आत्मसमर्पण का सकेत है। इस सकेत को आक्रमण करने आये हुए कुत्ते समझते है और जमीन पर लेट कर दैन्य भाव को प्रकट करने वाले कुत्ते का स्पर्श भी न करते हुए वापस लौट जाते है।

सीमित सामाजिक भावना

हाथी, हिरन आदि जगली जानवर जब अपने परिवार मे किसी बिछडे को अनाथ देखते है, तब उनका पूरा ख्याल रखते है। भूख से पीडित कोई भी जगली जानवर अपनी सतान को पराधीन नहीं छोडता। कोई भी कुत्ता स्वामीद्रोह नहीं करता। कोई भी वानर मित्र द्रोही नहीं होता। कोई भी हाथी, शेर जातिद्रोह नहीं करता।

मनुष्य का आसुरी आचरण

लेकिन कारगिल युद्ध मे, भारत बगलादेश की सीमा मे पाकिस्तानी मुसलमान सैनिको ने युद्धबदी भारतीय सैनिको मे से कई जवानो की निर्मम हत्या की, उनके अग प्रत्यगो को काट डाला, गुप्तागो का भी छेदन किया और उनकी लाशो को गठरी बाध कर सीमा के इस पार भेजा। देश मे अन्न धान्य का भडार भरपूर है फिर भी कई ओर से समाचार आते रहते है कि गरीबी के कारण कई माताए अपने बच्चो को दूसरो के हाथ बेच रही है।

मित्रद्रोह, जातिद्रोह, देशद्रोह की बाते सामान्य बन चुकी है। हर मनुष्य कभी न कभी विश्वासघात का शिकार बन जाता है। यद्यपि जगली जानवर ऐसा नही करते, फिर भी मानव समाज मे इस प्रकार के व्यवहार को जगलीपन कहा जाता है। कुत्ते किसी की भी चुगली नही करते, पीठ पीछे दूसरो की निन्दा नही करते। फिर भी लोग इस गन्दी आदत को कुत्तापन कहते है। क्यो? शायद इसलिए कि ये मूक प्राणी मनुष्य को उत्तर नही दे सकते।

मनुष्य बदल सकता है

मनुष्य प्राणी की यही विशेषता है कि वह साधना करके सुसस्कृत और सभ्य मानव बन सकता है, देवता बन सकता है, इस धरती को स्वर्ग बना सकता है अथवा अपने दैवप्रदत्त शक्ति सामर्थ्य का दुरुपयोग करके अपने आपको जगली जानवरो से भी बदतर सिद्ध कर सकता है, इस धरती को नरक बना सकता है। इस प्रकार मनुष्य अपने शक्ति सामर्थ्यों का सदुपयोग अथवा दुरुपयोग करके दो परस्पर विरोधी सस्कृतियो को जन्म देता है। यथा—दैवी सस्कृति और आसुरी सस्कृति। दैवी सस्कृति का दूसरा नाम आर्य सस्कृति है। वास्तव मे यही मानव सस्कृति है। सस्कृति शब्द सस्कार, शुद्धता, पवित्रता का अर्थ प्रकट करता है। जानवरो की कोई सस्कृति नहीं हो सकती। किसी विकृति को भी हम सस्कृति नहीं कह सकते। फिर भी लोक मे सस्कृति और सभ्यता के विरोधी व्यवहार का भी कुछ विशेषणों के साथ, 'संस्कृति' नाम पड गया है। यथा—आसुरी सस्कृति, अनार्य संस्कृति, पाशवी सस्कृति इत्यादि। कालान्तर में देश काल के आधार पर भी इनको अलग अलग नाम दिये गये हैं। यथा मिस्र की सभ्यता, सिन्ध की सभ्यता, चीन की सभ्यता, ग्रीस और रोम की सभ्यता आदि। अर्थात् जैसे आजकल अधर्म को भी धर्म कहा जाता है, वैसे ही असभ्यता को भी सस्कृति और सभ्यता का नाम दे दिया गया है।

रामायण मे, लकाधीश रावण, अशोक वाटिका मे सीता से कहता है कि परस्त्री गमन, अपहरण, बलात्कार इत्यादि राक्षसो का अपना धर्म है। (**स्वधर्मो राक्षसाना भीरु सर्वथैव न संशयः। गमन वा परस्त्रीणा हरण सम्प्रमथ्य वा।** काण्ड ५, सर्ग २०, श्लोक ५) आजकल कुछ लोग अवसरवादिता को राजनीति और व्यवहारकुशलता, भ्रष्टाचार को शिष्टाचार, धूर्तों के साथ समझौता करके अपना स्वार्थ सिद्ध करने को समझदारी मानते है।

पुण्य का फल तो सब चाहते हैं

किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि दुनिया मे प्राय सभी लोग पुण्य अर्थात् सत्कर्मों के फल प्राप्त करना चाहते है, लेकिन बहुत कम लोग सत्कर्मो मे विश्वास करते है। कोई भी मनुष्य पाप अर्थात् दुष्कर्मो का फल भोगना नहीं चाहता, लेकिन ऐसे कर्मो को छोडता भी नहीं।

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्य नेच्छन्ति मानवा.।
न पापफलमिच्छन्ति पाप कुर्वन्ति यत्नत ।

वास्तव मे सत्यकर्म ही सुख और शाति का मार्ग है, दुष्कर्मो के फल है—दु ख और अशाति। सत्कर्मो को ही धर्म और दुष्कर्मो को ही अधर्म कहते है। अनार्य अथवा असुर लोग अधर्म को ही धर्म समझते है। शुक्रनीति के अनुसार **"अन्यान् सम्पीड्य स्वात्मानमेव रक्षन्ति ये, ते राक्षसा:"** अर्थात् दूसरो को पीडा पहुचा कर अपने स्वार्थ सिद्ध करने वाले दुष्ट अनार्यों को राक्षस भी कहते है। **"त्यक्त-स्वधर्माचरणाः निर्घृणाः परपीडकाः। चण्डाश्च हिसकाः नित्य म्लेच्छास्ते ह्यविवेकिनः।** (शुक्रनीति १-४४) अर्थात् ऐसे मूर्ख लोगो को, जिन्होने मानव योनि में जन्म लेकर भी मानव धर्म को त्याग दिया है, जो घृणित हिसा के कार्यों मे लगे हुए है, और शौचाचार का नियम पालन नहीं करते, उनको राक्षस कहा जाता है। शुक्रनीति के ही अनुसार धर्मरक्षक राजा देवाश अथवा देवता माना जाता है और इसके विपरीत चलने वाले, अधार्मिक, प्रजापीडक राजा राक्षसो का अश अथवा राक्षस माने जाते है। (**यो हि धर्मपरो राजा देवांशोऽन्यश्च रक्षसाम्। अंशभूतो धर्मलोपी प्रजापीडको भवेत्।**)

मानव इतिहास युद्धों का इतिहास

दैवी और आसुरी दोनों ही प्रवृत्तियों के लोग विश्व में बहुत प्राचीन काल से ही देखे गये हैं। ये दोनों परस्पर विरोधी स्वभाव के है। देवों ने दुनिया में दैवी संस्कृति को जन्म दिया और असुरों ने आसुरी संस्कृति को। देवो ने इसी धरती पर स्वर्ग बसाने का प्रयत्न किया और असुरों ने इसी को नरक बनाया। ये दोनों, एक धर्म की रक्षा करने वाले और दूसरे धर्म को नष्ट करने वाले एक दूसरे के सहज शत्रु है, अत. ये हमेशा आपस मे लडते रहे। अन्यायकारी कलहप्रिय असुर हमेशा अशाति के कारण बने रहे। अत· मानव सभ्यता के इतिहास मे ऐसा कोई युग नहीं था, जब युद्ध नहीं हुआ हो। इस कारण कुछ विद्वानो का कहना है कि मानव इतिहास, युद्धो का इतिहास है।

युद्ध के बिना शान्ति नहीं

यह सच है कि युद्ध कोई भी नही चाहता। लेकिन यह भी सच है कि युद्ध के बिना सुख और शाति की रक्षा भी नहीं हो सकती। दुष्ट हमेशा दण्ड की भाषा ही समझते हैं। अत शातिप्रिय लोगो को भी युद्ध के लिए सदा तैयार रहना चाहिए अन्यथा उनके सामने एक ही विकल्प है आसुरी शक्तियो के सामने आत्मसमर्पण करना या उनके हाथो भेड बकरियो की तरह मर जाना। भगवान् श्रीकृष्ण के वचन **'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग जित्वा भोक्ष्यसे महीम्'** (भगवद्गीता २-३७) बिल्कुल सत्य है। क्योकि धर्मयुद्ध मे मरने वाले वीर पुरुष को अधर्म को रोकने का फल अवश्य मिलता है। जीतने पर उसका फल प्रत्यक्ष देखने को मिलता है।

देव और असुर मनुष्य ही हैं

देव और असुर अथवा आर्य और अनार्य, दोनो मानव है। इसलिए उनको पहचानना इतना आसान काम नही है। धर्मशास्त्रकार कहते है कि अनार्य भी कभी कभी आर्यो का रूप धारण करते है, उनके जैसे नाम भी धारण करते है, यज्ञादि कर्म भी करते है। लेकिन न इनके कुल का कोई पता, न वर्ण का। इनका जन्म नीच और दुष्ट कुल मे भी हो सकता है। अत बीज गुण इनके अन्दर अवश्य छिपा रहता है। समय आने पर ही वह प्रकट हो जाता है। अनार्यों के योग्य कार्य, अन्नपानादि का सेवन, उनके योग्य अभद्र व्यवहार, कठोर वाणी, क्रूर व्यवहार, आंखो के सामने अधर्म (असत्य और अन्याय) को देखते हुए भी तटस्थ अथवा निष्क्रिय रहना, धर्म की रक्षा के लिए कुछ त्याग करने, कुछ कष्ट उठाने को तैयार न रहना इत्यादि इस बात के प्रमाण है कि ये वास्तव में अनार्य हैं। इन लक्षणों के आधार पर अनार्यों को पहचानना आवश्यक है अन्यथा आर्य लोग इन अनार्यों से कभी न कभी अवश्य धोखा खायेगे।

वर्णापेतमविज्ञातं नरं कलुषयोनिजम्।
आर्यमिवानार्यं कर्मभिः स्वैर्विभावयेत्॥
अनार्यता निष्ठुरता क्रूरता निष्क्रियतात्मता।
पुरुषं व्यञ्जयन्तीह लोके कलुषयोनिजम्॥

मनुस्मृति १०/११, १२

(शेष पृष्ठ १० पर)

कश्मीर में जनमत संग्रह की मांग का कोई आधार नहीं

❑ न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द महाजन (जम्मू कश्मीर राज्य के पूर्व प्रधानमत्री)

> ***पाकिस्तान रट लगा रहा है कि कश्मीर मे जनमत सग्रह कराया जाये, और वहा के निवासियो की इच्छा के अनुसार कश्मीर भारत या पाकिस्तान मे मिले। महाराजा द्वारा अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद जनमत सग्रह का कोई प्रश्न ही नहीं था। अब स्थिति यह है कि यदि पाकिस्तान अपने कब्जे में विद्यमान २/५ भाग कश्मीर को खाली नही करता, तो सैन्यबल से उसे खाली करा लिया जाये।***

(गतांक से आगे)

पाकिस्तान के पक्ष मे झुकी सुरक्षा परिषद्, पाकिस्तान द्वारा शर्तो को पूरा न किये जाने के बाद भी जनमत सग्रह केप्रश्न को घसीटती रही और उसने अधिमिलन के प्रश्न को मध्यस्थता द्वारा निपटाने के लिए भारत और पाकिस्तान मे मध्यस्थ भेजने शुरू कर दिये। इन भेजे मध्यस्थो में अन्तिम था श्री न्यायमूर्ति डिक्सन। उसकी रिपोर्ट थी कि जम्मू और लद्दाख प्रान्तो पर भारत का कब्जा रहे और पाकिस्तान ने जिस क्षेत्र पर अवैध रीति से अधिकार कर लिया है, उस पर उसका कब्जा बना रहे और कश्मीर घाटी के भाग्य का निर्णय जनमत सग्रह द्वारा किया जाये।

इस मध्यस्थ के सुझाव को भारत ने नही माना और यह ठीक ही किया। जब १९४९ को प्रस्ताव अपनी मौत आप मर गया, तब उसे कश्मीर घाटी मे यह मान कर, कि मुसलमान अधिक सख्या मे रहते है, इसलिए वे अवश्य ही पाकिस्तान मे अधिमिलन के पक्ष मे वोट देगे, कश्मीर घाटी पाकिस्तान को देने के उद्देश्य से आशिक रूप से पुन जीवित नहीं किया जा सकता था। परन्तु ऐसा मान लेना ऐतंराज योग्य होगा, क्योकि कश्मीरी लोगो की पाकिस्तानी मुसलमानो से कोई समानता नहीं है।

तब सुरक्षा परिषद् ने प्रस्ताव किया कि इस प्रश्न का समाधान भारत और पाकिस्तान के बीच आपसी विचार विमर्श से किया जाना चाहिए।

इस प्रकार के विचार विमर्श हुए, किन्तु उनका कोई परिणाम नही निकला।

विचित्र बात यह है कि सुरक्षा परिषद् की रुचि भारत द्वारा की गई शिकायत पर निर्णय सुनाने मे न हो कर किसी न किसी तरह पाकिस्तान को सारा कश्मीर या उसका कुछ हिस्सा दे देने मे ही है, जिसका कि अग्रेज़ो ने उससे वायदा किया हुआ है।

कश्मीर के ३/५ भाग को घाटी में घुसपैठिये भेज कर और जम्मू पर पाकिस्तानी सेना की शक्तिशाली टुकडियो द्वारा हमला करके जीत कर भारत से अलग करने का तरीका जनमत सग्रह नहीं है। भारत का सौभाग्य था कि यह योजना भी विफल हो गई। भारतीय जवान पाकिस्तानी सैनिको और उनके अमेरिकी टैको से बढ कर सिद्ध हुए।

शस्त्र बल से जम्मू-कश्मीर राज्य को जीत लेने के प्रयास मे विफल हो कर पाकिस्तान १९४९ के प्रस्ताव की आड मे कश्मीर राज्य को अपने मे मिलाने और जनमत सग्रह कराने मे सहायता मागने के लिए फिर सुरक्षा परिषद् मे गया।

कहना तो यह चाहिए था कि "तुम आक्रमणकारी हो, जाओ, पहले जम्मू कश्मीर खाली करो, उसके बाद ही तुम्हारी बात सुनी जा सकती है," परन्तु ऐसा न कह कर सुरक्षा परिषद् ने बडे राष्ट्रो के पाकिस्तान समर्थक कूटनीतिक दबाव मे आ कर पाकिस्तान द्वारा उठाये गये इस प्रश्न पर विचार करना स्वीकार कर लिया।

भारत के सौभाग्य से, इस बार उसके राजनेताओ और प्रतिनिधियो ने कडा रुख अपनाया और दृढ तथा स्पष्ट स्वर मे सुरक्षा परिषद् से कह दिया कि राजनीतिक प्रश्नो को हल करने या जनमत सग्रह के प्रस्ताव को फिर उठाने का उसे कोई अधिकार नही है और उसका कार्य क्षेत्र केवल इतना है कि शान्ति पुन स्थापित की जाये और लडाई बन्द कराई जाये।

हमारा यह दृष्टिकोण सावधानिक और नैतिक, दोनो ही आधारो पर सही है।

हमारे वर्तमान (सन् १९६६ के) प्रधानमत्री ने ठीक ही कहा है कि जम्मू और कश्मीर भारत का अभिन्न अग है और उस पर कोई चर्चा नही की जा सकती।

किन्तु मुझे यह बात स्पष्ट नही है कि हमारे विदेश मत्री ने कुछ पत्रकारो से यह कैसे कह दिया कि पाकिस्तान के कब्ज़े मे विद्यमान कश्मीर के २/५ भाग पर चर्चा की जा सकती है। वह भी भारत का उतना ही अभिन्न अग है, जितना कि बाकी ३/५ भाग है। पाकिस्तान ने उस २/५ भाग पर अवैध रूप से कब्ज़ा किया हुआ है और अधिमिलन पत्र के अनुसार अपनी समूची शक्ति लगा कर उसे वापस लेने के लिए हम बाध्य है।

जनमत सग्रह अधिमिलन का निर्णय करने का तरीका नही है। जनमत सग्रह बहुत ही कम और बहुत ही विरल दशाओ मे कराया जाता है।

जहा जनता अनपढ और अबोध है और यह समझ भी नहीं सकती कि जनमत सग्रह का क्या अर्थ है और जहा साम्प्रदायिकता भडक सकती है और उसके फलस्वरूप अन्धाधुन्ध हत्याए और दगे हो सकते है और लोगो को घर छोड कर भागना पड सकता है, वहा जनमत सग्रह की बात करना ही व्यर्थ है।

साराश यह है

स्थिति यह है कि महाराजा द्वारा बिना शर्त दिये गये अधिमिलन पत्र को स्वीकार करते समय जो शर्त जोड दी गई थी, वह भारतीय स्वाधीनता अधिनियम मे परिभाषित भारत सरकार की शक्ति से बाहर (नियम विरुद्ध) थी और शर्त निष्प्रयोजन है और उसकी पूरी तरह उपेक्षा कर दी जानी चाहिए, क्योकि उसकी कोई वैधता ही नही है और अधिमिलन को अन्तिम और पूर्ण माना जाना चाहिए, जिसके अनुसार जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अग बन गया है।

यदि केवल तर्क के लिए यह मान भी लिया जाये कि हमारे महाराज्यपाल द्वारा दिये गये वचन का सम्मान किया जाना चाहिए, तो भी इस वचन का पूरी तरह पालन कर दिया गया है। जम्मू-कश्मीर राज्य की सविधान सभा ने महाराजा के कार्य की पुष्टि कर दी थी और उसके बाद वहा तीन बार निर्वाचन हो चुके है और हर बार अधिमिलन की पुष्टि की गई है। ऐसा नही कहा गया था किलोगो की इच्छा किसी बाहरी या अन्तरराष्ट्रीय आयोग द्वारा मालूम की जायेगी। इस इच्छा का पता भारत द्वारा लगाया जाना था और वह एक से अधिक बार लगाया जा चुका है।

सन् १९४९ का प्रस्ताव सुरक्षा परिषद् की शक्तियो के बाहर (नियम विरुद्ध) था। परिषद् का अधिकार क्षेत्र भारत की शिकायत पर विचार करने तक ही था, उससे अधिक नही। जनमत सग्रह के प्रस्ताव पर सहमति जताने मे उस समय के प्रधानमत्री ने अपने अधिकार से बाहर काम किया। जो भी हो, वह प्रस्ताव अब जीवित ही नही है। उसे न केवल भारत ने, अपितु पाकिस्तान ने भी, अस्वीकार कर दिया है, क्योकि उसने उस प्रस्ताव मे इस पर लगाई गई शर्तो को पूरा नही किया।

सुरक्षा परिषद् भी उस पर टिकी नही। उसने मध्यस्थता का मार्ग सुझाया और भारत तथा पाकिस्तान से आपसी विचार विमर्श द्वारा विवाद को निपटा लेने को कहा।

अन्तिम बात यह है कि मुझे लगता है कि एक आक्रमणकारी और अतिक्रमण का दोषी राज्य यह दावा नहीं कर सकता कि प्रश्नो का हल जनमत सग्रह द्वारा कर लिया जाये।

कश्मीर के लोगो की ओर से जनमत सग्रह की वकालत करने वाला पाकिस्तान कोई नही होता। इस प्रकार का प्रश्न कश्मीर के लोगो द्वारा उठाया जा सकता है, न कि एक विदेशी राज्य द्वारा जो उसे जैसे भी हो सके, हडप लेना चाहता है।

पाकिस्तान यह दावा नही कर सकता कि वह कश्मीर या अन्यत्र कही रहने वाले मुस्लिमो के अधिकारो का रक्षक है।

वह अपने ही अल्पसख्यको की रक्षा नही कर पा रहा और पख्तूनो और पूर्वी बगाल को जनमत सग्रह का अधिकार नहीं दे रहा। तब कश्मीरियो के लिए जनमत सग्रह की वकालत कर पाना उसके लिए कैसे सभव है? उसका दावा निराधार है और उसे ससार के सभी राष्ट्रो द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए।

श्री जिन्ना ने, जो पाकिस्तान के निर्माता थे, कभी यह नही कहा कि कश्मीर राज्य का अधिमिलन जनमत सग्रह द्वारा तय किया जाना चाहिए।

उन्होने दृढतापूर्वक यह राय प्रकट की कि यह एकमात्र शासक का ही विशेषाधिकार था।

श्री जिन्ना के उत्तराधिकारी अब किस प्रकार यह प्रश्न उठा सकते है कि अधिमिलन के प्रश्न का हल जनमत सग्रह द्वारा किया जाना चाहिए?

हिन्दी सेवक श्री जगन्नाथ जी का दु:खद निधन

यह समाचार बडे दु ख के साथ पढा सुना जाएगा कि हिन्दी के अनन्य सेवक श्री जगन्नाथ जी का बीमारी के बाद १८ अगस्त को देहावसान हो गया। पिछले वर्ष श्री हरिबाबू कसल के देहावसान के एक वर्ष बाद ही श्री जगन्नाथ जी के देहावसान से सरकारी कामकाज मे हिन्दी को बढावा देने और उसके अधिकार के लिए सघर्ष करने के प्रयत्नो को एक बडा आघात पहुचा है। आपने केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयो मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग के लिए कर्मचारियो को प्रेरित और प्रोत्साहित करने तथा हिन्दी के विरोधी अधिकारियो और राजनेताओ की चालो को बडी कुशलतापूर्वक विफल करने मे अपनी सारी आयु लगा दी। आप एक बडे निष्ठावान आर्यसमाजी थे और अपनी रुग्णावस्था मे भी अन्त तक हिन्दी के लिए विभिन्न कार्य करते रहे। केन्द्र मे प्रो० शेरसिह जी के निजी सचिव के रूप मे आपने समय समय पर महत्वपूर्ण विषयो मे आने वाली अडचनो को किस प्रकार दूर किया, उनके ऐसे कितने ही सस्मरण बडे रोचक थे। राजभाषा सघर्ष समिति, दिल्ली की सभी महत्वपूर्ण गतिविधियो मे उनसे सही मार्गदर्शन मिलता था। हिन्दी के ऐसे निष्ठावान अनन्य सेवक को हमारा शत-शत नमन। उनकी स्मृति मे अनेक सस्थाओ द्वारा श्रद्धाजलि सभाए आयोजित की जा रही है।

के० आर० ऐम० डी० ए० वी० कालेज नकोदर : एक परिचय

पजाब प्रदेश के जालन्धर जिले मे नकोदर आज से ३१ साल पहले एक छोटा सा और पिछडा हुआ इलाका था, जो आज के० आर० ऐम० डी० ए० वी० कालेज तथा अन्य शिक्षा सस्थाओ के कारण उन्नत हो कर तहसील बन गया हैं। नकोदरवासियों के घोर तप तथा तत्कालीन प्रि० श्री आर० ऐस० शर्मा के कठोर परिश्रम के फलस्वरूप सरस्वती का वरदान नकोदर मे साकार हुआ तथा १९७० ई० मे डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के सरक्षण मे के० आर० ऐम० डी० ए० वी० कालेज की स्थापना हुई। श्री आर० ऐस० शर्मा ने इस सस्था की नीव को गहरी और सुदृढ बनाया। इसके भवन निर्माण के कार्य को समय समय पर प्रि० श्री ऐ० ऐन० शर्मा, श्री डी० आर० गुप्ता, श्री के० सी० महिन्दरु, श्री ऐम० ऐल० तनेजा, श्री सुभाष कुमार, श्री ऐम० ऐल० ऐरी ने कालेज कर्मचारियों, स्थानीय प्रबन्धकर्त्री समिति के सदस्यों तथा इलाका निवासियो के पूर्ण सहयोग से आगे बढाया।

आज की इस सफलता के पीछे छिपी है प्राध्यापक वर्ग तथा अन्य कर्मचारियो एव विद्यार्थियों की कठिन मेहनत, लगन, ईमानदारी, तपस्या और सहयोग की भावना।

गत चार वर्षो की उपलब्धिया

- लडकियो के रहने की सुविधा के लिए एक होस्टल बनवाया गया।
- एक बडी कैन्टीन, स्टाफ रूम, सगीतशाला, गृह विज्ञान प्रयोगशाला आदि कुल मिला कर बाईस नये कमरो का निर्माण किया गया।
- ५५०० वर्ग फुट के क्षेत्रफल मे एक भूमिगत वाहन सस्थान (अडरग्राउड पार्किंग सैटर), उसके ऊपर दो बडे हाल कमरो, एक बैंक परिसर का निर्माण करवाया गया।
- कालेज के मुख्य प्रवेश द्वार के साथ ही मुख्य कार्यालय का निर्माण करवाया गया।
- कम्प्यूटर की छात्राओ की सुविधा के लिए पन्द्रह कम्प्यूटर मशीनो वाली वातानुकूलित प्रयोगशाला का निर्माण इसी वर्ष की उपलब्धि है।
- छात्र विभाग मे एक कॉमन रूम, खिलाडी विद्यार्थियों की सुविधा के लिए चार स्टोर रूम का निर्माण करवाया गया।
- बी सी ए केविद्यार्थी लडको के लिए चार कमरो, तीन शौचालयो, दो स्नानागारो का निर्माण करके उनका सहज और सफल प्रयोग भी इसी वर्ष से ही प्रारम्भ हुआ है।

प्रेक्षा गृह का निर्माण यह एक महायज्ञ है जो लगातार जारी है। इलाके के दानवीर महानुभावो के सहयोग से बडी द्रुतगति मे इसके निर्माण कार्य को आगे बढाया जा रहा है। अब तक एक करोड रुपया लगाया जा चुका है और एक करोड लगाना बाकी है।

यूथ फैस्टिवल का आनन्द लेते हुए मुख्य अतिथि श्री अजीत सिह कोहाड।

श्री बलराम जी दास टडन निकाय मत्री पजाब।

कालेज के शानदार परिणाम

- कु० हरप्रीत कौर ने लगातार बी ए पहले, दूसरे, तीसरे, तीनो सालों मे ही गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय मे प्रथम स्थान प्राप्त करके न केवल कालेज के इतिहास मे, अपितु विश्वविद्यालय मे भी एक रिकार्ड स्थापित किया है।
- कुमार गौरव ने बी ए प्रथम वर्ष मे गुरु नानकदेव यूनिवर्सिटी मे प्रथम, द्वितीय वर्ष मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- कु० श्वेता गुप्ता ने बी ए द्वितीय तथा इस बार तृतीय वर्ष मे यूनिवर्सिटी मे दूसरा स्थान प्राप्त करके कालेज की यश पताका को ऊचा किया।

इस तरह कालेज की तरफ से बोर्ड अथवा यूनिवर्सिटी की परीक्षा मे

○ प्रथम स्थान पाने वाले विद्यार्थी को २१,०००/- रुपये। ○ द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को ११,०००/- रुपये। ○ तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को ७,०००/- रुपये। ○ मैरिट लिस्ट में आने वाले विद्यार्थियो को ५००/- रुपये इनाम मे दिये जाते है।

पुष्पहारों से लदे उच्च शिक्षामत्री मास्टर मोहन लाल जी।

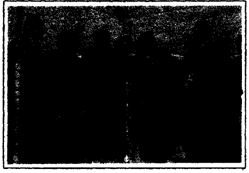

'असतो मा सद्गमय' स्वास्थ्य एव चिकित्सा मत्री श्री मनोरजन कालिया, श्री अशोक महिन्दरु, प्रि० श्री धनीराम जी।

नये व्यावसायिक प्रशिक्षण

- कम्प्यूटर ऐप्लिकेशन, ऐज वोकेशनल सब्जैक्ट, बैचलर इन कम्प्यूटर ऐप्लिकेशन, 'ओ' लैवल कोर्स इन कम्प्यूटर, पी जी डिप्लोमा इन कम्प्यूटर ऐप्लिकेशन, पी. जी डिप्लोमा इन बिजनैस मैनेजमेट, डिप्लोमा इन ए सी ऐड रैफ्रिजरेशन।
- लडकियो के लिए डिप्लोमा कोर्स इन फैशन डिज़ाइनिग/टेलरिग/एम्ब्रॉयडरी तथा डिप्लोमा इन पेटिग।

राष्ट्रीय सेवा योजना (ऐन. ऐस. ऐस.)

- ऐन ऐस ऐस के चार यूनिट कार्यरत है, जिनके अन्तर्गत कमालपुर तथा मल्लिया खुर्द मे कैम्प लगाये गये।
- वनारोपण महोत्सव मनाया गया।

ए ऐस औलक आई जी बी. ऐस ऐफ पजाब फ्रटियर का अभिवादन करते हुए प्रि० धनीराम तथा ऐल० ऐम० सी० के चेयरमैन श्री ऐस० डी० मेहता।

श्री सुरेश अरोड़ा डी. आई जी पुलिस जालन्धर (बाईं ओर से प्रथम)

- पल्स पोलियो कैम्प लगाया गया
- हैपीटाइटस बी टीकाकरण अभियान चलाया।
- आवश्यकता पडने पर विद्यार्थियो ने रक्तदान किया।
- मैडिकल चैकअप कैम्प लगाये गये।

इन सबके अतिरिक्त पोस्टर मेकिग, स्लोगन राइटिग, राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत कवितोच्चारण, भाषण आदि प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया।

सास्कृतिक कार्यक्रम

लोक नाच भगडा का दृश्य।

शबद गायन के प्रतियोगी।

- विश्वख्याति प्राप्त कलाकार श्री हसराज हस की अध्यक्षता मे सम्मान समारोह का आयोजन करके उन विद्यार्थियो को मम्मानित किया, जो कालेज के गौरव है।
- कालेज के दोनो विभागो मे अलग अलग प्रतिभान्वेषण प्रतियोगिताओ का आयोजन करके उभरते हुए कलाकारो के कलात्मक गुणो की पहचान कर उनके विकास के लिए अपना ध्यान केन्द्रित किया।
- स्पिक मैके नामक राजस्थान के कलाकारो की एक टीम ने राजस्थान की कला को पजाबी मच पर प्रस्तुत किया।
- बम्बई के कलाकारो ने भी अनेकता मे एकता की भावना को प्रदर्शित करने वाले कार्यक्रम का मचन किया।

युवक मेले का आयोजन

- गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के तीन दिवसीय युवक मेले का आयोजन किया गया।

वाद्य गायन।

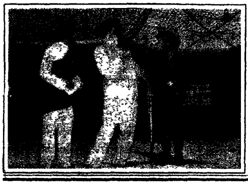
एकाकी मे से एक दृश्य।

- इस युवा मेले मे शब्द गायन, वार गायन, समूह गायन, शास्त्रीय गायन, पाश्चात्य गायन, लोक गीत, लोक नाच भगडा, एकाकी नाटक, लघु नाटक, मूक अभिनय, लघु प्रश्नोत्तरी, पुष्प सज्जा, रगोली, भाषण एव कवितोच्चारण आदि कलाओ का प्रदर्शन युवा कलाकारो द्वारा किया गया।
- १६, १७, और १८ नवम्बर २०००, तीनो दिन कई महान् विभूतियो ने कालेज की धरती को अपनी चरणधूल से कृतार्थ किया।
- तीनो दिनो की अध्यक्षता क्रमश श्री अजीत सिह कोहाड, जेल एव चुनाव मत्री, श्री बलराम जी दास टडन कैबिनेट मत्री पजाब, श्री सुरेश अरोडा डी आइ जी पुलिस रेज जालन्धर, श्री ए ऐस ओलख आइ जी बी ऐस ऐफ पजाब फ्रटीयर, मास्टर मोहनलाल उच्च शिक्षामत्री पजाब, श्री आर० ऐस० बावा रजिस्ट्रार गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी ने की।
- इनके अतिरिक्त गुरमीत सिह दादूवाल यूथ अकाली नेता, जत्थेदार जसवत सिह, प्रीतम सिह गाधरा, सतीश बजाज स्थानीय भाजपा अध्यक्ष, विजय भटनागर वरिष्ठ उपाध्यक्ष भाजपा, शिव दर्शन जिलाध्यक्ष भाजपा, राकेश जैन, राकेश तिवाडी, दीपक शर्मा नायब तहसीलदार, मनवीर सिह ढिल्लों आदि को सम्मानित किया गया।
- श्री चड्ढा प्रि० लायलपुर खालसा कालेज जालन्धर, प्रि० स्वर्ण सिह ने अपनी व्यस्तताओ के होते हुए भी कालेज मे किये गये आयोजन मे आ कर हमारे गौरव को बढाया।

अन्य गतिविधिया

- ★ "सन्देश सस्कृतम्" नाम से अन्तरमहाविद्यालय सस्कृत लघु नाटिका एव लघु प्रश्नोत्तरी का सफल आयोजन किया गया।
- ★ वैदिक चेतना शिविर का आयोजन किया गया, जिसमे डेढ सौ से अधिक अध्यापिकाओ ने भाग ले कर लाभ उठाया।
- ★ महात्मा हसराज के जन्म स्थान बजवाडा मे कालेज के विद्यार्थियो को ले कर डी० ए० वी० आन्दोलन के सचालक के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये।
- ★ कालेज के कर्मचारियो के लिए सामूहिक पर्यटन का भी आयोजन हर वर्ष किया जाता है, जो अपनी मिसाल स्वय है।
- ★ गत वर्ष भी साठ व्यक्तियो का एक दल हरिद्वार, गगोत्री ऋषिकेश, बद्रीनाथ की यात्रा करके आया।

शबद गायन करते हुए हमारे विद्यार्थी।

बम्बई के कलाकार।

इस तरह विश्वव्यापीकरण के इस युग मे के० आर० ऐम० डी० ए० वी० कालेज नकोदर ने विद्यार्थियो को सफलता के मार्ग पर अग्रसर करने के लिए उनके बौद्धिक, आध्यात्मिक, भौतिक एव सास्कृतिक विकास के साथ साथ खेल-कूद के लिए सुअवसर प्रदान करके स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मानसिकता भी प्रदान की है। **"तमसो मा ज्योतिर्गमय"** के वेद वाक्य के साथ यह महाविद्यालय समाज को ज्ञानालोकित कर रहा है। अन्त मे यह कहा जा सकता है कि

ऊची है मशाल हमारी, आगे कठिन डगर है।
किन्तु आ रही नयी जिन्दगी, यह विश्वास अमर है।

धनीराम
प्राचार्य

वृद्धावस्था के रोग और उपाय

❑ श्री छाजूराम शर्मा वैद्य शास्त्री

मनुष्य को वृद्धावस्था किस आयु मे आनी चाहिए और उसको दूर हटाने के क्या उपाय हो सकते है? यह एक विचारणीय प्रश्न है जिसका उत्तर प्रत्येक सुखार्थी मनुष्य जानना चाहता है।

यदि मनुष्य की सामान्य आयु सौ वर्ष की मान कर चले, तो वह जीवन मे चार दशाओ से गुजरता है। १ बाल्यावस्था, २ युवावस्था ३ वृद्धावस्था ४ जरावस्था। इनमे वृद्धावस्था ७५ वर्ष की आयु से १०० वर्ष तक होती है और इससे ऊपर जरावस्था आ जाती है।

प्राय समझा जाता है कि ७५ वर्ष की आयु मे अवश्य ही वृद्ध हो जाना चाहिए। परन्तु, स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार चलने से इस समझ का खडन हो जाता है क्योकि वृद्धावस्था का आयु से कोई अटल सम्बन्ध नही है। यह तो देश, काल, आहार-विहार, आचार-विचार आदि पर निर्भर है। इसके अनुसार प्राचीन काल मे सौ वर्ष अथवा उमसे ऊपर वृद्धावस्था आती थी। मध्यकाल मे ७५ वर्ष और आजकल ५०-६० वर्ष की आयु वृद्धावस्था की मानी जाती है, सो ठीक नही है। यदि आयु ही वृद्धावस्था का कारण होती, तो आज हम बहुतो को ४० वर्ष मे ही वृद्ध होते न देखते। दुर्बलता का नाम वृद्ध वा बुढापा है, वह किसी भी आयु मे आ सकता है। शक्तिमान बने रहना युवावस्था है। प्राकृतिक जीवन जीने से यह किसी भी आयु तक बनी रह सकती है।

वृद्धावस्था मे दुर्दशा

गात्र सकुचित गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलि·।

दृष्टिर्नश्यति वर्धते बधिरता वक्त्र च लालायते॥

वाक्य नाद्रियते च बान्धवजनो भार्या न शुश्रूषते।

हा! कष्ट पुरुषस्य जीर्णवयसः पुत्रोऽप्यमित्रायते॥

शरीर जिसका सिकुड गया है, गाल पिचक गये है, चाल ढीली पड गयी है, दातो की पक्तिया नष्ट हो चुकी है, नेत्रो की दृष्टि मन्द हो गयी है। मुख से लार टपकती है, बन्धु बान्धव आदर नहीं करते, भार्या भी सेवा नही करती हा! बडे दु ख का विषय है कि मनुष्य की वृद्धावस्था मे पुत्र भी शत्रु बन जाता है। बडी दुर्दशा होती है।

युवावस्था मे जिसकी घर मे बडी चाहना थी, वृद्धावस्था मे उसकी घर मे कोई चाह नही, अपितु चाहते है कि यह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो। अत सन्तान आदि के अधिक मोह मे न फस कर वह कार्य करना, जिससे बुढापे मे सुख से रह सके। जवानी मे शरीर और इन्द्रियो की रक्षा करता हुआ सकट काल के लिये कुछ द्रव्य अवश्य बचाये रखना चाहिये, जिसके लोभ से सन्तान और पत्नी सेवा करते रहे। एक नीतिकार के विचारो पर ध्यान दे

इह लोके हि धनिना परोऽपि स्वजनायते।
स्वजनोऽपि दरिद्राणा सर्वदा दुर्जनायते॥

ससार मे धन वाले के लिये पराये भी अपने हो जाते है और धनहीन व्यक्ति के अपने भी पराये हो जाते है।

अस्ति यावत्तु सधनस्तावत् सर्वैस्तु सेव्यते।
निर्धनस्त्यज्यते भार्यापुत्राद्यैः सगुणोप्यतः॥

अर्थात् जब तक पुरुष के पास धन है, तभी तक स्त्री पुत्रादि उसकी सेवा करते है। धन के अभाव मे गुणवान होने पर भी उसकी कोई बात तक नहीं पूछता।

वृद्धावस्था क्यो आती है?

ऋतु, देश, काल, प्रकृति के विरुद्ध अनियमित आहार विहार, पौष्टिक भोजन का अभाव, अत्यधिक आराम का जीवन, परिश्रम न करना, भोग विलास, अधिक उपवास, मानसिक चिन्ताए, क्रोध, शोक, भयग्रस्त जीवन, ब्रह्मचर्य नष्ट करना, शरीर मे कोई न कोई रोग लगे रहना, विपत्तियो मे फस कर अनेक कष्ट सहना इत्यादि कारणो से शीघ्र ही बुढापा घर लेता है। मनुष्य की जीवनी शक्ति प्रतिदिन घटने लगती है। तब यह शारीरिक, मानसिक दोनो ही रूप से अशक्त हो जाता है। ज्ञानेन्द्रिया और कर्मेन्द्रिया निर्बल हो जाती है।

वृद्धावस्था के पूर्व लक्षण

स्मरण शक्ति मे कमी, चलने फिरने, उठने बैठने मे थकावट होना, कार्य करने मे चुस्ती वा उत्साह न होना, शरीर मे झुर्रिया पडना, किसी कार्य मे मन न लगना, निश्चय किये गये विचार को बार बार बदलना, बालो का सफेद होना या गिरना, जोडो मे दर्द, वायु व कफ के विभिन्न रोग होना, बिना सामर्थ्य के इन्द्रियो की अपने भोगो मे रुचि होना इत्यादि लक्षण बुढापे के जानने चाहिये।

इससे बचने के उपाय

बुढापा अपने समय पर अवश्य आता है। लेकिन उचित उपायो से इसे २५ वर्षो तक आगे को धकेला जा सकता है। जैसे समय पर फल पकता है, वैसे ही यह शरीर भी पक जाता है। बुढापा पकी हुई आयु है। यह युवावस्था का अन्ति समय है, जो आने के बाद फिर जाता नहीं। तभी तो कहा है कि

जो जा कर न आये वह जवानी देखी, जो आ कर न जाये वह बुढापा देखा। जवानी मे बुढापा आना जीवन मे अभिशाप है। इसे ठीक से जीने के निम्न उपाय करने चाहिए

आयु की दृष्टि से सर्वप्रथम ऋतु अनुकूल उचित आहार विहार का प्रबन्ध करना चाहिये। बुढापे के उपर्युक्त कारणों से बच कर ब्रह्मचर्य का सेवन, निद्रा का उचित सेवन करना आवश्यक है।

उचित आहार क्या है?

चोकरदार कुछ बिना छना मोटा आटा, छिलकेदार दाले, हरी सब्जिया, दूध, मक्खन, दही, घी, शहद, सूखे मेवे, देशी खाड, ऋतु के अनुसार फल, यथाशक्ति इनका सेवन वृद्धावस्था को शीघ्र आने से रोकता है। अडे, मास व सब प्रकार के नशो का सेवन शीघ्र बुढापा लाता है। बुढापे के लक्षण देखते ही रसायन औषधो का सेवन करना जीवनी तत्वो मे वृद्धि कर के बुढापे को रोकता है। सयम, सदाचार, सरलता, प्रसन्नाचित्त रहना, स्वल्प सात्विक भोजन, क्रियाशील जीवन, प्राकृतिक नियमो का पालन नि सदेह मनुष्य को बुढापे से बचा कर दीर्घजीवी बनाता है। युवावस्था मे सग्रह की हुई शक्ति वृद्धावस्था मे काम देती है।

वृध्दावस्था में होने वाले रोग और उनकी विश्वस्त औषधें

वृद्धावस्था मे प्राय जोडो के दर्द, मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप, बहुमूत्र और हृदयरोग हो जाते है। इनका कारण गलत भोजन, परिश्रम न करना, मानसिक चिन्ताए व शोक आदि है। इनमे निम्नलिखित सफल औषधो का प्रयोग लाभदायक है

मधुमेह (डायबिटीज) नीम निबौरी की गिरी, जामुन की गिरी, गुडमार बूटी, बेल के पत्ते, त्रिफला, गिलोय, वशलोचन, शुद्ध शिलाजीत, चादी भस्म, मडूर भस्म, छोटी इलायची के बीज।

सूखी दवाओ को कूट छान कर चूर्ण बना ले। फिर उसमे भस्मे मिला दे। इसमे करेला का रस डाल कर दिन मे धूप मे रखे, रात को ओस मे रखे। यह एक भावना हुई। इस प्रकार करेला के रस की सात भावना देकर छाया मे सुखा ले। छह माशे प्रात, छह माशे साय जल के साथ सेवन करे।

परहेज—तेल, खटाई, मीठा, आलू, चावल, आम, पकवान, लाल मिर्च, गरिष्ठ व बासी भोजन का सेवन न करे। सादा व हल्का भोजन ले। परिश्रम, ब्रह्मचर्य सेवन करे। एक मास के सेवन से मधुमेह चला जाता है। रोग पुराना हो तो तीन मास अवश्य सेवन करे। इससे बहुमूत्र रोग भी ठीक होता है।

जोड़ो का दर्द—शुद्ध कुचला, सौ ग्राम, शुद्ध गूगल ५० ग्राम, मल्ल सिदूर २० ग्राम, मीठी सुरजान ५० ग्राम ले।

पहले मल्ल सिन्दूर को खरल मे पीसे। फिर उसमे कुचला और सुरजान का चूर्ण मिला दे। बाद मे गूगल मिला कर एक कर ले। फिर इसमे अदरक का रस डाल कर भिगो दे। दिन को धूप मे और रात को ओस मे रखे। यह एक भावना हुई। ऐसी सात भावना अदरख की, सात रास्नादि काढे की और सात भावना लहसुन के रस की देकर खरल मे घुटाई करें। फिर खुश्क होने पर २-२ रत्ती की गोलियां बना कर छाया मे सुखा ले।

प्रात साय दो-दो गोलिया दूध से ले। यह दवा गृध्रसी (रीधन वायु) दर्द की अचूक दवा है। इसके अतिरिक्त गठिया, जोडो का दर्द, कमर का दर्द व सब प्रकार के वायु कफ के दर्द और पुराने जुकाम मे लाभ करती है। साथ ही दर्द स्थान पर महानारायण तेल और विषगर्भ तेल की मालिश करके सेक दे। चावल, उडद, चने, राजमा आदि वायु कारक वस्तुए न खावे।

अन्य शास्त्रीय औषधे—वातचिन्तामणि रस, वातकुलान्तक रस, समीरपन्नगरस (स्वर्णयुक्त) योगराज गूगल, एकागवीर रस आदि रोगानुसार दी जा सकती है।

हृदय की धडकन (हार्ट अटैक)

प्रवाल भस्म, अकीक भस्म, मुक्ताशुक्ति २-२ रत्ती, हृदयार्णव रस १ रत्ती। यह एक खुराक है। इसे मक्खन, मलाई, शहद वा दूध से दिन मे दो बार दे। इससे हृदय की धडकन को बहुत लाभ होता है, हार्ट अटैक का भय नही रहता। सिर मे चक्कर आना, आखो के आगे अधेरा होना और मस्तिष्क की दुर्बलता दूर हो जाती है।

बहुमूत्र

देशी अजवाइन, नागरमोथा छह-छह माशे, काले तिल १ तोला (१० ग्राम) सबको बारीक कर २० ग्राम गुड मे मिला ले। प्रात साय ५-५ ग्राम पानी से ले। बहुत लाभ होगा। शास्त्रीय औषधि—वसन्तकुसुमाकर रास, तारकेश्वर रस, बहुमूत्रान्तक रस, चन्द्रप्रभावटी।

मोटापा

सोठ ५० ग्राम, सूखा धनिया ५ ग्राम, छोटी पीपल ५० ग्राम, काली मिर्च ५० ग्राम, काला जीरा ५ ग्राम, काला और सेधा नमक ढाई-ढाई ग्राम, लाल मिर्च आधा ग्राम। सबका कपडछन चूर्ण करे। दोनो समय २-२ ग्राम चूर्ण भोजन के बाद पानी से ले। **शास्त्रीय औषधे**— आरोग्यवर्धिनी वटी व त्रिफला का मिश्रण, नींबू का रस-वा शहद डाल कर २-२ गोली प्रात सायं दे। चावल, घी, तेल, केला, उडद, चर्बी बढाने वाले पदार्थ न खावे। **शास्त्रीय औषध**— मेदोहर गुगल इसमे लाभ करता है। २-३ मास तक अवश्य सेवन करे। नित्य सैर करे, चिन्ता त्यागे।

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रैशर)

सर्पगन्धा चूर्ण, छोटी इलायची का चूर्ण २-२ रत्ती, शुद्ध शिलाजीत २ रत्ती मिला कर प्रात साय दूध से ले। रक्तचाप वृद्धि कम होती है। अनिद्रा वं उन्माद मे भी लाभदायक है। पथ्य में हल्का सुपाच्य आहार लें। विश्राम करे। गहरी नींद लें। चिकनाई व भारी पदार्थ न लें, चिन्ता, शोक, क्रोध, अतिश्रम, अति जागरण अपथ्य है।

१२६, जनता डी० डी० ए० फ्लैट, पावर
हाउस, बदरपुर, नई दिल्ली-४४

आर्य समाज के आकाश के उज्वल नक्षत्र सोमनाथ मरवाह

आर्य समाज के दिवंगत नेता श्री सोमनाथ मरवाह की श्रद्धाजलि सभा, उठाला तथा रस्म पगडी आर्य समाज मन्दिर मार्ग मे १८ अगस्त २००१ को साय काल ४ ३० बजे हुई। सभा मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियो के अतिरिक्त डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ के शिक्षक तथा अन्य आर्य नेता बडी सख्या मे उपस्थित थे। आर्यसमाज का सभागार खचाखच भरा था।

श्री सोमनाथ मरवाह की पत्नी श्रीमती शान्तिदेवी, दोनो पुत्र श्री अशोक मरवाह और अश्विनी मरवाह तथा परिवार केसभी सदस्य उपस्थित थे। यज्ञ के उपरान्त श्रद्धाजलि सभा हुई, जिसका सचालन आर्य समाज मन्दिर मार्ग केमत्री श्री डी० आर० गुप्ता ने किया। आरम्भ मे गायत्री मत्र का पाठ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सहमत्री श्री हरवशलाल कपूर ने किया। इसके पश्चात् कुलाची हसराज माडल स्कूल के सगीत शिक्षक श्री विजयभूषण आर्य तथा दो अन्य बहनों के भक्ति गीत हुए।

समवेदना सदेश

श्री डी० आर० गुप्ता ने विभिन्न आर्य सस्थाओं तथा समाजो से प्राप्त शोक एव समवेदना सदेशो का उल्लेख किया, जिसमे डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य युवक समाज, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा, आर्य समाज अनारकली, शुद्धि सभा, कन्या गुरुकुल दाधिया, युवा उद्घोष, सभी डी० ए० वी० स्कूलों, पब्लिक स्कूलों और कालेजो तथा अनेक आर्य समाजों के शोक प्रस्ताव थे। श्री डी० आर० गुप्ता ने आर्य समाज अनारकली की ओर से श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए कहा कि श्री सोमनाथ मरवाह एक महान पुरुष थे। उन्होंने आर्य समाज को नेतृत्व प्रदान किया।

श्रीयुत चोपड़ा का श्रद्धांजलि भाषण

उसके पश्चात् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति, दोनो के प्रधान श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा ने इन दोनो की ओर से मर्मस्पर्शी श्रद्धाजलि प्रस्तुत करते हुए दिवगत नेता के जीवन तथा गुणो का स्मरण किया। उन्होने कहा आर्य समाज को स्थापित हुए १२५ वर्ष हो गये हैं। इस लम्बी अवधि मे इस समाज मे कैसे कैसे लोग हो गये। महात्मा हसराज, जिन्होने अपना सारा जीवन शिक्षा केप्रचार मे खपा दिया। स्वामी श्रद्धानन्द, जिन्होने गुरुकुल की स्थापना की और जो वीरता के अवतार थे। लाला लाजपतराय, जो शहीद हुए। प० गुरुदत्त, 'मिलाप' अखबार के महात्मा खुशहालचन्द खुर्सन्द (जो बाद मे श्री आनन्द स्वामी बने), 'प्रताप' अखबार के महाशय कृष्ण, जिनकी लेखनी और वाणी मे गजब का ओज था, ये सब कैसे अद्भुत लोग थे। आज के युग मे स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी जैसे लोग आर्य समाज का नाम ऊचा कर रहे है और देश मे ही नहीं, विदेशो मे भी आर्य समाज की ध्वजा फहरा रहे है।

उज्वल सितारे

सोमनाथ जी मरवाह आर्य समाज के आकाश मे सितारे बन कर चमके। वह पढाई मे तेज थे। हमेशा अच्छे अक ले कर वजीफा पाते रहे। उन्होने कानून की परीक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से पास की। वह विश्वविद्यालय मे तीसरे नम्बर पर रहे। उन्हे आशा थी कि वह सर्वप्रथम आयेगे।

उनकी वकालत खूब चमकी। शुरू मे वह ५०० रुपये फीस लेते थे, जो बढते बढते ५० हजार रुपये हो गई। बाद मे वह प्रति वाद २ लाख रुपये लेने लगे थे। सन् १९९३ मे उनकी वकालत के ५० वर्ष पूरे होने पर उन्हे सम्मानित किया गया था।

आर्य समाज के प्रति समर्पित

वह आर्य समाज के प्रति समर्पित व्यक्ति थे। आर्य संस्थाओं से मुकदमों की फीस नहीं लेते थे। आर्य समाज के सभी मुकदमे उन्होंने निशुल्क लड़े। मृत्यु के समय भी उनके मुख से अन्तिम शब्द 'आर्य समाज' ही निकला। उन्होने आर्य समाज के हर पद को सुशोभित किया। आर्य समाज के मत्री, प्रधान से लेकर प्रतिनिधि सभाओ के ही नहीं, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भी कोषाध्यक्ष, कार्यकारी प्रधान और प्रधान भी बने।

सेवा कार्य

बचपन से ही उनमें सेवा की भावना थी। वह गर्मी की ऋतु मे विद्यार्थियो को साथ ले कर रेलवे स्टेशन पर जाते और प्यासे यात्रियो को ठडा पानी पिलाते थे।

वह हर चुनौती को आगे बढ कर स्वीकार करते थे। सघर्ष से कतराते या घबराते नहीं थे। लडने मे आनन्द अनुभव करते थे। अन्याय के आगे कभी झुके नहीं। चाहे हिन्दी आन्दोलन हो, चाहे पजाबी सूबा विरोधी या गोरक्षा आन्दोलन, वह सबसे अगली पक्ति मे दिखाई पडते थे। श्रीमती इन्दिरा गाधी से मिल कर उन्होने गोशाला स्थापित करवाई थी।

औघड़ दानी

श्री मरवाह दानवीर थे। उनके पास आर्य समाज के काम से जो भी गया, चाहे वह मेहरचन्द जी महाजन हों, या प्रकाशवीर जी शास्त्री, कोई खाली हाथ नही लौटा। वह यथाशक्ति सहायता करते थे। निजी आवश्यकताओ के लिए जाने वालो को भी सतुष्ट करते थे ही। आर्य समाज के निर्माण के लिए उन्होने भरपूर दान दिया। उनका रोम रोम समाज की सेवा मे रत था।

जब डी० ए० वी० सस्था पर सकट की घटाए छाईं, और असामाजिक तत्वो ने सस्था पर बलपूर्वक कब्जा करना चाहा, तब श्री सोमनाथ जी ने अपना बहुमूल्य समय लगा कर मामले को सुलझाया और सकट टल गया। गुरुकुल कागडी के झगडे को भी उन्होंने ही सुलझाया, जिसके फलस्वरूप आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुकुल पर फिर अधिकार कर सकी।

ऐसा मोटा अदाज़ा है कि उन्होने आर्य समाजो को २५ लाख रुपया दान दिया। उनका निधन डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा सारे आर्य समाज के लिए एक भारी चोट है। उन जैसा बुद्धिमान्, हितचिन्तक, समर्थ सहायक मिलना कठिन है।

अन्त्येष्टि के समय उनके पुत्र और अन्य परिवारजन आसू बहा रहे थे। आसू बहाते है, पर कुछ कह नहीं सकते।

तुझे पर कभी हम भुला ना सकेगे
निगाहो मे छाया हुआ एक गम था;
अधेरो ने पूछा सबब आसुओ का।
बताना भी चाहे, बता ना सकेंगे।
तेरी याद ऐसी कि मर जायेगे हम,
तुझे पर कभी हम भुला ना सकेगे।
कभी आयेगे ओठ पर बन के नगमा,
कभी आयेगे आख मे बन के आसू।

मृत्यु एक घर से दूसरे घर जाने की बात ही तो है। नदी का जल सागर से ही आता है और फिर सागर मे ही जा मिलता है। जो आया है, वह अवश्य जायेगा। अन्तर इतना ही है कि कौन इस यात्रा को कैसे पूरी करता है। सोमनाथ मरवाह जी ने अपनी जीवन यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की।

आर्य सस्थाओं से फीस नही

इसके पश्चात् वरिष्ठ उपप्रधान श्री विश्वनाथ ने श्री मरवाह को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि मरवाह जी आर्य सस्थाओ से मुकदमो की फीस नहीं लेते थे। डी० ए० वी० के छात्र होने के कारण डी० ए० वी० से फीस न लेने का और आग्रह था। एक बार हम लोगो ने एक मुकदमे को निपटाने मे उनकी सेवाए लीं और उनसे आग्रह किया कि वह उसका बिल बना दे। बहुत आग्रह करने पर उन्होने डेढ लाख रुपये का बिल भेज दिया। हम लोगो को लगा कि यह बिल, जितना हमने सोचा था, उससे अधिक भारी हो गया। फिर भी बिना कुछ कहे हमने स्रोत पर कर कटौती करके सवा लाख का चैक उन्हे भेज दिया। उस चैक को पा कर उन्हें रात भर नींद

(शेष पृष्ठ १० पर)

(पृष्ठ ९ का शेष)

आर्य समाज के आकाश के ......

नहीं आई। उन्हें लगता रहा कि डी० ए० वी० संस्था से फीस लेना उचित नहीं हुआ। उन्हे चैन अगले दिन तब जा कर पडी जब उन्होने २५ हजार रुपये अपनी ओर से मिला कर डेढ़ लाख रुपये का चैक आर्य महासम्मेलन के लिए दे दिया।

उनका कहना था कि मै फीस बिल्कुल छोड सकता हू, किन्तु फीस कम नहीं कर सकता।

निष्ठावान् आर्यसमाजी

श्री सोमनाथ मरवाह आर्य समाज के आधार स्तम्भ थे। निष्ठावान् आर्य समाजी थे, नियम से सध्या और हवन ही नहीं करते थे, अपितु यज्ञोपवीत पहनते और चोटी रखते थे। चोटी के वकीलो मे उनकी गणना थी। गौतमनगर गुरुकुल की भूमि उन्होने औरो के कब्जे से बचाई। हैदराबाद सत्याग्रहियो को स्वतत्रता सेनानी पेशन दिलाने मे उनका बडा हाथ था। दीवानचन्द प्रकाशवती ट्रस्ट की सम्पत्ति की रक्षा करके उन्होने लाख रुपये दीवानचन्द ट्रस्ट को दिलवाये। वह मानते थे कि दिया हुआ दान दस गुना हो कर वापस आ जाता है। अनेक आर्य समाजी सासदो की चुनाव याचिकाए उन्होंने बिना फीस लिये लर्डी और जीर्ती।

इसके पश्चात् डा० उमेश यादव का प्रवचन हुआ। उन्होने कहा कि मरवाह जी सभी आर्यजनो के मानस पिता थे। सभी समाजों के रक्षक थे। उनके पुत्र अपने दिवगत पिता की इस जिम्मेदारी को सभाले।

इसके पश्चात् पगडी बाधने की रस्म पूरी की गई। दोनो पुत्रो श्री अशोक मरवाह और श्री अश्विनी मरवाह के पगडी बाधी गई।

श्रीमती शान्तिदेवी, श्री अशोक और श्री अश्विनी मरवाह की ओर से शोक सभा मे आये सभी लोगो के प्रति आभार प्रकट किया गया।

शान्ति पाठ के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

(पृष्ठ ४ का शेष)

विश्व में आसुरी ....

वेद मे भी इस बात पर जोर दिया गया है। ऋग्वेद का मत्र कहता है "विजानीह्यार्यान् ये च दस्यव: (१.५१.८) अर्थात् सब मनुष्यो को धार्मिक, आप्त, विद्वान् और सर्वोपकारक मनुष्य, जिनको आर्य कहा जाता है, उनकी पहचान जितनी आवश्यक है, उतनी ही दस्यु अर्थात् परपीडक, मूर्ख, धर्मच्युत, दुष्ट मनुष्यो की पहचान भी अत्यावश्यक है। इसमे प्रमाद नहीं करना चाहिए। अनार्यो के प्रति सदा सावधान रहना चाहिए, अन्यथा बहुत हानि होगी। यजुर्वेद का एक मंत्र कहता है कि हे मनुष्यो, तुम लोग चोर (प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से चोरी करने वाले), पापी और उनके समर्थन करने वालो से भी सदा सावधान रहो, इसलिये कि वे तुम पर राज्य अथवा शासन न कर सकें। "मा वस्तेन ईशत माघशंस:"यजुर्वेद १ १।

राक्षस भी यज्ञ कर सकते हैं

कहा जाता है कि राक्षसों के राज्य, रावण की लका मे भी घर घर में अग्निहोत्र होते थे, वेद मत्रो के पाठ की ध्वनि भी गूजती थी। लेकिन उन राक्षसो के जीवन व्यवहार मे न यज्ञ की भावना, न वेदोपदेश के अनुसार कोई श्रेष्ठ कर्म दिखाई देते थे। उन लोगों के जीवन में क्षमा (सहनशीलता), सच्चाई, दया, मन, वचन, कर्म की शुद्धता, तप इत्यादि का बडा अभाव था। (**अग्निहोत्रं च वेदाश्च राक्षसानां गृहे गृहे। क्षमा सत्यं दया शौचं तपस्तेषा न विद्यते॥**) इसका तात्पर्य यह है कि किसी को केवल सध्या-हवन या बडे बडे यज्ञ या वेदों का तोता पाठ करते देख कर यह समझना कि ये लोग आर्य या बडे धर्मात्मा है, बडी भूल होगी। आडम्बरशील लोग प्राय: बडे धोखेबाज होते हैं। इसलिए इन लोगों के बारे मे सच्चाई का पता लगाना बहुत जरूरी है। व्यवहार में ये कितने उदार और परोपकारी हैं, इनकी कमाई कितनी शुद्ध, भ्रष्टाचार-अन्याय-शोषण-छल-कपट आदि से मुक्त है। सत्य और न्याय की रक्षा के लिए, दुराचार आदि को रोकने के लिए ये कितने प्रयत्नशील है इत्यादि बातो की जानकारी सबको होनी चाहिए। यह जानकारी आर्य सस्कृति की, धर्म मर्यादाओ की रक्षा के लिए आवश्यक है। इसमे उष्ट्र पक्षी का व्यवहार खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

आसुरी संस्कृति का बोलबाला

लेकिन दुख की बात यह है कि बहुत कम लोग इन सदुपदेशों को गम्भीरता से लेते हैं। जब अपने ऊपर मुसीबत आ खडी हो जाती है तब इनकी आंखे खुलती है। लोगो के इस उपेक्षापूर्ण रवैये के कारण आज सारे विश्व मे आसुरी संस्कृति का ही बोलबाला है। इसी कारण आज सर्वत्र दुख और अशाति की वृद्धि हो रही है।

(क्रमश)

(पृष्ठ १ का शेष)

कृषि और गोपालन ......

पर गिर पडा, जैसे स्वयं को शिकार के रूप में प्रस्तुत कर रहा हो।

कहानी है कि जब काफी देर तक भी सिंह ने उस पर हमला नहीं किया, तब उसने सिर उठा कर देखा, तो सिंह कहीं था ही नहीं। नन्दिनी गाय ने कहा कि यह सब नाटक मैंने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए किया था। तुम उत्तीर्ण हुए। मै प्रसन्न हूं। पत्ते के एक दोने में मेरा दूध निकाल कर पीओ। तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।

राजा ने कहा 'मेरा सौभाग्य है। पर मैं आपका दूध आश्रम मे जा कर गुरु जी की आज्ञा पा कर ही पीऊगा।'

गाय के प्रति इतना ममत्व हमारे मन में जमा गये है हमारे प्राचीन कवि। अन्य लोग इसे हृदयगम ही नही कर सकते। 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' (आजादी आई आधी रात) के लेखक लैरी कौलिन्स और दोमिनिक लैपियैर ने लिखा है 'गाय की पूजा भारत मे बाइबिल से भी पहले से होती आई है। .. प्राचीन ऋषियो ने गोहत्या का निषेध इसलिए किया था कि अकाल पडने पर गौओ के कारण ही वे जीवित बचे रहते थे। . इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १९४७ मे भारत मे २० करोड़ ढोर थे; हर दो मनुष्यो के लिए एक।'

उनका कहना है कि इनमे से ४ करोड गायें ऐसी हैं, जो दिन मे केवल डेढ़ पाव दूध देती हैं। ५ करोड़ बैल हैं। १० करोड बन्ध्या, बेकार गायें हैं, जिनका कोई उपयोग नहीं है, और जो खेतो में यो ही घूमती फिरती हैं। ये इतना भोजन खा जाती हैं कि उससे लाखों भूख से मरते मनुष्यो का पोषण हो सकता है।

उनका कहना है कि केवल आत्मरक्षा की भावना से ही इन बेकार पशुओं को समाप्त कर देना चाहिए। परन्तु भारत में अन्धविश्वास इतना प्रबल है कि हर एक भारतवासी की दृष्टि में गोवध इतना घृणित कार्य है कि लोग इन बेकार पशुओं को जीवित रखने के लिए स्वयं भूखों मरने को तैयार हैं।

इसके विपरीत मुसलमान किसी ऐसे पशु को पूजनीय मानने को तैयार नहीं हैं, जो बोल भी नहीं सकता। मुसलमान केवल खुदा की पूजा करता है, यहां तक कि अपने मां-बाप की भी नहीं।

यह है पश्चिमी विचारको की अर्थशास्त्रीय दृष्टि। पशु दूध देता है तो पालो; दूध नहीं देता, या कम देता है, तो मार डालो। भावुक भारतीय इसे आसानी से नहीं अपना पायेंगे। उनका कहना है कि गाय सदा लाभदायक है। दूध बिल्कुल न दे, तो भी उसके गोबर से बनने वाली खाद से ही उसका खर्च निकल आता है।

गोपालन और गोरक्षा में थोड़ा अन्तर है। गोरक्षा आन्दोलन करने वालो का कहना है कि कानून बना कर गोवध बन्द करो। आवारा, भूखी, मारी मारी फिरती गौओ का क्या होगा, यह हम नहीं जानते। उन्हें सभालना सरकार का काम है। गोपालन का अर्थ है कि हम गौएं पाले। गौए पालना आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी हो। गौओ की नस्ल सुधारी जाये। हर गाय डेढ पाव के बजाय कम से कम तीन चार लिटर दूध दे। ऐसी गाये पालने वालों को सहायता और प्रोत्साहन दिया जाये।

हम स्वयं तो गाय पालें नहीं और गोरक्षा आन्दोलन छेडे, यह सही नीति नहीं है। मरे कोई और स्वर्ग हम पहुंच जायें, ऐसा होता नहीं। स्वर्ग प्राप्त करने के लिए स्वयं ही मरना पड़ता है। गाय हम पालेंगे और उसका सुख हम ही पायेंगे।

इतना अवश्य है कि सरकारें गोपालन के महत्व को समझ नहीं रही हैं। ट्रैक्टरों से खेती हो रही है, जिसके लिए विदेशी मुद्रा दे कर डीजल विदेशों से मंगाना पडता है और वायु प्रदूषण बढ़ता है। खेती इतनी अधिक हो रही है कि गौओं के चरने के लिए चरागाह नहीं रहे है। हर गांव के पास चरागाह की पर्याप्त भूमि छोड़ी जानी चाहिए। भैंस बिना चरागाह के पल सकती है, गाय नहीं पल सकती।

डेयरी व्यवसाय को नहीं, गोपालन को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसके लिए थोड़ा तप करना पड़ेगा। ट्रैक्टर के बजाय् बैलों से खेती करनी पड़ेगी। भूमि के प्रयोग को नये ढंग से संतुलित करना पड़ेगा। तभी कृष्ण की भूमि सब सुख साधन जुटा सकेगी।

समाचार जगत्

वेद प्रचार सप्ताह की धूम

छपरा में वेद-प्रचार सप्ताह

आर्य समाज, छपरा के तत्वावधान मे ९ दिवसीय वेद-प्रचार-कार्यक्रम रक्षाबन्धन से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सोत्साह मनाया गया, जिसमे प्रतिदिन प्रात यजुर्वेद के मन्त्रो के साथ विशिष्ट यज्ञ सम्पन्न हुआ। साथ ही भजन एव उपदेश के कार्यक्रम हुए। हजारो नर-नारियो ने कार्यक्रम मे भाग लिया। अपराह्नकालीन कार्यक्रम विभिन्न आर्य विद्यालयो मे सम्पन्न हुआ और सायकालीन कार्यक्रम नगर के मुख्य स्थलो मे भजन एव वेदोपदेश के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सस्कृत—दिवस, मातृ गोष्ठी, शका समाधान एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम विशेष प्रभावकारी रहा। मातृगोष्ठी के क्रम मे महिला आर्य समाज की तदर्थ समिति का गठन भी हुआ जिसकी अध्यक्षा श्रीमती छवि गुप्ता, मन्त्रिणी श्रीमती पूर्णिमा देवी एव कोषाध्यक्ष श्रीमती सविता देवी बनायी गयीं।

इस कार्यक्रम मे डॉ दीनानाथ आचार्य, प अनन्त प्रसाद आर्य, प शिवमुनि वानप्रस्थ के प्रवचन हुए एव प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री इन्द्र स्वामी इन्द्र कवि एव प दयानन्द सत्यार्थी के सुमधुर भजनोपदेश हुए।

कार्यक्रम के अन्त मे मन्त्री श्री अनन्त प्रसाद आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया और वेद के स्वाध्याय, प्रचार-प्रसार के लिए समस्त जनो से अपील की।

आर्य समाज सज्जन नगर मे

आर्य समाज सज्जन नगर एव महिला आर्य समाज सज्जन नगर, उदयपुर के सयुक्त तत्वावधान मे दिनाक ४ ८ २००१ रक्षाबन्धन पर्व से दिनाक १२ ८ २००१ श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व तक परिवारो मे जाकर यज्ञ सत्सग के साथ वेद प्रचार किया। रक्षाबन्धन पर्व एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व आर्य समाज भवन मे मनाये गये। श्री हुकमचन्द शास्त्री एव श्री भुवनेश जोशी ने वैदिक प्रवचन देकर तथा श्री विनोद कुमार राठौड, श्रीमती निर्मला यति वानप्रस्थ एव ब्रह्मचारिणी मोदिका शर्मा ने वैदिक भजनो के द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्य समाज का सन्देश घर-घर जाकर सुनाया।

उक्त दोनो पर्वो पर ब्रह्मचारिणी मोदिका शर्मा का उद्बोधन प्रभावशाली व प्रेरणास्पद रहा। श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर विशेष यज्ञ किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री मागी लाल जोशी थे। इस अवसर पर श्री जमनालाल जी गौतम ने गौतम सा मिल की ३८वीं वर्षगाठ पर लगभग सात हजार ७०००/- रुपये की लागत का माइक सैट एवं श्रीमान रियाज हुसैन वार्ड पार्षद नगर परिषद उदयपुर ने ग्यारह सौ रुपये का सात्विक योगदान आर्य समाज सज्जन नगर उदयपुर को दिया।

आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर

प्रसिद्ध वेद विद्वान राष्ट्रीय सस्कृत सस्थान के डॉ मोहम्मद हनीफ शास्त्री ने आर्य समाज हिरण मगरी सभागार मे कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर मुख्यवक्ता के रूप मे कृष्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महाराज श्री कृष्ण के जीवन सबध मे लोगो ने स्वार्यवश कितने ही प्रक्षेप जोड दिये है जिनसे उनके व्यक्तित्व पर सन्देह सा हो जाता है, वरना श्री कृष्ण महान योगी थे।

वेद ज्ञान की चर्चा करते हुए डॉ हनीफ ने कहा कि दुनिया के सब लोग वेदो की प्रशसा करते है और सच मे प्रशसनीय भी है। ये दुनिया के अमूल्य ग्रथ है। पर खेद है कि लोग वेद पढते नहीं/वेद ले भी ले, तो वे आल्मारियो की शोभा बढाते है। अनेक वेद ऋचाओ का सस्वर पाठ करते हुए डॉ हनीफ ने सबको रोमाचित व आनन्दित कर दिया। वेद ज्ञान भण्डार है। गायत्री सम्पूर्ण वेद शास्त्रो का रस है और उसमे ईश्वर का सर्वोच्च नाम ओ३म् है।

राष्ट्रीय सदर्भ मे डॉ हनीफ ने कहा कि हम सब भारत के लोग भारत का अन्न जल खाते पीते है, यहा की आबो हवा से पोषित होते है, तो हमारा कर्तव्य है कि हम किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय के हो राष्ट्र के प्रति वफादार हो, वेदो मे आस्था हो। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त की एक ऋचा का अपने व्याख्यान मे सुन्दर चित्र प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह भूमि गौ की भाँति शात चुप है। जिसमे जितना सामर्थ्य है, क्षमता है वह उसका उतना दोहन कर सकता है। पृथ्वी माता किसी के साथ भेदभाव नही करती।

मुख्य अतिथि श्री ऐस के वर्मा ने कहा कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व उत्सव का ही दिन नहीं, अच्छे सकल्प का भी दिन है। प्रारभ मे आर्य समाज के प्रधान जितेन्द्रपाल शर्मा ने सभी अतिथियो विद्वानो का स्वागत किया। डॉ रवीन्द्र वर्मा ने मोहम्मद हनीफ शास्त्री के सघर्षमय जीवन का परिचय देते हुए कहा कि सामान्य परिवार का एक बालक बकरिया चराने वाला मोहम्मद हनीफ अपनी मेधा बुद्धि से आज वेदो का प्रकाण्ड पडित है।

आर्य समाज गोविन्द नगर, कानपुर मे

भगवान कृष्ण का जीवन सघर्षमय था। उन्होने जन्म से लेकर सम्पूर्ण जीवन भर धर्म, न्याय और सच्चाई के लिये आतताइयो और अधर्मियो से सघर्ष किया। भगवान श्रीकृष्ण का जीवन हमे प्रेरणा देता है कि महान बनने के लिए सघर्षमय जीवन अपनाना पडता है। सन् १९४७ मे पाकिस्तान से आये शरणार्थी सघर्ष करके अब पुरुषार्थी बन गये और सब कुछ पुन· प्राप्त कर लिया। ये विचार श्री देवी दास आर्य ने आर्य समाज मदिर गोविन्द नगर के सभागार मे आयोजित 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी' समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

श्री आर्य ने आगे कहा कि आज कुछ लोग जातिवाद और मजहब की आड मे देश के विरुद्ध भी कार्य करने को तैयार है। ऐसी परिस्थिति मे आज देश को श्री कृष्ण जैसे राष्ट्रनायक की आवश्यकता है, जो इन स्वार्थी नेताओ की नाक मे नकेल डाल सके। श्री कृष्ण ने धर्म और सत्य की स्थापना और अधर्म के नाश के लिये अपने परायो मे कोई अन्तर नहीं समझा।

समारोह का प्रारम्भ एक विशाल यज्ञ से किया गया। इसमे सर्वश्री देवीदास आर्य, शाति स्वरूप आर्य, राम कृष्ण आर्य, सत्यकेतु शास्त्री, श्रीमती दर्शना कपूर, कैलाश मोगा, सरोज अवस्थी, मनोरमा देवी आदि ने विचार व्यक्त किये तथा भजन प्रस्तुत किये।

आर्य समाज न. ३ ऐन.आई.टी. फरीदाबाद मे

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के सौजन्य से चलाये गये वेद प्रचार सप्ताह का समापन समारोह फरीदाबाद की सभी आर्य समाजो ने सम्मिलित रूप मे भगवान श्री कृष्ण, जो एक आप्त पुरुष थे, का पाच हजार अट्ठाइसवाँ जन्मोत्सव बडी धूमधाम से मनाया, जिसकी मुख्य झलकिया निम्न प्रकार है—

प्रात जन्मोत्सव का यज्ञ हुआ, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्य अधिष्ठाता श्री भगतमगतू राम ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर भगत जी ने वैदिक धर्म अर्थात् मानव धर्म का लाभ एव जानकारी अपने आदर्श व्यवहार के द्वारा विश्व के कोने-कोने मे पहुँचाने के लिए प्रेरित किया।

सासद श्री रामचन्द्र वैद्य जी ने आर्य समाज के मुख्यद्वार तथा पुस्तकालय का शिलान्यास किया। इस अवसर पर उन्होने धर्म के नाम पर फैलती जा रही भ्रान्तियो के निवारणार्थ जन जागरण अभियान चलाने तथा आर्यसमाजो से बाहर निकल कर सार्वजनिक महासम्मेलन करने का आह्वान किया। २ दिसम्बर को दशहरा ग्राउण्ड मे एक सौ एक कुण्डीय यज्ञ और महासम्मेलन करने का निर्णय किया गया।

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के महामन्त्री श्री अजीत आर्य जी ने दो दिसम्बर को होने वाले महासम्मेलन को सफल बनाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर आर्य समाज सै-१९ के प्रधान श्री लक्ष्मीचन्द्र जी, सुरेश शास्त्री, श्री राम खन्ना तथा स्वर्गीय प्रकाश वीर शास्त्री जी की बहन सुशीला त्यागी, प्रेमलता गुप्ता आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

आर्य समाज बॉकीपुर मे

१२ अगस्त २००१ को स्थानीय आर्य समाज मदिर बाकीपुर मे आयोजित जनसभा मे मुख्यवक्ता के रूप मे स्वामी अग्निव्रत जी (नालन्दा) ने योगीराज भगवान कृष्ण के जीवन तथा उनके उपदेश-ग्रथ गीता की चर्चा करते हुए कहा—जब महाभारत के मैदान मे अर्जुन काँपने लगा, धनुष बाण रखकर युद्ध करने से इनकार करने लगा तब श्रीकृष्ण ने उसे आत्मा की अमरता का उपदेश देकर उनकी कायरता को वीरता मे बदल दिया। कृष्ण जी की गीता का भाष्य बाल गगाधर तिलक ने गीता रहस्य तथा योगीराज अरविन्द ने गीता प्रबन्ध के नाम से किया, परिणाम स्वरूप आजादी के दीवानो ने फाँसी पर चढते समय गीता का पाठ करना शुरू किया। आत्मा अमर है, शरीर को पुराने कपडे की तरह बदला जाता है। महाराष्ट्र के चाफेकर बन्धुओ ने फाँसी के समय गीता की माँग की थी। खुदीराम बोस ने गीता के उपदेश बगला मे गाते हुए फाँसी को गले लगाया—**'विदायदे मॉ घुरे आसी, हॉसिते हॉसिते चढिबो फॉसी, देखिबे भारतवासी।'** फाँसी की सजा पाने वाले अशफाक उल्ला ने एक नज्म बनाई थी। **ये मौत जिन्दगी सब दुनियॉ का है तमाशा, फरमान कृष्ण का था अर्जुन को बीच रण मे। रख दे कोई जरा सी खाके वतन कफन मे।**

फाँसी पर चढने वालो ने गीता के उपदेश को अपने गीतो मे गाया था—वतन की आवरू का पास देखे कौन करता है? सुना है आज मकतल मे हमारा इम्तिहा होगा— इलाही वो भी दिन होगा जब अपना राज देखेगे, ये अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमा होगा"। क्रातिकारियो का एक और गीत गीता के उपदेश पर आधारित है—**फिर जहॉ मे जन्म लेगे ये गरीबाने वतन हम बनेंगे बागबा अपना तू ही चमन होगा।** आज देश को गीता का ये उपदेश ग्रहण कर राष्ट्रीय जीवन को प्रखर बनाने की आवश्यकता है।

आर्य समाज जहीराबाद (आन्ध्र प्रदेश) मे

आर्य समाज जहीराबाद, जिला मेदक (आन्ध्र प्रदेश) मे वेद प्रचार सप्ताह दिनाक ३० जुलाई, २००१ से ४ अगस्त, २००१ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर युवा वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ सजय देव (इन्दौर) के वेदोपदेश तथा प बशीलाल (हैदराबाद) के भजनोपदेश हुए। प्रतिदिन अच्छी उपस्थिति होती रही। ४ अगस्त (श्रावणी) को प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

36503
गड़ी विश्व विद्यालय
249404, उत्तरांचल

हंसराज महिला महाविद्यालय में भूमि-पूजन समारोह

हसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर के प्रागण मे ६ अगस्त, २००१ को "महात्मा हसराज डी ए वी इन्स्टीच्यूट ऑफ नर्सिंग एव हास्पिटल" के शुभारम्भ हेतु "भूमिपूजन समारोह" का आयोजन किया गया।

इस समारोह मे डॉ जे ऐस गुजराल, कुलपति, बाबा फरीद यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साईसिस, फरीदकोट, श्री ऐम ऐल खन्ना, महामत्री, डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, श्री डी आर गुप्ता, निदेशक कालेजज़, डी ए वी प्रबन्धकर्त्री समिति, सम्मिलित हुए।

डॉ जे ऐस गुजराल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि डी ए वी सस्थाए सभी क्षेत्रो मे अग्रणी है तथा अपने शिक्षा-स्तर को बनाए रखने मे सफल रही है। उसी से मै आशा करता हू कि स्वास्थ्य श्रृखला से जुडी यह प्रथम प्रकार की सस्था भी अपनी डी ए वी परम्परानुसार सफलता के नये आयाम प्राप्त करेगी तथा यहाँ से शिक्षा प्राप्त करके छात्राए देश व विदेश की स्वास्थ्य-सेवा मे भी अद्भुत योगदान देने मे समर्थ होगी।

सारस्वत-सम्मान समारोह

इसी अवसर पर सत्र २०००-२००१ की गुरु नानक देव युनिवर्सिटी की वार्षिक परीक्षाओ मे वरीयता सूची मे स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओ के सम्मान हेतु सारस्वत-सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय की प्राचार्या श्रीमती पूर्णप्रभा शर्मा ने अतिथियो का अभिनन्दन करते हुए कहा कि हमारे लिए यह बडे गर्व की बात है कि विद्यार्थियो के कठोर परिश्रम तथा प्राध्यापकगण की लगन तथा दिशा-निर्देश के कारण ही विभिन्न परीक्षाओं मे हमारे महाविद्यालय की छात्राओ ने १७ प्रथम स्थान, १६ द्वितीय तथा १२ तृतीय स्थान प्राप्त किये तथा कुल मिलाकर २२६ छात्राओ ने वरीयता सूची मे स्थान प्राप्त किया, जो कि अपने आप मे एक रिकार्ड है। उन्होने अपने महाविद्यालय की पूर्व छात्रा कु सुनीता रानी का भी स्मरण किया, जिसे सबसे छोटी आयु मे पद्मश्री एव अर्जुन पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

मुख्य अतिथि डॉ जे ऐस. गुजराल ने महाविद्यालय की उपलब्धियो की प्रशसा करते हुए कहा कि आज लडकियां लडकों से बेहतर प्रदर्शन कर रही है तथा उन्होने आज के प्रतियोगिता के युग में छात्राओं को और अधिक परिश्रम करके अपनी योग्यता को निखारने के लिए प्रोत्साहित किया।

समारोह अध्यक्ष श्री ऐम ऐल खन्ना ने छात्राओ को निरन्तर प्रगति करने, स्वय निर्णय लेने तथा विनम्रता का गुण धारण करने की प्रेरणा दी तथा उन्होने कहा कि इस सघर्षमय जीवन मे प्रत्येक चुनौती का सामना करने के लिए अपने आप मे योग्यता लानी चाहिए।

विशिष्ट अतिथि श्री डी आर गुप्ता ने छात्राओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि कडी मेहनत ही सफलता की प्रथम अनिवार्यता है। उन्होने इस बात की भी जानकारी दी कि सम [illegible] श्यकता को समझते हुए डी ए वी की विभिन्न सस्थाओ मे भिन्न-भिन्न प्रकार के नए कोर्स शुरू किए जा रहे है, ताकि विद्यार्थी लाभान्वित हो सके।

इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओ द्वारा प्रस्तुत किए गए वाद्य-वृन्द, समूहगान, एकल अभिनय और शास्त्रीय नृत्य ने सभी दर्शको को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

मच सचालन का उत्तरदायित्व श्रीमती नीलिमा रानी तथा श्रीमती सुमन अरोडा ने सयुक्त रूप से वहन किया।

वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया

आर्य समाज गरोठ द्वारा श्री रामगोपाल जी सेठिया की अध्यक्षता मे वेद प्रचार सप्ताह दिनाक ४ ८ २००१ से दिनाक १२ ८ २००१ तक मनाया गया। रक्षा बन्धन पर्व से श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर्व तक प्रात यज्ञशाला मे यज्ञ (हवन) किया गया। यज्ञ के उपरान्त श्री मोहन लाल सोनी, श्री रमेशचन्द्र सेनपुरिया ने अपनी [illegible] वाणी मे प्रभु भ[illegible] के भजन प्रस्तुत [illegible] श्री राधेश्याम म[illegible]ी, श्री भवानी शकर भैसानिया ने अपने प्रेरक उद्बोधन से वैदिक सस्कृति पर प्रकाश डाला। श्री हरिनारायण कुमावत द्वारा श्री कृष्ण जीवन पर सुमधुर भजन प्रस्तुत किये गये।

आर्य समाज बरमिंघम (इंग्लैंड) द्वारा रेडियो पर वेद प्रचार

आर्य समाज बरमिघम की अन्तरग सभा ने निर्णय लिया कि इस वर्ष वेद प्रचार सप्ताह XL रेडियो पर वेद प्रवचनो के कार्यक्रम द्वारा मनाया जाय। इस निमित्त रेडियो XL पर आर्य समाज ने प्रात ६ से ७ बजे तक ४ अगस्त से १२ अगस्त, और विशेष रूप से श्रावणी और कृष्ण जन्माष्टमी के दिन दोपहर १२ से एक बजे तक का समय खरीदा गया।

इस कार्यक्रम के निमित्त भारत से ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। उनके प्रवचन प्रातःकाल अग्रेजी और हिन्दी दोनो भाषाओ में हुए। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ 'वेदो का डका आलम मे बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने' से होता था। श्रोताओ को प्रश्नोत्तर का भी समय दिया जाता था।

श्रोताओं में से एक ने प्रश्न किया कि वेदो को कैसे पढा जाये? सावन्त जी ने उत्तर देते हुए कहा कि पहिले आप लोग सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कीजिये—इस ग्रन्थ के अध्ययन से वेदो को समझने मे बडी सहायता मिलेगी। अग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश की इतनी माँग आई कि आर्य समाज को इसकी आशा नहीं थी। कई लोगो को निराश लौटना पडा। इसी प्रकार प्रतिदिन सायकाल ७ ३० से ९ बजे तक वेद कथा आर्य समाज मन्दिर मे होती थी जिसका प्रारम्भ आर्य समाज के पुरोहित आचार्य [illegible]नेराव के मधुर भजनो से होता था। अन्त [illegible]ओ को प्रश्नोत्तर का समय दिया जा[illegible]

[illegible] मे भक्ति रस के भजन, स्व[illegible] [illegible]माज की गतिविधियाँ, वेद प्र[illegible] [illegible]रुकुल आन्दोलन, डी ए वी आन्दो[illegible] [illegible] और सामाजिक क्षेत्र मे आय समा[illegible] योगदान पर प्रकाश डाला गया। कृ[illegible] जन्माष्टमी को साय आर्य समाज मन्दिर मे कार्यक्रम रखा गया, जिसमे इतनी भारी उपस्थिति थी कि आर्य समाज का विशाल हाल खचाखच भरा हुआ था। इस अवसर पर श्री सावन्त जी ने हिन्दी और अग्रेजी भाषा मे भगवान् कृष्ण का सन्देश दिया।

आर्य समाज बरमिघम रेडियो XL के प्रबन्ध निदेशक डॉ० अरुण बजाज के सहयोग के लिए विशेष धन्यवाद करती है।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती आर्य समाज नैरोबी (कीनिया में)

पातंजल योग धाम आर्यनगर, हरिद्वार एव महर्षि दयानन्द योगधाम फरीदाबाद के अध्यक्ष और वैदिक साधना आश्रम तपोवन देहरादून के सरक्षक डॉ. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी आर्य समाज नौरोबी के निमन्त्रण पर वेद योग प्रचार हेतु जा रहे हैं। प्रचार की अवधि २० अगस्त से १३ अक्टूबर तक निश्चित किया है।

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रबोध महाजन, सभा मंत्री द्वारा राकेश भार्गव के प्रबन्ध में मयक प्रिन्टर्स 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष . 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन · 3363718, 3362110) सम्पादक--उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये
विदेशो मे ३० पौंड या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये
वर्ष ६६, अंक ३०
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, २३ सितम्बर, २००१
आश्विन शु०-७-वि० स०-२०५८
सप्ताह २३ सितम्बर से २९ सितम्बर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव

रोग का स्थायी इलाज होना चाहिए

आर्य समाज की प्रतिनिधि सभाए तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मुकदमेबाज़ी की महाव्याधि से ग्रस्त हैं। शायद ही कोई ऐसा राज्य होगा, जहा सभा पर कब्ज़ा करने के लिए मारामारी न हुई हो। गुरुकुल कागडी पर अधिकार करने के लिए लम्बी मुकदमेबाज़ी और बल प्रयोग भी हुआ। क्या यह सब समाज सेवा करने के लिए होता है? जब तक गुरुकुल कागडी यूनीवर्सिटी नही बना था, तब तक इतनी छीनाझपटी नही थी। गुड चींटों को आकर्षित कर रहा है।

सन् १९९८ मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक चुनाव हुए थे। उससे पहले भी मुकदमेबाज़ी चल रही थी। किसी समझौते के अन्तर्गत वे चुनाव हुए थे। चुनाव स्थल पर पुलिस भी तैनात थी और गैर सरकारी बाहुबली भी शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए तैनात थे। चुनाव शान्तिपूर्वक ही सम्पन्न हो गये, क्योकि दूसरे गुट के प्रतिनिधियो को सभा मे यह कह कर प्रवेश ही नहीं करने दिया गया कि चुनाव १९९८ की नहीं, १९९५ की प्रतिनिधि सूची के अनुसार हो रहे है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के १५ प्रतिनिधि चाह कर भी चुनाव मे भाग नहीं ले सके।

अधिकृत रूप से जहां चुनाव हो रहा था, उसके बाहर ही दूसरे गुट ने अपनी सभा करके एक अलग चुनाव कर लिया। यद्यपि यह गुट बहुत छोटा था, और इसे असली सार्वदेशिक सभा नहीं कहा जा सकता था, फिर भी इस गुट ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से श्री स्वामी ओमानन्द तथा अन्य लोगो के विरुद्ध दीवानी न्यायालय मे एक दावा डाल दिया। तीन साल तक यह मुकदमा चला। इस अवधि में सार्वदेशिक सभा के खाते न्यायालय के आदेश से सील रहे। कानूनी इतिहास के हिसाब से सार्वदेशिक सभा ने श्री स्वामी ओमानन्द तथा अन्य लोगों पर मुकदमा चलाया, जबकि सचाई यह थी कि स्वामी ओमानन्द तथा अन्य लोग सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा अन्य पदाधिकारी थे, जिनका सभा पर कब्जा था और जो सभा का काम कर रहे थे—सभा के बैक खाते सील होने के बाद भी।

उसी मुकदमे मे २ सितम्बर को आपसी समझौते के फलस्वरूप (ऐसे मुकदमो मे अन्त मे आपसी समझौते ही होते हैं) यह तय हुआ कि सार्वदेशिक सभा के निष्पक्ष चुनाव कराये जाये। इसके लिए दो प्रशासक नियुक्त किये जाये। वर्तमान अन्तरग सभा भग कर दी जाये।

अन्तरग सभा भग कर दी गई। दो प्रशासक नियुक्त किये गये श्री रामफल बसल और श्री आर ऐन मित्तल। परन्तु श्री आर० ऐन मित्तल ने कहा कि अन्य व्यस्तताओ के कारण वह इस जिम्मेदारी को उठा नही सकेगे। उचित यह होता कि उनके स्थान पर कोई अन्य प्रशासक नियुक्त किया जाता, जो इस कार्य मे समय दे सकता, परन्तु न्यायालय ने आदेश दिया कियदि कोई एक प्रशासक अनुपस्थित रहे, तो दूसरा प्रशासक कार्य जारी रखेगा। जो साइकिल दो पहियो पर चलनी थी, अब एक पहिये पर चलेगी।

यदि सौहार्द और सद्भावना के वातावरण में हुए होते, तो सन् १९९८ के चुनाव ही सफल हो सकते थे। परन्तु उनमे पूरे संगठन को एक करने की, मिलजुल कर काम करने और आर्यसमाज का प्रचार प्रसार करने की भावना नहीं थी, प्रतिद्वन्द्वी गुट को, जैसे भी हो, हरा कर सभा पर अधिकार करने की भावना थी। इस लिए वह चुनाव विफल सा ही रहा। चुनाव के तुरन्त बाद ही विवाद का दाद (ऐग्ज़ीमा) फिर उभर आया।

दाद की टालू दवाई डाक्टर दे देता है। उससे कुछ देर के लिए दाद दब जाता है। कुछ समय बाद फिर उभर आता है। अभी से चुनाव का जो रुख देखने को मिल रहा है, उससे आशका होती है कि कहीं ये चुनाव भी पहले की भाति विफल न हो जायें। प्रतिद्वन्द्वी गुट बडे जोर शोर से प्रतिनिधियों को अपने पक्ष में खींचने मे जुट गये है। साधु सन्यासी भी मैदान मे है, चन्दा इकट्ठा करने मे सक्षम लोग भी भाग्य आजमा रहे है।

प्रशासक ने चुनाव की तिथिया ३ और ४ नवम्बर २००१ तय कर दी है और राज्यो की प्रतिनिधि सभाओ से आग्रह किया है कि वे अपने प्रतिनिधियो के नाम १५ सितम्बर तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पास भेज दे। यदि वे सभाए अपने प्रतिनिधि पहले ही चुन चुकी हो तो उनके नाम भेजे यदि न चुने हो तो चुनाव करके भेजे। विभिन्न आर्य प्रतिनिधि सभाओ के प्रतिनिधियो की नियत सख्या निम्न प्रकार है

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश—१५, पजाब— १५, बिहार —१५, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा — १५, आ०प्र० सभा राजस्थान — १५, आन्ध्र प्रदेश —१५, दिल्ली—१५, तमिलनाडु — १५, हरियाणा —१५, कनार्टक —१५, महाराष्ट्र — १५, मध्य भारत — १२, उडीसा—६, जम्मू कश्मीर — ६, गुजरात — ५, हिमाचल प्रदेश — ४, मुम्बई—३, दक्षिण अफ्रीका —३, आसाम —२, नेपाल —२, अमेरिका—१।

इनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा मारीशस, ब्रह्मदेश, फिजी, सुरीनाम, गयाना, तंजानिया, अमेरिकन आर्यन लीग, आ० प्र० स० नैरोबी, गोवा, हालैंड और इग्लैड आदि भी अपने प्रतिनिधि भेज सकती है।

अभी तक आर्य प्रतिनिधि सभाओ तथा अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के २ प्रतिनिधियो को मिला कर कुल २४१ प्रतिनिधि होते है। इनके अतिरिक्त पाच आजीवन सदस्य है। ५ प्रतिष्ठित प्रतिनिधि होते है, जिनका चुनाव उपस्थित प्रतिनिधि उसी समय करते है। १ प्रतिनिधि पदेन होता है। इस प्रकार वर्तमान गणना के अनुसार कुल मिला कर प्रतिनिधियो की सख्या २५२ होनी चाहिए।

परन्तु मारीशस की प्रतिनिधि सभा १५ प्रतिनिधि भेज सकती है। इसी प्रकार नैरोबी, इग्लैड, फिजी और सुरीनाम, गयाना से भी प्रतिनिधि आ सकते है। हर प्रतिनिधि सभा अपने हर सौ प्रतिनिधियो पर ५ प्रतिनिधि भेज सकती है। परन्तु कोई भी सभा १५ से अधिक प्रतिनिधि नही भेज सकती, चाहे उसके अपने प्रतिनिधियो की सख्या ३०० से अधिक भी क्यो न हो।

देखने मे निष्पक्ष चुनाव करा लेना आसान प्रतीत होता है, परन्तु वस्तुत है नही। कारण यह कि प्रतिनिधि सभाए ही सही प्रतिनिधित्व नही करतीं। कुछ वर्षो से यह कुप्रथा चल पडी है कि जो प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारियो को पसन्द न हो, उसकी अन्तरग सभा को भग करके एक तदर्थ कार्यकारिणी बना दी जाये। फिर वह अपने ढग से चुनाव करवा कर सत्तारूढ हो जाये। तब हटाया हुआ गुट अपनी अलग आर्य प्रतिनिधि सभा बना लेता है। सार्वदेशिक सभा इनमे से किस गुट को प्रश्रय दे, इस पर निष्पक्षता बहुत निर्भर करती है।

सार्वदेशिक का चुनाव करने से पहले आवश्यकता इस बात की थी कि सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओ के विवादो का समझौतामूलक हल निकाला जाता। दोनो गुटो का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिनिधि लिये जाते। यदि प्रतिनिधि सभाओ के विवाद सतोषजनक ढग से न सुलझे, तो सार्वदेशिक का यह चुनाव किस प्रकार निष्पक्ष और सौहार्दपूर्ण कहा जा सकेगा? निष्पक्ष से भी अधिक आवश्यकता सौहार्दपूर्ण की है। जब तक मन का मैल न निकले, निष्पक्षता किसी काम की नहीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के मुख पत्र 'आर्य जीवन' ३० अगस्त २००१ मे सभा के मत्री श्री विट्ठलराव आर्य ने लिखा है

यह ठीक है कि चुनाव अधिकारियो पर कोई किसी प्रकार की आपत्ति न उठाये तथा उनके निर्णयो को माने। हम चुनाव अधिकारियो से भी निवेदन करेंगे एव अपेक्षा भी करेंगे कि सही और निष्पक्ष

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखो में व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

वेद-सुधा

वह इस सबके अन्दर भी है और इस सबके बाहर भी

❑ स्वामी श्रद्धानन्द

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।
यजु० ४०५

अर्थ– (**तत् एजति**) वह हिलता डुलता, चलता फिरता है। (**तत् न एजति**) फिर भी वह हिलता डुलता, चलता फिरता नही है। (**तत्**) वह (**अस्य सर्वस्य अन्तः**) इस सबके, विश्व ब्रह्माण्ड के, जीव जन्तुओ, तरु-लता, क्षुपो, चर-अचर सबके अन्दर विद्यमान है, और (**तत्**) वह (**अस्य सर्वस्य बाह्यतः**) इस सबके, विश्व ब्रह्माण्ड के, जीव जन्तुओ के, तरु लता-क्षुपो के, चर-अचर सबके बाहर भी विद्यमान है।

मनन— आपके पाव्र तले एक भारी कोष गडा है, पर यदि आपको उसका ज्ञान नही तो आपके निकट होते हुए भी यह आपसे बहुत दूर है। आप चाहे सारा ससार खोज डाले, जब तक कि उस विशेष स्थान को नही खोदेगे, वह कोष आपको प्राप्त नहीं हो सकेगा। आपकी गिरह मे कुछ धन पडा है परन्तु आपको उसकी याद भूल गई है। इधर उधर बहुतेरा खोजते फिरते है, पर जब तक आप अपनी गिरह मे हाथ नही डालते आपको वह धन हाथ नही लगता। इसी प्रकार परमात्मा यद्यपि सारे ब्रह्माण्ड के अन्दर-बाहर हर समय व्यापक है, सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र कोई भी ऐसा स्थान नही जहा कि हर समय विद्यमान न हो। यहा तक कि आकाश भी उसके अन्तर्गत है। इसलिए वह निकट से निकट है, परन्तु यदि आपको उसके स्वरूप का ज्ञान नहीं तो आप चाहे सारा ब्रह्माण्ड खोज डाले, आपको उसका चिह्न न मिलेगा। इसी अवस्था मे वह आपसे दूर से दूर होगा। किन्तु जब आपको उसके स्वरूप का ज्ञान हो गया तो आपको उसके दर्शन अन्दर ही हो जावेगे। कारण कि प्रभु किसी स्थानविशेष मे स्थित नहीं हैं, अपितु घट-घट में व्यापक है। यदि आपके हृदय-नेत्रो का अन्धकार दूर हो गया और ज्ञानचक्षु खुल गए है तो आप उन्हे हर समय अपने आत्मा के अन्दर ज्ञान-नेत्रो से देख सकते हैं। जैसा कि एक कवि ने कहा है

दिल के शीशे मे है तस्वीरे यार,
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।

यद्यपि यह पद्य पूर्णरूप से असली भाव को प्रकट नहीं करता, परन्तु तात्पर्य यह है कि वह सर्वमित्र हमसे दूर नही हैं किन्तु हमारे हृदय के अन्दर विद्यमान हैं, जिसमे हम ज्ञाननेत्रो द्वारा उनके वैसे ही दर्शन पा सकते है जैसे कि एक दर्पण मे किसी मित्र का चित्र देख सकते है। इसी भाव को दर्शाने के लिए ऊपर कही श्रुति में बताया गया है कि वह परमात्मा मूर्खो से, जिनके आत्मिक चक्षु अन्धे है, दूर से दूर है। वे युगो पर्यन्त भी यदि उसे ढूढते फिरे और सारा ब्रह्माण्ड खोज डाले तो भी वह उनको प्राप्त नही हो सकता। परन्तु जिनके ज्ञाननेत्र खुले हुए है उनके लिए वह निकट से निकट है। वे कहीं भी जावे परम पिता को अपने अन्दर विद्यमान पाते है। इसलिए एक विद्वान् ने कहा है कि परमात्मा एक वृत्त है, जिसका केन्द्र सब जगह है परन्तु परिधि कहीं भी नही। अहा! ज्ञान और अज्ञान मे कैसा भारी भेद है! एक लक्ष्य तक पहुचा देता है और दूसरा सत्य मार्ग से भटकाता है। एक परमात्मा के साक्षात् दर्शन करा देता है, दूसरा नास्तिक बना देता है। इसीलिए कहा गया है कि **'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'** कि ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।

अतएव भक्तजनो, यदि सचमुच परमात्मा के दर्शन करना चाहते हो, यदि उस सुन्दर स्वरूप की अद्‌भुत छवि के दर्शन पाने की अभिलाषा है तो वेदोक्त कर्मों द्वारा अपने अन्तःकरण के अन्धकार को दूर करके ज्ञान अवस्था को प्राप्त होओ, जिससे तुम्हारे आत्मिक चक्षु खुल कर उस सर्वान्तरात्मा के, जो तुम्हारे समीप से समीप है, दर्शन पा सको। कल्याण का मार्ग एकमात्र यही है, नही तो युगो पर्यन्त भी तुम्हारा उद्धार नही होगा। जन्म-जन्मान्तर के चक्र मे भूलते भटकते और ठोकरे खाते फिरोगे। परमदेव हमारे हृदय अन्धकार मे आच्छादित हैं। अविद्या ने हमारे आत्मिक चक्षु अन्धे कर रखे है। विषय-विकारो ने हमारे अन्त करण की उज्वलता को हर लिया है। हम हर प्रकार से अत्यन्त मलिन और बलहीन है। तुम हमारे हृदयो को अपनी ज्योति से प्रकाशित करो, जिससे हमारे ज्ञाननेत्र खुल जावे, जिससे हम आपको, जो कि सदा हमारे सग संग है, जान सके।

पुस्तक समीक्षा

स्वाहा या ओ३म् स्वाहा

सम्पादक — डा० सोमदेव शास्त्री। **प्रकाशक** — स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, वैदिक आश्रम आर्यनगर, बिजना की नगलिया, जिला अलीगढ (उत्तर प्रदेश)। पृष्ठ मख्या ३२, मूल्य ३ रुपये।

मुम्बई मे हुए आर्य महासम्मेलन मे मत्रो के आरम्भ मे और अन्त मे ओ३म् बोल कर आहुतिया दी गई थी। इसे ले कर कुछ विवाद चला था और पत्रिकाओ मे कई लेख छपे थे। डा० सोमदेव शास्त्री ने उनका एक जगह सकलन कर दिया है। जिन्हे इस विषय मे रुचि हो, उनके लिए पुस्तक उपयोगी है।

आनन्द की अनुभूति कैसे प्राप्त हो?

परम पिता परमेश्वर ने समस्त मानव जाति एव प्राणिमात्र के कल्याणार्थ चार महर्षियो के माध्यम से, बिना किसी देश, वर्ण व जाति का भेद किये, अपना जीवन-यापन करने और उसे आनन्दित रखने के लिए वेद मे अनेक उपाय व मार्ग दर्शाये है। वेद कोई फूल रख कर माथा टेकने या सुन्दर सुन्दर आलमारियो मे रखने की पुस्तक नहीं हैं। वेदो को ज्ञानकोष इसलिए कहा गया कि उनमे ज्ञान, जीवन व्यवहार, नीतिया और चिर आनन्द को प्राप्त करने क अनूठे नुस्खे बताये गये है। यजुर्वेद का एक बहुत भुन्दर सारगर्भित मन्त्र हमे बताता है "**ओ३म् कया त्व न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्** (यजु० ३६/१)। उपरोक्त मन्त्र का देवता इन्द्र है, अत इसका अर्थ यह हुआ हे परम पिता परमेश्वर, आप अपने इन्द्र रूप द्वारा इस विश्व मे चहु ओर से सुखो की, आनन्द की निरन्तर वर्षा करने वाले हो। आप किस रक्षण आदि क्रिया से हमको सब ओर मे आनन्दित करते हो और किस रीति से सभी मानवो को कल्याण व सुख देते हो, अर्थात् उनके प्रत्येक क्षण को सुखो से भर देते हो।"

इस मन्त्र के देवता इन्द्र का गुण है कि वह वर्षा करता है, जो कि सर्व सुखो की जन्मदात्री है। भौतिक सूर्य को भी इन्द्र कहते है, क्योकि उसी के द्वारा वर्षा सम्भव हो सकती है। परन्तु परमात्मा की वर्षा और सूर्य की वर्षा मे बडा अन्तर है। सूर्य सभी स्थानो से जल खीच कर ऐसे वातावरण मे ले जाता है, जहा जाकर वह जल हिम का रूप धारण करता है और पानी की बूदो के रूप में बरसता है। दूसरी ओर परमात्मा के प्रसग मे यह जल और हिम अभौतिक है। परमात्मा भी आत्मिक शक्तियो को अपनी दयालुता से आच्छादित करके हिम रूप बना कर आनन्द की वर्षा करता है। अत आनन्द की वर्षा करने के लिए भक्त और भगवान् व सुपात्र प्राप्तकर्ता का सयोजन आवश्यक है। आनन्द प्रदान करने की शक्ति प्रभु के पास है और वह सुख व आनन्द केवल आत्मा की अनुभूति से ही प्राप्त किया जा सकता है। आत्मा मे अनुभूति का अर्थ उस देवता (दिने वाले) के प्रति सच्ची श्रद्धा, विनय, एकाग्रता, विश्वास व सन्तोष शक्ति है। जिसमे यह है, वही परमात्मा को समझ व ग्रहण कर सकता है।

एक और बात यहां बतानी जरूरी है कि मनुष्य के आत्मभाव जब तक इस सासारिक सुख और आनन्द को ही मानते रहेगे, तब तक वे ईश्वरीय आनन्द का रूप नहीं समझ सकेंगे। पृथ्वी के जलाशयो पर जब भी भीषण सूर्य की गर्मी पडती है, तभी तो जलकण ऊपर उठ कर वर्षा कर सकेगे। इसी प्रकार इन्द्र के द्वारा दिये दड को हम सकारात्मक आनन्द का स्रोत नहीं समझेगे, तब तक वह केवल दण्ड ही रहेगा। हम संसार मे मिलने वाले इन दु खो के काम करने की प्रक्रिया को नहीं समझ पाते। यदि दु ख न आये, तो मोह इस सासारिकता से छूटे नही।

हम देखते है कि यदि अपने स्नेही से हमारे प्रति दुःख व दुर्व्यवहार नहीं होता, तो आत्मा उसके मोह से छूटेगी ही नही। इसलिए उनका दुःख व दुर्व्यवहार बुद्धिमान व्यक्ति के लिए वरदान सिद्ध होता है। दूसरे शब्दो मे दुर्व्यवहार रूपी ठोकर उसके प्रति मोह नहीं रहने देगी। जब मोह भग होगा, तभी आनन्द व सुधार सम्भव है।

हम सभी यही मोचते है कि दु.ख आने पर हम प्रार्थना करते है 'प्रभो हमें ससार से उठा लो' और सुखी होते हैं, तब अधिक जीना चाहते है। स्पष्ट है कि भक्त लोग सुख की अपेक्षा दु ख (त्याग-तपस्या) चाहते है, ताकि जीवन मे निखार आवे और बुराइया दु ख से छन जाये।

यहा एक गलत धारणा व सोच का जन्म होता है कि परमात्मा तो खुशामदी है। जो उसकी स्तुति, गीत व प्रार्थना करता है, वही सुखी होगा। हा, इतनी बात अवश्य है कि जो प्रार्थना, स्तुति व परमात्मा के सान्निध्य मे आता है उसमे आर्द्रता (स्नेह), नम्रता, सन्तोष, शालीनता, शीतलता अवश्य आती है, जो कि सुख व आनन्द का आधार है। उस मनुष्य के भाव कोमल होते है। उन्हे आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है। ऐसे भावो से जिसका हृदय भर जाता है वह सासारिकता के मोह बन्धन से छुटकारा पा कर परमात्मा के निकट सुगमता से पहुंच जाता है और परम आनन्द को प्राप्त करता है।

राजेन्द्र आर्य, हांसी (हिसार)

मौसम बदल गया

इन्सानियत का दौर यो हँस के गुजर गया,
अपनी जुबा से कोई जो बच्चा मुकर गया।
इन्सानियत का पाठ जो पढ़ाते रहे सदा
वे ही आज कह रहे कि हमको बिसर गया।
कुछ भी नही था उसने तो आज तक,
ऐसी अदा से वह मेरे दिल से उतर गया।

(राष्ट्र धर्म से साभार)
पिंकल लक्षकार, इतवारी मुहल्ला, शाहडोल (म० प्र०)

अन्न के भंडार भरे, फिर भी लोग भूखे मरे

सम्पादकीय

मछली पानी मे प्यासी मर रही हो, यह सोचने की बात नही है। भारत मे अन्न इतना है कि रखने को जगह नहीं है, पर गाव देहात मे लोग भूखे मर रहे है, यह सचाई है।

अच्छी फसलें

ईस्वी सन् २०००-२००१ मे भारत में सावनी (खरीफ) और असाढी (रबी) दोनो ही फसले इतनी अच्छी हुई कि किसान रो पडे। चावल और गेहू का खरीदार कोई नही था। भारतीय खाद्य निगम के गोदाम पहले ही भरे पडे थे। नया अन्न रखने के लिए जगह नहीं थी। किसानो ने पहले तो इस आशा मे माल कुछ दिन रोका कि शायद भाव सुधर जाये, पर अन्त मे निराश हो कर सरकार द्वारा नियत समर्थन मूल्य से भी कम दाम पर बेच दिया। हजारो टन धान और गेहू, खुले चबूतरो पर पडा रहा, जहा न उसे चूहो से बचाने का प्रबन्ध था, न चोरो से। ऐसी दशा मे उसमे से कितना कहा गया, उसका कुछ हिसाब नहीं। किसी को परवाह भी नहीं। जब भगवान् ने इतना दिया कि रखने को जगह ही नही रही, तब कोई कितना सभाले और क्या परवाह करे?

अब उडीसा के मुख्यमत्री श्री नवीन पटनायक ने वक्तव्य दिया है कि उडीसा में भूख से कोई मौत नही हुई। कुछ लोग विषाक्त अन्न खाने से अवश्य मरे है। हो सकता है कि कुछ लोग विषाक्त अन्न खाने से भी मरे हो, परन्तु यदि बहुत मे लोग भूख से भी मरे हो, तो कोई आश्चर्य नही, और उनका मुख्यमत्री को पता भी न हो। शासनतत्र सत्य पर पर्दा डालने मे कुशल होता है।

इस काड पर इतना शोर इसलिए मचा कि उच्चतम न्यायालय मे एक जनहित याचिका प्रस्तुत की गई कि यद्यपि देश के अन्न भडारो में यथेष्ट से अधिक अनाज भरा पडा है और वह गल सड रहा है, परन्तु वह उन भूखे लोगो तक पहुच नही पा रहा है, जो आम की गुठलियो की गिरी खाने को विवश है और भूख से मर रहे है। इस पर उच्चतम न्यायालय ने केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारो को ऐसी व्यवस्था करने को कहा कि जिससे किसी भी नागरिक के भूखो मरने की नौबत न आये।

उडीसा सरकार ने भुखमरो पर कृपा करते हुए यह योजना चालू की कि आम की गुठलिया खा कर बीमार पडने वाले लोग जितने किलो आम की गुठलिया ला कर देंगे, उतने किलो चावल उन्हें दिया जायेगा।

यह धर्म परायण देश

उडीसा धर्मपरायण लोगो का देश है। जगन्नाथपुरी मे जगन्नाथ मन्दिर है, जहा कहा जाता है कि प्रति दिन भगवान् का भोग लगाने के लिए १६ हजार हांडिया चढती है। १६ हज़ार की सख्या की गारटी तो नही, परन्तु इतना तो सबको दिखाई पडता है कि बहुत बडी मात्रा मे नित्य उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थ तैयार होते है। वासुदेव कृष्ण, सुभद्रा और बलराम की प्रतिमाए तो उसे केवल जूठा करके छोड देती है (एक ग्रास भी खाती नहीं), वह सब हजारो भक्तो को प्रसाद के रूप मे बाटा या बेचा जाता है।

भुवनेश्वर का लिङ्गराज मन्दिर तो प्रसिद्ध है ही, भुवनेश्वर नगर मन्दिरो के नगर के रूप मे विख्यात है। जिधर देखो, उधर मन्दिर। यहा के कण कण मे और जन जन मे भगवान् रमे हैं।

उड़ीसा विपत्तियो का गढ़

साथ ही उडीसा विपत्तियो का देश भी है। लीलामय भगवान् कल कौन सी लीला करने लगेगे, कोई हिसाब नही। वह प्रसन्न मुद्रा मे होगे, तो धान की फसल इतनी होगी कि हर घर मे कोठार भर जायेगे। फल, सब्जी, और मछली हर किसी को सुलभ होगी। लोग स्वस्थ और स्फूर्त होगे। वे गायेगे, कीर्तन करेगे, नाचेगे, उत्कृष्ट गीत और नृत्य।

परन्तु जब भगवान् की दृष्टि तनिक वक्र होती है, तब बग सागर गरजने लगता है। प्रचड तूफान आते है। चालीस चालीस फुट ऊची समुद्र की लहरे बीस बीस किलोमीटर तक स्थल भाग पर दौडती चली आती हैं और खेत, खलिहान, घर, मकान मबको डुबोती ढहाती मटियामेट कर देती है। मूसलाधार वर्षाए खड प्रलय का दृश्य उपस्थित कर देती हैं। भाग्यशाली होते है वे, जो तत्काल मर जाते है। जो बच जाते है, वे भूख प्यास, बीमारी, अभाव की यंत्रणा भुगतने तथा भिक्षा और दान मे मिले अन्न वस्त्र से जीने की लाछना भुगतते है। हृदय विदारक दृश्य होता है वह। उडीसा ऐसे तूफानो और उनसे आने वाली विनाशकारी बाढो का घोसला है। वहा काफी कुछ नियम से उनका आगमन होता ही रहता है।

जो कुछ कमी अतिवृष्टि से रह जाती है, उसे अगले साल अनावृष्टि पूरा कर देती है। वर्षा नही होगी, तो बिल्कुल नहीं ही होगी। एक बूद भी नही बरसेगी। मीलो मील तक हरी घास का एक तिनका भी दिखाई नही पडेगा। मागने और भूखा मरने के सिवाय उपाय क्या है?

मंत्रियों को दुर्दशा देखने नहीं दी जाती

मुख्यमत्री नवीन पटनायक को गावो की भुखमरी देखने का अवसर नहीं मिला। कभी मिलेगा भी नही। मुख्यमत्रियो और प्रधानमत्रियो को केवल वे ही चीजे दिखाई जाती है, जिन्हे अधीनस्थ सरकारी कर्मचारी दिखाना चाहते है। ऐसा कोई उपाय नहीं है कि जैड सुरक्षा के चक्रव्यूह को भेद कर कोई मुख्यमत्री या प्रधानमंत्री भुखमरी के दृश्यो तक पहुच सके। जैसे सूर्य के आने से पहले ही अधेरा हट कर प्रकाश फैल जाता है, वैसे ही इन प्रतापी मत्रियो के पहुचने से पहले ही सब अभाव, दुख दारिद्र्य लुप्त हो जाते है।

उडीसा की भुखमरी हमने अपनी आखो से देखी है। अमुक लाश भूख से मरे व्यक्ति की है, या अन्न खरीद पाने मे असमर्थ बेरोज़गार व्यक्ति की, इसका सूक्ष्म अन्तर पहचानने का यत्र हमारे पास नहीं था। फिर, लाशो मे हमारी दिलचस्पी थी भी नही। हमारे सामने हर गाव मे जो सैकडो लोग एकत्रित होते थे, उनमे चालीस पचास, बल्कि इससे भी अधिक तो जिन्दा लाशे होती ही थी।

मनुष्य मरणधर्मा है। हर किसी को एक न एक दिन अवश्य मरना है। परन्तु जब आखो के सामने ककाल-प्राय ऐसा व्यक्ति, युवती या युवक, बालिका या बालक, आ खडा होता है, जो मृत्यु की ओर तेजी से बढता हुआ अपने लक्ष्य के एकदम निकट आ पहुचा है, बस चार पाच कदम ही बाकी है, तब देख कर दिल दहल जाता है। वह जी सकता था, बहुत बरस जी सकता था, यदि उसे दो मुट्ठी भात खाने को मिलता रहता।

शासन व्यवस्था पर कलक

उच्चतम न्यायालय ने आदेश दिया कि ऐसे लोगो को अन्न पहुचाने की व्यवस्था की जाये। यह आदेश हमारी समूची शासन व्यवस्था पर कलक है। भूखे को अन्न दो, प्यासे को पानी पिलाओ, रोगी को औषध दो, यह आदेश उच्चतम न्यायालय को देना पडे? वह भी जनहित याचिका के बाद!

कहा जाता है कि भारत धर्मप्राण देश है। कौन सा ऐसा धर्म है, जिसकी शिक्षाओ का पालन यहा होता है? हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, पारसी, इन सभी धर्मो मे तो ये शिक्षाए दी गई है। पर ये शिक्षाए कथा के बैगन है, प्रचार के लिए है, आचरण के लिए नही।

सरकारे धर्मनिरपेक्ष है, पन्थ निरपेक्ष है, सर्वधर्म समभावी है। सब शब्द जाल है। सरकार धर्म से उतनी ही दूर है, जितना उत्तर दक्षिण से, या अन्धकार प्रकाश से दूर होता है।

नही तो यह कैसे सभव था कि उडीसा के तूफान, बाढ और अकाल से पीडित भुखमरीग्रस्त क्षेत्रो के लोगो की पीडा भुवनेश्वर के सचिवालय तक और केन्द्र के ससद भवन तक न पहुचती? केन्द्र यह कह कर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकता कि यह राज्य सरकार का काम है। देश के हर क्षेत्र का प्रतिनिधि सासद देश की ससद मे होता है। यदि उस सासद को अपने निर्वाचन क्षेत्र मे फैली भुखमरी का पता नही है, तो वह कैसा सासद है!

सरकारी अफसर क्या करते है?

पटवारी, कानूनगो, तहसीलदार, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, पचायते और भी न जाने कितना विशाल जाल अफसरशाही का फैला हुआ है। ये सब क्या करते है?

ये भगवान से प्रार्थना करते है कि कोई बडी प्राकृतिक आपदा आये तूफान, बाढ, भूकम्प, और कुछ नही तो सूखा, अकाल, कुछ भी। फिर अखबारो मे खबरे छपे। केन्द्र से अनुदान मिले, विदेशो से सहायता मे अन्न, वस्त्र और औषधिया आये। उन्हे पीडितो तक पहुचाने मे उनके पौ बारह हो जाये।

जब देश पर चीनी या पाकिस्तानी आक्रमण होता है, तब गीत गाये जाते है 'आवाज दो हम एक है।' तब कहा जाता है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, द्वारिका से डिब्रूगढ तक सारा भारत एक है, सब भारतवासी भाई भाई है, सब भारत मा की सन्तान है। परन्तु जब शान्ति होती है, तब वह भाईचारा कहा चला जाता है? तब कैसे यह होता है कि उडीसा के रायगढ जिले के काशीपुर मे भूखे लोग आम की गुठलियो की गिरिया उबाल कर खाते है और दिल्ली मे शादी की दावतो मे मनो जूठन कूडेदानो मे फेकी जाती है? कश्मीर से तीन लाख पडितो को खदेड कर शरणार्थी बना दिया जाता है, और उनकी व्यथा से बिल्कुल अप्रभावित पूरे भारत मे दिवाली, दशहरा, होली जैसे त्यौहार धूमधाम से मनाये जाते है।

समवेदना

जब तक मनुष्य मनुष्य की पीडा मे हिस्सा बटाना नही सीखेगा, तब तक यही होता रहेगा। दूसरे की पीडा मे अपना सुख ढूढने वाले राक्षस होते है। हमे उडीसा मे राहत सामग्री बाटते समय ऐसे राक्षसो के दर्शन करने का सुयोग मिला। अन्न और वस्त्र उन लोगो के लिए ले जाये गये थे, जिनके पास कुछ नही बचा था। परन्तु उस सामग्री का बडा भाग वे प्रभुताशाली लोग हथिया लेना चाहते थे, जिनके पास पहले ही सब कुछ विद्यमान था। और हम देने को विवश थे, न दे, तो हम उन

(शेष पृष्ठ १० पर)

हाय रे निर्दय हिन्दू समाज !

❑ श्री रगीलाल आर्य, ऐडवोकेट

पाच वर्ष की बच्ची विधवा

पजाब केसरी १८ ५ २००१ मे प्रकाशित एक समाचार के अनुसार अजमेर जिले के "करसी" गाव मे "पाच वर्षीय निरमा विधवा हो गई है"। घर मे माता पिता एव परिजनो के रोने-पीटने से बेखबर यह अबोध बालिका उस समय भी बच्चो के साथ लगडी खेलने मे मस्त थी। किन्तु अब तो इस रोती बिलखती मासूम और बेबस बच्ची का सिर मूड दिया गया है और इसके रगीन कपडे उतार कर विधवाओ जैसे सफेद कपडे और तुलसी की माला पहना दी गई है तथा हाहाकार करती हुई इस निरीह कन्या के हाथ की हरी चूडिया, कान की बाली और नाक का मोती भी तोड दिया गया है तथा हिन्दू विधवा की सभी औपचारिकताए इस बालिका पर लाद दी गई हैं।

किन्तु शोक का विषय है कि पजाब केसरी के एक उपेक्षित से कालम के अतिरिक्त इस बेबस बालिका का हाहाकार और क्रन्दन किसी को सुनाई नही पडा। अब इस बालिका के माता पिता एव परिजनो को यह चिन्ता खाये जा रही है कि इस बच्ची का भविष्य क्या होगा? क्योकि विधवा नाम के अपशकुन से आरोपित इस बालिका को कोई अपने कुल मे लेने को तैयार नही होगा। और यह इकली निरमा की व्यथा ही नही, अपितु पूरे हिन्दू ममाज मे वैधव्य की निर्मम एव निष्ठुर प्रथा की करुण कथा है। हिन्दू धर्म की शास्त्र व्यवस्था मे विधवा विवाह को केवल अस्वीकार और अमान्य ही नही किया गया, अपितु उसे कठोरता के साथ वर्जित अग्राह्य एव पाप धोषित किया गया है।

पुनर्वास, न कि पुनर्विवाह

अभी पिछले दिनो साध्वी ऋतभरा को मथुरा मे वात्सल्य ग्राम के लिए दी गई भूमि केविवाद पर मथुरा मे विधवाओ की दयनीय दशा एव उनकी वेदना पर पीडा व्यक्त करते हुए सुश्री उमा भारती ने अपने वक्तव्य मे कहा है कि वैधव्य से उत्पीडित एव निस्सहाय महिलाओ को इस वात्सल्य ग्राम के द्वारा सहायता दी जायेगी तथा उनके उद्धार एव पुनर्वास का प्रयास किया जायेगा, किन्तु हम इन विधवाओ के पुनर्विवाह को प्रोत्साहित एव मान्य नही करेगे। लेकिन सुश्री भारती ने यह स्पष्ट नही किया कि विधवा विवाह को मान्य नही किये जाने के पीछे क्या कारण वर्तमान है, जबकि ७०-७० की वर्ष आयु के विधुर पुरुष कुमारी बालिकाओ तक से विवाह करने के लिए सब प्रकार से प्रतिष्ठित एव मान्यता प्राप्त है।

विधवाओ की दुर्दशा

हिन्दू सस्कृति एव समाज रचना की यह कैसी करुण विडम्बना है कि हिन्दू विधवा वेश्यावृत्ति कर सकती है, विधर्मियो के साथ जीवन बिताने पर मजबूर हो सकती है, गर्भपात करा सकती है, भिखारी बनकर दर-दर की ठोकरे खा सकती है, समाज व परिजनो के अत्याचार से पीडित घर की एक तग व तमाच्छन्न कोठरी मे तडप-तडप कर अपनी जान दे सकती है, मन्दिरों, मठो व धर्म के ठेकेदारो को अपना शरीर समर्पण करने पर विवश की जा सकती है, किसी भी पुरुष की राक्षसी वासना व बलात्कार का शिकार बनायी जा सकती है, और पुरुष के पाप से प्राप्त अपनी ही कोख से उत्पन्न अपने जिगर के टुकडे को नाली मे फेकने पर बाध्य की जा सकती है, किन्तु वह विधुर पुरुषो के समान अपना पुनर्विवाह कर पवित्र गृहस्थ जीवन नहीं बिता सकती। और यह समस्त जघन्य पाप एव निर्दयतापूर्ण कृत्य महानतम हिन्दुत्व की परम्परा एव शास्त्र मर्यादा की रक्षा के लिए हमे स्वीकार है, किन्तु किसी भी महिला का पुनर्विवाह स्वीकार नही है। कितना भयावह एव बीभत्स चित्र है, ऋषियो की उस सुसस्कृत, समानता, स्वतत्रता एव न्यायपूर्ण समाज रचना का, जिस पर हम गर्व करते है और जिसका दिव्य सन्देश हम सारे ससार को देना चाहते है। कौन वज्रहृदय निर्मम प्राणी हमारे सामाजिक जीवन के इस क्रूरतापूर्ण अभिशाप को स्वीकार करने का दुष्पाप कर सकेगा? दुःख का विषय है कि पूरे विश्व मे हिन्दू धर्म, उसकी सस्कृति तथा हिन्दुत्व की दया, करुणा, न्याय एव समानता का ढिंढोरा पीटने वाला हिन्दू समाज वैधव्य का नारकीय जीवन जीने पर विवश अपनी इन बहन बेटियों को अपने भाई व बेटों के समान पुनर्विवाह की अनुमति देने को तैयार नहीं है।

हमारा समाज विधवाओं पर दया दिखाने का ढोंग करता है, परन्तु पुनर्विवाह करके उन्हें प्रतिष्ठा से जीने देना नहीं चहता। पति का देहान्त हो जाने पर अविवाहित दीन हीन जीवन बिताने में कोई पतिव्रता धर्म या पुण्य नहीं है। यह बात सबको समझ आनी चाहिए। ईसाई और मुसलमान इसे समझते हैं। —सं०

अनगिनत विधवाएं

अभी एक सर्वेक्षण के अनुसार इकली मथुरा नगरी मे १३ से ७० वर्ष आयु की ८५०० विधवाओं की गणना की गयी, जबकि वास्तविक संख्या इससे अधिक होना सुनिश्चित ही है। वृन्दावन के एक ही आश्रम में १३०० से अधिक बाल एवं युवती विधवाए केवल पेट की आग बुझाने के लिए कीर्तन व भजन के नाम पर घर-घर जा कर अपने जीवन एव यौवन को दर-दर नीलाम करती हुई इस समाज व्यवस्था की अन्त्येष्टि के लिए हा हा करके परमात्मा से प्रार्थना कर रही हैं।

और यह तो केवल एक आश्रम की ही कथा है, जबकि भारत के समस्त तीर्थस्थल, असख्य मन्दिर, मठ, देवालय, तथा धर्मध्वजी महन्तो के गढ इसी प्रकार के क्रूर आश्रम बने हुए है। भगवान शकर की मोक्ष नगरी काशी मे महात्मा ज्योतिबा फुले के महाराष्ट्र एव ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के बगाल से बाल व युवती विधवाओ के झुड के झुंड नित्य प्रति प्रवेश करते है और आज इकली काशी नगरी मे विधवाओ की सख्या सवा लाख से ऊपर परिगणित की जा चुकी है। महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती मोहिनी गिरि के ताजा वक्तव्य के अनुसार भारत मे विधवाओ की सख्या कई करोड से भी अधिक है। (पजाब केसरी १८ ६ २००१) उनकी दयनीय दशा, विवशता व शोषण मे भी कोई परिवर्तन नहीं हो सका। इसका परिणाम यह है कि आज भी गर्भपात, आत्महत्या, नवजात शिशु वध, गुप्त व्यभिचार, वेश्यावृत्ति, भिक्षा याचन, बलात्कार, पलायन, तिरस्कार, दासता, प्रताडना, निराशा, भूख एव अभाव तथा अत्याचारो एव लांछनो से व्यथित जीवन ही हिन्दू विधवा जीवन की सनातन दारुण गाथा है।

दीपा मेहता की फिल्म 'वाटर' इसी हिन्दू विधवा जीवन की त्रासदी पर प्रकाश डालने का एक अल्प प्रयास मात्र था, जिसे हिन्दुत्व का अपमान एव अतीत का विगत घटाटोप बताकर धर्म के ठेकेदारो ने हिन्दू समाज के इस निर्मम एवं करुणापूर्ण चित्र को समाज के सामने नहीं आने दिया, जबकि अतीत का वह बीभत्स चित्र आज भी यथापूर्व वर्तमान है।

पुनर्विवाह ही सही हल

इस समस्त दुरवस्था के निराकरण का एकमात्र मार्ग विधुर पुरुषो के विवाह की भाति विधवा विवाह की सामाजिक प्रतिष्ठा ही है। वर्तमान मे विधवा महिलाओ को स्वावलम्बी बनाने के लिए उन्हे नर्सिंग, अध्यापन, सिलाई, बुनाई, कटाई आदि कार्यो मे लगाने का प्रतिफल केवल उनको आर्थिक रूप मे सहायक तो हो सकता है, किन्तु यह समस्त प्रयास उनकी मानसिक, सामाजिक एव पारिवारिक प्रतिष्ठा तथा उनके दायित्वो एव विपत्तियो का समाधान तनिक भी नहीं है। इस सन्दर्भ मे यह समझ लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण एव आवश्यक है कि वैधव्य की अनिवार्य धर्म के रूप मे प्रतिष्ठा एव उसे पतिव्रत धर्म का पालन मानना अत्यन्त ही अविवेक एव अन्यायपूर्ण चिन्तन है। क्योकि वैधव्य कोई धर्म नही, अपितु विवशता है और किसी भी विवशता का पालन धर्म व कर्तव्य नहीं, अपितु पाप एवं दुर्बलता है।

इस समग्र चिन्तन मे महत्वपूर्ण यह भी है कि दाम्पत्य धर्म का पालन, यथा सेवा, सहयोग, कर्तव्य-परायणता आदि स्त्री पुरुष दोनो के जीवन मे ही सम्भव है। जैसे विधुर पुरुष, अपने पुनर्विवाह के पश्चात् भी समाज मे अपने गृहस्थ धर्म से पतित नही होता, उसी प्रकार विधवा स्त्री भी अपने पुनर्विवाह के पश्चात् अपने पत्नीधर्म व मर्यादा से विरत नहीं होती। इस नवयुग मे बढते हुए एकाकी एव उच्छृखल जीवन मे सस्कृति एव पारिवारिक मर्यादा के सरक्षण का एकमात्र मार्ग गृहस्थ के दाम्पत्य जीवन मे ही सम्भव है। इसके लिए समाज मे व्याप्त मूढता को तोडने के लिए विधवा विवाह की सामाजिक प्रतिष्ठा अनिवार्य है, ताकि हम अपनी ही इन अबला बहन, बेटियो को वैधव्य की परम्परागत नरकाग्नि से मुक्ति का अवसर दे सके।

तहसील बेहट, जिला सहारनपुर

दान और सम्मान

गरीब आदमी दान नहीं दे सकता। कजूस आदमी दान दे सकता है, पर देता नहीं। धनी आदमी दान दे सकता है, पर बहुत से नहीं देते। उदार धनी व्यक्ति दान देता है, इसके लिए उसे यश मिलता है।

ऐसे बहुत लोग है, जो दया करके दीन दुखी को दान देते हैं। उन्हे संतोष होता है कि उन्होने कुछ भला काम किया।

जिन्हे हम दान देते हैं, उन्हें भी हम सम्मान देना नहीं चाहते हैं। दान दे कर हमें सस्ते बड़प्पन की अनुभूति होती है। पचास पैसे का सिक्का भिखारी को दे कर हम उससे बडे बने हैं।

मनुष्य भयंकर ईर्ष्यालु प्राणी है। वह अपने बराबर ही किसी को नहीं देख सकता, अपने से बड़ा तो कैसे देख पायेगा?

दूसरे को नीचा रखने के लिए कोई बहाना चाहिए। विधवाओं को दुर्दशाग्रस्त रखने के पीछे भी यही मनोवृत्ति है।

पं० क्षितीश जी का राष्ट्र-चिन्तन

❑ डा० वेदव्रत आलोक

बीसवीं सदी का प्रबुद्ध जगत् प० क्षितीशकुमार वेदालकार के लेखन, सम्पादन एव वक्तृत्व द्वारा आधी शती से भी अधिक समय तक प्रभावित होता रहा। सम्पादक के रूप मे वे दैनिक वीर अर्जुन' तथा 'हिन्दुस्तान' के माध्यम से पूरे भारत के पाठको से जुडे थे। सेवा निवृत्ति के बाद के परिपक्व १३-१४ वर्ष उन्होंने "आर्य जगत्" को समर्पित किये।

भारतीयता और वैदिक परम्परा

प० क्षितीश जी के चिन्तन मे भारतीयता, वैदिक परम्परा, सर्व-पथ समन्वय, सर्वहितकारी दर्शन और देश गौरव का अनुपम सामजस्य सदा बना रहता था। उनके चिन्तन का फलक व्यापक था और अभिव्यक्ति स्पष्ट, सरल और बेबाक। उनके विचारो से असहमत व्यक्ति भी उनकी सच्ची, तर्कपूर्ण और सशक्त लेखनी का लोहा मानता था। इस वैशिष्ट्य को देखते हुए अनुभव किया गया कि उनके सम्पादकीय अग्रलेखो को पुस्तकाकार छपाया जाये।

राजनीति नही राष्ट्र नीति

अब उनके दिवगत होने के सात वर्ष बाद इन अग्रलेखो का यह सकलन 'राजनीति नही राष्ट्र नीति' नाम से प्रकाशित किया गया है। इनकी कालावधि जनवरी १९८७ से मई १९९२ तक के करीब साढे पाच वर्षो की है। पडित जी ने दिसम्बर १९९२ मे शरीर छोडा था। कहना चाहिए कि जीवन की अन्तिम सास तक उनका राष्ट्र-चिन्तन चलता रहा।

जागरूक सम्पादक

वे अपने सम्पादकीय दायित्व-निर्वाह के प्रति सदा जागरूक रहते थे। समाज, देश या विश्व मे होने वाली किसी भी गतिविधि का निर्विकार भाव से गहरा अध्ययन, विश्लेषण एव अनुभव करके ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्त करते थे, जिसमे जनमानस की अनुभूति हो तथा सर्वजनहित की अदम्य भावना भरी हो, किसी एक पक्ष का पोषण नही। इन अग्रलेखो के माध्यम से वे अपने अध्ययन-मनन-निदिध्यासन एव अनुभवो तथा चिन्तन कणिकाओ का प्रसाद वितरित करते रहते थे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, आर्य समाज से लेकर पूरे विश्व समाज के विषय में, पर्यटन एवं यायावरी के साथ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एव आध्यात्मिक दर्शन तक के विस्तृत आयामों से जुड कर सोचते, और लिखते थे। तो क्या कोई क्षेत्र ऐसा भी हो सकता है, जिसमे उनकी मौलिक जीवन दृष्टि को रेखांकित किया जा सके?

ऐसे अनेक प्रश्नो के साथ मैंने पडित जी के सम्पादकीयो का अध्ययन किया। सोचा कि उनके सकलित लेखो को किस नाम से पुकारा जाय? तभी उनका एक सम्पादकीय (३० जून १९९१) नजर मे आया, उसका शीर्षक यही था—

"राजनीति नहीं, राष्ट्रनीति।" बस मुझे उल्लिखित सभी प्रश्नो का उत्तर और इस सकलन का नाम मिल गया। यही है उनका मौलिक सदेश। कैसे?

सम्पादन का दायित्व निभाने के लिए समाज को सर्वाधिक प्रभावित करने और दिशा देने मे समर्थ पत्रकारिता की अपेक्षाओं के अनुरूप देश की राजनीतिक स्थितियो और अवस्थाओ का तटस्थ विश्लेषण आवश्यक होता है। प० क्षितीश जी जैसा साहित्यकार राजनीति की नीरसता मे भी उसकी विद्रूपताओ, विसगतियो और विडम्बनाओ पर सरस कटाक्ष न करे, यह कैसे सम्भव है? और उन निष्पक्ष, निर्भीक, बेलाग टिप्पणियो के मूल मे पूरे राष्ट्र का हित निहित न हो, यह भी क्योकर हो सकता है? उनकी तो तीव्र अभिलाषा यही थी कि किसी व्यक्ति, परिवार, वर्ग, जाति, सम्प्रदाय या पार्टी-विशेष की क्षुद्र सीमा से निकल कर राजनीति सर्वथा राष्ट्रोन्मुखी बने। उनके सभी लेखो मे यही स्थायी भाव है जो मानवीय नैतिकता के आदर्शो के साथ भारतीय अस्मिता के गौरव का गहरा पुट लेकर अभिव्यक्त हुआ है।

आर्य समाज और गुरुकुल से सम्बन्ध

पडित जी के चिन्तन की यह उदात्त दिशा उनके अपने सस्कारो, उच्च गुरुकुलीय शिक्षा, आर्य समाज से गहरे जुडाव और गभीर स्वाध्याय के आधार पर निर्धारित व निर्मित हुई थी। वह अपने अग्रसर एव गतिशील विचारो के साथ परिवर्तन और परिष्कार मे विश्वास रखते थे। जीवन भर सामाजिक गतिविधियो एव पत्रकारिता से सम्बद्ध रहने के कारण उन्हे भारतीय समाज का जागरूक पहरुआ या पुरोहित भी कहा जा सकता है। उन्ही जैसे कर्मठ विद्वान् और सचेत विचारक घोषणापूर्वक कह सकते है — **"वय जागृयाम राष्ट्रे पुरोहिता·।"** काश यह वैदिक उद्घोष करने का साहस प्रत्येक बुद्धिजीवी कर सके कि जाग रहे है राष्ट्र के हम अग्रणी दिग्दर्शक।

उनकी इस राष्ट्रदृष्टि को आत्मसात् करने के लिए वर्तमान सकलन के लेख अत्युपयोगी प्रतीत होते है।

'आर्य जगत्' के प्रबन्धको के साथ आत्मीयता का सम्बन्ध होने के साथ पडित जी पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नही था, अत उनका अपना चिन्तन और दृष्टिकोण मुक्त होकर समाज के सम्मुख आ सका और ये लेख उनके विश्व-मानवीय व्यक्तित्व का निर्मल दर्पण बन सके।

विश्वास है भारत के प्राचीन चिन्तन को आधुनिकसन्दर्भो के विश्लेषण के लिए उपयोगी बनाता हुआ यह सकलन राष्ट्रवादी राजनेताओ के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा। देश की दस साल पहले की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, किसी भी क्षेत्र मे जो दशा थी, आज उससे भी बदतर है। अत आज भी ये लेख उतने ही प्रासगिक है।

आर्यसमाज का एक विद्वान् साहित्यकार, आदर्श लेखन की किन सीमाओ को छू सकता है, यह पूरे आर्य जगत् के लिए गौरव एव प्रेरणा का विषय है। और इस तरह प० क्षितीश जैसा लेखक किसी देश, काल एव वर्ग की सीमाओ से ऊपर होने से "कालजयी" कहाता है। प० क्षितीश जी ऐसे ही कालजयी लेखक थे।

सिद्धहस्त लेखक और ओजस्वी वक्ता

पडित क्षितीश जी वेदालकार आर्य समाज के ख्यातिप्राप्त नेता, प्रचारक एव सिद्धहस्त लेखक थे। सन् १९७९ से १९९२ तक वह आर्य जगत् साप्ताहिक के सम्पादक रहे। उससे पूर्व वह 'वीर अर्जुन' दैनिक और 'हिन्दुस्तान' दैनिक मे वर्षों सम्पादन एव लेखन कार्य करते रहे थे।

प० क्षितीश जी जितने अच्छे लेखक थे, उतने ही बढिया वक्ता भी थे। आर्य समाज के उत्सवो मे उनके भाषणो को सुनने के लिए भारी भीड एकत्र होती थी।

जब वह गुरुकुल कागडी मे महाविद्यालय की कक्षाओ मे पढ रहे थे, तभी सन् १९३९ मे हैदराबाद मे निजाम की साम्प्रदायिक नीतियो के विरोध मे आर्य समाज का सत्याग्रह शुरू हो गया। तय हुआ कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महात्मा नारायण स्वामी जी पहले जत्थे का नेतृत्व करे। पहला जत्था गुरुकुल कागडी के १५ ब्रह्मचारियो का था। इसके प्रमुख प० क्षितीश जी थे।

प० क्षितीश जी उस समय चौदहवी कक्षा मे पढ रहे थे। तीन चार महीने बाद परीक्षाए होनी थी और वह स्नातक बन जाते। परन्तु युद्ध की पुकार पहले आ पहुची। परीक्षा जब होगी, तब होगी, पहले निजाम से निपटा जाये। हरिद्वार से हैदराबाद जा कर सत्याग्रह किया। छह छह महीने की तीन सजाए हुई, जो एक साथ चलने के कारण छह महीने मे ही समाप्त हो गई। अपने जेलवास का वर्णन उन्होने अपनी पुस्तक 'निजाम की जेल मे' मे किया है।

प० क्षितीश जी को घूमने का बडा चाव था। सन् १९३८ मे वह गुरुकुल के ब्रह्मचारियो की एक टोली मे कैलाश मानसरोवर की यात्रा पैदल करके आये थे। उसके रोमाचकारी अनुभव वह कभी कभी सुनाया करते थे। एक बार याक वाला कुली कही पीछे रह गया। उस रात वह आया ही नहीं। भोजन ही नही, बिस्तर, कपडे भी उसी के साथ थे। वह ठिठुराने वाली रात बडे कष्ट मे बीती।

इसी तरह एक बार तिब्बती डाकू मिल गये थे। कुशल यह हुई कि उन्होने लूटपाट किये बिना ही छोड दिया।

प० क्षितीश का जन्म १६ सितम्बर सन् १९१२ को राजस्थान के महेन्द्रगढ जिले मे कनीना कस्बे मे हुआ था। शिक्षा दीक्षा गुरुकुल ज्वालापुर, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और गुरुकुल कागडी मे हुई। सस्कृत, हिन्दी तथा अग्रेज़ी का उन्हे प्रगाढ ज्ञान था।

स्नातक बनने के बाद कुछ वर्ष तक वह आर्य समाज के प्रचार कार्य मे लगे रहे। उस काल मे उन्होने दूर दूर तक की यात्राए की, जिनमे उन्हे विशेष आनन्द आता था। कुछ वर्ष बाद वह पत्रकारिता के क्षेत्र मे आ गये, जो उनकी प्रतिभा के अधिक अनुकूल था। इसमे उन्हे खूब यश मिला। उनकी लिखी २७ पुस्तके प्रकाशित हुई। इनमे 'बागला देश स्वतत्रता के बाद', स्वेतलाना, 'तूफान के दौर से पजाब' और 'कश्मीर झुलसता स्वर्ग' विशेष लोकप्रिय हुई। 'स्वेतलाना' का गुजराती और मराठी भाषा मे, तथा 'तूफान के दौर से पजाब' का अग्रेज़ी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ।

समय समय पर उन्होंने जो अग्रलेख लिखे थे, उनके सात सग्रह पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुके है। इसी कडी मे अन्तिम पुस्तक है 'राजनीति नही राष्ट्रनीति'। डिमाई साइज़ मे छपी ५६२ पृष्ठो की इस पुस्तक मे सन् १९८७ से १९९२ तक लिखे गये १४५ लेखो का सग्रह है। पुस्तक का मूल्य है ५००/- रुपये। प्रकाशक है **प० क्षितीश वेदालकार स्मृति न्यास, डी-८१, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-६४।** पुस्तक पुस्तकालयों के लिए विशेष उपयोगी है।

पत्र-जगत्

वेदों और मनुस्मृति में मांसाहार

मै आपकी पत्रिका का आजीवन सदस्य हू। काफी वर्षो से पत्रिका मे लिखे लेखो को बडी रुचि से पढता हू। आज मैने 'इडियन ऐक्सप्रैस' ९ ८ २००१ मे एक समाचार पढा है, जिसमे एक लेखक श्री झा ने ऐसा लिखा है कि प्राचीन वैदिक काल मे गोमास खाने का चलन था। उसने तो ऋग्वेद और मनुस्मृति तक का हवाला दिया है। उसने लिखा है कि अशोक के काल मे अग्नि मे गोमास की आहुति दी जाती थी। क्या यह सत्य है? क्या आर्य समाज इस टिप्पणी से सहमत है? इसका नई पीढी पर क्या प्रभाव पडेगा?

मुझे पूरा विश्वास है कि आर्य समाज इसका प्रतिवाद करेगा और इस प्रकार की व्याख्या की भर्त्सना करेगा। मै उक्त लेखक की बात से सहमत नहीं हू और आपकी प्रतिक्रिया जानना चाहता हू।

ऋषिराम कपूर, ग्राहक सख्या ३२१४५, नई दिल्ली

वेदो मे और मनुस्मृति मे कुछ ऐसे मन्त्र और श्लोक है, जिनका कुछ विद्वान् ऐसा अर्थ निकालते है। इसके विपरीत आर्यसमाजी विद्वान् यह मानते है कि यह उल्लेख मास खाने के बारे मे नहीं है। स्वामी दयानन्द जी मनुस्मृति के बहुत अशो को प्रक्षिप्त मानते है। कुछ लोग कहते है कि यज्ञो मे पशु वध होता था, कुछ कहते हैं कि वध नहीं, केवल 'पशु बन्ध' होता था, अर्थात् यज्ञ की अवधि मे पशुओ को ला कर खूटो से बाधा जाता था और बाद मे छोड दिया जाता था।

कठिनाई यह है कि दोनो ही पक्ष पूर्वाग्रह से ग्रस्त है। सस्था के रूप मे अधिकाश आर्यसमाजी मासाहार के विरोधी है। परन्तु जब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में यह प्रस्ताव रखा गया कि आर्य समाज के नियमो मे मास न खाने की शर्त भी जोड दी जाये, तो वह प्रस्ताव पास नही हो सका। सत्यार्थप्रकाश के दशम समुल्लास मे लिखा है

(उत्तर) यह राजपुरुषो का काम है कि जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हो, उनको दड देवे और प्राण (से) भी वियुक्त कर देवे।

(प्रश्न) फिर क्या उनका मास फेक दे?

(उत्तर) चाहे फेक दे, चाहे कुत्ते आदि मासाहारियो को खिला देवे अथवा यदि कोई मासाहारी खावे तो भी ससार की कुछ हानि नहीं होती, किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मासाहारी हो कर हिसक हो सकता है।

यह भी लिखा है जिस जिस के लिए जो जो पदार्थ वैद्यक शास्त्र मे वर्जित किये गये है, उन उनका सर्वथा त्याग करना और जो जो जिसके लिए विहित हैं, उन उन पदार्थो का ग्रहण करना यह भी भक्ष्य है।

वेद की भाषा ऐसी लचीली है कि उसमे से लोग अपने मनचाहे कुछ भी अर्थ निकालते रहते है। 'यही सही अर्थ है, इससे भिन्न दूसरा कोई सही अर्थ नहीं है,' ऐसा आग्रह करने की गुजाइश नहीं है।

स्वामी दयानन्द जी ने कुछ लोगो को यह जानते हुए कि वे मासाहारी है, आर्य समाज का पदाधिकारी बनाया था।

सिह, भेडिया, साप आदि मासाहारी पशु है, वे शाकाहार करते ही नहीं। गाय, हिरन, बकरी, भेड, घोडा आदि तृणभोजी पशु है, वे मासाहार नहीं करते। भालू, वानर, मनुष्य आदि उभयभोजी प्राणी है। वे शाकाहार और मासाहार, दोनो से जीवित रह पाते है। मासाहार और शाकाहार धर्मग्रन्थो का नही, आयुर्वेद का विषय है। —स०

समय रहते ही रोकिये इन्हें

राची के श्री दयाराम पोद्दार लिखते है कि राची विश्वविद्यालय में अब फलित ज्योतिष और पौराणिक कर्मकाड पढाया जायेगा, तो अन्य विश्वविद्यालयो में भी। पाखंड ढोग की जड हैं ये दोनो। यदि एक वर्ष भी पढाई शुरू रही, तो रोकना कठिन होगा। हा, अभी से सभी सस्थाओ को सगठन बना कर इसे रोकना ही चाहिए।

प० रामनाथ जी वेदालकार लिखते है (आर्य जगत् के ३ ६ के अक में) कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे वेदो पर निर्मम प्रहार होना शुरू हुआ है, कई प्रमाण भी दिये है। आर्य समाज मन्दिर मिन्टो रोड दिल्ली के गिराये जाने पर जैसे तत्काल प्रभाव दिखाया सगठन ने, वैसे ही उपरोक्त विषयो पर दिखाये आर्य।

राम पथिक, आर्य समाज अजनाला (अमृतसर) पजाब

गुरुओं का कुल

गुरुओ के कुल को गुरुकुल कहते हैं। गुरुकुल मे गुरु प्रधान है। गुरु के पास रहते हुए शिक्षा पाने के लिए शिष्य आता है। उसे अन्तेवासी कहा जाता है। गुरु की ख्याति से आकृष्ट हो कर शिष्य उसके पास आते थे या माता पिता लाते थे। इस उप-अयन या उप-नयन से गुरु का कुल बनता था।

आज गुरुकुल विरले है। आज तो विज्ञापनो के द्वारा अध्येता बटोरे जाते हैं। बाहर से आने वालो के लिए छात्रावास बनाये जाते हैं। वहां छात्र होते हैं, पर गुरु नहीं। यदि अन्तेवास नहीं, तो गुरुकुल भी नहीं। यदि गुरु का यश नहीं, तो भी गुरुकुल नहीं।

आजकल जो गुरुकुल चल रहे है, उनमे पढ रहे बालक प्राय ग्रामीण क्षेत्रो के है। गुरुकुल के सचालक अपने बच्चो को अपने गुरुकुलो मे प्राय नहीं पढाते। उनके बच्चे 'पब्लिक' स्कूलो मे शिक्षा पाते है। गुरुकुल के बच्चे सस्कृत शिक्षा पाते हैं, तो अन्य बच्चे अग्रेजी शिक्षा पाते है। गुरुकुल के बच्चे अपनी शिक्षा पूरी करके निकलने पर पाते है कि जिस शिक्षा से वे समाज के एक स्वावलम्बी घटक बन सकते थे, वह शिक्षा तो उन्हे गुरुकुल मे प्राय मिली ही नहीं, या कुछ मिली भी तो स्तर से निम्न और न होने के बराबर। उन्हे अपने मे हीनता अनुभव होती है और पिछला, गुरुकुलीय जीवन विफल हो गया प्रतीत होता है। नये सिरे से, फिर से जीवनोपयोगी शिक्षा पाना उन्हे आरम्भ करना पडता है। नई शिक्षा पाने मे जीवन के मूल्यवान् पाच सात वर्ष लगा कर भी उनमे वह दक्षता नही आ पाती है, जो आरम्भ मे "अग्रेजी शिक्षा" पाने वालो मे होती है। इस सबके कारण अपनी "सस्कृत शिक्षा" के प्रति एक प्रकार का तिरस्कार, उपेक्षा या व्यर्थता उनके मन मे घर किये रहती है।

गुरु के आचार-विचार की छाप शिष्य पर पडे, तभी गुरुकुल की उपयोगिता है। गुरु की विद्या युग से पिछडी न होकर, कम-से-कम युग के अनुसार तो होनी ही चाहिए। युग से भी आगे कदम रखने की तो बात ही अलग है। गुरुकुल के बच्चो को आरम्भ से ही अर्थकरी विद्या भी क्यो न दी जाए? सस्कृत पढने वाला अंग्रेजी में भी समान दक्षता क्यो नहीं प्राप्त करे? व्याकरण के अलावा विज्ञान भी वह क्यों न जाने? दर्शन, चिकित्सा, काव्य, आदि विषयों में आधुनिक युग के ताज़े चिन्तन से भी वह क्यो न सुपरिचित हो?

पर इस सबके लिए स्वय गुरुओ को इन नवीन विषयो मे पारंगत होना होगा। हमारे देश का औसत शिक्षक स्वभाव से प्राय प्रमादी है। अपने विद्यार्थीकाल मे जो पढ लिया, उसमे नवीन चिन्तन जोडते रहने वाले बहुत थोडे है। जो नवीन विषय ये पारम्परिक गुरु पढ और पढा नहीं सकते, उन विषयो के विद्वानो को दीन दरिद्र गुरुकुलो मे आकृष्ट कर पाना अति दुष्कर है।

पारम्परिक विषयो मे भी पारगत विद्वान् प्राय इन गुरुकुलो मे नहीं है। गुरुकुल कागडी जैसे मूर्धन्य, तथाकथित "विश्व" विद्यालय मे सस्कृत व्याकरण साद्यन्त तो क्या, ठीक-ठीक सा भी नही पढाया जाता, यह वहा से निकले हुए विद्या और वेद के "अलकार" स्नातक कह र`े है।

सबसे बडी कमी स्पष्ट चेन्तन और प्रखर निर्णय लेने की क्षमता की है। स्वामी दयानन्द ने अनगिनत पाठशालाए खोली, पर जब वे नहीं चल सकीं, तो उन्हे बन्द करने में वे झिझके नहीं। या तो इन गुरुकुलो को यथानाम "गुरुकुल" बनाया जाये, या इन्हे बन्द कर दिया जाये।

अभयदेव शर्मा, वेद सस्थान, सी-२२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७

न्याय के लिए गुहार

अक्सर समाचार पत्रो के माध्यम से या सुनने को मिलता है कि लडकी को शादी के बाद और दहेज के लिए उसका पति या ससुराल के अन्य लोग दबाव देकर सताते है। परन्तु लडकी का अपने पति या ससुराल के किसी अन्य सदस्य से मतभेद हुआ नहीं, कि वह दहेज के लिए सताने का झूठा इल्जाम लगाकर सास-ससुर, जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी, ननद-ननदोई, बच्चों यानी सभी सदस्यों को थाने मे केस दर्ज कराकर फसा देती है। ऐसी हालत में परिवार के सभी सदस्यो को फरार हो कर अज्ञातवास करते हुए बचाव का उपाय करना या गिरफ्तार होकर जेल जाना पडता है। ऐसे में जिन पर ऐसा बीतता है, वही पीड़ा जानते है। सच क्या है, या झूठ क्या है, यह तो जांच का विषय है। परन्तु एक लडकी के झूठे बेबुनियाद इल्जाम लगा देने से ही पूरे परिवार के सदस्यों के जीवन को बर्बाद कर देना क्या जायज है? समाज मे बराबर ऐसे उदाहरण आते हैं। परन्तु सामाजिक कार्यकर्ता इस विषय पर मौन है। कृपया आप सभी ऐसे परिवारो से जुड़ें और थोडा सा दर्द महसूस करे।

कुछ सुझाव

कुछ सुझाव घर, समाज व देशहित मे इस प्रकार हैं · (१) पूरी जाच के बाद ही दोषी को सजा हो। (२) दहेज और गुजारा भत्ता दोनों बंद हों, क्योंकि गुजारा भत्ता तो लड़की को दहेज ही देने के समान है। (३) अगर दो परिवारों में अनबन हो, तो तुरन्त ही दोनों पक्षों को अलग अलग हो जाना चाहिए, ताकि कानून की आड़ में कोई भी न झुलसे। ऐसी परिस्थिति में ईमानदारी से लडके वाले, जो सामान शादी के समय आया था वह तथा लडकी का सामान वधू पक्ष को वापस कर दें। खर्चे के बाबत कुछ ज्यादा देना चाहे तो यह वर पक्ष वालों की मर्जी से दे सकते हैं। (४) लडकी के घर की चाय-पानी भी न पियें, जैसे कि पहले प्रचलन था।

वेद प्रकाश, हरमू रोड, राची

वेद को गायत्री मंत्र तक सीमित न करें

❑ श्री विवेक कुमार

वेद को पढना पढाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

वेद का आशय यहा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद से है, जिनमे लगभग २० हजार मत्र है। यदि पुनरुक्तियो (एक ही मत्र एक से अधिक बार पाये जाने) को छोड भी दे, तो भी मत्र १५ हजार से अधिक होगे। यदि एक मिनट मे पाच मत्र भी बोले जाये, तो पन्द्रह हजार मंत्रो का पाठ करने में ३००० मिनट, अर्थात् ५० घटे लगेगे। यदि एक मिनट मे तीन ही मंत्र बोले जा सके, तो ५००० मिनट अर्थात् ८३ घटे से कुछ अधिक लगेगे। इतना समय कम लोगो के पास होता है।

मनुष्य आलस्य का पुतला

मनुष्य आलसी प्राणी है। वह श्रम से बचना चाहता है। बिना मेहनत किये, या कम से कम मेहनत में काम चल जाये, यह उसका प्रयत्न होता है। श्रम का हिसाब मानव-घटो मे रखा जाता है। वेद पढना न पडे, और वेद पाठ का लाभ पूरा मिल जाये, या वेद पाठ का कर्तव्य पूरा समझा जाये, यह इच्छा रहती है।

स्वामी दयानन्द जी ने सन्ध्या, ईश्वर प्रार्थना-उपासना मत्र, अग्निहोत्र के मत्र, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण आदि के मत्र सकलित कर दिये है। उनको पढने से कम प्रयत्न मे वेद पाठ हुआ माना जाता है।

कुछ अन्य लोगो ने 'वेद शतक' छाप दिये है, जिनमे एक एक वेद के सौ सौ मत्र इकट्ठे करके छापे गये है। ये मत्र बिना किसी पूर्वापर प्रसग के, टोकरी मे आलुओ की तरह भरे हुए है। अध श्रद्धालु लोग इन असम्बद्ध मत्रो का पाठ करके, आहुतिया दे कर 'वेद पाठ का परम कर्तव्य पूरा हुआ' मानते है।

गायत्री मंत्र सर्वोत्तम

बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। आलस्य और भी हावी होता है। इसलिए कुछ कुशल सन्यासियो और महात्माओ ने एक और छोटा रास्ता निकाला 'गायत्री सर्वोत्तम मत्र है। इसका बार बार पाठ करो, इससे आहुतिया दो, वेद पाठ का लाभ पूरा हो जायेगा।'

अध श्रद्धालु पूरे वेद को, पन्द्रह हजार मत्रो को छोड कर गायत्री के भक्त बन गये। गायत्री मत्र तीन तीन बार, पाच बार, ग्यारह बार, अनगिनत बार पढा जाने लगा। यह अशिक्षितो की, अनपढो की शैली है। गावो मे प्रचार करने वाले गायत्री परिवार की शैली।

अलौकिक लाभ?

गायत्री मत्र के जप की महिमा बखानी गई। इससे अलौकिक लाभ होने का वर्णन किया गया, आप्त लोगों द्वारा किया गया। गायत्री को महामंत्र मान लिया गया। बात अन्धविश्वास की सीमा तक पहुंच गई।

हो सकता है कि किन्ही दो चार साधक महात्माओ को गायत्री मत्र के एक लाख या एक कोटि जप करने से, गायत्रीमय हो जाने से अद्भुत लाभ हुआ हो।

परन्तु इतने भर से उनके कथनो को स्वीकार कर लेना वैज्ञानिक, बुद्धिसगत तरीका नही है। इस कथन को सुविज्ञ, निष्पक्ष लोगो द्वारा बार बार प्रयोग करके परखा जाना चाहिए और वैज्ञानिक ढग से उसके परिणाम प्रकाशित किये जाने चाहिए। कितने पाठ करने से कितना लाभ होता है, इसका बार बार अनुभूत विवरण दिया जाना चाहिए। यदि वह निष्कर्ष और अनुभव प्रामाणिक पाया जाये, तो गायत्री का लक्ष या कोटि जप करना सबके लिए आवश्यक बनाया जा सकता है, जैसे पोलियो बूदे या चेचक का टीका सबके लिए आवश्यक है।

परन्तु उससे पहले, किसी ने ऐसा कहा है, इसलिए उसे सही मान लेना और भेड चाल से चल देना विवेकी आर्यो का कार्य नही है।

अभी तो हो यह रहा है कि सब वेद मत्रो की माता समझी जाने वाली गायत्री अपनी ही सतानो (अन्य वेद मत्रो) को खा रही है, जैसे नागिन अपने ही बच्चो को खा जाती है।

उपमा तनिक कठोर हो गई है। परन्तु यह सत्य हैं, कटु, अप्रिय सत्य है। गायत्री के अन्धभक्त शेष वेद मत्रो को भुला बैठे है। जब हीरा मिल गया, तब ककडो को कौन बटोरे?

सभी वेद मत्र हीरे है

परन्तु अन्य वेद मत्र ककड नही है। उनमे से प्रत्येक वैसा ही दमकता हीरा है, जैसा कि गायत्री मत्र है। लोगो के पास वेद पाठ के लिए समय और शक्ति सीमित है। आजकल की भागदौड के युग मे, पता नहीं, किसी को दिन मे सध्या करने के लिए समय भी मिलता है कि नहीं।

इसलिए हमारा सुझाव यह है कि जहा भी आर्य समाजो में, या अन्य पारिवारिक सत्सगो मे यज्ञ करने की परम्परा हो, वहा गायत्री मत्र से ही बार बार आहुतिया न दे कर नये नये मत्रो से आहुतिया दी जाये। इसका उपाय यह है कि वेद की पुस्तक यज्ञ स्थल पर रखी रहे। जहा तक आज वेद मत्रों का पाठ हुआ है, वहा निशान लगा दिया जाये। अगली बार वहा से आगे के मत्रो का पाठ हो। पाठ की समाप्ति पर फिर निशान लगा दिया जाये। इससे वेदो का पूरा पाठ हो सकेगा।

हर व्यक्ति मंत्र पाठ करे

'एक व्यक्ति के मत्रपाठ से सब उपस्थित लोगो का मंत्र पाठ हो गया' नहीं माना जाना चाहिए। हर आर्य नर नारी को अपने मुंह से मत्र बोलना चाहिए। जैसे पुरोहित के भोजन कर लेने से यजमान का या यज्ञ मे भाग लेने वाले अन्य लोगो का पेट नही भर जाता, वैसे ही बिना अपने मुह से मत्र बोले, मत्र पाठ का फल हमे नही मिल सकता। प्रार्थनापरक मत्र की प्रार्थना का फल उसी को मिलेगा, जिसने प्रार्थना की है। जिसने मत्र पढा ही नही है, वह फल पाने की आशा कैसे करता है?

पाठ करते हुए अर्थ बोलना उचित नहीं

वेद पाठ करते हुए वेद मत्र का अर्थ समझना या समझाना जरूरी नही है। अर्थ समझना हो, तो विद्यालय मे, या किसी अन्य समय अध्यापक से सीखना चाहिए। यज्ञ या सध्या मे मत्रो का भाषा मे अर्थ करना, समझाना अनुचित और अशोभन है।

शका उठेगी कि बिना अर्थ जाने समझे प्रार्थना करने का क्या लाभ है?

महत्व इस बात का है कि जिस भाषा मे हम प्रार्थना कर रहे है, उसे वह समझता है या नही, जिसमे प्रार्थना की जा रही है। जिससे प्रार्थना की जा रही है, यदि वह उस भाषा को, उस शब्दावली को समझता है, तो काफी है। हम प्रार्थी लोग समझते है या नही, इसका कोई महत्व नही है।

व्यवहार मे हम नित्य यही करते है। सरकारी दफ्तरो मे, न्यायालयो मे, हम वकीलो और मुशियो से उस भाषा मे याचिका, आवेदन लिखवाते है, जिसे उच्च अधिकारी, या न्यायाधीश समझते है, हमारे पल्ले वह खाक पडे या न पडे। विदेशो से पत्र व्यवहार करते हुए हम अनुवादको से अनुवाद करवा कर उस भाषा मे पत्र भेजते है, जिसे पाने वाला समझता है। हमे यह विश्वास होना चाहिए कि जो कुछ हम लिख या कह रहे है, वह गलत नही है।

मत्रो की भाषा ईश्वर जानता है

वेद मत्र पाठ करने वाले यह मानते है कि ईश्वर न केवल वेदो की भाषा को समझता है, अपितु वेद उसकी अपनी वाणी है। जैसे न्यायालयो मे हर विषय के अपने लगे बधे मुहावरे, शब्द और वाक्याश होते है, और उन्ही का प्रयोग करना उचित समझा जाता है, और उनसे भिन्न शब्दो का प्रयोग करने वाला अनाडी, कमसमझ माना जाता है, वैसे ही वेद मत्र भी प्रार्थना, उपासना आदि के सर्वोत्तम प्रारूप है। उन्ही मत्रो के द्वारा प्रार्थना की जानी चाहिए। उनसे भिन्न शब्दो मे प्रार्थना करना अशोभन होगा।

प्रश्न उठेगा 'ईश्वर तो सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्वभाषावित् है। वह तो हर भाषा मे की गई प्रार्थना को समझेगा, स्वीकार करेगा। फिर वेद मत्रो मे ही क्यो?'

प्रार्थना वेद मत्रो में ही क्यों?

ठीक है। ईश्वर सर्वज्ञ है। आप किसी भी भाषा मे प्रार्थना कीजिये। हिन्दी मे, अग्रेज़ी मे, फ्रासीसी मे, चीनी, मराठी, तमिल, किसी भी भाषा मे प्रार्थना कीजिये। परन्तु फिर यह शिकायत मत कीजियेगा कि क्या प्रार्थना करनी थी, यह तो मुझे मालूम ही नही था। क्या कहने से ईश्वर रीझता, यह मुझे मालूम नही था। प्रार्थना अधूरी, अधकचरी रहने का पछतावा मत कीजियेगा। हर प्रार्थना का उद्देश्य प्रभु को रिझाना, मनाना ही होता है।

प्रार्थना किसी भाषा मे करे, परन्तु उसका अनुवाद प्रार्थना, यज्ञ आदि के समय न करे। बुरा लगता है, चुभता है। यह ऐसा ही है कि आप किसी बच्चे को कहे 'बेटा, पडित जी को नमस्ते करो।' यह अशिष्टता है। बच्चे को 'नमस्ते' करने की शिक्षा घर पर दीजिये। वह न करके आप उसे हर नये व्यक्ति के पास पहुचने पर 'नमस्ते' करने को कहते है, सुनने वाला खीझता है।

मत्रो के साथ भाषा-गीत नही

यदि सध्या, अग्निहोत्र, यज्ञ आदि वेद मत्रो से हुआ है, तो उसके साथ अन्य भाषा के गीतो को न जोडिये। 'यज्ञ रूप प्रभो' या 'जय जगदीश हरे' आदि को भूल जाइये।

क्यो? ये तो सुनने मे बडे प्यारे लगते है, समझ तो आते है, वेद मत्र तो समझ ही नही आते।

रोना यही है कि वेद मत्र समझ नही आते। वेद मत्रो को समझने के लिए प्रयत्न कितना किया है? कितना ध्यान दिया है?

वेद मत्रो की तुलना मे अन्य सभी भाषा गीत फूहड, बेतुके, अनर्थकारी है। यदि वेद मत्रो का अर्थ पता हो, तो उनकी भाषा, लय और नादसौष्ठव ऐसा है कि उनकी तुलना मे अन्य सभी रचनाए कूडा कचरा जान पडती हैं। इसलिए उचित यह प्रतीत होता है कि जहा वेद मत्रो से प्रार्थना या यज्ञ हो, वहा अन्य कोई घटिया प्रार्थनाए न की जाये।

यह तभी होगा, जब हम गायत्री को ही समूचा वेद न मान कर सम्पूर्ण वेद के पढने पढाने, सुनने सुनाने की ओर ध्यान देगे।

डाक्टर कहता है कि चबा कर भोजन करो। परन्तु चबाने की मेहनत तो हमे ही करनी होगी। इसमे कोई कम मेहनत का छोटा रास्ता नही है। अकेली गायत्री ही नही, वेद का हर मत्र पढने, मनन करने योग्य है। अन्यथा वेद फिर लुप्त हो जायेगा, जैसे कि पहले हो गया था।

वेद पढने पढाने का आशय सम्पूर्ण वेदो को पढने पढाने से है, दस बीस या सौ पचास मत्रो को पढने पढाने से नही। जितना गुड डालेगे, उतना मीठा होगा।

द्वारा डा० वन्दिता अरोडा, इन्द्रप्रस्थ महिला कालेज, दिल्ली-११००५४

शराब का कतरा - जान को ख़तरा

❑ श्री सुभाषचन्द्र गुप्ता

शराब एक मादक वस्तु है। मादक वस्तु उसे कहा जाता है, जो बुद्धि को लुप्त कर देती है। बुद्धि हमे सकटो से बचाती है और उन्नति के उपाय सुझाती है। यह अद्भुत, आश्चर्य की बात है कि आदमी जानबूझ कर अपनी बुद्धि को नष्ट करने के साधन का प्रयोग करता है और अपने विनाश का मार्ग प्रशस्त करता है। कह सकते है कि वह अपनी कब्र स्वय खोदता है।

भारत मे स्वाधीनता प्राप्ति के बाद शराब का सेवन बढा है। दूध शराब से सस्ता है, पर उसे न पी कर लोग शराब पीना चाहते है। मद्य विक्रेताओ के हाथ मे बडी शक्ति है। इसीलिए मद्य निषेध करने वाली सरकारे जल्दी ही गिरा दी जाती है।

श्री फ्रासिस बेकन के अनुसार सम्पूर्ण विश्व के अपराध मिल कर भी मानव जाति को उतनी हानि नहीं पहुचाते, जितना अकेला मद्यपान। शराब से होने वाले भयकर दुष्परिणामो की गणना एक मद्य-विक्रेता ने निम्न उत्तर द्वारा बडे सारगर्भित ढग से प्रस्तुत की। उस मद्य-विक्रेता से जब प्रसिद्ध कवि कालिदास ने शराब के मटको की ओर इशारा करते हुए पूछा कि उनमे क्या है, तब उसने कहा

मद. प्रमाद:, कलहश्च निद्रा बुद्धिक्षयो धर्मविपर्ययश्च।
सुखस्य कथा, नरकस्य पथा, अष्टावनर्था घटके वसन्ति॥

इस मटके मे आठ दोष या अवगुण भरे हुए है— मादकता, सुस्ती, कलह, निद्रा, बुद्धि का नाश, धर्म का पतन, सुख का नाश तथा विपत्तियो का रास्ता।

यह उत्तर जहा शराब न पीने वालो को सचेत कर रहा है, वहा शराब के मतवालो से पूछ रहा है कि वे समाज को सर्वनाश के कगार पर पहुचाने के जघन्य अपराध को करने पर क्यो तुले हुए है?

शराब से होने वाले भावी विनाश को ध्यान मे रखते हुए ही तो १९३० मे महात्मा गाधी ने कहा था "मुझे सम्पूर्ण भारत का यदि एक घटे के लिए तानाशाह नियुक्त किया जाये, तो मै बिना किसी छूट के पहला कार्य शराब की सभी दुकानो को बद कराने का करूगा।"

शराब से होने वाले रोग

दृष्टि दोष, वाणी का लडखडाना, शरीर और मन की शक्तियो मे क्षति, टागे लडखडाना, हृदय रोग, टी० बी०, पीलिया, सास रोग, लिवर की सूजन (हिपेटाइटिस), सिरहोसिस, लकवा, तिल्ली का बढना, पेट मे सूजन, पेट मे फोडा व ज़ख्म हो जाने से कभी कभी खून की उल्टी होकर मौत तक हो जाना, कैसर, पागलपन, विभिन्न गुप्त रोग, क्रूर स्वभाव (पर्शिया के बादशाह ने शराब के नशे मे हज़ारो बेकसूर व असहाय लोगो को मौत के घाट उतार दिया था)।

शराब थोड़ी मात्रा मे भी हानिकारक

पी० जी० आई० चडीगढ के प्रोफेसर डा० पी० ऐल० वाही के कथनानुसार "मात्रा थोडी सी भी क्यो न हो, शराब का पीना प्रत्येक अवस्था मे हानिकारक है। यह एक भ्रान्ति है और सर्वथा झूठ है कि शराब का एक या दो पैग प्रतिदिन लेने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है।"

विभिन्न देशो की शराब से दुर्दशा

अमेरिका

❑ शराब के कारण ९५ प्रतिशत हत्याए एव २४ प्रतिशत आत्महत्याए।

❑ शराब के अत्यधिक सेवन से परिवारो का विघटन।

❑ प्रतिवर्ष साढे चार लाख लोग मद्यपान के कारण रोगी।

❑ इनमे प्रति वर्ष ३ लाख की मृत्यु।

❑ ६५ प्रतिशत सडक दुर्घटनाए शराब के कारण।

❑ आयु का ह्रास— औसत आयु ७० वर्ष, जबकि शराबी की ५१ वर्ष।

फ्रास

❑ हिसा व दुर्घटनाओ मे ९८ मे से ६३ का कारण शराब।

❑ ३९ हत्याओ मे २६ शराबखोरी से।

❑ २७० मौतो मे से १०८ शराब के कारण।

स्विटज़रलैड

❑ प्रतिवर्ष करोडो डालर की शराब पी जाती है।

❑ एक वर्ष मे ५८ प्रतिशत चालको के लाइसेस रद्द, क्योकि वे शराब के नशे मे थे।

पूर्व सोवियत सघ

❑ हत्याओ एव बलात्कारो और दुर्घटनाओ मे ९० प्रतिशत के लिए शराब जिम्मेदार।

❑ शराब के कारण २० प्रतिशत लोग दफ्तरो, कारखानो एव अपनी ड्यूटी से गायब।

इटली

❑ १९४१ से १९६१ के दौरान शराब की खपत दुगुनी होने के कारण रोगो से ग्रस्त होने वालो की सख्या १९४७ की अपेक्षा १९६२ मे तीन गुनी।

जर्मनी

❑ शराब मौत का सबसे बडा कारण।

यूगोस्लाविया

❑ मानसिक चिकित्सालयो मे भर्ती ५० प्रतिशत पुरुषो मे मानसिक बीमारियो का सीधा सम्बन्ध शराब से।

चिली

स्वास्थ्य एव मानसिक उपचार के चिकित्सा बजट का ३० प्रतिशत शराबियो के उपचार पर व्यय।

आस्ट्रेलिया

❑ अधिक मात्रा मे बीयर पीने से लोगो मे कैसर और हृदय रोग।

भारत

❑ प्रतिदिन शराब की खपत ८० लाख गैलन, जिस पर वार्षिक व्यय ८० अरब रुपये (१९७६ की रिपोर्ट), वर्तमान मे अरबो रुपये की शराब की वार्षिक खपत।

मौते — प्रति वर्ष हज़ारो मौते जहरीली/कच्ची शराब से तथा शराब जनित रोगो के कारण।

पारिवारिक कलह, महिलाओ का प्रताडन, अपराधो मे वृद्धि, दुर्घटनाए, बलात्कार।

शराब का सर्वत्र निषेध

सभी धर्मग्रथ शराब का विरोध करते है। प्राय समझा जाता है कि ईसाई मत शराब का खंडन नहीं करता, किन्तु बाइबिल पढ कर देखें, तो आखे खुल जाती है। देखिये—

" शराब पीने वाले को परमात्मा के राज्य मे भाग नहीं मिलेगा।" (न्यू टैस्टामैट ६/१०)

"यह शराब साप के समान डंसती है, बुद्धिहीन बनाती है, बकना और झगडना सिखाती है।" प्रोवर्ब्स २०, २९, ३२।

हमारा कर्तव्य

हमारा कर्तव्य है कि हम स्वय को, अपने परिवार को और सम्पूर्ण समाज को शराब के अभिशाप से मुक्त कराने का प्रयत्न करे, ताकि देश का अरबो रुपया, जो शराब की नदिया बहा कर नष्ट किया जा रहा है, उसके सदुपयोग द्वारा देश को सुदृढ, समृद्ध, सब प्रकार से सम्पन्न और सुखी बनाया जा सके।

१५९, ए.जी.सी.आर. एन्क्लेव,
दिल्ली-९२

आर्यवीर दल

❑ श्री हरि कुमार साहू

बने अखिल मानवता का बल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
दयानन्द का पथ-अनुगामी।
जिसे चाहते ऋषि, मुनि, स्वामी॥
डरते है जिससे खल, कामी।
दूर करे सामाजिक खामी॥
वेदो पर आधारित अविचल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
वीरो को हर्षाने वाला।
शक्ति सुधा बरसाने वाला॥
अनुशासन सिखलाने वाला।
रणकौशल दिखलाने वाला॥
पीडित, दलित जनो का सम्बल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
युवको, तरुणो को दे शक्ति।
देता नशा व्यसन से मुक्ति॥
सिखलाता है प्रभु से भक्ति।
भोगो के प्रति भरे विरक्ति॥
हमे जगाए रखता अविरल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
आर्य देवव्रत है सचालक।
हर्षित तरुण, युवा अरु बालक॥
अतिशय आनदित है पालक।
दृष्टि, लक्ष्य पर सबकी अपलक॥
प्रीति सभी मे, तनिक नहीं छल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
सविनय तन, मन, धन सब अर्पित।
आर्य वीर दल हेतु समर्पित॥
आर्य वीर बन हो हम गर्वित।
भारत प्यारा रखे अखडित॥
मचे विश्व मे इसकी हलचल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
दयानन्द के हम दीवाने।
रुकना, झुकना तनिक न जाने॥
छुआछूत को कभी न माने।
गाते हम बलिदानी गाने॥
न्यौछावर, जीवन का पल पल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
आर्यो की गाथा दुहराए।
सदाचार का पथ दिखलाए॥
ब्रह्मचर्य का पाठ पढाए।
देशप्रेम के भाव जगाए॥
हमे सगठित करता अविकल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
मानवता की सेवा करता।
दुखियों की पीड़ा को हरता॥
भूत प्रेत से कभी न डरता।
वैदिक भव्य भावना भरता॥
मानस जिसका कोमल, निर्मल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥
बने अखिल मानवता का बल।
आर्य वीर दल, आर्य वीर दल॥

आर्य समाज, गोंडपारा, बिलासपुर
(म०प्र०)

भारत के शंकराचार्य चाहें तो

□ आचार्य करणसिह आर्य

भारत एक विशाल देश है, जिसकी सस्कृति बहुत पुरानी है। भारत को हिन्दुओ का देश कहा जाता है, परन्तु हिन्दुओ का अपना देश होते हुए भी हिन्दू अपने आप मे अत्यन्त कुठित रहता है, जिसका परिणाम वह लम्बे समय से भुगत रहा है। हिन्दू इतना ढीला है कि वह स्वय अन्याय से लडने का साहस बहुत देर से जुटा पाता है। हिन्दुओ मे धार्मिक पाखड का बडा बोलबाला है, इसलिए हिन्दू निरन्तर पिछडता जा रहा है। हिन्दुओ के देश मे आज अनेक सगठन काम कर रहे है, लेकिन जिस रूप मे कार्य करना चाहिए, वे उस उस रूप मे नही कर पा रहे है।

ऋषि दयानन्द की देन

हिन्दुओ को सकुचित विचारधारा और पाखंडो से निकालने का एक प्रयास किया महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने। स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के जगाने पर भी यह हिन्दू ठीक प्रकार से नहीं जाग पाया। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द सरस्वती ने मानव जीवन के धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सभी तथ्यो पर गम्भीरता से विचार किया और उसे क्रिया रूप भी दिया। इसके साथ ही सस्कृति की रक्षा के लिए सस्कृत पाठशाला और गुरुकुल खोल कर प्रचार कार्य को बढाया, जिससे शिक्षित और प्रभावित हो कर अनेक आर्य वीरो ने दृढ सकल्पी होकर हिन्दू जाति और राष्ट्र रक्षा के लिए अपने प्राणो की आहुति दे दी।

हिन्दू हितों की रक्षा

इस प्रकार कार्य करते हुए हिन्दुओ के रक्षक आर्यसमाज ने जात-पात, छुआछूत, छोटा-बडा इन सभी बीमारियो का इलाज भी किया, फिर भी हिन्दू मुसलमान और ईसाई क्यो बन रहे है? क्या इस्लाम और ईसाई मत वैदिक धर्म या सनातन धर्म से श्रेष्ठ हैं? इसका कारण श्रेष्ठ होना या न होना नहीं है। बल्कि बीमारी जैसी थी वैसा इलाज ही नही किया गया। उसके परिणामस्वरूप ईसाई और मुसलमानो की सख्या निरन्तर बढ रही है। आर० ऐस० ऐस०, विश्व हिन्दू परिषद् और शिव सेना ये सभी सगठन अपने को हिन्दुओ का रक्षक मानते हैं। परन्तु क्या वास्तव मे ये सगठन हिन्दुओ को सही सरक्षण दे पा रहे है? विचारणीय प्रश्न है। और आर० ऐस० ऐस० के राजनीतिक सगठन भाजपा का नारा भी यही है कि हम हिन्दू हितो की रक्षा करेंगे और इस देश को हिन्दू राष्ट्र बनायेंगे। क्या यह राष्ट्र हिन्दू राष्ट्र बन पायेगा?

संकीर्णताओं को हटाये

जो भी कार्य हम यहा करेगे वह सविधान की धाराओ का पालन करते हुए ही करना होगा। जो रचनात्मक कार्य आर० ऐस० ऐस० या बी जे पी को करने चाहिए थे, उन्हे वे नही कर पा रहे है। विज्ञान के इस युग मे इन्हे चाहिए था कि हम हिन्दुओ को सभी सकीर्णताओ और पाखडो से दूर करे, जिससे हिन्दू समाज का हित हो सके। वे सभी हीन भावनाए और सकीर्णताए हिन्दुओ के मन मे घर बना रही है, जिनके कारण वे अपमानित हो कर ईसाई या मुसलमान होने पर मजबूर हो जाते है। अगर हम किसी भूखे व्यक्ति को यह कहे कि वह धर्म के कार्य करे और धार्मिक बने तथा अपने को हिन्दू मानता रहे, तो क्या वह धर्म के कार्य कर पायेगा? नहीं, क्योकि भूखे का धर्म केवल रोटी पाना है। और रोटी कपडा भी वह सम्मानपूर्वक पाना चाहता है।

छुआछूत का अभिशाप

आज भी दलितो को समाज मे और विशेष रूप से हिन्दुओ मे वह सम्मान नही मिल पा रहा है, जो मिलना चाहिए। आर्य समाज भी जातिवादी व्यवस्था से पूर्ण मुक्ति नही पा सका, इस कारण से भी हिन्दू सकीर्णता एव रूढियो से ऊपर नही उठ सका है। इतनी शिक्षा होते हुए भी सनातन धर्म अर्थात् पौराणिक समाज मे आज भी स्त्री को शूद्र ही समझा जाता है। शकराचार्य तो स्त्री को यज्ञोपवीत पहनने का भी अधिकार नही देते है, जबकि वेद के अनुसार वह स्त्री का जन्मसिद्ध अधिकार है। वर्तमान मे पौराणिक समाज हरिजन, गिरिजन, चमार, भगी आदि को शूद्र मानते है। परन्तु शूद्र कौन है? क्या आज भी ये शकराचार्य मनुस्मृति का यह श्लोक नही पढ और समझ पाये जिसमे कहा गया है **"जन्मना जायते शूद्रः सस्काराद् द्विज उच्यते।"** जन्म से सब शूद्र होते है और सस्कार से ही सब महान बनते है।

इस प्रकार चमार, भगी आदि को शूद्र समझने और कहने से हिन्दू समाज को क्या हानि हुई, इसका इतिहास साक्षी है। जब भी कभी ऐसा अवसर आया, जिसमे शूद्रो या ईसाई, मुसलमानो को अपनाने की बात की गई हो, तो ऐसे अबसरो पर पौराणिको ने इस राष्ट्र निर्माण के पुनीत कार्य मे कोई योगदान नहीं दिया। प० कालीचरण, जो काला पहाड के नाम से जाना जाता है, जगह जगह अपमान होने पर और कहीं शरण न मिलने पर मुसलमान बना और सारे पूर्वी बंगाल के हिन्दुओ को मुसलमान बना डाला, जो आज बगलादेश के नाम से जाना जाता है। इसके बाद जो मुसलमान या ईसाई पहले बने थे, वे आज भी अपने प्राचीन वैदिक धर्म मे आना चाहते हैं, परन्तु हम हिन्दू लोग ही उन्हें अपनाने को तैयार नहीं हैं।

शुद्ध हुए हिन्दुओं के लिए अलग मन्दिर?

लगभग ८-९ मास पहले जब उडीसा मे ३०० ईसाइयो को शुद्ध किया जा रहा था, तब जगन्नाथपुरी के शकराचार्य 'आज तक' टी वी चैनल पर पत्रकारो को बता रहे थे कि इन शुद्ध किये गये ईसाइयो को अर्थात् हिन्दुओ को जगन्नाथ मन्दिर मे प्रवेश नही करने देगे, क्योकि ये अछूत है। इनके लिए अलग से मन्दिर निर्माण कराया जायेगा। इस अवसर पर आर्य नेता स्वामी अग्निवेश जी ने कहा हम इन्हे वर्ण के आधार पर व्यवस्था देगे और मन्दिर मे पूजा करने, यज्ञ सत्सग मे बैठने के लिए समान अधिकार रहेगा, कोई भेदभाव नही होगा।

सब हिन्दू समान है

अब ऐसे समय मे जब देश पर सकट के बादल मडरा रहे है, सभी हिन्दू सगठनो को हिन्दू जनता का हित सोचते हुए सभी सकीर्णताओ को छोड इनसे ऊपर उठ कर कार्य करने चाहिए। हम यह घोषणा करे कि जो मुसलमान या ईसाई पुन हिन्दू या वैदिक धर्म को स्वीकार करेगा, उसे हम हर प्रकार की सुविधा देगे। जो गरीब वर्ग के लोग है, उनमे जा कर सेवा कार्य करे। वस्त्र, भोजन, आवास, चिकित्सा, शिक्षा आदि का मुफ्त प्रबन्ध करायें। यदि शकराचार्य चाहे, तो वह आर्य समाज के साथ मिल कर यह कार्य करने मे सक्षम है। क्योकि आज भी पौराणिक लोग जैसे शकराचार्य जी कहते है, वैसे ही करते है। आर० ऐस० ऐस० और विश्व हिन्दू परिषद् के शीर्षस्थ नेता भी शकराचार्यो की बात को ही महत्व देते है। क्योकि व्यक्ति को यदि सम्मान नही मिलेगा और सुविधाए भी नही, तो वह अपमानित जीवन जी कर कब तक हिन्दू बना रहेगा? अत वह निराश हो कर ईसाई या मुसलमानो की शरण मे जाता है और सुविधा तथा सम्मान का जीवन जी लेता है।

जिस हिन्दू जाति की रक्षा के लिए स्वामी दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी और प० लेखराम जैसे महान जातिरक्षको के बलिदान हुए, उन्हे हमे भूलना नही चाहिए और आने वाले अवसरो को हाथ से नही जाने देना चाहिए। हिन्दू समाज की स्थिति ठीक वैसी ही है, जैसे एक बुढिया बडी तेजी से दौडी चली जा रही थी। उस बुढिया से एक पथिक ने पूछा 'माता जी, इतनी तेज क्यो दौड रही हो?' उत्तर मे बुढिया ने कहा - "भैया, मुझे पीछे कुछ चोरो ने लूट लिया है। इसलिए मै तेजी से भाग रही हू।" उत्तर सुन कर पथिक ने कहा "माता जी, अब लुट गई सो लुट गई। अब भाग कर सास चढाने से क्या लाभ?" यही स्थिति ठीक हिन्दू समाज की बनी है। अवसर निकल जाने पर चिल्लाते है परन्तु फिर चिल्लाने से क्या लाभ? आज यदि भारत के शकराचार्य मन से चाहे तो भारत मे ही नही बल्कि ससार मे मुस्लिम एव ईसाइकरण रुक सकता है।

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, सै० ५६,
नोएडा (उ० प्र०)

मा फलेषु कदाचन

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के घर एक सज्जन मिलने के लिए आये। उनके स्वागत सत्कार हेतु रविबाबू ने फल और मिठाई रखी। वार्तालाप करते हुए वह सज्जन मिठाई खाते रहे और फलो की ओर देखा भी नहीं।

यह देख कर रवि बाबू मुस्कराते हुए बोले "जहा तक मैने समझा है, आपने 'भगवद्गीता' को न केवल पूर्णरूपेण पढा ही है, अपितु जीवन मे चरितार्थ भी किया है।"

वह सज्जन रवि बाबू के कथन पर आश्चर्यचकित थे। कहने लगे "आपको कैसे पता चला कि मैने गीता पूर्णरूपेण पढी है?"

विश्व कवि मन्द मुस्कान के साथ बोले "श्रीमन्, गीता मे भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था 'मा फलेषु कदाचन' अर्थात् फल की कामना मत कर। तभी तो आपने भी फलो को हाथ नहीं लगाया।"

यह सुन कर वह सज्जन भी अपनी हसी को न रोक सके।

प० वेदप्रकाश शास्त्री, ४-ई, कैलाश नगर, फाजिल्का, पजाब

धर्म का मर्म

यह सारा ससार है उस प्रभु का परिवार।
सबसे रखना चाहिए, प्रेमपूर्ण व्यवहार।
यही ईश्वरोपासना, यही धर्म का मर्म।
एक दूसरे के लिए करे यहा हम कर्म।

— श्री मैथिलीशरण गुप्त

मारिशस में अन्तरराष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

२२ नवम्बर से २५ नवम्बर २००१

यज्ञ स्थल : आर्य भवन, १ महर्षि दयानन्द मार्ग, पोर्ट लुई

समय : २२ नवम्बर २००१, ३ से ५ बजे तक अपराह्ण।

सम्मेलन स्थल : इन्दिरा गाधी भारतीय सास्कृतिक केन्द्र, फिनिक्स

२३ और २४ नवम्बर २००१, समय ९ से ३ बजे तक।

आर्य परिवार सम्मेलन : बेलमार समुद्र तट पर, २५ नवम्बर, २००१ को ९ बजे से १२ बजे तक।

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

२३, २४ नवम्बर २००१

स्थान : इन्दिरा गाधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र फिनिक्स

इस वर्ष मार्च २३ से २४, २००१ तक मुम्बई महानगर मे अ राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हुआ। उससे सम्बन्धित सम्मेलन के रूप मे मारिशस आर्य महिला मण्डल (आर्य सभा मारिशस की महिला शाखा) के सहयोग से एक द्वि दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन कर रहा है।

मारिशस मे यह महिला सम्मेलन २३ और २४ नवम्बर, २००१ को इन्दिरा गाधी भारतीय सास्कृतिक केन्द्र फिनिक्स मे प्रात ९ बजे से मध्याह्न ३ बजे तक होगा।

इस सम्मेलन का उद्देश्य यह है कि हम सामाजिक कार्यों और हमारे वैदिक मूल्यो और सस्कृति के सरक्षण और सपोषण के क्षेत्र मे नयी पीढी की युवतियो को अधिक से अधिक सम्मिलित होने की प्रेरणा देने के सम्बन्ध मे विशेष उपाय खोज निकाले।

सम्मेलन का मुख्य विषय : "नारी सृजन की आधारशिला"

सम्मेलन के विषय :

१ राष्ट्र निर्माण और समाज मे महिलाओ का योगदान।

२ वेदो मे महिलाओकी स्थिति।

३ मा की गोद— मनुष्यता की पहली कक्षा।

४ महिलाओ की जागृति मे आर्य समाज का योगदान।

५ नयी सहस्राब्दी मे महिलाओ की भूमिका।

इस सम्मेलन मे मारिशस के विद्वानो के साथ-साथ भाग लेने के लिए विदेशो से भी प्रतिष्ठित विद्वानो को आमन्त्रित किया गया है।

आर्य समाज/आर्य महिला मण्डल के कार्यकर्ता एव नेता तथा सामाजिक कार्यकर्ता और अनुसधानकर्ता विद्वान् इस सम्मेलन के मुख्य श्रोता होगे।

आपसे निवेदन है कि अपनी सस्था/समाज के प्रतिनिधियो को सम्मेलन मे भाग लेने के लिए भेजे।

कृपया ध्यान दे, आपका प्रतिनिधि :

(क) एक निष्ठावान और मुख्य व्यक्ति होना चाहिए, जिसमे समर्पण की भावना और श्रद्धा हो।

(ख) अग्रेजी और हिन्दी मे धाराप्रवाह बोल सके।

(ग) महिलाओ केसम्बन्ध मे उनके उत्थान और सम्बन्धित क्रियाकलापो का ज्ञान हो और वह चर्चाओ मे भाग लेने का सामर्थ्य रखता हो।

(घ) अपने विचार सम्प्रेषित करने की उत्तम कुशलता हो और प्रभावशाली रूप मे अन्तर व्यवहार (Interact) का सामर्थ्य रखता हो।

(च) सम्मेलन के अन्त मे उससे आशा की जाती है कि अपनी समाज या सस्था मे वापिस जा कर भावी प्रचारक के रूप मे इन कार्यक्रमो को प्रभावी कर सके।

कृपया अपने फार्म समुचित रूप मे भरकर निम्नलिखित पते पर भिजवा दे ताकि १५ अक्टूबर २००१ तक हमे मिल जाएँ।

Dr. O. N. Gangoo
Secretary, arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand Street
Port Louis, Mauritius

(पृष्ठ ३ का शेष)

अन्न के भंडार भरे ......

अभावग्रस्त लोगो तक पहुच ही नहीं सकते थे, जिन्हे वह सामग्री दी जानी चाहिए थी।

उडीसा की भुखमरी भगवान की क्रूर दृष्टि के फलस्वरूप नहीं है, मनुष्यो की लोभवृत्ति का परिणाम है। धनी निर्धन के खून की आखिरी बूद तक चूस लेना चाहता है। भगवान की दी हुई फसल को भूखे के मुह तक नहीं पहुचने देना चाहता। गरीब अशिक्षित आदिवासियो के राशन कार्ड साहूकारो के पास जमा है। उनका चावल लेकर वे उसे बाज़ार मे महगे दाम पर बेच कर मालामाल हो रहे है। जब तक यह राक्षसी वृत्ति रहेगी, भुखमरी रहेगी।

गरीब और अमीर के बीच खाई

भारत की गणना ससार के गरीब देशो मे है। यहा गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले लोगो की सख्या ३७ प्रतिशत है, जो सारे ससार मे सबसे अधिक है। इसका अर्थ यह है कि गरीब और अमीर के बीच जितनी बडी खाई भारत मे है, उतनी पूरे भूमडल मे कहीं नहीं है। यह राक्षसी वृत्ति का परिणाम है।

हमारी सस्कृति माता, पिता, गुरु और पडौसी के सत्कार की ही नहीं, अज्ञात अपरिचित अतिथि के सत्कार की भी थी। बलिवैश्वदेव के रूप मे पक्षियो, कुत्तो, चींटियो तक को भोजन देने की बात हमारे खून मे रमाई जाती थी। आज पथ निरपेक्ष, सर्वधर्म समभावी सस्कृति ने हमे कहा पहुचा दिया है! पडौसी भूखा हो, तो अन्न हमारे गले उतरता कैसे है?

और जनता के प्रतिनिधि सासद अपने वेतन, भत्ते तथा अन्य सुविधाए बढाते समय अपने मतदाताओ की भुखमरी के प्रति असवेदनशील कैसे रह लेते है?

(पृष्ठ १ का शेष)

रोग का स्थायी ......

चुनाव करवाने के लिए प्रातीय सभाओ के चुनावो की प्रक्रियाओ की जाच की जाये तथा यह भी देखा जाये कि क्या प्रातीय सभाओ ने उनकी नियमावली के अनुसार समाजो के प्रतिनिधि लिये है और प्रान्तीय सभा से सम्बन्धित समाजे क्या नियमित रूप से चल रही है और नियमित रूप से प्रातीय सभाओ को दशाश दे रही है। इन सब पर विचार करने पर सही तौर से सार्वदेशिक के लिए सही प्रतिनिधियो का चयन हो सकेगा, अन्यथा जो गडबड पिछले पच्चीस सालो से चल रही है, वही होगा। हम निर्वाचन अधिकारियो को ध्यान दिलाना चाहते है कि वे थोडी सी तकलीफ उठा कर बोगस सभाओ को समाप्त कर सही तौर पर काम कर रही सभाओ से प्रतिनिधियो को ले। विशेष कर हमारा निवेदन है कि वे आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार प्रान्तों पर ध्यान दे। तमिलनाडु मे तो सार्वदेशिक सभा की नियमावली के अनुसार प्रान्तीय सभा बन ही नहीं सकती, चूकि वहा आवश्यक सख्या मे समाजे है ही नहीं।

यह माग बिल्कुल उचित जान पड़ती है।

बिहार के किन्हीं बुद्धदेवसिह ने 'बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अन्यायपूर्ण पक्षपाती भूमिका' शीर्षक से १६ पृष्ठ की एक पुस्तिका छपवा कर वितरित की है, जिसमें विस्तार से अनियमितताओ का उल्लेख किया गया है। पुस्तिका मे दी गई बातें सही है या गलत, इस विषय में जाना हमे अभीष्ट नहीं है। हो सकता है, वे सब गलत हो, या कुछ सही, कुछ गलत हो। यह हमारे घर का मामला है। इसे घर मे बैठ कर आपस मे सुलझाना चाहिए। आर्य समाज के ही दो गुट है, कोई शत्रु नहीं है। यदि उनमे सन्तोषजनक समझौता नहीं हो सकता, तो उसे समाज कहना बेकार है।

सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो ने यदि किसी कारण पक्षपात बरता हो तो वह भी भर्त्सना योग्य है।

यह ईश्वरीय कृपा ही समझनी चाहिए कि न्यायालय से मामला फिर हमारे घरेलू न्यायालय मे आ गया है। घर मे कोई किसी से छल कपट करे, यह बहुत बुरी बात है। न्यायालय मे फैसला कानून की लकीर के अनुसार होता है, वह किसी को पसन्द हो या न हो। हमारे अपने घरेलू न्यायालय मे फैसला न्याय के साथ साथ प्रेमभाव से होना चाहिए।

यदि चुनाव मे दस बीस दिन का और भी विलम्ब हो जाये, तो कोई हानि नहीं, परन्तु चुनाव यह जाच कर ही होने चाहिए कि सार्वदेशिक मे जो प्रतिनिधि आ रहे है, वे ठीक ढग से चुने गये है या नहीं।

किसी व्यक्ति या गुट के पक्ष विपक्ष मे प्रचार या कन्वैसिग को निरुत्साहित किया जाना चाहिए। यह कोई राजनीतिक चुनाव नहीं है, यह सामाजिक चुनाव है। जो लोग चुनाव जीतने के लिए बहुत मारामारी, दौड़धूप करे, उन्हे चुनाव के अयोग्य समझा जाये।

प्रतिनिधिगण राज्यवार गुटबन्द हो कर मतदान न करें, अपितु हर प्रतिनिधि अपनी इच्छा के अनुसार जिसे ठीक समझे, उसे वोट दे। वही चुनाव सही चुनाव होगा।

घर मे गुटबन्दी शोभनीय नहीं।

डा० योगेश्वर देव, १३७, विराट नगर, पानीपत (हरियाणा)

समाचार जगत्

स्वतंत्रता दिवस समारोह

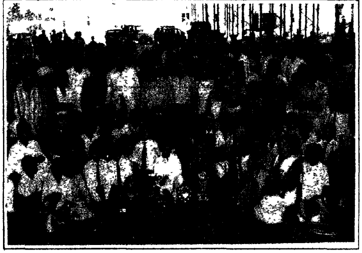

स्वतत्रता दिवस के उपलक्ष्य मे चिल्ड्रन मैमोरियल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल मण्डी डबवाली के स्टाफ व बच्चे जीते हुए इनामों के साथ। साथ मे खडे है उपमण्डल अधिकारी, जिला पुलिस अधीक्षक व अन्य गणमान्य व्यक्ति।

इस वर्ष भी स्वतत्रता दिवस उपमण्डल प्रशासन द्वारा बडी धूमधाम से मनाया गया। परेड, पी० टी० डम्बल व सास्कृतिक कार्यक्रम आदि स्थानीय स्कूलो द्वारा प्रस्तुत किये गये। चि० मै० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, मंडी डबवाली के लगभग २५० छात्रो ने इस कार्यक्रम की अनेक गतिविधियो मे भाग लिया। इस वर्ष सास्कृतिक कार्यक्रम मे विजेता ट्राफी और चल वैजयन्ती (ट्राफी) दाव पर लग गई थी, जिन पर चि० मै० डी० ए० वी० स्कूल केछात्रो ने मनमोहक सगीत नाटिका 'सिसकती सीमाए' प्रस्तुत करके अपना आधिपत्य जमा लिया।

आगरा शिखर वार्ता को दर्शाती, अखण्ड भारत की तस्वीर दिखाती, पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ को प्रेम की भाषा सीखने की सलाह देती और पाकिस्तान को अपनी घटिया करतूतो पर अकुश लगाने के लिए चेतावनी देती, इस नाटिका की उपस्थित जनसमूह ने भूरि-भूरि प्रशसा की। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम का शुभारम्भ एव समापन चि० मै० डी० ए० वी० स्कूल के क्रमश राष्ट्रीय गीत व राष्ट्रीय गान के द्वारा किया गया।

परेड मे चि० मै० डी० ए० वी० ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम के अन्त मे पुरस्कार वितरण समारोह डबवाली के उपमण्डलाधीश विवेक पद्मसिह के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। स्कूल बैड टीम की व अधिकतम गतिविधियो मे भाग लेने के लिए स्कूल की विशेष सराहना की गई।

वार्षिकउत्सव एव अथर्ववेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज पीपाडशहर का वार्षिक उत्सव एव अथर्ववेद पारायण यज्ञ दिनाक १५ ८ २००१ से २१ ८ २००१ तक श्री भरतलाल जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। प० भूपेन्द्रसिह जी भजनोपदेशक एव श्री लेखराज जी ने मधुर भजनो से लोगो को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

वार्षिक उत्सव का ध्वजारोहण श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा किया गया। इस अवसर पर जोधपुर, पाली, सुमेरपुर, शिवगज, मेडता, बालोतरा, बूदी, कोसाना, भावी एवं बिलाडा आदि से आर्यजन पधारे थे।

भव्य यज्ञशाला का निर्माण कराया गया, जिसमें सभी उपस्थित जनसमुदाय के बैठने की व्यवस्था थी। यजमानो को यज्ञोपवीत धारण करवाये गये। श्री शंकरलाल आर्य परिहार, श्री चम्पालाल आर्य, श्री शिवरत्न आर्य एव श्री भवरलाल भूतडा ने अथक प्रयास मे आर्य समाज के इतिहास मे चारो वेदो के पारायण यज्ञो को सम्पन्न करवा कर एक नया अध्याय जोड दिया। पूर्व प्रधान श्री जवाहरलाल जाडिया ने डेढ माह पूर्व अथर्ववेद यज्ञ का प्रारम्भ कर दिया था, जिसे इस एक सप्ताह के कार्यक्रम मे पूर्णाहुति के साथ पूरा किया गया।

आजमगढ़ में वेद कथा

आर्य समाज आजमगढ द्वारा ४ अगस्त से १३ अगस्त तक श्रावणी पर्व एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर वेद कथा का आयोजन स्थानीय डी० ए० वी० इटर कालेज स्थित वेद मन्दिर यज्ञशाला मे बडे ही हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्रावणी पर्व पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें राष्ट्र रक्षार्थ सीमा पर तैनात उन शहीद सैनिको के प्रति श्रद्धाजलि आहुतियां दी गईं, जो रणभूमि में हताहत हुए है। ५ अगस्त को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती के आह्वान पर "संकल्प दिवस" मनाया गया, जिसमे मिटो रोड पर स्थित आर्य समाज मन्दिर के उसी स्थान पर पुनर्निर्माण कराने का सकल्प उपस्थित सभी आर्यजनो द्वारा किया गया।

वेद कथा मे हरदोई से पधारे ७८ वर्षीय स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती भजनोपदेशक के धार्मिक, राष्ट्र एव वेद रक्षार्थ अपने प्राणो की आहुति दे चुके स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, वीर हकीकत राय, शिवाजी, महाराणा प्रताप, झासी की रानी, भगतसिह, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव आदि से सम्बन्धित प्रेरणाप्रद उपदेशात्मक गीतो से जहा धर्मनिष्ठ श्रद्धालु नर-नारिया भाव विभोर हुए, वही वाराणसी मे पधारे श्री शिवकुमारसिह गौतम एव अमेठी से पधारे प० दीनानाथ के उपदेशो से भी उन्होने पूरा लाभ उठाया। शास्त्री जी ने श्रीकृष्ण के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालने के उपरान्त स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी के जीवन पर भी सक्षिप्त किन्तु सारगर्भित प्रकाश डालते हुए कहा कि आज ही के दिन स्वामी जी का भी जन्म हुआ था।

सामवेद पारायण यज्ञ एव वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मठपारा दुर्ग का वार्षिकोत्सव दिनाक २४ से २६ अगस्त तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इससे पूर्व ४ अगस्त २००१ से प्रतिदिन अनेक परिवारो मे सध्या ५ से ७ बजे तक यज्ञ एव वैदिक सत्सग का आयोजन किया गया, जिनमे अनेक महिलाओ एव पुरुषो ने परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद वाणी का श्रवण कर धर्म लाभ अर्जित किया।

तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव के भव्य समारोह मे प्रात ८ से १० बजे तक यज्ञ तथा १० से ११ बजे तक और सध्या ६ से ९ बजे तक विद्वानो के प्रवचन हुए। २६ अगस्त को सामवेद पारायण यज्ञ की ११ बजे पूर्ण आहुति हुई और उसके उपरान्त विद्वानो के भजन एव प्रवचन हुए। अन्त मे ऋषि लगर मे बडी सख्या मे लोगो ने सम्मिलित हो कर प्रसाद ग्रहण किया।

उत्सव मे अन्य प्रान्तो से आये वैदिक विद्वान् सम्मिलित हुए, जिनमे आचार्य अमृतलाल शर्मा, ब्र० कुजदेव, प० वेदपाल शास्त्री, आचार्य जगदेव नैष्ठिक, प० हरिश्चन्द विद्यावाचस्पति तथा प० सत्यवीर शास्त्री एव श्री रमेशचन्द श्रीवास्तव आदि प्रमुख थे।

श्री सोमनाथ मरवाह के लिए प्रार्थना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री सोमनाथ जी मरवाह के निधन का समाचार जानकर आर्य युवक समाज शोक सागर मे डूब गया। श्री सोमनाथ जी द्वारा की गई सेवाओ को आर्य जगत् कभी भूल नही सकेगा। उनके निधन से आर्य समाज की जो क्षति हुई है वह अपूरणीय है।

आर्य युवक समाज ने शोक सभा करके दो मिनट का मौन रखते हुए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह बाबू जी की आत्मा को सद्गति और शान्ति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दारुण दु ख को सहने का सामर्थ्य प्रदान करे।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज आजमगढ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकर्ता प्रधान एव कर्मठ समाजसेवी एव वरिष्ठ अधिवक्ता सोमनाथ मरवाह जी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे तथा परिवार को दारुण दु ख सहन करने की शक्ति व धैर्य दे।

'ढर्रे स हट कर' विजय पर सगोष्ठी

३१ ७ २००१ को हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर मे फैकल्टी इम्प्रूवमैट प्रोग्राम के तत्वावधान मे श्रीमती सुदेश एहलावत, डायरेक्टर प्रोजेक्ट प्लैनिग इन सर्विसिज के निर्देशन मे (Getting out of line) 'ढर्रे से हटकर" विषय पर 'ओरियेंटेशन प्रोग्राम कम वर्कशाप' का आयोजन किया गया, जिसमे महाविद्यालय की लगभग ४० प्राध्यापिकाओ ने भाग लिया। इस अवसर पर शिक्षा जगत् की सक्रिय सुधारक श्रीमती सुदेश एहलावत ने बडे रोचक और प्रभावशाली ढग से अपने विचारो को प्रकट करते हुए आज के वैज्ञानिक युग मे शिक्षा की रूढ प्रणालियो से हट कर समय की माग के अनुसार नवीन शिक्षा पद्धति अपनाने पर बल दिया। साथ ही विद्यार्थियो की सक्रिय सहभागिता पर विशेष ध्यान आकर्षित करते हुए शिक्षको को आधुनिक युग का ऋषि बनने की प्रेरणा एव सदृष्टि प्रदान की।

श्री रामेश्वरप्रसाद जायसवाल का निधन

मुजफ्फरपुर मे हुई एक सभा मे आर्य उप प्रतिनिधि सभा, राची के उपप्रधान श्री रामेश्वर प्रसाद जायसवाल के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया।

रामेश्वर प्रसाद जायसवाल आर्य समाज की सतत सेवा मे रत रहे। हाल मे उन्होने हजारीबाग तथा बडकागाव हजारीबाग मे दो बार प्रान्तीय सम्मेलन आयोजित किये तथा रामेश्वर आर्य वैदिक संस्थान, हजारीबाग के वह सस्थापक एव सचालक रहे।

36583. पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय
हरिद्वार-249404, उत्तरांचल

ज़िला योग चैम्पियनशिप प्रतियोगिता

जिला योग चैम्पियनशिप के पुरस्कार वितरण समारोह में श्री हरवंशलाल कपूर को स्मृति चिह्न भेंट करते श्री दलबीर डाण्ढा। साथ मे सघ के चेयरमैन डा० धर्मदेव विद्यार्थी तथा सचिव श्री महेन्द्र जिला योग कोच।

२६ अगस्त २००१ को जिला योग सघ भिवानी के तत्वावधान मे जिला योग चैम्पियनशिप का आयोजन किया गया, जिसमे जिला भर से २७ दलो के १८० छात्रो, लोगो ने भाग लिया। समारोह का उद्घाटन प्रसिद्ध समाजसेवी अशोक गर्ग ने किया तथा अध्यक्षता सघ के प्रधान डा० धर्मदेव विद्यार्थी ने की। पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सहमंत्री श्री हरवश लाल कपूर थे तथा अध्यक्षता श्री दलबीर डाण्ढा ने की।

इस अवसर पर डा० धर्मदेव विद्यार्थी ने सघ की गतिविधियो का परिचय देते हुए कहा कि जिला योग सघ भिवानी अखिल भारतीय स्तर पर योग फेडरेशन आफ इडिया से जुडा है तथा खेल विभाग से सम्बन्धित है। इसके साथ यह सघ केन्द्रीय आर्य समाज भिवानी का भी सदस्य है। प्रत्येक वर्ष प्रत्येक वर्ग के युवक राज्य स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त करते है।

श्री हरवश लाल कपूर ने बताया कि योग भारत की प्राचीन विद्या है तथा आर्य समाज इसे बढावा देने के कार्य करता रहता है। हमे महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। समारोह के अध्यक्ष श्री दलबीर डाण्ढा ने योग के महत्व पर प्रकाश डाला व विजेताओ को बधाई दी। श्री हरवशलाल कपूर ने सभी विजेता खिलाडियो को पुरस्कार दिये और योग को बढावा देने के लिए प्रादेशिक सभा की ओर से हरसभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। प० रामरख आर्य के भजन हुए।

इस अवसर पर आर्य समाज रोहतक के प्रधान श्री नन्दलाल, आर्य समाज भिवानी के प्रधान श्री अमृत आर्य व महत राजनाथ योगी तथा जिला के अनेक खेल प्रशिक्षक उपस्थित थे। समारोह का सयोजन श्री महेन्द्रसिह ने किया।

आधुनिक गुरुकुल — एक नया प्रयोग

विगत पखवाडे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर मे "आधुनिक गुरुकुल" का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति के उपप्रधान जस्टिस आर० ऐन० मित्तल थे तथा मुख्य अतिथि थे राजस्थान सरकार के शिक्षा मत्री डा० सी० पी० जोशी। उन्होंने अपने वक्तव्य मे इस अनूठे प्रयोग को आगामी इतिहास मे मील का पत्थर बताया और कहा कि आज की शिक्षा मे आचरणपरक नैतिक मूल्यो के समावेश की आवश्यकता है। इसके बिना शिक्षा, शिक्षा नही मात्र साक्षरता है।

जस्टिस मित्तल ने कहा कि यद्यपि डी० ए० वी० सस्थाओ मे नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम का अग है, किन्तु आचरण पाठ्यक्रम मात्र से सम्भव नहीं है। इसके लिए उन्होने राजस्थान संस्थाओं के निदेशक एव विद्यालय के प्राचार्य ऐम० ऐल० गोयल को साधुवाद देते हुए कहा कि उन्होने आधुनिक गुरुकुल की परिकल्पना से नैतिक मूल्यों के आचरण की सभावना को प्रबल बना दिया है।

गुरुकुल के स्वरूप का खुलासा करते हुए श्री ऐम० ऐल० गोयल ने कहा कि गुरुकुल के छात्र यद्यपि विद्यालय मे नियत पाठ्यक्रम ही मुख्यत पढेंगे, किन्तु उनकी दिनचर्या प्राचीन गुरुकुलीय परम्परा के अनुसार होगी।

इस समय गुरुकुल मे डूंगरपुर क्षेत्र के सूखाग्रस्त क्षेत्रों के १० विद्याथा प्रा॰१५ हैं, जो कि राजस्थान सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये हैं। इन छात्रो का आवास, भोजन एवं शिक्षा सम्बन्धी समस्त व्यय विद्यालय द्वारा एव जनसहयोग से किया जायेगा। गुरुकुल का शुभारम्भ पूर्ण वैदिक परम्परानुसार उपनयन संस्कार द्वारा किया गया।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, संस्कृत विभाग के प्रवक्ता डा० सुरेन्द्रकुमार ने भौतिक और आध्यात्मिक दोनो ही विद्याओ के अध्यापन मे शिक्षा की सार्थकता बताई। यजुर्वेद के

विद्या चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

इस मन्त्र का उद्धरण देते हुए डा० सुरेन्द्र ने कहा कि भौतिक विद्या (अविद्या) के द्वारा मृत्यु को जीत कर विद्या (आध्यात्मिक ज्ञान) द्वारा मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। ये दोनो एक दूसरे के र्हीं। वर्तमान स्कूलो के वातावरण में यह सर्वथा असम्भव है। अत आधुनिक गुरुकुल की स्थापना इस दिशा मे अत्यन्त सकारात्मक कदम है।

मुख्य अतिथि जस्टिस वी० पी० बेरी ने वर्तमान जीवन में उदारता का मूल्य बताते हुए कहा कि गुरुकुलीय परिवेश मे छात्र सहपाठियों के सुख-दुःख में सहायक बनकर उदारता सीख सकता है। जस्टिस ऐस० ऐन० भार्गव ने कहा कि आज के सस्कारहीन वातावरण में आवासीय शिक्षा प्रणाली द्वारा ही छात्रो में सस्कारो का आधान किया जा सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि वेद, सस्कृत एव सस्कृति की परम्परा को जीवन्त बनाये रखने के लिए इस तरह की परिकल्पना अब आवश्यक हो गई है।

जयपुर महानगर की सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी एव सदस्यो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

आर्य समाज उपदेशक के घर पर हमला. दो गम्भीर

मुस्लिम धर्म को छोड कर अपने परिवार व बच्चो के साथ हिन्दू धर्म ग्रहण करने के पश्चात् आर्य समाज के उपदेशक बने एक व्यक्ति के घर पर मगलवार की रात कुछ युवको ने हमला कर घर के सदस्यो को घायल कर दिया। घायलो मे दो की हालत चिन्ताजनक होने के कारण उन्हे पी जी आई चडीगढ भेजा गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार जिले के शादीपुर गाव की रायपुर कालोनी मे रहने वाले ज्ञानेश्वर भारती कुछ वर्ष पहले अपनी पत्नी व बच्चो के साथ मुस्लिम धर्म को छोड कर हिन्दू धर्म मे आ गए थे। परिवार सहित हिन्दू धर्म ग्रहण करने के पश्चात् ज्ञानेश्वर भारती आर्य समाज के उपदेशक बन गए। मगलवार को भी वे एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए [illegible] हुए थे। घटना में घायल हुई ज्ञानेश्वर की पत्नी नीलम भारती ने बताया कि उनके पडोस मे रहने वाले कुछ युवक रात मे लगभग साढे आठ बजे उनके घर के बाहर खडे थे। जब उसने उनसे वहां खडे होने का कारण पूछा तो वे चुपचाप वहा से चले गए। कुछ समय पश्चात् वही लोग १०-१५ के झुड मे फिर से वहा आ कर खडे हो गए तथा उन्हे गालिया देने लगे। जब नीलम ने उन्हे रोकना चाहा तो उन्होने घर के भीतर घुस कर उनसे मारपीट शुरू कर दी। तलवारो, गंडासो व कुल्हाडी से लैस इरशाद, फिरोज, अहसान, सोनू, मोनू व उनके साथियो ने उन पर ताबड़तोड हमले कर उन्हें घायल कर दिया। सूचना देने के लगभग आधे घटे पश्चात् पुलिस के दो आदमी वहा पहुंचे। घटना मे नीलम भारती व उसके दो पुत्र सुमेश्वर भारती व दयाशकर घायल हो गए। घायलो मे सुमेश्वर व नीलम की हालत गम्भीर होने के कारण डाक्टरी ने उन्हें पी जी आई चडीगढ भेज दिया। थाना सदन यमुनानगर पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

स० सोभासिंह स्मारक कला प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी

३०-३१ जुलाई, २००१ को हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर की अमृता शेरगिल ललित कला समिति की ओर से स० सोभा सिंह स्मारक कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमे प्रतियोगियों ने स० सोभासिंह की कलाकृतियो की अनुकृतियों का चित्रण किया। इन अनुकृतियों की १, २, ३ अगस्त को विद्यालय में प्रदर्शनी लगाई गई। विजेता प्रतिभागियो को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार दिए गए। इस अवसर पर श्रीमती सुदेश एहलावत, डायरेक्टर, प्रोजेक्ट प्लैनिंग इन सर्विस, डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति, दिल्ली ने कार्यरत प्रतियोगियो का निरीक्षण किया तथा छात्राओ की कला क्षमता की भूरि-भूरि प्रशसा की।

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रबोध महाजन, सभा मत्री द्वारा राकेश भार्गव के प्रबन्ध में मयक प्रिन्टर्स 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 मे प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक—उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
संस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये
विदेशों में ३० पौंड या ५० डालर
इस अंक का मूल्य—२.०० रुपये
वर्ष ६६, अक ३१
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष · ३३६३७१८
३३६२१११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, ३० सितम्बर, २००१
आश्विन शु०-१३-वि० स०-२०५८
सप्ताह ३० सितम्बर से ६ अक्टूबर

नये विश्व युद्ध के घुमड़ते बादल

११ सितम्बर मंगलवार को न्यूयार्क के विश्व व्यापार केन्द्र में खड़ी दो ११० मंजिली इमारतों में से (जिन्हे मीनारें कहा जाता है), एक से एक विशाल जैट विमान आ टकराया। विमान की जोरदार टक्कर से न केवल एक मीनार की ऊपरली मंजिलें ढह गईं, अपितु इमारत में भीषण आग भी लग गई। जब उस आग को बुझाने और दुर्घटना को संभालने के लिए आग बुझाने वाले तथा पुलिसकर्मी बडी संख्या में वहां पहुचे और बचावकार्य मे लगे, तभी एक और जैट विमान उड़ता हुआ आया और दूसरी मीनार से जा टकराया, जिससे वह भी ढह गई और ढहते ढहते पहली मीनार को और गिरा गई। जन धन का भारी विनाश हुआ। प्रारम्भिक खबरो में १० हजार लोगो के मारे जाने की आशका प्रकट की गई थी। आर्थिक हानि अरबों डालरो मे हुई है।

उसी दिन दो अन्य विमान अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन मे अमेरिकी सेना के मुख्यालय से जा टकराये और उनसे भी काफी नुकसान हुआ।

ये चारों विमान दुर्घटनावश इन इमारतों से नहीं जा टकराये थे। ये चारों अमेरिकी विमान थे, जिनका इस्लामी जिहादियों ने अपहरण कर लिया था; विमान चालकों को जबरदस्ती हटा कर अपहरणकर्ता स्वयं विमान चालक बन कर बैठ गये थे। वे भली भांति प्रशिक्षित थे, न केवल विमान चालन में, अपितु विमानों के अपहरण में भी। वे आत्मघाती जिहादी थे, जिन्होंने यह जानते हुए विमानों को इमारतों से टकराया कि उसके बाद वे कदापि जीवित न बचेंगे।

ऐसे आत्मघाती जिहादी मानवता के लिए भेड़ियों और विषैले सांपों से भी अधिक खतरनाक हैं। पिछले बीस वर्ष से ये नरदानव कश्मीर में सोते हुए लोगों पर गोलियां चला कर औरतों, बच्चों, तीर्थ यात्रियों, सैनिकों और सरकारी कर्मचारियों की हत्या करते रहे हैं। भारत कहता रहा है कि इन लोगों को, इनके प्रेरक पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करो और उसके विरुद्ध कार्रवाई करो। परन्तु अमेरिका ने इस गुहार को अनसुना कर दिया। भारत में ५० हजार से अधिक लोग जिहादियो की आतकवादी हिंसा का शिकार हो चुके है। भारत सरकार शान्ति, अहिसा, समझौता, इकतरफा युद्ध विराम, सर्वधर्म समभाव, मानव अधिकार जैसे उच्चतम आदर्शों के हार पहन कर ससार में यश कमा रही है। अपने देश की जनता के जान माल की रक्षा करना भी उसका कर्तव्य है, यह वह भूल चुकी है।

अमेरिका की दो मीनारें ढहने से अमेरिका की नाक कट गई। सोवियत रूस के विघटन के बाद अमेरिका अकेला ही विश्व की महाशक्ति रह गया है। उसके अपने देश मे घुस कर अज्ञात, अप्रसिद्ध जिहादियों ने उसके ही विमानों का अपहरण करके इतना बड़ा नुकसान कर दिया। अमेरिका की रक्षा सेनाएं, गुप्तचर व्यवस्था सब धरी रह गई। यदि यह सब विनाश किसी महाशक्ति ने, किसी बड़े राष्ट्र ने घोषणापूर्वक किया होता, तो अमेरिका अपने शस्त्रास्त्रो से उसकी धज्जिया उडा देता। परन्तु यहा तो शत्रु ने जादू की टोपी पहनी हुई है, जिसके कारण वह दिखाई नहीं पडता। हवा मे कोई किधर लट्ठ चलाये।

पर अमेरिका को तो कुछ करना है। वह भारत की तरह केवल गालिया दे कर चुप नहीं बैठ सकता। जिस गाली के तुरन्त बाद थप्पड, लात या डडा न पडना हो, वह हिजडों की गाली की तरह नि सार होती है। अमेरिका ने तय किया कि यह दुष्कर्म अफगानिस्तान में छिपे आतकवादी ओसामा बिन लादेन ने किया है। इसलिए अफगानिस्तान की घेराबन्दी करके ओसामा को पकड़ा जाना चाहिए और उस पर मुकदमा चला कर उसे सजा देनी चाहिए।

अफगानिस्तान मे तालिबान गुट का शासन है। तालिबान वे लोग है, जिन्हे अमेरिका से प्राप्त धन और शस्त्रों द्वारा प्रशिक्षित और सुसज्जित किया गया है। वे पाकिस्तानी अफसरो के नेतृत्व मे युद्ध लडते रहे हैं और उन्होने ९० प्रतिशत अफगानिस्तान पर अधिकार कर लिया है। जब रूसी सेनाए अफगानिस्तान मे थीं, तब उन्हे हराने के लिए अमेरिका ने अफगानिस्तानी मुजाहिदो को सगठित किया था। उनकी नकेल भी पाकिस्तान के हाथ मे थी, क्योकि सारी अमेरिकी सहायता पाकिस्तान की मार्फत ही जाती थी। पाकिस्तान अमेरिका का विश्वस्त गुर्गा था।

अमेरिका को मालूम है कि अफगानिस्तान पर पाकिस्तान का प्रभाव है। अत अब उसने पाकिस्तान से माग की कि वह आतकवाद के दमन मे अमेरिका का साथ दे।

कश्मीर पर कब्जा करने के लिए पाकिस्तान ने अपनी जनता मे, तथा अन्य इस्लामी देशो मे धार्मिक उन्माद खूब जगाया, इस्लाम के नाम पर लोगो से मर मिटने के लिए कहा गया, इस्लाम के नाम पर जिहादी बाजारो से चन्दा इकट्ठा करते रहे। चतुर लोगो के लिए जिहाद अच्छा धन्धा बन गया।

अब जब अमेरिका ने अफगानिस्तान के विरुद्ध युद्ध मे पाकिस्तान से सहायता मागी, तो पाकिस्तान धर्म सकट मे फस गया। यह ऐसा ही था, जैसे बेटे का वध करने मे बाप से सहायता मागी जाये। पर चतुर पाकिस्तान इसके लिए राज़ी हो गया।

भारत की स्थिति विचित्र है। कश्मीर मे जो आतकवादी हिसा चल रही है, उसमे पाकिस्तान और अफगानिस्तान का खुला हाथ है। कोई आश्चर्य नही कि अमेरिका की भी शह हो। अमेरिका कश्मीर विवाद मे मध्यस्थ बनना चाहता है। भारत ऐसा नहीं होने देना चाहता। अमेरिका अफगानिस्तान के विरुद्ध कार्रवाई करे, यह हमारे हित मे है, ऐसा समझ कर भारत सरकार ने अमेरिका को सहायता देना स्वीकार कर लिया है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

उठो राष्ट्र प्रहरियो

☐ आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

समस्त दिशाए विक्षिप्त है।
स्थितिया बडी विचित्र है॥

सुलग रहा विहान है, धरा लहुलुहान है।
मृत्यु दीर्घजीवी पर, जीवन आयु सक्षिप्त है॥

स्वप्न ध्वस्त हो गए, सौभाग्य अस्त हो गए।
षड्यन्त्रों के जगलो मे, हवा तक सलिप्त है॥

देवत्व वनवासी हुए, दुरित अधिवासी हुए।
सुसकल्प गरल पीकर, चिरनिद्रा मे तृप्त है॥

उठो राष्ट्र प्रहरियो, ग्रामीणो व शहरियो।
गली गली आवाज दो, यहा डगर डगर सुप्त है॥

आर्यत्व ओज गुजार दो, गाडीव को टंकार दो।
चहुंमुखी शत्रु नाश का, यही समय उपयुक्त है॥

आसुओ को उल्लास दो, अन्धेरो को उजास दो।
आंख दो-अरे आंख दो, एक राष्ट्रभाव लुप्त है॥

समस्त दिशाए विक्षिप्त है।
स्थितिया बडी विचित्र है॥

८१/एस-४, सुन्दर नगर-१७४४०२ (हि० प्र०)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

वेद-सुधा

काल सबका स्वामी है

काले तपः काले ज्येष्ठ काले ब्रह्म समाहितम् ।

कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः॥ *अ० ११५३८*

अर्थ— (**काले**) काल मे, उचित काल मे (**तपः**) तप, (**काले**) काल मे (**ज्येष्ठं**) ज्येष्ठत्व और (**काले**) काल मे ही (**ब्रह्म**) ज्ञान (**समाहित**) रखा हुआ है। (**ह**) निश्चय से (**कालः**) काल (**सर्वस्य**) सब का (**ईश्वरः**) ईश्वर है (**य**) जो कि (**प्रजापतेः**) सब प्रजा के उत्पादक हिरण्यगर्भ का भी (**पिता**) उत्पादक (**आसीत्**) होता है।

मनन— हर एक वस्तु अपने काल में ही होती है। जिस कार्य का, जिस बात का उचित काल नहीं आया है उसके लिये यत्न करना, उसकी आशा करना निरर्थक होता है, मूर्खतापूर्ण होता है। अत. हमे अपना हरेक कार्य उचित काल में ही करना चाहिए। हमें तप करना हो, ज्येष्ठत्व पाना हो या ज्ञान प्राप्त करना हो। चाहे कुछ करना हो यह सब हमे कालानुसार ही करना चाहिये। देखो, परमेश्वर भी अपना सब कुछ नियत काल में करते है, वे समयपालन मे भी परम है, परिपूर्ण है। वे इस जगत् की उत्पत्ति के लिये अपना ज्ञानमय तप बिल्कुल नियत काल में करते हैं।, ज्येष्ठ हिरण्यगर्भ को नियत काल पर प्रादुर्भूत करते हैं और ब्रह्म (वेद) का प्रकाश भी सदा नियत काल आने पर करते है। कालरूप में ही ये भगवान् प्रजापति के भी पिता है। यह सब संसार बेशक सूर्यप्रजापति या हिरण्यगर्भ प्रजापति से उत्पन्न हुआ है, किन्तु वे प्रजापति भी तो काल आने पर ही उत्पन्न हो सकते हैं। अत उनके भी जनक ये काल परमेश्वर हैं। और केवल सृष्टि की यह उत्पत्ति ही नहीं, किन्तु सृष्टि का प्रतिक्षण सचालन भी काल द्वारा ही हो रहा है। इस संसार का एक तिनका भी बिना काल आये नहीं हिल सकता। सचमुच काल ही सबका ईश्वर है। भूत का, भवत् का, भविष्यत् का। सब ब्रह्माण्ड, इस ब्रह्माण्ड की सब अनगिनत वस्तुएं, काल में ही यथास्थान रखी हुई हैं। काल का अतिक्रमण कोई नहीं कर सकता। अत आओ, हम भी उस कालदेव की उपासना करें। हम देखें कि आज से उसके प्रतिकूल हमारा कभी कोई आचरण न होने पाये, और हमारा एक एक कर्म, एक एक चेष्टा उस कालदेव की अनुमति पाकर ही हुआ करे।

षड्दर्शन समन्वय और उनका त्रैतवादी चिन्तन

☐ आचार्य सत्येन्द्र प्रकाश 'सत्यम्'

उपनिषदो मे ज्ञान की जिस प्रक्रिया का प्रारम्भ हुआ था, उसको दर्शनो मे एक दूसरे स्तर पर रखा है। औपनिषदिक साहित्य मे हमें गम्भीर ज्ञान मिलता है जिसे ऋषियो ने समाधि अवस्था मे प्राप्त किया था। इन ग्रथो मे तर्क का आश्रय नहीं लिया गया, वरन् जैसी ऋषियों की अनुभूति हुई, वैसा ही उन्होने कहीं काव्य और कहीं अर्थ काव्य मे व्यक्त कर दिया।

उपनिषदो के इसी ज्ञान को वैदिक दर्शनो मे वर्णित किया गया है। दर्शनकार ऋषि वैदिक तत्वज्ञान को तर्क का सुदृढ आधार देना चाहते थे। इस प्रकार का प्रयास यो तो सभी दर्शनो मे दिखाई पडता है, परन्तु अधिक सुस्पष्ट व सीधे रूप मे साख्य मे है।

दर्शन छह है

न्याय, वैशेषिक, साख्य, योग, पूर्व मीमासा व उत्तर मीमासा। उत्तर मीमासा को ही ब्रह्मसूत्र तथा वेदान्त दर्शन भी कहते है।

न्यायशास्त्र के रचयिता महर्षि गौतम, वैशेषिक के महर्षि कणाद, साख्य के महर्षि कपिल, योगदर्शन के महर्षि पतजलि, पूर्व मीमासा के महर्षि जैमिनि तथा ब्रह्मसूत्र के रचयिता महर्षि बादरायण है। ये सभी दर्शन आस्तिक दर्शन कहलाते है तथा जो वेद की निन्दा करते है, वे नास्तिक है।

सूत्र रूप मे लेखन

उपर्युक्त छह दर्शन वेदो को स्वत प्रमाण मानते है। अत ये आस्तिक है तथा सभी सूत्र रूप मे लिखे गए है। सूत्र का तात्पर्य ऐसे अल्पाक्षर वाक्यों से है, जिनमे विषय सार रूप मे, परन्तु स्पष्ट तौर पर बताया जाता है। "**अल्पाक्षरमसन्दिग्ध सारवद्विश्वतोमुखम्। अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्र सूत्रविदो विदुः॥** दर्शन सूत्र रूप मे क्यो लिखे गए है? प्राचीन काल मे छापेखाने के अभाव मे ग्रन्थो को कण्ठस्थ करने की प्रथा थी। स्मृति को सरल बनाने तथा सुरक्षित रखने के लिए सूत्र पद्धति को अधिक उपयुक्त समझा गया।

इससे हानि

शास्त्रो को सूत्र रूप मे लिखने की प्रथा ने काफी हानि की है। प्रथम तो इससे इन ग्रथो के वास्तविक अर्थ अत्यन्त गूढ हो गए है, जिससे इन्हे समझने में काफी कठिनाई होती है। दूसरे सूत्रो मे पूर्वपक्ष व सिद्धान्त पक्ष का भेद नहीं किया गया है। इससे इनके सूत्रो मे पूर्वापर सदर्भ बनाना कठिन हो जाता है। सूत्र पद्धति की इन्हीं कठिनाइयो के कारण विभिन्न भाष्यकार एक ही ग्रथ में वर्णित सूत्रो के अलग अलग अर्थ करते है। कोई किसी सूत्र को पूर्वपक्ष का बताता है, तो दूसरा भाष्यकार उसे सिद्धान्त पक्ष का बताता है। षड्दर्शनो की इसी दुर्बोधता के कारण अनेक प्रसिद्ध पश्चिमी विचारको का यह विचार बना कि छहो दर्शनो मे आपस मे विरोध है। यथा— वैशेषिक के परमाणुवाद व असत्कार्यवाद का सांख्य के गुणवाद व सत्कार्यवाद से विरोध है। साख्य नास्तिक दर्शन है, मीमासा केवल कर्मशास्त्र है, तथा वेदान्त मायारूपी ग्रथ, इत्यादि इत्यादि।

यह विचारधारा मध्य युग से चली आ रही है। शकराचार्य ने दर्शनो मे विरोध की इस भावना को वेदान्त दर्शन पर किये गये अपने भाष्य मे विशद् रूप मे लिखा है, जो बाद मे व्यापक रूप मे भारत तथा भारत से बाहर प्रचलित हुई।

परस्पर विरोध

दर्शनो में विरोध के सिद्धान्त को रामानुजाचार्य भी मानते है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह विचार रामानुजाचार्य ने शकराचार्य से ही लिया है। क्योकि जिन सूत्रो मे शकराचार्य दर्शनो मे विरोध का प्रतिपादन जिस रूप मे करते हैं, ठीक उसी रूप मे उन्ही सूत्रो मे रामानुजाचार्य भी करते है। परन्तु इस प्रकार की विरोधी भावना से यह प्रतीत होता है कि उत्तरवर्ती आचार्यो ने या तो प्राचीन ऋषियो के मन्तव्य को ठीक प्रकार से समझा नहीं, अथवा अपने पूर्वाग्रहों के कारण, अपने जिद्दी स्वभाव से प्राचीन ऋषियो के सूत्रो की मनमानी व्याख्या कर डाली, जिससे इन दर्शनो मे परस्पर विरोधी भावना प्रतीत होने लगी।

दयानन्द जी का दृष्टिकोण

उन्नीसवी शताब्दी मे स्वामी दयानन्द ने वैदिक दर्शनों को एक ऐसे आधार पर रखा, जो सदियों से आई परम्परागत विचारधारा के विरुद्ध था। दयानन्द की दृढ मान्यता है कि षड्दर्शनो में आपस में विरोध नहीं है, बल्कि इनमे से प्रत्येक सत्य के भिन्न भिन्न पहलुओ की व्याख्या करता है। स्वामी जी की इस विचारधारा का आधार यह है कि प्रथम छहो दर्शन वेद को स्वत प्रमाण मानते है, अत ये वेद की केन्द्रीय विचारधारा के विपरीत नही जा सकते। दूसरे इनके रचयिता ऋषिगण है, जिनका दृष्टिकोण निर्भ्रान्त व स्पष्ट होता है। ऋषि उसी को कहा जाता है जिसने अपने विषय का हस्तामलकवत साक्षात् किया हो और बिना किसी पक्षपात की भावना के सत्य का प्रतिपादन किया हो। स्वामी दयानन्द के अनुसार "दर्शनशास्त्र, जो कि वेदो के उपांग कहे जाते है, ऐसे ही ऋषियो के बनाये हुए है। यह उल्लेख उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ६६ पर किया है।

तीन वाद

भारतीय दार्शनिको की तत्वचिन्तना को तीन भागो में वर्गीकृत किया जा सकता है क्रमश एकत्ववाद, द्वैतवाद और बहुत्ववाद, जिसे हम त्रैतवाद भी कहते है। त्रैतवादी चिन्तन की समीक्षा से पूर्व एकत्ववाद तथा द्वैतवाद को समझना अत्यन्त आवश्यक है।

एकत्ववादी आचार्यों का मत है कि समस्त दृश्यमान एक ही तत्व से विकसित है। एकतत्ववादी विचारकों मे कुछ आचार्य जड़ तत्व से समस्त दृश्यमान का निस्सरण मानते है तो कुछ चेतन से। इसी आधार पर एकत्ववादी आचार्यों के दो वर्ग है। दृश्यमान के मूलत्व को जड़ मानने वाले चार्वाक कहलाते हैं और मूल तत्व को चेतन मानने वाले अद्वैत वेदान्ती।

द्वैतवाद

इसी प्रकार भारतीय दर्शन शास्त्र में द्वैतवाद के सिद्धान्त की तर्कपूर्ण स्थापना का श्रेय सांख्य शास्त्र को प्राप्त है। सांख्य के अनुसार सृष्टि मे अन्तिम सत्ता के रूप में मात्र एक तत्व मानने से, चाहे वह तत्त्व जड़ हो या चेतन, चराचर जगत् की तर्क सगत व्याख्या नहीं की जा सकती। इसकी तर्क संगत व्याख्या के लिए साख्यशास्त्र ने दो अनादि तत्वों का प्रस्ताव किया है, जिन्हे प्रकृति और पुरुष (चेतन) कहा जाता है। प्रकृति स्वरूप जड तत्व है और पुरुष चेतन। द्वैतवाद के इस सिद्धान्त का अन्य ग्रंथो मे भिन्न भिन्न प्रकार और भिन्न-भिन्न नामों से वर्णन प्राप्त होता है।

बृहदारण्यक उपनिषद् के १/८ मे इसे 'क्षर अक्षर विचार' तथा गीता मे '**इद शरीर कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते। एतद्यो वेत्ति त प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः॥** क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विचार कहा है। इसी प्रकार कठोपनिषद् के ३/३,४ में रथ तथा रथी के अलकार के रूप मे वर्णन किया है।

त्रैतवाद

परन्तु भारतीय तत्व चिन्तको का एक तीसरा वर्ग भी है, जो एकत्ववादी तथा द्वैतवादी तर्कों एव युक्तियो से सन्तुष्ट नहीं है। एकत्ववाद तथा द्वैतवाद अनेक ऐसे प्रश्नो का कोई युक्तियुक्त समाधान नहीं करते, जिनके बिना सृष्टि विषयक जिज्ञासा शान्त नहीं होती। इन आचार्यों को अपने प्रश्नो का समाधान त्रितत्ववाद मे ही मिला है। इन आचार्यों ने ईश्वर, जीव और प्रकृति, इन तीनों सत्ताओ को अनादि और अनन्त माना है— दिग्दर्शन के पृष्ठ १३४ तथा पृष्ठ १९९ पर इसका विस्तृत उल्लेख मिलता है। इनमें ईश्वर प्रेरक, नियामक तथा जीवो केकर्मफल का प्रदाता है। जीवात्मा कर्मफल का भोक्ता है और प्रकृति अचेतन भोग्य तत्व है। यजुर्वेद के ३२वें अध्याय के आठवें मंत्र मे इसका व्याख्यान देखा जा सकता है।

अत. छहों दर्शन परस्पर समन्वय स्थापित करते हुए त्रैतवादी विचारधारा के ही समर्थक हैं, क्योंकि वेद और सम्पूर्ण वैदिक साहित्य इसी विचारधारा के प्रबल समर्थक हैं।

१२५ए/१२, कणाद निवास, हंस
ऐन्क्लेव, गुड़गांव (हरियाणा)

धर्म–अधर्म का निर्णय जनता करे या ऋषि?

तमिलनाडु की मुख्यमत्री सुश्री जयललिता का मामला भारत के उच्चतम न्यायालय में विचारार्थ पेश हुआ। इसमे यह प्रश्न उठा कि जनादेश सर्वोपरि है या सविधान? उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया कि जनादेश तभी सर्वोपरि हो सकता है, जब वह सविधान के अनुसार हो। यदि कोई जनादेश सविधान के प्रतिकूल है, या सविधान के किन्हीं प्रावधानों का उल्लघन करता है, तो वह मान्य नहीं है।

पृष्ठभूमि

यह कानूनी भाषा तब तक सुबोध नहीं बनेगी, जब तक इसके पूर्वापर प्रसग को न समझ लिया जाये। मई २००१ मे तमिलनाडु मे विधान सभा के चुनाव हुए थे। इनमे द्रविड मुनेत्रकड़घम और अन्ना द्रविड मुनेत्र कडघम दो प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी राजनीतिक दल थे। इनमे से पहले के सर्वोच्च नेता श्री ऐम० करुणानिधि थे और दूसरे की सर्वोच्च नेता सुश्री जयललिता थीं। द्रमुक का भारतीय जनता पार्टी से गठबधन था और अन्ना द्रमुक का काग्रेस से। द्रमुक चुनाव मे पहले सत्तारूढ था और अन्ना द्रमुक के विधान सभा मे केवल ४ विधायक थे।

द्रमुक के शासन काल मे सुश्री जयललिता पर भ्रष्टाचार के कई मुकदमे चले। उनमे से कई मे वह निर्दोष पाई गई और छूट गई, परन्तु तासी भूमि घोटाला और होटल प्लेजैट स्टे घोटाले मे वह दोषी पाई गई और उन्हे एक मे दो वर्ष के और दूसरे मे तीन वर्ष के कठोर कारावास की सजा हुई।

जब अप्रैल २००१ मे चुनाव हुए, तब अन्ना द्रमुक को विजय की बडी आशा थी। सुश्री जयललिता ने चार विधान सभा क्षेत्रो से नामाकन पत्र भरे। निर्वाचन आयोग का रुख यह था कि अपराधी लोगो को राजनीति मे प्रवेश न करने दिया जाये। अत निर्वाचन अधिकारियो ने चारो स्थानो पर सुश्री जयललिता के नामाकन पत्र इस आधार पर अस्वीकार कर दिये कि उन्हे भ्रष्टाचार के मामले मे सजा हो चुकी है।

अपील का फैसला होने तक अभियुक्त निर्दोष

सुश्री जयललिता के समर्थकों ने कहा कि न्यायालय के उस निर्णय के विरुद्ध अपील कर दी गई है और जब तक अपील का फैसला न हो जाये, तब तक अभियुक्त को निर्दोष माना जाता है। परन्तु निर्वाचन अधिकारियो ने कहा कि जब तक न्यायालय का निर्णय किसी उच्चतर न्यायालय द्वारा निरस्त नहीं हो जाता, तब तक अभियुक्त अपराधी माना जायेगा। सुश्री जयललिता चुनाव नहीं लड सकीं।

जनता का निर्णय

चुनाव हुए। उनमे सुश्री जयललिता की पार्टी अन्ना द्रमुक दो तिहाई बहुमत से जीत गईं। विजय के गर्व से फूले अन्ना द्रमुक के विधायको ने सुश्री जयललिता को ही अपना नेता चुना, यह जानते हुए भी, कि वह भ्रष्टाचार के मामले मे दो सजाए पाये हुए है। सविधान को वे कितना समझते थे और सविधान के प्रति उनके मन मे कितना आदर था!

सविधान मे एक व्यवस्था है, जिसके अनुसार किसी ऐसे व्यक्ति को भी मत्री, यहा तक कि मुख्यमत्री भी बनाया जा सकता है, जो विधान सभा या विधान परिषद् का सदस्य न हो। परन्तु इसके साथ शर्त यह रहती है कि उसे छह महीने के अन्दर विधान सभा का सदस्य बन जाना पडेगा, नही तो वह मत्री या मुख्यमत्री नही रह सकेगा।

राज्यपाल की जल्दबाजी

इसी प्रावधान के अन्तर्गत सुश्री जयललिता तमिलनाडु विधान सभा मे अन्ना द्रमुक विधायक दल की नेता चुनी गई। उसी दिन उन्होने तमिलनाडु की राज्यपाल श्रीमती फातिमा बीवी के सामने मुख्यमत्री बनने का दावा पेश कर दिया। श्रीमती फातिमा बीवी कोई अल्पशिक्षित राज्यपाल नही थी। वह उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश रह चुकी थी। क्या कारण रहे, वही जाने, परन्तु उन्होने चटपट सुश्री जयललिता को मुख्यमत्री पद की शपथ दिला दी। उन्होने क्षण भर के लिए भी यह नही सोचा कि जो व्यक्ति सज़ा प्राप्त होने के कारण चुनाव लडने के अयोग्य ठहराया जा चुका है, उसे मुख्यमत्री कैसे बनाया जा सकता है? उन्होने इस विषय मे अटार्नी जनरल या केन्द्र सरकार से सलाह करने की आवश्यकता ही न समझी।

कुछ अखबारो ने राज्यपाल के इस निर्णय को ठीक बताया, परन्तु अधिकाश ने इसकी भर्त्सना ही की। कई उच्च न्यायालयो और उच्चतम न्यायालय मे भी इस आशय की याचिकाए प्रस्तुत की गई कि सुश्री जयललिता को मुख्यमत्री पद पर कार्य करने से रोका जाये, क्योकि उनकी नियुक्ति अवैध है। उच्चतम न्यायालय ने इन याचिकाओ की सुनवाई के लिए १७ सितम्बर की तारीख डाली।

चेन्नई उच्च न्यायालय

उधर सुश्री जयललिता ने चाहा कि तमिलनाडु के उच्च न्यायालय मे अपनी अपीलो का फैसला जल्दी करवा लिया जाये, जिससे यदि न्यायालय उन्हे दोषमुक्त कर दे, तो वह १३ नवम्बर से पहले ही चुनाव लड कर विधायक बन जायें। १४ नवम्बर को उनकी छह महीने की अवधि समाप्त हो जाती है। यदि तब तक वह विधायक न बन सके, तो वह मुख्यमत्री नहीं रह सकती।

तमिलनाडु सरकार के पूर्व अभियोक्ता श्री वेंकटपति ने उच्चतम न्यायालय मे एक याचिका दी कि चेन्नइ उच्च न्यायालय तासी भूमि घोटाले के मामले मे सुश्री जयललिता की अपीलो की जिस ढग से जल्दबाज़ी मे सुनवाई कर रहा है, उससे यह आशका है कि वहा मामले मे न्याय नही हो सकेगा, इसलिए इस अपील की सुनवाई तमिलनाडु से बाहर किसी अन्य न्यायालय मे करवाई जाये। उच्चतम न्यायालय ने चेन्नइ उच्च न्यायालय मे चल रही सुनवाई पर तत्काल रोक लगा दी। सुश्री जयललिता ने इस रोक के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय मे अपील की। ६ और ७ सितम्बर को हुई सुनवाई के समय सुश्री जयललिता के वकील ने यह कहा कि लोकतत्र मे जनता की इच्छा सर्वोपरि है। तमिलनाडु की जनता ने सुश्री जयललिता की पार्टी अन्ना द्रमुक को भारी बहुमत से जिता कर यह प्रकट कर दिया है कि भ्रष्टाचार मे सजा दिये जाने के बाद भी वह सुश्री जयललिता को ही मुख्यमत्री बनाना चाहती है। इस जनादेश का सम्मान किया जाना चाहिए। सविधान जनता द्वारा बनाया गया है और जनता चाहे तो उसे बदल सकती है। इसलिए जनता ही सर्वोपरि है, सविधान नही। सविधान जनता की कृति है। कृति कर्ता से ऊपर नहीं हो सकती।

सविधान जनता की इच्छा से बना है

तीन न्यायाधीशो की न्यायपीठ ने कहा कि सविधान जनता की इच्छा मे बना है। चुनाव द्वारा प्रकट हुआ कोई भी जनादेश उसी सीमा तक मान्य है, जहा तक वह सविधान के अनुकूल है। सविधान के किसी भी प्रावधान का उल्लघन करने वाला जनादेश अमान्य होगा।

न्यायमूर्तियो ने यह भी कहा कि आज यह केवल दो या तीन साल की सज़ा का मामला है, पर कल यह किसी हत्या का मामला भी हो सकता है। (जिसमे सज़ा मृत्युदड या आजीवन कारावास है।)

जनादेश बनाम सविधान

जनादेश सर्वोपरि है या सविधान (कानून), यह प्रश्न उठाया गया है। स्पष्ट ही है सविधान, जब तक उसे बदला नही जाता, सर्वोपरि होगा, क्योकि वह भी जनादेश ही है। उसे जनता के प्रतिनिधियो ने बनाया है।

जनता के चुने प्रतिनिधियो को अधिकार है कि यदि वे उचित समझे तो सविधान को बदल दे, परन्तु जब तक वह बदला नही जाता, वही मान्य होगा। जब बदल दिया जायेगा, तब वह नया, बदला गया सविधान मान्य होगा।

फिर स्थानीय या राज्यो की विधानसभा के चुनावो मे प्राप्त जनादेश कोई जनादेश नही होता। यह जनादेश समुद्र की लहरो के समान चचल होता है। कभी एक दल भारी बहुमत से जीत जाता है, तो कभी दूसरा दल। प्याज की दुर्लभता जैसे तुच्छ प्रश्न पर सत्तारूढ दल हार जाता है। ऐसे जनादेश पर भरोसा करना सकट को निमन्त्रित करना है।

जनसाधारण न्याय मे सक्षम नही

फिर, जनसाधारण न्याय करने की स्थिति मे नही होते। भावुकता के आवेश मे उचित अनुचित को भूल जाते है और गलत निर्णय दे बैठते है। हाल ही मे कुछ पचायतो की इसलिए कठोर भर्त्सना हुई है कि उन्होने प्रेम विवाह करने वाले पति पत्नियो को फासी की सज़ा दे दी।

इस विषय मे कमाडैट नानावटी वाला काड आखे खोल देने वाला है। कमाडैट नानावटी एक नौ सैनिक अफसर था। प्रेम आहूजा नामक एक धनी व्यक्ति का नानावटी की पत्नी से प्रेम हो गया। नानावटी ने क्रोध के आवेश मे प्रेम आहूजा को गोली मार दी। मुकदमा न्यायालय मे गया। उस समय मुम्बई मे जूरी पद्धति चलती थी। सुनवाई के बाद जूरी ने निर्णय दिया कि नानावटी निर्दोष है। उसे छोड दिया जाय। परन्तु न्यायाधीश ने कहा कि जूरी का निर्णय विकृत है। उसने नानावटी को कई साल की सजा सुनाई।

गोडसे काड

भावुक जनसाधारण कानून की बारीकियो को नही समझ पाते। भावनाओ मे बह कर वे गलत निर्णय दे बैठते है। इसका एक और उदाहरण नाथूराम गोडसे की अपील का है। उस अपील की उच्च न्यायालय मे सुनवाई करने वाले एक न्यायाधीश श्री जी० डी० खोसला ने लिखा है कि यदि उस समय न्यायालय मे विद्यमान दर्शको की भीड को जूरी मान लिया जाता, तो उन्होने गोडसे को भारी बहुमत मे निर्दोष ठहरा कर मुक्त कर दिया होता। गोडसे का अपने बचाव मे दिया गया भाषण इतना प्रभावशाली था कि दर्शक कह रहे थे कि गोडसे निर्दोष है, जबकि हर वकील, यहा तक कि गोडसे भी जानता था कि जो कुछ उसने किया है, उसकी सज़ा मृत्यु है।

इसलिए जनादेश को सविधान से ऊपर मानने का प्रश्न ही नही उठता। क्या धर्म है, क्या अधर्म, क्या उचित है, क्या अनुचित, इसका निर्णय भीड पर नही छोडा जा सकता। इसका निर्णय वेदवित् (विद्वान्, ज्ञानी) ऋषि लोग ही करेंगे, जो धर्म के तत्व को समझते है।

एकोऽपि वेदविद्धर्म य व्यवस्येद् द्विजोत्तम ।
स विज्ञेय. परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽ युतै· ।

एक भी ज्ञानी व्यक्ति जिसे धर्म कहे, उसी को सही धर्म मानना चाहिए। करोडो अज्ञानी मिल कर भी जिसे धर्म कहे, वह धर्म नही है।

तीन धातुएं : वायु, सूर्य और सोम

❑ डा० सुरेन्द्र आयुर्वेदालंकार

'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' इस न्याय के अनुसार हमारा देह भी जड प्रकृति के विकार पच महाभूतो से बना हुआ है। इस देह मे छठा चेतन धातु इन्द्र (जीव) है। ब्रह्माण्ड मे छठा चेतन धातु इन्द्र (ब्रह्म) है।

आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी ये पच महाभूत प्रकृति के विकार है। कार्य कारण के अनुरूप होता है। प्रकृति कारण है, महाभूत कार्य है, अत प्रत्येक पच भौतिक पदार्थ प्रकृति के सत्व, रज, तम गुण वाला होने से त्रिगुणात्मक है। आकाश मे सत्व गुण का बाहुल्य है, वायु मे रजोगुण का, अग्नि मे सत्व और रज का, जल मे सत्व और तम का, पृथिवी मे तमो गुण का।

सत्त्व गुण के लिग प्रकाश प्रीति शान्ति लघुत्व आदि है। रजोगुण के लिग प्रवृत्ति वा क्रिया अप्रीति भय चलत्व आदि है। तमो गुण के लिग स्थिति विषाद मोह गुरुत्व आदि है।

देह मे स्थित पच महाभूतो का तीन मे अन्तर्भाव किया गया है। वह इस प्रकार है। वायु मे आकाश और वायु, सूर्य मे अग्नि और आदित्य, सोम मे सोम और वरुण। वायु सूर्य सोम हमारे देह की रक्षा करते है। (**सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु**। अ० ६ ५३ १) प्रत्येक मे दो-दो देवता स्थित है। (अ० ४ ३९ ४, ५ २४ ८, १९ १९ २) अग्नि और चन्द्र प्राण (वायु) के साथ मिल कर प्राण धारण कराते है (**अग्नि. प्राणान् सन्दधाति चन्द्र. प्राणेन सहित**· अ० ३ ३९ ६)। ये ही वायु अग्नि वरुण हमारे लिए लोक धारण करते है (**अथास्मभ्य वरुणो वायुरग्निर्बृहद् राष्ट्र सवेश्य दधातु** अ० ३ ८ १)। वरुण वह जल है जो वरण करके स्थित हुआ है। (गोपथ ब्राह्मण पू० १ ७ ३)

जैसे सोम जलीयाश से आप्यायन द्वारा, सूर्य सौम्य अश के ग्रहण द्वारा तथा वायु शीत उष्ण वर्षा के प्रेरण द्वारा जगत् को धारण करते है, वैसे ही सोम आप्यायन से, सूर्य सौम्य अश के ग्रहण द्वारा और वायु प्रेरण द्वारा देह धारण करते है। (सु० सू० २१ ८) जगत् मे जो सोम सूर्य वायु हैं वे ही देह मे है।

वायु का स्वरूप

प्राण— वायु के बिना क्षण भर भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता। प्राणिमात्र सर्वत वायु से घिरे रह कर ही पोषण धारण करते है (**आ रुन्धा सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोष दधातु मे** अ० ६ ८९ १२)। वायु के इस रूप को प्राण कहते है (**वायु. प्राणान् दधातु मे** अ० १९ ४३ २, अ० ६ ६२ १)।

अपान— वायु का प्रथम रूप देह मे बल पोषण धारण कराता है, दूसरा रूप देह मे स्थित दोष को परे हटाता है (**आ वात वाहि भेषज वि वात वाहि यद्रपः** (ऋ० १० १३७ ३। **द्वाविमौ वातौ .. दक्ष ते अन्य, आ वातु परान्यो वातु यद्रपः**। ऋ० १० १३७ ३, अ० ४ ९३ ३)। यह दूसरा रूप अपान कहाता है। ये दोनो पाण और अपान पुरुष रूप यजमान के पुरोहित सदृश हित साधक होने से अध्वर्यु कहाते है (**प्राणापाना- वेतावध्वर्यू**। गो० ब्रा० पू० २ १०)। इन दोनो अध्वर्युओ को दैव्यभिषक् (**उत त्या दैव्या भिषक्जा। श नः करतो अश्विना। युयुतामितो रपो अप स्रिधः**। ऋ० ८ १८ ८) वा अश्विनी (**अश्विनावध्वर्यू**० श० ब्रा० १ १ २१ १७) कहते है। ये प्राण अपान जीवन भर शरीर मे सक्रमण करते हुए स्थिर रहते है। इस प्रकार शरीर को न छोड कर (**सक्रामत या जिहीत शरीर प्राणापानौ ते शरीराविह स्ताम्** अ० ७५३ २) मृत्यु से रक्षा करते है, इसलिए देव-भिषक् कहाते है। (**प्रत्यौहतामश्विना मृत्युरस्मद् देवानामग्ने भिषजा शचीभिः**। अ० ७ ५३ १)

वायु का कार्य— वायु का प्रधान कार्य बल पोषण धारण करा के आयु को स्थिर रखना है (**आ वात वातु भेषजं शभु मयोभु नो हृदे प्र ण आयूंषि तारिषत्**। ऋ० १० १३७ १, १० १८६ १)। यह पिता वा सखा तुल्य पालन करता और जीवन धारण कराता है (**उत वात पिताऽसि न उत भ्राताऽसि नः सखा। स नो जीवातवे कृधि**। ऋ० १० १३७ २, १० १८६ २)। इसके देह मे रहने से जीवन रहता है इसलिये यह शरीर मे अमृत की निधि है (**यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः। ततो नो देहि जीवसे** ऋ० १० १३७ २, १० १८६ २)।

वायु सोम सूर्य तीनो मे वायु प्रधान है। यह जगत् अग्निषोमीय है। देह में शोषण और क्लेदन का कार्य करने वाले सूर्य और सोम स्वय पगु हैं, वायु की प्रेरणा से ये जहा वहन किये जाते है वहा मेघ तुल्य उडे चले जाते है। वायु दोनो के कार्य का समतुलन रखता है। वायु विद्युत् सहित मेघो का सर्जन, जलकोश का विसर्जन वा सिचन करके आनन्दिनी औषधियो शस्यों का वर्धन करता है (अ० ४ १५ १६)। कफ वा जल पवित्र करने वाला सोम रूप है। उसका शोषण वा पान करने से वायु शुचिपा (**पिबा शुचिं सोमम्**। ऋ० ८ १०९ १० **शुचिपास्तुभ्य वायो** ऋ० ७ ९० २) वा सोमपा (**सोमपा दानाय शुक्रपूतपाः**। ऋ० ८ ४६ २६) कहाता है।

वायु सभी इन्द्रियो को अपने विषयो मे नियुक्ति करता है (**सर्वेन्द्रियाणामुद्योजकः**। च०सू० १२ १८)। इन्द्रियो मे प्रधान इन्द्रिय मन का यथावत् नियोजन करता है (**वात धूम इव सध्र्यङ् मामन्वेतु मे मनः**। अ० ६ ८९ २)।

सूर्य का स्वरूप — पित्त के रूप मे अग्नि और सूर्य पुरुष मे रहते है। अग्नि सार्वभौम होने से पुरुष मे भी विद्यमान है (**ये अग्नयो अप्स्वन्तर्ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु** अ० ३ २१ १)। अग्नि अन्न-पचन द्वारा देह की रक्षा करता है (**अग्निः पचन् रक्षतु त्वा पुरस्तात्** आ० १२ ३ २५)। यह अन्न को खाकर देह की धातुओ के रूप मे परिणत करता है अतएव अन्नाद वा अन्नपति कहाता है (**अन्नादायान्नपतये रुद्राय नमोऽग्नये** अ० १९ ५५ ५)। इस देह के यज्ञकुण्ड रूप मुख में जो अन्न की हवि दी जाती है उसे होता रूप अग्नि सम्यक् परिपाक कर हवन को सफल बनाता है (**यदन्नमद्भिः बहुधा विरूपम् ... अग्निष्टद् होता सुहुतं कृणोतु**। अ० ६ ७१ १)। प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ मे विद्यमान यह पापिष्ठ मल द्रव्य को बाहर निकाल कर हमे सुख देता है (**तासा पापिष्ठा निरितः प्रहिण्मः शिवा अस्मभ्य जातवेदो नियच्छ**। अ० ८ ३ १)। जिस प्रकार मनुष्यों के इन्द्रियरूप देवों मे चक्षु प्रधान है उसी प्रकार लोक मे देवो मे अग्नि प्रधान है (**अग्ने प्रेहि प्रथमो देवताना चक्षुर्देवानामुत मानुषाणम्**। अ० ५ १४ ५)। यह सूर्य के रूप मे स्थित प्रधान देव पुरुष मे चक्षु धारण कराता है (**चक्षुः सूर्यो दधातु मे** अ० १९ ४३ ३, सु० सू० ५ २७)। देह के वियोग वा पचत्व प्राप्ति के समय चक्षु सूर्य मे चला जाता है (**सूर्य चक्षुर्गच्छतु** ऋ० १० १६ ३)। कर्मेन्द्रियो मे वाग् इन्द्रिय प्रधान है। यह पुरुष मे वाणी धारण कराता है (**अग्निः शरीर वेवेष्ट्वसु वागपि गच्छतु** अ० २ १२ ८, सु० सू० ५ २४)। इसके अतिरिक्त यह पुरुष मे बल (**अग्निर्मे दक्ष दधातु** अ० १६ ४ ७) वर्चर (**पयस्वानग्न आगम त मा ससृज वर्चसा** अ० २ १२ ८, १९ ३७ १, १९ ४५ ६) ओज (**इद वर्चो अग्निना दत्तमागन् भर्गो यशः सह ओजो वयो बलम्** अ० १९ ३७ १, १९ ४५ ६) तेज (**अग्निर्माग्निना प्राणायापानाय वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये** अ० १९ ४५ ६) और मेधा (**अग्निर्मेधा दधातु मे** अ० १९ ४३ १ **मेधयाऽग्ने मेधाविन कृणु**। अ० ६ १०८ ४ च० ३२ १४ **स मे श्रद्धा च मेधां च जातवेदाः प्रयच्छतु** अ० १९ ६४ १) धारण कराता है। आदित्य के रूप मे वर्तमान रहता हुआ यह ऊर्जा (**सा ये आदित्येन वत्सेनेषमूर्ज काम दुहाम्** अ० ४ ३९ ६) देता है।

सोम का स्वरूप और कार्य — कफ पुरुष में जलो का प्रतीक है। ये जल सोम और वरुण के रूप में विराजमान रहकर पुरुष को ऊर्जा देकर आनन्दित रखते है (**यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासु मदन्ति** ऋ० ७ ४९ ४ **ता न ऊर्ज दधातन** ऋ० १० ९ १११, अ० १ ५ १ **ऊर्जमापः** अ० २ २९ ५)। शुक्र तथा वर्चस् धारण कराते है (**अपा शुक्रम् आपो देवी वर्चो अस्मासु धत्त** अ० १० ५ ७-१४)। पुरुषत्व का विशिष्ट गुण वृषता कफ का कार्य है। अक्षर रूप जलो (शुक्र) के क्षरण से ही जीवन चलता है (**ततः क्षरत्यक्षर तद् विश्वमुपजीवति** ऋ० १ १६४ ४२)। जल सब दुरित को बहा देते है (**इदमापः प्र वहत यत्किच दुरित मयि** १० ६८, १० १७ १०)। जैसे माता शिशु को शुद्ध करती है ऐसे शुद्ध करने से (**आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु ... विश्वे हि रिप्र प्रवहन्ति देवी** ऋ० १० १७ १०, अ० ६.५१ २। **अपा पयस्वदित् पयस्तेन मा सह शुन्धत** ऋ० १०. १७ १४, अ० १८.३ ५६) इतना ही नहीं प्रत्युत देह मे प्रकृत रूप से रहते हुए ये शाप, अनृत वचन आदि सब प्रकार के पापों को छुडा देते है (**मुंचन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य पड्वीशाद् विश्वस्माद् देव किल्बिषात्** अ० ६ ९६.२, ७ ११२ २, १४ २ ४५)। शुद्ध जलो के स्नान से भी पापो का शमन होता है (सु० चि० २४ ५८)।

सोम के रूप मे विराजमान रहता हुआ यह उपचय उत्साह वृषता ज्ञान बुद्धि आदि शुभ भावो को धारण कराता है (च० सू० १२ २)। कफ अपने जलीय गुणो से अनुग्रह करता हुआ (सु० सू० २१ १४,१२) पुरुष मे सोम धारण कराता है (**पयः सोमो दधातु मे** अ० १९ ४३ ५)। यह सोम अपने सौम्य गुण से रसनेन्द्रिय को रसज्ञान मे सम्यक् प्रवृत्त कराता हुआ देह की रक्षा करता है (सु० सू० २१ १४)। सोम उत्साह प्रदान कर (च० सू० १२ १२) राजा के समान हमारे कल्याण के लिए सौमनस्य करता है (**सोम राजन्त्सुमनस मा कृणु स्वस्तये** अ० ६ ९९ ३)। सोम अति प्रिय सोमरूप वीर्य देता है (**इद यत्प्रेष्ठ्यः शिरोदत्त सोमेन वृष्ण्यम्** अ० ६ ८९ १, च०सू० १८ ५४, च० सू० १२ १२)। वीर्यशाली बना कर हमे अभय करता है (**अभय सोमः सविता नः कृणोतु** अ० ६ ४० १) तथा पाप से बचाता है (**पातु सोमो नो अहस**· अ० ६ ३ २ सु० चि० २४ ५८)।

वरुण के रूप मे भी कफ असीम वीर्य प्रदान करता है (**वरुण शतवृष्ण्यम्** अ० १ ३ ३)। प्रकृत श्लेष्मा को बल और विकृत को मल कहा जाता है (च० सू० ९७ ११७)। जब यह विकृत होता है तब जलोदर जैसे भयकर दु ख देता है (**आस्ता नाल्म उदर स्रसयित्वा कोश इवाबन्धः परिकृत्ययानः** अ० ४ १६ ७)। प्रकृत अवस्था मे यह अतिशय वीर्य प्रदाता तथा पापो रोगो से मुक्ति प्रदाता है। (**तस्मात्सहस्रवीर्य मुच नः पर्यहसः** अ० १९ ४४ ८, ९)

जल वा वरुण द्वारा पापो से मुक्ति के प्रसग मे यह विवेचनीय है कि पुरुष मे जब ये प्रकृत दशा मे होते हैं तब पुरुष स्वस्थ रहता तथा सत्वगुण युक्त बलवान् क्लेशसह सहिष्णु कृतज्ञ गुरुओ का मान करने वाला, शास्त्रो मे दृढमति (सु० शा० ४ ७२-७५) धनी, विद्वान् तथा ओजस्वी होता है (च० वि० ८ ९६)। इन गुणों के कारण वह पापो से मुक्त होता है। यह अलोलुप होने से इन्द्रजयी भी होता है, जिससे सहज ही उपासना योग वा समाधि द्वारा पाप के बीजरूप दुष्कृत को दग्धबीज सदृश बना देता है। इस प्रकार जल वा कफ पापनाशक है।

सढौरा, अम्बाला–१३३२०४

गांधी जी की नोआखाली धर्मयात्रा

गाधी जी के यशस्वी जीवन मे कई देदीप्यमान प्रसग झिलमिलाते दीख पडते हैं। उनका दाडी मार्च, साम्प्रदायिक निर्णय के विरोध मे २१ दिन का उपवास, ९ अगस्त १९४२ को उनकी 'अग्रेज़ो, भारत छोडो' घोषणा और सन् १९४७ में उनकी नोआखाली यात्रा बडे मार्मिक अध्याय है।

पूर्वी बगाल का ग्रामीण क्षेत्र

नोआखाली पूर्वी बगाल का एक देहाती क्षेत्र है। इस अप्रसिद्ध से क्षेत्र मे कभी गाधी जी को जाना पडेगा, इसकी कभी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। हुआ यह कि जब अग्रेज़ो ने हिन्दुस्तान छोड कर चले जाने का निर्णय किया, तब हिन्दुस्तान के अल्पसख्यक मुसलमानो ने माग की कि हिन्दुओ के साथ उनका वैर विरोध है। बहुसख्यक हिन्दू अल्पसख्यक मुसलमानो को खा ही जायेगे। इसलिए अग्रेज भारत के दो टुकडे करके एक टुकडा (पाकिस्तान) मुसलमानो को दे दे।

अग्रेज ऊपर से कहते थे कि हमने हिन्दुस्तान को एक बनाया है और हम चाहते है कि यह एक ही बना रहे, परन्तु भीतर ही भीतर वे मुसलमानो को उकसाते थे कि वे पाकिस्तान की माग पर दृढ रहे।

काग्रेस और मुस्लिम लीग

मुसलमानो ने अपनी एक अलग सस्था मुस्लिम लीग बनाई थी। अग्रेज़ो ने उसे मुसलमानो की प्रतिनिधि सस्था माना और कहा कि काग्रेस हिन्दुओ की प्रतिनिधि सस्था है। गाधी जी का कहना था कि काग्रेस तो हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सभी भारतीयो का प्रतिनिधित्व करती है। अग्रेज और मुसलमान इस बात को नही मानते थे।

जब १९४६ मे केन्द्रीय विधान सभा के, जो बाद मे सविधान सभा बनी, चुनाव हुए, तब उनमे मुस्लिमो के लिए निर्धारित सभी सीटे मुस्लिम लीग ने जीत ली। इसमे काग्रेस का दावा इतना कमजोर पड गया कि मुस्लिम लीग ने यह हठ ठाना कि वायसराय जो अन्तरिम सरकार बनाना चाहते है, उसमे मुस्लिम मत्रियो का चयन केवल मुस्लिम लीग करेगी। काग्रेस किसी मुस्लिम मत्री का चयन नही करेगी।

निराली गणित

अग्रेज़ो ने किसी विचित्र गणित से यह तय किया कि अन्तरिम सरकार के तेरह मत्रियो मे से पाच काग्रेस के (अर्थात् हिन्दुओ के) प्रतिनिधि होगे, पाच मुस्लिम लीग के और बाकी तीन सिखो, ईसाइयो, ऐग्लो इडियनो के प्रतिनिधि होगे। काग्रेस को यदि केवल हिन्दुओ की सस्था माना जाये, तो भी ३० करोड़ हिन्दुओ और ९ करोड मुसलमानो को बराबर स्थान देना किस प्रकार उचित था? यदि उसे सभी सम्प्रदायो की प्रतिनिधि सस्था माना जाये, तब तो उसके प्रतिनिधियो की सख्या मुस्लिमो से तिगुनी होनी उचित थी। पर उस समय उचित-अनुचित का विचार करने की फुरसत न गाधी जी को थी, न नेहरू जी को।

स्वतत्रता का थाल परोसा हुआ सामने रखा था। अन्तरिम सरकार मे नेहरू जी को प्रधान मत्री का पद मिलना तय हो गया था। अब धीरज रखना कठिन था। काग्रेस ने ५-५-३ का अनुपात स्वीकार कर लिया। पर इस बात पर आग्रह किया कि अपने ५ के कोटे मे से वह चाहेगी, तो दो मुस्लिम मत्री बना सकेगी। मुस्लिम लीग ने विरोध किया कि काग्रेस किसी दशा मे भी किसी मुसलमान को मत्री नहीं बना सकेगी।

लार्ड माउटबेटन को यह मुस्लिम लीग का दुराग्रह प्रतीत हुआ। उन्होने कहा कि काग्रेस अपने कोटे मे से चाहे जिसे मत्री बनाने को स्वतत्र है, जैसे कि मुस्लिम लीग अपने कोटे मे से चाहे जिसे मत्री बना सकती है। मुस्लिम लीग ने इसी आधार पर प्रधान मत्री नेहरू जी की अन्तरिम सरकार मे सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया।

सीधी कार्रवाई दिवस

इसके बाद भी, जब लार्ड माउटबेटन ने अन्तरिम सरकार बना ली, तब मुस्लिम लीग ने अपना रोष प्रकट करने के लिए १६ अगस्त १९४६ को सारे देश मे 'सीधी कार्रवाई दिवस' मनाया। पजाब, सिध और बगाल मे उसकी सरकारे थी। उन सरकारो के समर्थन से सीधी कार्रवाई दिवस मनाया गया। हडताले और प्रदर्शन हुए।

कहा और समझा यह गया था कि यह सीधी कार्रवाई अग्रेजो के विरुद्ध है, जो मुस्लिम लीग की बात नही मान रहे है, परन्तु हुआ यह कि कलकत्ते मे सरकार के सक्रिय सहयोग से हिन्दू विरोधी दगे योजनाबद्ध ढग से किये गये, जिनमे तीन दिन मे ६ हजार हिन्दू और सिख मारे गये। सैकडो दूकाने लूटी और जला दी गई। तीन दिन बाद जब हिन्दुओ और सिखो ने पुलिस और सेना से निराश हो कर अपने बल पर प्रत्याक्रमण किया, तब सेना बुलाई गई।

बिहार मे प्रतिक्रिया

कलकत्ते मे हजारो बिहारी लोग रहते थे। वे दगो के कारण अपने घर चले गये। वहा उन्होने कलकत्ते की सीधी कार्रवाई के जो लोमहर्षक समाचार सुनाये तो वहा के गावो मे हिन्दू मुस्लिम दगे भडक उठे, जिनमे मुसलमानो को जान माल का नुकसान हुआ।

बिहार के उन दगो का बदला मुस्लिम लीग ने पूर्वी बगाल के नोआखाली इलाके मे लिया।

नोआखाली मे नर सहार

इस इलाके मे ८० प्रतिशत मुसलमान और २० प्रतिशत हिन्दू रहते थे। सैनिक अभियान की सी सुनिर्धारित योजना के अनुसार मुसलमान हिन्दुओ पर टूट पडे। उन्होने हिन्दुओ को भागने भी नही दिया। कोशिश यही रही कि पुरुषो को मार दिया जाये, स्त्रियो का अपहरण कर लिया जाये और बच्चो को मुस्लिम अनाथालयो मे भेज दिया जाये। गाव के गाव जला दिये गये। बास और फूस के मकान जल कर ऐसे राख हो गये कि उनका कोई चिह्न ही नहीं बचा। कितने मरे, कितनी स्त्रिया अपहृत हुई, इसके सही आकडे प्राप्त नही हुए। इस क्षेत्र मे हिन्दुओ का समूल नाश सा ही हो गया। सारे देश मे नोआखाली काड का आतक छा गया। लोग बिहार के हिन्दुओ को ही दोषी ठहराने लगे, न उन्होने कलकत्ते की सीधी कार्रवाई का बदला लिया होता, न नोआखाली का भीषण नर सहार होता।

गाधी जी नोआखाली मे दगे शान्त होने के बाद वहा लोगो को सान्त्वना देने के लिए गये। केन्द्र मे नेहरू जी की सरकार थी। बगाल मे श्री फजलुल हक की मुस्लिम लीगी सरकार थी। कलकत्ते की सीधी कार्रवाई और नोआखाली की अत्याचार कथाओ से वह बदनाम हो चुकी थी। सीधी कार्रवाई के प्रमुख आयोजक श्री हसन शहीद सुहरावर्दी अब गाधी जी के भक्त बन गये। उनके सहयोग से नोआखाली मे गाधी जी की निर्विघ्न शान्ति यात्रा की व्यवस्था हो गई।

इसमे सन्देह नही कि नोआखाली के सत्रस्त, लुटे पिटे हिन्दुओ को सान्त्वना देने के लिए गाधी जी की यह यात्रा बहुत उपयोगी थी। कितना ही सहार करने पर भी सब हिन्दू मरे नही थे। जो बचे थे, उनको सहारा चाहिए था।

गाधी जी को मृत्यु का भय नही था

गाधी जी को अपनी मृत्यु का भय नही था। ७७ वर्ष पूरे कर चुकने के बाद वह यमराज का स्वागत करने को तैयार रहते थे। इतना ही नही, बार बार अनशन करके स्वय उसके दरवाजे को खटखटा आते थे। उग्र, उत्तेजित, धर्मान्ध मुसलमानो के क्षेत्र मे गाधी जी का निःशस्त्र अकेले यात्रा करना ही बडे साहस का काम था। कोई भी निष्ठावान मुसलमान गाजी बनने के लोभ मे उन्हे ठिकाने लगा दे सकता था। परन्तु गाधी जी ने अपने जोखिम को और बढाया। उनकी एक रिश्ते की पोती थी मनु। उसकी आयु १९ साल थी। उसे गाधी जी और उनकी पत्नी कस्तूरबा ने पुत्री की तरह पाला था। कस्तूरबा की मृत्यु जब आगा खा महल मे नजरबन्दी की दशा मे हुई थी, तब मनु उनके पास थी।

पोती मनु

इस समय गाधी जी ने मनु को २३-१०-४६ को पत्र लिखा कि एक दो दिन मे मै बगाल जाऊगा। इससे पहले तुम यहा आ गई होती, तो मुझे अच्छा लगता। परन्तु अब तुम्हे जैसा ठीक लगे, वैसा करना, जिससे तुम सुखी होवो और सेवा करने लगो, उसी मे मुझे सतोष है।

गाधी जी ने मनु के पिता श्री जयसुखलाल को भी सहुवा पत्र लिखा कि इस समय मनु का स्थान मेरे पास ही हो सकता है। यह पत्र भी मनु को मिल गया। उसने तुरन्त उत्तर दिया कि यदि आप मुझे अपनी सेवा के लिए अपने साथ रखे, तो मै आऊगी। यदि अन्य लोगो की तरह मुझे किसी गाव मे बिठाना हो, तो मुझे वहा नही आना है। यदि मेरी यह शर्त मजूर हो, तो तार से खबर दे, जिससे मै आपकी पैदल यात्रा शुरू होने से पहले आपके पास पहुच सकू। १० दिसम्बर को गाधी जी का तार मनु के पास पहुच गया। गाधी जी ने अपनी इस धर्मयात्रा मे मनु को अपने साथ रखना स्वीकार कर लिया था। १५ दिसम्बर को चल कर १९ दिसम्बर को मनु अपने पिता के साथ श्रीरामपुर पहुच गई, जहा गाधी जी अपनी छोटी सी छावनी डाले पडे थे।

उन दिनो यह उक्ति प्रचलित थी कि हिन्दुस्तान की राजधानी वही होती है, जहा गाधी जी डेरा डाले होते है। देश के सभी प्रमुख नेता और सम्बन्धित सरकारी कर्मचारी गाधी जी के आसपास मडराते रहते थे। इस समय, जब कि गाधी जी अपने जीवन की सबसे कठिन मुहिम पर जा रहे थे, उनके पास आ जुटने वाले लोगो की कमी नही थी। उनके अहिसाव्रती साथियो के अलावा आजाद हिन्द फौज के जुझारू सैनिक भी अपनी सेवाए देने को तैयार थे।

जोखिम बढ़ा

गाधी जी ने १९ वर्ष की लडकी को अपनी इस यात्रा मे साथ ले जाने का निश्चय करके सकट और बढा लिया। सच्चे मुसलमान के लिए काफिर को मारना जितना बडा पुण्य का काम है, उससे बढ कर काफिरो की स्त्रियो को लूटना भी है। गाधी जी का यह निश्चय ऐसा ही था, जैसे डाकुओ से त्रस्त क्षेत्र मे यात्रा करते हुए कोई नासमझ सोने का हार कुर्ते के ऊपर गले मे पहन ले। डाकू न लूटते हो, तो लूट ले। श्री सुहरावर्दी की जिम्मेदारी चौगुनी बढ गई।

गाधी जी ने सभावित खतरे मे मनु को सावधान कर दिया। परन्तु मनु विचलित नही हुई। जहा हजारो व्यक्ति भेड बकरी की तरह काट डाले गये थे, वहा जाने की बात सुन कर वह हिचकी नही। उसने कहा 'यदि मुझे कोई छुरा भी मार दे, तो कोई चिन्ता नही।'

छुरा मारने से भी बढ कर अनिष्ट हो सकता था। असामाजिक तत्व मनु का अपहरण कर सकते थे। परन्तु न गाधी जी ने, न मनु ने ही उसकी परवाह की। वैसे पुलिस और सेना इस बात के लिए सतर्क थी कि ऐसी कोई घटना होने न पाये। परन्तु गाधी जी ने पुलिस या सेना के लोगो को साथ रखने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। उन्होने कहा 'मेरा तो रक्षक ईश्वर है।' फिर भी पुलिस ने सारा भार ईश्वर पर नही छोडा। दूर रह कर भी वे गाधी जी और मनु की सुरक्षा मे जुटे रहे।

(आगामी अक मे समाप्य)

कुछ पौराणिक हिन्दू व आदिवासी मान्यताएं

❑ श्री तारकनाथ मुडा

आर्य जगत् ८ जुलाई अक मे स्वामी व्रतानन्द सरस्वती जी ने ये आरोप लगाये है –

१ इस पत्रिका मे गम्भीर लेख देखने को नहीं मिलते।

२ इसमे अनार्य हिन्दू शब्द की प्राचीनता के समर्थन मे कुचेष्टा की जाती है, जो ऋषि दयानन्द जी की मान्यताओ पर कुठाराघात है।

आपने इस पत्र के साथ डा० कृष्णवल्लभ पालीवाल जी के पत्र को स्थान दे कर इन आरोपो का उत्तर दे दिया है कि वर्तमान परिस्थिति मे जब धर्मान्तिरण हमे समाप्त करने पर तुला हुआ है, हमे परस्पर वाद विवाद मे उलझ कर कमजोर नही बनना है।

फारसी लोगो के आदर्श

स्वामी जी के अनुसार फारसी शब्दकोष गयास उल लुगात मे हिन्दू का अर्थ चोर बदमाश एव पापी (काफिर) लिखा गया है। इन फारसियो के आदर्श पुरुष महमूद गजनवी, चगेज खा, तैमूर लग आदि है, जिन्होने पडोसी देशो मे लूटमार, नारी अपहरण एव धर्मान्तिरण की झडी लगा दी थी। हाल ही मे सत्य, अहिसा एव शाति के प्रतीक बामियान के विशाल बुद्ध की प्रस्तर प्रतिमाओ को डायनामाइट एव तोपो मे उडा दिया। इस कृत्य मे देरी जनित भूल के प्रायश्चित्त के लिए सौ गायो की कुर्बानी की। इस तरह उन्होने डके की चोट पर दुनिया को बता दिया कि उनके लिए बुद्ध की शिक्षाए सत्य, अहिसा, शाति आदि घोर पाप है। गौ को मारना, खाना अति पुण्य कर्म है। ऐसे लोगो के शब्दकोष मे हिन्दू यदि पापी नही होगा, तो कौन होगा?

हिन्दुओ की उपकारी वृत्ति

यातीता मे चक्रवर्ती हिन्दू सम्राट् हुए थे। उन्होने कभी भी उपरोक्त जघन्य अत्याचार पडोसी विजित देशो पर नही किये थे। सम्राट् अशोक ने तो पडोसी देशो को प्रेम, सत्य एव सच्चरित्रता का पाठ सिखाने बौद्ध भिक्षुओ की सेना भेजी थी। वैदिक हिन्दू धर्म प्रचारक स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका मे कहा था कि वे यहा के नागरिक भाइयो को अच्छा नागरिक, ईसाइयो को अच्छा ईसाई बनाने आये है। ऐसे लोगो को जो काफिर कह सकता है, उसकी बातो पर क्यो विश्वास किया जाये?

मै अब उन पौराणिक हिन्दू एव आदिवासी मान्यताओ का उल्लेख करूगा, जिन्हे आर्य विद्वान् वेद विरोधी मानते है

श्री देवी और भू देवी

हिन्दू वशावली के सम्बन्ध मे पुराणो मे उल्लेख है कि भगवान् की दो पत्निया है– श्री देवी एव भू देवी। श्री देवी स्वर्ग की या आकाश की एव चल सम्पत्ति की स्वामिनी है। भू देवी पृथ्वी की एव अचल सम्पत्ति की स्वामिनी है। इनकी प्रतिमाए बद्रीनाथ व कोलकाता के विष्णु मन्दिर, पुरी के जगन्नाथ मन्दिर एव सुदूर दक्षिण मे स्थित तजौर के मीनाक्षी मन्दिर आदि अनेक मन्दिरो मे स्थापित है। श्री देवी दुर्गतिनाशिनी एव प्रकाश की देवी है इसलिए मा दुर्गा माता एव गौरी भी कहलाती है। दशहरा मे इनकी प्रतिमा बना कर सनातन हिन्दू बडी धूमधाम से इनकी पूजा करते है। इनकी प्रतिमा मे ये शक्तिपुज शेर पर सवार है। मूर्खता, आलस्य रूपी दुर्गतियो के प्रतीक महिषासुर का सहार करती है।

चार सतानें

साथ मे इनकी चार गोरे रग की सन्ताने है। बडे बेटे सेनापति कार्तिक जी सुरक्षाकर्मी क्षत्रिय वर्ण के है। मझले बेटे ज्ञान देवता गणेश जी सुशिक्षाकर्मी ब्राह्मण वर्ण के है। सझली बेटी सम्पदा की देवी लक्ष्मी जी वाणिज्यकर्मी वैश्य वर्ण की है। छोटी बेटी विद्या एव सगीत की देवी सरस्वती जी उत्पादनकर्मी शूद्र वर्ण की है। इस तरह दुर्गा जी की जो जाति है, वही चतुर्वर्णी की जाति है और शूद्र वर्ण अछूत नही है। सूर्य देव दुर्गा जी की साकार मूर्ति है, इसलिए चतुर्वर्ण को सूर्यवशी कहते है।

काली देवी

भू देवी का रग काला है। इसलिए उन्हे काली देवी भी कहते है। वे अधकार की देवी है, अत इनकी पूजा कार्तिक अमावस्या या दीपावली को होती है। इनकी प्रतिमा मे इनके चरणो मे शिवजी है। शिव मन्दिर मे शिवलिग धरती का, त्रिशूल आग, पानी, हवा का एव नागछत्र आकाश का प्रतीक है। इसलिए शिवजी का नाम भूतनाथ एव पचानन है। इनके देवता क्रमश धर्मराज, अग्निदेव, वरुण देव, पवन देव एव देवराज इन्द्र है। इस काली देवी की सतान कोल, सथाल (सतान) या भूमिज है। आदिमाता की सतान आदिवासी है। कोल या भूमिज भाषा मे काले रग को 'हेदे' कहते है। इस भाषा से कालीमाता को हिन्दमाता एव उनकी सन्तान को हिन्दू कहते है।

भूमिज लोग हिन्दू हैं

त्रेता युग मे इन्द्रादि पचदेवताओ की सतानो, किष्किधा के बाली, सुग्रीव, हनुमान आदि को हिन्दू माना गया। द्वापर युग मे भी उनकी सतानो पच पाडव को हिन्दू माना गया। आज उन्हे अलग क्यो माना जा रहा है? कोल का पूजा मत्र है– **हे सिरिमारेन सिगीबोगा, ओतेरेन वसुमाता, गाडारेन, बुरुरेन, हाटा: दाना टुकी दाना तिसि दो मयोद गाडु मयोद चाल पा रे दुव जाआरू कोआवु जोम नु लेयाबु आर सुसुन दुराग को आवु।** अर्थ हे आकाश के सूर्य देव, धरती श्री धरतीमाता एव उनकी सभी जल स्थल की सन्ताने आज हम एक परिवार के सदस्यो की भाति एक आसन पर बैठ कर खान पान करे एव नाच गा कर ईश्वर या धरती माता को प्रसन्न करे। इस तरह आर्य, हिन्दू एव आदिवासी सब अपने को सूर्य एव धरती सताने मानते है। इस अनुसार से सब भाई बहन है।

दारुब्रह्म

विष्णु भगवान् का एक नाम दारु ब्रह्म है। कोल भाषा मे वृक्ष, शस्य आदि को दारु कहते है। विष्णु जी ससार के जीवो का वृक्ष एव शस्य द्वारा पालन करते है। इसीलिए इनको जगन्नाथ महाप्रभु कहते है। इनकी सेवा कृषि है, जैसे–**वैशाख महीने की सीता नवमी** (कोल भाषा मे सीतारे नामोआ) का अर्थ है कि इस महीने मे जुताई करने से (अच्छी) फसल मिलती है। इसलिए यह हल जुताई का पर्व है।

आषाढ महीने की रथ यात्रा . खरीफ फसल की बुआई का पर्व है। इस समय वक दारु ब्रह्म बीज रूप मे रहते है इसलिए इनकी काष्ठ प्रतिमा मे केवल गोल गोल आखे है और हाथ पैर नही होते। अबसे वे बायीरग करते है।

सावन महीने की झूलन यात्रा खरीफ फसल की रोपनी निशैनी पर्व है। इस समय धान की फसल शिशु रूप मे होते है।

भादो महीने की पार्श्व एकादशी : रबी फसल की यात्रा का पर्व है। इसमे रबी फसल के अकुरो की पूजा होती है। करमा धरमा की कहानी कही जाती है। अपना कर्तव्य पालन (कृषि कर्म) ही धर्म है। यह जताने के लिए करम ढाल की भी पूजा होती है और इसे करमा पर्व भी कहते है।

मकर संक्रान्ति या माघे पर्व यह अन्न माता को घर लाने का पर्व है। कोल भाषा मे एक माघे गीत का आशय है कि 'हे अन्न माता बाहर मे गर्मी-जाड़ा पड रही है। चलो अब हम घर चलें। इसे रावण विजय के रूप मे भी मानते है। हर साल कोलो की सीताजी रावण की कैद मे होती हैं और इस दिन उनका उद्धार किया जाता है। इस दिन (लकडी की गेद) फोदी खेलते है। इसे रावण का शिर माना जाता है। दूसरे दिन सवेरे रावण के धड रूपी केले के थंब की तीर से तीरदाजी की जाती है। विजयी को पुरस्कार दिया जाता है। ऊपर बेला को रावण के अवशेषो का जुलूस निकाल कर नदी या जलाशयो मे बहा देते है। इस तरह हम हर साल प्रतिज्ञा करते है कि हम देश, जाति, धर्म एव नारी जाति के दुश्मनो से कोई समझौता नहीं करते। हम उन्हे डडे एवं तीरो से इस तरह चूर चूर कर देते है।

होली या सरहुल पर्व : यह वृक्ष देवता के यौवन के प्रतीक साल वृक्ष के फूल की पूजा है।

चैत्र सक्रान्ति या मडाव पर्व : कोल भाषा मे मडाव का अर्थ पुन स्थापना है। वर्ष समाप्त हो गया। नये सिरे से अपनी माता, देश माता की सेवा का सकल्प करते है। दुर्गा माता एव काली माता की दुर्गाघट एव कालीघट के रूप मे पुन स्थापना करते हैं। साल फल एव काष्ठ मूर्ति के रूप मे दारुब्रह्म की पूजा होती है। यह देशमाता का **शस्य श्यामला एव द्रुमदलशोभिनी** रूप है। फल वृक्ष देवता का अन्तिम एव शिशु रूप है। इसलिये इस पर्व को होनवा (शिशु पर्व) भी कहते है। इस पर्व मे भगत भगतिने शिवा भवानी, काशी बद्रीनाथ, गया गदाधर, उडीसा जगन्नाथ, दाता दिगवर वैरागी महादेव का उद्घोष करते है। रात को जागरण करते है। इसमे छौ नृत्य होता है। हमारी पौराणिक गाथाओ का नृत्य द्वारा चित्रण करते है। सवेरे फूल खूदा एव टागन होता है। फूलखूदा मे दश हाथ दहकते अगारो पर नगे पैर चल कर नववर्ष मे प्रवेश करते है। भगतो को लोहे के अकुश मे टाग कर ऊपर घुमाते है और इस तरह पूर्व वर्ष की विदाई करते है।

देवी देवता देशमाता के रूप

इस तरह हमारे देवी देवता हमारी देशमाता के ही रूप है। मन्दिर मे उनकी प्रतिमाए केवल पूजा की सुविधा के लिए है। इनके नाम पर मूल्यवान दान दक्षिणा चढाना केवल पुजारियो को मजदूरी देना है। असल मूर्ति तो हमारे चारो ओर विराजमान है। स्वर्ग भी यही है, क्योकि स्वर्ग के देवतागण देवराज इन्द्रादि इसी भूमि मे विराजमान है। इसलिए मृतात्मा को बैतरणी नदी पार कराना, दान दक्षिणा ले कर स्वर्गवास कराना या ग्रह शाति करना केवल ठगी है। ब्राह्मणो ने अब तक बहुत भूले की है, जिनके कारण हिन्दू जाति एव धर्म पतन के कगार पर पहुच गया है। उन्हे दृढतापूर्वक घोषणा करनी होगी कि इस देश या पृथ्वी मे केवल एक जाति एव धर्म है, वह है हिन्दू जाति एव धर्म। इसलिए इस देश में अनेक जाति एव धर्म की मान्यता बद करनी होगी।

मुसलमान का अर्थ है ईमानदार

मुसलमानो से कहना होगा कि

(शेष पृष्ठ ९ पर)

बीसवीं शताब्दी के सर्वाधिक विख्यात भारतीय : महात्मा गांधी

गांधी जी के भक्तो ने उनके नाम के साथ एक ऐसा आभामडल बना दिया है कि उनकी महिमा के वर्णन के लिए हर विशेषण छोटा, अपूर्ण ही प्रतीत होता है। 'इस शताब्दी के सबसे महान पुरुष', 'सब कालो के सबसे महान पुरुष', 'पृथ्वी पर आज तक इतना महान पुरुष अन्य कोई हुआ ही नही', 'आने वाली पीढियो के लिए यह विश्वास करना कठिन हो जायेगा कि कभी कोई सचमुच इतना महान सचमुच इस पृथ्वी पर जीवित रहा होगा इत्यादि। उनके देहान्त के ५३ वर्ष पश्चात् उनका वह प्रभा मडल कुछ क्षीण हो गया है। उन्हे 'बीसवी शताब्दी का सबसे अधिक ख्यातिप्राप्त भारतीय' कहना उनका सही मूल्याकन होगा।

विफल सन्त

ऐसे करोडो लोग है, जो उन्हे देवतुल्य पूजनीय मानते है— सब सद्गुणो का अवतार। परन्तु ऐसे लोग भी लाखो की सख्या मे है (उनके जीवन काल मे भी थे), जो उन्हे अदूरदर्शी, जिद्दी, अन्यायी, दुष्टो को तुष्ट करने वाला, अवसरवादी व्यक्ति मानते थे। विनायक दामोदर सावरकर उनकी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के लिए घातक मानते थे। नेता जी सुभाष गाधी जी को अदूरदर्शी मानते थे, क्योकि गाधी जी द्वितीय विश्व युद्ध का लाभ उठा कर स्वाधीनता का आन्दोलन छेडने को तैयार नही थे। गाधी जी के प्रतिद्वन्द्वी जिन्ना, जो पाकिस्तान बनाने का लक्ष्य पाने मे सफल रहे, गाधी जी को काइया और अविश्वसनीय मानते थे। वायसराय लार्ड वैवल का कहना था कि गाधी जी से कोई चर्चा कर पाना असम्भव है, क्योकि वह ऐसी गोलमोल भाषा बोलते है, जिसका कुछ अर्थ ही समझ नही आता कि वह क्या कह रहे है। ब्रिटिश प्रधान मत्री विस्टन चर्चिल सदा ही गाधी जी को तिरस्कार की दृष्टि से देखते रहे और तदनुसार व्यवहार करते रहे। जब गाधी जी ने आगा खा महल मे २१ दिन का उपवास किया, तब चर्चिल की प्रतिक्रिया थी कि यदि वह मरना चाहते है, तो हम उन्हे रोकेगे नहीं। आगा खा महल मे गाधी जी की अन्त्येष्टि के लिए लकडिया मगा ली गई थीं।

गांधी जी और सरदार पटेल

सरदार वल्लभभाई पटेल गाधी जी के घनिष्ठ सहयोगी रहे थे। सभी आन्दोलनो मे, कांग्रेस संगठन मे उन्होने गाधी जी का आंख मूद कर अनुसरण किया था। जब त्रिपुरी काग्रेस मे गाधी-सुभाष विवाद चला, तब पटेल ने गाधी जी का साथ दिया था। परन्तु वही सरदार पटेल सन् १९४८ के आरम्भ में गाधी जी की अन्धी मुस्लिमतोषी नीति से खिन्न थे। गाधी जी पटेल से रुष्ट थे और कहते थे कि 'मेरी बात नही सुनी जा रही है।' गाधी जी ने मुसलमानो का मनोबल बढाने के लिए अनशन किया, तो सरदार पटेल खीझ कर दिल्ली से मुम्बई चले गये। उन्होने नेहरू मत्रिमडल से त्यागपत्र देने की भी बात कही। तब गाधी जी ने उन्हे मनाने की कोशिश की। पटेल शायद न मानते, परन्तु जब नाथूराम गोडसे की गोली से गाधी जी का प्राणान्त हो गया, तब शोक विह्वल नेहरू जी ने पटेल से सहयोग की अपील की, और तब पटेल ने उनके साथ बने रहना स्वीकार कर लिया।

इकतरफा सिद्धान्त प्रेम

भारत सरकार के पूरे मत्रिमडल को यह बात समझ आती थी कि देश का विभाजन इस आधार पर हुआ है कि इससे हिन्दू-मुसलमानो की सब समस्याए शातिपूर्वक निपट जायेगी और दोनो देश मित्र बन कर रहते हुए अपने अपने ढग से रह कर अपना विकास कर सकेगे। पर वैसा न करके पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया और वहा भारत और पाकिस्तान की सेनाए खूनी लडाई लड रही थी। ऐसी हालत मे पाकिस्तान को उसके हिस्से का ५५ करोड रुपया देना उचित नही है। मत्रिमडल ने यह निर्णय किया कि यह रुपया पाकिस्तान को तब दिया जायेगा, जब वह कश्मीर मे लडाई बन्द कर देगा। लार्ड माउटबेटन ने गाधी जी से कहा 'ऐसा करना अनैतिक होगा। वह रुपया पाकिस्तान का है। वह उसे तुरन्त दिया ही जाना चाहिए, वह उसे जैसे चाहे खर्च करे।'

न्यायप्रिय गाधी जी को यह बात समझ आ गई। पाकिस्तानी आक्रमणकारियो का मुकाबल करने के लिए गाधी जी ने कश्मीरियो को अहिसक युद्ध लडने की सलाह दी थी 'आक्रमणकारियो पर कोई प्रतिप्रहार मत करो, थप्पड तक मत मारो। उनका मुकाबल करते हुए मर जाओ।' किसी ने उनकी सलाह को नही माना। न कश्मीरी जनता ने, न भारत सरकार ने। गाधी जी स्वय कश्मीर गये नही। उन्होने दिल्ली मे बैठ कर अनशन शुरू कर दिया। अनशन तोडने की शर्ते थी पाकिस्तान को पचपन करोड रुपया तुरन्त दिया जाये, और हिन्दू, मुस्लिम, सिख, सब सम्प्रदायो के नेता परस्पर द्वेष त्याग कर प्रेम से रहने का वचन दे।

सरकार झुक गई

पचपन करोड रुपया देना सरकार के हाथ मे था। गाधी जी के अनमोल प्राणो को बचाने के लिए मन्त्रिमडल ने अपने सर्वसम्मत निर्णय को रातोरात बदल दिया और राशि पाकिस्तान को दे दी गई। सब सम्प्रदायो के असली नकली नेताओ को ला कर एक नाटक सा किया गया कि वे छुरे, पिस्तौल आदि हथियार त्याग रहे है और परस्पर प्रेम से मिल कर रहने का वचन दे रहे है। और सरल हृदय गाधी जी ने उस पर विश्वास कर लिया। सरदार पटेल इस सबसे बहुत खिन्न हुए।

बनिया कहलाने मे गर्व

गाधी जी महान पुरुष थे, उसके स्थान पर यह कहना उचित होगा कि वह सर्वाधिक विख्यात भारतीय नेता थे। गाधी जी का जन्म एक बनिया परिवार मे हुआ था। उनके पिता पहले पोरबन्दर राज्य के दीवान थे, बाद मे अपेक्षाकृत बडे राज्य राजकोट के दीवान बन गये थे। उनके परिवार को समृद्ध कहा जा सकता है। गाधी जी स्वय को बनिया कहने मे गर्व अनुभव करते थे और बहुत हिसाबी किताबी व्यक्ति थे। लोग उनके पास उनके हस्ताक्षर लेने के लिए आते थे। वह प्रति हस्ताक्षर पाच रुपये लेते थे। यह राशि काग्रेस के कोष मे चली जाती थी।

कुशल प्रचारक

गाधी जी की ख्याति मे उनके योजनाबद्ध प्रचार का बडा हाथ था। गाधी जी नियमित रूप से एक साप्ताहिक पत्र निकालते थे, जिममे उनके विचार छपते थे। गाधी जी प्रतिदिन प्रार्थना मे भाषण देते थे। इन भाषणो की रिपोर्ट दैनिक पत्रो मे भी छपती थी।

अखबार छापना उन दिनो भी खर्चीला काम था। अखबार शुरू कर देना आसान था, परन्तु ग्राहको के अभाव मे अखबार जल्दी ही बद हो जाते थे। परन्तु गाधी जी के अखबारो के ग्राहक बने रहे और अखबार चलते रहे।

सरकार की कृपा दृष्टि

अखबारो पर अग्रेज़ी सरकार की भी वक्र दृष्टि रहती थी। जिन अखबारो को सरकार पसन्द नही करती थी, उनसे जमानत मागी जाती थी, जमानत ज़ब्त की जाती थी और फिर नई जमानत मागी जाती थी। इस कारण बहुत से अखबार बन्द हो जाते थे। परन्तु गाधी जी के अखबारो मे जो कुछ छपता था, उससे सरकार परेशान नही थी। बल्कि वह गाधी जी को बढावा ही देती थी, क्योकि उसका विचार था कि गाधी जी हिसावादी क्रान्तिकारियो के विरुद्ध उसके कवच है।

गाधी जी के आश्रमो, आन्दोलनो, अखबारो का खर्च चलाने के लिए पैसा कहा से आता है, यह सरकार को भली भाति मालूम था। गाधी जी को धन देने वाले धनपतियो को भी मालूम था कि सरकार इस बात को जानती है। दोनो मे अलिखित समझौता था कि धनपति गाधी जी को सहारा देते रहे, सरकार कुछ नही कहेगी। भारतीय धनपति इतने निडर और शूर नही थे कि सरकार की टेढी त्योरिया झेल सके। कोई उद्योगपति नही झेलता।

कानून के अन्दर ही

सरकार के इशारे पर देशभक्त धनपति गाधी जी को हर प्रकार की सहायता देते रहे। गाधी जी ने इग्लैड जा कर कानून पढा था। इसलिए वह सब काम कानून के दायरे मे रह कर ही करते थे। सरकार उनके विरुद्ध कुछ कार्रवाई करे, इसकी नौबत ही नही आती थी।

कानून गाधी जी ने तोडा— नमक बना कर। उन्हे पता था कि इसके लिए कितनी सज़ा दी जा सकती है। उसे भुगतने के लिए वह तैयार थे। उनके आन्दोलन मे हजारो लाखो आदमी साथ हो गये।

अन्तर्विरोध

गाधी जी का अग्रेजो से कितना, कैसा विरोध था, यह एक पहेली ही है। गाधी जी कहते थे 'मै अग्रेजो का मित्र हू, सच्चा मित्र। मै उनका अहित बिल्कुल नहीं चाहता। परन्तु मै चाहता हू कि अग्रेज़ भारत छोड दे।' अग्रेजो का कहना था कि यदि यही मित्रता है, तो शत्रुता क्या होगी? हमे ऐसी मित्रता नही चाहिए।

अग्रेज चतुर थे

अग्रेज और चाहे जो कुछ हो, मूर्ख नही थे। वे मुगलो, मराठो, जाटो, सिखो, नेपालियो, अफगानो को हरा कर भारत पर लगभग २०० बरस राज कर गये। इतना ही नही, उन्होने पुर्तगालियो, फ्रासीसियो, डचो, रूसियो को भारत मे पाव जमाने का मौका नही दिया। वह खूब समझते थे कि उनका हित किस बात मे है।

यदि वे समझते कि गाधी जी और उनके आन्दोलनो से उनके शासन को काई वास्तविक खतरा है, तो वे उस समय विद्यमान कानूनो से ही गाधी जी और उनके नेतृत्व वाली काग्रेस का दमन कर सकते थे। यदि उस समय विद्यमान कानून अपर्याप्त समझे जाते, तो नया कानून बनाते उन्हे कोई देर नही लगती थी। सन् १९१९ मे उन्होने पजाब मे मार्शल ला जारी किया ही था।

शासन मे कानून का महत्व उतना नही है, जितना उस कानून का पालन करवाने वाले अधिकारी (अफसर) का महत्व है। कोई कठोर अफसर उसी कानून से प्रजा को त्रस्त कर सकना है, जब कि कोई उदार या निष्क्रिय अफसर प्रजा को आराम से रहने दे सकता है। कानून तो मोम की नाक है, जो अफसर के चाहने

(शेष पृष्ठ ९ पर)

क्या देश को आर्य समाज की आवश्यकता है?

तीर्थ यात्रा और आर्य समाज

❑ प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

देश मे तीर्थ स्थानो की कमी नही है। यहा बारह महीनो तीर्थयात्राए चलती रहती हैं। कभी कुरुक्षेत्र की तो कभी हरिद्वार की, कभी उज्जैन की तो कभी नासिक की। दक्षिण मे अनेक तीर्थ स्थल है, जहा श्रद्धालु लोग जाते है, परन्तु यहा कुछ तीर्थ यात्राओ एव तीर्थ स्थलो का ही मै उल्लेख कर रहा हू।

कुछ तीर्थ यात्राए

पहली तीर्थ यात्रा अमरनाथ की है। यहा भारत के कोने-कोने से हजारो की सख्या मे श्रद्धालु चौदह हज़ार फीट की ऊचाई पर स्थित अमरनाथ गुफा मे जान हथेली पर रख कर जाते है। इस बार यह यात्रा ५ जुलाई २००१ से प्रारम्भ हो कर ४ अगस्त २००१ तक जारी रही। इस यात्रा के लिए ४ जुलाई से २२ जुलाई तक जम्मू से एक लाख यात्री रवाना हुए। यहा अमरनाथ की गुफा मे हिम की बूदो से हिमलिग या शिवलिग बनते है। बस इन्ही बर्फ के शिवलिगो को देखने के लिए श्रद्धालु यहा आते है। कडी सुरक्षा के बीच तीर्थ श्रद्धालु यहा आते है, फिर भी "दैनिक भास्कर" (चडीगढ २२ ७ २००१) के अनुसार आतकवादियो ने अन्धाधुन्ध गोलीबारी करके चौदह तीर्थयात्रियो को मार डाला। पिछले वर्ष भी सेना और सुरक्षा बलो की कडी पहरेदारी मे श्रद्धालुओ ने यात्रा की थी। फिर भी १,२ अगस्त २००० को आतकवादियो ने ३०-३२ तीर्थ यात्रियो को मार डाला था। भला ऐसी तीर्थ यात्रा से क्या लाभ? क्या इससे अमरत्व मिल जायेगा?

इसी प्रकार कुरुक्षेत्र मे "दैनिक जागरण" (नई दिल्ली, १० ८ १९९९ पृ०१३) के अनुसार १९९९ मे सूर्यग्रहण मेले के अवसर पर दस लाख लोग इकट्ठे हुए तथा "अमर उजाला" (चडीगढ १२ ८ १९९९ पृ० १) के अनुसार सूर्यग्रहण के अवसर पर लाखो लोगो ने कुरुक्षेत्र के ब्रह्म सरोवर मे डुबकी लगाई। परन्तु इससे क्या वे पवित्र हो गए? या पापमुक्त हो गए?

हरिद्वार

हरिद्वार देश का सबसे बडा तीर्थ स्थान माना जाता है। वहा हरकी पौडी पर बारह महीनो लाखो लोग स्नान करते है। परन्तु क्या वे सब पापमुक्त हो गए? मनुस्मृति मे लिखा है कि जलो से केवल शरीर की शुद्धि होती है, किन्तु मन की शुद्धि सत्य मे होती है, बुद्धि की शुद्धि ज्ञान मे होती है और आत्मा की शुद्धि विद्या और तप से होती है।

अद्भि गात्राणि शुध्यन्ति मन सत्येन शुध्यति।

विद्यातपोभ्या भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥

कावड यात्रा

कावड यात्रा मे प्रतिवर्ष लाखो श्रद्धालु हरिद्वार से या गोमुख से गगाजल ला कर शिव की मूर्तियो पर चढाते है। दैनिक ट्रिब्यून, चडीगढ १५ जुलाई, २००१ के अनुसार श्रावण मास मे हरिद्वार से निकलने वाले रास्तो मे सिर्फ कावडे ही नजर आती है। मेरठ के ऐतिहासिक पुरामहादेव के मन्दिर मे बीस लाख से अधिक कावडिये प्रतिवर्ष जल चढाते है। हरियाणा के मन्दिरो मे भी कावडिये भारी सख्या मे शिव की मूर्ति पर जल चढाते है। लगातार पैदल चलने से इन कावडियो के पैरो मे सूजन आ जाती है, तलवे लहूलुहान हो जाते है। इनकी आस्था प्रशसनीय है, किन्तु इन जलो से इनकी आत्मा का कल्याण नही हो सकता। फिर असली शिव तो परमात्मा है। उसकी उपासना से मनुष्य का कल्याण होता है। कैवल्य उपनिषत् कहती है

स ब्रह्मा स विष्णु स रुद्रस्स शिवस्सोऽक्षरस्स परम स्वराट् स इन्द्रस्स कालाग्निस्स चन्द्रमा.॥ अर्थात् वही परमात्मा ब्रह्मा है, वही विष्णु है, वही रुद्र है, वही शिव है, वही अक्षर आदि है।

एक तीर्थयात्रा नन्दादेवी राजजात यात्रा है। यह २१ अगस्त से दो सितम्बर तक चलने वाली २८० कि०मी० लम्बी धार्मिक पदयात्रा है। यह नौटी (चमोली) से रूपकुड तक दुर्गम पहाडी रास्तो से होकर नदादेवी के शिखर तक पहुचती है। इसमे पौराणिक मान्यता के अनुसार नन्दादेवी को मायके से ससुराल भेजा जाता है। अगस्त २००० की यात्रा का विवरण देते हुए "दैनिक ट्रिब्यून" चडीगढ (५ ११ २०००) ने लिखा कि पदयात्रियो को देखकर स्थानीय गाववामी हैरान थे। वही हर पडाव पर पुजारियो का व्यवहार अशोभनीय रहा। पुजारी लोग असली डोली का आभास करा कर भेट चढवाने का प्रयास करवा रहे थे। वह एक अशोभनीय कृत्य था।

तीर्थराज प्रयाग

तीर्थराज प्रयाग इलाहाबाद का जिक्र किए बिना यह तीर्थयात्रा अधूरी रहेगी। इस बार यहा महाकुम्भ ९ जनवरी २००१ से २१ फरवरी २००१ तक इलाहाबाद मे लगा। लाखो लोग वहा इकट्ठे हुए। मकर सक्रान्ति, मौनी अमावस्या तथा माघ पूर्णिमा एव शिवरात्रि के दिनो मे पाच करोड लोगो ने वहा सगम मे स्नान किया। किन्तु क्या वे सब तर गए? मुक्त हो गए? इस बारे मे अग्रेज़ी के अखबार "टाइम्स आफ इडिया" (नई दिल्ली, २३ १ २००१ पृ० १२) ने अपने सम्पादकीय में लिखा कि भारत विदेशियो के लिए अजीबोगरीब, चमत्कारो का देश है। यहा भस्म लगाये नग्न साधु नाचते हुए जा रहे है। उनके कदम चिलम की कश लगाने के लिए ही रुकते है। उनके लिए ये शारीरिक क्रियाए ही आध्यात्मिकता हैं। इस कुम्भ के बारे मे "दि हिन्दू" (२६ १ २००१) मे राजीव धवन ने लिखा कि इस मेले मे चकित करने वाले भाति भाति के लोग इकट्ठे हुए। इसमे लैटिन अमेरिका से आई एक महिला ने अपना पूरा शरीर कीचड से लीपा हुआ था और वह रेत मे बैठी सूर्यदेव से प्रार्थना कर रही थी।

तप का दिखावा

इस महाकुम्भ के बारे मे अग्रेजी "ट्रिब्यून" (चडीगढ २८ १ २००१) ने लिखा कि यहा विभिन्न प्रकार के साधु आए हुए थे, (१) एक वे थे, जो अपनी एक भुजा को निरन्तर ऊपर खडा रखते थे, भले ही वह बेकार और रुग्ण हो जाये। या फिर वे गगा के बर्फीले पानी मे खडे रह कर घटो सूरज की ओर दृष्टि लगाये ध्यान लगाते थे। दूसरे वहा नागा साधु भी थे, जो सदा बिल्कुल नग्न रहते है। तीसरे वे साधु थे, जो सारा दिन घटिया बजाते थे। चौथे मौनी साधु थे जो चुप रहते थे। पाचवे शीर्षासनी साधु थे, जो सिर के बल खडे होकर ध्यान लगाते थे। वे खम्भे से ही सिर लगाकर खडे खडे सोते थे। वहा और भी कई प्रकार के साधु थे। इन साधुओ की क्रियाओ को आध्यात्मिकता का प्रतीक बताया गया है।

तामसिक तप

किन्तु इन क्रियाओ मे किसी प्रकार की आध्यात्मिकता नही है। गीता मे इस प्रकार के तप को, ऐसी क्रियाओ को तामसिक एव आसुरी तप कहा है। गीता कहती है कि जो लोग दम्भ तथा अहकार से युक्त होकर शास्त्र विधि से विपरीत घोर तप करते है तथा जो हठपूर्वक, मूढतापूर्वक मन, वाणी और शरीर को पीडा देकर तप करते है, वह तामसिक तप कहलाता है

अशास्त्रविहित घोर तप्यन्ते ये तपोजनाः।
दम्भाहकारसयुक्ता· कामराग बलान्विताः॥
(गीता १७/५)

मूढग्राहेणात्मनो सत्पीडया क्रियते तप.।
परस्योत्सादनार्थ वा तत्तामसमुदाहृतम्॥
(गीता १७/१९)

इसी प्रकार की ये तीर्थ यात्राए है, चाहे वे अमरनाथ की या नदादेवी राजजात यात्रा या कावड यात्रा या अन्य किसी स्थान की यात्रा हो। इन यात्राओ से यात्रियो को भारी शारीरिक एव मानसिक पीडा होती है। कई कई दिनो तक यात्री पीडा का शिकार रहते है। फिर इनसे मिलता क्या है? जैसे अमरनाथ के यात्री प्रतिकूल मौसम और आतकवादी हमलो के बीच अमरनाथ गुफा तक पहुचते हैं। किसलिए? हिम से बने शिवलिगो को देखने के लिए। किन्तु इस बार हिन्दी "हिन्दुस्तान" (२७ ७ २००१ पृ० १) के अनुसार शिवलिग के छोटे आकार के कारण श्रद्धालु भक्त निराश हो गए। कारण? इस बार व्यास पूर्णिमा को इसकी ऊचाई साढे पाच और छह फुट के बीच थी। किन्तु इसकी आकृति लम्ब रूप मे न होकर चौडाई लिये हुए है जबकि पूर्ण आकार मे इसकी ऊचाई सात फुट से अधिक होती है। श्रद्धालु भक्त लोग इसे किसी भावी अनिष्ट का सूचक मानते है। यह है देश के लोगो की अन्धश्रद्धा, किन्तु इससे मुक्ति नही हो सकती। तो फिर वास्तविक तीर्थ क्या है?

'सत्यार्थप्रकाश' के ११वे समुल्लास मे महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि वेदादि सत्यशास्त्रो का पढना पढाना, धार्मिक विद्वानो का सग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्य का मानना, सत्य करना, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान-विज्ञानादि शुभ गुण कर्म, दु खो से तारने वाले होने से तीर्थ है और जो जल स्थलमय हैं वे तीर्थ कभी नहीं हो सकते क्योकि **'जनाः यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि"** मनुष्य जिन करके दुःखो से तरें उनका नाम तीर्थ है। जल स्थल तारने वाले नही किन्तु डुबा कर मारने वाले है। और जो वेदादि शास्त्र और सत्यभाषणादि धर्म लक्षणो मे साधु हो उसको अन्नादि पदार्थ देना और उनसे विद्या लेनी इत्यादि तीर्थ कहाते है। मुक्ति किन बातो से होती है? इसका उत्तर देते हुए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के नौवे समुल्लास मे लिखा है कि "परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसग, कुसस्कार, बुरे व्यसनो से अलग रहने और सत्य भाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढने, पढाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनो को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपातरहित न्याय धर्मानुसार ही करे, इत्यादि साधनो से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भग करने आदि काम से बन्ध होता है।"

इन सब बातो से देश के लोगो को कौन परिचित करायेगा? केवल आर्य समाज ही यह कार्य कर सकता है। इसके लिए आर्य समाज को विद्वानो, लेखको, उपदेशको, भजनोपदेशको तथा धर्मप्रचारको की व्यवस्था करनी होगी। समाजे तथा प्रतिनिधि सभाए अन्य कार्यो मे धन खर्च कर रही हैं किन्तु इन पर, इनकी व्यवस्था के लिए धनराशि खर्च करना नहीं चाहतीं? इस तरह विद्वान्, उपदेशक, लेखक, धर्मप्रचारक आदि कैसे उपलब्ध होगे? उनकेबिना आर्य समाज का प्रचार कैसे होगा?

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल-१३२००१ (हरियाणा)

पाठक कृपया ध्यान दें

नीचे आर्य जगत् के उन ग्राहको की सूची दी जा रही है, जिनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है। कृपया अपना चन्दा तुरन्त भेजें, जिससे आपको 'आर्य जगत्' भेजना जारी रखा जा सके। यह सूची क्रमश प्रकाशित की जायेगी। —प्रबन्धक

ग्राहक संख्या	कब समाप्त हुआ
३००३८	२४ २ २००१
३०६५७	२४ ७ २००१
३०७१२	१८ ७ २००१
३०८४८	१३ ७ २००१
३०८४९	२७.६ २००१
३०८५०	४ १ २००१
३१०४५	११ १ २००१
३१४६९	८ ५ २००१
३१६४४	२६ ४ २००१
३१८७१	२१ २ २२०१
३२९७२	१० ७ २००१
३२२२०	२२ ७ २००१
३२३४८	३ ७ २००१
३२४४१	१९ ५ २००१
३२४९१	४ ७ २००१
३२५५६	१३ ६ २००१
३२६२३	१६ ६ २००१
३२७४७	२१ १ २००१
३२७६८	१८ ७ २००१
३२८०२	२७ १ २००१
३२८०६	१ १ २००१
३२८२५	१२ ५ २००१
३३०७०	२७ ७ २००१
३३१२३	११ ५ २००१
३३२३५	२६ ४ २००१
३३२६९	२९ ७ २००१
३३४४४	१२ ५ २००१
३३४७६	३१ ७ २००१
३३६०५	२६ ७ २००१
३३६६८	३ ५ २००१
३३७०१	१९ ५ २००१
३३७७५	१० १ २००१
३३७८९	२ ६ २००१
३३७९८	१७ २ २००१
३३८६५	९ २ २००१
३३८७५	२ ५२००१
३३९५८	१६ २ २००१
३३९७२	३० ५ २००१
३४१८९	२२ ६ २००१
३४१९२	१५ २२००१
३४२८५	२० १२००१
३४३७०	२२ ७ २००१
३४३९५	२८ ७ २००१
३४४३२	११ १ २००१
३४४४२	११ १ २००१
३४४५५	१५ १ २००१
३४४८५	९ ३ २००१
३४५४९	१२ १२००१
३४६४७	२ ५ २००१
३४९०४	३ १ २००१
३४९४५	३ १ २००१
३४९७५	११ २ २००१
३५०८६	२६ ५२००१
३५३८६	२९ ७ २००१
३५३९६	१३ ३ २००१
३५४०७	१६ ६ २००१
३५४२९	१७ ७२००१
३५४९७	२३ २ २००१
३५५०७	१७ ७ २००१
३५५२९	२ ६ २००१
३५६२८	६ ७ २००१
३५६३७	१७ ५ २००१
३५६६४	१२ २ २००१
३५६६९	२९ ३ २००१
३५७८९	९ ६ २००१
३५८८५	२८ ४२००१
३५९७४	२७ १ २००१
३६११९	३ १ २००१
३६१२०	३ १ २००१
३६१२२	६ १ २००१
३६१२३	१० १ २००१
३६१२४	१० १ २००१
३६१५५	४ २ २००१
३६१५८	११ १ २००१
३६१६७	१७ १ २००१
३६१७०	१७ १ २००१
३६१७१	१७ १ २००१
३६१७४	२४ १ २००१
३६१७५	२७ १ २००१
३६१७६	१६ २ २००१
३६१७८	२९ १ २००१
३६१८०	३१ १ २००१
३६१८१	२ २ २००१
३६१९२	१४ २ २००१
३६१९३	१४ २ २००१
३६१९४	१४ २ २००१
३६१९७	२१ २ २००१
३६२०१	२६ २ २००१
३६२०३	७ २ २००१
३६२०४	२५ २ २००१
३६२०५	२५ २ २००१
३६२०६	१ ३ २००१
३६२०८	६ ३ २००१
३६२०९	६ ३ २००१
३६२१०	६ ३ २००१

(पृष्ठ ७ का शेष)

बीसवीं शताब्दी के सर्वाधिक ......

भर से चाहे जिस दिशा मे घूम जाती है। उसी कानून से एक अपराधी को फासी की सजा हो सकती है, उसी कानून से अपील मे वही अपराधी निर्दोष सिद्ध हो कर छूट जाता है। इसलिए यह सोचना कि अग्रेज़ कानून का उल्लघन न करने वाले अहिसक गाधी जी के सम्मुख असहाय हो गये थे, बहुत भोलापन है।

निर्विष साप

अग्रेज़ गाधी जी को निर्विष साप समझते थे, इस लिए कुशल सपेरे की तरह उन्हे गले मे डाले घूमते थे, शाम को कसोरे मे दूध भी पिलाते थे। दुनिया भर मे तमाशा दिखाते थे कि हमने बागी गाधी को भी पूरी छूट दे रखी है।

कहते है कि एक बार हिटलर ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री चेम्बरलेन से कहा था · 'आप इस गांधी को गोली क्यो नही मार देते?' चेम्बरलेन ने मुस्करा कर केवल इतना कहा क्या जरूरत है।'

गाधी जी अहिंसा और सत्य के पुजारी थे। जिस तरह उनकी अहिसा बुद्ध, ईसा और पतजलि की अहिसाओ की अजीब खिचडी थी, उसी तरह उनका सत्य भी विचित्र था और मौके के अनुसार बदलता रहता था। एक मामले मे जो नियम सत्य था, वही दूसरे मामले मे गलत हो जाता था।

दुहरे पैमाने

जब गाधी जी ने सन् १९२० मे विदेशी कपडो की होली जलाने का आन्दोलन शुरू किया, तब महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने उनसे कहा कि इस देश मे गरीबी के कारण लाखो लोग नगे, अधनगे रहते है। यदि इन विदेशी कपडो को जलाने के बजाय उन लोगो को दे दिया जाये, तो क्या वह अच्छा नही रहेगा? इस पर गाधी जी ने कहा 'तब तो हमारा उद्देश्य ही विफल हो जायेगा। हम देशवासियो मे विदेशी वस्त्रो के विरुद्ध घृणा जगाना चाहते है। वह उन्हे जलाने से ही जागेगी।'

बात समझदारी की थी। महात्मा मुशीराम चुप हो गये। परन्तु कुछ ही दिन बाद यह समझदारी लुप्त हो गई। मौलाना मुहम्मद अली और मौलाना शौकत अली ने गाधी जी से कहा 'यह कैसी जहालत है कि इतने कीमती कपडो को आग मे झोक कर बरबाद कर दिया जाये? इससे तो अच्छा यह है कि हम इन्हे बडल बाध कर तुर्की भेज देते है। वहा के गरीब गुर्बा इन्हे पहन कर गुजारा कर लेगे।'

गाधी जी ने कहा 'इसमे कोई हर्ज नही। वहा ये विदेशी वस्त्र न होगे। ऐतराज इनके भारत मे पहने जाने पर है।'

(पृष्ठ ६ का शेष)

कुछ पौराणिक हिन्दू ......

मुसलमान का अर्थ खाटी ईमानदार है। हमारा ईमानदारो से कोई विरोध नही पर यदि वह अपने को हिन्दू जाति एव धर्म का स्वीकार नही करेगा, तो उसे मुसलमान नही कहा जायेगा, उसे पापी (काफिर) एव मिथ्यावादी कहा जायेगा। बायबिल कहता है कि सृष्टि के पहले अधकार था। इसलिए सब कोई अधकार से पैदा हुए है, इसलिए हिन्दू हैं। अपने पडोसियो से प्रेम करने को भी कहता है। पच तत्व एव वनस्पति सबसे निकट के पडोसी है। उनसे प्रेम करना तो हिन्दू धर्म है। इसलिए जो ईसाई हिन्दू जाति एव धर्म का विरोध करता है, वह सच्चा ईसाई हो नहीं सकता।

हिन्द माता की पूजा

मैने मकर सक्रान्ति तारीख १४ जनवरी सन् १९६८ ई० को हिन्द माता की पूजा गाव के शिव मन्दिर प्रागण मे की थी। हमारी कोल भाषा मे काली माता को 'हे दे माता' कहते है। हिन्दीभाषी हिन्द माता इन्हे कहते है। मैने काली मूर्ति के स्थान पर दुर्गावती नाम की गाव की लोहारिन कुमारी को बिठाया था, जो काले रग की थी। उन्हे कागज का मुकुट पहनाया था। उनके चरणो मे मन्दिर की शिव प्रतिमाओ को रखा था। उनका चरण धो कर फूलमाला से उनकी पूजा की थी। मैने प्रार्थना की थी कि तू आदिमाता है। तेरी ही संताने पचतत्व या पचदेवता है। तेरा ही रूप यह शस्य श्यामला एव द्रुमदल शोभिनी भूमि माता है। हम सभी जीव तेरी ही सताने है, क्योकि हमारा शरीर पचतत्व का है। पचतत्व एव वनस्पति से जीवन धारण करते है। तू ही पार्वती या दुर्गा रूप मे हमे सुख से जीने का सदेश एव शक्ति देती है। इसलिए इस देश, जाति, धर्म, भाषा, लिपि सबकी उत्पत्ति आपसे हुई है। इसलिए इन सबका नामकरण तेरे नाम से कोल भाषा मे रख कर तेरा सम्मान करते है। दुर्गामाता की भाषा हिन्दी (सस्कृत) का नामकरण भी तेरे नाम पर रख कर चतुर्वर्ण (दुर्गामाता की सन्ताने) अपने कोल भाइयो का सम्मान करते है। अत मे उनके हाथ से प्रसाद ग्रहण किया था।

गाव द्वारा बहिष्कार

मेरे इस कृत्य से गाव के पुजारी ने हमारे परिवार को गाव की ओर से पूर्ण बहिष्कार का दड दिया था। आज तक हमे माफ नही किया गया है। किन्तु इस पूजा से शास्त्र का यह वचन सत्य हो गया कि शूद्र कुमारी को देवी रूप मे पूजा करने पर पुत्र प्राप्ति होती है। इस पूजा के ठीक एक साल बाद १८ साल के विवाहित जीवन मे मैने तारीख १५ जनवरी सन् १९६८ ई० को प्रथम पुत्र का मुख देखा। इस तरह आद्याशक्ति ने उक्त पूजा से प्रसन्न हो कर मेरे वश की रक्षापूर्वक हिन्दू की उपरोक्त वशावली एव परिभाषा की सत्यता पर मुहर लगा दी थी।

(एक बार पूजा से पुत्र काकतालीय न्याय से भी हो सकता है। प्रमाण तभी बन सकता है, जब हर बार पूजा से पुत्र प्राप्ति हो। —स०)

ग्राम कुचैना, पो० सरगीगढ, जिला
सुन्दरगढ, उडीसा-७७००३७

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब की विशेष बैठक

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पजाब की कार्यकारिणी एव अन्तरग सभा की विशेष बैठक शुक्रवार दिनाक ३१ अगस्त २००१ को हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर मे श्री डी० आर० गुप्ता की अध्यक्षता मे हुई।

विचारणीय विषय थे :

पजाब मे स्थित सभी आर्य समाजो की प्रोपर्टी के सकलन के सम्बन्ध मे।

सभा की जालन्धर स्थित प्रोपर्टी के सम्बन्ध मे।

चरित्र निर्माण शिविरो की प्रगति पर विचार एव नए सुझाव।

पजाब मे वेद प्रचार से सम्बन्धित विशिष्ट परियोजना हेतु समकालीन पग।

बजवाडा मे निर्माणाधीन महात्मा हसराज स्मारक के सम्बन्ध मे।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब की आर्थिक स्थिति का आकलन।

४ अप्रैल २००१ को हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर मे सम्पन्न हुई बैठक की कार्यवाही की सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई। इस बैठक मे निम्नलिखित विषयो पर विचार विमर्श हुआ

श्री डी० आर० गुप्ता, प्रधान ने कहा कि पजाब मे स्थित लगभग उन्ही आर्य समाजो के विवरण का सकलन सुचारु रूप से हो रहा है, जिन्होने सभी जिलो मे गठित उप-समितियो के सयोजको से अनुरोध किया कि वे अपने अपने जिलो मे सभी आर्य समाजो की प्रोपर्टी के सकलन के बारे मे रिपोर्ट उपसभा को पन्द्रह दिन के भीतर प्रस्तुत करे। इन्होने भिन्न-भिन्न जिलो मे आर्य समाजो की विवादित प्रोपर्टी पर विचार विमर्श करते हुए कहा कि जिले के सयोजक इस सम्बन्ध मे उपसभा को सूचित करे। जैसे जिला अमृतसर मे गण्डा सिहवाला आर्यसमाज, आर्य समाज किदवई नगर (लुधियाना) आदि।

अमृतसर मे स्थित आर्य समाज गण्डा सिहवाला पर चर्चा करते हुए प्रिसिपल ऐम ऐल ऐरी, सयोजक उपसमिति अमृतसर, ने कहा कि जिस पार्टी ने तीन एकड भूमि आर्य समाज गण्डासिहवाला को दी थी, उसी पार्टी के सदस्यो ने ४० वर्ष पूर्व उस भूमि के काफी भाग पर अधिकार कर लिया है और भूमि को उन्होने बेच दिया है, जिन पर दुकाने, कोठिया तथा मन्दिर बन गये है। हमने उन पर कचहरी मे मुकदमा दायर किया है। उन्होने सुझाव दिया कि आर्य समाज गण्डा सिहवाला के पास २ कनाल ६ मरले जो भूमि है, उस पर यज्ञशाला बना लेनी चाहिए, जिससे भूमि पर सभा का अधिकार हो सके। प्रिसिपल इन्द्रजीत तलवाड़ ने कहा कि प्रिसिपल ऐम ऐल ऐरी इसकी विस्तृत रिपोर्ट तथा मुकदमे की कापी उपसभा एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को शीघ्र भेजे। आर्य समाज कबहरामपुर (जिला गुरदासपुर) की प्रोपर्टी पर चर्चा हुई। इस समय आर्य समाज मे स्कूल का साइकल शेड बना हुआ है। वहा से स्कूल का साइकल स्टैड हटवा कर, पैसा इकट्ठा करके यज्ञशाला बनवानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त श्री डी० आर० गुप्ता ने पजाब के सभी जिलो की उपसमितियो के सयोजको से अनुरोध किया कि वे अपने अपने जिले की आर्य समाजो की प्रोपर्टी के आकलन के सम्बन्ध मे विस्तृत रिपोर्ट उपसभा को पन्द्रह दिन के भीतर भेजे।

सभा की जालन्धर स्थित प्रोपर्टी के सम्बन्ध मे प्रधान जी द्वारा बनाई गई उपसमिति के सदस्यो की रिपोर्ट पर सन्तोष व्यक्त किया गया। करतारपुर की आर्य समाज इस समय स्वतत्र रूप से चल रही है। इस आर्य समाज को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब के अन्तर्गत लाना चाहिए।

श्री डी० आर० गुप्ता ने कहा कि जहा पर आर्य समाजे बनी हुई है, वहा आर्य समाजे ही रहेगी। आर्य समाजो मे हवन यज्ञ या साप्ताहिक सत्सग ही हुआ करेंगे। उन्होने जालन्धर जिला की उपसमिति को आदेश दिया कि सभी समाजो की कार्य प्रणाली का निरीक्षण करके इसकी विस्तृत रिपोर्ट उपसभा को भेजे।

प्रिसिपल ऐम ऐल ऐरी ने कहा कि फिल्लौर मे एक प्राध्यापक धर्मपाल जी ने आर्य समाज बनाने के लिए अपनी भविष्य निधि हमे दान रूप मे दी, परन्तु वहा पर अभी तक आर्य समाज नहीं बन सका। श्री डी० आर० गुप्ता ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि इतने विलम्ब के बाद इस विषय पर चर्चा हो रही है। उन्होने इच्छा प्रकट की कि प्रिसिपल ऐम० ऐल० ऐरी तथा प्रिसिपल ए० के० वैद के नेतृत्व मे फिल्लौर मे आज से ही आर्य समाज का निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया जाए।

विभिन्न सस्थाओ के द्वारा लगाए गये चरित्र निर्माण शिविरो की प्रगति पर विचार करते हुए उनकी सफलता पर सन्तोष व्यक्त किया गया। इसके अतिरिक्त आगामी वर्ष मे लगाए जाने वाले शिविरो की रूपरेखा पर भी विचार किया गया। प्रिसिपल श्रीमती सतनाम कौर ने कहा कि डी० ए० वी० कालेज फार वीमैन, फिरोजपुर कैट मे लगभग एक सौ छात्राओ का २१ सितम्बर २००१ से २६ सितम्बर २००१ तक चरित्र निर्माण शिविर लगेगा। श्रीमती पूर्णप्रभा शर्मा, प्रिसिपल हसराज महिला महाविद्यालय ने कहा कि इस वर्ष

(शेष पृष्ठ ११ पर)

(पृष्ठ १ का शेष)

नये विश्व युद्ध के ......

हमारी दशा उस लगडे लूले की सी है, जिसके न हाथ काम करते है, न पैर। इसलिए हम इसे नीति कुशलता मानते है कि हमारा काम कोई और कर दे। अफगानिस्तान हमारा अहित कर रहा है। उसका दड हम स्वय न दे कर अमेरिका से दिलवाना चाहते है। और हम यह भूल जाते है कि जब हमारी पगुता जगजाहिर हो गई, तब हमे अमेरिका को उसका क्या मूल्य चुकाना पडेगा।

अफगानिस्तान के विरुद्ध कार्रवाई मे अमेरिका ने भारत की अपेक्षा पाकिस्तान को अधिक प्रमुखता दी है। यह स्वाभाविक भी है। पाकिस्तान की सीमाए अफगानिस्तान से छूती है। उसकी सहायता अधिक मूल्यवान है।

परन्तु जिस गठबन्धान मे पाकिस्तान आतकवाद विरोधी देश का मुखौटा पहन कर सम्मिलित हुआ हो, उसमे भारत किस प्रकार सम्मिलित हो सकता है? वह बीस वर्षो के इतिहास को भुला कर यह मान सकता है कि पाकिस्तान आतकवाद विरोधी देश है? यह तो रात को दिन कहना हुआ।

फिर जब एक बार किसी भी बहाने अमेरिकी सेनाए और गुप्तचर विभाग इस उपमहाद्वीप मे अपने पाव जमा लेगे, तब उन्हे उखाडने का क्या उपाय होगा? यह सब काम अमेरिका के नेतृत्व मे न हो कर सयुक्त राष्ट्र सगठन के अधीन होना चाहिए। कहा तो हम पाकिस्तान को आतकवादी देश घोषित करवाने का प्रयत्न कर रहे है, और कहा हम आतकवाद का सफाया करने मे उसे अपना साथी बन जाने दे। जिसे हम पक्के तौर पर चोर जानते है, उसे किसी के कहने पर साह कैसे मान ले? यह एक बडी उलझन है।

अफगानिस्तान एक लम्बे गृह युद्ध मे फसा है। तालिबान विरोधी उत्तर गठबन्धन इसलिए हारता गया कि उसे सशक्त राष्ट्रो की ओर से यथेष्ट सहायता नही मिली। अब आतकवाद से पीडित भारत, रूस और अमेरिका अफगानिस्तान के विरुद्ध कार्रवाई करने को तैयार है। उसी समय दुर्भाग्य से उत्तरी गठबन्धन के नेता अहमदशाह मसूद की आतकवादियो ने छल से हत्या कर दी। यदि वह जीवित रहते, तो वह सहायक हो सकते थे।

ईरान से भी अफगानिस्तान की सीमा छूती है। ईरान भी तालिबान से रुष्ट है। परन्तु अमेरिका से उसका साप नेवले का सा वैर है। तालिबान के विरुद्ध वह अमेरिका की सहायता नही करेगा। अमेरिका ने भी उसका नाम आतकवाद प्रसारक देशो मे लिख रखा है।

कट्टर इस्लामी आतकवाद से कई उदारपन्थी इस्लामी देश भी पीडित है। अल्जीरिया, मिस्र, तुर्की, लेबनान, आदि आतकवाद की व्यथा भुगत रहे है। पर गैर मुस्लिम देशो मे कट्टर इस्लाम धार्मिक उन्माद का रूप धारण कर लेता है और राक्षसी कृत्यो पर उतर आता है।

आतकवाद के पनपने के अनेक कारण है। धनी देशो द्वारा अविकसित निर्बल देशो का शोषण उसका एक बडा कारण है। जब तक यह कारण बना रहेगा, तब तक आतकवाद का उन्मूलन कर पाना असम्भव होगा। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक उन्नति, विशाल, आधुनिकतम शस्त्रो से सुसज्जित सेनाए आतकवाद के सामने कुठित हो जाती है। वियतनाम मे फ्रासीसी और अमेरिकी सेनाए हारीं, अफगानिस्तान मे रूसी सेना हारी, कश्मीर मे भारतीय सेना भी उलझी हुई सी है।

इस समस्या का कोई हल तो निकलना ही चाहिए, पर ऐलोपैथिक दवाई की तरह इलाज रोग से अधिक कष्टदायक और हानिकारक नही होना चाहिए। मेढक आपसी झगडे को निपटाने के लिए साप से सहायता लेने लगे, तो वह सभी मेढको के लिए विनाशकारी होगा, क्योकि अन्त मे साप सब मेढको को खा जायेगा।

अमेरिका को जो क्षति हुई है, उससे हमे सहानुभूति है। पर हमे क्षोभ है कि जब आतकवाद से कश्मीर मे हमे क्षति हो रही थी, यहा तक कि जिस दिन राष्ट्रपति बिल क्लिटन भारत आये थे, उसी दिन आतकवादियो ने २३ सिखो की हत्या करके अपनी आवाज़ उन तक पहुचाई थी। तब भी अमेरिका ने आतकवाद पर ध्यान नहीं दिया। आज अमेरिका को भारत की सहानुभूति और सहायता की आवश्यकता है। हमे वह देनी चाहिए, परन्तु अपने हितो की उपेक्षा करके नही।

वैद्य विद्यारत्न, ४११, जागृति ऐन्क्लेव, पटपड़गज, दिल्ली

शिष्टाचार की बातें

- ☐ गाली गलौज के शब्द कभी भी मुह से न निकालो। गाली देने वालो की सभ्य लोग मन मन प्रतिष्ठा नहीं करते है।
- ☐ कसम कभी नहीं खानी चाहिये।
- ☐ किसी देश या जाति के धार्मिक या राष्ट्रीय झण्डे का अपमान मत करो। जब राष्ट्रीय गान गाया जाय तो खडे हो कर अपना सम्मान प्रगट करो।
- ☐ प्रार्थना के समय आखे बन्द रखो, मन को स्थिर रखो और अपना ध्यान परमेश्वर मे लगा दो।
- ☐ बहस मे गर्मी नहीं होनी चाहिये। दूसरे की बात धैर्यपूर्वक सुन कर शान्त भाव से उत्तर देना चाहिये।

समाचार जगत्

पानीपत में हिन्दी दिवस समारोह

आज आर्य समाज माडल टाउन, पानीपत मे हिन्दी दिवस समारोह उल्लासपूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती दुर्गा शर्मा ने की। मुख्य वक्ता थे डा० बी० बी० शर्मा हिन्दी विभागाध्यक्ष, आर्य कालेज, पानीपत, श्री नफेसिंह शास्त्री तथा श्री बी० बी० गुप्ता।

भाषण प्रतियोगिता में १५ बच्चो ने भाग लिया। ये बच्चे पानीपत के भिन्न-भिन्न विद्यालयों से आए हुए थे। बाल विकास स्कूल के बच्चे प्रथम तथा द्वितीय स्थान पर रहे और माता हरकौर आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल की छात्रा तृतीय स्थान पर रही। समारोह का आयोजन श्री तीर्थराम मुटरेजा ने किया।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत के लिए सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। तुरन्त सम्पर्क करें

प्रधान आर्य समाज, ३३, जगन्नाथ
विहार, पानीपत-१३२१०३

सहोदय संगठन की वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनाक २७.८ १००१ को डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल यूनिट-८, भुवनेश्वर के सभागार में सहोदय सगठन की ओर से वाद-विवाद प्रतियोगिता (कनिष्ठ ग्रुप) का आयोजन किया गया, जिसमें आठ विभिन्न स्कूलो के १६ छात्रो ने भाग लिया। विषय था– "सीमावर्ती विवादो का हल शान्ति वार्ताओ द्वारा सभव है या नहीं?"

निर्णायक मंडलियों के अनुसार डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल यूनिट-८ की कु० लोपामुद्रा मिश्र को प्रथम पुरस्कार दिया गया। डी० ए० वी० सी ऐस० पुर द्वितीय, डी० ए० वी० ब्रह्मपुर तथा सैनिक स्कूल तृतीय स्थान पर रहा। स्कूल की प्राचार्या श्रीमती भाग्यवती जी नायक ने विजेताओ को हार्दिक बधाई दी। विद्यालय के चेयरमैन श्री मदनमोहन पण्डा जी ने पुरस्कार वितरित किये।

डी० ए० वी० यूनिट-८ ने सदा प्रथम स्थान प्राप्त कर गौरव प्राप्त किया है।

जूनागढ़ में महिला पंडित

आर्य समाज जूनागढ मे बहन जी अन्नाबेन पी लकिया को महिला पडित के रूप मे नियुक्त किया गया है।

श्रावण मास के दौरान प्रतिदिन यजुर्वेद के मन्त्रो की आहुति आर्य समाज जूनागढ मे दी गयी। आश्विन मास मे प्रतिदिन सामवेद के मन्त्रो की आहुति देने का आयोजन किया गया।

श्री रमणीकभाई पटेल नही रहे

जूनागढ़ आर्य समाज के सक्रिय सदस्य एव जूनागढ शहर के प्रतिष्ठित समाज सेवक श्री रमणीक भाई पटेल का दुःखद अवसान दिनांक २८ ८.२००१ को हो गया। इससे आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

बैजनाथपारा रायपुर मे श्रावणी समारोह

आर्य समाज बैजनाथपारा रायपुर आर्य समाज टाटीबद, मतिरा आर्य समाज जवाहरनगर रायपुर, आर्य समाज न्यू राजेन्द्र नगर रायपुर एवं दयानन्द सेवाश्रम टाटीबद रायपुर के सामूहिक तत्वावधान मे दिनाक ४ ८ २००१ से ३० ८ २००१ तक श्रावणी पर्व मनाया गया, जिसके अन्तर्गत प्रतिदिन सुबह ९ से ११ बजे एब साय ३ से ६ बजे तक यज्ञ हवन एव प्रवचन का कार्यक्रम विभिन्न स्थानो एव समाजो में किया गया। इसमे समाज के पदाधिकारी सदस्यो एव गणमान्य सदस्यो ने अपूर्व सहयोग प्रदान किया एव कार्यक्रम मे भाग लिया। श्री आ० सजयदेव जी, आ० कृष्णदेव सारस्वत, त्रिलोकीनाथ छत्रिय, प० इन्द्रमणि शास्त्री, रामदेव वैदिक, प० सूरजदेव आर्य एव राजीव आर्य के प्रवचन हुए। समस्त कार्यक्रम माता कौशल्या देवी प्रधान आर्य सगाज की अध्यक्षता एवं मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

माडल टाउन जालन्धर मे श्रावणी पर्व

स्वाध्याय के इस महान पर्व का सोलह दिन तक पारिवारिक सत्सग के रूप में आयोजन किया गया।

इस शुभावसर पर आचार्य राजू वैज्ञानिक ने वेदामृत वर्षा की। वैदिक सस्कृति की महानता, जीवन को सुखमय कैसे बनाया जाय? धर्म क्या है? यज्ञ का वास्तविक स्वरूप, मनुष्य का ध्येय क्या है आदि विषयो पर बहुत सुन्दर ढग से प्रकाशित डाला।

प्रत्येक परिवार मे गतवर्ष की अपेक्षा दुगनी हाजरी रही। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे श्री अरविन्द जी घई, श्री रवि शर्मा, श्री सत्यप्रकाश शाम्त्री जी का सहयोग रहा।

(पृष्ठ १० का शेष)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा.......

महाविद्यालय शरत् अवकाश मे पचास छात्राओ का छह दिन का चरित्र निर्माण शिविर लगाएगा, जिसमे प्राध्यापिकाए भी भाग लेगी। डी० ए० वी० कालेज बटाला और अमृतसर के प्राचार्य महोदय ने भी आगामी छुट्टियो मे चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन करने का प्रस्ताव रखा।

पजाब मे वेद प्रचार से सम्बन्धित परियोजनाओं पर विचार विमर्श करते हुए श्री डा० सी० प्रकाश, उपप्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने कहा कि वेद प्रचार के साथ यह भी अति आवश्यक है कि लोगों मे दहेज, जातपात एव भ्रष्टाचार जैसी सामाजिक कुरीतियो के सम्बन्ध मे चेतना लाई जाए। इसके अतिरिक्त डी० ए० वी० सस्थाओ मे विचार-गोष्ठिया तथा वाद-प्रतिवाद प्रतियोगिताएं करवाए जाने का प्रबन्ध किया जाना समुचित होगा।

इस उद्देश्य से सभी डी० ए० वी० संस्थाए तथा आर्य समाज स्थानीय स्तर पर सामूहिक रूप से शनिवार ३ नवम्बर, २००१ को 'जन चेतना यात्रा' निकालेगे, जिसमें कम से कम एक हजार विद्यार्थियों, प्राचार्यों, अध्यापकों एवं नगर के गणमान्य नागरिकों को भाग लेना चाहिए। 'जन चेतना यात्रा' जिला स्तर पर भी निकाली जाएगी। दो तीन सस्थाए मिल कर संयुक्त रूप से 'जन चेतना यात्रा' निकाल सकती है। डा० उनियाल जी ने कहा कि इस विषय की जानकारी विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु वैदिक शोध सस्थान, साधु आश्रम, होशियारपुर से प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओ में प्रकाशित करेगे। 'जन चेतना यात्रा' के नेतृत्व के लिए डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के पदाधिकारियो/सदस्यो, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के सदस्यो को आमत्रित किया जाएगा। इसके विषय मे समाचार पत्रो के सम्पादको को भी सूचित किया जाएगा।

स्थानीय आर्य समाजो मे सदस्यो की कम उपस्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए श्री डी० आर० गुप्ता ने कहा कि आर्य समाजो मे होने वाले दैनिक या साप्ताहिक हवन एव सत्सग मे संस्थाओ के प्रिंसिपल महोदयो एव अध्यापक वर्ग को भी जाना चाहिए। उन्होने कहा कि प्रत्येक सस्था प्रमुख का यह कर्तव्य है कि वह सस्था मे अध्यापकवृन्द एवं विद्यार्थियो को महर्षि दयानन्द का अमर सन्देश दे तथा उन्हे आर्य समाज के दैनिक तथा साप्ताहिक सत्सग मे भाग लेने के लिए प्रेरित करे।

उन्होने कहा कि उपसभा इस वर्ष डी० ए० वी० पब्लिक/एडिड स्कूलो तथा कालेजों के प्रिंसिपलो के शिविरों का भी आयोजन करेगी जिन्हें 'आर्य चेतना शिविर' के नाम से जाना जाएगा। इनमें प्रिंसिपल महोदयों की सख्या प्रत्येक शिविर में कम से कम बीस होगी। एक शिविर लुधियाना मे तथा दूसरा चम्बा/हरिद्वार मे लगाया जाएगा। यह शिविर शरत् अवकाश मे तीन दिन के लगेगे। एक शिविर दिसम्बर मास की छुट्टियो मे अमृतसर मे लगेगा। इस शिविर मे वे प्रिंसिपल भाग लेगे, जिन्होने पहले शिविरो मे भाग नही लिया।

प्रिंसिपल श्रीमती पी० पी० शर्मा ने लुधियाना में डी० ए० वी० सस्थाओ के प्रिंसिपल महोदयो का एक शिविर १ अक्टूबर २००१ से ६ अक्टूबर, २००१ तक लगाने का प्रस्ताव रखा, जिसमें पुरुष और महिला प्रिंसिपल भाग लेगे। इन शिविरो को सफल बनाने के लिए विद्वान् प्रवक्ताओ को आमत्रित किया जाएगा।

शैक्षणिक सस्थाओ मे वेद प्रचार पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री डी० आर० गुप्ता ने कहा कि डी० ए० वी० कालेज और डी० ए० वी० स्कूलो मे वेद प्रचार के लिए प्राध्यापको एव अध्यापको को प्रोत्साहित किया जाएगा। कालेजो और स्कूलो के स्टाफ मे से एक प्राध्यापक/अध्यापक नियुक्त किया जाएगा, जो विद्यार्थियो मे वेद प्रचार का कार्य करे। इसके लिए कालेज के प्राध्यापक को प्रति मास ५०० रुपये तथा स्कूल के अध्यापक को प्रति मास २०० रुपया दिया जाएगा। यह प्रस्ताव तब लागू होगा, जब डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली इसे पारित करेगी।

प्रिंसिपल ऐम० ऐल० ऐरी ने कहा कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा प्रचारको की सख्या बढाए। उनके इस सुझाव को स्वीकार करते हुए प्रिंसिपल इन्द्रजीत तलवाड को अधिकार दिया गया कि वह समाचार पत्रो मे प्रचारको एव भजनीक मडली के लिए रिक्त पद प्रकाशित करे।

बजवाडा मे निर्माणाधीन महात्मा हसराज स्मारक की प्रगति पर विचार विमर्श करते हुए श्री डी० आर० गुप्ता ने कहा कि अब इस स्मारक को पूरा करने के सम्बन्ध मे श्री जी० पी० चोपडा जी, प्रधान डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली से प्रार्थना की गई है। आशा है कि इस वर्ष महात्मा हसराज जी का निर्माणाधीन स्मारक बन जाएगा।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब की आर्थिक स्थिति पर विचार विमर्श करकेयह निर्णय लिया गया कि उपसभा के अन्तर्गत आने वाली सभी समाजे अपना दशाश उपसभा को भेजे। इसके अतिरिक्त श्री डी० आर० गुप्ता ने यह सुझाव दिया कि पजाब के सभी डी० ए० वी० कालेज तथा डी० ए० वी० सहायता प्राप्त स्कूल ११०० रुपये दान राशि चैक/ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब, कार्यालय साईदास ए० एस० सी० सैं० स्कूल पटेल चौक जालन्धर को भेजे। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

प्रिंसिपल इन्द्रजीत तलवाड ने कहा कि समस्त जिलो के सयोजक वृंद से प्रार्थना है कि वे अपने-अपने ज़िले मे स्थित आर्य समाजो की प्रोपर्टी के सम्बन्ध मे व्यौरा शीघ्र १५ दिन के भीतर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब को भेजे ताकि उस पर उचित कार्यवाही की जा सके।

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स नं० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. 11082/2001
POSTED AT N.D.P.O ON 26/27-9-2001 दिनांक ३०-९-२००१

आर्य युवक समाज द्वारा वृक्षारोपण

आर्य युवक समाज के सदस्य वृक्षारोपण के लिए तैयार।

आर्य युवक समाज के तत्वावधान मे दिनाक १५ अगस्त से निरन्तर वृक्षारोपण का कार्यक्रम जारी है। इस अवसर पर आर्य युवक समाज के महामत्री यशवीर जी ने बताया कि दिल्ली के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश एव हरियाणा के डी० ए० वी० स्कूलो तथा अन्य विद्यालयो मे हमने वृक्षारोपण करवाए। राष्ट्रीय राजमार्गों के दोनो ओर वृक्षारोपण किए गए।

विदेशी चुनौती का सामना दयानन्द ने किया

उदयपुर। उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारतवर्ष पर चतुर्दिक सांस्कृतिक आक्रमण हो रहे थे, और वैदिक धर्म परदेशी सत्ता से आक्रान्त था, उस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे महान व्यक्ति हुए, जिन्होंने उस चुनौती को स्वीकार कर वैदिक डिमडिम घोष कर इस महान संस्कृतिक विरासत की पुनर्स्थापना की।

खादी ग्रामोद्योग आयोग के पूर्व अध्यक्ष भानुकुमार शास्त्री ने श्रावणी उपाकर्म एव ऋषि तर्पण के पुण्य अवसर पर आर्य समाज हिरणमगरी मे सभा को सम्बोधित करते हुए ये शब्द कहे।

उन्होने तत्कालीन शैक्षिक वातावरण का उल्लेख करते हुए बताया कि तब कृष्ण व सुदामा अर्थात् राजा व रंक एक ही गुरुकुल में पढ़ते थे जबकि आज सुदामा खैराती सरकारी स्कूल में व कृष्ण कान्वेंट पब्लिक स्कूल में पढ़ते हैं।

इस अवसर पर इन्द्रदेव पीयूष ने प्रासंगित मधुर भजनों से उत्सव को आनन्दमय बना दिया।

बृहद् यज्ञ व यज्ञोपवीत बदलने का संस्कार भी सम्पन्न हुआ।

श्रीमती नीलम खुल्लर को राजकीय पुरस्कार मिला

हर्ष का विषय है कि डी० ए० वी० पब्लिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चन्द्रनगर, जनकपुरी की प्रधानाचार्या श्रीमती नीलम खुल्लर को शिक्षक दिवस २००१ के अवसर पर 'राजकीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया तथा इसी वर्ष इनको 'राष्ट्रीय राधाकृष्णन' पुरस्कार से भी विभूषित किया गया।

डी० ए० वी० की परम्परानुसार इस वर्ष भी हमारे छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों मे अनेकानेक पुरस्कार प्राप्त हुए।

प्रतियोगिता का नाम	स्तर	स्थान
कव्वाली प्रतियोगिता	क्षेत्रीय स्तर	प्रथम
समूह-गान प्रतियोगिता	क्षेत्रीय स्तर	द्वितीय
लोकगीत प्रतियोगिता	क्षेत्रीय स्तर	तृतीय
टेबल टेनिस प्रतियोगिता	क्षेत्रीय स्तर	प्रथम

आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का साप्ताहिक सत्सग

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के ९ ९ २००१ के साप्ताहिक सत्सग मे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार, नई दिल्ली के ५० छात्र-छात्राओ एव अध्यापको ने भाग लिया।

श्री नरेश सोलकी तथा श्री इन्द्रसेन विश्वप्रेमी का ईश्वर भक्ति सगीत प्रवचन हुआ। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री का सुन्दर एव प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

मुख्याध्यापिका श्रीमती प्रेमलता गर्ग ने अपने विचार रखते हुए कहा कि शिक्षा सस्कार का सबसे बडा माध्यम है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देश की कुरीतियो, बुराइयो को जान कर उन्हे मिटाने का भरपूर प्रयास किया। प्रिं० गर्ग ने कहा कि विद्यालय का हर बच्चा शिक्षको का अपना बच्चा है, ऐसा मानना चाहिए।

आर्य समाज के प्रधान श्री शान्तिलाल सूरी जी ने अध्यापको, छात्र-छात्राओ तथा स्कूल का धन्यवाद किया। सत्सग का सफल सचालन आर्य समाज के मत्री श्री डी० आर० गुप्ता द्वारा किया गया।

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय में शिक्षक दिवस मनाया गया

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय मठपारा दुर्ग मे आर्य शिक्षा समिति द्वारा दिनांक ५ ९ २००१ को प्रात. ११ बजे सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस पर शिक्षक दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश गुप्ता एव अध्यक्ष श्री गुलाबचन्द जी वानप्रस्थी थे। शाला की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्री गुलाबचन्द जी वानप्रस्थी ने स्वागत भाषण मे शिक्षक दिवस के औचित्य पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश गुप्ता जी ने सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन के जीवन परिचय पर अपने विचार रखे। श्री शिवनाथ सिंह जी ने शिक्षकीय कार्य की महत्ता एवं उत्तरदायित्व का सारगर्भित अर्थ बतलाते हुए कहा कि "अध्यात्म ज्ञान से शिक्षा के क्षेत्र मे सर्वांगीण उन्नति एवं विकास सम्भव हो सकता है।"

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार द्वारा वेद प्रचार सप्ताह

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार फेज-१ की बहिनों ने वेद प्रचार सप्ताह २९.८ २००१ से ५.९.२००१ तक श्रद्धापूर्वक मनाया। प्रतिदिन यज्ञ एव प्रवचन वेद विदुषी डा० श्रीमती ऊषा शास्त्री जी के निर्देशन में हुए। एक सप्ताह तक जो उन्होने अमृत वर्षा की सभी भाई बहिनों ने उसे पान कर आनन्द को प्राप्त किया। समापन समारोह बुधवार दिनाक ५ ९ २००१ को श्रीमती प्रेमशील जी महेन्द्रू की अध्यक्षता में हुआ। विदुषी डा० सुषमा शर्मा एव सावित्री जी शर्मा के ज्ञानवर्धक उपदेश हुए। इस अवसर पर ४८ पुत्र वधुओ को समाज का सदस्य बनाया गया। सभी को उपहार स्वरूप एक एक हवन कुण्ड बीच में एक सामग्री का पैकेट, एक संध्या हवन की पुस्तक तथा एक सध्या हवन की कैसेट रख कर दिया। इस समय हमारी समाज की सदस्य संख्या ३०० से ऊपर हो गई है।

आर्य समाज लाजपत नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली का ४७वां वार्षिकोत्सव दिनांक २४ सितम्बर से ३० सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसमें उच्च कोटि के विद्वान् एवं अनेक सन्यासी महात्मा और भजनीक पधारेंगे। ३० सितम्बर रविवार को प्रो० श्री वेदप्रकाश जी शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का अभिनन्दन किया जायेगा।

तपोवन (देहरादून) का शरदुत्सव

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (नालापानी) देहरादून का शरदुत्सव १० अक्टूबर से १४ अक्टूबर २००१ तक आयोजित किया जा रहा है। मुख्य प्रवचनकर्ता के रूप में दिल्ली से डा० शिवकुमार जी शास्त्री पधार रहे हैं।

मुलुंड में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मुलुंड कालोनी का वेद प्रचार कार्यक्रम दिनांक १६.८.२००१ से २१.८.२००१ तक आर्य समाज के सत्संग हाल में हर्ष उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमे सुप्रसिद्ध कथाकार डा० ओमदत्त जी के व्यावहारिक वेद उपदेश तथा सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक आशाराम जी एव प्यारेलाल के भजन हुए। आचार्य जी ने वेद प्रचार हेतु आधुनिक मीडिया तथा चैनल्स से प्रचार प्रसार करने पर बल दिया, जिससे कि वेद का उपदेश जन जन तक पहुचाया जा सके।

श्री शिवदत्त सिंह देव शास्त्री, स्वामी सुरेन्द्रानन्द एव सुषमासिंह जी ने सभा को सम्बोधित किया।

सूचना भेजें

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान, आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रशिक्षण प्राप्त धर्ममार्तण्ड उपाधि उत्तीर्ण धर्मशिक्षक कृपया अविलम्ब निम्नलिखित सूचनाएं संस्थान के कार्यालय को प्रेषित करें—

धर्मशिक्षक का नाम, कार्य स्थल, वेतन तथा अन्य जो भी सूचना वे देना चाहें।

प्राचार्य, डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा
संस्थान, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–१

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रबोध महाजन, सभा मत्री द्वारा राकेश भार्गव के प्रबन्ध में मयंक प्रिन्टर्स 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष : 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन : 3363718, 3362110) सम्पादक—उदयवीर विराज

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये
विदेशो मे ३० पौंड या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये
वर्ष ६६, अक ३२
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, ७ अक्टूबर, २००१
द्वितीय आश्विन कृ०-५-वि० स०-२०५८
सप्ताह ७ अक्टूबर से १३ अक्टूबर

आतंकवाद की जड़ में मज़हब हैं

मज़हब धर्म नही है। धर्म परोपकार है, मज़हब स्वार्थ-चिन्तन है। धर्म त्याग और बलिदान है, मज़हब सगठन और शोषण है। धर्म सेवा है, मज़हब शासन है। इस समय जो युद्ध के बानक बन रहे है, उनका कारण मज़हब है।

इस समय ससार मे तीन मज़हब प्रमुख है इस्लाम, ईसाई और यहूदी। बौद्ध और हिन्दू मज़हब की सीमा मे नही आते, क्योंकि वे मज़हबी आधार पर संगठित नही है।

इन तीन मे यहूदी मज़हब सबसे पुराना है—लगभग तीन हजार वर्ष पुराना। ईसाई मज़हब दो हजार वर्ष पुराना है, इस्लाम चौदह सौ वर्ष पुराना है। इन तीनो का जन्म पश्चिमी एशिया मे, फिलस्तीन और अरब मे हुआ। इन तीनो मे ही प्रभुता के लिए भीषण सघर्ष होता रहा है।

जेरुसेलम

फिलस्तीन मे स्थित जेरुसेलम नगर को ले कर इन तीनो मज़हबो मे सैकडो वर्षों तक मज़हबी युद्ध चला है और उनमें कभी एक पक्ष की और कभी दूसरे पक्ष की जीत हुई है। इन युद्धों को इतिहास मे 'धर्म युद्ध' (क्रूसेड और जिहाद) नाम दिया गया है।

अब अफगानिस्तान के तालिबान फिर जिहाद का नारा लगा रहे है। उनका कहना है कि ईसाई और यहूदी उनके विरुद्ध एकजुट हो गये है और उनके विरोध में सारी दुनिया के मुसलमानों को एकजुट हो जाना चाहिए।

स्थिति यह है कि यहूदियों की संख्या ईसाइयों और मुसलमानो की अपेक्षा बहुत कम है। उनका एक बहुत ही छोटा सा देश इजराइल है, जिसकी जनसख्या एक करोड़ से भी कम है। उसके जन्म काल से ही इस्लामी अरब देश उसे फूटी आंखों देख नहीं पा रहे हैं। इजराइल जो कई लड़ाइयों के बाद भी बचा हुआ है, उसका बड़ा कारण यह है कि अमेरिका आदि अनेक ईसाई देश उसके समर्थक हैं। इजराइल जब बना था, तब उसकी भूमि से काफी बडी सख्या मे अरब लोगो को हटना पडा था। वे अन्य अरब देशो मे शरणार्थी बन कर फिरते रहे, परन्तु किसी अरब देश ने उन्हे अपने यहा रखना स्वीकार नही किया, यद्यपि उनके पास विस्तृत भूभाग है और पैट्रोलियम से उन्हे बैठे बिठाये प्रचुर आय होती है।

यहूदी और मुसलमान, दोनो ही कट्टरपन्थी और लडाके है। फिलस्तीन के मुसलमान लडाकों ने इजराइल के यहूदियो और उनके समर्थक अमेरिका के विरुद्ध आतकवादी हथकडे अपनाये।

विजय पावें युद्ध में योद्धा हमारे

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति।
समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु।

यजु० २९ ५७

ध्वजाए फहरा रही है, युद्ध का ढोल बार बार बज रहा है। हे इन्द्र, ये जो शत्रु सेनाए बढी आ रही है, इन्हे वापस धकेल दो। हमारे घुडसवार आगे बढ रहे हैं। हमारे रथी योद्धा युद्ध मे विजयी हो।

आतकवादी हथकडे

आतकवादी हथकडो का अर्थ है सार्वजनिक स्थानो पर बम विस्फोट करके लोगो मे भय उत्पन्न करना। शक्तिशाली सरकारों के विरुद्ध जब और कुछ न किया जा सके, तब विमान अपहरण, बम विस्फोट जैसे कार्यों द्वारा अपना विरोध प्रकट किया जा सकता है।

ईसाई लोगों में धार्मिक कट्टरता कम होती जा रही है। यह शिक्षा और वैज्ञानिक उन्नति का परिणाम है। वे लोग धर्मनिरपेक्ष हो चले हैं और मज़हबी दृष्टि से ईसाइयत तेज़ी से ह्रास की ओर बढ रही है। इसके विरुद्ध इस्लाम अशिक्षा, गरीबी और अन्धविश्वासों पर पनप रहा है।

मज़हब को राजनीति से जोडने का परिणाम भी भयंकर हुआ है। आज अमेरिका आतंकवाद से त्रस्त है, परन्तु सचाई यह है कि आतकवाद के पौधे को उसने अपने पैसे से सीचा है। उसने अफगानिस्तान से रूसी सेनाओं को हटाने के लिए अशिक्षित, गरीब अफगानो का उपयोग किया। अन्धाधुन्ध धन और आधुनिक शस्त्र दे कर उन्हे मुजाहिदीन (धर्म योद्धाओ) के रूप मे सगठित किया। यह धन और शस्त्रास्त्र पाकिस्तान की मार्फत दिये गये और पाकिस्तान अमेरिका का चहेता साथी बन गया।

मदरसे

मुजाहिदीन को प्रशिक्षण देने के लिए अफगानिस्तान और पाकिस्तान मे विशेष मदरसे खोले गये। इन मदरसो मे शस्त्रास्त्रो के प्रशिक्षण के साथ साथ मजहबी धर्मान्धिता का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। उन्हे सिखाया जाता था कि सारे अमुस्लिम काफिर है। अमुस्लिमो के अधिकार मे विद्यमान भूमि दारुल हरब है। उसे काफिरो से छीन कर दारुल इस्लाम बनाना है। सारी दुनिया मे इस्लाम का शासन स्थापित करना है। इसके लिए जैसे भी हो, काफिरो का सफाया करके अधिक से अधिक भूमि उनसे छीन लेनी है।

अमेरिकी धन और शस्त्रास्त्रो के बल पर अफगानो ने रूसी सेना को अफगानिस्तान से वापस लौट जाने के लिए विवश कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे रूसी और चीनी सहायता के बल पर वियतनामी लोगो ने अमेरिका की सेना को हरा कर भगा दिया।

रूसी सेना के अफगानिस्तान से हट जाने के बाद मुजाहिदीन बेरोजगार हो गये। वे पाकिस्तान के दबाव मे रहने को तैयार नही थे। तब पाकिस्तान ने तालिबान नाम से पठानो का एक नया दल तैयार किया, जिसने पाकिस्तान की सहायता से अफगानिस्तान के ९० प्रतिशत भाग पर अधिकार कर लिया। अमेरिका यह सब देखता रहा और चुप रहा। पाकिस्तानी मदरसे लगातार नये तालिबान (मज़हब के नाम मे मारने और मरने के लिए उद्यत योद्धा) तैयार करते रहे। ये मानो जहरीले साप थे।

पाकिस्तान भारत से कश्मीर छीनने के लिए बेचैन था। जब अफगानिस्तान मे जीतने को कुछ न बचा, तब उसने जिहादियो का रुख कश्मीर की ओर कर दिया। जिहादी कश्मीर मे घुस कर लूटमार करने लगे। उन्होने चुन चुन कर हिन्दुओ को मारा और ३ लाख कश्मीरी पडितो को कश्मीर से बाहर खदेड दिया। यह क्रम १५ साल तक चलता रहा। भारत के बहुत चिल्लाने पर भी अमेरिका या सयुक्त राष्ट्र के कानो पर जू नही रेगी।

ओसामा बिन लादेन

उधर नई प्रगति यह हुई कि सऊदी अरब के एक धनी आतकवादी ओसामा बिन लादेन ने अफगानिस्तान मे अड्डा जमाया और वहा अनेक देशो से आये आतकवादियो को उच्चतम कोटि का प्रशिक्षण देना शुरू किया।

पाकिस्तान का लक्ष्य भारत था, तो ओसामा का मुख्य लक्ष्य अमेरिका था, क्योकि अमेरिका अरब देशों के मुकाबले मे इजराइल का समर्थन कर रहा था। इस्लाम के नाम पर सभी मुस्लिम देशो से चन्दा इकट्ठा किया गया। अमेरिका मे कई आतंकवादी विस्फोट किये गये। सन् १९९८ मे विश्व व्यापार केन्द्र मे एक बडा विस्फोट किया गया, जिसमे २५० से अधिक लोग मरे। उसके बाद नैरोबी और दारेसलाम मे एक ही दिन अमेरिकी दूतावासो के भवनो को बम से उडाया गया, जिसमे ३०० से अधिक लोग मरे।

आतकवादी दुनिया भर मे फैले

अफगानिस्तान और पाकिस्तान के मदरसों मे प्रशिक्षित आतकवादियो को यूरोप मे कोसोवो, रूस मे चेचन्या और

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे महमत होना आवश्यक नहीं है।

[illegible]

आत्मा का कोई लिंग नहीं है

स्वामी श्रद्धानन्द

नैव स्त्री न पुमानेष न चैवाय नपुसक ।
यद्यच्छरीरमादत्ते तेनैव स रक्ष्यते॥
सकल्पनस्पर्शनदृष्टिमोहै-
र्ग्रासाम्बुवृष्ट्या चाऽऽत्मविवृद्धिजन्म।
कर्माणुगान्यनुक्रमेण देही,
स्थानेषु रूपाण्यभिसप्रपद्यते॥

श्वेताश्वतर० ५।१०,११

अर्थ– (**एष नैव स्त्री न पुमान्**) यह आत्मा न स्त्री है, न पुरुष, (**न चैवाय नपुसक**·) न यह नपुसक ही है। (**यत् यत् शरीर आदत्ते**) जिस जिस शरीर को यह धारण करता है, (**तेनैव स रक्ष्यते**) उसी के द्वारा वह रक्षित रहता है अर्थात् उसका वह नाम रखा जाता है।

(**सकल्पन**) सकल्प, (**स्पर्शन**) स्पर्श, (**दृष्टि**) देखने की (**मोहै**·) मूढता अर्थात् अज्ञान से, (**ग्रास अम्बुवृष्ट्या च**) भोजन और जल की वर्षा से (**आत्म विवृद्धिजन्म**) आत्मा के शरीर का जन्म और वृद्धि होती है। (**अनुक्रमेण**) एक के बाद एक, बारी बार से (**देही**) देह धारण करने वाला, आत्मा (**स्थानेषु**) अलग अलग स्थानो मे (**कर्माणुगानि**) कर्मो के अनुसार (**रूपाणि**) अलग अलग रूपो को (**अभि सप्रपद्यते**) प्राप्त होता है। जैसे उसके कर्म होते है, वैसा उसका रूप होता जाता है।

मनन—यह जीवात्मा न स्त्री है न पुरुष, और न नपुसक ही है। परन्तु जिस-जिस शरीर को प्राप्त करता है उस-उससे वह नाम रखा जाता है। वह शरीर वाला जीवात्मा सकल्प, स्पर्श, दर्शन और मोह से देहो मे कर्मानुसार ही रूपो को प्राप्त होता है और क्रम से खान-पान के सिचन से देहवृद्धि और जन्म को भी प्राप्त होता है।

शरीरो की भिन्नता के कारण जीवात्मा का पुरुष, स्त्री और नपुसक नाम रखा जाता है। अन्यथा जीवात्मा न पुरुष, न स्त्री, न नपुसक है। शरीर की विशेष रचना के कारण जीवात्मा के भिन्न-भिन्न नाम रखे जाते है, परन्तु यह भिन्नता क्यो है? कैसे एक जीवात्मा पुरुष और दूसरा स्त्री बनाया गया है? क्योकि ससार मे कोई भी जीव अपनी अवस्था मे सन्तुष्ट नहीं मालूम होता। और जब यह अवस्था है तो क्यो बिना कारण एक जीवात्मा को ऐसे शरीर के अन्दर कैद किया जाता है जिससे कि उसके विचार के अनुसार दु ख-ही-दु ख मिलता है? इस प्रकार के अनगिनत प्रश्न, सशयात्मक मनुष्य के मन मे पैदा होते है। परन्तु विचारशील पुरुष इन प्रश्नो के चक्कर मे न पडते हुए तत्वो की ओर ध्यान लगाते है। वे देखते है कि पैदा होते ही बिना किसी ज्ञान के प्राप्त किये और बिना किसी प्रकार के वर्तमान सस्कारो के प्रभाव के पडने के भी बच्चे के अन्दर किन्हीं विशेष बातो मे अधिक रुचि और किन्हीं विशेष बातो से अवर्णनीय घृणा उपस्थित होती है। सिवाय इसके कि इसे पिछले जन्मो के सकल्प का परिणाम कहे, और कुछ भी समाधान इस शका का हो नही सकता। सकल्प का बडा जबर्दस्त प्रभाव होता है। अनुभव से सिद्ध किया गया है कि सकल्पमात्र से मनुष्य रोगी और रोगरहित अवस्थाओ को प्राप्त कर सकता है। सकल्प की महिमा उपनिषदो मे विशेष तौर पर वर्णन की गई है और इस जगह बतलाया गया है कि मनुष्य को अपने भाव हर समय इसलिए शुद्ध रखने चाहिए जिससे कि मरते समय उसके भाव शुद्ध हो, क्योकि उन भावो का उसके अगले जन्म पर बडा भारी प्रभाव पडेगा। इसी उत्तम विचार को लेकर फक्कडो ने यह उक्ति घडी है कि 'तपा और काहे को खपा, अन्त मता सोई गता'। परन्तु ये फक्कड लोग भूल जाते है कि जब तक तप न किया जावे अर्थात् सचाई, ब्रह्मचर्य आदि रूपी सच्चे तीर्थो का सेवन न किया जावे, तब तक अन्त भला हो नही सकता। इसलिए उसके परिणाम मे अच्छी योनि भी प्राप्त नही हो सकती। सकल्प को शुद्ध करना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु सकल्प को बनाने वाला कौन है? स्पर्श और दर्शन सकल्प के कारण है। दर्शन के लिए दूसरा शब्द 'निरीक्षण' प्रयोग कर सकते है। जीवात्मा अपनी पाचो ज्ञानेन्द्रियो से जो कुछ निरीक्षण करता है उसे प्रत्यक्ष कहते है। इस प्रत्यक्ष को फिर स्पर्श अर्थात् परीक्षा करके मनुष्य अपने लिए कार्यक्रम बनाता है। इसी निरीक्षण और परीक्षण का परिणाम नाना प्रकार के मोह होते है। 'मोह' शब्द सदैव बुरे अर्थो मे ही प्रयोग किया जाता रहा है। बुरे और अच्छे दोनो प्रकार के मोह ससार मे दिखाई देते है। अच्छे प्रकार के मोह अन्त समय अच्छे सकल्प पैदा कराते है और बुरे प्रकार के मोह से बुरे सकल्प उत्पन्न होते है। ये अच्छे और बुरे प्रकार के सकल्प भी उसी तरह पुष्टि पाते है जिस प्रकार कि खाने-पीने की वस्तुओ से मनुष्य-देह पुष्टि पाता है। सात्त्विक भोजन से देह मे जिस प्रकार सात्त्विक बुद्धि और सकल्प सपन्न होता है, उसी प्रकार राजस भोजन से राजस वृत्ति प्राप्त होती है। और जिस प्रकार कर्म से शरीर मे परिवर्तन आता है उसी प्रकार सकल्प की अवस्था भी बदलती जाती है। जब यही अवस्था है तो फिर पुरुष या स्त्री होने का अभिमान व्यर्थ है। अच्छे विचारो का परिणाम अच्छे स्त्री और पुरुष होते है और बुरे विचारो का परिणाम बुरे स्त्री-पुरुष होते है। और क्या नपुसक घृणा के योग्य है? शरीर की रचना से मन और बुद्धि का पता लगाना मूर्खों का काम है। प्राचीन रोम के इतिहास को ध्यान से पढो! क्या नासिस आदि नपुसक बडे बहादुर और उत्साहशाली सेनापति नहीं हो गुजरे? क्या गार्गी और सीता का नाम याद करने वाले यह कह सकते है कि स्त्री का शरीर घृणा के योग्य है? जीवात्मा स्त्री नहीं है। जीवात्मा पुरुष नही है। वह नपुसक भी नहीं है। केवल निरीक्षण और परीक्षण के अन्दर दोष आ जाने के कारण भिन्न भिन्न रूपो के अन्दर प्रकट होता है। इसलिए मनुष्य के सम्बन्ध जिस प्रकार के है वे सब इस एक ही जन्म तक साथ रहते है। इस देह के अन्त के साथ ही माता, पिता, भ्राता, भगिनी, पति, पत्नी आदि के सब सम्बन्ध समाप्त हो जाते है, केवल अपने किये हुए कर्मो के सस्कार साथ रह जाते है। शरीर कुछ नही, कर्मेन्द्रिया कुछ नही, ज्ञानेन्द्रिया भी कुछ अधिक सत्ता नही रखती, केवल सकल्प प्रबल है। इस सकल्प को शुद्ध रखना और जिस मन के अन्दर वह सकल्प उत्पन्न होता है उसको पवित्र करना— यही मनुष्य-जीवन का उद्देश्य है। यही कारण है कि परमात्मा ने अपने वैदिक ज्ञान द्वारा हम जीवो को मन की शुद्धि के लिए बडी प्रबल प्रेरणा की है। सारी सृष्टि की कला इस मन के चारो ओर घूम रही है। वेद और शास्त्रो का ज्ञान, मानसिक और आत्मिक यज्ञो की क्रिया का अभिप्राय यह है कि सारे ब्रह्माण्ड का प्रबन्ध इसी मन के चारो ओर चक्कर काट रहा है। इसलिए पाठकगण! बडे शुद्धभाव और पूर्ण पुरुषार्थ से इस मन के सकल्प शुद्ध करने का यत्न करो जिससे कि तुम उत्तम योनियो को प्राप्त होते हुए अन्त मे मुक्तिधाम तक पहुच सको।

दयानन्द के अध्यात्मवाद से ही हमारी उन्नति होगी

□ श्री जगदीश प्रसाद वैदिक

आर्य समाज की स्थापना को १२५ वर्ष हो चुके है। स्वामी दयानन्द ने उद्घोष किया 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' ससार को आर्य बनाओ। हम आत्म निरीक्षण करे कि हमने इस नारे को कितना सार्थक किया। हमने ससार को, भारत को, भारत के एक नगर को, नगर के एक मोहल्ले को भी आर्य नहीं बनाया। हमने तो अपने परिवार को भी आर्य नहीं बनाया। विडम्बना तो यह है कि हम मे से अधिकाश आर्य नहीं बने। दयानन्द के शिष्य आर्य को दिन मे लालटेन ले कर ढूढना पडेगा। हम मूर्ति पूजा करते है। मृतक श्राद्ध करते है। शराब पीते है। मास खाते है। आर्य समाज मन्दिर मे विद्यालय स्थापित कर विद्यालय से होने वाली आय को व्यक्तिगत कमाई का साधन बना रखा है। हम वकील है, स्वय झूठ बोलते है और पक्षकार व गवाह से झूठ बुलवाते है। हम व्यापारी है, झूठ बोल कर व्यापार करते है। रिश्वत देते है। हम सरकारी कर्मचारी है, जनता को सताते है और रिश्वत लेते है। ऐसे व्यक्ति को आर्य कैसे कहा जाये?

स्वामी दयानन्द और आर्य समाज का आधार सत्य है। लेकिन दयानन्द का उत्तराधिकारी आर्य समाज सत्य से हजारो किलोमीटर दूर है। हमारे पुरोहित, उपदेशक और सन्यासी भी सत्य से दूर है। कई आर्य समाजो मे विवाह करा कर आमदनी का अनैतिक साधन बना रखा है। कुछ तो व्यक्तिगत रूप से आदर्श विवाह मन्दिर के नाम से सस्था बना कर कमाई कर रहे है।

हमारे साप्ताहिक सत्सगों में २०-२५ व्यक्तियो की उपस्थिति रहती है, कहीं कहीं तो ३-४ व्यक्ति ही होते हैं, जबकि पौराणिक मन्दिरों में प्रतिदिन सैकड़ो हजारो की उपस्थिति रहती है। हमारे विशेष पर्वो और सम्मेलनो मे अखिल भारतीय स्तर पर एक लाख की उपस्थिति नही होती, जबकि एक पौराणिक प्रवचनकर्ता के कार्यक्रम मे नगर स्तर पर एक लाख की उपस्थिति होती है। हमारे कार्यक्रमो मे केवल आर्य समाज से सम्बन्धित व्यक्ति ही आते है। नागरिक तो आते ही नहीं है। इस स्थिति पर हमने चितन नहीं किया। आम नागरिको के सम्मिलित न होने का मुख्य कारण है कि स्वामी दयानन्द व आर्य समाज को नास्तिक माना जाता है, जबकि स्वामी दयानन्द आस्तिक थे। हमने १२५ वर्ष मे जनता के समक्ष दयानन्द का आस्तिकवाद नहीं रखा। यदि आर्याभिविनय और सस्कारविधि का प्रचार करके इन दोनो ग्रथो को पढने की प्रेरणा देते तो निश्चित ही जनता हमारी ओर आती।

गम्भीर विचारणीय बात है कि हमारा असली सिक्का नहीं चल रहा है और सभी का नकली सिक्का चल ही नहीं रहा है, खूब तेज गति से दौड रहा है।

ससार को आर्य बनाओ उद्घोष के परिप्रेक्ष्य मे ससार की छह अरब जनसख्या है। उसमे से दयानन्दी तो दस लाख भी नहीं हैं।

हमको अपनी कमजोरियो पर ध्यान देना चाहिए और नकली व्यक्तियो को हमारे सगठन से पृथक् कर देने से ही आर्य समाज की उन्नति होगी तथा दयानन्द का उद्घोष 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' साकार होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

आर्य समाज के उपनियम क्रमांक (क) में लिखा है कि जिसका नाम किसी आर्य समाज मे सदाचार पूर्वक दो वर्ष तक अंकित रहा हो। सज्जनों सदाचार की

(शेष पृष्ठ १० पर)

जब सत्य असत्य बन जाये, तब उसे त्याग दें

सत्य सत्य है, असत्य असत्य है।

सत्य ग्राह्य है, असत्य त्याज्य है। सत्य अमृत है, असत्य विष है।

सत्य असत्य बन सकता है क्या?

बन सकता है और बहुधा बनता है। विवेकशील आर्य का कर्तव्य है कि जब उसे पता चल जाये कि अमुक बात, जिसे वह अब तक सत्य समझ रहा था, सत्य नहीं है, तब वह उसे तुरन्त त्याग दे; नासमझ बदरिया की तरह मरे हुए बच्चे की सडती हुई लाश को छाती से लगाये न फिरता रहे। जिन्दा बच्चा सत्य था, वह मर गया। अब वह असत्य हो गया। अब उसकी लाश को लिये फिरने से कोई लाभ नहीं है, इसमे कोई आनन्द नहीं है। फिर भी मूढ बदरिया के लिए अपने बच्चे की लाश को छोड देना आसान नही होता। वह नहीं छोड पाती। छोड देना चाहिए।

कुछ मनीषियो का विचार है कि जब ईश्वर ने सृष्टि रची, तब उसने मनुष्यो को उनके लिए जीवनोपयोगी सारा ज्ञान दिया। उन्हे बताया कि क्या सत्य है, क्या असत्य, क्या उचित है, क्या अनुचित, क्या धर्म है, क्या अधर्म।

ज्ञान शनैः शनैः आया

इसके विपरीत कुछ अन्य विचारको का कहना है कि सृष्टि, जिसे हम इस समय देख रहे है और जिसके गत पाच हजार वर्षों के इतिहास को हम काफी कुछ जानते है, अकस्मात् एक दिन या एक क्षण मे नहीं रची गई। ये सूर्य, तारे, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र युगपत् (एक साथ) नही रचे गये। ये पहाड, ये समुद्र, नदिया, वनस्पतिया, जलचर, स्थलचर और नभचर प्राणी एक साथ एक ही क्षण मे नहीं बने। कुछ पहले बने, कुछ बाद मे। जो जब बने, वे भी उसी रूप मे नहीं बने रहे। परिस्थितियो के अनुसार स्वय को ढालते, बदलते रहे।

जन्म, वृद्धि (यौवन), जरा (ह्रास) और मृत्यु का क्रम सृष्टि के साथ ही शुरू हो गया (यदि सृष्टि का कोई एक क्षण रहा हो तो, क्योकि एक विचार यह भी है कि सृष्टि और प्रलय की कल्पना निर्मूल है। हर क्षण सृष्टि हो रही है और हर क्षण प्रलय हो रही है। सृजन, वृद्धि, विनाश का क्रम अनादि अनन्त है। न कुछ उत्पन्न होता है, न कुछ नष्ट होता है, केवल रूपान्तरण ही होता है)। कुछ प्राणियो का आयुष्काल बहुत छोटा होता है।

मानव प्राणियो के सामने भी पृथ्वी और आकाश के सारे सत्य एक साथ उद्घाटित हो गये हों, यह समझ आने वाली बात नहीं है। क्रमश. धीरे धीरे एक एक बात को जानना पडा होगा। जो लोग यह मानते हैं कि सृष्टि के आदि में मनुष्यो को ईश्वरीय ज्ञान दिया गया था (मुहम्मद के अनुयायी तो यह मानते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान, कुरान, ईसा की छठी शताब्दी के बाद दिया गया), वे भी इतना तो मानते है कि कालान्तर मे वह वेद ज्ञान लुप्त हो गया और मनुष्यो को नये सिरे से ज्ञान सचय करना पडा।

पुरातत्वविदो ने जो खोजे की है, उनसे प्रकट होता है कि कुछ हजार वर्ष पूर्व मनुष्य गुफाओ मे रहते थे और बहुत कुछ सीमित से ज्ञान से काम चलाते थे। ज्ञान का ज्वालामुखी तो पिछले ढाई तीन सौ वर्षों से ही फटा है, जब भाप, बिजली, मोटर, विमान, मुद्रण, रेडियो, परमाणु ऊर्जा, अन्तरिक्ष यान आदि के आविष्कार एक के बाद एक होते गये।

असत्य को छोड़ो, सत्य को अपनाओ

सारी वैज्ञानिक उन्नति 'असत्य को छोडो और सत्य को ग्रहण करो' के आधार पर हुई है।

सत्य का उद्घाटन एकाएक नहीं हो जाता। स्थिति बहुत कुछ वैसी है, जैसे कोई पहले किसी चीज को घुप अधेरे मे देखे, उसके बाद उसे मोमबत्ती के प्रकाश मे देखे, फिर उसे लालटेन के प्रकाश मे या बिजली के प्रकाश मे देखे, फिर उसे दिन के उजाले मे देखे। उसके बाद उसे सूक्ष्मवीक्षण यन्त्र से देखे। इन सब दशाओ मे उसे एक ही वस्तु का जो ज्ञान होगा, वह भिन्न भिन्न होगा। मज़े की बात यह है कि प्रत्येक स्थिति मे वह अपने ज्ञान को सत्य मान रहा होगा।

सारे संसार मे

भारत ही सारा ससार नही है।, चीन, मिस्र, यूनान, रोम, दक्षिणी अफ्रीका, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि मे भी मनुष्य रहते रहे है। उन सब की वर्तमान जीवन प्रणाली और पुराने इतिहास को जान कर यह स्पष्ट हो जाता है कि पहले वे अब की अपेक्षा कम विकसित और अधिक अज्ञानपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। भारत का भी प्राचीन इतिहास इससे भिन्न नहीं हो सकता। यहा भी ज्ञान क्रमश ही विकसित हुआ होगा।

ईश्वरीय ज्ञान से सम्पन्न ऋषियो से कम लोगो का वास्ता पडता था। अधिकाश लोग तो लालबुझक्कडो के फेर मे ही रहते थे। ये लालबुझक्कड बताते थे कि पृथ्वी चपटी है और बैल के सींग पर टिकी है। सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है। ईश्वर ऊपर सातवे आसमान पर रहता है। मरने के बाद मनुष्य की आत्मा स्वर्ग या नरक में जाती है। अच्छे या बुरे कर्मो का फल मरने के बाद भी मिलता है, इत्यादि।

मनुष्य सहज विश्वासी

औसत मनुष्य अज्ञानी और सहज विश्वासी होता है। जो भी कुछ बता दिया जाये, उस पर चट विश्वास कर लेता है। आज महाभारत के बाद ५२वीं शताब्दी मे भी लोग नितान्त असम्भव बातो पर भी विश्वास कर लेते हैं और उसके अनुसार न केवल अपना परिश्रम से अर्जित धन देने को तैयार हो जाते है, और दूसरो की, यहा तक कि अपनी भी हत्या कर डालते है। जो बात किसी ने कही है, वह सच है या गपोड, इसकी मीमासा करने वाले लोग बहुत थोडे होते है, वे ऋषि कहलाते है। कहना चाहिए कि **ऋषय. सत्यद्रष्टारः** (ऋषि सत्यदर्शी होते है)।

किसी ने गगा मे स्नान किया। जोहडों और तालाबो की तुलना में बहता हुआ जल कही अधिक स्वच्छ और शीतल था। उस ऋषि ने आनन्दित हो कर कविता की भाषा मे कहा 'गगा मे नहा कर स्वर्ग का सा आनन्द आया। सारा मैल धुल गया। गर्मी से मुक्ति मिल गई।'

बात सत्य थी। पर शीघ्र ही स्वार्थी लोगो ने गगा तट पर घाट बना लिये और प्रचार कर दिया कि गगा मे नहाने से स्वर्ग मिलता है, शरीर का ही मैल नही, पापो का मैल भी कट जाता है, मुक्ति प्राप्त होती है। यह सत्य नही था।

लोगो ने इस असत्य को भी सत्य मानना शुरू कर दिया। कुछ समझदार, लोकहितैषी लोगो ने समझाना चाहा, परन्तु पडो-पुरोहितो का प्रचार और आडम्बर इतना था कि सत्य उपेक्षित और असत्य पूजित रहा। आज भी करोडो लोग प्रति वर्ष इस दुराशा मे गगास्नान करते हैं और पडो पुरोहितो को खासी दक्षिणा देते है कि इससे उनके पाप धुल जायेगे। इस प्रकार जब सत्य असत्य बन जाये, तब उसे त्याग देना चाहिए।

भगवान् का दर्शन

ऋषियो ने कहा कि ऊचे हिम शिखरो पर भगवान् के, ईश्वर के दर्शन होते है, समुद्र तट पर, नदियो के सगम पर भगवान् दिखाई पडता है। वहा जाओ और उसे देखो। बात सच थी। हिमालय की सुरम्य घाटियो मे यात्रा करते हुए प्रकृति का अद्भुत सौन्दर्य दृष्टिगोचर होता है। ऊचे शिखर, चीड और देवदार के घने सुगन्धित वन, ऊचाई से गिरते दूध जैसे सफेद जल प्रपात, मीलो मील फूलो से लदी घाटिया, गहराई मे बहती चादी की लकीर सी चमकती नदी, विशाल चट्टाने, जो लगता है कि अब गिरीं, तब गिरीं, यह सब भगवान् की लीला है। इसे देख कर भगवान् की अनुभूति होती है, अपार आनन्द आता है।

सागर के तटो पर और नदियो के सगमो पर भी ऐसा ही, या इससे कुछ भिन्न प्रकार का आनन्द आता है, पर अनुभूति उसी विराट् की होती है। यह सत्य था।

पर ऐसे सब सुरम्य स्थलो पर व्यवसायियों ने मन्दिर बना लिये, रहने की सुविधाए जुटा दीं और खाने के लिए प्रसाद की व्यवस्था कर दी। यह अच्छा कार्य था। पर कालान्तर मे उन्होने मन्दिरो मे भगवान् की मूर्तिया बना दीं। कहा कि मन्दिर मे भगवान् के दर्शन करो। विश्वासी लोग मन्दिर में भगवान् की सजी धजी मूर्ति के दर्शन करके स्वय को धन्य मानने लगे। सोने के नाम पर पीतल बिकने लगा।

सम्पादकीय

सत्य यह था कि भगवान् वहा था। परन्तु वह मन्दिर के बाहर सब ओर फैले प्राकृतिक दृश्य मे दिखाई पडता था। कभी स्वच्छ नीले अनन्त आकाश मे, कभी घुमडते मेघो मे, कभी बरसती वर्षा मे, हिमपात मे दिखाई पडता था। वह सत्य तब असत्य बन गया, जब एक घुटे हुए कमरे मे रखी एक हीरा जडी मूर्ति को भगवान् मान लिया गया।

जब सत्य इस प्रकार असत्य बन जाये, तब उसे त्याग देना चाहिए।

सत्य अटल नहीं

सत्य कोई शाश्वत, अचल, अटल वस्तु नही है। ससार प्रति क्षण बदल रहा है। सत्य भी उसके साथ बदलता है। बच्चा बडा होता है, युवक बनता है, बूढा हो जाता है। कोई शक्ति उसे रोकने मे समर्थ नही है। यदि हम बूढे को बच्चा कहे, क्योकि कुछ वर्ष पूर्व वह बच्चा था, तो हम सत्य की विडम्बना कर रहे होगे। जैसे वसन्त का नया कोमल पत्ता पतझर मे पीला पड जाता है, वैसे ही सत्य बदलकर असत्य बन जाता है, यदि हम भी अपनी धारणा तदनुकूल न बदले तो।

जो हमे दीखता या अनुभव होता है, उसे हम सत्य मान लेते है। इससे भी बडी बात यह है कि हमे जो कुछ बता दिया जाता है, उसे भी हम सत्य मान लेते है। सत्य निरन्तर नया नया उद्घाटित होता रहता है। हमारा यत्न यह रहना चाहिए कि नवीनतम सत्य को ग्रहण करे और जैसे साप पुरानी केचुली उतार देता है, वैसे ही हम असत्य बन चुके सत्य को त्याग दे।

व्यक्ति भी बदलते हैं

यह बात व्यक्तियो पर भी लागू होती है। व्यक्ति भी भला और बुरा बनता रहता है। यह आवश्यक नही कि आज जो व्यक्ति आर्य है, वह दस वर्ष बाद भी आर्य बना रहे। काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, महत्वाकाक्षा, यश की लालसा चूहे की तरह उसकी भलाई की जडो को काटती रहती है। जिनकी जडे कच्ची होती है, वे जल्दी ढह जाते हैं। जिनकी जडे पक्की होती है, वे दृढ रहते है।

फिर कुछ छद्मवेशी लोग समाज मे भले बन कर प्रतिष्ठित हो जाते है। अत सत्यान्वेषी को सदा दोनो आखे खोल कर देखते रहना चाहिए कि कौन ऋषि है और कौन कपट मुनि।

जो पान सड जाये, उसे फेक देना ही श्रेयस्कर है।

असुर संस्कृति और देव संस्कृति में विरोध

❑ श्री ज्येष्ठ वर्मन

दैवी और आसुरी सस्कृतिया परस्पर विरोधी होने के कारण ये एक ही स्थान पर साथ मिल कर शान्तिपूर्वक नही रह सकती। आसुरी सस्कृति स्वभाव से लोभ और आक्रमणकारी सस्कृति है। अत दैवी सस्कृति को अपनी रक्षा के लिए इस आक्रमण का जवाब देना ही पडता है। दुष्ट शक्तियो के सामने आत्मसमर्पण करना या उनके साथ समझौता करने का तात्पर्य उनका समर्थन करने के बराबर है। यह भी पाप है।

समझौता भयावह

दैवी सस्कृति का आसुरी सस्कृति के साथ मिल कर रहने का परिणाम अच्छा नही हो सकता। इससे दैवी सस्कृति दूषित हो जाती है, इसमे सकटग्रस्त व्यक्ति (split personality schizophrenia) उत्पन्न होते है। यह एक मानसिक रोग है। आज अधिकाश भारतीय इस रोग मे ग्रस्त है। इस रोग से पीडित लोग कुछ सन्दर्भो मे अच्छे कर्म करते है और कुछ अन्य सन्दर्भो मे बहुत बुरे कर्म भी करते है। कभी कभी ये आर्य होने के लक्षण दिखाते है और कभी-कभी अनार्य होने के। यहा सास्कृतिक शुद्धता का लोप दिखाई देता है। ऐसे सकटग्रस्त लोग विश्वास के योग्य नही होते। अत दैवी या आर्य सस्कृति की रक्षा के लिए आसुरी अथवा अनार्य सस्कृति के साथ, यदि दूसरे शब्द मे कहू तो धर्म का अधर्म के साथ, पूर्ण असहिष्णुता की नीति की आवश्यकता होती है।

झगडा अच्छा नही, पर आवश्यक

झगडा अच्छा नही है। झगडा करने वालो को प्राय शरीफ लोग पसन्द नही करते। लेकिन झगडे के मूल कारण, असत्य और अन्याय की उपेक्षा करना भी कोई अच्छी बात नही है। झगडो को बलपूर्वक दबाना गलत है। यह एलोपैथिक दवाई जैसा काम करता है। केवल तात्कालिक शाति। स्थिर शाति के लिए कृतबुद्धिता (commitment) की आवश्यकता होती है, आदर्श और सिद्धान्तो के प्रति पूर्ण निष्ठा की ज़रूरत होती है। जब कोई बुरा आदमी अपनी बुराई नहीं छोडता, तब किसी अच्छे आदमी को अपनी अच्छाई क्यो छोडनी चाहिए?

पुराण कथा

देव और असुरो का झगडा कृतयुग मे ही प्रारम्भ हुआ था। ये देव और असुर कश्यप प्रजापति के पुत्र थे। कश्यप का दिति से उत्पन्न पुत्र हिरण्यकशिपु दैत्य कहलाया, अदिति के इन्द्र प्रभृति बारह पुत्र आदित्य कहलाये, दनु के शम्बर, नमुचि, पुलोमा प्रभृति पुत्र दानव कहलाये। प्रारम्भ मे ये सारे आर्य ही थे, धर्मात्मा थे। लेकिन कालान्तर मे दैत्य और दानवो के स्वभाव मे अन्तर आ गया। ये दुष्ट बन गये। अत दस्यु, राक्षस, असुर आदि बुरे नामो से प्रसिद्ध हुए। इन्द्रादि बारह आदित्य अपने धर्म मे स्थिर रहे और उन्होने दस्युओ के अनर्थ से लोगो को बचाया। इसलिए वे देवता कहलाये। पुराण प्रसिद्ध विष्णु इन्द्र का सबसे छोटा भाई था और सबसे अधिक बुद्धिमान था। देवासुर युद्धो मे देवो की जीत मे इसका बहुत बडा योगदान था।

धर्म के रक्षक

त्रेता युग मे अयोध्या के दाशरथि राम ने रावण प्रभृति दुष्ट राक्षसो को मार कर दैवी सस्कृति की रक्षा की थी। **(निर्दस्युरभवल्लोके नानर्थ कश्चित् स्पृशत्। सर्वमुदितमेवासीत् सर्वो धर्मपरोऽभवत्।)** द्वापर युग मे वासुदेव कृष्ण ने आसुरी शक्तियो को नष्ट किया और धर्म मर्यादाओ की रक्षा की। कलियुग मे इस महान कार्य को करने का श्रेय केवल स्वामी दयानन्द सरस्वती को जाता है। स्वामी दयानन्द ब्राह्मण थे और सन्यासी भी। अत उन्होने अपने वर्णाश्रम धर्म के अनुसार बौद्धिक स्तर पर अनार्य सस्कृति के विरुद्ध युद्ध घोषित किया था और इस युद्ध को आगे बढाने का दायित्व आर्य समाज पर छोड दिया है।

आर्य समाज देव सस्कृति का रक्षक

आर्य समाज दैवी अर्थात् आर्य सस्कृति की रक्षा हेतु स्थापित सगठन व सस्था है। इसका प्रत्येक कार्यकर्ता, विशेषरूप से विद्वान्, आसुरी अथवा अनार्य सस्कृति के विरुद्ध लडने वाला योद्धा है। इस सस्था मे मूर्ख, निकम्मे और समझौतावादियो (passive barbarians) के लिए कोई स्थान नहीं है। गीता के सोलहवें अध्याय मे वर्णित आसुरी सम्पत् के लोगो का इस सगठन मे विद्यमान होना अनपेक्षित है। इसके लिए मै कुछ प्रमाण प्रस्तुत करना चाहता हू।

(१) आर्य समाज का नियम छह कहता है "ससार का उपकार करना, आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

फिर, नियम नौ (९) कहता है "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट नही रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"

इन दो नियमो से प्रकट है कि आर्य समाज दैवी सस्कृति का रक्षक है। आजकल की भाषा में यदि कहा जाय, आर्य समाज Altruistic culture का प्रचारक व रक्षक है। (Altruism = principle of considering the well-being and happiness of others first, unselfishness (Oxford English Dictionary))

हर आर्य पुण्य पुरुष है

अत. आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य दैवी सस्कृति का सजग प्रहरी है। हर एक आर्य एक पुण्य पुरुष है। हर स्त्री-पुरुष धर्म-मर्यादाओ का प्रतीक (living role model) है। किसी असुर (प्रत्यक्ष हो या परोक्ष active or passive barbarian) के साथ इसकी मित्रता नहीं हो सकती। ऐसे अनार्यो का सम्मान करने की बात दूर की है।

आर्य समाज मे, राजनीतिक दलो के समान, पदाधिकारियो का चुनाव अथवा नेतागीरी की बातो को लेकर विवाद नहीं हो सकते। विवाद को जड से खत्म करने हेतु श्रीराम ने अयोध्या की राजगद्दी पर अपना अधिकार त्याग दिया था। श्रीकृष्ण ने जीते हुए राज्यो को उनके हकदारो को सौप दिया था। ये आर्यो के आदर्श पुरुष है। जैसे कुत्ते हड्डी के टुकडे के लिए आपस मे लडते है, वैसे पदाधिकार या सत्ता के लिए आपस मे लडना आसुरी सस्कृति का लक्षण है। जहा प्रजासत्तात्मक चुनाव पद्धति है, वहा अपने नेताओ को चुनने का पूरा स्वतत्र अधिकार लोगो के पास ही होना चाहिए। गलत प्रचार, प्रलोभन अथवा दबाव से उनके मत देने के अधिकार को प्रभावित करना श्रेष्ठ पुरुषो का काम नही है।

गोमुख व्याघ्र

दान (charity) तथा अन्य सार्वजनिक सेवा कार्य करने वाली सस्थाए आजकल सब जगह है। यथा--रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, जायन्ट्स क्लब, लियो क्लब इत्यादि। इसी प्रकार कुछ धार्मिक और सामाजिक संस्थाए भी सेवा के कार्य करती है। किन्तु सेवा उनका सहज स्वभाव नहीं है। अपनी छवि बनाने, किसी अन्य उद्देश्य से लोगों को इकट्ठा करने, और परोक्ष रूप से अपने स्वार्थ सिद्ध करने के हेतु भी सेवा के कार्य किये जाते है। इसमे बहुत सारे गोमुख-व्याघ्र देखे जा सकते है। आर्य समाज इन सस्थाओ से भिन्न है। जहा अन्य समाजसेवी सस्थाओ के पास कोई सुदृढ़ सिद्धान्त या स्पष्ट विचार नहीं होते, आर्य समाज के पास वेदशास्त्र प्रतिपादित सुदृढ सिद्धान्त और स्पष्ट विचार पहले से ही विद्यमान है। पच महायज्ञ आर्यों के धार्मिक जीवन के अग है। इससे अधिक यदि ये संसार का उपकार करना चाहे, तो उसके लिये अश्वमेधादि यज्ञो की विधि जानते है। इसके लिये उनको अनार्यों की नकल करने की आवश्यकता नहीं है।

उन्नति के शत्रु

दारिद्र्य, निरुद्योग, पौष्टिक भोजन का अभाव, दूषित जलवायु इत्यादि शारीरिक उन्नति के शत्रु है। लोभ, आपस के झगडे, अनैक्यता, प्रेम का अभाव, दुर्व्यसन, दुराचार, असत्य, अन्याय, शोषण, दौलत और जन्म (wealth and birth) पर आधारित भेदभाव, इत्यादि सामाजिक उन्नति के शत्रु है। सारे वेद विरोधी, अनार्ष धर्मग्रथ अविद्या का प्रचार करने वाले है और आत्मिक उन्नति के शत्रु है। इन शत्रुओ पर विजय पाना आर्य समाज का ध्येय है।

आर्य समाज का नियम पाच (५) कहता है "सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।"

न्याय की रक्षा के लिए, पक्षपात के दोष से मुक्त होने के लिए सत्य और असत्य का ज्ञान अत्यावश्यक है। न्याय का मुख्य आधार सत्य और इन्सानियत (truth and humanism) है। स्वामी दयानन्द ने कई स्थानो पर कहा है कि सत्य और न्याय से बढ कर दूसरा कोई धर्म नही है।

(आगामी अक मे समाप्य)

43/19, 3rd cross, Someshwarnagar
(APM Yard), Banglore-560023

विश्व के प्रमुख इस्लामी आतंकवादी संगठन

अल कायदा : यह ओसामा बिन लादेन का आतकवादी संगठन है, जिसकी शाखाए अनेक देशो में फैली हैं। अफगानिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में इसके अनेक प्रशिक्षण केन्द्र है।

अबू निदाल संगठन : यह फिलस्तीनी मुक्ति संगठन से अलग हुआ एक गुट है।

अल फतह : यासर अराफात का गुट, जो बाद मे फिलस्तीनी मुक्ति सगठन मे मिल गया।

अबू सय्याक गुट : इसका केन्द्र फिलिपीन्स मे है।

अल गामा अल इस्लामिया : यह मिस्र का गुट है।

आर्म्ड इस्लामिक ग्रुप : अल्जीरिया का आतंकवादी गुट।

हिजबुल्लाह : लेबनानी आतकवादी संगठन।

हिजबुल मुजाहिदीन और लश्कर ए तोयबा : पाकिस्तान और अफगानिस्तान में बने जम्मू-कश्मीर में सक्रिय संगठन।

हरकत उल अंसार : म्यांमार, बोस्निया और ताजिकिस्तान में सक्रिय रहा सगठन।

गांधी जी की नोआखाली धर्मयात्रा

(गतांक से आगे)

२८ दिसम्बर को प्रधानमत्री श्री नेहरू गाधी जी से मिलने श्रीरामपुर पहुचे। २ जनवरी १९४७ को गाधी जी श्रीरामपुर से चडीपुर के लिए रवाना हुए। ७ जनवरी से चडीपुर से गांधी जी की यह पैदल धर्मयात्रा शुरू हुई। गाधी जी इसे एक प्रकार का यज्ञ कहते थे। पैदल चल कर गांव गाव जाना था। जो लुटे पिटे थे, उनके आसू पोछने थे। जिन्होने लूटमार की थी, उनमे अपराध बोध जगाना था। दोनो ही कठिन काम थे। ७७ वर्ष के क्षीणकाय, सदा रोगी रहने वाले व्यक्ति के लिए पदयात्रा तपस्या तो थी ही। २ मार्च को यह यात्रा हैमचर मे समाप्त हुई। इन पौने दो महीनो मे इस टोली ने १८६ किलोमीटर की यात्रा मे लगभग ५० गावो मे प्रेम और शान्ति का सदेश पहुचाया।

सलाम का उत्तर भी नही

परन्तु इस प्रेम और शान्ति के सदेश को ग्रहण करने वाले लोग बहुत नही थे। बहुत से लोग तो गाधी जी के किये हुए सलाम के उत्तर मे सलाम भी नहीं करते थे। एक पेड की छाया मे लगे मदरसे मे गाधी जी ने बच्चो से बातचीत करनी चाही, तो बगाली मौलवी ने बच्चो को झोंपडे के अन्दर चले जाने को कहा, जिससे गाधी जी उनसे बात न कर सके। गाधी जी को अगले दिन जिस पगडडी से जाना होता था, उस पर शरारती लडके जानबूझ कर टट्टी कर जाते थे, टूटे हुए काच और काटे डाल जाते थे। जगह जगह नोटिस टगे होते थे, जिनमे गाधी जी को लौट जाने को कहा जाता था, धमकिया भी लिखी रहती थीं।

दिनचर्या

गाधी जी आधी रात मे दो बजे उठते। गीता का पाठ करते, चिट्ठिया लिखते। नियम से पेट पर मिट्टी की पट्टी रखते, अनीमा लेते, स्नान करते। उनका कमोड (शौच पात्र) उनके साथ ढो कर ले जाना पड़ता था।

किसी भी गाव मे पहुचने पर वह ठहरने के लिए जगह मांगते। एक न ठहराता, तो दूसरे से, फिर तीसरे से अनुरोध करते। वह पेड तले भी सोने को तैयार थे, पर ऐसा कभी नही हुआ कि ठहरने को जगह न मिली हो।

गाधी जी लोगो से बात करते। हिन्दुओ और मुसलमानो को एकत्र करके उनसे शान्ति और मित्रता बनाये रखने का वचन लेते। कई जगह उन्हे सफलता भी मिलती।

मनु ने इन सात सप्ताहो की डायरी लिखी है। उसका बड़ा भाग तो नीरस दिनचर्या का है कि गाधी कब सोये, कब जागे, उन्होने क्या खाया, क्या पिया, परन्तु कुछ बाते आखे खोलने वाली भी है। एक जगह उन्होने बडे सतोष के साथ लिखा है कि आज पहला दिन था, जब उन सब मुसलमानो ने, जिन्हे गाधी जी ने सलाम किया, सलाम के उत्तर मे सलाम किया। अर्थात् और दिन इससे उल्टा होता था। सारे हिन्दू जिस महापुरुष के पैर छूते थे, औसत मुसलमान उसके सलाम का उत्तर भी नहीं देना चाहता था।

पाचो उगलियां बराबर नहीं

परन्तु पाचो अगुलिया बराबर नहीं होतीं। ऐसे भी मुसलमान थे, जिन्होंने गाधी जी को अपने घर ठहराया और अपने परिवार की महिलाओ से उनके दर्शन करने को कहा।

इस यात्रा मे असली तपस्या मनु ने की। उसका अपना स्वास्थ्य अच्छा नही था। पर वह गाधी जी के अनुसार सोती जागती थी। वृद्ध गाधी जी रात मे दो बजे उठ जाते, तो मनु को भी जागना पडता। गाधी जी दिन मे चाहे जब ऊघ लेते थे, पर मनु को यह सुविधा नही थी। पर उसने भक्त अनुचरी की भाति कभी भी शिकायत किये बिना निरन्तर पुण्यार्जन समझ कर गाधी जी की सेवा की।

गाधी जी को ब्रह्मचर्य पालन की धुन थी। सन् १९०६ मे उन्होने कस्तूरबा को अपने ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने की बात बताई थी। कस्तूरबा ने इसमे सहयोग किया था।

ब्रह्मचर्य की धुन

नोआखाली यात्रा मे गाधी जी को यह धुन समाई कि ब्रह्मचर्य की सबसे ऊची सीढी पर पहुचा जाये। मनन चिन्तन करके वह इस निष्कर्ष पर पहुचे कि आदर्श ब्रह्मचर्य वह है जिसमे पुरुष किसी तरुणी के साथ एक ही रजाई मे सोये और उसके तन और मन मे कोई विकार न आये।

उन्होने मनु से कहा कि मै तुम्हारा दादा ही नही, तुम्हारी मा भी हू। अत तुम्हे मेरे साथ एक बिस्तर मे सोने मे कोई कठिनाई नही होनी चाहिए।

मनु ने कहा कि उसे पता ही नही कि कामवासना क्या होती है।

इससे गाधी जी को और विश्वास हो गया कि जब दोनो ही ओर से वासना का अभाव है, तो ब्रह्मचर्य पालन और सरलता से होना चाहिए। और दोनो ने पूर्ण विश्वास के साथ एक बिस्तर मे सोना शुरू कर दिया।

शास्त्र मे कहा है : **'यद्यपि शुद्ध, लोकविरुद्ध नाचरणीय, नाचरणीय, नाचरणीयम्'** (भले ही कोई बात कितनी ही उचित और निर्दोष हो, पर यदि वह लोक विरुद्ध हो, तो वह नही करनी चाहिए, कभी नही करनी चाहिए।) गाधी जी ७७ वर्ष के थे, बीमार भी रहते थे। फिर ब्रह्मचर्य के व्रती भी थे। भोजन पर भी कठोर सयम रखते थे। फिर, मनु उनकी पोती थी, इस कारण भी इस बात की सभावना कम ही है कि उनके तन या मन मे कोई विकार आया हो। परन्तु मुस्लिम लीगी प्रचारको ने इस बात को खूब उछाला।

सत्यव्रती

गाधी जी इस बात पर चुप रह जाते, तो भी कोई हर्ज नही था। परन्तु गाधी जी अहिसाव्रती के साथ साथ सत्यव्रती भी थे। उन्होने स्वीकार किया कि वह अपनी पोती के साथ एक ही बिस्तर मे सोते है और इसमे कोई दोष भी नही है।

'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' पुस्तक मे ऐसा उल्लेख है कि उन्होने अपनी सफाई मे एक वक्तव्य अपने पत्र 'हरिजन' मे छपने के लिए भेजा था, परन्तु पत्र के ट्रस्टियो ने गाधी जी का वह वक्तव्य छापने से इन्कार कर दिया।

बहुत से लोगो ने गाधी जी पर दबाव डाला कि वे इस प्रयोग को बन्द कर दे। परन्तु जो व्यक्ति बिटिश साम्राज्य से टक्कर ले सकता था, वह इन लोगो की बात कहा मानने वाला था। गाधी जी ने कहा 'इसमे कोई दोष ही नही है, तो इसे बन्द करने का प्रश्न कहा उठता है?' मनु ने भी गाधी जी का समर्थन किया।

जब नोआखाली की धर्मयात्रा समाप्त हुई, तब गाधी जी ने बिहार के दगाग्रस्त क्षेत्रो की पदयात्रा का कार्यक्रम बनाया। काग्रेस के नेताओ को लगा कि यदि बिहार की पदयात्रा मे मनु गाधी जी के साथ रही और एक बिस्तर मे सोने की बात प्रचारित होती रही, तो धर्मध्वजी हिन्दू इसे सहन नही करेगे, और बडा बावेला मच जायेगा। उन्होने जैसे तैसे मनु को राज़ी किया कि वह नोआखाली यात्रा को ही धर्मयात्रा की समाप्ति समझे और बिहार यात्रा मे उनके साथ न जाये। सारी स्थिति पर विचार करने के बाद मनु बडी अनिच्छा से इसके लिए तैयार हुई।

यह सही है कि तात्रिक मान्यताओ के अनुसार ब्रह्मचर्य की बडी कसौटी यही है कि तरुणी के पास लेट कर भी तन मे या मन मे विकार न हो। परन्तु वह परख तरुणो और वयस्क पुरुषो के लिए है, पिचहत्तर वर्ष से अधिक आयु के लोगो के लिए नही। फिर, परख तो एक दिन के प्रयोग से भी हो जाती है। रोज रोज इस बात की परीक्षा करते रहना भी आदर्श ब्रह्मचर्य नही है। आदर्श ब्रह्मचर्य वह है, जिसमे व्यक्ति को यह ध्यान ही न आये कि वह ब्रह्मचारी है या नहीं? लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यस्तता इतनी हो कि इस विषय मे सोचने के लिए फुरसत ही न मिले।

मनु ने अपनी डायरी मे एक घटना लिखी है

गाधी जी की जिद

१५ जनवरी १९४७ को हमारी टोली भटियालपुर से प्रात ७ ३५ बजे चल कर नारायणपुर पहुची। यहा पहुच कर पता चला कि बापू जी के पैर घिसने का पत्थर, जो खाने की पेटी मे रखा रहता था, उसमे नही है। बहुत ढूढने पर भी न मिला, तो गाधी जी से कहा। गाधी जी ने कहा 'यदि कहीं तुम खो जाओ तो शायद काम चल भी जाये, परन्तु उस पत्थर के बिना नही चलेगा। मेरी इच्छा है कि वह पत्थर तुम ही ढूढ कर लाओ। खाना निर्मल बाबू बना लेगे, लेकिन पत्थर ढूढने तुम्हे ही जाना पडेगा।'

मनु ने कहा 'एक स्वयसेवक को साथ ले जाऊ?'

'नही। अकेली जाओ।'

मनु थोडा रुष्ट हो कर अकेली चली गई। उसने लिखा है कि मुझे डर लग रहा था कि कोई गुडा पकड लेगा, तो क्या होगा? नारियल के घने झुरमुटो मे से हो कर सुनसान रास्ता जाता था। रामनाम की रट लगाती मनु उस घर तक पहुची, जहा उसने आते हुए गाधी के पैर धोये थे। पत्थर यही रह गया था। मकान मालकिन वृद्धा ने बेकार समझ कर उस पत्थर को फेक दिया था, परन्तु दूर नही फेका था। थोडा सा ढूढने पर वह मिल गया। मनु प्रसन्न हो कर उसे ले कर लौटी। रास्ते भर 'राम राम' जपती रही। 'जितना स्मरण ईश्वर को उस दिन किया, उतना जीवन मे पहले कभी नही किया था।'

गाधी जी के सामने पत्थर रख कर मनु ने कहा 'लीजिये अपना पत्थर!' और वह रो पडी।

गाधी जी ने हसते हुए कहा 'आज तुम्हारी परीक्षा हो गई। इस परीक्षा मे तुम उत्तीर्ण हो गई। इससे मुझे कितना आनन्द हुआ है, तुम नही जानती।'

शाम की प्रार्थना के बाद घूमते समय गाधी जी ने मनु से कहा 'अगर आज तुम्हे गुडे पकड लेते और तुम वहा मर गई होती, तो मै खुशी से नाचता। परन्तु तुम डर कर भाग आती, तो मुझे जरा भी अच्छा नही लगता।'

क्या गाधी जी नही जानते थे कि मरना सदा अपने बस मे नही होता? और ऐसी अनेक दशाए होती है, जो मृत्यु से कहीं बुरी होती है। पजाब मे और कश्मीर मे इतनी युवतियो ने आत्मरक्षा के लिए प्राण दिये है कि गाधी जी नाच-नाच कर पागल हो जाते। पर वह समस्या का हल नही है।

इसे अहिसा का उन्माद न कहा जाये, तो क्या कहा जाये?

पत्र-जगत्

हिन्दी के साथ अन्याय बन्द करें

मानतीय राज्यपाल/मुख्यमत्री हरियाणा

चडीगढ

मान्यवर,

हरियाणा हिन्दीभाषी राज्य है। यहा की सरकारी भाषा राजभाषा हिन्दी है। हरियाणा राजभाषा अधिनियम की धारा तीन और चार के अनुसार हरियाणा के सभी सरकारी विभागो, विश्वविद्यालयो, कालेजों तथा जिला न्यायालयो आदि मे सारा कामकाज हिन्दी मे होना चाहिए। किन्तु यहा सर्वत्र अग्रेजी हावी है। खुद हरियाणा सरकार अपने मुख्य सचिव के पत्र क्रमाक ६२/३७/९८ जी एम टी तारीख ६ १० ९९ चडीगढ के अनुसार अग्रेजी के इस प्रयोग को गम्भीरता से देखती है, फिर भी सरकार हिन्दी के प्रयोग के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाती।

इसके विपरीत हरियाणा सरकार ने पहली कक्षा से अंग्रेजी को स्कूलो मे अनिवार्य घोषित कर दिया है।

हरियाणा के विश्वविद्यालयो तथा कालेजो मे सारा प्रशासनिक कामकाज अग्रेजी मे ही होता है। हिन्दी के टाइपिस्ट या लिपिक ही नही रखे जाते।

हरियाणा के कालेजो मे बी ए प्रथम, द्वितीय, तृतीय कक्षाओ मे हिन्दी अनिवार्य विषय को अग्रेजी अनिवार्य के बराबर पीरियड नही दिए जाते जबकि दोनो के अक समान १००-१०० है। हिन्दी अनिवार्य को प्रति सप्ताह चार पीरियड दिए जाते है, तो अग्रेजी अनिवार्य को सप्ताह मे नौ से बारह पीरियड दिए जाते है। करनाल, पानीपत, कैथल, अम्बाला, यमुनानगर, जीन्द, हासी, हिसार, सिरसा आदि स्थानो मे स्थित कालेजो मे यही स्थिति है। यह हिन्दी तथा हिन्दी पढने वाले छात्रो के साथ भारी अन्याय है। अत कालेजो मे अग्रेजी विषय की तरह हिन्दी अनिवार्य के भी दो-दो प्रश्न पत्र होने चाहिए।

हिन्दी (अनिवार्य) विषय के पीरियड कम होने से कालेजो मे हिन्दी के प्राध्यापको के साथ भी अन्याय हो रहा है। कालेजो मे हिन्दी के प्राध्यापक तीन होते है तो अग्रेजी के छह। अग्रेजी के प्राध्यापक हिन्दी के प्राध्यापको की तुलना मे दो गुणा होते है जैसे करनाल के दयालसिह कालेज तथा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मे हिन्दी के छह छह प्राध्यापक है, तो अग्रेजी विषय मे १२-१२ प्राध्यापक है। ऐसे मे हिन्दी विषय मे ऐम ए करने वालो को नौकरिया कहा से मिलेंगी? कालेजो मे कई वर्षो से हिन्दी के साथ यह भेदभाव जारी है।

इस बारे मे हरियाणा के मुख्यमत्री एव राज्यपाल महोदय को रजिस्टर्ड पत्र भी भेजे गए— देखिए पत्र म० ९६५८० तारीख १३ ४ ९८ तथा पत्र सख्या ९६५९० तारीख १३ ४ ९८। दूसरा ज्ञापन २० ४ ९८ को क्रमश राज्यपाल महोदय एव मुख्यमत्री हरियाणा (चडीगढ) को भेजा गया। देखिए रजि० पत्र सख्या २५३४ तारीख २० ४ ९८ तथा रजि० पत्र सख्या २५३३ तारीख २० ४ ९८। इन ज्ञापनो मे ३००-३०० विद्यार्थियो के हस्ताक्षर थे, किन्तु सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नही दिया और हिन्दी के साथ अन्याय एव भेदभाव जारी है।

हरियाणा सरकार के मुख्यमत्री जी 'सरकार आपके द्वार पर' या खुले दरबार लगा कर जनता की शिकायते सुन रहे है किन्तु हिन्दी की बात मुख्यमत्री क्यो नहीं सुनते? आखिर हिन्दी पूरे हरियाणा की जनता की भाषा है, यहा की राजभाषा है।

अग्रेजी को तो सरकार पहली कक्षा से लागू कर रही है जबकि हिन्दी को कालेजो मे बी ए कक्षाओ मे भी अग्रेजी के बराबर स्थान नही देना चाहती। जिला न्यायालयो मे भी सरकार हिन्दी को लागू नही कर रही है। सरकारी कामकाज में, प्रशासनिक कार्यो मे भी हिन्दी का प्रयोग नही कर सकती। यह जनता के साथ, हिन्दी के साथ अन्याय है।

इस बारे मे हरियाणा मे हिन्दी के साथ इस अन्याय को खत्म करवाने हेतु लगभग ६०० छात्र-छात्राओ के हस्ताक्षरयुक्त इस ज्ञापन को आपकी सेवा में भेजा जा रहा है। इसमे करनाल के दयालसिह कालेज, गुरु नानक खालसा कालेज तथा डी० ए० वी० (सहशिक्षण कालेज) के विद्यार्थियो के हस्ताक्षर है।

इस ज्ञापन मे दयालसिह कालेज करनाल के ऐम ए हिन्दी के छात्रो के भी हस्ताक्षर है तथा इस पर दयालसिह कालेज (करनाल) के ऐम ए राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियो ने भी हस्ताक्षर किए हैं। अत. आपसे निवेदन है कि छात्रो की इन मांगो पर उचित ध्यान देकर हरियाणा में अग्रेजी का वर्चस्व खत्म करवाये तथा हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलवाये।

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल

घर घर में वेद क्यों पहुंचाएं?

साप्ताहिक 'आर्य जगत्' १६ अगस्त २००१ के अक में श्री कृष्णमोहन 'हिन्दू' का लेख 'घर घर मे वेद कैसे पहुचाए?' शीर्षक से एक पत्र प्रकाशित हुआ है, जिसमे वेद का प्रचार करने के कुछ उपाय बताये गये है। दु ख इस बात का है कि 'हिन्दू' ने जिन लोगो को यह काम करने के लिए प्रेरित करने का प्रयत्न किया है, वे अच्छी तरह से जान गये हैं कि 'भूखे भजन न होय गोपाला'। इसलिए आर्यसमाजियो से यह अपील करना निरर्थक है। क्योकि वेद पढने वालो को कोई नहीं पूछता। वेद पढने वाले गलियो मे मारे मारे फिर रहे हैं। उन्हे पूछने वाला कोई नहीं है। आर्य समाजो में बडी सिफारिशो से पुरोहित रखे जाते है। देने के नाम पर कुछ नहीं, ठन-ठन गोपाल है। पुरोहितो को कमाई के लिए रखा जाता है। उन्हे स्वयं दोनों समय भरपेट भोजन भी मिल पाता है या नहीं, यह जानने की किसी को चिन्ता नही। आर्य समाजो के अधिकारियो को 'आर्य श्रेष्ठी' का प्रमाण पत्र येनकेन प्रकारेण मिल जाये, तो उनका जीवन सफल हो जाता है। फिर किसी को वेद पढने की आवश्यकता नहीं रह जाती। इसलिए वेद पढना तो बहुत दूर की कौडी है, उसे अल्मारी में अपने पर पडी हुई धूल झाडने वाले के आने की प्रतीक्षा करने को मजबूर होना पड रहा है, फिर भी कोई माई का लाल मिलता नही। 'हिन्दू' जी, अगर हिम्मत है तो आर्य समाजो की अलमारियों मे पडी वेद की पुस्तको पर धूल झाडने के लिए कपड़ा ले कर आसपास के आर्य समाजो मे 'केवल रविवार' को पहुच जाया करे, वरना खाली हाथ लौटना पडेगा। केवल आर्य समाज ही तो वेद प्रचार का ठेकेदार है। 'हिन्दू' तो वेद के पास भी नहीं फटकते। उन्हे डर रहता है कि कही वेद उन्हे चिपट गया, तो पीछा छुडाना कठिन हो जायेगा।

हरिदत्त वि० प्र०, आर्य समाज प्रशान्त विहार, ए ब्लाक, दिल्ली-८५

आरक्षण से बांटो

बाटना ही है तो एक बार बाट दो, ताकि बहुमत वाली सरकार न हो और कोई सरकार काम न कर सैके। शायद देश की जनता इतनी बट जायेगी कि १०० प्रतिशत से भी ज्यादा आरक्षण देने होगे और फिर कोई भी समुदाय आरक्षण नहीं मागेगा। ऐसी अवस्था आयेगी कि आरक्षण के तहत आने पर दो टुकडा होना पड़ेगा। विचार करे तो शायद जाति, समुदाय, भाषा, उम्र के तहत इतना विभाजन हो सकता है कि देश व मानवता दोनो ही नही होंगी। योग्य व्यक्ति को शायद अपनी योग्यता गलत कार्य मे ही लगानी पडेगी। क्या वैसा भविष्य चाहते हैं?

आलोक सिन्हा, जमशेदपुर

आर्य समाजों की सूची का प्रकाशन सही हो

सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली ने १९९८ ई० मे भारतवर्ष के आर्य समाजो की सूची नामक ३६१ पृष्ठो की एक पुस्तक प्रकाशित की है। (मूल्य १५०/- रु०)। इसके पूर्व भी १९८६ मे और उससे ५० वर्ष पूर्व भी सार्वदेशिक सभा ने इसी प्रकार की एक पुस्तक जारी की थी। इस प्रकार की पुस्तके महत्वपूर्ण है, क्योकि इनसे पाठक को यह पता चल जाता है कि कहा कहां आर्य समाज है और उसका पत्र व्यवहार का पता क्या है। इसके लिए सार्वदेशिक सभा धन्यवाद की पात्र है। १९९८ ई० मे प्रकाशित पुस्तक के समय बिहार एक राज्य था और है, पर २००० ई० में बिहार से पृथक् हो कर झारखड अलग राज्य बन गया है। झारखंड राज्य में आर्य समाज का काम बढ़ाने के लिए झारखड राज्य (पूर्व मे छोटानागपुर) आर्य प्रतिनिधि सभा रांची के नाम से कार्यरत है। झारखंड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा राची की जानकारी के अनुसार झारखड राज्य मे १०५ आर्य समाजें सम्प्रति है। पर उक्त पुस्तक में झारखंड में १६६ आर्य समाजों का नाम बिहार के अन्तर्गत गलत रूप से दिखाया गया है। उक्त पुस्तक मे झारखड राज्य (पूर्व में बिहार) के ऐसे जिलों (जनपदो) का नाम भी छपा हुआ है जिस नाम के कोई भी जिले यहां नहीं हैं। इसी प्रकार कई आर्य समाजो के नाम तो दो-दो बार आये हैं। झारखंड राज्य की प्रथम आर्य समाज (रांची) का नाम तीन बार आया है। चूकि उक्त पुस्तक का प्रकाशन १९९८ ई० में हुआ है, अतः पूरी जानकारी प्राप्त करके ही आर्य समाजों का नाम दिया जाना चाहिए।

दयाराम पोद्दार, झारखंड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची-८४०००१

॥ ओ३म् प्रब्रवाम शरदः शतम् — हम सौ वर्ष तक वेदवाणी द्वारा प्रभु गुण गाए॥

"विश्व के सर्वाधिक सुन्दर स्थलो में से एक शान्त, शीतल, एकान्त, अनेक फलयुक्त एव मधुर झरने के जलयुक्त सुरम्य वैदिक आश्रम"

उद्गीथ साधना स्थली, महर्षि दयानन्द मार्ग "ओम्वन" हिमाचल के संस्थापक

२५ आचार्य आर्यनरेश जी (वैदिक गवेषक)

को सफल वेद प्रचार यात्रा की रजत जयन्ती पर

हार्दिक शुभकामनाएं

तप-त्याग, सयम एव कठोर परिश्रम से पोषित- व्यक्तित्व के धनी श्री आचार्य आर्यनरेश जी ने गत २५ वर्षो मे वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ईश्वर के ध्यान, वेद के ज्ञान, यज्ञ के अनुष्ठान, सस्कारी सन्तान तथा राष्ट्रहित बलिदान की भावना का जन जन मे प्रचार-प्रसार करने के लिए अपने जीवन की आहुति दी है।

उद्गीथ साधना स्थली के संस्थापक, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल के भूतपूर्व वरिष्ठ प्रधान एव सार्वदेशिक आर्यवीर दल के उपप्रधान सचालक, योगसाधक, ओजस्वी वक्ता, क्रातिकारी प्रचारक आचार्य आर्यनरेश जी ने महर्षि दयानन्द जी के प्रेरक जीवन व सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा लेकर, अभियन्ता (इजीनियर) के पद से त्यागपत्र देकर, गुरुकुल कालवा मे पूज्य आचार्य श्री बलदेव जी नैष्ठिक, पूज्य स्व० स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज (हरिद्वार) एव योगनिष्ठ सन्यासी विद्वानो के द्वारा व्याकरण, निरुक्त, छन्द· शास्त्र, दर्शन शास्त्र तथा उपनिषद् आदि वैदिक ग्रथो का ज्ञान प्राप्त किया। ईश्वर के ध्यान एव साक्षात्कार हेतु हिमालय का भ्रमण किया व अन्त मे महर्षि दयानन्द के उपासना विषय का आश्रय लिया और आनन्द पाया। इसी आनन्द को वे वैज्ञानिक युक्ति से बाट रहे है।

आप गहन परिश्रम से वेद का स्वाध्याय कर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे लगे हुए है। आपके प्रचार की सबसे बडी विशेषता यह है कि आपने अपने प्रचार के मध्य लोगो को आकर्षित करने के लिए न तो कभी अपनी तथाकथित जाति व प्रान्त का परिचय ही दिया और न ही कभी सिद्धान्त विरुद्ध पौराणिक कथाओ का सहारा लिया।

विजय दशमी पर साधना एवं आर्यवीर शिविर

साधना शिविर १७ से २१ अक्टूबर तथा

आर्यवीर शिविर २३ से २६ अक्टूबर तक होगा

आने वाले सज्जन पूर्व सूचना दे। दूरभाष : ०१७९९-२१०९१, ०११-५५२१६६४

आपने विद्यार्थी काल मे पढ रहे श्री ब्र० ज्ञानेश्वर जी आचार्य, गुजरात आदि ब्रह्मचारियो को विशेष सहायता दी तथा आचार्य अखिलेश जी, आचार्य सुभाष जी महाराष्ट्र आदि को विशेष प्रेरणा तथा सहायता दी। श्री रामफल सिह जी आर्य अग्निहोत्री सचालक आर्यवीर दल हिमाचल तथा कैप्टनप्रशान्तार्य लद्दाख आदि को विशेष प्रेरणा दी। आपने वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार प्रचार करते हुए अनेक आर्य कार्यकर्ताओ को तैयार किया व अनेक आर्य समाजो की स्थापना की।

आपने कश्मीर से कन्याकुमारी व कच्छ से कटक तक देश के लगभग १५ प्रान्तो में भ्रमण करते हुए आठ भाषाओ मे विभिन्न पुस्तके छापीं। आपने योगपथ, यज्ञ विज्ञान परिचय, वेद विज्ञान परिचय, मेरा मन मेरा अनुशासन, नारी राख या चिगारीं जैसी करीब ५० पुस्तको का व वेदगगा जैसी कैसेटों का सम्पादन किया। आपने वैदिक सिद्धान्तो के अनुसार प्रचार करते अनेक खोजपूर्ण लेख लिखे जैसे कि भारत के संविधान पर महर्षि दयानन्द का प्रभाव आदि। आपने गत वर्षों मे विद्यार्थियो मे नैतिक शिक्षा, युवाओ मे देश व धर्म की भावना, माता पिता मे पचमहायज्ञ व संस्कारी सन्तान हित संस्कारो, नेताओं मे नैतिकता व वृद्धो में वानप्रस्थ द्वारा धर्महित मे त्याग करने हेतु प्रवचन किये व शिविर लगाये। आपकी प्रेरणा से आज भारत मे अनेक परिवार दैनिक यज्ञ करते हैं तथा अनेक युवको को जीवन निर्माण की शिक्षा मिली है। आपके प्रमुख क्षेत्र उड़ीसा, महाराष्ट्र, हिमाचल व गुजरात के सीमावर्ती ग्राम हैं।

आप ईसाइयो द्वारा गोआ जेल में कैद करने, मुसलमानों द्वारा अकोला मे गिरफ्तारी वारट निकलवाने तथा पजाब की सार्वजनिक सभा मे पौराणिको द्वारा ईट पत्थर मारने एव विधर्मी लोगो द्वारा फैलाई गई झूठी अफवाहो से भी कभी विचलित न हुए। आपने विभिन्न प्रान्तो मे अपने प्रचार को तेज करते हुए आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से वेद एव राष्ट्र सम्बन्धित कार्यक्रम प्रस्तुत किये। आपकी प्रेरणा से अनेक युवकों व परिवारों ने चाय, मांस, अण्डा, शराब व झूठे व्रत आदि त्याग कर व्यायाम, यज्ञ व आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपनाया। गृहस्थों की सभी समस्याओ के समाधान हेतु आपने गत दिनों "आर्य गृहस्थ परिवार सगम" की स्थापना की तथा कई स्थानों पर इसके सफल कार्यक्रमो का आयोजन भी किया।

आपने एक विद्यार्थी दिग्दर्शन अभियान प्रारम्भ किया, जिसके माध्यम से देश की भावी आशा विद्यार्थी समुदाय को देशभक्त व धार्मिक बनाने हेतु सम्पूर्ण देश के विद्यालयो, महाविद्यालयो तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ मे घूम घूम कर उन्हे जागृत किया और महर्षि दयानन्द द्वारा बतायी गयी शिक्षा की परिभाषा, विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता तथा जितेन्द्रियता का उपदेश किया और अनेक विद्यार्थी शिविर लगाए। जहा एक ओर देश के प्रसिद्ध साधु, सन्त-महात्मा व विद्वान् वक्ता बडे बडे धनाढ्य लोगो मे बोलना ही प्रमुख समझते है, वहा आपने राष्ट्र की नींव विद्यार्थी वर्ग व ग्रामो मे उपदेश करना गौरवमय समझा एव अनेक विद्यार्थियो को छात्रवृत्तिया दीं। सुन्दर नगर (हिमाचल) तथा मसूरी (उ० प्र०), गाधीधाम (गुजरात) मे ईसाई पादरियो को शास्त्रार्थ की चुनौती दी पर वे भाग गए।

आपने विश्व शान्ति स्थापना व विश्व मे बढ रही साम्प्रदायिक हत्याओ को रोकने हेतु व विश्व के बुद्धिजीवियो को वेद की ओर लाने हेतु विश्व धर्म सघ की योजना दी। इसके लिए आपने "धर्म के नाम पर" जैसी अनेक हिन्दी व अग्रेजी मे पुस्तके छापी, जिनमे से प्रथम पुस्तक दि होली वेदाज भारत मे हुए एशियाड खेलो मे बाटी गई।

आपके द्वारा स्थापित शिमला व सोलन के मध्य उद्गीथ आश्रम मे प्रतिवर्ष प्राय जनवरी, मार्च, मई, जून, अक्टूबर मे बच्चो, युवको, युवतियो व सद्गृहस्थो हेतु (प्रभु शक्ति, देशभक्ति, सस्कारी व्यक्ति) साधना शिविर लगाये जाते है। यहा ठहरने हेतु कमरो, बिस्तरो तथा भोजन की उचित व्यवस्था है। आने वालो को पहले सूचना देना जरूरी है। आश्रम मे छोटे बच्चो के लिए लघु तरणताल (मिनी स्विमिग पूल), फुटबाल, कैरम बोर्ड, टेबिल टेनिस व बैडमिन्टन आदि खेलो की भी व्यवस्था है।

प्रचार की २५वी वर्षगाठ के पावन अवसर पर तेजस्वी प्रतिभा के धनी, जन जन के प्रेरणास्रोत, वैदिक गवेषक श्री आचार्य आर्यनरेश जी को हमारी हार्दिक शुभकामनाए।

सेवा कार्य : आचार्य आर्यनरेश जी अपने विद्यार्थी काल से ही सेवाभावी रहे है। इसी भावना से उन्होने उत्तरकाशी भूकम्प पर दौरा किया तथा भूकम्प कल्लारी महाराष्ट्र पर अपने साथियो व गाडी सहित पहुच सेवा की। उडीसा के तूफानग्रस्त क्षेत्र मे आर्य ग्राम योजना मे पूर्ण सहयोग दिया। गत दिनो कच्छ मे आए भूकम्प मे अनेक दिन वहा ठहर कर तन, मन व धन से सेवा की। गुजरात ने उनके कारण लाखो रुपयो का सहयोग व श्री खोसला जी के सहयोग से एक क्लासिस गाडी प्राप्त की।

सम्पर्क सूत्र — आश्रम कार्यालय

उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल (पजीकृत धर्मार्थ न्यास) ओमवन, महर्षि दयानन्द मार्ग, डोहर (राजगढ) सिरगौर—१७३१०१ दूरभाष ०१७९९-२१०९१

नोट : आश्रम आने के इच्छुक शिमला मार्ग पर सोलन से बस द्वारा राजगढ या सीधे हब्बन मार्ग पर डोहर पहुचें। सोलन से आश्रम ५० किलोमीटर व राजगढ से आश्रम ९ किलोमीटर है। सोलन से प्रात ६ से रात्रि ८ बजे तक राजगढ तक बसे है। सेवानिवृत्त जनो के लिए नित्य निवास की भी व्यवस्था है।

आवश्यक सूचना : आचार्य आर्यनरेश जी द्वारा लिखित पुस्तके वेद विज्ञान परिचय, यज्ञ विज्ञान परिचय, धर्म के नाम पर, मेरा मन (मानसिक शक्ति), नारी राख या चिगारी, हम अण्डे मास क्यो न खाये? एक वैज्ञानिक विवेचन, व ईश्वर की सत्ता— विज्ञान की कसौटी पर आदि आदि पढे।

नाथद्वारा में 'अंग्रेजी हटाओ' की हुंकार

नाथद्वारा दिल्ली से लगभग७०० किलोमीटर दूर राजस्थान मे हिन्दुओ का प्रमिद्ध तीर्थ है। यहा श्रीनाथ जी का विशाल मन्दिर है, जो दुर्ग के नमूने पर बनी ऊची चार दीवारी मे स्थित है। मन्दिर निर्माण मे सगमर्मर का प्रचुर उपयोग हुआ है, जो उदयपुर मे सुलभ है।

नाथद्वारा चित्तौडगढ और उदयपुर के बीच पडने वाले मावली जक्शन से २५ किलोमीटर दूर है और उदयपुर से ४५ किलोमीटर दूर। दोनो स्थानो से बसे और जीपे मिलती रहती है।

उदयपुर अपने आप मे खूब हरा भरा, झीलो का शहर है। पहाडी इलाका है। उदयपुर से नाथद्वारा का मार्ग इस सितम्बर महीने मे बहुत ही सुन्दर प्रतीत हुआ। वर्षा ऋतु के अन्त मे पहाडिया हरियाली से ढकी थी और तालाब पानी से भरे थे।

सुन्दर शहर

नाथद्वारा छोटा ही शहर है। जनसख्या होगी लगभग ५० हजार। शहर न केवल साफ सुथरा है, अपितु सुखी और समृद्ध भी है। दूध, दही, श्रीखड, फलो और सब्जियो की प्रचुरता है। सामान भी अच्छा है और दाम भी उचित है। देख कर मन प्रसन्न होता है।

यह मन्दिर पुष्टिमार्गी वैष्णव हिन्दुओ का है। मन्दिर मे श्रीनाथ जी के भोग के लिए प्रतिदिन उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थ दाल, सब्जिया, रोटी, भात, पूरी, खीर, रबडी, श्रीखड, हलुआ आदि तैयार किये जाते है। सभी कुछ सात्विक होता है, शुद्धतम मामग्री से बना। उसमे मिर्च नही होती। मसाला भी अल्प ही होता है। श्रीनाथ जी का तो केवल नाम है, उन्होने खाना क्या है? वह सारा भोजन उनके सेवको को दे दिया जाता है। वे सेवक उसे यात्रियो को बेच देते है। भक्तो को शुद्ध, स्वादिष्ट, सात्विक भोजन उपलब्ध हो सके, इसके लिए इससे अच्छी व्यवस्था और क्या हो सकती है?

विशाल मन्दिर

श्रीनाथ जी का मन्दिर अन्य सभी पूजा स्थलो की भाति प्रदर्शन और आडम्बर से भरपूर है। तीन ऊचे ऊचे द्वार पुराने किलो के फाटको जैसे ही है। उनके मोटे मजबूत किवाडो मे आठ आठ इच लम्बी मोटी नुकीली कीले बाहर को निकली है, जिससे फाटक तोडने के लिए हाथी टक्कर न मार सके। मन्दिर तक पहुचने का एक गलियारा छाती की ऊचाई तक सगमर्मर की पटियाओ से बना है। श्रीनाथ जी की प्रतिमा मे एक बहुमूल्य हीरा जडा है, जो खूब दमकता है। मन्दिर के आगन मे एक सुरक्षित कक्ष मे चादी और मोने की दो चक्किया रखी है। किवदन्ती है कि किसी समय इनमे केसर पीसा जाता था।

भीड़ की धकापेल

यात्रियो की भीड बहुत होती है। सख्या उतनी अधिक नहीं होती, जितनी कि घिचपिच होती है। कारण यह है कि मन्दिर के पट कुछ निश्चित समयो पर ही खुलते है। उस थोडी अवधि मे ही हर कोई दर्शन कर लेना चाहता है। यदि पट सारे समय खुले रहे, तो भीड-भाड नहीं जैसी हो जाये। पक्ति बनाने की व्यवस्था भी नही है, जैसी कि तिरुपति मे है। पर भीड की धक्कामुक्की का अपना अलग महत्व है।

साहित्य मडल

इस नाथद्वारा मे एक सस्था है साहित्य मडल। उसके महामत्री श्री भगवती प्रसाद देवपुरा ने सूचित किया कि वह १४ सितम्बर को 'अग्रेजी हटाओ' (हिन्दी दिवस) पर अन्य साहित्यकारो, सम्पादको और पुरजनो के साथ साथ 'आर्य जगत्' साप्ताहिक के सम्पादक को भी सम्मानित करना चाहते हैं।

'अंग्रेज़ी हटाओ' समारोह में पारित प्रस्ताव

अग्रेजी हटाओ २००१ के आन्दोलन के अवसर पर साहित्य मडल प्रेक्षागार मे उपस्थित श्री नाथद्वारा के नागरिकगण एव विद्वद्गण आज सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार और राज्य सरकारो को सप्रेषित करते है—

१ केन्द्रीय परीक्षाओ के माध्यम से अग्रेजी को हटाया जाय।

२ केन्द्रीय सरकार सभी राज्य सरकारो से उनकी भाषा मे या हिन्दी मे ही पत्र व्यवहार करे।

३ देश के बच्चो पर अनावश्यक रूप से अग्रेजी नही लादी जाए।

४ केन्द्रीय सरकार देश मे गृहमत्रालय के अन्तर्गत सचालित राष्ट्रभाषा विभाग समाप्त करे— उस पर अरबो रुपए समाप्त हो गए किन्तु परिणाम आज भी कुछ नही है।

५ अनुवादको द्वारा जो अनुवाद हो रहे है, वह भी हिन्दी को जनता से दूर करने का षड्यत्र है।

६ राज्यो पर प्रतिबन्ध लगाया जाए कि वे अपने राज्यो मे पहली से पाचवी कक्षा तक अपने बच्चो पर अग्रेजी न लादे।

७ पब्लिक स्कूलो पर पाबन्दी लगाई जाए।

मनुस्मृति मे लिखा है कि समझदार आदमी को सम्मान से जरा बच कर ही रहना चाहिए, मानो वह जहर हो। फ्रासिस बेकन ने लिखा है कि लोगो को मालूम ही नहीं कि बडा सम्मान कितने अपमान सहने के बाद मिलता है। सम्मान समारोहो का मेरा अपना अनुभव भी भला नही है। अधिक बार यह अनुभूति हुई है कि इसमे सम्मिलित न होना ही भला रहता। सम्मानित किये जा रहे लोग तो निमित्त मात्र होते है, आयोजको की कुछ अपनी योजनाए होती हैं।

'आर्य जगत्' का सम्मान

पर यहा प्रश्न 'आर्य जगत्' का था। मुझे 'आर्य जगत्' का सम्पादक होने के नाते सम्मानित किये जाने की बात थी। इसलिए सोचा कि जाना तो चाहिए ही, जो बीतेगी, भुगतेगे। आर्य जगत् प्रभारी उपप्रधान श्री विश्वनाथ जी से अनुमति मागी, तो उन्होने भी कहा कि जाना ही चाहिए।

नाथद्वारा पहुच पाना पूरी तरह ईश्वर की (आयोजको के हिसाब से श्रीनाथ जी की) कृपा से ही सभव हुआ। मै उन लोगो मे से हू जो घर से इतना पहले चलना पसन्द करते है कि भले ही स्टेशन पर प्लेटफार्म पर आधा घटा प्रतीक्षा करनी पडे, परन्तु देर से पहुचने की शिकायत नही होनी चाहिए।

हम घर से एक बजे चले। गाडी २ बज कर १० मिनट पर चलनी थी। तिपहिया स्कूटर से २० मिनट का रास्ता था। पर बर्फखाने और आजाद मार्केट के पास हम ऐसे यातायात रोध मे फस गये कि न आगे बढते बने, न वापस लौटते। लगा कि गाडी छूट जायेगी। जब हम भागते हुए प्लेटफार्म पर पहुचे, तो जिस डिब्बे मे हमे चढ़ना था, सयोग से वह बिल्कुल सामने ही था। पुलिस के सिपाहियो ने कहा . 'जल्दी चढिये। गाडी चलने ही वाली है।' हम चढे और गाड़ी चल दी। यदि यातायात रोध दो मिनट और रह जाता (लग रहा था कि वह दो मिनट नहीं, दस मिनट तक बना रहेगा) तो हमारी गाडी छूट गई होती।

बड़ी संस्था

नाथद्वारा मे साहित्य मडल कहा होगा? आयोजको ने लिखा था कि सब्जी मडी पहुच कर पता कर लेना। सामने ही है। सशय था कि इतने से काम चलेगा नही। दो तीन कमरो वाली सस्था होगी। पर शहर छोटा ही है, इसलिए ढूढ ही लेंगे।

सब्जी मडी एक लम्बी गली का नाम है, जिसमे दोनो ओर सब्जी बेचने वाले बैठते हैं। पूछते ही पता चल गया कि यह सामने ही साहित्य मंडल है। अहाते में घुसा तो वहा एक पूरा माध्यमिक विद्यालय दिखाई पड़ा। बड़ा भवन। पेड, पौधो का सुन्दर सुव्यवस्थित बगीचा। स्वच्छ।

सोचा कि इस विद्यालय में ही किसी कमरे पर साहित्य मडल का बोर्ड लगा होगा। तभी किसी विद्यार्थी ने मुझसे पूछा . 'आप कहा से आये है?' 'दिल्ली से', मैने कहा।

'आपका नाम?'

मैने नाम बता दिया।

कर्मठ मंत्री

सुनते ही वह लपक कर चला गया। क्षण भर बाद ही वह साहित्य मंडल के महामंत्री श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा के साथ लौटा। और भी कई छात्र आ गये। देवपुरा जी के इशारे पर छात्रो ने मेरा सामान मुझसे छीन लिया। मैने बहुत कहा कि 'मै अपना सामान किसी को नहीं दूगा। यदि ये ले कर मुझे न लौटाये, तो मै क्या कर पाऊगा', पर किसी ने एक न सुनी। ऐसे कई अवसरो पर मै नाराज़ हो चुका हू। पर यहा नहीं हो सका।

श्री देवपुरा जी से बात करने पर पता चला कि जैसे पानी मे डूबे स्पज मे यह कहना कठिन होता है कि पानी मे स्पज है, या स्पज मे पानी है, वही हाल इस विद्यालय और साहित्य मंडल का है। यह विद्यालय साहित्य मडल का है और यह सारा भवन, जिसमे पचास कमरे है, साहित्य मडल का है।

श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा की आयु अब ७५ वर्ष है। १५ वर्ष की आयु मे वह साहित्य मडल सस्था से जुडे थे, जिसकी स्थापना उस समय के मुसिफ मजिस्ट्रेट श्री शिवकुमार शास्त्री ने की थी। ६० वर्ष मे सस्था कहा से कहा पहुच गई है। लोगो का कहना है कि यह भगवतीप्रसाद जी की लगन का फल है।

'अग्रेज़ी हटाओ' आन्दोलन

विद्यालय मे ५७२ छात्र है। ये छात्र और शिक्षक साहित्य मडल का बल है। मंडल सरकार से सहायता नहीं लेता। इस साहित्य मंडल ने 'अग्रेज़ी हटाओ, देश बचाओ' का आन्दोलन खडा किया है, जो तेज़ी से फैल रहा है।

१४ सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाने की खानापूरी अनेक राज्यों और शहरो मे की जाती है, परन्तु नाथद्वारा में 'अग्रेज़ी हटाओ' दिवस एक जीवन्त आन्दोलन बन गया है। नौ बजे साहित्य मडल के भवन से एक जलूस निकाला गया, जिसमें विद्यालय के छात्र छात्राओं, शिक्षको, भारत के कोने कोने से आये साहित्यकारों और पत्रकारो के अलावा नगर के वरिष्ठ गण्यमान्य पुरुष भी सम्मिलित हुए। छात्र अपने हाथो में हिन्दी

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य समाज, आर्य समाज है, मन्दिर नहीं

□ डा० रामकृष्ण आर्य, ऐम. ए पी-ऐच डी.

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के १० नियमों और २८ उपनियमो मे आर्य समाज की स्थापना करने के उद्देश्यो को अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया है। यदि इन १० नियमो और २८ उपनियमो पर गम्भीर चिन्तन मनन किया जाये, तो नियम संख्या ४ से ७ कुल ७, नियम और २८ उपनियमो में से उपनियम सख्या १, ३ से १०, १२, १३, १५, १८, २१ से २८ कुल २१ उपनियम आर्य समाज को वेद और वैदिक साहित्य मे उल्लखित विचारो के आधार पर एक समाज घोषित करते है। परन्तु अग्रेज़ो की वक्र दृष्टि से बचाव के लिए प्रारम्भ के आर्य नेताओ ने इसे एक धार्मिक सस्था कहना शुरू कर दिया था। लाला लाजपतराय का नाम आर्य समाज की सदस्यता सूची से इसीलिए काट दिया था कि आर्य समाज एक धार्मिक सस्था है, इसका सामाजिक या राजनैतिक क्रान्ति से क्या लेना देना।

यद्यपि भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे ८५ से ९० प्रतिशत आर्य कार्यकर्ताओ ने भाग लिया, जेल गए, अग्रेजो की यातनाए सहन की और बलिदान दिये, तथापि आर्य समाज एक धार्मिक सस्था है—के इस अलापे गए राग ने आज दिन तक आर्य समाज का पीछा नही छोडा। फलस्वरूप आर्य समाज एक समाज है, एक सामाजिक क्रान्ति है, एक सामाजिक आन्दोलन है, का क्रान्तिकारी स्वरूप तिरोहित हो कर आर्य समाज हिन्दू धर्म का एक सम्प्रदाय कहा और माना जाने लगा। स्वय आर्यसमाजियो और आर्य समाज के कर्ताधर्ताओ ने तो इससे भी आगे पग बढा कर अपने आर्य समाज को आर्य समाज मन्दिर ही कहना और लिखना शुरू कर दिया। आर्य समाज के भवन आकार प्रकार से मन्दिर दिखे इसलिये भवनो, और यज्ञशालाओ पर मन्दिर टाइप बडे बडे गुम्बद बनाये जाने लगे। आर्य समाज के पुरोहितो द्वारा आर्य समाज केसाप्ताहिक सत्सगो मे और आर्य परिवारो मे यज्ञ, संस्कार और सत्सग आयोजन के दौरान हिन्दू मन्दिरो के पुजारियो की तरह ऐसे लोकाचार अपनाये जाने लगे कि सामान्यजन उन्हे आर्य समाज के पुरोहित न समझ कर आर्यसमाज मन्दिर के पुजारी ही समझे।

मन्दिर शब्द का अर्थ

यो मन्दिर शब्द का अर्थ बुरा न हो कर शुद्ध, पवित्र और अच्छा होता है। सामान्यतया मन्दिर शब्द का अर्थ, गृह, घर, मकान आदि २० पर्यायवाची शब्दो के अर्थ में लिया जाता है। अमरकोष मे मन्दिर को उपर्युक्त अर्थो के अलावा पुर, नगर, और स्थान विशेष के अर्थ में भी लिया गया है।

मन्दिर मन्दिर प्रतिकर शोधा,
जहा तहा देखे अगणित योद्धा।

अर्थात् हनुमान ने लका मे स्थित प्रत्येक मन्दिर मन्दिर को खोजा, जहा अपने किलकारिया मारते हुए बच्चो और पत्नियो के साथ रहते हुए अगणित राक्षस योद्धा दीखे। परन्तु इनमे माता सीता कहीं भी दिखाई नही दी। यहा मन्दिर शब्द का अर्थ ऐसे सुन्दर गृह के अर्थ मे लिया है, जिसमे किलकारिया मारते बच्चे और आनन्द मनाते माता-पिता (पति पत्नी) रह रहे हो। निष्कर्ष यह है कि शुद्ध, पवित्र, आनन्द और शान्ति से सराबोर गृहस्थ, जहा या जिसमे रहता हो वह घर मन्दिर कहा जाएगा। अन्यथा वह घर तो होगा, मन्दिर नही। धीरे-धीरे यह पवित्र शब्द मन्दिर मूर्ति पूजा के अर्थ मे रूढ हो गया अर्थात् मन्दिर, वह जिसमे पूजने वाली मूर्तिया स्थापित हों। यही कारण है कि महर्षि दयानन्द ने मन्दिर शब्द की उपेक्षा की और आर्य समाज स्थापित करते समय आर्य समाज के साथ 'मन्दिर' शब्द नही लगाया। दूसरा यह कि महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना समाज के रूप मे ही की थी, धार्मिक सस्था के रूप मे नही। तब भी आर्य समाज के साथ मन्दिर शब्द कैसे लगाया जा सकता था? तो हमे क्या अधिकार है कि हम आर्य समाज के साथ मन्दिर शब्द लगाकर जबरदस्ती उसे हिन्दू धर्म का एक सम्प्रदाय बनाये। आर्य समाज भवन और यज्ञशाला को उपासना गृह के रूप मे स्वच्छ साफ, शुद्ध पवित्र और सुन्दर रखें। परन्तु इसका यह अर्थ तो नही, हम आर्य समाज को मन्दिर ही बना दे, ताकि वह अन्य सम्प्रदायो के मन्दिर की तरह एक मन्दिर ही दिखे।

हम जानते समझते भी मन्दिर शब्द के चक्कर मे पड कर आर्य समाज को विपरीत दिशा की ओर ले जा रहे है, वह विपरीत दिशा, जिसके महर्षि दयानन्द घोर विोधी थे। "उनका सुनिश्चित मत था किमूर्ति पूजा और मन्दिरों के विस्तार ने देश को आर्थिक दृष्टि से दुर्बल बनाया है। इन देवस्थानो के निर्माण और रख रखाव मे प्रतिवर्ष करोड़ो रुपया व्यय होता है। यह सारी धनराशि अनुत्पादक कार्यो मे ही खर्च होती है। यदि इस अपरिमित धन का उपयोग राष्ट्र निर्माण के कार्यों मे किया जाए, तो देश को समृद्ध होने मे कितनी देर लगेगी? उन्होने कानपुर के प० गुरुप्रसाद और प० प्रयाग नारायण से भी यही कहा कि मन्दिर निर्माण मे धन व्यय करने की अपेक्षा वे यदि इससे कला कौशल का विस्तार करते, तो हजारो बेरोजगारो को रोजी मिलती।"

महर्षि दयानन्द को मन्दिर और मूर्तिपूजा से इतनी अधिक विरक्ति हो गयी थी कि पूजा शब्द का मूल शुद्ध और पवित्र अर्थ 'यथेष्ट सत्कार' होते हुए भी उन्होने मन्दिर की तरह पूजा शब्द की भी प्राय उपेक्षा की। इतना ही नहीं, उन्होने मन्दिर के पुजारी को व्यग्य भाषा मे पूजा+अरि अर्थात् पूजा का दुश्मन या शत्रु तक कह दिया। इन सारे तथ्यो के रहते जानते समझते हुए भी स्थान स्थान पर आर्य समाज की शाखाओ के साथ मन्दिर शब्द लगाने की होड मची हुई है। यदि यह होड इसी प्रकार से लगी रही, तो वह दिन दूर नही, जब आर्य समाज मन्दिर मे श्रद्धा पैदा करने के नाम पर दयानन्द की मूर्ति लग जाए और धीरे धीरे उसकी षोडशोपचार पूजा शुरू हो जाए। क्योकि जब आर्य समाज मन्दिरो मे उनके पदाधिकारियो आदि द्वारा ईटो अर्थात् रामशिलाओ की पूजा हो सकती है, दयानन्द और मा सरस्वती के चित्रो पर पुष्पमाला पहनाई जा सकती है, पुरोहित वरण मे कलावा-लच्छा बाधा बधवाया और 'कुकुम' का तिलक लगाया जा सकता है, तो धीरे धीरे मूर्ति पूजा शुरू क्यो नही हो सकती? पाखड के कीटाणु क्षय रोग के कीटाणु की तरह अत्यन्त सूक्ष्म होते है। उनका पता तब चलता है, जब रोग तीसरे स्टेज पर पहुच कर लाइलाज हो जाता है।

अत सभी जागरूक आर्य विद्वानो, आर्य लेखको और आर्य बन्धुओ से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि समय रहते वे स्वय जगे और सबको जगाये, अन्यथा आर्य समाज तो रहेगा, परन्तु वह आर्य समाज दयानन्द के स्वप्नो का नही होगा। अर्थात् निश्चित रूप से हिन्दू धर्म का एक सम्प्रदाय बन जायेगा।

४ भ-२७, विज्ञान नगर,
कोटा-३२४००५ (राज०)

शेर और मेमना

एक चिडियाघर मे एक अद्भुत दृश्य प्रदर्शित किया जा रहा था—शेर और मेमना एक ही पिजडे मे साथ-साथ बैठे है। शेर को तो मेमने को तुरन्त खा डालना चाहिए।
एक चकित दर्शक ने प्रबन्धक से पूछा 'शेर मेमने को कुछ कहता नही?'
प्रबन्धक ने कहा 'यह ग्यारहवा मेमना है। जब शेर एक को खा लेता है, तब हम उसकी जगह पर दूसरा लाकर बाध देते है।'

॥ ओ३म् ॥

मानव कल्याण केन्द्र वैदिक आश्रम, (पंजीकृत)

सूचना

नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं रोग उपचार शिविर

"योग, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेश्यर, होम्योपैथी एव चुम्बकीय पद्धति द्वारा"

मानव कल्याण हेतु समर्पित समाजसेवी सस्था मानव कल्याण केन्द्र किशनपुर, देहरादून द्वारा २८ अक्टूबर से ११ नवम्बर २००१ तक केन्द्र तथा द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल केअपने ही प्रागण मे स्वास्थ्य परीक्षण एव उपचार शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर मे स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देने तथा रोग उपचार का प्रबन्ध होगा। इसमे योग, प्राकृतिक चिकित्सा, चुम्बकीय एव एक्यूप्रेश्यर पद्धति, होम्योपैथी और आयुर्वेद के योग्य आचार्यगण, दमा, मधुमेह (डायबिटीज) जोडो के दर्द, उच्च रक्तचाप, हृदय तथा गुर्दे के जटिल रोग सम्बन्धी जानकारी देगे और उपचार करेगे। यह शिविर डा० ओम् प्रकाश सेठ, डा० चमनलाल अरोडा, वैद्य हसराज जी, स्वामी शरणानन्द जी, स्वामी प्रकाश (ब्रह्मचारी वृन्दावन) एव श्री जगदीश आनन्द जी के निर्देशन मे सम्पन्न होगा।

स्वास्थ्य परीक्षण व उपचार के लिये सभी औषधिया नि:शुल्क दी जायेगी। इच्छुक व्यक्तियो को १५ दिन शिविर मे ही रहना अनिवार्य होगा। आवास, भोजन, दूध, फल आदि के लिए मात्र ४५०/- रुपये अग्रिम देय होगे। उपरोक्त पते/फोन पर सम्पर्क कर शीघ्रातिशीघ्र अपना स्थान पजीकृत करा ले।

नोट : *योग एव ध्यान की कक्षा डा० अन्नपूर्णा जी के निर्देशन मे लगेगी।*

निवेदक

रामकवंर गुप्ता	**गुरुनारायण दुबे**	**चमनलाल रामपाल**	**डा० वेदप्रकाश आर्य**
सयोजक	*मत्री*	*उपाध्यक्ष*	*सस्थापक*

सूचना : वार्षिक उत्सव २००२ की तिथि २४, २५ एवं २६ मई सुनिश्चित कर दी गई है।

(पृष्ठ ८ का शेष)

नाथद्वारा में 'अंग्रेजी हटाओ' ......

समर्थन के नारे लिखी पट्टिया लिये थे। तीन बैड बाजो के साथ जोर जोर से नारे लगाते हुए जलूस नगर के मुख्य बाजारो और गलियो से गुजरा। लोग छज्जो और अटारियो से जलूस को देखते थे। वायुमडल मे अग्रेज़ी विरोध फैलता था। इस जलूस मे चलते हुए मुझे लगा कि नाथद्वारा के पुराने मकान भारतीय प्राचीन भवन निर्माण कला के नमूने है, जिसका उल्लेख साहित्य मे है। दुर्ग, महल और अटारिया, चार पाच मजिली हवेलि़या और उनके झरोखो से झाकती नारी आकृतिया आज भी दिखाई पड रही थी।

समारोह

मुख्य समारोह दोपहर २ बजे साहित्य मडल प्रेक्षागार मे प्रारम्भ हुआ। इसमे हिन्दी समर्थन की नाटिका हिन्दी लाओ देश बचाओ का मचन विद्यालय के बाल कलाकारो द्वारा किया गया। 'अग्रेजी हटाओ देश बचाओ' उपनिषद् कार्यक्रम मे रामशरण पीतलिया कामवन, डा० सुरेश पाण्डेय वृन्दावन, माणिकलाल वशिष्ठ नाथद्वारा के आलेख वाचन हुए। इन आलेखो के माध्यम से वक्ताओ ने अग्रेज़ी के व्यापक दुष्प्रभाव पर और हिन्दी स्थापना की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कवि हुकार कार्यक्रम के अन्तर्गत देवकीनन्दन कुम्हेरिया, बिट्ठल पारीक, छुट्टन खा साहिल, श्रीकृष्ण जुगनू, निशा भट्ट, रघुनाथ चित्रेश, गिरीश विद्रोही आदि कवियो ने ओज़पूर्ण स्वरो मे हिन्दी के व्यापक प्रचार पर बल दिया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री मन्दिर मडल के निष्पादन अधिकारी श्री श्यामलाल गुर्जर ने साहित्य मडल के अग्रेजी हटाओ कार्यक्रम की उपादेयता रेखाकित करते हुए हिन्दी भाषा मे चेतना, नैतिकता और देश की अस्मिता के स्वरो को जाग्रत करने की शक्ति को स्पष्ट किया। इस अवसर पर डा० जयन्तीप्रसाद मिश्र, डा० सत्येन्द्र चतुर्वेदी, डा० विश्वदेव शर्मा, डा० महेन्द्र मानावत, श्रीमती माया चौधरी, डा० कौशलेन्द्र पाण्डेय को शाल, प्रशस्तिपत्र, श्रीनाथ जी का भव्य चित्रपट्ट, श्रीनाथ जी का प्रसाद देकर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर कनक मधुकर उदयपुर, अनन्त कुमार साहू मुम्बई, उदयवीर विराज दिल्ली (सभी पत्रकांर) को भी ऊनी शाल, प्रशस्ति पत्र, चित्रपट और प्रसाद भेट कर सम्मानित किया गया। इस वर्ष के सम्मानित पुरजनो मे श्री रसिक बिहारी पालीवाल, श्री जगदीश शर्मा, प० नारायणलाल शास्त्री, रोडीलाल गुर्जर आदि के नाम प्रमुख है। सम्मानित शिक्षको मे तरुण जोशी, मधु औदीच्य, उर्मिला पचोली, राधेश्याम कटारिया, वत्सला साचीहर, रामसिह छपई आदि सम्मिलित थे।

इस अवसर पर हरसिगार के अक गोस्वामी तुलसी दास अक और अग्रेजी हटाओ अक का लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि श्री मुरलीमनोहर शास्त्री ने किया। इस अवसर पर हिन्दी के देशव्यापी प्रचार प्रसार हेतु सात प्रस्ताव पारित कर राज्य सरकार और केन्द्र सरकार से हिन्दी को तत्काल राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार करने पर बल दिया। मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए महामण्डलेश्वर सन्त श्री मुरलीमनोहर शास्त्री ने हिन्दी को दैनिक व्यवहार मे लाने का आह्वान किया, अधिक से अधिक प्रचार पर बल दिया। राष्ट्रभाषा हिन्दी है—रहेगी, इसमे कोई सन्देह ही नही है।

(पृष्ठ २ का शेष)

दयानन्द के अध्यात्मवाद से ......

परिभाषा क्रमाक ४ (य) मे लिखी है कि — सध्या आदि नित्य कर्म, शुद्धवृत्ति, वैदिक सस्कार, पत्नीव्रत व पतिव्रत आदि सदाचार है। व्यभिचार, मद्यादि मादक द्रव्यो और मासादि अभक्ष्य पदार्थो का सेवन, जुआ, चोरी, छल, कपट, रिश्वत आदि दुराचार है।

उपरोक्त इन पक्तियो पर विचार कर देखिये कि हम सदाचारी है? या दुराचारी है? क्या हम आर्य समाज के सदस्य बनने योग्य है? जब आर्य समाज के सदस्य बनने के योग्य नहीं है तो अधिकारी कैसे बन सकते है? हम तो अपने आपको धोखा दे रहे है और प्रतिदिन दयानन्द की हत्या करने का जघन्य अपराध कर रहे है। अपने गुरु की हत्या करने का कडा दड भोगना ही पडेगा।

दयानन्द के भौतिक शरीर की हत्या जगन्नाथ ने की थी और हम दयानन्द के सिद्धान्तो की हत्या कर रहे है। हम परमात्मा को सर्वव्यापक मानते है। हमारा परमात्मा मन्दिर में बद नहीं है। हमारे कृत्यो को देख रहा है।

पौराणिक विद्वानो तथा विद्वान् सन्यासियो को स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध मे एक ही जानकारी है कि स्वामी दयानन्द नास्तिक थे। मै आजकल पौराणिक विद्वानो और विद्वान् कर्मकाडी पडितों तथा विद्वान् मठाधीश सन्यासियो, शकराचार्यों से मिल कर आर्याभिविनय और संस्कारविधि तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका भेट कर रहा हू। वे पढकर कहते है कि स्वामी दयानन्द तो परम आस्तिक थे। हमको ज्ञात ही नहीं है। हम तो नास्तिक ही समझ रहे थे। इस प्रकार हमको आम जनता से सम्पर्क करना होगा।

मै स्वामी दयानन्द के अध्यात्मपरक साहित्य का प्रकाशन कर रहा हू। वह भी इन पौराणिको को भेट कर रहा हू। यदि आप भी मगवाना चाहे तो लागत मूल्य पर उपलब्ध होगा। १ 'महर्षि दयानन्द' मूल्य पाच रुपये २ 'स्वामी दयानन्द के अमृत वचन' मूल्य तीन रुपये ३ 'परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना विषयक वेद मन्त्रो की व्याख्या'-व्याख्याकार स्वामी दयानन्द' मूल्य पाच रुपये।

अत स्वामी दयानन्द का अध्यात्मवाद जनता के सम्मुख रख कर स्वामी जी को आस्तिक सिद्ध करने से ही हमारी उन्नति सम्भव है।

वैदिक सदन, भवर कुआ, इन्दौर-४५२०१७

(पृष्ठ १ का शेष)

आतंकवाद की जड़ में ......

फिलिपाइन्स मे मनीला मे मुस्लिम विद्रोहियो के समर्थन मे लडने के लिए भेजा गया। उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान मे भी विद्रोह भडकाने का यत्न किया गया। चेचन्या के आतकवादियो ने रूस की राजधानी मास्को मे विस्फोट करके कई इमारतो को ढहा दिया। इससे रूस भी अफगानिस्तान से रुष्ट हो गया। तालिबान ने सभी से शत्रुता मोल ले ली।

कुछ वर्षो से इजराइल मे फिलस्तीनियो का आतकवादी आन्दोलन जोर पकड रहा था। आतकवादी लोग इजराइली सैनिको पर हथगोले फेक कर भाग जाते थे। बदले मे इजराइली सेना फिलस्तीनी अरबो पर हमले करती थी। इससे क्षुब्ध हो कर इस्लामी आतकवादियों ने ११ सितम्बर २००१ को न्यूयार्क मे विश्व व्यापार केन्द्र की दो सबसे ऊची मीनारो को दो आत्मघाती विमान टकरा कर धराशायी कर दिया। उसी दिन वाशिगटन स्थित पेटागन के कार्यालय को भी आत्मघाती विमान टकरा कर भारी क्षति पहुचाई गई। इससे अमेरिकी सरकार हिल गई। यदि कही इन विमानो मे परमाणु बम होता तो?

अमेरिका एकदम सक्रिय हो गया और उसने आतकवाद के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। उसने अफगानिस्तान से माग की कि वह ओसामा को जिन्दा या मुर्दा उसके हवाले कर दे। अफगानिस्तान की तालिबान सरकार ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया।

ओसामा ने यह प्रचार करना शुरू कर दिया है कि दुनिया भर के ईसाई दुनिया भर के मुसलमानो के विरुद्ध मजहबी युद्ध छेड रहे है, इसलिए दुनिया भर के मुसलमानो को अमेरिका आदि सभी ईसाई देशो के विरुद्ध जिहाद (मजहबी युद्ध) छेड़ देना चाहिए।

सही बात यह है कि इस्लामी आतकवादियो ने सारे ससार पर प्रभुत्व जमाने के लिए पहले ही जिहाद छेडा हुआ है। अकेले भारत मे तीन लाख के लगभग मस्जिदे है, जिनमे से प्रत्येक पर लाउडस्पीकर लगे है। अज्ञान का तो बहाना है। वस्तुत ये युद्ध की स्थिति उत्पन्न होने पर मुसलमानो को तुरन्त इकट्ठा और सगठित करने के उद्देश्य से बनाई गई हैं। भारत मरकार सर्वधर्म समभाव के मायाजाल मे फसी इस सैनिक सगठन की अनदेखी कर रही है।

मज़हब इकतरफा आन्दोलन नहीं है। यदि भारत के मुसलमान ओसामा के आह्वान पर जिहाद के लिए सगठित होते है, तो उससे अमुस्लिमो के लिए भारी खतरा उत्पन्न होता है। भारत मे १५ करोड मुसलमान है। यह सही है कि वे सब ओसामा के बहकावे मे नहीं आने वाले, फिर भी यदि एक तिहाई मुसलमान भी मजहबी जनून में आ कर उत्पात पर उतारू हो जाये, तो कितनी विकट परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है, इसकी कल्पना करना कठिन है। दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम ने अफगानिस्तान पर अमेरिकी आक्रमण के विरोध मे एक बयान दिया है, जो सरकार की नीति के स्पष्टतः विरोध मे है।

अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने जोर दे कर कहा है कि अफगानिस्तान मे अमेरिकी कार्रवाई इस्लाम के विरुद्ध नहीं, अपितु आतंकवाद के विरुद्ध है। परन्तु जिस तरह सभी मुस्लिम देशो मे, भारत मे भी, ओसामा के रगीन चित्र और फतवे धडाधड बिक रहे है, और वह सब मुसलमानो का वीर नायक बन गया है, उससे लगता है कि आगामी युद्ध मुस्लिमो का अमुस्लिमो के विरुद्ध आरपार का युद्ध होगा। यदि भारतीय लोग इस बात को समय रहते नही समझ पायेगे, तो भारी हानि उठायेंगे। यह मज़हबी युद्ध बने या न बने, यह अमुस्लिमो के हाथ मे नहीं है। यदि मुस्लिम सगठित हो कर लडने लगे, तो उन्हे रोका कैसे जा सकता है?

यह मिथ्या प्रचार बन्द होना चाहिए कि इस्लाम शान्तिप्रिय धर्म है। मुसलमान केवल मांसाहारी नहीं है। मासाहारी तो और भी बहुत लोग है। वह अपना शिकार हलाल करके, तडपा तडपा कर मारने के बाद खाता है। जिहादी अपने विरोधी को मार कर ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता, उसकी लाश की बोटी बोटी काट कर प्रसन्न होता है। कारगिल का अनुभव हमारे सामने है।

मज़हबी आतकवाद के विरुद्ध युद्ध लम्बा और कष्टदायक होगा। परन्तु इससे बचने का कोई उपाय नहीं है। यदि इस पौधे को अभी न उखाडा गया, तो यह दिनों दिन बढता ही जायेगा।

हमे इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि अमेरिका या रूस हमारी सहायता करेंगे। अपनी रक्षा अपनी ही भुजा करती है।

डा० योगेश्वर देव
१३७, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा

समाचार जगत्

आर्य समाज "अनारकली" का सत्संग

आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का साप्ताहिक सत्सग १६-९-२००१ को सम्पन्न हुआ, जिसमे लगभग १५० आर्य जन सम्मिलित हुए। यज्ञ के पश्चात् सत्सग भवन मे श्रीमती सरला गुप्ता ने सामूहिक सन्ध्या का पाठ तथा डॉ चन्द्रप्रभा ने सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवे समुल्लास के कुछ अशो का पाठ किया। स्कूल के छात्र-छात्राओ ने भक्ति-गीत प्रस्तुत किया। कम्प्यूटर-स्लाइड से 'वेद ज्ञान' नामक फिल्म दिखाई गई।

इस सत्सग मे डीएवी पब्लिक स्कूल, दयानन्द विहार के लगभग ७० छात्र-छात्राओ एव शिक्षको ने भाग लिया। इस विद्यालय के धर्मशिक्षक श्री ब्रह्मदेव शास्त्री ने यज्ञ की व्याख्या करते हुए कहा कि जो पवित्रता एव श्रद्धा से किया जाये, वह यज्ञ है। जिसमे दिखावा, लोक प्रशसा आदि की चाहना न हो, वही यज्ञ है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, उत्तरांचल का गठन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद्मश्री ज्ञान प्रकाश जी चोपडा के आदेशानुसार आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, उत्तराचल का गठन किया गया, जिसकी प्रथम बैठक श्री राम स्नेही आर्य की प्रधानता मे दिनाक ८-९-२००१ को डीएवी सेण्टेनरी पब्लिक स्कूल, हरिद्वार मे प्रात. १० बजे हुई। इसका शुभारभ यज्ञ द्वारा किया गया और यह सकल्प लिया गया कि महर्षि दयानन्द का ऋण उतारने के लिए आर्य समाज के प्रचार एव प्रसार मे कोई कसर नहीं छोडेगे।

बैठक मे लिए गए निर्णय इस प्रकार हैं

निश्चय हुआ कि हर वर्ष नए सत्र के प्रारम्भ मे सामूहिक रूप से विद्यालय के नए पुराने बच्चों का उपनयन सस्कार माता-पिता आदि को निमन्त्रित कर समारोह पूर्वक कराया जाए।

— सभी बच्चो की जन्मतिथि का तिथि क्रम से रिकार्ड बनाकर प्रातःकाल की प्रार्थना सभा में सामूहिक रूप मे जन्मदिवस पर वैदिक ढग से आशीर्वाद दिया जाए।

— फेयरवैल का नाम विदाई समारोह कर दिया जाए व हवन यज्ञ करके बच्चों को भावी जीवन के लिए शुभकामनाओ सहित आशीर्वाद दिया जाए।

— माता-पिता के विचारो का पता लगाकर, आर्य परिवार चिह्नित करे और उनके माध्यम से नए आर्य समाजो का गठन किया जाए।

— महात्मा हसराज दिवस, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, ऋषि दयानन्द निर्वाण दिवस और ऋषि बोध उत्सव आदि का आयोजन विद्यालयो मे किया जाए।

— प्रत्येक सत्र के अत मे पूरे वर्ष के अपने-अपने विद्यालयो की गतिविधिया एव उपलब्धिया लिखकर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, उत्तराचल को २० अप्रैल तक प्रेषित करे।

— सभव हो तो सत्र के अत मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा उत्तरांचल की गतिविधियो की एक स्मारिका निकाली जाए।

— भाषण प्रतियोगिता, कला एव निबन्ध प्रतियोगिता, वार्षिकोत्सव आदि मे आर्य समाज के नियम, सिद्धात तथा मान्यताओ के विषय ही लिए जाए।

— आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, उत्तराचल की बैठक त्रैमासिक होनी चाहिए व भिन्न-भिन्न विद्यालयो मे बारी-बारी होनी चाहिए तथा इसका आरम्भ हवन द्वारा होना चाहिए।

— आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा उत्तराचल की अगली बैठक ३ नवम्बर २००१ शनिवार को अल्मोडा मे प्रात १० बजे होगी।

दरबारी लाल डी.ए.वी. माडल स्कूल में हिन्दी

विद्यालय मे "हिन्दी दिवस" मनाया गया। इस अवसर पर हिन्दी प्रश्नोत्तरी, सवाद प्रतियोगिता, हिन्दी कहानी वाचन, भाषण व समूह कविता पाठ का आयोजन किया गया, जिनमे क्रमश प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सात्वना पुरस्कार प्राप्त छात्रो को हिन्दी के अच्छे साहित्यकारो/लेखको की पुस्तको को पुरस्कार मे दिया गया।

आर्य समाज वसन्त विहार, नई दिल्ली में क्रियात्मक योगाभ्यास का आयोजन

दिनाक ४, ५, ६, ७ अक्टूबर २००१ को वसन्त विहार, एफ-१०/१४, नई दिल्ली मे स्वामी सत्यपति जी पधार रहे है। इन दिनो वह क्रियात्मक योगाभ्यास का प्रशिक्षण देगे।

आर्य समाज वसन्त विहार,
एफ-१०/१४, वसन्त विहार, नई
दिल्ली-५७

गुरुकुल गौतमनगर का वार्षिकोत्सव

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय (गुरुकुल गौतमनगर) नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव २६ नवम्बर से १६ दिसम्बर २००१ तक समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जायेगा। ब्रह्मा श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती होगे। इसके अतिरिक्त अनेक विद्वानो के सारगर्भित प्रवचन होगे। समस्त आर्य जनो से प्रार्थना है कि इन तिथियो को अकित कर लेवे और अधिक से अधिक सख्या मे उत्सव मे पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाने की कृपा करे। बाहर से आये आर्य जनो के आवास एव भोजन की सुव्यवस्था गुरुकुल की ओर से की जायेगी।

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव

कन्या गुरुकुल दाधिया, जिला अलवर, राजस्थान का, जोकि दिल्ली से जयपुर जाते हुए लगभग १२० किमी पर बहुत ही रमणीय स्थान पर स्थित है, वार्षिकोत्सव २६, २७, २८ अक्टूबर २००१ को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। समारोह से एक सप्ताह पूर्व यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जायेगा।

मेरी समस्त आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो, आर्य सस्थाओ एव आर्य जनो से प्रार्थना है कि इस समारोह मे अपनी आर्य समाजो के अधिक से अधिक आर्य जनो के साथ दाधिया उत्सव मे पधारे।

दिल्ली तथा दिल्ली के आसपास की आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो एव आर्य सस्थाओ से विशेष रूप से प्रार्थना है कि वे अपनी-अपनी सस्थाओं की बसो से अथवा अपनी सस्था की ओर से बसो का प्रबन्ध करके उक्त समारोह मे अधिक से अधिक आर्य जनो एव बहनो के साथ पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाये।

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स नं॰ U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न॰ आर॰ एन॰ आई 39/57
Delhi Postal R. No D L 11082/2001
POSTED AT N.D P O ON 3/4-10-2001 दिनाक ७-१०-२००१

36583.
पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय
हरिद्वार-उत्तरांचल

'जीवन प्रभात' का गांधीधाम में शिलान्यास

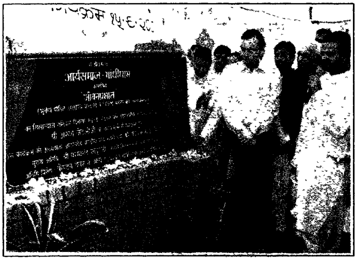

कच्छ जिले मे विनाशक भूकप के कारण अनाथ हुए बालको एव विधवा बहनो को योग्य आश्रय प्राप्त हो तथा सस्कारी वातावरण प्राप्त हो सके, इस आशय से आर्यसमाज गाधीधाम द्वारा सचालित असहाय बालको एव विधवाओ के आश्रय स्थल 'जीवन प्रभात' का शिलान्यास केन्द्रीय जहाजरानी मत्री श्री वेदप्रकाश गोयल एव केन्द्रीय कानून मत्री श्री अरुण जेटली के शुभ हाथो से किया गया।

समाजसेवा के कार्य में सर्वदा अग्रसर रहने वाली गाधीधाम आर्यसमाज ने भूकप के बाद मृतदेहो को बाहर निकालना, जीवित बचे लोगो को निकालना, घायलो की सहायता करना, सार्वजनिक रसोई का सचालन, तबू, कबल, दवाई, अनाज व कपडो का वितरण आदि सेवा कार्य किये। समाज सेवा का कार्य न मात्र नगर विस्तार मे, अपितु गॉव-गॉव मे जाकर भी किया गया। माता-पिता से विहीन हुए बालको तथा विधवा हुई बहनो की दशा देख कर उनके लिए कुछ करने का विचार आर्यसमाज गाधीधाम ने किया। इस भगीरथ कार्य मे काडला पोर्ट ट्रस्ट ने दो एकड जमीन देकर अपना अमूल्य योगदान किया है।

ब्रह्मचारी आर्यनरेश जी ने वेदमंत्रो से यज्ञ सम्पन्न कराया। केन्द्रीय जहाजरानी मत्री श्री वेदप्रकाश गोयल व कानून मंत्री श्री अरुण जेटली जी ने ताम्रपत्र को भूमि मे स्थापित किया।

गुजरात राज्य के शहरी विकास मत्री श्री परमानन्द कक्कड ने भूकप के बाद कच्छ की सेवा के लिए सर्वप्रथम आने वाले मत्रियो मे श्री अरुण जेटली का अभिवादन किया तथा मलबा उठाने एव नगरजनो की समस्याओ को हल करने के लिये काडला पोर्ट ट्रस्ट द्वारा किये गए कार्य की सराहना की। 'जीवन प्रभात' मे रहने वाला हर बालक अच्छे सस्कार एव सुशिक्षा को प्राप्त कर देश का सच्चा सपूत बने ऐसी उन्होने शुभकामनाए व्यक्त की।

जी एन एफ सी के चेयरमैन श्री के डी जेसवानी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने आर्य समाज के कार्य की प्रशसा की।

केन्द्रीय कानून मत्री श्री अरुण जेटली ने अपने भाषण मे कहा कि "भूकम्प के बाद मेरा कच्छ की भूमि के साथ सम्बन्ध बढ गया है तथा आर्य समाज जैसी समाजसेवी सस्थाओ एव काण्डला पोर्ट ट्रस्ट द्वारा ऐसे श्रेष्ठ कार्य मे दिया जाने वाला योगदान समाजोत्थान का कारण बनेगा। 'जीवन प्रभात' में रहने वाले बालक-बालिकाए तथा विधवा बहने अपने आपको असहाय नही, अपितु एक साधन सम्पन्न विशाल परिवार का सदस्य मानते हुए सुसस्कारी परिवार का अपने आपको सदस्य माने।"

समारोह के अध्यक्ष श्री वेदप्रकाश गोयल, केन्द्रीय जहाजरानी मत्री ने इस पुण्य कार्य के लिए भूमि प्रदान करने हेतु काण्डला पोर्ट ट्रस्ट को धन्यवाद दिया तथा लोगो से भी इस श्रेष्ठ कार्य में सहयोग देने की अपील की। पाखड दूर करने, स्वाधीनता सग्राम् के लिए लोगों को प्रेरित करने, नारी शिक्षा के लिए कार्य करने तथा सस्कृत व सस्कृति के प्रसार के लिए कार्य करने के लिए उन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती को याद किया तथा 'जीवन प्रभात' को महर्षि जी का ऋण चुकाने के समान बतलाया।

इस दौरान सेन्ट्रल रेलवे मजदूर सघ के महामत्री श्री विचारे ने 'जीवन प्रभात' को छह लाख रुपये का चैक सौंपा, जो सस्था के मंत्री श्री वाचोनिधि आर्य एव प्रधान श्री पुरुषोत्तमभाई पटेल ने श्री जेटली जी के हाथो से स्वीकार किया। सभा को कच्छ के सासद श्री पुष्पदान गढवी ने भी सम्बोधित किया।

ब्रह्मचारी श्री आर्यनरेश जी ने आशीर्वचन देते हुए सस्था के सदस्यो एव कार्यकर्ताओं को पूर्ण सहयोग देने के लिए उन्होने सभी से अपील की।

श्री वाचोनिधि ने 'जीवन प्रभात' की जानकारी देते हुए इस भगीरथ कार्य में आर्य समाज गांधीधाम के सदस्यो द्वारा तन, मन, धन से सहयोग की प्रशसा की।

'जीवन प्रभात' के भवन की सरचना वडोदरा के आर्किटेक्ट श्री आनन्द वोरा एन्ड एसोशियेट्स ने की है।

इस अवसर पर श्री अरुण जेटली एव श्री वेदप्रकाश गोयल को कच्छी पगडी पहना कर सम्मानित किया गया। कैप्टन देवरत्न आर्य, श्री विचारे जी, श्री प्रभात गोयल, श्री विनय आर्य, आचार्य आर्यनरेश, श्री सत्यनारायण अग्रवाल, श्री नरेन्द्रसिंह जाडेजा, श्री ए॰ के॰ जोती, श्री विपुल मित्रा, श्री शेट्टी जी को शाल ओढा कर सम्मानित किया गया। सभी अतिथियों ने स्कूल मे बालको को हरियाली प्राप्त हो इस आशय से वृक्षारोपण भी किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु श्री मोहनभाई जागिड, श्री गुरुदत्त शर्मा, श्री भीखूभाई गोहिल, श्री अशोकभाई कक्कड, श्री परितोष चौहान, श्री चिराग पटेल ने सहयोग प्रदान किया।

त्यागमूर्ति, कर्मयोगी, आर्य संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती का निधन

वेद मत्रो के उपासक, निर्भय, कर्मयोगी, करुणा एव त्याग के उज्वल नक्षत्र, निर्भीक, साहसी, स्वतत्रता सेनानी, ऋषि भक्त, आर्य सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का महाप्रयाण भुवनेश्वर (उडीसा) मे ६ ९ २००१ रात्रि २.२० बजे हुआ। स्वामी जी ८६ वर्ष के हो चुके थे। शरीर अस्वस्थ होने पर भी बाढ़ पीड़ितों की सहायता डी॰ ए॰ वी॰ संस्था के सहयोग से कर रहे थे।

महाप्रयाण के समय उनके शिष्य आर्य कुमार हर्षवर्धन वही उपस्थित थे। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के देहावसान की खबर पाते ही हज़ारो लोग उनके दर्शनार्थ उमड पडे। प्रिय शिष्य प्रोफेसर उमेश पत्री को स्वामी जी ने अपना सारा दायित्व दिया है।

स्वामी ब्रह्मानन्द एक व्यक्ति नहीं, वरन् एक सस्था थे। उडीसा मे लगभग ५५ गुरुकुल, अनाथाश्रम, दातव्य औषधालय, कल्याण आश्रम, आर्य समाज आदि की स्थापना करके वेद-विचार को घर-घर पहुचाने का जो महान काम स्वामी जी कर गये है, वह सदा ही अविस्मरणीय रहेगा। उडीसा प्रान्त में डी॰ ए॰ वी॰ सस्थाओ को भी बढाने मे स्वामी जी का भरपूर सहयोग रहा है। स्वामी जी के निधन से आर्य जगत् ने एक और आर्य योद्धा खो दिया है। निकट भविष्य में इस क्षति की पूर्ति कर पाना असम्भव लग रहा है। ईश्वर से प्रार्थना है कि स्वामी जी के दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

आर्य समाज मनीमाजरा, चंडीगढ़ का वार्षिकोत्सव

२९ सितम्बर से १ अक्टूबर तक धूमधाम से मनाया जायेगा। २९ सितम्बर को प्रात ५ से ६ बजे तक प्रभात फेरी होगी।

उत्सव में स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती, पं प्रेमदत्त शर्मा, डा. विक्रम विवेकी, डा मनुदेव आचार्य, आदि अनेक विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप सब सादर आमंत्रित हैं। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ और सस्कृत शिक्षा सम्मेलन, किसान आर्य महासम्मेलन, महिला सम्मेलन, कवि सम्मेलन होंगे।

विशेष . गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा चित्ताकर्षक सास्कृतिक एव शारीरिक पी टी., योगासन, धनुर्विद्या प्रदर्शन भी होंगे।

निर्वाचन

आर्य समाज देवनगर, नई दिल्ली

प्रधान : श्री टेकचन्द दीवान
मंत्री : ऐन॰ ऐस॰ देसवाल
कोषाध्यक्ष : श्री शशि छाबड़ा

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रबोध महाजन, सभा मत्री द्वारा राकेश भार्गव के प्रबन्ध में मयक प्रिन्टर्स 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष : 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक—उदयवीर विराज

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
संस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशों में ३० पौंड या ५० डालर
इस अंक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक ३३
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, १४ अक्टूबर, २००१
द्वितीय आश्विन कृ०-१२-१३-वि० स०-२०५८
सप्ताह १४ अक्टूबर से २० अक्टूबर

भारत की सुरक्षा : सिकुड़ती सीमाएं, बढ़ते खतरे

❑ प्रो० बलराज मधोक, पूर्व सांसद

बाहरी और आन्तरिक खतरों से देश की सुरक्षा किसी भी राज्य का पहला कर्तव्य माना जाता हैं। जनकल्याणकारी योजनाओं और गतिविधियो का भी अपना महत्व होता है, परन्तु उन्हे सुरक्षा पर प्राथमिकता नहीं दी जाती।

अप्राकृतिक सीमाएं

खडित हिन्दुस्तान की सुरक्षा की समस्या कई कारणों से अधिक कठिन और गम्भीर हो गई है। प्रथम कारण है देश विभाजन के फलस्वरूप पश्चिम और पूर्व की हमारी प्राकृतिक सीमा के स्थान पर कृत्रिम और कटी फटी सीमाओं का बनना। इन सीमाओ के उस पार इस्लामी राज्यों (पाकिस्तान और बंगलादेश) का, जो मजहबी कारणो से भारत के जन्मजात शत्रु है, उदय। दूसरा कारण है भारत के अन्दर बड़ी संख्या मे ऐसे लोगो का रहना, जिन्होंने १९४६ के निर्णायक चुनाव मे भारत विभाजन के पक्ष में मत दे कर और विभाजन के लिए सक्रिय काम करके सिद्ध कर दिया था कि उनकी प्रथम आस्था इस्लाम और पाकिस्तान के प्रति है और खंडित भारत उनके लिए "दार-उल-हरब" है, जिसे पाकिस्तान में मिलाना या पाकिस्तान की तरह का इस्लामी देश बनाना उनका मजहबी कर्तव्य है। विभाजन के बाद पाकिस्तान में लगने वाला नारा "हस के लिया है पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान" इसी बात का द्योतक था और तब से पाकिस्तान उसी के अनुसार अमल कर रहा है। खंडित भारत की सरकारो ने अपनी गलत नीतियों से अपनी सुरक्षित उत्तरी सीमा को भी असुरक्षित बना कर स्थिति को और भी विकट बना दिया है।

इसलिए खडित भारत की सुरक्षा के विषय में तथ्यों और गत अनुभवों के आधार पर गम्भीरता से विचार करना और सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने के उचित और आवश्यक पग उठाना अत्यावश्यक हो गया है।

सुरक्षा के आधार

किसी देश की सुरक्षा के निम्न चार मूल आधार माने जाते है

१ सीमाओं की स्थिति, सीमा के उस पार के देशो का देश के प्रति रवैया, सीमाओ के पास बसे लोगो की देश के प्रति निष्ठा और सीमा तथा समीपवर्ती क्षेत्र को अन्य भागो से जोडने की व्यवस्था।

२. जनबल, देश की जनसख्या और देश के लोगो की सुरक्षा के सम्बन्धो मे जागरूकता और इसमे योगदान देने की क्षमता तथा राष्ट्रभावना।

३ देश का सेना बल जो सेना की संख्या, सैनिक परम्परा, प्रशिक्षण तथा जवानों और अफसरो की तथा उनके शस्त्रो की गुणवत्ता से आका जाता है।

४ सेना और आम जनता का मनोबल। यदि मनोबल टूट जाए या कमजोर हो जाए, तो बडी से बडी सेना और देश पिट जाते हैं।

नेहरू जी की गलत नीतिया

विभाजन के कारण भारत पश्चिम और पूर्व की अपनी प्राकृतिक सीमाए खो चुका है। श्री नेहरू द्वारा अपनाई गई गलत विदेश नीति और इसके सुरक्षा नीति के साथ तालमेल के अभाव के कारण और तिब्बत पर चीन का अधिकार हो जाने के कारण हमारी युगो से सुरक्षित उत्तर सीमा भी असुरक्षित हो चुकी है। हमारी लम्बी समुद्री सीमा चटगांव और कराची हमारे हाथ से निकल जाने और नेहरू सरकार द्वारा मालद्वीप पर भारत का दावा छोड़ देने और उसके स्वतंत्र इस्लामी राज्य बन जाने तथा सिगापुर और अदन के अलग हो जाने के कारण पहले जैसी सुरक्षित नहीं रही है। अब इन सभी सीमाओ की अधिक चौकसी की आवश्यकता है। वैसे भी लडाकू विमान, मिसाइल और अणुशक्ति के बनने से भौगोलिक सीमाओ का पहले जैसा महत्व नहीं रहा। उनके उल्लंघन के कई नये माध्यम और रास्ते खुल गये हैं। तो भी शत्रु सेनाएं बडी सख्या में भौगोलिक सीमाओं के रास्ते से ही देश के अन्दर घुस सकती है। पाकिस्तान, बगलादेश और चीन से लगने वाली हमारी सीमाए सेना की चौकसी के बावजूद दिनोंदिन अधिकाधिक असुरक्षित बनती जा रही है।

सीमाओं पर मुस्लिमों का जमाव

इसका सबसे बडा कारण सीमावर्ती क्षेत्रो और विशेष रूप से सीमाओ के निकट मुसलमानो की बढती जनसख्या और वहा से हिन्दुओ का पलायन, सीमावर्ती क्षेत्र और उसकी सैनिक छावनियो के निकट और उन तक पहुचने वाली सडको पर योजनाबद्ध ढग से दरगाहो, तथाकथित मुस्लिम सतो की कब्रो और मकबरो का बनना तथा नई-नई मस्जिदो और मदरसो के निर्माण तथा पाकी और बगलादेशी एजेटो और सदिग्ध आस्था के लोगो द्वारा भारत की सैनिक गतिविधियो पर लगातार नजर और गुप्त सूचनाओ को शत्रु तक पहुचाने की व्यवस्था है। कोई भी व्यक्ति जो आखे खोल कर सीमावर्ती क्षेत्रो पर पडने वाली सडको और पुलो को देखे, तो उसे इस खतरे का स्वत आभास हो जाएगा।

यह कहना कि सभी मुसलमानो की देश के प्रति आस्था सदिग्ध है, शायद ठीक नही होगा क्योकि कई ऐसे अपवाद हैं, जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। परन्तु इन अपवादो के आधार पर कोई नीति बनाना खतरनाक सिद्ध हो सकता है। इस सम्बन्ध मे निम्न अनुभव पर सभी देशभक्तो को गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

मुसलमानो पर विश्वास कैसे हो?

१९६८ मे मै भारत सरकार की ओर से बनाई गई "डिफेंस स्टडी टीम" (सुरक्षा अध्ययन दल) का उपाध्यक्ष था। हमारे अध्ययन दल ने, जिसमे सेना के एक अवकाश प्राप्त सेनापति (जनरल) भी थे, देश की अधिकाश सैनिक छावनियो का दौरा किया। इसी सिलसिले मे हमारा दल पूना स्थित दक्षिण कमान के मुख्यालय भी गया। गुजरात और राजस्थान और उनकी पाकिस्तान से लगने वाली सीमाए इस कमाड के अन्तर्गत पडती है। १९६५ के युद्ध मे इस सीमा पर कई स्थानो के अनुभव कटु थे। सीमावर्ती क्षेत्र के मुसलमानो ने पाकिस्तान की प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे सहायता की थी। उसके परिप्रेक्ष्य मे मैने सेनाधिकारियो की एक बैठक मे पूछा कि उनको १९६५ के युद्ध मे सीमा पर बसे मुसलमानो का क्या अनुभव है? मेरा प्रश्न सुनकर एक बडे अधिकारी ने बडे विनम्र भाव से कहा 'प्रोफेसर साहब, यह एक राजनीतिक प्रश्न है। बेहतर है कि आप इसका उत्तर हमसे ना मागे।' तब मैने कहा "मैने यह प्रश्न निजी रूप से नही, सरकारी हैसियत से पूछा है। इसका उत्तर मिलना चाहिए।' तब उसने कहा 'यदि आपको उत्तर देना आवश्यक है, तो हमारा उत्तर है "We can trust no Muslim" (हम किसी मुसलमान पर विश्वास नही कर सकते)। बाद मे अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए उस अधिकारी ने कहा 'जहा कहीं सेना मे कोई मुसलमान जवान या अफसर है, हमे उन पर नजर रखने के लिए विशेष प्रबन्ध करना पडता है।'

बगलादेशी घुसपैठिये

हमारी इन कठिनाइयो के कारण हमारी सीमाओ की सुरक्षा का काम और अधिक कठिन हो गया है। हमारी पूर्वी सीमा और उसके निकटवर्ती क्षेत्र मे बगलादेशी घुसपैठियो की बढती सख्या ने उस सीमा की सुरक्षा की समस्या को अत्यधिक गम्भीर बना दिया है। राजनीतिक दलो और राजनेताओ को अपने वोटो की चिता अधिक है और देश की सुरक्षा की चिता कम है।

सविधान के अनुसार हमारे देश की तीनो सेनाओ का सर्वोच्च सेनापति राष्ट्रपति होता है। परन्तु इस मामले मे भी हमने राष्ट्रपति को पगु बना रखा है। डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने १९६२ के चीन के आक्रमण के समय सेनाओ और

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

उपनिषत्सुधा

श्रद्धा और मेधा, दोनों ही मुझे चाहिए

❑ आचार्य अभयदेव विद्यालकार

अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे।
स मे श्रद्धा च मेधा च जातवेदाः प्रयच्छतु॥
अथर्व० १९ ६४ १

अर्थ— (**बृहते**) बहुत बडे, परम (**जातवेदसे**) जातमात्र के जानने वाले, ज्ञानयुक्त (**अग्नये**) अग्नि केलिये मै (**समिध**) समिधा को, प्रदीपनीय वस्तु को (**आहार्ष**) आहरण करता हू, लाता हू। (**स·**) वह (**जातवेदा.**) ज्ञानयुक्त अग्नि (**मे**) मुझे (**श्रद्धा च**) श्रद्धा को भी और (**मेधा च**) मेधा को भी (**प्रयच्छतु**) प्रदान करे।

मनन— जब समिधा अग्नि मे डाली जाती है तो बस जल उठती है, अग्निरूप हो जाती है, समिधा मे छिपी अग्नि उद्बुद्ध हो जाती है, प्रदीप्त अवस्था मे आ जाती है। इसीलिये वैदिक काल के जिज्ञासु लोग समित्पाणि होकर (समिधा हाथ मे ले कर) गुरु के पास आया करते थे, अपने को समिधा बना कर गुरु के लिये अर्पित कर देते थे जिससे कि वे अपने गुरु की अग्नि से प्रदीप्त हो जावे। उस वैदिक विधि के अनुसार मै भी अपने आचार्य के चरणो मे उपस्थित हुआ हू और उनकी अग्नि द्वारा उन जैसा प्रदीप्त होना चाहता हू। मै जानता हू कि प्रदीप्त हो जाना बडा कठिन है। प्रदीप्त होने से पहले तो अपने को जला देना होता है। और यह अपने को जला देना तभी किया जा सकता है जब मुझमे पूर्ण श्रद्धा हो कि इस जलने के द्वारा मै अवश्य प्रदीप्त व ज्ञानमय हो जाऊगा। इसलिये पहले तो मुझमे श्रद्धा की जरूरत है। इसी तरह गीली होने आदि किसी दोष के कारण यदि समिधा अग्नि को धारण नहीं कर सकती है तो भी वह प्रदीप्त नहीं हो सकती। इसलिये मुझमे ज्ञान के धारण करने वाली बुद्धि, मेधा की भी जरूरत है। श्रद्धा और मेधा के बिना मै कभी ज्ञान से प्रदीप्त नहीं हो सकता। पर इस श्रद्धा और मेधा को मै और कहा से लाऊ? मै तो इन 'जातवेदा' अग्नि से, अपने आचार्यदेव से ही प्रार्थना करता हू कि वे मुझे श्रद्धा और मेधा का दान प्रदान करे। वे जातवेदा है, उन्हे ज्ञान उत्पन्न हो चुका है, वे ज्ञान की जलती हुई अग्नि है। अत वे 'जातवेदा' यदि चाहे तो मुझे श्रद्धा और मेधा भी दे सकते है।

परन्तु अन्त मे तो मै जो प्रात साय भौतिक अग्नि के लिए अपनी काष्ठ की समिधा लाता हू, शिष्य रूप मे आचार्याग्नि के लिये अपनें शरीर, मन और आत्मा के प्रदीपनार्थ जो तीन समिधाये प्रतिदिन लाता हू, राष्ट्रसेवक या धर्मसेवक बनकर राष्ट्राग्नि या धर्माग्नि आदि के लिये जो तदुपयोगी समिधाये लाता हू, ये सब की सब समिधाये अन्त मे उस 'बृहत् जातवेदा' के लिये, उस सब कुछ जानने वाले महान् अग्नि के लिये लाता हू जो कि सब आचार्यों का आचार्य है, सब अग्नियो का अग्नि है, परम परम अग्नि है और अन्त मे उसी 'बृहत् जातवेदा' से श्रद्धा और मेधा की याचना करता हू जो कि परम श्रद्धामय है और मेधा का भण्डार है।❑

जातवेदस् अग्नि का नाम है। **निरुक्तकार** यास्क का कहना है कि अग्नि **वह है** जो आगे ले जाता है (**अग्रे नयति**) **वह** गुरु है (अग्रेज़ी का guide शब्द गुरु का **ही बदला** हुआ रूप है)। अग्रणी को भी **अग्नि** कहा जाता है। जातवेदस् का भाव भी यही है कि जिसे ज्ञान हो गया है, जो ज्ञान का भडार है, ज्ञान का स्रोत है।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रद्धा की आवश्यकता होती है। जो कुछ गुरु कहता जाये, उसे आख मींच कर स्वीकार करते जाना श्रद्धा है। यदि हममे श्रद्धा नहीं होगी, और हम गुरु के हर वचन पर तर्क वितर्क करने लगेगे, तो गाडी एक कदम भी आगे नही चल पायेगी।

गुरु ने कहा 'यह अक्षर 'क' है।' यदि शिष्य तर्क करे कि यह 'ग' क्यो नहीं है, या यह अक्षर है भी या नही, तो शिष्य कुछ सीख नही सकेगा। यदि गुरु सिखाये कि दो और दो मिल कर चार होते हैं, तो शिष्य को मान लेना चाहिए कि दो और दो चार होते है। इसी प्रकार गुरु द्वारा सिखाई गई बातो को मानते जाने से ही शिक्षा निष्पन्न हो सकती है। यह श्रद्धा की उपयोगिता है। श्रद्धा के बिना गाडी आगे चलती ही नहीं।

परन्तु केवल श्रद्धा से भी गाडी दलदल मे फस जाती है। हो सकता है कि गुरु जी सही बता रहे हो, पर कभी ऐसा भी हो सकता है कि गुरु जी स्वय ही भ्रम मे हो और गलत बता रहे हो। उस समय मेधा की आवश्यकता होती है। मेधा हर बात को तर्क वितर्क की कसौटी पर कसती है। अनुभव और परीक्षण से उसकी सत्यता की जाच करती है।

श्रद्धा को अन्धश्रद्धा मे बदलते देर नही लगती। अन्धश्रद्धा गहरे गड्ढे मे डुबा देती है।

इसी प्रकार तर्क को कुतर्क या वितण्डा बनते देर नहीं लगती। कुतर्क या वितण्डा भी अन्धश्रद्धा जितना ही अनर्थकारी है।

इसीलिए मत्र मे प्रार्थना है कि जातवेदस् अग्नि मुझे श्रद्धा और मेधा, दोनो ही प्रदान करे, जिससे मै सत्य को उसके सही रूप मे पहचान सकू। सही ज्ञान ही सब कष्टो से मुक्ति का उपाय है।

समाज व राष्ट्रोत्थान हेतु

❑ श्री सोहनलाल शारदा

"सभी आर्य समाजी मेरे शिष्य है और उन्हीं पर ही मुझे पूरा भरोसा है।"

महर्षि ने यह विचार जोधपुर प्रवास के समय राव राजा जवानसिह जी के एक सुझाव के उत्तर मे कहे थे। इन महाशयो के सुझाव थे कि

"हे भगवन्, आप कोई सुयोग्य शिष्य बना लीजिये, जिससे श्रीमानो का यह वेद प्रचार व सुधार का कार्य मध्य मे ही नहीं रुक जाय।"

महर्षि ने यह भी कहा कि "न ही तो कोई ऐसा सुयोग्य पुरुष ही है कि जिसे मै शिष्य बनाऊ और न ही मुझे किसी शिष्य से कोई आशा है।" (देवेन्द्र बाबू कृत जीवनी गोवि० हासा० पृष्ठ ६०५)

आर्य मुसाफिर प० लेखराम लिखते है कि महर्षि के इन वचनो, विचारो को पूर्णतया हृदयगम करते हुए आगे बढना है। अत स्वामी जी महाराज की रचना को पढने और जीवन मे धारण करने से दुष्टो की दुष्टता इस प्रकार से नष्ट भ्रष्ट हो जावेगी, जैसे वायु के वेग से मेघ। वह जन अभागा ही है, जो स्वामी जी महाराज के लिखे, कहे वचनो को जीवन मे धारण नहीं करता।

यह इसलिए भी कि महर्षि का सर्वसुलभ सर्वसाहित्य सर्ववेद व वेद वाड्मय महाभारत पूर्व के सभी ग्रथो का सार सक्षेप ही है। अत इसे हम स्वत प्रमाण ही मानकर कर्तव्य कर्म कर रहे है। (प० लेखराम जी कृत जीवनी आर्यभाषानुवाद नया बास दिल्ली पृष्ठ ८२१)

वर्तमान की विषम परिस्थिति को भी महर्षि अपने योगबल से जान चुके थे। अत छठे समुल्लास के अन्त मे कहते है कि

"प्रत्यहम् लोकदृष्टैश्च शास्त्रदृष्टैश्च हेतुभिः। (मनुस्मृति ८/३)

अर्थात् जो नियम राजा और प्रजा के सुखकारी और धर्मयुक्त समझे, उन उन विषयो को पूर्ण विद्वानो की राज्यसभा बाधा करे। परन्तु इस पर भी नित्य अवश्य ध्यान रखे कि जहा तक बन सके, वहा तक बाल विवाह नहीं होने देवे, जिससे कि शरीर और आत्मा मे पूर्णता व बल सदा बना रहे। यह दोनो बल इसलिए अत्यावश्यक हैं कि जो केवल आत्मा का बल ज्ञान तो बढाता जाय और शारीरिक बल नहीं बढावे तो यह निश्चय है कि जो केवल आत्मा का बल ज्ञान तो बढाता जाय शारीरिक बल नहीं बढाने से निश्चय है कि एक ही बलवान पुरुष एक सौ विद्वानों, ज्ञानियो को जीत सकता है।

और जो कोई केवल शरीर का ही बल बढाता जाय और आत्मा का बल नही बढावे, तो वह भी राज्य पालन की उत्तमोत्तम व्यवस्था नहीं कर सकता। यह व्यवस्था विद्या पढे बिना नहीं आ सकती। विशेष रूप से क्षत्रिय जनो को जो रक्षक समुदाय है। दृढाग बल, पराक्रम, अस्त्र शस्त्रो से सुसज्जित रहता है। कहा गया है कि यथा राजा तथा प्रजा। यानी जैसा राजा शासनाधिकारी होता है, उसकी प्रजा भी वैसे ही हो जाती है।" इसी को हम वर्तमान मे राष्ट्र मे देख ही रहे हैं। अत वेदानुकूल ही उद्बोधन स्वरूप कहते हैं कि "राजा और राजपुरुषो को अति उचित है कि कभी भी दुष्ट आचरण नहीं करे। और सदा सब दिन धर्म, न्याय से व्यवहार करता हुआ सबके सुधार मे प्रयास करे।"

शासनकर्ता की योग्यता बढाने हेतु राजपुरुषो का कर्तव्य है कि "विशेष वेद, मनुस्मृति के सप्तम, अष्टम, नवम अध्याय और शुक्रनीति, विदुर प्रजागर एवं महाभारत के शान्तिपर्व में वर्णित राजधर्म व आपत् धर्म आदि पुस्तको को पढ कर पूर्ण राजनीति धारण कर माण्डलिक अथवा सर्वभौम चक्रवर्ती राज्य करें।"

इस प्रकार के कार्यक्रम को कार्यरूप में परिणत करने पर ही हम राष्ट्र रक्षा व राष्ट्रोन्नति मे समर्थ हो सकेगे। महर्षि कहते है कि 'कोई भी सुधार स्थिर नहीं रह सकता, जब तक उसका आधार वेदोक्त नहीं हो।"

कथनी करनी के भेद को निर्मूल करने हेतु ही मेवाडाधिपति महाराणा व शाहपुरेश को तथा मसूदा नरेश को पढाया था। शाहपुरेश को भी मनुस्मृति के सप्तम, अष्टम, नवम अध्याय जो कि राजधर्म विषयक है, पढाने के पश्चात् योगशास्त्र, वैशेषिक तथा न्यायशास्त्र के मुख्य विषय पढाये थे।

जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम गुरुवर महर्षि विश्वामित्र व योगेश्वर महाराज कृष्ण गुरुवर सादीपनि से, ऐसे ही महर्षि विरजानन्द जी से महर्षि दयानन्द ने पूर्ण निष्णात बन पुन गगा तट पर अनेकानेक भक्तजनो को पढा कर शुद्ध सनातन वैदिक धर्म मे दीक्षित किया था। वैसे ही अन्तिम समय मे भी शाहपुरेश आदि राजाओ को पढा कर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया।

अतः हमारा कर्तव्य यही है कि वर्तमान मे नई पीढी को आर्य बनाने हेतु सर्वप्रथम महर्षिकृत ग्रथ, जो वेदानुकूल ही हैं,पढाना है। साथ में पत्र व्यवहार व जीवन चरित्र से महत्वपूर्ण प्रसंग भी बतलाते रहना है। इसी हेतु सप्तम समुल्लास में वर्णन करते है कि "जैसे जगली मनुष्य भील आदि सृष्टि

(शेष पृष्ठ १० पर)

नादिरशाह के नये अवतार—तालिबान

चतुर लोग नाम का चुनाव अच्छा करते हैं अर्थात् अपना या अपनी संस्था का नाम बढिया या अर्थ वाला और आकर्षक रखते है, जैसे पाकिस्तान (पवित्र लोगों का स्थान), आर्यावर्त (आर्यों—श्रेष्ठ लोगों के रहने का स्थान), तालिबान (विद्यार्थी, शिक्षार्थी, जिज्ञासु)। नाम की आड मे बहुत कुछ छिप जाता है।

तालिबान धर्मान्ध

आजकल तालिबान नाम खबरो में है। यह उग्रपंथी, कट्टरपंथी, आतकवादी मुसलमानो का सूचक बन गया है। तालिबान का एक करोड़ आबादी वाले अफगानिस्तान देश के ९० प्रतिशत भाग पर कब्जा है। तालिबान ने अफगानिस्तान मे शरीया (इस्लामी कानून) लागू किया है।

उनकी मान्यता यह है कि अल्लाह के सिवाय और कोई पूजनीय नहीं है, उस अल्लाह का पैगम्बर (सदेश लाने वाला) मुहम्मद है, मुहम्मद के मुह से निकली वाणी कुरान अल्लाह की वाणी है, उसका अक्षरश पालन करना परम धर्म है, देश का कानून उसके अनुसार होना चाहिए।

इस्लाम शान्ति प्रेमी नहीं

बहुत से शान्तिप्रेमी हिन्दू और ईसाई यह प्रचार करते है कि इस्लाम एक शान्तिप्रेमी धर्म है। मौका देख कर कुछ मुसलमान भी ऐसा ही कह देते है। तालिबान ने अफगानिस्तान मे जो शरीया कानून लागू किया है और उसके अनुपालन मे वे जैसा आचरण कर रहे हैं, उससे इस्लाम भयानक हिसक और रक्तपाती मज़हब दिखाई पडता है।

इस्लाम की पहली मान्यता है कि जो भी कोई मुहम्मद को अल्लाह का दूत नहीं मानता, वह काफिर (अविश्वासी) है। हर काफिर को मुसलमान (मुहम्मद विश्वासी) बनाना और न बने तो मार देना हर सच्चे मुसलमान का पवित्र कर्तव्य है। जो इस कर्तव्य का पालन करते हुए काफिरों को मारता है, वह 'गाज़ी' है और जो इस प्रयत्न मे मर जाता है, वह शहीद है। यह पड़ौसी के प्रति हिंसा की स्पष्ट प्रेरणा है।

कश्मीर में भी

तालिबान का उद्देश्य केवल अफगानिस्तान मे ही शरीया का शासन स्थापित करना नहीं है। उनकी प्रेरणा पर पाकिस्तान में शरीया का शासन लागू हो चुका है। कई आतंकवादी गुटों ने कश्मीर मे भी शरीया कानून लागू करने का बीड़ा उठाया है और आदेश जारी किये हैं।

यदि इस्लाम या शरीया कानून में सचमुच कोई लोकहितकारी बात हो, तो आज का प्रबुद्ध जगत् स्वेच्छा से उसे अपनायेगा। पर वास्तविकता यह है कि शरीया कानून अरब देश में आज से चौदह सौ साल पहले बनाया गया था। यह इतना बर्बर और असंस्कृत है कि अशिक्षित धर्मान्ध लोग ही इसे स्वीकार कर सकते है। उदारपथी, पढे लिखे मुसलमान भी इसे पसन्द नहीं करते और इससे दुखी है।

शरीया कानून कष्टदायक

इस शरीया कानून के अनुसार हर पुरुष को लम्बी दाढी रखनी होगी और दिन मे पाच बार नमाज़ पढनी होगी। इसका उल्लघन करने पर तालिबान पुलिस आपको दड देगी। हर व्यक्ति कुछ स्वच्छन्दता चाहता है। दाढी रखने या न रखने, नमाज पढ़ने या न पढने की उसे स्वतत्रता होनी चाहिए। ईराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसेन और पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ दाढी नही रखते। पाकिस्तान के जन्मदाता मुहम्मद अली जिन्ना तो दिन मे एक बार भी नमाज़ नहीं पढते थे।

स्त्रियां भेड़ बकरी

तालिबान ने स्त्रियो को सभी अधिकारो से वचित करके उन्हे भेड बकरी की तरह पुरुषो की सम्पत्ति बना दिया है। भेड बकरी बुर्के (पर्दे) मे नहीं रहती, पर अफगान महिलाओ को बुर्के मे रहना आवश्यक बना दिया गया है। वे कार्यालयो मे काम नहीं कर सकतीं। जो सगठन अपनी माताओ, बहिनो और बेटियो के प्रति इतने निष्ठुर और अविवेकी हो सकते है, वे अपरिचितो पर क्या अत्याचार नही कर सकते? अपने आधे समाज को अशिक्षित, अविकसित रखने का भयकर परिणाम उन्ही को भुगतना पडेगा।

भारत के लिए अभिशाप

अफगानिस्तान अविभाजित भारत का पडौसी देश था। यह पडौसी देश भारत के लिए अभिशाप रहा है। यहा के निवासी अशिक्षित, हिसक, गन्दे, लुटेरे होते थे, इसलिए उन्हे म्लेच्छ कहा जाता था। भारत को लूटने के लिए १७ बार आक्रमण करने वाला महमूद गजनवी अफगानिस्तान के गजनी शहर का निवासी था। उसने भारत मे अनेक मन्दिर तोडे थे और भीषण रक्तपात किया था। उसके बाद मुहम्मद गौरी, खिलजी, तुगलक, लोदी, मुगल सभी आक्रान्ता अफगानिस्तान से ही भारत आते रहे। यह सिलसिला नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली तक चलता रहा। इन ८०० वर्षो का भारत का इतिहास हिन्दुओ की दुर्दशा और मुस्लिम शासको के अत्याचारो की खून और आसुओ से लिखी लम्बी कहानी है।

कश्मीर में रक्तपात

उस कहानी का एक अध्याय अभी भी कश्मीर मे लिखा जा रहा है, जहा तालिबान द्वारा प्रशिक्षित आतकवादी गिरोह निहत्थे पुरुषो और स्त्रियो पर रात में सोते समय आक्रमण करके उन्हे छुरो या गोलियों से मार रहे है। इस प्रकार अब तक २० हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं, जिनमें हजारों मुसलमान भी हैं।

तालिबान का कहना है कि वे इस्लाम का प्रभुत्व स्थापित करने और कश्मीरियो को स्वतत्रता दिलाने के लिए यह खूनी सघर्ष कर रहे है। कश्मीर पर पहले भी अफगानो का शासन रह चुका है और कोई कश्मीरी फिर उसकी पुनरावृत्ति नही चाहता।

तालिबान का सगठन और प्रशिक्षण पाकिस्तान ने किया है। इसके लिए प्रचुर मात्रा मे शस्त्र और धन अमेरिका ने पाकिस्तान को दिये थे। अमेरिकी सहायता के बिना न पाकिस्तान टिक सकता है, न तालिबान। पाकिस्तान को चीन से भी सहायता मिलती रही है।

इस्लाम की प्रभुता लक्ष्य है

इस्लाम का प्रभुत्व सारी दुनिया मे स्थापित करने के लिए अनेक उग्रपथी सगठन ससार के अनेक देशो मे सक्रिय है। मिस्र, अल्जीरिया, जोर्डन, लेबनान जैसे उदारपथी देशो मे ये उग्रपथी सगठन सरकारो के विरुद्ध सशस्त्र युद्ध लड रहे है और सरकारो की स्थिति कमजोर है। लीबिया, सूडान, ईरान जैसे देश इन सगठनो को हर प्रकार से सहायता देते है। धर्म के नाम पर चन्दे की कमी कही नहीं है।

तालिबान ने ओसामा बिन लादेन की सहायता से अनेक मदरसे खोले है, जहा युवको को हिसा करने की विधिवत् शिक्षा दी जाती है। उन्हे न केवल हत्या करने के तरीके सिखाये जाते है, अपितु उनमे इतना धार्मिक उन्माद जगाया जाता है कि वे आत्मघाती हमला करने को भी तैयार हो जाते है।

आतकवादी मदरसे

सऊदी अरब का एक उग्रपथी ओसामा बिन लादेन इन सगठनो का प्रमुख नेता है। उसका कहना है कि अमेरिका और यूरोप के देशो को मुस्लिम देश शस्त्रबल से पराजित नहीं कर सकते, परन्तु वहा बम फेक कर, विमान अपहरण करके वे आतक अवश्य फैला सकते है, जिससे इन समृद्ध सशक्त देशो के निवासियो का जीना दूभर हो जाये। ससार के किसी भी भाग मे अमेरिकी नागरिको और सम्पत्ति को क्षति पहुचा कर वे भय का वातावरण बनाये रख सकते हैं।

उनका यह अनुमान सही निकला है। ११ सितम्बर २००१ को न्यूयार्क के विश्व व्यापार केन्द्र की दो मीनारो को आत्मघाती विमानों की टक्कर से गिरा कर उन्होने पूरे अमेरिका को भयभीत कर दिया है। पेंटागन (अमेरिकी रक्षा सेनाओ के मुख्यालय) के भवन पर हमला और भी डरावना है, क्योंकि भविष्य मे किसी ऐसे आत्मघाती विमान मे परमाणु बम भी रखा हो सकता है।

अमेरिका की छटपटाहट

इस हमले ने अमेरिका को न केवल जगा दिया है, अपितु उसकी नींद हराम कर दी है। कश्मीर मे दस बरस से चल रहे आतंकवादी हमलों पर उसने कभी ध्यान नहीं दिया, पाकिस्तान पर कोई अकुश नही लगाया, पर अब जब आग उसकी अपनी ही दाढी मे लगी है, तब वह कुछ करने को छटपटा रहा है।

हिसक स्वभाव

तालिबान ने और भी कुछ करतूते ऐसी की है, जिन्होने उन्हे दुनिया की नजरो मे क्रूर और दडनीय बना दिया है। इन मे बामियान की विशाल बुद्ध प्रतिमाओ का ध्वस भी एक है। बुद्ध ससार भर मे अहिसा के प्रतीक के रूप मे प्रसिद्ध है। चीन, भारत, वियतनाम, कम्बोडिया, श्रीलका, तिब्बत और म्यामार मे एक अरब से अधिक बौद्ध रहते है, जिनको इन मूर्तियो के ध्वस से गहरी चोट पहुची हैं। उस समय तालिबान ने कहा था कि हम मूर्तिया नही तोड रहे, अपितु पत्थर तोड रहे है। अब उन्हे प्रतिमा और पत्थर का अन्तर समझ आ रहा है।

१०० गौओ का वध

रक्तपिपासु तालिबान को मूर्तिया तोड कर ही सन्तोष नही हुआ। मूर्तिया तोडने मे इतने वर्षो का विलम्ब हुआ, इसके प्रायश्चित्त के रूप मे उन्होने १०० गायो की कुर्बानी दी। इससे इस्लाम का शान्तिप्रेमी रूप और उजागर हो गया।

रही सही कसर तब पूरी हो गई, जब उन्होने सयुक्त राष्ट्र के आठ राहतकर्मियो को ईसाई धर्म का प्रचार करने के अपराध मे गिरफ्तार कर लिया और उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है। इस अपराध के लिए अभियुक्तो को मृत्युदड तक दिया जा सकता है। भुखमरी से अफगान जनता को बचाने के लिए ये राहतकर्मी अन्न, वस्त्र व दवाइयो का वितरण कर रहे थे। अब यह कार्य बन्द कर दिया गया है।

अखबारो की खबरो के अनुसार अमेरिका तालिबान पर जोरदार आक्रमण की तैयारी कर रहा है, जिसमे पाकिस्तान, भारत, रूस तथा यूरोपीय सघ ने उसका साथ देने का निश्चय किया है।

कट्टरपन्थी मुसलमान एकजुट

अमेरिका के इस सभावित आक्रमण के विरुद्ध दुनिया भर के कट्टरपथी मुसलमान एकजुट हो रहे हैं। अब यह भ्रम समाप्त हो जायेगा कि इस्लाम शान्तिप्रेमी धर्म है। पाकिस्तान मे बहुमत उग्रपन्थियो के साथ है। भारत मे दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम ने भी अमेरिकी आक्रमण का विरोध

(शेष पृष्ठ १० पर)

ब्रिगेडियर सावन्त की वेद प्रचार यात्रा

बरौरा से बरमिंघम

❑ ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त, वी. ऐस. ऐम.

श्रीराम की अयोध्या से दो घटे की दूरी पर है मेरा गाव, बरौरा। पढे-लिखे लोग रहते है वहा। किन्तु सडक नही है। न अग्रेज़ो ने बनाई, न उनके भारतीय उत्तराधिकारियो ने। फिर भी, पहली बडी लडाई मे स्वामी दयानन्द सरस्वती का लिखा हुआ 'सत्यार्थ प्रकाश' वाया फ्रास पहुचा बरौरा। मेरे पितामह के भाई, मुशीराम लोटन सावन्त आर्य समाजी बने फ्रास-फ्लैडर्स की लडाई के मैदान मे। फिर पीढी दर पीढी वैदिक धर्म हमारी रगो मे लहू समान सचरित रहा।

बरौरा के निकट एक बुनकर बहुल कस्बा है, टाडा। महाशय मिश्रीलाल, उनके पूर्वज और उत्तराधिकारी वेद प्रचार के प्रति समर्पित रहे और है। आर्य समाज टाडा ने मुझे पाच दिवसीय वेद प्रचार के लिए आमत्रित किया, तो श्रोताओ मे बडी सख्या मे मुसलमान भाई बहिन आये। प्रधान, आनन्द कुमार आर्य ने बताया कि इनकी बेटिया आर्य कन्या पाठशाला की छात्राए है। सध्या-हवन उत्साह से करती है।

इग्लैंड से निमत्रण

टाडा मे शाकाहार लोकप्रिय हो रहा है। उसी आर्य सम्मेलन मे मुझे मिले महाशय मिश्रीलाल के कनिष्ठ पुत्र, डाक्टर नरेन्द्रकुमार आर्य। उन्होने कहा कि बरमिघम, इग्लैड मे, जहा वह डाक्टर है, वेद प्रचार अभियान को नई दिशा दी जा रही है। प्रधान, आर्य समाज वैस्ट मिड्लैड्स के रूप मे उन्होने मुझे वहा आने की दावत दी। भारतीय सेना से ग्यारह वर्ष पूर्व रिटायर हो कर आर्य समाज के मच से वैदिक धर्म का प्रचार करना और धार्मिक एव राष्ट्रीय विषयो पर टी वी डाक्युमेंट्री बनाना ही अब शेष जीवन का लक्ष्य है। इस प्रकार मेरी बरौरा से बरमिघम की वेद प्रचार यात्रा का बीज बोया गया। अविलम्ब अकुरित हुआ। नरेन्द्र जी ने कार्यकारिणी के समक्ष प्रस्ताव रखा कि बरमिंघम रेडियो ऐक्स ऐल पर अनुभवी कमेंटेटर की आवाज मे वेद प्रचार हो। प्रस्ताव पारित हुआ। रेडियो प्रचार रग लाया। उसकी चर्चा कुछ समय बाद।

वीज़ा की कठिनाई हल हुई

विदेश मे वेद प्रचार की धुन मे मार्ग की बाधाए और गति-अवरोधक नगण्य जान पडे। कुछ मित्रो ने कहा कि ब्रिटिश हाई कमीशन दिल्ली से वीज़ा लेना लोहे के चने चबाने के समान है। फार्म भरने मे गलती नहीं होनी चाहिए। साक्षात्कार होगा। वीज़ा अधिकारी श्वेत वर्ण का है, अश्वेत अधिकारियो को घास नहीं डालता। उसके प्रश्न पैने होते है, आदि आदि। नया और पुराना पासपोर्ट दोनो ही जाचा जाता है। मेरे पत्रकार पुत्र, गौरव ने नियमों का अध्ययन करके सूखी धरती को नरम किया। वीज़ा अधिकारी ने पूछा "इंग्लैंड जाने का उद्देश्य?" मैने कहा "वेद प्रचार।" पर उसके पल्ले कुछ नहीं पडा। उसने फिर वार किया 'पत्नी और बच्चे आपकी विदेश यात्रा के समय कहा रहेगे?" उत्तर था "मेरे नोयडा निवास मे एक ही छप्पर की छाया में।" वह समझ पाया कि मेरी वैवाहिक जीवन लता सूखी नहीं है, अभी भी सुधा है, प्रेमरस है।" वीज़ा ग्रान्टेड", उसका दो शब्द का निर्णय मेरे कानो के लिए मधुर सगीत था।

राष्ट्रीय चेतना तन, मन मे है। विचार हुआ एयर इडिया से लदन जाने का। किन्तु ब्रिटिश एयरवेज़ के एजेट ने हवाई टिकट का मूल्य सबसे कम कहा। कर्म से ब्राह्मण होते हुए भी पैसे के मामले मे वणिक् वृत्ति उभर आई। (यो टिकट और अन्य व्यय का भार आर्य समाज बरमिघम वहन कर रहा था। पत्नी ने कई बार सूटकेस खोला और बन्द किया, सामान रखा और निकाला। पुस्तके भरी थीं। डाक्टर नरेन्द्र का फोन आया "आर्ष साहित्य साथ न लाइये। आर्य समाज वैस्ट मिड्लैड्स का पुस्तकालय सर्वगुण सम्पन्न है। कम्प्यूटर भी हैं दो-दो। सुधा और सूटकेस, दोनो का ही भार हल्का हुआ। गौरव के पुलिस परिचय से ब्रिटिश एयरवेज़ की प्रथम पंक्ति मे एकल सीट पर आसीन हुआ मै। एयर होस्टेसों ने सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखा। शाकाहारी भोजन की व्यवस्था भी की।

सैन्य अधिकारी शाकाहारी

बात तो बाद की है किन्तु चर्चा अभी कर दे। शाकाहारी भोजन का सदर्भ है। तहलका,जी हा बरमिघम मे। भूतपूर्व सैन्य अधिकारी और शाकाहारी। प्रश्न पर प्रश्न पूछे जाने लगे। अविश्वासी वर्ग मे सत्तर चूहे और हाजी बिल्ली वाले मुहावरे का भरपूर प्रयोग किया। मित्र बृजभूषण अग्रवाल ने कहा "यहा मछली मांसाहारी भोजन का अग नहीं है।" मुझे लगा कि मुझ सीज़र के प्रति वह ब्रूटस बन रहे हैं। "एट टू ब्रूटे" लेटिन शब्द ज़बान पर आये और लौट गये। एक महीने बाद, लौटती उडान के लिए चेकइन के समय काउटर पर बैठी जापानी लड़की को बताया कि मेरा शाकाहारी भोजन बिल्कुल निरामिष है— मछली अडा कुछ नहीं खाता मै। उसने लिखा "एशियन वेजिटेरियन।" विमान मे परोसे गये खाने पर आई सैंडविच, जिस पर लिखा था— "हिन्दू सैडविच।" हिन्दुत्व के प्रचार का जादू सर चढ कर बोल रहा था।

प्राणायाम की जिज्ञासा

विमान, बोइग ७४७ जम्बो, मे बैठते बैठते रात काफी हो चुकी थी। यो कहिए कि रात के बारह बजे तारीख बदल गई थी। ब्रिटिश एयरवेज ने विमान मे ही "अल्पाहार", जो लगभग पूर्ण रात्रि भोजन था, का प्रबन्ध किया था। परोसने से पूर्व १५ मिनट का समय था। मैने मन्त्र पाठ किया। प्राणायाम करने की इच्छा हुई। प्राणायाम किया। जब आख खोल कर देखा, आसपास सहयात्री थे। उनके मन मे प्राणायाम के बारे मे जिज्ञासा थी। प्राणायाम परिचय दिया और कहा कि इग्लैड मे वे अभ्यास करे— सुजान सभी थे, अत रस्सी और पत्थर पर निशान का उदाहरण दोहराना नहीं पडा। श्रद्धालुजनो से वेद मत्रो की चर्चा हुई। अनेक पहली बार वेद मत्र का पाठ अपने कानो से सुन रहे थे। बरमिघम और आसपास रहने वालो को आर्य समाज का पता दिया और दैनिक प्रवचन मे आमंत्रित किया। बहुत से नहीं आये, किन्तु कुछ आये भी। वेद प्रचार अभियान आरम्भ हो चुका था। क्या गोरे और क्या काले, जीवनशैली सुधार कर सुखी होना कौन नहीं चाहता?

परिचारिकाओ ने प्रकाश कम किया ताकि यात्री सो सके। थकान थी ही। प्रेशराइज्ड केबिन मे भी बाहर से आ रही इजनो की आवाज़ ने थके तन को लोरी सुनाई। अब सपनो का ससार दूर नहीं रहा।

उत्तम ज्योति

विमान में बैठे बैठे उषा का आनन्द लिया। सूर्योदय की लालिमा आकाश में फैल रही थी। अपने ही आप वेद मंत्र होठो पर था **ओ३म् उद् वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥** पाप और अन्धकार से ऊपर उठ कर प्रकाश को देखा और परम प्रकाशक ईश्वर को पा लिया . । यही वेद ज्ञान है जो हमे मोक्ष मार्ग दिखाता है।

हीथरो, लदन, विमानपत्तन पर उतर कर बाहर आया। इधर उधर देखा किन्तु कोई परिचित न मिला। मेरी धोती दूर से बता रही थी कि मै कौन हू? थोडी देर मे आर्य समाज वेस्ट मिड्लैड्स के पुरोहित आये। नमस्ते के बाद उन्होने मुझे बरमिघम की कोच मे बैठा दिया। तीन घटे बाद मैं बरमिघम मे था, नये क्षितिज की खोज मे।

(क्रमश.)

"उपवन" ६०९, सैक्टर २९,
नोयडा-२०१३०३

वैदिक राष्ट्र गान

**ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्।
दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु। फलवत्यो न ऽ ओषधयः
पच्यन्ता, योगक्षेमो नः कल्पताम्॥** (यजुर्वेद अ० २२, मत्र २२)

भाव–गीत

हे मातृभूमि, हे पितृ धाम।
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम॥
विद्वान् जगे, शासक जागे, जो ब्रह्मतेज का प्रण पागे।
जिनके बल, आयुध के द्वारा, अरि-प्रतिगामी डर कर भागे।
अनुपम स्वदेश हो ख्यात नाम। प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम॥
अन्नपूर्णा सुभग नारिया, सदा सुनायें प्रखर लोरियां।
शिशु सभ्य युवा यजमान बनें, रोज ओज की पकड़ डोरियां।
जो बढ़े विजय की ध्वजा थाम। प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम॥
गौ-वाणी-भू की रक्षा हो, जन पोषण और सुरक्षा हो।
गतिमान अश्व बलवान वृषभ, अभ्युदय श्रेय की शिक्षा हो।
समृद्धि सिद्धि हो नगर-ग्राम। प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम॥
कामधेनु हों, कल्पवृक्ष हों, सैनिकगण के सुदृढ वक्ष हो।
शिल्पकार, गुरु श्रमिक-श्रेष्ठी, धर्मनिष्ठ कल्याण-दक्ष हों।
हो पवन प्रभा सुरभित ललाम। प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम॥
मृदु मेघ गगन मे गहराये, जो इच्छित जल को बरसाये।
खेत भरे उद्यान हरे हो, शस्य श्यामला भूमि बनायें।
कल यन्त्र-यान दें शुभ्र दाम। प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम॥
फलफूल अन्न ओषधि उपजे, प्रासाद कुटी सुखसाज सजे।
हो ललित कला विज्ञान भला, उत्तम चरित्र के राग बजे।
सब पायें नर विश्राम-काम। प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम॥
प्रभु योग क्षेम का वर्तन हो, सर्वत्र हर्ष-आकर्षण हो।
निष्पक्ष एकता समता का, संगठन प्रेम सवर्द्धन हो।
हे राष्ट्र रहो अभिराम, साम। प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम॥

देवनारायण भारद्वाज, 'वरेण्यम्' ऐम. आई. जी. भूखण्ड सं० ४५, अवन्तिका कालोनी, रामघाट मार्ग, अलीगढ़, उ० प्र०

एक विस्मृत आर्य विद्वान् : मास्टर लक्ष्मण जी

❑ श्री विश्वनाथ, उपप्रधान आर्य प्रादेशिक सभा

यह कैसी शोचनीय स्थिति है कि हम ऐसे तपस्वी प्रकाड विद्वानों को, जिन्होने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार मे, वैदिक साहित्य के निर्माण मे, अनुसधान और अनुशीलन में लगा दिया, भूल चुके है। यह हमारी कृतघ्नता ही कही जाएगी। होना तो यह चाहिए कि हम ऐसे विद्वान् मनीषियो को प्रतिवर्ष उनके जन्म दिन पर स्मरण करे, उनके कृतित्व पर विचार करे, उनके साहित्य को उनकी श्रद्धाजलि के रूप मे प्रकाशित-प्रचारित करे। आज यदि आर्य समाज उन्हे विस्मृत कर चुका है तो आने वाली पीढियो के लिए उनका नाम अनजाना ही होगा।

इस सदर्भ मे मै आर्य समाज को पूरी तरह समर्पित, सस्कृत और फारसी-अरबी के विद्वान् मास्टर लक्ष्मण जी का स्मरण करना चाहूगा। कल्पना कीजिए एक ऐसे मूक तपस्वी और साधक की, जो एक सीलन भरी छोटी-सी कोठरी मे बैठ कर वेद और कुरान पर अनुसधान कर रहे है और वर्षो के परिश्रम से बडे साइज का ५०० से अधिक पृष्ठो का ग्रथ लिखते है, जिसमे आर्य समाज की दृष्टि से वेद और कुरान का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह दुकाननुमा कोठरी, लाहौर मे हस्पताल रोड पर स्थित थी, जिसमे न सूर्य का प्रकाश पहुचता था, न ही ताज़ा हवा। अकेले मे, भोजन की भी उचित व्यवस्था नही थी। इस विषय पर इतने विस्तृत धरातल पर शोध और समीक्षा का आदर्श प्रस्तुत करने वाला यह ग्रथ अपने ढग का एक ही है, जिसकी सभी आर्य विद्वानो ने प्रशसा की थी। इस्लाम की इतनी विशद समीक्षा शायद ही किसी और ग्रथ मे हो। यह महत्वपूर्ण पुस्तक 'वेद और कुरान' आज उपलब्ध नही है।

जीवन भर मास्टर लक्ष्मण जी को वह सम्मान नहीं मिला, जिसके वह अधिकारी थे। इस उपेक्षा को सहते हुए भी उन्होने मन पर इसका बोझ नहीं आने दिया। बिना किसी सभा अथवा सस्था के सहयोग के, बिना शिकवा-शिकायत किए, चटाई बिछा कर एक छोटा सा डेस्क सामने रख कर, वर्षों तक अनवरत साहित्य-सृजन करते रहे। गुरुदेव टैगोर के "एकला चलो रे" के आदर्श के अनुसार वह अकेले ही अपने पथ पर निरन्तर मृत्युपर्यन्त चलते रहे। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने अनेक छोटी बडी पुस्तके लिखीं और स्वयं प्रकाशित कीं। 'वेद और कुरान' भी उन्हें स्वयं प्रकाशित करना पडा, क्योंकि इसके लिए कोई सभा या आर्य सस्थान तत्पर नहीं था। 'रंगीला रसूल' प्रकरण के बाद, कुरान और इस्लाम की आलोचना से सभवत सभी सभाए कतराती थीं, हालांकि यह ग्रथ विवादास्पद नहीं था, विद्वत्तापूर्ण विवेचन था, कुरान और वेद का। वह स्वतत्र प्रकृति के थे। अपने परिवार मे भी वह अकेले थे और उन्हे आर्य समाज के लीडरो, सभा के अधिकारियो की चाटुकारिता का ढग नही आता था। इसलिए जो भी कुछ उन्होने किया अपने बलबूते पर और एक नि स्वार्थ त्यागी-वैदिक धर्म को समर्पित व्यक्ति की तरह।

लगातार चौकडी मार कर बैठने और पूरा-पूरा दिन एक ही आसन पर बैठ कर लिखने से उन्हे कई तरह के रोगो ने आ घेरा और वही उनकी मृत्यु का कारण भी बना। लाहौर मे उस जमाने मे सबसे प्रसिद्ध डाक्टर सर्जन गणेश कपूर थे, वह उनका सम्मान करते थे। उन्हे अपने नर्सिंग होम मे ले गए, उनका उपचार किया परन्तु लक्ष्मण जी को बचा नही सके। वही उनका अन्त हुआ था। उनके निधन पर न तो कोई शोक सभा हुई और न ही उनकी शव-यात्रा ठीक तरह से निकली।

मास्टर जी का जीवन भी फक्कड व्यक्तियो की तरह का था। बीसवी सदी के प्रारम्भ मे उन्होने 'आर्य पुस्तकालय' के नाम से पुस्तको का काम शुरू किया। अनेक पुस्तके प्रकाशित की। उस समय जब आर्य समाज अपने शैशव मे था, शायद दो-चार प्रकाशक ही भारतवर्ष मे आर्यसमाज का प्रकाशन करते थे। जब इस काम से मन उचटा तो उन्होने 'आर्य पुस्तकालय' मेरे पिता महाशय राजपाल जी को दे दिया और स्वय शाह-आलमी दरवाज़ा के बाहर 'आर्य भोजनालय' शुरू कर दिया। कल्पना कीजिए, वेद शास्त्रो का एक प्रकाड विद्वान् भोजनालय खोले और शुद्ध शाकाहारी भोजन लाहौर मे सबसे सस्ते दामो पर उपलब्ध कराये। कुछ समय बाद उन्होने इसे भी बद कर दिया और साहित्य सृजन और प्रकाशन मे फिर से लग गये। उनके मन मे कही 'पुस्तकालय' की तरह 'भोजनालय' से भी लगाव था।

उनका हस्तलेख बहुत सुन्दर था, परन्तु लिखते थे बहुत बारीक कलम से। इससे उनकी आखो की ज्योति कम होने लगी। अधिक नम्बर का मोटा चश्मा लगाकर पूर्ववत् लम्बी बैठक लगाकर दिन-रात लेखन मे लगे रहे।

१९३३ मे महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्धशताब्दी अजमेर मे मनाई गई, जिसमें हजारो की सख्या मे देश-विदेश के आर्य पुरुषो और स्त्रियों ने भाग लिया तो मास्टर लक्ष्मण जी ने भी अस्थायी 'आर्य भोजनालय' स्थापित किया। भोजनालय क्या था, एक पडाल था, जिसमे सादा भोजन सभी आने वालो के लिए सुलभ था। मुझे भी वहा भोजन करने का अवसर मिला, इसलिए मुझे याद है कि किस तरह से सैकडो लोग वहा लाइन लगा कर भोजन करने आते थे। किसी ने पैसा दिया तो ठीक अन्यथा वैसे भी लोग भोजन करके चले जाते थे। एक तरह का ऋषि लगर था। मैने उनसे प्रश्न किया कि आपने साहित्य साधना करते हुए भी यह भोजनालय फिर से किसलिए शुरू किया है? उन्होने हसते हुए कहा कि अजमेर आना ही था, यहा कुछ दिन रहना भी था तो मैने सोचा कि क्यो न अतिथि-यज्ञ किया जाए। भोजनालय का मुझे खूब अनुभव था, इसलिए मैने १५ दिन का समय इसमे दे दिया और आनन्दपूर्वक खूब सेवा की और अनेक लोगो से मिलने जुलने, बाते करने का भी इस तरह से अवसर मिला। आर्थिक घाटा हुआ, सो तो होना ही था।

कैसे-कैसे दीवाने लोग थे, जो आर्य समाज के प्रति समर्पित थे। स्वामी दयानन्द के शैदाई, जिन्हे दिन-रात सोते-जागते आर्य समाज की ही धुन थी। पडित लेखराम जी की अन्तिम वसीयत के अनुसार 'तहरीर' अर्थात् साहित्य साधना का काम बद नही होना चाहिए, यही मास्टर लक्ष्मण जी के जीवन का आदर्श था।

मास्टर लक्ष्मण जी भारी शरीर के थे, गौर वर्ण था और चेहरा तेजस्वी। यह लेख लिखते हुए आज भी मेरी आखो के सामने उनकी भव्य मूर्ति साक्षात् हो रही है। मै उन्हे अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हू। काश! कि आर्य समाज अपने विस्मृत विद्वानो को स्मरण करने की परिपाटी बनाये और उनके साहित्य को भी विलुप्त न होने दे। किसी भी सस्था, जाति, समाज अथवा देश को सर्वस्व निछावर कर देने वाले अपने विद्वानो, महात्माओ, बलिदानियो को भुलाना नही चाहिए।

आर्य समाज, मन्दिर मार्ग का सत्सग

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का साप्ताहिक सत्सग रविवार ३० ९ २००१ को प्रात काल ९ बजे बृहद् यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। सत्सग भवन मे श्रीमती सरला गुप्ता ने सामूहिक सध्या करवाई और डा० चन्द्रप्रभा ने सत्यार्थ प्रकाश का पाठ किया। सत्सग मे प्रवचन करते हुए डा० विजयपाल शास्त्री ने कहा कि विद्यार्थी को अपने गुरु के वचनो को ध्यान से सुनना, अच्छी तरह से हृदयगम करना चाहिए जिससे विद्यार्थी उन्नति करके आगे बढे और देश, समाज एव परिवार का नाम उज्वल करे। श्रीमती लाज नारग और श्री नरेश सोलकी का मनोहर भजन हुआ।

इस सप्ताह ३० ९ २००१ को सूरजभान डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, वसन्त विहार, नई दिल्ली के छात्र-छात्राओ और अध्यापिकाओ ने भाग लिया। सत्सग मे स्कूल की छात्र-छात्राओ और सगीत अध्यापक श्री देवाशीश चक्रवर्ती ने दो प्रभु भक्ति और एक गीत कुरीति निवारण का प्रस्तुत किया। स्कूल के धर्मशिक्षक श्री मनोज कुमार शास्त्री ने ध्यान शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि मन को चचलता से बचाएं और वश मे रखे। जो भी कार्य करे ध्यान और सावधानीपूर्वक करे। तुम अपने जीवन मे सफलता प्राप्त कर उन्नति करोगे, मन, वचन और कर्म से बुरा करना हिसा है और उससे बचना अहिसा है। अपने शरीर व मन, वचन, कर्म मे किसी को कष्ट न दे। अगर कष्ट देते है, तो हिसा है। हमारे जीवन मे अहिसा, सत्य, अस्तेय का होना आवश्यक है। 'सत्यमेव जयते' सत्य की हमेशा विजय होती है। सभी मनुष्यो का जीवन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से जुडा हुआ है। वेद हमारे जीवन का "मैनुअल" है। वेद पढ कर हम अपना जीवन सुधारे। वेद हम मनुष्यो के लिए मार्ग दर्शक का काम करता है। अन्त मे समाज के सहमत्री श्री राजरतन भल्ला और उपप्रधान श्री रामनाथ सहगल ने सबका धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण के साथ सत्सग समाप्त हुआ।

सामवेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज लाजपतनगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनाक २७ सितम्बर से ३० सितम्बर २००१ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री प० मेघश्याम वेदालकार थे, जिनके ब्रह्मत्व मे यज्ञ प्रभावशाली ढग से सम्पन्न हुआ। भजन श्री नरेन्द्र आर्य व कथा श्री चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुई। ३० सितम्बर, रविवार को प्रो० श्री वेदप्रकाश शास्त्री की अध्यक्षता मे समाज सुधार सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। वैदिक विद्वान् प्रो० श्री वेदप्रकाश जी शास्त्री गुरुकुल कागडी हरिद्वार को आर्य समाज की ओर से ५१००/- रुपये की राशि, शाल एव श्रीफल देकर प्रधान श्री सोमनाथ कपूर ने सम्मानित किया। इस अवसर पर पचास कार्यकर्ताओ को भी सम्मानित किया गया।

पत्र-जगत्

भारतीय जी शंका का समाधान करें

मै "आर्य जगत्" का बहुत समय से नियमित पाठक हू। इसमे लेख अतिउत्तम और विचारपूर्ण व सामयिक होते है। पत्र प्रशसनीय है।

अभी नीरक्षीर विवेक से उद्धृत "अन्तिम अध्याय" की समीक्षा पढ कर, एक लम्बे समय से जो मस्तिष्क मे उथल पुथल थी, डा० भवानीलाल जी भारतीय के उपरोक्त लेख ने दूर कर दी। "अन्तिम अध्याय" के लेखक श्री प्रवीणकुमार ने जो विचार रखे थे, उन पर शकाये हो रही थीं और मैं सोचता था कि इसका समाधान किससे किया जाए। आपने 'नीर क्षीर विवेक' शीर्षक से 'अन्तिम अध्याय' लेख की समीक्षा 'दयानन्द सदेश' के अप्रैल अक से लेकर आर्य जगत् में उद्धृत की, यह आपने बहुत ही सुन्दर कार्य किया। यह लेख उन्होने आपके पास नहीं भेजा, पर आपने हम जैसे पाठको के ऊपर इसे छाप कर बडा उपकार किया। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

मै डा० भवानीलाल भारतीय के लेख, जहां भी मेरी दृष्टि में आते है, पढता हू। सार्वदेशिक मे भी उनके लेख आते रहते है। आर्य जगत् मे भी उनके लेख पढ़े है। वह एक उच्च कोटि के विचारक, लेखक और विद्वान् है। आर्य जगत् मे उनका एक विशिष्ट स्थान है। कुछ माह पूर्व 'आर्य जगत्' साप्ताहिक मे आदरणीय श्री मनोहर विद्यालकार जी के दो लेखो पर कुछ शकाए हुई थी, उनका समाधान अभी हो नहीं पाया। पहले तो शूद्र शब्द केसम्बन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश मे चाडाल आदि के प्रयोग पर उन्होने पूज्य स्वामी दयानन्द जी के लिए लिखा कि "असावधानीवश" उन्होने ऐसा लिखा। इस 'असावधानीवश' शब्द पर मेरे मस्तिष्क की शका का समाधान नहीं हुआ। क्या स्वामी जी ने असावधानीवश ऐसा लिखा, या उस समय की परिस्थिति या बोलचाल के कारण ऐसा लिखा गया? दूसरी शका उनके एक लेख पर है जो उन्होने आर्य समाज के नियमो के दूसरे नियम पर अपने विचार रखे है। उसमे लगता है कि वह इस सबध मे स्वामी जी से अधिक विद्वान् लेखक है।

मै भी मनोहर जी विद्यालकार का आदर करता हू और जब मै बहुत वर्ष पूर्व आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली का मत्री था, उनके उपदेश भी कराये हैं। उनके उपरोक्त दो लेखो के सम्बन्ध मे किसी विद्वान् की टिप्पणी आपके पत्र मे देखने मे नहीं आई। मै इस पत्र के द्वारा आदरणीय भाई डा० भवानीलाल जी भारतीय से अनुरोध करूगा कि इस सम्बन्ध मे अपने अमूल्य विचारो से अवगत कराये।

नरेन्द्रनाथ गुप्ता, ४१४०, वुडसाइडर, एच २०४, कोरल स्प्रिंग्स,
फ्लोरिडा-३३०६५ यू.ऐस.ए.

सत्यार्थ प्रकाश और शूद्र

'सत्यार्थ प्रकाश' मे शूद्रो को अनार्य कहे जाने की ओर सर्वप्रथम ध्यान आकृष्ट किया था 'आर्य जगत्' के २७ नवम्बर १९९४ के पत्र जगत् स्तम्भ मे प्रकाशित 'सत्यार्थ प्रकाश मे तनिक सा सशोधन' शीर्षक पत्र ने, जिसके लेखक थे— 'विराज।' उक्त पत्र मे सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास मे एक ही वाक्य मे आर्यों के अन्तर्गत शूद्रो की गणना करने एव पुन शूद्रो को अनार्य लिखने की बात कही गयी थी और सत्यार्थ प्रकाश के इस अश को सशोधित करने का सुझाव दिया गया था। यह सुझाव शत-प्रतिशत उचित एव अवश्यमेव करणीय है। परन्तु कई आर्य विद्वान् इन सुझाव देने वालो पर ही टूट पडे हैं और महर्षि दयानन्द के नाम पर प्रचारित किसी ग्रथ मे रत्ती भर भी सशोधन के नाम पर ही बौखला जाते हैं। इनकी यह प्रतिक्रिया उन पोगापथियो पौराणिको के व्यवहार का स्मरण अनायास ही दिलाती है, जो मनुस्मृति आदि ग्रथो मे प्रक्षेप की बात सप्रमाण प्रस्तुत करने वाले वैदिक विद्वानो पर नास्तिक आदि मिथ्या दोषारोपण करते हुए आक्रोशपूर्ण आचरण करते है। फिर आर्य समाज द्वारा स्थापित नियम 'सत्य को ग्रहण करने एव असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहने' का अनुपालन कौन करेगा?

'जो पढाने से भी न पढे, वह शूद्र है' तथा 'शूद्रो का यज्ञोपवीत सस्कार न होने से वे द्विज नहीं है' जैसी परिभाषाए भी समझ मे नहीं आने वाली तथा अतार्किक है। यज्ञोपवीत सस्कार तो गुरुकुल प्रवेश की अथवा विद्यालय प्रवेश की प्रारम्भिक प्रक्रिया है, जिसके कुछ समय बाद ही स्पष्ट होना सभव होगा कि कौन विद्यार्थी पढ़ाने से भी नही पढेगा? प्रारम्भ मे ही केवल बालक की मुखाकृति देखकर या एकदो मौखिक प्रश्न करके इसका निर्धारण करना असम्भव और अव्यावहारिक है। तब फिर शूद्र को यज्ञोपवीत सस्कार से वचित कैसे रखा जायेगा? वर्ण व्यवस्था पूर्णरूपेण जीविकोपार्जन की व्यवस्था है, जो गृहस्थाश्रम मे प्रकट होती हैं। किसी भी वर्ण को (शूद्र समेत) आचरण की दृष्टि से उच्च या निकृष्ट कहने का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है। फिर यदि शूद्र को मूर्ख माने, तो मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मण शूद्र कैसे हो जायेगा, जबकि ब्राह्मण वर्ण का वरण उस व्यक्ति ने तभी किया, जब वह पर्याप्त विद्वान् हो गया होगा! इससे स्पष्ट होता है कि शूद्र भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के सदृश ही विद्वान् होता है। हां, उसकी विद्वत्ता का क्षेत्र भिन्न होता है; क्योंकि उसकी कार्य-प्रकृति भिन्न होती है।

इस सदर्भ में 'आर्य जगत्' के विगत दो अकों में प्रकाशित श्री रघुनाथ आर्य के लेख 'वर्ण व्यवस्था एवं मनुस्मृति' मे उचित दिशा मे सकेत किया गया है। इस संदर्भ मे मैं इतना और कहना चाहूंगा कि वैदिक वर्ण व्यवस्था का 'शूद्र' वास्तव मे कारीगर वर्ग या तत्सम शब्दों मे कहें, तो शिल्पी वर्ग है। खादी ग्रामोद्योग सघ आज भी चमार के लिए चर्मशिल्पी, लोहार के लिए लौहशिल्पी, बढई के लिए काष्ठशिल्पी जैसे शब्दों का प्रयोग करता है। इसी प्रकार के वर्ग भारत के पारम्परिक शूद्र वर्ण के प्रतिनिधि हैं। सफाईकर्मी वर्ग यथा मेहतर, महार आदि मध्यकाल की इस्लामी बर्बरता के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई जातियां हैं। वर्णव्यवस्था के कारण उत्पन्न शूद्रो से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। शूद्रो का कार्य अपने कौशल (कारीगरी) से वस्तुओ का निर्माण करना था, परन्तु इनसे क्रय करके इन वस्तुओ का विक्रय करना वैश्य वर्ण का कार्य था। यही कारण है कि आज भी स्वाभिमानी पारम्परिक शिल्पी अपने उत्पादनों को सीधे बाज़ार में ले जा कर बेचना उचित नहीं मानता। कालातर में शूद्रो द्वारा गुरुकुलों में अपने बच्चो को विद्याध्ययन के लिए नहीं भेजने का एक कारण यह हो सकता है कि वे अपने बच्चो को पारम्परिक रूप से उतने ही काल मे अपना शिल्पज्ञान स्वय ही प्रदान कर देना ज्यादा व्यावहारिक समझने लगे हों। यही कारण रहा होगा कि अपने क्षेत्र में अत्यन्त कुशलता प्राप्त शूद्र को भी अनपढ होने के कारण मूर्ख कहा जाने लगा हो, तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य की तुलना मे उसे हीन माना जाने लगा हो। इसका उदाहरण आज भी प्रत्यक्ष होता है। भवन निर्माण या यात्रिक क्षेत्र मे अत्यत कुशल परन्तु निरक्षर कारीगरो की बढी सख्या हम महानगरो मे भी देख सकते है। इस प्रकार वैश्यो और शूद्रों के कार्य में हम स्पष्ट विभाजन रेखा खींच सकते है। आज जब अधिकतर व्यापारिक सस्थान वस्तु निर्माण और विपणन (प्रोडक्शन एण्ड मार्केटिग) की प्रक्रियाएं एक साथ करने लगे हैं, तब वे वैश्य और शूद्र कर्म के तालमेल से वर्णसंकरता को उत्पन्न कर रहे है। इतना होने पर भी सभी बडे सस्थानो में उत्पादन एव विक्रय के विभाग अवश्य ही अलग अलग होते है, जो वैदिक वर्ण विभाजन की अपरिहार्यता को सिद्ध करते है।

शास्त्रीय एव अनुभवजन्य प्रमाणो से यह स्पष्ट होता है कि

(क) शूद्र शत-प्रतिशत आर्यान्तर्गत वर्ण अर्थात् विद्वान्, श्रेष्ठ और उत्तम आचरणयुक्त वर्ण है, जिसका कार्य अपने कला-कौशल (कारीगरी) से उत्तम वस्तुओ का उत्पादन करना है।

(ख) शूद्र का अर्थ सफाईकर्मी, घरेलू सेवक, दास या अकुशल श्रमिक नहीं है।

(ग) शूद्र उच्च शिक्षित भी हो सकता है और अनपढ भी, परन्तु मूर्ख तो कदापि नहीं हो सकता। मूर्खत्वादि दोषयुक्त व्यक्ति वर्णव्यवस्था का अग नही हो सकता।

(घ) जन्म से जैसे कोई ब्राह्मण नहीं हो सकता, उसी प्रकार जन्म से कोई शूद्र (कारीगर) भी नही हो सकता। शूद्रत्व प्राप्ति के लिए भी सम्यक् प्रशिक्षण एवं अभ्यास की आवश्यकता है। अत **"जन्मना जायते शूद्र......"** का तोतारटन्त बन्द होना चाहिए।

(ङ) सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास से शूद्र को अनार्य कहने वाला वाक्याश बिना विलम्ब किये (सभी संस्करणो से) निकाल देना चाहिए।

कृष्णमोहन 'हिन्दू', आर्य समाज, बेतिया-८४५४३८

पटाखे खतरनाक हैं

दशहरे और दिवाली पर पटाखे चलाने की कुप्रथा चल पडी है। दशहरा विजय प्रयाण का पर्व था और युद्ध में बन्दूकें और तोपे चलती थीं। अब युद्ध तो होता नहीं, केवल पटाखे छोड कर लोग अपनी ललक मिटाते हैं।

दिवाली पर भी केवल दीपक जलाने का चलन था, पर अब दीपक कम जलाते हैं और पटाखे अधिक छोड़ते है। दीपको से प्रकाश होता था, पटाखों से धुआं और शोर होता है।

पटाखो का धुआं और शोर स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। पटाखों से आग भी लग जाती है और लोगो के हाथ मुह जल जाते हैं।

इसलिए पटाखो से दूर रहें। न स्वयं छोड़ें, न बच्चों को छोड़ने दें।

उच्चतम न्यायालय ने भी इस विषय में प्रतिबन्ध लगाया है कि पटाखे ६ बजे से १० बजे के बीच में ही छोड़े जायें।

अच्छा यह होगा कि वे बिल्कुल ही न छोड़े जायें। ऐसा मनोरंजन किस काम का, जिससे वायुमंडल दूषित होता है!

आर्य समाज की शक्ति

□ डा० रघुवीर वेदालंकार, उपाचार्य, रामजस कालेज

कुछ लोग तो प्रश्न करते हैं कि आर्य समाज मे शक्ति रह भी गयी है या नहीं। इस शका का कारण है कि सर्वत्र शिथिलता ही दिखलायी देती है। आर्य समाज कोई भी नया कार्य करता हुआ दिखलायी नहीं पड रहा है। ऐसी बात तो नहीं है कि आर्य समाज में शिथिलता व्यापक रूप में घर कर गयी है। अभी भी आर्यसमाज की अनेक संस्थाएं, समाज तथा अनेक व्यक्ति श्लाघनीय कार्य कर रहे हैं। हां, सर्वत्र वह चेतना नहीं है, जो कि होनी चाहिए थी। इसका कारण यदि खोज लिया जाए तो इसे दूर भी किया जा सकता है।

लक्ष्यहीनता

चेतना वहीं स्थिर रहती है, जहा कि कोई लक्ष्य विद्यमान रहता है। लक्ष्यहीनता होने पर चेतनाशून्यता स्वाभाविक है। आज आर्य समाज की दिशा ही बदल गयी है। उसकी कार्यशैली बदल गयी है। आज हमारा क्रिया-कलाप दैनिक या साप्ताहिक सत्सगो तक ही सीमित है। कहीं-कहीं पारिवारिक सत्सग भी चलते है, किन्तु वे केवल आर्य सदस्यो के घरो पर ही। अपने पास-पडौस, मुहल्ले, कालोनी के किसी नये व्यक्ति के घर ऐसे आयोजन करने का उद्यम हम नही करते। इससे आगे प्रतिवर्ष समाज की वर्षगाठ सी मनाकर वार्षिकोत्सव कर लिये जाते है। ये भी परम्परा मात्र से अच्छा धन एकत्र करने की दृष्टि से ही किये जाते है। हमारे पास ऐसा कोई लेखा-जोखा नहीं होता कि गतवर्ष की अपेक्षा सदस्य सख्या बढी है या घटी है। सत्सग मे आने वाले बढे है या घटे है। इसके बाद अन्तिम रूप मे हम आर्य महासम्मेलन मना लेते हैं। सभाओ के स्तर पर ये सम्मेलन किये जाते है, किन्तु कुछ आर्य युवक भी इन सम्मेलनों के माध्यम से अपने आपको सुप्रतिष्ठित तथा सुस्थापित करने लगे हैं।

नेतृत्व का अभाव

ऐसा इसलिए भी कि इस समय आर्य समाज मे कुशल नेतृत्व का अभाव है। जो कुछ थोड़ा बहुत है भी, वह स्वार्थ तथा परस्पर की फूट से ग्रस्त है। इन सम्मेलनों मे बड़ी आर्य जनता इधर से उधर चक्कर लगाती रहती है। नये व्यक्तियों पर न तो इन सम्मेलनों का कोई असर होता है तथा न ही ऐसा यत्न किया जाता है। वैसे मूल रूप में इनका उद्देश्य राजनेताओ तथा देश-विदेश के बड़े व्यक्तियों से सम्पर्क साधना तथा अपने को चमकाना होता है। सम्भवत: यही कारण था कि मुम्बई में इसी वर्ष मार्च मे अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होने के पश्चात् भी दिल्ली में नवम्बर में ही वैसा महासम्मेलन करने की घोषणा कर दी गयी। यह बात अलग है कि वह घोषणा नहीं चल सकी तथा अधिकारीगण स्वय विवाद मे उलझ गये। ये सब शुभ लक्षण तो नही है। इसी से आर्य समाज का काम आगे नहीं बढ रहा है तथा इसमे शैथिल्य व्याप्त है।

पद-लिप्सा

इस शैथिल्य का दूसरा कारण यह है कि आज नेताओ मे त्याग एव सेवा का स्थान स्वार्थ एव पद-लिप्सा ने ले लिया है। वर्तमान के सन्त महन्त, साधु-सन्यासी, नेता, कार्यकर्ता सभी इसमे धसे है। यदि कोई वर्ग इससे पृथक् है, तो वह है विद्वद्वर्ग। चाहे वह अपनी अशक्ति के कारण हो या वर्तमान स्थिति के प्रति मन मे स्थित निर्वेद भाव के कारण। यह बात अलग है कि वर्तमान मे पूर्वापेक्षया पडितो का अभाव भी होता जा रहा है। भूतकाल की धुरन्धर पडित परम्परा आज हमारे पास नही रह गयी है। पदलिप्सा का ज्वलन्त रूप यह है कि एक ही व्यक्ति एक से अधिक कई कई सभाओ या सस्थाओं के अधिकारी पद पर जमा रहता है। शायद अन्य व्यक्तियो मे उस पद को सभालने की क्षमता न होती होगी, तभी तो वह सेवक महोदय दो-दो तीन-तीन पदो पर सेवा करते हैं।

सक्रामक रोग की भाति एक अन्य रोग भी फैलता जा रहा है कि सेवा निवृत्ति के उपरान्त अनेक व्यक्ति आर्य समाजो के शीर्षस्थ पदो पर जम जाते है तथा सेवा मे इतने तल्लीन हो जाते है कि फिर उस पद को छोडने का नाम ही नहीं लेते। जबरदस्ती ही छुट जाए तो अलग बात है, किन्तु वे प्रौढ पितर ऐसा यत्न अवश्य करते हैं कि नया युवक वर्ग या तो आर्य समाज का सदस्य ही न बने, तथा यदि सदस्य बन भी जाए तो उसे अधिकारी तो किसी भी अवस्था में न बनने दिया जाए। यह बात मैं ठोस प्रमाणो के आधार पर कह रहा हू। कोई पूछेगा तो नाम भी बतला दूंगा। २०-२० वर्षो से एक ही अधिकारी समाज मे चला आ रहा है। इससे बढ़ कर दुरवस्था और क्या होगी? ऐसे मे दर्शको को ऐसे अधिकारी तथा ऐसे समाजो से वितृष्णा होनी स्वाभाविक ही है। जनता सब कुछ देख रही है। यदि आंखे बन्द हैं तो हमारी ही, क्योंकि हम जनता को नहीं देख रहे है। हम देख रहे है केवल अपने स्वार्थों को।

स्वार्थ साधन

कुछ व्यक्ति तो अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए भी योजनाबद्ध रूप से आर्य समाज मे प्रविष्ट होते है तथा अभीष्ट लक्ष्य को पा लेते है। मीटिग इत्यादि मे सम्मिलित होने के लिए मार्ग व्यय के नाम पर पर्याप्त धन-वसूली तो इनके लिए सामान्य सी बात रह जाती है।

दान की भूमि की बिक्री

कुछ ऐसे भी समाज सेवक है जो सस्थाओ तथा सभाओ पर कब्जा करके पूर्वजो के द्वारा उन सस्थाओ को श्रद्धा पूर्वक दान मे दी गयी भूमि को बेचने मे भी अपनी योग्यता प्रमाणित करते है। गुरुकुल घटकेश्वर की भूमि बेची ही गयी थी। गुरुकुल वृन्दावन वि० वि० की भूमि को बेचने के लिए भी सशक्त प्रयास सभा के अधिकारियो ने किये, किन्तु जागरूक स्नातको के प्रभाव से शायद वह भूमि बिकने से बच गयी है, किन्तु सर्वस्व त्यागी स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति रूपी गुरुकुल कागडी की भूमि को सभा वालो तथा गुरुकुल के अधिकारियो ने बेच कर ही तो चैन की सास ली, मानो कोई पुण्य कार्य कर लिया हो। पहले भी ऐसा किया गया था। अब पुन १४४ बीघा भूमि बेच दी गयी। शायद इसलिए कि दिवालिया हो चुके, आर्थिक रूप से न सही मानसिक रूप से ही। इस प्रकार पुण्य कार्यो के पश्चात् भी हमारे समादरणीय नेताओ की जो ऊर्जा बचती है, वह मुकदमो की ओर आपस मे टकराने चल पडती है। ये कार्य वे कर रहे है, जो अपने आपको गुरुकुल परम्परा का वाहक, रक्षक मानते है। शायद डी० ए० वी० सस्था मे यह रोग अभी नही पनपा है इसीलिए वहा कार्य हो रहा है, भले ही उसकी दिशा स्कूलो तक ही सीमित हो। वह भी तो शिक्षा का कार्य है।

तीन घटक

'आर्य जगत्' के तीन घटक है— जनता, विद्वद्वर्ग तथा नेतृत्व-वर्ग। विद्वद्वर्ग की चुप्पी या निर्वेद का उल्लेख ऊपर हो ही चुका है। आर्य जनता तो अभी भी श्रद्धालु तथा कर्मशील है, उतनी ही है। उसमे शक्ति भी है, किन्तु इसे दिशा तथा नेता ठीक नही मिल रहे है। पुनरपि जैसे भी है उनका साथ आर्य जनता दे ही रही है। उनके सम्मेलनो मे भी भागी फिरती ही रहती है। अच्छा हो कि आर्य समाज कोई दीर्घकालीन योजनाबद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत करे। कार्य बहुत है पर उनकी ओर नेताओ का ध्यान ही कहा है? ईसाइयो के विरुद्ध स्थायी रूप से व्यापक मोर्चा खोला जा सकता है। शुद्धिकरण कार्यक्रम किस अवस्था मे है, सब जानते हैं। अखबारो मे खबर आ भी जाती है कि अमुक स्थान पर अमुक दिन इतने हिन्दू ईसाई या मुसलमान बनेगे, तब भी हमारे अन्दर कोई प्रतिक्रिया दिखलायी नही देती। प० लेखराम अब जीवित नही है। मुसलमानो के आतकवादी गुट जम्मू कश्मीर तथा हैदराबाद मे भी मौत की धमकी देकर मुस्लिम महिलाओ को बुर्के के लिए तथा हिन्दू महिलाओ को बिन्दी के लिए बाधित कर रहे है। हमारे नेताओ के पास इसके प्रतिरोधार्थ न तो शब्द है, न साहस तथा न ही समय। शायद यह मुसलमानो का मामला है, किन्तु यह क्यो नही सोचा जाता कि यह धार्मिक स्वतत्रता हनन का मामला है। महर्षि ने तो कहा था कि अत्याचारी का सदा अपकार किया करे। क्या यह अत्याचार नही है? भारत सरकार तो मूक है ही, आर्य समाज को तो नही होना चाहिए। चारो ओर पाखड पनप रहा है, फल-फूल रहा है, किन्तु हमारा ध्यान इधर उधर कहा जाता है? आर्य समाज तथा आर्य मान्यताओ पर आक्रमण करने वाले लेख तथा अन्य साहित्य प्रकाशित होता रहता है तथा उत्तर की प्रतीक्षा ही करता है। राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ जिस योजनाबद्ध तरीके से चल रहा है तथा समाज कल्याण की जितनी योजनाए उनके पास मे है, यदि आर्य समाज भी यह शैली अपना सके तो चेतना का सचार होगा।

बी-२६६, सरस्वती विहार, नई दिल्ली

किसी के तो काम आये

स्वामी श्रद्धानन्द जी हरिद्वार से दिल्ली आ रहे थे। साथ मे गुरुकुल के दो एक अध्यापक और थे। रेल गाडी के डिब्बे मे चढते हुए उनकी एक चप्पल प्लेटफार्म और रेलगाडी के बीच मे गिर पडी। उसे कैसे निकाला जाये, यह सोच ही रहे थे कि गाडी चल पडी। चलती गाडी से स्वामी जी ने दूसरी चप्पल भी प्लेटफार्म और गाडी के बीच की जगह मे फेक दी।

'आपने दूसरी चप्पल भी क्यो फेक दी?'

प विष्णुमित्र जी ने पूछा।

स्वामी जी ने कहा 'अकेली चप्पल मेरे तो किस काम आनी थी। अब जिसे वे दोनो चप्पले मिलेगी, तो वह उन्हे पहन तो सकेगा।'

हिन्द महासागर का मोती : मारिशस एक वैदिक प्रचारक के संस्मरण

❑ डा० भवानीलाल भारतीय

जब दिनाक १३ अप्रैल की प्रात काल मै अपनी पत्नी श्रीमती शान्ति भारतीय के साथ लघु भारत कहलाने वाले मारिशस देश के सर शिवसागर रामगुलाम हवाई अड्डे पर उतरा, उस समय हिन्द महासागर की अनन्त विस्तार वाली जलराशि पर सूर्य की किरणो का अवतरण हो रहा था। गत रात्रि को मुम्बई के छत्रपति शिवाजी वायुपत्तन से एयर मारिशस का यह यान काफी देर से उडा था, इसलिए मारिशस पहुचने मे उसने लगभग छह घटे लिये। वायु यात्रा की औपचारिकताओं को समाप्त कर जब हम बाहर आये तो सर्वश्री राजमन राधाकृष्ण, प० सत्यप्रकाश भृगु तथा इस देश के कतिपय आर्य पडितगण हमारा स्वागत करने के लिए तैयार खडे थे। पुष्पमालाओ द्वारा स्वागत की विधि को पूरा कर हम राजधानी पोर्ट लुइस मे स्थित आर्य समाज के कार्यालय के लिए चले।

आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित

श्री राधाकृष्ण का यह सुझाव हमे उपयुक्त लगा कि मारशिस के वयोवृद्ध आर्यनेता ९९ वर्षीय श्री मोहनलाल मोहित से उनके निवास (ग्राम लावेनीय) मे अवश्य भेट कर ली जाये। यह आवश्यक था और उचित भी क्योकि इस लघु द्वीप मे वैदिक धर्म की प्रवृत्तियो के दशाब्दो तक सूत्रधार रहे श्री मोहित ने भारत तथा मारिशस के आर्य समाजो को स्नेहसूत्र मे बाधने का प्रयास तो किया ही था, उनकी उदार आर्थिक सहायता से दोनो देशो मे अनेक साहित्यिक तथा वैदिक शोध विषयक अनुष्ठानो का सचालन हो रहा था। मारिशस के इस भीष्म पितामह से हमे आशीर्वाद तो मिला ही, उनकी पुत्रवधू श्रीमती सुभाष मोहित ने गरम चाय का प्याला पिला कर रात्रि जागरण से उत्पन्न हमारी क्लान्ति को भी दूर कर दिया।

आर्य समाज का भव्य भवन

राजधानी पोर्ट लुईस मे मारिशस की समस्त आर्य समाजो की शिरोमणि प्रतिनिधि सस्था आर्य सभा मारिशस है जिसका विशाल तिमज़िला भवन प्रसिद्ध घुडदौड के मैदान 'शा दे मार्स' के ठीक सामने राजपथ (१, महर्षि दयानन्द स्ट्रीट) पर स्थित है। सभा भवन के पहले तल्ले (ग्राउड फ्लोर) पर विशाल सभा भवन, कार्यालय कक्ष तथा स्वागत कक्ष है तो दूसरे तल्ले पर उतना ही विशाल दूसरा सभागार, ध्रुवानन्द पुस्तकालय तथा सभा के मुख्य व्यवस्थापक (श्री आनन्द बधन) का कार्यालय है। तीसरी मजिल पर अतिथि कक्ष है, जिसमे दो कमरो के अतिरिक्त रसोई, स्नानागार तथा भोजन कक्ष बने है। हमे अगले चालीस दिनों तक इसी अतिथिशाला मे निवास करना था। अतिथि कक्ष की प्रभारी श्रीमती इन्द्राजी रामवरण का सहयोग हमे सदा प्राप्त रहा।

डी० ए० वी० कालेज

आर्य सभा के मुख्य भवन से सलग्न डी० ए० वी० कालेज की तीन मज़िल की विशाल इमारत है। इस देश मे १२वीं कक्षा तक के विद्यालय 'कालेज' कहलाते है। आज इस कालेज मे पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन था। इस अवसर पर छात्र-छात्राओ ने अनेक सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिनकी प्रशसा उपस्थित अधिकारीवर्ग तथा शाला निरीक्षक ने की। जब शेक्सपीयर के विख्यात नाटक 'मर्चेंट आफ वेनिस' के कोर्ट सीन का अभिनय प्रस्तुत किया गया, तो इन पक्तियो के लेखक को अपने प्रथम वर्ष कला मे पढ़ाये गये इस नाटक का स्मरण तो आया ही, वकील का रूप धारण किये पोर्शिया की वे स्मरणीय पक्तिया भी स्मृति पर उभर आईं जिनका भाव है "करुणा की अनुभूति ताकत के जोर मे नही जगाई जाती। यह तो आकाश से गिरने वाली वर्षा की उन सुखद बूदो की भाति है, जो धरा को रस सिक्त कर देती है। करुणा का वरदान दोनो को मिलता है, करुणा प्रदर्शित करने वाले को तथा उसको भी, जिसके लिए करुणा दिखाई जाती है" आदि।

रात्रि को वायुयान मे नींद की तो कोई गुजाइश ही नही थी, इसलिए हमे समारोह के पश्चात् विश्राम करना ही सुखद लगा।

हिन्दी लेखक श्री राधाकृष्ण

रात्रि का भोजन रोजहिल नगर मे श्री राजमन राधाकृष्ण के यहा था। उनके साले तथा मारिशस के दूर सचार विभाग के उच्च अधिकारी श्री भानुदत्त बिहारी के निवास रोज़बेल पर चाय पी कर हम निकटवर्ती नगर राजे हिल पहुचे। हमारे आज के आतिथेय श्री राधाकृष्ण अनेकबार भारत यात्रा कर चुके है। वह हिन्दी के सुलेखक है तथा भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे उनके मारिशस सम्बन्धी अनेक लेख प्रकाशित हो चुके है। मुझे उस समय सुखद आश्चर्य हुआ जब श्री राधाकृष्ण ने लखनऊ से प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध मासिक पत्रिका माधुरी का वह अक (फरवरी १९५०) मुझे दिखाया, जिसमे मेरा एक लेख 'हिन्दी के वाल्टर स्कॉट—वृन्दावनलाल वर्मा' छपा था। लेखक के रूप मे 'श्री भवानीलाल भारतीय बी ए विशारद' नाम अकित था। मेरी मारिशस यात्रा के मुख्य आयोजक भी श्री राधाकृष्ण ही थे, जिन्होने इस देश के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा यहा की धार्मिक-सामाजिक एव राष्ट्रीय त्रिविध चेतना के सूत्रधार स्व० प० वासुदेव विष्णुदयाल (१९०६-१९९१) की ९५वी वर्षगाठ पर मुझे प्रमुख वक्ता के रूप मे आमन्त्रित किया था।

आपको ३० वर्ष पहले आना था

भौतिक रूप मे मेरा मारिशस जाने का यह पहला ही अवसर था, किन्तु मानसिक तथा आत्मीय स्तर पर तो इस देश से मेरा सम्बन्ध बहुत पुराना था। यहा के विख्यात साहित्यकार तथा आर्य लेखक श्री प्रह्लाद रामशरण ने तो निस्सकोच कहा कि आपको तो यहा तीस बरस पहले आना था। जब १९७२ मे अन्तरराष्ट्रीय आर्य सम्मेलन का आयोजन राजस्थान के अलवर नगर मे हुआ था और मारिशस के 'राष्ट्रपिता' का सम्मान प्राप्त करने वाले तत्कालीन प्रधानमत्री डा० सर शिवसागर रामगुलाम ने उसकी अध्यक्षता की थी, तब इन पक्तियो के लेखक ने ही उनके अग्रेज़ी मे लिखित अभिभाषण का हिन्दी मे आशु अनुवाद कर श्रोता समाज को सतुष्ट ही नहीं, चमत्कृत भी कर दिया था। मै आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का महामत्री तो था ही, सम्मेलन का स्वागत मत्री होने के नाते मेरा यह कर्तव्य था कि अध्यक्ष तथा विदेशी अतिथि का सदेश सर्वसाधारण तक सुविधापूर्वक पहुच सके। कालान्तर मे श्री मोहनलाल मोहित तथा श्री प्रह्लाद रामशरण से भारत में अनेक बार मिलने के अवसर मिले तथा मैने स्वरचित आर्य लेखक कोश मे इन मोरिशन आर्य लेखको का विवरण सकलित किया। रात्रि को लगभग १० बजे अतिथि भवन मे लौट कर शय्यासीन होने से ही दिन भर की व्यस्तता तथा थकान से मुक्ति मिली। इस द्वीप मे यह हमारा पहला दिन था।

पुरोहित मडल द्वारा स्वागत

१४ अप्रैल आज रविवार है। सभा के विशाल सभागार मे मारिशस की आर्य सभा तथा यहा के पुरोहित मडल ने हमारा औपचारिक स्वागत समारोह आयोजित किया है। वैदिक कर्मकाण्ड का सचालन करने वाले आर्य पुरोहित तो भारत के आर्य समाजो मे अनेकत्र है किन्तु इस लघु देश मे पुरोहितो तथा स्त्री पडिताओ का जैसा सुव्यवस्थित सगठन है, वह यहा की एक विशेषता है। 'पुरोहित मंडल' के अन्तर्गत वे सब पडित तथा पुरोहित पजीकृत है, जो यहा की ४५० आर्य समाजो मे यज्ञ, सस्कार, उपदेश, प्रवचन आदि करते कराते है तथा यहा के धार्मिक सास्कृतिक जीवन की धुरी बने हुए है। इस स्वागत समारोह की अध्यक्षता आर्य सभाके प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर ने की तथा पडित सभा के प्रधान श्री माणिकचद बुधु ने माल्यार्पण द्वारा अतिथि दम्पती का स्वागत किया। आर्य सभा मे प्रत्येक शनिवार को पुरोहित प्रशिक्षण का सुव्यवस्थित कार्यक्रम चलाया जाता है। आगे के सप्ताहान्त के दिनो मे मैने वैदिक वाङ्मय (सहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाग, उपाग तथा उपवेद) की विविध विद्याओ पर विस्तृत परिचयात्मक तथा विश्लेषणात्मक भाषण पुरोहित समुदाय के समक्ष दिये। भारत में कहने को तो सैकडो पडित पुरोहित हैं, किन्तु उनके शास्त्रीय ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए इस प्रकार के आयोजन नहीं होते। यदि कोई कार्यक्रम रखा भी जाता है, तो उसके प्रति उत्साह दिखाई नहीं पडता। इसके विपरीत मारिशस की पुरोहित मंडली मे जिज्ञासा का भाव सर्वत्र दिखाई दिया।

वासुदेव विष्णु दयाल जयन्ती

१५ अप्रैल— आज प० वासुदेव विष्णुदयाल की जन्म जयन्ती का मुख्य आयोजन उनके जन्मग्राम तायाक मे मध्याह्न मे रखा गया है। मै सभा प्रधान डा० निऊर जी के साथ यथासमय तायाक आर्य समाज पहुचा, तो सभा स्थल पुरुषो और महिलाओ से खचाखच भरा था। ईश प्रार्थना तथा भजनों के पश्चात् प० वासुदेव के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर आर्य सभा के प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर, महामत्री डा० उदयनारायण गगू, सत्यदेव प्रीतम आदि के भाषणो के अनन्तर मेरा भाषण हुआ। उनके साहित्यिक अवदान की चर्चा करते हुए मारिशस के जनजागरण मे प० वासुदेव की भूमिका के प्रसगो को मेरे द्वारा रेखाकित किया गया। सावान ज़िला परिषद् ने इसी अवसर पर विद्या दिवस का आयोजन किया था। इसके अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् अजमेर द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षाओ मे उत्तीर्ण छात्रो को पुरस्कार दिये जाते हैं। समारोह मे मारिशस के कनिष्ठ मत्री डा० हरिप्रेम ओमिर उपस्थित थे तथा उन्होने पुरस्कार ग्रहण करने वालो को आशीर्वाद प्रदान किया।

रेडियो पर प्रचार की सुविधा

मारिशस रेडियो ने इस देश के सभी धर्मो को अपने विचारो के प्रचार की सुविधाए दे रखी है। प्रत्येक धर्म के प्रवक्ता एक निश्चित योजना के अन्तर्गत पन्द्रह मिनट का अपना कार्यक्रम रेकार्ड करवाते है और वह सप्ताह मे एक निश्चित दिन प्रसारित किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत मै प्रत्येक सोमवार को मध्यदेश के क्यूर्पिप नगर मे स्थित मारिशस ब्राडकास्टिग कार्पोरेशन के मुख्यालय मे जा कर अपने प्रवचनो को रिकार्ड करवाता। प्रत्येक रविवार को प्रात छह बजे उन्हे प्रसारित किया जाता। 'वैदिक वाणी' के अन्तर्गत लगभग पन्द्रह प्रवचनो के अतिरिक्त 'आज की शिक्षा' विषय पर एक गोष्ठी का आयोज़न ऐम बी सी ने किया, जिसमें मेरे सहभागी श्री प्रीतम तथा श्री महावीर थे। उसका रेडियो द्वारा सीधा प्रसारण किया गया। श्रोताओ को प्रश्न पूछने का अवसर दिया गया था। टेलीविज़न पर मासिक 'अमृत वाणी' कार्यक्रम के अन्तर्गत मैंने वैदिक ईश्वर, स्तुति, प्रार्थनोपासना पर अपने विचार रखे तथा एक अन्य कार्यक्रम मे स्वामी दयानन्द के क्रान्तदर्शी व्यक्तित्व तथा विचारो की सतर्क समीक्षा की। इसमे श्री सत्यदेव प्रीतम ने सयोजक का कार्य किया। प० धर्मवीर घूटा तथा डा० उदयनारायण गगू द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले साप्ताहिक रेडियोवार्ता कार्यक्रमो मे भी मैने सहभागी तथा अतिथि कलाकार के रूप मे अपने विचार रखे।

(क्रमश)

८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

कोका कोला एवं पेप्सी का तन, मन, धन पर प्रभाव

❑ श्री अखिलेश आर्येन्दु

देश, समाज एवं संस्कृति से हमारी जीवनशैली एवं चिन्तन प्रक्रिया का सीधा नाता है और हमारी जीवनशैली से सीधा रिश्ता हमारे आहार-विहार से है। यदि हमारा आहर-विहार ठीक रहेगा, तो हमारे तन, मन की सेहत भी दुरुस्त रहेगी।

विगत वर्षों मे, जबसे टी वी का प्रचार प्रसार तेजी से बढ़ा है, जिन्दगी मे आमूलचूल बदलाव आये है। आहार-विहार सहित हमारे जीने का ढंग ही बदलता जा रहा है। हमारी सोच पाश्चात्यपरक होने की वजह से हमारा मानसिक धरातल भी अपगता जैसी स्थिति में पहुचता जा रहा है। बनावटी ज़िन्दगी (मुखौटापरक) और अपसस्कृति (पाश्चात्य सस्कृति) हमारी जिन्दगी के हिस्से बन गए है। घर, आगन मे बनी खाने-पीने की चीज़े पिछडेपन एव पुराने ज़माने की मानी जाने लगी है। टी वी के विज्ञापनो, सीरियलो एवं फिल्मो का असर हमारे दिलोदिमाग पर इस कदर होता जा रहा है कि हम जो भी बाजारू खाद्य खा या पी रहे है हम उसके बारे मे सोचते तक नहीं कि यह सेहत (मानसिक एव शारीरिक) के लिए फायदेमद होगा भी या नहीं। विगत दस बरसो मे उदारीकरण लागू होने के बाद विदेशी कम्पनियो को व्यापार करने की छूट दी जाती रही है। परिणामत भारत का विशाल बाजार विदेशी कम्पनियो के उत्पादो (सामानो) से भर गया है। खासकर उच्च और उच्चमध्यम वर्ग इन उत्पादो को खरीदने को 'प्रगति की निशानी' मानता है। इन्ही उत्पादो मे कोका एव पेप्सी कोला, मिरिडा, और विदेशी कम्पनियो के ठडे पेय है। इनकी बोतलो पर नही लिखा होता कि ये किन-किन चीजो के मिश्रण से तैयार होते है। केवल 'बड़ा आदमी' बनने की दौड़ मे हमने अपने आहार-विहार के अच्छा-बुरा, हानिकारक-लाभदायक होने की बात सोचना भी बन्द कर दिया है।

अमरीका सहित पाश्चात्य देशो में कोक-पेप्सी सस्कृति फल-फूल रही है। यह सस्कृति त्याग की जगह भोग, शान्ति के स्थान पर घुड़दौड़, सदाचार की जगह कदाचार, सादगी की जगह फैशन एवं शाकाहार के स्थान पर मांसाहार एवं सेहत के दुश्मन उत्पादों को अच्छा बताती है।

पेप्सी-कोक की असलियत

पेप्सी व कोका कोला की असलियत के बारे मे बहुत कम लोगो को जानकारी है। हर मौसम और हर जगह तथा हर समाज मे बिना सोचे समझे, सहज ढंग से अपनाये जा रहे इस पेय पदार्थ (कोल्ड ड्रिंक्स) के बारे में जानकारी होनी बहुत जरूरी है। साधारणतौर पर ठंडे पेयो की बोतलों पर इसके बारे मे कोई जानकारी नहीं होती। हम बिना सोचे समझे टी वी० के विज्ञापनो को देख और दूसरो को पीते देख इसे अपना लेते है।

पेप्सी, कोक, थम्सअप, मिरिडा के बारे मे वैज्ञानिको ने शोध किये है। साधारण तौर पर हर प्राणी श्वास के जरिये आक्सीजन (O_2) ग्रहण करता है और कार्बन डाइआक्साइड (CO_2) निकालता है। लेकिन साधारणतौर पर पेप्सी और कोक पीने पर यह क्रिया उल्टी हो जाती है। इन विदेशी कम्पनियो द्वारा बनाये गये 'कोल्ड ड्रिक्स' जब हम पीते है तो कार्बन डाईआक्साइड ग्रहण करते है। बोतल खोलने पर जो बुलबुले व झाग दिखते हैं वे CO_2 की वजह से होते हैं। जब हम कोल्ड ड्रिक्स पीते है तो कार्बन डाइआक्साइड हमारे खून मे घुल जाता है, जिससे अतडियो मे अल्सर पैदा हो जाता है।

असाध्य बीमारियो का कारण

प्रसिद्ध चिकित्सक (अमेरिका) ऐन डब्ल्यू वाकर ने अपनी पुस्तक 'वाटर कैन अंडरमाइन योर हेल्थ' मे इसके सेवन पर चिन्ता जाहिर करते हुए लिखा है 'पेप्सी व कोका कोला को ज्यादा सेवन करने से दिमाग की तन्त्रिकाए नष्ट हो सकती है और इससे सेरेबल पाल्सी व दूसरी तमाम बीमारिया पैदा हो जाती है। इसी क्रम मे प्रतिष्ठित मैडिकल जर्नल 'लैसेट' ने सभी ठडे पेयो (कोल्ड ड्रिक्स) को ब्रेन हैमरेज, मूत्र नली के कैसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अनिद्रा, चिडचिडापन, तनाव एव मानसिक विक्षिप्तता की वजह माना है। चाय व काफी मे जो कैफीन जहर के रूप मे पाया जाता है, वही जहर इन (ठडे पेयो) मे भी पाया जाता है। सिरदर्द, पेटदर्द, पेट मे जलन एव हार्ट अटैक का कारण भी ये ठडे पेय है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिको ने पाया कि इन ठडे पेयों से बच्चो मे जरूरत से ज्यादा मोटापा बढ़ रहा है। डा० लुडविंग भी कोल्ड ड्रिक्स को मोटापा के लिए जिम्मेदार मानते है। पेप्सी व कोका सहित सभी कोल्ड ड्रिक्स का पी ऐच मान .8ppm है जो स्नायु तत्र, मस्तिष्क, गुर्दे एव लीवर को नुकसान पहुंचाता है। आयुर्वेदिक एव स्वदेशी ठडे पेयो (सरबते आजम, रुआफजा या नारियल-पानी आदि) को छोड कर दूसरे सभी विदेशी कोल्ड ड्रिक्स मे मिथाइल बेंजोएट, सोडियम बेजोएट, कैडमियम जिक, आर्सेनिक (सखिया), सोडियम ग्लूटामेट, पोटेशियम सोरबेट एव ब्रोमिनेटेड, वेजिटेबल आयल जैसे जहरीले रसायन भी इन (ठडे पेयों) मे मिलाये जाते है।

अहमदाबाद (गुजरात) के कज्यूमर एजूकेशन एड रिसर्च सेटर द्वारा जाच करने पर इसमे कार्बोलिक एसिड, एरिथारबिक एसिड एव बेजोइक एसिड जैसे तेजाब भी पाये गये है। इससे कब्ज के अलावा अन्य तमाम रोग भी हो जाते है। इनके मुताबिक जब ठडे पेयो का सेवन किया जाता है तो चीनी मुह की लार के एक बैक्टीरिया से मिल कर एक अम्ल बनाती है जो दातो की ऊपरी परत इनैमिक पर प्रहार कर दातो को गला देता है।

इसके अत्यन्त घातक प्रभाव (जहरीले प्रभाव) को (तन व मन पर) देखते हुए अमरीका मे (जो कम्पनिया कोल्ड ड्रिक्स बनाती है वे अमेरिका की ही है) ठडे पेयो के खिलाफ अभियान शुरू हो गया है।

ठडे पेयो का देश व समाज पर प्रभाव

कोल्ड ड्रिक्स की वजह से हमारे तन व मन पर ही घातक असर नही हो रहा है बल्कि यह देश के आर्थिक, सास्कृतिक स्वरूप पर भी घातक असरकारी सिद्ध हो रहा है। मात्र एक रुपए की लागत से बनने वाले ठडे पेय १० या ११ रुपए मे मिल रहे है। इस प्रकार यदि १० करोड लोगो ने भी एक बोतल पिया तो ६० करोड रुपए का मुनाफा प्रतिदिन अमेरिका चला जाता है। खून पसीने की कमाई केवल विज्ञापन एव आधुनिकता की चकाचौध मे (जहर पीने के लिए) हम (सेहत सहित देश का धन) यू ही बाहर भेज रहे है।

देसी उद्योग ठप

इसके अलावा इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियो की वजह से देश के तमाम छोटे, मझोले एव मध्यम दर्जे के उद्योग बद हो गए। इससे लाखो की तादाद मे लोग बेरोजगार हो गए। लाखो की तादाद मे गन्ने का रस एव सरबत, नीबू की शिकजी, नारियल का पानी, दही की लस्सी, दूध बादाम की ठडई, सतरे, मुसम्बी का रस, आम का रस बेचने वाले लोग बेरोजगार हो कर बेचारगी की जिन्दगी बिता रहे है। अब प्रश्न उठता है कि पेप्सी, कोका, थम्सअप व मिराडा की जगह क्या पिये और पिलाये? उत्तर है स्वदेशी परम्परागत ठडे पेय लस्सी, शरबत और शिकजी। इससे स्वदेशी को बढावा मिलेगा। देश मे आ रही आर्थिक, सास्कृतिक एव मानसिक गुलामी से भी हम बच सकेगे।

टी-३३, ग्रीन पार्क (मेन) नई दिल्ली-१६

पाठक कृपया ध्यान दें

नीचे आर्य जगत् के उन ग्राहको की सूची दी जा रही है, जिनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है। कृपया अपना चन्दा तुरन्त भेजे, जिससे आपको 'आर्य जगत्' भेजना जारी रखा जा सके। यह सूची क्रमश प्रकाशित की जायेगी। —प्रबन्धक

ग्राहक सख्या	कब समाप्त हुआ
३६२१५	७ ३ २००१
३६२१७	१३ ३ २००१
३६२१८	१६ ३ २००१
३६२१९	२१ ३ २००१
३६२२०	२१ ३ २००१
३६२२१	२३ ३ २००१
३६२२२	२३ ३ २००१
३६२२३	२४ ३ २००१
३६२२४	२५ ३ २००१
३६२२५	८ ५ २००१
३६२२६	२७ ३ २००१
३६२२९	२८ ३ २००१
३६२३१	१७ ४ २००१
३६२३३	३ ४ २००१
३६२३४	३ ४ २००१
३६२३५	३ ४ २००१
३६२३७	१० ४ २००१
३६२३९	१९ ४ २००१
३६२४०	१५ ४ २००१
३६२४१	१५ ४ २००१
३६२४२	१५ ४ २००१
३६२४३	१५ ४ २००१
३६२४४	१५ ४ २००१
३६२४५	१५ ४ २००१
३६२४६	१५ ४ २००१
३६२४७	१५ ४ २००१
३६२४८	१५ ४ २००१
३६२४९	१५ ४ २००१
३६२५०	१५ ४ २००१
३६२५१	१७ ४ २००१
३६२५२	२४ ४ २००१
३६२५३	२४ ४ २००१
३६२५५	२५ ४ २००१
३६२५७	२६ ४ २००१
३६२५९	२८ ४ २००१
३६२६०	२ ५ २००१
३६२६१	२९ ४ २००१
३६२६२	५ ५ २००१
३६२६३	५ ५ २००१
३६२६४	६ ५ २००१
३६२६५	८ ५ २००१
३६२६७	१० ५ २००१
३६२६८	११ ५ २००१
३६२७०	१२ ५ २००१
३६२७१	१५ ५ २००१
३६२७२	१५ ५ २००१
३६२७५	१५ ५ २००१
३६२७६	१६ ५ २००१
३६२७७	१६ ५ २००१
३६२७९	१७ ५ २००१
३६२८०	१९ ५ २००१
३६२८१	७ ६ २००१
३६२८२	२० ५ २००१
३६२८३	२२ ५ २००१
३६२८४	२२ ५ २००१
३६२८५	२२ ५ २००१
३६२८६	२२ ५ २००१
३६२८७	२२ ५ २००१
३६२८८	२२ ५ २००१
३६२८९	७ ६ २००१
३६२९०	२६ ५ २००१

(पृष्ठ १ का शेष)

भारत की सुरक्षा ......

सुरक्षा मामलो मे सक्रिय दिलचस्पी दिखाई थी। श्री नेहरू को यह बात पसद नही थी। परन्तु डा० राधाकृष्णन के व्यक्तित्व और कद केसामने उनकी भी कुछ चलती नही थी। अब स्थिति बदल गई है। सेना की भर्ती मे भी धाधली होने लगी है और अच्छे और सुयोग्य अफसरो की सेना मे कमी महसूस होने लगी है। इसका एक कारण अवकाशप्राप्त सैनिको को समाज और सरकार द्वारा उचित सम्मान न देना भी है। इस मामले मे भारत सरकार को ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित परम्परा का आदर करना चाहिए।

मुस्लिम अलगाववाद

२००१ की जनसख्या के अनुसार भारत की जनसख्या १०० करोड से अधिक हो गई है। इसमे लगभग १५ करोड मुसलमान है। सैकुलरवाद के नाम पर चलाई जाने वाली साम्प्रदायिक और अराष्ट्रवादी नीतियो केकारण मुसलमानो मे अलगाववाद का भाव फिर जोर पकडने लगा है। उन्हे लगता है कि वे जितने सम्प्रदायवादी और अलगाववादी बनेगे, उतना ही उनका तुष्टीकरण होगा और उनको विशेष अधिकार मिलेगे। फलस्वरूप देश मे मुस्लिम समस्या न केवल फिर खडी हो गई है, अपितु इसने १९४७ से भी अधिक भयानक और उग्र रूप धारण कर लिया है। इसका लाभ उठाते हुए पाकिस्तानी सेना की गुप्तचर एजेसी आई एस आई ने अपना जाल सारे देश मे, विशेष रूप मे जहा घनी मुस्लिम आबादी है, बिछा दिया है। इसलिए अब यह स्पष्ट लगने लगा है कि पाक-भारत युद्ध मे, जिसकी सम्भवना दिनोंदिन बढ रही है, पाकिस्तान का पलडा एक दिन भी भारी होने पर देश मे उसके एजेट विद्रोह का झडा खडा करेगे और गृह युद्ध की स्थिति पैदा करेगे। यह एक कटु वास्तविकता है, परन्तु इस ओर न राष्ट्रवादी जनता और न सरकार का उचित ध्यान है। इसलिए भारत का जनबल, यदि इसमे राष्ट्रवाद की भावना को जगाने और सुरक्षा के सम्बन्ध मे जागरूकता पैदा करने की ओर विशेष ध्यान न दिया गया, तो सुरक्षा की दृष्टि से देश के लिए वरदान की बजाए अभिशाप सिद्ध हो सकता है।

घटिया शस्त्रास्त्र

बडी से बडी सेना भी अधुनातम शस्त्रो के बिना पगु और अप्रभावी हो जाती है। अपना इतिहास इस बात का साक्षी है। १५२७ मे कनवा के निर्णायक युद्ध मे राणासागा की सेना का बाबर की विदेशी तुर्क सेना से पिटने का सबसे बडा कारण बाबर के पास तोपो का होना था। १९६२ के युद्ध मे चीन की विजय का एक बडा कारण उसकी सेनाओ के पास बेहतर शस्त्रो का होना था। जब चीनी लगातार आगे बढ रहे थे, तब मै पडित नेहरू से मिला और उनसे इसका कारण पूछा। उन्होने मुझे बताया कि चीनी सेना की बढत का एकबडा कारण उनके बेहतर हथियार है। उनके जवानों के पास स्वचालित राइफले है, जबकि हमारे सैनिको के पास पुरानी ३०३ राइफले है। उन्होने यह भी बताया कि चीन की तोपो की मार हमारी तोपो से अधिक है।

यह सतोष का विषय है कि अब हमने अपने अणु शस्त्र बनाने शुरू कर दिये है। परन्तु अभी भी हमारे बहुत से शस्त्र तुलनात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं हैं। अपनी इस कमजोरी को हमे अति शीघ्र दूर करना चाहिए।

सेना के हाथ मत बांधो

सेना की सख्या और शस्त्रो से भी अधिक महत्व सेना के मनोबल का होता है। हमारी सेना उत्तम है और हमारी सैनिक परम्परा उज्वल है, परन्तु भारत के शासकों की हाल मे कुछ गलतियो के कारण हमारी सेना के मनोबल पर विपरीत प्रभाव पडा है। सुरक्षा सेनाओ को आन्तरिक सुरक्षा मे लगाना ठीक नहीं होता। यदि लगाया जाए, तो उसे उचित और आवश्यक छूट और सहयोग मिलना चाहिए, ताकि वे अपना काम कम से कम समय मे सम्पन्न कर ले। कश्मीर मे हमने ऐसा नहीं किया। पीछे से हाथ बाध कर सुरक्षा सेनाओ को पाकी जेहादियो और आतकवादियो से जूझने के लिए मैदान मे झोकने और लम्बे काल तक उन्हे वहा रखने से उनके आत्मविश्वास और मनोबल को धक्का लगा है। यह एक कटु सत्य है कि हमारे जितने जवान और अफसर कश्मीर मे गत दस वर्षो मे आतकवादियो के हाथो मारे गये हैं, उतने पाकिस्तान के साथ हुए गत तीन युद्धो मे नही मारे गये थे।

जिहादियों के शरणदाता

जिहादी पाकिस्तानियो से प्रभावी ढग से निपटने के लिए आवश्यक है कि उन लोगो से भी, जिनके घरो, मोहल्लो और गांवो मे उन्हे शरण मिलती है, सख्ती से निपटा जाए।

शत्रु से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए यह भी आवश्यक होता है कि सेना के जवानो और अफसरों के मनों मे शत्रु को खत्म करने की प्रबल इच्छा और भावना हो। इसका सही अहसास मुझे तब हुआ, जब मै एक ससदीय कमेटी के साथ नाथुला, जहा कुछ समय पहले चीनी सैनिको ने हमारे लगभग १५ सैनिको को मार डाला था और वे उनके शव भी उठा कर ले गये थे, गया। नाथुला में भारत और चीन अधिकृत तिब्बत की सीमा मिलती है और दोनो की सेनाओ के जवानों के ठिकाने आमने सामने हैं।

जब नाथुला से लौटने पर हम उस क्षेत्र के कोर कमांडर, परमवीर चक्र विजेता जनरल भगत से मिले, तो मैंने उनसे पूछा . 'क्या कारण है कि चीनियो ने हमारे इतने सैनिक मार डाले और उनके शव भी ले गये और हमारे सैनिक एक चीनी सैनिक को भी न मार सके?' तब जनरल भगत ने बताया कि युद्ध मे भी किसी को मारने के लिए उसके प्रति घृणा और शत्रुता का गहरा भाव चाहिए। हमारे राजनेता 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे लगायें और हमारे सैनिक चीनियों पर भारी पडे, यह सम्भव नहीं। यदि कल भारत के राजनेताओ ने भारत पाकिस्तान भाई-भाई के नारे लगाने शुरू किये, तो हमारी सेना पाकिस्तान को भी परास्त नहीं कर सकेगी।

गांधी–नेहरू मनोवृत्ति

जनरल भगत की इस अनुभवसिद्ध बात पर भारत के शासको को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पाकिस्तान भारत का शत्रु है और जब तक कायम रहेगा शत्रु रहेगा। इसका कारण इस्लाम और उसके राजनीतिक सिद्धान्त हैं। दुर्भाग्य से तथाकथित राष्ट्रवादी नेता भी इस्लाम के विषय में उतने ही अनभिज्ञ हैं, जितने गाधी और नेहरू थे। गांधीवादी और नेहरूवादी मानसिकता भारत की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

हमारी विदेश नीति त्रुटिपूर्ण

सुरक्षा के सम्बन्ध में ठीक सोच और ठीक नीति के लिए यह आवश्यक होता है कि देश की विदेश नीति और सुरक्षा नीति मे पूरा तालमेल हो। विदेश नीति और कूटनीति को war by other means अर्थात् देश की सुरक्षा का अन्य ढंग से लड़ा जाने वाला युद्ध भी कहा जाता है। हिन्दुस्तान की सुरक्षा नीति और विदेश नीति में तालमेल का अभाव रहा है। इसी कारण युद्ध क्षेत्र मे सेना द्वारा प्राप्त विजय को हम बार-बार कूटनीति की मेज पर हारते रहे है।

जे–३९४ शकर मार्ग, नई
दिल्ली–११००६०

(पृष्ठ २ का शेष)

समाज व राष्ट्रोत्थान ......

को देख कर भी विद्वान् नहीं हो सकता और जब उसको कोई उत्तम शिक्षक मिल जावे तो वह भी विद्वान् हो जाता है। अब भी और आगे भी किसी से पढे बिना कोई भी कभी भी विद्वान् वैदिकधर्मी नहीं हो सकता।"

इस विषय को कुछ आगे बढाते हुए समर्थन मे उदाहरण से शिक्षा करते है कि "सृष्टि के आदि मे परमात्मा उन चार ऋषियो को वेद विद्या नहीं पढ़ाता और वे लोग भी अन्य सुयोग्य जनों को नहीं पढाते तो सब जन अविद्वान् ही रह जाते। जब तक इस आर्यावर्त देश से विद्या शिक्षा बाहर नहीं गई, तब तक मिश्र, यूनान, योरप आदि देशस्थजनो में कुछ भी विद्या नहीं हुई थी। तब तक वहा के जन विद्याहीन ही थे। पुन सुशिक्षा के पाने से विद्वान् हो गये।

महर्षि की इसी सुशिक्षा वेदज्ञान पठन पाठन हेतु ही स्थान स्थान पर आर्य समाज की स्थापना कर वहा दिन मे वा रात्रि मे सुविधानुसार प्रथम मे महर्षि कृत ग्रथ व वेदाङ्ग प्रकाश वगैरा पठन पाठन की व्यवस्था साथ ही जीवन की मुख्याश घटनाये भी सुनाते रहना है।

इस प्रकार के कर्तव्य करने से ही हम आर्य समाज व राष्ट्रोन्नति मे सहायक हो सकेंगे।

शाहपुरा, भीलवाड़ा (राजस्थान)

(पृष्ठ ३ का शेष)

नादिरशाह के नये ......

किया है। हज़ारो किलोमीटर दूर इडोनेशिया मे भी उग्रपथी समर्थक प्रदर्शन हुए है। टक्कर कट्टरपथियो और उदारवादियो के बीच है।

यह सुसयोग है कि इस सघर्ष मे रूस, अमेरिका और भारत एक ही पक्ष में हैं। चीन भी इनके विरोध में नहीं है। ऐसी दशा मे युद्ध का परिणाम सुनिश्चित ही है।

अफगान बढ़िया लड़के नहीं

लोगो में यह भ्रम है कि अफगान परम्परागत लडाके और स्वतंत्रता प्रेमी हैं; उन्हे हरा पाना कठिन है। उन्होंने नौ वर्ष तक लड़ कर रूसी सेनाओं को खदेड़ दिया था। परन्तु उस खदेड़ने मे अमेरिकी शस्त्रास्त्रों और धन का बड़ा हाथ था। यदि रूस या चीन से शस्त्र सहायता न मिले, तो अमेरिकी विमान एक सप्ताह में ही इतना कुछ कर डालेंगे कि तालिबान को गुफाओं मे जा कर शरण लेनी पड़ेगी और प्रतिद्वन्द्वी उत्तरी गठबंधन को काबुल पर कब्जा करने मे कोई कठिनाई नहीं होगी। अन्य किसी देश की सेना तालिबान की सहायता के लिए वहा पहुचने वाली नहीं है।

एक बार अंग्रेजी सेना से भी अफगानों की टक्कर हुई थी। अफगानों ने एक अंग्रेजी टुकड़ी को नष्ट कर दिया था। केवल एक सवार जैसे तैसे खबर देने के लिए लौट पाया था। परन्तु उसके बाद अंग्रेज़ी सेना ने अफ़गानो को बुरी तरह हराया था और उन पर ऐसा आतक जमा दिया था कि सौ बरस तक उन्होंने चूं भी नहीं की। भारतीय अखबारो ने 'खूंखार आतंकवादी' 'भयावह लड़ाकू' 'दुर्दान्त उग्रपंथी' आदि विशेषणों का प्रयोग करके व्यर्थ ही उनका हौआ खड़ा कर दिया है।

आतंकवाद शस्त्रास्त्र विक्रताओं का खड़ा किया हुआ है। यदि बड़ी शक्तियां चाहें, तो इस पर नियंत्रण किया जा सकता है। किन्तु यह 'यदि' बहुत बड़ा 'यदि' है।

भूमण्डलीकृत अर्थव्यवस्था, स्वदेशी अर्थव्यवस्था

❑ श्री हरिजन सोमनाथ त्यागी

पोषण जन्मभूमि से ही

आयात करना एव निर्यात करना एक ही वस्तु वा विषय के दो रूप है। इन दोनो से ही स्थानीय पर्यावरण प्रदूषित होता है, समग्र पर्यावरण ही जो असन्तुलित हो जाता है। अत , ये दोनो ही हानिकारक, अनैतिक एव त्याज्य है। महात्मा गाधी जी के अनुसार "अपने गाव मे हमे अपने ही गाव के नापित का समर्थन करना होगा, मद्रास से आये कुशल नापित को त्यागना ही होगा" और कि "जिन चीजो का उत्पादन हमारे गाव (की स्थानीयता) मे नहीं होता है, उनके उपभोग की बात तो हमे कभी सोचनी भी नहीं चाहिए, भले ही हमे इस तरह की बहुत सी चीजो से वचित रह जाना पडे।" हैनरी थोरू के अनुसार कोई व्यक्ति यदि वास्तव मे विद्वान् एव सभ्य है, तो उसे अपना पालन-पोषण अपनी जन्मभूमि से ही ग्रहण करना चाहिये।

स्वदेशी में श्रम की पूजी है

लेकिन, आयात-निर्यातविहीन अर्थव्यवस्था तो स्थानीय व्यवस्था ही जो बन जाती है अत इसे ही स्वदेशी व्यवस्था वा स्वावलम्बन किंवा स्वदेशी भी कह लिया जाता है। पूजीवादी, साम्यवादी, गाधीवादी ट्रस्टीशिप वा समाजवादी आदि नामधारी आधुनिक औद्योगिक अर्थशास्त्र के भूमि, श्रम, पूजी, प्रबन्धन एव साहस नामक जो पाच तत्व है उनमे से पूजी नामक तथ्य का पूर्ण लोप इस स्वदेशी अर्थव्यवस्था मे हो जाता है। यह नया अर्थशास्त्रीय शोध भी है। "अर्थव्यवस्था के भूमण्डलीकरण" पर स्वदेशी व्यवस्था की यही तो श्रेष्ठता है। स्वदेशी व्यवस्था और स्वदेशी तकनीक मे भी मौलिक अन्तर है कि स्वदेशी व्यवस्था मे आविष्कृत एव उत्पादित सभी तकनीके एव वस्तुए पूजी के बजाय श्रम का ही प्रत्यक्ष परिणाम होती हैं। वास्तव मे, स्वदेशी मे श्रम ही पूजी है।

पर्यावरण सुरक्षा

"पर्यावरण बचाओ" कार्यक्रम एक तथ्यपरक एव तर्कपूर्ण वैज्ञानिक आवश्यकता है। और इसका मूलमत्र है कि प्रकृति से हम उतना ही कम से कम ले जितना कि जीवन-यापन के लिए अपरिग्रहपूर्वक परमावश्यक हो, अर्थात् "कम से कम" से अधिक कदापि न ले और जो ले, उसकी भरपाई कर दे। इसका तात्पर्य है सदा गरीबी मे ही रहना। कोई मनुष्य यदि वास्तव मे सुशिक्षित एव सभ्य है तो उसे न्यूनतम उपभोक्ता अर्थात् गरीबतम व्यक्ति ही होना चाहिये। इसे ही कहते हैं 'सादा जीवन उच्च विचार।' दूसरो को कम से कम कष्ट देने की अर्थात् दूसरो से कम से कम लेकर जीवन-यापन कर लेने की क्षमता को विकसित करते रहने को ही तो "ऑन बीइग ए जैण्टिलमैन" किंवा सज्जन कहा गया है।

गरीबी में रहना सीखें

ससार से गरीबी का "ग्लोबल" अवसाद दूर करने के लिए हमे गरीबी मे ही रहना सीखने की व्यवस्था अपनानी होगी। तदर्थ, प्रचुरताकारक किवा परिग्रहकारक अपनी बहुत सी वस्तुओ वा सम्पत्ति को निज अर्थात् "स्व" से परे वालो मे अपरिग्रहपूर्वक खुशी-खुशी बाट देने की कठिनतम कला हमे सीखनी ही होगी। अन्यथा, दूसरो से लुटते रहने की कुव्यवस्था से सदैव त्रस्त रहने के लिए हमे विवश रहना होगा। वे दूसरे जन चाहे विदेशी निर्यातकगण हो या हमारे स्वदेशी आयातकगण हो, कोई स्टॉक-होल्डर वा स्टॉकिस्ट हो या फिर चोर-लुटेरे वा नक्सलवादीजन अथवा हमारे नेतागण ही हो।

भारतीय सर्वोदयी चिन्तन

अत इस भूमण्डल को आज भी यदि हम इतना तृष्णारहित, कुण्ठारहित, शोषणरहित, समृद्ध एव सुखी बनाना चाहते है जितना कि सोने की चिडिया कहाने वाला आदि—कृषि युग पूर्व का यह भारतवर्ष कभी था तब तो जो भी भोजन, औषध, इत्यादि सम्पदाये, (यहा पूजीवादी सम्पत्ति नहीं) प्रकृति अपने प्राकृतिकस्तर पर स्वत ही हमे उपलब्ध कराती है, हमे उचित है कि औद्योगिक बलो के बजाय मानवश्रम एवं मानवश्रमाधारित पशुश्रम मात्र से ही उसके चयन एव अपरिग्रही सचयन मे सन्तोषपूर्वक अपना जीवन-यापन कर लिया करें। यही आदि भारतीयता का सर्वोदयी रामराज्य-दर्शन है।

सन्तोष अकर्मण्यता नहीं

सन्तोष का अर्थ अकर्मण्यता कदापि नहीं है। औद्योगिक बलविहीन एव आयात-निर्यातविहीन यह "स्वावलम्बी स्वदेशी" अर्थव्यवस्था क्योकि मानवश्रम आधारित होती है, अत अकर्मण्यता विरोधी मानवश्रम की ही अकूत सम्भावनाए इसमे सन्निहित है। श्रमिक, कृषक, ग्रामीण, वनवासी या दरिद्र को नही, अपितु असन्तोषीजन को ही गवार, असभ्य वा जगली कहा जाता है। इस आधुनिक उपभोक्तावादी सभ्यता के वर्तमान चरमोत्कर्ष मे भी तो हमे अन्ततोगत्वा कहीं न कहीं, सन्तोषलाभ की ही मर्यादा पर तो अपना जीवनयापन करना पडता है। कोई-कोई जन तो बिना चिकित्सा के ही मर जाते है या कोई किसी गाव के किसी लल्लूपजू से अस्पताल में ही दम तोड देते है, या कोई-कोई जन किसी अत्याधुनिक विदेशी अस्पताल मे जा कर कालकवलित होने के लिए विवश है।

भोगवाद आसुरी सभ्यता

"एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति" शरीर-क्षेत्र रूपी भौतिक देहधारी प्राणियो, उनके परिवारो एव राष्ट्र की भौतिक आवश्यकताओ की परिपूर्ति कर लेने की अपरिहार्यता तो आदि भारतीयता को भी स्वीकार्य है। लेकिन, वहा 'कम से कम' से अधिक की आपूर्ति कदापि नहीं करने का ही विधान है, भौतिक आवश्यकताओ की निस्सीम परिपूर्ति करना निषिद्ध है। इसे ही दूसरे शब्दो मे कहे तो होगा, **"तेन त्यक्तेन भुजीथा मागृधः कस्यस्विद् धनम्"** (यजुर्वेद ४०/१)। लेकिन, **"सर्वे भवन्तु सुखिन:"** के इस प्रतिपादन के विपरीत न्यूनतम की सीमा से अधिक के उपभोक्तावादी उत्पादन एव परिग्रही सचयन को सामी (सेमेटिक) उपभोक्तावाद अथवा आसुरी सभ्यता कहा गया है।

अनवीकरणीय खनिजादिको एव औद्योगिक-बलो पर आधारित रेलो, कारो, वायुयानो, ट्रैक्टरो, स्कूटरो इत्यादि के उपभोग का सर्वसामान्यीकरण करके तो हम स्वय को गरीब ही बनाते है। इससे हमारा पर्यावरण प्रदूषित एव असन्तुलित होता है। पर्यावरण के इस असन्तुलन की क्षतिपूर्ति के प्रयास मे हम निरन्तर गरीबतर ही जो बनते चले जाते है। वैसे भी, स्वदेशी अर्थव्यवस्था मे अर्थात् इस प्रचलित औद्योगिक सभ्यता के अभाव मे, अधिक या कुछ दूरी के स्थानो तक जाने आने की भी हमे भला इतनी क्या आवश्यकता रह जायेगी कि रेलो, कारो, बाइसिकिलो, ट्रैक्टरो आदि की महत्ता का सामान्यीकरण कर लिया जाये? ऋग्वेद का उपदेश है, घर्षण-उत्पादित विद्युत् का उपयोग सैन्य-सचार जैसे अति विशिष्ट कार्यो मे ही किया जाये।

ससाधनो का नवीकरण

"ट्वेंटियथ सेचुरी सोशलिज्म" नामक अद्भुत ग्रथ के ब्रिटिश रचनाकार डॉ० ई० एफ० शुमाखेर ने "बौद्ध देश की अर्थव्यवस्था" शीर्षक से लिखे एक प्रपत्र मे कहा है कि तेल, लोहा आदि अनवीकरणीय धातुओ पर खडी सभ्यताओ की अपेक्षा वन्य, कार्षिक, इत्यादि नवीकरणीय ससाधनो पर खडी सभ्यता अधिक स्थायी एव श्रेष्ठ है। जितने वृक्ष काट लो, पृथ्वी पर उतने ही और उगा लो, ये नवीकरणीय ससाधन है। लेकिन, उपभोग कर लिये गये तेल, कोयला, लोहा आदि को खदानो मे (इतनी सरलतापूर्वक) उगाया जा नही सकता है अत ये ससाधन अनवीकरणीय है। अनवीकरणीय ससाधन अल्पकालिक होते है, लेकिन नवीकरणीय ससाधन अधिक टिकाऊ किंवा चिरस्थायी है। तिस पर भी, विचार की जो पद्धति किसी प्रकार की सीमा का बन्धन नही मानती है वह हिसात्मक प्रकार से विनाशकारी एव अल्पकालिक ही जो होती है।

नि:सीम विकास विनाश है

निरन्तर विकासशीलता किवा निस्सीम विकासशीलता मे निरन्तर परिवर्तनशीलता नामक अल्पकालिकता का भयावह भाव सन्निहित है। आधुनिक भौतिकी आदि विज्ञानो द्वारा प्रतिपादित इस आधुनिक उपभोक्तावादी औद्योगिक सभ्यता का सामी (सैमिटिक) दृष्टिदोष यह है कि यह सीमा के बन्धन को नहीं स्वीकारती है और यदि कोई सीमा कभी आये भी, तो यह उसे ठीक से समझना एव पहचानना ही नही चाहती है। कोयले और तेल का स्थान ले लेने की दृष्टि से व्यापक पैमाने पर शान्ति के लिए अणुशक्ति का विकास तो ऐसी भयानक स्थिति का परिचायक है, जो अणुबम एव उद्जनबम से भी अधिक त्रासदायी है।

११/६३, कोट बाजार, अमरोहा (उ० प्र०) २४४२२१

विश्व शान्ति का नुस्खा

अब तक दो विश्व युद्ध हो चुके है। पहला चार साल और दूसरा छह साल चला। उनमे लाखो व्यक्ति मारे गये, खरबो रुपये की सम्पत्ति का नुकसान हुआ। तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो मानव जाति का भारी नुकसान होगा। इससे ईश्वर बहुत चिन्तित था, क्योकि अब तो मनुष्य ने परमाणु बम भी बना लिये है।

शान्ति बनाये रखने की इच्छा से उसने पृथ्वी से तीन देशो का एक एक प्रतिनिधि बुलाया। ये देश थे अमेरिका, रूस और चीन। ईश्वर ने उन्हे समझाया कि लडना अच्छा नही है। तुम लोग मिल कर आपस मे प्रेम से क्यो नही रहते?

अमेरिकी प्रतिनिधि ने कहा 'हम तो शान्ति से रहना चाहते है। पर रूस बहुत दुष्ट है। वह कुछ न कुछ बखेडा करता रहता है। यदि आप इसे समाप्त कर दे, तो हमारी किसी से लडाई नहीं होगी। विश्व शान्ति का यही उपाय है।'

तब ईश्वर ने वही प्रश्न रूस के प्रतिनिधि से पूछा उत्तर मे रूसी प्रतिनिधि ने कहा 'सारे पापो की जड अमेरिका है। अपने धन के जोर से वह अन्य देशो को आपस मे लडाता रहता है। यदि आप भूमडल से अमेरिका का नाम निशान मिटा दे, तो सब जगह शान्ति ही शान्ति होगी।'

तब ईश्वर ने चीन के प्रतिनिधि से पूछा 'तुम्हारा क्या सुझाव है?'

चीनी प्रतिनिधि ने कहा 'ये दोनो ही ठीक कहते है। मै इन दोनो का मित्र हू। मै इन दोनो से सहमत हू। आप इन दोनो की इच्छा पूरी कर दे, यही मेरी हार्दिक इच्छा है। तब शान्ति ही शान्ति रहेगी।'

वेद प्रकाश टँकारा वाले, ७३/५, भार्गव नगर, जालन्धर

36583. पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय
हरिद्वार-249404, उत्तरांचल

निवेदन

आर्य युवक समाज द्वारा चरित्र निर्माण शिविर दिनाक १८ १० २००१ मे वैदिक मोहन आश्रम (भूपतवाला) आश्रम मे प्रारम्भ हो रहा है, जिसका समापन आर्य युवक समाज के सरक्षक पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा तथा राष्ट्रीय सयोजक आर्य युवक समाज श्री पूनम सूरी के करकमलो द्वारा होगा। समस्त आर्यजनो से निवेदन है कि वे अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य द्वारा इस महायज्ञ मे अपना सहयोग देकर हमे कृतार्थ करें।

स्थान—वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार
(भूपतवाला)
समय—१८ १० २००१ से
२५ १० २००१

आपसे अनुरोध है कि आप अपना सहयोग कृपया निम्न पते पर भेजे

आर्य युवक समाज, नई दिल्ली
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष ३३६३७१८

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश प्रारभ

महर्षि दयानन्द का मनोवाछित देश का सुप्रसिद्ध शिक्षणालय, गुरुकुल चित्तौडगढ अरावली की सुन्दर पहाडियो की तलहटी मे तथा गभीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल पर अवस्थित है। यहा शिक्षा सर्वथा नि शुल्क है।

यहा पर लगभग सभी प्रान्तो के बालक शिक्षा ग्रहण कर रहे है। यहा की आश्रम प्रणाली अनुपम विशेषता लिये हुए है।

वेद वेदाग, सस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् आदि की पढाई को प्रमुखता दी जाती है। पहली से आठवीं कक्षा तक वैदिक शिक्षा तथा व्याकरण सहित सस्कृत विशेष के साथ-साथ अर्वाचीन सभी विषय अग्रेजी, गणित, विज्ञान, हिन्दी, मामाजिक आदि भी पाठ्यक्रम मे शामिल है। गुरुकुल सस्कृत शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त सस्था है।

सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की आर्ष पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण, वेद, निरुक्त प्रक्रिया से मध्यमा, शास्त्री एव आचार्य कक्षा तक की पढाई की उत्तम व्यवस्था है। परीक्षा परिणाम विगत कई वर्षों मे शत प्रतिशत रहा है।

प्रवेश १५ जून से प्रारभ तथा अध्ययन एक जुलाई से आरभ होता है। प्रवेश सबधी विस्तृत जानकारी के लिए सपर्क करे प्राचार्य गुरुकुल चित्तौडगढ, राज (बडी रेलवे लाइन के पास)।

असम आर्य सम्मेलन

आर्य समाज की स्थापना की १२५वी वर्षगाठ के उपलक्ष्य मे आर्य समाज गुवाहाटी द्वारा १२, १३ और १४ अक्टूबर २००१ को नेहरू स्टेडियम के मामने डा बी बच्चा रोड पर स्थित आर्य समाज मन्दिर मे धूमधाम से मनाया जायेगा। इसमे आचार्य श्री सुखदेव जी, श्री मधुसूदन शास्त्री, श्रीमती सन्तोष सैनी आर्या, श्री कमल मित्र शास्त्री आदि विद्वान् भाग लेगे। इसमे वेद सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन तथा छात्र छात्राओं की अनेक प्रतियोगिताएं होगी। १४ अक्टूबर को प्रात ६ से ७ ३० बजे तक प्रभात फेरी होगी। सभी आर्यजन सादर आमत्रित है।

वैदिक चेतना शिविर

हसराज महिला महाविद्यालय की ओर से छात्राओं मे वैदिक सस्कार एव चरित्र भावना जाग्रत करने हेतु वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार मे ३० सितम्बर से ६ अक्टूबर तक एक वैदिक चेतना शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसका समापन समारोह ५ अक्टूबर को प्रात ११ बजे किया जायेगा। इसमें श्री ऐस ऐल सूरी, सचिव सहित श्री डी आर गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में पधार रहे है।

आर्य समाज मनीमाजरा, चंडीगढ़ का वार्षिकोत्सव

२९ सितम्बर से १ अक्टूबर तक धूमधाम से मनाया गया। २९ सितम्बर को प्रात ५ से ७ बजे तक प्रभातफेरी हुई।

उत्सव मे स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती, प० प्रेमदत्त शर्मा, डा० विक्रम विवेकी, डा० मनुदेव आचार्य आदि अनेक विद्वान् एव भजनोपदेशक पधारे।

वार्षिकोत्सव

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय सिराथू (सैनी) कौशाम्बी (इलाहाबाद) का ४५वां वार्षिकोत्सव कुल प्रागण मे ५ से ७ अक्टूबर २००१ तक ऐतिहासिक ढग से मनाया गया।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, श्री सत्यदेव जी स्नातक, श्री तेजपालसिह, श्रीमती आशा रानी अमरोहा, श्रीमती डा० रश्मिप्रभा शास्त्री, श्री ऐस० पी० द्विवेदी, श्री महेन्द्र चतुर्वेदी, डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री, श्री सत्यम्, प्रो० डा० आनन्द, स्वामी परमार्थ मुनि और स्वामी भाषानन्द सरस्वती पधारे।

इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ और सस्कृत शिक्षा सम्मेलन, किसान आर्य महासम्मेलन, महिला सम्मेलन, कवि सम्मेलन हुए।

पुण्य स्मृति में हवन यज्ञ

दिनाक १३ सितम्बर २००१ को डी० आर० वी० डी० ए० वी० कालेज फिल्लौर के प्रागण मे देसराज वढ़ेरा जी की पुण्य स्मृति मे परम्परानुसार हवन यज्ञ करवाया गया। इंग्लैंड के प्रतिष्ठित उद्योगपति श्री यशपाल वढेरा ने सन् १९८५ में १० लाख रुपये की दानराशि से अपने पिता स्वर्गीय श्री देसराज वढेरा की स्मृति में कालेज खोलने मे सहयोग दिया। इस अवसर पर कालेज के प्रिंसिपल श्री ए० के० वैद, स्थानीय प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष श्री ऐस० के० मल्होत्रा, प्राध्यापक वर्ग, कर्मचारी वर्ग तथा स्थानीय समिति के गण्यमान्य सदस्य उपस्थित थे।

१ लाख रुपये का दान

टकारा ट्रस्ट जो गुजरात में सहायता का कार्य कर रहा है, उस उपलक्ष्य में ५ मकान बनवाने के लिए श्रीमती शिवराजवती आर्या ने एक लाख रुपये श्री आचार्य विद्यादेव जी द्वारा भेज दिया है।

श्रीमती शिवराजवती, आर्य समाज लोअर परेल, मुम्बई में भवन निर्माण का कार्य भी करवा रही है, जिस पर लगभग ५ लाख रुपये का व्यय है। उसका उद्घाटन दशहरे के दिन होगा।

आर्य समाज प्रतापगढ़

आर्य समाज चौक, प्रतापगढ (उ० प्र०) के तत्वावधान मे उसके द्वारा सचालित शीतल प्रसाद आर्य कन्या विद्यालय, सहोदरपुर मे वेदसप्ताह १३ अगस्त, २००१ से १८ अगस्त २००१ तक समारोहपूर्वक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डा० निष्ठा विद्यालकार के सारगर्भित हृदयग्राही तथा मार्मिक प्रवचन हुए। कार्यक्रम मे श्री जयरामसिह शास्त्री "त्यागी' के प्रवचन हुए तथा सुलतानपुर के भजनोपदेशक श्री समरजीत सिह के भजन हुए।

ध्यान योग शिविर

पातंजल योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार में १५ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २००१ तक ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा यम, नियमादि का पालन भी कराया जायेगा। शिविर मे यथा समय विद्वानों के प्रवचन एवं भक्ति संगीत होगे।

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा अनुकरणीय दान

वर्ष २०००-२००१ में राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट नागपुर, उपकार्यालय बीगोपुर द्वारा नीचे उल्लिखित शिक्षण व सामाजिक संस्थाओ व छात्र-छात्राओं को सहायतार्थ छात्रवृत्ति प्रदान की गई

स्वामी सर्वानन्द शताब्दी ११,०००, आर्य समाज भाण्डवा २१,०००, गुरुकुल शान्तिधाम बंगलौर २१,०००, आर्य समाज बीगोपुर २१,०००, गुरुकुल खानपुर ७,०००, वैदिक सेवाश्रम पिपराली ५,०००, गुरुकुल होशगाबाद ५,०००, गुरुकुल आमसेना ५,०००, कन्या गुरुकुल वाराणसी ५,१००, सार्वदेशिक सभा दिल्ली ११,०००, यादव मेवक समाज दिल्ली २६,०००, यादव अहीर समाज कामठी ५१,००० के अतिरिक्त अनेक गुरुकुलो, छात्रो व छात्राओ को छात्रवृत्तिया दी गईं। न्यास अपने सीमित साधनों के द्वारा अपने स्थापन काल से ही जरूरतमन्द सस्थाओं व छात्रो तथा आकस्मिक आपदाओ के समय सहयोग करता आ रहा है।

आर्य समाज चैनत ने महिला दिवस मनाया

हासी-बरवाला रोड पर स्थित गांव चैनत मे स्थानीय आर्य समाज के प्रधान मा० हरिराम जी, सेवानिवृत्त हैडमास्टर की अध्यक्षता मे महिला दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर हासी नगर के प० रामसुफल शास्त्री ने अपने विचार रखते हुए कहा कि नारी जाति के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं की बहुत वकालत की थी। महाभारत काल के बाद नारी शिक्षा पर प्रतिबन्ध था, जिसे हटाने के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपना बलिदान तक दे दिया। महिलाओ का शिक्षित एव सुसभ्य होना समाज की प्रगति के लिए अति आवश्यक है।

इस मौके पर आर्य समाज घिराये के प्रधान श्री दयानन्द जी, कन्या गुरुकुल घिराये के प्रधान चौ० मनफूल सिंह, कुलपति श्री स्वामी जी महाराज, प्रधानाचार्या बहन सुनीता जी व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

निर्वाचन

आर्य समाज रामनगर, गुड़गांव
प्रधान— श्री भक्त राजेन्द्र प्रसाद
मंत्री— श्री ओमप्रकाश चुटानी
कोषाध्यक्ष—श्री ताराचन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल
प्रधान—श्री मोहनलाल अग्रवाल
महामंत्री—श्री आनन्दकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सिद्धार्थ गुप्त

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयंक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष · 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन . 3363718, 3362110) सम्पादक—उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये विदेशो मे ३० पौंड या ५० डालर वर्ष ६६, अक ३४ दूरभाष ३३६३७१८ रविवार, २१ अक्टूबर, २००१
आजीवन—५०० रुपये इस अक का मूल्य—२०० रुपये दयानन्दाब्द १७८ ३३६२११० द्वितीय आश्विन शु०-५-वि० स०-२०५८
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये फैक्स ३३६००५९ सप्ताह २१ अक्टूबर से २७ अक्टूबर

आतंकवादियों (रावणों) का कोई धर्म नहीं होता।

आजकल हमारे पथ-निरपेक्ष सर्वधर्मसमभावी अग्रेजी पत्रकार चिल्ला कर कह रहे है 'आतकवादियो का कोई धर्म नही होता।' उनकी बात अशत सही है, क्योकि वे 'रिलिजन' शब्द का प्रयोग करते हैं। 'रिलिजन' का अनुवाद 'धर्म' कर दिया जाता है, जबकि इसका सही अनुवाद 'मजहब' है। ये सर्वधर्म-समभावी मनीषी जताना यह चाहते है कि आतकवाद का किसी मज़हब से कोई लेना देना नही है, किसी भी मज़हब का अनुयायी आतकवादी हो सकता है, आतकवाद के प्रेरक कारण कुछ और ही है।

आतकवादी मज़हबी, पर अधर्मी

यह बात पूरी तरह गलत है, पर यह सच इसलिए जान पडती है, क्योकि 'रिलिजन' का अनुवाद धर्म कर दिया जाता है। यह सत्य है कि आतकवादी धर्म का विलोम (उलट) होता है, वैसे ही जैसे अन्धकार प्रकाश का विलोम है। रावण (सबको रुलाने वाला आतकवादी) धार्मिक कदापि नही होता। अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह वाले धर्म की, या सेवा, परोपकार, दया, क्षमा वाले धर्म की हवा भी उसे नही लगी होती। वह अपने मज़हब के लिए उन लोगो की हत्या करता है, जिन्होने उसका कुछ बिगाडा नहीं होता, जिनके नाम तक वह नही जानता। अश्वत्थामा की तरह वह रात मे सोते लोगो की हत्या करता है। डाके डालता है, चोरी करता है, बलात्कार करता है, झूठ बोलता है और धन बटोरता है।

मज़हब कुकर्म कराता है

धर्म की दृष्टि से ये सब कुकर्म पाप है, परन्तु मज़हब कहता है कि मजहब के भले के लिए किये गये इन पापो को अल्लाह या ईश्वर क्षमा कर देगा और इन पाप कर्मो को करने वाले लोग अनन्त काल तक स्वर्ग मे रह कर घी, दूध, शहद, सुरा और सुन्दरियो का सुख भोगेगे।

पाप की क्षमा का भरोसा

धर्म रावण को धिक्कारता है, पर मज़हब रावणो को आश्वासन देता है कि पापकर्म करने से डरो मत, अल्लाह या भगवान् तुम्हारे सब पाप क्षमा कर देगा। यह बात मज़हबी किताबो मे छापी जाती है, आतकवादी मदरसो मे पढाई और रटाई जाती है, खून और मज्जा तक मे रमाई जाती है।

आतकवादी युवक जानता है कि जो कुछ उससे करवाया जा रहा है, वह पाप है, जघन्य पाप है। उसकी अन्तरात्मा चीख कर कहती है 'मादाओ पर, बच्चो पर गोली मत चलाओ। यह महापाप है। उसकी क्षमा कही नही है। इसका सताप तुम्हारा पीछा नही छोडेगा।'

मजहबी कुशिक्षा

तालिबान, दाढी और पगडी वाले प्रशिक्षक नई मजहबी शिक्षा देते है 'अमुक जगह (कोसोवो मे, चेचन्या मे, कश्मीर मे) मुसलमानो पर भीषण अत्याचार हुए है। ये होते रहे, तो हमारा मजहब समाप्त हो जायेगा। तुम मजहब के युवा सैनिक हो। मजहब के लिए खुद को कुर्बान कर दो।' वे उन युवको को मुसलमानो के कटे हुए सिर और अत्याचार पीडितो के रोगटे खडे करने वाले चित्र दिखाते है। बार बार दिखाते है, तब तक जब तक कि तलवार की धार खूब पैनी न हो जाये, जवान लडका केवल मारने को ही नही, स्वय मरने को भी तैयार न हो जाये।

११ सितम्बर २००१ को जिन १९ आतकवादी मुस्लिम युवको ने चार विमानो का अपहरण किया था, और आत्मघाती हमलो मे विमानो को विश्व व्यापार केन्द्र की दो मीनारो और पेटागन के कार्यालय से टकरा कर भीषण विनाश किया था, उन सबको यही सिखाया, रटाया गया था।

आतकियो की दीक्षा पोथी

वे १९ युवक, सबके सब मर गये। आतकवादियो की भाषा मे 'मजहब के लिए शहीद हो गये।' उनके विषय मे खोज करते हुए पुलिस को एकचार पृष्ठी पुस्तिका मिली है, जिसे आतकियो की मज़हबी पोथी कहा जा सकता है। इसकी कई प्रतिया अलग अलग जगहो से मिली है। एक आतकवादी का सामान विमान बदलते हुए पीछे छूट गया था। उसमे इस पुस्तिका की एक प्रति मिली है। इससे निष्कर्ष निकाला गया है कि यह पुस्तिका सभी आतकवादियो को दी जाती है।

वैसे तो कुरान मे भी काफिरो को (मुहम्मद पर ईमान न लाने वाले लोगो को) लूटने, मारने और उनका धर्म परिवर्तन करने के लिए घोरतम हिसा करने के लिए भडकाने वाले अनेक अश है, परन्तु यह पुस्तिका तो हिसा दर्शन का सर्वोच्च शास्त्र प्रतीत होती है।

इसमे धर्माचरण के लिए मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति, और हिसा, चोरी, मिथ्या भाषण और आचरण से उत्पन्न ग्लानि को पहचानते हुए आतकवादी को निदेश दिया गया है 'ये दुर्बलताए तुम्हारे मन मे जागेगी, परन्तु तुम इनसे विचलित न होना। अल्लाह उन्ही पर कृपालु होता है, जो अपने सकल्प पर दृढ रहते है।'

'मृत्यु किसी को अच्छी नहीं लगती, सब उससे डरते है। परन्तु मजहब के लिए प्राण देते ही स्वर्ग के द्वार खुल जाते है।'

'अल्लाह से प्रार्थना करो। कुरान की आयते जपो। उससे तुम्हारा सकल्प दृढ बना रहेगा।'

इसी प्रकार के अनेक अनेक प्रेरक वाक्यो से भरी है यह पुस्तिका।

मानव को दानव बनाना

अमेरिका के गुप्तचर विभाग (एफ बी आई) ने उन उन्नीस आतकवादियो के चित्र भी प्रकाशित किये है। सभी हृष्ट पुष्ट है, सबके बाल काले है। चेहरे पर दृढ सकल्प की छाया दीख पडती है, परन्तु सौम्यता का चिह्न किसी मे नही है। क्रूर भाव झलकता है। कुछ महीने के प्रशिक्षण से मानव को दानव बनाया जा सकता है।

अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश ने आतकवाद के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की है। उनका कहना है कि सारे आतकवाद की जड ओसामा बिन लादेन है। यदि ओसामा बिन लादेन जिन्दा या मुर्दा, पकडा जा सके, तो आतकवाद समाप्त हो जायेगा।

अमेरिका स्वार्थी है

सचाई यह है कि अमेरिका ने वास्तविकता को कभी देखना ही नही चाहा। वह अब भी देखना नही चाहता। यदि विश्व व्यापार केन्द्र की मीनारो और पेटागन की इमारत पर विमान न टकराये होते, तो वह अब भी आखे मीचे रहता।

जब नागिन ने अडे दिये थे, तब अमेरिका को दिखाया गया था कि ये नागिन के अडे है, इनमे से जहरीले साप निकलेगे। अमेरिका ने परवाह नही की। जब उनमे से सपोले निकले, तब अमेरिका को दिखाया गया, पर अमेरिका ने देखा ही नही। जब वे नाग बडे हो कर कोसोवो, चेचन्या, कश्मीर और फिलिपीन्स मे, मिस्र, लेबनान और अल्जीरिया मे हजारो लोगो को डसने लगे, तब भी अमेरिका की आखे नही खुली। जब उन्होने अमेरिका के ही पाव को डसा, तब उसे विश्व आतकवाद के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करनी पडी।

कपट भाषण

जब भारतीय सर्वधर्मी पत्रकार यह कहते है कि आतकवादी का कोई धर्म नही होता, तब उनका लक्ष्य यह होता है कि आतकवाद को इस्लाम से न जोडा जाये, नही तो हिन्दू मुस्लिम दगे हो जायेगे। उनका उद्देश्य शुभ हो सकता है, परन्तु इस सचाई से इन्कार करना, कि इस्लाम अपना प्रभुत्व जमाने के लिए अनेक देशो मे आतकवाद फैला रहा है और भारत भी उसका शिकार है, रोग के इलाज मे बाधक है। जब तक हम खतरे को सही रूप मे पहचानेगे नहीं, उसमे बचाव का उपाय कैसे कर पायेगे?

आतकवाद का रूप अमेरिका के लिए और है और भारत के लिए और। अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन को पकडने के लिए अपने दीर्घकालीन मित्र पाकिस्तान से सहायता मागी। पाकिस्तान आतकवाद मे अफगानिस्तान का गुरु, प्रशिक्षक और सहायक है। उसकी सहायता

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित लेखो में व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

पापी शत्रुओं के पीछे कौवे, चीलें, गिद्ध लग जायें

❑ आचार्य धर्मवीर विद्यालकार

कङ्का. सुपर्णा अनुयन्त्वेनान्
गृध्राणामन्नमसावस्तु सेना।
मैषा मोच्यघहारश्च नेन्द्र वयास्ये-
नाननुसयन्तु सर्वान्।

साम०, उत्तरार्चिक, २१ २ १

अर्थ — (**सुपर्णाः कङ्काः**) अच्छे पखो वाले कक—मृत मास भोजी —पक्षी (**एनान्**) शत्रु सेना के इन सैनिको का (**अनु यन्तु**) पीछा करते हुए उडे। (**असौ सेना**) यह शत्रु सेना (**गृध्राणा अन्न अस्तु**) गिद्धो का भोजन बन जाये। (**इन्द्र**) हे इन्द्र, ऐसा कर कि (**एषा अघहारश्च मा मोचि**) इनका कोई अघहार अर्थात् पापमोचन तक करने वाला बाकी न बचे। (**एनान् सर्वान्**) इन सबके पीछे (**वयांसि**) चील कौवे आदि (**अनु सयन्तु**) मृतमास भोजी पक्षी लग जाये।

मनन— वेद मे शत्रुओ से लडने और उन्हे पराजित करके समाप्त कर डालने का सकल्प प्रकट किया गया है। इसमे यह अर्थ अन्तर्निहित है कि हम धर्मपरायण, सत्यनिष्ठ, न्यायप्रिय लोग है, इसलिए हमारे शत्रु दुष्ट दस्यु ही होगे। उन दुष्ट दस्युओ से डरने या समझौता करने का प्रश्न ही नही उठता। उनसे लडना है, उन्हे मारना है या लडते लडते मर जाना है। दोनो हाथो मे लड्डू है। जीत गये तो विजय का आनन्द है और मर गये, तो दासता की यातना से मुक्ति है। आर्य को कभी दास बन कर नही रहना है।

प्रार्थना बल

मामान्यतया शत्रु पर अपनी शक्ति से ही विजय पाई जा सकती है। अपना शारीरिक बल और मनोबल ही इसके लिए यथेष्ट होता है। परन्तु ऐसे भी अवसर आ मकते है और आते है, जब शत्रु सेना इतनी बडी और शक्तिशाली हो कि अपनी शक्ति मे उस पर विजय पाने की आशा न हो, अपितु पराजय की भी आशका हो, तब दैवी शक्ति से प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है।

जैसे आज कश्मीर मे स्थिति है। यद्यपि शत्रु की सख्या और बल अधिक नही है, परन्तु अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति ऐसी है कि हमारी सेना आतकवादियो का पीछा करती हुई पाकिस्तान अधिकृत उस प्रदेश मे नही जा सकती, जहा छापामार आतकवादियो की जडे है। आतकवादी वहा से शस्त्रास्त्र ले कर आते है और मौका देख कर आक्रमण करके वापस भाग जाते है। हम अपने इस नियम से बधे बैठे है कि हमें भागते हुए शत्रु का पीछा करते हुए उसके घर तक नही जाना है। ऐसे समय खीझ भी होती है और बेबसी भी अनुभव होती है कि हम शक्तिशाली होते हुए भी बार बार पिट रहे है और जान माल की हानि उठा रहे है।

ऐसे समय मन मे से प्रार्थना उठती है कि हे इन्द्र, ऐसा करो कि इन बर्बर आतकवादियो की लाशो को चील, कौवे और गिद्ध खायें।

जैसे शारीरिक शक्ति से मनोबल (सकल्प) अधिक प्रभावशाली होता है, वैसे ही प्रार्थना-बल मनोबल से भी अधिक प्रभावयुक्त होता है। पन्द्रह वर्ष से पीडितो की पुकार भगवान् के कानो मे पड रही थी। और एकाएक असभव सभव हो गया।

शत्रु मित्र बने

भारत रूस का मित्र था। इसलिए अमेरिका भारत को शत्रु मानने लगा और पाकिस्तान का मित्र और सहायक बन गया। भारत का पडौसी चीन भी पाकिस्तान को बढावा देने लगा। अमेरिका और चीन पाकिस्तान के पक्ष पोषक थे, इसलिए भारत चाहते हुए भी उसके विरुद्ध कडा कदम नही उठा सकता था।

आतकवादियो का गढ अफगानिस्तान था, पर वहा प्रभुत्व पाकिस्तान का ही था। तालिबान की शक्ति पाकिस्तानी महायता पर टिकी थी। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के आतकवादियो ने न केवल कश्मीर मे, अपितु समूचे भारत मे आतकवादी कार्यो से नाक मे दम किया हुआ था। पाकिस्तान परमाणु बम भी बना चुका था, इसलिए युद्ध छेडना भी खतरनाक था।

पुरानी कथा

पुरानी कथा है कि हिरण्यकशिपु के अत्याचारो की समाप्ति के लिए दैवी शक्ति नृसिह के रूप में खम्भे को फाड कर उसमें से प्रकट हुई और उसने हिरण्यकशिपु का पेट चीर डाला। यह कहानी है। नृसिह कुछ होता ही नही, और यदि हो भी, तो वह पत्थर-चूने के खम्भे मे से कैसे निकल सकना है? यह असभव है।

परन्तु मिथ्या कथाओ मे भी कहीं न कही सत्य का अश छिपा रहता है। उस सत्य अश के लिए ही वे गढी जाती हैं और इसी के लिए वे मानव मन को प्रिय लगती है और पीढी दर पीढी आगे चलती जाती है। हिरण्यकशिपु की कथा मे भी सत्य का अश यह है कि जब अहकारी अत्याचारी का अत्याचार बहुत बढ जाता है, तब नर ही सिह बन जाता है, वह आधा मानव और आधा रक्तपिपासु हिस्र योद्धा बन जाता है।

नृसिह

नृसिह बनते ही असम्भव सभव होने लगता है। पत्थर के खम्भे फटने लगते है। उनमे से पाप का नाश करने वाली शक्ति प्रकट हो जाती है।

पाकिस्तान और अफगानिस्तान के आतकवादियो ने, जिन्हे आरम्भ मे अमेरिका का सरक्षण और प्रोत्साहन प्राप्त था, अपनी सफलताओ के जोश मे होश गवा दिया। उन्होने अपने ही सहधर्मी मुसलमानो को कडी धार्मिक दासता मे जकड दिया, अपनी ही माओ, बहिनों, बेटियो को अज्ञान और बुर्के के अन्धकार मे धकेल दिया। हजारो निर्दोषो की हत्याए की। बुद्ध की प्रतिमाओ को ध्वस्त करके चीन को रुष्ट कर दिया। चेचन्या मे लडाई लड कर रूस से शत्रुता ठान ली। फिर अमेरिका मे विश्व व्यापार केन्द्र की दो मीनारो पर विमान टकरा कर अमेरिका से भी कहा 'आ बैल, मुझे मार।'

आश्चर्य घटना

रूस और अमेरिका का आतकवाद के विरुद्ध एक पक्ष मे हो जाना खम्भे मे से नृसिह केआविर्भाव से कम असभव घटना नहीं है। पर यह हो गई है। और ११ सितम्बर की मीनारो को ढहाने की बर्बर घटना के तीन सप्ताह बाद ही आतकवादियो की निकट भविष्य मे गिरने वाली लाशो पर चील, कौए और गिद्ध मडराते प्रतीत होते है।

इससे भी बडी आश्चर्य घटना यह हुई है कि आतकवाद के अफगानिस्तान से भी बडे प्रवर्तक पाकिस्तान ने अमेरिका के आतंक विरोधी मोर्चे मे भी सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया है और वह तालिबान के विरोधी पक्ष में है। परिणाम बहुत चौकाने वाला हो सकता है।

मत्र का भाव यह है कि बलवान, अधार्मिक शत्रु से सामना होने पर व्यायाम, सगठन आदि द्वारा शारीरिक और शस्त्रबल तो अर्जित करें ही, मनोबल भी ऊचा बनाये रखे। इसके साथ ही परम दैवी शक्ति से प्रार्थना करके सर्वोच्च बल प्राप्त करे। जैसे स्विच चालू करते ही ताबे की शक्तिहीन तार मे विद्युत् की शक्तिशाली धारा दौडने लगती है, वैसे ही प्रार्थना करने से, दैवीय शक्ति से प्रार्थना करने से हमारे मन का सम्पर्क ब्रह्माडीय शक्ति केन्द्र से जुड जाता है और उचित प्रार्थना के पूरा होने के बानक बन जाते है। अत्याचारी की लाश के लोभ मे कौए चील उसके पीछे लग जाते है।

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर मार्ग,
हरिद्वार (उत्तराचल)

पर्व यह संग्राम का है

यह दशहरा क्षत्रियो का पर्व प्रिय सग्राम का है,
रावणो पर यह सुनिश्चित विजय का क्षण राम का है।

द्वार पर ललकारता हो, शत्रु जब तलवार ले कर,
चोर घर मे आ घुसे, दीवार मे जब सेध दे कर,
प्राण पर सकट बने, सम्मान पर जब आच आये,
वीर क्षत्रिय तब निकलता वस्त्र केसरिया पहन कर।
आन से प्रिय जान जिसको, वह मनुज किस काम का है?

मृत्यु होनी एक दिन, उसको न कोई टाल सकता,
आयु जिसकी शेष, यम भी कर न उस पर डाल सकता,
सत्य जो यह समझ लेते, वही मृत्युजय कहाते,
तेज उनका शत्रु क्या, शैतान भी न सभाल सकता।
समर प्रागण स्थान उनका खेल या व्यायाम का है।

हिसको के प्रति अहिसा धर्म का अपलाप ही है,
दस्युओ से शान्ति चर्चा अर्थहीन प्रलाप ही है,
मान से धन, प्राण जिसको अधिक प्रिय, वह क्षुद्र कायर।
क्षत्रियो के हेतु कायरता विकटतम पाप ही है।
सिर हथेली पर रखे हो, वही पात्र प्रणाम का है।

सोचने का क्षण नही वह, जब कि हर ली जाय सीता,
युद्ध ही यह तय करेगा, कौन हारा, कौन जीता।
सोचते अति, वृद्धजन, पर राम लक्ष्मण जूझ पडते,
'लडो, जीतो, मर मिटो या', यही कहते वेद, गीता।
जीतना यह चल रहा जो युद्ध 'राम' 'हराम' का है।

युद्ध लंका मे हुआ तब, हो रहा कश्मीर मे अब;
जो विकट राक्षस वहा थे, वही इस तस्वीर मे अब;
बन न यदि हम राम पाये, तो महान अनर्थ होगा,
देश यह फस जायगा फिर से विपद गम्भीर मे तब।
समय आया शौर्य, विक्रम, निष्कपट, निष्काम का है।

देव और विद्वान्

शतपथ ब्राह्मण का एक वाक्य है **'विद्वासो हि देवा:'**। इसका अर्थ है कि देव विद्वान् होते है, वे सब कुछ जानते है, उनसे कुछ छिपा नहीं रहता।

परन्तु कुछ लोगों ने इसका अर्थ कर दिया कि विद्वान् ही देव है, विद्वानो को ही देव समझना चाहिए।

इसका फलितार्थ यह बना कि विद्वानो की पूजा ही देव पूजा है।

संस्कृत की वाक्य रचना ऐसी है कि इस वाक्य के दोनो ही अर्थ निकाले जा सकते है और ये दोनो अर्थ एक दूसरे से नितान्त भिन्न है।

देवों की कल्पना

देवो की कल्पना इस रूप मे की गई है कि वे मनुष्य से ऊची सत्ताए है। वे मनुष्य की अपेक्षा अधिक सामर्थ्य वाले है। बल, बुद्धि और चातुर्य मे वे मनुष्यो से कही अधिक है। साथ ही, वे मनुष्य का हित चाहने वाली सत्ताए है। आपत्काल मे वे मनुष्य की सहायता करते है। वे उसे सत्पथ पर चलने के लिए प्रेरित करते है और कुमार्गगामी लोगो को, असुरो और राक्षसो को दड देते है।

देव या देवता सत् के, अच्छाई के, न्याय और धर्म के पोषक है। जो शक्ति असत्, बुराई, अन्याय या अधर्म की पोषक हो, उसे देव नही कहा जा सकता है।

देव हमारी भली इच्छाओ को पूरा करने मे सहायक होते है। इसी के लिए हम उनसे प्रार्थना करते है, उनकी पूजा करते है।

देवो की कल्पना केवल वेदो, पुराणो या भारतीय साहित्य तक ही सीमित नही है, अपितु यूनानियो, रोमनो और मिस्रवासियो ने भी लगभग इन्द्र, वरुण, सूर्य, बृहस्पति, वायु जैसे देवताओ की कल्पना की थी। लक्ष्मी, सरस्वती की भाति वहा भी देवियो की कल्पना की गई थी। कहने का आशय यह है कि देवो की कल्पना विश्व व्यापिनी है और उस पर विचार करते हुए हमे विश्वभर के लोगो की मान्यताओ को ध्यान मे रखने से सहायता मिलेगी।

देव अधर्म के समर्थक नहीं

ससार के किसी भी भाग मे देवो को अन्याय और अधर्म का समर्थक नही माना गया। रामायण, महाभारत और इलियड तथा ओडीसी मे देवगण पीड़ित, धर्मपरायण पक्ष की सहायता के लिए आते बताये गये हैं।

राक्षस भी तपस्वी साधक

परिश्रम (तप) और अभ्यास (साधना) द्वारा असुर और राक्षस भी शक्ति (सिद्धियां) प्राप्त कर लेते है और अहकार के वशीभूत हो कर सत् मार्ग को छोड कर कुमार्ग पर चल पडते है। रावण ऋषि-मुनियो को सताता है और सीता का अपहरण कर लेता है। उसे इन्द्रजित् और कुम्भकर्ण जैसे समर्थक भी मिल जाते हैं, जो मन में उसे बुरा समझते हुए भी लोक व्यवहार के कारण उसका साथ देते है।

विद्वान् का सत् असत् से सम्बन्ध नहीं

विद्वान् का अर्थ है किसी विषय को जानने वाला, विशेषज्ञ। कोई व्यक्ति व्याकरण का विद्वान् हो सकता है, कोई आयुर्वेद का, कोई ज्योतिर्विज्ञान का, कोई भूगोल का, इतिहास का, पुरातत्व का, युद्धशास्त्र का, धर्मशास्त्र (कानून) का विद्वान् हो सकता है।

विद्वान् आदरणीय है, जब तक वह सत् पथ पर रहे। विद्वान् के लिए यह शर्त नहीं है कि वह धर्म का आचरण करेगा ही। रसायन विज्ञान का, चिकित्सा शास्त्र का, या किसी भी विद्या का विद्वान् मद्यपान करने वाला, अविवेकी और दुराचारी हो सकता है।

धर्म के यम

अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, ये धर्माचरण के महानियम (यम) है। किसी को जानबूझ कर सताओ मत (अहिसा), स्वार्थ साधन के लिए लोभ या भय के कारण असत्य मत बोलो (सत्य), दूसरे की सम्पत्ति को चोरी से या डाके से छीनो मत (अस्तेय), कामवासना के वशीभूत हो कर किसी स्त्री से उसकी इच्छा के विरुद्ध सभोग न करो (ब्रह्मचर्य), और आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति का अन्धाधुन्ध सग्रह मत करो (अपरिग्रह), इन यमो का पालन करने से समाज मे और व्यक्ति के मन मे सुख शान्ति बनी रह सकती है। इसलिए इनका पालन करना हर व्यक्ति का धर्म है।

देव के साथ धर्म का पालन और धर्म का पोषण करने की शर्त है। देव कभी अधर्मी नही हो सकता। जिस क्षण वह अधर्म करेगा, उसी क्षण उसका देवत्व समाप्त हो जायेगा और उसे देवनिवास स्वर्ग से बाहर निकाल दिया जायेगा।

परन्तु विद्वान् के लिए धर्माचरण अनिवार्य नही है। अनेक विद्वान् अधर्माचरण करते है और उससे उनकी विद्वत्ता नष्ट नहीं होती, कम भी नही होती। आज के विद्यालयो के शिक्षक और महाविद्यालयो के प्राध्यापक बीडी, सिगरेट पीते, शराब पीते, गालिया देते और अनेक अनाचार करते है। परन्तु वे अपने विषयो के विशेषज्ञ है। धर्मनिरपेक्ष सरकार उनके दुराचरण की ओर से आखे मूदे रहती है, जब तक कि वह कानून की सीमाओ को ही न लाघ जाये, या किसी विशेष अनाचार के विरुद्ध कोई जन-आन्दोलन ही खडा न हो जाये।

विद्वान् दुराचारी भी हो सकता है

इस प्रकार स्पष्ट है कि विद्वान् किसी भी एक विषय या एक से अधिक विद्याओ के ज्ञान का भडार होता है। उस ज्ञान का उसके सदाचार या दुराचार से कोई सम्बन्ध नही होता। अपने ज्ञान का उपयोग वह लोकहित के बजाय लोकत्रास के लिए भी कर सकता है और करता है। रावण विद्वान् था, आज के अनेक आतकवादी उच्चकोटि के विद्वान् होते है, अपने विषय के विशेषज्ञ होते है। परन्तु अहिसा, सत्य आदि यमो का पालन वे नही करते, इसलिए उनकी गिनती राक्षसो मे होती है। विद्वान् देवगुण सम्पन्न भी हो सकता है और राक्षसगुण सम्पन्न भी।

इसलिए विद्वान् को देव कहना उचित नही है। विद्वान् की पूजा देवपूजा का स्थान नही ले सकती।

विद्वान् की पूजा कौन करेगा?

विद्वानो की पूजा को ही देवपूजा मान लिया जाये, तो अनेक विचित्र परिणाम होगे। विद्वानो की पूजा कौन करेगा? विद्वान् तो करने से रहे। कोई कितना ही छोटा विद्वान् क्यो न हो, दूसरे को अपने से बडा विद्वान् मानने को तैयार नही होता। विद्वानो मे केवल मतभेद ही नही होते, प्राय एक दूसरे की निन्दा और गाली गलौज तक करने की भी प्रवृत्ति होती है। एक जगल मे दो बाघ भले ही रह ले, पर एक समूह मे दो विद्वान् नही रह सकते। जैसे रानी मधुमक्खी उडने मे समर्थ होते ही कुछ सेवक मधुमक्खियो को ले कर उड जाती है और अपना अलग छत्ता बना लेती है, वैसे ही हर कच्चा पक्का विद्वान् अपने अनुयायी जुटा कर अपना अलग गुट या सम्प्रदाय बना लेता है और स्वय को पुजवाने लगता है।

ऐसी दशा मे विद्वान् की पूजा अविद्वान् लोग ही करेगे। उसका परिणाम वही होगा, जो आज हो रहा है और सदा से होता रहा है। जब कोई विद्वान् अपना गुट बना कर प्रसिद्ध हो जाता है, तब धनी लोग उसका लाभ उठाते है। धन से उसकी सेवा करके उसके अनुयायियो को मूडते है। विद्वान् की पूजा करने वाले अविद्वान् धूर्त धनपतियो के शिकार हो जाते है।

विद्वान् बिक जाते है

ये धनपति योजनापूर्वक उक्त विद्वान् का प्रचार करते है। विशाल कथाओ का आयोजन करते है, टी वी चैनलो पर उनके प्रवचन कराते है। अन्त मे इस सबके लिए पैसा अविद्वानो की जेब से ही आता है।

फिर विद्वानो मे होड लगती है कि कौन कितने अविद्वानो को अपनी ओर आकर्षित कर पाता है। सगमर्मर के उपासना स्थल बनते है, वातानुकूलित कमरो वाले और साथ लगे शौचालयो वाले साधना आश्रम बनते है। विद्वानो की पूजा को देवपूजा मान लेने का यह अवश्यभावी परिणाम है।

फिर अखबारो मे खबरे छपती है कि योगी भोगी निकला। योगी योगी बने भी रह जाये, पर उनके तरुण शिष्य उनके अपयश के कारण बनते है। वातानुकूलित भवनो की तपश्चर्या अनर्थकारी सिद्ध होती है।

इसलिए देव और विद्वान् का अन्तर समझ लेना आवश्यक है। विद्वत्ता जब तक देवोचित गुणो से सयुक्त न हो, तब तक वह आदरणीय नही है। वकीलो, डाक्टरो, घर पर पढाने वाले शिक्षको को उनका शुल्क दे कर हम उनकी सेवाए लेते है, परन्तु उनमे से आदर उन्ही का करते है, जो उदारता, सहृदयता, कर्तव्यनिष्ठा आदि गुणो से युक्त होते है। जो इन गुणो से रहित होते है, उन्हे तो काम लेने और शुल्क देने के बाद भी धिक्कारते ही रहते है।

देव विद्वान् से कई सीढी ऊपर है।

निराला है यह देश!

तमिलनाडु की मुख्यमत्री सुश्री जयललिता को उच्चतम न्यायालय ने मुख्यमत्री पद पर तब तक रहने के अयोग्य घोषित कर दिया, जब तक कि न्यायालय उन्हे दोषमुक्त न कर दे। जयललिता ने मुख्यमत्री पद त्याग दिया। इससे उनके भक्त इतने दुखी हुए कि तेरह व्यक्तियो ने अलग अलग स्थानो पर आत्मदाह कर लिया। उन्होने इस बात पर तनिक भी ध्यान नही दिया कि न्यायालय ने उन्हे दो मामलो मे भ्रष्टाचार का दोषी पाया है। उन्होने यह भी प्रतीक्षा नही की कि अपील मे न्यायालय उन्हे दोषमुक्त भी कर सकता है और वह फिर मुख्यमन्त्री बन सकती हैं।

शौर्य का महापर्व—दशहरा

❑ श्रीमती सुनीति

हिन्दुओ के तीन सबसे बडे पर्व है दशहरा, दीवाली, और होली। दशहरा और दीवाली शीत ऋतु आरम्भ होते समय आते है और होली शीत ऋतु की समाप्ति पर।

दशहरा मुख्य रूप से क्षत्रियो का, योद्धाओ का पर्व है। प्राचीन काल मे वर्षा ऋतु की समाप्ति पर राजा लोग पास पडौस के राज्यो को जीतने और उनसे कर वसूल करने के लिए निकलते थे। इसी को दिग्विजय भी कहा जाता था। निश्चय ही यह अहिसक कर्म नहीं था। परन्तु मनुष्य अहिसक रहा कब है?

कहा जाता है कि राम ने राक्षसो के राजा रावण का वध दशहरे के दिन किया था। इसलिए दशहरे को राष्ट्रीय विजय के रूप मे मनाया जाता है।

रामायण की प्यारी कहानी

दशहरे की, रामायण की कहानी बहुत प्यारी है। अयोध्या के राजा दशरथ की तीन रानिया थी। बडी रानी कौशल्या के पुत्र राम थे, सुमित्रा के लक्ष्मण और शत्रुघ्न, केकयी के पुत्र थे भरत।

राम सबसे बडे थे इसलिए राजा ने उनका राज्याभिषेक करने का निश्चय किया। सब तैयारिया हो गई। अचानक रानी केकयी ने हठ किया कि उसके पुत्र भरत को राजा बनाया जाये। राम भरत के विरुद्ध कुछ षड्यत्र न कर सके, इसलिए उन्हे चौदह वर्ष के लिए वन भेजा जाये।

राजा दशरथ केकयी के इस विचार से दुखी हुए, परन्तु वह पहले कभी वचन दे चुके थे, इसलिए कुछ कह-कर न सके।

बनवास भी प्रिय

राम ने यह सब सुना तो प्रसन्न हो कर बोले 'ठीक तो है। भरत कुछ दिन राज करे, मैं जगल मे भ्रमण का आनन्द लूगा।'

उनकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण भी उनके साथ बन चले गये। राम के बन जाने से दशरथ को इतना दुख हुआ कि उन्होंने प्राण त्याग दिये।

उस समय भरत अपने नाना के घर गये हुए थे। लौट कर आये तो सब कुछ जान कर बहुत दुखी हुए। मा केकयी से बहुत कुछ कहा सुना और राम को वापस लौटा लाने के लिए उनके पीछे वन गये।

राम ने वापस लौटना स्वीकार नहीं किया। तब भरत उनकी चप्पले ले आये और उन्हें राजसिंहासन पर रख कर राम के प्रतिनिधि के रूप में राजकाज चलाने लगे।

राक्षसों का बोलबाला

उधर राम दक्षिण भारत की ओर चले गये। वहां लंकापति रावण के सेनाध्यक्ष धीरे धीरे पाव पसार रहे थे और स्थानीय निवासियो को सता रहे थे। लोगो ने राम से गुहार की, तो राम ने कुछ राक्षस योद्धाओ को ठिकाने लगा दिया। इससे राक्षसराज रावण से उनका वैर ठन गया।

इस वैर के शान्त होने का एक सरल उपाय भी सामने आया। रावण की बहिन शूर्पनखा राम पर मोहित हो गई। उसने राम से विवाह का प्रस्ताव किया। पिता ने तीन विवाह किये थे। राम भी दो तो कर ही सकते थे। पर उन्होने शूर्पनखा का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। उन्होने कहा 'हमारी तुम्हारी सस्कृति अलग है। तुम्हारी मेरी पटरी बैठेगी नही।'

शूर्पनखा ने कहा 'मै तुम्हे अयोध्या का राज्य दिलवा दूगी।'

'वह तो भरत स्वय ही मुझे दे रहा था', राम ने उत्तर दिया।

सीता आनन्द का स्रोत

राम सीता से बहुत प्रभावित थे। वह मेहनती लडकी किसी तरह थकती ही नही थी। जगल की झोपडी मे आनन्द की फुहारे उडाती रहती थी। किसी से किसी बात की कोई शिकायत नहीं।

रावण ने राम के हाथो अपने सैनिको के वध को भी शान्ति से सहन नहीं किया था, पर राम ने उसकी बहिन द्वारा किये गये विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, इसे उसने अपना अपमान माना।

बदला लेने के लिए उसने सीता का अपहरण कर लिया। नकली सोने के हिरण का प्रलोभन दिखा कर उसने राम और लक्ष्मण को कुटिया से हटा दिया और जब सीता अकेली रह गई, तब भिखारी साधु का वेश बना कर उसे ले भागा।

सीता राम की जान

सीता राम की जान थी। वह उनकी कुटिया की श्री (शोभा) थी, लक्ष्मी थी; अन्नपूर्णा थी, हास, विलास, सुख, समृद्धि सभी कुछ वह थी। उसका छिन जाना किसी प्रकार सह्य नहीं था। जैसे भी हो, उसे पुन प्राप्त करना था।

पता चल गया कि रावण ने सीता का हरण किया है। जटायु ने बताया, जो सीता को बचाने के प्रयत्न में रावण से लडते हुए घायल हुआ था।

दुर्बल का साथ दिया

बालि और सुग्रीव, दो भाई वानर राजो में कलह था। बालि अधिक शक्तिशाली था। राम उसकी सहायता करते, तो वह रावण से सीता को ला कर राम के हवाले कर देता। परन्तु राम ने दुर्बल सुग्रीव की सहायता की और बालि को मार कर सुग्रीव को राजा बनाया।

सुग्रीव के इशारे पर राम की सहायता के लिए वानरो और रीछो की विशाल सेना एकत्र हो गई। लका पर चढ़ाई की गई। समुद्र पर रामेश्वर के पास पुल बनाया गया।

रावण के सभी कुटुम्बियो ने उसका साथ दिया, परन्तु भाई विभीषण ने उसे समझाया कि सीता राम को लौटा दो। जब वह न माना, तब विभीषण रावण को छोड कर राम से आ मिला। इससे रावण का पक्ष दुर्बल हो गया।

रावण ने सीता से कहा कि वह उसकी रानी बन जाये और लका मे सुख से रहे। परन्तु सीता को राम की तुलना मे हर कोई तुच्छ प्रतीत होता था। उसने दृढता से इन्कार कर दिया। रावण बहुत क्रुद्ध हुआ। पर उस युग के राक्षस भी आज के मनुष्यो से अच्छे थे और स्त्रियो पर हाथ नही उठाते थे।

चेतावनी

राम ने बालि के पुत्र अगद को दूत बना कर रावण के पास भेजा। बालि ने कभी रावण को हराया था। अगद ने रावण को समझाया कि युद्ध मत करो और सीता राम को लौटा दो।

रावण ने उसकी बात नही मानी। तब युद्ध हुआ। युद्ध में कुम्भकर्ण, मेघनाद आदि बडे बड़े राक्षस योद्धा मारे गये। तब रावण युद्ध में स्वयं उतरा। उसने लक्ष्मण पर भाला चलाया, जिससे वह अचेत हो गये। तब सुषेण वैद्य ने गन्धमादन पर्वत से सजीवनी बूटी मगा कर लक्ष्मण की चिकित्सा की। लक्ष्मण को मानो फिर नया जीवन मिला।

आमने सामने की लडाई मे राम ने रावण को मार डाला। राम सीता को साथ ले कर अयोध्या लौट आये। इस विजय की याद मे दशहरा पर्व मनाया जाता है। सभी छोटे बडे शहरो और गावो तक मे दस दिन तक रामलीलाए होती है, जिनमे रामायण का अभिनय किया जाता है। दसवे दिन शाम के समय रावण, कुम्भकर्ण और मेघनाद की बांस और कागज से बनी विशाल प्रतिमाए फूकी जाती है, जिनमे आतिशबाजी के पटाखे रखे होते है। छोटे बडे, सभी उत्साह से इस रावण दहन को देखने जाते है और इस बात की शिक्षा लेते है कि हमे राम जैसा बनना चाहिए, रावण जैसा नही।

२७, राजपुर रोड, दिल्ली-११००५४

त्याग और संचय

❑ पंडित वेदप्रकाश शास्त्री

एक बार गुरु और शिष्य वन मे विचरण कर रहे थे। चलते हुए उन दोनो मे विचार बिमर्श हो रहा था। गुरु का कथन था— 'त्याग मे ही सुख है, आनन्द है।' शिष्य का विश्वास था — 'सचय मे ही सुख की प्राप्ति है।'

दोनो ही अपने अपने कथन पर दृढ़ थे। यह निर्णय होना कठिन था कि वस्तुतः सुख किसमें है? दोनो के अपने अपने तर्क थे, युक्तिया थीं। शिष्य को गुरु की बात पर विश्वास न होता था।

दोनो का सवाद चल रहा था। इसी बीच सूर्यास्त हो गया। अंधेरा फैलने लगा। वन्य जीव-जन्तुओ की डरावनी आवाजे आने लगीं। चलते चलते नदी आ गई। जलधारा बड़ी तीव्र गति से बह रही थी। पार करना कठिन काम था। नौका थी। नाविक चलने को तैयार।

गुरुजी त्यागी थे। अत. उनके पास पैसे न थे। दें तो क्या दे? कहां से दें? शिष्य संचयी था। पैसे खर्चने से सकोच करता था। अब समस्या यह थी कि पैसे कौन दे? इसी उधेडबुन में घना अंधेरा हो गया। नाविक घर जाने को तैयार था। अत बोला 'यदि चलना है तो जल्दी करे' वरना मै जा रहा हू।'

यह सुनकर शिष्य घबरा गया। सोचने लगा— रात्रि मे कहीं शेर न आ जाय। चीता, भेडिया, बाघ, सांप न जाने कितने भयकर जीव-जन्तु हैं? कहीं खा गए तो? डरते हुए उसने पैसे निकाले। अपने और गुरु जी के पैसे दिए। इस प्रकार दोनो नदी पार कर गए।

नौका से उतरने के पश्चात् शिष्य बोला 'गुरुदेव, मैं सत्य ही कहता था कि सचय में ही सुख है। यदि पैसे सचित न होते, तो कैसे पार करते?'

गुरु . 'वत्स, जब तक तुमने पैसे सचित रखे तब तक नदी के उस पार ही खडे रहे। जब पैसों का त्याग किया अर्थात् नाविक को दिए, तभी नदी पार कर सके। यदि त्याग न करते तो यहा तक कैसे पहुचते? अतः त्याग में ही सुख है।'

शिष्य गुरु के सम्मुख नतमस्तक हो कर बोला : 'गुरुदेव, आप धन्य है।'

फाज़िल्का (पंजाब)

"जब कोई कार्य सामूहिक शक्ति से उत्पन्न होता है,
तो वह उसी समूह के समर्थन से सम्पूर्ण हो जाता है।"

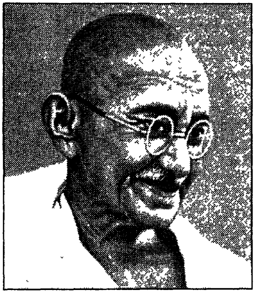

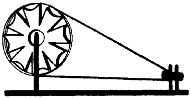

राष्ट्रपिता के 132वें जन्मदिवस पर दिल्ली सरकार, **'भागीदारी'**, में हिस्सा लेने और इसे समर्थन देने के लिए दिल्ली के नागरिकों की सराहना करती है। यह एक ऐसा आन्दोलन है जिससे हमने जाना है कि एक जिम्मेदार नागरिक होने का सही अर्थ, साथ मिलकर काम करना है। आइए इस शुभ दिवस पर अपनी दिल्ली को बेहतर शहर बनाने के लिए फिर से प्रतिज्ञा लें। हमारे इन कार्यों से महात्मा की विचारधारा जीवित रहेगी और हमें प्रेरित करती रहेगी।

श्रीमती शीला दीक्षित
माननीया मुख्यमंत्री दिल्ली

भागीदारी
नागरिक-सरकार साझेदारी

दिल्ली
सरकार

मेरी दिल्ली
मैं ही सवारूं

DIP/1804/2001

पं० मदनमोहन मालवीय सम्मान

भगवान् बुद्ध के ज्ञान से मडित एव मडन मिश्र की तार्किक बुद्धि से आप्लावित बिहार प्रान्त से होकर बहने वाली गडक नदी की गोद मे बसा मुजफ्फरपुर नगर का एक आदर्श शिक्षण सस्थान है—डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, जो शहर से मात्र तीन किलोमीटर की दूरी पर दरभगा रोड पर अवस्थित है।

इस विद्यालय के छात्र छात्राए अन्तर जिला एव राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओ मे सम्मिलित हो कर सम्मानित होते रहे है। विद्यालय ने गत वर्षो में अन्तर जिला खेलकूद प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त कर अपना मान बढाया है।

शैक्षणिक वातावरण की उत्कृष्टता इसी से आकी जा सकती है कि पिछले कई वर्षो से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित दसवी एव बारहवी कक्षाओ की परीक्षाओ का परिणाम जिले भर मे अव्वल रहा है।

इन सारी उपलब्धियो को देखते हुए नगर की एक सस्था "युग सृजन" ने डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, दरभगा रोड, मुजफ्फरपुर को जिले का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय घोषित करते हुए शिक्षक दिवस ५ सितम्बर सन् २००१ को इस विद्यालय के प्राचार्य श्री विजयसिह ठाकुर को "प० मदनमोहन मालवीय सम्मान" से सम्मानित किया है।

इस विद्यालय को आचलिक महात्मा हमराज आर्य खेलकूद प्रतियोगिता मे १९९८-९९ मे द्वितीय एव १९९९-२००० मे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था।

●●●

भारतीय राजनीति की भयंकर भूल—सद्गुण विकृति

❑ डा० चन्द्रशेखर लोखण्डे विद्याभास्कर

सद्गुण विकृति का अर्थ है सद्गुणो को बिगाड देना, भली चीज़ को बुरा रूप दे देना। गीता मे देवो और असुरो के लक्षण बताते हुए भगवान् श्रीकृष्ण ने देवो के सत्य, अहिसा, सयम, दया, सौहार्द, अक्रोध, त्याग, मार्दव, अपरिग्रह इत्यादि सद्गुणो का विस्तार से वर्णन किया है। इन सद्गुणो का उपयोग व्यवहार मे हो, तो वह सस्कृति बनती है। लेकिन इसका प्रयोग शत्रु के साथ उसी तरह किया जाता हो, जो मित्रो के साथ किया जाता है, तो वही विकृति बन जाती है। उसे ही सद्गुण विकृति कहते है।

श्री मुशर्रफ का आतिथ्य अनुचित

पाकिस्तान के स्वयघोषित राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ की आवभगत जिस तरह से वाजपेयी सरकार ने की, वह एक सद्गुण विकृति का ही उदाहरण है। लाहौर बस यात्रा के परिणामो को जान कर भी वाजपेयी दूसरी बार फिर धोखा खा गये। मुशर्रफ के स्वागत से ऐसा लगता है कि वाजपेयी शान्ति के लिए अत्यधिक आतुर हो गये थे। बिल क्लिटन का स्वागत भी मुशर्रफ के आगे फीका पड गया था। बाद मे श्री वाजपेयी ने "मुशर्रफ जैसा मेहमान ही हमारे नसीब मे लिखा था" यह कहकर अफसोस प्रकट किया था। लेकिन न धोखा खाने की परम्परा हिन्दुस्तान कितनी सदियो तक निभाता रहेगा? दुनिया के इतिहास मे धोखा खाने का रिकार्ड यदि तोडा है, तो भारतवर्ष ने तोडा है। नोबेल पुरस्कार से भी कोई बडा पुरस्कार हो, तो वह भारत को मिलना चाहिए।

लुटेरों का स्वागत

इतिहास मे जाये, तो हिन्दुस्तान के राजाओ और माडलिको ने भी चोरों, लुटेरो और डाकुओ का इसी तरह से इस देश मे स्वागत किया था। चगेज खा, जिसकी कब्र ब्रिटिश पुरातत्वविदो ने ढूढ निकालने का दावा अभी अभी किया है, ने भी १००-५० लुटेरो के साथ आ कर देश मे लूटमार की थी तथा हम हाथ मलते रह गये थे। महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी तथा बाबर आदि मुस्लिम शासको को इसी तरह आपस मे लड रहे राजाओ ने सहायता दी थी। वे ही बाद मे यहा के शासक बन गये।

राजा हरिश्चन्द्र और श्री नेहरू

यह सद्गुण विकृति प्राचीन काल से हमारी नस नस मे रमी चली आ रही है। इसी सद्गुण विकृति के कारण सत्युग मे राजा हरिश्चन्द्र ने स्वप्न मे दान दिया। राजपाट वास्तविकता मे दूसरो के हाथो सौप दिया। वस्तुत वैयक्तिक आदर्श की स्थापना के लिए किया गया त्याग प्रजा के हित मे हो, यह कुछ आवश्यक नही है। प्रजा और समाज के कल्याण के लिए किया गया कोई भी कार्य या त्याग हो, वही सही अर्थों मे त्याग हो सकता है।

पडित जवाहरलाल नेहरू का पाक अधिकृत कश्मीर का त्याग उनके आदर्शो की ऊचाई हो सकती है, लेकिन राजनीतिक दृष्टि और प्रजा के हित की बात जहा आती है वह त्याग न हो कर सद्गुण विकृति ही होगी। सत्युग मे राजा हरिश्चन्द्र का त्याग और कलियुग मे प० जवाहरलाल नेहरू का पाकिस्तान और कश्मीर का दान, ये सद्गुण विकृति के दो उत्कृष्ट नमूने है। अपने ऊचे आदर्शों की स्थापना के लिए किया गया त्याग राजनीतिक जीवन मे कोई मायने नही रखता। राजा हरिश्चन्द्र ने अपना राज्य विश्वामित्र को दिया था, वह उतनी बुरी बात नहीं थी, अगर यही राज्य किसी शत्रु राजा ने माग लिया होता, तो राजनीति का इससे बड़ा मखौल और कोई नही होता।

गोरी को क्षमा दान

इस तरह की सद्गुण विकृतिया पाच हजार वर्षो से फेर बदल कर हिन्दुस्तान मे होती रही है। और उसका क्रम आज भी जारी है। मुहम्मद गौरी को सत्रह बार परास्त कर उसे दया और क्षमा की भीख दे कर छोड देना प्रजाहित और राजनीति की किस श्रेणी मे आता है?

उस सद्गुण विकृति का परिणाम पृथ्वीराज चौहान को किस तरह भोगना पडा यह इतिहास जानता है। हिन्दू राजाओ की सज्जन विकृति का यह निकृष्ट परिणाम कहा जा सकता है।

श्रीकृष्ण की नीति

इस विकृति को सबसे पहले भगवान् श्रीकृष्ण ने महाभारत मे हेय समझा। रथ का पहिया कीचड मे धसने के बाद जब महारथी कर्ण उसे निकालने की कोशिश करता है, तब श्रीकृष्ण अर्जुन को आदेश देते है 'यही मौका है अर्जुन चलाओ बाण'' तब कर्ण कहता है भगवन्, यह तो अधर्म है।' तब राजनीति पारगत भगवान् श्रीकृष्ण कहते है 'धर्म दो जगहो पर अलग अलग नहीं हो सकता। द्रौपदी के वस्त्र हरण के समय तुम्हारा धर्म कहा चला गया था? अभिमन्यु को सात सात महारथियो ने मिल कर मारा था, उस समय तुम्हारा धर्म कहा खो गया था? यदि तुम अधर्म का सहारा ले सकते हो, तो दूसरो से धर्म की अपेक्षा कैसे कर सकते हो?' यह थी राजनीति की सही तस्वीर।

वैदिक राष्ट्रवाद

वैदिक राष्ट्रवाद की सकल्पना श्रीकृष्ण की राजनीतिक संकल्पना से अलग नही है। शत्रुओ और राक्षसो के विनाश की परिकल्पना वेदो मे इसी तरह प्रकट की गई है। अनेक ऋचाओ के द्वारा शत्रुओ का समूल नाश किस तरह किया जाना चाहिए, यह तो बतलाया ही गया है, साथ ही प्रजा की रक्षा न कर पाने वाले राजा को पदच्युत कर देना चाहिए, यह भी कहा गया है।

अरक्षितार राजन जह्यात्।

राजा हरिश्चन्द्र और पडित जवाहर लाल नेहरू की सद्गुण विकृति वेदो की राजनीति मे कहा बैठती है, यह देखने योग्य बात है। श्रीकृष्ण वेदो के ज्ञाता थे। उन्होने वेदो के राष्ट्रवाद को महाभारत के युद्ध मे क्रियान्वित किया था। उसे व्यवहार रूप मे लाया था। वे पाडवो के द्वारा वेदो का सार्वभौमिक राष्ट्रवाद आर्यावर्त मे लाना चाहते थे। वैदिक राष्ट्रवाद की परम्परा वेदो से महाभारत के युद्ध काल तक चली आयी थी। वैदिक राजनीति का महाभारत मे बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। परन्तु महाभारत के युद्ध के पश्चात् उदारता का जो युग चला वह वेदकालीन राज्य व्यवस्था मे सुतरा दिखाई नही देता। वैदिककालीन राजा स्वय तो शत्रुओ का नाश करते ही थे, पर देवो को उसके लिए प्रेरित भी करते थे। उनके स्तवन राक्षसो के नाश के लिए होते थे।

अति विश्वास अनुचित

मध्ययुग तथा उससे पूर्व पौराणिक युग में हिन्दू राजाओ के ह्रास का कारण शत्रु पर अति विश्वास तथा उदारता की पराकाष्ठा थी, जो राजनीति के अनुसार निन्दनीय है। गुण मूलत अपने आप मे स्थिर भाव को लिये हुए है। उसका सत् वा असत् रूप हेतु, प्रमाण, और संदर्भानुसार प्रकट होता है। अत उस गुण का किस अर्थ मे प्रयोग किया जाय, यह उस व्यक्ति पर निर्भर है। किसान और कसाई दोनो ही गाय को रस्सी से बाध कर ले जाते है, दोनो के साथ सज्जनता का व्यवहार करना सद्गुण विकृति कहलाता है। लेकिन नीयत को पहचान कर यथायोग्य व्यवहार करना सद्गुण सस्कृति मे आता है।

मुशर्रफ अटल जी से चतुर

भारत सरकार ने जनरल मुशर्रफ जैसे अविश्वसनीय व्यक्ति पर ४४ करोड रुपये खर्च कर देश का कौन सा हित किया है? अयोग्य व्यक्ति को काबिल बना कर सिर्फ भारत और पाकिस्तान मे ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व मे उसकी प्रतिष्ठा बढाई है। भारत से बातचीत करने के लिए राजी होने के कारण जनरल मुशर्रफ का खुद के पाकिस्तान मे विरोध प्रारम्भ हो गया था, लेकिन इस शिखर वार्ता परिषद् के बाद मुशर्रफ के विरोध की सुलगती आग अब ठडी हो गयी है। जनरल मुशर्रफ वाजपेयी के सामने घाघ निकले। उन्होने शिखर बैठक का जो भी लाभ उठाना चाहिए था, उठा लिया। उनके सामने हमारे प्रधानमत्री सद्गुणो की प्रतिमूर्ति दिखाई दिये। यह सत्य है कि श्री वाजपेयी जी ने निष्कपट व्यवहार कर अपनी व्यक्तिगत और भारतीय सस्कृति के अनुकूल आचरण किया, परन्तु हेतु प्रमाण, सन्दर्भ और समय सूचकता मे धोखा खा गये, जो हिन्दुस्तान मे चली आ रही पाच हजार सालो की सद्गुण विकृति की परम्परा मे एक और कडी है।

सीताराम नगर, लातूर-४१३५३१
(महाराष्ट्र)

आर्य समाज

❑ श्री मैथिलीशरण गुप्त

आर्य समाज, आर्य समाज!
आर्य भूमि का अरुणोदय सा
उठा उष्ण तू सज कर साज।
अन्धकार था चारो ओर,
घर मे शोर मचाया घोर,
सोते स्वजनो को धिक्कार
जगा दिया ठोकर तक मार,
कि हो प्राप्त भय का परिहार।
अलस, प्रमादी, अवसादी,
हम थे सोने के आदी,
जागा तू भैरववादी।
लगे विवादी भी कुछ स्वर,
पर हम चौक उठे सत्वर,
उतरा कुछ तो तन्द्रक ज्वर।
किया क्या तूने खडन मात्र?
स्वय तू था मडन का पात्र।
गये गुरुकुल में पढने छात्र।
हुई नि शुल्क शिक्षा,
बढे अब वह तितिक्ष।
हिन्दू मानस महाराष्ट्र, तू
धरे राष्ट्रभाषा की लाज।
आर्य समाज! आर्य समाज।
प्रभु की परम दया है तुझ पर,
आ, आनन्द मना तू आज!
शोक न कर, तू कर अभिमान,
कर निज वेद-विजय-रस पान।
किया वीर, तूने बलिदान।
विधर्मियो से घर की फूट
करा रही थी अपनी लूट,
तू सतर्क हो उठा अटूट।
राम ने रक्खी तेरी रेख,
न मुह फेरा तूने भय देख,
लिखा निज शोणित से यह लेख,
'कृणुध्वं विश्वमार्यम्'
जयति कृत बुद्धि कार्यम्।
शुद्धि वितान तले श्रद्धा का
दान दिया तूने द्विजराज।
आर्य समाज, आर्य समाज!

नैतिकता की राजनीति या राजनीति की नैतिकता?

□ श्री रामगोपाल

सेवा कार्य या व्यवसाय?

मई २००१ मे सम्पन्न तमिलनाडु विधान सभा चुनावो के बाद न्यायालय द्वारा तीन वर्ष के कठोर कारावास से दडित सुश्री जयललिता के मुख्यमत्री बनने के बाद से प्रतिदिन राजनीति मे गिरती जाती नैतिकता का रोना रोया जा रहा है। कहा जा रहा है कि "राजनीति एक मिशन की जगह धधा बन गई है।" सच तो यह है कि वेश्यावृत्ति की तरह राजनीति भी सदा से धधे के ही रूप मे चली आ रही है। प्राचीन सस्कृत साहित्य मे इसे वाराङ्गना, यानी वेश्या की ही उपमा दी गई है। इसमे सामान्य रूप मे प्रचलित नैतिकता का स्वरूप ढूढना ऐसा ही है, जैसे वेश्यालय मे पातिव्रत्य ढूढना।

प्राचीन काल मे राजनीति का धधा राजपुरुषो (राजघरानो) तक सीमित था। प्रजातत्र ने इसे सबके लिए खोल दिया है। भगवान् शिव ने अपने तीसरे नेत्र से अपनी तपस्या भग करने वाले कामदेव को भस्म कर दिया था। किन्तु कामदेव की पत्नी रति के विलाप से द्रवित हो कर शिवजी ने वर दिया 'देवी, मै तुम्हारे पति को शरीर रूप मे दुबारा तो नहीं ला सकता, किन्तु यह वर देता हू कि अशरीरी होकर सबके हृदयो मे वास करेगा।' ऐसे ही राजनीति की आकाक्षा कलियुग मे, किसी न किसी रूप मे, प्रत्येक हृदय मे निवास करती है।

अनैतिकता ही कौशल

राजनीति के अपने ही अलग प्रकार के तर्क-कुतर्क, भाषाए, और परिभाषाए होती है। जीवन के अन्य क्षेत्रो या व्यवसायो मे जिन्हे भ्रष्टाचार या अनैतिकता माना जाता है, उन्ही व्यवहारो को राजनीति के मान्य दाव पेच जाना जाता है। इसलिए राजनीति का धधा जहा सर्वाधिक लाभ पहुचाता है, वही उल्टा पड़ने पर सर्वाधिक प्राणलेवा भी है। इस्लामी शास्त्रवेत्ता तो कहते ही है कि राजनीति मे दो ही सम्भावनाए होती है— तख्त (राजगद्दी) या तख्ता (फासी, प्राणदण्ड)। साधु अथवा फकीर के वेश मे रहते हुए गाधी जी ने एकहजार साल की गुलामी मे कराहती जनता को 'राम-राज्य' अथवा नैतिकतावादी राजनीति, सुराज और स्वराज के सपने दिये थे। वे न सच होने थे, न हुए।

उन भ्रमो से जनता उबर रही है। वह देख रही है कि प्रत्येक राजनीतिक दल दूसरे दल अथवा दलों को भ्रष्ट करार देता है और सत्ता पर बैठते ही वही सब करता है, जो सत्ता से बाहर जाने वाला दल करता था। सो, अधिकांश लोग उन प्रत्याशियों को मत देने लगे है, जो स्वय खाये कमाये और उन्हे भी खाने कमाने दे, उन्हे नही, जो न खाये, न खाने दे, या जो स्वय तो खाये, पर जनता को सयम और सदाचार का पाठ पढाये।

गांधी जी राजनीतिक प्राणी थे

एक कडवा सच यह भी है कि नैतिकता की दुहाई देने वाले गाधी जी स्वय एक राजनीतिक प्राणी थे। उनका सत्य राजनीतिक सत्य था, उनकी अहिसा राजनीतिक अहिसा थी, उनकी सादगी और नैतिकता भी राजनीतिक थी। सन् १९३४ मे काग्रेसजनो मे व्याप्त भ्रष्टाचार और दोगलेपन के कारण गाधी जी ने काग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया था, लेकिन क्या गाधी जी काग्रेस से अलग हो पाये? नही। उल्टे, काग्रेस पर उनकी पकड और कठोर हो गई। उनके सादे जीवन के बारे मे काग्रेसनेत्री श्रीमती सरोजिनी नायडू की यह सुप्रसिद्ध टीका गाधी जी की राजनीतिक नैतिकता की अच्छी परिचायक है। उन्होने कहा था 'इन (गाधी) महाशय को पता ही नही कि इन्हे गरीब (धोती लगोटी के कारण) दिखाने के लिए काग्रेस को कितना खर्च करना पडता है।'

तीसरे दर्जे में यात्रा

एक बार मुस्लिम लीग के अध्यक्ष श्री मुहम्मद अली जिन्ना से उनके एक निकट के सहयोगी ने कहा 'श्रीमन् गाधी जी रेलगाडी के तीसरे दर्जे मे सफर करते है और आप पहले दर्जे मे। यदि आप भी तीसरे दर्जे मे सफर करे, तो आप भी गाधी की तरह लोकप्रियता प्राप्त कर सकते है।' जिन्ना ने कहा आप समझते नही। मै पहले दर्जे का टिकट जरूर लेता हू, लेकिन सिर्फ एक। उधर गाधी के लिए तीसरे दर्जे की पूरी बोगी ली जाती है, जिसकी लागत पहले दर्जे के एक टिकट से बीस गुना होती है।

गांधी जी की कथनी और करनी मे अन्तर के कई उदाहरण है, जिनमे से आम लोगो को केवल एक की जानकारी है। वह यह कि गाधी जी अन्तिम समय तक यह कहते रहे कि 'पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा', लेकिन पाकिस्तान बन गया और गाधी जी भी जीवित रहे। पाकिस्तान बनने के पाच महीने बाद, जनवरी १९४८ मे उन्होने पाकिस्तान के विरुद्ध नही, बल्कि पाकिस्तान को ५५ करोड रुपये दिलाने के लिए आमरण अनशन किया था। वे पाकिस्तान से हिन्दुओ का पलायन तो रुकवा न सके, पर भारत से मुसलमानो का पलायन रोकने मे वे अवश्य सफल हुए, यद्यपि इसी प्रयत्न मे उनका आत्म बलिदान भी हो गया। परिणाम यह है कि पाकिस्तान से अधिक मुसलमान भारत मे हैं। उधर पाकिस्तान मे हिन्दू जनसख्या लगभग न के बराबर है। तिस पर भी राजनीतिक प्रचार की महिमा है कि ससार मे चर्चा यह होती है कि भारत मे मुसलमानो तथा अन्य अल्पसख्यको पर घोर अत्याचार हो रहे है। सचाई यह है कि सन् १९४७ मे जहा मुस्लिम जनसख्या खडित भारत मे ९ प्रतिशत रह गई थी वह आज (सन् १९९१ मे) बढ कर १२ प्रतिशत हो गई। उसी अनुपात मे हिन्दू जनसख्या घटी है। भारत सरकार विदेशो मे फैले झूठ का निराकरण करने का कोई प्रयत्न नही कर रही। यह भी राजनीतिक मजबूरी है।

छवि बनाने को पागल

हिन्दू राष्ट्र अथवा हिन्दू समाज का सबसे बडा दुर्भाग्य यही है कि पिछले सौ वर्षो मे इसके सर्वाधिक पूज्य नेता महात्मा (मोहनदास कर्मचन्द) गाधी और जवाहरलाल नेहरू अपने ही हित, अपनी ही छवि, मे भारत के हित और भारत की छवि देखते थे जबकि सच्चा राष्ट्रभक्त, देशभक्त या समाज सेवक राष्ट्र या समाज के हित मे ही अपना हित देखता है। यह सत्य और तथ्य, धोखा खाने के ५४ वर्ष बाद भी, कुछ ही बुद्धिजीवियो की समझ मे आ रहा है। जब तक यह ७० प्रतिशत लोगो की समझ मे नहीं आता, देश के दुर्भाग्य को रोकना असभव है।

प्रजातत्र का सबसे बडा गुण या दोष यही है कि राज्य और राजनीति की अच्छाई या बुराई की सारी जिम्मेदारी वोट देने वाली जनता की होती है। भुगतना भी उसे ही होता है। इसीलिए कहा जाता है कि जागरूक जनता ही प्रजातत्र की रक्षा कर सकती है। यदि जनता जागरूक नही है, तो उसे राजनेताओ के हाथो धोखे खाते ही जाना है। एक पक्ष को दूसरे पक्ष से लडाना, यह राजनेताओ का सबसे पुराना खेल भी है, हथियार भी। हिन्दू नेताओ (चाहे राजनीति मे अथवा समाज मे) का एक और गुण (या दुर्गुण) यह भी है कि वे व्यक्तिगत छवि के आगे न समाज की, न राष्ट्र की परवाह करते है। भारत के वर्तमान प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी इसके अपवाद नही है। सन् १९७७ मे पहली बार जब वे भारत के विदेश मत्री बने थे, तभी से उनका पाकिस्तान के प्रति मोह ऐसा ही बना हुआ है जैसा गाधी जी का, जवाहरलाल के प्रति था। इस मनस्थिति को एक उर्दू कवि ने इन शब्दो मे व्यक्त किया है

रोज़ कहता हू न उस कूचे मे रखूगा फिर कदम,

रोज़ उस कूचे मे इक काम निकल आता है।

ए-२बी/९४-ए, एकता अपार्टमेट,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

चरैवेति चरैवेति

□ श्री विजय गुप्त कौशिक

मजिल तेरे खडी सामने, पग क्यो डगमग डोल रहे है?
राही, मनु का अमर पुत्र तू, पथ केवल अवसान नही है।
ऊषा की रक्तिम चादर से,
अभी सूर्य ने मुह खोला है।
कोटि कोटि कण्टकाकीर्ण सा,
दीर्घ ध्येय लख मन डोला है।
नभ का विस्तृत पन्थ शेष है, प्रथम चरण परिणाम नही है।
नभ के ऊचे घन लखने से,
भूतल की चिर प्यास न बुझती।
बिना कर्म के निरी कल्पना,
घोर निराशा मे ही पलती।
मन मोदक का भोग लगाना कर्मवीर का काम नही है।
सघन मेघ का वक्ष चीर जब,
बिजली से तुम चमक उठोगे।
खोजोगे पथ बाधाओ मे,
घोर निशा मे दमक उठोगे।
बढे चलो ओ शूर साहसी, वीरो को विधि वाम नहीं है।
अतल उदधि की तुग तरगे,
नौका से आ-आ टकरातीं।
धैर्यवान नाविक के कर की,
पतवारे तक भी कप जातीं।
फिर भी पार पहुचते नाविक भय से उनको काम नही है।
पन्थ पन्थ है राही जब तक,
उसमे अपना पग रखता है।
जब तक उसको पार न कर ले,
तब तक जन मन भय डसता है।
कष्ट कसौटी बिना कसे ही सुखमय सुर का धाम नहीं है।

—'गीत गुजन' से

निरंजनपुरी, रामघाट रोड, अलीगढ (उ० प्र०)

हिन्द महासागर का मोती : मारिशस एक वैदिक प्रचारक के संस्मरण

(गताक से आगे)

❑ डा० भवानीलाल भारतीय

मारिशस मे मानव के बसने का इतिहास अधिक पुराना नही है। कुछ शताब्दियो पहले यह द्वीप सर्वथा जनशून्य था, जहा प्रकृति का वैभव तो प्रसरित था, किन्तु प्राणिजगत् के नाम पर हरिण, बदर, खरगोश, निर्विष साप तथा कुछ पक्षियो की प्रजातिया ही थी। अरब नाविक इधर से गुजरते तो थे, किन्तु उन्हे इस टापू मे कोई आकर्षण दिखाई नही दिया। कालान्तर मे पुर्तगाली और हालैडवासी डच लोग यहा आये, किन्तु शीघ्र ही अपना डेरा डडा समेट कर चलते बने। अन्तत फ्रास देशवासियो ने इसे अपने अधिकार मे किया।

फ्रासीसी शासन

उनका शासन १७१५ से १८१० तक रहा। फ्रासीसी सभ्यता, सस्कृति और भाषा का प्रभाव इस देश पर आज भी देखा जा सकता है। तब इसका नाम इल दे फ्रास (फ्रास का द्वीप) था। १८१० मे अग्रेजो ने हजारो भारतीय सिपाहियो को ला कर फ्रासीसी शासको से युद्ध किया। फ्रैच शासको की पराजय हुई और यह देश ब्रिटिश उपनिवेश बन गया। अन्तत १९६८ मे इस देश को स्वराज्य प्राप्त हुआ और नागरिको को स्वशासन का अधिकार प्राप्त हुआ। आज यह मारिशस गणराज्य है तथा इसे सयुक्त राष्ट्रसघ की सदस्यता प्राप्त है।

गन्ने की खेती

मारिशस का अर्थतत्र गन्ने की खेती तथा शक्कर के उत्पादन पर निर्भर है। जब तक गुलामी की प्रथा रही, गोरे भूस्वामी तथा शक्कर के कारखानो के मालिक अफ्रीका के हब्शियो को दास बना कर लाते और उन्हे अमानुषिक यत्रणाए दे कर गन्ने की खेती मे प्रचुर द्रव्योपार्जन करते। जब ब्रिटिश ससद ने गुलामी की प्रथा को बद कर दिया, तब भारत से शर्तबद कुलियो को भर्ती किया जाने लगा और कलकत्ता, मुम्बई तथा मद्रास के बदरगाहो से हज़ारो भारतवासियो को शर्तबद मजदूर बना कर यहा लाया गया। स्वदेश से हजारो मील दूर मारिशस द्वीप की कृषि को अपने खून पसीने से उन्नत बनाने वाले ये कर्मठ भारतवासी शर्तबदी की अवधि समाप्त होने पर यही बस गये।

इसके बाद तो इस लघु भारत को सर सब्ज साधन सम्पन्न तथा वैभव सम्पन्न बनाने मे इन प्रवासी भारतीयो की भूमिका ही प्रधान रही। यही कारण है कि आज यहा न तो बेकारी है और न भुखमरी। चिर दारिद्र्य के दर्शन भी नही होते। शायद ही कोई भूखा या नगा दिखाई देता हो। पोर्ट लुइस मारिशस की राजधानी है। दो लाख की आबादी का यह सुन्दर सुहावना नगर कलकत्ता, मुम्बई तथा दिल्ली के महानगरीय जीवन की हलचल से सर्वथा रहित है। यहा के लोगो की शान्त, आवेगहीन जीवनचर्या यह बताती है कि पोर्ट लुइस के नागरिक निर्बाध, प्रशान्त, कर्त्तव्योन्मुख होकर जीवन जी रहे है।

पूर्वी तथा पश्चिमी सस्कृतियों का सगम

तीन ओर पहाडियो से घिरा पोर्ट लुइस नगर पाश्चात्य और पौरस्त्य जीवन पद्धतियो का सुन्दर सगम है। यहा हिन्दू, मुसलमान, ईसाई तथा चीनी बौद्ध व्यापार तथा सरकारी नौकरियो मे सुव्यवस्थित है। नगर का मुख्य भाग समुद्र तट (बदरगाह) से अधिक दूर नही है। बदरगाह पर जहा अनेक जलयान डेरा डाले रहते है, वहा तट के पक्के प्लेटफार्म पर की भव्य इमारते रात्रि को विद्युत प्रकाश मे दिव्य सृष्टि की रचना करती है। होटलो, रेस्तरा और मनोरजन स्थलो मे सैलानियो का सैलाब उमडता है। देश-देशान्तर के पर्यटको तथा स्थानीय निवासियो को खाते पीते, आमोद प्रमोद करते तथा तीखे सगीत की लहरियो मे स्वय को विस्मृत करते देख कर पाश्चात्य जीवन शैली से रूबरू होने का सहज अवसर मिल जाता है।

घुड़दौड़ का मैदान

देश की विभिन्न आर्य समाजो मे मेरे व्याख्यानो को अन्तिम रूप आर्य सभा के मुख्य व्यवस्थापक तथा कार्यालयाध्यक्ष श्री आनन्द बधन दे रहे थे। इसमे एक दो दिन का अन्तराल हो रहा था। एक साय हमने शादे मार्स (घुडदौड के मैदान) का जायजा लिया। नित्य प्रात घोडो की टापो से यह मैदान गूजता था और अश्वारोहण मे रुचि रखने वालो की क्रीडाओ को देखना हमारी प्रात कालीन दिनचर्या का प्रमुख अग था। सवेरे के भ्रमण के लिए इस मैदान से अधिक उपयुक्त स्थान इस नगर मे दूसरा नही है। सामने की पहाडी पर एक दुर्ग का निर्माण सम्भवत फ्रासीसियो ने किया था। भारत मे तो ऐसे दुर्गो की गणना करना भी कष्टसाध्य है किन्तु पुरातन प्रेम से प्रेरित होकर जब हम इसे देखने के लिए वहा चले ही गये, तो इसके भीतरी प्रागण के अतिरिक्त किले मे कोई अन्य आकर्षण दिखाई नही दिया। मोटर की सडक के कारण दो शताब्दी पुराना यह दुर्ग पर्यटको के लिए आकर्षण तो रखता है, किन्तु यहा से राजधानी का भव्य विहगम दृश्य ही उनके मनोरजन का कारण बनता है। शादे मार्स के मध्य भाग मे इग्लैड के विगत नरेश सप्तम ऐडवर्ड की भव्य प्रस्तर प्रतिमा स्थापित है। समीप ही एक अन्य मीनार किसी समय यहा आये विनाशकारी तूफान मे हुई हानि के स्मारक के रूप मे स्थापित की गई है।

गाधी जी का आगमन

घुडदौड के मैदान के सामने तथा आर्य सभा भवन के समीप ताहेरबाग नाम का स्थान है। पता चला कि महात्मा गाधी (तब केवल बैरिस्टर ऐम० के० गाधी के नाम से पहचाने जाते थे) जब १९०१ मे अफ्रीका के 'नौशेरा' नामक जलयान मे सपरिवार सवार होकर भारत आ रहे थे, तब उनके जहाज ने कुछ दिनो के लिए पोर्ट लुइस के बदरगाह पर अपना लगर डाला था। इस समय तक गाधी जी की पहचान दक्षिण अफ्रीका मे रहने वाले भारतीयो के अधिकारो के लिए सघर्षरत एक जुझारू नेता की तो थी, किन्तु अभी उनके महनीय व्यक्तित्व के विकसित होने मे पर्याप्त देर थी। बैरिस्टर गाधी का आतिथ्य पोर्ट लुईस के एक मुसलमान व्यापारी ने किया। उनके सम्मान मे १३ नवम्बर १९०१ को इसी ताहेर बाग मे एक सार्वजनिक सभा तथा भोजन का आयोजन किया गया, जिसमे राजधानी के प्रमुख मुसलमानो तथा जहाज के अधिकारियो ने भाग लिया। गाधी जी ने अपने सक्षिप्त भाषण मे मारिशस के भारत मूल के लोगो को अपने बच्चो को शिक्षित करने की प्रेरणा दी। वे अग्रेज़ गवर्नर जनरल से भी मिले। १७-१८ नवम्बर के एक अग्रेजी अखबार मे बैरिस्टर गाधी की पोर्ट लुइस यात्रा का विवरण प्रकाशित हुआ। किन्तु उनके नाम को 'मोहनलाल करसनदास गाधी' कह कर उल्लिखित किया।

सभी वर्गो के लोग

शर्तबद कुली के रूप मे आने वाले और कालान्तर मे मारिशस मे ही स्थायी रूप से बस जाने वाले दरिद्र, अशिक्षित तथा अकिचन भारतवासियो की व्यथा कथा अब तो इतिहास के पन्नो मे अकित कर दी गई है। नाना प्रलोभन देकर और सुखी एव सम्पन्न जिन्दगी जीने का आश्वासन देकर उन्हे हज़ारो मील दूर इस टापू पर लाया गया था। भारत मूल के जो मजदूर यहा लाये गये उनमे अधिकाश पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के निवासी थे, जो कलकत्ता बदरगाह से जहाजो पर चढाये जाने के कारण 'कलकतिया' कहलाये। इनमे हिन्दू और मुसलमान दोनो ही थे। इसी प्रकार तमिल एव तेलुगु भाषी श्रमिको के अलावा मराठी भाषा-भाषी लोग भी मारिशस लाये गये। हिन्दी की बोली भोजपुरी अधिकाश भारतीय मजदूरो की मातृभाषा थी जो आज भी यहा के हिन्दू घरो मे अपना स्थान बनाये हुए है, किन्तु व्यवहार मे एक वर्णसकरी भाषा (क्रियोली) का अधिक चलन है, जो फ्रैच से प्रभावित है। खेद है कि हिन्दू परिवारो मे परस्पर भोजपुरी का प्रयोग अब कम हो रहा है फलत' निकट भविष्य मे यदि भारतमूल के मोरिशनो के घरो से भोजपुरी सर्वथा लुप्त हो जाये, तो कुछ भी आश्चर्य नही होगा।

धर्म और सस्कृति की रक्षा

एक अच्छी बात यह रही कि जो विपन्न भारतीय इस धरती पर आये, वे अपने धार्मिक सस्कारो से युक्त थे। फलत अधिक शिक्षित न होने पर भी वे अपने साथ हनुमान चालीसा, सत्यनारायण की व्रत कथा तथा रामचरित मानस की पोथी लेते आये और पुन पुन इनके उच्चारण पारायण ने उनके धार्मिक सस्कारो को यथा तथा बनाये रखा। दिन भर की मशक्कत के बाद जब ये ग्रामीण चौपालो मे बैठते, तो मानस की चौपाइयो को गुनगुनाते। प्राय अशिक्षित ये शर्तबद मजदूर रात्रि को देर तक आल्हा गा कर अपना मनोरजन करते। इनके साथ आये पुरोहित यदाकदा सत्यनारायण कथा अथवा भागवत का पाठ सुना कर इनकी धार्मिक बुभुक्षा को शान्त करते। मुख्य भय यह भी था कि शासको के धर्म के प्रचारक पादरी लोग इन्हे धर्मान्तरित न कर ले।

आर्य समाज की स्थापना

मारिशस मे आर्य समाज के प्रवेश की भी एक रोचक कहानी है। दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति स्थानीय लोगो को उन बगाली सैनिको से प्राप्त हुई जो अग्रेजी सेना मे थे और यहा लाये गये थे। स्वदेश लौटते समय इस पुस्तक को वे हाईलैड निवासी दलजीतलाल को सौप गये। उनके साथी खेमलाल ने इसे पढा और उन्हे यह अनुभव हुआ कि 'सत्यार्थप्रकाश' मे लिखी बातो से वे न केवल अपने यथार्थ धर्म को ही पहचान सकते है, ईसाई धर्म प्रचारको द्वारा किये जाने वाले धार्मिक आक्रमणो का भी वे इसी पुस्तक की सहायता से मुकाबला कर सकते है। इस प्रकार मारिशस द्वीप मे वैदिक धर्म की विचारधारा को प्रविष्ट कराने का श्रेय मुख्यत दलजीतलाल तथा खेमलाल, इन मित्रद्वय को ही दिया जा सकता है।

डा० मणिलाल

कालान्तर मे महात्मा गाधी ने मणिलाल भगनलाल डाक्टर को मोरिशस भेजा, जिन्होने यहा की जनजागृति मे प्रमुख योगदान दिया। आर्य समाज से सम्बन्धित व्यक्तियो से डा० मणिलाल को

(शेष पृष्ठ १० पर)

भारतीय महिलाएं:
नई-नई भूमिकाओं में

"जब तक भारत की महिलाएं सार्वजनिक जीवन में हिस्सा नहीं लेंगी देश तरक्की नहीं कर सकता।"

- महात्मा गांधी

भारतीय महिलाएं आज जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। आइए, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 132वीं जयंती पर हम सब उनके सपनों को साकार करने का प्रण लें।

davp 2001/323

भयहीन आत्मा

न था मृत्यु भय, इसीलिए तुम रहे सदा निःशक विचरते।
जब यम से ही नहीं डरे,तो फिर किस मानव से तुम डरते?
तुम मृत्युंजय थे, कितनी ही बार त्यागना चाहा तन को,
बार बार वह आग गई बुझ कुन्दन बना तपे कंचन को।
शोषित, पीड़ित, दलित, पतित सब पर थी करुणा दृष्टि तुम्हारी।
तुम्हे देख कर सिहर सिहर उठते थे दुर्दम अत्याचारी।
तुम काया का रूप नहीं थे, तुम थे परम शक्ति की छाया।
अत किसी का कोई भी आघात न तुमको छूने पाया।
तुम सेवा के महाव्रती थे, बरबस निज को हरिजन माना।
नीव रखी नूतन समाज की, प्रेम अहिंसा का व्रत ठाना।
'त्याग तपस्या करके मानव देवो से ऊचा उठ जाता'—
इसे सत्य कर दिखलाया तुमने, भारत के भाग्य विधाता।
बीत गई वह निशा अधेरी, आजादी का हुआ उजाला।
चढ़ा रहे हम इन चरणो मे भक्ति भरे फूलो की माला।

शराब की दूकान हटायें

आर्य समाज नैनीताल ने एक पत्र लिख कर उत्तराचल के मुख्यमत्री श्री नित्यानन्द स्वामी से अनुरोध किया है कि वह आर्य समाज मन्दिर नैनीताल से सट कर बनाये गये शराब के गोदाम को हटाने के लिए आवश्यक कार्रवाई करे। आर्यसमाज मन्दिर से ३५ फुट की दूरी पर शराब की दूकान है, जो ऐक्साइज के नियमो का खुला उल्लघन है। यदि इसके लिए सत्याग्रह करना पडे, तो उसके लिए अपना नाम देने की भी अनुमति दे।

नैनीताल में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आर्य समाज नैनीताल की ओर से ३ से ७ अक्टूबर तक एक नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। परीक्षण और पजीकरण ३ से ७ अक्टूबर तक आर्य ममाज मे हुए और आपरेशन बी० डी० पाडे अस्पताल मे। आपरेशन डा० डी० ऐन० नौटियाल, बरेली, डा० भ्रमरेश शर्मा, बरेली, और डा० जी० बी० विष्ट ने किये। आइ ओ ऐल विधि से लैस मुफ्त लगाये गये। रहने, खाने, दवाइयो की व्यवस्था भी नि:शुल्क थी।

विद्यालय मे वन महोत्सव

२४ ८ २००१ को डी० ए० वी० सी० सै० पब्लिक स्कूल, चीका (कैथल) मे वन महोत्सव समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीया प्राचार्या महोदया श्रीमती सरस्वती आर्या के प्रयासो से दान स्वरूप प्राप्त ३५० पौधे विद्यालय के प्रागण मे लगाए गए। गुहला तहसील के वरिष्ठ न्यायाधीश श्री जगजीत सिह एव न्यायाधीश श्री भूपेन्द्रनाथ शर्मा की उपस्थिति मे आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्रबन्धक डा० आर० के चौहान ने की। विद्यालय के छात्र-छात्राओ को वन सरक्षण की शपथ दिलाई गई। छात्र-छात्राओ ने पौधारोपण से सम्बन्धित सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती आर्या ने छात्र-छात्राओ को पुरस्कृत कर उन्हे प्रोत्साहित किया।

सत्यार्थ प्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता २००२

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के तत्वावधान मे प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली निबध प्रतियोगिता इस वर्ष भी आयोजित की जा रही है। **विषय** · ईश्वर तथा वेद के विषय मे महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित सत्य (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास के आधार पर)

पुरस्कार प्रथम ३१००/- रुपये, द्वितीय २१००/- रुपये, तृतीय १५००/- रुपये एव पाच सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक १०० रुपये (लेखिका वर्ग मे दो विशिष्ट सान्त्वना पुरस्कार। सम्पर्क श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, गुलाब बाग, उदयपुर।

आर्य समाज गांधी नगर में वेद प्रचार

आर्य समाज गाधीनगर, दिल्ली-३१ मे २४ सितम्बर २००१ से ३० सितम्बर २००१ तक प्रात ६.३० बजे से ८.१५ तक यज्ञ एवं प्रवचन रात्रि ८ बजे से १० बजे तक भजन एव प्रवचन का कार्यक्रम हुआ।

अन्तरराष्ट्रीय सत्य सनातन धर्म मेला

दयानन्द ग्राम नंगला (मन्दोड), जिला मुजफ्फरनमर (उ० प्र०) मे दिनाक २५, २६ व २७ अक्टूबर २००१ को शहरी प्रदूषण एव भौतिक चकाचौंध से दूर विशुद्ध ग्रामीण अंचल में गगनहर के किनारे शुद्ध वातावरण में श्री स्वामी सर्वानन्द जी के सान्निध्य मे आयोजित किया गया है। इसका उद्घाटन श्री स्वामी ओमानन्द जी करेंगे। इस अवसर पर अनेक त्यागी, तपस्वी, संन्यासी, महात्मा, विद्वान्, मनीषी एवं विदुषी बहनों का आर्यों को मार्गदर्शन मिलेगा। इस अवसर पर उपस्थित हो कर लाभ उठाइये।

गुरुकुलो की कन्याओं द्वारा वेदपाठ, विभिन्न सम्मेलनो का आयोजन, सैकडो आर्य सज्जनो एव माताओं का संन्यास एव वानप्रस्थ में दीक्षित होना इस सम्मेलन के विशेष आकर्षण है।

कन्या गुरुकुल चोटीपुरा का वार्षिकोत्सव

श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल चोटीपुरा राजबपुर, ज्योतिबा फुलेनगर (अमरोहा का वार्षिकोत्सव २७-२८ अक्टूबर २००१ को बडी धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर अनेक विद्वान्, सन्यासी एवं उपदेशक पधार रहे है। आप सबसे अनुरोध है कि उत्सव मे सम्मिलित होकर शोभा बढाये।

पाठक कृपया ध्यान दें

नीचे आर्य जगत् के उन ग्राहको की सूची दी जा रही है, जिनका वार्षिक चन्दा समाप्त हो गया है। कृपया अपना चन्दा तुरन्त भेजे, जिससे आपको 'आर्य जगत्' भेजना जारी रखा जा सके। यह सूची क्रमश प्रकाशित की जायेगी। —प्रबन्धक

ग्राहक सख्या	कब समाप्त हुआ
३६२९१	२५ ५ २००१
३६२९२	२७ ५ २००१
३६२९४	२ ६ २००१
३६२९५	३ ६ २००१
३६२९६	६ ६ २००१
३६२९७	७ ६ २००१
३६२९८	७ ६ २००१
३६२९९	१२ ६ २००१
३६३००	१२ ६ २००१
३६३०१	१२ ६ २००१
३६३०२	१२ ६ २००१
३६३०३	१२ ६ २००१
३६३०४	१२ ६ २००१
३६३०५	१२ ६ २००१
३६३०६	१२ ६ २००१
३६३०७	१२ ६ २००१
३६३०८	१२ ६ २००१
३६३१०	१० ६ २००१
३६३११	१६ ६ २००१
३६३१२	१६ ६ २००१
३६३१३	२१ ६ २००१
३६३१४	२२ ६ २००१
३६३१६	२२ ६ २००१
३६३१७	२२ ६ २००१
३६३१८	२२ ६ २००१
३६३१९	२२ ६ २००१
३६३२०	२२ ६ २००१
३६३२१	२२ ६ २००१
३६३२३	२२ ६ २००१
३६३२६	११ ७ २००१
३६३२७	१४ ७ २००१
३६३२८	१४ ७ २००१
३६३२९	१४ ७ २००१
३६३३०	१४ ७ २००१
३६३३१	१४ ७ २००१
३६३३२	१४ ७ २००१
३६३३३	१४ ७ २००१
३६३३४	१४ ७ २००१
३६३३६	२६ ६ २००१
३६३३७	२० ७ २००१
३६३३८	२१ ७ २००१
३६३३९	२२ ७ २००१
३६३४०	२६ ७ २००१
३६३४१	२६ ७ २००१
३६३४२	२८ ७ २००१
३६३४३	२९ ७ २००१
३६३४४	३१ ७ २००१

(पृष्ठ ८ का शेष)

हिन्द महासागर का मोती ......

अपने कार्य में पर्याप्त सहायता मिली। इस देश मे आर्य समाज की विधिवत् स्थापना १९१० मे हुई। भारत से आकर यहा धर्म, सस्कृति तथा आचार की शिक्षा देने वाले आर्य धर्म प्रचारको का यह देश चिर ऋणी रहा है। ऐसे मिशनरी भावना के प्रचारको मे सर्वश्री डा० चिरजीव भारद्वाज, स्वामी स्वतत्रानन्द, स्वामी मंगलानन्द पुरी, मेहता जैमिनी, स्वामी विज्ञानानन्द, प० कन्हैयालाल वैदिक मिशनरी के नाम तो आर्य समाज के इतिहास के प्रारम्भिक अध्यायों में ही मिलेगे। किन्तु भारत की स्वतन्त्रता के पश्चाद्वर्ती युग मे भी वैदिक विद्वानो तथा संन्यासियो ने यहा आकर मारिशन जनता को वैदिक उद्बोधन देने मे कभी कोताही नही की। सर्वश्री महात्मा आनन्द स्वामी, महात्मा आनन्द भिक्षु, स्वामी अभेदानन्द, स्वामी ध्रुवानन्द, स्वामी विद्यानन्द विदेह, स्वामी दिव्यानन्द (मध्य प्रदेश वाले) तथा स्वामी सत्यप्रकाश आदि चतुर्थाश्रमियो के अतिरिक्त प० वैद्यनाथ शास्त्री, प० ओम्प्रकाश त्यागी तथा अन्य आर्य विद्वानो ने भी मारिशस देश मे धार्मिक चेतना जगाई। मेरा आगमन भी इसी शृखला की एक कड़ी थी।

(क्रमश)

८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

(पृष्ठ १ का शेष)

आतंकवादियों का ......

से अमेरिका आतकवाद पर कितना नियत्रण कर पाता है, यह देखना रोचक होगा। जिस जहाज मे तली ही न हो, वह तैरेगा कैसे?

अकेला ओसामा बिन लादेन इस्लामी आतकवाद नहीं है। इसलिए ओसामा या उसके सगठन अल कायदा के उन्मूलन से इस्लामी आतकवाद समाप्त नही होगा। बीसियो अन्य इस्लामी आतकवादी सगठन उसकी जगह लेने को तैयार खड़े है।

आतक की जड़

जब तक इस्लाम सारी दुनिया को मुहम्मद का अनुयायी बनाने का इरादा नही त्यागता, तब तक आतंकवाद समाप्त नहीं हो सकता। इस्लाम मे अपने उक्त लक्ष्य को पूरा करने की शक्ति नही है। सामरिक एव औद्योगिक क्षमता मे वह अमेरिका और यूरोप के विरुद्ध नहीं टिक सकता। युद्ध करके वह जीत नहीं सकता, इसलिए आतंकवादी हथकंडे अपनाता है।

यह भी सही है कि इस्लामी उग्रवाद की शक्ति को अमेरिका ने ही रोका हुआ है। ईरान एक बडी सामरिक शक्ति के रूप मे उभर रहा था। ईराक-ईरान युद्ध ने उसे रोका। फिर ईराक-कुवैत युद्ध में इस्लामी उग्रवाद उलझा रहा। फिर अफगानिस्तान मे बीस साल से युद्ध चल रहा है।

मदरसे हिंसा सिखाते हैं

अमेरिका ने विश्व आतंकवाद से निपटने का सकल्प ठाना है, इसका हमे लाभ उठाना चाहिए। वे मदरसे बन्द होने चाहिए, जहा युवको को यह शिक्षा दी जाती है कि अल्लाह उनके सब पापों को माफ कर देगा, जहां उन्हे काफिरो को मारने पर स्वर्ग में हूरें मिलने का प्रलोभन दिया जाता है। सारा विश्व आतकवाद इस्लामी मज़हब द्वारा प्रेरित है, इस सचाई को समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है। आतकवादी जन्नत पाने के लोभ मे आत्मबलिदान दे रहे हैं। इसके असली दोषी वे मुल्ला हैं, जो यह झूठी शिक्षा देते हैं। यह मुल्ला-मदरसा तंत्र समाप्त होना चाहिए।

समाचार जगत्

आर्य युवक समाज, नई दिल्ली द्वारा चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर एव वार्षिक उत्सव

दिनाक १८ अक्टूबर (गुरुवार) से २५ अक्टूबर (गुरुवार) तक वैदिक मोहन आश्रम, हरिद्वार (भूपतवाला) मे एक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी आत्मबोध जी, श्री सूर्यदेव शास्त्री जी, आचार्य नरेश जी, प्रो० रतनसिह जी, डा० धर्मपाल जी, डा० महेश विद्यालकार जी आदि अनेक विद्वान् पधार रहे है।

ध्वजारोहण दिनाक १८ अक्टूबर २००१ सायकाल ५ बजे और समापन गुरुवार दिनाक २५ अक्टूबर, २००१ को होगा। मुख्य अतिथि पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा, प्रधान, डी० ए० वी० कालेज मैनेजिग कमेटी एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली होगे।

श्रीमती कुसुम आहलूवालिया को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

हसराज माडल स्कूल पजाबी बाग, नई दिल्ली की प्राचार्या श्रीमती कुसुम आहलूवालिया को शिक्षा के क्षेत्र मे अभूतपूर्व योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। प्रस्तुत पुरस्कार भारत के उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त जी के कर कमलो द्वारा प्रदान किया गया, जिसमे एक रजत पदक, प्रशस्ति पत्र एव पच्चीस हजार रुपए की नकद राशि सम्मिलित है। ये पुरस्कार शिक्षा के क्षेत्र मे उत्कृष्ट, उन्नत एव सराहनीय योगदान के लिए प्रदान किए जाते है।

श्रीमती कुसुम आहलूवालिया ने सन् १९७२ मे डी० ए० वी० महिला कालेज बटाला से अपने अध्यापन कार्य का प्रारम्भ किया। तदुपरान्त डी० ए० वी० महिला कालेज अमृतसर मे शिक्षिका के पद पर रही। सन् १९८४ मे हसराज माडल स्कूल मे प्रधानाचार्या का पदभार सभाला। १९९५ मे उन्हे विद्यालय की प्राचार्या के पद पर नियुक्त किया गया। शिक्षा के क्षेत्र मे सराहनीय योगदान के लिए श्रीमती आहलूवालिया को 'राज्य पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

श्रीमती आहलूवालिया के कार्यकाल मे हसराज माडल स्कूल ने उत्तरोत्तर उन्नति की। बोर्ड परीक्षाओ मे विद्यार्थीगण ९८प्रतिशत परीक्षाफल अर्जित करते रहे। आर्थिक दृष्टि से निर्धन एव असमर्थ लगभग ४५० छात्रो को नि शुल्क शिक्षा प्रदान करने की विद्यालय मे व्यवस्था की गई। विद्यालय ने मात्र शैक्षिक उपलब्धि ही प्राप्त न करके अन्य क्षेत्रो कला, सगीत तथा खेलकूद मे भी विलक्षण सफलता अर्जित की। खेलकूद मे राष्ट्रीय एव अन्तरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित करने वाली छात्रा प्रतिभा स्याल टेबल टेनिस की प्रतिभावान खिलाडी है जो अभी अभी भारत का प्रतिनिधित्व करके आई है। इसी शृखला मे विद्यालय का पाचवी श्रेणी का छात्र महेश गुप्ता स्केटिग मे भारत का प्रतिनिधित्व क ने बेल्जियम जा रहा है।

विद्यालय की शिक्षिका सुश्री शैलिना एव नविता चोपडा को उनमे उल्लेखनीय योगदान के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षिकाए इन्टेल की ओर से चुना गया तथा विद्यालय को एक लाख की राशि से पुरस्कृत किया गया।

श्रीमती कुसुम आहलूवालिया ने इस विलक्षण उपलब्धि को डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति तथा विद्यालय की उपलब्धि बताते हुए सारा श्रेय विद्यालय तथा डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति को दिया है तथा स्वय नवीन प्रेरणा से उत्प्रेरित हो कर आर्य समाज की निष्ठा और कर्मठता से सेवा करने का प्रण लिया है। आर्य जगत् उन्हे प्रस्तुत सम्मान के लिए बधाई देता है।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बीगोपुर अपना वार्षिकोत्सव महिला सम्मेलन के रूप मे दिनाक २४ १० २००१ से २७ १० २००१ तक मनाने जा रहा है, जिसमे २४, २५ अक्टूबर २००१ को सामवेद पारायण यज्ञ तथा २६, २७ अक्टूबर २००१ को महिला सम्मेलन (वार्षिकोत्सव) होगा। स्वामी इन्द्रवेश जी कार्यक्रम के शुभारम्भ मे ध्वजारोहण करेगे तथा कार्यक्रम का समापन स्वामी अग्निवेश जी करेगे।

आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल, मडल जौनपुर (उ० प्र०) का छह दिवसीय प्रशिक्षण शिविर दिनाक १३ से १८ अक्टूबर २००१ तक आर्य समाज मन्दिर जौनपुर मे लगेगा। शुभारम्भ स्वामी शुभानन्द सरस्वती दिनाक १३ अक्टूबर साय ४ बजे करेगे। मुख्य अतिथि श्री प० सूर्यबली पाण्डेय होगे।

योग, ध्यान, साधना शिविर

आर्य समाज मन्दिर 'बी' ब्लाक, सरस्वती विहार, दिल्ली मे २२ अक्टूबर से २८ अक्टूबर २००१ तक प्रात ६ ३० बजे से ७ ३० बजे तक योग, ध्यान, साधना शिविर लगेगा। सभी भाई-बहिन इस कार्यक्रम मे आमन्त्रित है।

आर्य वीर की स्मृति में यज्ञ और दगल

वेद मन्दिर आर्य नगर, बिजना नगलिया (अलीगढ) के तत्वावधान मे २३ नवम्बर से २५ नवम्बर २००१ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ और दगल का आयोजन किया जा रहा है। इसमे उच्च कोटि के विद्वान् और पहलवान भाग लेगे। सभी सादर आमन्त्रित हैं। स्थान दमुआ का, डाकघर-शादीपुर (अलीगढ)

वार्षिकोत्सव एवं वेद कथा

आर्य समाज पश्चिमपुरी अपना वार्षिकोत्सव दिनाक १९ ९ २००१ से दिनाक २३ ९ २००१ तक बडी धूमधाम से मना रहा है। श्री गणेश प्रसाद विद्यालकार जी द्वारा वेद कथा का तथा अन्य विद्वानो के उपदेश एव सगीतज्ञो के भजन का भी आयोजन किया गया है। सभी सादर आमन्त्रित है।

माता कौशल्या देवी जी का स्वर्गवास

हम बडे दु खी हृदय से सूचित कर रहे है कि आर्य जगत् की एक कर्मठ विदुषी महिला, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ की पूर्व प्रधाना माता कौशल्यादेवी जी का उनके गृह नगर रायपुर मे दिनाक २९ सितम्बर २००१ को प्रात हृदयाघात से निधन हो गया। ८ अक्टूबर को उनकी श्रद्धाजलि सभा मे बडी सख्या मे गण्यमान्य नागरिक उपस्थित थे।

आर्य समाज मन्दिर मार्ग का साप्ताहिक सत्संग

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्सग मे दयानन्द आदर्श विद्यालय, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली की लगभग १०० छात्राओ एवं अध्यापिकाओ ने भाग लिया। छात्राओ एवं अध्यापिकाओ ने भजन प्रस्तुत किये।

हरियाणा क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के तत्वावधान मे क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, बल्लभगढ मे ४ ११ २००१ की बजाए अब २ १२ २००१ रविवार को प्रात ८ बजे से २ बजे तक उल्लासपूर्वक मनाया जाएगा, जिसमे सभा प्रधान पद्मश्री ज्ञानप्रकाश जी चोपडा अपने सहयोगियो सहित पधार कर आर्य जनो को सम्बोधित करेगे। वह भवन तथा यज्ञशाला का उद्घाटन भी करेगे। इसके अतिरिक्त समारोह मे आर्य जगत् के विद्वान् सन्यासी तथा सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक भी पधार रहे है। समारोह मे समस्त हरियाणा से प्राचार्यगण तथा आर्य समाजो के अधिकारीगण सम्मिलित होगे। बल्लभगढ, पलवल, फरीदाबाद तथा इससे लगते ५५ गावो से आर्य जन भारी सख्या मे समारोह में पधारेगे। समारोह की अध्यक्षता डा० आर० के चौहान करेंगे तथा इसके सयोजक प्रि० ऐस० ऐस० चौधरी जलपान तथा भोजन की व्यवस्था करेगे। समारोह के आयोजन के लिए अनेक समितिया गठित की जाएगी।

सभी आर्यजनो से प्रार्थना है कि वे २ १२ २००१ को अधिक से अधिक सख्या मे बल्लभगढ पधारे तथा समारोह को सफल बनाए।

फरल में वेद प्रचार सप्ताह

भारत के ऐतिहासिक नगर फरल (हरियाणा) मे फल्गु मेले के उपलक्ष्य मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के तत्वावधान मे १२ ९ २००१ से १७ ९ २००१ तक एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमे यज्ञ, भजनोपदेश तथा वेदोपदेश निरन्तर चलते रहे। श्री सुभाषचन्द्र आर्य तथा श्री जगतराम की भजन मडली अपने सारगर्भित भजनो द्वारा जनता का मन मोहती रही।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डा० राजकुमार चौहान ने की। इसके मुख्य अतिथि थे प्रि० कुलदीप गुप्ता। श्री जगदीशचन्द्र वसु, श्री चमनलाल आर्य ने अपने प्रवचनो मे कहा कि हमें अपने जीवित माता-पिता की भरपूर सेवा करनी चाहिए, जो एक सच्चा श्राद्ध तथा पिडदान है। मरने के पश्चात् इस प्रकार के पिड दान करने का कोई अर्थ नही है। इन वक्ताओ ने कहा कि आज १४ सितम्बर है। हम सबका कर्तव्य है कि हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए। अपने व्यक्तिगत पत्र तथा शादी के निमत्रण पत्र हिन्दी मे ही होने चाहिए। स्वामी बलेश्वरानन्द, प्रि० कुलदीप गुप्ता तथा डा० राजकुमार चौहान ने भी अपने विचार रखे।

अन्तरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय आरम्भ

समर्पण शोध सस्थान, साहिबाबाद मे एक अन्तरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय प्रारम्भ किया जा रहा है। इसमे भारत एव विदेशो मे वैदिक धर्म के प्रचार के लिये विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके लिये गुरुकुलो एव अन्य आर्य सस्थाओ से शास्त्री और आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण स्नातको से आवेदन पत्र आमत्रित किये जाते है। जो इस प्रशिक्षण कार्यक्रम मे भाग लेना चाहते है, वे आवेदन पत्र अपने प्रमाण पत्रो की प्रतिलिपि के साथ भेजे। **सम्पर्क समर्पण शोध सस्था, ४/४२, सैक्टर-७, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद-२०१००५ (उ० प्र०)**

आर्य समाज वाशी में हिन्दी दिवस

१६ ९ २००१ को आर्य समाज वाशी मे हिन्दी दिवम समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम केमुख्य अतिथि श्री वेदप्रकाश गोयल केन्द्रीय जहाज रानी मत्री थे तथा अध्यक्षता श्री ओकारनाथ ने की। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कक्षा ६ से ८ तक तथा कक्षा ९ से १० तक के बच्चो की अन्तर विद्यालय हिन्दी मे वाक् प्रतियोगिता एव चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इन बच्चो मे प्रथम वर्ग मे क्रमश प्रथम व द्वितीय रहीं कुमारी मानसी शुक्ला एव कुमारी आकृति अग्रवाल। द्वितीय वर्ग से क्रमश प्रथम व द्वितीय रही कुमारी करिश्मा चौधरी तथा कुमारी पूजा राव। डा० सोमदेव शास्त्रीजी ने हिन्दी को अपने वास्तविक स्थान पर प्रतिष्ठित करने हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्दिष्ट प्रबल पक्ष रखा व देश की एकता अखडता हेतु हिन्दी भाषा की अनिवार्यता बताई।

आर्य समाज वाशी द्वारा हिन्दी दिवम पर हिन्दी सेवाओ हेतु १९९६ से हिन्दी की सेवा मे समर्पित विद्वाना का सम्मानित करने की शृखला मे इस बार प्रख्यात वैज्ञानिक, वार्ताकार एव लेखक डा० देवकीनन्दन जी का सम्मान श्रीफल, शाल एव प्रशस्ति पत्र दे कर श्री वेदप्रकाश -. जरानी मत्री भारत सरकार के करकमलो से करवाया। डा० देवकीनन्दन ने कहा कि हिन्दी विज्ञान आदि हर क्षेत्र के लिये एक सक्षम भाषा है।

मारिशस मे अन्तरराष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

मारिशस मे आर्य भवन, १, महर्षि दयानन्द स्ट्रीट, पोर्ट लुई मे २४-२५ नवम्बर २००१ तक अन्तरराष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन होगा। इसमे विचार का मुख्य विषय होगा नारी– सृजन की आधारशिला। २२ नवम्बर को दोपहर बाद ३ से ५ बजे तक आर्य भवन मे यज्ञ होगा और २३-२४ नवम्बर को प्रात ९ से ३ बजे तक इन्दिरा गाधी भारतीय सास्कृतिक केन्द्र, फेनिक्स मे सम्मेलन होगा। २५ नवम्बर को प्रात ९ से १२ बजे तक बेलमार समुद्र तट पर आर्य परिवार सम्मेलन होगा।

आर्य सस्थाए सम्मेलन मे भाग लेने के लिए अपने प्रतिनिधि भेज सकती है। प्रतिनिधि समाज के प्रति समर्पित व्यक्ति हो, अग्रेजी और हिन्दी मे धाराप्रवाह बोल सके, नारी आन्दोलनो से परिचित हों और विचार विमर्श मे भाग ले सके। भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति नियत प्रपत्र मे १५ अक्टूबर २००१ से पहले आवेदन करे। सम्पर्क आर्य भवन, १ महर्षि दयानन्द स्ट्रीट, पोर्ट लुई, मारिशस। टेलीफोन २१२-२७३०। फैक्स २१०-३७७८

निर्वाचन

आर्य समाज मुम्बई

प्रधान—श्री झाऊलाल शर्मा
मत्री—श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय
कोषाध्यक्ष—श्री विजयकुमार गौतम

सभी छात्र–छात्राओं और अध्यापकों के लिए प्रेरणादायक पुस्तक
भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री कृष्णकान्त जी *द्वारा स्वीकार की गई पुस्तक*
डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के उपप्रधान न्यायमूर्ति जस्टिस आर० एन० मित्तल तथा
महासचिव सुप्रसिद्ध अधिवक्ता श्री ऐम० ऐल० खन्ना द्वारा लिखित भूमिका सहित डा० धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा लिखित ऐतिहासिक पुस्तक

डी० ए० वी० आन्दोलन
के
प्रकाश पुंज
(डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के सभी प्रधानो के प्रेरक जीवनवृत्त)

भारतीय जन-जागरण के सर्वाधिक प्रभावशाली आन्दोलन के शीर्षस्थ नेताओ, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सस्थापक प्रधान माननीय जस्टिस लालचन्द से लेकर वर्तमान प्रधान पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा सहित सभी २० महापुरुषो की खोजपूर्ण प्रामाणिक जीवनियो का सचित्र सकलन।

● उत्तम कागज पर सुन्दर छपाई और वाटरप्रूफ पुस्तकाकार जिल्द मे उपलब्ध।

● डी० ए० वी० सस्थाओ के लिए विशेष रियायत।

प्राप्ति स्थान :
उर्वी पब्लिशिंग कम्पनी (मोहित प्रकाशन)
सी. बी एस ई के मुख्य द्वार के सामने, दूसरी मजिल, सावित्री सदन-2 (कम्युनिटी सेटर)
प्रीत विहार, नई दिल्ली-110092 दूरभाष 2224850, 2220649, 2161293, 2140752

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रवोध महाजन, सभा मत्री द्वारा राकेश भार्गव के प्रबन्ध मे मयक प्रिन्टर्स 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष . 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक–उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये　विदेशो मे ३० पौंड या ५० डालर　वर्ष ६६, अक ३५　दूरभाष ३३६३७१८　रविवार, २८ अक्टूबर, २००१
आजीवन—५०० रुपये　इस अक का मूल्य—२०० रुपये　दयानन्दाब्द १७८　३३६२११० द्वितीय आश्विन शु०-१२-वि० स०-२०५८
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये　फैक्स ३३६००५९　सप्ताह २८ अक्टूबर से ३ नवम्बर

जब श्रीराम ने आतंकवादियों का सफाया किया था

❑ श्री ज्येष्ठ वर्मन

अयोध्या नरेश दशरथ केपुत्र श्रीराम ने अपने वनवास के प्रारम्भिक दिनो मे जब दण्डकारण्य मे प्रवेश किया था, तब उन्होने देखा कि वह सारा प्रदेश राक्षसो से आतकित था। दण्डकारण्य का दूसरा नाम जनस्थान भी था, क्योकि वह बिल्कुल जगल नहीं था। उसके आसपास लोग बसते थे।

अतिवादी राक्षस

पुराने समय मे लोग जिनको राक्षस कहा करते थे, आधुनिक युग मे उनको आतकवादी, भयोत्पादक या उग्रवादी कहते है। उन राक्षसो की विशेषता यह थी कि ये लोग सच्चाई, दया, अनुकम्पा इत्यादि मानवीय मूल्यो को नही मानते थे, किसी भी धर्म-मर्यादा का आदर नही करते थे। ये अपने समुदाय विशेष से भिन्न जनसमुदाय को हमेशा सशय और घृणा की दृष्टि से देखते थे, उनको पीडा पहुचाते थे, उन पर अत्याचार करते थे। इनके विचार, इनकी बाते और इनके हर कर्म दूषित होते थे। ये न्याय शब्द के अर्थ को बिल्कुल नही समझते थे। ये जहा कही भी जाते थे वहा गन्दगी और अशाति फैलाते थे। (**त्यक्त स्वधर्माचरणा. निर्घृणा· परपीडका.। चण्डाश्च हिंसका: नित्य म्लेच्छास्ते ह्यविवेकिन:।** शुक्रनीति १ ४४)

राम की व्यवहार नीति

बुद्धिमान लोग ऐसे दुष्ट और नीच लोगो के साथ बातचीत करना और उनको समझाने का प्रयास करना व्यर्थ समझते है। राम ने जब जनस्थान के ऋषि मुनियो की, तपस्वी, सरल, मुग्ध और शातिप्रिय लोगो की दयनीय स्थिति को देखा और समझा कि ऐसी स्थिति को उत्पन्न करने वाले राक्षसो के साथ बातचीत करके और उनको समझाते हुए समय नष्ट करने के बदले उनका सफाया करना ही बेहतर है, तब उन्होंने ऐसी ही कार्रवाई शुरू की। जब राम ने देखा कि जनस्थान के निर्दोष लोगो की रक्षा करने वाला या उनका रोदन सुनने वाला कोई भी नहीं था, तब उन्होने अपने क्षात्र धर्म को याद किया।

आततायी को मार डालना ही धर्म है

लोगो के जान माल को क्षति पहुचने से रोकने वाला ही क्षत्रिय होता है। (**क्षतात् त्रायत इति क्षत्रिय:**) राम ने अयोध्या के सिंहासन पर अपने परम्परागत अधिकार को अवश्य त्याग दिया था, लेकिन उन्होने अपने क्षत्रिय धर्म को नहीं त्यागा था। अत जहा जहा उनके कानो मे आर्तनाद सुनाई दिया, वहा वहा झट से पहुच कर उन्होने आतकवादियो को देखते ही मार गिराना शुरू किया। धर्मशास्त्र कहता है कि आतकवादी, आततायियो को देखते ही मार डालना चाहिए। इसमे विचार करने या सोचते बैठने का कोई औचित्य नही होता। आततायियो को प्रत्यक्ष या छिपकर मारने से, मारने वाले को कोई दोष नहीं लगता। (**आततायिनमायान्त हन्यादेवाविचारयन्। नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवति कस्यचित्।**)

अविचारपूर्ण दया

लेकिन इस पर लोगो के अलग अलग विचार हो सकते है। एक तो निर्लिप्ततावाद, दूसरा मानवतावाद, तीसरा न्यायवाद। निर्लिप्ततावादी, जब तक उन पर कोई सकट नहीं आता, तब तक किसी भी लफडे मे पडना नही चाहते। मानवतावादी अहिसा और क्षमा का एकपक्षीय प्रचार करते है। न्यायवादी कहते है कि जब तक किसी का अपराध सिद्ध नही होता, तब तक उसको दण्ड नही देना चाहिए। राम के समय मे भी ऐसे लोग थे। उनमे, राम की अपनी पत्नी स्वय सीता भी शामिल थी। यद्यपि वह भी एक क्षत्रिय राजा की बेटी थी, तथापि वह, किसी दार्शनिक और ब्रह्मवादी (विदान्ती) जनक राजा की बेटी होने के कारण स्वभाव से कुछ आवश्यकता से अधिक क्षमाशील, सहनशील और उदार थी। अत उसको राम का यह कार्य, अकार्य सा लगा। अत उसने राम की निन्दा की और हिसाचार को बन्द करने के लिए आग्रह किया। इसी सन्दर्भ मे, सीता ने राम से कहा 'हे राम, यह तुम क्या कर रहे हो? इन राक्षसो से हमारा कोई झगडा नहीं। इन राक्षसो ने हमारे ऊपर कोई आक्रमण नहीं किया। फिर भी तुम उनको बिना सोचे विचारे मारते जाते हो। यह गलत है, पाप है। ऐसा मत करो।'

"मै तुमको कोई उपदेश देना नहीं चाहती, मै शायद उसके योग्य भी नही हू फिर भी स्नेहवशात् कटु होने पर भी कुछ हितकर वचन कहती हू। अपराध सिद्ध हुए बिना किसी से द्वेष करना, उसको जान से मार डालना, न्याय नही है।"

"हो सकता है कि सदा से शस्त्र धारण करते रहने के कारण तुम उन शस्त्रो का प्रयोग करने के लिए सदा उत्सुक रहते हो। यह ठीक नही। यदि तुमको क्षात्रधर्म का पालन करना अभीष्ट है, तो भी समय आने पर तुम यथेष्ट ऐसा कर सकते हो। अभी वह समय नहीं आया है। अब तुम राजा नही हो। जब वनवास की अवधि समाप्त होने पर तुम अयोध्या लौटोगे, तब तुम यथेष्ट अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करना। किन्तु इस वक्त तुम निर्लिप्त रहो, तटस्थ रहो, इन राक्षसो के लफडो मे मत पडो। ये चारो ओर फैले हुए है। उनको छेडने से, उनके साथ शत्रुता मोल लेने से, हमे यहा जीना मुश्किल हो सकता है।"

**त्रीण्येव व्यसनान्यत्र कामजानि भवन्त्युत।
मिथ्यावाक्य परमक तस्माद् गुरुतरा व्यथा॥
परदाराभिगमन विना वैर च रौद्रता।३॥
तृतीय यदिद रौद्र परप्राणाभिहिसनम्।
निर्वैर क्रियते मोहात्तच्च ते समुपस्थितम्।६॥
स्नेहाच्च बहुमानाच्च स्मारये त्वा न शिक्षये।
न कथचन सा कार्या गृहीतधनुषा त्वया॥२०
बुद्धिर्वैर विना हन्तु राक्षसान्दण्डकाश्रितान्।
अपराध विना हन्तु लोकान्वीर न कामये॥२१॥
तदार्य कलुषा बुद्धिर्जायते शस्त्रसेवनात्।
पुनर्गत्वा त्वयोध्याया क्षत्रधर्म चरिष्यसि॥२४॥**

(वाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग ८)

अपनो से समर्थन की इच्छा

सीता की इन बातो को सुन कर राम को अवश्य बुरा लगा होगा। क्योकि जब कोई व्यक्ति कुछ असाधारण कार्य करता है, तब वह कम-से-कम अपनो से उसका नैतिक समर्थन चाहता है। राम को ऐसा नैतिक समर्थन यहा नही मिल रहा है। इस कारण वह खिन्न हो कर सीता से कहते है "देखा, हे देवि, तुम्हारे स्नेह और आदर भरे हितवचन, निस्सन्देह तुम्हारे अपने पिताश्री जनक महाराज से प्राप्त सस्कारो के अनुकूल है। किन्तु जरा मेरी भी बात सुनो। तुमने क्षत्रियो के धनुष-बाण धारण करने के बारे मे, जो कुछ आक्षेपकारक बाते कही हैं उनका उत्तर भी सुनो। क्षत्रियो को बचपन से ही शस्त्रधारण और उन शस्त्रो का प्रयोग करने का अभ्यास इसलिए लगातार कराया जाता है कि जहा कही भी ये लोग रहते है, नगरो मे हो या जगलो मे, वहा किसी का भी आर्तनाद, रोने की आवाज, सुनने को न मिले। और तुम जानती हो कि जब से हम लोग इस जनस्थान मे आये है, तब से चारो ओर से किसी-न-किसी का आर्तनाद सुन रहे है। ऋषि-मुनि भी राक्षसो के अत्याचार के शिकार हो कर मेरी शरण मे आये है और मैने उनको, अपने प्राणो की बाजी लगाकर भी उनकी रक्षा करने का वचन दिया है। इस तरह मै वचनबद्ध हू। अत अब मै स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने प्राणो के भय से, आतकवादियो के क्रूर कर्मो को देखकर भी चुप रहना पसन्द नही करता। यह वचन भग होगा। वचन भग पाप है।"

"हे देवि, यदि तुम यह चाहती हो कि हम लोग इन राक्षसो द्वारा हम पर आक्रमण होने की प्रतीक्षा करे, तो यहा रक्षा करने योग्य कोई भी नर-नारी जीवित नही रहेगा। फिर हमारे ये शस्त्रास्त्र किस काम के होगे? हम क्षत्रिय कहलाने योग्य भी नही रह जायेगे।"

**हितमुक्त त्वया देवि स्निग्धया सदृश वच।
कुल व्यपदिशन्त्या च धर्मज्ञे जनकात्मजे॥२
किन्तु वक्षाम्यह देवि त्वयोक्तमिद वच।
क्षत्रियैर्धार्यते चापो नार्तशब्दो भवेदिति॥३
ते चार्ता दण्डकारण्ये मुनय सश्रितव्रता।
मा सीते स्वयमागम्य शरण्य शरण गता॥४
सश्रुत्य च न शक्नोमि जीवमान· प्रतिश्रवम्।
मुनीनामन्यथा कर्तु सत्यनिष्ठ हि मे सदा॥७**

(सर्ग ९)

निर्वीर्य राजा को हटाओ और मारो

श्रीराम बहुत बडे धर्मज्ञ थे। उनको राजधर्म का पूरा ज्ञान था। प्राचीन काल के धर्मशास्त्रकार ऋषियो ने कहा है कि जो राजा प्रजाजनो को उनकी रक्षा करने का वचन देकर समय आने पर उस वचन का पालन नहीं करता, वह राजा बनकर रहने योग्य नहीं होता। ऐसे अयोग्य राजा को प्रजाजन सब एक होकर, पहले अपदस्थ करे और फिर उसको हाथ-पाव बाध कर इस

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वेदसुधा

परमेश्वर की उपासना क्यों अभीष्ट है?

श्री मनोहर विद्यालकार

भूयार्निद्रो नमुराद् भूयानिन्द्रासि मृत्युभ्य । अथर्व० १३ ४ ४६

भूयानरात्या शच्या. पतिस्त्वमिन्द्रासि, विभू प्रभूरिति त्वोपास्महे वयम्। १३ ४ ४७

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत। अथर्व० १३ ४ ४८

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन। अथर्व० १३ ४ ४९

अम्भो अमो मह सह इति त्वोपास्महे वयम्। १३ ४ ५०

अर्थ– (**इन्द्र. नमुराद् भूयान्**) परमेश्वर न मरने वाले नित्य पदार्थो = जीवात्मा और प्रकृति से बडा है और हे (इन्द्र) परमेश्वर आप (**मृत्युभ्य भूयान् असि**) मरने वाले अनित्य पदार्थो से तो बडे हो ही। ४६

(**इन्द्र अरात्या भूयान्**) परमेश्वर सब प्रकार की दरिद्रताओ, कमियो और मुसीबतो से बडा है, अर्थात् उनको समाप्त करने मे समर्थ है, किन्तु यदि कर्मफल रूप मे किसी को मुसीबत मे डालना चाहता है, तो उससे बडी मुसीबत कोई नही, उसकी दी हुई मुसीबत से बचाने वाला कोई नही। हे इन्द्र आप (**शच्या पतिः**) सब प्रकार की प्रज्ञाओ और कर्मो के अधिपति हो अर्थात् चाहे जो कुछ दे सकते हो, और चाहे जो कुछ छीन सकते हो। आप (**विभू· प्रभू· असि**) सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान् हो (**इति**) ऐसा जान कर (**त्वा उपास्महे**) आपकी उपासना करते है, आपके पास बैठ कर आपके स्वभाव और गुणो को देख कर, उन्हे अपने अन्दर धारण करके आपके जैसा बनने का प्रयत्न करते है। ४७

हे (**पश्यत**) सर्वद्रष्टा और सबसे बढ कर दर्शनीय परमेश्वर, (**ते नमः अस्तु**) मै आपको नमस्कार करता हू, आपके सन्मुख अपनी तुच्छता अनुभव करता हू। हे (**पश्यत**) सर्वज्ञ प्रभो, (**मा पश्य**) मुझे देख–मेरी असमर्थता को जानकर मुझ पर कृपा दृष्टि रख। अर्थात् मेरी आवश्यकताओ को पूरा कर। ४८

(**अन्नाद्येन**) अन्नादि भोज्य तथा जलादि पेय पदार्थों को दे कर मेरे शरीर की आवश्यकताओ को पूरा कर, (**तेजसा**) मानसिक बल प्रदान करके मेरे मन को तेजस्वी बना (**ब्राह्मण वर्चसेन**) अपने ब्रह्मतेज की बूदो से अभिषिक्त कर ब्रह्मविद् बना दीजिये, और इस प्रकार मेरे जीवन को (**यशसा**) सर्वथा यश पूर्ण कर दे। ४९

हे परमेश्वर आप (**अम्भः**) जल के समान शान्तिप्रद तथा प्रत्येक पदार्थ मे प्रविष्ट हो कर उसके आकार और रूप को धारण किये हुए है, (**अमः**) ज्ञान स्वरूप है, सब कुछ जानते है, (**मह.**) सब तरह से सबसे महान् तथा पूजनीय है (**सहः**) सबको सहनशीलता और साहस प्रदान करने वाले है (**इति**) इसलिए (**वय त्वा उपास्महे**) हम सब आपकी समीपता (सान्निध्य) अनुभव करने के लिए आपकी उपासना करते है। ५०

मनन– परमेश्वर निराकार अथवा नीराकार है। जैसे (अम्भ) जल का कोई आकार नही होता, वैसे ही परमेश्वर का कोई आकार नहीं। जल को जिस पात्र मे डाला जाये, उसी पात्र के आकार वाला हो जाता है, वैसे ही परमेश्वर '**अणोरणीयान् और महतो महीयान्**' होने से सर्वव्यापक है, और प्रत्येक पदार्थ मे व्याप्त हो कर उसके आकार को धारण किये हुए है। **पुरुष एव इद सर्व यद्भूत यच्च भाव्यम्**। यजु० ३१ २

परमेश्वर (अम) शक्ति या गति = ज्ञान स्वरूप है। आप सर्वशक्तिमान् तथा सर्वज्ञ होने से सर्वथा पूजनीय है, और साथ ही (सह) सहनशक्ति, उत्साह और साहस के पुज तथा इनकी प्रेरणा देने वाले है। वे (प्रभू) सर्वसमर्थ और सब ब्रह्माण्ड के स्वामी है। इसलिए हम आपकी उपासना करते है, आपके समीप बैठ कर आपके सखा (समानख्यान) बनना चाहते है। आप (पश्यत) सर्वद्रष्टा, सर्वाधिक दर्शनीय तथा सबकी देखभाल करने वाले हो, इसलिए मुझ पर कृपा दृष्टि रख कर मेरे शरीर, मन और आत्मा की आवश्यकताओ को पूरा करिये, और मुझे मृत्यु के कारण भूत रोगो, दोषो और पाप कर्मो से मुक्त कर दीजिये।

उपासना का अर्थ समीप बैठना या होना है। परमेश्वर सर्वव्यापक होने से सर्वत्र सदा सबके समीप है। इसलिए उपासना का अर्थ स्थान या समय की दृष्टि से समीप होना नहीं है। उसे यजुर्वेद मे 'तद्दूरे तद्वन्तिके' कहा है। अर्थात् स्थान और समय की दृष्टि से सबके समीप होता हुआ भी गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से वह सामान्यत प्राय सभी से दूर है। जैसे मनुष्य अपने साथी के समीप बैठा हुआ भी विचार जगत् मे विचरता हुआ उससे हजारो मील दूर होता है।

यदि जैसे जल जिस पात्र मे डाला जाए, उस आकार को धारण कर लेता है, वैसे ही साधक भी अपने को प्राप्त परिस्थिति के अनुकूल ढाल ले, और उसे अपने परिश्रम से जो प्राप्त हुआ है उसमे सतुष्ट होने का स्वभाव बना कर 'यदृच्छालाभसन्तुष्ट' बन जाए, तो उसके मन मे असन्तोष नहीं होगा। वह सदा शात और राग-द्वेष शून्य हो कर विचरेगा। परमेश्वर सर्वसमर्थ होते हुए भी अत्यन्त सहनशील है, उसने जो व्यवस्था बनाई है उसका उल्लघन करने वालो से अथवा उसके अस्तित्व को नकारने वालो से भी कभी उद्विग्न या रुष्ट नही होता। वैसे ही उसका उपासक भी धीरे धीरे राग द्वेष से शून्य हो कर स्थितप्रज्ञ बन जाता है।

परमेश्वर अत्यन्त दर्शनीय मनोहर बनकर सर्वत्र व्याप्त है। मनुष्य प्राकृतिक सौन्दर्य मे जब भी मग्न होता है, घने वनो के वृक्ष वनस्पति मे, नदियो के प्रवाह मे, समुद्र के अनन्त जल और हिमाच्छादित पर्वतो की चोटियो को देखने मे जो आनन्द मिलता है, वह परमेश्वर की उपस्थिति के कारण ही मिलता है। इसलिए परमेश्वर की उपासना के लिए किसी विधि विधान के पालन या तीर्थ भ्रमण की जरूरत नही है।

परमेश्वर के सच्चे उपासक को कोई चाह नही रहती। किसी से राग द्वेष नही होता। किसी प्रकार का अवसाद या भय नही रहता। इसलिए परमेश्वर की उपासना निर्भयता व सुख शान्ति की प्राप्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य को अभीष्ट है।

५२२, ईश्वर भवन, खारी बावली,
दिल्ली–६

उत्तम भक्ति

❑ प० रामकृष्ण शर्मा

ससार मे कई स्तर के लोग है। सब अपने अपने ढग से परमात्मा की भक्ति करते है। एक व्यापारी अपना धधा आरम्भ करने से पहले दूकान मे रखी लक्ष्मी गणेश आदि की मूर्तियो को अगरबत्ती जलाकर नमन करता है, इनसे अपने व्यापार की वृद्धि के लिए प्रार्थना करता है। एक दूसरा व्यक्ति, जो कभी-कभार मन्दिर चला जाता है, वह भी उस समय, जबकि उसके सामने समस्याए आती है, जैसे घर मे दु ख है, किसी का विवाह नही हो रहा है और यदि हुआ है तो पत्नी से दु खी है, किसी बच्चे की परीक्षाए आ रही है, मन्दिर जाता है और वहा भगवान् को नारियल, मिठाई, फल इत्यादि अर्पित करता है और भगवान् से यह प्रार्थना करता है कि सब कुछ ठीक हो जाए। तीसरे प्रकार के लोग है जो सदियो से अपने परिवार मे चली आ रही परम्परा के अनुसार बच्चो को कुछ सिखा देते हैं, कुछ मत्र, कुछ श्लोक इत्यादि।

ये तीनो प्रकार की भक्तिया कुछ बुरी नही है। व्यक्ति को, जितना हो सके, भगवान् का भजन करना ही चाहिए। परन्तु हम सारी आयु बच्चे ही बने नही रह सकते, केवल स्वार्थी ही नहीं बने रह सकते। भक्ति की कई श्रेणिया है, जिनको पार करके हम निरन्तर ऊपर उठते चले जाते है।

जब हममें विशेष भक्ति की लहर जागती है, तब सासारिक बाते भूल जाती है। उस समय केवल परमात्मा के प्रति प्रेम और समर्पण ही रह जाता है। भक्ति की परिभाषा करते हुए कहा गया है **"अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञान कर्माद्यनावृतम्"** अर्थात् सब इच्छाओ और कामनाओ का त्याग करके, ज्ञान, कर्म और योग के सिवाय और किसी का आश्रय न लेते हुए परमात्मा तत्व को आत्मसात् करते हुए जीने का नाम विशेष भक्ति है और इसी को उत्तम भक्ति कहते है। उत्तम भक्ति की व्याख्या करते हुए सत जन कहते है कि भक्त एक बर्तन की तरह है। उसको अमृत से भरने के लिए यह आवश्यक है कि बर्तन खाली हो। इसी को शून्य भाव कहते है। इस अवस्था मे आते आते ज्ञान, कर्म भी क्षीण हो जाते है और केवल रह जाता है प्रेम और समर्पण।

हमारे सतो ने भक्ति के तीन रूप बताये है साधना भक्ति, भाव भक्ति और प्रेम भक्ति। साधना भक्ति मे ज्ञान, कर्म और योग का महत्त्व अधिक माना गया है। क्रियाओ का महत्त्व अधिक है। भाव भक्ति मे भक्त परमात्मा को मित्र रूप मे देखना आरम्भ करता है और ठीक उसी तरह का बनने का प्रयास करता है जिस प्रकार का परमात्मा है। जैसे परमात्मा दयालु और न्यायकारी है, वह भी अपने अन्दर इसी प्रकार के गुण लाता है। प्रेम भक्ति मे भक्त को ससार के कण-कण मे भगवान् दिखता है, अपने शरीर और दूसरे के शरीर में जो अन्तर है वह समाप्त हो जाता है। सर्वत्र भगवान् की छटा दिखाई देती है।

भक्ति का मूल आधार परमात्मा के प्रति भक्ति है। या तो ससार से प्यार करो, अथवा भगवान् से प्यार करो। दोनो कर्म साथ-साथ नहीं चल सकते। जिस व्यक्ति को परम लक्ष्य प्राप्त करना है उसे उत्तम भक्ति का आश्रय लेना होगा। परमात्मामय होकर जीना, परमात्मा के लिए जीना, सब मनुष्यों मे परमात्मा की सत्ता को स्वीकार करना यही भक्ति का मुख्य उद्देश्य है।

आर्य समाज नैरोबी, केन्या

विजय का अचूक गुर

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्॥—गीता

(यदृच्छया) यो ही बैठे बिठाये, अपने प्रयत्न के बिना **(उपपन्नं)** प्राप्त हुआ **(अपावृत स्वर्गद्वारं)** खुला हुआ स्वर्ग द्वार है यह युद्ध। **(पार्थ)** हे अर्जुन, **(ईदृशं युद्धं)** ऐसा युद्ध **(सुखिनः)** सुखी, भाग्यशाली **(क्षत्रियाः)** क्षत्रिय ही **(लभन्ते)** प्राप्त करते है।

युद्ध स्वर्ग का द्वार

युद्ध तो मानो स्वर्ग का खुला हुआ द्वार है, वह यों ही अनायास तो केवल भाग्यशाली क्षत्रियो को ही प्राप्त होता है।

दो चार लोगो की लडाई युद्ध नही है। युद्ध वह है, जहा सैकडो हजारो की सख्या मे लोग एकत्रित हो कर दो पक्षों में बट कर अपने पक्ष को जिताने के लिए लडते है। ऐसा युद्ध छेडना आसान नही होता, और न वह किसी एक व्यक्ति के छेडने से छिडता ही है। इसके लिए विशाल जन समूहो मे उन्माद जागना चाहिए।

युद्ध में दुष्कर्म सुकर्म हो जाते हैं

युद्ध की यह विशेषता है कि शान्तिकाल मे जो कार्य दुष्कर्म, अपराध माने जाते है, युद्ध काल मे वे शौर्य गिने जाते है। हत्या, अपहरण, लूटपाट युद्ध मे क्षम्य ही नहीं, प्रशसनीय माने जाते है। जो जितने अधिक शत्रुओ का वध करता है, वह उतना बडा योद्धा कहा जाता है।

युद्ध मरने मारने का, जीतने हारने का सौदा है। जीत हो गई, तो सब कुछ मिल गया, हार हुई, तो सब कुछ गया। यह बहुत बडा जूआ है।

इतने बडे जुए मे, जिसमे न केवल सर्वस्व जाता हो, अपितु प्राण जाने की भी सभावना हो, बिना किसी बडी प्रेरणा के दांव नहीं लगाया जा सकता। यह प्रेरणा धर्म की होती है। हम धर्म के लिए लड रहे है; हम न्याय के लिए लड रहे है। धर्म के लिए लडने मे बडा सन्तोष है, सहारा है।

धर्म की विभिन्न व्याख्याएं

धर्म की विचित्र व्याख्याए हैं। एक तो वैदिक व्याख्या है, जिसके अनुसार अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, इन पाच यमों (महाव्रतों) का पालन धर्म है। हम नहीं चाहते कि कोई हमें पीटे या मार डाले, इस लिए हमें भी किसी को सताना या मारना नहीं चाहिए (अहिंसा)। सत्य बोलना चाहिए, और किये गये वायदे का पालन करना चाहिए (सत्य)। दूसरे की धन सम्पत्ति को बल, छल से छीनना नहीं चाहिए (अस्तेय)। कामुकतावश अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री से बल छल से यौनाचार नहीं करना चाहिए (ब्रह्मचर्य)। अपनी आवश्यकताओं से अधिक अनाप-शनाप धन-सम्पत्ति का सचय नहीं करना चाहिए (अपरिग्रह)। इन नियमो का पालन करने वाला, इनके अनुसार जीवन यापन करने वाला व्यक्ति धार्मिक कहा जायेगा। उसे 'आर्य' (भला आदमी) कहा जा सकता है।

ऐसे धार्मिक व्यक्तियो के समाज से जो शत्रुता ठाने, वह अधार्मिक, दस्यु होगा। दस्यु भी ससार मे होते है और वे बडी सख्या मे होते है।

दस्युओं से लड़ो

जब आर्यों और दस्युओ मे टकराव हो, तब वैदिक विचारधारा तो यह कहती है कि दस्युओं से लडो, उन्हे हराओ और नष्ट कर दो। परन्तु बुद्ध ने एक नई विचारधारा प्रस्तुत की। उन्होने कहा 'वैर से वैर शान्त नही होते। अधार्मिक शत्रु को भी प्रेम से जीतो।' यह अहिंसा की नई व्याख्या हो गई। वैदिक अहिसा धर्मपरायण व्यक्ति तक सीमित थी। दस्यु से लडने और उसे मार डालने का विधान था। बुद्ध ने कहा कि दस्यु को भी मारो मत, प्रेम से उसका हृदय जीतो, डाकू भी सन्त बन जायेगा।

सामी मज़हब

उधर पश्चिमी एशिया मे ईसाइयत और इस्लाम, दो पथ (मज़हब) उदित हुए। वैदिक विचारधारा के अनुसार इस सृष्टि का नियामक एक ईश्वर था, जिसकी दृष्टि में सभी नर-नारी समान थे। सबके प्रति वह न्याय, दया और समदर्शिता का व्यवहार करता था। ईसाइयो ने और मुस्लिमो ने एक नये प्रकार के ईश्वर की कल्पना की।

पाप क्षमा होगे?

ईसाइयो ने कहा कि ईश्वर का एक पुत्र है— ईसा। वह ईश्वर को बहुत प्रिय हैं। उसकी शरण मे आ जाओ, तो वह तुम्हारे सब पाप कर्म क्षमा कर देगा। लोगो ने कहा 'क्षमा तो तब करेगा, जब हम पाप करेगे। हम पाप करे ही क्यो? और फिर उनकी क्षमा क्यो चाहे?' ईसाई धर्म गुरुओ ने कहा 'स्त्री-पुरुष सभोग पाप है। इसलिए सब स्त्री-पुरुष पाप की सतान है, पापी हैं। उनको पाप की क्षमा चाहिए ही चाहिए। वह क्षमा ईसा की शरण मे आने से ही मिलेगी।'

कितनी ही बेसिर-पैर की बात हो, कुछ न कुछ लोग विश्वास करने वाले मिल ही जाते है। पशु, पक्षी, जलचर, सभी नर-मादा सतान उत्पादन के लिए सभोग करते है। यह ईश्वर की इच्छा है, प्रकृति की प्रेरणा है। फिर संभोग पाप कैसे हो गया? यदि पाप हो भी, तो ईसा उसे क्षमा कैसे करा सकता है?

अल्लाह केवल मुसलमानों का

ईसा के छह सौ वर्ष बाद हुए मुहम्मद ने प्रचारित किया कि वह ईश्वर (अल्लाह) का सदेशवाहक (दूत) है। उसने कहा कि जो कुछ मै कहता हू वह ईश्वर की वाणी है। मुहम्मद को अचेतना (समाधि) के दौरे पडते थे और उस समय वह जो कुछ बोलता था, उसे 'कुर आन' (ईश्वर की वाणी) मान लिया गया। इस तथाकथित ईश्वरीय वाणी मे बार-बार कहा गया है कि इस बात पर विश्वास करो कि मुहम्मद ईश्वर का दूत है। जो लोग इस बात पर विश्वास कर लेगे, वे मोमिन (विश्वासी) कहलायेगे, जो विश्वास नहीं करेगे, वे काफिर (अविश्वासी) कहलायेगे। ईश्वर (अल्लाह) विश्वासियो पर दयालु, और उनका समर्थक है, अविश्वासियो का वह भयकर शत्रु है।

मुहम्मद ने यह भी कहा कि इस जीवन के बाद (मृत्यु के बाद) भी एक जीवन होगा। यह जीवन बहुत छोटा है, वह जीवन बहुत लम्बा, अनन्त होगा। प्रलय के दिन सब मुर्दे जीवित किये जायेगे। तब मुहम्मद अल्लाह (ईश्वर) के पास बैठा होगा। वह ईश्वर से विश्वासियो की सिफारिश करता जायेगा। उनके सब पाप क्षमा कर दिये जायेगे और उन्हे जन्नत (स्वर्ग) मे भेज दिया जायेगा। वहा वे अनन्त काल तक दूध, शहद, हूरो और अन्य सुखो का उपभोग करेगे।

ईसाइयो और मुसलमानो की दृष्टि मे क्रमश ईसा और मुहम्मद की शरण मे जाना ही सबसे बडा कर्म है और इन पर विश्वास करने मात्र से ये महापुरुष अपने अनुयायियो के सारे पाप क्षमा करवा देगे।

ईसाइयत और इस्लाम का टकराव

इतने बडे आश्वासन के बाद ये दोनो मजहब इस आधार पर सगठित हो गये कि हमारा पैगम्बर अधिक भरोसे का है, वह हमे युद्ध मे विजय दिला देगा। मुसलमानो ने एक आदेश और दिया कि हर काफिर (अविश्वासी) को मुसलमान (मुहम्मद पर विश्वास रखने वाला) बनाना हर मुसलमान का पवित्र कर्तव्य है। इसी को वे धर्म मानने लगे।

मजहब मे कट्टरता का बडा महत्व है। जो जितना अधिक कट्टर होगा, वह उतना ही अधिक आदरणीय माना जायेगा। मुसलमानो ने कुरान के और ईसाइयो ने बाइबिल के ऐसे विचित्र अर्थ निकाले कि मजहब के प्रचार के लिए उन्होने सैकडो हजारो लोगो को कत्ल कर दिया, जिन्दा जला दिया। ये मज़हब पाच महाव्रतो वाले धर्म से बहुत दूर, ठीक दूसरे ध्रुव तक पहुच गये, अधर्म की सीमा मे प्रवेश कर गये।

अफगानिस्तान में युद्ध

इस समय अफगानिस्तान मे युद्ध छिडा है। तालिबान आतकवादियो के विरुद्ध अमेरिका और अन्य ४० राष्ट्रो ने मिलकर अभियान शुरू किया है। तालिबान का कहना है कि वे इस्लाम की रक्षा के लिए लड रहे है, इसलिए दुनिया भर के मुसलमानो को अमेरिका और उसके साथी देशो के विरुद्ध जिहाद (मजहबी युद्ध) छेड देना चाहिए।

जिहादी

सन् १९९४ ई तक अफगानिस्तान पर मुजाहिदीन (जिहादियो) का कब्ज़ा था। उन्होने रूसी सेनाओ के विरुद्ध जिहाद लड कर रूसियो को अफगानिस्तान से निकल जाने को विवश कर दिया था। उन मुजाहिदीन से तालिबान की अब भी लडाई चल रही है। मुजाहिदीन भी वैसे ही धर्मान्ध मुसलमान है, जैसे कि तालिबान। पर अधिक कट्टर तालिबान मुजाहिदीन को मुसलमान ही नहीं मानते। कुरान मुसलमान को मुसलमान से लडने को मना करता है।

जब मुजाहिदीन ने रूसियो को हरा कर काबुल पर अधिकार किया, तब अफगानिस्तान मे हज़ारो हिन्दू रहते थे। मुजाहिदीन ने तुरन्त उन सबको वहा से खदेड दिया। जब तालिबान जीत गये, तब उन्होने वहा कठोर इस्लामी कानून लागू कर दिया। इस्लाम से भिन्न कोई अन्य धर्मावलम्बी वहा न रहे। मुसलमान भी लम्बी दाढी रखे, दिन मे पाच बार नमाज पढे। न पढे तो सजा भुगते। स्त्रिया पर्दे मे रहे, पढे लिखे नही, दफ्तरो मे काम-काज न करे।

इस्लामी प्रभुत्व का स्वप्न

सारे ससार मे इस्लामी शासन स्थापित करना उन्होने अपना लक्ष्य घोषित किया। कोसोवो, फिलस्तीन, फिलिपाइन्स, कश्मीर, चेचन्या आदि देशो मे उन्होने प्रशिक्षित आतकवादी सैनिक लडने के लिए भेजे, जिन्होने सोते हुए निहत्थे लोगो की हत्याए की।

इस समय स्थिति ऐसी है कि ससार मे मुसलमानो की सख्या एक अरब से ऊपर होते हुए भी औद्योगिक, वैज्ञानिक, सामरिक दृष्टि से वे पिछडे हुए है। आर्थिक दृष्टि से वे कम समृद्ध नही है। सऊदी अरब, ईरान, ईराक, कुवैत, लीबिया, सीरिया आदि देशो को पैट्रोलियम से बैठे

(शेष पृष्ठ १० पर)

इंग्लैंड में वेद प्रचार की यात्रा पर

(गताक से आगे)

❑ ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त, बी.ऐस.ऐम.

लदन हीथरो विमान पत्तन से बरमिघम ले जाने वाली कोच मे अधिक यात्री न थे। अगली तीन चार कुर्सियो पर मै अकेला ही था। ऐसी दशा मे वाचाल भी मूक हो जाते है। बिना औपचारिक परिचय के कोई किसी से नहीं बोलता। अन्य यात्री से अखबार माँग कर पढने का प्रश्न ही नही उठता। यदि वृद्धा कडक्टर अधेड ड्राइवरसे मौसम की बात न करती रहती, तो मै समझता यह गूँगो की बस है। बिल्ली के भाग्य मे छीका टूटा। चलती बस मे मै ध्यान लगा सका।

एक महिला स्वर ने ध्यान भग किया, किन्तु वह मेनका न थी। वृद्धा कण्डक्टर जानना चाहती थी कि क्या मै कॉफी या कोल्ड ड्रिक पीना चाहता हूँ। मूल्य पाउन्ड मे था, एक ब्रिटिश पाउड बराबर ६७ भारतीय रुपये। गणित मे कमज़ोर होने के बावजूद, गुणा करने पर जो राशि आयी, वह मेरे उत्तर के पीछे की प्रेरणा थी। दबी ज़बान मे मैने कहा "जी नही, धन्यवाद!" फिर, बस मे ही स्वच्छ शौचालय मे जाकर मुँह धो लिया।

मोटरवे

लदन और बरमिघम को जोडने वाला ६ लेन का स्वच्छ व चौडा राजमार्ग कहलाता है मोटर वे। अनेक मोटर वे है, जहाँ कारे ७० मील प्रति घटा की गति से दौडती है। युवा वर्ग गति सीमा का उल्लघन करके आनदित होता है। पुलिस पकड कर जुर्माना करती है, तो क्या हुआ? मस्त मौला की जेब मे हुआ छेद उमग की उछाल कम नही कर पाता। यात्रियो की सुविधा के लिए मोटर वे (और अन्य ए, बी, सी श्रेणी की सडको) पर मार्ग दर्शन के लिए बडे-बडे सूचना पट्ट है। वरिष्ठ नागरिक उन्हे बिना चश्मे के पढ सकते है। उसी के आधार पर मैने जाना कि मार्ग मे है एक नगर, स्ट्रैटफोर्ड अपौन एवन—विश्व विख्यात अग्रेज़ी नाटककार शेक्सपियर का जन्म स्थल और क्रीडा स्थली। मन मे सोचा, समय निकाल कर किसी सप्ताहान्त जाऊगा। ख्याली पुलाव पकाते-पकाते झपकी आ गई। सपने मे मैने अपना एक वेद प्रवचन दोहरा डाला। कान मे भनक पडी अतिम पडाव, डिगबेथ कोच स्टेशन, बरमिघम।

प्रेममय स्वागत

मुस्कान भरी भारतीय छवि, नमस्ते नमस्ते, फिर परिचय। महाशय गोपाल चन्द्र, आर्य समाज वैस्ट मिड्लैड्स के पूर्व प्रधान और वर्तमान सरक्षक। ८० वर्षीय गोपाल चन्द्र जी कर्मठ आर्य है। फुर्तीले है। मेरा भारी सामान स्वय उठा कर अपनी कार मे रख लिया और बोले "आज आप मेरे घर मे रहिये।"

कार चलाते-चलाते महाशय जी ने बताया कि आधी शताब्दी पूर्व जब वह बरमिघम आये, तो कोई मन्दिर न था और न था आर्य समाज। न हवन कुड था, न समिधा, न सामग्री। फिर भी, उन्होने सभी हिन्दुओ के वैदिक सस्कार कराये, विशेषकर विवाह और अतिम सस्कार। 'पूजा पद्धति अनेक, सभी हिन्दू एक' इस दर्शन के अतर्गत वैदिक मिशन और बाद मे गीता भवन की स्थापना हुई। बरमिघम के हिन्दू-सिख एकजुट है। अब एशियायी मूल के नागरिक अपने पहनावे मे सडको पर निकल सकते है, पहले का परिधान तो केवल कोट-पैट-टाई ही था। महाशय जी टाई स्वय लगाये हुए थे। मै तो धोती-कुर्ता पहने था। "आप पहले ब्रिगेडियर थे?" उन्होने पूछा। मै इनकार न कर सका। इतने मे उनका बगलानुभा घर आ गया।

घर में नहाना भारतीयो ने सिखाया

२४ घटे बाद स्नान करने मे सच्चा सुख मिला। अग्रेज़ी साहित्य मे "बाथ" (स्नान) की जगह-जगह चर्चा है। इतिहास मे "लेडी ऑफ द बाथ", "नाइट ऑफ द बाथ" व स्थान बाथ की बात बताई गई है। इग्लैड ठडा देश है, नहाने की परम्परा नही के बराबर है। "पब्लिक बाथ" यानी सार्वजनिक स्नानागार होते थे, जहाँ गरम पानी चश्मो से निकलता रहता था। क्रिसमस-ईस्टर जैसे पर्व पर लोग नहाते थे। बाकी दिनो तेल-फुलेल से काम चलाते थे। एक भारतीय दम्पती ने, जिनके आवास मे निजी स्नानघर है, मुझे बताया कि इग्लैड मे अग्रेजो को घर के अन्दर हमाम मे नहाना तो हम भारतीयो ने सिखाया। मैने सोचा कि यह पी ऐच डी पाने के लिए अनुसधान का विषय बन सकता है।

आर्य समाज वैस्ट मिड्लैड्स के प्रधान, डा नरेन्द्र कुमार आर्य अपनी नयी मर्सीडीज़ कार मे शाम को मुझसे मिलने चन्द्रा जी (अग्रेज़ी मे "चन्द्र" बन जाता है "चन्द्रा") के घर आये। तपाक से मिले। आर्य समाज टाडा की खूब बाते हुई। परिवार मे प्रधानो की धूम है पिता प्रधान, बड़े भाई प्रधान और नरेन्द्र जी बरमिघम के प्रधान। हास-परिहास मे कितना समय बीत गया, पता ही नहीं चला। स्थानीय "रेडियो ऐक्स ऐल" मे कल सुबह आठ बजे मुझे सक्रिय भाग लेना है और वैदिक धर्म के सिद्धान्त किस प्रकार प्रसारित किये जाए, उसकी रूप रेखा आकाशवाणी- अनुभव आधारित हो। मुझे रात का "होम वर्क", स्कूल जाने से पहले ही मिल गया।

निर्धारित समय से पाँच मिनट पहले चन्द्रा जी ने, जिन्हे अब मै भ्राता जी कहने लगा था, मुझे सामान सहित रेडियो स्टेशन पहुचा दिया। वहीं से आर्य समाज भवन के अतिथि कक्ष तक मुझे एक अन्य कार्य से जाना था। भ्राता जी के घर एक महीने रहने मे प्रशासनिक कठिनाइया थीं। उनकी पत्नी परलोकवासी हो चुकी थीं, बच्चो ने बडे होकर अन्यत्र अपने-अपने नीडो का निर्माण कर लिया था। हाँ, साथ ले गये सस्कार। रेडियो स्टेशन कार पार्क मे आर्य समाज के पूर्व प्रधान, श्री कृष्ण चोपड़ा और वर्तमान पुरोहित सोनेराव आचार्य आ चुके थे। औपचारिक अभिवादन के बाद हम तीनो प्रवेश द्वार की ओर बढे, भ्राता जी हिन्दू काउसिल के काम से अन्यत्र चले गये।

रेडियो स्टेशन

रेडियो स्टेशन का प्रवेश द्वार बन्द था। न चौकीदार और न दर्बान। आश्चर्य हुआ। कृशन (पजाबी उच्चारण) चोपडा जी ने एक दीवार-बटन दबाया। छिपे कैमरो से हमारी आकृतिया अन्दर टी वी पर देखी जा चुकी थी। अन्दर से स्पीकर पर आवाज़ आयी "परिचय"? कृशन जी इस खेल के अनुभवी खिलाडी थे, उन्होने ही उत्तर दिया। 'क्लिक' की ध्वनि के साथ द्वार खुल गया। अली बाबा की तरह "सिम सिम" कहना भूल जाने से बेचारा कासिम अरब मे जान गवा बैठा था। यह इग्लैड है और हम अग्रेजी भूले नहीं है।

गोष्ठी माने चाय समोसा

बैठक शुरू हुई। न चाय, न पानी। हमें भारत की याद आयी। हिन्दी का काम देखने काश्मीर मे ससदीय समिति आई हुई थी। फोन पर मैने सभी को सूचना दी कि गोष्ठी होगी। ाय-समोसे की बात भी बताई। कई फोन ' ाल करके मैने नौवीं कक्षा मे पढ रही बेटी, ऋचा से पूछा " गेष्ठी के क्या माने?" उसने भोलेपन से कहा "चाय और समोसा"।

अब मै इग्लैड मे हूँ, "रेडियो ऐक्स ऐल" ऐक्सीलेट अर्थात् सर्वोत्तम है। एशियायी मूल के इग्लैड-वासियो मे लोकोक्ति है। नये-नये से नये बम्बइया फिल्मी गाने और एशिया से सम्बन्धित समाचार-विचार तथा वैदिक-हिन्दू भजन, मुस्लिम नात-कव्वाली, क्रिसमस कैरोल आदि सभी कुछ यहाँ से प्रसारित होता है। डॉक्टर अरुण बजाज इसके स्वामी है और डॉक्टर नरेन्द्र कुमार् आर्य के मित्र है। इसीलिए वेद प्रचार अभियान मे नौ दिनो तक नित्य वेद मत्र और व्याख्या केवल पाँच सौ पाउड मे प्रसारित करने को तैयार हो गये है। राशि नगण्य है। आर्य समाज वैस्ट मिड्लैड्स बरमिंघम अपने ३२ वर्षों के अस्तित्व मे पहली बार इलैक्ट्रानिक मीडिया पर वेद प्रचार कर रहा है। प्रचारक को (यानी मुझे) भारत से आमन्त्रित किया है। आर्यों को अपेक्षा है कि रेडियो पर वेद मत्र पाठ और व्याख्या सुन कर बरमिघम वासी अधिक सख्या मे आर्य समाज भवन आयेगे और वेदमार्गी बनेंगे। भविष्य मे, उनका विश्वास निर्मूल नहीं था। पहले दिन की रेडियो बैठक मे आशातीत सफलता मिली। वैदिक विषयो पर लघु चर्चा सुनकर रेडियो वालो ने आर्य समाज का प्रसारण समय दस मिनट से बढ़ा कर एक घटा कर दिया। प्रसारण मूल्य स्थिर रहा। ओम् ध्वज फहर उठा।

आर्य समाज भवन

आर्य समाज (वैदिक मिशन) वैस्ट मिडलैड्स यह नाम है उस जीवन्त सस्थान का, जो मध्य इग्लैड के प्रमुख नगर, बरमिघम मे नीचेल्स क्षेत्र के इर्सकीन स्ट्रीट पर स्थित है। प्रमुख बाजार, सिटी सैन्टर की गगनचुम्बी अट्टालिकाओ से आर्य समाज तक का पैदल मार्ग आधे घटे का, बस से दस मिनट और कार से पाँच मिनट। मेरा पैदल प्रेम देख कर, डॉक्टर नरेन्द्र के सकेत पर आर्य समाज ने "एडिडास" वाकिग शूज़ मुझे उपहार मे दिये। मूल्य न पूछिये, राशि जान कर मूर्छित होने का भय है। आर्य समाज भवन मे एक बड़ा हाल है, ३५० श्रोताओ की कुर्सियाँ अग्नि शमन विभाग की सहमति से लगती है। २ अतिथि कक्ष, एक मच, एक कार्यालय, बडा पुस्तकालय, महिला एव पुरुष प्रसाधन कक्ष, वरिष्ठ नागरिक मनोरजन कक्ष, रसोई एव डाइनिग हॉल, रगमच और पुरोहित आवास (अपार्टमेंट टाइप) आदि है। फोन और कम्प्यूटर से सज्जित है। हाँ, स्नान के लिए "शॉवर" नहीं है—न अतिथि कक्ष मे और न पुरोहित आवास मे। आर्य समाज भवन पहले अग्रेजो का रेलवे स्टाफ क्लब था।

नहाने की आवश्यकता न थी, पर्फ्यूम पसीने की गध को सुगध मे बदल देता था। तो क्या मै एक महीने नहाया नहीं? आचार्य सोनेराव का बाल्टी-लोटा किस दिन काम आता। डॉक्टर नरेन्द्र इस ओर ध्यान दे रहे है, 'शॉवर' लगवा कर ही चैन लेगे। प्रधान का पुत्र, प्रधान है।

पहले दिन उपस्थिति कम

वेद प्रचार सप्ताह की पहली सध्या। मेरे मन मे उत्कठा है। श्रोता समूह कैसा होगा, कितना बडा होगा, जिज्ञासु होगे या लगड़ी मारने वाले होगे? परीक्षा की घडी आ पहुँची। मै पहले ही पानी पी चुका था, लघुशका से भी निवृत्त हो चुका था। मच वक्तृता के नियमो का अक्षरश पालन कर रहा था। आर्य-समाज भवन के सभागार मे अधिकारी और उनकी पत्निया आ चुके थे। अन्य श्रोताओं की सख्या थी केवल आठ, बाद मे बढकर दस हो गई। डॉक्टर नरेन्द्र कुमार, प्रधान आर्य समाज ने मेरा परिचय दिया और बुलाने की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। श्रोताओं की कम सख्या से निराशा की झलक कहीं दिखाई नहीं दी। आमन्त्रित किये जाने पर मैने सामूहिक सस्वर गायत्री मत्र पाठ कराया और प्रवचन आरम्भ किया। विषय मन की शान्ति। वेदमंत्र और व्याख्या से मिली मन की शान्ति।

आर्य समाज भवन में अंतत उपस्थिति बहुत बढी। .कैसे? आइये देखते है। (क्रमश.)

"उपवन", ६०९, सेक्टर-२९,
नोयडा-२०१३०३, भारत

महात्मा गांधी के विलक्षण पूर्वज

श्री देवेन्द्र कुमार

गुजराती भाषा में 'गांधी' शब्द का अर्थ होता है—परचून का दुकानदार। आज भी गुजरात मे मिर्च मसाले और देसी जड़ी बूटियों की दुकान को 'गाधी की दुकान' कहते है।

आदि गांधी

'लाल जी' गाधी परिवार के आदि पुरुष थे और जूनागढ़ दरबार की लगान वसूली करते थे। लेकिन राज्य की खटपट से नाराज होकर उन्होंने लगान वसूली का कार्य छोड दिया और कुछ दिनो तक परचून की दुकान चलाई। तब से लाल जी 'गाधी' उपनाम से पहचाने जाने लगे और युग पुरुष मोहन दास कर्म चंद को विरासत मे प्राप्त होकर 'गाधी' शब्द विश्व विख्यात हो गया।

राज्य के दफ्तरी

लाल जी के पुत्र रामजी गाधी पोरबन्दर राज्य मे गृहमत्री (दफ्तरी) थे। रामजी गाधी के पुत्र थे—रहीदास गाधी। रहीदास गाधी के दो पुत्र थे—हरजीवन गाधी और दमण गाधी। इन्ही हरजीवन गाधी ने १७३० ई मे पोरबन्दर नगर मे एक तिमजिला मकान बनवाया, जिसमे प्यारे बापू ने जन्म लिया था। यह पवित्र और ऐतिहासिक भवन आज भी विद्यमान है और राष्ट्र की अमूल्य सम्पदा है।

ओता गाधी

हरजीवन गाधी के पुत्र उत्तमचद हुए, जो 'ओता गाधी' के सक्षिप्त नाम से विख्यात थे। ओता गाधी आजानुबाहु थे। यह लक्षण महापराक्रमी पुरुषो का होता है। ओता गाधी प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होने अपनी प्रतिभा और पुरुषार्थ से पोरबन्दर राज्य का मन्त्री पद प्राप्त किया था। पोरबन्दर के तत्कालीन शासक राणा खिमजी अपने मन्त्री की कर्त्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी और स्वाभिमान पूर्ण व्यवहार से बडे प्रसन्न थे। दुर्दैव से राणा साहब अधिक जीवित नही रहे और छोटी आयु में ही विधवा रानी रुपालीबा पर नाबालिग कुवर विकमातजी को छोडकर स्वर्ग चले गए।

रानी साहिबा बडी हठीली गर्वीली महिला थी। सत्ता पाकर उनका अहकार और बढ गया। राज-काज का सारा कार्य ओता गाधी संभालते थे। वे रानी की ~~चापलूसी~~ तो नहीं कर सकते थे, परन्तु राज्य का कार्य योग्यता और ईमानदारी से करते थे। रानी रूपालीबा की एक मुहचढी दासी थी। उसने राज्य के खजाची खीमा भडारी से कुछ पैसो की याचना की। परन्तु ईमानदार खजाची ने मना कर दिया। इस पर रानी ने भण्डारी को पकड़ लाने का आदेश सिपाहियों को दिया। मृत्यु के डर से वह भागकर दीवान ओता गांधी के घर पहुंच गया। घर पर उस समय दीवान जी मौजूद न थे, केवल उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई मौजूद थी। दीवान जी लौटे और रानी से मिल कर यह समझाने का प्रयास किया कि खीमा भण्डारी ईमानदार व्यक्ति है और उसको दण्डित करना अनुचित है।

ओता गांधी की दृढ़ता

परन्तु रानी हठीली थी। तब ओता गाधी भी अड गए और उन्होने रानी को कह दिया उनके जीवित रहते खीमा भण्डारी को कोई हाथ भी न लगा सकेगा। ऐसी अनीति और अन्याय से तो उनका दीवान पद कलकित होगा। यह सब कहकर ओता गाधी अपने घर चले गए। इस पर रानी ने फौज को हुक्म दिया कि ओता गाधी का घर तोप से उडा दिया जाये। ओता गाधी न समस्त बाते घर के सदस्यो मा, पत्नी और पुत्रो को बताई। सब लोग घर के बीच वाले कमरे मे बैठ गए और घर मे छिपे खीमा भण्डारी को चुपके से पोरबन्दर के बाहर भेज दिया। तोपे चल। और ओता गाधी के घर की पत्थर की दीवारो पर गोले बरसने लगे। कम्पनी के रेजीडेट को जैसे ही यह सूचना मिली उन्होने रानी को इस उद्दण्डता से रोका। तोपे वापस चली गई। ओता गाधी ने दीवान पद से त्यागपत्र दे दिया। उनके मकान को राज्य ने सामान सहित जब्त करके सील कर दिया।

उल्टे हाथ से सलाम

निष्कासित ओता गाधी जूनागढ रियासत के अन्तर्गत विद्यमान कुतियाणा (गाधी परिवार का मूल स्थान) ग्राम मे रहने लगे। तभी जूनागढ के नवाब ने उन्हे सम्मानपूर्वक अपने दरबार मे आमत्रित किया। कहा जाता है कि ओता गाधी ने नवाब को उल्टे हाथ से सलाम किया। यह असभ्यता पूर्ण व्यवहार था और दण्ड योग्य था। किसी ने पूछा—यह कैसी बेअदबी? ओता गाधी ने कहा—सीधा हाथ तो पोरबदर को समर्पित है। समझदार नवाब ने बहादुर दीवान के समर्पण को समझा और उनकी एकनिष्ठा और स्वामी भक्ति से प्रसन्न होकर ओता गाधी और उनके वशजो को तुतियाणा मे चुगी मुक्त व्यापार करने का अधिकार प्रदान किया।

करमचन्द गाधी

युग द्रष्टा महात्मा गाधी को सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता एव निर्भयता का वरदान सम्भवत अपने इन्ही अद्भुत पूर्वजों से प्राप्त हुआ था। इन्ही ओता गाधी की दो विवाहित पत्नियां थीं। दूसरी पत्नी लक्ष्मीबाई के पुत्र का नाम करमचद गाधी था। उन्हे कबा गांधी के नाम से भी जाना जाता था। वह पिता की तरह बिलक्षण बुद्धि, अद्भुत कौशल, ईमानदार एव निर्भयता जैसे गुणो से सम्पन्न थे। ये कबा गाधी या कर्मचद ही युगद्रष्टा महात्मा गाधी के पिता हुए। आप अपने पिता ओता गाधी के समय मे जूनागढ के नवाब के यहा नौकरी करते थे। पोरबदर राज्य की शासिका रूपालीबा का जब देहान्त हो गया और महाराणा विकमातजी राज्याधिकारी बने, तब पोरबन्दर राज्य पर २० लाख रुपयो का कर्ज था। यह दुरवस्था रानी के ढीले एव निरकुश शासन के कारण हुई थी। जब राजा विकमातजी राज्य की कुव्यवस्था के कारण परेशान हो गए तो उन्होने कबा गाधी को पोरबन्दर के दीवान पद के लिए आमन्त्रित किया। कबा गाधी ने रानी रूपालीबा के द्वारा प्रदत्त सत्रास का वर्णन किया कि कैसे उन्होने उनके पैतृक मकान पर तोपो से हमला करवाया और मकान को जब्त कर लिया। तब राजा के आदेश से पुराना सील हुआ मकान खोला गया और पूरे सामान के साथ कबा गाधी को सौप दिया गया। इन्ही कबा गाधी ने एक के बाद एक चार विवाह किए। चौथी पत्नी पुतली बाई से उनका विवाह १८५७ के क्रान्ति वर्ष मे हुआ। उस समय इनकी आयु ३५ वर्ष एव पुतलीबाई की उम्र १४ वर्ष की थी। इस पत्नी कबा गाधी के तीन पुत्र और एक पुत्री हुई। बडे बेटे का नाम लक्ष्मीदास, दूसरे का नाम करसन दास एव तीसरे पुत्र का नाम मोहनदास था। पुत्री का नाम गोकी। मोहन दास ही बडे होकर महात्मा गाधी के रूप मे विख्यात हुए।

कुटुम्ब पालक

कबा गाधी बडे कुटुम्ब वत्सल थे। दूर पास के हर तरह के रिश्तेदारो को अपने पास रखते। भाई-भतीजो और उनके बेटो को शिक्षा देते। कबा गाधी की सहायता से कम-से-कम बीस-पच्चीस रिश्तेदार पोरबन्दर और आसपास के राज्यो मे काम करते। जब भोजन करने बैठते तो २०-२५ लोगो के लिए थालिया परोसी जाती थीं। त्यौहार-उत्सव के दिनो मे यह सख्या बढकर सौ हो जाती। इस बृहद् परिवार का कबा गाधी अकेले ही पालन करते। घर की हर बहू-बेटी की आवश्यकता, शादी, रिश्ता, गौना, दु ख, बीमारी सबसे अवगत रहते। उनका गृहस्थाश्रम एक आदर्श था। वह एक श्रेष्ठ कुलपति थे। कबा गाधी ने पोरबन्दर राजकोट और वाकानेर तीन राज्यो के दीवान का काम ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और नि स्पृहता से किया।

राजकोट के दीवान

कबा गाधी ने २५ वर्ष तक पोरबन्दर राज्य की सेवा की। पुन ५ वर्ष तक राजकोट राज्य के दीवान पद पर रहे। राजकोट के राजा ठाकुर बावाजीराव अपने वृद्ध अमात्य कबा गाधी की बडी इज्जत करते थे। पिता तुल्य दीवान के सामने कभी शराब नही पीते थे। शराब पीने की तैयारी मे होते और पता चलता कि दीवान साहब आ रहे है तो बोतलो को इधर-उधर खिसका कर ही दीवान से मिलते। शराब पी हुई हालत मे कभी कबा गाधी के सामने नही आते। यह था कबा गाधी के पुण्य तेज का प्रभाव। वह अपने धर्मतेज से राजा को भी अकुश मे रख सकते थे।

राजकोट राज्य के बडे आग्रह पर कबा गाधी ने ४०० गज का जमीन का भूखण्ड स्वीकार किया और उस पर अपना मकान बनवाया। दीवान की हस्ती के व्यक्ति थे, चाहते तो अपार सम्पत्ति सग्रह कर सकते थे। मगर रहने के घर के सिवा वह अपने पुत्रो के लिए कुछ नही छोडकर गए। जो कुछ कमाया भाई-भतीजो और बृहद् परिवार के भरण पोषण मे लगाया। १९०६ मे मोहनदास गाधी ने स्वय यह मकान अपने बडे भाइयो के नाम कर दिया था। स्वय मोहन दास कर्म चन्द गाधी के लडको और पौत्रो के पास भी कोई पैतृक सम्पत्ति नही थी।

राजकोट का उपर्युक्त मकान कबा गाधी का डेला नाम से प्रसिद्ध है। राजकोट के तागेवाले, रिक्शावाले, इस मकान से परिचित है। अब यह जगह सरकार ने खरीद ली है और वहा पर फोटो और पुस्तको का एक सुन्दर गाधी स्मृति सग्रहालय है।

५३/३१५, भारी पानी आवास, रावत
भाटा, (राजस्थान) पिन-३२३३०५

राज्य स्तरीय सामाजिक चेतना महासम्मेलन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत महर्षि दयानद सरस्वती के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य मे २४ नवम्बर शनिवार को डी ए वी पब्लिक स्कूल जीद मे राज्य स्तरीय सामाजिक चेतना महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप मे हरियाणा के राज्यपाल श्री परमानन्द ने आना स्वीकार कर लिया है तथा समारोह की अध्यक्षता डी ए वी कालेज प्रबध समिति के प्रधान श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा जी करेगे। इस अवसर पर डी ए वी पब्लिक स्कूल जींद के नये भवन का उद्घाटन महामहिम श्री परमानन्द जी के करकमलो से किया जायेगा।

प्राचार्यों का वैदिक चेतना शिविर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी प्रबधक समिति के सौजन्य से दिनाक १३ तथा १४ अक्टूबर, २००१ को डी ए वी पब्लिक स्कूल, गुडगॉव के प्रागण मे वैदिक चेतना शिविर का आयोजन हुआ।

इस आयोजन मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी कॉलेज, प्रबधक समिति के अनेक प्रतिष्ठित गण्यमान्य अधिकारियो तथा हरियाणा क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयो के प्राचार्य-गण ने भाग लिया। वैदिक चेतना शिविर का उद्घाटन डा सी प्रकाश (उप-प्रधान, डी ए वी कॉलेज प्रबधक समिति) ने सामूहिक यज्ञ करके दीपशिखा को प्रज्वलित कर किया। शिविर की प्रेरणा सभा मत्री श्री प्रबोध महाजन तथा श्री हरबस लाल कपूर ने दी। श्री जी डी जिन्दल ने उसे कार्यान्वित किया।

शिविर मे सम्मिलित हुए डी० ए० वी० के प्राचार्यगण।

दिनाक १३ १० २००१ को प्रात ईश स्तुति के मगल मत्रोच्चारण तथा हवन से कार्यक्रम का शुभारभ हुआ। इस अवसर पर श्री आर आर भला, श्री रामनाथ सहगल, श्री बलदेव जिदल की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा को बढाया।

शिविर के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए श्री जिदल ने "विश्व को आर्य बनाओ' इस उद्घोष के साथ ही निर्धारित सकल्प को पुष्ट किया। वैदिक मूल्यो के प्रति जनजागरण एव आस्था भाव को उद्घाटित करने के लिए किस प्रकार प्राचार्य जन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है, इस बात पर भी बल दिया गया।

सम्मेलन के प्रथम-सत्र मे डा महेश विद्यालकार ने 'वैदिक सस्कृति और यज्ञ' विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। आपने वर्तमान सदर्भ मे भौतिकता एव आध्यात्मिकता के समन्वय की आवश्यकता पर विचार प्रकट करते हुए वैदिक सस्कृति व राष्ट्रीय भाव के प्रसारण पर बल दिया।

दीप प्रज्वलित करते हुए डा० सी० प्रकाश।

द्वितीय वक्ता श्री वेद प्रकाश श्रीओत्री ने स्वामी दयानद जी द्वारा रचित ३८ ग्रथो पर क्रमश प्रकाश डाला। 'ऋषि ग्रथो मे सपूर्ण जीवन-विज्ञान निहित है', प्रस्तुत तथ्य की पुष्टि युक्ति सगत तर्क एव प्रमाणो के आधार पर की गयी। पूछे गये प्रश्नो का सतोषजनक समाधान भी प्रस्तुत किया गया।

द्वितीय सत्र के वक्ता श्री रत्न सिह जी ने आर्य समाज के नियमो व मान्यताओ की व्याख्या की।

स्वामी धर्मानद जी ने आधुनिक जीवन प्रणाली मे योग के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, पतजलि के 'अष्टाग योग' के विभिन्न चरणो की क्रमेण व्याख्या प्रस्तुत की तथा योग एव विज्ञान के सबध पर भी प्रकाश डाला। ध्यान एव प्राणायाम की विधि, क्रिया रूप मे सिखायी गयी।

प्राचार्यवृद को विभिन्न समूहो मे विभाजित कर वैदिक चेतना के व्यावहारिक क्रियान्वयन हेतु कार्यशाला सम्पन्न हुई।

दिनाक १४ १० २००१ को शिक्षाविद् श्री टी आर गुप्ता ने वैदिक मूल्यो की व्याख्या करते हुए २१वी सदी मे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इनकी आवश्यकता को स्पष्ट किया तथा विश्वशान्ति के लिए वैदिक मूल्यो की उपादेयता पर बल दिया।

डी ए वी प्रबधक समिति के सचिव श्री पूनम सूरी ने 'इमेज मैनेजमेट (Image Management, विषय को अति आधुनिक विचारधारा तथा वैज्ञानिक तथ्यो, युक्तियो के माध्यम से स्पष्ट किया तथा विषय को 'प्रोजेक्टर' पर आकर्षक रूप मे प्रस्तुत भी किया।

द्वितीय सत्र मे सुश्री डा शशि प्रभा जी ने 'आर्य समाज और नारी जागरण' विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। आपने वैदिक काल मे नारी के वर्चस्व पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि नारी ही समाज की निर्मात्री है, मातृशक्ति के रूप मे वह सर्वदा वदनीय है। मध्य काल मे नारी की स्थिति मे पतन आया, किंतु आर्य समाज ने नारी को वेद-अध्ययन व शिक्षा का अधिकार प्रदान कर नारी शक्ति की महिमा को पुन प्रतिष्ठित किया।

ब्रिगेडियर श्री चितरजन सावत ने 'सामाजिक जागरण मे आर्य समाज की भूमिका' को स्पष्ट करते हुए सामाजिक बुराइयो, अधविश्वास, भ्रष्टाचार, दहेज-प्रथा, नशीले पदार्थो के सेवन आदि बुराइयो के उन्मूलन पर उदाहरण सहित चर्चा की।

डा महावीर द्वारा 'वेद, उपनिषद, और दर्शन' विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। आपने स्पष्ट किया कि वेदो व उपनिषदो मे सृष्टि के विज्ञान व मानव कल्याण के लिए आचार सहिता की सपूर्ण जानकारी है। वेद उपनिषद के ज्ञान मात्र से ही अभ्युदय सभावित है।

समारोह के अत मे जस्टिस मित्तल ने आशीष-वचन के रूप मे सभा-जन का आह्वान करते हुए वैदिक मूल्यो के प्रति वर्तमान पीढी मे निष्ठा व आस्था भाव के सचार एव प्रसार की आशा व्यक्त की।

कार्यक्रम के समापन पर विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अनिता मक्कड जी के कुशल सचालन की सराहना की गयी।

न्यायमूर्ति श्री आर० ऐन० मित्तल का स्वागत करते सभामत्री श्री प्रबोध महाजन।

ऋग्वेद यजुर्वेद

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

जन चेतना यात्रा

का विशेष आयोजन

पजाब की आर्य समाजो एव डी० ए० वी० सस्थाओं द्वारा अपने नगरो मे

शनिवार : दिनांक ३ नवम्बर २००१ को

प्रात ११ बजे से दोपहर १ बजे तक किया जा रहा है। इस यात्रा के माध्यम से भारतीय समाज मे फैली हुई प्रमुख सामाजिक कुरीतियो (भ्रष्टाचार, भ्रूण हत्या, जात पात एव दहेज प्रथा आदि) के उन्मूलन के सम्बन्ध मे सर्व साधारण को जागृत किया जाएगा।

आप सपरिवार एव इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित है।

निवेदक

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब

कार्यालय साईदास ए० एस० सी० सै० स्कूल, पटेल चौक, जालन्धर

सामवेद दूरभाष कार्यालय २८१४६८ निवास २५५६७१ अथर्ववेद

विवाह पर इतना आडम्बर अपव्यय क्यों?

❑ श्री छोगमल चौधरी

(श्री छोगमल चौधरी ने सार्वदेशिक साप्ताहिक मे एक महत्त्वपूर्ण विषय की ओर ध्यान आकृष्ट किया है—विवाह सस्कारो पर निरर्थक आडम्बर और धन का अपव्यय। उसी लेख का सार सक्षेप यहा प्रस्तुत है।—स०)

विवाह एक युवक और एक युवती के साथ मिलकर रहने, सन्तान उत्पन्न करने और परिवार का पालन पोषण करने की वचन बद्धता का आनन्दपूर्ण अवसर होता है। न केवल सम्बन्धित युवक और युवती विवाह के लिए इच्छुक और उत्सुक होते है, अपितु उन दोनो के माता-पिता तथा अन्य सगे सम्बन्धी भी इस अवसर पर प्रसन्न और आनन्दित होते है और उनके मगलमय भविष्य की कामनाए करते है।

विवाह की उमग मे खूब धूमधाम की जाती है। घर सजाया जाता है, नये वस्त्र खरीदे और सिलवाये जाते है। नई गृहस्थी के लिए आवश्यक सामान, बर्तन, पलग, मेज-कुर्सी आदि जुटाये जाते है। गहने बनवाये जाते है। बैड बाजे और आतिशबाजी का प्रबन्ध किया जाता है। वर पक्ष ने क्या कुछ दिया और कन्या पक्ष ने क्या दहेज दिया, इसका अभिमानपूर्वक प्रदर्शन किया जाता है। सैकडो लोगो को प्रीतिभोज कराया जाता है।

किसी भी सुसस्कृत आर्य (हिन्दू) परिवार मे विवाह पर इतना अपव्यय क्यो होना चाहिए? **'यद् यदाचरति श्रेष्ठस्ततत्तदेवेतरो जन'** (बडे लोग जो कुछ करते है, दूसरे सामान्य लोगो को भी वही करना पडता है)। यदि बिरादरी का एक सदस्य बेटी के विवाह पर (शामियाना, बैड बाजा, रोशनी, आतिशबाजी, प्रीतिभोज, दहेज आदि पर) ५ लाख रुपये खर्च करता है, तो उसकी स्पर्धा मे अन्य सदस्यो को ५ नही तो ४ लाख रुपये तो खर्च करने ही पडेगे और ९० प्रतिशत लोग ऐसे होगे, जिनकी कमर इतना खर्च करने मे टूट जायेगी।

अच्छी रूढिया आसानी से नहीं बनतीं, परन्तु बुरी रूढिया तुरन्त जडे जमा लेती है। विवाहो पर फिजूलखर्ची की कुप्रथा उसमे से एक है। एक दिन के दिखावे के लिए पूरा परिवार वर्षो तक दरिद्रता मे रहने के लिए विवश हो जाता है।

यह दहेज का प्रश्न नहीं है, एक कुत्सित सामाजिक व्याधि है—कोढ़ से भी बुरी। दहेज देना और मागना बुरी बात है। दहेज न मिलने पर लडना झगड़ना तो राक्षसी आचरण है। परन्तु दहेज मे लिया दिया गया धन घर मे तो रहता है। किसी पक्ष के काम तो आता है, परन्तु शामियाने, रोशनी, आतिशबाजी, बैड बाजे और हजार आदमियो के प्रीतिभोज पर व्यय किया गया व्यय तो नाली में गया जैसा है।

विवाह मे आठ दस इष्ट बन्धु उपस्थित हो, तो ठीक है। विवाह हुआ, इसका साक्ष्य भी रहना चाहिए। परन्तु विवाह मे सारा शहर इकट्ठा हो जाये, इसकी कोई आवश्यकता नही है। इसे अपने बडप्पन का चिह्न मान लिया जाये, यह और भी बुरी बात है।

बुरी बात इसलिए है कि इसके लिए लोगो मे होड लग जाती है। विवाह जैसे सस्कार मे, जो गरीब-अमीर, सभी को करना होता है, इस प्रकार का प्रदर्शन बन्द होना चाहिए, इसे फूहड और निन्दनीय समझा जाना चाहिए।

वर पक्ष और कन्या पक्ष एक दूसरे से क्या लेते-देते है, इसमे कानून कुछ नही कर सकता। कानून बन जाने पर भी उसे लाघने के सौ रास्ते निकल आयेंगे। विवाह के समय दहेज या लेन-देन का प्रदर्शन न हो, यह केवल सामाजिक चेतना से हो सकता है। समाजे, बिरादरिया और पचायते यह सकल्प करे कि इस प्रकार के आडम्बर और प्रदर्शन घृणित माने जायेगे। जो लोग ऐसे आडम्बर करेगे, उन्हे काला बाजारी, भ्रष्टाचारी, चोर या डकैत माना जायेगा। नही तो इतना धन आया कहा से? सरकारी कर की चोरी की होगी।

सामान्य बुद्धि से भी सोचा जाये, तो इस प्रकार के दिखावे पर इतनी राशि खर्च कर डालने का कोई औचित्य नही है। लाख दो लाख रुपये से नवदम्पती को जीवन यात्रा शुरू करने के साधन जुटाये जा सकते है। आज के बेरोजगारी के युग मे तो यह और भी आवश्यक हो गया है।

लज्जा की बात यह है कि जो स्वय को धनी जताने वाले लोग इस प्रकार अन्धाधुन्ध पैसा फूकते है, उनसे यदि कहा जाये कि वे किसी गरीब कन्या के विवाह मे सहायता के लिए कुछ सहयोग दे दे, तो वे सौ रुपये भी निकाल कर नही दे सकेगे। अपरिचित की बात छोडिये, अपने परिवार के ही गरीब सदस्यो की बेटियो की सहायता नही कर सकेगे। इतनी स्वार्थपरायणता से विपुल धनराशिया सचित होती है।

लक्ष्मी का वाहन उल्लू को कहा गया है। पश्चिमी देशो मे उल्लू को बुद्धिमान माना गया है, परन्तु हमारे साहित्य मे उसे 'दिवान्ध' (जिसे दिन मे दिखाई नही पडता) कहा गया है। उल्लू को दिन मे कुछ नही दीखता, पर रात मे सब कुछ दीखता है। लक्ष्मी के कृपाभाजन बने लोगो को दया, परोपकार, जन सेवा की बाते कम सूझती है, अपनी सनके पूरी करने की ओर उनका ध्यान केन्द्रित रहता है।

परन्तु किसी भी समाज के नेता ये लक्ष्मीपुत्र ही होते है। समाज की परम्पराए यही लोग बनाते है। अत जैसे भी हो, इन्ही को समझा बुझा कर सस्कारित करना होगा कि विवाह सस्कार के अवसर पर होने वाले अपव्ययो को रोके। औरो का हित सोचे तो सर्वोत्तम, पर वह न सोच सके, तो भी कम-से-कम अपना हित सोचकर ही रुपया इस तरह न फूके।

ग्राम-वहल, जि हिसार (हरियाणा)

विजय दशमी का सन्देश

❑ **प नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक**

विजय दशमी का पर्व महान।
आर्यो, सुनो लगा कर ध्यान॥
क्षत्रिय पर्व कहाता है यह।
शुभ सन्देश सुनाता है यह।
आर्य जन इसे मनाते थे।
स्वर्ग धरा पर लाते थे।
विजय दशमी का है सन्देश।
मिटाओ जग के सारे क्लेश॥
बनो हनुमत से ब्रह्मचारी।
राम, लक्ष्मण से बलधारी
वीर अगद से रणबका।
काल की करो नही शका।
देवियो, तुम भी अब जागो।
होड फैशन की तुम त्यागो।
बनो तुम सावित्री, सीता।
तुम्हे तो सोते जुग बीता।
बनो दुर्गा, लक्ष्मी रानी।
किरणमयी सी मर्दानी।
आज है दुखी जगत् भारी।
बढे जग मे अत्याचारी।
जुल्म करते है नित पापी।
मचाई है आपा-धापी।
आर्यो, जोश दिखाओ तुम।
घोर सग्राम मचाओ तुम॥
मिटा दो बेईमानो को।
दुराचारी शैतानो को।
अमर पद, वीरो पाओगे।
वीर बाके कहलाओगे।
बजा दो अब रण का डका।
पापियो की फूको लका।
विजय तुम रण मे पाओगे।
बहादुर माने जाओगे।

—ग्राम पोस्ट बहीन, फरीदाबाद (हरियाणा)

आर्य समाज पिनगवा (मेवात) में वेद प्रचार की धूम

मेवात के प्रसिद्ध कस्बा पिनगवा जिला गुडगावा (हरियाणा) मे दिनाक पन्द्रह अक्टूबर मे बाईस अक्टूबर तक वेद प्रचार का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ब्रह्मचारी जयदेव आर्य, प्रसिद्ध कवि प नन्दलाल निर्भय सिद्धातशास्त्री तथा वैदिक विद्वान आचार्य राजेश (राजू) अपने विचारो मे क्षेत्रीय जनता को धर्म लाभ पहुचाएगे।

डा. मेहरचन्द महाजन डी.ए.वी. सैन्टेनरी स्कूल पठानकोट में भ्रष्टाचार उन्मूलन कार्यक्रम

डा ऐम सी ऐम डी ए वी सैन्टेनरी पब्लिक स्कूल, पठानकोट (पजाब) मे ११ अक्टूबर को, भ्रष्टाचार की समस्या की ओर छात्रो का ध्यान आकर्षित करने के लिए, 'भ्रष्टाचार' विषय पर 'इटर-हाउस प्रतियोगिता' आयोजित की गई। इसमे भ्रष्टाचार से सम्बन्धित नाटक, भाषण, कविताओ व नृत्य के माध्यम से छात्रो ने अपने विचार प्रकट किए। इसी विषय पर 'पोस्टर-मेकिग' व 'स्लोगन लिखो' प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

अन्त मे सभी छात्रो ने प्रतिज्ञा ली कि 'खून पसीने की जो मिलेगी तो खायेगे।' प्रिसिपल डा नीना महाजन ने सभी सदनो के प्रयासो की प्रशसा करते हुए कहा कि आने वाली पीढी ही देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सकती है। आवश्यकता है तो सच्चे अन्त करण से किए गए प्रयासो की।

छात्रो द्वारा तैयार किए गए पोस्टरो और नारो का निरीक्षण करने आए स्थानीय मेहमानो ने छात्रो की कला व विचारो की खूब प्रशसा की।

'हम होगे कामयाब' आशावादी गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. विद्यालयों में हिन्दी दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार डी ए वी पब्लिक स्कूल, रिजर्व बैक ऐन्क्लेव, पश्चिम विहार, नई दिल्ली मे १४ ९ २००१ को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। अध्यापको व बच्चो को एकता व अखडता मे हिदी भाषा के महत्व को विदित कराया गया। हिदी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिदी हमारी राष्ट्रभाषा है, इसलिए हमे अपने कार्यालय व पारिवारिक कार्यो मे हिदी का ही प्रयोग करना चाहिए। सभी कार्यो मे हिदी भाषा का प्रयोग करने हेतु प्रस्ताव पारित किया गया।

एक वैदिक प्रचारक के सस्मरण

हिन्द महासागर का मोती : मारिशस

❑ डा० भवानीलाल भारतीय

(गताक से आगे)

मारिशस की विभिन्न आर्य समाजो मे जाकर मुझे विभिन्न विषयो पर अपने विचार देने थे। इस बीच डा उदय नारायण गगू ने यहा के दर्शनीय स्थानो को हमे दिखाने का दायित्व लिया। पाम्प्लेमुस ग्राम का निकटवर्ती वनस्पति उद्यान मारिशस का तो विख्यात पर्यटन स्थल है ही, हमे बताया गया कि इस श्रेणी के वनस्पति उद्यान ससार मे इने-गिने ही है। जब १८अप्रैल को हम पाम्प्लेमुस उद्यान की सैर को निकले, तो मौसम सुहावना था। यहा सहस्रो प्रकार की वनस्पतिया, वृक्ष, लता, पेड-पौधे आदि है। वनस्पति जगत् का इतना अनन्त विस्तार अन्यत्र कहा दिखाई देगा? छोटी पुष्करिणियो मे विकसित कमलो का विराट् वैभव यहा दिखाई दिया। किन्तु आश्चर्यजनक थे वे विशालकाय कमल पत्र, जो बडे-बडे थालो से भी विपुल आकार के थे। जिन सरीसृपों ने हमारा ध्यान आकर्षित किया, वे थे भीमाकार कछुए। इतने विशाल आकार के कछुओ को देखना सचमुच एक नया अनुभव था। जल और समीपवर्ती धरती पर अपना आश्रय खोजने वाला यह विचित्र जीव कितना सवेदनशील होता है, इसमे तो कृष्ण की गीतोक्त साक्षी ही पर्याप्त है।

यथा सहरते चाऽय कूर्मोङ्गानीव सर्वश·।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

(जैसे स्पर्श करने मात्र से कूर्म अपने मुख, पाव आदि को सिकोड लेता है, उसी प्रकार जो व्यक्ति इन्द्रियो को उनके अर्थो से पृथक् कर लेता है, उसे ही स्थितप्रज्ञ कहते है)। वनस्पति उद्यान मे समय-समय पर मारिशस गये भारतीय राजनेताओ द्वारा आरोपित वृक्षो को देखना भी आवश्यक था। इन नेताओ मे भूतपूर्व प्रधानमत्री श्रीमती इदिरा गाधी, राजीव गाधी, देवेगौडा तथा वर्तमान प्रधानमत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा लगाये वृक्ष खासे बडे हो गये है। वाजपेयी जी ने तो उस समय भी इस उद्यान मे पौधा लगाया था, जब वे विरोधी दल के नेता थे। उद्यान से लौटते समय हम स्वल्प काल के लिए ग्राम लावाचीर गये तथा अपने समधी श्री प्रेम जीवन से मुलाकात की।

सर्वधर्म समभाव

भारत और मारिशस के सम्बन्धो मे जो नितान्त आत्मीयता तथा घनिष्ठता है, उसके अनेक कारणो मे प्रमुख है। इन देशो की धार्मिक और सास्कृतिक एकता। मारिशस मे विभिन्न मतावलम्बी अपने-अपने मतो पन्थो मे आस्था व्यक्त करते हुए, भिन्न-भिन्न उपासना प्रणालियो का अनुसरण करते हुए एक दूसरे के साथ एकता के सूत्र मे आबद्ध है। यहा भारत की भाति दिखावे की धर्म-निरपेक्षता नहीं है, अपितु सच्चे अर्थ मे सर्वधर्म समभाव या धार्मिक सहिष्णुता है। अधिसख्य नागरिक परम्परागत हिन्दू धर्म के अनुयायी है, जो विष्णु, शिव आदि देवताओ के उपासक है। प्रत्येक आस्थावान् हिन्दू के घर के बाहर एक छोटा सा देवस्थल होता है, जिसमे महावीर हनुमान् की लघु प्रतिमा स्थापित रहती है। रामदूत हनुमान् यहा 'महावीर स्वामी' कहलाते है और इस लघु देवालय मे रात भर विद्युत् दीप जगमगाता रहता है। प्रतिमा के दोनो ओर दो लाल ध्वजाए फहराती है। आस्थावान् हिन्दू के निवास का यह स्थायी चिह्न है। वैदिक निष्ठा वाले आर्य बधु अपने घरो पर ओम् की ध्वजा लगाते है, जबकि कही-कही ईसाई लोग घर के अहाते मे क्रास का धातु निर्मित प्रतीक लगाते है। ढूढने पर भी इस देश मे जैन और सिख मतावलम्बियो के दर्शन नहीं हुए। तमिल भाषी लोगो के मदिर दाक्षिणात्य शैली के है।

मन्दिर, मस्जिदो से अधिक आर्य समाज

निर्गुण, निराकारोपासक वैदिक धर्मावलम्बी लोग इस देश मे पर्याप्त है। बारह लाख की जनसख्या और ७०० वर्गमील क्षेत्रफल के इस छोटे से देश मे आर्य समाजो की सख्या ४५० है, जो यहा के सनातनधर्मी मदिरो, गिरजाघरो तथा मस्जिदो से भी अधिक है। अपने इस प्रवास के दौरान हमे लगभग पैतीम आर्य मदिरो मे जाने का अवसर मिला। प्राय सभी आर्य मदिरो का स्थापत्य एक जैसा ही है। अधिकाश भवन एक मजिल के हैं। विशाल सभा कक्ष के शिरोभाग मे व्याख्यान मच होता है, जो यज्ञशाला के साथ-साथ प्रवचन स्थल भी बन जाता है। इस व्याख्यान मच की पीठिका को सुन्दर, प्रभावशाली तथा आकर्षक भित्ति चित्रो से सुसज्जित किया जाता है तथा विशिष्ट अवसरो पर विद्युत् दीपो की मालिकाओ से सजाया जाता है। यज्ञ के समय लोहे के यज्ञ कुण्ड रख कर अग्निहोत्र की क्रिया सम्पन्न कर ली जाती है। यूरोपीय देशो की भाति मारिशस मे भी फर्श पर दरी बिछाकर बैठने का रिवाज़ नहीं है। अत सम्पूर्ण सभा कक्ष मे हल्की कुर्सिया लगी रहती है। जो आर्य समाजे अधिक सम्पन्न नही है, वे काष्ठ निर्मित बैचो का प्रयोग करती है। अनेक आर्य भवन दुमजिले तथा अतिथियो के लिए सुविधा वाले कक्षों से युक्त भी है। वाक्वा, बेलरोज़, गुडलैण्ड, माहेबुर्ग, त्रिपोले, लेवनीय, गायत्री भवन (सैण्ट्रल फ्लाक) आदि स्थानो के आर्य मदिर भव्य, विशाल तथा नाना सुविधाओ से युक्त हैं। वाक्वा नगर के काशीनाथ किश्तो विद्यालय के एक विशाल कक्ष मे चलने वाला आर्य समाज भी भव्य साजसज्ञा से युक्त है। तापाक, शामुनी, लालमाटी, बोनाकेई, आमोरी, ग्रोबियो, मागू आदि स्थानो के समाज सादे किन्तु सर्व सुविधाओ से युक्त है।

मारिशस का तीर्थ—गगा तालाब

हमने यहा के दर्शनीय स्थलो मे गगा तालाब को प्राथमिकता दी। जब डा गगू के साथ हिन्दुओ के इस सर्व प्रमुख धर्म स्थल पर पहुचे तो, वहा की नैसर्गिक सुषमा ने जहा हमारे नेत्रो को तृप्त किया, वहा हिन्दू धर्म के बहुदेववादी रूप को भी देखा। प्रमुखत शिवालय ही यहा का प्रधान देवस्थल है, जहा 'मोरिशसेश्वर महादेव' की पिण्डी स्थापित है। कहते है कि पहले इस जलाशय को परी तालाब के नाम से पुकारा जाता था और लोक कथाओ से जुडे इस रमणीय स्थान पर परियो का नाच होता था। कालान्तर मे इसे पवित्र तीर्थ का रूप प्रदान कर दिया गया। सामान्य दर्शनार्थी और उपासक गण तो यहा नित्य आते ही है, शिवरात्रि के पर्व पर अधिकाश हिन्दू जनता भगवान् भूतनाथ के प्रति अपनी श्रद्धा समर्पित करने के लिए एकत्र होती है। तालाब के बीच मे गगा की मानवीय आकार मे भव्य प्रतिमा स्थापित है। गगा के जल मे स्नान करने मात्र से पापो से मनुष्य मुक्त हो जाता है, ऐसी आस्था रखने वाले लोग भी आज के बुद्धिवाद प्रधान युग मे मिलने कठिन नही है। वस्तुत गगातटवर्ती क्षेत्रो मे किसी समय भगवद् भजन, तपस्या तथा साधना मे अपनी आयु को व्यतीत करने वाले योगियो, यतियो तथा तपस्वियो के आश्रम थे। आज तो स्थितियो मे नितान्त परिवर्तन आ गया है। भारतीय सस्कृति मे गगा, यमुना आदि नदियो, हिमाचल, विध्य आदि पर्वतो तथा प्रयाग जैसे सगमस्थलो के महत्त्व को समझना आवश्यक है। महाकवि जगन्नाथ ने तो गगा लहरी की रचना कर शिखरिणी छदो मे भक्ति रस की स्रोतस्विनी प्रवाहित कर दी थी। महाकवि पद्माकर तथा जगन्नाथदास रत्नाकर रचित गगा माहात्म्य के पद्यो के काव्य रस को कैसे भुलाया जा सकता है? भारतीय सस्कृति के रग मे आपाद मस्तक रगे अब्दुर्रहीम खानखाना ने तो निम्न दोहा लिख कर गगा से शिव पद प्रदान करने की याचना की है

अच्युत चरण तरगिणी शिव सिर मालति माल।
हरि न बनायो सुरसरी कीजो इंदव भाल॥

रहीम की गंगा स्तुति

परन्तु खानखाना की गंगा भक्ति रक्त दोहे तक ही सीमित नहीं रही। उन्होने देववाणी का सहारा लेकर देवधुनि (गगा) के माहात्म्य का निम्न प्रकार निरूपण किया—

सुरधुनि मुनिकन्ये तारयेः पुण्यवन्तम्।
स तरति निजपुण्यैस्तत्र कि ते महत्त्वम्।
यदिह यवनजातं पापिन मा पुनीहि,
तदिह तवमहत्त्व महत्त्व महत्त्वम्॥

हे देवनदी, जह्नु ऋषि पुत्री, तुमने तो पुण्यशीलो को ही तारा है, उनका उद्धार किया है। वे पुण्यवान् लोग तो अपने पुण्यकर्मो के कारण अनायास ही भवसागर से तर जाते है। इसमे तुम्हारा क्या महत्त्व है? यदि तू मुझ जैसे यवन कुलोत्पन्न पापी का उद्धार कर दे, तो माना जायगा कि सचमुच तुम्हारा महत्त्व है।

विराट् आर्य धर्म का रूप

रहीम चाहे यवन कुल मे ही जन्मे थे, किन्तु उनसे अधिक धर्मात्मा अन्य कौन था? काश! आज के तालिबान जैसे धर्मान्ध, सकीर्णमति, साम्प्रदायिक दुराग्रह वाले लोगो मे रहीम जैसी उदारता होती तो इस्लाम कट्टरपन के अभिशाप से स्वय को मुक्त कर लेता। गगा तालाब के सुरम्य स्थलो को मारिशसवासियो ने पर्यटन स्थल के रूप मे विकसित किया है। शिवरात्रि पर लाखो सनातनधर्मी लोगो का यहा जुटाव (मारिशस मे प्रयुक्त होने वाला शब्द) होता है, तो आर्य लोग भी यहा आकर बहुकुण्डीय यज्ञो मे आहुतिया प्रदान करते है। इस प्रकार विराट् आर्य धर्म का सगठित रूप विशिष्ट पर्वो पर यहा सर्वत्र दिखाई देता है।

गगा तालाब से लौटते हुए हमने सघन जगल का रास्ता लिया और नाना पर्वतीय उपत्यकाओ, घाटियो और सघन लता-गुल्म-पादपो से आच्छन्न मार्ग से शामुनीग्राम मे पहुचे, जहा मुझे सायकाल को अपना व्याख्यान देना था। २० अप्रैल से आरम्भ हुआ सायंकालीन प्रवचनो का सिलसिला पूरे एक मास, २१ मई तक चलता रहा। इस अवधि मे मैंने वाक्वा (काशीनाथ किश्तो विद्यालय), नुवेल द कुर्वेत, माहेबुर्ग (त्रुआ बुतिक यूनीयन वेल), कार्चिये मिलितेर (अभेदानन्द आश्रम), गुडलैण्ड्स, त्रियोले, लालमाटी, लविनीय, बोनाकेई, पाई (राजधानी पोर्ट लुइस के निकट), मार दाल्बेर, आमोरी, पेची राफ्रे, बो बार्से, लेस्कालिए (वेद भवन), कात्र बोर्न, पितों, ग्रोबिओ, का राबो, मारलाशो, टिशमार (गायत्री भवन), मोंगू, बेल रोज, माहे बुर्ग तथा लावांचीर (गुरुदत्त भवन) आदि स्थानों की आर्य समाजो में व्याख्यान दिये। मारिशस के अधिकांश गांवों के नाम तथा उच्चारण फ्रैंच हैं, क्योंकि यह देश आरम्भ में फ्रैंच शासकों के अधीन रहा।

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वामी विरजानन्द दिवस पर

संस्कृत व्याकरण के तेजस्वी सूर्य : स्वामी विरजानन्द

❑ प मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

बाढ उतर जाने के पश्चात् नदी एकदम शात हो जाती है, किन्तु अपने दोनो कगारो पर न जाने कहा-कहा का कूडा-करकट छोड जाती है। स्वतत्रता-प्राप्ति के लिए सन् १८५७ का महान क्रातिकारी युद्ध कतिपय कारणो से असफल हो गया, तब सम्पूर्ण देश मे एक मुर्दानगी छा गई।

भीषण अकाल

इस क्रांति के ठीक १२ वर्ष पश्चात् देश के पश्चिमोत्तर प्रान्त मे भयकर दुर्भिक्ष पड गया। देश के सभी भागों मे इसकी छाया पडी और सहस्रो लोग कस्बो-ग्रामो को छोडकर शहरो की ओर आने लगे। इन पक्तियो के लेखक के पितामह एव पितामही इस पीडापूर्ण दुर्भिक्ष की रोमाचकारी बाते सुनाया करते थे। यह दुर्भिक्ष बाढ के पश्चात् किनारो का कूडा-कर्कट ही सिद्ध हुआ। इग्लैड मे बैठी विक्टोरिया ने दुखी, पीडित, शोषित भारतीय जनता को शासन-सुधार का एक तोहफा देकर केवल आसू पोछने का कार्य किया, क्तिु बार-बार आसू क्यो आते है, इसके कारणो से अपना मुख मोड लिया। सात-समुद्र पार बैठी महारानी विक्टोरिया द्वारा गुलामो के साथ जो व्यवहार किया गया, वह माता के वात्सल्य, करुणा, त्याग तथा शाति के गुणो के बिल्कुल विपरीत था। विश्व मे गुलाम जातियो के साथ ऐसा ही व्यवहार होता है।

गुरु के द्वार पर

ऐसे विकट समय मे स्वामी विरजानन्द की कुटिया के सम्मुख ३४-३५ वर्षीय हृष्ट-पुष्ट, ६ फुट २ इच लम्बा, गौर वर्ण, चमकता हुआ ललाट धारण किये एक सन्यासी उपस्थित हो गया। यहा आने के पूर्व उक्त युवा सन्यासी मथुरा के रगेश्वर महादेव के मन्दिर मे आकर कुछ समय ठहरा। उस इस युवा सन्यासी के वेश का वर्णन करते हुए बाबू देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय लिखते है—"उस संन्यासी की आयु ३४ या ३५ वर्ष की होगी। उसके वस्त्र गेरुवा थे। कण्ठ (गले) मे रुद्राक्ष की माला लहरा रही थी। हाथ मे एक मात्र एक बडा सा लोटा अथवा घडा था तथा साथ मे कुछ पुस्तके थी। सन्यासी की आकृति मे कुछ विशेषत्व है, उसकी बातचीत और भावभङ्गी मे कुछ असाधारणत्व का परिचय मिलता है। वह कुछ दिन के पश्चात् दण्डी स्वामी विरजानन्द की पाठशाला मे आ पहुँचा और उसने यथारीति प्रणिपात् के पश्चात् पढ़ने की इच्छा प्रकट की।"

सुपात्र को विद्या

निरुक्त के एक श्लोक मे विद्या एक विद्वान् ब्राह्मण से कहती है "मुझे किसी अपात्र को मत देना अन्यथा मेरा रूप कालिमामय हो जायेगा।" स्वामी विरजानन्द जी अपनी पाठशाला मे प्रवेश देते समय छात्र के पात्रापात्रत्व का भली-भाति परीक्षण करते थे। प्रविष्ट छात्रो से वह न तो कोई शुल्क लेते थे और न समाप्ति पर कोई गुरु दक्षिणा। अपने नियम के अनुसार दण्डी सन्यासी ने उपस्थित सन्यासी से २-४ बाते करने के पश्चात् अनुभव कर लिया कि यह सन्यासी विद्यार्थी पूर्ण जिज्ञासु है तथा अनन्य साधारण मेधावी है। कुछ क्षण रुक कर स्वामी विरजानन्द ने कहा "अनार्ष ग्रथो की बाते एकदम भूल जाओ। यदि इन अनार्ष ग्रथो की शिक्षा का अश-मात्र भी मन मे रहेगा, तो आर्ष ग्रथो की शिक्षाबद्ध मूल न हो सकेगी। अत मनुष्य प्रणीत पुस्तको के उपदेश को एकदम भूल जाओ और इतना ही नही, तुम्हारे पास जो मनुष्य प्रणीत ग्रथ है, उन्हे इसी समय यमुना मे फेक आओ।" इस आदेश को सुनकर जब दयानन्द वहॉ से जाने लगे, तब उस उत्कृष्ट सन्यासी ने इस दयानन्द से एक और भी बडी महत्वपूर्ण बात कह डाली "चूकि तुम सन्यासी हो, इससे प्रतीत होता है कि तुम्हारे भोजन और निवास के सबध मे कोई स्थिरता नही हो सकती। इस लिए भोजन और आवास की व्यवस्था स्वय आपको प्राथमिक रूप से करनी होगी।"

कालजिह्व! कुलक्कर!!

अपने शिष्य दयानन्द (सन्यासी) की उच्चकोटि की मेधा, सूक्ष्म, तार्किक बुद्धि का परिचय पाकर विरजानन्द मन-ही-मन अति प्रसन्न होते थे। वे कभी-कभी दयानन्द को कालजिह्व, कुलक्कर कहकर पुकारते थे। न जाने क्यो, गुरुवर्य्य यह शब्द उच्चारित कर मन ही मन अति प्रसन्न होते थे। जब इनकी व्युत्पत्ति पूछी गई, तो इन्हे 'सस्कृत शब्द' कहा गया। इनके अर्थ व्यक्त करते हुए बताया गया—

कालजिह्व—'उसे कहते है कि जिसकी जिह्वा ¨सत्य के खण्डन मे काल (मृत्यु) के समान हो।'

कुलक्कर—'उसे कहते है जो शास्त्रार्थ मे खूटे के समान अविचलित, दृढ रह कर शत्रु पक्ष को परास्त करे।

—स्व देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय

यह युवा सन्यासी भी कोई कम न था। वह तत्काल उन्हे आश्वास्त कर वहॉ से चला गया। परन्तु विरजानन्द पर अपनी छाप छोड गया।

अमर लाल जोशी का सहारा

परमात्मा पर दृढ आस्था रखने वाले सदैव आशावादी एव उच्च मनोबल के होते है। सन्यासी दयानन्द तो इसके साक्षात् अवतार थे। उन दिनो मथुरा मे ज्योतिषी बाबा अथवा जोशी बाबा का घर सदाशयता और आतिथ्य के कारण बहुत प्रसिद्ध था। इस समय जोशी परिवार मे 'अमर लाल' नामक महाशय विद्यमान थे। उनके पूर्वज गुजरात से चलकर यहा आ गये थे। किसी ईश्वरीय प्रेरणा से ही इस युवा सन्यासी से महाशय अमर लाल का साक्षात्कार हो गया। अमर लाल जी भी औदीच्य ब्राह्मण थे। कुछ सौम्य और कुछ साम्य ने परिस्थिति को अनुकूल बना दिया। ब्राह्मण-वृत्ति के कारण वह इस सन्यासी की ओर आकृष्ट हो गये। उस सन्यासी ने अपना मथुरा आने का मन्तव्य आदि सब कुछ बता दिया। तब प अमरलाल ने अपने ही घर पर नियमित रूप से भोजन का प्रबन्ध कर दिया। फिर भी समस्या आवास की शेष रह गई थी। मथुरा के विश्राम घाट के ऊपर वाले भाग मे श्री लक्ष्मीनारायण का मन्दिर है, उसी के नीचे की मजिल की कोठरी मे इस सन्यासी के रहने की व्यवस्था हुई। इस प्रकार 'रोटी, कपडा और मकान' की व्यवस्था के बाद सन्यासी का 'ज्ञान यज्ञ' प्रारम्भ हो गया।

प्रतिभाशाली गुरु

कहते है, गुरु विरजानन्द जी कभी-कभी पढाते समय दयानन्द दडी सन्यासी से तर्क करते हुए बडी गहराई तक चले जाया करते थे। दण्डी दयानन्द भी समझने लगे थे कि यह गुरु जी भी असाधारण प्रतिभा के है। उन्होने सर्वप्रथम इन्हे पाणिनि अष्टाध्यायी पढाना प्रारम्भ किया। वह बिना टीका-भाष्यादि की सहायता के ही पढाया करते थे। कहा जाता है कि विरजानन्द की वागिन्द्रिय से भी नाना शास्त्रो की नाना व्याख्या अविरल रूप से निकल कर शिष्य मण्डली को विस्मित करती थी। दयानन्द यह सब अद्भुत और अदृष्टपूर्व व्यापार देखकर इस दृष्टि-हीन (अधे) अध्यापक को एक अलौकिक पुरुष स्वीकार करने पर बाध्य हुए और जितने विस्मयाविष्ट हुए, उतने ही श्रद्धाभारावनत चित्त होकर उनसे पढने लगे।"

काल जिह्व

स्वामी विरजानन्द पाणिनिकृत अष्टाध्यायी के भाष्यो मे से महाभाष्य को सर्वश्रेष्ठ ग्रथ स्वीकार करते थे। यही कारण था कि दयानन्द को पाणिनि के माथ महाभाष्य को भी पढाया जाने लगा। पढाते समय कभी गुरु-शिष्य मे वाग्युद्ध भी हो जाता था। दयानन्द की तर्कपटुता देखकर विरजानन्द मन-ही-मन अति प्रसन्न होते थे। वह कभी-कभी दयानन्द को कालजिह्व, कुलक्कर कह कर पुकारते थे। स्वामी विरजानन्द के शब्दो मे 'काल जिह्व' उसे कहते है कि जिसकी जिह्वा असत्य के खण्डन मे काल के समान हो। कुलक्कर उसे कहते है, जो शास्त्रार्थ के समय खूटे के समान अविचलित रहकर शत्रु को परास्त करे।

सारी विद्या दे दी

श्री देवेन्द्रनाथ जी मुखोपाध्याय के अनुसार जैसे पुराकालीय समरशिक्षक या शस्त्राचार्यगण किसी निपुण शिष्य को पाकर उसे रणभूमि मे दुर्जेय बनाने के लिए ब्रह्मास्त्र के प्रयोग तक की शिक्षा दिया करते थे, इसी प्रकार उपस्थित क्षेत्र मे भी जो कुछ सञ्चित और सबल विरजानन्द के पास था, वह उस सबकी दयानन्द को शिक्षा देने लगे।"

स्वामी विरजानन्द के सानिध्य मे दण्डी दयानन्द प्राय तीन वर्ष ही रहे। कतिपय इतिहासकार इस समय को बढाकर यह कहते है कि जब दयानन्द दीक्षा प्राप्त कर वहा से चले, तब उनकी आयु ४१ वर्ष की थी। दीक्षा के समय दयानन्द के पास कुछ न होने के कारण वह नत मस्तक होकर गुरु जी से बोले "मेरे पास कुछ नही है, मै क्या देकर गुरु दक्षिणा का कार्य समाप्त करू।" तब विरजानन्द ने वात्सल्यपूर्ण शब्दो मे अपने शिष्य से कहा "मै तुमसे एक नये प्रकार की दक्षिणा चाहता हूँ। तुम मेरे सामने प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहोगे, तब तक भारत क्षेत्र मे आर्ष-ग्रथो के प्रचार और वैदिक धर्म के विस्तार मे प्राण-तक भी अर्पण कर दोगे। मै इस प्रतिज्ञा-परिपालन को ही तुमसे दक्षिणा रूप से ग्रहण करूगा।" इसे सुनकर शिष्य बोला 'तथास्तु'। वहा से विदा होते समय विरजानन्द ने शिष्य के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और विरजानन्द के वयोजीर्ण कधो से वैदिक धर्म की जयपताका अपने बलिष्ठ कधो पर लेकर दयानन्द मथुरा से प्रस्थित हो गये।

अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर म प्र
पिन-४५२००७

(पृष्ठ १ का शेष)

जब श्रीराम ने ......

तरह खुलेआम मार डाले जैसे प्राय लोग पागल कुत्तो को रस्सी से बाध कर मार डालते है। (**अह वो रक्षितेत्युक्त्वा यो न रक्षति भूमिपः। स सहत्य निहन्तव्य· श्वेव सोन्माद आतुर·**) यद्यपि उस समय राम राजा नही थे, तथापि वह एक श्रेष्ठ क्षत्रिय वीर थे। उनको ऋषियो की वर्णव्यवस्था पर पूरा विश्वास था और इसी विश्वास के आधार पर ऋषि-मुनियो ने राम से अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की थी और राम ने भी उनको उनकी रक्षा करने का वचन दिया था। ऐसी परिस्थिति मे वह अपनी भार्या की भावुकता की बातो मे आ कर अपने वचन को कैसे भूल सकते थे?

आज इतने लम्बे समय के बाद वर्तमान परिस्थिति ने हमे राम की बातो को फिर से याद दिलाया है। सारा विश्व आज एक जनस्थान बन गया है। सब जगह आतकवादी फैल गये है। विगत पचास वर्षो मे भी अधिक समय से जम्मू कश्मीर मे हजारो लोग आतकवादियो के शिकार हो चुके है। लाखो लोग शरणार्थी बन गये है। देश को हर वर्ष करोडो रुपयो की हानि हो रही है। इस प्रदेश की गली-गली से आर्तनाद सुनाई दे रहा है। लेकिन यहा कोई नाम के योग्य क्षत्रिय नही है, वहा कोई राम के सदृश धर्मज्ञ वीर पुरुष नहीं है। राजनेता लोगो को आश्वासन देते है, उनकी रक्षा का वचन देते है और सरकार बनाते है। लेकिन कुछ समय बाद लोगो से विश्वासघात करते है, अपने वचनो को भूल जाते है।

जिन लोगो ने राष्ट्र की रक्षा की शपथ ली है, वे निहत्थी प्रजा को आतकवादियो के हाथो मरते देख रहे है, विलाप सुन रहे है, पर क्षात्र धर्म का पालन नही कर रहे है, उनके साथ क्या किया जाना चाहिए?

श्री ज्येष्ठ वर्मन ने स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदविद्या अनुसधान केन्द्र एव आर्य समाज बगलूर (नई शाखा) की स्थापना भी की है। इससे पूर्व कई वर्षों से बगलूर उपनगरीय क्षेत्र बसवेश्वरनगर, महालक्ष्मीपुर, राजाजी नगर आदि स्थानो मे श्री वर्मन अपने कुछ साथियो के सहयोग से पारिवारिक सत्सग चलाते आये है। इस समय श्री वर्मन और उनके मित्र यथाशक्ति महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देशो को घर-घर पहुचाने का प्रयास कर रहे है। इसके अतिरिक्त श्री वर्मन कन्नडभाषी दैनिक, साप्ताहिक, मासिक और अन्य कई सामयिक पत्र-पत्रिकाओ मे भी आर्य समाज और वैदिक सिद्धान्तो पर लेख लिखते रहते है।

श्री ज्येष्ठ वर्मन का नया पता इस लेख के अन्त मे दिया गया है।

३० पचवटी, के० ऐच० बी० कॉलोनी,
कृष्णानन्द नगर, पोस्ट नन्दिनी लेआउट,
बगलूर-५६००९६

हम किधर जा रहे हैं?

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन काल में दो सस्थाओ का निर्माण किया—आर्य समाज एव परोपकारिणी सभा। इन सस्थाओ के लिए उनके निर्देश निहित है, आर्य समाज के दस नियमो मे तथा उनके स्वीकार पत्र मे।

आर्य समाज के नवे नियम मे स्वामी जी का निर्देश है "सबको अपनी उन्नति मे ही सतुष्ट नही रहना चाहिए, बल्कि सबकी उन्नति मे ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"

इसी प्रकार परोपकारिणी सभा को दिये गये निर्देशो मे बारहवा इस प्रकार है

"इस स्वीकार-पत्र सबंधी कोई झगडा, टटा सामयिक राज्याधिकारी की कचहरी में निवेदन न किया जाये। यह सभा अपने आप न्याय-व्यवस्था कर ले, परन्तु जो अपनी सामर्थ्य से बाहर हो, तो राजगृह से निवेदन करके अपना कार्य सिद्ध कर लेवें।"

इन दोनो निर्देशो के सदर्भ मे अगर हम वर्तमान मे चल रहे सार्वदेशिक सभा के विवाद और आगामी चुनाव का मूल्याकन करे, तो हमे लगता है कि स्वामी जी की भावनाओ और निर्देशो से दूर यह कोई सम्पत्ति का झगडा है। सारे काम न्यायालय के आदेशो से चल रहे है। दूसरो की उन्नति तो दूर, दूसरो के नाम से ही घोर ईर्ष्या और घृणा का वातावरण है। व्यक्तिगत महत्वाकाक्षाओ ने सस्था के मुख्य उद्देश्यो और वातावरण की मधुरता को गौण कर दिया है।

कई आर्य जनों के मन मे प्रश्न हो सकता है कौन अच्छा है या बुरा? परन्तु प्रश्न यह है कि आर्य समाज से जुडी हुई सस्थाए एक सामंजस्य का प्रयास क्यो नहीं करतीं? सार्वदेशिक सभा, जिसे हम सब आर्यजन एक स्वस्थ अतरराष्ट्रीय संस्था के रूप में देखना चाहते है, दलगत मतभेदो मे फसकर उसका स्वरूप विकृत हो गया है। विषय अति चिन्तनीय है।

शायद कुछ लोग ऐसा कहे कि स्वामी जी के निर्देश एव भावनाए आज के युग मे व्यावहारिक नहीं है। बिना कोर्ट कचहरी के कोई झगड़ा समाप्त नहीं होता। लेकिन यह सत्य नही है। आज के युग मे भी लॉयन्स क्लब, रोटरी क्लब के नाम से जानी जाने वाली अन्तरराष्ट्रीय समाजसेवी सस्थाए बिना कोर्ट कचहरी के अपने चुनाव हर स्तर की इकाइयो के निर्विघ्न कराती है। उन सस्थाओं के नियमों मे भी वही निर्देश हैं कि उनकी सस्था सबधी कोई मतभेद किसी देश के न्यायालय मे नही जा सकता। सिर्फ आन्तरिक विभिन्न स्तरो पर सारे मतभेद सुलझा लिये जाते है। ये सस्थाए विश्व के २०० से भी अधिक देशो मे पूरी गतिविधियो के साथ सक्रिय है।

समय की माग है कि सभी आर्यगण हर इकाई के स्तर पर सामजस्य का रास्ता पकडें, चाहे वह प्रातीय स्तर पर हो, चाहे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर।

गजानन्द आर्य, प्रधान, परोपकारिणी सभा

(पृष्ठ ८ का शेष)

हिन्द महासागर का मोती ......

उन्होने ही गावो और कस्बो के नामकरण किये। इस देश की राजधानी का नाम सेट लुइस नाम से किसी ईसाई सन्त के नाम पर है। फ्रैच उच्चारण मे पोर्ट लुइस को 'पोर लुई' कहा जाता है। फ्रैच मे 'ट' वर्ग के अक्षरो का उच्चारण 'त' वर्ग के अनुसार होता है। कुछ स्थानो के नाम अग्रेजी भाषा के है—यथा रोज़ हिल, गुड लैण्ड, यूनीयन पार्क आदि। लालमाटी और बनारस जैसे हिन्दी नाम भी गावो को मिले है। माहे बुर्ग का नाम समुद्रतटवर्ती कस्बे का है, जो फ्रैच गवर्नर माहे दे लाबूर्दोने के नाम पर रखा गया है। रोज़ बेल और बेल रोज़ अग्रेजी और फ्रैच के दो शब्दो से बने है—'रोज' गुलाब का पर्याय है जब कि 'बेल' का फ्रैच मे अर्थ सुन्दर होता है। अर्थात् सुन्दर गुलाब।

लगभग तीस व्याख्यानो मे मैने विभिन्न विषयो का विवेचन किया। ये विषय थे—वैदिक साहित्य का परिचय, आर्य समाज स्थापना की पृष्ठभूमि, वेद और मानव धर्म, वेदो मे प्रतिपादित ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान, आज के युग मे वेदो की प्रासगिकता, धर्म के त्रिविध स्कन्ध—यज्ञ, अध्ययन और दान, आर्यो के पच सकार—सध्या, स्वाध्याय, सस्कार, सत्सग और सेवा, नारी उत्थान मे आर्य समाज का योगदान, रामायण और महाभारत का सापेक्षिक अध्ययन, योगेश्वर कृष्ण का व्यक्तित्व एव चरित्र, ऋषि दयानन्द और वेद, वेद विषयक पाश्चात्य और भारतीय मत, स्वामी दयानन्द का भक्तिवाद आदि। व्याख्यान के अन्त मे प्रश्नोत्तरो का समय भी दिया जाता। प्राय सभी सभा भवन श्रोताओ से भरे रहते। आर्य सभा का सूचना तत्र व्यवस्थित तथा प्रभावशाली है। पर्याप्त दिन पहले ही उस समाज को समय और व्याख्यान विषय की सूचना दे दी जाती, ताकि समीपवर्ती गावो के लोगो को भी आमन्त्रित किया जा सके। मारिशस रेडियो नित्य साय देश भर के आयोजनो की सूचना प्रसारित करता। तायाक मे आयोजित प वासुदेव की जन्म जयन्ती तथा आर्य समाज वाक्या मे मनाये गये विद्या दिवस के कतिपय दृश्य टेलीवीजन पर दिखाये गये।

हिन्दी या अग्रेजी का दैनिक अखबार नहीं

मारिशस मे हिन्दी या अग्रेजी का कोई दैनिक पत्र नही है। अधिकाश समाचार पत्र फ्रैच मे छपते हैं। 'सण्डे वाणी" नामक एक अग्रेजी साप्ताहिक इस देश के भूतपूर्व उपप्रधानमत्री श्री हरीश बुधु निकालते हैं। मेरे मारिशस आगमन का समाचार इस पत्र ने 'वेलकम डा भारतीय' शीर्षक से प्रकाशित किया।

(क्रमश·)

८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

(पृष्ठ ३ का शेष)

विजय का अचूक गुर ......

बिठाये अकूत आमदनी होती है। परन्तु फिलिपीन्स, जोर्डन आदि देश तो वर्षो से आतकवादी उग्रपथियो का शिकार हो रहे है।

अरब इज़राइल सघर्ष

फिलस्तीनी अरबो और इज़राइल के सघर्ष को लेकर मुस्लिम देशो मे जिहाद का उन्माद जगाया जा रहा है। कोसोवो, चेचन्या और कश्मीर को लेकर जिहाद के लिए ससार भर के मुसलमानो को एकजुट होने के लिए आह्वान किया जा रहा है। ६ अक्टूबर से अमेरिका ने अफगानिस्तान मे तालिबान ठिकानो पर बम वर्षा शुरू की है, उसके विरोध में न केवल पाकिस्तान, अपितु भारत, इडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपीन्स आदि देशो मे उग्र प्रदर्शन हुए है। इन प्रदर्शनो से प्रकट हो गया है कि आतकवाद का विष उससे कहीं अधिक फैला हुआ है, जितना कि अब तक समझा जा रहा था। जिन्हे केंचुआ समझा जा रहा था, वे विषैले नाग बन कर फुफकार रहे है।

इस्लामी आतकवाद से निपटना आसान काम नहीं है। सबसे पहले तो आतकवादियों को पहचानना बहुत आवश्यक है। आतकवादियों के समर्थको की गणना भी आतकवादियो मे की जानी चाहिए। जगह-जगह जो प्रदर्शन आतकवादियों के समर्थन में हुए हैं, उनसे बहुत कुछ पता चल गया है। परन्तु कठिनाई यह है कि वोट की राजनीति सच्चाई पर पर्दा डाल देती है और साप को साप कहना अपराध माना जाता है।

अमेरिका के राष्ट्रपति श्री बुश कह बैठे थे कि मुस्लिम जिहादियो के विरुद्ध यह हमारा क्रूसेड (धर्मयुद्ध) है। समझदार लोगो ने कहा कि ऐसा कहने से अनर्थ हो जायेगा। श्री बुश ने अपने वक्तव्य को सुधार दिया 'हमारी लडाई आतकवाद से है, इस्लाम से नहीं।'

जिहाद, जिहाद, जिहाद

परन्तु आतकवादी तालिबान ने ससार भर के मुसलमानो को काफिरो (अमुस्लिमो) के विरुद्ध जिहाद छेडने का आदेश दिया है और लगता है कि पाकिस्तान और भारत के मुसलमान उनसे बहुत प्रभावित है। उग्रपथी मुसलमान जिहाद के नाम पर एक हों और नीति-धुरन्धर अमुस्लिम डावांडोल हो, तो स्थिति भयावह हो जायेगी। सधि चर्चा युद्ध छिडने से पहले या युद्ध समाप्त होने के बाद ही होनी चाहिए। जब तोपें गरज रही हो, तब तो '**हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जेता वा भोक्ष्यसे महीम्**'। लडते हुए मर गये तो स्वर्ग पहुंचेंगे, जीत गये तो सारी धरती भोगने के लिए मिलेगी। प्रेरक वाक्य रहना चाहिए। शत्रु को मारने का दृढ़ सकल्प ही विजय का अचूक गुर है।

समाचार जगत्

चीका में महात्मा हंसराज कबड्डी टूर्नामेंट

महात्मा हसराज ज़ोनल कबड्डी टूर्नामेट की विजेता—डी ए वी सी सै स्कूल चीका की टीम

दिनाक ११ ०९ २००१ को डी ए वी सी सै स्कूल चीका मे महात्मा हसराज जोनल कबड्डी टूर्नामेट का आयोजन हुआ। इस टूर्नामेट मे कैथल, पूण्डरी, लुक्खी, सींह तथा चीका डी ए वी स्कूल की टीमो ने भाग लिया। प्रथम स्थान 'डी ए वी सी सै पब्लिक स्कूल चीका' ने दूसरा स्थान 'डी ए वी स्कूल' सीह ने प्राप्त किया। उन्हे ट्राफिया प्रदान की गई। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती आर्या ने अन्तरराष्ट्रीय कबड्डी खिलाडी श्री अलबाद सिह को शाल भेट कर सम्मानित किया और प्रतियोगिता के सारे प्रतिभागियो को मैडल प्रदान किये।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्री धर्मपाल सिह दलाल, डी एस पी गुहला के साथ इलाके के कई सरपच और नम्बरदार एव अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने इस कार्यक्रम मे भाग लिया। विद्यालय के चेयरमैन श्री अमरनाथ गोयल, नम्बरदार जीवन सिह, पूर्व सरपच श्री अजमेर सिह, सरदार बलबीर सिह व श्री अलबाद सिह और अन्य अभिभावको ने खिलाडियो और सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले छात्र-छात्राओ को उपहार स्वरूप धनराशि प्रदान की। प्रतियोगिता के पुरस्कार ओरियण्टल बैक ऑफ कॉमर्स के सौजन्य से प्रदान किए गए।

वैदिक चेनना शिविर वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार

हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर के तत्त्वावधान मे वैदिक मोहन आश्रम, भूपतवाला हरिद्वार मे ३० सितम्बर से ६ अक्टूबर तक वैदिक चेतना शिविर का आयोजन किया गया। ५२ छात्राओ ने छ प्रवक्ताओ के नेतृत्व मे शिविर मे भाग लिया। डॉ महावीर—उपसचिव गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने शुभारम्भ किया।

प्रात साढे चार बजे ध्यानयोग से प्रारभ होने वाली दिनचर्या योगाभ्यास, आत्मशुद्धि तथा यज्ञ-अनुष्ठान आदि सोपानो के पश्चात् बौद्धिक सत्र मे प्रवेश करती थी। बौद्धिक सत्र मे स्वामी आत्मबोध, आ राम स्नेही, स्वामी रामदेव, श्री रामचन्द्र, ब्रह्मचारिणी इन्दु आर्या, आचार्या अन्नपूर्णा देवी तथा समाज सेविका अनीता पडित आदि के प्रवचन होते रहे। चार अक्टूबर को उत्तराचल राज्य के शिक्षा मत्री श्री तीर्थ सिह रावत मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे। शिविर समापन समारोह पाँच अक्टूबर को माननीय श्री पूनम सूरी—सचिव डी ए वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्री सूरी ने छात्राओ को जीवन सघर्ष का मुस्कराते हुए सामना करने की प्रेरणा दी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पजाब के प्रधान श्री डी आर गुप्ता ने वैदिक सस्कृति के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होने राष्ट्र के भावी कर्णधार विद्यार्थियो को आर्यजन बनने की शिक्षा दी। मान्य श्री इद्रजीत तलवाड ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक मच सचालन का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया। श्रीमती रमा चौधरी ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। वापिसी के समय प्रत्येक शिविरार्थी का हृदय कृतज्ञता से भरा हुआ था। शिविर की सफलता से अभिभूत प्रत्येक प्रतिभागी हृदय मानो यही कह रहा था—

वैदिक चेतना शिविर मे हमने 'आर्य' बनना सीखा।

सीखा हमने मानव बनकर जीने का सलीका।

आर्य चेतना अखिल विश्व के हर कोने मे व्याप्त हो।

पुन हमे शिविरार्थी बनने का अवसर अवश्य प्राप्त हो।

आर्य समाज (अनारकली) 'वार्षिक अधिवेशन'

५ नवम्बर से रविवार ११ नवम्बर, २००१ तक आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस दौरान सप्ताह भर प्रात ८ बजे से ९ ०० बजे तक गायत्री महायज्ञ होगा तथा रात्रि को ७ बजे से ८ ३० बजे तक भक्ति सगीत एव वेद कथा का आयोजन किया जाएगा। आपसे प्रार्थना है कि आप इन दोनो कार्यक्रमो मे सपरिवार पधारे तथा सप्ताह भर मे से किसी एक दिन प्रात गायत्री महायज्ञ मे सपत्नीक यजमान बने।

रविवार ११ नवम्बर, २००१ को मुख्य कार्यक्रम होगा, उस दिन सारे कार्यक्रमो में सपरिवार पधारे। प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। दोपहर १ ३० बजे प्रीतिभोज होगा।

आर्य समाज मेरठ वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज सूरजकुड रोड, मेरठ द्वारा दिनाक २५ फरवरी २००२ से ३ मार्च २००२ तक वेद प्रचार समारोह का आयोजन बृहद स्तर पर किया जा रहा है, जिसमे आर्य जगत के विश्व स्तरीय विद्वान आचार्य वागीश जी गुरुकुल एटा से एव सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरेन्द्र वशिष्ठ जी दिल्ली से पधार रहे है।

इस कार्यक्रम मे आर्यजनो के ठहरने एव भोजन की व्यवस्था नि शुल्क होगी। ऋतु अनुसार वस्त्र एव बिस्तर साथ लाने है।

कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात ७ बजे से १० बजे तक एव साय ७ बजे से ९ बजे तक होगा।

आर्य समाज बिडला लाइन्स, का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बिडला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-७ का वार्षिकोत्सव सोमवार, २६ नवम्बर २००१ से रविवार, २ दिसम्बर २००१ तक होना निश्चित हुआ है। इसमे अनेक विद्वान् एव भजनोपदेशक सम्मिलित होगे। उपस्थित होकर उत्सव की शोभा बढाये।

आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगज का वार्षिकोत्सव

आर्य कन्या गुरुकुल शिव गज, सिरोही का चतुर्थ वार्षिकोत्सव २६, २७, २८ अक्टूबर २००१ को धूमधाम से मनाया जायेगा। इसमे अनेक विद्वान एव सन्यासी गण पधार रहे है। आप सब सादर आमत्रित है।

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ७९वॉ वार्षिकोत्सव सोमवार, २६ नवम्बर से रविवार, २ दिसम्बर, २००१ तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इसमे स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, श्री सत्यपाल पथिक आदि विद्वान एव भजनोपदेशक भाग लेगे।

अत दिल्ली/नई दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के अधिकारियो एव सदस्यो से निवेदन है कि उपरोक्त तिथियो मे वह अपने समाज मे किसी कार्यक्रम का आयोजन न करके आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव मे सपरिवार सम्मिलित होकर धर्मलाभ उठाए।

चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक मे स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य मे चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एव ५१ लाख गायत्री जाप का कार्यक्रम आश्रम अधिष्ठाता महात्मा व्यास देव जी की अध्यक्षता मे १ नवम्बर, २००१ से ३० नवम्बर २००१ तक होना निश्चित हुआ है। ऋग्वेद यज्ञ १ नवम्बर से १५ नवम्बर तक होगा। वेद पाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारीगण करेगे। यजुर्वेद यज्ञ १६ नवम्बर से १८ नवम्बर तक और सामवेद यज्ञ १८ से २० नवम्बर तक होगा। वेदपाठ गुरुकुल नजीबाबाद की छात्राए करेगी। अथर्ववेद यज्ञ २१ से ३० नवम्बर तक होगा। वेदपाठ गुरुकुल चोटीपुरा की छात्राए करेगी। महात्मा प्रभुआश्रित मेला २५ ११ २००१ कुटिया गुरुकुल सुन्दरपुर मे होगा। पूर्णाहुति ३० ११ २००१ को दोपहर लगभग १२ बजे तक होगी।

आर.आर. बावा डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्स, बटाला मे वैदिक चेतना शिविर सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पजाब के तत्त्वावधान मे आर आर बावा डी ए वी कालेज फॉर गर्ल्स, बटाला के प्रागण मे दिनाक ३० सितम्बर २००१ से ६ अक्टूबर २००१ तक एक वैदिक चेतना शिविर का आयोजन किया गया, जिसका सचालन आचार्य भगवान् देव चैतन्य ने किया।

इस शिविर मे छात्राओ को योगाभ्यास, जूडो कराटे तथा अन्य क्रीडाओ के द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य के साथ साथ परिचर्चाओ, भाषण, वाद-विवाद तथा काव्य पाठ आदि प्रतियोगिताओ द्वारा उनके मानसिक विकास पर भी बल दिया गया।

इस शिविर का उद्घाटन ३० सितम्बर २००१ को प्रात जस्टिस आर ऐन मित्तल, उपाध्यक्ष, डी ए वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री सभा, नई दिल्ली ने किया। ध्वजारोहण श्री डी आर गुप्ता, निदेशक, डी ए वी कालेज मैनेजिग कमेटी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जोगिन्दर सिह (भूतपूर्व निदेशक, सी बी आई) उपप्रधान, डी ए वी कालेज मैनेजिग कमेटी, नई दिल्ली ने की।

इस अवसर पर प्रिसिपल इद्रजीत तलवाड, प्राचार्य श्री ऐम ऐल ऐरी, प्राचार्य ए के वैद, प्राचार्य बी ऐस जोसन, प्राचार्य बी के भाटिया, प्राचार्या अरुणा आनद, श्रीमती सुदेश अहलावत, श्री बृज मोहन लाल अग्रवाल तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मुख्य अतिथि जस्टिस आर ऐन मित्तल ने शिविरार्थियो को आशीर्वाद एव शुभकामनाए दी तथा इस प्रकार के शिविर लगाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री जोगिन्दर सिह, श्री डी आर गुप्ता, प्रिसिपल इद्रजीत तलबाड तथा श्रीमती सुदेश अहलावत ने भी शिविरार्थियो को जीवन मे एक सच्चे नागरिक बनने की प्रेरणा दी।

इस ७ दिवसीय शिविर मे पजाब की विभिन्न डी ए वी सस्थाओ की १०० से भी अधिक छात्राओ ने भाग लिया। प्रत्येक सस्था की कम-से-कम एक प्राध्यापिका भी शिविर मे छात्राओ के साथ रही।

शिविर के समापन समारोह मे श्री आर ऐस शर्मा, उपाध्यक्ष डी ए वी कालेज मैनेजिग कमेटी, नई दिल्ली, मुख्य अतिथि तथा प्रिसिपल श्री मोहन लाल, सचिव डी ए वी कालेज मैनेजिग कमेटी अध्यक्ष थे। इस अवसर पर प्राचार्या जुनेश काकडिया, प्राचार्य वी के भाटिया, श्री बृज मोहन लाल अग्रवाल तथा नगर के प्रमुख लोग अतिथि के रूप मे उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि श्री आर ऐस शर्मा ने शिविर की सफलता पर प्राचार्या को बधाई दी। प्रिसिपल मोहन लाल जी ने भी छात्राओ को जीवन मे नैतिक मूल्यो को धारण करने की प्रेरणा दी।

सभी छात्र-छात्राओं और अध्यापकों के लिए प्रेरणादायक पुस्तक

भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री कृष्णकान्त जी *द्वारा स्वीकार की गई पुस्तक*

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के उपप्रधान न्यायमूर्ति जस्टिस आर० एन० मित्तल तथा महासचिव सुप्रसिद्ध अधिवक्ता श्री ऐम० ऐल० खन्ना द्वारा लिखित भूमिका सहित डा० धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा लिखित ऐतिहासिक पुस्तक

डी० ए० वी० आन्दोलन
के
प्रकाश पुंज

(डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के सभी प्रधानो के प्रेरक जीवनवृत्त)

भारतीय जन-जागरण के सर्वाधिक प्रभावशाली आन्दोलन के शीर्षस्थ नेताओ, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सस्थापक प्रधान माननीय जस्टिस लालचन्द से लेकर वर्तमान प्रधान पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा सहित सभी २० महापुरुषो की खोजपूर्ण प्रामाणिक जीवनियो का सचित्र सकलन।

●उत्तम कागज पर, सुन्दर छपाई और वाटरप्रूफ पुस्तकाकार जिल्द मे उपलब्ध।

●डी० ए० वी० सस्थाओ के लिए विशेष रियायत।

प्राप्ति स्थान :

उर्वी पब्लिशिंग कम्पनी (मोहित प्रकाशन)
सी बी एस ई के मुख्य द्वार के सामने, दूसरी मजिल, सावित्री सदन-2 (कम्युनिटी सेटर)
प्रीत विहार, नई दिल्ली-110092 दूरभाष 2224850, 2220649, 2161293, 2140752

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक-**उदयवीर विराज**

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ ब

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
मस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये
विदेशो मे ३० पौंड या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये
वर्ष ६६, अक ३६
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, ४ नवम्बर २००१
कार्तिक कृ०-३-वि० स०-२०५८
सप्ताह ४ नवम्बर से १० नवम्बर

न्यायत: यह देश आखिर किस किसका है?

देशविभाजन गलत हुआ या सही हुआ, लेकिन वास्तविकता यही है कि वह अखड देश कानून स्तर पर विभाजित हो चुका है। अत, यदि यह भी मान लिया जाये कि आजादी से पहले तक का वह अखड भारतदेश वहा गलत-सलत बसते रहने वाले सभी हिन्दुओ, सिखो, जैनियो, पारसियो, बौद्धो, मुसलमानो आदि सभी का 'मिला-जुला' एक साझा देश था, तो भी, क्योकि उस साझे अखड देश का कानूनी बटवारा उसमे बस चुके (१) उन सभी हिन्दुओ, सिखो, जैनो, बौद्धो, ईसाइयो, पारसियो इत्यादि एव (२) उन सभी इस्लामपथी मुसलमानो के बीच अगस्त १९४७ मे हो चुका है और क्योकि उस बटवारे से उन मुसलमानो ने अपने लिए पाकिस्तान नाम से अपना हिस्सा अलग ले लिया है, अत यह शेष बचा भारतदेश (अ) तब तक यहा बस चुके सभी इस्लामपथियो (मुसलमानो) एव उनके वशजो एव कानूनी उत्तराधिकारियो के सिवाय (ब) उन सभी हिन्दुओ, ईसाइयो, सिखो, जैनो, बौद्धो, पारसियो इत्यादि एव उनके वशजो, उत्तराधिकारियो का "मिलाजुला" है, जो उस बटवारे के ठीक पहले तक यही के नागरिक थे। भूसम्पत्ति ससाधनो के बटवारे से प्रभावित भूससाधनो अर्थात् देशज भौगोलिकता पर सबधित पक्षो की जन्मजात सप्रभुता के अधिकार की मौलिकता कानून द्वारा निरस्त हो जाया करती है।

मुसलमानो का हक नही रहा

ध्यातव्य है कि उस अखड भारतदेश का वह सवैधानिक बटवारा तत्कालीन समानुपातिक जनप्रतिनिधित्व कानून से तत्कालीन सकल मुस्लिम जनसख्या का समानुपातिक था। जनतान्त्रिक व्यवस्था मे तो ५१ प्रतिशत जैसा सामान्य बहुमत भी "बाध्यकारी सर्वमत" हुआ करता है। लेकिन उस पाकिस्तान को बनाने मे तो अखड भारत की सकल मुस्लिम जनसख्या के ९० प्रतिशत जैसे प्रचण्ड बहुमत का धार्मिक हाथ था। हमारी रक्षा सेना एव सैनिक साजो-सामान भी हिन्दू मुस्लिम बटालियनो के धार्मिक आधार से ही बाटे गये थे।

९० प्रतिशत मुस्लिम विभाजन के पक्ष मे

स्वतत्रतापूर्व के उस निर्णायक मतविभाजन मे हमारी वर्तमान ससद की पूर्ववर्ती १०२ सदस्यीय तत्कालीन सेंट्रल असेम्बली के ३० के ३० सुरक्षित मुस्लिम क्षेत्रो से अखड भारत के मुस्लिम वोट बैंक ने अपनी कानूनी स्वतत्रता का राजनैतिक निर्वाह करने मे अखडतावादी राष्ट्रवादियो को कानूनी पटकी देते हुए अखडता द्रोही "मुस्लिमलीगी मुस्लिम प्रत्याशियो" को अपने ९० प्रतिशत से अधिक प्रचड बहुमत से जिता दिया था। लेकिन उन सभी सुरक्षित मुस्लिम सीटो पर राष्ट्रवादी काग्रेसी मुस्लिम प्रत्याशियो की तो जमानते भी शोचनीय रूप से जब्त हो गई थी। ऐसी राजनैतिक क्रासवोटिंग को ही तो सामान्य भाषा मे राजनैतिक गद्दारी कहा जाता है। मौलाना अबुल कलाम आजाद और रफी अहमद किदवई जैसे काग्रेसी शो-पीसो को तो हिन्दू बहुल क्षेत्रो के हिन्दू वोटो से ही जिताया जा सका था। और उन हिन्दू बहुल क्षेत्रो मे मौलाना आजाद एव रफी अहमद किदवई के प्रतिद्वन्द्वी मुस्लिमलीगी मुस्लिम प्रत्याशियो को मिले वोटो का प्रतिशत उन हिन्दू बहुल क्षेत्रो मे बसने वाले मुस्लिम मतदाताओ का प्रत्यक्ष समानुपाती था।

स्पष्ट है कि पाकिस्तान का निर्माण विगत अखड भारत की तत्कालीन मुस्लिम जनसंख्या के ९० प्रतिशतीय अखडता-द्रोही सर्वमत मे हुआ है और उस पाकिस्तान को मिलने वाला भारतीय भूक्षेत्र भी अखड-भारत की उस सकल मुस्लिम जनसख्या का समानुपाती था, जिसकी मर्दुमशुमारी मे मौलाना अबुल कलाम आजाद, रफी अहमद किदवई, खान अब्दुल गफ्फार खा जैसे उदारपथी मुसलमानो की भी गिनती शामिल थी। स्पष्टत ध्यातव्य है कि ऐसे उदारवादी मुसलमानो के हिस्से का समानुपाती नागरिक भूभाग भी तो पाकिस्तान को ही गया हुआ है।

देशभक्त मुसलमान भी थे

निस्सदेह अशफाक उल्लाह जैसे देशभक्त मुसलमानो का भी उस स्वतत्रता आन्दोलन मे अत्यन्त प्रशसनीय योगदान था लेकिन ऐसे बलिदानो के बदले मे हम कर ही क्या सकते है, क्योकि उन बलिदानियो के उत्तराधिकारी वशजो ने १९४६-४७ के अपने उपरोक्त "बहुमतीय सर्वमत" के विशेष सुरक्षित जनमत मे पाकिस्तान नामक देश अपने लिए अलग जो ले लिया है।

धर्म परिवर्तन से भी कुछ नही होता

अत १५ अगस्त १९४७ के एक दिन पहले तक यहा बसने वाले सभी मुसलमानो एव उनके वशजो-उत्तराधिकारियो के सिवाय, यह इतना भारतदेश उन सभी हिन्दुओ, सिखो, जैनो, ईसाइयो, बौद्धो इत्यादि एव उनके वशज-उत्तराधिकारियो का ही है, जो १५ अगस्त १९४७ के एक दिन पहले तक यहा के नागरिक थे। इन हिन्दुओ, ईसाइयो, इत्यादि मे से कोई स्वेच्छा से अब यदि इस्लाम पथ को भी स्वीकार कर ले, तो यह इस इतर भारत मे धार्मिक एव वैचारिक स्वतत्रता है। लेकिन उस १५ अगस्त १९४७ के एक दिन पहले तक यहा बसने वाले मुसलमान, उनके वशज एव उत्तराधिकारीगण यदि अपना भारतीयकरण भी कर ले, किंवा हिन्दू भी हो जाये, तब भी उनके लिए इतर भारत मे कोई नागरिक स्थान नही होना चाहिये, क्योकि उन सभी की सवैधानिक नागरिकता के लिये सर्वप्रभुता सम्पन्न कानूनी पाकिस्तान नामक भूभाग अलग से छोडा जा चुका है। वैसे शैक्षिक, स्वास्थ्यगत, व्यापारिक, व्यावसायिक इत्यादि मानवीय कारणो से कोई दुनिया मे कही भी आता जाता या रहता रहे, लेकिन वह तो एक दूसरी (ही श्रेणी की) बात है। नागरिकता का राष्ट्रीय ट्रस्ट कोई टैक्स वा किराया देकर खरीदे जा सकने की अथवा मोक्षैषणा वा किसी गाधीवादी लोकैषणा मे खैरात कर दिये जाने की चीज तो नही है।

मा जाये भाई का हक नही

एक मा जाये तथा एक ही धर्म को मानने वाले दो सगे भाई भी हो, लेकिन यदि उनमे अपनी पैतृक सम्पत्ति किंवा परम्परागत देश का कानूनी अर्थात् सवैधानिक बटवारा हो जाता है, तो एक भाई के हिस्से मे आई परिसम्पत्तियो पर दूसरे भाई की धार्मिक, पथिक, सास्कृतिक, राजनैतिक वा नागरिक सप्रभुता का कोई जन्मजात अधिकार कानूनत शेष नही रह जाता। और यदि कोई सविधान वा कानून इस न्याय के विपरीत जाये तो वह सविधान कृत्रिम वा अप्राकृतिक सविधान ही कहलाता है।

प्राकृतिक न्याय के विरोधी इस सविधान का सर्वाधिक दुभाग्यपूर्ण कष्टदायक वाद-बिन्दु यह है कि दण्ड-सिद्धान्त के अनुरूप जेलो मे सडाये बिना, या "पैरोल' पर ठीक से जाच पडताल किये बिना ही, देश के उपरोक्त गद्दारो को देशभक्तो की बराबरी के सवैधानिक सम्मान की पक्ति मे सजा दिया गया है। इस मूलानिमूल कारण से देश के राष्ट्रभक्तो की देशभक्ति अपमानित हुई है, देशभक्त देशभक्ति के प्रति उदासीन से हो गये है और भ्रष्टाचार का भयकर बोलबाला बढा है। 'अपराध से घृणा करो, अपराधी से नही' की अहिंसक गाधीवादी नीति का अर्थ यह नही है कि समान उद्देश्यीय सुसामाजिक विकास म सम्मानीय जीवन-यापन करने-कराने की शिक्षा-प्रशिक्षा किंवा प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु विभिन्न बुद्धि वर्गो के सभी छात्रो वा प्रशिक्षणार्थियो को एकही कक्षा-कक्ष (क्लास रूम) मे बैठा कर प्रशिक्षित किया जाये। विभिन्न बुद्धि वर्गीय प्रशिक्षार्थियो को पृथक्-पृथक् कक्षाओ मे बैठाने का प्रावधान तो आधुनिक शिक्षा प्रसार पद्धति मे भी है। सहिष्णु सामाजिक विकास के लिए गद्दार का अपराधी प्रवृत्ति के नागरिको को पैरोल प्रकार के द्वितीय श्रेणी के नागरिको की पक्ति मे रखने का प्रावधान है।

भोजन, वस्त्र, शिक्षा स्वास्थ्य आदि की गाधीवादी वा समाजवादी मानवीय सुविधा तो कारावासीय नागरिको अर्थात् कैदियो को भी उपलब्ध होनी चाहिये। लेकिन आततायियो, गद्दारो या किसी भी प्रकार के अपराधियो को यथायोग्य दण्डित करना एव प्रायश्चित्त कर लेना भी तो

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित लेखो मे व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

[illegible]

पृथ्वी मां के लिए हम जागरूक रह कर बलि दें

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा , अस्मभ्य सन्तु पृथिवि प्रसूता ।

दीर्घ न आयु प्रतिबुध्यमाना , वय तुभ्य वलिहृत स्याम ॥ अथर्व १२ १ ६२

अर्थ— (**पृथिवि**) हे भूमे, हम (**ते प्रसूता**) तुझसे उत्पन्न, तेरे पुत्र है, अतएव (**उपस्था**) तेरी गोद, तेरे आश्रय-स्थानो के मब पदार्थ (**अस्मभ्य**) हमारे लिये हो और (**अनमीवा· अयक्ष्मा सन्तु**) आरोग्यवर्धक व रोगनाशक होये (**न दीर्घ आयु**) हमारी आयु दीर्घ होये (**वय**) हम (**प्रतिबुध्यमाना**) जागते हुए, ज्ञानमम्पन्न होते हुए (**तुभ्य**) तेरे लिये (**बलिहृत**) अपनी बलि देने वाले (**स्याम**) होये।

मनन— हे भूमिमात , हम तेरे पुत्र है, तुझसे उत्पन्न हुए है। यह पार्थिव देह हमे तेरे रज कणो मे मिली है। हे मात , हमे अपनी गोद मे बिठलाओ। तेरी आनन्दमयी गोद मे बेठ कर हम सम्पूर्ण मातृसुख को प्राप्त करे, तेरे दुग्धामृत का पान भी करे। तू हमे केवल सुखमय आश्रय-स्थानो को ही नही प्रदान करती किन्तु अपने उन सर्व स्थानो मे तू हमे हमारे उपयोगी भोग्य-पदार्थो को भी देती है। तेरी ऐसी गोद मे हमारा आश्रय पाना, हमारे लिये रोगरहित, निरन्तर निर्बाध पुष्टि, (उन्नति) का देने वाला हो। हे विस्तृत मातृभूमे, तेरे आश्रय मे रहते हुए हमे जो तेरे अन्न, फल, औषध, जल, वायु, धन, पशु, मान, रक्षा, विद्या, सुख आदि मिलते है वे हमे ऐसे शुद्ध और उचित रूप मे मिलते रहे कि ये हमारे रोगो, भयो और दु खो को हटा कर हमारी स्वास्थ्यकर पुष्टि को करते जाये, हमारी शारीरिक, मानमिक ओर आत्मिक उन्नति ही साधते जाये। यह तेरा सब भोग्य पदार्थरूपी पुष्टिकारक दूध हे मात , हम तेरे बच्चो के लिये ही है— हम बच्चो की रोग, भयरहित पुष्टि के लिये ही है। हमारी शारीरिक उन्नति ऐसी अक्षुण्ण होये कि हम पूर्ण दीर्घ आयु को भोगे। हमारी मानसिक व आत्मिक उन्नति भी ऐसी अक्षुण्ण होये कि हम क्रमश 'प्रतिबुध्यमान' होते जाये, उत्तरोत्तर अधिक ज्ञान और बोध मे (आत्म-जागृति से) युक्त हो जाये। एव हम अबोध बालको का ज्यो ज्यो ज्ञान बढेगा, हम सब प्रकार के ज्ञानो मे उन्नत होगे, त्यो त्यो, हे मात , हम तेरे अपने पर किये गये अपार उपकारो को भी तेरे मातृत्व को भी हम अधिक अनुभव करने लगेगे तथा तेरे प्रति अपने कर्तव्यो के लिये भी जागृत हो जायेगे। अत तब हम राष्ट्र-कर के इस तुच्छ धन की बलि, किसी भय से नही किन्तु 'प्रतिबुध्यमान' होते हुए, जानते हुए, इसे कर्तव्य समझते हुए— प्रेम से तुम्हारे प्रति दिया करेगे। केवल यह तुच्छ, साधारण, नित्यप्रति की बलि ही नही, किन्तु हे मात , हममे तेरे प्रति कर्तव्य का बोध ऐसा जागृत हो जाय कि हम तेरे लिये सब कुछ बलिदान करने को सदा उद्यत रहे। तुझमे मिला हुआ यह शरीर, यह आयु, यह प्राण, यह पुष्टि, यह धन, यह सब कुछ और किस काम के लिये है? यदि ये तेरी वस्तुए आवश्यकता पडने पर तेरे लिये समर्पित न हो सकें— तेरे दूध को चुकाने का समय आने पर भी यदि हम इन्हे भेट चढाने से हिचके— तो ऐसे धन, ज्ञान और जीवन को धिक्कार है, इन पापमय वस्तुओ का भूमि पर रहना व्यर्थ है। नही, हम सर्वस्व तुझ पर बलि चढा देने को सदा उद्यत रहेगे।

आचार्य अभयदेव विद्यालकार

ओम् का अर्थ और व्याख्या

❑ आचार्य आनन्दमुनि

ओ३म्, ओम्, ओंकार, प्रणव, उद्गीथ, तार आदि ये सब पर्यायवाची नाम है। किन्ही के द्वारा ओम् को "ॐ" ऐसा भी लिखा जाता है। परन्तु यह तो केवल ओ३म् का प्रतीक-चिह्न सूचक मात्र है, सर्वार्थ साधक नही। ओम यह भगवान् का एकाक्षर नाम भी कहा जाता है।

ओम् अर्थ व्याख्या (स्वामी दयानन्द) — ओ३म् यह ओकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योकि इसमे जो अ उ और म, ये तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते है। जैसे— अकार से विराट्, अग्नि, और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि। (ओ३म्) इन सब नामो का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रो मे स्पष्ट व्याख्यान किया है। (विस्तृत अर्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' मे देखे)।

ओकारादि नामो मे परमात्मा का ग्रहण होता है तथा परमेश्वर का कोई भी नाम अनर्थक नही है। ओकार आदि सभी नाम सार्थक है जैसे—

ओम् ख ब्रह्म-अवतीत्योम् = रक्षा करने से ओम्, आकाशवत् व्यापक होने से खम् और सबसे बडा होने से ब्रह्म ईश्वर का नाम है।

ओमित्येत— ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नही होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नही।

ओमित्येत— सब वेदादि शास्त्रो मे परमेश्वर का प्रधान और निज नाम 'ओ३म्' को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम है।

सर्वे वेदा— क्योकि सब वेद, सब धर्मानुष्ठानरूप तपश्चरण जिसका कथन और मान्य करते और जिसकी प्राप्ति की इच्छा करके ब्रह्मचर्याश्रम करते है उसका नाम 'ओम्' है।

'ओ३म्' और अग्न्यादि नामो के मुख्य अर्थ मे परमेश्वर ही का ग्रहण होता है परन्तु ओ३म्' यह तो केवल परमात्मा ही का नाम है और अन्य अग्नि आदि नामो से परमेश्वर के ग्रहण मे प्रकरण और विशेषण नियम कारक है। (सत्यार्थ प्रकाश)

ओम् शब्द की विशेष व्याख्या

ओ३म् ईश्वर के इस सर्वोत्तम सर्वोच्च नाम मे ३ अक्षर है। बीच मे ३ का सख्यावाची अक केवल प्लुत का बोधक है, जिसमे कि 'ओ' को तीन मात्रा तक खीचकर बोला जाये। अब इस ३ को हटाकर देखे, तो ओ+म्' बचते है। ओ अक्षर मे सन्धि के कारण से अ और उ मिले हुए है। अ और उ मिल कर ही 'ओ' अक्षर बनता है। अब सन्धिविच्छेद (पृथक्-पृथक्) करने पर 'अ उ म्' ये तीन अक्षर (वर्ण) बन जाते है। इस तीन अक्षरी ओम् की व्याख्या विभिन्न ग्रथो मे बहुत ही उत्तम प्रकारो से की है, परन्तु यह व्याख्या उनमे कुछ विशेष है।

'अ उ म्' इनमे 'अ' ईश्वर का प्रतीक है, 'उ' जीव का प्रतीक है, 'म्' यह प्रकृति का प्रतीक है अर्थात् अ उ म् क्रमश ईश्वर, जीव, प्रकृति इन तीन अनादि अनन्त पदार्थ-तत्वो के बोधक है। 'अ' अर्थात् ईश्वर सत्, चित्, आनन्द, इन तीन गुणो वाला है। 'उ' जीवात्मा सत्, चित् इन दो गुणो वाला है। 'म्' अर्थात् प्रकृति केवल सत् इस एक गुण वाली है। सत् सदेव सत्ता वाले सदेव विद्यमान रहने वाले को कहते है। चित् चेतनस्वरूप चेतना वाले को कहते है। आनन्द वह परमात्मा सदेव आनन्दस्वरूप है, आनन्दमय, आनन्द गुण वाला है।

'उ' जीवात्मा परमात्मा के सम्पर्क निमित्त से आनन्दी (सुखी) और प्रकृति के कारण से दु खी होता रहता है। ईश्वर के साथ रहने से, उसकी भक्ति-उपासना करने से, उसी के अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव मे सुधार करने से, यम-नियमो के पालन से, अन्त और बाह्य शुद्धि से, ईश्वर, जीव प्रकृति के सम्यक् ज्ञान (विवेक) से, तप-स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान आदि क्रियाओ से, दृढ विवक-वेराग्य, निरन्तर तल्लीन योगाभ्यास से और अन्त मे प्रभु कृपा से जीवात्मा समाधि एव मोक्षानन्द को प्राप्त करता है। परमात्मा के सहयोग से वह जीव निरन्तर अधिकाधिक पुण्य (निष्काम कर्म) करता हुआ परम और चरम सुख को पा लेता है।

वही जीवात्मा यदि प्रकृति के कार्य जगत् की ओर झुक जाए, उसकी आसक्ति, आकर्षण, स्वादो मे बह जाए, तो उसके फलस्वरूप वह बडे-बडे दु ख झेलता है। जन्म-मरण के बन्धन मे पडा कराहता और सिसकता रहता है, रोगग्रस्त होता है, तीनो प्रकार के दु ख तापो मे जीता मरता है। गन्दे और दु ख भरे विभिन्न शरीर धारण करता है। क्योकि प्रकृति के सहयोग से जीव नाना प्रकार के भयकर पाप कर्म करता रहता है। तभी वह प्रकृति के निमित्त से घोर दु ख-दर्द पाता रहता है। अत ससार और शरीर का सदुपयोग तथा भगवान् से योग करने मे ही कल्याण है।

'उ' जीवात्मा अ (ईश्वर) के सम्पर्क मे आया तो 'ओ' बना। प्रभु ने प्यार से ऊपर उठाया, जीव की उन्नति हुई, प्रभु का आनन्द, बल आदि प्रसाद मिला। परन्तु वही जीव प्रकृति (कार्य जगत्) के सम्पर्क मे आकर 'मु' बन गया, अनवति हुई, प्रकृति ने पैरो तले रौद डाला-कुचल दिया, घोर नरक मे जा पडा।

'ओ' होते-कहते ही ओकार का उच्चारण हुआ। ओम् से प्रीति बढी, सुख आनन्द मिला। 'म्' कहते ही ममता, अहकार, मै—मेरा, स्व-स्वामि सम्बन्ध का स्वार्थ भाव जागा, अविद्या हावी हो गई, प्रभु से प्यार हटा। दु ख बन्धन मे पड गया।

जैसे 'अ' न दिखाई देता हुआ सभी व्यजनो मे व्यापक है, वैसे ही 'ओ' से न दिखाई देने वाले सर्वव्यापक ईश्वर मे मेल-मिलाप हुआ और हममे भी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव जाग्रत हुए। परन्तु 'म' के सम्पर्क मे आते ही जीव को मृत्यु का भय सताने लगा—अभिनिवेश छा गया। परिणामी, विनाशी मे मेल-मिलाप का विनाश ही परिणाम होता है।

ओम् के अ, उ ये दानो स्वतत्र वर्ण है, इनके उच्चारण मे किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नही है, वैसे ही ईश्वर जीव दोनो ही चित्—चेतन स्वरूप है और दोनो ही अपने-अपने कर्म करने मे स्वतत्र है। परन्तु 'म' वर्ण अधूरा है, लगडा है, बिना अ या स्वर के इसका उच्चारण-प्रयोग नही हो सकता। इसी प्रकार प्रकृति (कार्य जगत्) भी अचेतन-अपूर्ण है। ईश्वर, जीव के बिना उसमे अथवा उसमे कोई परिवर्तन-कार्य नही हो सकता।

उन पाचो स्वरो मे भी जैसे 'अ' सबसे मुख्य प्रधान है वैसे ही उन पाचो अनादि अनन्त तत्वो मे ईश्वर की ही सर्वाधिक मुख्यता-प्रधानता है। जीव अपने शुद्ध ज्ञान, कर्म से उसी की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करके अपने मानव जीवन को सफल बनाकर परम लक्ष्य (मोक्ष) को प्राप्त कर सकता है, अन्यथा नहीं।

व्याकरण शास्त्र मे 'ओम्' पद अव्यय है जिसमे कभी कोई अदल-बदल नही होती, जिसमे कोई भी लकार, विभक्ति प्रत्यय आदि न जुडने से कोई परिवर्तन नही होता, ऐसे ही भगवान् भी सदैव अव्यय, अपरिवर्तनीय है। उसमे अन्य किसी की कोई लाग-लपेट नही है।

ओम् मे म् (माया) रहते हुए भी अ (ईश्वर) मे सर्वथा पृथक् है, ऐसे ही परमेश्वर मे भी प्रकृति (माया) रहते हुए भी उससे सर्वथा पृथक् है, उसमे सलग्न नही है।

वेद मन्दिर, इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६

देव बनिये और स्वर्ग में रहिये

पुराने मनीषियो ने देवो और स्वर्ग की कल्पना की थी। स्वर्ग ऐसा स्थान था, जहा कोई दुख नही था, कोई भय, कोई चिन्ता, कोई अभाव नहीं था। देवो की प्रत्येक इच्छा चाहते ही पूरी हो जाती थी। परमात्मा के बनाये इस ससार मे जो कमिया रह गई थी, उन्हे कवियो ने कल्पना द्वारा पूरा कर लिया था। बाद मे सत्य धुरन्धरो ने घोषणा की कि स्वर्ग नरक कुछ नही होते। ये असत्य कल्पनाए है। सत्य केकठोर प्रहार से स्वप्नो के सुनहले महल ढह गये।

मिथ्या कल्पना हितकर थी

यह बडा नुकसान हुआ। इस मिथ्या स्वर्ग को पाने के प्रलोभन मे सैकडो, हजारो वर्षो तक लाखो करोडो लोग धार्मिक जीवन बिताते रहे, परलोक को सुधारने के प्रयत्न मे इहलोक मे त्याग, तपस्या, इन्द्रिय सयम का जीवन बिताते रहे। भारतवर्ष के आर्य (हिन्दू) ही नही, यहूदी, ईसाई और मुसलमान भी स्वर्ग मे निवास की लालसा से इस लोक मे लालसाओ का दमन करते रहे।

सत्य का, वास्तविकता का (यह कि स्वर्ग नरक कुछ नही होता) पता चल जाने केबाद दुनिया मे ऐसी आपाधापी मची कि स्वर्ग कहीं हो या न हो, यह ससार भयकर नरक बन गया। जब स्वर्ग कही है ही नही तब क्या न अपनी सब भली बुरी इच्छाए अभी, इसी लोक मे पूरी कर ली जाये? लोग पाप पुण्य का विवेक त्याग कर उचित अनुचित उपायो से सुख भोग के साधन जुटाने मे लग गये।

लौकिक सुख भोग क्या है? खाने को अच्छे भोज्य पदार्थ हो—फल, मेवे, मिठाइया, दूध, दही, पीने के लिए स्वादिष्ट आनन्ददायक पेय हो—रस, शरबत और शराब, पहनने के लिए बढिया वस्त्र और आभूषण हो, रहने के लिए बडे, भव्य महल हो, सुन्दर तरुणी स्त्रिया हो, सेवा के लिए ढेरो दास दासिया हो। वर्तमान ही नही, भविष्य के लिए भी यथेष्ट धन हो, कल या परसो भी किसी चीज की कमी न पडे।

इससे भी बडा सुख है प्रभुत्व का। लोग मुझे बडा माने, मुझसे दब कर रहे और मेरी आज्ञा का पालन करे।

इच्छाए पूरी नहीं हो सकती

प्रकट है कि इतनी सब इच्छाओ का पूरा हो पाना सभव नही है। फिर इच्छाओ की एक विशेषता है कि वे सुरसा के मुह की भाति फैलती जाती है। भूखे को रोटी मिल जाये, तो उसे हलुआ, पूडी, रसगुल्ला, गुलाब जामुन की इच्छा होती है। एक से अधिक स्त्रियो की इच्छा होती है। वस्त्रो, वाहनो, भवनो में जो कुछ अपने पास है, उससे तृप्ति नही होती, जो कुछ अपने से बडो के पास है, उसकी इच्छा रहती है। जितना अधिक प्राप्त होता जाता है, उतनी ही इच्छा और प्रबल होती जाती है।

क्षमता घटती है, तृष्णा बढती है

ससार को रचने वाले ने एक और खेल किया है। उपभोग से उपभोग की क्षमता क्षीण होती है। जो व्यक्ति नित्य छक कर स्वादिष्ट भोजन करता है, उसकी पाचन शक्ति कम हो जाती है। अजीर्ण, कब्ज, अतिसार आदि रोग घेर लेते है। कामोपभोग से काम क्षमता घटने की बात सर्वविदित है ही। सौ सौ रानिया और रखैलें रखने वाले राजा और नवाब वाजीकरण औषधो के फेर मे ही पडे रहे।

उपभोग की क्षमता घटने के साथ उपभोग की लालसा भी घट जाती, तो भला होता। परन्तु वैसा होता नही। ज्यो ज्यो इन्द्रिया जीर्ण, दुर्बल, अशक्त होती जाती है, त्यो त्यो तृष्णा बढती है। बूढे लोग अधिक चटोरे होते है। यही बडी विडम्बना है।

असयत लालसा

उपभोग की असयत लालसा ने मनुष्य का विवेक छीन लिया। धार्मिक ऋषियो ने समाज को सुखी और निरुपद्रव रखने के लिए अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के जो पाच महाव्रत बताये थे, उनको उसने उठा कर ताक मे रख दिया। प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए भीषण हिसा का सहारा लिया गया। युद्ध करके पराजित लोगो को दास बनाया गया। शोषण और उत्पीडन की यातनाए उनके सिर लाद दी गई। ससार न केवल पराजितो के लिए, अपितु विजेताओ के लिए भी नरक बन गया। शोषितो और वचितो मे भी ऐसे बलिदानी विद्रोही निकल आते थे, जो प्राण हथेली पर रख कर अत्याचारी शासक पर आक्रमण कर देते थे। इन आतकवादी वीरो के कारण शोषक शासको का चैन समाप्त हो जाता था।

आज सारा ससार उपभोक्तावादी चिन्तन के फलस्वरूप आतकवाद के नरक मे पडा दुख पा रहा है। इसका कारण यह है कि मनुष्य देव न रह कर राक्षस बन गया है। बडे राष्ट्रो ने नरसहार के भीषण यत्र, परमाणु बम, बमवर्षक विमान और प्रक्षेपास्त्र बना लिये है। उनके बल पर वे सारी दुनिया पर धौस जमा कर उस पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते है। प्रभुत्व केवल प्रभुता या शासन के लिए नही, अपितु उनके निर्मम शोषण के लिए करना चाहते है। सन् १९४७ मे एक अमेरिकी डालर ५ भारतीय रुपयो के बराबर होता था। आज एक डालर ४८ रुपये का है। अमेरिकी सम्पत्ति का मूल्य ९ गुना बढ गया है और भारतीय सम्पत्ति का मूल्य उसी अनुपात मे घट कर केवल नोवा भाग रह गया है। इससे बढ कर नगा शोषण क्या होगा? भारत की ही नही, ससार के अधिकाश देशो की यही दशा है।

आतकवाद

आज अमेरिका केराष्ट्रपति श्री बुश आतकवाद के विरुद्ध लम्बा युद्ध लडने की घोषणा कर रहे है और उसके लिए ससार के सब देशो का समर्थन माग रहे है। उन्होने यह भी कहा है कि हर देश को चुनाव करना है या तो वह हमारे साथ है, या वह हमारे विरुद्ध है, किसी के भी तटस्थ रहने की कोई गुजाइश नही है। अधिकाश देश उनके समर्थक बन गये है।

श्री बुश यह चाहते है कि अफगानिस्तान मे चल रहे युद्ध का खर्च अमेरिका के समर्थक राष्ट्रो पर डाल दिया जाये। इस मामले मे समर्थक देशो को सावधान रहने की आवश्यकता है। अमेरिका ससार का सबसे धनी और शक्तिशाली देश है। सयुक्त राष्ट्रसघ की उपेक्षा करके उसने स्वय ही अमानवीय युद्ध छेडा है। इस युद्ध मे जीत जाने पर प्रभुत्व भी उसी का बढेगा। आतकवाद का तो बहाना भर है। असली उद्देश्य तो मध्य एशिया के तेल और गैस भडारो पर कब्जा करना है। ऐसी दशा मे युद्ध का पूरा खर्च अमेरिका को ही उठाना चाहिए। अन्य देशो का समर्थन नैतिक और राजनीतिक रहे।

युद्ध का मूल आसुरी वृत्ति मे

युद्ध का मूल इस तथ्य मे है कि मनुष्य देव नही रहा, वह दस्यु या राक्षस बन गया है। वह जीवन को खेल न मान कर युद्ध मान बैठा है। देव खेल खेलते है, युद्ध नही करते।

खेल और युद्ध

खेल और युद्ध का अन्तर समझ लेना चाहिए। खेल मे प्रेम और सौहार्द रहता है। विजय की इच्छा रहती है, किन्तु इस बात का पूरा प्रयत्न रहता है कि प्रतिद्वन्द्वी खिलाडी को कोई चोट या खरोच न आ जाये। खेल मे प्राप्ति केवल शुद्ध आनन्द की होती है, अन्य कोई लाभ उसके साथ नही जुडना चाहिए। जुडेगा, तो खेल खेल नही रहेगा।

बाघ, भालू, तेदुओ को आपस मे खेल करते देखिये। बच्चे हो या बडे, खेलते हुए कितने प्यारे दीखते है! उनके वही पैने नाखून और नुकीले दात होते है, पर मजाल जो दूसरे को बाल बराबर भी खरोच आ जाये। वे एक दूसरे से गुत्थमगुत्था होते है, गुर्राते भी है, एक दूसरे को नीचे गिरा कर भभोडते भी है, पर नाखून पैरो की गद्दियो मे भीतर को मुडे रहते है और चोट नही करते, दातो की पकड भी सधी हुई होती है कि वे त्वचा मे गडे नही।

पर जब वे ही बाघ, भालू और तेदुए लडने लगते है, तब स्थिति एकदम बदल जाती है। मन मे प्रेम के स्थान पर द्वेष भर जाता है। नाखून पजो से बाहर को उभर आते है और प्रतिद्वन्द्वी को लहूलुहान कर देते है। दात प्रतिद्वन्द्वी की खाल और मास चीर देते है। देव खेल खेलते है, विनाश उन्हे प्रिय नही है।

देव बनने का यत्न करे

राष्ट्रनायको को सलाह देने का हमारा प्रयोजन नही है, परन्तु अपने पाठको को यह सलाह देने मे हमें कोई सकोच नही है कि यदि स्वर्ग मे निवास करने की इच्छा हो, तो देव बनने का यत्न करे। जीवन को केवल एक खेल समझे, जिसमे जीतने या हारने से कुछ बन या बिगड जाने वाला नही है।

जब इतनी निरासक्ति की भावना आ जायेगी, तब औरो से अपनी बात मनवाने या औरो पर अपनी इच्छा थोपने का भी आग्रह नही रहेगा। आये दिन खबरे पढने को मिलती है कि पुत्री जिस युवक से विवाह करना चाहती थी, उसे पिता पसन्द नही करता था। व्यथित हो कर पुत्री ने आत्महत्या कर ली, या पिता की इच्छा के विरुद्ध चलने पर पिता ने ही पुत्री की हत्या कर दी। जीवन को खेल मानने वाला देव ऐसा कभी नहीं करेगा।

देव देते है

देव सदा कुछ देते है, इसीलिए वे देव कहलाते है। यदि हम स्वर्ग का सुख (इस पृथ्वी पर ही) पाना चाहते है, तो हमे यथाशक्ति देने को उद्यत रहना चाहिए। हम वही कुछ दे सकते है, जो हमारे पास है। धन है, तो धन दे सकते है धन नही है तो शरीर से सेवा कर सकते है, समय दे सकते है, सदाशयतापूर्ण सलाह दे सकते है। भावना देने की होनी चाहिए।

आशुतोष

देव क्रुद्ध देर मे होते है, परन्तु प्रसन्न जल्दी हो जाते है आशुतोष जल्दी और थोडे मे प्रसन्न हो जाने वाले। जिस पर प्रसन्न हो जाते है, उसकी जी जान से सहायता करते है।

देव मृदुभाषी होते है, उनके मुख से कटु वचन नही निकलते। यदि कभी रुष्ट हो जाये, तो वह रोष सीधा क्रियारूप मे ही प्रकट होता है। दुष्टो को वे दड देते है, परन्तु धमकिया नही देते। उसके बाद वे शीघ्र ही फिर प्रसन्न हो जाते है। जो प्रसन्न नही रह सकता, वह देव नही है।

देव आसुरी शक्तियो से लडने और उनका उन्मूलन करने के लिए भरसक यत्न करते है। वे कायर नही होते, अपने स्वार्थ के लिए नही परन्तु अन्याय द्वारा पीडित व्यक्ति की सहायता के लिए बडे से बडा कष्ट सहने को तैयार रहते है। इसमे उन्हे अलौकिक तृप्ति होती है।

मृत्यु से डरते नही

देवो को मृत्यु का भय नही होता (इसीलिए उनका एक वाचक शब्द अमर भी है)। मरना तो प्रत्येक मनुष्य को है ही परन्तु जो लोग हर समय मृत्यु से भयभीत

(शेष पृष्ठ ५ पर)

जनमेजय का नाग यज्ञ

जनमेजय के नागयज्ञ की कथा महाभारत मे आती है। यह पाठक ही निर्णय करे कि यह इतिहास हे, या काल्पनिक कथा है या इतिहास मे बार बार दुहराया जाने वाला चिरतन सत्य है, जिसे आलकारिक ढग से प्रस्तुत किया गया है।

राजा परीक्षित महाभारत युद्ध के श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के पुत्र थे। उनका जन्म महाभारत युद्ध के उपरान्त हुआ था। महाभारत मे वीर योद्धाओ का सारा समुदाय ही दिवगत हो गया था। विजेता पाडवो के सामने सिर उठा सके, ऐसी कोई शक्ति शेष नही रह गई थी। युधिष्ठिर ने धर्मपूर्वक शासन किया।

धर्मपरायण राजा

यथासमय परीक्षित राजा बने। वह प्रतापी, सदाचारी और प्रजा का प्रिय करने वाले थे। अपने पूर्वज राजा पाडु की भाति उन्हे भी शिकार का चाव था। एक बार राजकाज मत्रियो को सौप कर वह घने वन मे शिकार खेलने चले गये। वहा उन्होने एक मृग पर तीर चलाया। मृग घायल हो कर भाग गया। उसे ढूढते हुए राजा परीक्षित पैदल ही वन मे उसका पीछा करने लगे।

मृग हाथ नही आया। साठ वर्षीय राजा थक कर चूर हो गये। प्यास से गला सूख रहा था। तभी उन्हे एक वृक्ष के नीचे बैठा एक वृद्ध व्यक्ति दिखाई दिया। वह आखे मूदे किसी गहन चिन्तन मे लीन था। राजा ने भद्रतापूर्वक उससे पूछा 'आपने इधर से किसी घायल मृग को जाते तो नही देखा।'

उस व्यक्ति ने जेसे सुना ही नही, न आखे खोली, न कोई उत्तर दिया। राजा ने एक बार फिर पूछा 'कोई घायल मृग इधर से जाते देखा है?'

बुद्धि भ्रश

जब उस ध्यानमग्न मुनि ने कोई उत्तर न दिया, तब राजा खीझ उठा। उसने मान लिया कि यह मुनि ध्यान लगाने का ढोग कर रहा है। परन्तु सदाचार का अभ्यासी होने के कारण उसने और कुछ तो न किया, पर विनोद मे पास ही पडा एक मरा साप देख कर उसे धनुष की नोक से उठा कर मुनि के गले मे डाल दिया, सोचा कि यदि यह मुनि ढोग कर रहा होगा, तो साप केस्पर्श से आखे खोल देगा। पर मुनि ने आखे नही खोली। राजा ने भी और कुछ नही किया। वह पानी की खोज मे आगे बढ गया।

प्रभुत्व अविवेक का जनक

प्रभुताशाली लोग, राजा भी और सत भी, अविवेक कर बैठते है। यह मनुष्य स्वभाव है। जागरूक व्यक्ति से भी चूक हो जाती है। होनहार के निमित्त बन जाते है। नही तो धर्मपरायण, प्रजावत्सल राजा को मुनि के गले मे मरा साप डालने से क्या मिल जाना था?

वह मुनि शमीक थे। उनके गले मे मरा साप डालते राजा को पेडो की ओट मे छिपे कुछ बालको ने देखा था। उन्होने दौड लगाई और मुनि के युवा पुत्र शृगी को जा कर बताया कि एक व्यक्ति उनके पिता के गले मे मरा साप डाल गया है।

उद्धत युवा शक्ति

जहा प्रभुत्व के मद मे अविवेकपूर्ण आचरण करने वाले राजा या राजपुरुष होगे, वहा देर सवेर मे उद्धत शृगी भी उत्पन्न हो ही जायेगे, जो प्रबलतम शक्ति की परवाह न करके अत्याचार के उन्मूलन के लिए अपनी जान तक दाव पर लगा देगे।

शृगी ने आ कर पिता की दशा देखी। तपस्वी, शान्त-स्वभाव मुनि के गले मे मरा साप लटकता देख कर वह क्रोध से जल उठा और उसने तय किया (शाप दिया) कि सात दिन के अन्दर तक्षक नाग उस राजा को डस लेगा, जिसने यह पाप किया है।

नाग प्रयोग

मदान्ध सत्ता के विरुद्ध सघर्ष करने का यह अचूक हथियार है नाग प्रयाग। बाघ की तरह दहाडते हुए सामने से आक्रमण मत करो। साप की तरह रेगते हुए लुक छिप कर शत्रु तक पहुचो और पता चलने से पहले ही उसे डस लो।

शमीक मुनि का ध्यान समाप्त हुआ, तो उन्हे शृगी ऋषि के शाप की बात पता चली। सुन कर वह दु खी हुए, बोले 'यह अच्छा नही हुआ। परीक्षित बुरा राजा नही है। पता नही, उसने ऐसा कार्य क्यो कर डाला?'

शृगी अपने निश्चय पर अटल रहा। 'मेरा शाप मिथ्या नही होता', उसने कहा

उसने तक्षक नाग को पटाया और तक्षक ने परीक्षित को डसने की हामी भर ली। नाग लोग आतकवादी कार्यो मे निपुण थे।

शाप की खबर राजा तक भी पहुची। स्वय शमीक मुनि ने ही भिजवा दी। ऋषियो का शाप अटल होता है, ऐसा सभी का विश्वास था। राजा की रक्षा के लिए सब उपाय किये गये। ऐसा महल बनाया गया, जिसमे कोई कीट पतग भी लुके छिपे प्रवेश न कर सके। फिर भी किसी को भरोसा नही था कि इन उपायो से बचाव हो सकेगा। (अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जौन ऐफ कैनेडी ने कहा था कि यदि कोई व्यक्ति यह निश्चय कर ले कि उसने मुझे गोली मारनी ही है, तो कोई ऐसा उपाय नही है, जिससे मै उससे बच सकू)।

राजा उस सुरक्षित महल मे बैठ कर सात दिन बीतने की प्रतीक्षा करने लगा। महल मे ही नही, पूरी राजधानी मे भय का राज्य छा गया। आवश्यकता पडने पर वैद्यो, चिकित्सको की सेवा तत्काल मिले, इसका प्रबन्ध किया गया।

तक्षक की चिन्ता

उधर तक्षक को अपना कार्य पूरा करने की चिन्ता पडी। राजा के सुरक्षित महल मे घुस कर उसे कैसे डसा जाये? राजसत्ता के विरुद्ध लडने वालो को सहायता देने वाले सदा मिलते ही रहते है। तक्षक को विश्वास था कि वह किसी न किसी तरह अपना कार्य पूरा कर लेगा।

वैद्य काश्यप

तक्षक राजा को डसेगा, यह समाचार एक विष वैद्य काश्यप ने भी सुना। 'तक्षक द्वारा डसे जाने पर मै अपनी चिकित्सा से राजा के प्राण बचाऊगा' यह सोच कर वह राजा के महल की ओर चला। तक्षक के गुप्तचरो ने काश्यप के प्रस्थान की सूचना तक्षक को दे दी।

तक्षक एक सामान्य ब्राह्मण का वेश बना कर रास्ते मे काश्यप से मिला, बोला 'इतनी जल्दी मे कहा जा रहे है वैद्य जी महाराज?'

'राजा परीक्षित को तक्षक साप डसेगा। उसकी चिकित्सा करके धन प्राप्त करूगा, इस आशा से जा रहा हू', काश्यप ने उत्तर दिया।

'तक्षक के काटे की चिकित्सा आप न कर सकेगे। राजा मर जायेगा और आपको अपयश मिलेगा। अच्छा है, आप वापस लौट जाये', तक्षक ने कहा।

'अपयश नही, यश मिलेगा। मैने तक्षक के काटे को बचा लिया, यह कोई छोटी बात है क्या?'

तक्षक ने कहा 'आपको इतना विश्वास क्यो है? मै ही तक्षक हू। मै इस सामने खडे वृक्ष को डसता हू। यह तनिक देर मे जल कर राख हो जायेगा। इस पर आप अपनी चिकित्सा आज़मा कर देखिये।'

तक्षक का विष

काश्यप ने चुनौती स्वीकार कर ली। तक्षक ने फन उठा कर वृक्ष को डसा। कुछ ही क्षणो मे वृक्ष की डालो से आग की लपटे निकलने लगी और देखते देखते वह विशाल वृक्ष जल कर राख का ढेर रह गया।

'तुम्हारा दश सफल रहा', काश्यप ने कहा। 'अब मेरी चिकित्सा का चमत्कार देखो।'

काश्यप की विद्या

काश्यप ने उस राख को एकत्र किया। उस पर न जाने क्या क्या क्रियाए की और परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ देर बाद गली राख मे से वृक्ष का अकुर फूटता दिखाई पडा। देखते देखते बढ कर वह पहले जैसा विशाल वृक्ष बन गया।

देख कर तक्षक चिन्तित हो उठा। यदि उसने राजा को डसा, और काश्यप ने उसे फिर जिला दिया, तो तक्षक का क्या यश बाकी बचेगा? तक्षक ने काश्यप से कहा 'सर्प विष की चिकित्सा तुम कर सकते हो, परन्तु जिसकी मृत्यु आ गई है, उसे तुम नही बचा पाओगे। ऋषि के शाप से राजा को मरना है। इसलिए मेरी बात मानो। जितने धन की तुम आशा करते हो, उतना मुझसे ले लो और वापस लौट जाओ।' आतकवादियो के पास धन प्रचुर रहता है।

काश्यप को यह बात समझ आ गई। वह मुहमागा धन ले कर वापस लौट गया।

उसके बाद तक्षक ने अपने नाग अनुचरो को ऋषियो का वेश बनाने को कहा। योजना यह बनी कि ये ऋषि राजा को आशीर्वाद देने जायेगे और कुछ फल राजा को भेट करेगे। उनमे से एक कृत्रिम फल के अन्दर तक्षक कुडली मार कर बैठ गया।

ऋषियो के वेश मे नाग

सातवे दिन तीन चार ऋषियो के वेश मे नाग राजमहल मे पहुचे। आशीर्वाद देने आये ऋषियो को राजा ने अपने पास बुलवा लिया। वे छद्मवेशी ऋषि राजा को फल और आशीर्वाद दे कर लौट गये। जब सातवा दिन समाप्त होने को हुआ, तब राजा का भय कम हुआ। वह बातचीत करने और हसने तक लगा। उसने कहा 'चलो, ऋषि के शाप की अवधि समाप्त हुई। भूख लगी है। ऋषियो के दिये फल ही खा लिये जाये।'

पहला ही फल जो उसने उठाया, उसी मे से तक्षक नाग निकल पडा और उसने क्रोध मे भर कर राजा की बाह मे दात गडा दिये। सभी सेवक और दरबारी घबडा गये। राजा को डस कर तक्षक देखते देखते गायब हो गया। राजा को बचाया नही जा सका।

जनमेजय का रोष

परीक्षित के बाद उसका पुत्र जनमेजय राजा बना। वृद्ध मत्रियो से उसने यह वृत्तान्त सुना। क्रुद्ध हो कर राजा जनमेजय ने निश्चय किया कि दुष्ट तक्षक ने न केवल मेरे पिता को डसा, अपितु चिकित्सा के लिए आ रहे वैद्य को भी धन दे कर वापस लौटा दिया। अब मै न केवल तक्षक के सहार के लिए, अपितु उसके

(शेष पृष्ठ १० पर)

इंग्लैंड में वेद प्रचार की यात्रा पर (२)

❑ ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त, बी ऐस ऐम

इग्लैड की राजधानी लदन से लगभग १५० मील उत्तर पश्चिम का अचल कहलाता है, वैस्ट मिड्लैंड्स। "मील" शब्द पर चौंकिए नही। विकासशील भारत मे तो हम आधुनिक पैमाना "किलोमीटर" कहते है और विकसित इग्लैड अभी भी 'मील' से प्रीति लगाये है। जी हा, अग्रेज, जिनके साम्राज्य मे पहले कभी सूर्यास्त होता ही नही था, अभी भी परम्परा प्रेमी है। 'मील' सभी सूचना पट्टो पर प्रमुख है। अस्तु।

वैस्ट मिड्लैड्स का प्रमुख नगर बरमिघम तो कभी कभी एशिया का भूभाग प्रतीत होता है। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर, आर्य समाज, सभी केपूजा स्थल और प्रेरणा स्रोत हैं यहा। अग्रेज़ो से दात काटी रोटी वाली दोस्ती के दिनो मे ईराक के सद्दाम हुसैन ने अपने पेट्रो डॉलर के बल पर बरमिघम के प्रमुख राजमार्ग केकिनारे गगनचुम्बी विशाल मस्जिद बनवा दी थी। वह दोस्ती तो 'कुट्टी' मे बदल गई, किन्तु वह मस्जिद अभी भी 'सद्दाम हुसैन मास्क" के नाम से जानी जाती है। जातीय दगो के इस युग मे मुस्लिम विरोधी भावना प्रबल होने पर, वह अग्रेज़ो की आख की किरकिरी बन कर रह गई है।

दब्बू नीति की पराजय

"रेस रिलेशन्स" केपरिप्रेक्ष्य मे आर्य समाज द्वारा वेद प्रवचन को रेडियो पर प्रसारित करने के सम्बन्ध मे कई सुझाव आए। एक तथाकथित शान्तिवादी का विचार था कि आर्य समाज का नाम ही न लिया जाए और वैदिक सिद्धान्त पर परोक्ष प्रकाश डाला जाए। डाक्टर नरेन्द्र कुमार आर्य ने प्रधान आर्य समाज मिड्लैड्स के रूप मे सशक्त दलील दी कि 'बिना राम के रामायण का मचन कैसे सम्भव होगा? " 'कारगिल विजय' की मैने चर्चा की और उसे रेडियो माध्यम पर लाने का प्रस्ताव किया, तो एक अर्ध अहिंसावादी बोले कि पाकिस्तानी भडक जाएगे। 'भडकना या क्रोधित होना तो उनकी मानसिक निर्बलता का परिचायक होगा', मैने कहा और समय आने पर उन्हे आर्य समाज मे एक दूरदर्शन निर्मित डॉक्युमेंट्री 'कारगिल की गूज' दिखाई। गलतफहमी केबादल को तथ्य रूपी हवा ने बिखेर दिया, सत्य का सूर्य सभी ने देखा। कराची (पाकिस्तान) की सुरैया बेगम की 'वाह-वाह' मे पश्चिमी पजाब वालो ने अपना स्वरदान नही दिया। उनमे से कुछ के सगे सम्बन्धी कारगिल मे रहे थे या लापता थे। लाहौर के चौधरी मोहम्मद याकूब ने तो आर्य समाज की चौखट चाहते हुए भी न लाघी, क्योंकि उनकी प्रिय सास उनके घर शो के समय ही आ धमकी। अगली सुबह पार्क मे प्राणायाम से पूर्व उन्होंने न आ पाने का अफसोस जताया। कारगिल का शो हो जाने के बाद अर्ध-अहिंसावादी बगले झाकने लगे, फिर भी अशक्त हाथो से ताली बजाने की चेष्टा करते रहे। आर्य समाज के उत्सव को चार चाद लग गये।

पौराणिको का सहयोग

बरमिघम के एशियाई श्रोताओ का अपना प्यारा रेडियो स्टेशन है "रेडियो ऐक्स ऐल"। आर्य समाज की वेद प्रचार समिति के अध्यक्ष, महाशय कृष्ण चोपडा, मै और कौम्पियर ७४ वर्षीय सतोष पराशर स्टूडियो मे बैठे है। आर्य समाज का "स्पान्सर्ड प्रोग्राम" प्रसारित हो रहा है। पराशर जी पूर्व वायु सैनिक है, पौराणिक है और आर्यसमाज के रेडियो कार्यक्रम को अत्यन्त उत्साह से कौम्पियरिंग कर रहे है। कार्यक्रम का आरम्भ करने के लिए उन्होने स्वय एक सी डी ढूढ निकाला, जो इस समय 'एयर' पर जा रहा है वेदो का डका आलम मे बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।' स्टूडियो मे बैठे हम आर्यजन गद्गद् हो गये।

पाराशर जी ने श्रोताओ को रेडियो पर मेरा परिचय दिया और इस बात पर बल दिया कि वेद प्रचार केलिए आर्य समाज वैस्ट मिड्लैड्स के निमत्रण पर बरमिघम आया हू। ऐसा वह नित्य कह रहे है क्योंकि श्रोताओ की सख्या बढती और बदलती रहती है। फिर, जैसा हम पूर्वाभ्यास कर चुके थे, उसके अनुसार पूछा कि क्या मै मन की शाति के बारे मे वेद मत्र पाठ और उसकी व्याख्या करना चाहूगा? फिर उन्होने एक पूरक प्रश्न पूछा (हम लोग एयर पर "लाइव" जा रहे थे कि श्रोताओ को हमारी सास भी सुनाई दे) 'आप तो सैन्य अधिकारी रहे है, रणभूमि मे तो अशाति ही अशाति है, फिर मन मे शाति कहा?'

मन मे शान्ति तो रण मे जय

मैने कहा 'बन्धुवर, यदि मन मे शाति है, तो रण मे सैनिक सक्षम होगा, उसके शस्त्र शत्रु के लिए घातक होगे, विजयश्री उसका वरण करेगी और शत्रु हाहाकार करेगा। राम-रावण युद्ध मे श्रीराम ध्यान केन्द्रित करकेबाण चलाते थे, अशान्त रावण अट्टहास करता था। अन्तत चिता पर चढाया जाने वाला शव रावण का था, राम का नही। एक श्रोता का फोन स्टूडियो मे ही आया, 'राम-रावण युद्ध की चर्चा जारी रखिए, मन को शान्ति भी मिल रही है।' मेरा ही स्वर लगातार न प्रसारित होता रहे, अत वेद मत्र पाठ से पूर्व कौम्पियर ने महाशय कृष्ण चोपडा से अनुरोध किया कि वेद प्रचार के कुछ पहलुओ पर प्रकाश डाले। इस बीच मैने माइक से अलग गहरी सास कई बार ली। मन प्रफुल्लित हुआ।

जिनसे घोर विप्लव होता है, उन्ही से शान्ति हो

मन की शान्ति से सम्बन्धित वेद मत्र का सस्वर पाठ किया

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मन षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा सशितानि।

यैरेव ससृजे घोर तैरेव शान्तिरस्तु न ॥ अथर्व १९९५

फिर विस्तार से व्याख्या हुई जिसका साराश यहा लिख रहा हू ये जो पाच इन्द्रिया है, मन जिनका छठा साथी है, जिनसे ही मेरे मन मे घोर अशान्ति उत्पन्न हुआ करती है, विवेक द्वारा परिष्कृत होने पर उनसे ही हमारे लिए शान्ति हो। मन मे चिता हो, उद्विग्नता हो, तो उपजती है अशान्ति। चिता ही हमे असमय चिता पर ले जाती है। ईश्वर चिंतन से हम चिता को दूर कर सकते है। किसी भी समस्या पर चिता करना व्यर्थ है। हा, चिंतन करके हम समस्या का समाधान ढूढने मे सफल हो सकते है। फिर निश्चित हो कर हम प्रसन्न होगे। निश्चिन्तता की स्थिति मे मन मे स्वत आयेगी शान्ति।

उद्विग्नता का मूल

चिता और उद्विग्नता की उपज कहा होती है? जब हमारी अपनी इन्द्रिया अनुशासनहीन हो जाती है। मन मे सयम का अभाव होता है। हमारी पाच ज्ञानेन्द्रिया है आख, कान, नाक, जिह्वा (रसना) और त्वचा। मस्तिष्क और हृदय के सयोग से बना है, मन। मन इन पाच ज्ञानेन्द्रियो और पाच कर्मेन्द्रियो--हाथ, पैर, गुदा गुप्ताग और वाक् (जिह्वा) का प्रेरक है। अनेक बार तो इन्द्रिया मन को डावाडोल कर देती है और अपनी अगुलियो पर नचाती है। इन छह के असयम और अनुशासनहीनता मे हृदय मे उपजती है, अशान्ति। इन्ही छह को हम अपने "विवेक" (ब्रह्मणा) द्वारा सगठित और अनुशासित कर सकते है। इस प्रकार परिष्कृत हो जाने पर वही छह हमे शान्ति देती है। अत विवेक का उपयोग शान्ति लाने के लिए आवश्यक है।

प्रवचन के अन्त मे श्रोताओ ने फोन पर फोन किये। शान्ति की खोज मे अनेक व्यक्तियो ने मिलने की इच्छा व्यक्त की। आर्य समाज के द्वार सभी के लिए सदैव खुले रहते है, यह जानकर श्रोता प्रसन्न हुए। जो अलग से बात करना चाहते थे, उन्हे भी निराश नही होना पडा। यह बात भी स्पष्ट कर दी गई कि आर्य समाज गुरुडम को प्रोत्साहन नही देता और किसी के कान मे मत्र फूक कर चमत्कार कर दिखाने को ढोंग और छलावा मानता है। फिर भी किसी दुखिया ने अपने दुपट्टे मे मत्र लिख कर बाधने का अनुरोध किया और सौ पाउण्ड देने को तैयार हुई। उन्हे बताया गया कि आर्य समाज अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करता है। उस किशोरी की समस्या थी पति-पत्नी सवादहीनता, जो प्रेम पर कुठाराघात करती है। सवाद ही जनक है प्रेम और माधुर्य का। पारिवारिक सुख के लिए आपस मे बोलना बन्द न करो, अभी नही कभी नही। आपसी बातचीत सन्देह और सशय को दूर करेगी, कटुता कम होते होते मरु मे विलीन हो जायेगी और बह उठेगी प्रेम रस की धारा। अस्तु!

डॉक्टर नरेन्द्र कुमार आर्य ने स्वय कहा कि एक शनिवार वे मुझे अपनी मर्सीडीज मे भ्रमण कराने ले जाएगे। मैने कहा 'बचपन मे शेक्सपियर के नाटक पढता रहा हू, मचन भी यदाकदा किया क्यो न चले उनके जन्म स्थान, स्ट्रेटफोर्ड अवॉन एवन?' एक शनिवार की सुबह गतव्य की ओर था उनकी मर्सीडीज का मुह।

"उपवन", ६०९, सेक्टर-२९,
नोयडा-२०१३०३, भारत

(पृष्ठ ३ का शेष)

देव बनिये और ......

रहते है, वे मानो प्रतिक्षण मर रहे होते है। जो मरने से न डर कर अपने कर्तव्य का दृढचित्त से पालन किये जाते है, वे केवल एक बार मरते है और मर कर भी अमर हो जाते है।

स्वामी श्रद्धानन्द को पता था कि उनके शुद्धि आन्दोलन से रुष्ट अनेक धर्मान्ध व्यक्ति उनकी हत्या का निश्चय किये बैठे है, फिर भी वह जिस कार्य को धर्म समझते थे, उसका आचरण करते रहे। इसी को मृत्युजयी होना कहा जाता है। गाधी जी को भी मृत्युभय नही था।

चतुराई से दूर रहे

दुनियादारी या चतुराई देवत्व से मेल नही खाती। सरलता, भोलापन देवत्व का आवश्यक अग है। देव कभी यह दावा नही करता कि उसे कोई ठग नही सकता। ठगे जाने मे उतनी हानि नही है, जितनी ठगने मे है। जो बहुत चतुर है, वे स्वर्ग का सुख नही पा सकेगे। उन्हे कभी सतोष नही होगा। जो ठगे जाने के बाद भी सन्तुष्ट है, उनका सुख कोई छीन नही सकता। वे उन चतुर लोगो की ईर्ष्या के पात्र बनते है, जो कहते है 'यह कैसा अजीब आदमी है!' सरलता अमृत है और चतुराई विष। चतुर लोग स्वर्ग का सुख नही पा सकेगे। वे कभी सन्तुष्ट न होगे।

स्वर्ग मरे बिना नही मिलता

'स्वर्ग बिना मरे नही मिलता' का अर्थ यह है कि स्वर्ग का सुख प्राप्त करने के लिए अत्यधिक परिश्रम (जिसमे जान निकल सी जाये, इतना) करना पडता है। अपने जीवन निर्वाह के लिए, अपने परिवार जनो के सुख के लिए, पडोसियो की सहायता के लिए समाज सेवा के कार्यो के लिए यदि आप इतना परिश्रम कर सके, कि रात मे बिस्तर पर लेटते समय अनुभव करे कि आज तो शरीर मे जान ही नही रही, तो निश्चय आप देवत्व के सोपान पर चढ रहे है और आपको इस लोक मे स्वर्ग निवास का सुख प्राप्त होगा।

पत्र-जगत्

फलित ज्योतिष अन्धविश्वास है

आर्य जगत् ९ एव १६ सितम्बर २००१ मे प्रो० जयपाल जी विद्यालकार का "शिक्षा के भारतीयकरण का विरोध क्यो?" शीर्षक लेख पढा। लेख मे शिक्षा से सम्बन्धित लगभग समस्त मुद्दे उठाए गए, जिनमे प्रारम्भ से लेकर आजादी और उसके बाद तक की शिक्षा व्यवस्था पर विश्लेषण पूर्वक विचार किया गया है। तदर्थ लेखक बहुत बहुत धन्यवाद के पात्र है। शिक्षा के भारतीयकरण के विरोध, विशेषकर साम्यवादियो या धर्मनिरपेक्ष कहे और माने जाने वाले शिक्षाविदो और राजनेताओ के द्वारा किये जा रहे विरोध का सवाल है, उनका विरोध नितान्त एकपक्षीय है। साथ ही विरोध की शब्दावली भी एकदम सस्कृतिहीन ही नही, अपितु एक प्रकार से राष्ट्रीयता से हीन है या मात्र राजनीतिक क्षुद्र स्वार्थ से प्रेरित और परिपूर्ण है। परन्तु क्या आर ऐस ऐस और भाजपा की सोच, भावनाए और कार्यशैली वैदिक है? क्या साम्प्रदायिक भावना से मुक्त है? यहा तक कि इनसे सम्बन्धित शिक्षाविद् या राजनेता उस पाखड और अन्धविश्वासी विषय फलित ज्योतिष आदि को शिक्षा मे लागू कराना चाहते है, जिसने देश को पतन के गर्त मे धकेला। देशवासियो को अन्धविश्वासी और धर्मभीरु बनाया।

ज्योतिष या वैदिक या वेदाग ज्योतिष से किसी का विरोध नहीं है, न विशुद्ध वैदिक विज्ञान से किसी का विरोध हो सकता है। जो विरोध है, वह भी वोटो की राजनीति से प्रेरित या साम्प्रदायिक है। ज्योतिष तो एक विज्ञान है और उसका काफी हिस्सा विज्ञान और भूगोल (साइस और ज्यौग्रेफी) आदि नाम से पढाया जाता रहा है, पढाया जाता है। परन्तु श्री मुरली मनोहर जी जोशी का वैदिक या वेदाग ज्योतिष, ज्योतिष न होकर विशुद्ध फलित ज्योतिष है, जो उसके साथ उस तथाकथित हिन्दू कर्मकाण्ड को भी पढाना चाहते है, जिसका महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रथो मे पुरजोर खडन किया हुआ है। इतना ही नही, मूर्तिपूजा के बाद यदि सबसे तगडा खडन किसी विषय का किया है, तो वह विषय फलित ज्योतिष है और इसी का खडन हमको भी करना चाहिए। आज जो भी विरोध हो रहा है वह ज्योतिष का न होकर, ज्योतिष के नाम पर पढाये जाने वाले फलित ज्योतिष का है। पता नही आर्य विद्वान् इस अन्धविश्वास पनपाने वाले विषय का भारतीयकरण के नाम पर अप्रत्यक्ष रूप से क्यो समर्थन कर रहे है?

अब रहा वैदिक गणित। वेदो मे अक, बीज और रेखागणित का विस्तार से वर्णन आया है। जो गणित आज पढाया जा रहा है, उसमे गणित के लगभग सब अग-प्रत्यग सम्मिलित है। परन्तु वैदिक गणित शब्द जोड कर क्यो विवाद पैदा किया जाए? यदि वैदिक गणित नाम से कोई विशेष गणित या गणित के किसी अग के कोई सूत्र इसमे है, तो वे सूत्र गणित विषय मे जोडने से किसी को क्या आपत्ति या विरोध हो सकता है? अत हमारा मानना है कि वैदिक गणित और वैदिक ज्योतिष का प्रस्ताव लाना भी राजनीतिक स्वार्थ है और विरोध करना भी राजनीतिक स्वार्थ है। दु ख तो इस बात का है कि हम आर्यसमाजी भी अपने अन्ध हिन्दू मोह मे इतने भावुक हो जाते है कि कोई वैदिक का नाम ही ले ले, तो हम खुश हो जाते है। भले ही उसके पीछे या बहाने से किसी वैदिक सिद्धान्त की हत्या ही क्यो न हो रही हो या उसकी वजह से कोई अन्धविश्वास और पाखड ही क्यो न पनप या पनपने का अदेशा हो रहा हो। अत हमारी माग है कि तुरन्त फलित ज्योतिष विषय ऐच्छिक या अनिवार्य रूप से पढाने के निर्णय को निरस्त किया जाए। यदि पढाया जाए तो मात्र ज्योतिर्विज्ञान।

डॉ० रामकृष्ण आर्य, आर्य परिवार सस्था, कोटा ४-भ-२७, विज्ञान नगर, कोटा (राज०) ३२४००५

अंग्रेज़ी हटाओ या अंग्रेज़ी से हट जाओ

देश मे अग्रेज़ी हटाने के लिए दैनिक अखबार, पत्र पत्रिकाए और उनमे शामिल आर्य समाज भी लट्ठ ले के पीछे पडे है, फिर भी यह बीमारी उतनी ही बढती जाती है, जितने डॉक्टर बढते जाते है। अग्रेजी हटाने के लिए जितना भी जोर लगाया जाता है, उल्टा वार करके उतने ही जोर से अग्रेजी आगे बढती जाती है। पब्लिक स्कूलो का मुकाबला करने को अब तो सरकार ने नगर निगम के प्राथमिक स्कूलो मे भी बच्चो को स्कूलो मे दाखिल होने के साथ ही अग्रेजी सिखाने का प्रबन्ध कर दिया है। अग्रेजी सिखाने वाली निजी सस्थाए तो है ही। नोकरी नही मिलने पर पढे लिखे लोगो ने अग्रेजी सिखाने का धधा शुरू कर दिया। यह धधा कोठियो से ले कर झुग्गी झोपडियो तक मे फल फूल रहा है। इसके चलते अग्रेजी हटाने का शोर उसी स्थान मे ही दब जाता है, जहा से शुरू होता है।

इसके मूल कारण जानने की हमने कभी कोशिश की है? अगर नही, तो आइये, हम इसके मूल कारण जानने की कोशिश करे।

शूद्र (भगी, चमार) अग्रेजी को इस देश से कभी हटने नही देगे। उनका कहना है कि सवर्णो का तो बगैर अग्रेजी पढे भी जीवन स्तर ऊचा बना रहेगा, लेकिन अग्रेज़ी बगैर हिन्दी के बल पर भगी को मैला ढोना पडेगा और चमारो को गली मुहल्लो मे मरे ढोरो को उठा कर जूते बनाने के लिए चमडे उधेडने पडेगे। बगैर अग्रेजी पढे न तो विदेशो मे जा सकेगे, न नौकरी कर पायेगे, न व्यापार, न उद्योग कर पायेगे। यह अग्रेज़ी ही परमाणु बम है, जिसने ब्राह्मण भगी के बीच की लोह दीवार को ऐसे गला दिया, जैसे आग मोम को। अग्रेज़ी पढ कर एक ब्राह्मण डॉक्टर, वकील, जज, इजीनियर, वैज्ञानिक बनता है, तो वही अग्रेज़ी पढ कर भगी चमार भी उन्ही स्तरो तक पहुचता है जैसे आज देखा जा रहा है। यह अग्रेज़ी ही है, जिसने भगी चमारो को शूट बूट टाई मे ला दिया है। अगर सवर्ण अग्रेजी हटाएगे, तो पढे लिखे भगी चमार अग्रेजी चालू रखेगे।

यह एक कडवा सच है, जिसे न चाहने पर भी गले उतारना पडता है। इससे भी और कडवा सच है कि जो लोग अग्रेज़ी भगाने को लट्ठ ले कर पीछे पडे है, वही लोग अपने बच्चो को पब्लिक स्कूलो मे दाखिल करवाने, स्कूल प्रबन्धको को ऊचा ऊचा चढावा देने, सर्दी धूप और बारिश मे लाइन लगाते हुए देखे जाते है। जब हालात यही है तो रास्ता यही रह जाता है कि अग्रेजी बगैर जिनकी दाल रोटी चले, वे अपने बच्चो को अग्रेजी न पढाये, सिर्फ हिन्दी पढाये। क्योकि अग्रेजी को देश से बाहर फैकने के लिए कितने भी आन्दोलन चलाये, जुलूस निकाले, आमरण अनशन करे, अग्रेजी अपनी जगह से टस से मस नहीं होने वाली।

अरविन्द मेहता, मार्फत लाल भाई, १८५-ए, जीवन नगर, नई दिल्ली-१४

लेखक के लिखे को बदलने का अधिकार किसी को नहीं

श्री कृष्णमोहन 'हिन्दू' के पत्र मे हिन्दू जी ने (ड) भाग मे सत्यार्थ प्रकाश से शूद्र को अनार्य कहने वाले वाक्याश अविलम्ब निकालने की बात कही है तथा ऊपर उनसे मतभेद होने वालो को पोगापथी लोगो से मिलाया है। उन्होने जो लिखा है, वह उनकी राय हो सकती है तथा उनको उस राय को रखने का पूर्ण अधिकार है। परन्तु मुझे यह कहने का अधिकार सर्वथा नहीं पहुचता कि इनके इस पत्र से यह वाक्याश तुरन्त निकाल देना चाहिये अथवा कृष्णमोहन जी के नाम से 'हिन्दू' उपनाम तुरन्त निकाल देना चाहिये।

१ पहिले तो सत्यार्थप्रकाश मे अनार्य शब्द के आगे "अर्थात् अनाडी" भी लिखा है तथा "अनाडी" शब्द आज के युग मे साधारणतया समझा जा सकता है। कोई अपशब्द नही है, जिस पर "हिन्दू" जी इतना क्रोध जताये।

२ दूसरा विशेष कारण जिसको "हिन्दू जी" जैसे सज्जन आख से ओझल कर रहे है यह है कि किसी लेखक (Author) की पुस्तक मे से कुछ भी निकाल देने का, काट छाट करने का, उसका असली रूप (Orginal) बदलने का अधिकार केवल लेखक को ही है, किसी दूसरे को नही। लेखक अपनी राय बदल कर दूसरे सस्करण मे, (यदि वह जीवित है), बदल सकता है। परन्तु यदि वह अब नही है, तो इस अधिकार को दूसरा व्यक्ति नही ग्रहण कर सकता। लेखक की पुस्तक उसकी सोच, उसके व्यक्तित्व, उस समय और काल का चित्र है, द्योतक है। आज के युग मे, आज की स्थिति तथा भाषा को उस पर थोप नही सकते। आज की भाषा तथा तब की भाषा मे, तथा लिखने के ढग मे काफी अन्तर आ गया। स्वामी दयानन्द गुजराती होने के कारण काफी परिश्रम के पश्चात् हिन्दी को ग्रहण कर पाये थे तथा तब की प्रचलित एव आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर पाये थे। श्री हरिश्चन्द्र तथा प्रेमचद जैसे साहित्यकार कुछ समय पश्चात् आये थे तथा हिन्दी भाषा की प्रगति का आरम्भ कुछ समय पश्चात् इस २०वी शती मे हुआ।

३ स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे अपनी राय तो लिखी है। मठ खडा करके सत्यार्थ प्रकाश को एक धर्मग्रथ बनाकर तथा किसी पैगम्बर अथवा धर्मावतार बन कर अपने नाम पर कोई प्रणाली नही चलाई। उन्होने आप को अपनी राय रखने तथा उस पर चलने का अधिकार दिया। वह समझते थे कि समय प्रगतिशील है तथा समयानुकूल तब्दीली आती रहती है। आज उनकी कई धारणाओ को आप आज के युग मे (टी वी, कम्प्यूटर, मीडिया का युग) लागू नही कर पाते तथा न ही अनुकरण कर रहे। गुरुकुल तथा डी० ए० वी० इसका एक उदाहरण है। स्वामी जी ने लिखा है कि लडकों तथा बालिकाओ के शिक्षा सस्थान मे कई मील की दूरी होनी चाहिये। आपको समय के अनुसार बदलने का अधिकार दिया है तथा विचार की स्वतत्रता दी है। पर आप उन पर अपनी राय थोप कर अत्याचार क्यो करना चाहते है? 'हिटलर' मत बनिये तथा अपनी पुस्तक लिखिये, अपनी धारणाओ का प्रचार कीजिये। 'आर्य जगत्' मे ही लिखिये। शास्त्रार्थ जैसी स्वस्थ प्रणाली स्वामी जी ने सदा चलाई। आपको कोई मना नही करेगा, परन्तु दयानन्द की लिखी पुस्तक मे काट छाट करके उसकी छवि मत बदलिये। उसको वैसा ही रखिये। आप Commentary लिखिये, खूब लिखिये।

यशपाल सिगलानी मत्री, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-२, ऐस ब्लाक, नई दिल्ली-११००४८

प्रश्न अधिकार का नही है, स्वामी दयानन्द जी के विचारो को अधिकाधिक लोगो के लिए ग्राह्य बनाने का है। स्वामी जी की भावना जन्मना शूद्रो को नीच या हीन समझने की नही थी। वह उनका उत्थान चाहते थे। परन्तु कुछ स्थानो पर शूद्रो के लिए हीनता द्योतक शब्द आ गये है। उन्हे हटाने या बदलने का सुझाव 'हिन्दू' जी का है। स्वामी जी की आलोचना के लिए नही, अपितु स्वामी जी को अधिकाधिक लोगो मे आदरणीय बनाने के लिए। —स०

ईसाई मिशनरियों का भारत पर आक्रमण

❑ श्री एस शकर

ईसाई पादरी सैकडो वर्ष से हमेशा हिन्दू धर्म व उसके देवी देवताओ को झूठा बतलाकर उन्हे गालिया देकर उनके प्रति घृणा फैला रहे हैं। नियोगी कमीशन (३ ५५) की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार पादरी लोग प्रचार करते है - "राम और कृष्ण मुक्तिदाता नहीं हो सकते, क्योकि कृष्ण चोर था और राम पापी था। सिर्फ ईसाई धर्म ही मानव समाज का आध्यात्मिक व भौतिक कल्याण कर सकता है।" ऐसे अनेक झूठे प्रचार के कारण ८५ करोड हिदुओ का नैतिक पतन हो रहा है। अत यहा इस झूठ का खडन किया जा रहा है। यद्यपि शहरो मे ईसाई धर्म का स्वरूप सेवा और शिक्षा के जरिये बहुत आकर्षक दिखलाया जाता है, पर आदिवासी गावो मे इसका वास्तविक पाखडी रूप पूतना का है।

ईसाई और मुस्लिम देश हजारो करोड रुपया भेजकर धर्मपरिवर्तन द्वारा इस देश को अपना गुलाम बना रहे हैं। इससे हिदू शीघ्र ही भारत मे अल्पसख्यक हो जायेगे। फिर उनकी वही दुर्दशा होगी जो उनकी फिजी, कश्मीर, बाग्लादेश व पाकिस्तान मे हुई है।

भारत मे अपना वोट बैक बनाने के लिए ५० वर्ष नेहरू गाधी परिवार तथा अन्य सैक्युलरवादी नेताओ द्वारा हिन्दुओ के साथ विश्वासघात करके उनके धर्म परिवर्तन की अधाधुध छूट दी गई। धर्म निरपेक्षता के नामपर स्कूलो मे यद्यपि कुरान और बाइबिल पढाई जा सकती है, पर हिदुओ को विश्व प्रसिद्ध गीता और रामायण नही पढाई जा सकती। इससे अज्ञान के कारण हिन्दू अपना धर्म छोडकर ईसाई हो रहे हैं। इससे उनमे दुराचार और भ्रष्टाचार बढता जा रहा है जिससे देश बर्बाद हो रहा है।

ईसाई मिशनरी और गाधी जी

गाधी जी ने कहा "हमे गोमास भक्षण और शराब पीने वाला ईसाई धर्म नही चाहिए।" (हरिजन ६ ३ ३७)। गाधी जी ने आगे कहा "ईसाई और मुसलमान हिदुओ की ऊचनीच व अस्पृश्यता को दूर नही कर सकते। यह कार्य खुद हिदुओ को ही करना होगा।" गाधी जी के अनुसार, "धर्म परिवर्तन वह जहर है, जो सत्य और व्यक्ति की जडो को खोखला कर देता है। मिशनरियो के प्रभाव से हिदू परिवार का विदेशी भाषा, वेषभूषा, रीतिरिवाज के द्वारा विघटन हुआ है। यदि मुझे कानून बनाने का अधिकार होता, तो मै धर्मपरिवर्तन बद करवा देता। इसे तो मिशनरियो ने एक व्यापार बना लिया है पर धर्म आत्मा की उन्नति का विषय है। इसे रोटी, कपडा या दवाई के बदले मे बेचा या बदला नही जा सकता।"

ईसाइयो का मानव प्रेम कैसा है ?

ईसाई मिशनरी व मदर टेरेसा जो गरीबो और पूरे मानव समाज मे प्रेम करने का दम भरती हैं, वे तब क्यो चुप रहे, जब अग्रेज शासक व गोवा के शासक आजादी के आदोलन मे देशभक्तो को गोलियो से भून रहे थे। और कश्मीर मे ३ लाख हिदुओ पर आतकवादी भयकर अत्याचार कर रहे थे। उन्होने अफ्रिका के गुलामो के व्यापार का पूरा समर्थन किया। चर्च तथा मदर टेरेसा ने कभी भी जनता के दुखो को जड से दूर करने का प्रयत्न नही किया, क्योकि उससे फिर गरीब लोग ईसाई बनना बद हो जायेगे। बल्किमिशनरियो ने तो आजादी के आदोलन मे अत्याचारी अग्रेज सरकार की मदद की।

धर्मपरिवर्तन का देशविरोधी स्वरूप

प्रसिद्ध स्वतत्रता सेनानी राजकुमारी अमृत कौर, जो स्वय ईसाई थी, कहती थी कि, "बहुत से धर्मातरित व्यक्ति राष्ट्र विरोधी हो गये हैं।" वे भारत के बजाय रोम को अपनी पुण्यभूमि मानकर अपने देश की पवित्र नदियो, पर्वतो, देशवासियो, व भारतीय भाषा, वेशभूषा और सस्कृति से घृणा करने लगे है।

कई मिशनरियो का भारत विरोधी जासूसो से सबध है। (गृहमत्री लालकृष्ण आडवाणी)

टाइम्स ऑफ इडिया के अनुसार उल्फा आतकवादियो को मिशनरी मदद पहुचा रहे है। उन्हे विदेशी शस्त्र दिये जा रहे हैं। नागालैड और मिजोरम, जहा ईसाई आबादी ९० प्रतिशत से अधिक हो गई है, अब भारत से विद्रोह करके अलग होने की माँग कर रहे है। मिशनरियो का यह पाश्चात्य साम्राज्यवादी उद्देश्य है, जिसके द्वारा वे सारे भारत पर अपना कब्जा करके उसका शोषण करना चाहते है।

धर्मपरिवर्तन के कारण विश्व की जातियो व देशो के बीच धार्मिक घृणा और अशाति फैलती है। मध्ययुग के अनेक युद्ध धर्मपरिवर्तन के कारण ही हुए थे। इसलिए हिदू धर्म धर्मपरिवर्तन को एक घटिया कार्य मानता है।

धर्म परिवर्तन का उद्देश्य

भारत के ५ लाख गॉवो की गरीब जनता को शीघ्र ईसाई बनाकर मिशनरी धर्मपरिवर्तन द्वारा भारत के धार्मिक, राजनैतिक और भाषा के आधार पर टुकडे टुकडे कर देना चाहते हैं, ताकिउन्हे निरतर लूटा जा सके। कट्टर ईसाई सोनिया गाधी, उनके ईसाई बेटी-बेटे, रिश्तेदार और ईसाई सलाहकार भारत को ईसाई लैड बनाकर इसे पोप के चरणो मे डाल देना चाहते है। इसके लिए ईसाई देश सारे भारत मे ९ लाख गिरजाघर बनाना चाहते है। जबसे सोनिया गाधी काग्रेस प्रेसीडेंट बनी तबसे हिदुओ का धर्म परिवर्तन बढ गया है। पर हिदू 'विश्व बधुत्व' की अति के कारण हमेशा सारे ससार का कल्याण विचारते रहते है और लुटेरे विदेशियो को भी अपना मित्र समझते है। इससे उनमे देशबधुत्व व धर्म बधुत्व पैदा नहीं हो सकता और वे हजार साल गुलाम बने रहे और फिर गुलामी की ओर बढ रहे है।

ईसाई समाज का विकृत साम्राज्यवादी रूप

प्रसिद्ध लेखक व इतिहासकार मि पितिरिम सोरोकिन कहते है कि "पिछली कुछ शताब्दियो मे सबसे अधिक आक्रामक लडाकू, लुटेरा, लालची और सत्ता के मद मे चूर आदि मानव समाज का कोई अग है, तो वह है पाश्चात्य ईसाई जगत्। इन सैकडो वर्षो मे पाश्चात्य ईसाई देशो ने सब महाद्वीपो पर आक्रमण किये। इनकी सेनाओ के पीछे पीछे पादरियो और व्यापारियो ने अधिकतर अन्य धर्मावलबी देशो को अपना गुलाम बना कर लूटा। अमेरिका, आस्ट्रेलिया और एशिया के करोडो भोले आदिवासियो को इस विचित्र ब्राड के ईसाई मानव प्रेम के अधीन बनाकर उनका अत्यत निर्दयता से खात्मा किया गया। उनकी सस्कृति, चरित्र, जीवन पद्धति, जीवनमूल्य और सस्थाए नष्ट कर दी गई, ताकि उन्हे ईसाई बनाया जा सके।" आज भारत मे पाश्चात्य सस्कृति यही विनाश कर रही है। यह धर्म परिवर्तन हिदुओ के मानवाधिकार का हनन है।

पाश्चात्य सस्कृति का विकृत रूप

दुनिया को धार्मिक अशाति, घृणा, अन्याय, आतकवाद, उपनिवेशवाद, २ महायुद्ध, एटमबम, सेक्स का भयकर दुराचार और एड्स जैसी बीमारियॉ तथा परिवारो मे नैतिक पतन, फूट, स्वार्थ और माता पिता का अपमान पश्चिमी ईसाई देशो की ही देन हैं। वहॉ प्रति मिनट बलात्कार और हत्याए हो रही है। २ करोड बच्चे तलाक के बाद अपने पिता के बिना अनाथ है, क्योकि ईसाई धर्म मे कोई आत्मज्ञान, सयम व सच्चाई नही है। फिर भी सब मिशनरी, कार्डिनल और पोप झूठा दम भर रहे हैं किसिर्फ प्रभु येशु ही मानव जाति को बचा सकते है। प्रश्न यह है कि फिर वे यूरोप और अमेरिका को दुराचार से क्यो नही बचा पाये ?

ईसाई धर्म ग्रथो के आदेशानुसार गिरजाघर ने ब्रेनो, ल्यूलियो, वानिनी, वेटमेन जैसे कई प्रसिद्ध वैज्ञानिको को जीवित जला दिया, सिर्फ इसलिए कि उनके वैज्ञानिक आविष्कार और खोज से बाइबिल के अधविश्वास को ठेस पहुँच रही थी। स्पेन मे १५ वी शताब्दी मे धार्मिक अपराधो के लिए ११ हजार व्यक्तियो को जिदा जला दिया गया। (क्रिश्चियन रिसर्च इन इडिया, ले डॉ क्राइडियस बुचानन) गोवा मे भी धर्म परिवर्तन के लिए सैकडो हिदुओ को इसी तरह जिदा जला दिया जाता था अथवा उनके शरीर की सब हड्डिया तोड दी जाती थी। ऐसे पचासो अत्याचार किये जाते थे।

इन पापो को छिपाने के लिए अब मिशनरियो ने सेवाकार्य बडे पैमाने पर शुरू किया है, पर अदरूनी इरादा पुराना साम्राज्यवादी ही है। चर्च द्वारा प्रसारित ईसाई धर्म का यह रूप ईसाई धर्म के उन उपदेशो और भावनाओ से भिन्न है, जिनमे अहिसा, क्षमा और धन सग्रह न करने का उपदेश किया गया है।

निष्पक्ष ईसाई विद्वानो के ईसाई धर्म के विचार

विश्वप्रसिद्ध विद्वान टाल्सटाय लिखते हैं कि, विश्व के किसी भी धर्म ने इतनी वाहियात, अवैज्ञानिक, आपस मे विरोधी और अनैतिक बातो का उपदेश नही दिया, जितना गिरजाघर ने दिया है। विश्वप्रसिद्ध बर्नार्डशा के अनुसार, " बाइबिल पुराने और दकियानूसी अधविश्वासो का एक बडल है।"

विश्वप्रसिद्ध ऐच जी वैल्स के अनुसार, "दुनिया की सबसे बडी बुराई है रोमन कैथलिक चर्च"। विश्वप्रसिद्ध विद्वान् नीत्शे, ऐलिजाबेथ कैडी, हेलेन गार्डनर, जार्ज डब्लू फुट इत्यादि पचीसो निष्पक्ष ईसाई विद्वानो ने भी ईसाई धर्म की घोर निदा की है।

पर हिदू धर्म की विश्व के पचासो निष्पक्ष ईसाई विद्वानो ने अत्यधिक प्रशसा की है। प्रसिद्ध विद्वान ऐनी बेसेंट कहती है कि "मैने ४० वर्ष तक विश्व के सभी बडे धर्मो का अध्ययन करके पाया है कि हिदू धर्म के समान पूर्ण, महान और वैज्ञानिक धर्म कोई नही है।" स्वामी विवेकानद ने कहा है कि, " यदि विश्व से हिदू धर्म नष्ट हो गया तो सत्य, न्याय, मानवता और शाति सभी खत्म हो जायेगा।" इससे कई निष्पक्ष ईसाई विद्वानो ने हिन्दुओ के धर्मपरिवर्तन का विरोध किया है, अत वे राष्ट्रवादी ईसाई हमारे भाई है। उनके पूर्वज सब हिन्दू ही थे। उनसे हिदुओ को कोई विरोध नही है।

लोभ, छल, बल और कपट द्वारा धर्मपरिवर्तन

१) गरीबो, बीमारो, लाचारो को गिरजाघर कर्ज देते है, और उसे न चुका पाने पर उन्हे चुपचाप ईसाई बना लेते है।

२) मिशनरी स्कूलो मे बच्चो मे ईसाई धर्म के प्रति श्रद्धा और हिदू धर्म के प्रति उपेक्षा का भाव उत्पन्न किया जाता है, इससे वे भविष्य मे हिदू समाज के विरोधी बन जाते है।

३) पादरी के छूने से अधे को दिखने लगा या बीमारी दूर हो गई, ऐसे झूठे नाटको द्वारा भोले आदिवासियो को ईसाइ बनाया जाता है। यूरोप अमेरिका मे क्यो अधो को ठीक नही करते।

४) ईसाई लडकिया हिदुओ का धर्मपरिवर्तन करने के लिए उनसे शादी कर लेती है। कई पादरी हिदू साधुओ की तरह हिदू नाम रखकर भगवा वस्त्र पहन कर

(शेष पृष्ठ १० पर)

एक वैदिक प्रचारक के सस्मरण

हिन्द महासागर का मोती : मारिशस

(गताक से आगे)

❑ डा० भवानीलाल भारतीय

मारिशस मे आर्य समाज प्रभावशाली

मारिशस मे आर्य समाज का विशेष प्रभाव है। इस देश को आजादी दिलाने वाले तथा राष्ट्रपिता का गौरवमय पद प्राप्त करने वाले डा० शिवसागर रामगुलाम स्वय आर्य समाज से अत्यन्त प्रभावित थे। वहा के निवासी उन्हे आदर और प्यार से "चाचा रामगुलाम' कह कर आज भी पुकारते है। १९७२ मे वे नवम आर्य सम्मेलन की अध्यक्षता करने भारत आये थे।

मारिशस मे आर्य महासम्मेलन

उससे अगले वर्ष १९७३ मे उनके सरक्षण तथा मार्गदर्शन मे मारिशस मे १०वा अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुआ था। उस अवसर पर पानी के जहाज 'अकबर' से लगभग ७०० भारतीय आर्य प्रतिनिधि उक्त सम्मेलन मे भाग लेने मारिशस गये थे।

जब १९८३ मे अजमेर मे महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी मनाई गई, तो वहा के तत्कालीन उपप्रधानमत्री हरीश बुधु अपने देश के आर्य प्रतिनिधि मडल के साथ आये थे तथा महान् सुधारक दयानन्द को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की थी। उसी अवसर पर मारिशस ने स्वामी जी के विभिन्न जीवन प्रसगो को चित्रित करने वाले कुछ सुन्दर डाक टिकट भी निकाले थे। वर्तमान प्रधानमत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ भी आर्य समाज के प्रति आदर एव श्रद्धा का भाव रखते है।

सुदृढ सगठन

मारिशस के सार्वजनिक जीवन मे आर्य समाज का जो विशेष प्रभाव है उसका प्रमुख कारण तो इस सस्था का सुदृढ सगठन है, जो एक स्वर से देशहित तथा सार्वजनिक प्रश्नो पर अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट करता है। जब मै मारिशस मे था, वहा की सरकार ने शिक्षा नीति को लेकर कुछ ऐसे परिवर्तन करने चाहे, जिनसे ईसाई शिक्षण सस्थाओ को अधिक लाभ मिलता। इस प्रस्तावित योजना की त्रुटियो को लक्षित कर आर्यसभा तुरन्त सक्रिय हो गई। प्रथम तो उसने एक महत्वपूर्ण पत्रकार सम्मेलन बुला कर अपनी आशकाओ को सार्वजनिक किया और भविष्य मे उचित कदम उठाने की चेतावनी दी। अन्तत सरकार ने भी देश की विभिन्न सस्थाओ और दलो के प्रतिनिधियो को आमत्रित किया और उनके विचार सुने। यहा आर्य समाज ने हिन्दू सस्थाओ की अपेक्षा शिक्षा विषयक अपने विचारो और नीतियो को सतुलित रूप से पेश किया। मारिशस के आर्यो की आवाज को राजनैतिक हलको मे महत्व दिया जाता है और यह माना जाता है कि चुनावो मे उनकी निर्णायक भूमिका रहती है।

सभी धार्मिक सगठनो को सरकारी सहायता

मारिशस मे विभिन्न धार्मिक सगठनो को बिना किसी भेदभाव किये सरकारी खजाने मे उपयुक्त राशि सहायता रूप मे प्राप्त होती है। इसका एक लाभ तो यह होता है कि अन्य धर्मो की भाति आर्य समाज भी अपने कार्यो और प्रवृत्तियो को सुचारु ढग से परिचालित कर सकता है और सहायता प्राप्त सगठन होने से उसके वित्तीय मामलो मे किसी प्रकार की गडबड नही होती। आर्य समाज मे अनेक कर्मचारी कार्यरत है और वे अच्छा वेतन पा रहे है। आर्यसभा का कार्यालय कम्प्यूटरीकृत है तथा आगत विद्वानो तथा अधिकारियो को यत्रतत्र लाने ले जाने के लिए सभा की अपनी कार है।

जननेता प० वासुदेव विष्णुदयाल

मारिशस के सार्वजनिक जीवन को उन्नत बनाने, हिन्दू समाज मे सुधार लाने तथा समग्रतया स्वतत्रता की चेतना को जगाने मे वहा के आर्य समाज की निर्णायक भूमिका रही है। जिन प० वासुदेव विष्णुदयाल की चर्चा मैने की है, वे १९३३ मे उच्च शिक्षा के लिए भारत गये थे। वहा उन्होने डी० ए० वी० कालेज लाहौर मे प्रवेश लिया और महात्मा हसराज के सम्पर्क मे आये। कुछ काल तक वे गुरुकुल कागडी मे भी रहे। महात्मा गाधी से भेट करने के अवसर तो उन्हे मिले ही, वे महात्मा जी के अनुयायी बन गये और सकल्प किया कि स्वदेश लौटने पर वे गाधीवादी आन्दोलन चला कर मारिशस मे जनचेतना जगायेगे और अपनी मातृभूमि को स्वतत्र करायेगे। लाहौर मे रहते समय उन्हे महाकवि रवीन्द्रनाथ के दर्शन करने का अवसर तब प्राप्त हुआ जब गुरुदेव डी० ए० वी० कालेज के छात्रो को सम्बोधित करने कालेज के सभागार मे आये थे। मैने तो यह भी पता लगाया है कि उक्त अवसर पर १८७२ मे स्वामी दयानन्द के कलकत्ता आगमन के समय कवि के निवास जोडासाको स्थित ठाकुर परिवार मे जाने तथा वहा कवि के यशस्वी पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर से भेट करने, ब्राह्मसमाज के उत्सव मे व्याख्यान देने आदि के बारे मे जानकारी देने का रविबाबू से अनुरोध भी प० वासुदेव ने ही किया था। बाद मे प० वासुदेव विष्णुदयाल ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अग्रेजी मे एम० ए० किया। उस समय इस विश्वविद्यालय मे डा० राधाकृष्णन दर्शन के प्रोफेसर थे। यद्यपि प० वासुदेव दर्शन के नियमित छात्र नही थे, किन्तु भारतीय दर्शन और धर्म मे रुचि होने के कारण वे अनौपचारिक रूप मे डा० राधाकृष्णन की दर्शन की कक्षाओ मे चले जाते और इस प्रकार उनके प्रीतिपात्र बने।

बृहद् यज्ञ

१९३९ मे प० वासुदेव स्वदेश लौटे और आर्यसमाज के माध्यम से यहा के समाज मे नवजागरण की लहर उत्पन्न की। उन्होने विदेशी शासन की अनीतियो का भडाफोड किया। सर्वसाधारण मे धार्मिक जागृति और एकता उत्पन्न करने के लिए उन्होने राजधानी पार्ट लुइस मे एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया, जिसमे देश के कोने कोने से हजारो लोग एकत्र हुए। कहते है कि प० वासुदेव के द्वारा किये गये यज्ञ मे लगभग साठ हजार लोग उपस्थित थे। जनता का सैलाब यज्ञ स्थल पर उमड पडा था और शासन के सूत्रधार इस अभूतपूर्व धार्मिक जागृति से चमत्कृत रह गये थे। कालान्तर मे प० वासुदेव और उनके अनुज प० सुखदेव विष्णुदयाल ने नेताजी सुभाष बोस द्वारा स्थापित फार्वड ब्लाक की तज पर एक राजनैतिक दल का सगठन किया। प० सुखदेव राष्ट्रीय सभा मे विरोधी दल के नेता बने। उनके भाषणो को प्राय प० वासुदेव ही तैयार करते थे और जब राष्ट्रीय ससद मे ये विचार रखे जाते, तब सरकार को उनकी ओर ध्यान देना पडता। प० सुखदेव का असमय मे निधन हो गया। उन्हे राष्ट्रीय सम्मान दिया गया। उनकी भव्य प्रतिमा पोर्ट लुई के केन्द्रीय स्थान पर लगी है। ५०० रुपयो केकरेसी नोटो पर भी उनका चित्र छपा है।

कुशल वक्ता और लेखक

प० वासुदेव विष्णुदयाल ने वाणी और लेखनी, अभिव्यक्ति के दोनो साधनो से मारिशस मे धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना जगाई। वे स्थान स्थान पर जाकर वेद, उपनिषद्, रामायण, गीता आदि ग्रथो की प्रभावशाली कथाए करते तथा स्वदेशवासियो को भारत की मौलिक सस्कृति से परिचित कराते। उनके द्वारा कितने ग्रथो की रचना हुई, इसे ठीक ठीक जानना कठिन है। हिन्दी, अग्रेजी तथा फ्रैच अनुवाद, स्वामी दयानन्द एव महात्मा गाधी पर फ्रैच ग्रथ, ऋषि दयानन्द कृत 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' का फ्रैच अनुवाद तथा फ्रैच 'सत्यार्थप्रकाश' का सपादित सस्करण उनकी साहित्य साधना का एक आयाम है। वासुदेव जन्मतिथि समारोह मे उनकी पुत्रियो से भेट हुई। तत्पश्चात् २२ मई को हम उनके निवास (सुखदेव विष्णुदयाल स्ट्रीट पोर्ट लुईस) पर गये तथा वासुदेव परिवार के सदस्यो से भेट की। उनकी सुपुत्री श्रीमती अरुणा ने मुझे पडित जी के अनेक अलभ्य ग्रथ भेट किये। मैने उनके द्वारा सचालित प्रेस, प्रकाशन सस्थान तथा समीप के उनके अनुज प० सुखदेव विष्णुदयाल के निवास को देखा जो अब इस देशवासियो के लिए ऐतिहासिक महत्व का स्थान बन गया है।

मारिशस के आर्यनेता

आर्य सभा केवर्तमान अधिकारियो से भेट करने तथा उनसे विचार विमर्श करने के अनेक अवसर मिले। वर्तमान मे आर्य सभा के प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर पेशे से चिकित्सक है। उनकी मैडिकल शिक्षा भारत, फ्रास तथा इग्लैड मे हुई, जहा रह कर उन्होने सार्वजनिक स्वास्थ्य, औद्योगिक स्वास्थ्य जैसे विषयो पर अधिकार प्राप्त किया। उनका सार्वजनिक जीवन विभिन्न क्षेत्रो मे फैला है। अल्पभाषी डा० निऊर ठोस सेवा तथा लोकोपयोगी कार्य करने मे विश्वास करते है। उनके पिता श्री रामजतन निऊर भी आर्य समाज के अध्यक्ष रह चुके है।

आर्य सभा के महामत्री डा० उदयनारायण गगू की उच्च शिक्षा भारत मे हुई। वे उज्जैन, हैदराबाद तथा ग्वालियर केविश्वविद्यालयो मे अध्ययनरत रहे, जहा से उन्होने क्रमश बी ए, एम एस तथा पी ऐच डी की उपाधिया प्राप्त की। पी ऐच डी के लिए उन्होने 'मारिशस के भोजपुरी लोक साहित्य का भारतीय सस्कृति से अन्तर्सम्बन्ध' विषय चुना था। अब यह ग्रथ प्रकाशनाधीन है तथा मुझे इसकी पाण्डुलिपि को पढने का अवसर मिला है। वस्तुत मारिशस का भोजपुरी लोक साहित्य मूलत भारत की अन्तरात्मा' से ही सम्बद्ध है। इतना अवश्य है कि उसमे यत्र तत्र इस देश के भौगोलिक तथा स्थानीय सदर्भ जुड गये है।

विभिन्न आर्य समाजो मे मेरे द्वारा दिये गये अधिकाश व्याख्यानो मे वे स्वय उपस्थित रहे तथा श्रोता समाज को 'भारतीय दम्पती' का परिचय कराने का दायित्व भी उन्होने निभाया। डा० गगू अध्ययनशील, विनम्र, सेवाभावी तथा समर्पित कार्यकर्ता है। श्रीमती गगू ने तो भोजन, चाय आदि द्वारा जैसा हमारा सत्कार किया, वह उनके आदर्श गृहिणी होने का परिचायक तो है ही, उनकी अतिरिक्त विनयशीलता, स्वभाव की मधुरता तथा औदार्य आर्य सन्नारी के आदर्श है। डा० गगू सम्प्रति महात्मा गाधी अध्ययन सस्थान मे हिन्दी के प्रवक्ता है। उन्होने अनेक ग्रथ लिखे है।

आर्य सभा के नव निर्वाचित उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम ने अपने देश के शिक्षा विभाग मे उच्च पदो पर

(शेष पृष्ठ ९ पर)

पश्चिम विहार में वैदिक चेतना शिविर

वर्तमान सामाजिक परिस्थितियो एव वेदो के प्रति फैली भ्रान्तियो को ध्यान मे रखते हुए डी ए वी पब्लिक स्कूल रिजर्व बैक ऐन्क्लेव,पश्चिम विहार मे अध्यापक वर्ग तथा अन्य कर्मचारियो के लिए वैदिक चेतना शिविर का आयोजन दि २२-९-२००१ शनिवार को अत्यन्त सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिविर का शुभारम्भ प्रात ८ ०० बजे देवयज्ञ से किया गया। श्रीमती शीतल शर्मा (निदेशक पब्लिक स्कूल) ने अपने करकमलो द्वारा दीप प्रज्वलित कर शिविर का उद्घाटन किया। प्रधानाचार्या ने अपने उद्घाटन भाषण मे एक समय विश्व का गुरु कहलाए वाले भारतवर्ष के पतन का मुख्य कारण वेदो से विमुख होना तथा धर्म के नाम पर आडम्बर को गले लगाना बताया। सम्पूर्ण शिविर तीन सत्रो मे विभक्त था।

प्रथम सत्र मे श्री जयपाल विद्यालकार ने "यज्ञ का वैज्ञानिक आधार' इस विषय पर विचार व्यक्त करते हुए यज्ञ को उचित पद्धति से किए जाने पर उसकी वैज्ञानिकता को मान्यता दी। उन्होने प्रयोग और विचार के आधार पर यज्ञ की वैज्ञानिकता को पूर्ण रूप से प्रामाणिक सिद्ध न होने की बात कही, किन्तु उसे सामाजिक व्यवहार तथा जीवन का केन्द्र बताया। पञ्चमहायज्ञो को व्यावहारिकता की दृष्टि से उपयोगी तथा तर्क सगत सिद्ध किया।

श्रीमती शीतल शर्मा जी ने यज्ञ को मन की शुद्धि का आधार बनाने पर बल दिया तथा वेदमत्रो को जीवन का मूलमत्र बनाने की बात कही।

द्वितीय सत्र मे श्री महेश विद्यालकार ने "वैदिक मूल्यो के प्रसार मे अध्यापको की भूमिका" पर प्रकाश डाला तथा अध्यापको को वैदिक मूल्यो के प्रति आस्थावान होने की प्रेरणा दी। साथ-साथ मजबूरी या भय को आस्थावान बनने मे बाधक माना। आस्था स्वेच्छा से होती है। अध्यापक डर तथा मजबूरी के बिना यदि कोई कार्य इच्छा से करेगा तो उसमे आस्था होगी। आस्थावान होने पर ही वह वैदिक चेतना का प्रसार शिष्यो मे करा सकेगा। उसमे इच्छा शक्ति जगाने के लिए उसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

तृतीय सत्र मे डा महावीर जी ने वेदो की वर्तमान समय मे उपयोगिता पर बल देते हुए कहा कि पश्चिम की भौतिकतावादी ऑधी के सामने यदि हमे टिके रहना है, तो वेदो की ही शरण मे जाना होगा। वेद इस देश की धरोहर है। शिक्षक को बालक का जन्मदाता बताते हुए कहा कि वह उसे ज्ञान के द्वारा द्विज बनाता है। उन्होने वेदो को ज्ञान का असीम कोष बताया, जो ज्ञान-विज्ञान का गहन सागर है।

इन सभी व्याख्यानो के साथ विद्वानो द्वारा श्रोताओ की शकाओ का समाधान किया गया, जिससे अनेक नई जानकारियॉ प्राप्त हुई। सभी विद्वानो के व्याख्यान समकालीन परिस्थितियो मे वैदिक चेतना की आवश्यकता के प्रति हमारा ध्यान खीचने मे पूर्ण सफल रहे, जो कि हमारे इस शिविर का उद्देश्य पूर्ण करते है।

अन्त मे प्रधानाचार्या सावित्री चावला जी ने शिविर का वृत्तान्त प्रस्तुत किया। विद्यालय के अध्यक्ष श्री बलदेव जिन्दल ने आये हुए सभी अतिथियो का धन्यवाद किया।

(पृष्ठ ८ का शेष)

हिन्द महासागर का मोती ......

कार्य कर अवकाश ग्रहण किया है। उनकी स्नातक स्तर की शिक्षा उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय मे हुई। मै मारिशस रेडियो और टेलीविजन मे जब जब अपने कार्यक्रम रेकार्ड करवाने गया, श्री प्रीतम मेरे साथ रहे तथा कार्यक्रम का सयोजन किया। उनका निजी पुस्तकालय अत्यन्त समृद्ध है। इसमे हिन्दी, अग्रेजी तथा फ्रैच के अनेक महत्वपूर्ण ग्रथ है। मारिशस मे यद्यपि मेरा कार्यक्रम अत्यन्त व्यस्त रहा, तथापि फुरसत के क्षणो मे मैने अनेक पठनीय ग्रथ प्रीतम जी के पुस्तक सग्रह मे ही लिये। मारिशस के आचलिक परिवेश को ले कर लिखे गये इस देश के प्रशसित लेखक अभिमन्यु अनत के उपन्यास, मोहन राकेश की डायरी, पी० वी० नरसिहराव के उपन्यास दि इनसाइडर का हिन्दी अनुवाद आदि पढने का अवसर इसी सग्रह से मिला।

(क्रमश)

८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर (राजस्थान)

फिरोजपुर में चरित्र निर्माण शिविर

चरित्र निर्माण शिविर के उद्घाटन समारोह मे डी० ए० वी० कालेज फार विमैन फिरोजपुर छावनी की प्राचार्या डा० सतनाम कौर के साथ मच पर आचार्य भगवान देव चैतन्य, श्री आर० ऐस० शर्मा, श्री शान्तिलाल सूरी, उपाध्यक्ष, डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली दिखाई दे रहे है।

हवन यज्ञ सम्पन्न करते हुए डी०ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के आमन्त्रित मुख्य अतिथि श्री आर० ऐस० शर्मा, श्री शान्तिलाल सूरी, श्री डी० आर० गुप्ता एव विशिष्ट अतिथि प्रि० पी० पी० शर्मा, इन्द्रजीत तलवाड व स्थानीय सलाहकार समिति के सदस्य दिखाई दे रहे है।

डी ए वी कालेज फार वीमेन फिरोजपुर छावनी मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब के तत्त्वावधान मे २१ सितम्बर से २५ सितम्बर २००१ तक "चरित्र निर्माण शिविर" का आयोजन किया गया, जिसमे पजाब की डी ए वी शिक्षण सस्थाओ की लगभग १५० छात्राओ ने भाग लिया। इस शिविर का सचालन आचार्य भगवान देव जी चैतन्य एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सत्यप्रिया जी द्वारा किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री आर एस शर्मा, श्री शान्ति लाल सूरी, उपाध्यक्ष डी ए वी प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली, श्री डी आर गुप्ता प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब, प्रि पी पी शर्मा, हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर, कार्यकारी प्रधान, आर्य प्रादेशिकप्रतिनिधि उपसभा पजाब एव प्रि इन्द्रजीत तलवाड, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब द्वारा किया गया। शिविर के दौरान विविध विद्वज्जनो को आमन्त्रित किया गया जिन्होने अपने उच्च एव श्रेष्ठ विचारो से छात्राओ का मार्गदर्शन किया एव चरित्र निर्माण के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

निर्वाचन

आर्य समाज गोरेगाव (प) मुबई

प्रधान श्री जितेन्द्र सखीजा

मत्री · श्री विनोद रोठी

कोषाध्यक्ष श्री महेश निर्मल

आर्य समाज नेमदारगज (नवादा)

प्रधान श्री सजय सत्यार्थी

मत्री श्री दामोदर प्रसाद

कोषाध्यक्ष श्री लखी नारायण आर्य

आर्य विरक्त (वानप्रस्थ+सन्यास)

आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार

प्रधान श्री सुभाष चन्द्र

मत्री श्री यशवत मुनि

कोषाध्यक्ष माता शान्ति शर्मा

(पृष्ठ ७ का शेष)

ईसाई मिशनरियों का ......

चर्च मेआरती और फूलो मे ईसामसीह की पूजा करते है और धोखे मे भोले अजानी हिदुओ को ईसाई बना लेते है। हिप्नोटिज्म, बल प्रयोग और अत्याचार इत्यादि के द्वारा भी उनका धर्म परिवर्तन किया जाता है। इससे गाव के गाव चुपचाप ईसाई बन रहे है।

चर्च की सारे विश्व को ईसाई बनाने की अत्यत बृहद् और गुप्त योजना 'मिशन मेंडेट' और 'आपरेशन वर्ल्ड' नामक ग्रथो मे दी गई है। इसके लिए विश्व मे चर्च के पास -

१) ४१ लाख पूर्णकालीन प्रचारक व पादरी २)६५ करोड रुपये का वार्षिक बजट ३)१८०० प्राइवेट टी वी और रेडिओ स्टेशन जैसे पचासो साधन है। (वर्ल्ड ख्रिश्चियन इन्साइक्लोपीडिया) इससे निम्नलिखित कार्य हो रहा है -

(१) भारत मे १ लाख नये प्रचारक तैयार करना। (२) प्रत्येक गाव मे एक गिरजाघर बनाना। (३) उत्तर भारत मे १० करोड लोगो तक बाइबल पहुचाना।

इन कार्यो के लिए हजारो करोड रुपया विदेशो से आ रहा है।

इस योजना के अतर्गत ३० वर्ष से १९७१ से १९८१ के बीच मे अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी सियाग क्षेत्र मे ईसाई आबादी १०६ प्रतिशत बढी है। (आर्गनाईजर २७-९-१९९८) ३ और ९ फरवरी १९९९ के आब्जरवर के अनुसार ईसाई मिशनरी अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा दिल्ली की झोपडपट्टियो मे रहने वाले लाखो लोगो तथा विश्व के करोडो बगालियो को शीघ्र ही ईसाई बनाने की योजना पर तेजी से कार्य कर रहे है। यद्यपि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार सविधान मे सिर्फ धर्म प्रचार की स्वतत्रता दी गई है, धर्म परिवर्तन की नही पर हिदुओ की लापरवाही, कायरता, स्वार्थपरता और फूट के कारण ईसाई इस कार्य मे सफल हो रहे है।

'किन्तु पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड मे १६,५०,००० व्यक्ति प्रतिवर्ष ईसाई धर्म को सारहीन, अवैज्ञानिक और निरर्थक समझकर छोड रहे है। (ईसाइयत और पाप का आगमन ले श्री हो वे शेषाद्री) चर्च बिक रहे है और वहा हिदुओ के मदिर बन रहे है।

ईसाई धर्म और हिदू धर्म

हिदू धर्म का आधार मानवता, न्याय सयम सत्यता, 'सर्व धर्म समभाव', वसुधैव कुटुबक और अहिसा परमोधर्म है। हिदू देवता राम और कृष्ण सुख और आनद की दिव्य अनुभूति देते हैं, जबकि ईसाई धर्म का आधार क्रास पर लटके हुए प्रभु यीशू के शव को पूजना है। परन्तु शव का पूजन मनुष्य की मन बुद्धि और आत्मा को विकृत कर देता है। इससे मानसिकशाति नही मिलती। परिणाम स्वरूप विदेशी ईसाई लोग अपना धर्म छोडकर नशीली दवाओ, भौतिक वस्तुओ व सक्स के दुराचार द्वारा इन्द्रियो के सुख प्राप्त करने की कोशिश करते रहते हैं, उनका पारिवारिक जीवन नष्ट हो गया है, जबकि गीता रामायण पढने के कारण हिदुओ का पारिवारिक जीवन सच्चरित्रता के कारण विश्व मे सर्व श्रेष्ठ व सबसे सुखी है।

गीता मे लिखा है कि अपने धर्म की रक्षा के लिए प्राण भी दे देना चाहिए। दूसरो का धर्म बहुत भयावहओर नरक का द्वार होता है। गीता मे नरक के तीन द्वार बतलाये गये है- काम, क्रोध और लोभ, पर ईसाई देशो ने इन तीनो पापो को सारे विश्व मे बढाया है। विदेशो से सैक्स टूर निकलते हैं, जो टूरिस्टो को एशिया, दक्षिण अमेरिका व अफ्रिका के गरीब देशो मे ले जाकर छोटी बालिकाओ के साथ दुराचार करवाते हैं और एड्स फैलाते है, क्योकि ईसाई धर्म मनुष्य को पाप की सतान मानता है, जबकि हिदू धर्म उसे अमृत की सतान मानता है।

हिदू धर्म का ईश्वर ईसाई धर्म के ईश्वर से भिन्न है। भगवान राम और कृष्ण सिर्फ एक पल मे अनंत कोटि ब्रह्माडो के रचयिता और सहारकर्ता हैं, जबकि प्रभु यीशु अपने जीवन की रक्षा भी नही कर सके तो फिर वे दूसरो को क्या बचायेगे ?

मिशनरियो का झूठा प्रचार

रक्षामत्री श्री जॉर्ज-फर्नाडिस ने लोकसभा मे भाषण दिया कि, मिशनरियो ने सारी दुनिया मे शोर मचा रखा है कि भाजपा सरकार के कारण गुजरात, झाबुआ और उडीसा मे ईसाइयो पर बहुत अत्याचार हो रहा है, पर जब निष्पक्ष जाच करवाई गई तब मालूम पडा कि झाबुआ मे नन्स पर बलात्कार करने वाले आधे लोग ईसाई ही थे। ऐसे पचीसो झूठे प्रचार व हिदुओ के विरुद्ध षड्यत्र मिशनरी कुछ बिकाऊ प्रेस को अपने साथ लेकर कर रहे है। पर वधवा कमीशन ने स्पष्ट निर्णय दिया है कि पादरी स्टेन्स की हत्या मे विश्व हिदू परिषद व बजरग दल का कोई भी हाथ नही था। इसी तरह किसी भी हिसा मे इनका हाथ होना साबित नही हुआ है।

आबजरवर के अनुसार सच्चाई तो यह है कि गुजरात के गढवी गाव मे ईसाई युवको ने हनुमान जी की मूर्ति पर पेशाब किया और झाडमोड गाव मे हनुमान जी की मूर्ति के टुकडे टुकडे कर दिए ताकि आदिवासी जनता का विश्वास हनुमान जी पर से उठ जाये और वे ईसा की पूजा करने लगे, ऐसे अत्याचारो के कारण आदिवासी लोग कभी कभी ईसाइयो पर आक्रमण कर देते है।

हिदू क्या करे

१) हमे ईसाइयो का धर्मबधुत्व, अपने धर्म का प्रचार, तथा सेवा के लिए धन देना, सीखना चाहिये। २) द्वारकापीठ तथा शृगेरी के शकराचार्यो के अनुसार अस्पृश्यता हिदू धर्म के विरुद्ध है और दलितो व दुखियो की सेवा व उत्थान करना व उन पर दया करना प्रत्येक हिदू का प्रथम धर्म है। (३) विश्व हिदू परिषद व सघ के सेवा कार्यो से प्रभावित होकर हजारो धर्मातरित ईसाई पुन अपने हिंदू धर्म मे वापिस आ रहे हैं अत उन्हें आदर सहित तन मन धन से मदद देनी चाहिए।

४) हिदुओ और उनके धर्माचार्यो को विदेशी शक्तियो के षड्यत्र से सावधान होकर धर्म परिवर्तन बद करवाने के लिए सरकार के खिलाफ बडा आदोलन, बडा प्रचार और बडा धन सग्रह करना चाहिये। अन्यथा उनका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।

(पृष्ठ ४ का शेष)

जनमेजय का ......

सभी बन्धु बान्धव नागो के समूल विनाश के लिए यज्ञ करूगा। एक को भी जीता नहीं छोडूगा।

भयानक सर्पयज्ञ

आतकवादी राजसत्ता पर आसीन किसी एक व्यक्ति को लक्ष्य बना कर उसकी हत्या कर सकते हैं, परन्तु समूचे शासन तत्र की शक्ति का सामना करने का सामर्थ्य उनमे नही होता। राजा के आदेश से ऋत्विजो ने सर्पयज्ञ का आयोजन किया। यज्ञकुड बनाये गये। उनमे अग्नि प्रदीप्त की गई (जैसी अब अफगानिस्तान मे की जा रही है)। मत्र पाठ होने लगा (मत्रणाए हुई) और चारो ओर से नाग आ आ कर उस यज्ञकुड मे गिरने और जलने लगे। नागो मे हाहाकार मच गया। कोई शक्ति नही थी, जो उन्हे बचा पाती। काले, पीले, फनियर, सविष, निर्विष सभी तरह के साप मत्र बल से खिचे आते और धधकती यज्ञाग्नि मे जल कर भस्म हो जाते। मृत्यु अवश्यभावी जान कर तक्षक ने इन्द्र के पास जा कर शरण ली। (जैसे पाकिस्तान के जनरल मुशर्रफ ने अमेरिका की शरण ले ली है। असली उपद्रवी आतकवादी सदा ही कही न कही शरण पा जाते है और निर्विष नाग राजकोप के शिकार बन जाते है।)

नागराज वासुकि की व्यथा

अपने अनुचरो के सर्वनाश से नागो का राजा वासुकि बहुत दुखी हुआ। उसने अपनी बहिन जरत्कारु से कहा 'बहिन, नागों के इस विपत्ति काल मे तुम्हारा पुत्र आस्तीक ही हम सबकी रक्षा कर सकता है। अन्यथा एक भी नाग जनमेजय के कोप से नही बचेगा।'

आस्तीक की मृदु वाणी

आस्तीक (AZTEK) दक्षिण अमेरिका के निवासी थे। वह बडे सदाचारी और मृदुभाषी थे। मामा और मा के आदेश पर वह तुरन्त यज्ञस्थल पर पहुचे। वहा पहुचते ही उन्होने राजा की स्तुति शुरू कर दी। अपनी स्तुति किसे अच्छी नही लगती? सुन कर राजा प्रसन्न हो गया। उसने आस्तीक से वर मागने को कहा। आस्तीक ने वर मागा कि नागो के सर्वनाश के लिए किया जा रहा यह सर्प यज्ञ तुरन्त बन्द कर दिया जाये।

राजा ने आस्तीक का मागा हुआ वर दे दिया और सर्पयज्ञ बन्द कर दिया गया।

तक्षक बचा रहा

आतकवाद का मूल प्रवर्तक तक्षक दड पाये बिना बच गया। ऐसी सम्भावना दीख रही है कि आतकवाद के प्रशिक्षण के लिए मदरसे खोलने और धन जुटाने वाला, नृशस हत्यारो को इस्लाम का जिहादी बनाने वाला असली अपराधी पाकिस्तान अपने दुष्कर्मो का फल बिना पाये ही बच जायेगा, जबकि हजारो निरीह अफगान तालिबान के कुकर्मो के कारण युद्ध की आग मे भस्म हो जायेगे।

(सकलित)

(पृष्ठ १ का शेष)

आखिर यह देश किस ......

राज्य का सर्वोपरि पुनीत दायित्व होता है। अत अपने सर्वोपरि कर्तव्य का निर्वाह किये बगैर ही देश से गद्दारी के अपराधियो को न्याय-सिद्धान्त मे दडित एव तिरस्कृत कर सकने मे अशक्त, असमर्थ अथवा उदासीन राज्य का राष्ट्र सुविकसित क्यो कर रह सकेगा?

ज्ञातव्य है कि अखड भारत के उन तथाकथित स्वाभाविक जन्मजात भारतीय मुसलमानो की यह आस्थाजनित गद्दारी किसी आर्थिक, व्यावसायिक या अशिक्षा आदि कारणो के बजाय भारतीय हिन्दुओ से असहिष्णु सास्कृतिक विरोध पर टिकी थी और टिकी है। दलित नामक इन ऐतिहासिक दरिद्र हिन्दुओ को आर्थिक आरक्षण का अस्थायी सा सवैधानिक लाभ तभी तो उपलब्ध हो सका है कि पहिले ही धार्मिक पाकिस्तान रूपी स्थायी आर्थिक सप्रभुता रूप वृहत्तर सरक्षण देश के मुसलमानो के लिए उपलब्ध कराया जा चुका है।

जनतत्र के हिसाब से माना कि मिलीजुली सस्कृति की जागीर था भारत, मगर सैतालीसी बटवारे की चौदहवी अगस्त तक। हिन्दुओ के कधे से कधा मिलाकर आजादी के वास्ते लडे थे ये भी जरूर, मगर उस वास्ते के हक मे पाकिस्तान अलग जो ले लिया इनके बहुमतीय सर्वमत ने। इस सर्वमतीय वास्ते से, इनको भी वही जाना था, तामझाम का कस्टोडियन कटाना था। जन्मजात होना ही शर्त नही सम्मान की, जेलो मे पडे नागरिक भी तो यही के जन्मजात है।

जा तो निसार करते हैं इस देश पर, ये भी औ जहा भर के मुसलमान।
चाहत तो बहुत है अब भी इसकी इनको, मगर हिन्दुओ की मुखालफत के वास्ते ॥

हरिजन सोमनाथ त्यागी
११/६३, कोट बाजार, अमरोहा (उ० प्र०)

समाचार जगत्

दिल्ली में ऋषि निर्वाणोत्सव

१४ नवम्बर २००१ बुधवार, प्रात ४ से १२ बजे तक रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००१ मे समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। दीपावली के इस पावन पर्व पर आप सब सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित सादर आमत्रित है।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (प०)
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

वार्षिक उत्सव

ओम् साधना मडल, करनाल का वार्षिक उत्सव १७, १८ नवम्बर २००१ को हो रहा है। अनेक सन्यासी, भजनोपदेशक पधार रहे है। आप सब सादर आमत्रित है।

चडीगढ़ में वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मन्दिर सैक्टर ७-बी, चण्डीगढ का ४३वा वार्षिकोत्सव ५ ११ २००१ से १२ ११ २००१ तक धूमधाम से मनाया जायेगा। उत्सव मे अथर्ववेद पारायण महायज्ञ, विद्वानो द्वारा वैदिक, सास्कृतिक, सामाजिक व्याख्यान, मधुर भजन एव ऋषि लगर, भक्ति सगीत एव भाषण प्रतियोगिता आदि होगे। १० नवम्बर को प्रात ९ से १ बजे तक भजन प्रतियोगिता होगी। सभी धर्म प्रेमी, आर्यजनो से निवेदन है कि आप अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्म लाभ उठाए।

दिवस्पुत्र भारथी का निधन

अत्यन्त दुख के साथ यह सूचना दी जा रही है कि भिक्षु दिवस्पुत्र भारथी (पूर्व नाम प० अभिविनय भारथी) वानप्रस्थ का गत ५ अक्टूबर २००१ को रात्रि ११ २५ बजे देहावसान हो गया। वह ७१ वर्ष के थे।

आर्य समाज के लिए उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उनके लेख एव कविताए आर्य पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रही। श्री भगवद् दत्त जी के साथ शतपथ ब्राह्मण पर महत्वपूर्ण कार्य किया। 'हव्य मीमासा' उनकी मुख्य रचना है। वह वेदोद्धारिणी पत्रिका के जनक थे।

भिक्षुजी का उठाला सोमवार ८ अक्टूबर २००१ को साय ३ से ५ बजे तक आर्य समाज पटेल नगर नई दिल्ली-८ मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री महेश जी विद्यालकार, डा० रूप किशोर शास्त्री, श्री श्यामदेव शास्त्री, श्री रमेशचन्द्र शास्त्री, श्री मायाराम शास्त्री, डा० रवि गुप्ता, श्री हसराज चोपडा, श्री कर्णदेव आदि ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

आर्य समाज, हॉसी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हॉसी का वार्षिकोत्सव २८ से ३० सितम्बर २००१ को बडी धूम-धाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री कृष्ण बॉगड जी (चेयरमैन हरियाणा पब्लिक सर्विस कमीशन) ने ध्वजारोहण किया। समारोह की अध्यक्षता श्री हरि सिह जी सैनी ने की। ३० सितम्बर को विशिष्ट अतिथि श्री कुलवीर सिह अहलावत तथा मुख्यवक्ता स्वामी अग्निवेश जी रहे। श्री सुभाष गोयल, हरियाणा नगर विकास मन्त्री व सेठ श्री जगदीश आर्य गुरेरा तथा श्री हरवश लाल जी कपूर (सह सचिव आर्य प्रादेशिक सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली) का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। उत्सव मे स्वामी सर्वदानन्द जी, डा वीरपाल, प विश्वामित्र शास्त्री, श्री सहदेव बेधडक जी, श्री सामचन्द जी पथिक, जबर सिह खारी आदि ने भाग लिया।

आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का साप्ताहिक सत्सग

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्सग मे इस रविवार १४ १० २००१ को डी ए वी पब्लिक स्कूल, वसन्त कुज के छात्रो और गुरुजनो ने भाग लिया। स्कूल की प्रिसिपल श्रीमती विजय अरोडा ने गायत्री मत्र पर प्रकाश डाला। आर्य समाज के प्रधान श्री शान्तिलाल सूरी मत्री श्री आर आर भल्ला ने सबका धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैलाश हिल्स, नई दिल्ली मे स्वाधीनता दिवस

विद्यालय मे स्वाधीनता दिवस उत्साह से मनाया गया। सास्कृतिक कार्यक्रम किये गये, वृक्षारोपण किया गया और प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन 'ओ३म्' की १५०० प्रतिया वितरित की गई।

प्रिसिपल श्रीमती एस कोछड ने जरूरतमन्द छात्रो के लिए ५००० रु तथा ५१०० रुपये की छात्रवृत्तिया रोटरी क्लब दिल्ली सैट्रल से प्राप्त की।

महाशय श्री हरगोविन्द सिह जी आर्य दिवगत

कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या डा सुमेधा जी के पिता तथा गुरुकुल के सस्थापक महाशय श्री हरगोविन्द सिह जी का ८५ वर्ष की आयु मे २९ ९ २००१ को देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि-कर्म कुलभूमि मे वैदिक विधि से किया गया।

उनकी महर्षि दयानन्द मे अगाध श्रद्धा थी, अतएव आजीवन आर्य सिद्धान्तो के प्रचार व परिपालन मे तत्पर रहे। अपनी सुभावना को मूर्तरूप देने के लिए उन्होने अपनी पुत्री डा सुमेधा जी आचार्या को कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका बनाया तथा भूमि का दान कर अपने क्षेत्र मे गुरुकुल की स्थापना करके पुत्री को उसके सचालन के लिए समर्पित कर दिया। इस क्षेत्र मे आप गुरुकुल क्रान्ति के अग्रदूत तथा प्रेरक व्यक्तित्व थे।

७ अक्टूबर २००१ को उनकी स्मृति मे शाति यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमे दिल्ली-हरियाणा आदि दूरस्थ व निकटस्थ गण्यमान्य जनो ने भाग लिया तथा दिवगत आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की।

हिन्दी के समर्थन मे प्रस्ताव

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सै. ६, रोहिणी, दिल्ली

विद्यालय मे १४ सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य मे विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रोत्साहन देने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओ का आयोजन कर प्रत्येक वर्ग के विद्यार्थियो को अलग-अलग पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर सर्वसम्मति से विद्यालय की ओर से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि 'हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है तथा सरकारी कार्यालयो के समस्त कार्यकाज हिन्दी भाषा मे होने चाहिए।'

इस प्रस्ताव की सूचना भारत सरकार के केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मत्री डॉ मुरली मनोहर जोशी एव दिल्ली सरकार के शिक्षा मत्री डॉ नरेन्द्र नाथ जी को प्रेषित कर दी गई है।

महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र का स्थापना दिवस

महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र बनचारी का ७वा स्थापना दिवस समारोह ४ ११ २००१ को बनचारी, तहसील होडल, जिला फरीदाबाद (हरियाणा) दिल्ली आगरा राजमार्ग पर ८२ कि०मी० के पत्थर पर बाई ओर समारोहपूर्वक महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती की अध्यक्षता मे आयोजित किया जा रहा है। डा० योगानन्द शास्त्री, खाद्य मत्री, दिल्ली सरकार इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होगे तथा श्री भगवानसहाय रावत विशिष्ट अतिथि होगे। समस्त आर्यजन इस कार्यक्रम मे पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाये।

[illegible]

● हिन्दी मे भेजिये ● कम से कम १५ दिन पहले भेजिये ● कागज के एक ओर लिखिये ● बाये हाथ पर एक इच हाशिया छोडिये ● पक्तियो के बीच मे भी खाली स्थान रहे। ● लिखने के बाद सामग्री को एक बार पढ लीजिये।

दान के लिए अपील

समस्त आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली को आर्य समाज मन्दिर भवन निर्माण के लिए वसन्त कुज सैक्टर-बी, पाकेट-२, नई दिल्ली मे ४३८ वर्ग मीटर का एक भूखण्ड ८० लाख रु० प्रति एकड + १४२ प्रतिशत प्रीमियम की दर से दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा आवटित हुआ है। इस भूखड के आवटन पर आने वाले व्यय का भुगतान करने के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और आर्य समाज वसन्त कुज सब आर्य बहनो, भाइयो से, डी० ए० वी० विद्यालयो के स्कूलो, कालेजो से विनम्र आग्रह करती है कि यथाशक्ति अधिक से अधिक दान दे कर धर्म लाभ उठाये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज की इस शाखा के भवन निर्माण तथा भूखण्ड के क्रय मे लगभग ५० लाख रुपया व्यय आने का अनुमान है, जोकि ६० दिनो मे भुगतान करना आवश्यक है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य समाजो तथा डी० ए० वी० स्कूलो एव कालेजो के अधिकारियो तथा स्टाफ से करबद्ध निवेदन करती है कि इस रचनात्मक कार्य मे अधिक से अधिक दान दे कर पुण्य के भागी बने। सभा को दिया गया दान धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

ज्ञानप्रकाश चोपडा **प्रबोध महाजन**
प्रधान मत्री

जन चेतना यात्रा

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के तत्वावधान मे एक जन चेतना यात्रा का विशेष आयोजन पजाब की समस्त आर्य समाजो एव डी० ए० वी० सस्थाओ द्वारा अपने नगरो एव कस्बो मे शनिवार, दिनाक ३ नवम्बर, २००१ को प्रात ११ बजे से दोपहर १ बजे तक किया जा रहा है। इस यात्रा के माध्यम से भारतीय समाज मे फैली हुई प्रमुख सामाजिक कुरीतियो (भ्रष्टाचार, भ्रूण हत्या, जात-पात एव दहेज प्रथा आदि) के उन्मूलन के सम्बन्ध मे सर्व-साधारण को जागृत किया जाएगा। आप सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित सादर आमत्रित है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पजाब
कार्यालय माईदास ए एस सी सै स्कूल, पटेल चौक, जालन्धर
दूरभाष कार्यालय २८१४६८ निवास २५५६७१

36583. पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय
हरिद्वार-249404, उत्तरांचल

डी० ए० वी० कालेज अमृतसर मे ऐतिहासिक शिविर

डी० ए० वी० कालेज अमृतसर के गष्ट्रीय सेवा योजना विभाग की ओर मे दिनाक २९ ९ २००१ से ७ १० २००१ तक दस दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन बहुत ही सुव्यवस्थित तरीके से किया गया। इम शिविर मे लगभग ३०० छात्र-छात्राओ ने भाग लिया। प्रि० ऐम० ऐल० ऐरी ने एव श्री सुखपाल सिह ने छात्रो को सम्बोधित किया।

दिनाक २९ मितम्बर को प्रात ६ बजे सभी छात्र फिरोजपुर गये। उसकेबाद हुसैनीवाला, जहा राजगुरु, मुखदेव एव भगतसिह की ममाधिया है, जाकर देश सेवा करने की शपथ ग्रहण की।

दिनाक ३० मितम्बर को शिविर का उद्घाटन श्री जुगलकिशोर ने किया तथा ध्वजोत्तोलन मुख्य न्यायाधीश डा० मित्तल, दिल्ली उच्च न्यायालय एव उपप्रधान डी० ए० वी० मैनेजिग कमेटी दिल्ली ने करके छात्रो को उद्बोधन दिया। प्रो० कुलदीप आर्य के नेतृत्व मे इस कैप की दिनचर्या प्रात ६ बजे योगासन, व्यायाम, कराटे से प्रारम्भ होती रही। प्रि० ऐलावत ने सस्कारो के महत्व पर एव डा० हरीश पुरी ने मानव अधिकारो पर अपूर्व भाषण दिया।

१ अक्टूबर को मभी छात्र आर्य समाज शक्तिनगर मे गए और वहा श्री राकेश मेहरा मन्त्री जिला आर्य मभा की अध्यक्षता मे १०० प्रौढ शिक्षा बैग बाटे गए। साथ ही बच्चो को स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित बाते भी बताई। इधर ५० लडकिया गडासिहवाला गई, जहा पर उन्होने सफाई की और २ अक्टूबर को आर्य ममाज मन्दिर मे फ्री मैडिकल कैप लगाया, जिसमे लगभग ५०० लोगो को दवाइया दी तथा ५०० लोगो का ब्लड ग्रुपिंग किया गया। ३ अक्टूबर को आतकवाद के विरोध मे एक विशाल रैली डी० ए० वी० कालेज से जलियावाले बाग तक निकाली गई। रैली की भव्यता देखते ही बनती थी। शहर मे अनेक स्थानो पर पुष्प वर्षा के द्वारा रैली सयोजको का स्वागत किया गया। जलियावाले बाग पहुच कर श्री हरभजन सिह ने रैली को सम्बोधित किया। ३ अक्टूबर के सायकालीन सत्र मे डा० वी० पी० लखनपाल का जीने की कला विषय पर अत्यन्त सारगर्भित व्याख्यान कराया गया। ४ अक्टूबर को सैट्रल जेल अमृतसर का सर्वेक्षण किया। यहा जेल सुपरिटैडैट ने छात्रो को सम्बोधित किया। सत्र मे डा० मिसिज उर्मिला लखनपाल का फैमिली कौसिलिग पर व्याख्यान हुआ।

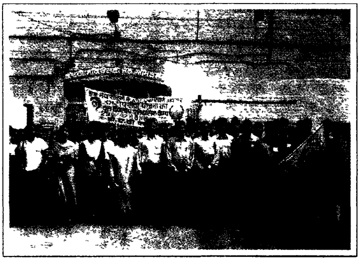

दिनाक ५ अक्टूबर को प्रात १० बजे से १२ बजे तक चरित्र उत्थान शिविर का आयोजन कालेज हाल मे कराया गया, जिसमे श्री ओमप्रकाश आर्य ने महर्षि दयानन्द एव महात्मा हसराज की जीवन की झाकिया दिखा कर छात्र-छात्राओ को आदर्श जीवन के लिए प्रेरित किया। सायकालीन सत्र मे जलियावाले बाग मे विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। इससे पूर्व यहा कभी भी यज्ञ नही किया गया था। बडे पार्क को ओ३म् के झडो से तथा तिरगे झडो से सजाया गया। यहा अनेक देशभक्ति के कार्यक्रम भी ऐन ऐस ऐस के छात्रो द्वारा किए गए। दिनाक ६ अक्टूबर को पुरस्कार वितरण ममारोह हुआ, जिसमे, श्री जुगल किशोर ने अध्यक्षता की। लगभग ५० छात्र-छात्राओ को पुरस्कार सहित प्रमाण पत्र भी बाटे गये तथा १५० छात्रो को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

सी० बी० एस० ई० टेबिल टेनिस प्रतियोगिता

दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालय (दुर्गापुर) का यह गौरवमय इतिहास रहा है कि पढाई के साथ इस विद्यालय के छात्र-छात्राओ ने खेल के मैदान मे भी अपनी धमाकेदारी उपस्थिति दर्ज करायी है।

दयानन्द ऐंग्लो वैदिक माडल विद्यालय (दुर्गापुर) ने प्रशासको, शिक्षको, अभिभावको और विद्यार्थियो के अपार महयोग मे दुर्गापुर के मिद्धु-कानू इडोर म्टेडियम मे केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (पूर्वी क्षेत्र) द्वारा प्रायोजित टेबिल टेनिस प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस प्रतियोगिता मे पश्चिम बगाल, झारखड, बिहार, उडीसा के ३२ विद्यालयो के १९, १६, १४ वर्ष के तहत लगभग २८६ प्रतियोगियो एव अधिकारियो ने भाग लिया।

१८ अक्टूबर २००१ को प्रतियोगिता का उद्घाटन मसद मदस्य (राज्य मभा) श्री जीवन गय ने किया। इस अवसर पर दुर्गापुर नगर निगम के अध्यक्ष श्री बी० आचारिया तथा बगाल अभियात्रिक महाविद्यालय के प्रमुख श्री ऐस० के शर्मा भी उपस्थित थे। उपस्थित गण्यमान्य व्यक्तियो ने शिक्षा के साथ-साथ जीवन मे खेल के महत्व पर भी प्रकाश डाला। केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के बैड बाजे की धुन पर विद्यालय के विद्यार्थियो ने आकर्षक परेड प्रस्तुत की। तत्पश्चात् नयनाभिराम रगारग सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

तीन दिनो तक चली टेबिल टेनिम प्रतियोगिता मे लडकियो की टीम-मैच के अन्तर्गत १४ वर्ष के वर्ग मे दिल्ली पब्लिक म्कूल (बोकारो) ने हरियाणा विद्या मन्दिर (कोलकाता) को पराजित कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। १६ वर्ष के तहत दिल्ली पब्लिक स्कूल (बोकारो) ने चिन्मय विद्यालय (बोकारो) को पराजित कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। १९ वर्ष के तहत बोकारो इस्पात सैकेडरी स्कूल ने चिन्मय विद्यालय (बोकारो) को पराजित कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

लडको के टीम-मैच के अन्तर्गत खेले गए १४ वर्ष के तहत लॉयला हाई स्कूल (पटना) ने बिडला हाई स्कूल (कोलकाता) को पराजित कर प्रथम स्थान पर अधिकार किया, तृतीय स्थान पर जे० ऐम० एकेडमी रहा। १६ वर्ष के तहत लॉयला हाई स्कूल (पटना) ने चिन्मय विद्यालय (बोकारो) को पराजित किया। तृतीय स्थान हरियाणा विद्या मन्दिर (कोलकाता) को प्राप्त हुआ। १९ वर्ष के तहत चिन्मय विद्यालय प्रथम एव द्वितीय स्थान पर अशोका हॉल रहा।

एकल मैच के अन्तर्गत लडकियो के मैच मे १४ वर्ष के वर्ग मे हरियाणा विद्या मन्दिर (कोलकाता) को प्रथम एव दिल्ली पब्लिक स्कूल (बोकारो) को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। १६ वर्ष के तहत दिल्ली पब्लिक स्कूल (बोकारो) को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। १९ वर्ष के तहत चिन्मय विद्यालय (बोकारो) को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

एकल मैच के अन्तर्गत ही लडको के मैच मे बिडला हाई स्कूल को ही प्रथम एव द्वितीय स्थान प्राप्त हए। १६ वर्ष के तहत हरियाणा विद्या मन्दिर (कोलकाता) को प्रथम एव दिल्ली पब्लिक स्कूल (बोकारो) को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। १९ वर्ष के तहत चिन्मय विद्यालय (बोकारो) को ही प्रथम एव द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

समापन कार्यक्रम मे जिलाधीश श्री मनोज अग्रवाल, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विशेष खेल अधिकारी श्री जी० पी० गौतम एव दुर्गापुर के अनुमडलाधिकारी श्री पुनीत यादव भी उपस्थित थे। सभापतित्व सासद श्री जीवन राय ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय के प्रधानाचार्य एव निदेशक श्री ए० के० शर्मा ने किया।

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, मभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय **आर्य जगत्** मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718 3362110) सम्पादक—**उदयवीर 'विराज'**

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वय श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशो मे ३० पौड या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक ३७
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, ११ नवम्बर, २००१
कार्तिक कृ०-११-वि० स०-२०५८
सप्ताह ११ नवम्बर से १७ नवम्बर

सत्य अर्थ प्रकाश का दीपक जगमगाता रहे

किसी आर्य भजनोपदेशक ने बहुत ठीक गाया था

अज्ञान अविद्या का काला
घनघोर अधेरा छाया था,
वेदो का दीप जला उज्वल
उसे हटा दिया ऋषि दयानन्द ने।

ज्ञान और मिथ्या ज्ञान का सघर्ष चलता रहता है। ऋषि लोग साधारण जनता को लोकहितकारी मार्ग दिखलाने का यत्न करते है, परन्तु वृत्रासुर अपने निजी स्वार्थ के लिए उस सत्य को विकृत कर देते है, दाप देते है।

आस्तिकता

उदाहरण के लिए, ऋषियो ने कहा 'ईश्वर को मानो। वह सारे ससार का बनाने वाला, पालक और शासक है। वह भले बुरे कर्मो का फल देता है।' यह वचन लोकहित के लिए था। लोग ईश्वर को मानेगे, तो पाप (बुरे कर्म) करने से डरेगे। सब सदाचारी बनेगे।

बहुत समय तक यह व्यवस्था चली। उसके बाद वृत्र सक्रिय हुए। उन्होंने मन्दिर बना कर उनमे ईश्वर की मूर्तिया स्थापित कर दी और लोगो को समझाया कि इन मूर्तियो की पूजा करना, इन पर चढावा चढाना ही धर्म है। इसी से इहलोक मे सारी इच्छाए पूर्ण होगी और परलोक मे स्वर्ग मिलेगा, मोक्ष मिलेगा।

अन्धविश्वास

श्रद्धा बहुत बडी शक्ति है। श्रद्धा और विश्वास के बिना समाज का कार्य नही चल सकता। परन्तु अन्धश्रद्धा और अन्धविश्वास उससे भी बडी शक्तिया है। श्रद्धालु अपनी मेहनत की कमाई का कुछ अश सत्कार्य के लिए दान दे सकता है, तो अन्ध श्रद्धालु अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर सकता है, अपने प्राण तक दे सकता है, अपने पडौसी के प्राण ले भी सकता है। अन्ध श्रद्धा की कोई सीमा नही है।

मनुष्य सुखलोलुप और श्रमभीरु प्राणी है। वह अधिक से अधिक सुख पाना चाहता है, परन्तु उसके लिए मेहनत कम से कम करना चाहता है। लोकहितकारी कर्म करने के लिए श्रम (तप) करना पडता है। सत्य पर दृढ रहने के लिए हिम्मत चाहिए। मन्दिर मे जा कर कुछ पत्र पुष्प चढा देना आसान काम था। भक्तो की सख्या बढती चली गई। पुजारियो की मौज हो गई।

मन्दिर तमाशे बने

मन्दिरो को तमाशा बनाया गया। ऊचे, सुन्दर, सुरम्य स्थानो पर विशाल, भव्य भवन बनाये गये। उन पर स्वर्ण कलश लगाये गये। भीतर स्वर्ण निर्मित, रत्नजटित मूर्तिया रखी गई। उन्हे रेशमी वस्त्रो से सजाया गया। मनोरजन के लिए देवदासियो द्वारा नृत्य और सगीत की व्यवस्था की गई। देश के दूर दूर तक के भागो से खिच कर भोले भक्तो की भीड चढावा ले ले कर आने लगी। मन्दिरो मे सोने चादी के अम्बार लग गये।

पाप क्षमा होने लगे

एक आश्वासन और दिया गया 'भगवान् पाप क्षमा कर देगे, बस सच्चे मन से उनकी उपासना करो।'

चक्कर पूरा घूम गया। ईश्वर पर विश्वास करने की बात इसलिए कही गई थी कि लोग पाप करने से डरे। अब सच्चे मन से ईश्वर की उपासना करने वालो को पाप करने की छूट दे दी गई। पाप कर लो, भगवान् की पूजा मे पाप क्षमा हो जायेगे।

न केवल पाप बढ गये, एक अकर्मण्यता भी व्याप गई। भगवान् सर्वशक्तिमान् है, अपने भक्तो की रक्षा वही करेगे। कोतवाल के बेटो को डर किस बात का?

लुटेरे आये

जहा असहाय भेडे रहती है, वहा देर सवेर मे भेडिये आ ही जाते है। इस देश मे भी महमूद गजनवी आया, मुहम्मद गोरी, बाबर, तैमूर, नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली आये। जितना भी ईश्वर भक्तो को लूटा, पीटा, मारा जा सकता था, दास बनाया जा सकता था, बनाया गया। उसके बाद भी अविद्या, अज्ञानग्रस्त लोगो को यह पता नही चला कि गलती कहा है? हमारी इतनी दुर्दशा क्यो हो रही है?

ऐसा नही कि देश मे पडित नही थे, थे, पर वे सब पोगा पडित थे। उन्होने सस्कृत के श्लोक रटे हुए थे, न जाने कहा कहा के श्लोक, जिनका शुद्ध उच्चारण भी वे नही कर पाते थे। इन श्लोको मे कहा गया था कि लडकी की शादी आठ वर्ष की आयु मे कर देनी चाहिए, ब्राह्मण देवता है, शूद्र अस्पृश्य है, विधवा का विवाह नही होना चाहिए, कन्याओ का पढना पढाना मना है, राजा ईश्वर का रूप हे, इत्यादि।

हिन्दू समाज की दुर्दशा

इन पुराणो और स्मृतियो के अविवेकपूर्ण श्लोको से हिन्दू समाज रसातल मे जा रहा था। विधवाए विधर्मियो के साथ भाग रही थी, अस्पृश्य कहे जाने वाले शूद्र ईसाई और मुसलमान बन रहे थे, क्योकि वहा उन्हे समानता का मानवीय व्यवहार मिलने की आशा थी। विदेशी शासन मे देश आर्थिक दृष्टि से कगाल हुआ जा रहा था। लडके-लडकियो के विवाह आठ दस वर्ष की आयु मे हो जाते थे और चार छह सताने उत्पन्न करके वे तीस पेतीस बरस की आयु मे परलोक सिधार जाते थे।

उस समय ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। उन्होने देश की दुर्दशा को देखा और उनका हृदय दया से द्रवित हो गया। दयानन्द उनके पिता का दिया हुआ नाम नही था। पिता ने नाम रखा था मूलशकर। गुरु ने नाम रखा शुद्ध चैतन्य। स्वामी जी ने अपना नाम स्वय रखा दयानन्द।

दया का सागर

पराधीनता की यातना से पीडित देशवासियो पर उनकी दया थी। वैधव्य की लाछना भोग रही नारियो पर उनकी दया थी। अस्पृश्यता की व्यथा सह रहे दलितो पर उनकी दया थी। अशिक्षा और बाल विवाह की बेडियो मे जकडी कन्याओ पर उनकी दया थी।

ये सारे अत्याचार धर्म और शास्त्रो के नाम पर हो रहे थे। दयानन्द ने धर्मधुरन्धरो की मडली को ललकार कर कहा 'तुमने जिन शास्त्रो को प्रमाण माना है, वे शास्त्र ही नही है। फिर उन शास्त्रो के जो अर्थ तुमने किये है, वे उनके सत्य अर्थ ही नही है। सही शास्त्र वेद है और उनका सही अर्थ वह है, जो मै बताता हू।'

स्वामी दयानन्द ने वेदो के पुराने टीकाकारो, सायण, उवट, महीधर आदि से भिन्न अर्थ किये। वे अर्थ कितने सही है, यह विचार और विवेचन का विषय हो सकता

(शेष पृष्ठ १० पर)

दीप छोटा सा जलाओ

चल बसा दिन का उजाला,
उतर आया तिमिर काला,
चित्त शकित, हृदय कम्पित, सान्त्वना जग को दिलाओ।
जिस किसी घर मे अँधेरा,
डगर पर जिस तम घनेरा,
वहा जा कर अति जतन से दीप छोटा सा जलाओ।
मार्ग पर है गर्त गहरे,
घात मे विष सर्प ठहरे,
दीप दिखला भीत पथिको को निडर आगे चलाओ।

दीपावली की शुभकामना

सब आर्य जनो का—
स्वस्थ हो तन, मुदित हो मन
प्रचुर हो धन, सुखी जीवन।
लक्ष्य सेवा, व्रत तपस्या,
अभय, निश्छल, स्नेह वर्धन।
हर सुजन बन जाय अपना,
सत्य यह हो जाय सपना।
आ० प्रा० प्रतिनिधि सभा और
डी० ए० वी० का० प्र० समिति

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित लेखो मे व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

श्री और लक्ष्मी भगवान् की पत्नियां हैं

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामु म इषाण सर्वलोक म इषाण।
यजु० ३१ २२

अर्थ– (**श्री च लक्ष्मी**) श्री और लक्ष्मी (**ते पत्न्यौ**) तेरी दो पत्निया है। (**अहोरात्रे पार्श्वे**) दिन और रात तेरे दो पार्श्व है। (**नक्षत्राणि रूप**) नक्षत्र अर्थात् जगमगाते तारे तेरा रूप है। (**अश्विनौ व्यात्तम्**) दोनो अश्विनीकुमार तेरा खुला मुख है। (**इष्णन् इषाण**) अपनी इच्छा से मेरी इच्छाए पूरी कर। (**अमु मे इषाण**) अमुक को मुझमे अनुरक्त कर। (**सर्व लोक म इषाण**) सभी लोगो को मुझमे अनुरक्त कर।

मनन– यह यजुर्वेद के ३१वे अध्याय (पुरुष सूक्त) का अन्तिम मत्र है। इस पुरुष सूक्त मे भगवान् की पुरुष के रूप मे कल्पना करके उसे सर्वसाधारण को समझाने का यत्न किया गया है। भगवान् निराकार है, फिर भी मनुष्य को समझाने के लिए उसे मनुष्य के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। कहा गया है 'उसके हजार सिर है, हजार आखे है, हजार पैर है। वह इतना बडा है कि भूमि (विश्व ब्रह्माण्ड) को सब ओर से छू लेने के बाद भी दस अगुल बचा रह जाता है।'

भगवान् की शक्ति को, महिमा को निरूपित करने का यह एक तरीका है। अनपढ, कम समझ आदमी को समझाने के लिए भगवान् की कुछ तो रूपरेखा बनानी पडेगी—उसकी रूपरेखा, जिसका कोई रूप नही है। कुत्ते बिल्ली, या हाथी घोडे, या बाघ भालू के बजाय मनुष्य का रूप बना कर बात समझाना अधिक उचित लगा होगा, इसलिए बात इस ढग मे कही गई। मनुष्य के एक सिर होता है, परन्तु भगवान् के मानो हज़ार सिर है। हजार सिर गणित की सख्या नही है, विशाल सख्या के द्योतक मात्र है। इसी लिए हजार सिरो मे दो हजार आखो की बात नही है, हजार ही आखे है। पैर भी हजार ही है।

वह इतना बडा है कि यह सारा विश्व ब्रह्माण्ड उसके एक चौथाई भाग मे ही समा जाता है, बाकी तीन चौथाई भाग तो उससे अलग ही बचा रहता है।

इसी प्रसग मे यह भी कहा गया है कि ब्राह्मण उस विराट् पुरुष का मुख था, क्षत्रिय उसकी दो भुजाए था, वैश्य उसकी दो जाघे था और शूद्र उसके दो पैरो से उत्पन्न हुआ।

उसकी नाभि मे अन्तरिक्ष बना, द्यु लोक उसके सिर से बना, भूमि उसके पैरो से और दिशाए तथा लोक उसके कानो से बने।

ये सब बाते ऐतिहासिक या भौतिक सत्य नही है, अपितु भगवान् के अनिर्वचनीय रूप को जैसे तैसे हृदयगम कराने के लिए कही गई है।

आज दीपावली के प्रसग मे यह बात रोचक जान पडती है कि श्री और लक्ष्मी को भगवान् की दो पत्निया कहा गया है। श्री का अर्थ है कान्ति, शोभा, सौन्दर्य, आभा। लक्ष्मी का अर्थ है सुन्दरता, समृद्धि, धन सम्पत्ति। 'भगवान्' शब्द का अर्थ है भग वाला। भग के छह अर्थ बताये गये है

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशस श्रिय।
ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णा भग इतीरणा।

सब प्रकार का ऐश्वर्य (जिसमे धन, धान्य, भूमि, भवन, पशु, स्त्री, दास, सेना सब आ जाता है), वीर्य अर्थात् प्रजनन शक्ति, यश, शोभा, ज्ञान और वैराग्य, इन छह को भग कहा जाता है। जिसके पास ये सब हो, वह भगवान् है।

इन छह मे श्री का उल्लेख है, लक्ष्मी का मत्र मे उल्लेख है ही। श्री और लक्ष्मी भगवान् की पत्निया है। जैसे पति का पतित्व पत्नी के बिना नही हो सकता, वैसे ही भगवान् की भगवत्ता, ईश्वर का ईश्वरत्व श्री और लक्ष्मी के बिना नही हो सकता।

श्री और लक्ष्मी की कामना और उन्हे प्राप्त करने का यत्न करना भगवान् के समीप पहुचने की ही साधना है। श्री और लक्ष्मी, दोनो ही निष्कलक हैं। दूसरे को कष्ट दिये बिना, अपितु दूसरे के जीवन निर्वाह मे सहायक बन कर अर्जित की गई सम्पदा ही लक्ष्मी है। अन्याय, अत्याचार, लूटमार, चोरी, गबन, अपमिश्रण (चीजो मे मिलावट) आदि भ्रष्ट उपायो द्वारा प्राप्त धन लक्ष्मी नही कहा जा सकता। लक्ष्मी के साथ श्री (शोभा) भी होनी चाहिए, तभी हम भगवान् की कृपा के पात्र बन सकेगे। तभी हम अपने इष्ट बन्धुओ और सभी लोगो के प्रेमपात्र बन पायेगे।

ऋषि को मानें, ऋषि की भी मानें

❏ रामपथिक भिक्षु

आर्य समाज को समझने से पूर्व हम महर्षि जी के हो सम्पूर्ण जीवन तथा गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के चरणो मे जाने से पूर्व की प्रमुख घटनाओ पर गहराई से विचारे तो सही। महर्षिवर ने गुरु दक्षिणा पर क्या भेट दी थी? तो गुरुवर ने क्या मागा था? इसके बाद प्रचार शुरू करके भी फिर करीब तीन वर्षो तक एकान्त मौन साधना मे रह कर फिर प्रचार शुरू किया। तब बहुतो के बार बार आग्रह पर की थी आर्य समाज की स्थापना। इन आठ वर्षो के कार्यो पर विचारे जरूर।

ऋषिवर के जीवन, व्यक्तित्व, कर्तव्य, वैदिक धर्म के सिद्धान्तो को गम्भीरता पूर्वक समझ कर फिर विचारे किहमने किनना समझा है महर्षि दयानन्द को।

अपने आपको जो ऋषिवर का भक्त, शिष्य, अनुयायी कहता है, वह स्वय विचारे शान्त चित्त से कि उसका वैदिक सिद्धान्तो पर कितना है आचरण? आर्य समाज की स्थापना को भी हो गये १२६ वर्ष। विश्व के कई अन्य देशो मे भी आर्य समाज का प्रचार हो रहा है, होना भी चाहिए। ऋषि अकेले ने जो परिवर्तन किया, लाखो मिल कर भी कर पाये हम? प्रश्न है कडवा। महर्षि को मानते है हम, बस ऋषिवर की नही मानते, जैसे माता पिता को मानते पर उनकी आज्ञा नही मानते, तन, मन, धन से सेवा नही करते।

महर्षिवर को समझा था प० लेखराम, प० गुरुदत्त, महात्मा हुसराज जी आदि ने, तभी उनका भी प्रभाव आज भी है। हमारे परिवार मे कितने चलते है वैदिक सिद्धान्तो पर? दीपावली से पूर्व मन मन्दिर से अधकार, अज्ञान मिटा तो सार्थक हुआ जीवन एव जाना, माना, समझा महर्षि दयानन्द को।

आइये, हम सब मिल कर विचार करे कि पहले स्वय सुधरे कि जग को सुधारने की बात करे। यह सरल कार्य इस कारण से नही करते कि यह सरल है तो करेगे। वह कठिन काम, जिसे कोई विरला (हजारो मे एक) करता, करेगे। जयघोष के अनुसार प्रयास किया विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाने का, तो प्रत्यक्ष प्रमाण है कि न बना पाये, खैर। बीती बिसारे, वर्तमान सवारे, स्वय को सुधारे। सरलतम कार्य है स्वय का सुधार, तो कठिनतम है दूसरो का सुधार। जब मा बाप स्वय जन्मे पाले, पोसे को भी न सुधार पाये तो अन्यो गैरो का क्या करेगे सुधार?

प्रतिवर्ष मनाते है महापुरुषो के पावन पर्व, परन्तु गुण-ग्रहण कितना किया? इस दीपावली से पूर्व, यदि हमारे मन मन्दिर से अधकार, अज्ञान मिटा, तो सार्थक होगा जीवन और पर्व मनाना भी।

आर्य समाज अजनाला, अमृतसर (पंजाब)

दीपावली का सन्देश

❏ प० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

आई है दीपावली देने यह सन्देश।
करो सभी से प्रेम तुम बोलो मधुर हमेश।
बोलो मधुर हमेश प्रेम रस धार बहाओ।
दुखिया दीन अनाथ, निबल को गले लगाओ।
पालो वैदिक धर्म, बनो सच्चे बलदाई।
इस दुनिया मे विजय सत्य की होती आई।
स्वामी ऋषि दयानन्द जी ईश्वर भक्त महान।
मानवता के पुज थे देशभक्त बलवान।
देशभक्त बलवान, सदाचारी व्रतधारी।
नाम अमर कर गए महामानव उपकारी॥
वेदो के विद्वान् धुरन्धर योगी नामी
धर्म की खातिर लडे खलो से प्यारे स्वामी॥
फैला था ससार मे सभी जगह पाखड।
मनमानी थे कर रहे, ढोगी धूर्त उदण्ड।
ढोगी धूर्त उदण्ड पाप करते थे भारी।
अन्धकार मे भटक रही थी दुनिया सारी॥
हृदय रूप घट सब लोगो का था अति मैला।
धरती पर अज्ञान बहुत ज्यादा था फैला॥
ईश्वर विश्वासी गुणी थे स्वामी दयानन्द।
तर्क तेग से विश्व के काटे ऋषि ने फन्द।
काटे ऋषि ने फन्द, वेद प्रकाश दिखाया।
पुण्य-पाप का भेद सकल जग को समझाया।
ऐसा योगी नही दीखता अब धरती पर।
निराकार सर्वज्ञ बताया जिसने ईश्वर।
करना है यदि विश्व का तुम्हे सुनो कल्याण।
वेदो के पथ पर चलो मानव बनो महान।
मानव बनो महान, बात ऋषिवर की मानो।
देव पुरुष को ठीक तरह अब तो पहचानो।
भला इसी मे बुरे काम से हरदम डरना।
"नन्दलाल" तुम काम सदा परहित के करना॥

ग्राम बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरियाणा)

मन का दीपक कैसे जलेगा?

दीपावली इस देश के निवासियो का सबसे बडा पर्व है। यह कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। शरद् ऋतु समाप्त हो कर हेमन्त का प्रारम्भ होता है। गीता मे **'मासाना मार्गशीर्षोऽह'** (महीनो मे मै मार्गशीर्ष अर्थात् सबसे सुखद महीना हू) कह कर जिस मार्गशीर्ष की प्रशसा की गई है, वह एक पखवाडे के बाद शुरू होने को होता है। मौसम सुहावने रूप मे ठडा हो जाता है। ग्रीष्म का ताप और वर्षा की उमस समाप्त हो जाती है और शिशिर की ठिठुरन अभी शुरू नही हुई होती।

खेतो मे सावनी फसल तैयार खडी होती है। धान, ज्वार, मक्का, बाजरा, तिल, मूग, उडद आदि दाले शीत काल का आहार जुटाती है। ईख कट कर कोल्हुओ मे आने लगती है, जिससे पूरा देश मिठास से भर जाता है।

दीपावली सावनी फसल पकने पर शीत काल से पहले होती है और दूसरा बडा पर्व होली, आषाढी फसल पकने पर शीत ऋतु की समाप्ति पर आता है। होली फाल्गुन पूर्णिमा को होती है, दीपावली कार्तिकी अमावस्या को। होली चादनी रातो का त्योहार है, दीपावली काली अधेरी रात का।

घरो की सफाई

दीपावली पर लोग घर की सफाई करते है। बरसात के उत्पात से क्षतिग्रस्त या मैले सीले घरो की मरम्मत करके उन पर पुताई करते है। इस अवसर पर साल भर का कूडा कचरा घर से निकाल फेका जाता है। सामर्थ्य के अनुसार नया सामान खरीद कर घर को सजाया जाता है। नये बर्तन, नये वस्त्र, नये आभूषण खरीदे जाते है।

इस दिन मिष्टान्न, पकवान बनाये जाते है। पूरी बस्ती घी की महक से भर जाती है, घर घर मे पाक यज्ञ जो हो रहा है। यह मधुर अन्न केवल अपने खाने के लिए नही, इष्ट बन्धुओ के साथ मिल बाट कर खाने के लिए है। मै आपको दू, आप मुझे दे, इससे स्नेह सवर्धन होता है।

लक्ष्मी पूजन

हिन्दुओ मे इसे लक्ष्मी पूजन का पर्व माना जाता है। ससार के विभिन्न भागो मे एक देवमडल की कल्पना की गई थी। जैसे वानरो की तुलना मे हम विकसित मनुष्य है, वैसे ही मनुष्य से और अधिक विकसित देव है। वे स्वर्ग मे निवास करते है, वे अद्भुत बल, बुद्धि सम्पन्न होते है, अजर अमर है, सदाशयी है, भक्तो की सहायता करते है। इन्द्र, वरुण, पवन, अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति, रुद्र आदि देवो का उल्लेख वेदो मे है। पौराणिक देवता ब्रह्मा, विष्णु, गणेश आदि है। दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती इसी देवमडल की सदस्य है।

दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की कल्पनाए बहुत सुन्दर थी। दुर्गा शक्ति की देवी है, लक्ष्मी समृद्धि की देवी है, और सरस्वती ज्ञान, विज्ञान एव कलाओ की देवी है।

दुर्गा को शक्ति की देवी मानते हुए उन मनीषियो ने स्वय को शिशु माना होगा। शिशु के लिए मा ही सर्वशक्तिस्वरूपिणी होती है। वही सब आपदाओ से रक्षा करती है। अन्यथा अल्पबला, मृदु स्वभावा, कोमलाङ्गी नारी की दुर्गा रूप मे कल्पना करने का कोई औचित्य नही था।

समृद्धि की देवी

लक्ष्मी समृद्धि की देवी थी, धन, धान्य, पशु प्रदान करने वाली देवी। लक्ष्मी पूजी से भिन्न थी, जो हानि लाभ का हिसाब लगा कर असमर्थो के शोषण का कारण बनती है और राक्षसी स्वभाव की है। लक्ष्मी पूजक समाज मे सभी लोग सुखी होगे। बाद मे लोग लक्ष्मी और पूजी का अन्तर भूल गये। स्वर्ण मुद्राओ को ही लक्ष्मी मान बैठे।

लक्ष्मी का मानव समाज मे सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। पौराणिक कथाओ मे विष्णु को लक्ष्मी का पति बताया गया है। सकेत यह है कि जो लक्ष्मी का स्वामी है, वही भगवान् है, या भगवान् भगवान् इसीलिए है कि वह लक्ष्मी का स्वामी है।

पर ये सब कल्पनाए है, सत्य नही है, वाणी विलास मात्र है कविता है। इस कविता पर रीझ कर ही हिन्दू लोग लक्ष्मी पूजन करते है।

दीप जलाते है

लक्ष्मी पूजन के बाद घर मे दीप जलाये जाते है—एक दीप नही, सामर्थ्य के अनुसार ढेरो दीप। घर के अन्दर, दरवाजे पर, छत की मुडेरो पर, चौराहो पर। रगीन कागज के सुन्दर कडील बना कर उनमे दीप रखे जाते है, जिन्हे देख कर बालक, किशोर, वयस्क सभी प्रसन्न होते है।

दीप जलाना एक आलकारिक, प्रतीकात्मक कृत्य है। इसमे कुछ भी अर्थ निकाले जा सकते है। रात का काला अधेरा दूर करो, जिससे राह चलतो को रास्ते पर बने गड्ढे, ईट पत्थर, साप बिच्छू साफ दिखाई पड जाये और वे पहले ही सभल जाये।

एक अर्थ यह भी हो सकता है कि अनपढो को पढाओ, अज्ञान का अधकार हटा कर ज्ञान का प्रकाश फैलाओ।

गहरा आध्यात्मिक अर्थ यह हो सकता है कि ससार की सचाई पर से असत्य का आवरण हटा दो और आत्मा को पहचानो, परमात्मा को पहचानो।

आतिशबाज़ी

दीपावली पर आनन्द मनाने के लिए लोग फुलझडिया छोडने लगे, अग्निबाण, रगबिरगे अनार, तरह तरह की आतिशबाजिया करने लगे। पटाखे छोडने मे बच्चो को बहुत आनन्द आता है। अधिक से अधिक आवाज़ करने वाले पटाखे (ऐटम बम) छोडे जाने लगे।

भयकर प्रदूषण

जहा बस्ती छोटी हो, लोग कम हो, स्थान खुला हो, वहा तो आतिशबाजी क्षम्य मानी जा सकती है, परन्तु आजकल के बडे शहरो मे, जहा मोटरो और कारखानो के कारण वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण पहले से ही बहुत अधिक है, आतिशबाजी करना हानिकारक है। दिल्ली मे तो दिवाली पर धुए मे दम घुटने लगता है। एक रात मे सैकडो जगह आग लगती है। असावधानी से आतिशबाजी चलाने के कारण कितने ही बच्चो के हाथ मुह जल जाते है। दीप जलाने के अलावा और कोई आतिशबाजी न करना ही भला है।

जूआ और चोरी

लक्ष्मीपूजन का कुछ लोग यह गलत अर्थ लगाते है कि इस दिन चाहे जैसे भी हो, धन हाथ मे आना चाहिए। इसके लिए वे जूआ खेलते है। जूए से धन विरले लोगो को ही मिलता है, अधिक लोग जूए मे हारते ही है। फिर जूए मे मिला धन विनाशकारी होता है। जुआरी का जीतने पर भी चैन नही पडता, वह तब तक जूआ खेलता है, जब तक कगाल नही हो जाता।

इसी तरह चोर लोग दीवाली की रात को इस आशा और उत्साह से चोरी करने निकलते है कि यदि आज माल हाथ लगा, तो सारा साल अच्छा बीतेगा। उनमे से अधिकाश जेल मे पहुचते है।

दीपावली आनन्द और हसी खुशी का पर्व है। यह आनन्द मे ही समाप्त होना चाहिए, अपना ही आनन्द नही, सबका आनन्द, इष्ट मित्र, अडोसी पडोसी, सबका आनन्द।

निर्धनो से मित्रता

और सबसे बडा आनन्द तो इसमे है कि आप अपने आनन्द मे उन लोगो को भी भागीदार बना सके, जो कम भाग्यशाली है, जिनके पास अपनी झोपडी मे दीपक जलाने को तेल नही है और बच्चो को देने के लिए खील बताशे भी नही है। उन्हे भागीदार बना कर देखिये, आपकी कोठी के दीपको की चमक सौ गुनी हो जायेगी। मित्र बन कर जाइये, दानी बनकर नही।

सामाजिक दुर्दशा

दीपावली सन् १८८३ को ऋषि दयानन्द का निर्वाण हुआ था। १२६ वर्ष बाद आज आर्य समाज निर्वाण की ओर बढ रहा है क्या? सत्सगो मे उपस्थिति यथेष्ट नही होती। समाज की सम्पत्तियो पर धूर्त लोग कब्जा कर रहे है। सभाए, शिरोमणि सभा भी, बरसो से मुकदमो मे फसी है। पदलोलुप चुनाव लडते है। चीटे गुड की ओर भाग रहे है। गुरुकुलो की सम्पत्तिया बेईमानी से बेची जा रही है। ये सम्पत्तिया भीख माग कर बनाई गई थी। रइसो ने भीख मागी थी। उन्हे चोर चुग रहे है।

आर्य जनता मे अब भी उत्साह है। सम्मेलनो मे पहले से अधिक भीड जुटती है। दान भी पहले से अधिक आता है। यज्ञशालाओ के लिए धन की कमी नही पडती। विदेशो मे आर्य समाज के प्रति लोगो मे आकर्षण बढ रहा है। उत्साहवर्धक समाचार आते है।

परन्तु नेतृत्व खडित है। पद हर कोई लेना चाहता है, एक बार मिल जाने पर उसे छोडना नही चाहता। प्रभुत्व से जी नही भरता।

ऐसा भी एक दीप जले

क्या हम कोई ऐसा दीप जला पायेगे, जो हमारे मन को आलोकित कर सके? हम यह देख सके कि हमे और लोग भी देख रहे है, सोच सके कि वे क्या सोचेगे, क्या कहेगे!

श्री नाइपाल को नोबेल पुरस्कार

इस वर्ष (सन् २००१) का साहित्य हेतु नोबेल पुरस्कार श्री विद्याधर सूरजप्रसाद नाइपाल को मिला है। श्री नाइपाल त्रिनिदाद गये भारतीय परिवार मे जन्मे। अब वह इग्लैड मे रहते है। पुरस्कार उन्हे उत्कृष्ट अग्रेजी साहित्य लेखन के लिए मिला है। अब से अठासी वर्ष पूर्व श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर को साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था। श्री नाइपाल भारतीय न होते हुए भी भारतीय मूल के है और उनका सारा साहित्य ही अपने मूल स्रोत की खोज है। उनकी रचनाओ मे भारत से गिरमिट (ऐग्रीमैंट) प्रणाली के अधीन विदेशो मे गये भारतीय प्रवासियो की व्यथा और क्षोभ प्रतिबिम्बित हुआ है। समीक्षको का कहना है कि उन्हे यह पुरस्कार अब से बहुत पहले मिल जाना चाहिए था। आर्य जगत् की ओर से श्री नाइपाल को सौ सौ बधाइया!

अफगानिस्तान का युद्ध और हम

अफगानिस्तान मे युद्ध की आग लगभग बीस बरस से जल रही है। इस आग मे जल कर अफगानिस्तान की सम्पत्ति नष्ट हो गई है और मनुष्य राक्षस बन गया है।

अफगानिस्तान परस्पर विरोधो का देश है। वहा ऐसे पहाड है, जो गर्मियो मे भाड की तरह तपते है और सर्दियो मे बर्फ से ढक जाते है।

वहा सूखे मरुस्थल है। पर ससार का बढिया फल और मेवा वहा उत्पन्न होता है—अगूर (द्राक्षा), अनार (दाडिम), आडू, बादाम, पिस्ता, सर्दा, अजीर, और भी न जाने क्या क्या।

लोग गौर वर्ण, ऊचे, कद्दावर, हृष्टपुष्ट होते है, इतने सरल चित्त कि उन्हे आसानी से चाहे जैसा बहकाया जा सकता है। शिक्षा का प्रचार प्रसार यहा कम ही रहा है। स्त्रिया सुन्दर और परिश्रमी होती है। यहा काबुल नदी बहती है, जिसे सस्कृत भाषा मे कुभा कहा जाता था। ऋग्वेद मे सिन्धु, विपाशा, वितस्ता आदि के साथ कुभा नदी का भी उल्लेख है।

इस ऊबड खाबड पहाडी प्रदेश मे रेल लाइन नही बिछाई जा सकी। मोटर की सडके अवश्य बन गई है। ईरानियो की तरह अफगान भी स्वय को आर्य कहते थे। बौद्ध धर्म के प्रभाव मे आ कर ये बौद्ध बने और कई सो वर्षो तक बौद्ध रहे। ईसा की आठवी शताब्दी के बाद ये इस्लाम मे दीक्षित हो गये।

तुर्की, पश्चिमी एशिया या मध्य एशिया से भारत आने वाले आक्रमणकारियो के रास्ते मे अफगानिस्तान पडता है। इसलिए ये अफगान लोग युद्ध के अभ्यस्त हो गये। बाद मे लूट के इरादे से अफगान लोगो ने भी भारत पर कई बार आक्रमण किये। सोमनाथ के मन्दिर के किवाड आज भी गजनी मे कही लगे है।

अग्रेजो ने अफगानिस्तान को अपने अधीन नही किया। एक दो बार उनकी अफगानो मे लडाइया हुई, जिनमे दोनो पक्षो ने एक दूसरे को मजा चखा दिया। अन्त मे अग्रेज इस परिणाम पर पहुचे कि जो लोग पैसे से खरीदे जा सकते हो, उनसे युद्ध करना नासमझी है। उन्होने कबीलो के सरदारो को मामूली सी धनराशिया दे कर अपने बस मे कर लिया, जिसके लिए ये अनपढ गरीब लोग उनके कृतज्ञ रहे।

किसी समय अग्रेज़ो के शासन से छुटकारा पाने के लिए काग्रेस के नेता मौलाना मुहम्मद अली ने अफगानिस्तान के शाह को पत्र भेजा था कि यदि वह भारत पर आक्रमण करे, तो अग्रेजो के विरोध मे भारतवासी उसकी सहायता करेगे। वह पत्र अग्रेजो के हाथ पड गया। अपनी सफाई मे मौलाना मुहम्मद अली ने कहा कि मैने यह पत्र गाधी जी की सहमति से भेजा था।

बादशाह जाहिरशाह के शासन मे अफगानिस्तान मे शिक्षा का प्रसार हुआ और धार्मिक उदारता तथा व्यक्ति की स्वाधीनता बढी। लोगो ने पश्चिमी सस्कृति को अपनाना शुरू कर दिया। स्त्रिया भी पढने लिखने और कार्यालयो मे काम करने लगी।

यह बात कट्टरपथी मुल्ला मौलवियो को पसन्द नही आई। उन्होने शाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जाहिरशाह को देश त्याग कर भाग जाना पडा। उसके बाद कट्टरता बढती ही गई। हर कट्टर धर्मान्ध शासक को, उससे अधिक कट्टर शासक हरा कर अपदस्थ करता रहा। ईरान मे हुई धर्मान्धता की क्रान्ति ने भी इसमे सहायता दी।

पश्चिमी और मध्य एशिया मे खनिज तेल और प्राकृतिक गैसो के विपुल भडार है। इन ईधनो की आज सारे ससार को आवश्यकता है। अमेरिका और यूरोप के देश बल और कौशल से इन भडारो पर अधिकार किये रखना चाहते है। इस क्षेत्र के निवासी शिक्षा और विज्ञान की दृष्टि से पिछडे हुए हे। आधुनिक शस्त्रास्त्रो मे वे पश्चिमी देशो का मुकाबला नही कर सकते।

वर्तमान समय मे इस क्षेत्र के अधिकाश लोग मुसलमान है। अब से सौ बरस पहले तक इन क्षेत्रो के निवासी गरीब और भले थे। जब मोटर और विमान के आविष्कार के बाद मिट्टी के तेल और पैट्रोल की माग बढी तब ये देश बैठे बिठाये धन कुबेर बन गये। ससार का ६० प्रतिशत से अधिक खनिज तेल इस क्षेत्र मे है।

धन आने से बुद्धि भी आ जाती है। देखते देखते ईरान, ईराक, सीरिया, सऊदी अरब, लेबनान, कुवैत, मिस्र, लीबिया आदि सभी देश सशक्त और उन्नत हो गये। वे अपने अधिकारो को समझने लगे। पैट्रोलियम के कुओ पर अग्रेज और अमेरिकी कम्पनियो का कब्जा था। एकएक करके सभी देशो ने इन कम्पनियो का राष्ट्रीयकरण कर लिया और पश्चिमी देशो को अपने यहा से निकाल बाहर किया।

यूरोप के देश और अमेरिका पैट्रोलियम के लिए इन देशो पर आश्रित हो गये। वे मना मनू कर, जैसे भी हो अरब तथा इस क्षेत्र के अन्य देशो को अपने प्रभाव मे रखे रहे। जब रूस महाशक्ति बना, तब उसने इन देशो को पश्चिमी देशो के विरुद्ध भडकाना शुरू किया और शस्त्रास्त्रो की सहायता भी दी।

रूस ज्ञान विज्ञान, सैन्य शक्ति तथा औद्योगिक विकास की दृष्टि से अमेरिका और यूरोपीय देशो की टक्कर का था, परन्तु वह आर्थिक दृष्टि से कमजोर था। उसकी साम्यवादी व्यवस्था बुरी नही थी, परन्तु वह तभी तक सफल रह सकती थी, जब तक शासन कठोरता से किया जाये। जब सरकार लोगो के भरण पोषण का पूरा जिम्मा लेती है, तब सभी नागरिको का कर्तव्य हो जाता है कि वे पूरी मेहनत से काम करे। काम न करे, तो उन्हे दडित किया जाये।

जब तक लोग जी जान से काम करते रहे, रूस उन्नति करता रहा। फिर धीरे धीरे आलस्य की भावना बढी। साम्यवादी व्यवस्था मे निजी सम्पत्ति जमा नही की जा सकती, तो मेहनत क्यो की जाये? वेतन तो मिलना ही है। यूरोपीय देशो की देखादेखी रूस मे उदारता की लहर चली। उदार शासन मे साम्यवादी व्यवस्था ढह गई। सोवियत रूस न केवल दिवालिया हो गया, अपितु छिन्न-भिन्न भी हो गया। अकेला अमेरिका ही महाशक्ति रह गया।

अफ्रीका के कुछ देशो— मोरक्को, लीबिया, सूडान, अल्जीरिया, मिस्र तथा पश्चिमी एशिया के तेल समृद्ध देशो— ईरान, ईराक, सीरिया, सऊदी अरब— मे इस्लामी भाईचारे की लहर उठी। 'इस्लामी भाईचारे' का अर्थ था सारे ससार पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए दुनिया भर के मुसलमानो को सगठित करना और इस आन्दोलन को आक्रामक रूप देना।

उग्रपन्थी इस्लामी आन्दोलन को सन् १९४८ मे नये राज्य इजराइल की स्थापना से बडा बल मिला। इजराइल यहूदियो की प्राचीन भूमि फिलस्तीन मे स्थापित किया गया था। इसके लिए कुछ फिलस्तीनी मुसलमानो की भूमि छिनी थी। उस बात को ले कर समूचे मुस्लिम जगत् को सगठित किया गया। इग्लैड और अमेरिका इजराइल के पक्षपोषक थे, इसलिए तीन लडाइया लड कर भी मुस्लिम देश इजराइल को समाप्त नही कर सके। परन्तु इजराइल और अमेरिका के विरुद्ध उनका क्रोध बढता ही गया।

उग्रवादी मुस्लिम सगठन ससार भर मे चन्दा करके धन सग्रह करने लगे। शान्तिप्रिय मुसलमान भी मजहबी आवेश मे इन्हे चन्दा देने लगे। इन उग्रपन्थी सगठनो ने नरमपथी, उदार इस्लामी सरकारो को शस्त्रबल से हटाने की चेष्टा की। मिस्र, अल्जीरिया, लेबनान, ईरान मे इन्होने युद्ध लडे और कही कही सफलता भी प्राप्त की।

अफगानिस्तान घटनाचक्र की भवर मे फस कर उग्रपन्थी इस्लाम का केन्द्र बन गया। इसका कारण कश्मीर रहा। जब सन् १९४७ मे साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दुस्तान का विभाजन हुआ और भारत तथा पाकिस्तान, दो नये राज्य बनाये गये, तब पाकिस्तान ने दावा किया कि जम्मू-कश्मीर मुस्लिमबहुल प्रदेश है, इसलिए उसे पाकिस्तान मे मिलाया जाये। परन्तु जिस कानून के अनुसार देश का विभाजन हुआ था, उसके अनुसार कश्मीर को पाकिस्तान मे नही मिलाया जाना था।

तब विभाजन के ढाई महीने बाद ही पाकिस्तान ने अपनी सेना (जिन्हे कबाइली नाम दिया गया) भेज कर कश्मीर पर धावा बोल दिया। भारतीय सेना ने पाकिस्तानियो को लड कर पीछे धकेल दिया। जब आधा जम्मू-कश्मीर भारत के हाथ मे आ गया और बाकी आधा भी हाथ मे आ जाने की हालत मे था, तब अदूरदर्शी, अनुभव शून्य प्रधानमत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने गाधी जी के रोकते रोकते भी मामला सयुक्त राष्ट्र सघ मे भेज दिया। सयुक्त राष्ट्र सघ ने तत्काल युद्ध विराम करवा दिया। उस मामले का फैसला आज तक नही हुआ।

पाकिस्तान को अमेरिका और चीन का समर्थन प्राप्त रहा। भारत मे दब्बू सरकारे रही, जिन्होने अपनी सैनिक शक्ति बढाने की ओर यथेष्ट ध्यान नही दिया। फल यह हुआ कि पाकिस्तान कश्मीरी मुसलमानो मे मजहबी उन्माद भडका कर कश्मीर घाटी से ३ लाख हिन्दू पडितो को भगा देने मे सफल हुआ। उसने कश्मीरी युवको को पाक अधिकृत कश्मीर मे ले जा कर शस्त्रास्त्रो का प्रशिक्षण दे कर कश्मीर घाटी मे आतकवादी हमले करवाने शुरू कर दिये।

उधर कश्मीर के साथ लगे अफगानिस्तान मे अलग उथल पुथल चल रही थी। रूस अफगानिस्तान मे अपना प्रभाव बढाना चाहता था, परन्तु अमेरिका इसे सहन नहीं कर सकता था। इसलिए

(शेष पृष्ठ १० पर)

दीपावली

❑ **श्री रामनिवास 'गुणग्राहक'**

माननीय आर्यवर वेद ज्योति उर भर,
ताकी किरण प्रखर का प्रसार हो दीपावली।
आपके सुपरिवार मे परस्पर प्यार,
सहयोग सुविचार की बहार हो दीपावली॥
दुरितो के दुत्कार भद्रभाव उर धार,
अन्धकार पर प्रबल प्रहार हो दीपावली।

आर्यो के व्यवहार प्राणीमात्र उपकार हेतु,
ऋषि दयानन्द की पुकार हो दीपावली॥
कालिमा कलुष कुविचार के किले निमित्त,
वेद ज्ञान ज्योति का कुठार हो दीपावली।
मानवीय गुणो के सवारने निखारने को,
विश्व को हमारा उपहार हो दीपावली॥
ज्ञान की सुझकार सत्य के सुसचार हेतु,
पावन सी प्रीति का प्रचार हो दीपावली।
शीतला का सचार न्याय नीति का निखार,
शान्ति का सुतार मीठी मनुहार हो दीपावली॥

आर्य समाज, श्रीगगानगर, राजस्थान

दयानन्द, राष्ट्रीय एकता और हिन्दी

❑ श्री विष्णु प्रभाकर

जागृति के प्रभात मे भारत ने अपने सुनहरे अतीत को देखा और देखा कुचले हुए वर्तमान को। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती और रामकृष्ण परमहस आदि दिव्य पुरुष इस जागृति के जन्मदाता बनकर आए। स्वामी दयानन्द इन्ही तत्ववेत्ताओ मे से थे, जिन्होने भारत की बौद्धिक और सामाजिक एकता के लिए अमर प्रयत्न किए। उनके सारे प्रयत्नो का मूलभूत आधार वेद थे। एकता की स्फूर्ति ही मानो उन्होने वेदो से पाई थी। उनके जीवन की सारी सफलताओ और असफलताओ का कारण भी वेद ही रहे। वेद मे एक मत्र आता है—**इला सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव । बर्हि सीदत्वस्रिध ।**

मातृभाषा, मातृ-सभ्यता और मातृभूमि यही तीन कल्याण के स्रोत है। इनको अपने हृदय मन्दिर मे बिना भूले हुए धारण करो। बस, इस आदेश की पूर्ति मे वह जीवन के अत तक लगे रहे।

इसी महात्मा की अन्तरात्मा मे मानो स्वय विश्वात्मा ने शिवरात्रि के दिन यह अमर प्रेरणा की थी। यह बोध की रात्रि सचमुच भारत के पुनर्जन्म की रात्रि है।

केशव बाबू की प्रेरणा

अपने जीवन के लगभग ३५ वर्ष स्वामी दयानन्द ने ज्ञान की खोज मे इधर-उधर भटककर बिता दिए थे। सन् १८६५ मे जब स्वामी विरजानन्द जी से उन्होने विदा ली, तब वे लगभग ४१ वर्ष के थे। उसके सात वर्ष बाद सन् १८७२ मे मानो राष्ट्र-माता की प्रेरणा से ही दयानन्द ने बगभूमि मे प्रवेश किया। यही समय उनकी अनेक बोध तिथियो मे से एक है। हिन्दी-साहित्य के इतिहास मे यह एक अमर घटना है। महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर और भक्तिभाजन केशवचन्द्र सेन की मित्रतापूर्ण प्रेरणा का फल था कि दयानन्द ने हिन्दी को अपनाया। उस समय उनकी आयु ४८ वर्ष की थी। वे सस्कृत के धुरधर विद्वान् थे। वे जन्म से गुजराती ब्राह्मण थे। एक बगाली की आग्रहपूर्ण प्रेरणा से उन्होने हिन्दी सीखी। केशव बाबू ने स्वय हिन्दी क्यो नही सीखी? इस प्रश्न का उत्तर इतिहास मे नही मिलता। यह कल्पना का विषय है, परन्तु निश्चय ही भक्तिभाजन केशव बाबू ने स्वामी दयानन्द मे एक ज्योति देखी थी। वह मानो शकित हो उठे थे, कही यह ज्योति उनके अपने काम के समान कुछ ही दायरे को रोशन करके बुझ न जाए। तभी उन्होने दयानन्द को हिन्दी जानने का परामर्श दिया। कर्ता से अधिक प्रेरक पूज्य है, क्योकि वह कर्ता की शक्ति है।

स्वदेश की भाषा

मथुरा से जाने के बाद और बगाल मे आने से पहले जो सात साल दयानन्द ने इधर-उधर प्रचार मे बिताए, उनमे उन्होने समझ लिया था कि यद्यपि सस्कृत देववाणी है, परन्तु उसमे सर्वसाधारण की भाषा बनने की योग्यता नही रह गई है। अग्रेजी तब नई थी और फिर विदेशी। भाषा सस्कृति और सभ्यता का कोश है। किसी भी सभ्यता के अपने गुण होते है और भाषा उन गुणो की वाहक है। भाषा के बदल जाने पर सभ्यता और सस्कृति मे उथल-पुथल मच जाने की पूरी सभावना होती है। तब विदेशी भाषा सीखने का मतलब अपनी सस्कृति का त्याग होता है। जिस भाषा की रूपरेखा, भाव-व्यजना, बिल्कुल ही हमारी सस्कृति से मेल नही खाती, वह क्योकर आर्य-सभ्यता के पुनरुद्धारक को स्वीकार हो सकती थी?

यहा यह कह देना कठिन होगा कि सस्कृति और सभ्यता के फेर मे पडकर किसी दूसरी भाषा से घृणा करना ठीक नही है। दूसरी भाषाओ का अभ्यास करने से हमारा ज्ञान बढता है, भावना विशाल होती है, परन्तु यह सब तभी होता है, जब हम अपनी मातृभाषा पर पूर्ण अधिकार पा चुके होते है। स्वामी दयानन्द को भी दूसरी भाषाओ से द्वेष नही था। 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास मे उन्होने लिखा है, 'जब पाच पाच वर्ष के लडका लडकी हो, तब देवनागरी अक्षरो का अभ्यास करावे, अन्य देशीय भाषाओ के अक्षरो का भी।'

एकता का सूत्र

तब स्पष्ट है, हिन्दी को अपनाते समय दयानन्द का यही विचार रहा होगा कि लाखो-करोडो आदमियो तक अपनी आवाज पहुचाने के लिए जनसाधारण की भाषा का प्रयोग ठीक है। फिर वह समूचे राष्ट्र को एक सूत्र मे बाधना चाहते थे और इसी भावना को लेकर मानसिक उन्नति का जो कार्य उन्होने उठाया, वह लोक-प्रचलित भाषा के माध्यम द्वारा ही हो सकता था। वह सारे देश को एक राष्ट्र के रूप मे देखना चाहते थे। एक भाषा, एक धर्म और एक सस्कृति का प्रचार इसी मत की पुष्टि करता है।

वे व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वार्थ से सर्वथा मुक्त थे, परन्तु उनकी अन्तरराष्ट्रीयता वेद का सहारा लेकर खडी होती थी और इसी कारण वह कभी-कभी इतने सकुचित जान पडते है कि अचरज होने लगता है। तब वह उग्र राष्ट्रवादी-से मालूम पडते है। वेद को अलग करते ही दयानन्द शून्य है। पर कुछ भी हो, उनकी भावना मे नीति अस्थिर नही थी। वह स्थिर और सत्य थी।

यह भी जानना होगा, स्वामी जी हिन्दी को लेकर हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा बनाने नही चले थे, परन्तु राष्ट्रभाषा की जरूरत अनुभव करते करते हिन्दी तक आ पहुचे थे। उन्हे तो केवल यही ध्यान था कि किसी भी जाति को सफलता के साथ शिक्षा देने का उपाय यही है कि उसे अपनी जबान मे ही शिक्षा दी जाए।

स्वामी दयानन्द द्वारा हिन्दी के अपनाए जाने का एक और भी कारण हो सकता है। हिन्दी की लिपि देवनागरी थी। यही सस्कृत भाषा की भी लिपि है। वे सस्कृत के अनन्य प्रेमी थे। इसी से हिन्दी के प्रति भी उन्हे प्रेम रहा होगा। उन्होने स्वय लिखा है 'दयानन्द के नेत्र वह दिन देखना चाहते है, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरो का प्रचार होगा। मैने आर्यावर्त भर मे भाषा का ऐक्य सपादन करने के लिए ही अपने सकल ग्रथ आर्यभाषा मे लिखे और प्रकाशित किए है।'

सत्यार्थप्रकाश

जिस दिन से उन्होने हिन्दी के महत्व को समझा, उसी दिन से वह उसका प्रयोग करने लगे। ब्रह्मानन्द केशव बाबू की उस ऐतिहासिक प्रेरणा के लगभग दो वर्ष बाद स्वामी दयानन्द का अद्भुत ग्रथ 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशित हुआ। तब वह पचास वर्ष के थे। उस ग्रथ की भाषा पर सस्कृत और गुजराती का प्रभाव स्पष्ट है, तो भी अचरज होता है, इतने थोडे अरसे मे कैसे वह हिन्दी भाषा पर इतना अधिकार प्राप्त कर सके थे। ऐसा मालूम होता है, 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम सस्करण की भाषा बहुत शुद्ध नही बन पाइ थी। बाद के सस्करण की भूमिका मे उन्होने स्वीकार किया है कि सस्कृत बोलने तथा जन्म की भाषा गुजराती होने के कारण पहले मुझ इस भाषा का ठीक-ठीक परिज्ञान न था, इससे भाषा अशुद्ध बन गई थी।

'सत्यार्थ प्रकाश' के अतिरिक्त 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' आदि अनेक पुस्तके उन्होने हिन्दी मे ही लिखी है। हिन्दी मे वेदो की टीका एक अपूर्व देन है। सम्भवत वेदो को विद्वानो की पचायत से निकाल कर सर्वसाधारण की चीज बनाने का श्रेय स्वामी दयानन्द को ही है। किसी भी मत की धर्म-पुस्तके जिस भाषा मे होती है, वह भाषा अनन्त गौरवमयी है। गुजराती होकर भी स्वामी दयानन्द ने यह अनन्त गौरव हिन्दी को दिया। यही तक नही, उन्होने अपने स्थापित किए हुए आर्यसमाज का यह नियम बना दिया, 'प्रत्येक आर्य तथा आर्य सभासद को आर्यभाषा और सस्कृत जाननी चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक आर्यसमाजी और आर्यसमाज से किसी भी रूप मे सम्बन्ध रखने वाले को आर्यभाषा (हिन्दी) सीखना लाजिमी हो गया। व्यापक रूप मे हिन्दी का प्रचार करने वालो मे स्वामी दयानन्द का स्थान सबसे पहला है, तो अत्युक्ति न होगी।

आर्यभाषा

पर यह आर्यभाषा क्यो? स्वामी दयानन्द का विचार था कि हम विदेश के सहारे न जीए। वैदिक युग मे हम अपने को 'आर्य' कहते थे। हमारे देश का नाम 'आर्यावर्त' था, तब भाषा भी 'आर्यभाषा' क्या न हो? वे हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान को विदेशियो के दिए नाम कहते थे। अपने

(शेष पृष्ठ ९ पर)

वैदिक कामना

❑ श्री देवनारायण भारद्वाज

हे मातृभूमि, हे पितृ धाम,
प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम!
विद्वान जगे, शासक जागे, जो ब्रह्मतेज का प्रण पागे,
जिनके बल, आयुध के द्वारा अरि-प्रतिगामी डर कर भागे।
अनुपम स्वदेश हो ख्यात नाम! प्यारे स्वराष्ट्र, तुमको प्रणाम!
अन्नपूर्णा सुभग नारिया, सदा सुनाये प्रखर लोरिया।
शिशु सभ्य युवा यजमान बने, रोज ओज की पकड डोरिया,

जो बढे विजय की ध्वजा थाम। प्यारे स्वराष्ट्र तुमको प्रणाम!
गौ-वाणी भू की रक्षा हो, जन पोषण और सुरक्षा हो,
गतिमान अश्व, बलवान् वृषभ, अभ्युदय श्रेय की शिक्षा हो।
समृद्धि सिद्धि हो नगर-ग्राम! प्यारे स्वराष्ट्र, तुमको प्रणाम!
काम धेनु हो, कल्पवृक्ष हो, सैनिकगण के सुदृढ वक्ष हो,
शिल्पकार गुरु, श्रमिक, श्रेष्ठी धर्मनिष्ठ कल्याण दक्ष हो।
हो पवन प्राण सुरभित ललाम! प्यारे स्वराष्ट्र, तुमको प्रणाम!
मृदु मेघ गगन मे गहराये, जो इच्छित जल को बरसाये।
खेत भरे, उद्यान हरे हो, शस्य श्यामला भूमि बनाये।
कल यन्त्र-यान दे प्रचुर दाम! प्यारे स्वराष्ट्र, तुमको प्रणाम!
फल, फूल, अन्न, ओषधि उपजे, प्रासाद कुटी सुखसाज सजे।
हो ललित कला विज्ञान भला, उत्तम चरित्र के राग बजे।
सब पाये नर विज्ञान-काम! प्यारे स्वराष्ट्र, तुमको प्रणाम!
प्रभु योग क्षेम का वर्तन हो, सर्वत्र हर्ष आकर्षण हो।
निष्पक्ष एकता समता का सगठन प्रेम सम्वर्धन हो।
हे राष्ट्र रहो अभिराम-साम! प्यारे स्वराष्ट्र, तुमको प्रणाम!

ऐम आई जी भूखण्ड स० ४५, अलीगढ

आर्य समाज की बढ़ती पीड़ा

❑ प्रि० ओम्प्रकाश

डा० महेश विद्यालकार ने, जो दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेमर भी है, अपनी गहन मानसिक व्यथा 'आर्य ममाज की पीडा' पुस्तक मे प्रस्तुत की थी। उन्हे तथा अनेक चिन्तनशील आर्य महानुभावो को आशा थी कि उमे पढ-सुन कर आर्य ममाज की वर्तमान पीडा यदि शीघ्र समाप्त नही होगी, तो जल्दी घटेगी अवश्य। परन्तु वह निरन्तर बढ ही रही है। इन्ही दिनो घटी कुछ घटनाए इसकी पुष्टि करती हैं।

ममार भर के आर्यो की शिरोमणि 'मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली' के कोर्ट के झगडे स्वर्गीय श्री सोमनाथ जी मरवाह के निधन से कुछ दिन पूर्व ही ममाप्त हो गए थे। पर मभा के माप्ताहिक पत्र 'मार्वदेशिक' के ७ अक्टूबर के अक के पृष्ठ १२ पर छपी खबर 'स्वामी ओमानन्द मरस्वती सार्वदेशिक सभा की मदस्यता से निष्कामित' ने पीडा को और बढा दिया। वे तीन वर्ष से इस सभा के प्रधान थे। गुटबन्दी के कारण, जीवन भर एक कर्मठ कार्यकर्ता व क्रियाशील नेता के रूप मे आर्य ममाज की मेवा करने वाले, ९३-९४ वर्ष के मन्यासी के सम्मुख यह स्थिति क्यो आई? मोच कर बडा आश्चर्य होता है। इम खबर से पहले ३० सितम्बर के 'सार्वदेशिक' के अनुसार सार्वदेशिक सभा का कार्यालय २ सप्ताह बन्द रहा।

अब एक माप्ताहिक मे छपा 'केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्' का शखनाद सुनिए। भारत भर के आर्य युवको के क्रियाशील सगठन होने का दम भरने वाले, भारत के 'एक राज्य दिल्ली' की 'आर्य केन्द्रीय मभा के वार्षिक चुनाव मे हुई धाधली के बारे मे लिखता है 'आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के चुनाव मे आर्य जनता के साथ घिनौना मजाक बिजली बन्द, माइक बन्द, गेट पर ताला बन्द वोटर लिस्ट मे फर्जी व स्वर्गवासी व्यक्ति सभा भग व चुनाव स्थगित डा० शिवकुमार शास्त्री के सामाजिक बहिष्कार का आर्य जनता का फैसला।'

और, साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' (७ अक्टूबर) मे छपा 'आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के लिए तदर्थ समिति की घोषणा वैधानिक विसगतियो के अतिरिक्त कुछ प्रतिनिधियो ने अशोभनीय व्यवहार भी किया।' तदर्थ समिति के मयोजक डा० शिवकुमार शास्त्री ही बनाए गए। उल्लेखनीय है कि सभा के प्रधान पद पर मुकाबला वर्तमान प्रधान श्री शिवकुमार शास्त्री व युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य के बीच था।

हा! यही काम रह गया क्या अपने को आर्य समाज के 'नि स्वार्थी' नेता कहने वालो का? सेवा मे बाज़ी मारने की बजाए, अब 'कब्ज़ा' करने की मनोवृत्ति क्यो पनप चुकी है? पहले 'समाज' बढे, अब 'मै बढू' की क्यो हो गई है? ससार के प्रत्येक व्यक्ति को 'श्रेष्ठ पुरुष' बनाने के लक्ष्य के राग अलापने वालो का अपना श्रेष्ठत्व क्या मुकदमेबाजी, धीगामस्ती, आपाधापी व अनुशासनहीनता ही रह गया! **'सगच्छध्व सवदध्व'** का नित्य पाठ करने वाले आपस मे क्यो नही मिल बैठ सकते? पद की लिप्सा मे पागल, पारस्परिक समझौते मे, एक व्यक्ति प्रधान और दूसरा महामत्री बन कर 'आर्य समाज मा' की सेवा का व्रत क्यो नही ले सकता? १५-२० साल तक पद से चिपट कर ही क्या आर्य समाज की सेवा हो सकती है? महर्षि का महान् ऋण कुछ अश मे इमी जन्म मे, विना पद लिए उतारना क्या सम्भव नही? ऐसे अनेक प्रश्न है, जिनका उत्तर नही मिल रहा और आर्य समाज की पीडा निरन्तर बढ रही है।

'नेतागीरी' के शौकीन महारथियो से विनम्र प्रार्थना करना चाहता हू कि यदि सच्चे मन से वे रोज सन्ध्या करते है और **'योऽस्मान् द्वेष्टि य वय द्विष्मस्त वो जम्भे दध्म'** का छह बार पाठ करते है, तो अपने 'अह' को जरा पीछे रखकर, आर्य ममाज के हित मे, इस मन्त्र की भावना पर अमल करे, चौराहे मे आर्य समाज का मजाक न उडवाए, उसे तमाशा न बनाए।

आदर्श कुटीर, ३/४५ए, पजाबी बाग,
नई दिल्ली-२६

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा भग

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के चुनाव को ले कर दो पक्षो मे कलह हो गया है। दोनो पक्षो ने कार्यालय पर अपने ताले लगा दिये है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के न्यायालय द्वारा नियुक्त प्रशामक श्री रामफल बसल ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा को भग करके एक तदर्थ ममिति बना दी है।

गुरुकुल कांगड़ी भूमि विक्रय के सम्बन्ध में जानकारी

मन् १९६२ से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार डीम्ड यूनिवर्सिटी के रूप मे कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से गुरुकुल को मान्यता दिलवाने हेतु आर्य प्रतिनिधि मभा पजाब ने गुरुकुल की कुछ भूमि विश्वविद्यालय के नाम राजस्व रिकार्ड मे दर्ज कराई थी। शेष सभी भू-सम्पत्तिया गुरुकुल कागडी हरिद्वार की स्थापना के वर्ष सन् १९०२ से ही आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के ही नाम चली आ रही थी।

पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रिशाखन आदेश दिनाक १४ ९ १९७५ के बाद गुरुकुल कागडी हरिद्वार, गुरुकुल कागडी फार्मेसी हरिद्वार, कन्या गुरुकुल देहरादून तथा हरिद्वार स्थित कुछ अन्य सस्थाओ (जिनकी प्रबन्ध व्यवस्था का मचालन पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा करती थी), की स्वामिनी मस्था के रूप मे तीनो आर्य प्रतिनिधि सभाओ— पजाब, हरियाणा तथा दिल्ली के प्रतिनिधियो द्वारा गठित आर्य विद्या सभा गुरुकुल कागडी हरिद्वार को बना दिया गया। किन्तु उपरोक्त सस्थाओ की चल-अचल सम्पत्तिया आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम चलती रही। इसका लाभ उठाकर पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने त्रिशाखन आदेश का उल्लघन करते हुए गुरुकुल कागडी हरिद्वार की एक के बाद एक कई बहुमूल्य सम्पत्तियो को कौडियो के भाव बेच डाला।

पजाब सभा द्वारा गुरुकुल की बेची गई कुछ महत्वपूर्ण मम्पत्तियो का ब्यौरा निम्नलिखित है

क्र स०	सम्पत्ति का विवरण	सम्पत्ति का विक्रय मूल्य
१	शकर आश्रम की भूमि	४२ लाख रुपये
२	फार्मेसी के सामने वाली भूमि	१४ लाख रुपये
३	फार्मेसी के पीछे वाली भूमि	१६ लाख रुपये
४	हरिराम इण्टर कालेज के पास	१४ लाख रुपये
५	शिवा होटल वाली भूमि	५ लाख रुपये
६	गेटरी रगशाला वाली भूमि	४ लाख रुपये
७	हरिराम इण्टर कालेज के पीछे वाली भूमि	१४ लाख रुपये
८	हरिराम इण्टर कालेज के मैदान के पाम भूमि	१६ लाख रुपये
९	मेरठ स्थित दुकान	२ लाख ८० हजार रुपये
१०	बडे परिवार के पीछे की कृषि भूमि	३ लाख २० हजार रुपये
		कुल योग = एक करोड, इकत्तीस लाख रुपये

गुरुकुल कागडी की वह बहुचर्चित १४४ बीघे जमीन, जिसके विक्रय पर ममाचार पत्रो तथा अन्य सचार माध्यमो द्वारा काफी हो-हल्ला किया जा रहा है, इस प्रकरण से सम्बन्धित निम्न बिन्दुओ का अवलोकन करने पर स्पष्ट हो जायेगा कि उक्त भूमि का विक्रय पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने ही किया था। आजकल कुछ लोग आर्य विद्या मभा गुरुकुल कागडी को इसका जिम्मेदार ठहराते है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने १९ मार्च १९९१ मे प्रस्ताव मख्या १६ के अनुसार उपरोक्त चर्चित भूमि को बेचने का निश्चय किया। इसी प्रस्ताव के आधार पर श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट तत्कालीन महामत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने गुरुकुल कागडी हरिद्वार की यह १४४ बीघे जमीन, जो खसरा न० ५५३, ५५४, ५५५ तथा ५५६ मे स्थित है, २२ १० ९१ को २४२६५ रुपये बीघे की दर से कुल ३५ लाख रुपये मे बेचने का अनुबन्ध किया तथा क्रेता से साढे तीन लाख रुपयो की राशि के तीन ड्राफ्ट तथा एक चैक प्राप्त किया।

उपरोक्त खसरा न० ५५३, ५५४, ५५५ तथा ५५६ का जिसका क्षेत्रफल लगभग १९८ बीघे था, मम्पूर्ण कब्जा २२ १० ९१ को ही अनुबन्धकर्ताओ को श्री अश्विनीकुमार शर्मा ने दे दिया था।

विश्वविद्यालय तथा आर्य विद्या सभा के द्वारा अनुरोध करने पर भी पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने १४४ बीघे भूमि के विक्रय के उपरोक्त अनुबन्ध को रद्द नही किया और न ही श्री अश्विनीकुमार शर्मा द्वारा अनुचित रूप से ५४ बीघे अधिक भूमि पर दिये गये कब्जे को वापस लिया।

पजाब सभा के वर्तमान तथा पूर्व अधिकारी एक दूसरे पर उक्त भूमि के विक्रय के सम्बन्ध मे आरोप-प्रत्यारोप लगा रहे है। सन् १९९१ मे इस भूमि को बेचने का अनुबन्ध आरम्भ मे दो वर्ष का था, परन्तु विश्वविद्यालय द्वारा न्यायालय मे डाली गई याचिका के कारण इसके बेचने मे रोक लग गई थी। १९९३ मे पजाब सभा के तत्कालीन महामत्री श्री

(शेष पृष्ठ ७ पर)

गुरुकुल कांगड़ी की भूमि का विक्रय

❑ जयपाल विद्यालकार

गुरुकुल की भूमि के विक्रय के सम्बन्ध मे प्रकाशित पत्रो के माध्यम से जो जानकारी मिली, उससे गुरुकुल के स्नातको मे बहुत क्षोभ है।

गुरुकुल कागडी के पास जो कुल सम्पत्ति है, वह आरम्भिक काल मे तो दान के रूप मे प्राप्त हुई और बाद मे समय समय पर क्रय की गई। सम्पत्ति चाहे किसी प्रकार से अर्जित हुई हो, उसका स्वामित्व गुरुकुल का है। विभिन्न सभाए और गुरुकुल के अधिकारी केवल उसके मैनेजर है, मालिक नही। आर्य जनता ने जब भी गुरुकुल को कुछ दिया, वह स्वामी श्रद्धानन्द और उनके गुरुकुल के नाम के कारण दिया। गुरुकुल के सविधान के अनुसार व्यवस्था यह है कि पजाब, हरियाणा और दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाए सम्मिलित रूप से गुरुकुल की स्वामिनी सभाए है। परन्तु गुरुकुल की जो व्यवस्था रही, उसके कारण गुरुकुल की अधिकाश सम्पत्ति का पजीकरण आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम पर है। गुरुकुल की प्रबन्ध समिति शिष्टपरिषद् (Senate) होती है। इसमे अधिक सख्या तीनो सभाओ के प्रतिनिधियो की ही होती है। शिष्टपरिषद् आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की पूर्व स्वीकृति से गुरुकुल की किसी जमीन को बेच सकती है। यदि जमीन का सम्बन्ध गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से है, तो शिक्षा मत्रालय या यू० जी० सी० की पूर्व स्वीकृति अपेक्षित है। परन्तु यदि बेची जाने वाली जमीन का सम्बन्ध 'गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय' से न होकर केवल 'गुरुकुल कागडी' से है, तो बीच मे आर्य विद्या सभा आ जाती है। इसके अतिरिक्त यू० पी० एज्यूकेशन एक्ट की धारा ५ के तहत गुरुकुल की किसी भी जमीन को बेचने से पहले सरकार (अब उत्तर प्रदेश की जगह उत्तराचल सरकार) की स्वीकृति भी आवश्यक है। तात्पर्य यह कि कार्य व्यवस्था ऐसी है कि गुरुकुल की किसी जमीन को नियमानुसार बेच पाना सहज नही है। परन्तु व्यवस्था मे अस्पष्टता भी इतनी है कि किसी भी सौदे मे कानूनी अडचन उपस्थित करना सहज है। गुरुकुल कागडी की सम्पत्ति के सम्बन्ध मे इस उलझी हुई स्थिति के कारण पिछली कई दशाब्दियो से गुरुकुल की जमीने बिकती रही है और आन्तरिक कलह तथा न्यायालय मे विवाद होते रहे है। इस प्रकार के कलह और विवाद गुरुकुल की जमीनो को बचाने के लिए कम और हिस्सा बाट के निमित्त अधिक हुए है। इस समय गुरुकुल जहा है, वहा की जमीनो का बाजार भाव तो बहुत ऊचा है। उसके लिये तो मारामारी स्वाभाविक ही है। गगा पार की पुरानी कुलभूमि पर भी इन भू-माफिया रूपी अधिकारियो की दृष्टि रही है। अब तो कन्या गुरुकुल देहरादून की जमीनो को बेचने के भी आसार नजर आने लगे है।

इस समय १९२ बीघा जमीन के बेचने का विवाद सामने आया है। १९९२ मे जो भूमि बेची गई थी और जिसका कब्जा दे दिया गया था, वह केवल २० बीघा ही थी। इस जमीन को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने बेचा था। तत्कालीन कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार ने शेष जमीन पर कोर्ट से स्टे ले कर उस जमीन का हस्तातरित होने से बचाया था। कालान्तर मे जो अधिकारी बने, उन्होने सम्भवत जानबूझ कर इस सम्बन्ध मे लापरवाही की। दिल्ली और हरियाणा की आर्य प्रतिनिधि सभाओ ने मिलकर एक आर्यविद्या सभा का गठन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सदस्यो ने इसे असवैधानिक कहकर इसका बहिष्कार किया। पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जमीने बेचती थी तथा अन्य दो सभाए इसके विरोध मे न्यायालय मे जाकर 'गुरुकुल की जमीन को बिकने नही देगे' का उद्घोष करती थी। अब बाजी दिल्ली और हरियाणा की सभाओ के हाथ मे है। जमीन का सौदा इन सभाओ के अधिकारी करते है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपने अधिकार की दुहाई देती है, क्योकि गुरुकुल की प्राय सभी जमीनो की रजिस्ट्री पजाब सभा के नाम पर ही है।

२७ मई २००१ को गुरुकुल कागडी के सीनेट हाल मे विद्यासभा की बैठक हुई। विषय था नये चुनाव, जो मेरठ मे बनी विद्यासभा के कार्यकाल की समाप्ति पर कुछ समय से हो नही रहे थे या कराये नही जा रहे थे। पजाब के प्रतिनिधियो ने इसका बहिष्कार किया, क्योकि उनकी दृष्टि मे तो मेरठ मे बनी विद्यासभा ही अवैध थी। खैर, नये चुनाव हुए, पदो के बटवारे को लेकर कुछ सघर्ष हुआ और दिल्ली के सदस्यो ने विरोध मे बहिर्गमन किया। नव निर्वाचित प्रधान श्री इन्द्रवेश ने घोषणा की कि आज तक जो हुआ सो हुआ भविष्य मे गुरुकुल की एक इच जमीन भी न बेची जायेगी और न किसी को बेचने दी जायेगी। नव सचिव तेजपाल मलिक, राम मेहर एडवोकेट आदि ने इस घोषणा का अनुमोदन किया, इसे सराहा और कहा कि स्वामी जी आप कभी गुरुकुल की जमीन का सौदा होने लगे तो विक्रय पत्र पर हस्ताक्षर न करके अपने त्यागपत्र पर करना। सभी महानुभावो ने तालियो से इसका अनुमोदन किया। इस घोषणा, अनुमोदन और करतल ध्वनि से सहमति प्रकट करने वालो ने, जिनमे गुरुकुल के विज़िटर से लेकर सहायक मुख्याधिष्ठाता तक सभी पदाधिकारी सम्मिलित है ४ या ५ जून को अर्थात् भीष्म प्रतिज्ञा के आठ-नौ दिन बाद ही विवेच्य जमीन का सौदा कर डाला। जब बाड ही खेत को खाने लगे तो खेत को भला कौन बचा सकता है?

सुनते है गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल जी ने इस विवाद के कारण त्याग पत्र दे दिया है। इस एक त्यागपत्र से क्या होने वाला है? प्रश्न यह है कि इन परिस्थितियो मे गुरुकुल की रक्षा कौन करे? गुरुकुल आर्य जनता की थाती है। उसके सरक्षण का दायित्व भी आर्य जनता का ही है। आर्यजनो को अपनी अपनी समाज के माध्यम से यह माग करनी चाहिए कि गुरुकुल कागडी की सम्पत्ति के सौदो की, विशेष रूप से इस ताजे सौदे की एक निष्पक्ष जाच कराई जाए। आरोपियो तथा उनके सहयोगियो को इस जाच आयोग से दूर रखा जाए।

२१०, वैशाली, पीतमपुरा, दिल्ली-८८

सब दूध के धुले हैं

❑ वैद्य विद्यारत्न

गुरुकुल की स्वामिनी कही जाने वाली तीनो सभाए, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा और आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली यह जताना चाह रही है कि वे गुरुकुल की भूमि को बेचना नही चाहती, पर उन्होने इसलिए बेची है कि यदि वे न बेचती, तो दूसरी सभा बेच लेती। चोर का तर्क है कि यदि मै अमुक सामान को न चुराता, तो दूसरा व्यक्ति अवश्य चुरा लेता।

तर्क पक्का और अकाट्य है, पर यह तो अनार्यो के मुख से भी शोभा नही देता।

प्रतिनिधि सभाओ मे झगडे है। सार्वदेशिक सभा मे पद के लिए जीवन-मरण की लडाई है। श्रेष्ठ (आर्य) लोगो के इस समाज को हो क्या गया है?

४११, जागृति ऐन्क्लेव, दिल्ली-९२

(पृष्ठ ६ का शेष)

गुरुकुल कांगड़ी भूमि ....

अश्विनीकुमार शर्मा ने अनुबन्धकर्ताओ के पक्ष मे दूसरा अनिश्चितकालीन अनुबन्ध किया जिससे अनुकूल अवसर आने पर इसकी रजिस्ट्री करा दी जाय।

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कागडी ने अपनी २० ३ १९९७ की बैठक मे उपरोक्त भूमि का विक्रय कर कन्या गुरुकुल देहरादून के विकास मे उक्त राशि के उपयोग करने के प्रस्ताव का समर्थन किया।

आर्य विद्या सभा की बैठक ९ ५ १९९८ के प्रस्ताव सख्या ३ के अनुसार १४४ बीघे जमीन के विक्रय हेतु हरिद्वार निवासी श्री राकेश गोयल के साथ बातचीत करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ था। श्री वेदव्रत शर्मा उपमत्री, श्री प्रकाशवीर विद्यालकार मत्री विद्या सभा तथा डा० महेश विद्यालकार सदस्य विद्यासभा ने बैठक मे बताया कि क्रेता श्री राकेश गोयल पजाब सभा को दिये जाने वाले ३५ लाख के अलावा विद्यासभा को भी २५ लाख रुपये देने के लिए तैयार है। अब चूकि पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा इस अनुबन्ध को रद्द नही कर रही है और किसी भी समय विक्रय अनुबन्ध मे घोषित ३५ लाख रुपये मे बेच सकती है अत विद्यासभा को क्रेता से जितनी भी अधिक राशि मिल सके, ले लेनी चाहिए। यह तय हुआ कि यह भूमि विद्यासभा गुरुकुल कागडी के नाम चढनी चाहिए। इसके बाद इस केस मे विद्या सभा को पार्टी बनाया गया तथा माननीय न्यायालय ने विद्या सभा के पक्ष को सुनकर उक्त भूमि को आर्य विद्यासभा के नाम राजस्व रिकार्ड मे दर्ज करने का आदेश दिया।

आर्य विद्या सभा के इस अनुरोध को, कि पजाब सभा १९९१ मे किये गए अनुबन्ध को रद्द करे, पजाब सभा ने नही माना और न ही पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य विद्यासभा गुरुकुल कागडी हरिद्वार के अस्तित्व को स्वीकार किया। ६ २ २००१ को आर्य विद्यासभा की उच्च स्तरीय समिति की बैठक हुई। इस बैठक मे उक्त जमीन के विक्रय प्रस्ताव ९ ५ ९८ के निर्णय को लागू करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

आर्य विद्यासभा की उच्च स्तरीय समिति की १५ ५ २००१ को हुई बैठक मे सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि उपरोक्त भूमि की सुरक्षा एव देखभाल करना असम्भव-सा हो गया है अत इसे कम से कम ७० लाख रुपये मे क्रेता श्री राकेश गोयल तथा उसके अन्य साथी एव रिश्तेदारो को बेच दिया जाय।

आर्य विद्या सभा ने इस जमीन को बेच दिया और उससे प्राप्त राशि ७० लाख रुपये को हरिद्वार स्थित बैक मे स्थिर निधि मे जमा करा दिया।

एक वैदिक प्रचारक के सस्मरण

हिन्द महासागर का मोती : मारिशस

❑ डा० भवानीलाल भारतीय

(गताक से आगे)

भारत के हिन्दी साहित्य जगत् के सुपरिचित श्री अभिमन्यु अनत मारिशस के प्रतिनिधि लेखक है, जिन्होने उपन्यास, कहानी, कविता, निबन्ध, यात्रा विवरण, सस्मरण आदि लेखन की विविध विधाओ को अपनी कृतियो केद्वारा समृद्ध किया है। वे अपने देश मे जितने जाने जाते है उससे अधिक वे भारत के पाठको के परिचित है। १५ मई को मै उनसे उनके पोर्ट लुइस स्थित उस कार्यालय मे मिला, जहा वे अपने नवसर्जित पद का कार्यभार सभाल चुके थे। लेखन और साहित्य से सम्बद्ध विविध विषयो पर चर्चा के पश्चात् मैने अनुभव किया कि अपने साहित्यिक अवदान मे उन्होंने स्वदेश को वृहत्तर हिन्दी साहित्य ससार मे गौरवपूर्ण स्थान दिलाया है। दिल्ली के डा० कमलकिशोर गोयनका द्वारा सम्पादित ग्रथ अनत प्रतिनिधि रचनाए उन्होने मुझे भेट किया जो यह बताने के लिए पर्याप्त है किश्री अनत का लेखनफलक कितना विस्तृत है और उनकी सारस्वत साधना कितनी गहन है।

प्रसिद्ध लेखक प्रह्लाद रामशरण

आर्यसमाज के प्रति समर्पित एक अन्य लेखक बोबासे निवासी श्री प्रह्लाद रामशरण से मेरा परिचय तो तीन दशक पुराना है। वे उस समय दिल्ली विश्वविद्यालय से बी ए कर रहे थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा केवार्षिक अधिवेशन मे जब हमारी भेट हुई तो पता चला कि वे इस सभा मे अपने देश का प्रतिनिधित्व करते है किन्तु उनका लेखन कार्य ही उनके व्यक्तित्व की सर्वाधिक सशक्त अभिव्यक्ति है। इन तीन दशको मे श्री रामशरण ने मारिशस देश के इतिहास, भूगोल, जनजीवन, लोक साहित्य, स्वतत्रता सघर्ष तथा स्वदेश मे आर्यसमाज आन्दोलन के विभिन्न पहलुओ पर जो लिखा है वह उन्हे अपने देश के शीर्षस्थ लेखको मे स्थान दिलाता है। यद्यपि मारिशस का इतिहास अधिक पुराना नही है किन्तु फ्रैंच और ब्रिटिश जातियो की अधीनता मे रह कर इस देश के निवासियो ने जैसी कठिनाइया उठाई, स्वाधीनता के लिए जैसे सघर्ष किये उन सबका प्रामाणिक विवरण देना श्री रामशरण ने अपना दायित्व समझा। जब ११ मई को मै उनके नगर बोबासे की आर्यसमाज मे दयानन्द की वेदार्थ प्रणाली पर व्याख्यान देने गया तो सायकालीन भोजन उनके घर पर ही किया। श्रीमती भाग्नीय ने भारतीय प्रणाली से भोजन तैयार करने मे जब तक श्रीमती रामशरण का हाथ बटाया तब तक मै उनके विशाल पुस्तक सग्रह को देखता रहा। इस सग्रह की एक विशेषता है मारिशस मे आर्य समाज आन्दोलन का आरम्भकालीन साहित्य तथा यहा छपी पत्र-पत्रिकाओ का दुर्लभ सग्रह। यह एक विदित तथ्य है कि आर्य समाज के आरम्भिक काल मे अनेक धार्मिक विषयो पर उसे पुरातनपन्थी रूढिवादियो से शास्त्रार्थ एव वाद-विवाद करने पडे थे। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध आदि वाद-विवाद के प्रमुख मुद्दे उन दिनो जनमानस को उद्वेलित करते रहते थे। जो स्थिति भारत मे थी, लगभग वैसी ही मारिशस मे रही, जबकि रूढिवादी सनातनी समाज ने सगठित होकर आर्य समाज से शास्त्रार्थ किये। उस युग मे छपे कतिपय ग्रथ, प्रवासी भारतवासियो की समस्याओ को लेकर प्रकाशित 'मर्यादा' का प्रवासी विशेषाक तथा इसी प्रकार की अन्यत्र दुर्लभ सामग्री श्री रामशरण के इस सग्रह मे है। उनकी लेखन गति तीव्र से तीव्रतर हो रही है। इन्द्रधनुष पत्रिका के द्वारा वे अपने देश के अनेक शलाका पुरुषो पर प्रामाणिक जानकारी विशेषाको के रूप मे दे चुके है। मेरे इस मारिशस प्रवास मे उन्होने मुझे भी अपने देश के इतिहास तथा जनजीवन को चित्रित करने वाले बीसो ग्रथ भेट किये जिनका अध्ययन इस देश के साथ मानसिक स्तर पर जुडने के अवसर भविष्य मे मुझे प्रदान करेगा।

मारिशस के आर्य विद्वान् मडल की अनेक विभूतियो से मिलन का अवसर अनायास ही मिल गया। वयोवृद्ध प० वेणी माधव, अध्ययनशील तथा कर्मकाण्ड निपुण प० राजमन रामसाहा, पुरोहित मडल के प्रधान प० माणिकचन्द तथा मत्री प० धर्मेन्द्र, हिन्दी के जाने माने लेखक प० धर्मवीर घूरा, स्वामी दयानन्द के पूना प्रवचनो का अग्रेजी मे अनुवाद करने मे तत्पर प० सत्यप्रकाश भृगु, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के स्नातक प० सतीश तथा अन्य अनेक मारिशन आर्य विद्वानो को निकट से जानने का अवसर मिला। मारिशस ब्रॉडकास्टिग कारपोरेशन मे उर्दू कार्यक्रम के सचालक श्री हकीम पीरु से तो मेरा परिचय भारत मे पत्र व्यवहार से ही हो गया था। गत फरवरी मे वे अपने भारत प्रवास मे मुझसे मिलने मेरे जोधपुर निवास पर भी आये थे। यहा भी उनसे भेट हुई। वे आर्य सभा अतिथि गृह मे मुझसे भेट करने भी आये। पुराने हिन्दी फिल्म सगीत मे उनकी रुचि तथा तद्विषयक साहित्य का सग्रह करना उनकी विशिष्ट रुचि व शोधवृत्ति का परिचायक है। प० वासुदेव विष्णुदयाल के साहित्य [illegible] मेरा परिचय कराने वाले और उनकी कुछ प्रतिनिधि रचनाओ को मुझे सर्वप्रथम भेजने वाले वयोवृद्ध प० बी० भक्तसिह से पोर्ट लुइस मे उनके निवास पर भेट करना भी सुखद रहा। वे बार बार उन दिनो को स्मरण करते रहे जब वे प० वासुदेव के ग्रथो के मुद्रण कार्य के प्रभारी थे और पडितजी के अधिकाश ग्रथ उनकी देखरेख मे छपे थे।

भारत मारिशस सम्बन्ध

भारत ने मारिशस से अपने सम्बन्धो को अधिक प्रगाढ बनाने के लिए अपने व्यय से वहा महात्मा गाधी सस्थान (मोका) इन्दिरा गाधी कला सस्थान (वाक्वा) तथा जवाहरलाल नेहरू स्मारक अस्पताल की स्थापना की है। महात्मा गाधी सस्थान अध्ययन और शोध को समर्पित है। यहा हिन्दी, उर्दू, तमिल और तेलुगु इन चार भारतीय भाषाओ की उच्चतर शोध तथा स्नातकोत्तर स्तर का अध्ययन कराया जाता है। विशाल और सुन्दर भवन, सुरम्य उद्यानो तथा हरी भरी पगडडियो से युक्त सस्थान का परिसर वस्तुत सारस्वत सत्र के लिए होताजनो को आहूत सा करता प्रतीत होता है। इसका विशाल पुस्तकालय अध्येताओ के लिए सुलभ है। समीप की इमारत मे भारत से शर्तबद मज़दूरो के रूप मे यहा आकर यहा की धरती से सोना उपजाने वाले उन आप्रवासी भारतीयो के तत्कालीन जीवन, स्थितियो तथा सघर्षो का ज्ञान कराने वाली सामग्री को एक म्यूज़ियम मे सगृहीत किया गया है। भारत के बदरगाहो से चले जिन जहाजो मे इन मजदूरो को यहा के लिए रवाना किया गया था उनका विवरण जिन पत्रिकाओ मे निबद्ध किया गया, वे बृहदाकार रजिस्टर यहा सुरक्षित है जिनसे आप्रवासी भारतीयो के पूर्वजो की प्रामाणिक जानकारी मिलती है। मारिशस की राजधानी मे बैक आफ बडौदा तथा भारतीय जीवन बीमा निगम के कार्यालय है। नालदा बुक डिपो से भारत की पत्र पत्रिकाए तथा नवीन प्रकाशित पुस्तके प्राप्त की जा सकती है। बाम्बे स्वीट मार्ट भारत की मिठाइया सुलभ कराता है।

मारिशस एक गणराज्य है जहा की राष्ट्रीय ससद के लिए प्रति पाच वर्ष बाद चुनाव होते है। राष्ट्रीय ससद मे कुल साठ सदस्य होते है। इस देश मे अनेक राजनैतिक दल है। वर्तमान प्रधानमत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ इससे पूर्व भी प्रधानमत्री का पद सभाल चुके है। आर्यसभा की कार्यकारिणी के सदस्य तथा पेशे से वकील श्री रुद्रसेन देवपाल कौडिया ने मेरी भेंट राष्ट्रीय ससद के अध्यक्ष श्री देवरमन्ना से १६ मई को पोर्ट लुइस के राजभवन मे कराई। फ्रान्सीसी राज्यकाल मे बने इस विशाल भवन मे मारिशस के केन्द्रीय मत्रियो के कार्यालयो के अतिरिक्त राष्ट्रीय ससद का भवन भी है। जब अध्यक्ष (स्पीकर) महोदय से भेट हुई तो मारिशस मे विद्यमान हिन्दू सस्कृति, भारतीय सहयोग तथा इस देश मे हिन्दी की स्थिति तथा उसके भविष्य को लेकर उपयोगी चर्चा हुई। यहा की राष्ट्रीय ससद के अधिवेशनो की कार्यवाही मारिशस टेलीविज़न पर प्रसारित होती है। विरोधी दल के सदस्यो के द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर प्रधानमत्री तथा उपप्रधानमत्री एव विषय से सम्बद्ध मत्रीगण शालीनता से उत्तर देते है। भारतीय ससद मे देखे जाने वाले अभद्र दृश्य इस ससद मे कभी नही होते।

समुद्रतट दर्शन

२७ अप्रैल को मुझे गुडलैड्स आर्य समाज मे बोलना था। हम लोग दोपहर बाद चल पडे। विचार यह था कि पहले ग्राण्डबे के समुद्रतट का अवलोकन किया जाये। मारिशस का आर्थिक तत्र शक्कर उद्योग तथा पर्यटन पर टिका हुआ है। देश के चप्पे चप्पे पर गन्ने के हरे भरे खेत दिखाई पडते है। उधर समुद्र तटो को पर्यटको और सैलानियो के लिए विकसित किया गया है। आज हमने जिस समुद्र तट को देखा उसके समीप की बस्ती होटलो और रेस्तराओ से सकुल है। सागर किनारे विदेशी गोरे और काले पर्यटको को नाना प्रकार के आमोद प्रमोद तथा जल क्रीडाओ मे रत देखा जा सकता है। हमने माहे बुर्ग के निकट की समुद्र की वह खाडी भी देखी जिसके पानी का रग नीले आकाश के तुल्य आभामय एव स्वच्छ है। जब श्री प्रेमजीवन के साथ ८ मई को देश दर्शन केलिए निकले तो गगा तालाब, सातरगी भूमि, जलप्रपात आदि को देखने के पश्चात् समुद्र तटवर्ती मार्ग से मीलो का भ्रमण अत्यन्त रोमाचक तथा आनन्ददायी सिद्ध हुआ। सात रग की भूमि मारिशस को प्रकृति द्वारा दिया एक विचित्र उपहार है। विविध रगो वाली इस मिट्टी को देखने प्रतिदिन दर्शनार्थियो की भीड लगी रहती है।

श्री भानुदत्त बिहारी मारिशस के दूरसचार विभाग मे उच्च अधिकारी है। ६ मई रविवार को मैने उनके पुत्र दीपेश तथा पुत्री अशु का यज्ञोपवीत सस्कार उनके रोजबेल स्थित निवास पर करवाया। इस अवसर पर उनके मित्र तथा बन्धु बाधव बडी सख्या मे उपस्थित थे। उपनयन सस्कार सम्पन्न हो जाने पर हम रोजहिल मे श्री राजमन राधाकृष्ण के निवास पर गये। श्री राधाकृष्ण के पास पुरानी पत्र पत्रिकाओ तथा पुस्तको का अच्छा सग्रह है। श्री सत्यप्रकाश भृगु से मेरा वर्षो पुराना पत्राचार होता रहा है। उनके यूनियन पार्क स्थित निवास पर जाना हुआ तो उनका अच्छा खासा पुस्तक सग्रह देखा। श्री भृगु ने बताया कि वे स्वामी दयानन्द के पुणे मे दिये गये पन्द्रह प्रवचनो का अग्रेजी अनुवाद कर रहे है। सायकाल उनके साथ ग्रोब्रियो आर्यसमाज के सत्सग मे गये। १९ मई को एक छोटे ग्राम की आर्य समाज मे जाने का अवसर मिला। पोर्ट लुइस से २०-२५ मिनट के रास्ते पर यह मोगू ग्राम का आर्य समाज था। यहा सनातन धर्म के पडित श्री वेदगोपी से भेट हुई। इस युवा विद्वान् ने मेरा परिचय तो प्राप्त किया ही २७ मई की सडे वाणी (साप्ताहिक पत्रिका) मे मेरे बारे मे एक फ्रैंच लेख लिखा। *(क्रमश)*

८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

"जंग के बाद"

❑ डा० अनिल वशिष्ठ

जग के कुछ बाद मे बस्ती बसायी जायेगी।
सुनहरे सपनो की एक दुनिया सजायी जायेगी।

कितनी विधवा, कितने घायल और कितने मर गये।
सियासत मे गर्म सी चर्चा करायी जायेगी।

हुक्म होगा खडहर मे फिर नये निर्माण का,
शिविर मे रोटी, रहम, राहत, लुटायी जायेगी।

बेजुबा लाशो के ऊपर मत रखो मज़हब कोई,
जिहादी उन्माद से सारी खुदाई जायेगी।

मौत जिनको आ गयी, अच्छा हुआ वे सो गये,
सिसकियो की आह कब, कैसे मिटायी जायेगी।

जुल्म कम आये नज़र कुछ युक्ति सोची जायेगी,
लाश की गिनती घटाकर कम दिखायी जायेगी।

प्यार का पैगाम सारे मज़हबो मे है 'अनिल',
मिलके रहने से दिलो की बेहयाई जायेगी।

प्रधानाचार्य, डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, अलकुसा, धनबाद (झारखड)

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव

उत्तरी दिल्ली की समस्त आर्य समाजो व आर्य सस्थाओ की ओर से ११८वा महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव रविवार ११ नवम्बर २००१ प्रात ९ से १ बजे तक स्थान आर्य समाज, शालीमार बाग (बी० जे० पश्चिमी), दिल्ली मे धूमधाम से मनाया जायेगा। इसमे आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, श्री ठाकुरदास सपरा, श्री अविनाश कपूर, श्री मगतराम सिघल आदि विद्वान् एव आर्य नेता भाग लेगे। मुख्य अतिथि पूर्व सासद श्री सज्जन कुमार होगे। सब सादर आमत्रित है।

आह अमरीका, आह ओसामा!

❑ श्री दिलचस्प

यौन सक्रामक अमरीका से आया,
आतकवाद भी इसने पनपाया,
पूरी दुनिया का बनने आका
अस्त्र को आतकियो तक पहुचाया,
जैव एथ्रेक्स जजाल बना जी का।
वाह अमरीका, आह अमरीका।
आतक से उपजा अरबी ओसामा,
जेहाद का जिसने दामन थामा,
बम विस्फोट दहशत के साये मे
बरबादी को देता अमली जामा,
खौफ मे जीते नर और वामा।
वाह ओसामा, आह ओसामा।
अभेद पेटागन का पेट चीर कर,
वर्ल्ड ट्रेड सेटर की हुई तबाही,
क्रूर आतकवाद का दाव चल गया,
मच गई अमरीका मे त्राहि-त्राहि,
लगा इतिहास के काला टीका।
वाह अमरीका, आह अमरीका।
हुए किसम किसम के फतवे जारी,
बुर्का मे निकले मुस्लिम नारी,
तोड डालो सब बौद्ध प्रतिमाए,
हिन्दू को बना दो पीताम्बरधारी,
सिमके बुर्का, सूथण, पाजामा।
वाह ओसामा आह ओसामा।
बमो मे मौत लिये चल पडा नभ पर,
अफगान धरा पर जाके बरस गया,
कर डाले गाव के गाव तहस नहस,
पर जिदा मुर्दा बिन को तरस गया,
उमर लादेन का न बदला सलीका।
वाह अमरीका, आह अमरीका।
जिद मे हुई अफगान पर चढाई,
उडते गिद्ध देते जिसकी गवाही,
खण्डहर बन गए गली गाव नगर,
हुई पेटागन की कुछ भरपाई,
काम न आया जिहादी हुकमनामा।
वाह ओसामा, आह ओसामा।
लगभग एक सदी के जीवन खातिर,
क्यो देते धरा को बारूदी जहर?
क्यो करते झूठा खून खराबा?
क्यो ढाते निर्दोषो पर कहर?
मानवता का सीखो तौर तरीका।
वाह अमरीका, आह अमरीका।
बुश मुशरफ हो या हो उमर लादेन,
बद करो सब सहार के उत्पादन।
ध्वस्त कर दो नफरत की दीवारे,
सीखो प्यार मोहब्बत अभिवादन।
अमर से मिलते अल्लाह रामा।
वाह ओसामा, आह ओसामा।
जग मे श्रद्धा मान उसी ने पाया
मानव हित मे जिसने कुछ काम किया।
जीव जन्तु वृक्षो तक की रक्षा की,
कुदरत के नियमो को अजाम दिया।
कया बस इतनी बद करो हगामा।
हाय अमरीका, आह ओसामा।
आह अमरीका, हाय ओसामा।

चूरू-३३१००१ (राजस्थान)

(पृष्ठ ५ का शेष)

दयानन्द, हिन्दी और ....

स्थापित समाज का नाम भी उन्होने 'आर्यसमाज' रखा।

उनकी बात ठीक थी, अग्रेज हमे इडियन कहते है। हम भी अपने को ऐसे ही कहने लगे, तो हसी के ही पात्र होगे। 'हिन्दी' शब्द के साथ बहुत काल से जो भावनाए सम्बन्ध रखती चली आई है, उनका विचार करके आर्यसमाज ने इस हिन्दी नाम को स्वीकार कर लिया है। उग्र राष्ट्रवादी आर्यसमाज से देशोन्नति के किसी काम मे बाधा डालने की आशा नही की जा सकती। लाहौर आर्यसमाज के अन्तर्गत आर्यभाषा सम्मेलन के व्यासपीठ से बोलते हुए स्व० मुशी प्रेमचन्द ने कहा था, 'आर्यसमाज ने इस सम्मेलन का नाम आर्यभाषा-सम्मेलन शायद इसलिए रखा है कि वह समाज के अन्तर्गत उन भाषाओ का सम्मेलन है, जिनमे आर्यसमाज ने धर्म का प्रचार किया है और उसमे उर्दू और हिन्दी का दर्जा बराबर है।' यह सूझ कितनी ही सुन्दर क्यो न हो, पर ठीक नही है। स्वामी दयानन्द इसे नही मानते थे, उनकी आर्यभाषा देवनागरी अक्षरो मे लिखी गई हिन्दी थी।

स्वामी दयानन्द मात्र हिन्दी प्रचार के लिए नही थे। उनका जो महान् उद्देश्य था, उसकी पूर्ति मे यह सहायक थी, शायद अनिवार्य थी। तभी उन्होने इसे अपनाया। इसी प्रकार वह साहित्यिक भी नही थे, पर जब उन्हे हिन्दी मे लिखना पडा, तो उनका लिखा हुआ भी साहित्य मे गिना जाने लगा।

अन्धविश्वास का विरोध

परम्परा से चले आए भक्तिरस के कारण देश बहुत कुछ मानसिक दासता मे फस गया था। जीवन मे बौद्धिक शिथिलता भर चली थी। अन्धविश्वास और कोरी अन्धभक्ति का बहुत ही प्राबल्य था। स्वामी दयानन्द ने इस बौद्धिक पतन के विरुद्ध अपनी वाणी बुलन्द की, तब अनायास ही उसमे जोर पैदा हुआ।

यह सब अनायास ही हो गया। स्वामी दयानन्द ने न तो गद्य के प्रचार के लिए झडा उठाया और न ही पद्य का विरोध किया। 'सत्यार्थप्रकाश' मे उन्होने राजविद्या सीखने के बाद गधर्ववेद, जिसको गानविद्या कहते है, पढने का आदेश किया है, वह स्वय साम-गान गाते थे।

उर्दू का प्रभाव

स्वामी जी के कारण काशी के अनेक सस्कृतज्ञ पडितो ने 'भाषा' को अपनाया। इससे हिन्दी की लोकप्रियता तो बढी, पर उसमे दुरूहता आ गई। धारा अटक-अटक कर बहने लगी। सम्भव था, कुछ आगे बढकर वह अपना स्वतत्र व्यक्तित्व खो बैठती, पर उसके चाहने वालो मे कुछ नए रग के आशिक भी थे। स्वामी जी को अपने विचारो के प्रचार मे पजाब मे बडी सफलता मिली। पजाब उर्दू का किला था। स्वामी जी की पैरोकार जनता के हिन्दी सीखने से पहले उनके ग्रथो का उर्दू मे अनुवाद हुआ। देववाणी और आर्यभाषा को ईरानी लिबास पहनना ही पडा। बहुत समय तक उर्दू लिपि मे सस्कृत छपती रही। यह मिलन हिन्दी के लिए सौभाग्य सूचक ही था। आज के हिन्दी-हिन्दुस्तानी के युग मे जिस भाषा की पूछ है, वह बिना चाहे ही पजाब मे अनेक वर्षो से बन रही थी। आर्यसमाज के कारण जिन बूढे पुरुषो ने नागरी सीखी, वे लिखते समय उर्दू का प्रभाव दूर नही कर सकते थे। परिणाम यह हुआ, सस्कृतज्ञो के कारण जो धारा अटक अटक बहने लगी थी, वह खुलकर उमड चली। देववाणी सस्कृत की कुलीन सतान ईरान की मस्ताना आनबान से अछूती न रह सकी। आज जो पजाब मे हिन्दी का इतना नाम है, वह सब स्वामी दयानन्द की प्रेरणा और शक्ति का ही फल है।

आर्य समाज और हिन्दी

आर्य समाज ने हिन्दी के लिए क्या किया? गुरुकुलो के विषय मे दो शब्द लिख देना उचित ही होगा। शिक्षा का माध्यम देशी भाषा होना चाहिए, क्रियात्मक रूप मे इस पर सबसे पहले गुरुकुल मे ही परीक्षण हुए। हिन्दी मे अभी तक भी अनेक विषयो की पुस्तके नही है, अनेक पारिभाषिक शब्दो का तो अभाव ही है। इस ओर कदम बढाने वाले गुरुकुल के स्नातक ही है। ऐतिहासिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक विषयो पर उन्होने अनेक मोलिक ग्रथ लिखे। उन्होने बडे-बडे विश्वविद्यालयो के सस्थापको के दिल से इस बात को दूर कर दिया कि हिन्दी भाषा मे उच्च विज्ञानो की शिक्षा नही दी जा सकती। स्व० स्वामी श्रद्धानन्द ने सबसे पहले अपने 'गुरुकुल' मे विज्ञान, रसायनशास्त्र, अर्थशास्त्र, कृषिविज्ञान और भौतिक विज्ञान की शिक्षा हिन्दी के माध्यम द्वारा देने की कोशिश की। माननीय श्रीनिवास शास्त्री उनके इन परीक्षणो से बड प्रभावित हुए थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय कमीशन के प्रधान मि० सैडलर ने तो लिखा था, 'मातृभाषा द्वारा ऊची शिक्षा देने के परीक्षण मे गुरुकुल को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। हिन्दी तब इतनी लोकप्रिय हुई कि श्री मिलबर्न सरीखे पादरी केवल हिन्दी सीखने के लिए गुरुकुल आए। और भी गुरुकुल के प्रेम से खिचे हुए अनेक विदेशी पुरुषो ने हिन्दी पढी।

राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) के ३५ साल के जीवन मे वह पहला अवसर था, जबकि अमृतसर की ऐतिहासिक काग्रेस के स्वागताध्यक्ष के पद से श्रद्धानन्द सन्यासी ने अपना भाषण हिन्दी मे लिखा और पढा। वह समय १९१९ का था और स्व० प० मोतीलाल नेहरू उस साल सभापति थे।

हिन्दी के प्रत्येक क्षेत्र मे आज आर्यसमाज के सेवक तन, मन, धन से काम कर रहे है। यह सब उसी महात्मा की अनोखी सूझ का फल है, जो स्वार्थ की भावना से अछूती थी, जिसका एकमात्र उद्देश्य राष्ट्र को एकसूत्र मे बाधना था।

(पृष्ठ ४ का शेष)

अफगानिस्तान का युद्ध और हम

जब सन् १९८८ मे रूसी सेनाए अफगान सरकार के बुलावे पर अफगानिस्तान मे आ गई, तब अमेरिका ने पाकिस्तान को करोडो डालर के शस्त्रास्त्र दे कर अफगानिस्तान मे मुजाहिदीन (धार्मिक योद्धा) दल बनवाये, जिन्होने ९ साल तक भीषण लडाई लडने के बाद रूसी सेनाओ को वापस लौट जाने को विवश कर दिया। कहा जाता है कि इस लम्बे युद्ध ने रूस की अर्थ व्यवस्था ही नष्ट कर दी। सोवियत रूस छिन्न भिन्न हो गया।

रूसियो के हट जाने के बाद जो मुजाहिदीन अफगानिस्तान मे सत्तारूढ हुए, वे पाकिस्तान के दबाव मे रहने को तैयार नही थे। इसलिए पाकिस्तान ने 'तालिबान' नाम से उनसे भी अधिक कट्टर, धर्मान्ध सैनिक सगठन तैयार किया। पाकिस्तानी अफसरो के नेतृत्व मे तालिबान ने न केवल राजधानी काबुल पर अपितु अफगानिस्तान के ९० प्रतिशत भाग पर भी अधिकार कर लिया।

पाकिस्तानी मदरसो मे मुल्लाओ ने तालिबान को सिखाया था कि सारे ससार मे इस्लामी राज्य स्थापित करना उनका धार्मिक कर्तव्य है। सब काफिरो (अमुस्लिमो) को समाप्त कर देना है। इस उद्देश्य के लिए प्राण दे देने पर स्वर्ग मिलेगा।

धर्मान्ध तालिबान यह भूल गये कि वर्तमान परिस्थितियो मे सारे ससार मे इस्लामी शासन स्थापित कर पाना असभव है। उनका जन्मदाता और पोषक पाकिस्तान स्वय अमेरिकी सहायता पर निर्भर था।

इस समय ओसामा बिन लादेन नामक एक नया अभिनेता रगमच पर आया। यह सऊदी अरब के शासकपरिवार का सदस्य था। सऊदी अरब का शाह अमेरिका का समर्थक है। ओसामा अरब के राजसिहासन पर स्वय अधिकार करना चाहता था, इसलिए उसे देश से निकाल दिया गया। वह अफगानिस्तान चला गया। वहा उसने रूसियो के विरुद्ध लडाई मे भाग लिया और तालिबान को धन की सहायता दी। तालिबान प्रमुख मुल्ला मुहम्मद उमर से उसने अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।

ओसामा अमेरिका, इजराइल और भारत को शत्रु मानता था और उन्हे हानि पहुचाने के लिए भरसक प्रयत्न करता था। अमेरिका को हानि केवल आतकवादी हमलो से पहुचाई जा सकती थी। न्यूयार्क मे एक बार पहले विश्व व्यापार केन्द्र के भवन के पास कार मे बम विस्फोट किया गया। इसके बाद सन् १९९८ मे नैरोबी और दारे सलाम मे एक दिन अमेरिकी दूतावासो मे बम विस्फोट किये गये, जिनमे कई सौ लोग हताहत हुए। फिर ११ सितम्बर २००१ को न्यूयार्क मे विश्व व्यापार केन्द्र की दो ऊची मीनारो को दो आत्मघाती विमान टकरा कर नष्ट कर दिया गया। उसी दिन एक आत्मघाती विमान ने वाशिगटन मे अमेरिकी सेना मुख्यालय पैटागन पर हमला करके उसे क्षतिग्रस्त कर दिया। अमेरिका का कहना है कि यह सब ओसामा के सगठन अलकायदा की करतूत है।

अमेरिका ने अफगानिस्तान के तालिबान से माग की कि वह ओसामा को उसके हवाले कर दे। तालिबान के इन्कार कर देने पर अमेरिका ने इग्लैड के साथ मिल कर अफगानिस्तान पर हवाई हमले शुरू कर दिये है।

अमेरिका पाकिस्तान को बहुत सहायता देता रहा है। अब उसने पाकिस्तान से माग की कि वह आतकवाद के विरुद्ध युद्ध मे अमेरिका का साथ दे। पाकिस्तान के सैनिक शासक जनरल मुशर्रफ ने, यह जानते हुए कि देश के उग्रपन्थी मुल्ला इससे रुष्ट हो जायेगे, अमेरिका का साथ देना स्वीकार कर लिया। साथ न देने का परिणाम भी भयानक होना था।

तीन सप्ताह की बमबारी से भी तालिबान को कोई भारी क्षति पहुची हो, ऐसा नही लगता। तालिबान शोर मचा रहे है कि बमबारी मे निर्दोष नागरिक, बच्चे और बूढे मारे जा रहे है। अखबार भी ऐसी खबरो को बढा चढा कर छाप रहे है। युद्ध मे गेहू के साथ घुन तो पिसता ही है।

अमेरिका केवल तालिबान को हराना नही चाहता। वह चाहता है कि तालिबान के हारने के बाद जो सरकार बने, वह अमेरिका की उगलियो पर नाचने वाली हो। इसलिए वह उन मोर्चो पर बमबारी नही कर रहा, जहा बमबारी से रूस और भारत समर्थित उत्तरी गठबधन की सेनाए काबुल पर कब्जा कर सकती है।

पाकिस्तान ने अमेरिका को अपने हवाई अड्डो का प्रयोग करने की अनुमति दे दी है। इसके विरुद्ध क्वेटा, कराची, और इस्लामाबाद मे उग्र प्रदर्शन हो रहे है। मुशर्रफ का आसन डावाडोल है।

परन्तु यह सब भारत के लिए भली खबर नही है। आतकवाद के उन्मूलन मे अमेरिका ने भारत के बजाय पाकिस्तान को प्रमुख साथी बनाया है। भारी आर्थिक तथा शस्त्र सहायता देने के अलावा वह कश्मीर मे भी पाकिस्तान का पक्ष ले सकता है। कश्मीर मे आतकवाद समाप्त करना अमेरिका की पहली प्राथमिकता नही है।

जैसा हमने पहले कहा, आतकवाद तो केवल बहाना है। असली उद्देश्य है इस क्षेत्र मे अपना वर्चस्व स्थापित करना। हिन्दुस्तान उपमहाद्वीप मे अमेरिकी सेना का पदार्पण एक चिन्ताजनक घटना है। पाकिस्तान ने जितनी आसानी से चीन को गिलगित प्रदेश दे दिया और अब अमेरिकी सेना को पैर जमाने की छूट दी, उससे स्पष्ट है कि उसे इस मातृभूमि से कोई प्रेम नही है।

जिस तरह उसने तालिबान को स्वय पाल पोस कर उनके विनाश मे अमेरिका को सहयोग देना स्वीकार कर लिया, उससे भी पाकिस्तान शासन की मनोवृत्ति उजागर होती है। ऐसे लोगो पर क्या विश्वास किया जा सकता है? अमेरिका भी कितना विश्वास करेगा?

इससे भी अधिक चिन्ता की बात यह है कि इस बात की आशका है कि धर्मान्धता के उन्माद मे जनरल मुशर्रफ का तख्ता पलट जाये और पाकिस्तानी परमाणु बम तालिबान के हाथो मे पहुच जाये। उस दशा मे अमेरिका पाकिस्तानी परमाणु सयत्रो के विरुद्ध कार्रवाई करेगा और उसके साथ ही भारत को भी पाकिस्तान के समान स्तर पर रखने के लिए भारत के विरुद्ध भी कार्रवाई कर सकता है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम रूस और चीन से सम्बन्ध सुधारे। अमेरिका की दादागीरी की कही तो रोकथाम होनी चाहिए। यदि इस समय नही हुई, तो बाद मे होनी कठिन होगी।

अमेरिका तालिबान को अपदस्थ करके सतुष्ट हो जाना चाहता है। परन्तु आतकवाद का असली जन्मदाता तो पाकिस्तान है। जब तक मदरसो मे प्रशिक्षित जिहादियो की हिसक मनोवृत्ति न बदली जाये, तब तक आतकवाद से छुटकारा कैसे मिल सकता है?

(पृष्ठ १ का शेष)

सत्य अर्थ प्रकाश का ......

है, परन्तु इसमे कोई विवाद नही था कि शास्त्रो का सही अर्थ होना चाहिए। सही अर्थ के निर्णय के लिए शास्त्रार्थ होने लगे। बाद मे शास्त्रार्थ का अर्थ वाद-विवाद मे प्रतिद्वन्द्वी को पराजित करना हो गया, परन्तु मूलत इसका अर्थ 'शास्त्रो के सही अर्थ का निर्णय करना' था।

सत्य अर्थ का प्रकाश

स्वामी दयानन्द को सत्य अर्थ के प्रकाशन का इतना आग्रह था कि उन्होने अपने सबसे प्रमुख ग्रथ का नाम ही 'सत्यार्थप्रकाश' रख दिया। जो सत्य है, उसे ढूढो, उसे प्रकट करो, प्रकाशित करो।

स्वामी जी अपने ज्ञान की सीमाओ को जानते थे। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका के पाचवे अनुच्छेद मे लिखा 'इस ग्रथ मे जो कही कही भूल चूक से, अथवा शोधने तथा छापने मे भूल चूक रह जाय, उसको जानने जनाने पर जैसा वह सत्य होगा, वैसा ही कर दिया जायेगा और जो कोई पक्षपात से अन्यथा शका या खडन मडन करेगा, उस पर ध्यान न दिया जायेगा। हा, जो वह मनुष्य मात्र का हितैषी हो कर कुछ जतावेगा, उसको सत्य असत्य समझने पर उसका मत सगृहीत होगा।'

यह थी सत्य अन्वेषी ऋषि दयानन्द की भावना। किसी भी समय यह समझ आ जाने पर, कि अमुक बात गलत लिखी गई है, उसे सुधार कर जो सत्य होगा, वह लिख दिया जायेगा। असत्य को त्यागना और सत्य को ग्रहण करना इसी को कहते है।

परन्तु लैम्प जला देना ही काफी नहीं होता, रोज या दो तीन दिन बाद उसकी चिमनी को साफ करना आवश्यक होता है। चिमनी पर कालस जम जाती है, और प्रकाश धूमिल हो जाता है।

बुद्धिवादी और तर्क दिग्गज दयानन्द के शिष्य परम श्रद्धालु बन गये। उन्होने कहा 'देव दयानन्द आजन्म ब्रह्मचारी थे। वह महायोगी थे। उन्हे समाधि मे भूत, वर्तमान, भविष्यत् का सारा ज्ञान हस्तामलकवत् हो जाता था। उन्होने जो लिख दिया, उसमे प्रमाद, त्रुटि, या भ्रान्ति की सभावना ही नही। जो कोई उसमे गलती निकालता है, वह दयानन्दद्वेषी है, वह आर्य समाजी तो है ही नही, आर्य भी नही है।'

यह सत्यान्वेषी ऋषि दयानन्द की पद्धति नही है। 'ऋषि दयानन्द से अधिक बडा विद्वान्, मनीषी, देशोद्धारक, मानव मात्र का हित चिन्तक न अब तक कोई हुआ, और न आगे होगा,' यह स्वामी दयानन्द की सही स्तुति नही है। उनसे बडे, बहुत बडे विद्वान्, मनीषी अनेक हो चुके है और आगे कितने होगे, कोई नही जानता। जब दयानन्द जी ने यह कहा कि 'प्राचीन युग के ऋषियो की मडली मे मुझे शायद ऋषि माना ही न जाता', तब वह विनम्रता तो प्रदर्शित कर ही रहे थे, सत्य भी कह रहे थे। विश्वामित्र, वशिष्ठ, जमदग्नि, याज्ञवल्क्य, पाणिनि, व्यास आदि ढेरो ऋषि कही अधिक बडे ऋषि थे। आजकल भी जो लोग नित्य नये अनुसधान करके परमाणु बम, उपग्रह, प्रक्षेपास्त्र और कम्प्यूटर बना रहे है, भूगोल और खगोल के रहस्यो को उजागर कर रहे है, वे भी बहुत बडे ऋषि है। जिन सत्यो का वे प्रकाश कर रहे है, वे ग्राह्य है।

ऋषि दयानन्द की महानता उनके इस सन्देश मे है 'असत्य को त्यागो, सत्य को स्वीकार करो।' जो कपडा फट गया है, उसे फेको, नया, सही नाप का वस्त्र धारण करो।

किसी समय वैज्ञानिक कहते थे कि पृथ्वी गोल है और सूर्य के चारो ओर चक्कर काट रही है। परन्तु परम धार्मिक ईसाई बाइबिल को प्रमाण मान कर कहते थे कि पृथ्वी चपटी है और सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है (ऐसा प्रत्यक्ष दिखाई भी पडता था। प्रत्यक्ष कितना भ्रामक हो सकता है?)। वैज्ञानिको को कट्टर ईसाइयो के हाथो अनेक अत्याचार सहने पडे।

तथाकथित आर्ष ग्रथो मे सृष्टि की उत्पत्ति का एक सवत् लिखा है— १ अरब ९७ करोड, २६ लाख, ४९ हजार १०२। आधुनिक वैज्ञानिक लोग सृष्टि की आयु तीन अरब वर्ष से भी अधिक बताने लगे है। आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियो द्वारा आकलित की गई यह आयु समाधि मे प्राप्त ज्ञान से भिन्न है। ऐसी दशा मे हम इस नई आयु को स्वीकार करेगे, या बाइबिल प्रेमियो की भाति प्राचीन धारणाओ से चिपके रहेगे?

इसी प्रकार आदि सृष्टि तिब्बत मे हुई, एक ही दिन अमैथुनी सृष्टि द्वारा युवा नर-नारी उत्पन्न कर दिये गये, आर्य तिब्बत से भारत मे आये, आदि विषयो मे आधुनिक वैज्ञानिक खोजो को प्रमाण माना जाये, या प्राचीन स्मृतियो को?

ज्ञान विज्ञान मे हमे सबसे आगे रहना है, न कि सबसे पीछे। यही है सत्य अर्थ का प्रकाश! यह सदा जगमगाता रहे।

डा० वन्दिता अरोडा
इन्द्रप्रस्थ महिला कालेज, अलीपुर रोड,
दिल्ली-५४

समाचार जगत्

राष्ट्रीय समाज सेवा का दस दिवसीय शिविर सम्पन्न

मुख्य अतिथि श्री प्रवीणकुमार एव श्रीमती अनीता पुज को स्मृति चिह्न देती प्राचार्या श्रीमती पूर्णप्रभा शर्मा।

गाव के विद्यालय मे क्यारिया बनाती राष्ट्रीय समाज सेवा की स्वयसेविकाए।

हसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर की ऐन० ऐस० ऐस० यूनिट द्वारा दस दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन २८ सितम्बर से ७ अक्टूबर २००१ तक किया गया। इसमे लगभग १०० छात्राओ ने तथा ६ अध्यापिकाओ ने भाग लिया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री कुन्दन लाल अग्रवाल ने अपने सम्बोधन मे कहा कि आज महिलाओ के योगदान के कारण ही हमारा समाज व राष्ट्र उन्नति कर रहा है। उन्होने छात्राओ को गायत्री मत्र का जाप व सात्विक आहार लेने की प्रेरणा दी।

इस वर्ष परियोजना कार्य के लिए गाव नागरा को चुना गया। गाव के लोगो के सामाजिक एव आर्थिक जीवन का स्तर जानने हेतु छात्राओ ने गाव का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया। रोटरी क्लब ईस्ट के सहयोग से गाव मे फ्री मैडिकल शिविर लगाया गया। गाव मे "जनसख्या नियत्रण तथा भ्रूण हत्या एक महापाप" विषय पर लैक्चर का आयोजन किया गया, जिसमे श्री सुरेन्द्र, अध्यक्ष पजाब जनसख्या समिति ने गाववासियो को महत्वपूर्ण जानकारी दी। पर्यावरण सुरक्षा अभियान के तहत गाव मे वृक्षारोपण किए गए।

इसके साथ साथ छात्राओ ने कालेज प्रागण को सजाने एव सवारने के लिए कालेज के मैदानो मे सफाई कर ईटो पर चूना किया। शिविर मे डा० रविन्दर काला, डा० कुमुद पसरीचा, डा० राजेश और श्रीमती अमृत बजाज के ज्ञानवर्धक भाषण हुए। छात्राओ को अति सरल व उपयोगी योगाभ्यास भी करवाए।

समापन समारोह की अध्यक्षता श्री प्रवीण कुमार तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता पुज ने की। श्रीमती अनीता पुज ने अपने सम्बोधन मे कहा कि नारी को समाज मे अपनी पहचान बनाने की अभी आवश्यकता है। उन्होने छात्राओ को भ्रूण हत्या के विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान किया। इस अवसर पर छात्राओ को सम्बोधित करते हुए प्रिसिपल पूर्णप्रभा शर्मा ने कहा कि हाथ से कार्य करने मे किसी तरह शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए बल्कि स्वय को गौरवान्वित अनुभव करना चाहिए।

इस अवसर पर छात्राओ ने रगारग सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करके सभी आगन्तुको का मनोरजन किया। गाव के सरपच सरदार लैहबर सिह ने स्वय सेविकाओ द्वारा गाव मे किए गए कार्यो की सराहना की। प्रतियोगिताओ मे प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओ को पुरस्कृत किया गया। कु० उपासना गुप्ता को सर्वोत्तम शिविर सदस्य का पुरस्कार दिया गया।

देवभूमि कागडा मे शिविर

आर्य विद्या सभा (डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति), नई दिल्ली के तत्वावधान मे विगत दिसम्बर २००० मे आयोजित 'अखिल भारतीय धर्मशिक्षा सस्कृत प्रतियोगिता परीक्षा' मे चुने गए छात्र-छात्राओ के लिए 'भारत-दर्शन' कार्यक्रम के अन्तर्गत देवभूमि कागडा (हि० प्र०) मे दिनाक १२ १० २००१ से दिनाक १४ १० २००१ तक एक शिविर लगाया गया। इस शिविर मे देश के विभिन्न आठ प्रान्तो के डी० ए० वी० सस्थाओ के छात्र-छात्राओ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। ज्ञातव्य है कि 'आर्य विद्या सभा' के तत्वावधान मे छात्रो मे नैतिक भावोन्नयन तथा स्वसस्कृति के प्रति जागृति उत्पन्न करने के लिए प्रतिवर्ष ऐसे शिविरो का आयोजन किया जाता है। अवसर विशेष पर छात्राओ के लिए एक विशिष्ट परीक्षा का आयोजन भी किया गया था, जिसमे चुने गए छात्रो को छात्रवृत्ति देने का प्रावधान है।

शिविर के उद्घाटन समारोह मे इसकी उपादेयता पर डा० गजपाल सेठ, शिक्षा परामर्शदाता आर्य विद्या सभा, डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति ने अपना सारगर्भित व्याख्यान दिया। इस अवसर पर सस्कृत के वयोवृद्ध विद्वान् डा० त्रिपाठी ने जोशीले शब्दो मे सस्कृत की महत्ता पर अपने विचार रखे। डी० ए० वी० महाविद्यालय कागडा के प्राचार्य तथा सस्कृत विभागाध्यक्ष ने आधुनिक युग मे सस्कृत के औचित्य पर रोचक जानकारिया दी। डी० ए० वी० ईब वैली थर्मल पावर स्टेशन उडीसा से आए छात्रो ने सस्वर श्लोक पाठ से सबका मन मुग्ध कर लिया। छात्रो को स्थानीय दर्शनीय स्थानो का भ्रमण कराया गया। उक्त शिविर की सफलता का अदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि छात्रो मे इसके प्रति अभिरुचि अन्त तक बनी रही।

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज अशोक विहार-१, दिल्ली-५२ का २९वा वार्षिक उत्सव २६ ११ २००१ से २ १२ २००१ तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। आप सपरिवार इष्ट मित्रो सहित पधार कर धर्म लाभ उठाए। इसमे पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा, डा० महेश विद्यालकार, अचार्य वीरेन्द्र विक्रम, डा० स्वामी सत्यम् आदि विद्वान् भाग लेगे।

हिन्दी को पूरा मान सम्मान क्यो नही मिलता?

हिन्दी को जो स्थान अब तक मिल जाना चाहिए था, वह नही मिल पाया। इसके लिए हमारा समाज जिम्मेदार है। आज हालत यह हो गई है कि अधिकाश लोग अग्रेजी मे बात करने मे गौरव समझते है और हिन्दी के मसले पर उन्हे शर्म आती है। इस मानसिकता को बदलना होगा तभी हिन्दी को उचित मान सम्मान मिल सकता है। उक्त विचार केन्द्रीय विज्ञान एव प्रौद्योगिकी राज्य मत्री बचीसिह रावत ने वैज्ञानिक शिक्षा के माध्यम एव भारत की राजभाषा नीति पर प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण करते हुए व्यक्त किए। स्मारिका का प्रकाशन राजभाषा सघर्ष समिति द्वारा किया गया है।

हिन्दी भवन मे आयोजित समारोह मे मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा भारतीय भाषा सद्भाव यात्रा के सदस्यो का अभिनन्दन भी किया गया। इस अवसर पर श्री रावत ने कहा कि फ्रास, चीन, जापान जैसे अधिकाश देशो मे लोगो को ही नही बल्कि वहा की सरकारो को भी अपनी मातृभाषा से प्यार है। अपनी भाषा को प्रोत्साहन देने के लिए वे विशेष मत्री तेनात करते है। मगर हमारे यहा ऐसा नही है। इस मौके पर हिन्दी अकादमी के सचिव डा० रामशरण गौड, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के डा० शैलेन्द्र कुमार शर्मा अश्वनी कुमार पाठक, श्यामलाल, डा० रवि शर्मा, शेरजग गर्ग आदि प्रमुख लोग उपस्थित थे।

महर्षि दयानन्द वाक् प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द वाक् प्रतियोगिता मे १८ विद्यालयो के ४४ छात्र-छात्राओ ने भाग लिया। कनिष्ठ वर्ग के लिए 'पशुबलि मानवता के लिए अभिशाप है' और ज्येष्ठ वर्ग के लिए 'परिवार एव राष्ट्र निर्माण मे नारी का योगदान' विषय रखे गये थे। ज्येष्ठ वर्ग मे कु० नेहा अधिकारी प्रथम, रणधीर कैडा द्वितीय तथा कु० स्वाति मेलकानी तृतीय स्थान पर रही। कनिष्ठ वर्ग मे नेहा पाण्डे प्रथम, रीतिका पन्त द्वितीय और मोहित मित्तल तृतीय स्थान पर रहे। कनिष्ठ वर्ग और ज्येष्ठ वर्ग की दोनो रनिग शील्ड औल सेन्ट कालेज नैनीताल की झोली मे गई। इस प्रतियोगिता के अध्यक्षीय भाषण मे प्रधानाचार्य रा० इ० का० नैनीताल डा० अनिल कुमार ने सामाजिक और धार्मिक चेतना जगाने मे आर्य समाज की अहम भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रतियोगिता मे निर्णायक प्रो० जे० ऐन० जोशी, प्रो० हरिनारायण दीक्षित, प्रो० मानवेन्द्र पाठक थे।

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R No D L 11082/2001
POSTED AT N D P O ON 7/8-11-2001 दिनाक ११-११-२००१

हनुमानगढ़ में विद्यार्थी चरित्र निर्माण शिविर

डी० ए० वी० हनुमानगढ द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय विद्यार्थी चरित्र निर्माण शिविर मे शारीरिक प्रदर्शन करते शिविरार्थी।

हनुमानगढ डी० ए० वी० सैन्टेनरी पब्लिक स्कूल, हनुमानगढ (राज०) द्वारा त्रिदिवसीय "विद्यार्थी चरित्र निर्माण शिविर" २१ १० २००१ से २३ १० २००१ तक सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री सुरेन्द्र दादरी व अध्यक्षता श्री चरणदास जी पाहुजा ने की। श्रीमती दमयन्ती बेनीवाल, जिला प्रमुख ने कार्यक्रम मे विशिष्ट अतिथि के रूप मे समारोह की शोभा बढाई। बच्चो मे अनुशासन, देशभक्ति एव ईश्वर भक्ति को जाग्रत करना इसका मूल उद्देश्य था। स्वामी दयानन्द जी के आदर्शो पर चलने के लिए विद्यार्थियो ने शपथ ग्रहण की। शिविर को वैदिक रग मे रगने के लिए प्राचार्य उमेश यादव जी व आचार्य उषर्बुध जी का तीनो ही दिन सराहनीय योगदान मिला। वैदिक शिक्षा व वैदिक दिनचर्या विषय पर बहुत ही सुन्दर व्याख्यान हुए। बच्चो के विभिन्न करतबो, योग, कराटे व शारीरिक प्रदर्शन ने शहर से पधारे जनसमुदाय को मत्रमुग्ध कर दिया। शिविर का आयोजन कोहला ग्राम के जगल मे किया गया। समापन समारोह जिला पुलिस अधीक्षक श्री ऐम० सी० मीणा द्वारा किया गया। उन्होने मुक्तकण्ठ से डी० ए० वी० शिक्षा पद्धति व प्राचार्य श्री आर० के वर्मा की इस पुनीत कार्य के लिए प्रशसा की। क्षेत्रीय निदेशक श्री ऐम० ऐल० गोयल ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। श्री ऐम० ऐल० गोयल ने मेधावी छात्रो को पुरस्कृत करके उत्साह बढाया।

आर्य समाज मन्दिर मार्ग का साप्ताहिक सत्सग

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्सग मे इस सप्ताह डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल कैलाश हिल्स, नई दिल्ली की अध्यापिकाओ एव छात्र छात्राओ ने भाग लिया। दरबारी लाल डी० ए० वी० माडल स्कूल, शालीमार बाग दिल्ली के भी शिक्षकवर्ग एव छात्र-छात्राओ सहित कुल लगभग ५० लोगो ने भाग लिया। श्री शिवनारायण शास्त्री ने अपने प्रवचन मे कहा कि हर मनुष्य को अनुशासित जीवन बिताना चाहिए। शिष्य को गुरु के प्रति श्रद्धा हो और वह अपने गुरु की समस्त विद्याओ को हृदयगम कर ले। विद्या और शिक्षा मे अन्तर है, शिक्षा से धन की प्राप्ति होती है विद्या से आपका जीवन उज्वल बन जायेगा।

श्री मनोहरलाल ऋषि एव श्री नरेश सोलकी के सुन्दर भजन हुए। सस्कृत अध्यापिका सुनीता शर्मा ने "इदन्न मम" शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि परोपकार की भावना, समर्पण की भावना किसी भी समाज की आधारशिला है। स्कूल की प्रिसिपल श्रीमती मधु कोछड ने आर्य समाज के सत्सग हेतु चादरे देने की घोषणा की।

आर्य समाज आनन्द विहार का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आनन्द विहार, ऐल ब्लाक, हरिनगर, नई दिल्ली-६४ का २७वा वार्षिकोत्सव कार्तिक कृष्ण षष्ठी से प्रारम्भ होकर कार्तिक कृष्ण एकादशी, विक्रमी सवत् २०५८ तदनुसार बुधवार ७ नवम्बर से रविवार ११ नवम्बर २००१ तक समारोहपूर्वक आयोजित किया जायेगा। इस अवसर पर वैदिक धर्म एव सस्कृति तथा जीवन मे ग्रहण करने योग्य शिक्षाओ के सुमधुर भजन एव प्रवचन प्रसिद्ध आर्य प्रचारक एव वैदिक विद्वान् नित्य प्रतिदिन करेगे। इस अवसर पर आप परिवार जनो एव इष्ट मित्रो सहित पधारने की कृपा करे।

वेदप्रचारोत्सव २१ से २५ नवम्बर तक

मण्डी डबवाली आर्य समाज द्वारा इस वर्ष भी वेद प्रचार उत्सव का बडी धूमधाम से आयोजन किया गया है। दिनाक २१ नवम्बर से २५ नवम्बर तक चलने वाले इस समारोह मे वेद, शास्त्र, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि के विद्वान् स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी के प्रवचन होगे तथा सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० ओम प्रकाश वर्मा के मधुर भजनोपदेश होगे।

ध्यान योग शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम मे रविवार २३ दिसम्बर २००१ से रविवार ३० दिसम्बर २००१ तक 'ध्यान योग शिविर' का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे माताए भी भाग ले सकती है। माताओ-बहिनो की आसनादि प्रशिक्षण-व्यवस्था अलग से रहेगी। शिविर मे यथा समय अन्य विद्वानो के प्रवचन तथा भक्ति सगीत होगे। अत यौगिक क्षेत्र के पथिको के लिए सुअवसर प्राप्त है।

२३ दिसम्बर को शिविर उद्घाटन साय ४ बजे होगा। ३० दिसम्बर, रविवार प्रात १० बजे यज्ञ पूर्णाहुति तत्पश्चात् योग सम्मेलन होगा। आश्रम दिल्ली रोड पर हरियाणा रोडवेज बस स्टाप के निकट है।

आर्य समाज नैरोबी का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज नैरोबी का वार्षिक उत्सव आर्य समाज साऊथ सी से आरम्भ हुआ। श्री देवराज मल्होत्रा ने ध्वजारोहण किया। उसके बाद यज्ञ हुआ। प० रामकृष्ण शर्मा ने आर्य समाज साऊथ सी का इतिहास बताया। उसके बाद श्री शीलकांत वेदालकार ने प० रामकृष्ण जी की सराहना करते हुए कहा कि साऊथ सी आर्य समाज को पुनर्गठित करने मे इनका बहुत सहयोग रहा है। श्री जोगिन्दरपाल गाजरी ने पडित जी को आर्य समाज नैरोबी की ओर से मान पत्र तथा ग्यारह हजार की थैली भेट की। इस अवसर पर श्री प्रीतम जी सैनी ने भी अपने विचार रखे।

७ अक्टूबर को आर्य बाल सभा का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। बाल सभा के बच्चो ने बडी ही कुशलता के साथ अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम की सयोजक श्रीमती सुबोध शर्मा थी।

उसके बाद धर्म सम्मेलन का आयोजन श्री शीलकात जी वेदालकार ने किया। विभिन्न सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने "ईश्वर हमसे क्या चाहता है" इस विषय पर अपने अपने विचार रखे। सभी श्रोताओ ने बडी उत्सुकता से सभी के विचारो को सुना।

इस कार्यक्रम के बाद आर्य समाज के पिछले सभी प्रधानो को सम्मानित किया गया।

११ अक्टूबर को आर्य स्त्री समाज की ओर से भजन प्रतियोगिता का कार्यक्रम हुआ जिसकी मुख्य अतिथि श्रीमती राज तनेजा थी। १२ अक्टूबर को वाग्वर्धिनी सभा ने भजन सम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित किया जिसकी मुख्य अतिथि कुमकुम भाटिया थी। १३ अक्टूबर को स्कूलो की वाद विवाद प्रतियोगिता हुई जिसके सयोजक श्री रोशनलाल खन्ना थे।

१५ अक्टूबर सोमवार को आर्य स्त्री समाज ने अपना ८३वा वार्षिक उत्सव मनाया। आर्य वैदिक नर्सरी तथा प्राइमरी स्कूल के बच्चो ने सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती निर्मला हाडा थी।

शोक सभा

२३ ९ २००१ को आर्य समाज बहल जिला भिवानी मे श्री श्रीराम गिगनाऊवाले बहल के देहावसान पर हुई शोक सभा में उनके शोक मे दो मिनट का मौन रख कर उनकी आत्मा को शाति प्रदान करने की प्रार्थना की गई। श्री बहल लम्बे समय तक प्रधान पद पर व अन्य पदो पर रहते हुए आर्य समाज की सेवा करते रहे। उनके निधन से आर्य समाज ने एक अमूल्य सेवाभावी कर्मठ कार्यकर्ता खो दिया जिसकी भरपाई होना बहुत कठिन है।

'धर्म-दर्शन-सस्कृति' पुस्तक का लोकार्पण

देहरादून प्राचीन धर्मग्रथ वेद एव पुराण को पढने मे जो लोग रुचि रखते है वे उस भाषा मे भी जिज्ञासा रखते है, जिसमे इन धर्मग्रथो की रचना की गयी है।

श्री बरनाला ने ये उद्गार आज राजभवन मे डा० रूपकिशोर शास्त्री द्वारा रचित तथा वैदिक क्राति परिषद् द्वारा श्रीमती सरस्वती सिह की स्मृति मे प्रकाशित 'धर्म-दर्शन-सस्कृति' पुस्तक के लोकार्पण समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे व्यक्त किये। इस अवसर पर राज्यपाल द्वारा एक अन्य पुस्तक 'वैदिक वाड्मय निर्वचन कोष' पुस्तक का भी लोकार्पण किया गया।

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय '**आर्य जगत्**' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 मे प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718 3362110) सम्पादक–**उदयवीर 'विराज'**

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वय श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये

विदेशो मे ३० पौड या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये

वर्ष ६६, अक ३९
दयानन्दाब्द १७८

दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९

रविवार, २५ नवम्बर, २००१
कार्तिक शु०-१०-वि० स०-२०५८
सप्ताह २५ नवम्बर से १ दिसम्बर

मृत्युञ्जय महर्षि दयानन्द और गुरुदत्त विद्यार्थी

❑ प० मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

नियमित स्वाध्याय करते समय इस मत्र पर एकदम दृष्टि रुक गई और गहन चिन्तन हेतु मन थम सा गया। मत्र इस प्रकार था

ओ३म् मृत्युरीशे द्विपदा
मृत्युरीशे चतुष्पदाम्।
तस्मात्त्वा मृत्योर्गोपते-
रुद् भरामि स मा बिभे।

-अथर्ववेद ८ २ २३

अर्थ— दोपायो पर मृत्यु शासन करता है, और मृत्यु ही चौपायो पर शासन करता है। उस गोपति (इन्द्रियो के स्वामी) मृत्यु से तुझको ऊपर उठाता हू, बचाता हू। तू मृत्यु से बिल्कुल मत डर। यहा मृत्यु को 'गोपति' इसलिए कहा गया है कि इसका शासन केवल शरीर की इन्द्रियो पर ही, केवल 'छिति जल पावक गगन समीरा, पच रचित यह महा सरीरा' अर्थात् इन तत्वो से बने इस शरीर और शरीर मे विद्यमान इन्द्रियो तक ही है। किन्तु यह सिद्धान्त सदैव स्मरण रखने योग्य है कि "आत्मा पर मृत्यु का अधिकार नही, आत्मा अजर अमर है।" ऋषि समझाते हुए कहते है कि तू मृत्यु से मत डर, तू चाहे तो मै तुझे इस गोपति मृत्यु से बचा सकता हू। शरीर वियोग मृत्यु नही, मृत्यु तो अशस्ति = निन्दित आचरण है, इसको छोड दे। फिर मृत्युपाश = मौत के फन्दे टूट जाएगे। इसी प्रकार अथर्ववेद मे एक स्थान पर मनुष्य को निर्भीक बनाने हेतु कहा गया है — इस अशस्ति अर्थात् मृत्यु के भय से छूटने का एकमात्र साधन है "ब्रह्म को अपना घेरा बना लेना।" **ब्रह्मास्मै वर्म कृण्मसि** अर्थात् हम ब्रह्म को कवच बना देते है। ब्रह्म कवच पर मृत्यु वार नही कर सकती। यदि जीवन की इच्छा है, तो कहना चाहिए— **ब्रह्म वर्म ममान्तरम्** (ऋग्वेद ६ ७५ १९) अर्थात् ब्रह्म मेरा अन्दर का कवच है।

ब्रह्म कवच

वेदोद्गायक महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद की इस ऋचा के अनुसार परमेश्वर (ब्रह्म) को अपने अन्दर का कवच धारण कर रखा था। कहा जाता है कि महाराणा प्रताप युद्ध मे जाते समय ऊपर बख्तरबन्द (लौहकवच) तथा अन्दर परमात्मा की भक्ति का कवच धारण कर बाहर प्रस्थान करते थे और विजयी होकर लौटते थे।

मृत्यु हार गई

मृत्यु से पूर्व महर्षि दयानन्द ने सन्यास धर्म के अनुसार फफोलो से भरे अपने सिर का क्षौर भी करवाया था। क्षौर-कर्म कराते समय भी उन्होने कष्ट नही अनुभव किया था। निकट खडे हुए डाक्टर ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा था "नापित (नाई) के तेज उस्तरे की धार से फफोले कटने पर भी इस सन्यासी ने आह या उफ तक नही किया। ऐसी कौन सी बात है कि यह सन्यासी शारीरिक कष्ट अनुभव ही नही कर रहा है।" कौन जानता था कि महर्षि दयानन्द ने अन्दर से ब्रह्म को अपना कवच बना रखा था। मृत्यु उनके सम्मुख बेबस खडी थी। वह केवल दयानन्द की इन्द्रियो को ही नष्ट कर सकती थी अन्दर विद्यमान आत्मा तो पूर्ण सुसस्कारित थी। मृत्यु आत्मा को पूर्व मे नही मार सकी है, वर्तमान मे भी नही मार सकेगी और भविष्य मे आत्मा की अजरता, अमरता के सम्मुख सदैव की भाति पराजित होती रहेगी।

अन्तिम दृश्य ने उन्हे महान आस्तिक बना दिया।

गुरुदत्त विद्यार्थी ने देखा कि स्वामी दयानन्द की मृत्यु का समय ज्यो ज्यो निकट आ रहा था, त्यो त्यो उनके मुख मडल पर विचित्र सी शाति बढती जाती थी। उनके ओठो पर मुस्कराहट थी, उनकी आखे कुछ आतुर सी दिखाई पड रही थी, मानो वे किसी से मिलने के लिए आतुर हो रहे हो। उन्हे मृत्यु का तनिक भी भय नही था। अन्तत यह सब क्यो और फिर दयानन्द बाई ओर लेट गये और महाप्रयाण कर गये। दयानन्द की इस अन्तिम मुस्कराहट ने ही गुरुदत्त विद्यार्थी को महान आस्तिक बना दिया। —लेखक

और हा, आज अमावस्या की साझ को मृत्यु अपने दल-बल सहित दयानन्द को पराजित करने आई थी, किन्तु स्वय पराजित हो कर चली गई। शिकार करने आई थी वह, किन्तु स्वय शिकार बन गयी। अजमेर के भिनाय महालय मे सायकाल महर्षि दयानन्द ने कहा था 'सब ओर के दरवाजे और खिडकिया खोल दो। मेरे सम्मुख कोई भी मत खडे रहो।' विज्ञान का विद्यार्थी अपने साथियो के साथ दयानन्द के सिर की ओर खडा हुआ यह सब कुछ देख रहा था। मृत्यु के कुछ समय पूर्व ऋषि दयानन्द उठे और आसन लगा कर अपना प्रिय वेद मत्र "**ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्र तन्न आसुव।**" (यजु० ३० ३) का धीमे स्वर मे पाठ किया, फिर कुछ और मन्त्रो का ओठ हिलाकर उच्चारण किया। फिर तख्त पर बाई ओर मुस्कराते हुए लेट गये। फिर बोले, "प्रभु तेरी इच्छा, तूने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो। ओ३म् " कहते हुए एक दीर्घ स्वास ली और फिर उसे छोड कर अपने प्रिय प्रभु की शरण मे सदा के लिए चले गये। उस सास के साथ 'ब्रह्म के कवच से लम्पित वह महान आत्मा भी दयानन्द के शरीर को छोड कर चली गई। मृत्यु अपनी पराजय पर झुझलाती वापस लौट गई। अन्तिम दृश्य था यह उस भिनाय महालय मे।

अन्तिम समय मे दयानन्द के ओठो की मुस्कराहट, शान्त मुखमडल तथा नेत्रो मे किसी प्रिय से मिलने की शीघ्र आतुरता ने विज्ञानाचार्य प० गुरुदत्त के नास्तिक मन मस्तिष्क को झकझोर डाला। उन्हे अनुभव हुआ कि मृत्यु को केवल ब्रह्म को आन्तरिक आत्मा का कवच बनाकर ही पराजित किया जा सकता है। एक दार्शनिक से पूछा गया "क्या कारण था कि सुकरात ने अपने ही हाथो से जहर का प्याला पकड कर पूरा जहर पी लिया? बदा बैरागी अपने शरीर पर पडे कोडो की मार से उफ तक नही करता था। हकीकत राय ने हसते हसते अपनी गर्दन पैनी तलवार के सम्मुख आगे कर दी। अनेक देशभक्त हसते हसते फासी के फदे को गले मे लटका कर मातृभूमि पर बलिदान हो गये। दयानन्द के शरीर पर घातक विष उसकी मुस्कान नही छीन सका?" उस दार्शनिक ने इन सभी प्रश्नो का उत्तर एक वाक्य मे इस प्रकार दिया "जब आत्मा अपना सम्बन्ध शरीर की इन्द्रियो से पूरी तरह हटा लेता है, तब शारीरिक वेदनाओ का अनुभव वह नही करता। उस समय उस आत्मा का सम्बन्ध आनन्दकन्द परमात्मा से हो जाता है और वे आनन्द के साथ झूमने लगते है, हसने लगते है तथा दयानन्द के समान मुस्कराने लगते है।"

महर्षि दयानन्द के शरीर का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण होने के उपरान्त गुरुदत्त विद्यार्थी इसी सस्कार को लेकर लाहौर वापस लौट आये। वे महर्षि दयानन्द की मृत्यु के इस अन्तिम दृश्य से इतने प्रभावित हुए कि वे पूर्ण आस्तिक बन कर लौटे और वैदिक धर्म के प्रचार मे मृत्यु पर्यन्त लगे रहे।

[illegible]

यहा हम एक महत्वपूर्ण बिन्दु 'महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ' पर कुछ विचार करना चाहते है। डा० वामन शिवराम आप्टे द्वारा सम्पादित सस्कृत-हिन्दी कोष मे निर्वाण का अर्थ फूक कर बुझाया हुआ (आग या दीपक की भाति), माया या प्रकृति से मुक्ति पाकर मिलन, शाश्वत आनन्द। बौद्ध विषयक— सासारिक जीवन से व्यक्ति का पूर्ण निर्वाण, बौद्धो की मोक्ष प्राप्ति, पूर्ण और शाश्वत शान्ति। साहचर्य, सगम। (पृष्ठ ५३९) कुछ आर्य विद्वानो की धारणा या सम्मति है कि महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ था। यदि इस तथ्य पर वैदिक दृष्टिकोण से विचार करे तो महर्षि दयानन्द 'सान्त मोक्ष के समर्थक थे। उन्होने सस्कार विधि मे स्पष्ट लिखा है कि "अल्पज्ञ जीवात्मा के सान्त कर्म होते है। सान्त कर्मो का फल अनन्त नही हो सकता। मुक्ति के पश्चात् जीव का इस लोक मे पुनरागमन होता है।" इस वैदिक सिद्धान्त को दृष्टिगत रखकर यह कहा जा सकता है कि 'दीपावली की अमावस्या पर महर्षि दयानन्द का बलिदान हुआ था। यह उनका निर्वाण दिवस नही है। महर्षि दयानन्द

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' मे प्रकाशित लेखो मे व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

उपनिषत्सुधा

कर्म चक्र सर्वव्यापी, सर्वज्ञ ईश्वर के चलाये चल रहा है

❑ स्वामी श्रद्धानन्द

येनावृत विश्वमिद हि सर्व
ज्ञ कालकारो गुणी सर्वविद्य।
तेनेशित कर्म विवर्तते ह
पृथ्व्यप्तेजोऽनिलखानि चिन्त्यम्॥
श्वेताश्वतर० ६/२

अर्थ-- (**येन**) जिसके द्वारा (**इद सर्व हि नित्य आवृत**) यह सब सदा ही घिरा हुआ है, (**य**) जो (**ज्ञ**) जानने वाला, (**गुणी**) सद्गुणो से युक्त और (**सर्ववित्**) सर्वज्ञ है। (**तेन ईशित कर्म ह विवर्तति**) सारे कर्म निश्चय से उसकी इच्छा या प्रेरणा से ही हो रहे है। (**पृथ्व्यप्तेजोऽनिलखानि चिन्त्यम्**) पृथ्वी, अप् अर्थात् जल, तेज अर्थात् अग्नि, अनिल अर्थात् वायु और ख अर्थात् आकाश आदि भूत इसे चला रहे है, यह बात सोचने की है।

मनन—जिससे यह सारा ब्रह्माण्ड सदा आच्छादित रहता है, जो काल का भी कर्ता, गुणो का स्वामी, सर्वज्ञ है। सब ससार के कर्मो का निरीक्षक, भिन्न भिन्न प्रकारो से पालन करता है और पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश भी उसी के वश मे है, यही विचारणीय है।

स्वभाव और काल को ब्रह्माण्ड-चक्र के चलाने मे हेतु मानने वालो की दृष्टि विचारते विचारते अन्त मे विस्तार पकडती है। उस समय उन्हे प्रतीत होता है कि जहा स्वभाव और काल का विचार वर्तमान ससार-चक्र से बाहर निकलना कठिन है वहा इस ब्रह्माण्ड तक ही हस्ती की समाप्ति नही।

स्वाभाविक प्रश्न उठता है, क्या यहा तक ही जीवात्मा का अन्त है या उसे इससे आगे चलना है? और यदि चलना है तो इसका लक्ष्य क्या है? ऋषि बतलाते है कि लक्ष्य ब्रह्माण्ड से बहुत परे है, यद्यपि ब्रह्माण्ड के अन्दर ही उसकी प्राप्ति होती है।

जड प्रकृति के कार्य देख कर कभी निश्चय नही हो सकता कि इसके अन्दर अपने आप सुन्दर से सुन्दर और सूक्ष्म से सूक्ष्म कालान्तर बन जाने की शक्ति वर्तमान है, परन्तु ससार की बनावट एक ओर, तथा मनुष्य शरीर की बनावट दूसरी ओर स्पष्ट तौर पर साक्षी देती है कि उनके बनाने वाले के अन्दर पूर्ण बुद्धि और पूर्ण शक्ति उपस्थित थी। बस, जो पुरुष इस सारे ब्रह्माण्ड को न केवल चला रहा है, अपितु जो उससे भी व्यापक और उसे घेरे हुए है, जो सबसे बडा, काल को भी नियम मे रखने वाला और सब गुणो का और वस्तुओ का सम्बन्ध पैदा करने वाला है वह स्वरूप से चेतन है, सारा विश्व उसके वश मे है क्योकि इस सारे ससार को नाना प्रकार के रूप उसी ने प्रदान किए है और वही उन सब रूपो का अन्तिम आधार भी है।

जब यह अवस्था है तो क्या इससे सन्देह हो सकता है कि सब मनुष्य, स्त्री-पुरुष, वृद्ध, युवा, बालक, सब के सब उसी के अन्दर अपने कर्मो को पूरा कर रहे है। जब कोई स्थान भी उस परमात्मा से खाली नही, जबकि वह न केवल बाह्य ससार मे ही व्यापक है, अपितु जीवात्मा के सूक्ष्म स्वरूप के अन्दर भी अतीव सूक्ष्म रूप मे उपस्थित है। फिर न केवल यही, किन्तु जब वह सारे ब्रह्माण्ड को अपने अन्दर ढापे हुए है तो कौन कह सकता है कि मै एक काम भी उसकी सहस्राक्ष शक्ति से छिपके कर सकता हू। वह हमारे दिन और रात के कर्मो का समान रूप से साक्षी है। अधेरी से अधेरी कोठरी मे किया हुआ कर्म भी उससे छिप नही सकता। मन के छिपे से छिपे कोने मे बुरा चिन्तन उससे छिपा नही रह सकता। जब यह अवस्था है और जब वही कर्मो का फल-प्रदाता है तो हम सब कैसे मूर्ख है जो छिप छिप कर कर्मो के करने से अपना छुटकारा समझ लेते है!

पाठकगण! आओ, एक पल के लिए शुद्ध हृदय से विचार करे कि क्या चलते फिरते, उठते बैठते, हमारे अन्दर अत्यन्त दुष्ट विचार नही उठते? जब प्रसन्न मुख और उससे प्रकाश टपकता मालूम होता है उस समय हृदय कैसा मलिन और मन कैसा कलुषित होता है! क्या हम समझते है कि यह मन की मलिनता हमने परमेश्वर से छिपा ली है? कौन सा विचार है जो उसके सन्मुख शीशे की तरह स्पष्ट नही? फिर बाह्य आडम्बरो से वास्तव मे छुटकारा कब हो सकता है?

तुम समझते हो कि एक बार पाप का विचार करके यदि किसी प्रकार से बच गए तो बस छुटकारा हो गया। परन्तु क्या तुम नही जानते कि तुम्हारी स्मरण शक्ति तुम्हारे साथ ही है? वह कदाचित् कभी दम नही लेने देगी। वह उस पाप से डूबे हुए विचार के भयानक चित्र को हर समय तुम्हारे सन्मुख रखेगी। कही जाओ, कही ठहरो, उठते, बैठते, जागते और सोते हुए भी स्वप्न मे वही चित्र तुम्हारे आगे रहेगा। तुम्हारे जीवन को पल-पल मे वह चित्र खाता जाएगा। इसलिए बन्धुवर्ग! आओ, सम्भलने का समय है। जहा न्यायकारी परमात्मा हर समय हमारे कुकर्मो के लिए हमको दण्ड देने के लिए तैयार रहते है वहा सच्चा पश्चात्ताप करके उलटे मार्ग को छोडने की इच्छा पर हमारी उस जलती हुई आग से मातृवत् रक्षा भी करते है।

न्यायप्रिय भेड़िया

एक भेडिया रात मे एक गडरिये के भेडो के बाडे मे जा घुसा। वहा उसने एक भेड मारी।

अभी कुछ ही दूर गया था कि सामने से आता एक बाघ मिल गया। बाघ ने गुर्रा कर भेडिये से कहा 'भेड को छोड दे। मै खाऊगा।"

कोई उपाय नही था। बाघ के डर से भेडिये ने भेड छोड दी। बाघ वही बैठकर उसे खाने लगा।

भेडिया कुछ देर तो चुप खडा देखता रहा, जब उससे रहा न गया, तो बोला "यह बहुत बुरी बात है कि आपने जोर जबरदस्ती मुझसे भेड छीन ली! यह सरासर अन्याय है।"

बाघ ने बिना उसकी ओर मुह उठाये, खाते-खाते कहा 'ओ न्यायमूर्ति, चुपचाप चला जा। तू तो इस भेड को शायद गडरिये से खरीदकर ला रहा था?"

पाकिस्तान के राष्ट्रपति मुशर्रफ कह रहे है कि अमेरिका ने उन्हे वचन दिया था कि उत्तरी गठबधन को काबुल पर कब्जा नही करने दिया जायेगा, परन्तु उत्तरी गठबधन ने कब्जा कर लिया, पर अमेरिका ने इसे रोकने के लिए कुछ नही किया। यह अमेरिका ने वचन भग किया है।

परन्तु पाकिस्तान ने तालिबान से क्या किया है?

—सुनीति
२७, राजपुर रोड, दिल्ली-५४

धरती सजी रहे वीरों से

प्रस्तुत गीत इस देश के अनेक महापुरुषो एव बलिदानियो की स्मृति मे लिखा गया है। इस गीत मे उन महापुरुषो के कार्यो को जनसाधारण की भाषा मे सक्षिप्त रूप से दर्शाया गया है। इस गीत को गुनगुनाने से निश्चित रूप से राष्ट्रहित मे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले महापुरुषो की जानकारी मिलेगी। परिवारो मे बहन बेटिया इस गाने को अच्छे स्वर मे गाये, तो निश्चित रूप से भारतीय समाज पर चढते जा रहे अश्लील, भद्दे गानो से मुक्ति पाने की भावना प्रज्वलित होगी। विवाह, जन्मदिन आदि सुअवसरो पर हमारे परिवार की महिलाए निम्नलिखित देशभक्ति से ओतप्रोत गीत गाये, तो उस अवसर की सुन्दरता और अधिक बढेगी।

गीत

श्री विद्यार्णव शर्मा अग्निहोत्री

जय जय भारत देश महान, धरती सजी रहे वीरो से।
सजी रहे वीरो से, धरती सजी रहे वीरो से
जय जय भारत देश महान, धरती सजी रहे वीरो से।
भारत का धर्म बचायो, परिवार को भेट चढायो,
जय जय गुरु गोविन्द महान! धरती सजी रहे वीरो से।
अन्धकार था छायो, वेदो का उजाला लायो,
गुरुवर विरजानन्द महान! धरती सजी रहे वीरो से।
पाखड को दूर हटायो, और सन्ध्या हवन सिखायो,
जय जय दयानन्द महाराज! धरती सजी रहे वीरो से।
गुरुकुल आश्रम खुलवायो, विधवा उद्धार करायो,
स्वामी श्रद्धानन्द महान! धरती सजी रहे वीरो से।
दलितो उद्धार करायो, और डी० ए० वी० खुलवायो,
त्यागी हसराज महाराज! धरती सजी रहे वीरो से।
जगे आजादी मे आर्यो, भारत आजाद करायो,
अपना अशफाक उल्ला महान! धरती सजी रहे वीरो से।
फासी का दिन भी आयो, पर यज्ञ नही विसरायो,
बिसमिल मा का पुत्र महान! धरती सजी रहे वीरो से।
मा विद्यावती का जायो, पिता किशनसिह सा पायो,
फासी चूमे भगत महान! धरती सजी रहे वीरो से।
सेना मजबूत बनायो, पृथ्वी अग्नि भी लायो,
अपना अबूल पकीर महान! धरती सजी रहे वीरो से।
जय जय भारत देश महान, धरती सजी रहे वीरो से!
सजी रहे वीरो से, धरती सजी रहे वीरो से।
भगवन राष्ट्र को दो वरदान, धरती सजी रहे वीरो से।

अबुल पकीर— ये भारतवर्ष के महान वैज्ञानिक है। पृथ्वी, अग्नि मिसाइल का निर्माण इन्ही के निर्देशन मे हुआ है। इनका पूरा नाम डा० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम है (डा० अब्बुल पकीर जैनलाबुदिन अब्बुल कलाम)। भारतीय सेना को और अधिक मजबूत बनाने के कार्यो मे बहुत व्यस्त रहते है। अविवाहित है, पूर्णत शाकाहारी है।

पुलिस निरीक्षक, एम आई जी.-८८, अवन्तिका कालोनी, रामघाट मार्ग, अलीगढ

मैं अधिक आर्य हूं, तुम कम आर्य हो

सम्पादकीय

दुनिया भर के मुसलमान सऊदी अरब को असली मुस्लिम देश मानते है और वहा प्रचलित इस्लामी शासन को सही इस्लामी शासन पद्धति मानते है। वहा हाथ के बदले हाथ और आख के बदले आख की न्याय प्रणाली है। न्याय तत्काल है और दड कठोर है। मृत्यु पर शोक मनाना मना है, क्योकि मृत्यु अल्लाह की इच्छा से हुई है।

और भी सच्चा इस्लाम

परन्तु ओसामा बिन लादेन का कहना है कि सऊदी अरब का इस्लाम भी सच्चा इस्लाम नही है, क्योकि वह अपनी भूमि पर काफिर अमेरिकनो को रहने दे रहा है। सच्चा इस्लाम अफगानिस्तान मे तालिबान का है, जो इस्लाम से भिन्न किसी मजहब को सहन ही नही करते। जो स्त्रियो को बुर्के मे ढक कर रखते है और उन्हे पढ़ने लिखने या दफ्तरो मे काम करने नही देते। वे ईरानी शिया मुसलमानो को मुसलमान ही नही मानते। इस अविवेकपूर्ण कट्टरता को 'तालिबान' शब्द मे प्रकट किया जा सकता है। यो तालिबान का अर्थ है जिज्ञासु, शोधार्थी, विद्यार्थी, परन्तु अफगानिस्तान मे तालिबान ने पाच साल के शासन मे अपनी जो छवि बना ली है, उससे तालिबान का अर्थ बन गया है चरमपथी, असहिष्णु धर्मान्ध मुसलमान।

मेरी समझ ही सत्य है

तालिबान का कहना है कि कुरान और शरीया का जो अर्थ मै समझता हू, वही सत्य है। जो उसे नही मानता, वह काफिर है। और काफिरो को जीने देना पाप है। सारी पृथ्वी पर मुसलमानो का शासन स्थापित करना हमारा लक्ष्य है।

यह है असहिष्णुता की चरमपथी नीति, जो अपनी हर सही या गलत इच्छा दूसरे पर थोपना चाहती है। दूसरा व्यक्ति कैसे रहे, क्या खाये, क्या पहने, इसका निर्णय मै करूगा, क्योकि मै मजहब का ठेकेदार हू, क्योकि मेरे हाथ मे बन्दूक है, छुरा है। जिसे मैने हरा दिया है, उसे मेरा गुलाम बन कर जीना होगा।

इसमे मज़हब की तो केवल आड है, असली चीज है शक्ति का अहकार, प्रभुत्व की अदम्य सीमाहीन लालसा। आज के लोकतत्रीय युग मे उसकी गुजाइश नही है।

व्यक्ति की स्वतत्रता

लोकतत्र मे माना यह जाता है कि सब लोग एक ही भगवान् की सन्तान है। उन्हे स्वतत्रता होनी चाहिए कि वे चाहे जैसे जीये, जब तक कि वे दूसरे की वैसी ही स्वतत्रता मे बाधक नही बनते। व्यक्ति की स्वतत्रता और शरीया कानून एक दूसरे के विलोम (उलट) है। तालिबानी शरीया अन्धी तानाशाही है, जिसमे अपनी इच्छा दूसरो पर थोपी जाती है। छुरेबाज़ बाकी सब लोगो को भेड बकरी की तरह गुलाम बना कर रखना चाहता है।

आर्य समाज भी तालिबानी मनोवृत्ति का शिकार हो गया है। हम आपस मे मिल कर बैठे, दूसरे की बात समझे, अपनी समझाये, कुछ खुद दबे, कुछ दूसरे को दबाये, जिससे हमारी एकता बनी रहे—यह भावना समाप्त हो गई है। **'सगच्छध्व सवदध्व'** की बात जीभ पर ही रह गई है।

तदर्थ समितियां

स्वामी आनन्द बोध जी का देहावसान सन् १९९४ मे हुआ। वह अनेक वर्षो तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे। उनके कार्यकाल मे उन आर्य प्रतिनिधि सभाओ या आर्य समाजो की, जो उन्हे अनुकूल नही लगती थी, निर्वाचित अन्तरग सभाओ को भग करके तदर्थ समिति गठित करने की परम्परा चली। इसका परिणाम यह होता था कि सार्वदेशिक सभा मे वे ही प्रतिनिधि आ पाते थे, जो एक विशेष गुट के अनुकूल होते थे।

मुकदमेबाज़ी

स्वामी आनन्दबोध जी के देहावसान के बाद सन् १९९५ मे सार्वदेशिक सभा के चुनाव हुए, जिनमे श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् को प्रधान चुना गया। इस चुनाव के विरुद्ध स्वामी सुमेधानन्द जी आदि ने न्यायालय मे दावा डाल दिया कि असली प्रधान श्री वन्देमातरम् नही है। ऐसे मुकदमो मे जल्दी फैसला नही होता। सन् १९९८ मे फिर चुनाव हुए, जिनमे स्वामी ओमानन्द जी प्रधान और श्री सूर्यदेव (स्वामी आनन्दबोध जी के दामाद) मत्री चुने गये। इस चुनाव मे भी शिकायत थी कि बहुत से प्रतिनिधियो को सभा मे घुसने ही नही दिया गया। इस चुनाव को श्री सोमनाथ मरवाह आदि ने न्यायालय मे चुनौती दे दी। मुकदमा घिसटता रहा।

प्रशासक नियुक्त

१५ अगस्त की रात को श्री सोमनाथ मरवाह का निधन हो गया। उससे एक सप्ताह पहले ही उन्होने न्यायालय मे अपने मुकदमे मे समझौता करवा दिया था, जिसके अनुसार न्यायालय ने श्री आर ऐन मित्तल और श्री रामफल बसल को सार्वदेशिक सभा का चुनाव अधिकारी और प्रशासक नियुक्त किया था। श्री बसल सार्वदेशिक की न्यायार्य सभा के अध्यक्ष भी थे।

श्री आर० ऐन० मित्तल ने न्यायालय से कहा कि निजी व्यस्तताओ के कारण वह चुनाव अधिकारी और प्रशासक के रूप मे कार्य नही कर पायेगे। तब न्यायालय ने कहा कि अकेले श्री रामफल बसल ही चुनाव का कार्य पूरा करा दे।

कडे फैसले

स्वामी ओमानन्द जी को लगा कि श्री रामफल बसल किसी एक गुट को प्रश्रय दे रहे है। उन्होने श्री बसल को न्यायार्य सभा के पद से हटा दिया। उन्होने न्यायालय मे श्री रामफल बसल को चुनाव अधिकारी तथा प्रशासक पद से हटाने के लिए भी आवेदन दिया, जिसे न्यायालय ने स्वीकार नही किया। इस निर्णय के विरुद्ध स्वामी ओमानन्द जी ने उच्च न्यायालय मे अपील कर दी। इस पर श्री बसल ने स्वामी ओमानन्द जी को आर्य समाज की सदस्यता से निष्कासित कर दिया और आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा को भी भग करके वहा एक तदर्थ समिति बना दी।

चुनावो से पहले ही कुछ लोगो ने अनुरोध किया था कि पहले विभिन्न राज्यो की आर्य प्रतिनिधि सभाओ के विवादो का सतोषजनक हल निकाला जाये। कई राज्यो मे दो दो समानान्तर प्रतिनिधि सभाए काम कर रही है। उत्तर प्रदेश, आध्र प्रदेश और हरियाणा मे भी दो प्रतिनिधि सभाए हो गई है। झारखड वालो को शिकायत है कि उनकी अलग प्रतिनिधि सभा को मान्यता नही दी जा रही।

सद्भावना नही

सगठन के हित की दृष्टि से राज्यो की आर्य प्रतिनिधि सभाओ को मेलजोल और सौहार्द की भावना से निपटा लेना उचित होता। परन्तु न्यायालय द्वारा नियुक्त, अधिकार सम्पन्न प्रशासक मे इतना धैर्य नही होता। परिणाम यह हुआ कि कई राज्यो से एक गुट की प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि मान्य किये गये, दूसरी के नही।

यह भी शिकायत रही कि तमिलनाडु से, जहा कि यथेष्ट आर्य समाजे ही नही है, प्रतिनिधि मान्य किये गये। इन शिकायतो मे कितनी सच्चाई है, इसकी बारीकी मे गये बिना भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि सारा काम **'सगच्छध्व'** की भावना से नही हुआ, भले ही कानूनी खानापूरी की दृष्टि से सही हुआ हो।

सर्वसम्मत चुनाव

सभा के प्रधान का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ। स्वामी धर्मानन्द जी का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तावित किया गया था, परन्तु उन्होने स्वय उसे वापस ले लिया और अपना आशीर्वाद कैप्टेन देवरत्न जी को दिया।

गलत परम्परा

इसके बाद नये प्रधान को यह अधिकार दिया गया कि वह अपनी अन्तरग सभा का गठन स्वय कर ले।

हमारे विचार से यह कार्य गलत और अलोकतान्त्रिक है। साधारण सभा मे उपप्रधान, मत्री, उपमत्री, कोषाध्यक्ष आदि का चुनाव मतदान द्वारा होना चाहिए। सभासद अपने अधिकार को क्यो इस प्रकार प्रधान को सौप देते है? जब प्रधान का इतना बडा बहुमत है, तब उसकी पसन्द के लोगो को आसानी से चुना जा सकता है। फिर भी वह नाटक तो पूरा किया जाना चाहिए। प्रतिनिधि लोग अपना समय निकाल कर इतनी दूर से आते है, तो इतना काम तो उन्हे करना ही चाहिए। सारे अधिकार प्रधान को सौप देना अस्वस्थ परम्परा है। यह सस्था के निर्जीव होने का चिह्न है। इसमे निर्वाचन कठपुतलियो का नाच बन जाता है।

सर्वसम्मत चुनाव भी कुछ भला लक्षण नही है। यह जोड-तोड का परिणाम होता है। सर्वसम्मति तो तभी प्रकट हो गई, जब कुछ असन्तुष्ट प्रतिनिधियो ने सडक पर खडे होकर अपना अलग चुनाव करके अलग प्रधान, मत्री और अतरग सभा बना ली। मामला जहा से शुरू हुआ था, वही फिर पहुच गया।

बलात् कब्जा

खबर है कि हरियाणा के कुछ आर्यजनो ने बलपूर्वक गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय पर कब्जा करने की चेष्टा की। वहा गोली चलने की भी खबर है। पुलिस ने इस चेष्टा को विफल कर दिया।

यह सब क्या स्वामी दयानन्द के सपनो को पूरा करने के लिए किया जा रहा है? महात्मा मुशीराम ने भिक्षुक की झोली फैला कर जो दान इकट्ठा किया था, उससे खरीदी गई भूमि और बनाये गये भवनो को हथिया कर, बेचकर सुख समृद्धि सचित करने के लिए यह सारी भाग दौड है।

कब्ज़ा किस लिए?

गुरुकुलो की भूमिया बेची जा रही है। पजाब सभा ने भी बेची है, हरियाणा और दिल्ली सभा ने भी बेची है। उन्होने ही एक दूसरे की पोल भी खोली है कि किसने क्या कुछ बेचा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुकुल की स्वामिनी सभा है। औपचारिक रूप से गुरुकुल की सारी सम्पत्ति उसके नाम है। इसका यह अर्थ कदापि नही है कि यह सम्पत्ति उसकी है और वह उसका चाहे जैसा उपयोग कर सकती है। वह उसकी न्यासधारी (ट्रस्टी) मात्र है। जिस उद्देश्य के लिए वह भूमि या सम्पत्ति ली गई थी, उससे भिन्न उसका उपयोग करना पाप है, अपराध है।

सभा मालिक नही न्यासी है

१९ मई १९९१ को गुरुदत्त भवन, जालन्धर मे श्री वीरेन्द्र की अध्यक्षता मे हुई आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अतरग

(शेष पृष्ठ १० पर)

इंग्लैंड में वेद प्रचार यात्रा पर

❑ ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त, वी. ऐस ऐम

आर्य समाज, वैस्ट मिड्लैड्स, बरमिघम का विशाल सभागार। चहल पहल है। भारतीय मूल के ब्रिटिश नागरिक, ब्रिटिश मूल के नागरिक, नर नारी, बाल वृद्ध, काले-गोरे अपने सर्वोत्तम परिधान मे उपस्थित है। यहाँ के सभी उत्साही भारतवशी मिलकर भारतीय स्वतत्रता दिवस मना रहे है। आर्य समाज के कई पूर्व प्रधान और वर्तमान प्रधान कदम से कदम मिला कर चल रहे है। **"सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम्** " का अनुपम जीता जागता उदाहरण है आर्य समाज वैस्ट मिड्लैड्स।

स्वतत्रता दिवस पर हवन

स्वाधीनता दिवस की वर्षगाठ के आरम्भ मे हुआ हवन। विदेशियो का मन मोह लेने वाला हवन विधिवत् सम्पन्न हुआ। महिला मडल की भजन मडली ने वैदिक भजन के गुजन मे विदेशियो को भी प्रभावित किया। भारतीय उच्चायोग के बरमिघम कॉसुलेट के प्रतिनिधि एव स्थानीय हिन्दी-पजाबी, कवि-गायक भी आये। समय आया राष्ट्रीय ध्वज के औपचारिक ध्वजारोहण का। आर्य समाज बरमिघम के प्रधान, डॉक्टर नरेन्द्र कुमार आर्य ने मुझसे कहा कि कारगिल विजय के उपलक्ष्य मे, भारतीय सशस्त्र सेनाओ का प्रतिनिधित्व करते हुए तिरगा झडा मै ही लहराऊँ। उपस्थित जन समूह और नरेन्द्र जी की भावना का सम्मान करते हुए मैने सैन्य-श्रद्धा से ध्वज लहरा दिया। सावधान मुद्रा मे खडे होकर सभी ने राष्ट्रीय गान गाया।

स्वाधीनता के पावन पर्व पर रगारग सास्कृतिक कार्यक्रम भारतीयो ने प्रस्तुत किया। महिलाओ मे अग्रणी थी श्रीमती शमा कुमार, सुश्री विभा केल और बच्चो मे प्रिजा परिवार प्रमुख महाशय अगिरा देव के पोते व नाती। मच सचालन आर्य समाज के मत्री, श्री बृज भूषण शरण अग्रवाल कर रहे थे, प्रशासनिक सहायता मे थे युवा आर्य राजीव दत्ता और उनकी पुत्री शिखा। धर्माचार्य सोनेराव जी ने गीत गाया। शमा जी, उन्हे कहिए कोकिल कठी, का स्वर सभागार मे गूँजने लगा, "ऐ मेरे वतन के लोगो जरा ऑख मे भर लो पानी " तो श्रोताओ की अश्रुधारा बह निकली। मन द्रवित हो उठा, हम सभी देश प्रेम से ओत प्रोत थे। कहते है जब सुश्री लता मगेशकर ने श्रोता समक्ष इस गीत से शहीद सैनिक को श्रद्धाजलि दी, तो प जवाहरलाल नेहरू रो पडे थे। आज बरमिघम का दृश्य भिन्न न था। शमा जी को मिली तालियो की गूँज और जन सराहना। फिर गूँज उठा तबला, वह भी युगलबन्दी। ऐसा लगा जैसे उस्तादो के उस्ताद बजा रहे हो। मच पर थे दो किशोर। वैदिक धर्म के प्रति समर्पित प्रिजा परिवार के होनहार भविष्य। उन्हे भी मिली श्रोता-सराहना। विभा केल (अग्रेजी नाम—उनके अग्रेज़ पति का है, जो भारत के आर्य समाज मे "आर्य" बन कर "कर्ण" कहलाए — अब दिवगत) के गीत मे देश के लिए दर्द था, एक टीस थी, जिसे उमग उजागर नही होने दे रही थी।

कारगिल की गूज

"कारगिल की गूँज" यह टी वी डॉक्यूमेन्ट्री मैने जन आग्रह पर पुन दिखाई। कारगिल के रोमाचक रणभूमि के दृश्यो के शब्द चित्र बनाए। भरत वशियो का मन अकुलाने लगा और भारत के लिए कुछ कर दिखाने के लिए वे बेचैन हो उठे। उनके बटुए की डोरी स्वदेश के लिये खुलने लगी। डॉक्टर नरेन्द्र आर्य ने सभी को धन्यवाद दिया और प्रीति भोज - ऋषि लगर के लिये आमत्रित किया। शान्ति पाठ के साथ स्वाधीनता सभा सम्पन्न हुई।

औक्सफोर्ड विश्वविद्यालय

वेद प्रचार श्रृखला मे एक दिन का अतराल था। महाशय कृष्ण चोपडा से चर्चा हुई क्यो न बरमिघम से बाहर जाया जाए। मैने औक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी देखने की इच्छा व्यक्त की। कारणा क्या था? सन् १९५० से १९५५ तक मै प्रयाग विश्वविद्यालय (इलाहाबाद यूनिवर्सिटी) का विद्यार्थी था। बी ए, ऐम ए, ऐल ऐल बी की डिग्रिया वही से ली। उस समय साहित्यिक गोष्ठियो के दौरान और पढे लिखे लोगो के बीच अतर-राष्ट्रीय विश्वविद्यालयो के तुलनात्मक आकलन मे इलाहाबाद यूनिवर्सिटी को "औक्सफोर्ड ऑफ इण्डिया" कहा जाता था। आपस मे ही ऐसा कहकर हम लोग खुश हो लेते थे। नानी के आगे ननिहाल का बखान करने से दोनो हाथो मे लड्डू आ ही जाते है। बरमिघम आकर भी यदि मै औक्सफोर्ड न देखता, तो मन मे कसक आजीवन रहती। अत "चलो दिल्ली" के समकक्ष निर्णय लिया गया "चलो औक्सफोर्ड"।

महगी रेलगाड़ी

रेलगाडी का टिकट था, मात्र पचास पौड प्रति व्यक्ति। कृष्ण जी ने कहा यह तो महँगा है। उन्होने अपनी कार मे मुझे ले चलने की बात कही। डॉक्टर रक्षा चोपडा, उनकी पत्नी, ने सचेत किया कि कार चलाते चलाते "ये" सपनो का ससार बसाने लगते है। मैने उन्हे आश्वस्त किया कि मै रास्ते भर इतनी रोचक बाते करूँगा कि नीद नौ दो ग्यारह हो जाएगी। और फिर हम औक्सफोर्ड की राह पर थे। दिन भर का दाना-पानी साथ था। फिर भी औक्सफोर्ड की चरागाह मे भी चरने लगे। "पीत्जा हट" मे भरपेट खाया, पर्यटन मे मध्यातर के समय। हम दोनो ने ही शाकाहार को बढावा दिया।

स्वस्थ तन, स्वस्थ मन

औक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और उस पर निर्भर नगर है सुन्दर, शान्त, हरा-भरा एव पर्यावरण-प्रेमी। नर-नारी स्वभाव से ही अध्ययनशील एव सौम्य है। फिर भी उन्हे पुस्तक-कीट कहना एक भूल होगी, खेल मैदान और क्रीडागन जगह-जगह है। स्वस्थ तन, स्वस्थ मन-मस्तिष्क—सम्भवत यही उनके जीवन की आधारशिला है। अध्यात्म और विज्ञान का सामजस्य है।

हाथ मे हाथ लिये या गले मे बॉहे डाले किशोर-किशोरी दिखाई दिये, किन्तु उनकी सख्या कम थी। उन दिनो अवकाश था। यो, अधिकाश के हाथो मे पुस्तके थी। ईसाइयत का प्रभाव स्पष्ट है, किन्तु केवल अट्टालिकाओ पर। क्राइस्ट चर्च कॉलेज पुस्तकालय, सभागार, गिरजाघर आदि के बहुमूल्य रगीन शीशे बाइबिल की कहानियाँ अपनी आकृतियो मे सजोए हुए है।

इतिहास मे अकित है कि औक्सफोर्ड जब एक छोटा गॉव था, तो वहाँ की शिक्षा का, जो पहले केवल ईसाई धर्म के बारे मे थी, आरम्भ पादरियो, बिशपो ने किया। राजा हेनरी अष्टम के सलाहकार और अभिन्न मित्र, कार्डिनल (धर्म गुरु) रिशल्यू ने औक्सफोर्ड मे शिक्षा की नीव डाली थी। उनका विशाल तैल चित्र आज भी वहाँ देखा जा सकता है। अनेक कॉलेज खुलते गये और उनमे प्रतिस्पर्धा रहती थी कि कौन कितने अच्छे धर्माचार्यो को दीक्षित कर सकेगा।

उस गॉव के छोर पर मन्द गति से बहती टेम्स नदी, जो लदन मे नदी न होकर नद है, कभी इतनी उथली थी कि भार-वाहक बैल (ऑक्स) उसे चलते-चलते पार कर लेते थे (फोर्ड)। अत नाम पडा "औक्सफोर्ड"—आज तो वह विश्व-विख्यात है। यो अब विज्ञान की शिक्षा पर अधिक बल है। गिरजाघर की कुर्सियॉ भरती नही है, ज्ञानी-विज्ञानी विद्वान आज इजील की कथाओ को तर्क की कसौटी पर खरा नही पाते। धीरे-धीरे धर्म शून्य हो रहा है युवा पीढी का मन। मन मे विचार आया क्या हमारा वैदिक धर्म इस मानसिक एव आध्यात्मिक रिक्तता की पूर्ति कर सकता है?

आर्य समाज के लिए सुअवसर

आर्य समाज द्वारा वैदिक धर्म प्रचार के लिए औक्सफोर्ड विश्वविद्यालय परिसर एव नगर नये बीज के लिये उपजाऊ खेत समान है। ईसाइयत से विमुख हो रहे किशोर-किशोरी आध्यात्मिक शून्य मे अधिक समय तक नही रह सकते। उदाहरण है धर्म विमुख सोवियत सघ। सोवियत सघ के बिखर जाने पर रूस, यूक्रेन, जॉर्जिया आदि मे ईसाई मत पुन पनपने लगा। बरसो की भूख के बाद रूसियो को अध्यात्म के नाम पर जो भी मिला, चाहे वह कितना ही छिछला और कपोल कल्पित क्यो न रहा हो, उसे वे निगल गये। ईसाई बन गये। "इसकॉन" ने कुछ लोगो को हिन्दू बनाया, किन्तु चर्च द्वारा उनके मार्ग मे रोडा अटकाने से उनकी प्रगति धीमी पड गई। अब हमे औक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, ऐबर्डीन, लदन जैसे नगरो पर, जहॉ बुद्धिजीवियो के केन्द्र है, ध्यान देना चाहिए। वहॉ की आवश्यकतानुसार अग्रेजी भाषा मे वैदिक साहित्य, जो आज के अनुरूप हो, नयी पीढी मे वितरित करना चाहिए। इसके लिए भूमि-भवन अभी नही चाहिए। नुक्कड पर खडे होकर छोटी पुस्तिकाए लागत से कम मूल्य पर दी जा सकती है। प्रचार माध्यम के आधुनिकीकरण को देखते हुए कुछ ऑडियो-वीडियो कैसेट्स भी दिये जा सकते है। कम से कम दो चार बार हम प्रयास तो करे और उसके अनुभव के आधार पर आगे बढे। क्या इस दिशा मे कोई आर्य प्रतिनिधि सभा पहल करना चाहेगी?

भारतीय आर्य यत्नशील

इग्लैण्ड मे वेद प्रचार अभियान मे अनेक भरतवशी सक्रिय सहयोग दे रहे है। डॉक्टर नरेन्द्र कुमार, प्रधान आर्य समाज के रूप मे नयी-नयी योजनाओ को कार्यान्वित करते रहते है। भारत से आये सन्यासी एव गृहस्थ प्रचारको की सुख-सुविधा का ध्यान रखने मे बरमिघम आर्य समाज के धर्माचार्य की पत्नी, श्रीमती सोनेराव आगे-आगे है,— गरम-गरम शुद्ध शाकाहारी भोजन स्वय बनाती है और अतिथि यज्ञ मन से करती है। पर्यटन परम्परा मे प्रचारको को घुमाने, घर बुलाने और अतिथि सत्कार करने मे आर्य समाज के मत्री, श्री बृज भूषण शरण अग्रवाल, उनकी पत्नी मीनू, सुश्री विभा केल, श्री वेद रावल, माता प्रिजा एव पुत्र चन्द्रकात, जिन्दल जी सपरिवार सक्रिय है। प्रचार मे ये सभी महाशय तन मन धन से लगे है। नयी दिशाए देखते है। नयी विधाए खोजते है। रेडियो पर सफल वेद प्रचार उनकी निष्ठा की कहानी मेरी जुबानी बार-बार कह रहा है।

वर्ड्सवर्थ की कर्मभूमि

पर्यटन स्थलो मे लेक डिस्ट्रिक्ट मनमोहक है। प्रसिद्ध प्रकृति कवि, विलियम वर्ड्सवर्थ की कर्मभूमि यही है। बचपन से ही अँग्रेजी भाषा-साहित्य के विद्यार्थी वर्ड्सवर्थ की कविताओ का रस लेने लगते है। मै भी उनके प्रकृति प्रेम से अछूता नही रहा। जब मिड्लैड्स आया,

(शेष पृष्ठ १० पर)

सृजन की थकन भूल जा देवता, अभी तो पड़ी है धरा अधबनी

❑ श्री सत्यव्रत सामवेदी

महर्षि दयानन्द का ऋण

भारतवर्ष पर ही नही, हिन्दू जाति पर भी नही, अपितु समस्त मानव जाति पर महर्षि दयानन्द का ऋण है, जिससे कोई उऋण नही हो सकता। यह विश्व इतिहास की अभूतपूर्व घटना है कि महर्षि ने लुप्त वेदो का उद्धार किया और परमेश्वरकृत इस ज्ञान को विश्व कल्याण के लिए मानव जाति के सम्मुख प्रस्तुत किया।

वैदिक धर्म के तीन स्तम्भ

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र :

वैदिक धर्म के तीन स्तम्भ है, जिन पर यह विशाल भवन आश्रित है। एक भी स्तम्भ के गिरने पर वैदिक धर्म का विशाल स्तम्भ भूलुठित हो जायेगा। जब-जब वैदिक धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब उसके उद्धार के लिए परमेश्वर किसी महान आत्मा को विश्व कल्याण के लिए इस ससार मे भेजता है। त्रेता युग मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र अवतरित हुए और वैदिक धर्म की स्थापना के लिए महासमर किया। मर्यादाहीन असुरो का नाश करके विश्व को वेदमार्ग पर चलने के लिए प्रवृत्त किया। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण मे राम का यशोगान करते हुए घोषणा की

यजुर्वेद विनीतश्च वेदविद्भि. सुपूजित
वेदवेदाग तत्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठित·।

राम को यजुर्वेद कण्ठस्थ था और वेदज्ञ उनकी विद्वत्ता का आदर करते थे। वे वेद वेदाग के तत्वज्ञ थे और धनुर्विद्या मे भी पारगत थे।

परन्तु आज रामभक्त राम को ही ईश्वर मानकर उनकी उपासना मे लीन हो गये। राम के बडे-बडे मन्दिर बनाकर उनके पुजारी बन गये। राम ने जिस लक्ष्य के लिए जन्म लिया था, उस तरफ उनका कोई ध्यान ही नही। वेदो को वे ईश्वरकृति तो मानते है, परन्तु वेदो का अध्ययन-अध्यापन नही करना चाहते।

दूसरा स्तम्भ : योगेश्वर कृष्ण

द्वापर मे वेदोद्धार का कार्य करने के लिए योगेश्वर कृष्ण को अवतरित होना पडा। महाभारत मे महर्षि वेदव्यास ने योगेश्वर कृष्ण का उदात्त चरित्र प्रस्तुत करते हुए लिखा—

वेद वेदाग विज्ञानम् बलचाप्यधिक तथा।

शास्त्र और शस्त्र दोनो मे वे पारगत थे। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आत्मिक शक्ति सम्पन्न थे। योगेश्वर कृष्ण की घोषणा वैदिक घोषणा थी

परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसस्थापनार्थाय सभवामि युगे युगे॥

साधुओ की रक्षा करना और दुष्टो का विनाश करना उनका लक्ष्य था। योगेश्वर कृष्ण ने किस प्रकार कौरवो की अपराजेय शक्ति को ध्वस्त कर कस, दुर्योधन, जरासध, भीष्म, कर्ण, द्रोणाचार्य, शिशुपाल का वध कर वैदिक साम्राज्य की स्थापना की और गीता के माध्यम से विश्व को वैदिक ज्ञान दिया। परन्तु आज उसी कृष्ण को कृष्ण भक्तो ने भगवान् का अवतार बनाकर चोर, जार शिखामणि बना दिया। योगेश्वर कृष्ण की एक ही पत्नी थी और १२ वर्ष की घोर तपस्या के बाद उनकी एक सन्तान हुई, जो कि गुण, कर्म, स्वभाव मे अपने पिता के अनुरूप थी। परन्तु पौराणिको ने उनकी १६ हजार पत्निया बना दी।

तीसरा स्तम्भ :

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महाभारत के युद्ध के बाद वैदिक धर्म का निरन्तर ह्रास होता गया और महर्षि दयानन्द के आविर्भाव के समय वैदिक धर्म लुप्त प्राय हो चुका था। ईसाई और मुस्लिम सस्कृति का हम पर आक्रमण हो गया था और विश्व की प्राचीनतम वैदिक सस्कृति दम तोडने वाली थी। उस विषम अवस्था मे महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। महर्षि का कार्य राम और कृष्ण से भी सैकडो गुना कठिन था। महर्षि के समय मे एक हजार मजहब या सम्प्रदाय थे, जो राम और कृष्ण के समय मे नही थे। सारे ससार मे इन मजहबो एव सम्प्रदायो का साम्राज्य था और है। राम को अपने भाई लक्ष्मण और महाबली हनुमान, अगद, विभीषण तथा अनन्त वानर सेना का सहयोग था। योगेश्वर कृष्ण को सहयोग देने वाले महापराक्रमी पाण्डव थे और लाखो सैनिक थे। दयानन्द तो अकेला था, निपट अकेला। न भाई, न चेले, न सेना, न सत्ता, न सहयोगी, न धन। जिस समाज मे महर्षि ने जन्म लिया था, वह भी महर्षि का दुश्मन था। वेद के उद्धार के लिए अकेला सारे विश्व से युद्ध करता रहा और सबको धूल चटा दी। यह विश्व इतिहास की अभूतपूर्व अविश्वसनीय घटना है।

विश्व मे वैदिक धर्म की पताका फहराने लगी

दिग्विजयी महर्षि दयानन्द के प्रताप से वैदिक धर्म की पताका सारे विश्व मे फहराने लगी। आज सारे मजहब व सम्प्रदाय आर्य समाज के सामने आने की हिम्मत नही करते। समस्त सम्प्रदायो के तूणीर तर्क बाणो से खाली हो गये।

भारतवर्ष का पुनर्जागरण

वैदिक धर्म के पुनरुद्धार से भारत का पुनर्जागरण युग प्रारम्भ हुआ। भारतवर्ष के इतिहास मे पहली बार वेदो के तर्क बाण से मूर्ति पूजा, अस्पृश्यता, जातिवाद एव अनेक धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसगतियो का मूलोच्छेदन किया गया और मानव जाति के लिए विश्व शाति का पथ प्रशस्त किया गया। मातृशक्ति को समाज के सर्वोच्च आसन पर बैठाकर उसकी उपासना की। महर्षि दयानन्द ने विश्व को **"सगच्छध्व सवदध्व, सवो मनासि जानताम्। सहृदय, सामनस्य अविद्वेष"** का वेद सदेश दिया। वेद का सदेश देने के लिए विश्व मे हजारो आर्य समाजो एव शिक्षण सस्थाओ की स्थापना हुई।

मरणोन्मुख आर्य समाज

यह आश्चर्य की बात है कि जब दयानन्द अकेले थे, या उनके कुछ ही सहयोगी थे, तब आर्य समाज की आग दावानल बनकर सारे ससार मे फैल रही थी और आज हजारो आर्य समाजो का अस्तित्व है, तब आर्य समाज का दावानल राख बनता जा रहा है। अज्ञान, अन्धविश्वास बढता जा रहा है। देश का सुशिक्षित वर्ग भी अन्धविश्वास की दौड मे शामिल है। जिस मुख्यमत्री और उसकी पत्नी ने आर्य समाजी परिवार मे जन्म लिया था, वह भी श्रावणी पर्व पर महादेव की पूजा करने जा रहे है और जलाभिषेक कर रहे है। प्रतिशोध की आग को बुझाने के लिए एक प्रान्त की मुख्यमत्री मदिर मे हाथी दान कर रही है और ज्योतिषियो से परामर्श ले रही है। इन अज्ञानी और अन्धविश्वासी राजनीतिज्ञो और नेताओ की छाया मे भारतवर्ष अपनी जिन्दगी बसर कर रहा है।

आर्य समाज के दीपक बुझते जा रहे हैं

आर्य समाज इन विसगतियो का मूक दर्शक बना हुआ है। वह अपनी चारदीवारी से बाहर निकलने के लिए तैयार नही है। हिमाचल प्रदेश के एक रमणीय पर्वतीय स्थल के शहर के मध्य मे एक आर्य समाज का भवन है, जिसे मैने अनेक वर्ष पूर्व देखा था। आजकल वहा एक इच भी जमीन मिलना मुश्किल है।

आर्य समाज का यह भवन किसी बाहुबली के कब्जे मे है। उसने कुछ लोगो को यह भवन किराये पर दे रखा है। उस की सास एक निष्ठावान आर्य महिला थी। उसकी मृत्यु के बाद दामाद ने उस भवन पर कब्जा कर लिया। कहते है कि पहले यह आर्य समाज रविवार के दिन आर्य परिवारो से भर जाता था, परन्तु आज वहा कोई दीपक जलाने वाला भी नही है

उस भवन को देखने के लिए हम उस बाहुबली के घर गये, तो देखा कि वह चारपाई पर लेटा हुआ सिगरेट पी रहा है और दीवार पर एक खलनायक का विशाल चित्र लगा हुआ है। हमने जब उससे आर्य समाज के बारे मे जानकारी ली, तो कहने लगा कि आर्य समाज को मेरे प्रति आभारी होना चाहिए क्योंकि मैने भवन को सुरक्षित रखा हुआ है।

उसी दर्शनीय पर्यटन स्थल पर एक दूसरा आर्य समाज है। उसकी देखरेख एक सेवानिवृत्त सेनाधिकारी करते है। उन्होने बताया कि किसी समय यह आर्य समाज साप्ताहिक सत्सग के दिन भरा रहता था और लोगो को बैठने की जगह भी नही मिलती थी। आज केवल तीन सदस्य रह गये है। जब ये तीनो एकत्रित हो जाते है, तो यज्ञ हो जाता है, अन्यथा यज्ञ भी नही होता। उस भवन मे कुछ किरायेदार है। शायद अब उस भवन पर उनका कब्जा हो गया होगा।

राजस्थान मे अनेक आर्य समाजो पर कुछ लोगो का व्यक्तिगत कब्जा हो गया है और उन भवनो को बेचने की योजना बन रही है। एक आर्य समाज का भवन बेचकर तथाकथित पदाधिकारी लाखो रुपये हजम कर गये। प्रतिमाह शादियो मे तीस-चालीस हजार रुपया आता है, उसे भी वे डकार जाते है। प्रतिनिधि सभा किकर्त्तव्यविमूढ है।

उत्तराधिकारी कहॉ है?

आज आर्य समाज के सामने सबसे बडा सकट यह है कि उसके पास उत्तराधिकारी नही है। आज अधिकाश आर्य समाजो मे जो पीढी कार्य कर रही है, उसकी सन्तान आर्य समाज मे आने के लिए तैयार नही है। **"अनुव्रत पितु पुत्रो"** के सबसे अधिक भाषण आर्य समाज मे होते है, परन्तु अनुव्रत कही दिखाई नही देता। वर्तमान पीढी अपने पुत्रो की बहुओ को कह-कहकर थक गई है, परन्तु वे आर्य समाज मे आने के लिए तैयार नही है। अनेक आर्य समाजो मे केवल एक ही वृद्ध सदस्य रह गया है, जो आर्य समाज की गाडी खीच रहा है। उस व्यक्ति के बाद उस आर्य समाज का क्या होगा, उसके बारे मे भी हम कुछ नही सोच रहे।

वेद प्रचार समाप्त होता जा रहा है

वेदो के विद्वान उगलियो पर गिनने लायक है और वे भी वृद्ध हो चुके है। उनके बाद कौन वेद प्रचारक होगा? गुरुकुलो मे अध्ययनरत छात्र-छात्राए स्नातक बनकर कहा जाते है, कुछ पता नही।

हमारी शिक्षण सस्थाओ की स्थिति

दयानन्द के नाम पर हमारी शिक्षण सस्थाओ की सख्या तो हजा
तक पहुच गई है, परन्तु उन सस्था
आर्य समाज का कोई प्रचा

(शेष)

पत्र-जगत्

हिन्दी का जादू

७ अक्टूबर के आर्य जगत् मे 'हिन्दी के साथ अन्याय बन्द करे' नामक पत्र पढा। २ जनवरी १९५८ नव वर्ष को प्रात मोहडी (अम्बाला छावनी) रेलवे स्टेशन पर आमने-सामने एक सवारी तथा पठानकोट जनता एक्सप्रेस की भिडन्त मे सैकडो यात्री काल का ग्रास बने। हाहाकार मचा। नेहरू जी ने माननीय फिरोज गान्धी, ससद सदस्य (इन्दिरा गाधी के पति) की अध्यक्षता मे एक कमेटी का गठन कर दिया। जाच कमेटी ने अम्बाला छावनी मे कार्य आरम्भ किया।

यदि रेलवे स्टेशन पर दुर्घटना होती है, तो उसके दो प्रमुख कारण हो सकते है ड्राइवर की या स्टेशन मास्टर की लापरवाही। इस घटना मे जब स्टेशन मास्टर से पूछा गया, तो उसने परिचालन पुस्तिका के अनुसार काटे वाले को (Pointsman) सिगनल डाउन करने की आज्ञा नही दी थी/या दी थी। आज्ञा मिलने पर काटे वाला परिचालन पुस्तिका के अनुसार अपना उत्तरदायित्व समझते हुए सिगनल डाऊन करता है। प्रश्न यह है कि उस समय काटे वाले की नौकरी के लिए शैक्षिक अर्हता अनपढ थी और दुर्भाग्यवश परिचालन पुस्तिका अग्रेजी मे छपी हुई थी। इस दुर्घटना मे काटे वाले की महत्वपूर्ण भूमिका थी। अध्यक्ष महोदय ने जब अनपढ काटे वाले से अग्रेजी मे लिखे परिचालन पुस्तिका के अनुसार उसके उत्तरदायित्व के बारे मे जानना चाहा, तो उसने यह कहकर पीछा छुडा लिया, कि मै अग्रेजी नही जानता, मै एक चतुर्थ श्रेणी रेलवे कर्मचारी हूँ, यदि अग्रेजी जानता होता, तो 'बाबू' यानी तृतीय श्रेणी कर्मचारी होता। मोहरी दुर्घटना जाच समिति के अध्यक्ष श्री फिरोज गाधी ने रेल प्रशासन को बहुत फटकार लगाई तथा तुरन्त सभी सदर्भ पुस्तके हिन्दी मे छापने के लिए सख्त आदेश दिये।

मेरा एक जानने वाला रेलवे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी था। उसे तरक्की के लिए (तृतीय श्रेणी बाबू) परीक्षा पत्र अग्रेजी मे दिया गया तथा वह फेल हो गया। इसका उसे बहुत दुख हुआ। मैने उसे बताया कि उसे पहले ही रेल प्रशासन को बताना चाहिए था कि वह परीक्षा हिन्दी मे देना चाहता है। उसका कहना है कि प्रश्न पत्र केवल अग्रेजी मे था और कोई विकल्प नही था। मैने एक प्रार्थना पत्र उसकी ओर से रेल प्रशासन को लिखा (१९७८)। मै एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हूँ, राष्ट्रभाषा हिन्दी जानता हूँ, मेरी परीक्षा हिन्दी के प्रश्नपत्र के माध्यम से होनी चाहिए। मै अग्रेजी परीक्षा मे फेल हो चुका हू, उसे रद्द कर दिया जाए। उसकी लिखित प्रार्थना को रद्द करने का साहस न करते हुए, हिन्दी मे परीक्षा देने का सुअवसर दिया गया, वह उत्तीर्ण हो गया।

पडित मदनलाल, 2912, Freeborn Street, Duarate, E A 91010 U S A

बाल विधवा कोई न हो

आर्य जगत्, २३ सितम्बर २००१ मे छपे 'हायरे निर्दयी हिन्दू समाज" शीर्षक लेख मे 'पाच वर्ष की बच्ची विधवा" की व्यथा को पढकर हृदय द्रवित हो उठा, नेत्रो से आसू ढलक गये, मन मे भारी उथल-पुथल, दिल मे टीस और आत्मा मे एक निरन्तर वेधने वाली चुभन और हिन्दू समाज के प्रति भारी ग्लानि और समाज को झकझोर करने वाली क्रान्ति की बाढ हिलोरे लेने लगी। मन मे सहसा एक प्रश्न तैरने लगा, **"क्या यह हिन्दू समाज मानव समाज कहलाने योग्य है?"** प्रत्युत्तर छलका, नही, यह तो पशु समाज से भी अत्यन्त निम्न स्तर तक पहुच चुका है। कहा आदर्श एव विश्व मे अनुकरणीय "वैदिक सस्कृति" और कहा यह असभ्य और नितान्त बर्बर, हेय, पतित एव घिनौनी कुप्रथाए हिन्दू समाज मे व्याप्त है। **अजमेर जिले के "करसी" गाव मे पाच वर्षीय निरमा विधवा हो गयी '**। क्या आज भी हिन्दू समाज मे अधेरी नगरियो। अन्धे और अज्ञानी लोग रहते है? क्या इन्हे प्रकाश दिखाने वाला अजमेर जिले का आर्य समाज कुम्भकरण की निद्रा मे सो गया है? क्या वहा के आर्य कहलाने वाले बन्धु चिरनिद्रा मे मूर्छित पडे है? क्या इस कुप्रथा का समाचार अजमेर मे प्रकाशित होने वाले पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित नही हुआ? क्या हिन्दू विवाह अधिनियम अजमेर मे लागू नही है? क्या राजस्थान सरकार इन भोडी, घिनौनी और घोर निन्दनीय कुप्रथाओ से सर्वथा अनभिज्ञ है? क्या ये कुप्रथाए हिन्दू समाज के माथे पर कालिख नही पोतती? इस प्रकार तो न जाने कितनी निरमाए बडी होकर समाज मे दर-दर की ठोकरे खायेगी और कामुक भूखे भेडियो की कामुकता का शिकार होगी। क्या नाना प्रकार की समाज सेवा का ढोग करने वाली सस्थाओ का, सरकारी और गैरसरकारी सगठनो का ध्यान इस ओर नही गया? खेद है। लानत है, ऐसी सस्थाओ [illegible] सगठनो पर। क्या "निरमा" की हृदय विदारक गाथा से अभी तक आपके दिल के उ[illegible] [illegible]? मेरी समस्त हिन्दू सामाजिक सगठनो और राजस्थान राज्य सरकार से किशोर। वे। [illegible] है कि इस कुप्रथा का समूल नाश करे। सभी आर्य समाजो से निवेदन परिवार के हाँ [illegible] है कि वे राजस्थान की आर्य समाजो को पत्र भेजे कि इस कुप्रथा के प्रति क्रान्ति का बिगुल बजाये। **"कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्"** का इस प्रकार होगा मार्ग प्रशस्त। यह महर्षि दयानन्द सरस्वती का बताया सच्चा मार्ग और गुरु विरजानन्द सरस्वती द्वारा महर्षि को दिया गया सकल्प। कैसी विडम्बना है कि ७०-८० वर्ष का बूढा विवाह कर सकता है और ५ वर्ष की अबोध बालिका आजीवन विधवा रहे। विधवा को भी पूर्ण अधिकार है कि वह चाहे जिस आयु मे विवाह रचाये। विवाह तो मूल प्रवृत्ति, "काम प्रवृत्ति" पर आधारित एक पवित्र एव धार्मिक सस्कार है। यह तो जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है। बाल विवाह और विधवा विवाह निषेध को जड से उखाड फेकिये और हिन्दू समाज को पतन से बचाये, यही है हमारी पुरजोर अपील समस्त आर्य जगत् से।

इसी प्रकार मथुरा और काशी मे विधवाओ की गभीर शोचनीय, निर्दयी ज्वलन्त एव घोर निन्दनीय समस्या है, जिसका निराकरण आर्य समाजो का प्रमुख रूप मे पुनीत एव पावन दायित्व है। इस दिशा मे हमारा **गाधी विवाह केन्द्र, सदर चौक बाजार, मेरठ कैन्ट, फोन** ६६१६०२ पूर्ण रूप से सहयोग के लिए सदैव तत्पर है। इस लेख के माध्यम से विधवाओ को पूर्णरूपेण सामाजिक जीवन सम्मान पूर्वक जीने की व्यवस्था मे हमारा पूर्ण योगदान होगा। केवल हमे पूर्ण सूचना उक्त पते पर भेजकर कृतार्थ करे। नि शुल्क सेवा का हमारा वचन एव सकल्प है।

के० आर० गिल (सरक्षक) तथा गगाधर गाधी (प्रचार मत्री) आर्य समाज श्रद्धापुरी,
३/४४, आदर्श नगर, मेरठ

काश, मैं ओसामा बिन लादेन होता!

हम वैदिको का और आर्यत्व का दम भरने वाले लोग भी सनातनी परम्पराओ के प्रभाव से अभी तक मुक्त नही हो पाए है। जैन और बौद्ध धर्मो के प्रभाव से उत्पन्न सनातन नाम अ-सनातन सम्प्रदाय वह है, जो न तो सोचता है, न ग्रन्थ पढता है, वह बस परम्परा का ऑख मीच कर पालन किए जाता है और परम्परा के विरोध मे समझाने पर भी, प्रमाण देने पर भी नही चल पाता।

एक स्वर मे सभी हिन्दू या प्राय सभी हिन्दू व आर्य ओसामा बिन लादेन की बुराई कर रहे है और उसकी मृत्यु मना रहे है, पर जरा अपनी वैदिक शिक्षा पर ध्यान दे, तो उन्हे ज्ञात होगा कि वह एक प्रकार से वैदिक शिक्षण के एक पक्ष का पूर्ण और सत्यतायुक्त परिपालन कर रहा है। नास्तिक और वेद-निन्दक को मारना या उनके खिलाफ खडा होना एक पुण्य-कर्म माना है वेद ने। यह मान्यता अहकारपूर्ण एव आग्रहपूर्ण प्रवृत्ति के कारण नही है, बल्कि इसलिए है कि परमपिता और सृष्टि के निर्माता-पालक को जो व्यक्ति नही मानेगा, उसका आचरण एव व्यवहार स्वैराचारी व स्वेच्छाचारी तथा स्वार्थपूर्ण हो जाएगा। यह वृत्ति भयानक रूप से समाज विरोधी, मानवता विरोधी व विकास विरोधी है। समाज को भ्रष्ट होने से बचाने के लिए समाज मे कोढ या एड्स या राजयक्ष्मा पैदा होने ही क्यो दी जाय? अत सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय एक-दो या दस व्यक्तियो के प्राण लेकर समाज मे धर्माचरण व शाति बढे, तो हानि कहॉ है? भक्त ध्रुव के वश मे उत्पन्न राजा वेन की महर्षियो, सप्तर्षियो ने इसलिए हत्या कर दी कि वह नास्तिक, वेद निन्दक व स्वय को ही सर्वेसर्वा मानने लगा था। गीता के आसुरी सपद विचार का प्रतीक वह राजा नियमो और ऋषि प्रणीत बन्धनो से मुक्त हो गया था अत उसकी हत्या जैसा कर्म सप्तऋषियो को करना पडा। उसे मार कर परम भागवत वैदिक विद्वान्, सज्जन, शूर, कर्मठ व कर्त्तव्यपालक उसके पुत्र पृथु को गद्दी पर बैठाया। उस पृथु के राज्य मे इतनी समृद्धि और सुख बढे कि तब से लोग भूमि को पृथ्वी ही कहने लगे।

ओसामा बिन लादेन के स्व-स्वीकृत धर्माधार चाहे कच्चे हो, उसकी समझ मे धर्म-अधर्म विषयक भ्राति हो, उसे सत्यासत्य का विवेक चाहे न हो, परन्तु उसकी आस्था, उसका समर्पण, उसकी आदर्शोन्मुखता अत्यन्त उच्चकोटि की है। वह उद्योगी, साहसी, उत्साही, अदीर्घसूत्री, क्रियाविधिज्ञ, व्यसनो मे असक्त, शौर्यवान्, सकल्पवान् व्यक्ति है, यह उसके विशद जीवन चरित्र से ज्ञात होता है। वह पुरुष सिह (ओसामा बिन लादेन का अर्थ भी सिह पुत्र है) जमीन पर सोता है, सादा खाना खाता है, व्यसनो से दूर रहता है, पर इस्लाम के प्रसार की गहन धुन उस पर सवार है। इस्लाम जैसा उसकी समझ मे आया, उसके प्रति उसकी समर्पित और साहसवृत्ति की श्लाघा करनी पडेगी। क्या हम वैदिको मे यह केसरी उत्साह, यह सिहसुलभ शौर्य, यह मर मिटने की तमन्ना, धर्म और वेद के लिये स्वय को पूर्ण समर्पित करने की साहस पूर्ण अभीप्सा है?

काश, मेरे पास बिन लादेन जैसी सम्पत्ति और साधन होते।

—सतोष प्रज्ञान, गुडगॉव

महर्षि दयानन्द बाल मेला

दिल्ली और आसपास के डी ए वी विद्यालयो के छात्र-छात्राओ को आर्य समाज के रग मे सराबोर करने हेतु कक्षा ३ से लेकर कक्षा १२वी तक के विद्यार्थियो के लिए आर्य समाज (अनारकली) मदिर मार्ग ने अपने ७७वे वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर महर्षि दयानन्द बाल मेले का आयोजन किया। इस मेले मे लगभग ढाई हजार बच्चो ने भाग लिया। बच्चो को आर्य समाज के सिद्धातो और मान्यताओ मे परिचित कराने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया, जिनमे चित्रकला प्रतियोगिता, कविता लेखन, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, योगासन प्रतियोगिता तथा छोटे बच्चो की 'देशभक्ति गीत प्रतियोगिता' तथा मिडिल क्लास के बच्चों की 'सस्कृत गीत गायन प्रतियोगिता' तथा 'सस्कृत भाषण प्रतियोगिता' का भी आयोजन किया गया। इसकेअतिरिक्त उच्चतर माध्यमिक कक्षा के बच्चों के लिए विश्वशान्ति से सबधित गायन प्रतियोगिता तथा वैदिक धर्म की विशेषताए विषय पर भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। प्रतिदिन बच्चो को आर्य समाज की ओर से अल्पाहार भी दिया गया एव प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को छोडकर शेष सभी पुरस्कार उसी दिन डी ए वी प्रबन्धकर्त्री सभा के सम्मान्य अधिकारियो के द्वारा वितरित कर दिये गये।

दयानन्द बाल मेले के पुरस्कृत सी ऐल भल्ला मॉडल स्कूल झण्डेवालान के छात्र-छात्राओ के साथ डी ए वी व आर्य समाज के अधिकारीगण

प्रथम पुरस्कार प्राप्त डी ए वी प स्कूल के छात्र अपने कार्यक्रम देते हुए।

पुरस्कार वितरण

सभी प्रतियोगिताओ के प्रथम पुरस्कार ११ नवम्बर को सभा प्रधान पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा जी के कर कमलो से दिलवाये गये।

आर्य समाज क मत्री श्री डी आर गुप्ता ने अपने भाषण मे कहा कि स्वामी दयानन्द बाल मेले के माध्यम से बच्चो के चरित्र निर्माण तथा बच्चो मे आर्य समाज के सस्कार भरने का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य आर्य समाज अनारकली मदिर मार्ग के माध्यम से हो रहा है। मै सभा प्रधान जी का विशेष आभारी हूँ, जिनके मार्गदर्शन मे बच्चो के लिए यह विशेष कार्यक्रम हर वर्ष दयानन्द बाल मेले के रूप मे मनाया जाता है। भगवान् से प्रार्थना है कि डी ए वी विद्यालयो के विद्यार्थी इस कार्यक्रम से पूरा लाभ उठाये तथा विश्व मे डी ए वी सस्था का नाम रोशन करे। विभिन्न डी ए वी विद्यालयो के प्रिंसिपल साहिबान का भी मै आभारी हूँ, जिन्होने अपने विद्यालय के बच्चो को इस कार्यक्रम मे भेजकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे पूर्ण सहयोग दिया है।

प्रि सुदेश हिगल, श्री विजयभूषण आर्य और डा सुषमा आर्या का भी मै आभारी हूँ, जिन्होने इस मेले का बहुत ही सुन्दर ढग से सयोजन किया।

सी ऐल भल्ला दयानन्द मॉडल स्कूल झण्डेवालान, नई दिल्ली की प्रि कुमारी सुदेश हिगल सभी गायन व भाषण प्रतियोगिताओ मे प्रथम आने की ट्राफी ग्रहण करती हुई, साथ मे है पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा, श्री ऐम.ऐल खन्ना, श्री प्रबोध महाजन, प्रि मोहनलाल, श्री रामनाथ सहगल, श्री आर आर भल्ला आदि।

सभी प्रतियोगिताओ मे द्वितीय स्थान पाने वाले कुलाची हसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार दिल्ली की प्रिंसिपल पी दत्ता पुरस्कार ग्रहण करती हुई, साथ मे पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा, श्री ऐम ऐल खन्ना, श्री विश्वनाथ, श्री डी आर गुप्ता, श्री आर.आर. भल्ला आदि।

पुरस्कार वितरण

(केवल प्रथम पुरस्कार)

चित्रकला—कक्षा ३ से ५ प्रथम—डी ए वी से ४९ फरीदाबाद (पायल अग्रवाल)
चित्रकला—कक्षा ६ से ८ प्रथम—डी ए वी से १४ गुडगॉव (नील)
चित्रकला—कक्षा ९ से १२ प्रथम—डी ए वी से ४९ फरीदाबाद (अर्शविदर कौर)
कविता—कक्षा ६ से प्रथम—डी ए वी दयानद विहार (गौरव अबरोल)
निबन्ध—कक्षा ९ से १२ प्रथम—डी ए वी से ७ रोहिणी (नवधा गुप्ता)
योगासन—कक्षा ३ से ५ प्रथम—डी ए वी आर के पुरम्
योगासन—कक्षा ६ से ८ पथम—सी ऐल भल्ला द मॉ स्कूल झडेवालान
गायन—कक्षा ३ से ५ प्रथम—डी ए वी बल्लभगढ
भाषण—कक्षा ३ से ५ प्रथम—डी ए वी पलवल (मयक गौतम)
गायन—कक्षा ६ से ८ प्रथम—सी ऐल भल्ला, झडेवालान
भाषण—कक्षा ६ से ८ प्रथम—सी ऐल भल्ला, झडेवालान (अमन प्रीत)
गायन—कक्षा ९ से १२ प्रथम—सी ऐल भल्ला, झडेवालान
भाषण—कक्षा ९ से १२ प्रथम—सी ऐल भल्ला, झडेवालान (आकांक्षा)

बौद्ध व्यायाम

❑ श्री देवदत्त

योग की गवेषणात्मक पद्धति

दीर्घ और स्वस्थ जीवन भारतवर्ष की मनोचेतना मे जन्म सिद्ध अधिकार रहा है। ययाति कोई पहले व्यक्ति नही थे जिन्होने दीर्घ यौवन की कामना की हो। **"सिद्धे रसे करिष्यामि निर्दारिद्र्यागद जगत्"**। नागार्जुन ने रसायन सिद्ध करके, हठ योगियो ने सहस्त्र दल कमल के अमृत का कुण्डलिनी शक्ति से पान करके तथा अन्य सिद्ध पुरुषो ने विभिन्न योग मार्गो से सहस्रो वर्ष तक तपोमय जीवन की कल्पना की है। भगवान का यह लक्षण भी माना गया है कि अवतार-शरीर मे भी वे पौगण्ड आयु के बने रहते है। वृद्ध राम या कृष्ण के विग्रह कही देखने को नही मिलते।

आसन और प्राणायाम से वृद्धत्व की गति धीमी हो जाती है यह निर्विवाद सत्य है। श्री पाद दामोदर सातवलेकरजी तो इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है। किन्तु आज के युग मे समस्या है कि व्यक्ति निश्चित समय मे परीक्षित व्यायाम ही करने को उत्सुक है। प्रयोग और परीक्षा के लिए उसके पास वृत्ति ही नही है। परिणाम की अनिश्चितता उसे कोई भी कार्य करने से विमुख करती है।

इसी कारण जब श्री केल्डर नामक ब्रिटिश लेखक ने कर्नल ब्राडफोर्ड के हवाले से इस व्यायाम के विषय मे लिखा तो लोगो को यह कहानी जैसा लगा। किन्तु इसके कारण बौद्ध व्यायाम की प्रणाली तो प्रत्यक्ष हुई। दलाई लामा ने कहा है कि हम अर्थात् तिब्बत वासी इस आर्यदेश के शिष्य है। सभव है कि यह व्यायाम बौद्ध भिक्षुओ मे भी प्रचलित रहा हो और कालान्तर मे इसके अभ्यासी तिब्बत मे ही बचे हो।

मुझे इस व्यायाम का परिचय श्रीअरविन्दाश्रम की आयुर्वेदशाला के वैद्य श्री हिम्मतभाई से मिला था। उन्होने यह भी बताया कि "विश्व-सस्कृत-प्रतिष्ठानम्" के मेरे पुराने सहयोगी श्री रामदास यह व्यायाम करते है। मुझे प्रवास पर जाना रहता है, अत मै बाहर चला गया और इस व्यायाम की चर्चा भी भूल गया। पर महीनो बाद मैने लक्ष्य किया कि श्रीरामदास जो झुक कर चलते थे वे सीधे हो गये और उनका बुढापा अब उनकी चाल-ढाल मे परिलक्षित नही होता। मैने पुन वैद्य श्री हिम्मत भाई से चर्चा करके इसकी पुस्तक प्राप्त की। व्यायाम की सरलता देखकर मुझे लगा कि किसी मसखरे ने यह व्यायाम वृद्धो की हँसी उडाने के लिए बनाया है।

किन्तु आज जब प्रभामण्डल की छवि से किसी के रोगी या स्वस्थ होने का निदान हो रहा हो, प्राचीन शास्त्रो के वर्णित चक्रो का विज्ञान सम्मत विश्लेषण हो रहा हो, तो सब कुछ सभव लग रहा है। माना जाता है कि पीयूष ग्रन्थि (Pituitary gland) वय सन्धि से ही मृत्यु न्यासर्ग (Death hormone) पैदा करने लगती है जो लाभप्रद न्यासर्गो (Hormones) के उपयोग मे बाधा डालती है। फलस्वरूप देहकोष तथा अवयव क्रमश क्षीण होते-होते मृत्यु को प्राप्त हो जाते है। यदि बौद्ध व्यायाम के पाच आसन इन चक्रो को सक्रिय कर दे तो परिणाम होगा कि न्यासर्गो के असन्तुलन समाप्त हो जायेगे। फिर देहकोषो के लिए यह सभव होगा कि वे वय सन्धि की तरह अपनी सवृद्धि कर सके।

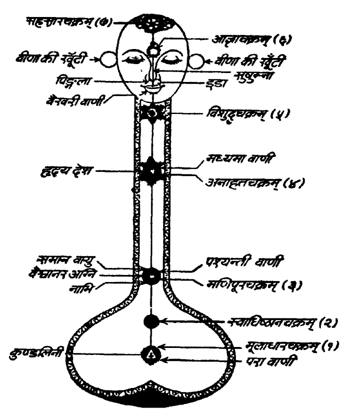

मनुष्य शरीर वीणा के रूप मे

इस सिद्धान्त की परीक्षा तो व्यायाम के नियमित अभ्यास से ही हो सकती है। सुखी और स्वस्थ जीवन प्रभु का वह वरदान है जिस पर हम सबका समान अधिकार है।

मेरे जैसे बचपन से बलगमी शरीर वाले स्थूलकाय रोगी व्यक्ति को ६१ वर्ष की आयु मे इसका पता चला और अभ्यास ने इतना उत्साहित किया कि इस बौद्ध व्यायाम को मै हिन्दी जानने वालो के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

कर्नल ब्राडफोर्ड की खोज

बौद्ध व्यायाम के पुनरुद्धार की कहानी कर्नल ब्राडफोर्ड से प्रारम्भ होती है जिसे ब्रिटिश लेखक पेटर केल्डर ने लिपिबद्ध किया है। कर्नल ब्राडफोर्ड जब भारत के पूर्वोत्तर मे तैनात थे उन्हे स्थानीय जनो द्वारा सिद्धो और योगियो की चमत्कार पूर्ण कहानिया सुनने को मिलती रहती थी। यहीं उन्होने तिब्बती लामाओ के विषय मे सुना था जिन्होने यौवन के उद्गम की खोज कर ली थी। हजारो वर्षो तक यह गुप्त रहस्य विशेष सप्रदाय के लामाओ मे ही सीमित था। उनका विहार बिल्कुल अलग-थलग और वीराने मे था। इस विहार के विषय मे कहानिया प्रचलित थी कि कैसे वृद्धजन रहस्यपूर्ण क्रिया द्वारा यहॉ पुनर्यौवन प्राप्त कर लेते है।

कर्नल ब्राडफोर्ड ब्रिटिश साम्राज्य की सेवा मे विश्व के विभिन्न स्थानो पर नौकरी करके निवृत्त हो चुके थे। वृद्धावस्था मे उन्हे पुन इस पुनर्यौवन प्राप्ति के केन्द्र की याद आयी थी और उन्होने उसकी खोज मे चलने के लिए पेटर केल्डर को भी निमत्रित किया था किन्तु वे नही जा सके थे।

फिर वर्षो बीत गये। पेटर केल्डर तो कर्नल फोर्ड को भूल गये थे कि उन्हे कर्नल का पत्र मिला कि निराशा की घडियो को पार कर वे पुनर्यौवन प्राप्ति के कगार पर है। फिर महीनो बाद पत्र मिला कि वे पुनर्यौवन रहस्य को प्राप्त करके वापस आ रहे है।

तब तक लगभग चार वर्ष बीत चुके थे। वे सोचने लगे कि अब मेरा पुराना बूढा दोस्त कैसा होगा?

फिर वे आए। दरबान ने फोन किया कि कर्नल ब्राडफोर्ड मिलने को आ रहे है। जब उन्होने दरवाजा खोला तो एक युवक खडा था। उनकी आश्चर्यचकित ऑखो को देखकर उन्होने कहा — क्या तुम मेरी प्रतीक्षा नही कर रहे थे?'

अरे, यह युवक तो कर्नल फोर्ड था। किन्तु ऐसा तो वह अपने यौवन काल मे रहा होगा। पेटर केल्डर ने उन्हे आलिगन मे ले लिया और प्रश्नो की झडी लगा दी।

फिर प्रारभ हुई कथा

कर्नल फोर्ड ने भारत आते ही दार्जिलिंग से अपनी खोज प्रारभ की। गोरखाली भाषा उन्हे सेना मे रहने के कारण आती थी। फिर भी बड़ी कठिनाई से वे उस तिब्बती बौद्ध विहार तक पहुँच सके जहॉ के लामा पुनर्यौवन की विद्या का अभ्यास करते थे। उन्हे आश्चर्य था कि बौद्ध विहार ने वृद्ध नही थे। उनके लिए वृद्ध कर्नल ही एक अजूबा थे।

पन्द्रह दिन मे ही लाभ

अभ्यास प्रारम्भ करने के पन्द्रह दिनो के अन्दर ही कर्नल को रात्रि मे प्रगाढ निद्रा, दिन मे स्फूर्ति और बल का अनुभव होने लगा था। पहाडो पर चढने के अतिरिक्त नित्यसगिनी छडी ने भी उनका साथ छोड दिया था।

एक दिन अचानक वे विहार के पाण्डुलिपि पुस्तकालय मे पहुँच गये जहॉ दर्पण भी था। दो वर्षो की कठिन यात्रा के बाद जब कर्नल फोर्ड ने अपने को देखा तो उन्हे लगा कि पुनर्यौवन की प्राप्ति का प्रारम्भ हो चुका है। वार्धक्य पीछे छूट रहा था।

सात चक्र

यही पर कर्नल को प्रथम बार सप्त चक्रो का ज्ञान हुआ था। ये चक्र शरीर की अन्त स्रावी प्रणाली से सम्बद्ध है और ग्रन्थियो के न्यासर्ग के उत्पादन से सम्बन्धित है। ये न्यासर्ग ही शरीर की क्रियाओ और आयु की वृद्धि की प्रणाली से सम्बन्धित है। ये चक्र चर्म चक्षुओ से अदृश्य है। किन्तु इनके अस्तित्व पर अब सदेह नही किया जा सकता।

निम्नतम अर्थात् मूलाधार चक्र प्रजनन केन्द्र के ठीक ऊपर है। द्वितीय स्वाधिष्ठान चक्र पाचन ग्रन्थि के ऊपर तलपेट मे, तृतीय मणिपूर चक्र नाभि मे, चतुर्थ अनाहत चक्र हृदय मे, पचम विशुद्ध चक्र कण्ठ मे, षष्ठ आज्ञा चक्र भ्रूमध्य मे, मस्तिष्क के पिछले आधार क्षेत्र पर तथा सप्तम सहस्त्रार चक्र मस्तिष्क के केन्द्र मे अवस्थित है। महामहोपाध्याय ब्रह्मश्री वागीश शास्त्री ने देह की उपमा वीणा से देते हुए इसका चित्रण किया है। **(क्रमशः)**

श्री अरविन्दाश्रम, पाडिचेरी-६०५००२

पहचान

❑ **श्री सीतेश आलोक**

महानगरी मे
बडी बडी कोठिया,
जिनके ऊचे लौह द्वारो
पर लिखा है
कुत्तो से सावधान!
उनके आगे
दिखेगा एक छोटा सा घर,
जिसके द्वार पर
'स्वागतम्' लिखा है।
बस यही है
मेरे घर की पहचान।

द्वारा प्राचार्या, इन्द्रप्रस्थ कालेज, दिल्ली-५४

गुरुकुल कांगड़ी में संघर्ष, चार घायल

★ पथराव, पंद्रह हवाई फायर,
★ विधायक स्वामी ओमवेश के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज

हरिद्वार, ९ नवम्बर : गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की बेची गई करोडो रुपये मूल्य की भूमि और विश्वविद्यालय के सीनेट हाल पर चादपुर (बिजनौर) के विधायक स्वामी ओमवेश की अगुवाई मे कब्जा करने आए बाहुबली आर्य नेताओ को भूमि बचाने के लिए सघर्षरत विश्वविद्यालय कर्मचारियो ने वापस भागने के लिए मजबूर कर दिया।

इस दौरान करीब एक घटा तक चले सघर्ष मे विधायक ओमवेश के सुरक्षाकर्मी और साथ आए शस्त्रधारियो ने जमकर फायरिग की। कर्मचारियो पर लाठी-डडो व सरियो से हमला किया गया, जिससे चार कर्मचारी घायल हो गए। जवाब मे आदोलनरत कर्मचारियो ने हमलावरो पर पथराव किया तथा विश्वविद्यालय के सुरक्षाकर्मियो ने भी फायरिग की। गनीमत यह रही कि हवाई फायरिग मे दोनो ही पक्षो ने एक-दूसरे को निशाना नही बनाया। घटना के सबध मे विश्वविद्यालय के सपदा अधिकारी ने विधायक ओमवेश समेत नौ लोगो के खिलाफ थाना कनखल मे रिपोर्ट दर्ज कराई है।

विदित हो कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की करोडो रुपये की जमीन अवैध रूप से बेच देने के विरोध मे 'भूमि बचाओ' सघर्ष समिति के तत्त्वावधान मे विश्वविद्यालय के शिक्षक और गैर शिक्षक कर्मचारी सघर्षरत है। समिति का नियमित धरना २१ अक्टूबर को स्थगित हो गया था, लेकिन बीच-बीच मे आदोलन के भावी स्वरूप और इस दिशा मे चल रही प्रगति की समीक्षा के लिए बैठके समिति द्वारा आयोजित की जाती रहती है।

आज भी सीनेट हाल परिसर मे सघर्ष समिति के आह्वान पर आमसभा आहूत की गई थी, जिसमे सघर्ष समिति के अध्यक्ष प्रो भारत भूषण, सयोजक प्रदीप जोशी, शिक्षक सघ के अध्यक्ष श्रवणकुमार, कमलकात बुधकर, डा कश्मीर सिह राही, यू ऐस बिष्ट, कर्मचारी सघ के अध्यक्ष बलजीत सिह बिडला, डा ज्ञानचद शास्त्री, कौशल कुमार, राजपाल सिह, मदन मोहन सिह आदि कर्मचारी आदोलन के भावी स्वरूप पर चर्चा कर रहे थे।

आरोप है कि तभी आर्य नेता रणजीत सिह अपनी गाडी से सीनेट हाल के बाहर उतरे और यह कहते हुए कि आर्य विद्या सभा हरिद्वार की बैठक सीनेट हाल मे बुलाई गई है, हाल मे जाने लगे।

उनका सघर्ष समिति के सदस्यो ने पुरजोर विरोध किया और कहा कि आर्य विद्या सभा के पदाधिकारियो द्वारा चूकि गलत ढग मे विश्वविद्यालय की करोडो रुपये की भूमि बेच दी गई है और सभा को भग कर दिया गया है, अत यहा बैठक नही होने दी जाएगी।

जबरन सीनेट हाल मे घुसने का रणजीत सिह का प्रयास विफल कर कर्मचारियो ने उन्हे वापस लौटने को मजबूर कर दिया। लेकिन उनके जाने के बाद समिति के सदस्य सभा स्थल पर आकर बैठे ही थे कि चादपुर (बिजनौर) के विधायक स्वामी ओमवेश के नेतृत्व मे स्वामी इद्रवेश, पूर्व कुलाधिपति प्रो शेरसिह की पत्नी श्रीमती प्रभात शोभा, तेजपाल मलिक, सूबे सिह, वीरेन्द्र प्रधान, यतीश्वरानद आदि लोग गाडियो के काफिले के साथ आ धमके और अमन चौक मे जबरदस्ती सीनेट हाल मे घुसने लगे।

सघर्ष समिति के सदस्यो ने उनका विरोध किया, तो आरोप है कि विधायक स्वामी ओमवेश ने अपनी गाडी से सरिया उठाकर कर्मचारी नेता महावीर यादव के सिर पर दे मारा। महावीर का सिर फटते ही उत्तेजित कर्मचारियो ने पथराव शुरू कर दिया। हमलावरो की ओर से कर्मचारियो पर लगातार लाठी-डडो से प्रहार किया जाता रहा, जिससे महावीर यादव के अलावा मदन मोहन सिह, जितेन्द्र कुमार और फूल सिह घायल हो गए।

आरोप है कि कर्मचारियो पर हावी होने के नजरिए से स्वामी ओमवेश के सुरक्षाकर्मी तथा साथ आए बदूकधारियो ने हवाई फायरिंग भी शुरू कर दी। बताया गया है कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कर्मचारियो ने भी जवाबी फायरिग की। गनीमत यह रही कि दोनो पक्षो ने गोलीबारी मे एक दूसरे को सीधा निशाना नही बनाया। अतत सघर्षरत कर्मचारियो की एकता के आगे विधायक और उनके साथियो को वापस भागना पडा। उनकी गाडिया पथराव के कारण क्षतिग्रस्त हो गई। घटना के सबध मे दोनो ओर से थाना कनखल मे रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।

विश्वविद्यालय की ओर से सपदा अधिकारी करतार सिह ने विधायक स्वामी ओमवेश, स्वामी इद्रवेश, श्रीमती प्रभात शोभा, यतीश्वरानद, वीरेद्र प्रधान समेत नौ लोगो के खिलाफ धारा १४७/१४८/३०७/३२३ आईपीसी के तहत रिपोर्ट दर्ज कराई है। वही दूसरी ओर से स्वामी इद्रवेश ने श्रवण कुमार, करतार सिह, ज्ञान चद शास्त्री, ईश्वर चद तथा यू ऐस बिष्ट आदि के खिलाफ तहरीर दी है। इस पक्ष की ओर से अभी रिपोर्ट दर्ज नही की जा सकती है, क्योकि कोई जख्मी नही हुआ है।

सघर्ष समिति के अध्यक्ष प्रो भारत भूषण ने बताया कि आरोपी पक्ष के लोग बैठक के बहाने सीनेट हाल पर कब्जा करना चाहते थे तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे वर्ष १९७७ का इतिहास दोहराना चाहते थे, परतु अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानद द्वारा सस्थापित गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को किसी भी हाल मे बरबाद नही होने दिया जाएगा। उन्होने बताया कि जिस आर्य विद्या सभा का हवाला स्वामी ओमवेश और उनके समर्थक दे रहे है, उसके खिलाफ पहले ही न्यायालय जालधर तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा निर्णय दे चुकी है। आर्य न्याय सभा से भी ये लोग पराजित हो चुके है। उन्होने कहा कि गुरुकुल को बचाने के लिए सघर्ष जारी रहेगा।

आज की घटना के बाद विश्वविद्यालय परिसर मे तनाव व्याप्त है। कर्मचारी नेताओ को अदेशा है कि कही रात्रि मे विश्वविद्यालय पर कब्जा न कर लिया जाए, इसीलिए जिलाधिकारी तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से सुरक्षा व्यवस्था की माग की गई है।

(अमर उजाला से साभार)

पहचानिए, आप किस श्रेणी के व्यक्ति हैं

इस ससार मे दो प्रकार के भाव होते है—सत् और असत्। इन दोनो भावो के आधार पर व्यक्ति की दो कोटिया या श्रेणिया निर्धारित होती है, सद्व्यक्ति और असद्व्यक्ति। सद्भावनाओ का अवलम्बन देर से ही सही परन्तु सुफलदायक होता है। किन्तु असद् भावनाओ का फल तुरत मिलता है पर इसका परिणाम, कष्टकारी होता है। आपकी ऑखे प्रतिदिन असख्य दृश्यावलियो का अवलोकन करती है, जिनमे कुछ खटकती है तो कुछ मन को भाती है। दोनो मे आपकी प्रतिक्रिया होती है। जो खटकती है, आप उनके लिए क्या करते है और जो भाती है आप उन्हे कितना ग्रहण करते है? अपने अन्तर्मन से पूछिए और अपनी श्रेणी निर्धारित कीजिए कि आप किस श्रेणी के व्यक्ति है?

बौद्धिक दृष्टि से अपरिपक्व एक कुत्ता भी किसी स्थान पर बैठने से पहले अपने पैरो एव पूछ से स्थान को साफ करके बैठता है, एक कौआ भी खाने के बाद भूमि या टहनियो से रगड कर अपनी चोच साफ करता है। प्रकृति के ये तुच्छ प्राणी भी स्वच्छता के पक्षधर है। आपसे यदि कोई पूछे क्या आप स्वच्छता के पक्षधर है तो आपका सीधा उत्तर होगा हॉ। किन्तु आपकी हॉ की सीमा कहॉ तक है? क्या कुत्ते या कौए की तरह अपने शरीर की सफाई तक? यदि हॉ तो आप तुच्छ कोटि के व्यक्ति है। मानव होकर परिवेश से दूर होना पशुता है। आपसे व्यापक भावना की अपेक्षा है क्योकि आप मानव है। आपमे से बहुत ऐसे है जो पान-सिगरेट आदि का सेवन करते है और शरीर तथा वातावरण को गदा करते है। जो गदा करते है वे तो गदे है ही किन्तु जो उनमे प्यार से, दुलार से, डॉट से, फटकार से चेतना के सत् पक्ष को जागृत नही करते वे और भी गदे है।

वर्ग मे अध्यापक के आने पर आप खडे होकर अभिवादन नही करते, ब्लैकबोर्ड पर लिखे को पीरियड समाप्ति के बाद भी नही मिटाते, वर्ग मे चॉक, कागज आदि बिखरे देखकर भी आपकी आत्मा उन्हे डस्टबिन मे रखने के लिए नही उकसती, वर्ग समापन के बाद पखे के स्विच ऑफ नही करते तो आप निम्नकोटि के व्यक्ति है।

आपको कई बार जीवन मे माता-पिता, अग्रज, शिक्षक गलतियो पर डाटते है। यदि आपके मन मे उनके प्रति घृणा या क्रोधभाव है तो आप समाज के सबसे दीन-हीन और पतित व्यक्ति है। कोई भिखारी जब आपसे भीख मागता है यदि आप उसे फटकारते है, कोई आपसे कुछ कहता है, कोई काम करने को, यदि आप अनिच्छा से करते है या नकार देते है, किसी गरीब, दुर्बल, पागल, रोगी या कमजोर छात्र का यदि उपहास करते है तो आप गलत आदमी है। आपसे देश, समाज या परिवार का हित नही हो सकता। इसके विपरीत जिसकी प्रतिक्रिया सद्मूलक होती है, वही मानव है, वही सज्जन है, वही धार्मिक है, वही सच्चा नागरिक है।

क्या आप किसी की चाही अनचाही गलती पर क्रोध करते है या सुधारने का प्रयास करते है? आप कैसा नेता बनना पसद करेंगे? अपनी बडाई करने वाला, दूसरो को तुच्छ समझनेवाला। आप यदि बडप्पन बाटते है, किसी को प्यार, स्नेह, सात्वना, प्रेरणा आदि देकर उसकी चेतना को महानता की ओर उन्मुख करने का कारण बनते है, तो आप महान् है। इस मानसिकता का मूलमत्र है—

"प्रत्येक वस्तु या व्यक्ति को उसकी अपेक्षा श्रेष्ठ बना दो जिस रूप मे वह आपको मिला है।"

इस समय आप विद्यार्थी है। अध्ययन, मनन आपका धर्म कार्य है। क्या आप अध्ययन, मनन से प्राप्त ज्ञान के अनुरूप आचरण करते है? आप भारतीय सस्कृति पर निबन्ध लिखते है क्या आप उसकी विशेषताओ का सम्मान करते है? यदि हॉ, तो कैसे? मन मे? या आचरण से?

आप सद्भावो के पथ पर चलने का प्रयास करके देखे, आप सहज ही सफल अध्येता बन जायेंगे और आपको हर उत्तर मे नयापन एव रचनात्मक धर्मिता की सेधा होगी। आप प्रत्येक बात को श्रेष्ठतर बनायेंगे। सहज भाव से ही आपके कदम सफलता की ओर अग्रसर होगे। अत श्रेष्ठ बने और सभी को श्रेष्ठ बनाये। यही मानव का लक्ष्य है, यही जीवन है। खुद सुधरे और सबको सुधारे। यही एक मत्र हो, यही एक धर्म हो यही एक आचरण हो।

चेतना बजाज, दशम-डी
डी ए वी पब्लिक स्कूल हेहल
राँची-५ (झारखण्ड)

(पृष्ठ १ का शेष)

मृत्युंजय महर्षि दयानन्द ....

की यह मृत्यु न तो इच्छा मृत्यु थी और न स्वाभाविक। दुष्टो द्वारा विष देने के कारण उनके शरीर का पात हुआ। मृत्यु के पूर्व वे अन्यो की तरह न तो रोये और न प्राण रक्षा के लिए चीखे चिल्लाये। हमारी भी यही ध्रुव धारणा है कि महर्षि दयानन्द का निर्वाण नही, अपितु बलिदान हुआ था। बलिदान के अन्तिम समय मे भी वह दिव्य आत्मा अनेको को आस्तिक और वेदभक्त बना गई।

निर्वाण नही, शान्त मोक्ष

महर्षि दयानन्द का दीपावली की अमावस्या पर 'निर्वाण' नही, अपितु बलिदान हुआ था। यह उनकी न तो इच्छा मृत्यु थी और न स्वाभाविक मृत्यु ही। महर्षि प्रवर मोक्ष के पश्चात् पुनरागमन (पुनर्जन्म) के सिद्धान्त को मानते थे। 'निर्वाण' यह बौद्ध मत का सिद्धान्त है, जिसमे मृत्यु के पश्चात् शाश्वत आनन्द की प्राप्ति तथा पुनर्जन्म का निषेध है।

मुस्कान क्यो

अन्त मे इस रहस्य पर भी विचार करना है कि महर्षि दयानन्द अपने समय मे मृत्यु को आसन्न जानकर भी मुस्करा रहे थे, ऐसा क्यो हुआ? इस रहस्यमयी मुस्कान के प्रमुख तीन कारण थे—प्रथम परमात्मा मे अटूट विश्वास, द्वितीय—आत्मा का स्वरूप और उसके लक्षण तथा पदार्थो का त्यागभाव से उपभोग।

हमारे धर्मशास्त्रो मे मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के ३ उपाय बताये गये है। महर्षि दयानन्द ने परमात्मा के स्वरूप का वर्णन आर्य समाज के नियम सख्या दो मे बहुत ही सुन्दर ढग से किया है। यथा 'ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।' यही सिद्धान्त उनकी आत्मा का कवच था और वह मृत्यु से कभी भी नही डरते थे।

द्वितीय— महर्षि दयानन्द 'आत्मा' को अजर अमर मानते थे। वे आत्मा के छह लक्षणो से भलीभाति परिचित थे। इसके कारण वे सदैव आत्मा को परमानन्द प्रदान करने की तपस्या मे रत रहते थे। आत्मा के कवच परमात्मा से ढका होने से भी वे निर्भीक थे।

तृतीय— उन्होने सासारिक पदार्थो का उपभोग त्याग भाव से किया। मृत्यु के पूर्व उन्होने अपनी समस्त चल अचल सम्पत्ति का दान 'परोपकारिणी सभा' बना कर श्रेष्ठ आर्यजनो को सौप दिया।

इस प्रकार उपरोक्त तीन तत्वो को आधार मान कर महर्षि दयानन्द मृत्यु पर्यन्त मुस्कराते रहे और परमात्मा की इच्छा को सर्वोपरि मान कर ही उन्होने कहा था 'परमात्मा तेरी इच्छा पूर्ण हो।'

इस अवसर पर हम उस महान आत्मा के प्रति श्रद्धापूर्वक आदराजलि अर्पित करते है।

"सुकिरण" अ/१३,
सुदामा नगर, इन्दौर (म०प्र०)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नये प्रधान और मत्री

कैप्टेन देवरत्न आर्य, प्रधान

श्री वेदव्रत शर्मा, मत्री

(पृष्ठ ४ का शेष)

इंग्लैण्ड में वेद प्रचार......

तो सुश्री विभा केल और श्री वेद रावल के साथ, उन दोनो के सौजन्य से, मै लेक डिस्ट्रिक्ट और यू के की सबसे बडे झील मे क्रूज का आनन्द उठा सका। ईसाई होते हुए भी वर्ड्सवर्थ वैदिक विचारधारा के निकट आया और चर्च ने उसकी भर्त्सना की। उसकी कविता, "ओड इन्टीमेशन्स ऑफ इम्मॉरटैलिटी" मे आत्मा की नित्यता, आवागमन-पुनर्जन्म का सकेत है। शायद यही कारण है कि "सुपर हिट" होने के बावजूद भी यह कविता अब पर्यटको को नही सुनाई जाती। वहाँ रखी आगन्तुक पुस्तिका मे मैने पुनर्जन्म की अवहेलना की बात और अपने उद्‌गार अकित कर दिये।

ईसाइयो की भी रुचि

इग्लैण्ड मे अपने लगभग एक महीने के प्रवास और प्रचार के अन्तिम चरण मे मुझे आर्य समाज लदन मे प्रवचन करने का सौभाग्य मिला। डा ऐस ऐन भारद्वाज, प्रधान और श्री एव श्रीमती शभुनाथ गुप्त से विचार विमर्श करके प्रसन्नता हुई। कर्मठ आर्य है। लदन मे मेरा भारी सामान स्वत स्टेशन पर उठा कर मेरे निवास तक ले जाने वाले अँग्रेज श्री फ्रैंक स्माल और अलेक्स सदर्न ने न केवल वैदिक विचारो मे रुचि ली अपितु अलेक्स तो आर्य समाज भवन मे हवन देखता रहा और अहिन्दी भाषी होने पर भी मेरा प्रवचन तल्लीनता से सुनता रहा। अभी रोमन कैथलिक है, भविष्य का वैदिक धर्मी हो सकता है। ऐसे अनेक अँग्रेज़ है। आइये, हम और आप मिलकर उन्हे अपनाएँ। (समाप्त)

"उपवन" ६०९, सैक्टर २९,
नोएडा-२०१३०३

(पृष्ठ ३ का शेष)

मैं अधिक आर्य हूं......

सभा की बैठक मे प्रस्तुत और पारित हुए एक प्रस्ताव (स १६) मे कहा गया कि हरिद्वार मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय परिसर के साथ गाव जगजीतपुर, जमालपुर और ज्वालापुर अथवा सिहद्वार के समीप मे कृषिभूमि और दूसरी भूमि है, जिसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब (रजिस्टर्ड) जालन्धर है, जिसका पजाब सभा को कोई लाभ नही हो रहा है, इसलिए उपरोक्त भूमि को बेच देना चाहिए।

यह पजाब सभा की गलतफहमी है कि गुरुकुल की भूमि सभा के लाभ के लिए है। गुरुकुल की भूमि केवल गुरुकुल के लाभ के लिए है। यदि सभा अपने लाभ के लिए उसे बेचती है, तो वह विश्वासभग करती है उसने यह किया है।

यदि सम्पत्तियो के विक्रय मे लाभ की मोटी गुजाइश न हो, तो केवल धर्म प्रचार के लिए सभा प्रधान या मत्री पद के लिए कोई इतनी मारामारी, मुकदमेबाजी करने वाला नही है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

सृजन की थकन ......

आर्य सस्थाओ मे सम्भवत एक करोड छात्र- छात्राए होगी, परन्तु एक भी छात्र-छात्रा को हम आर्य समाजी नही बना पाते। अधिकाश अध्यापक, अध्यापिकाओ का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नही है। उनका कर्त्तव्य केवल सरकारी पाठ्यक्रमो का अध्यापन है। आर्य समाज की गतिविधियो मे उनकी कोई रुचि नही है। यदि विद्यालय के कार्य दिवस पर आर्य समाज का कोई आयोजन हो, तो उसमे वे अनिच्छापूर्वक भाग ले लेते है।

राष्ट्र और समाज से हमारा कोई सम्बन्ध नही है

हम आर्य समाज के मच मे घोषणा करते है कि आजादी की दूसरी जग आर्य समाज शुरू करेगा। आज देश डूब रहा है। हमे बचाना होगा। पट्टाभिसीतारमैया ने लिखा था कि आजादी की लडाई मे काग्रेस मे जिन लोगो ने भाग लिया था, उनमे ८० प्रतिशत आर्य समाजी थे। पर आज यदि आजादी की दूसरी लडाई शुरू की जाये, तो कितने आर्य समाजी शामिल होगे। किसी भी स्तर पर राष्ट्र और समाज के उत्थान के लिए सघर्ष करना तो दूर रहा, हम चिन्तन करने के लिए भी तैयार नही है।

आर्य परिवार सगठन का प्रयोग भी विफल रहा

अनेक बार आर्य समाज को सशक्त बनाने के लिए आर्य परिवार सगठन बनाने का प्रयास किया गया, परन्तु वह भी सफल नही हुआ। उसका कारण यह है कि अधिकाश परिवारो का आर्य समाज से कोई सबध ही नही है। प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति आर्य समाज मे आता है और शेष सदस्यो की आर्य समाज मे कोई रुचि नही है। आर्य परिवार भी पौराणिक जातिवादी समाज का अभिन्न अग है। उसके परिवार का अस्तित्व उसके जातिगत सगठन पर निर्भर है—बनिये का बनियो के साथ, जाट का जाट के साथ, पजाबी का पजाबी के साथ, कायस्थ का कायस्थ के साथ, कुम्हार का कुम्हार के साथ, चमार का चमार के साथ, ब्राह्मण क्षत्रिय का ब्राह्मण क्षत्रिय के साथ, गूजर, यादव का गूजर, यादव के साथ। एक शहर मे सौ आर्य समाजी परिवार है, परन्तु वे कभी भी एक-दूसरे के घर नही गये और न ही वे एक दूसरे का नाम जानते है।

इसी शहर मे कई साल से,
कुछ मेरे करीबी अज़ीज़ है,
उन्हे मेरी कोई खबर नही,
मुझे उनका कोई पता नहीं।

गुण कर्म स्वभाव के अनुसार हम वर्णाश्रम व्यवस्था स्थापित नही कर सके। पौराणिको मे तो अन्तर्जातीय विवाह हो रहे है परन्तु आर्य समाजी परिवारो मे आज भी इस प्रकार के विवाह अपवादस्वरूप ही होते है।

पिछडी जातिया हमसे अलग हुई

जातिवाद के अत्याचार मे पीडित पिछडी जातिया आर्य समाज के झण्डे के नीचे आयी, वे भी आज हमसे विमुख हो गई है। ये जातिया सामाजिक न्याय के लिए हमारे साथ लगी थी। अब सत्ता मे इनकी भागीदारी हो गई है। सत्ता के आकर्षण ने उन्हे आर्य समाज से विमुख कर दिया है। इन जातियो ने अपना सगठन अलग बना लिया है। आर्य समाज के धार्मिक पक्ष से न तो इनका पहले कोई सरोकार था और न आज है। वेद, सध्या-हवन, निर्गुण, सगुण ब्रह्म, निराकार ईश्वर, पुनर्जन्म, मोक्ष आदि प्रश्नो को ये जातिया व्यर्थ का विवाद मानती है और वेद को ईश्वर की कृति नही मानती।

हम आत्म निरीक्षण करे

आश्चर्य की बात तो यह है कि आर्य समाज की इस भयावह स्थिति से हम चिन्तित नही है। आर्य समाज के सगठन को सुदृढ बनाने का कोई भी प्रयास सफल नही हो रहा। भारतवर्ष के सौ निष्ठावान कार्यकर्ता भी यदि सगठित हो जाये, तो आर्य समाज का पुनर्जागरण हो सकता है। पर आज ऐसी विषम स्थिति है कि सौ कार्यकर्ता भी सगठित होने का मानस नही बना पा रहे, तो फिर वेद प्रचार कैसे हो?

आर्य नीति, आर्य समाज राजापार्क
जयपुर (राजस्थान)

समाचार जगत्

वीर बन्दा वैरागी का जन्म दिवस

वीरबन्दा वैरागी समिति की ओर से वीर बन्दा वैरागी का जन्म दिवस समारोह २५ नवम्बर २००१ रविवार प्रात दस बजे हवन यज्ञ से प्रारम्भ होगा। स्थान श्री रुद्र मन्दिर मानसरोवर गार्डन, रमेश नगर, नई दिल्ली-१५ मे होगा। इसमे निम्न महानुभाव आएगे। श्री मदन लाल खुराना, ससद सदस्य, श्री मोहन लाल जी सचिव डी ए वी कालेज मैनेजिग कमेटी, श्री हरबस लाल जी कपूर सहमत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और वीर रस के कवियो के द्वारा कविता का पाठ होगा।

अमरोहा आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अमरोहा (जनपद जे पी नगर) १००वॉ वार्षिकोत्सव दिनॉक १८, १९, २० नवम्बर २००१ को उत्साह पूर्वक सम्पन्न कर रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के विद्वान नेता एव सन्यासी पधार रहे है। इस अवसर पर पधार कर सगठन की शक्ति का परिचय दे।

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

आर्य जनो को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, ११९ गौतमनगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोमवार २६ नवम्बर से रविवार १६ दिसम्बर २००१ तक समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जायेगा जिसके ब्रह्मा आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती होगे। मेरी समस्त आर्य जनो से प्रार्थना है कि वार्षिक उत्सव मे अधिक से अधिक सख्या मे अपने इष्ट मित्रो एव परिवार के सदस्यो सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाये।

प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न

गुरुकुल आश्रम आमसेना मे विगत २६ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक विशाल आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमे २५० से अधिक आर्य वीरो ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर नई प्रेरणा प्राप्त की। उक्त शिविर मे आर्यवीरो को लाठी, भाला, कराटे, दण्ड बैठक, चाकू, योगासन आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इसी बीच १ नवम्बर को खरियार रोड नगर मे भव्य शोभायात्रा (रैली) निकाली गई। शराब एव मास अडो के विरुद्ध नारे भी लगाये गये। खरियार रोड नगरवासियो ने मिष्टान्न, जलपान आदि से शोभायात्रा का स्वागत किया।

उक्त शिविर मे सभी आर्यवीरो ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर जीवन को शुद्ध पवित्र रखने का सकल्प लिया। श्री स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, श्री कुजदेव मनीषी, श्री कपिल देव आर्य आदि विद्वानो ने जीवन निर्माण की प्रेरणा दी। शिविर के सारे व्यय की व्यवस्था गुरुकुल आश्रम आमसेना मे की गयी।

३ नवम्बर को शिविर समापन मुख्यातिथि नुआपाडा जिलापाल श्री सुदर्शन नायक, अध्यक्ष स्थानीय विधायक बसतकुमार जी पडा एव मुख्यवक्ता श्री राजुभाई धोलकिया थे। आर्यवीरो ने इस शुभावसर पर व्यायाम प्रदर्शन भी किया। मच का सचालन ब्र सुदर्शन देव जी नैष्ठिक ने किया।

आर्य वीर ने आर्यकन्या को ढूंढ निकाला

गत तिथि ३१ १० २००१ को पावसर (मेवात) का रतीखा मेव अपने साथी जकरिया मेव की मदद से चौदह वर्षीय कन्या हरवती पुत्री महावीर ग्राम बहीन (हथीन) का अपहरण करके अहमदाबाद ले गया था।

प नन्दलाल निर्भय को जब इसकी सूचना मिली, तो वे रघुबीर को साथ लेकर थाना हथीन (मेवात) गए और हरवती के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कराई तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक फरीदाबाद श्री रणवीर सिह शर्मा से मिले। पुलिस अधीक्षक ने श्री भरत सिह थानेदार हथीन को श्री निर्भय के साथ तुरन्त रवाना कर दिया। पुलिस दल रतीखा के भाई को पकड कर साथ ले गया। सब अहमदाबाद पहुचे, किन्तु रतीखा हरवती को लेकर अलवर भाग आया। श्री निर्भय पुलिस दल को लेकर अलवर आए तथा रेलवे स्टेशन पर रतीखा व जकरिया को दबोच लिया और हरवती को बरामद कर लिया। उस समय कन्या बेहोश थी।

श्री नन्दलाल निर्भय की वीरता, सूझ-बूझ हिम्मत की सर्वत्र प्रशसा की जा रही है।

आर्ष गुरुकुल नर्मदापुरम, होशगाबाद (म.प्र.) का वार्षिकोत्सव

तिथि मार्गशीर्ष कृ १-२-३ शनि, रवि, सोम १-२-३ दिसम्बर २००१ ई

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशगाबाद का वार्षिकोत्सव दि १-२-३ दिसम्बर २००१ को भव्य रूप से आयोजित किया जा रहा है। महायज्ञ, वैदिक सिद्धान्त व शक्ति प्रदर्शन का अपूर्व सगम है। इस अवसर पर धर्मरक्षा, गौरक्षा एव राष्ट्ररक्षा सम्मेलन भी आयोजित है। वार्षिकोत्सव मे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, आर्य नेता, भजनोपदेशक, आर्यवीर, धनुर्धारी आदि पधार रहे है। आप सभी सज्जन कृपया अवश्य पधारे और गुरुकुल को तन, मन, धन से सहयोग करके पुण्य के भागी बने।

विशिष्ट आयोजन– वैदिक देव महायज्ञ मार्गशीर्ष पूर्णिमा से आरम्भ-पूर्णाहुति ३ दिसम्बर प्रात। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश-विदर्भ व छत्तीसगढ के नव-निर्वाचित पदाधिकारियो का व्रतग्रहण समारोह–रविवार २ दिसम्बर को। आर्य समाज के विशिष्ट सेवाभावी वयोवृद्ध आर्यजनो का प्रतिनिधि सभा द्वारा सम्मान २ दिसम्बर रविवार को। योग प्रशिक्षण शिविर ३ दिसम्बर से रविवार दि ९ दिसम्बर तक। वेद मत्रार्थ प्रशिक्षण शिविर २३ से ३० नवम्बर तक। आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर २१ से ३० नवम्बर २००१ तक।

शोक सभा

दिनाक २१ १० २००१ दिन रविवार को आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी के साप्ताहिक अधिवेशन मे आर्य समाज लल्लापुरा के पूर्व प्रधान व कर्मठ समाजसेवी स्व मेवालाल आर्य को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गयी। इस शोक सभा मे उनके जीवन के अनेक किये कार्यो का वर्णन करते हुए आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति बताते हुए, उनके बतलाये मार्ग पर चलने का सकल्प लेते हुए उनके दिवगत आत्मा व शोक सतप्त परिवार को शाति व धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

इस सभा मे डा ज्वलन्त कुमार शास्त्री, प सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री लक्ष्मी नारायण आर्य, अनन्त लाल आर्य, आदि ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

उनके पुत्र विजय कुमार आर्य ने अपने पिता के पथ पर चलते हुए आजीवन आर्य समाज के कार्यो को आगे बढाने का सकल्प किया।

फरीदाबाद डी.ए.वी. कालेज में युवा उत्सव

डी ए वी कालेज, फरीदाबाद मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा आचलिक युवा उत्सव (जोनल यूथ फैस्टीवल) सोनीपत जोन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरियाणा के महामत्री श्री चमनलाल आर्य मुख्य अतिथि थे। इस उत्सव मे ३२ कालेजो के छात्र एव छात्राओ ने भाग लिया।

आर्य समाज सान्ताक्रुज़ का स्थापना दिवस व पुरस्कार समारोह

७ अक्टूबर २००१ को आर्य समाज सान्ताक्रुज का स्थापना दिवस एव पुरस्कार समारोह मनाया गया। सुश्री अन्नपूर्णा आचार्या आर्ष कन्या गुरुकुल देहरादून को युवा महिला पुरस्कार स्वरूप रु ११ हजार, स्वर्ण ट्राफी, शाल, श्रीफल एव मोती हार सादर भेट कर सम्मानित किया गया।

समग्र क्रान्ति का सर्वप्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था–कोठारी

“महाभारत काल के बाद आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द पहले महापुरुष हुए है, जिन्होने सम्पूर्ण मानव समाज को हर दृष्टिकोण से आन्दोलित किया था अर्थात् केवल वाणी से ही नही, अपितु व्यावहारिक रूप से भी समग्र क्रान्ति का पहला उद्घोष किया था।” ये वाक्य मोटर वाहन दुर्घटना दावा अधिकरण, न्यायालय, कोटा के न्यायाधीश श्री सज्जन सिह कोठारी ने विज्ञान नगर मे आर्य परिवार सस्था द्वारा प्रकाशित “आर्य परिवार स्मारिका” का विमोचन करते हुए कहे। स्मारिका पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि इस स्मारिका मे हाडौती क्षेत्र के आर्य समाजो के दिवगत ७६ आर्य कार्यकर्ताओ के जीवन परिचय और सस्मरण प्रकाशित कर उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई है।

इस अवसर पर जोधपुर निवासी और दयानन्द शोध पीठ पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ के भूतपूर्व अध्यक्ष और आर्य लेखक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ भवानीलाल भारतीय ने हाडौती सहित राजस्थान के विकास मे महर्षि दयानन्द एव आर्य समाज के योगदान की विस्तार मे चर्चा की। इस व्याख्यान मे उन्होंने कहा कि राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमत्री श्री हीरालाल शास्त्री व जयनारायण व्यास हो, हाडौती के अभिन्न हरि या प्रजा मण्डल और काग्रेस के माध्यम से स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेने वाले सभी स्वतन्त्रता सेनानी हो, सबने महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज से ही प्रेरणा प्राप्त की थी। उदयपुर, जोधपुर, शाहपुरा आदि के राजा महाराजाओ को भी उत्तम ढग से शासन कर प्रजा पालन करने का क्रियात्मक सन्देश उन्होने ही दिया था। आर्य समाज अजमेर के हरविलास शारदा ने १९२९ मे बाल विवाह के विरुद्ध कानून बनवाया जो शारदा एक्ट के नाम से आज भी विख्यात है। सभा मे स्मारिका के विद्वान् सम्पादक वेदप्रिय शास्त्री, श्रीराम फर्टिलाइजर कोटा के कारबाइड समूह के अतिरिक्त महाप्रबन्धक जबर सिह, सेवानिवृत्त न्यायाधीश अशोक कुमार वाजपेयी ने अपने विचार व्यक्त किये। डॉ रघुनाथ ओबेराय ने अध्यक्षीय भाषण दिया। डॉ रामकृष्ण आर्य ने समारोह का सचालन किया।

“आर्य जगत्” का जन चेतना यात्रा विशेषाक

“आर्य जगत्” का १ दिसम्बर २००१ का अक ‘जन चेतना यात्रा विशेपाक” होगा, जिसमे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी ए वी सस्थाओ द्वारा अलग-अलग नगरो मे की जा रही जन चेतना यात्राओ का सचित्र विवरण होगा।

–स

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R No D L 11082/2001
POSTED AT N D P O ON 21/22-11-2001 दिनाक २५-११-२००१

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का ७७वा वार्षिकोत्सव ५ नवम्बर से ११ नवम्बर २००१ तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। ५ नवम्बर से ११ नवम्बर तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन डॉ उमेश यादव, प्राचार्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के ब्रह्मत्व मे किया गया और इस कार्यक्रम के सयोजक श्री धनश्याम आर्य सिद्धातााचार्य थे। सोमवार से शनिवार तक रात्रि ७ बजे से ७ ३० बजे तक भक्ति सगीत का कार्यक्रम श्री विजय भूषण आर्य एव श्री नरेश मोलकी द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसके सयोजक श्री ज्योति प्रसाद एव श्री चन्द्रपाल आर्य थे।

उत्सव पर अपना आशीर्वाद देते हुए पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा।

उत्सव पर गायत्री महायज्ञ के यजमान पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा सपत्नीक, श्री ऐम ऐल खन्ना, श्री विश्वनाथ, श्री टी आर गुप्ता सपत्नीक और श्री रामनाथ सहगल

वेद प्रवचन

सोमवार से शनिवार तक रात्रि ७ ३० बजे से ८ ३० बजे तक वेद प्रवचनो का आयोजन स्वामी आत्मबोध सरस्वती (महात्मा आर्य भिक्षु) आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार द्वारा किया गया, जिनसे पधारे हुए आर्य जन बहुत प्रभावित हुए।

प्रतियोगिताए

दिल्ली तथा आसपास के डी ए वी स्कूलो का दयानन्द बाल मेला सोमवार से वीरवार तक आयोजित किया गया जिसमे प्रथम द्वितीय तृतीय आये हुए स्कूलो एव प्रतियोगियो का विशेष कार्यक्रम मे रविवार दिनाक ११-११-२००१ को पुरस्कार वितरण डी ए वी प्रबन्धकर्त्री समिति एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा जी द्वारा किया गया। दयानन्द बाल मेला का कार्यक्रम श्री विजय भूषण एव प्रि सुदेश हिगल एव श्रीमती सुषमा आर्या के सयोजकत्व मे हुआ।

९ नवम्बर को स्त्री आर्य समाज अनारकली का उत्सव दोपहर २ बजे से साय ५ बजे तक आयोजित किया गया।

रविवार दिनाक ११-११-२००१ को प्रात १० बजे गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति की गई। डी ए वी कालेज मैनेजिग कमेटी, नई दिल्ली के उपप्रधान श्री विश्वनाथ जी ने वार्षिकोत्सव पर पधारे हुए आर्य जनो, महिलाओ तथा अन्य सभी आगन्तुको का धन्यवाद किया। तदुपरान्त विशेष सभा का आयोजन किया गया, जिसमे प्रो रत्नसिह, डॉ रमा, ब्रिगेडियर चितरजन सावत, प्रोफेसर लक्ष्मीकान्ता चावला, आचार्य आर्य नरेश, श्री विजय भूषण आर्य आदि प्रसिद्ध विद्वानो के सारगर्भित प्रवचन हुए। डॉ रमा जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द के प्रति यदि गुरुदक्षिणा देनी है, तो राष्ट्र को वेदमय बनाये।

आचार्य आर्य नरेश ने कहा कि आतकवाद को समाप्त करना है तो मानवतावाद को जन्म देना होगा। वैदिक सस्कृति कहती है कि जीने दो और जियो। मानवतावाद दूसरो की सुख-सुविधाओ की चिन्ता करता है। दुनिया से यदि आतकवाद को समाप्त करना है तो वेदो का प्रचार करो। केवल वेद ही ऐसा धर्म है, जोकि पक्षपात नही करता। जिस दिन सब धर्मो के लोग वेद को मानने लगेगे उस दिन आतकवाद समाप्त हो जायेगा।

स्वामी आत्मबोध सरस्वती (महात्मा आर्य भिक्षु) का स्वागत करते हुए श्री विश्वनाथ, श्री डी आर गुप्ता और श्री रामनाथ सहगल।

चरित्र सब कुछ है

प्रो लक्ष्मीकान्ता चावला ने अपने प्रवचन मे चरित्र को प्रधानता देते हुए कहा कि चरित्र है, तो सब कुछ है। चरित्र गया, तो सब कुछ गया, स्वास्थ्य गया, तो कुछ गया और यदि धन गया, तो कुछ नही गया। देश की समस्याओ से परिचित कराते हुए उन्होने कहा कि रिश्वतखोरी बढती जा रही है। रिश्वत देने वाला भी पढा लिखा है और रिश्वत लेने वाला भी पढा लिखा है। जो कुछ भी हो रहा है, सब सोच समझकर हो रहा है। आज लोग व्रत करते है, कन्याओ को घर पर बुलाकर उनकी पूजा करते है, परन्तु अपने घर कन्या पैदा हो जाये तो बहू को मारते है, घर से निकाल देने की बात करते है। आतकवाद की समस्या का हल बताते हुए उन्होने कहा कि हम उनको तुरन्त दण्ड दे। प्रो लक्ष्मीकान्ता जी ने सामाजिक कुरीतियो पर कडा प्रहार करते हुए उन्हे अपने जीवन से हटाने की प्रेरणा आर्य जनो को दी।

धर्म की व्याख्या

प्रो रत्न सिह ने "धर्म" की व्याख्या करते हुए कहा कि धर्म का वास्तविक अर्थ है वह, जिससे सबका कल्याण हो। उन्होने धर्म के स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा कि सत्य धर्म का स्तम्भ है और सत्य का अर्थ है—जो जैसा है उसे वैसा ही मानना, जानना, लिखना और वैसा ही आचरण करना, जिसकी आज बडी आवश्यकता है।

डॉ रमा हसराज महाविद्यालय दिल्ली की (प्रोफेसर) ने इस देश की परिस्थिति पर विहगम दृष्टि डालते हुए कहा कि हम क्या थे, क्या है, और आगे क्या होगे अभी। उन्होने कहा कि न तो हम अपना पहनावा पहनते है, न अपना भोजन करते है और न ही अपना व्यवहार करते है और फिर भी हम स्वतन्त्र कहलाते है। डॉ रमा ने बच्चो को सस्कार देने पर बल देते हुए कहा कि आज की माता को इस काम के लिये समय अवश्य निकालना होगा, नही तो बच्चा आज टी वी से जो सीख रहा है उसमे बहुत कुछ ऐसा है जो विष के समान है।

ब्रिगेडियर चितरजन सावत ने अविद्या, अन्धकार तथा आतकवाद विषय पर बोलते हुए कहा कि कान मे मत्र फूक देने से किसी का कल्याण नही हो सकता। यह अविद्या की निशानी है। वेद मत्रो का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा कि अन्धकार के कारण मनुष्य अधोगति को प्राप्त होता है। ज्ञान का प्रकाश होने पर ही ससार के मनुष्य उन्नति को प्राप्त होते है। आतकवाद से आज तक किसी भी देश का कल्याण नही हुआ। हमे अपने मन से भय को हटाना होगा। भयभीत मन किसी भी कार्य को सही ढग से करने मे समर्थ नही होता। अतकवाद को जड से मिटाना होगा।

वीरता जगाओ

अध्यक्षीय भाषण करते हुए पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा ने भारत के शूरवीर जवानो का उदाहरण देते हुए अपने जीवन मे वीरता को उत्पन्न करने का सदेश दिया। आज देश की परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए श्री चोपडा जी ने कहा कि हमे जागना होगा। अपने इतिहास से कुछ सीखना होगा ताकि हम अपने देश को जीवित रख सके। सामाजिक कुरीतियो पर कुठाराघात करते हुए प्रधान जी ने इनसे दूर रहने का और लोगो के लिए उदाहरण प्रस्तुत करने का सदेश दिया। आर्य समाज (अनारकली) के मत्री श्री डी आर गुप्ता ने मच का सचालन करते हुए कुरीति निवारण विषय पर अपने विचार भी व्यक्त किये। शान्ति पाठ के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

सभी पधारे हुए ऋषि भक्तो के लिए आर्य समाज "अनारकली" की ओर से ऋषि लगर की व्यवस्था की गई।

मुद्रक व प्रकाशक - श्री प्रबोध महाजन, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 मे प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718 3362110) सम्पादक—उदयवीर 'विराज'

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
संस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये
विदेशो मे ३० पौंड या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये
वर्ष ६६, अक ४१
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, ९ दिसम्बर, २००१
मार्गशीर्ष कृ०-९-वि० स०-२०५८
सप्ताह ९ दिसम्बर से १५ दिमम्बर

समस्या बंगलादेशियों की

सन् १९४७ मे जब हिन्दुस्तान का विभाजन हो कर भारत और पाकिस्तान दो देश बने, तब पाकिस्तान के दो भाग थे एक पश्चिमी पाकिस्तान और दूसरा पूर्वी पाकिस्तान, जो सन् १९७१ मे स्वतत्र बगलादेश बन गया।

बटवारे की माग बगालियो की

देश का बटवारा करके पाकिम्तान बनाने की माग करने वालो मे पजाब और उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्त के मुसलमान उतने नही थे, जितने कि उत्तर प्रदेश और बगाल के मुसलमान थे। उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्त के मुसलमान तो खानअब्दुल गफ्फार खा के नेतृत्व मे देश विभाजन के विरोधी थे।

पाकिस्तान इस आधार पर बना था कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग अलग राष्ट्र है। वे न केवल अलग है, अपितु हजार साल से एक दूसरे के शत्रु भी रहे है। वे किसी तरह साथ नहीं रह सकते। अत अग्रेज़ जाते समय मुसलमानो को उनका अलग देश पाकिस्तान दे जाये।

सीधी कार्रवाई

अग्रेज़ो ने और काग्रेस ने देश विभाजन करने मे आनाकानी की, तो मुस्लिम लीग ने १६ अगस्त १९४६ को कलकत्ते मे सीधी कार्रवाई की, जिसमे तीन दिन मे ६००० हिन्दू सिख मारे गये, करोडो की सम्पत्ति लूटी गई या जला कर राख कर दी गई। यह इस बात का खूनी संकेत था कि यदि पाकिस्तान न बनाया गया, तो भविष्य क्या होगा?

काग्रेसी नेता देश विभाजन नहीं चाहते थे, परन्तु मुस्लिम लीगियो की हिसा और रक्तपात से डर कर उन्होने देश विभाजन स्वीकार कर लिया। पर जिस हत्या और विनाश से बचने के लिए उन्होने देश विभाजन स्वीकार किया था, उससे बचा नही जा सका। 'प्याज भी खाये और जूते भी खाये' वाली कहावत हो गई। १० लाख से अधिक हिन्दू विभाजन में मारे गये, डेढ करोड उजड़ कर भारत आ गये।

हिन्दू भगाये गये

पश्चिमी पाकिस्तान ने अपना सारा इलाका हिन्दुओ से खाली करा लिया और सिद्ध कर दिया कि हिन्दू और मुसलमान मिल कर शान्ति से नही रह सकते। पूर्वी पाकिस्तान के मुसलमान कम उग्र नही थे, कुछ अधिक ही थे, फिर भी वे सब हिन्दुओ को पूरी तरह खदेड नही पाये। विभाजन की उथल पुथल के बाद भी दो करोड हिन्दू पूर्वी पाकिस्तान मे बचे रह गये।

पूर्वी पाकिस्तानियो का पाकिस्तान का मोह २५ से भी कम वर्षो मे समाप्त हो गया। उन्हे लगा कि पजाबी मुसलमान बगालियो का शोषण कर रहे है। इस्लाम कुछ बचाव नही कर पा रहा।

मुक्ति सग्राम

जब सहा नही गया, तब बगालियो ने बगावत कर दी। पश्चिमी पाकिस्तान ने बगावत का कठोरता से दमन किया। लोग अग्रेज़ो के अत्याचारो को भूल गये। पाकिस्तानी सेना के दमन से पीडित १ करोड मुस्लिम और हिन्दू शरणार्थी भारत मे आ गये।

तब इन्दिरा गाधी के नेतृत्व मे भारत ने पूर्वी बगाल की सहायता की और उन्हे स्वतंत्रता दिलाई। इसमे भारत को जन धन की कितनी हानि उठानी पडी और अब भी उठानी पड रही है, इसका हिसाब लगाना व्यर्थ है।

तब कृतज्ञता थी

बगालदेश बनने के तुरन्त बाद बगला देश मे भारत के प्रति अपार कृतज्ञता थी। भावुक बगाली कहते थे कि इन्दिरा आमा यदि हमारे चमडे के जूते बनवा कर पहनना चाहे, तो हम खुशी से देंगे। हिन्दू द्वेष कुछ समय के लिए दब गया था।

कुछ वर्ष बाद बगलादेश के जन्मदाता बगबन्धु, प्रधानमत्री मुजीबुर्रहमान की उनके घर मे ही सैनिको द्वारा हत्या कर दी गई और शासन भारत विरोधी शक्तियो के हाथ मे चला गया।

बगबन्धु मुजीबुर्रहमान की अवामी लीग भी हिन्दुओ के प्रति उदार नही थी। उसके शासन मे भी हिन्दू प्रताडित हो कर भारत मे शरण ढूढने को बाध्य हुए। उनकी सख्या दिनो दिन घटती गई। परन्तु उनकी हत्या के बाद जो सरकार बनी वह हिन्दू और बौद्ध अल्पसख्यको के प्रति बहुत क्रूर थी।

खालिदा जिया की सरकार

अनेक वर्षो के अन्तराल के बाद बगबन्धु की पुत्री शेख हसीना की सरकार बनी। इस सरकार का रुख भारत के प्रति कुछ अनुकूल था, परन्तु सन् २००१ मे शेख हसीना की अवामी लीग चुनाव हार गई और बगला देश नेशनलिस्ट पार्टी की नेता श्रीमती खालिदा जिया ने सरकार बनाई। इसके सत्तारूढ होते ही इस्लामिक कट्टरपथी सगठनो द्वारा अल्पसख्यको पर अत्याचार बढ गए है। बगलादेश से जान बचा कर भाग कर आए परिवारो ने वहा पर रह रहे हिन्दुओ पर जमात-ए-इस्लामी व अन्य कट्टरपथी सगठनो के जुल्मो की कहानी बताई। लूटमार, पैसा छीनना, अपहरण की घटनाए तो आम हो गई है। लेकिन देश छोडने का प्रमुख कारण हिन्दुओ को जबरन इस्लाम धर्म कबूल कराया जाना है।

बगालदेश से आए शरणार्थियो ने बताया कि फेनी के व्यापारी रीपेन दत्ता का कट्टरपथियो द्वारा १४ नवम्बर को अपहरण किया गया। चटगाव के मीरसराय मे सुनील दास को स्थानीय गुडो ने इतना मारा कि उनकी मृत्यु हो गई। पीरोजपुर और चटगाव मे अल्पसख्यको को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए लगातार धमकिया मिल रही है। ५० वर्षीय डा० देबलाल दाकुआ को एक सप्ताह के अन्दर इस्लाम धर्म कबूल करने की धमकी दी गई है।

अल्पसख्यको पर जुल्म की ताजा घटनाओ मे ११ नवम्बर को पश्चिमी नवपाडा के ३६ घरो मे लूटपाट के लिए हथियारबद २० से २५ बदमाशो ने हल्ला बोला। उसी दिन चटगाव के रोउजान जिले गौरीशकर हाट मे १५-१६ हथियारो से लैस आदमी आए और हरेक हिन्दू दुकानदार से जबरन ५० हजार रुपए मागे।

जब दुकानदारो ने पैसा देने से मना किया तो बिधु बाबू का अपहरण कर लिया गया और दुकानो से बडी मात्रा मे चावल, गेहू के अलावा रुपए भी लूट लिए' घटनास्थलो पर पुलिस मूकदर्शक बनी खडी रही या देर से आई।

मीरसराय मे दास की हत्या के बाद करीब ३० हिन्दू परिवार बेघर हो भटक रहे है। सियालकोट, नातोर और कोमिल्ला मे मन्दिर लूट लिए गए और मूर्तिया तोड दी गई। हिन्दुओ और मन्दिरो पर हमले केवल कमाखड थाना, सिराजगज, रायगज, बैकंठपुर, कौक्स बाजार, गाजीपुर, फरीदपुर, बागेरहाट, नातोर, पबना, सियालकोट तक ही सीमित न होकर ढाका मे भी हो रहे है।

१४ अक्टूबर को मेरादिया के दुर्गा मन्दिर के पडाल मे आग लगा दी गई थी।

प्राप्त खबरो के मुताबिक खालिदा जिया का शासन शुरू होने से अब तक करीब १४ हिन्दू औरतो और लडकियो के साथ बलात्कार की घटनाए हुई है, जिनमे बागेरहाट मे ५, बारीसाल मे २, सत्तकिरिया मे १ स्कूली छात्रा के साथ, सिराजगज की ३ स्कूली छात्राओ, मागझा मे २ स्कूली छात्राओ के साथ बलात्कार के मामले सामने आए है।

कोमिल्ला के लोकनाथ आश्रम मे सामूहिक प्रार्थनाए बन्द किए जाने की धमकी दी गई है।

मन्दिरो मे महिला भक्तो के साथ बदतमीजी की घटनाए आम है। कट्टरपथी सगठनो द्वारा १६ नवम्बर को नाजिरहाट कालेज के प्रधानाचार्य श्री गोपालकृष्ण मुहुरी की गोली मार कर हत्या कर दी गई।

शरणार्थियो का रेला

इस प्रकार की घटनाओ के कारण

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

वेद सुधा

हे जातवेदस्, मुझे लक्ष्मी प्रदान करो

ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्या हिरण्य विन्देय, गामश्व पुरुषानहम्।

हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजत स्रजम्।

चन्द्रा हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।

उपैतु मा देवसख· कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धि ददातु मे।

क्षुत् पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्।

अभूतिमसमृद्धि च, सर्वान् निर्णुद मे गृहात्।

अर्थ— (**जातवेदः**) हे जातवेदस्, (**मे**) मेरे लिए (**ता**) उस (**अनपगामिनीं**) कभी मुझसे दूर न जाने वाली या मुझे कुपथ पर न ले जाने वाली (**लक्ष्मीं**) लक्ष्मी को (**आवह**) लाओ (**यस्या**) जिसमे (**अह**) मै (**गा**) गौ, (**अश्व**) घोडे और (**पुरुषान्**) पुरुषो को (**विन्देय**) प्राप्त करू।

(**जातवेद**) हे जातवेदस्, (**मे**) मेरे लिए (**हिरण्यवर्णां**) स्वर्ण के रग वाली, (**हरिणीं**) सब अभावो का हरण करने वाली (**सुवर्ण रजतस्रज**) सोने और चादी की मालाए धारण करने वाली (**चन्द्रा**) आह्लादकारिणी (**हिरण्मयी**) स्वर्णस्वरूपा (**लक्ष्मा**) लक्ष्मी को (**आवह**) लाओ।

(**देवसख· मे**) देवताओ के मित्र मेरे लिए (**मणिना सह**) बहुमूल्य रत्नो के साथ (**कीर्तिश्च**) कीर्ति भी आये। (**अस्मिन् राष्ट्रे**) इस राजशासन के आसन पर (**प्रादुर्भूतोऽस्मि**) मै प्रकट हुअ. हू, (**कीर्ति वृद्धि ददातु मे**) यह मुझे कीर्ति और वृद्धि प्रदान करे।

(क्षुत्पिपासामला) भूख, प्यास और मलिनता से युक्त (**ज्येष्ठा**) सबसे बडी (**अलक्ष्मी·**) अलक्ष्मियो को (**अह नाशयामि**) मै दूर भगाता हू। (**अभूति**) अभावो को (**असमृद्धि च**) और दरिद्रता को, (**सर्वान् मे गृहात् निर्णुद**) सबको मेरे घर से बाहर खदेड दो।

मनन— ये श्री सूक्त के पन्द्रह मत्रो मे से चार मत्र है। वेद त्याग तपस्या का ही उपदेश नही देता, लक्ष्मी सग्रह की भी कामना जगाता है। वेद जीवन के हर पहलू के लिए, समाज के हर वर्ग के लिए, व्यक्ति आयुष्काल के भिन्न भिन्न कालो के लिए यथोचित विधान करता है। शैशव की आवश्यकताए अलग है, यौवन की और, वार्धक्य की अलग। विद्याव्यसनी विद्वान् की, शोधकर्ता, विचारक और वैज्ञानिक की आवश्यकताए अलग है और राजशासक, सेनाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष की अलग। इसलिए इन सबके धर्म (कर्तव्य) अलग अलग है।

इन मन्त्रो मे जिस लक्ष्मी की कामना की गई है, वह सुखदायिनी आह्लादकारिणी है। सोना, चादी, बहुमूल्य रत्न चिरकाल से समृद्धि के द्योतक रहे है। गौए और अश्व भी धन के प्रतीक है। सबसे ध्यान देने योग्य बात है कि गौ और अश्व के साथ पुरुष को भी सम्पत्ति मे गिनाया गया है और गौ तथा अश्व का एकवचन म प्रयोग है, परन्तु 'पुरुषान्' प्रयोग बहुवचन मे है। मेरे पास ढेरो पुरुष (सेवक, आज्ञाकारी कार्यकर्ता, दास) हो। जो कार्य पुरुषो से सम्पन्न होता है, वह गौ और अश्व की अपेक्षा कही अधिक महत्वपूर्ण है। समृद्ध व्यक्ति के पास, विशेष रूप से शासक के पास गुणी सेवको, आज्ञाकारी भृत्यो का होना परम आवश्यक है।

राष्ट्र शब्द का अर्थ यहा देश नही, अपितु शासनाधिकार है। **'राष्ट्रे प्रादुर्भूतः'** का अर्थ 'मै इस देश मे पैदा हुआ हू' नही, अपितु 'मुझे शासनाधिकार मिला है' है। यह शासन का अधिकार चुनाव द्वारा भी प्राप्त हुआ हो सकता है और युद्ध द्वारा भी। चाहे चुनाव हो, या युद्ध, परन्तु उसके बाद अभिषेक शान्तिपूर्वक ही होता है। सब पक्ष यह स्वीकार कर लेते है कि हम अमुक व्यक्ति को शासक स्वीकार करते है। यह राष्ट्र मे प्रादुर्भाव है।

शासक की कामना यह होनी चाहिए कि उसके राज्य मे अलक्ष्मी (क्षुधा, पिपासा, मलिनता), अभूति (जीवन केलिए आवश्यक वस्तुओ का अभाव) और असमृद्धि (गरीबी) न हो। अलक्ष्मी सबसे घटिया स्थिति है, जिसमे खाने को अन्न नही, पीने को पानी नहीं और शरीर तथा वस्त्र मलिन है। ऐसी दशा मे मन भी मलिन होते देर नही लगती।

अभूति उससे कुछ अच्छी स्थिति है, जिसमे खाने पीने को तो है, परन्तु अन्य सुख साधनो का अभाव है। असमृद्धि उससे भी कुछ भली स्थिति है, जिसमे खाने पीने को भी है, साधारण आवश्यकता की वस्तुए भी है, परन्तु वैभव, विलास की यथेष्ट सामग्री नहीं है। ये तीनो ही दुर्दशाए है। आर्य पुरुष को लक्ष्मी से सयुक्त होना चाहिए, जिसमे अभाव और दरिद्रता का नाम भी न हो।

शासक को केवल अपना घर ही नही भरना, अपितु जिनका वह शासक है, उनका घर भी भरना है। वे समृद्ध होगे, तो शासक भी समृद्ध होगा।

फिर लक्ष्मी 'अपगामिनी' नही होनी चाहिए। लक्ष्मी स्थायी हो, छोड कर न जाये। लक्ष्मी चचल होने के लिए कुख्यात है। फिर वह कुमार्ग पर ले जाने वाली न हो। धन हाथ मे आते ही अविवेकी लोभ मद्यपान, जूआ, आदि अनेक दुर्व्यसनो मे लिप्त हो जाते है। धन तो जाता ही है, चरित्र और यश भी जाता है।

लक्ष्मी 'चन्द्रा' आह्लादकारिणी होवे। आह्लाद केवल उसका ही नहीं, जिसे वह प्राप्त हुई है, अपितु उनका भी जिनसे वह प्राप्त हुई है। पूजी लगा कर श्रमिको का हृदयहीन शोषण करके प्राप्त धन को, या लोगो को लूट कर, ठग कर, धोखा दे कर प्राप्त धन को लक्ष्मी नहीं कहा जा सकता। प्रजा से लिये जाने वाले कर पीडादायक न हो और उनका उपयोग प्रजा का सुख बढाने के लिए किया जाये, न कि सासदो और सरकारी अफसरो के वैभव और विलास के लिए।

लक्ष्मी कीर्ति देने वाली होनी चाहिए। लोग शासक की प्रशसा करे कि वह सबके सुख का ध्यान रखता है। गौए धन हैं, अश्व, हाथी भी धन है, भूमि भी धन है, नौकर चाकर भी धन हैं, सोना, चादी, हीरे मोती भी धन है, परन्तु सबसे बडा धन है यश, कीर्ति। लोकैषणा, जिसके लिए लोग परिश्रम से सचित धन का दान कर देते है।

इसलिए जातवेदस् से प्रार्थना की गई है कितू मुझे भौतिक समृद्धि तो दे ही, जिससे मै और मेरी आश्रित प्रजा सब कष्टदायक अभावो से बची रहे, साथ ही वह समृद्धि सबके लिए, मेरे लिए और मेरी प्रजा के लिए भी आह्लादकारी हो और इसके परिणामस्वरूप मेरी कीर्ति सब ओर फैले। लोग कहे कि ऐसा अच्छा शासक अन्य कोई नहीं हुआ।

सन्धि से शान्ति मिलती है

गुजरात के कवीश्वर दलपतराय डाह्याभाई के साथ प्रसिद्ध नाटककार डाह्याभाई घोलशाजी की किसी कारण अनबन हो गई थी। पत्रो मे परस्पर चर्चा की मिर्चे उडा कर जीवन मे और भी जलन बढाई जा रही थी। इस प्रकार कई वर्षो तक दोनो मे वैमनस्य चलता रहा। एक दिन वैदिक सत्सग मे किसी महात्मा का प्रवचन होने वाला था। उसे सुनने को डाह्याभाई घोलशाजी वहा गये हुए थे। प्रवचन मे उन्होने एक वाक्य सुना 'बुढापे मे वृद्ध मनुष्य को सारा वैर जला कर, कटुता भूल कर सुलह प्रेम की प्रतिष्ठा करनी चाहिये। दो पशु आपस मे सींगो से लडते है, तो परस्पर क्षमा चाहे, ऐसा हृदय ही भगवान् ने नहीं दिया। परन्तु मनुष्य को प्रभु ने विवेकशील हृदय दिया है। यह मानव को नहीं भूलना चाहिए।'

यह सुनते ही डाह्याभाई के हृदय मे एक चोट लगी। उन्होने मन मे सोचा कि बात तो सच है। बुढापा तो आशीर्वाद है, परन्तु बुढापे के दोष अभिशाप है। मनुष्य को जवानी की भूलो को बुढापे मे सुधार लेना चाहिए। कडवी निबोली मे भी पकने पर मिठास आ जाती है। इससे भाई कवीश्वर के साथ चलते लडाई झगडे का अन्त करने की उन्हे प्रेरणा मिली। सत्सग समाप्त होते ही वे सीधे कवीश्वर दलपतराय के दरवाजे पर पहुच गये। दलपतराय के आगन मे जा कर डाह्याभाई सिर झुका कर खडे हो गये।

दलपतराय इस समय घर मे हिडोले पर बैठ कर झूल रहे थे। वही से उनकी नजर डाह्याभाई पर पडी, तो कुछ क्षण के लिए आश्चर्य मे पड गये कि मै जाग रहा हू या स्वप्न देख रहा हू। दलपतराय को लगा कि जरा भी पीछे पैर न रखने वाला महान योद्धा शस्त्र त्याग कर मेरे आगन मे कहा से आ गया? कवीश्वर हिडोले से उतर कर डाह्याभाई के पास पहुच गये

'भाई आप मेरे यहा?' कवीश्वर ने गद्गद कण्ठ से कहा।

कवीश्वर का प्रेमोद्गार स्वीकार करते हुए डाह्याभाई ने कहा 'हा भाई, अन्दर चलिये। अपने दिल की बात करे।'

दोनो अनुभवी वृद्ध घर मे जा कर हिडोले पर बैठ गये। युद्ध मे यदि एक पक्ष सफेद झण्डा फहरा देता है, तो युद्ध रुक जाता है और सुलह हो जाती है। क्यो यह बात ठीक है न?' डाह्याभाई ने कवीश्वर से पूछा 'हा भाई, सुलह के लिए ही सफेद झण्डा फहराया जाता है।'

डाह्याभाई ने अपनी सिर की पगडी उतार कर कवीश्वर के पैरो के पास रख दी और फिर सिर की सफेद चोटी दिखा कर कहा 'प्रकृति की दी हुई इस सफेद झण्डी की उपेक्षा करके हम लोग कब तक लडते रहेगे, ऐसा विचार मन मे आते ही मै कवि हृदय से क्षमा याचना करने आपके द्वार पर चला आया।'

इसका उत्तर कवीश्वर ने जुबान से नहीं, उनकी आखो से झर झर झरते गगा यमुना रचते आसुओ ने ही दिया। दोनो वृद्ध राम भरत की तरह चिपक गये और जब तक जीवित रहे पवित्र मैत्री भाव से ही रहे।

क्या आर्य बन्धु इस प्रेरणामय शिक्षा से प्रेरणा लेगे, और ऋषि के पावन सिद्धान्तो को जन साधारण मे पहुचाने के लिए एक सगठन सूत्र मे बध जायेगे?

(निष्काम परिवर्तन से साभार)

मुक्ति का एक ही मार्ग

वह तमस् के पार है जो
तरुण रवि सा प्रखर भास्वर,
जान कर केवल उसे ही
मुक्ति मिलती मृत्यु से है।
पथ नही है अन्य कोई।

शिक्षा का तालिबानीकरण?

सम्पादकीय

'इडियन' अखबार शोर मचा रहे है कि राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन की सरकार शिक्षा का तालिबानीकरण कर रही है। यदि इसे न रोका गया, तो लोकतन्त्र समाप्त हो जायेगा और तानाशाही शासन स्थापित हो जायेगा; देश का एक और विभाजन होगा।

राजग सरकार भारतीय जनता पार्टी की सरकार नहीं है। उसमे जनता दल, द्रविड़ मुनेत्र कडघम, लोकदल जैसे तथाकथित पंथ निरपेक्ष दल सम्मिलित है, जो भाजपा के हिन्दुत्व कार्यक्रम को किसी शर्त पर नहीं चलने देगे, फिर भी इन 'इडियन' अखबारो का कहना है कि उन्हे झासा दे कर भाजपा अपना कार्यक्रम चोरी छिपे आगे बढ़ा रही है। विद्यालयो मे पढाये जाने वाले इतिहास को बदला जा रहा है। शिक्षा का तालिबानीकरण किया जा रहा है।

तालिबान बुरी गाली

'तालिबान' एक नया शब्द है, जिसका अर्थ लगभग वही है, जो रामायण, महाभारत मे 'राक्षस' का है। आज के युग मे इससे बडी गाली कोई नही है। तालिबान अफगानिस्तान मे उन लोगो का गिरोह था, जिन्हे पाकिस्तानी मदरसो मे उग्रपन्थी, कट्टर इस्लाम की शिक्षा दी गई थी, पाकिस्तान की सैनिक सहायता के बल पर उन्होने अफगानिस्तान के ९० प्रतिशत भाग पर कब्ज़ा कर लिया और वहा 'सच्चा इस्लामी' शासन स्थापित किया। यह धर्मान्ध इस्लामी शासन इतना कठोर और अमानुषिक था कि उससे गैर मुस्लिम तो गैरमुस्लिम, आम मुसलमान भी दुखी हो गये। उन्होने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता बिल्कुल छीन ली और नागरिको की स्थिति दास दासियो की सी बना दी। स्त्रियो का अत्यधिक उत्पीडन हुआ।

आतकवादी कार्य

अपने इस सच्चे इस्लामी शासन को अपने देश अफगानिस्तान मे स्थापित करके ही उन्हे सतोष नही हुआ। उन्होने इसे अपने पडौसी देशो पाकिस्तान, उजबेकिस्तान, ताजिकिस्तान, चेचेन्या, कश्मीर और ससार के सभी देशो मे फैलाने की चेष्टा की। इसके लिए उन्होने आतकवाद का सहारा लिया। हेरोइन जैसे मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार करके अपार धन जुटाया। वे सारे संसार मे भय के पात्र बन गये, साथ ही घृणा के भी। इसीलिए तालिबान शब्द एक कुत्सित गाली बन गया। उसी का प्रयोग चालू इतिहास को बदलने का यत्न कर रही राजग सरकार के लिए किया गया है, जिससे जनता एक शब्द में यह समझ जाये कि सरकार कितना पैशाचिक आचरण कर रही है। अगले वर्ष के शुरू मे होने वाले चुनावों में इस प्रचार का असर पडेगा।

इतिहास में हेरफेर

इस प्रचार के प्रेरक है राष्ट्रीय जनता दल के नेता श्री लालू यादव, समाजवादी पार्टी के श्री मुलायम सिह और कांग्रेस की नेता सीन्योरा सोनिया गाधी।

वह सरकार का क्या कुकर्म है, जिसके लिए उसकी इतनी कडी भर्त्सना की जा रही है? राष्ट्रीय शिक्षा शोध एव प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने इतिहास की कुछ पाठ्य पुस्तको के कुछ अशो को आपत्तिजनक मान कर उन्हे हटा देने की सिफारिश की थी और सरकार ने उन सिफारिशो को मान लिया। कुछ सस्थाओ ने, जैसे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी आदि ने इन प्रसगो को हटाने के लिए अनुरोध किया था।

आपत्तिजनक प्रसग

अब एक नजर उन प्रसगो पर डाल ले, जो अनेक वर्षो से विद्यालयो मे पढाये जा रहे थे और जिन पर कुछ सस्थाओ ने ऐतराज़ किया था

कक्षा ६ केलिए निर्धारित पाठ्य पुस्तक मे रोमिल्ला थापर ने लिखा है कि 'प्राचीन भारत मे विशिष्ट अतिथियो को सम्मान के रूप मे गोमास परोसा जाता था।'

कक्षा ८ के लिए निर्धारित पाठ्य पुस्तक मे श्री अर्जुन देव और इन्दिरा अर्जुनदेव ने लिखा है कि 'जाटो ने भरतपुर में अपना राज्य स्थापित किया और वहा से उन्होने आसपास के क्षेत्र मे लूटमार के धावे शुरू किये।'

कक्षा ११ के लिए निर्धारित पाठ्य पुस्तक मे श्री सतीशचन्द्र लिखते है कि 'सन् १६७५ मे गुरु तेगबहादुर को पकड लिया गया और कत्ल कर दिया गया। इसके बारे मे अधिकृत विवरण यह है कि आसाम से लौटने के बाद गुरु ने हाफिज आदम के साथ मिल कर पजाब प्रान्त मे लूटमार और बलात्कार करना शुरू कर दिया और सारे प्रान्त को उजाड दिया।'

पुराणो मे दी गई लम्बी वंश तालिकाओ की अपेक्षा पुरातत्वीय साक्ष्यो को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। पौराणिक परम्परा के अनुसार राम का काल ईसा पूर्व २००० भले ही मान लिया जाये, परन्तु अयोध्या मे की गई विस्तृत खुदाई से उस काल में रही किन्हीं बस्तियो का चिह्न नहीं मिला।

वैदिक यज्ञो मे बडी सख्या मे गौओ और बैलो की बलि देने के फलस्वरूप भारत मे पशुधन समाप्त प्राय हो गया।

'ब्राह्मण प्रतिक्रिया अशोक की नीति का परिणाम थी। उसने स्त्रियो द्वारा किये जाने वाले निरर्थक कर्मकाड की खिल्ली उडाई। स्वाभाविक था कि इससे ब्राह्मणो की आय कम हो गई।'

इसी प्रकार के लगभग १६ स्थल हैं, जिन्हे सरकार ने माना कि यदि इन्हे पाठ्य पुस्तको मे न भी रखा जाये, तो भी छात्रो को कोई बौद्धिक, मानसिक हानि नहीं होगी। इसलिए इन प्रसगो को हटा दिया गया। इसी को शिक्षा का तालिबानीकरण कहा जा रहा है।

ये तथ्य पाठ्य पुस्तकों में आये क्यों?

अब बडा उचित प्रश्न यह उठता है कि आज तक पाठ्य पुस्तको मे ये बाते पढाई क्यो जाती रही थी? वैदिक आर्यो के विषय मे यही एक तथ्य पढाये जाने योग्य क्यो माना गया कि प्राचीन काल मे विशिष्ट अतिथियो को गोमास परोसा जाता था? इस देश मे ७५ प्रतिशत हिन्दू बसते हैं और भिन्न भिन्न सम्प्रदायो के होते हुए भी, उनमे से अनेक के आमिषभोजी होते हुए भी, गोमास के प्रति उनमे घोर विरक्ति है। गौ को वे माता स्थानीय मानते है। शिव का वाहन नन्दी है और कृष्ण तो गौओ और गोपालो के रक्षक है। सस्कार या प्रथावश कोई भी हिन्दू गोमास मे रुचि नहीं रखता। उनके बच्चो को छठी कक्षा मे अनिवार्य रूप से यह 'सचाई' पढाने मे क्या प्रयोजन है? क्या यह हिन्दू धर्म मे उनकी आस्था घटाने और उन्हे ईसाइयत या इस्लाम की ओर धकेलने का प्रयत्न नहीं है? घर पर माता पिता सिखाये कि गौ हमारी माता तुल्य सुखदायिनी और पूजायोग्य है और विद्यालय मे पढाया जाये कि गोमास सम्मानित अतिथियो का भोजन है? यह गोवध के लिए सीधा प्रोत्साहन नही है क्या?

इतिहास लेखन क्यों?

इतिहास लेखन और उसे विद्यार्थियो को पढाने का प्रयोजन क्या है? वे अतीत की घटनाओं को जाने और उनसे शिक्षा ले कर लाभ उठाये और गलतिया करने से बचे। जो इतिहास इस लक्ष्य को पूरा नहीं करता, उससे तो किस्से कहानिया भली हैं। इतिहास इसलिए वाछनीय माना जाता है कि उसके पीछे यथार्थता का बल रहता है।

इतिहास लेखन हर किसी के बस का नहीं है। घटनाओ को छाटना और उन्हें उचित रूप मे प्रस्तुत करना शोध, धैर्य और विवेक का काम है। एक ही घटना को कई पहलुओ से देखा जा सकता है। सन् १९४२ मे पर्ल हार्बर पर जापानी आक्रमण के अमेरिकी, जापानी और भारतीयो द्वारा लिखे गये विवरण निश्चय ही भिन्न होगे। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्धो के अग्रेज़ो और जर्मनों द्वारा लिखे गये विवरण परस्पर विरोधी है। घटनाए वही है, विवरण बिल्कुल अलग है। एक ही घटना के भारतीय और पाकिस्तानी विवरण परस्पर विपरीत होते है। सत्य क्या है, यह दर्शक पर निर्भर करता है।

नकलची लेखक

विडम्बना यह है कि ऊपर जिन स्वनामधन्य इतिहासकारो की पाठ्य पुस्तको का उल्लेख हुआ है, वे इतिहासकार की कोटि मे ही नहीं आते। उन्होने इतिहास की कोई शोध नही की है। अग्रेज़ या अन्य विदेशी इतिहासकारो ने जो कुछ लिख दिया है, उसका अग्रेज़ी से अग्रेज़ी मे अनुवाद (नकल) करके वे इतिहासकार बन गये है। नकल करने मे भी उन्होने विवेक से काम नही लिया।

लेखक का दृष्टिकोण

इतिहास लिखते समय विदेशी इतिहासकारो का अपना दृष्टिकोण था। आवश्यक नही कि वह हम भारतवासियो के प्रतिकूल ही रहा हो। अपनी स्वतत्र बुद्धि से उन्होने जैसा समझा, वैसा लिख दिया। गुरु तेगबहादुर के विषय मे उन्हे कही मुगल दरबार के सरकारी कागजो मे कुछ लिखा मिला, उसे उन्होने 'अधिकृत विवरण' के रूप मे उद्धृत कर दिया। यह हमारे नकलची भारतीय इतिहासकार को देखना चाहिए कि मुगल दरबार की उस 'अधिकृत सचाई' को ही परम सत्य मान लेना है या नहीं। अफजल खा ने शिवाजी को 'पहाडी चूहा' कहा, तो क्या हम भी निष्पक्ष सत्यवादी इतिहासकार बन कर उन्हे 'पहाडी चूहा' कहना शुरू कर दे? अग्रेज़ नेताजी सुभाष को 'बागी' कहते थे और भगतसिह, चन्द्रशेखर आज़ाद, रामप्रसाद बिस्मिल आदि को आतकवादी कहते थे। क्या हम भी उन्हे बागी और आतकवादी कहने लगे?

इन 'विद्वानो' ने ऐसी पुस्तके लिखीं, इसके लिए उन्हे दोष देना व्यर्थ है। जिसके पास कोरा कागज और हाथ मे कलम है, वह चाहे जो कुछ लिख सकता है। अफसोस उन पर है, जिन्होने इन नकलचियो को 'इतिहासकार' मान लिया और उनकी पुस्तको को पाठ्यक्रम मे स्वीकृत कर लिया।

इन विद्वानो की ख्याति अपने विषय मे दक्षता के कारण नहीं, प्राध्यापक पदो पर नियुक्त होने के कारण है। ये पद इन्हे वामपन्थी विचारधारा के

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द का जन्म स्थान

श्री इन्द्रजित् देव, पुरानी सब्जी मडी मार्ग यमुनानगर (हरियाणा) से लिखते है·

"आप महर्षि दयानन्द की जीवनी, उनके बलिदान व जन्म स्थान को एक योजनाबद्ध ढग से विवादास्पद बनाने का कार्य "आर्य जगत्" में कर रहे है।

१६ सितम्बर २००१ के अंक मे वन्दिता अरोडा का लेख छापकर आपने अपनी भावना का परिचय दिया है। इसका उत्तर आदित्यमुनि वानप्रस्थ ने 'दयानन्द सन्देश' के अक्टूबर २००१ व टकारा समाचार के नवम्बर २००१ के अको मे दे दिया है। यदि आपके पास लेखक ने यह लेख भेजा था तो इसे छापा जाना चाहिए था और यदि नहीं भेजा, तो उक्त पत्रिकाओ से लेकर अविकल रूप मे साभार 'आर्य जगत्' मे प्रकाशित करके अपनी निष्पक्षता व महर्षि के जन्म स्थान व जन्म तिथि सम्बन्धी तथ्यो की रक्षा करे।"

किसी भी विषय को विवादास्पद बनाना सत्यान्वेषी का काम है। विवाद से भय क्यो? सारे शास्त्रार्थ विवाद ही तो है। विवाद से भय उसे होता है, जिसकी दूकान चल रही हो। दूकानदार विवाद नही चाहता। गाहकी घटती है।

ऋषि दयानन्द ने अपने पूना प्रवचन मे कहा 'गुजरात मे धागधा नाम का देशी राज्य है। उसकी सीमा पर मोरवी नाम का शहर है। वहा मेरा जन्म हुआ।'

इसमे सदेह की कोई गुजाइश नही थी। पर जीवनी लेखको ने 'शहर' का अनुवाद 'राज्य' कर दिया, क्योकि उन्होने किसी कारण मान लिया कि ऋषि का जन्म स्थान टकारा है।

पडित लेखराम आर्यपथिक ने तीन वर्ष गुजरात मे भ्रमण करके महर्षि का जीवन चरित्र लिखा। उसमे उन्होने लिखा कि दयानन्द जी का जन्म स्थान टकारा नही, मोरवी शहर है।

बाद मे अन्य विद्वानो ने ऋषि के अपने कथन और लेखराम जी के लेख के विपरीत यह लिखा कि दयानन्द जी का जन्म स्थान टंकारा था और उनके पिता का नाम अम्बाशकर नही, कर्सन जी तिवारी था।

विवाद डा० वन्दिता अरोडा ने खडा नहीं किया, विवाद पहले से चला हुआ है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जन्म स्थान और जन्म तिथि के विषय मे कुछ निर्णय कर लिये है, उतने से वे सर्वमान्य नहीं हो जाते। जो लोग आर्य समाज के सदस्य नहीं है, वे तो उसके बाद भी स्वतत्र बुद्धि से सोचने को स्वतत्र है। फिर आर्य समाज के सदस्य ही उस स्वतत्र चितन से वचित क्यो हों? सत्य का जब भी पता चले, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। आपने लिखा है कि 'डा० वन्दिता अरोडा के लेख का उत्तर श्री आदित्य मुनि वानप्रस्थ ने दे दिया है।' लेख मे उत्तर देने के लिए कोई प्रश्न नहीं था। कहना चाहिए कि श्री आदित्य मुनि ने अपने विचार प्रकट किये है।

आपने लिखा है कि आदित्य मुनि जी का लेख उन पत्रिकाओ से ले कर 'अविकल साभार प्रकाशित कीजिये।' उक्त लेख मे से उत्तरार्ध तो ऋषि की जन्मतिथि के विषय मे है, जिससे 'आर्य जगत्' में छपे लेख का कोई सम्बन्ध नहीं है। ये सब तिथिया कपोल कल्पित हैं। पूर्वार्ध को भी अविकल छापने का प्रयोजन नहीं है। उतना अंश छाप देना पर्याप्त होगा, जिससे उनके कहे सब वाद बिन्दु सही सही आ जाये, कुछ छूटे नहीं।

इससे पहले यह बता देना उचित होगा कि इजीनियर आदित्य मुनि वानप्रस्थ जी ने श्री दीनबन्धु वेदशास्त्री द्वारा सकलित 'कलकत्ता कथ्य' नामक ऋषि जीवनी को प्रमाण मान लिया है, जिसे अनेक आर्य विद्वानो ने गपोड बताया है। वानप्रस्थ जी की तर्कशैली भी हमे समाधानजनक नहीं लगती। आपके सुझाव पर श्री वानप्रस्थ जी के लेख के सम्बन्धित अश उद्धृत किये जा रहे है

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का साप्ताहिक मुखपत्र 'आर्य जगत्' इन दिनो ऋषि दयानन्द के जीवनी सम्बन्धी स्थापित तथ्यो को विवादास्पद बनाने मे जुटा हुआ है। इस पत्र ने पहले तो प्रो० जयपाल विद्यालकार का 'आर्य जगत्' के ऋषि बोधाक (५ मार्च, २०००) में एक लेख छापकर आर्यजनो को यह बोध कराने का प्रयास किया कि ऋषि दयानन्द के पिता का नाम अम्बाशकर था। फिर किन्ही प्रवीणकुमार के नाम से 'अन्तिम अध्याय' शीर्षक एक लम्बी लेखमाला (१९ नवम्बर २००० से १४ जनवरी, २००१ तक) छाप कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि दयानन्द की मृत्यु स्वाभाविक हुई थी, उन्हे विष नहीं दिया गया। इस लेख का प्रतिवाद डा० भवानीलाल भारतीय 'दयानन्द सन्देश' के अप्रैल २००१ के अक मे हमारे निवेदन पर कर चुके है, जिसे बाद मे 'आर्य जगत्' ने भी अपने २९ अप्रैल, २००१ के अक मे 'दयानन्द सन्देश' से लेकर प्रकाशित किया। अब डा० भारतीय के लेख मे आए नन्हीं भगतन या वेश्या के उल्लेख को लेकर डा० भारतीय और प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु में 'दयानन्द सन्देश' के माध्यम से बहस छिडी हुई है।

इसके बाद बारी थी दयानन्द जन्म स्थान टकारा को विवादास्पद बनाने की। सो 'आर्य जगत्' ने अपने २० मई, २००१ के अक मे 'स्वामी दयानन्द, ब्रह्मर्षि से अधिक राजर्षि थे' शीर्षक आवरण लेख लिखकर और आर्यो को यह बता कर कर दिया कि दयानन्द का जन्म मच्छो नदी के किनारे स्थित मोरवी शहर मे हुआ था। इसके लिए सम्पादक जी ने पूना प्रवचन मे दयानन्द द्वारा कहे गए अपने पूर्व चरित्र को आधार बनाया था। इसका प्रतिवाद हम 'वेदवाणी' सहित कुछ आर्यपत्रो मे कर चुके हैं। अब आर्य जगत् ने अपने १६ सितम्बर, २००१ के अंक मे डा० वन्दिता अरोडा का एक सचित्र लेख प्रकाशित कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि दयानन्द को जिस शिव मन्दिर में १४ वर्ष की अवस्था मे बोध हुआ था, वह मोरवी का जडेश्वर महादेव का बडा मन्दिर ही हो सकता है, टकारा का छोटा सा कुबेरनाथ महादेव का मन्दिर नहीं।

अब पूना मे १८७५ ई० में कोई टेपरिकार्डर या शीघ्रलेखक तो था नहीं, जो उसने स्वामी जी के कथन को हूबहू रिकार्ड या अकित कर लिया हो। स्वामी जी ने अपने जीवन के विषय मे वहा जो दो घटे मे बताया था वह अब पुस्तक मे मात्र ७ पृष्ठीय छपे हुए व्याख्यान के रूप मे ही मिलता है। अत यह सुना हुआ और संक्षेप कर लिया गया विवरण वैसा ही है जैसे आजकल के अखबारो मे महात्माओ और राजनेताओ के भाषणो का सार-सक्षेप छपता है और जिनका राजनेता आए दिन प्रतिवाद भी करते रहते है। एक महात्मा तो इस पर ध्यान भी नहीं देता कि उसके विषय मे कहा क्या छप रहा है? अत पूना प्रवचन शब्दश· प्रमाण योग्य नहीं है।

अब देखिए मेरे गाव चिलसरा मे भी एक शिव मन्दिर है। वह गाव के बाहर दक्षिण दिशा मे एक टीले पर बना हुआ है जिसके एक ओर एक बडा बरगद का वृक्ष है। टीले पर एक लगभग २५-२५ गज लम्बा चौडा ऊचा चबूतरा बना हुआ है जिस पर सीढियो के द्वारा ही चढना होता है। चबूतरे के एक कोने पर एक नीम का पेड है और दूसरे कोने पर लगभग दो गज का वर्गाकार शिव-मन्दिर बना हुआ है जिसकी ऊचाई भी ४ गज से अधिक नहीं होगी। उसमे तीन दिशाओ मे तीन दरवाजे हैं। बीच मे शिवलिग स्थापित है जिसके ऊपर एक जल से भरा हुआ घडा टगा रहता है जिससे बूद बूद कर पानी टपकता रहता है। मैने अपने बचपन मे एक शिवरात्रि वहा बिताई थी। इस अवसर पर गाव के कम से कम दो-तीन सौ लोग उपस्थित रहे होंगे जिससे एक मेला सा लग गया था। सभी लोग उस ऊंचे चबूतरे पर अथवा उसके नीचे भी यत्र-तत्र बैठे रह कर या लेट कर भी जागते रहने का प्रयत्न करते थे। जब पूजा का समय होता था तो पुजारी घटा बजाता था। तब सब लोग उस छोटे से मन्दिर के चारो ओर इकट्ठे हो जाते थे और पूजा करके इधर उधर बिखर जाते थे। मन्दिर मे पुजारी के अलावा दो-चार व्यक्ति ही समा पाते थे। ऐसा ही कुछ दृश्य १८३८ ई० की शिवरात्रि पर टंकारा में रहा होगा, जिसका लिखित विवरण अब पूना के उक्त प्रवचन में उपलब्ध है। इस समय तो टकारा के इस शिव मन्दिर के चारो ओर अनेक मन्दिर बन गए है, परन्तु १८३८ ई० मे उसके चारो ओर पर्याप्त खुला हुआ स्थान अथवा प्रागण था।

पूना के उक्त प्रवचन मे भी स्वामी जी ने कहा है कि "मेरे गाव मे गांव से बाहर एक बडा देवालय है" यह नहीं कहा कि 'मेरे शहर से बाहर एक बड़ा देवालय है' जबकि मोरवी गाव नहीं, एक शहर है। जब कोई व्यक्ति अपने प्रारम्भिक जीवन के विषय मे बताने लगता है तब वह वही बताता है कि जो उसने अपनी बाल्यावस्था मे अनुभव किया होता है क्योकि वैसा बताते समय चित्त में पड़े वही सस्कार प्रभावी होकर बोलने लगते है। अतः दयानन्द ने अपनी लगभग ५१ वर्ष की अवस्था मे भी टकारा के जिस शिव मन्दिर को बड़ा बताया था वह उन छोटे छोटे शिव मन्दिरो से तो बडा ही था जो उस समय टकारा मे घर घर मे बने हुए थे। मूलशकर की उस छोटी सी गाव की दुनिया मे टंकारा का यह शिव मन्दिर भी वस्तुत बडा ही था। इस मन्दिर मे बिल से चूहा निकला था। इसलिए मन्दिर का फर्श अवश्य ही कच्चा रहा होगा अन्यथा बडे बडे मन्दिरो के फर्श तो प्राय. पक्के ही हुआ करते है, जहा चूहे बिल नहीं बना सकते। तब उन्हे मन्दिर मे बिल से बाहर निकलने के स्थान पर मन्दिर के बाहर से ही आना होता जिससे मूलशकर को उनका बिल से निकलना दृष्टिगोचर नहीं होता।

अब तनिक दयानन्द द्वारा हस्ताक्षरित आत्मकथा का पाठ देखिए जो १९७५ मे आर्य जनता के सम्मुख पहली बार आया। उसमे लिखा है कि "जब १४ चतुर्दशी की शाम हुई तब बडे बडे बस्ती के रईस अपने पुत्रो सहित मन्दिरो मे जागरण करने को गये। वहा मै भी अपने पिता के साथ गया और प्रथम प्रहर की पूजा करी। दूसरे प्रहर की पूजा करके पुजारी लोग बाहर निकल के सो गए। मैने प्रथम से सुन रखा था कि सोने से शिवरात्रि का फल नहीं होता है। इसीलिए अपनी आखो मे जल से छीटे मार के जागता रहा और पिता भी सो गए।"

आत्मकथा के इस पाठ मे 'मन्दिरो' ऐसा बहुवचन का प्रयोग हुआ है जिससे यह आशय निकलता है कि जैसे बस्ती के अन्य रईस अपने अपने पुत्रो के साथ विभिन्न शिव मन्दिरो में रात्रि जागरण के लिए गए, वैसे ही मूलशकर भी एक मन्दिर मे जिसका निर्माण स्वयं उनके पिता जी ने टकारा के बाहर कराया था। उक्त लेख मे 'वहां मै भी' से आशय 'वैसे मैं भी' लेना चाहिए जिससे उक्त कथन इस प्रकार होगा कि "तब जहा (=जैसे) बड़े बस्ती के रईस अपने पुत्रो सहित मन्दिरो मे जागरण करने को गये, वहा (=वैसे) मै भी अपने पिता के साथ गया।" यहा 'बस्ती' शब्द भी ध्यान देने योग्य है जिसका प्रयोग टकारा जैसी छोटी बसाहटों के लिए ही किया जाता है, मोरवी जैसे बडे नगरों की बसाहटों के लिए नहीं। यदि मन्दिर बड़ा था और उसमें तमाम लोग सो रहे थे तो पुजारियों को बाहर 'जाने की क्या जरूरत थी? वे भी अन्य लोगों की तरह उसी मन्दिर के अन्दर ही सो जाते। कलकत्ता मे दयानन्द द्वारा बताए गए आत्मचरित्र मे तो साफ लिखा है कि "नगर से बाहर डेमी नदी के किनारे पिता जी के

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य समाज का रोग और उपचार

❑ प्रो० जयदेव आर्य

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना एक महान्, सार्वभौम, प्रगतिशील आन्दोलन के रूप में की थी। आर्य समाज के १० नियम और उनमे भी विशेष कर छठा नियम तथा उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के ३ उद्देश्य उनकी विशाल दृष्टि, उच्चाकांक्षा और उदात्त भावना के निदर्शक हैं। इन लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए उन्होने जो प्रयास और आन्दोलन किये, उनका पता उनके अनेक लोगो के साथ "पत्र व्यवहार" और निकाले गये "विज्ञापनो" (रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित सग्रह) के सम्यक् अवगाहन से चलता है। अब के आर्य समाज के सगठन और आन्दोलन ऋषि दयानन्द के उन आन्दोलनो के मुकाबले अत्यन्त तुच्छ है। यह स्थिति दुखदायी है।

इस स्थिति का कारण क्या है और उससे उबरने के, आर्य समाज को ऋषि की आकाक्षाओ के अनुरूप गतिशील और प्रभावशाली बनाने के उपाय क्या है? आर्य समाज के सगठन के स्तर पर आर्य समाज की गाडी उसी स्टेशन पर रुकी खडी है, जहा वह आज से ४०-५० वर्ष पूर्व रुकी थी। जो थोडा बहुत काम आर्य समाज की वैधानिक सस्थाए करती भी हैं, वह ऊट के मुह मे जीरे से अधिक नही है। सुचारु सचालन केअभाव मे आर्य समाज के कुछ दिलजले, विचारशील और साधन सम्पन्न लोग व्यक्तिगत रूप से जो अच्छे काय करते भी है, वे उतने फलदायी नहीं हो पाते, जितने कि एक अधिकृत सर्वोच्च सगठन के सहयोग से और निर्देशन मे हो सकते है। इन छिटपुट बिखरे और असगठित प्रयासो को सुदृढ बनाने के लिए आर्य समाज के वैधानिक सगठन को एक सर्वथा नया रूप देने की आवश्यकता है। जब तक हमारा सगठन ठीक नहीं होता, तब तक आर्य समाज की प्रगति होना कठिन है।

आर्य समाज और उसके सर्वोच्च सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपनियमो मे इन्हे सशोधित करने का प्रावधान विद्यमान है और उसके अनुसार सन् १९३५ में महात्मा नारायण स्वामी जी और नवम्बर १९७१ मे ला० रामगोपाल जी शालवाले (स्वामी आनन्दबोध जी) के नेतृत्व मे इनमें काफी सशोधन किये भी गये थे, तो अब ३० वर्ष के बाद पुन. उनमे कोई क्रान्तिकारी आमूलचूल परिवर्तन क्यो नहीं किये जा सकते? वर्तमान व्यवस्था मे ऋषि के कुछ आदेशों और निर्देशों का निम्न प्रकार से पालन बिल्कुल नहीं हो रहा है

१ ऋषि ने आर्य समाज का सविधान प्रजातान्त्रिक पद्धति पर बनाया था, परन्तु साथ में कुछ विशेष प्रावधान इसके अतिरिक्त भी किये थे। जैसे उन्होने कहा कि हजारो मूर्खों की अपेक्षा एक आप्त पुरुष का कथन अधिक माननीय है। इस बात का पालन कहा हो रहा है और क्यो नहीं हो रहा है? हो, तो कैसे हो?

२. उपनियम ३ मे लिखा गया था कि प्रतिदेश के मध्य एक प्रधान समाज होगा। यहा प्रश्न है कि प्रतिदेश का अर्थ क्या है? अब भारत सरकार द्वारा मान्य प्रत्येक राज्य मे एक एक मुख्य आर्य प्रतिनिधि सभा है और वे सब सभाए सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध है। परन्तु भारत के बाहर के देशो को इसमे ऐसे प्रतिनिधित्व दिया जाता है, जैसे वे देश भारत के ही राज्य हो। इससे इस सभा की कार्यप्रणाली और योजना मे आर्य समाज को विश्व के सभी देशो मे पहुचाने और उन्हे उचित प्रतिनिधित्व देने की सभावना समाप्त हो गई है।

३ आर्य समाज का सदस्य कोई भी बन सकता है, पर सभासद बनाने की कसौटी सदाचार पूर्वक न्यूनतम २ वर्ष तक सदस्य रहने की रखी गई है। प्राय समाजो मे गुटबन्दी और वशवाद के आधार पर सदस्य बनाने, या सदस्य बिल्कुल न बनाने की परम्परा बन चुकी है और उसे तो तोडना न आज के नेतृत्व को अभीष्ट है और न ही उसके वश मे है। सदाचार की परिभाषा पर सभासदो को कसने का किसी के पास कोई अधिकार या विधि नही है।

४ न्यायसभा का कही कोई अस्तित्व नहीं है। नाम मात्र के लिए केवल अपने पक्ष के कुछ लोग वहां बिठा दिये गये हैं, जो उनके विपक्षियो की सदस्यता को निरस्त कर आर्य समाजो मे तदर्थ समितिया बनाकर सारे सगठन पर उनका कब्जा बनाये रखने में नेताओ की सहायता करते है।

५ सदस्य बनने पर आय के शताश का नियम लुप्त है और जो धन एकत्रित होता भी है, उसे बिना किसी पुष्ट सुचिन्तित योजना के केवल जलसे जुलूसो के आयोजन पर खर्च कर दिया जाता है, जिसे ऋषि ने व्यर्थ तथा प्रवृत्ति को बहिर्मुखी करने वाला कहा था और इसके कारण ब्राह्म समाज की कठोर आलोचना भी की थी।

६ आर्य समाज के कार्य को योग्य व्यक्तियो द्वारा गति और विस्तार देने के लिए उपनियम १४ के द्वारा केवल कुछ सभा-सदस्यो, अतरग सदस्यो और अधिकारियो को ही नहीं, आर्य सदस्यो को भी नियुक्त करके अनेक उपसभाए बनाने का प्रावधान है। यह प्रणाली शायद ही कहीं चालू हो। महाकवि बाण के शब्दो मे "नेता" लोग योग्य, सुशिक्षित, निष्पक्ष आर्यो से ऐसे ही डरते है, जैसे काले साप से या काटो से। इसके कारण पार्टीबाजी मे न पड़ने वाले अनेक योग्य लोग अपने घर पर निठल्ले बैठे हैं या सघ जैसी दूसरी सस्थाओ में चले जाते हैं। यह "प्रतिभा पलायन" का मामला है।

७ उपनियम ११ के अनुसार कोई पदाधिकारी केवल सर्वसम्मति से ही ३ वर्ष से अधिक तक अपने पद पर रह सकता है, परन्तु इससे अनेक अयोग्य, पार्टीबाज और अशक्त लोगो ने समाज की निरन्तर प्रगति करते जाने का रिकार्ड दिखाए बिना ही मरने तक पद पर जमे रहने का अभिप्राय निकाल लिया है।

८ इस समय समाज के संगठन मे विद्वान् पुरोहित को कोई स्थान नहीं है। स्त्री पुरोहित या पुरोहित पत्नी के स्थान का तो प्रश्न ही नहीं है।

९ आर्य समाज की विशाल सम्पत्तियो का क्रय-विक्रय मनमाने तरीके से होता है। उसमे पारदर्शिता नही है और न ही सभाओ ने उनकी उचित देखभाल करने के लिए कोई कर्मचारी नियुक्त किये है।

१० आर्य सभासद् हिन्दी-सस्कृत जानते हो, इस नियम का पूर्णत लोप है।

११ कोई आर्य सभ्य किसी जातीय सगठन का सदस्य न बने, यह नियम भी उपेक्षित है।

१२ समाज के ७ अधिकारी हो, जिनमे एक आर्यवीर दल का अधिष्ठाता भी हो और एक पुस्तकाध्यक्ष भी। यह नियम भी उपेक्षित है और अनेक समाजो से पुस्तकालय भी नदारद हैं या बन्द हैं।

सक्षेप मे ये १२ कमिया यहा लिखी हैं। कमिया और भी है। इनके होते हुए समाज की उन्नति और प्रगति असम्भव है।

अब प्रश्न है चिकित्सा का। मेरा विचार है कि वर्तमान की चुनावी तिकडमो के कारण सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद का अवमूल्यन हो गया है और वह आर्य समाजियो तथा दूसरो की श्रद्धा का केन्द्र नही बन पाया है। हमारे देश मे जितने भी बडे धार्मिक सगठन है उनके प्रमुखो का चुनाव बार-बार न होकर एक बार ही होता है और फिर वह प्रमुख आजीवन उस पद पर रहता है और उस सगठन मे पूरा समय और शक्ति लगाने के अतिरिक्त उसका कोई और काम या निजी स्थान नही होता। इसी प्रकार सार्वदेशिक सभा का प्रधान भी जो बने, उसे अपने पारिवारिक कर्तव्यो और सम्बन्धो से सर्वथा मुक्त होना चाहिए और उसका अपना निजी स्थान, आश्रम या सस्थान आदि नही होने चाहिए। वह सन्यासी या वानप्रस्थी हो, या प्रधान बनने पर हो जाए। उसे वेद, वैदिक साहित्य, सस्कृत और आर्य समाज के इतिहास आदि का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। वह अच्छा वक्ता और योगाभ्यासी भी हो। ये योग्यताए अनिवार्य रूप से उसमे होनी चाहिए। वह आर्य समाज मे कार्यरत योग्यतम व्यक्तियो को चुन-चुन कर अपने कार्यकारी मडल मे सम्मिलित करे। उसके लिए मृदु और गम्भीर स्वभाव का होना भी आवश्यक है।

उसके चुनाव की कोई अच्छी पद्धति बनाने के लिए पोप, रा०स्वय से० सघ, राधास्वामी सत्सग, ब्रह्माकुमारी, रामकृष्ण मिशन आदि की पद्धतियो का अध्ययन और समीक्षण किया जाना चाहिए। अच्छा हो कि आर्य समाजो द्वारा नामाकित किये गये उपयुक्त गुणो वाले विद्वानो का प्रान्तीय और सार्वदेशिक स्तर पर एक बडा निर्वाचक मण्डल पहले बनाया जाए और फिर वह मण्डल सर्वसम्मति से प्रधान का चुनाव करे। चुनाव के समय उस निर्वाचक मण्डल के सदस्य तभी कमरे से बाहर निकले, जब वे सर्वसम्मति से किसी एक नाम पर सहमत हो जाए। इसी विधि से प्रान्तीय सभाओ के भी प्रधान चुने जा सकते है।

प्रधान के विरुद्ध यदि किसी को शिकायत हो, तो वह मुख्य निर्वाचक मडल के पास उसे भेजे। पर सार्वजनिक आलोचना करने पर उसे आर्य समाज से निष्कासित कर दिया जाए। गम्भीर शिकायते सही सिद्ध होने पर प्रधान के विरुद्ध महाभियोग चलाकर उसे पदच्युत किया जाए, अन्यथा नहीं। प्रधान के लिए एक सलाहकार समिति का भी गठन किया जाए।

इस विषय पर हर आर्य समाज को गम्भीरतापूर्वक चिन्तन अवश्य करना चाहिए— ऐसी मेरी इच्छा है।

ऐसे प्रधान के नेतृत्व मे ऊपर लिखी सभी कमियो को बडी सरलता से दूर किया जा सकता है। वार्षिक द्विवार्षिक आदि योजनाए बनाई जा सकती है और उत्तरदायित्व निर्धारित किये जा सकते है। पुरोहितो का सरक्षण और उन पर नियत्रण हो सकता है। आर्य समाजो और उनकी सम्पत्तियो को अवाछनीय, भ्रष्ट, अनार्य समाजी लोगो से मुक्त करवा कर उन्हे गतिशील बनाया जा सकता है। विदेशो मे प्रचारक भी भेजे जा सकते है। काश ऐसा हो सके।

२४९-कादम्बरी अपार्टमेंट, सैक्टर-९,
रोहिणी, नई दिल्ली-८५

दिल्ली में वैदिक चेतना शिविर

पंजाब के डी० ए० वी० विद्यालयों के प्राचार्यों में उत्साह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली एव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली के अन्तर्गत आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पजाब के तत्वावधान मे पजाब के डी० ए० वी० (एडिड/पब्लिक) स्कूलो के प्राचार्यो का वैदिक चेतना शिविर रविवार, १८ नवम्बर, २००१ तथा सोमवार, १९ नवम्बर, २००१ को कुलाची हसराज माडल स्कूल, अशोक विहार, फेज-३, नई दिल्ली मे आयोजित किया गया।

पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा जी, प्रधान डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा उद्घाटन समारोह मे अध्यक्षीय भाषण एव प्रधानाचार्यो का मार्गदर्शन करते हुए।

पजाब स्थित प्राचार्यो के वैदिक चेतना शिविर का ज्योति प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्रद्धेय पद्मश्री जी० पी० चोपडा जी।

इसमें पूर्व ३ नवम्बर, २००१ को पजाब के विभिन्न शहरो मे विशाल जन चेतना यात्राओ का आयोजन किया गया, जिनके द्वारा देशवासियो को समाज मे फैली कुरीतियो के विरुद्ध जागृत किया गया। चेतना की इस लहर को आगे बढाते हुए वैदिक चेतना शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य स्कूलो के प्राचार्यो मे नई चेतना का सचार करना था तथा उन्हे प्रेरित करना था कि वे अपने विद्यालयो मे ऐसा वातावरण सुनिश्चित करे जिसमे आर्य समाज के सिद्धान्तो तथा वैदिक मूल्यो की सत्ता हो तथा आधुनिक विज्ञान एव प्रौद्योगिकी का अविरल विकास हो।

उद्घाटन समारोह

रविवार दिनाक १८ नवम्बर, २००१ को पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा की अध्यक्षता मे प्रात १० ३० बजे उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ हुआ। श्री जी० पी० चोपडा ने मन्त्रोच्चारण सहित ज्योति प्रज्वलित कर, विधिवत् वैदिक चेतना शिविर का उद्घाटन किया। प्रिसिपल इन्द्रजीत तलवाड, जो मच सचालन कर रहे थे, ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पजाब के विविध योगदान की चर्चा की। प्रिसिपल डी० आर० गुप्ता, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पजाब ने अध्यक्ष जी० पी० चोपडा का स्वागत करते हुए शिविर मे आए प्रतिभागियो का धन्यवाद किया। उन्होने भारत के गौरवमय अतीत का वर्णन किया और कहा कि कालान्तर मे मुगलो और अग्रेज़ो के शासन के दौरान भारतीय समाज कुरीतियो के घोर अधकार मे डूब गया। इस अन्धकार को दूर करने के लिए स्वामी दयानन्द ने निरन्तर सघर्ष करते हुए अपने प्राणो को आहूत किया। अज्ञानता के अन्धकार को दूर करने के लिए उन्होने सत्यार्थप्रकाश लिखा तथा आर्य समाज की स्थापना की। उनके शिष्यो ने डी० ए० वी० आन्दोलन की स्थापना की। समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए अनेक शिक्षण सस्थाए आरम्भ की गई, जिनमे वैज्ञानिक शिक्षा के साथ साथ वैदिक सस्कृति के सरक्षण पर बल दिया गया।

आचार्य महावीर मुमुक्षु "वैदिक ज्ञान पर आधारित भावी पीढ़ी का निर्माण" विषय पर प्रवचन करते हुए।

श्री प्रबोध महाजन, मत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, वैदिक चेतना शिविर के उद्घाटन के अवसर पर आदरणीय श्री जी० पी० चोपडा एव अन्य प्रतिभागी प्रधानाचार्यो का स्वागत करते हुए।

बचपन से ही उचित शिक्षा

श्री प्रबोध महाजन, मत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली ने अपने स्वागत भाषण मे प्राचार्यो को प्रेरित करते हुए कहा कि बाल हृदय अतिशीघ्र प्रभाव ग्रहण करता है। समाज मे व्याप्त अन्धविश्वासो को समाप्त करने के लिए बच्चो को उचित शिक्षा दी जाए। आचार्य महावीर मुमुक्षु ने "वैदिक ज्ञान पर आधारित भावी पीढी का निर्माण" विषय पर प्रवचन करते हुए जीवन के पाच स्तरो १ अन्नमय, २ प्राणमय, ३. मनोमय, ४ विज्ञानमय, ५ आनन्दमय का वर्णन किया। पद्मश्री जी० पी० चोपडा ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि हमने स्वतंत्रता के ५० वर्षो मे विभिन्न क्षेत्रो मे उन्नति तो की है, परन्तु मानवता का ह्रास हुआ है। चरित्र निर्माण के लिए तथा जागृति लाने के लिए शिविरो तथा चेतना यात्राओ का आयोजन होना चाहिए। बाल्यकाल मे व्यक्ति मे वाछित परिवर्तन लाए जा सकते है। अध्यापक का कर्तव्य है कि वह बालक और, बालिकाओ का शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास करे। उन्होने प्राचार्यो को प्रेरित करते हुए कहा कि बच्चो को चरित्रवान् तथा देशभक्त बनाने के प्रयास किए जाए। छात्रो मे सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध चेतना पैदा की जाए तथा उन्हे वैदिक मूल्यो के प्रति जागृत किया जाए।

पहला सत्र

प्रथम सत्र १२ १५ बजे से मध्याह्नोत्तर १ ३० बजे तक श्री विश्वनाथ, उपप्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, एव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्री विश्वनाथ ने प्रतिभागी प्राचार्यो को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम विद्यार्थी रूपी विशाल ख़जाने पर बैठे है। इन विद्यार्थियो को संस्कारवान् तथा ज्ञानवान् बनाना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने

वैदिक चेतना शिविर में ओजस्वी उद्बोधन

सत्यार्थप्रकाश को २०वी शताब्दी के महानतम ग्रथो में से एक बताया। उन्होने मौरिशस मे आर्य समाज के प्रचार का विस्तृत वर्णन किया।

स्वामी आत्मबोध (आर्यभिक्षु) ने "सत्यार्थ प्रकाश सम्पूर्ण ज्ञान का द्योतक" विषय पर प्रवचन करते हुए "सत्यार्थ प्रकाश' नाम का महत्व बताया। यह वेद वाणी के शुद्ध अर्थ को प्रकाशित करता है। उन्होंने आगे कहा 'अंग्रेज़ो भारत छोडो' ऐसा विचार सबसे पहले स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास मे दिया।

स्वामी आत्मबोध (महात्मा आर्यभिक्षु) "सत्यार्थ प्रकाश सम्पूर्ण ज्ञान का द्योतक" विषय पर प्रथम सत्र मे प्रवचन करते हुए।

श्री विश्वनाथ, उपप्रधान, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली, प्रथम सत्र मे अध्यक्षीय भाषण करते हुए।

स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा) का स्वागत करते हुए डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के उपप्रधान श्री आर० ऐस० शर्मा जी तथा महासचिव श्री ऐम० ऐल० खन्ना।

द्वितीय सत्र

द्वितीय सत्र, साय ३ बजे श्री आर० ऐस० शर्मा, उपप्रधान, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। श्री शर्मा ने शिविर आयोजित करने के लिए श्री जी० पी० चोपडा, श्री डी० आर० गुप्ता, श्रीमती पी० पी० शर्मा तथा श्री इन्द्रजीत तलवाड का धन्यवाद किया। उन्होने कहा कि प्रत्येक प्राचार्य के लिए आर्य समाज का ज्ञान अनिवार्य है। कोई भी सस्था उस सस्था के प्रमुख का प्रतिबिम्ब होती है। उन्होने आर्य समाज के सिद्धान्तो को प्रचारित करने पर बल दिया। समाज मे अनेक कुरीतियो को दूर करने के लिए यह आवश्यक है। इसके बाद सभी प्रतिभागियो ने सम्मिलित रूप से विचारो का आदान प्रदान किया। विषय था— आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे आर्य समाज की उपयोगिता तथा डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ से समाज की अपेक्षा।

कुलाची हसराज माडल स्कूल, अशोक विहार की प्राचार्या श्रीमती पम्मी दत्ता शिविर मे आदरणीय उपप्रधान श्री आर० ऐस० शर्मा जी तथा महासचिव श्री ऐम० ऐल० खन्ना जी को फूलो का गुलदस्ता भेट करते हुए।

स्वामी सुमेधानन्द जी "धर्म का महत्व, वेदो का इतिहास, भारतीय दर्शन एव स्वामी दयानन्द" विषय पर तृतीय सत्र मे प्रकाश डालते हुए।

आचार्य अखिलेश्वर (समृद्धि का मार्ग वैदिक दृष्टिकोण) विषय पर शिविर के चतुर्थ सत्र मे व्याख्यान करते हुए।

विशेष सत्र

विशेष सत्र का आयोजन, रात्रिभोज से पूर्व, साय ६ बजे सम्पन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता प्रिसिपल मोहन लाल ने की। "वर्तमान परिस्थितियो मे वेद प्रचार की प्रक्रियाए" इस विषय पर श्री हरबस लाल कपूर ने विचार व्यक्त किए। उन्होने आर्य समाजियो को आपसी कलह से दूर रहने का सुझाव दिया। डा० राजकुमार, प्रिसिपल,

(शेष पृष्ठ १२पर)

मन्त्रान्त में 'ओ३म् स्वाहा' क्वाचित्क ही उचित है, सर्वत्र नहीं

□ डा० जयदत्त उप्रेती

मार्च २००१ मे भारत की महानगरी मुम्बई मे आयोजित अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे मन्त्रान्त मे 'ओ३म् स्वाहा' बोल कर आहुतिया दिलवाईं। इस पर अनेक आर्य विद्वानो एव विदुषियो ने पक्ष विपक्ष मे आर्ग पत्रो मे विचार व्यक्त किये। हमारे सामान्य सम्पादको ने उन्हें यथा तथा छपवाया। गत छह सात मासो से प्रबुद्ध आर्य जनता इन लेखो को पढ़ रही है। परन्तु किसी एक निष्कर्ष पर पहुची होगी, इसमें सन्देह है। सभी विद्वान् विदुषी लेखको ने बडी शालीनता से अपनी अपनी बात कही है। व्यक्तिगत रूप से किसी पर कोई आक्षेप न हो कर शास्त्र और तर्क का प्रामाण्य बडा या श्रद्धा बडी— इस मे से अन्यतर बिन्दु पर भिन्न भिन्न विचारो का पर्यवसान हुआ दृष्टिगोचर होता है।

मन्त्रान्त मे 'ओम्' या 'ओम् स्वाहा' बोलने का शास्त्रीय प्रयोग क्वाचित्क है, सर्वत्र नही— इस पक्ष को युक्ति और प्रमाणपूर्वक प्रस्तुत करने वालो मे सुश्री सूयदिवी जी व्याकरणाचार्या और स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती जी त्रिवेदतीर्थ मुख्य है। इनके लेख परोपकारी के अगस्त/नवम्बर २००१ के अको मे प्रकाशित हुए है। उधर आचार्गा सुश्री सूर्यदिवी ने नवम्बर २००१ के अक मे भी 'ओम् स्वाहा' के घेरे मे दयानन्द शीर्षक से ऋषि दयानन्द पर प्रकृत विषय मे पक्षान्तर स किये गये आक्षेपो का सप्रमाण उत्तर देकर शास्त्र प्रामाण्य को सर्वोपरि माना है।

दूसरी ओर डा० रघुवीर जी वेदालकार और प० सत्यानन्द जी वेदवागीश के दयानन्द सन्देश और परोपकारी मे छपे भिन्न भिन्न लेखो से 'स्वामी सत्यम्' जी के पूर्वोक्त पक्ष की पुष्टि होती है। इनमे भी डा० रघुवीर जी ने तो स्पष्टत यह माना है कि यह समय शास्त्रीय प्रामाण्य पर अधिक बल देने की अपेक्षा आर्य जनता मे यज्ञ के प्रति श्रद्धाभाव जगाने अथवा बनाये रखने का है। 'ओम्' क्योकि ईश्वर का प्रिय-प्रधान नाम है, अत उसका मन्त्रादि और मन्त्रान्त मे प्रयोग (उच्चारण) कर भी लिया जाये, तो क्या हानि है? स्वकथन की पुष्टि मे कुछ इसी प्रकार का विचार डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री जी का उद्धृत किया है। प० सत्यानन्द जी वेदवागीश ने भी अपने एक दो लेखो के द्वारा कुछ विस्तार से चर्चा करते हुए होम मन्त्रो के अन्त मे 'ओम् स्वाहा' बोल कर आहुति देने की परम्परा को वैध और उचित बताया है। साथ ही महर्षि दयानन्द के ग्रथो मे विद्यमान कुछ त्रुटियो (चाहे वे मुद्रणजन्य हो अथवा प्रूफ सशोधक से प्रमादवश रह गई हो, अथवा अन्य कारण से) की ओर पाठको का ध्यान आकृष्ट किया है। सो ऐमी त्रुटियो की सम्भावना को व्यावहारिक और सामान्य प्रतिपादित करते है, अपने लेख मे परोपकारी के नवम्बर २००१ के अक मे श्री ब्र० रवीन्द्र जी, भले ही वे श्री वागीश जी के लेख से पूर्णत सहमत नहीं है। परोपकारी के इसी अक मे श्री विद्यानन्द जी व्याकरणाचार्य का भी विचार छपा है, जिसमें श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश केपूर्वोक्त विचारो से असहमति दर्शाते हुए ऋषि विरुद्ध बात करना अनुचित कहा है।

इस प्रकार श्री स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी (मुम्बई) से ले कर उक्त विद्वानो तक के पक्ष-विपक्षात्मक विचारो का यह अतिसक्षिप्त उल्लेख है। इस पर इन पक्तियो के लेखक का स्वविचार और सुझाव इस प्रकार है

धर्म के निर्णय मे अथवा यज्ञीय कर्मकाण्ड के निर्णय मे मूल वेद सहिताओ का प्रामाण्य सर्वोपरि होते हुए हमे विधि विधान को जानने के लिए, जैसा कि ऋषि दयानन्द की भी दृढ मान्यता रही है, ब्राह्मण ग्रथो, श्रौत, गृह्य, धर्म सूत्रो, मनुस्मृति और पूर्वमीमासा (जैमिनीयदर्शन) केआर्ष वचनो पर निर्भर रहना ही चाहिए क्योंकि वेदो मे किसी भी कर्मकाण्ड की क्रमिक विधि नहीं दी गई है, अत ये प्राचीन शास्त्र ग्रथ हमारे पथ प्रदर्शक है। इन्ही मे आप्त पुरुष होने से महर्षि दयानन्दोक्त सस्कारविधि की व्यवस्थाये भी सम्मिलित है। उनसे बाहर कार्य करने पर अर्थात् मनमानी करने पर न तो कोई व्यवस्था समाज मे चल सकती है, न एकरूपता ही। शिष्टो ने सदा शास्त्रविधि के अनुसार चलना ही उचित कहा है, तद्विरुद्ध नहीं। जैसा कि कहा गया है

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्त्तते कामकारत:।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुख न परां गतिम्॥
तस्माच्छास्त्र प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्त कर्म कर्त्तुमिहार्हसि॥

भगवद्गीता १६/२३, २४

अत इस विषय मे सुश्री सूर्या जी तथा स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती जी के उपरिसन्दर्भित लेखो मे व्यक्त विचार सर्वथा समीचीन है। आशय यह है कि प्रामाणिक पुरातन आचार्यो ने उपयाज आदि जिन मत्रो के अन्त मे 'ओम्' या 'ओम् स्वाहा' का विधान किया है, उन्हीं मन्त्रान्तो मे ओ स्वाहा लगाना चाहिए सर्वत्र नहीं।

हमारा तो यह भी मानना है कि कर्मकाण्ड मे सन्ध्या स्तुतिप्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के मन्त्रों मे प्रतिमन्त्र क्रियाभेद होने की बात को छोड कर (क्योकि वहां नया नया कर्म होता है, इसलिए प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ मे ओम् बोलना आवश्यक है) केवल पृथक् पृथक् प्रकरणो के आदिम आदिम मन्त्रो मे ही ओमभ्यादाने' इस नियम के अनुसार 'ओ३म्' शब्द का आरम्भिक प्रयोग करना चाहिए, सर्वत्र नही। यदि हम ईश्वर प्रार्थना के मन्त्रो मे विश्वानि देव इत्यादि मन्त्र से अग्नेनय सुपथा इत्यादि मन्त्र तक एक वाक्यता माने तो केवल प्रथम मन्त्र के आरम्भ मे ही 'ओ३म्' बोलने की आवश्यकता है, आठो मत्रो मे नही। इसी प्रकार स्वस्तिवाचन के आरम्भ मे और शान्तिकरण के आरम्भ मे 'ओ३म्' का उच्चारण पर्याप्त है, प्रति मत्र मे नही। ऐसा ही सन्ध्या/अग्निहोत्रादि के मत्रो की पुस्तको मे प्राय छपा रहता है। वही ठीक है।

(२) वस्तुत होम मन्त्रो मे 'ओम् स्वाहा' बोल कर आहुति देने का विषय हो या कोई और इसी प्रकार का कर्मकाण्ड या सिद्धान्त से सम्बन्धित विवाद हो, आर्य पत्र पत्रिकाओ मे न छाप कर धर्मार्य सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा हल किया जाना ही उचित है। ऐसे विषयो पर पक्ष विपक्ष के मतभेद अभिव्यक्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा द्वारा सादर सम्बन्धित विद्वानो की एक सगोष्ठी आयोजित की जानी चाहिए। सगोष्ठी के माध्यम से प्राप्त विभिन्न विचारों के निष्कर्ष तब धर्मार्य सभा मे विचारार्थ प्रस्तुत किये जाने चाहिए, जो उन पर समुचित निर्णय दे। धर्मार्य सभा के निर्णय को ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्णय माने जाने पर उसकी प्रतिलिपि तब सभी देश देशान्तरो की आर्य समाजो में डाक द्वारा और पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित करा कर पहुचाई जानी चाहिए, जिससे कि उसका सब लोग यथावत् पालन कर सकें और कोई अपनी मनमानी ऐसे सैद्धान्तिक और शास्त्रीय विषयो पर पुन न कर सके। यदि करे, तो दोषभाक् माना जाये।

आर्य समाज के क्षेत्र मे दैनिक, साप्ताहिक या पर्व सस्कार सम्बन्धी बृहद् यज्ञो के अवसरो पर प्रयोग किये जाने वाले होम मत्रो के क्रम सख्या तथा विनियोग मे विभिन्न स्थानो से छपी पुस्तको मे कुछ परिवर्तन या कुछ घट-बढ वेद मंत्रो मे हो रही है। यह परम्परा एक सामाजिक सगठन मे एकरूपता की विघातक है। एकरूपता लाने के लिए प्रामाणिक प्रकाशक और प्रामाणिक पुस्तक का होना अत्यावश्यक है। यह कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली या परोपकारिणी सभा अजमेर वा रामलाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत या आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली जैसी किन्ही एक या दो सस्थाओ को सौपा जाना चाहिए, सबको नहीं। उन्हीं पुस्तको मे ओम् शब्द के प्रयोग के सम्बन्ध मे भी समुचित निर्देश होना चाहिए, जिससे कि वैयक्तिक या सामाजिक स्तर पर भावी पीढियों मे कर्मकाण्ड पद्धति मे समानता बनी रहे।

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, शौले
डा०ज्योली, अल्मोड़ा (उत्तराचल)

गुरुकुल गौतमनगर का वार्षिक समारोह व यज्ञ

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय ११९, गौतमनगर, नई दिल्ली का ६८वा वार्षिक समारोह एव २२वा चतुर्वेद ब्राह्मपारायण महायज्ञ एवं सत्यार्थभृत् यज्ञ २५ ११.२००१ से १६.१२ २००१ तक समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है, जिसमे आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी, उपदेशक, भजनोपदेशक, भारत सरकार एव दिल्ली सरकार के मंत्री आदि पधार रहे है।

९ एव १० दिसम्बर को पडित क्षितीश वेदालकार स्मृति प्रतियोगिताए प्रात १० ३० बजे से १२ ३० बजे तक, १० दिसम्बर को सायं ४ बजे से ६ ३० बजे तक, गुरुकुल एवं सस्कृत सम्मेलन तथा प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण, १९ दिसम्बर को दोपहर २ बजे से ४ बजे तक, महिला सम्मेलन-प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान मे १५ दिसम्बर साय ४ बजे से ६ ३० बजे तक, आर्य सम्मेलन दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान मे आयोजित किया जायेगा।

यज्ञ की पूर्णाहुति एव आर्य नेताओ के उद्बोधन १६ दिसम्बर को प्रात ८ बजे से दोपहर १ बजे तक होंगे।

आर्य जनों से प्रार्थना है कि उक्त कार्यक्रमो में अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढायें।

आर्य समाज बी० ऐन० पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्य समाज मन्दिर बी० ऐन० पूर्वी शालीमार बाग का २०वा वार्षिकोत्सव सोमवार ३ दिसम्बर २००१ से ९ दिसम्बर २००१ तक मनाया जा रहा है। इसमें श्री राजू वैज्ञानिक, आचार्य हरिदेव, डा० महेश विद्यालकार, डा० रमा, प्रिं० विभा पुरी, प्रि० सावित्री चावला आदि विद्वान भाग ले रहे हैं।

आप सभी इष्ट मित्रो एव परिवार सहित पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

यज्ञ मंत्रों में स्वाहा या ओम् स्वाहा

विद्वान् विषयान्तर में न जायें

❑ डा० भवानीलाल भारतीय

विवाद का मूल

वैदिक कर्मकाण्ड की विधियो के लिए आर्ष ग्रंथो की सहायता ली जाती है। उसमे व्यक्ति विशेष के आग्रह, सनक या तरग (अग्रेजी मे Whim) के लिए कोई स्थान नहीं है। आर्य समाज मे प्रचलित कर्मकाण्ड मुख्यत ऋषि दयानन्द प्रणीत संस्कारविधि के आधार पर होता है। गत मार्च मे जब मुम्बई मे महासम्मेलन के अवसर पर यज्ञ हुआ, तो प्रत्येक आहुति मे मंत्रपाठ की समाप्ति में अन्तिम अक्षर ओम् से जोड कर 'ओम् स्वाहा' इस प्रकार उच्चारणपूर्वक शाकल्य आदि डलवाया गया। कतिपय विद्वानो ने इस प्रथा का विरोध किया और पत्रो मे कुछ लेख प्रकाशित हुए।

आर्य विद्वान्

वर्तमान मे आर्य समाजी विद्वानो मे कर्मकाण्ड के जानकारो मे स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेद तीर्थ (आर्य समाज हापुड) का नाम शीर्षस्थ है। ये ही उन बचे हुए विद्वानो मे है, जिन्होने आर्ष कर्मकाण्ड का साक्षात् गुरुकुल से अध्ययन किया है। विगत मे आचार्य विश्वश्रवा, प० युधिष्ठिर मीमासक तथा प० वीरसेन वेदश्रमी इसी कोटि के विद्वान् थे, जो अब दिवगत हो चुके है।

पं० सुरेन्द्रानन्द जी की पुस्तक

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई के प्रधान डा० सोमदेव शास्त्री ने जब मुझे पत्र लिख कर धर्मार्य सभा की एतद्विषयक सम्मति मगाई, तो मैने १९६१ मे दिल्ली में सम्पन्न आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आचार्य विश्वश्रवा (मत्री धर्मार्य सभा) द्वारा सम्पादित यज्ञ पद्धति का प्रासगिक अवतरण उन्हे भेजा। यह और कतिपय अन्य लेख पुस्तकाकार स्वामी सुरेन्द्रानन्द सरस्वती ने डा० सोमदेव जी से सम्पादित करा कर प्रकाशित किये है। इस पुस्तक के कथ्य की आलोचना मे प० सत्यानन्द जी वेदवागीश ने 'मुम्बई यज्ञ के ओ३म् स्वाहा पर लेखान्दोलन' शीर्षक लेख लिखा, जो कतिपय आर्य पत्रो में प्रकाशित हुआ है।

नये उदाहरण अप्रासंगिक

मेरा निवेदन है कि कर्मकाण्ड मे शास्त्रोक्त विधि को यथावत् सम्पन्न करना कराना ही महत्वपूर्ण होता है। इसमे व्यक्तिगत रुचि तथा अल्पमत बहुमत जैसा विकल्प नहीं होता। जो आर्ष (दयानन्द प्रोक्त) विधि है वह करणीय है, तद्विरुद्ध अकरणीय है। अतः वेदवागीश जी के लेख मे अनेक हेत्वाभास प्रत्यक्ष दिखाई पडते है। यथा —

१. "आचार्य विश्वश्रवा, मीमासक जी, प० धर्मदेव जी तथा प० वीरसेन जी के जीवनकाल में भी ऐसे यज्ञ होते रहे है।" विगत में किसकी उपस्थिति में क्या हुआ, यह प्रासगिक नहीं है।

महात्मा या स्वामी प्रमाण नहीं

२ ब्यावर आर्य समाज मे महात्मा आनन्दभिक्षु जी की अध्यक्षता मे जो पारायण यज्ञ होते थे, उनमे 'ओम् स्वाहा' पूर्वक आहुति दी जाती थी। निवेदन है कि महात्मा आनन्दभिक्षु जी यज्ञप्रेमी अवश्य थे किन्तु कर्मकाण्ड मे निष्णात नहीं थे, अत उनका किया या कराया प्रमाण कोटि मे नहीं आता। उन्होने यज्ञो का प्रचार अवश्य किया।

३ यही स्थिति स्वामी व्रतानन्द जी द्वारा सचालित गुरुकुल चित्तौडगढ मे होने वाले चारो वेदो के पारायण यज्ञे में 'ओ३म् स्वाहा' बोल कर आहुति देने की है। स्वामी व्रतानन्द जी स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रत्यक्ष शिष्य थे तथा १९१५ मे स्नातक बने, यह सब ठीक है। किन्तु उनके द्वारा क्रियान्वित किसी याज्ञिक विधि को शास्त्रोक्त तो नही कहा जा सकता।

आरम्भ मे 'ओम्' और अन्त में 'ओम्' दो भिन्न बातें है

४ मत्रारम्भ मे ओम् लगाना तथा आहुति डालने से पूर्व 'स्वाहा' के पहले ओम् लगाना दोनो भिन्न बाते है। निश्चय ही 'स्वाहा' पद मत्र से बहिर्भूत है किन्तु आहुति डालने मे उसका प्रयोग आर्ष सम्मत है। यो तो 'इद न मम' यह भी मत्र का भाग नही है किन्तु यज्ञविधि सम्मत है।

५ यजुर्वेद (२/१६) के भाष्य मे स्वामी जी का जो कथन है कि "आहुति वेद मत्रों से ही करनी चाहिए" यह एक सामान्य कथन है। अपवादरूप मे सस्कारो तथा अन्य याज्ञिक विधियों मे सूत्र ग्रथो मे आये मत्रो का विनियोग शास्त्र-सम्मत है। ऋषि ने स्वय ऐसा किया है। इसलिए ये सारे आक्षेप ऋषि दयानन्द पर लागू होते है। वेदवागीश जी ने ऋषि-प्रोक्त विधि पर आक्षेपो को निम्न प्रकार क्रमबद्ध कर दिया है

(अ) संस्कारविधि मे शतश ऐसे मत्र है जो वेद मत्र नहीं हैं— सन्यासविधि मे आये अधर्माय स्वाहा आदि, जया होम में आये चित्त च स्वाहा आदि।

(आ) "समिदाधान मे अयत इध्म आत्मा', स्विष्टकृत् आहुति का यदस्य कर्मणो' आदि। ये सभी वेद वचन (वेद मत्र) नहीं है।" तथापि स्वामी जी ने इनका विनियोग यथा स्थान किया है। अत यह आर्ष विनियोग है।

(इ) वेदवागीश जी की भाति अन्य विद्वानो ने भी ऋषि प्रोक्त यज्ञ विधि पर विगत मे न केवल आक्षेप किये, अपितु उन्होंने उसमे मनमाने परिवर्तन भी कर डाले। प० गगाप्रसाद उपाध्याय ने लिखा कि तीन समिधाओ का आधान दयानन्द प्रोक्त चार मत्रो (इसमें अयत इध्म आत्मा भी शामिल है) से न करे। यजु० (३/१, २, ३) इन तीनो से ही तीन समिधाए डाल दे। यही काफी है। दयानन्द ने चार मत्र लिखकर भूल की।

(ई) हैदराबाद के प० वेदभूषण ने 'अय त इध्म आत्मा' से पाच घृताहुतिया देने का घोर विरोध किया। उन्होने मारिशस मे अपने द्वारा सम्पादित एक यज्ञविधि चलाई और यह विधि 'यज्ञ सुरभि' शीर्षक से यूनियन पार्क मारिशस के प० सत्यप्रकाश भृगु ने प्रकाशित की। इसमे 'अय त इध्म आत्मा' (आश्वलायन गृह्यसूत्र १/१०/१२) से पाच घृत आहुतिया देने को सर्वथा उड़ा दिया। प० वेदभूषण की सध्याविधि का आरम्भ 'ओम् अमृतोपस्तरणमसि' आदि तीन मत्रो द्वारा किये गये तीन आचमनो से होता है न कि 'ओम् शन्नो देवी' इस मत्र से। जितने पडित उतनी विधिया! दयानन्द की व्यवस्था चाहे चूल्हे मे जाये। इनको क्या?

(उ) आघाराहुति और आज्यभागाहुति मत्रो मे जो अस्थान छप जाने से व्यतिक्रम हुआ है, उसका निर्देश प० युधिष्ठिर ने बहुत पहले ही कर दिया था। (द्रष्टव्य सस्कारविधि का रामलाल कपूर ट्रस्ट का सस्करण २०३१ वि० पृ० ३३ की पाद टिप्पणी स० ६)

६ प० वेदवागीश जी पूछते है कि किस शास्त्र मे लिखा है कि वेद मत्रो के शब्दो का स्वरूप बदल दिया जाये। उदाहरण मे उन्होने गृहस्थाश्रम विधि मे प्रयुक्त कतिपय एकवचन स्त्रीलिग शब्दो को स्वामी जी द्वारा पुल्लिग बहुवचन बनाने पर आपत्ति की है। हमारा निवेदन है कि कर्मकाण्ड मे इस प्रकार के परिवर्तन किये जाते है। शाखा प्रवचन मे तो मत्रगत शब्दो के स्थान पर अन्य शब्दो का प्रयोग सर्वत्र मिलता है। उदाहरणार्थ यजु० (९ ४०) मे आये 'एष वो अमी राजा' पाठ को काण्व शाखा मे 'एष व कुरवो राजा', तैत्तिरीय शाखा मे 'एष वो भरता राजा', काठक मे 'एष ते जनते राजा' तथा मैत्रायणी शाखा मे 'एष ते जनते राजा', इस प्रकार पठित किया गया है।

निषेध न होने का तर्क लचर

माना कि कल्प सूत्रादि मे ओ३म् स्वाहा का विधान नहीं है पर 'स्वाहा' से पूर्व 'ओ३म्' लगाने का निषेध भी तो नहीं है। यदि इस तर्क का सहारा ले कर विधियो मे मनमानी कल्पनाए की जाने लगीं तब तो सर्वथा अराजकता छा जायगी। पौराणिक भी तो यही कहते है कि हमारे अमुक कार्य की विधि वेदो मे नहीं है तो निषेध भी तो नहीं है।

पूर्वोदाहरण स्वय सदोष हैं

८ हैदराबाद महासम्मेलन (१९६८) मे आचार्य कृष्ण (स्वामी दीक्षानन्द जी) की अध्यक्षता मे सम्पन्न पारायण यज्ञ मे भी 'ओम् स्वाहा' उच्चारण पूर्वक आहुतिया डाली गईं। वहा प० धर्मदेवजी, प० विश्वश्रवाजी तथा प० मीमासक जी उपस्थित थे। किसी ने आपत्ति नहीं की।" उपर्युक्त कथन निर्दोष नहीं है। कहा क्या हुआ, यह अतीत बन चुका। भूतकाल के सारे कार्य आदर्श या आचरणीय नहीं होते। विरोध करने या आपत्ति करने से आजकल कोई मानता नहीं। इसलिए बुद्धिमान् चुप रहना अच्छा समझते है। विगत मे स्वामी ध्रुवानन्द जी तथा आचार्य विश्वश्रवा तो कर्मकाण्ड मे कहीं विधि विरुद्ध होता देख कर टोकते थे। तब के आर्यों मे सहिष्णुता तथा मत्य को अगीकार करने मे रुचि थी। अब स्थितिया बदल गई है। आर्यो मे भी सत्यासत्य विवेक नहीं रहा, विधि निषेध की पहचान नहीं रही। यदि कोई जानकार विद्वान् टोकाटाकी करे तो उसे ही व्यग्य का लक्ष्य बनाया जाता है और कहा जाता है "बडे आये विद्वान्! शास्त्रो को जानने का ठेका क्या आपने ही ले रखा है?" आदि। अत देश तथा विदेश की विभिन्न समाजो मे सध्या हवनादि की विधियो के पालन मे अनेकरूपता तथा दयानन्द प्रोक्त विधि का उल्लघन होता देख कर भी अपमान के डर से बुद्धिमान् लोग चुप ही रहते है। मुम्बई के यज्ञ मे भी यज्ञ के आचार्य ने अनेक विद्वानो के आपत्ति करने पर भी 'ओम् स्वाहा' के दुराग्रह का त्याग नही किया।

९ प्राणायाम मत्र मे 'ओम् भू, ओम् भुव ' आदि सात बार ओम् बोलने की तुलना यज्ञ मे बोले जाने वाले मत्रो के अन्त मे स्वाहा से पूर्व ओम् के उच्चारण से नहीं की जा सकती। दोनो के प्रसग भिन्न है।

१० कोई कार्य गलत होता है, तो उसे उदाहरण के रूप मे पेश नही किया जा सकता। सायकालीन मत्रो मे **अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि· स्वाहा'** को यदि हम मौन नही बोलते (मन मे उसका उच्चारण नही करते) अथवा प्रजापति के लिए दी जाने वाली आहुति के मत्र (ओ प्रजापतये स्वाहा) को हम या आप मन मे न बोलकर मात्र ओम् (प्लुत करके) स्वाहा बोल कर घृत की आहुति दे देते है तो यह हमारा दोष है। कौन इसका पालन करता है?" कहने से कोई विधि विरुद्ध क्रिया करणीय नही हो जाती। यदि स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, प० धर्मदेव जी, प० वीरसेन जी, आचार्य विश्वश्रवा जी, आचार्य वैद्यनाथ जी तथा प० युधिष्ठिर जी जैसे विद्वानो द्वारा अनुमोदित विधि को चुनौती (सर्वोपरि धर्मार्य सभा के निर्णय के विरुद्ध चलना) दी जाती है तो इसे श्रेयस्कर नही कहा जा सकता।

११ **आपो ज्योतीरसोमृत ब्रह्म भूभुर्व· स्वरो स्वाहा।** अग्निहोत्र विधिमे पठित इस मत्र मे स्वाहा के पूर्व ओम् का प्रयोग अपवाद है तथापि आर्ष (दयानन्द प्रोक्त) है। यही स्थिति सन्यास प्रकरण मे पठित मत्र 'त्व तदाप' की समझनी चाहिए। हमारी तो मान्यता है कि महर्षि ने जिस मत्र मे ओ स्वाहा लगाया वह ठीक है उसके विपरीत हमे या आपको इसके मनमाने प्रयोग की छूट नहीं है। कोई महर्षि के सम्पूर्ण विधान को ही नकार दे, तो बात दूसरी है।

८/४२३, नन्दन वन, जोधपुर

(पृष्ठ ४ का शेष)

ऋषि दयानन्द का जन्मस्थान

बडे शिव मन्दिर मे पूजा करने और दर्शन करने के लिए रात्रि को बहुत सा जनसमुदाय एकत्र होने लगा। पिता जी के साथ मै भी वहा पहुच गया।" यह विवरण टकारा के शिव मन्दिर पर ही पूर्णतया घटित होता है, क्योकि वही डेमी नदी के तट पर स्थित है और उसे उनके पिता जी ने ही बनवाया था। मोरवी मे जडेश्वर महादेव का मन्दिर न तो डेमी नदी के तट पर ही स्थित है और न उसे दयानन्द के तथाकथित पिता अम्बाशकर द्वारा बनवाए होने का ही कोई प्रमाण उपलब्ध है। कलकत्ता कथ्य मे टकारा को अवश्य ही नगर कहा गया है क्योंकि १८३८ ई० मे टकारा एक बडा कस्बा अथवा नगर ही था, यह दयानन्द के जीवनी लेखक बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने अपने एक परिशिष्ट मे स्वीकार किया है और लिखा है कि "किसी समय मे टकारावासियो की सख्या ८,००० थी। उसकी समृद्धि भी बहुत बडी थी और उसमे अच्छे धनाढ्य, सम्पन्न और साहूकार रहते थे।"

श्री वानप्रस्थ पूना प्रवचन को शब्दश प्रमाण नही मानते, क्योकि वह टेपरिकार्ड किया हुआ या आशुलिपिक द्वारा लिखा हुआ नहीं था। हमे पूना प्रवचन के शब्दो को बदलने का कोई औचित्य दिखाई नहीं पडता। जिसने भी वे सुने और लिखे थे, उसने सदाशयता से उसी दिन अखबार मे छपने दे दिये थे। पूना प्रवचन उसी समय अखबार मे छपे थे और ऋषि के जीवन काल मे पुस्तकाकार भी छप गये थे। आज के राजने ग जिस प्रकार करते है, उस प्रकार ऋषि ने उ रके किसी अश ग प्रतिवाद नहीं किया।

पूना प्रवचन मे ही स्वामी दयानन्द ने 'मेरे गाव मे गाव से बाहर एक बडा मन्दिर है' शब्द कहे थे। 'बडा' शब्द उनके प्रवचन मे है। ५० वर्षीय वक्ता मन्दिर को बडा कह रहा है। भारत मे जगह जगह घूम कर उन्होने बडे छोटे तरह तरह के मन्दिर देखे है। उन्हे कुछ अनुमान है कि बडा किसे कहा जाता है और छोटा क्या होता है। फिर भी उन्होने 'बडा' कहा।

छोटेपन मे देखी गई, छोटी चीज़ भी बडी जान पडती है। बोध रात्रि के समय दयानन्द जी की आयु १४ वर्ष थी, जो छोटी आयु नहीं कही जा सकती। गृह त्याग उन्होने २१ वर्ष की आयु के बाद किया था। २१ वर्ष की आयु मे व्यक्ति वयस्क हो जाता है। उसकी देखी चीज़ बचपन मे देखी गई चीज़ नही कही जा सकती। टकारा के मन्दिर को 'बडा' केवल मजाक मे कहा जा सकता है।

'गाव' और 'शहर' शब्द को ले कर उक्त लेख मे सूक्ष्म विवेचन किया गया है। यहा गाव शब्द का प्रयोग बस्ती के अर्थ मे किया गया है। यह तो स्वामी जी पहले कह ही चुके थे कि मोरवी शहर मे मेरा जन्म हुआ। स्वकथित जीवन चरित्र मे स्वामी जी ने 'बस्ती' शब्द का प्रयोग किया है।

'यह मन्दिर टकारा मे घर घर मे बने छोटे छोटे शिव मन्दिरो से तो बडा ही था' यह तर्क हमे सतोषजनक नहीं लगता।

बिल मे से चूहा निकला। बिल टकारा के मन्दिर मे ही हो सकता है, मोरवी के नहीं, यह भी विचित्र कल्पना है। जिस मन्दिर मे नित्य पूजा होती हो, उसमे बिल नहीं होगा, न टकारा मे, न मोरवी मे। पक्का फ़र्श तो मन्दिर मे होगा ही। बिल की बात पूना प्रवचन मे है, स्वकथित जीवन चरित्र मे है ही नहीं। चूहा कहीं से भी आ गया, यही आशय है।

सबसे निर्णायक शब्द है स्वकथित चरित्र मे प्रयुक्त 'काठियावाड का मजोकठा प्रदेश'। यह मच्छोकाठा शब्द का अपभ्रश है, जिसका अर्थ है मच्छोनदी का तटवर्ती क्षेत्र। 'धागधा देशी राज्य की सीमा से लगे काठियावाड के मच्छोनदी के तटवर्ती प्रदेश मे मोरवी शहर मे मेरा जन्म हुआ' ये ऋषि दयानन्द के अपने शब्द है, जो पूना प्रवचन और स्वकथित जीवन चरित्र के आधार कहे जा सकते है। साबर नदी का तटवर्ती प्रदेश साबरकाठा, बनास नदी का तटवर्ती प्रदेश बनासकाठा कहलाता है, वैसे ही मच्छो नदी का तटवर्ती प्रदेश मच्छोकाठा है।

कलकत्ता कथ्य को प्रमाण मान कर उक्त लेख मे जो कुछ कहा गया है, उसकी चर्चा ही हम नहीं करेगे, क्योकि 'कलकत्ता कथ्य' बेसिर पैर की घटिया गपोड है, जिसकी निन्दा करना भी व्यर्थ है, उसकी उपेक्षा ही की जानी चाहिए, क्योकि निन्दा से भी प्रचार तो होता ही है।

स्वकथित जीवन चरित्र का थियोसोफिस्ट मे जो अनुवाद छपा है, वह गलत और दुराशयपूर्ण है। स्वकथित जीवन चरित्र (वह हिन्दी लेख, जो स्वामी जी ने कर्नल अल्काट को थियोसोफिस्ट मे छापने के लिए भेजा था) मे लिखा है 'दूसरे प्रहर की पूजा करके पुजारि लोग बाहर निकल के सो गये। मैने प्रथम से सुन रखा था कि सोने से शिवरात्रि का फल नहीं होता। इसलिए अपनी आखो मे छींटे मार कर जागता रहा और पिता भी सो गये।' इसका अनुवाद हुआ है 'Having completed my task, namely having sat up for the first two *praharas*, till the hour of midnight I remarked that the Pujaris or temple desservants and some of the lay men devotees, after having left the inner temple had fallen asleep out side Having been taught for years that by sleeping on that particular night the worshipper lost all the good effect of his devotion, I refrained from drowsiness by bathing my eyes now and then with cold water But my father was less fortunate Unable to resist fatigue, he was the first person to fall asleep, leaving me to watch alone

इसमे रेखाकित अश अनुवादक ने जानबूझकर अपनी ओर से जोडा है। ऐसे अनुवादों से भी सभल कर चलने की आवश्यकता है। —स०

(पृष्ठ ३ का शेष)

शिक्षा का तालिबानीकरण?

पुरस्कारस्वरूप मिले है। अनेक वर्षो तक इन्होने राजसुख भोगा है, धन और प्रतिष्ठा प्राप्त की है। इसलिए इनका अहकार इतना बढ गया है कि ये अपने लेखन मे से कुछ पक्तिया हटाये जाने से इतने बौखला रहे है।

अकारण अकड़

अभिव्यक्ति की स्वतत्रता का अर्थ यह है कि लेखक अपने जो चाहे विचार प्रकट कर सकता है। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि उसकी पुस्तक पाठ्यक्रम मे लगाई ही जायेगी। पाठ्य पुस्तको मे प्राय मौलिक कुछ नही होता। वही पुरानी घिसी पिटी सामग्री पलट पलटा कर दे दी जाती है। जिसकी पुस्तक पाठ्यक्रम मे लगाई जाती है, उस पर अहसान किया जाता है। यदि उस लेखक को कोई आपत्ति हो, तो उसी या उससे अच्छे स्तर की अनेक पुस्तकें तुरन्त उपलब्ध रहती है। अत इन लेखको की अकड़ का कोई उचित कारण नहीं है।

इन वामपन्थी लेखकों ने भारतीय इतिहास शोध परिषद् को किस तरह दोनो हाथो से लूटा और ठगा है, इस विषय में श्री अरुण शौरी के कई लेख अखबारों मे छपे थे। अब इस बात की जांच होनी चाहिए कि इस प्रकार के आक्षेप योग्य प्रसगो वाली पुस्तके पाठ्यक्रम के लिए स्वीकृत किस प्रकार हो गईं? इसके लिए उत्तरदायी लोगो के विरुद्ध कार्रवाई होनी चाहिए। इन लेखको की भी सामाजिक तथा शैक्षणिक सस्थाओ द्वारा भर्त्सना होनी चाहिए।

लोकतत्रीय व्यवस्था मे इतना ही किया जा सकता है।

(पृष्ठ १ का शेष)

समस्या बंगलादेशियों की

बगलादेश से बडी सख्या मे हिन्दू व बौद्ध शरणार्थी पश्चिम बगाल और भारत के अन्य पूर्वोत्तर राज्यो मे आने लगे है। श्रीमती खालिदा जिया ने अल्पसख्यको को सुरक्षा का आश्वासन दिया है, परन्तु कट्टरपथी उपद्रवियो के विरुद्ध कोई कार्रवाई न होने के कारण उनकी हिम्मत बढती ही जा रही है।

नवम्बर महीने मे ऐसी घटनाओ मे और वृद्धि हुई है। ढाका मे मोतीझील इलाके मे स्थित इडियन एयरलाइन्स के कार्यालय पर हमला करके भारी तोडफोड की गई। इससे न केवल एयर लाइन्स के कर्मचारियो मे, अपितु यात्रियो मे भी भय छा गया है।

सीमा स्थित खेतो पर बगलादेशी किसान जबरदस्ती कब्ज़ा कर लेते है और बगलादेश राइफल्स उनकी सहायता करती है। इसमे भारतीय सुरक्षा दलो से अनेक बार उनकी मुठभेड हो चुकी है।

बंगलादेश के हिन्दू वर्तमान सरकार की आखो का काटा बने है, क्योंकि सरकार का विचार है कि हिन्दुओ के वोट शेख हसीना की अवामी लीग को मिलते है। इसलिए योजना यह है कि हिन्दुओं को खदेड़ कर भारत भगा दिया जाये, जिससे बगला देश नेशनलिस्ट पार्टी की विजय सुनिश्चित हो जाये। बगलादेश की ससद में ५० सीटे ऐसी है, जिन पर हार जीत हिन्दू वोट पर निर्भर रहती है।

नई सरकार बनने के बाद से अब तक १५००० हिन्दू शरणार्थी भारत आ चुके है और हज़ारो आने की तैयारी में है। उनके मकानो और जमीनो पर लोगों ने अवैध कब्ज़ा कर लिया है।

मुस्लिम घुसपैठिये

दूसरी ओर पहले ही लाखों मुस्लिम बगालदेशी रोज़ी की तलाश मे भारत आ कर यहा के अनेक शहरो मे बस गये है। उनके राशन कार्ड बन गये है, और मत दाता सूचियो मे उनके नाम दर्ज हो चुके है। जब भी कभी उन्हे वापस बगलादेश भेजने के लिए सरकार ने कदम उठाना चाहा, तभी धर्मनिरपेक्ष दलो ने प्रभावी रूप से अडगा लगा दिया, क्योंकि उनके वोट इन्हीं दलो को मिलते है।

अपनी दब्बू नीति के कारण भारत चक्की के दो पाटो मे पिस रहा है। न केवल कश्मीर मे पाकिस्तानी आतकवादी सशस्त्र युद्ध छेडे हुए है, अपितु पूर्व मे बगलादेश अपने मुस्लिम तथा हिन्दू, दोनो ही नागरिको को भारत मे धकेल रहा है। पहले ही बोझ से दबी भारत भूमि कितने लोगो का भार सभाल सकेगी।

कुछ करना होगा

कभी तो वह समय आना चाहिए, जब भारत का धैर्य और सयम समाप्त हो जाये, और भारत बगलादेश से स्पष्ट शब्दो मे कहे कि यदि बंगलादेश का एक भी हिन्दू या मुस्लिम नागरिक भारत में शरण लेने आता है, तो बगलादेश को उसके हिस्से की भूमि तुरन्त भारत को देनी होगी, अन्यथा बलपूर्वक ले ली जायेगी।

पूर्व प्रधानमत्री श्री पी० वी० नरसिह राव ने कहा था कि भारत कोई धर्मशाला नहीं है, जो भी कोई चाहे, यहां आ कर डेरा डाल ले।

भारत ने पाकिस्तान के चंगुल से बगलादेश को मुक्त कराने में जो सहायता दी थी, उसके लिए कृतज्ञता तो दूर, वह शत्रुता ठान रहा है। इसका कारण भारत की शक्तिहीनता नहीं, केवल दब्बू नीति है।

दत्तात्रेय तिवारी
टी-८, ग्रीन पार्क ऐक्सटैंशन, नई दिल्ली

समाचार जगत्

नोयडा में विद्यालय का भव्य वार्षिकोत्सव

डी० ए० वी० नोयडा केप्रागण मे १० नवम्बर को रगारग सास्कृतिक कार्यक्रमो के बीच वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। उत्सव के शुभ अवसर पर नये कम्प्यूटर लैब का भी उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप मे डी० ए० वी० कालेज मैनेजिग कमेटी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पद्मश्री जी० पी० चोपडा जी उपस्थित थे। माननीय अन्य अतिथिगणो मे यू० जी० सी० के पूर्व चेयरमैन प्रो० यशपाल, मुख्य न्यायाधीश श्री चन्द्रा जी तथा श्रीमती चन्द्रा, आई० टी० डी० सी० की सीनियर आफिसर श्रीमती सुधा चन्द्रा, हसराज कालेज दिल्ली के प्रिसिपल श्री जे० के० कपूर, वाइस प्रिसिपल श्री दिनकर पगारे, श्री ऐम० के० धर०, डी० ए० वी० बोर्ड के ऐजुकेशन आफिसर श्री रामनाथ सहगल, सैक्रेटरी डी० ए० वी० कालेज मैनेजिग कमेटी, डा० ऐन० के० ओबराय चेयरमैन, श्री ऐस० सी० गुप्ता, मैनेजर, लोकल प्रबन्ध समिति के सभी सदस्य, विद्यार्थी, अभिभावक तथा प्रैस के सदस्य उत्सव मे उपस्थित थे।

सास्कृतिक कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित करके किया गया। स्तुति वदना के द्वारा उपस्थित सभी अतिथियो का स्वागत बडी धूमधाम से किया गया। छोटे बच्चो ने सद्भावना गीत के माध्यम से एकता, प्रेम और सौहार्द का सदेश दिया। नर्सरी के नन्हे मुन्ने बच्चो ने नृत्य का कुछ ऐमा समा बाधा कि सभी दर्शक मत्रमुग्ध हो गए। राजस्थानी समूह नृत्य ने सभी के दिलो को प्रेम मे डुबो दिया।

पद्मश्री चोपडा जी ने विद्यार्थियो के उज्वल भविष्य के लिए अनुशासन, एकता की ओर विशेष ध्यान देते हुए अपने मधुर शब्दो से सबका मन मोह लिया। स्कूल की प्रिसिपल श्री आई० पी० भाटिया जी की प्रशसा की तथा स्कूल को विकास की ओर ले जाने मे उनके द्वारा किए गए कार्यो का विस्तृत वर्णन करते हुए स्कूल के बदलते रूप की सराहना की।

इसके पश्चात् श्रीमती आई० पी० भाटिया जी ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट मे स्कूल मे होने वाले सभी क्षेत्रो मे विकास को और अध्यापकों, विद्यार्थियो द्वारा किये गए कार्यो को उजागर किया। कार्यक्रम मे 'राहत' नाटक का अपना ही स्थान रहा। आज के वातावरण मे विद्यार्थी की दयनीय दशा को यहा पर दर्शाया गया। विद्यार्थी स्कूल बैग के बोझ से दब रहा है, यह बात अभिभावको को समझाने का प्रयत्न किया गया। न गृह कार्य न बस्ते सिद्धान्त के आधार पर बच्चो को राहत मिलने का मार्ग बताया गया।

श्री आर० पी० सिगल तथा श्री जोगिन्दर सिह ने बच्चो, अध्यापको तथा अभिभावको को सम्बोधित करते हुए बताया कि "मेहनत सफलता की कुजी है" इस बात पर विशेष बल दिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नृत्य नाटिका 'कलुषित तरगिणी' रहा। गगा कितनी पवित्र, ममतामयी तथा स्वच्छ है किन्तु आज का मानव अपने स्वार्थ के वशीभूत हो कर उसे कलुषित कर रहा है। गगा की पवित्रता उज्वलता को बनाये रखना मनुष्य का कर्तव्य है— इसी सदेश को प्रस्तुत किया गया।

वेदार्थ प्रक्रिया एवं श्रौतसूत्र पर शोध सगोष्ठी

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध सस्थान की ओर से स्व० स्वामी समर्पणानन्द जी (श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालकार) के निर्वाण दिवस पर गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला, मेरठ उ० प्र० मे वेदार्थ प्रक्रिया एव श्रौतसूत्र विषय पर १३ जनवरी, २००२ रविवार को प्रात ११ बजे एक शोध सगोष्ठी आयोजित की जायेगी। आप शोध लेख प्रस्तुत करने तथा शोध चर्चा में भाग लेने के लिए आमत्रित है।

शोध लेख हिन्दी अथवा सस्कृत भाषा मे हो सकता है। शोध लेख को पढने के लिए अधिकतम २० मिनट अपेक्षित हैं। अपने शोध लेख की एक प्रति अग्रिम रूप मे ३० दिसम्बर २००१ तक निदेशक के पास भेज दे, जिससे प्रकाशन मे सुविधा हो।

कृपया अपने आगमन की स्वीकृति यथासम्भव शीघ्र देने का कष्ट करेगे।

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट नागपुर द्वारा आर्य रत्न सम्मान राशि एक लाख की घोषणा

ट्रस्ट की एक आवश्यक बैठक मे यह निश्चय हुआ कि सृष्टि सवत् १९६०८५३१०१ का "आर्य रत्न" सम्मान राशि एक लाख रुपये से उस विद्वान् सन्यासी को सम्मानित किया जाये, जिसका सम्पूर्ण जीवन बिना कोई भेदभाव व लोभ लालच के समाज सेवा एव वैदिक मान्यताओ के प्रचार और प्रसार मे समर्पित एव सर्वमान्य रहा हो।

अत उपरोक्त श्रेणी मे आने वाले विद्वान् या समाज सेवी उक्त सम्मान के लिए स्वय या उनके जीवन से पूर्णतया परिचित नजदीकी विद्वान् द्वारा लिखित जानकारी ट्रस्ट के पते पर १५ जनवरी २००२ तक आमत्रित की जाती है। सम्मान के लिए आये आवेदनो पर चयन समिति का निर्णय ही मान्य होगा।

सम्पर्क करे : मैनेजिग ट्रस्टी, राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट, ३८७ आर्योदय, रूईकर मार्ग महाल, नागपुर-४४०००२ (महाराष्ट्र)

आर्य समाज ब्यापुर (पटना)

आर्य समाज ब्यापुर (पटना) का वार्षिकोत्सव ६ नवम्बर २००१ को सम्पन्न हुआ, जिसमे श्री स्वामी प्रशान्तानन्द जी सरस्वती (गुजरात), श्री प० नवलकिशोर शास्त्री (समस्तीपुर), श्रीमती राजबाला देवी आर्य भजनोपदेशिका (हरियाणा), प० अरविन्द शास्त्री डी० ए० वी० आर्य समाज बेली रोड, दानापुर (पटना), श्री शिवमुनि वानप्रस्थी (शिवधर आर्य भजनोपदेशक) ब्यापुर (पटना), श्री सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक, ब्यापुर (पटना), श्री सुमन आर्या (रोसडा), श्री यतीन्द्रनाथ शास्त्री (चम्पारण), श्री देवदत्त आर्य वैद्य (पटना) आदि विद्वानो के उपदेश, भजन हुए।

स्थापना दिवस एव नवसस्येष्टि पर्व

आर्य समाज हिरणमगरी उदयपुर के स्थापना दिवस एव नवसस्येष्टि पर्व पर विविध आयोजन हुए। दीपावली के दिन नवसस्येष्टि यज्ञ के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती की पुण्य तिथि पर उन्हे स्मरण करते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की। मुख्य अतिथि प्रीता भार्गव ने देश मे महिला शिक्षा व सम्मान के लिए महर्षि दयानन्द के अग्रणी प्रयासो का उल्लेख किया। श्री अशोक आर्य ने ऋषि दयानन्द के स्वदेशी, स्वभाषा और स्वराज्य के लिए किये गये कार्यो का उल्लेख किया।

स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के इतिहास एव राष्ट्र, समाज व विश्व को महर्षि दयानन्द की महती देन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा धर्म परिवर्तित लोगो के पुन शुद्धिकरण आन्दोलन, विधवा पुनर्विवाह, स्त्री व शूद्र उद्धार, स्वतत्रता सग्राम एव वेदो के पुनरुद्धार का भी उल्लेख किया।

मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर्य कुमार सिह ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा जातिवाद केजहर को नष्ट करने के भागीरथ प्रयत्नो पर विस्तार से प्रकाश डाला।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह

आर्य कन्या इटर कालेज, गोविन्द नगर के तत्वावधान मे दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह कालेज की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री त्रिलोकनाथ सूरी की अध्यक्षता मे मनाया गया।

समारोह के आरम्भ मे चार हजार से अधिक छात्राओ ने वेद मन्त्रो का उच्चारण कर तथा विभिन्न गीत-सगीत और भाषणो से महर्षि को श्रद्धाजलि भेट की।

कालेज के नवनिर्वाचित प्रबन्धक श्री शिवकुमार आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द मानवता के सच्चे पुजारी थे। महर्षि के हृदय मे उस व्यक्ति के प्रति भी दया की भावना थी, जिसने उनको जहर दिया था। महर्षि द्वारा उसे ५०० रु० देकर नेपाल भाग जाने की सलाह देना वास्तव मे दया की भावना की पराकाष्ठा है।

बिहार से पधारी सुश्री ऋचा ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने नारियो के गौरव को बढ़ाने का जो महान कार्य किया है उसके लिये नारिया सदैव उनकी ऋणी रहेगी। महर्षि ने कहा है कि जहा नारियो की पूजा होती है वहा देवता निवास करते है। कुमारी ऋचा ने आर्य कन्या इटर कालेज के सस्थापक पूर्व प्रबन्धक श्री देवीदास आर्य का स्मरण करते हुए कहा कि वे महान महिला उद्धारक थे। उन्होने आर्य कन्या इटर कालेज की स्थापना करके नारियो की बडी सेवा की है।

समारोह मे प्रमुख रूप से सर्व श्री शुभकुमार बोहरा (प्रधान, आर्य समाज), बाल गोविन्द आर्य, वीरेन्द्र मल्होत्रा, जाति भूषण श्रीमती दर्शना कपूर, कैलाश मोगा, सरोज अवस्थी, सतोष अरोडा, चन्द्रकान्ता गेरा, राज सूरी आदि भी उपस्थित थे।

समारोह का सचालन श्रीमती राजजीत पाल ने किया तथा प्रधानाचार्या श्रीमती वीनस शर्मा ने धन्यवाद दिया।

सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव, उदयपुर

सप्तम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव नवलखा महल, उदयपुर मे दिनाक २६ फरवरी २००२ से २८ फरवरी २००२ मे आयोजित किया जायेगा, जिसमे देश के कोने कोने से हजारो आर्यजनो के आने की आशा है। आर्य जगत् केमूर्धन्य विद्वान्, विदुषिया व भजनोपदेशक इस अवसर पर पधारेगे। आपसे अधिक से अधिक सख्या मे पधारने का अनुरोध है। समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य होगे।

प्रमुख आकर्षण सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, महिला जागृति सम्मेलन, महर्षि दयानन्द समूहगान प्रतियोगिता, वेद सम्मेलन आदि। कृपया अपने आगमन की सूचना अग्रिम रूप से अवश्य देवे।

निर्वाचन

आर्य समाज गोविन्द नगर, कानपुर

प्रधान— श्री शुभकुमार वोहरा
मत्री—श्री बालगोविन्द आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र कुमार मल्होत्रा

आर्य जगत्

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई-39/57
Delhi Postal R. No. D L 11082/2001
TED AT N DP O ON 5/6-12-2001 दिनाक ९-१२-२००१

प्राचार्यो [illegible] वद भेंट दिये गये

दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज, जालन्धर ने "आयुर्वेद के आधार पर रोग का कारण एव कुछ सामान्य पौधो की औषधीय उपयोगिता तथा आयुर्वेद के आधार पर जीवनीय तत्वो का ज्ञान" विषय पर भाषण दिया। उन्होने पचकर्म उपचार विधि के महत्व पर प्रकाश डाला।

प्रिसिपल मोहन लाल, सचिव, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने अध्यक्षीय भाषण मे पुरातन मूल्यो मे रुचि पैदा करने पर बल दिया। उन्होने प्राचीन गणित और आयुर्वेद के महत्व को समझाया।

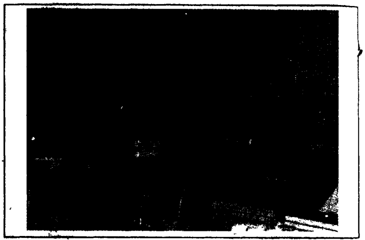

श्रद्धेय श्री जी० पी० चोपडा जी ने सभी प्रतिभागी प्रधानाचार्यो को चारो वेदो के सेट सप्रेम भेंट किए। श्री आर० ऐल० पटियाल प्रिं० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल पटियाला को वेदों का सेट भेट करते हुए सम्माननीय प्रधान श्री जी० पी० चोपड़ा जी।

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी ने शिविर मे "यज्ञोपवीत का वैज्ञानिक आधार" विषय पर प्रवचन करते हुए तथा अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए।

डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती को चारों वेद सप्रेम भेंट करते हुए।

वैदिक चेतना शिविर का शुभारम्भ हवन यज्ञ से आरम्भ हुआ, जिसमे सपत्नीक यजमान बने डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के उपप्रधान श्री शान्तिलाल सूरी जी।

द्वितीय दिवस, सोमवार, दिनाक १९ नवम्बर २००१ को प्रात ७ बजे योग/प्राणायाम का आयोजन हुआ, ९ बजे हवन यज्ञ तथा ९ ४५ बजे प्रातराश हुआ।

तृतीय सत्र

तृतीय सत्र प्रात १० १५ बजे से ११ ३० बजे तक चला। श्री ऐम० ऐल० खन्ना, महासचिव, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली ने इस सत्र की अध्यक्षता की। स्वामी सुमेधानन्द जी ने "धर्म का महत्व, वेदो का इतिहास, भारतीय दर्शन और स्वामी दयानन्द" विषय पर उपदेश दिए। उन्होने कहा कि समस्त ज्ञान और कर्म का आधार वेद को मानो। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव तथा अतिथिदेवो भव के आदर्शों को विद्यार्थियो मे प्रचारित करने पर बल दिया। भ्रातृभाव बढाने के लिए सब को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए। श्री ऐम० ऐल० खन्ना ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे देश की दशा को सुधारने के लिए जागृति लाने पर बल दिया। उनके अनुसार इस कार्य को अध्यापक कर सकते है। वे छात्रो मे चरित्र एव अनुशासन का निर्माण करे और इस प्रकार देश को श्रेष्ठ प्रशासक प्रदान करे।

चतुर्थ सत्र

चतुर्थ सत्र, प्रात ११ ४५ बजे से १ ३० बजे तक, डा० सी० प्रकाश, उपप्रधान, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली की अध्यक्षता मे हुआ। आचार्य अखिलेश्वर ने "समृद्धि का मार्ग वैदिक दृष्टिकोण" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होने कहा कि हमारा देश समस्त सभावनाओ से परिपूर्ण है। आवश्यकता है, खोज करने की। भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनो प्रकार की सम्पदाए प्राप्त की जा सकती है। डा० सी० प्रकाश ने अध्यक्षीय भाषण मे वैदिक विचारधारा को प्रचारित करने पर बल दिया। वैदिक ज्ञान को अनुवाद, सरल टिप्पणियों, सचार तकनीक तथा विज्ञापन आदि के साधनो द्वारा फैलाया जाये।

समापन सत्र

समापन सत्र मध्याह्नोत्तर २ बजे से ३ ३० बजे तक पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा, प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग एव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने विशेष प्रवचन एव आशीर्वचन दिया। विषय था "यज्ञोपवीत का वैज्ञानिक आधार।" उपनयन का अर्थ है— आचार्य के समीप जाना। यज्ञोपवीत गर्भ मे बाल के समान है। उसके द्वारा गुरु और शिष्य का सम्बन्ध प्रगाढ होता है। गुरु अपने शिष्य को माता की तरह पोषित करता है।

आर्य समाज केसिद्धान्तो के अनुसार शिक्षा के महान उद्देश्य को आगे बढाने के लिए श्री डी० आर० गुप्ता ने आठ प्रस्ताव रखे, जिन्हे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

तदनन्तर श्री जी० पी० चोपडा ने अध्यक्षीय भाषण मे प्राचार्यो को उपरोक्त प्रस्तावो पर आचरण करने के लिए प्रेरित किया। स्वामी दयानन्द के आदेशो का अनुसरण करते हुए उन्होने विज्ञान और सस्कृत के अध्ययन पर बल दिया। तदनन्तर प्रत्येक प्रतिभागी को आर्य प्रतिनिधि उपसभा, पजाब की ओर से तथा उपस्थित डी० ए० वी० मैनेजिग कमेटी के Office bearers व अधिकारियो को चारो वेद आदरणीय पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा जी द्वारा सप्रेम भेट किए गए।

प्रिसिपल पी० पी० शर्मा ने आर्य प्रतिनिधि उपसभा, पजाब की ओर से कार्यक्रम के सम्पन्न होने पर ईश्वर को धन्यवाद दिया। साथ ही धन्यवाद दिया श्री जी० पी० चोपडा को जिनके मार्गदर्शन मे समस्त कार्यक्रम आयोजित हुआ। उन्होने अधिकारियो और कर्मचारियो को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। प्रिसिपल पी० दत्ता के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया गया, जिनके विद्यालय में यह शिविर सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

मुद्रक व प्रकाशक - श्री **प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक—**उदयवीर 'विराज'**

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

ार्षिक मूल्य--७५ रुपये
आजीवन--५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क--५०० रुपये
विदेशो मे ३० पौंड या ५० डालर
इस अक का मूल्य--२०० रुपये
वर्ष ६६, अक ४२
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, १६ दिसम्बर, २००१
मार्गशीर्ष शु०-२-वि० स०-२०५८
सप्ताह १६ दिसम्बर से २२ दिसम्बर

आर्य समाज धर्म ही नहीं, राजतंत्र और अर्थतंत्र को भी देखे

❑ आचार्य देवेश्वर शर्मा

नेताओ की महत्वाकाक्षाओ से उत्पन्न हुए राजनैतिक दलो की फौज, उनकी घोषणाए और उद्देश्य एक ही स्वर मे जनकल्याण की सर्वोत्तम बाते प्रस्तुत करती है, परन्तु उनका आचरण सर्वथा प्रतिकूल है। मनसा-वाचा-कर्मणा की एकता की कसौटी पर कोई भी राजनैतिक दल खरा नही उतरता। सभी राजनैतिक दल राजनीति से भ्रष्टाचार और अपराधीकरण के निर्मूलन की बात तो बडे जोर शोर से करते है, परन्तु कोई भी राजनैतिक दल उसके निवारण के लिए ठोस कदम उठाने को तैयार नही, क्योकि सभी राजनैतिक दलो मे कुछ एक प्रभावशाली व्यक्ति या उनके सम्बन्धी अपराधीकरण व भ्रष्टाचार से जुडे है। उनके बिना कोई पार्टी जिन्दा नहीं रह सकती। देश और देशवासियो की जो दुर्दशा इन राजनैतिक दलो के आचरण से हो रही है, वह अकथनीय है। निम्न पक्तियो के माध्यम से कुछ तथ्य प्रस्तुत किये जा रहे है। आशा है, प्रबुद्ध जनमानस देश हित और समाज हित मे परिस्थिति को बदलने के लिए उचित कदम उठाने मे सहयोग करेगा।

अक्षम सरकारें

सरकार का कार्य अपने प्रान्त मे कानून और शान्ति की व्यवस्था करना होता है। आज सारे भारत मे अशान्ति और अव्यवस्था चल रही है। भारत मे आज तक ऐसी कोई सरकार नही बन पाई, जो जनता के जान, माल की सुरक्षा की गारटी दे सकती। जनहित की जोर, शोर से घोषणा करने वाली तथाकथित सरकारे आज तक ऐसी व्यवस्था नही कर पाई कि भारत का हर नागरिक निशक अपनी आजीविका चलाता हुआ अपना जीवन-यापन कर सके। इसके विपरीत ये सरकारे चलाने वाले अपने लिए ज़ैड कैटेगरी की सुरक्षा जनता के खर्चे पर जरूर कर लेते है।

जन सेवा का झूठा दावा

भारत के हर प्रान्त मे आज तथाकथित चुनी हुई सरकारे जनहित मे सेवा करने का दावा अवश्य करती है, परन्तु वस्तुस्थिति इससे कतई भिन्न है। इन तथाकथित सरकारो से सम्बन्धित मत्री विधायक इतने स्वार्थी है कि उन्होने अपनी अपनी जमीन छोड कर आसमान मे निवास की व्यवस्था की है। फलत आज देश के हर भाग मे वीरप्पन अलग अलग नामो से कार्यरत है। वीरप्पन अपने कुछ सहयोगियो के साथ दो दो सरकारो की ऐसी तैसी कैसे कर पा रहा है? क्योकि वह जमीन से मिला है और सरकारे जमीन से बहुत दूर आसमान मे चलती है। इन माफिया के लोगो ने जनता को हर प्रान्त मे इतना आतकित कर रखा है कि पुलिस को सब जानकारी होते हुए भी वह उनको पकडने का यदाकदा ही दिखावे के लिए प्रयत्न करती है, वह भी ढोल बजाकर। जनता माफिया को सब खबरे पहुचाती है, चाहे डर से हो या लालच से। पुलिस उनके साथ मिली भगत से काम करती है। यही कारण है कि ये माफिया के थोडे से लोग हर क्षेत्र मे अपनी कारस्तानी करते हुए जनता को आतकित किये रहते है।

अपने को जनता का शुभचिन्तक कहलाने वाली सरकारो के मत्रीगण केवल शब्दो से जनता को छकाया करते है। ऐसा कहने मे कोई अतिशयोक्ति न होगी कि सरकार ने आतकवादियो के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है। सरकार चलाने वाले दल हो या विरोध पक्ष के, सब के सब माफिया के लोगो से कमोबेशी मिले हुए है। उनका कार्य उनके बिना चलना बहुत कठिन लगता है। सरकार चलाने वाले स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ साधन के लिए अपने सिद्धान्तो की बलि चढाने मे भी नही हिचकते। सविधान के १० प्रतिशत मिनिस्टर बनाने की बात सविधान तक ही सीमित है, वह पालन करने के लिए नही है।

अपनी रक्षा स्वय करे

आज की परिस्थिति मे आर्य समाज ही एक ऐसी सस्था है जिसे आज जनता को समझाना होगा कि वह सरकार और पुलिस का भरोसा छोडे। हर प्रदेश के नगर नगर और गाव गाव मे जनता को जाग्रत कर मोहल्ला समितिया बनाकर जनता को अपने रक्षण हेतु खुद तैयार रहने को प्रेरित करना होगा। ये समितिया समय आने पर भ्रष्टाचार निर्मूलन और अपराधियो को बस मे करने का उपयोगी काम कर जनता को निर्भय बनाने मे मील का पत्थर साबित हो सकती है। जनहित मे जो कदम आवश्यक होगे वे यथा समय उठाने के लिए आर्य समाज इन समितियो के माध्यम से कार्य कर सकता है।

शक्ति की ऊंची लहर तुम!

वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्र मे देहि स्वाहा। .
वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा। . .

यजु० १० २

शक्ति की ऊची लहर तुम,
राज्य शासन जो दिलाते,
राज्य का शासन मुझे दो।
है बली सेना तुम्हारी,
राज्य शासन जो दिलाते,
राज्य का शासन मुझे दो।

आज हालत इतनी खराब हो गई है कि स्वार्थी दल येनकेन प्रकारेण सत्ता से चिपके रहने के लिए अपने सिद्धान्तो की बलि चढाने मे भी नही चूकते। स्वार्थी दल, दल बदल का कानून पास करना ही नही चाहते, कही भी अन्धे के हाथ बटेर लगने वाली तलाश मे रहते है। अभी गोवा और मणिपुर की सरकारे इसी वजह से बदली गई। एक तिहाई मे दलबदल करने की वजह से बहुत अस्त व्यस्तता शासन मे रहती है। मुख्यमत्री, प्रधानमत्री सदा चितित रहने मे अपने कार्य को अच्छी प्रकार नही कर पाते। अत जिस किसी को दल बदल करना है वह पहले अपने क्षेत्र मे इस्तीफा दे, फिर चुनाव लडे, फिर जहा चाहे वहा जाये। यह कानून जितनी जल्दी पास होगा, उतना ही अच्छा होगा। जनता की फजीहत कम होने के साथ साथ प्रधानमत्री और मुख्यमत्रियो का काम भी सरल हो जाएगा तथा मत्रियो की सख्या भी १० प्रतिशत तक सीमित रखी जा सकेगी।

भ्रष्ट अफसर हटाये जाये

यह विचारणीय विषय है कि स्वतत्रता आन्दोलन के दौरान ८० प्रतिशत काग्रेस के आदोलनकारियो मे आर्य समाज के सिद्धान्तो मे पले आर्य थे। सन् १९४७ मे भारत के स्वतत्र होने पर जिन लोगो ने सत्ता सभाली, वे प० जवाहरलाल नेहरू से प्रभावित थे और नेहरूजी साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित थे। जो कुछ आज दुर्व्यवस्था हमारी अर्थ व्यवस्था मे दीखने को मिलती है, वह सब नेहरूजी की ही देन है। सत्ता सभालते समय जो आइ सी एस आफिसर थे उन पर अग्रेजो का प्रभाव भरपूर मात्रा मे था। उनको देशभक्ति से कुछ लेना देना नही था। उन्होने भी अर्थव्यवस्था बिगाडने और भ्रष्टाचार बढाने मे बहुत बडा भाग अदा किया और आज भी कर रहे है। बगलादेशीय फौज ने जिन १६ भारतीयो की बर्बर हत्या की, उसके लिए भी ये अफसर जवाबदार समझे जा सकते है। सन् १९७४ मे श्री मुजीबुर्रहमान और श्रीमती इन्दिरा गाधी के बीच हुए समझौते को अभी तक कार्यरूप न देने मे ये ही अफसर जवाबदार है। आज समय की आवश्यकता है कि ऐसे भ्रष्टाचारी और देशद्रोही अफसरो को देशहित मे तुरन्त हटा दिया जाए।

मिलीजुली सरकारे धोखा है

भारत मे सरकार के नाम पर काम करने वाले स्वार्थी दलो की झूठी मान्यता है कि आज भारत मे मिली जुली सरकारो का युग शुरू हो गया है। इसलिए वे जैसे तैसे सरकार बना कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे है। जनता लोकसभा और विधानसभा के सदस्यो को चुनती है। नियमानुसार जिस दल को बहुमत होता है वह सरकार बनाने का अधिकार प्राप्त कर लेता है। अब जनता स्वार्थी शासक दलो के कामकाज और कार्यकलाप को देखकर अपनी अप्रसन्नता मे किसी भी दल को बहुमत मे आने से रोक लेती है। सब दलो को नकार देती है, ऐसी अवस्था मे किसी की सरकार न बनकर राष्ट्रपति शासन लागू होना चाहिए। परन्तु आज के हालात मे चुने स्वार्थी पदलोलुप प्रतिनिधियो के रहते यह सम्भव नही हो सकता, क्यो वे जोड तोड कर अपनी सरकार बना ही लेते है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखो मे व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

उत्तम यजनशील मनुष्य दीर्घ आयु प्राप्त करता है

आचार्य अभयदेव विद्यालकार

तस्मा अग्निर्भारत. शर्म यसत्
ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम्।
यो इन्द्राय सुनुवामेत्याह नरे नर्याय
नृतमाय नृणाम्॥ ऋक्० ४ २५ ४

अर्थ– (**नरे**) असली नर (**नर्याय**) नरो के हितकारी और (**नृणा नृतमाय**) नरो मे नरोत्तम (**इन्द्राय**) इन्द्र के लिये (**य:**) जो पुरुष (**सुनुवाम इति**) आओ, हम उसका यजन करे, ऐसा (**आह**) कहता है (**तस्मै**) उसके लिये (**भारत. अग्नि:**) भरण करने वाला प्राणाग्नि (**शर्म**) अपनी शरणो, सुख को (**यसत्**) देता है, वह (**ज्योक्**) चिरकाल तक (**उच्चरन्त**) उदय होते हुए (**सूर्य**) सूर्य को (**पश्यात्**) देखता है।

मनन – "आओ हम इन्द्र का यजन करेगे" इस प्रकार जो मनुष्य कहता है, जो स्वय इन्द्र का यजन करता है और दूसरो को यज्ञ करने की प्रेरणा करता है, जो यह यज्ञ करता है और करवाता है वह मनुष्य नि सन्देह महापुरुष होता है। वह सच्चा ब्राह्मण होता है, मनुष्य समाज का सच्चा नेता होता है। वह आदर्श पुरुष बनता है। ओह! वह इन्द्र जो कि असली नर है, असली पुरुष है, हम पुरुषो मे पुरुषोत्तम है, उस इन्द्र का यदि हम नर लोग यजन नहीं करेगे तो और किसका यजन करेगे? उस नेता 'नर' इन्द्र का जिसके हाथ मे इस विशाल ब्रह्माण्ड की बागडोर है जो कि इस सकल चराचर सृष्टि का सचालक है, उस 'नर' का यजन करना मनुष्य 'नर' की उन्नति के लिये आवश्यक है। इस इन्द्र 'नर' का यजन किये बिना मनुष्य अपने मनुष्यत्व की पूर्णता को कभी नही प्राप्त कर सकता, पूर्ण नर नहीं हो सकता। इसलिये वे ही महिमाशाली पुरुष अपने पुरुषार्थ को प्राप्त कर रहे है जो कि इन्द्र का यज्ञ कर रहे है और करवा रहे है।

ऐसे ही इन्द्रयाजी पुरुषो को 'भारत अग्नि' अपने शरण मे लेता है, अपना आश्रय, अपना सुख प्रदान करता है। 'भारत अग्नि' वह अग्नि है जो कि हमारा भरण करता है, जो कि हमारे शरीर का और इस ससार शरीर का भरण (धारण, पोषण) करता है। यह प्राणाग्नि है, इसी अग्नि मे इन्द्र के लिये यज्ञ किया जाता है। इसमे जब हम इन्द्र के लिये अपने सब भोग्यजगत् रूपी सोम का और भोगेच्छा रूपी सोमरस का हवन करते है तो हममे यह प्राणाग्नि खूब प्रदीप्त होता है और प्राणरूप सूर्य 'इन्द्र' के द्वारा हमारी सोमाहुति को इन्द्र परमेश्वर तक पहुचाता है एव प्रदीप्त हुआ यह 'भारत अग्नि' हमारा भरण करता है, हमारा पूरा धारण पोषण करता है। हमे अपना महान् आश्रय, महान् रक्षण, महान् आनन्द प्रदान करता हुआ हमारा पूरी तरह धारण और पोषण करता है। हम मे 'भारत' प्राण भरपूर होता है और इस प्राण के साथ हमारा सम्पूर्ण मनुष्यत्व विकसित होता है।

अन्तर्यामी की शिक्षा

❑ श्री ओमप्रकाश आर्य

वेद मे त्रैतवाद का उल्लेख है। त्रैतवाद से तात्पर्य है– ईश्वर, जीव और प्रकृति का अलग अलग अस्तित्व। इन तीनो के सहारे सृष्टि का क्रम चल रहा है। ऋग्वेद मे स्पष्ट सकेत है

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समान वृक्ष परिषस्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलस्वाद्वत्त्य
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

अर्थात् "आत्मा और परमात्मा रूपी दो पक्षी प्रकृति रूपी वृक्ष पर बैठे हुए है। आत्मा रूपी पक्षी उस वृक्ष के फल का स्वाद ले रहा है और परमात्मा रूपी पक्षी उसे देख रहा है। वह केवल साक्षी मात्र है।"

आत्मा और परमात्मा मित्र

आत्मा और परमात्मा दोनो मित्र है। आत्मा कर्म करने मे स्वतत्र है, परन्तु उसका फल देना परमात्मा के अधीन है। यदि आत्मा अपने मित्र परमात्मा की शिक्षा को मान लेता है, उसके द्वारा बताए हुए मार्ग को अपना लेता है, तो उसे आनन्द की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत यदि वह अपने मित्र का कहना नहीं मानता, तो उसे अशुभ कर्मो का फल भोगना पडता है। परमात्मा कदम कदम पर शिक्षा देता है।

स्थूल और सूक्ष्म शरीर

शरीर प्रकृति के सूक्ष्म तत्वो (परमाणुओ) से बना है, जो स्थूल है। स्थूल शरीर के अन्दर सूक्ष्म शरीर है, जिसे साख्यदर्शन मे लिग देह कहा गया है– **"सप्तदशैक लिङ्गम्"** अर्थात् सत्रह का एक लिग देह होता है। वे तत्व है– पचतन्मात्र, दस इन्द्रिया, मन व बुद्धि। आत्मा के साथ लिग देह लगा रहता है। स्थूल शरीर तो दिखाई पडता है, किन्तु लिग देह सूक्ष्म है। इसी सूक्ष्म शरीर मे शुभाशुभ कर्मो के सस्कार सचित रहते है, जो जन्म जन्मान्तर तक चलते है। आत्मा उसे ढोता है।

जिस चीज़ को हम एक बार देख लेते है, वह हमारी सूक्ष्म आखो के सामने बार बार आती है। इस प्रकार न देखते हुए भी हम सूक्ष्म आखो द्वारा देखते है, न चलते हुए भी हम सूक्ष्म पैरो द्वारा चलते है, न बोलते हुए भी हम सूक्ष्म वाणी द्वारा बोलते है, न सुनते हुए भी हम सूक्ष्म कानो द्वारा सुनते है। यह सब सूक्ष्म शरीर के कार्य व्यापार है।

परमात्मा की सूक्ष्म वाणी

परमात्मा जो अति सूक्ष्म है, अपनी सूक्ष्म वाणी द्वारा हमे शिक्षा देता है, पर उसकी आवाज़ इतनी सूक्ष्म होती है कि हम उसे चिन्तन द्वारा ही जान सकते है। उदाहरण स्वरूप एक व्यक्ति जब कोई गलत कार्य करने जाता है, तो परमात्मा उसको वैसा काम करने से मना करता है, किन्तु स्वार्थ, लोभ, क्रोध, मोह, अहकार आदि के द्वारा जब हम उसकी आवाज़ को दबा देते है तब अनुचित कार्य कर डालते है जिसका दुष्परिणाम हमे भोगना पडता है।

जो व्यक्ति परमात्मा की शिक्षा को जानता है और उसकी आवाज़ को सुनता है, वह कभी गलत कार्य नहीं करता। आपने कइयो के मुख से सुना होगा कि वे गलत कार्य करने जा रहे थे, किन्तु उनके हाथ रुक गये। उस गलत कार्य को करने से रोकने वाली परमात्मा की शिक्षा है।

जो व्यक्ति परमात्मा की शिक्षा को दबा देता है या उसकी आवाज़ को नही सुनता है, वह गलत कार्य करने मे सकोच नही करता। उसके लिए परमात्मा की शिक्षा मूक बन जाती है।

आपने अनेक व्यक्तियो के मुख से सुना होगा कि फला काम करने के लिए उनका दिल गवारा नही कर रहा था। यह गवारा न कराने वाला कौन है? परमात्मा की शिक्षा है।

परमात्मा कभी नही चाहता कि मनुष्य कोई गलत काम करे, किन्तु लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, अहकार आदि के वशीभूत हो कर परमात्मा की शिक्षा को दबा देते है और दुख भोगते है।

चिन्तन और मनन

चिन्तन मनन के द्वारा परमात्मा की शिक्षा को जाना जा सकता है। उसकी शिक्षा को न सुनने वाले आत्महन्ता होते है। ईशोपनिषद् कहती है

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता:।

तास्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जना:।

अर्थात् जो मनुष्य आत्मा का हनन करते है, परमात्मा की शिक्षा को नही सुनते, वे मर कर गहरे अन्धकार से युक्त असूर्य लोको मे जाते है जहा अन्धकार ही अन्धकार है।

परमात्मा पग पग पर शिक्षा देता है और कण कण मे उसकी शिक्षा समाहित है। ज्ञानपूर्वक उसे देखने की आवश्यकता है। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, पर्वत, वायु, वनस्पतिया, फूल, फल, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, तारे, ग्रह, उपग्रह आदि उस परमात्मा की शिक्षा को अभिव्यक्ति प्रदान कर रहे है। हमे उस शिक्षा पर विचार करना चाहिए।

शरीर रथ है, आत्मा रथी

कठोपनिषद् मे एक रूपक है – "यह शरीर रथ है, इन्द्रिया घोडे है, बुद्धि सारथी है, मन लगाम है, आत्मा सवार है।" शरीर रूपी रथ मे बैठा हुआ आत्मा, सब देख रहा है कि रथ कैसे चल रहा है, कहा जा रहा है। यदि रथ मे बैठा हुआ सवार सारथी से यह कहे कि रथ को इस रास्ते से नही, उस रास्ते से ले चलो और इसका उत्तर सारथी यह दे कि हम तो रथ इसी रास्ते से ले चलेगे, तुमको चलना हो चलो, अन्यथा उतर जाओ, हमारी जहा इच्छा होगी रथ वहा ले जाऊगा तो उस सवार का क्या हाल होगा? या तो वह गिर पडेगा या गलत रास्ते पर चला जाएगा। ठीक यही हाल है हमारे शरीर रूपी रथ का और उसके लिए परमात्मा की शिक्षा का।

परमात्मा की शिक्षा को सुनें

अत परमात्मा की शिक्षा को सुनो और शरीर रूपी रथ को सही मार्ग पर ले जाओ, अन्यथा दुख भोगना पडेगा। स्वामी दयानन्द के शब्दो मे "जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल बरतता है, वही मुक्तिजन्य सुखो को प्राप्त करता है और जो विपरीत बरतता है, वह बन्धजन्य दुख भोगता है।" जो मनुष्य परमात्मा की शिक्षा को सुनता है उसे आनन्द, उत्साह और निर्भयता और जो नहीं सुनता है उसे भय, शका और लज्जा होती है। स्वामी दयानन्द के शब्दो मे, "जब इन्द्रिया अर्थो मे मन इन्द्रियो और आत्मा मन के साथ सयुक्त हो कर प्राणो को प्रेरणा करके अच्छे या बुरे कर्मों मे लगाता है तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों में भय, शका, लज्जा उत्पन्न होती है। वह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है।" इसलिए हमे उस अन्तर्यामी की शिक्षा सुननी चाहिए, उसकी शिक्षा परम कल्याणकारी है।

आर्य समाज रावतभाटा, वाया कोटा
(राजस्थान) ३२३३०५

सम्पादकीय

जिहाद! जिहाद!! जिहाद!!! जिहा ....

११ सितम्बर और ७ अक्टूबर २००१ के बीच २६ दिनो के विश्व परिदृश्य को याद कीजिये। न्यूयार्क मे विश्व व्यापार केन्द्र की ११० मजिली दो मीनारो से दो विमान आ कर टकराये थे। उनमे आग लग गई थी और वे ध्वस्त हो गई थीं। ५००० से अधिक लोग मारे गये थे। पेटागौन के मुख्यालय पर भी इसी तरह का विमान टकराया था और उससे भी बहुत क्षति हुई थी। अरबो डालर का नुकसान हुआ था।

अमेरिका का अभिमान आहत

१ अरब डालर अमेरिका के लिए कोई बडी चीज़ नहीं हैं। बडी चीज़ यह थी कि उसकी पगडी उतर गई थी, उसकी मूछे नुच गई थीं। उसका अभिमान आहत हुआ था।

उससे भी बडी लज्जा की बात यह थी कि यह चोट किसी साधन सम्पन्न महाशक्ति— रूस, चीन, फ्रास या ब्रिटेन ने नही की थी, एक छोटे से, किन्तु शक्तिशाली आतकवादी गिरोह अल कायदा ने की थी, जिसका कर्ताधर्ता ओसामा बिन लादेन था। इस ओसामा को अफगानिस्तान मे कट्टर इस्लामी गुट तालिबान के नेता मुल्ला मुहम्मद उमर ने शरण दी हुई थी। ओसामा और उमर दोनो का एकमात्र लक्ष्य था विश्व भर मे इस्लाम का प्रभुत्व स्थापित करना और जहा कही भी मुस्लिमो पर अत्याचार होता हो, वहा 'जिहाद' छेडना।

११ सितम्बर और ६ अक्टूबर २००१ के बीच के दिनो मे अल कायदा और तालिबान की पतग बहुत ऊची उड रही थी। विश्व व्यापार केन्द्र की मीनारो पर और पेटागौन के मुख्यालय पर जो आत्मघाती विमान टकराये थे, उनमे १९ प्रशिक्षित, साहसी उडाके मारे गये थे। सारी दुनिया के मुसलमान उन 'शहीदो' के गुणगान कर रहे थे। किसी ने एक बार भी उन ५००० व्यक्तियो की दर्दनाक मौत के बारे मे नहीं सोचा, जिनका फिलस्तीन, बोसिन्या, चेचेन्या या कश्मीर मे चल रही लडाई से दूर तक का भी सम्बन्ध नही था। वे इसलिए मारे गये कि आतकवादी लोग जैसे भी हो, अमेरिका मे आतक फैलाना चाहते थे।

अमेरिका को इस आघात की पीडा और भी अधिक इसलिए अनुभव हुई कि वह स्वय को प्रशान्त और अतलान्तक महासागरो से घिरा होने के कारण पूर्णतया सुरक्षित समझे बैठा था। शत्रु के प्रक्षेपास्त्रो और बमवर्षक विमानो से बचाव की उसकी तैयारी पूरी थी। परन्तु उसी के अपने विमानो का अपहरण करके उन्हे ही महाविनाशकारी बम के रूप मे प्रयुक्त किया जा सकता है, इसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। आतंकवादियो के षड्यन्त्र की यह सन्न कर देने वाली सफलता थी।

धार्मिक उन्माद

और इस सफलता से सारे इस्लामी जगत् मे एक धार्मिक उन्माद छा गया था। मोरक्को से ले कर अल्जीरिया, मिस्र, लेबनान, सीरिया, ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, बगलादेश, मलेशिया, इडोनेशिया और फिलिपाइन्स तक मे ओसामा एक महानायक बन गया था। लोग उसके चित्र खरीद रहे थे, उसके चित्र वाली बनियाने और कमीज़े पहन रहे थे और अपने नवजात पुत्रो का नाम ओसामा बिन लादेन रख रहे थे।

प्रचार माध्यमो का गलत प्रचार

प्रचार माध्यमो (सवाद समितियो, अखबारो और दूरदर्शनो) का प्रदर्शन शोचनीय रहा। वे भी मुस्लिम उन्माद की लहर मे बह रहे थे। आतकवादियो की प्रकट और प्रच्छन्न स्तुति कर रहे थे। ओसामा को शरण देने वाले अफगानो और विश्व भर मे फैले जिहादियो की अपराजेयता का अतिरजित वर्णन कर रहे थे कि अफगान लोग परम्परागत रूप से प्रचड स्वतत्रता प्रेमी है, उन्हे कोई पराधीन नही कर पाया, उन्होने ब्रिटिश सेनाओ को हरा दिया, उन्होने १९९० मे महाशक्ति रूस को वापस खदेड दिया, अब अमेरिका की हारने की बारी है। ये सब अर्धसत्य थे और पूरी तरह भ्रामक थे।

इस प्रचार से और कोई भ्रम मे पड़ा हो या न पडा हो, परन्तु ओसामा और मुल्ला मुहम्मद उमर भारी भ्रम मे पड़ गये। वे स्वय को अमेरिका की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली समझने लगे और घोषणा करने लगे कि अल्लाह हमारे साथ है और उसकी कृपा से इस युद्ध मे जीत हमारी होगी। जब कि सत्य यह था कि अफगानिस्तान ससार के सबसे पिछडे, अशिक्षित और गरीब देशो मे से एक था। युद्ध मे वह अमेरिका का पासग भी नही था। आजकल के युद्ध वीरता से नही, आधुनिकतम शस्त्रास्त्रो से लडे जाते है।

७ अक्टूबर को अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने आतकवाद के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। २५ दिन का समय युद्ध पोतो और सेना को ठीक ठिकाने तक पहुचाने के लिए लिया गया था।

बम बरसने लगे

अफगानिस्तान पर बमवर्षा शुरू हुई। पाकिस्तान अमेरिका का मित्र रहा था और समय समय पर अमेरिका से बहुत सहायता और समर्थन पाता रहा था। अमेरिका ने उसे अफगानिस्तान के विरुद्ध युद्ध मे अपना साथी बनाया। पाकिस्तान को साथी बनना पडा। साथी न बनने का अर्थ होता आतकवादी तालिबान का साथी बनना। अमेरिका ने दो ही विकल्प बताये थे या तो आप हमारे साथ है, या आप हमारे विरोधी है। तटस्थ या उदासीन हम किसी को नही मानेगे।

पाकिस्तान ने तालिबान को पाला पोसा था, उन्हे धन, हथियार, और मार्गदर्शन दिया था। वे उसे पुत्र से भी अधिक प्यारे थे। पाकिस्तान के कट्टरपथी मुसलमान जिहादी तालिबानो के प्रबल समर्थक थे। पर अमेरिका ने पाकिस्तानी सरकार को विवश किया कि वह तालिबानो और अल कायदा को हराने मे उसका साथ दे।

अमेरिकी विमानो ने अफगानिस्तान के सभी शहरो पर बम बरसाने शुरू किये। प्रचार माध्यमो ने अफगान पक्ष का प्रचार किया, कहा 'बम असैनिक ठिकानो पर गिर रहे है। उनसे तालिबान का कोई सैनिक नुकसान नही हुआ। अमेरिकी बमो से किसी दिन कोई बच्चा, बुढिया या बीमार मर जाता था। बम अस्पतालो पर गिरते थे। दिन भर की बमबारी के बाद भी किसी तालिबान सैनिक के मरने की सूचना प्रचार माध्यमो ने नही दी। वे यही कहते रहे कि बमबारी एकदम विफल रही है।

अमेरिकी चाल

यह स्थिति कई सप्ताह तक बनी रही। यह एक खुला रहस्य है कि अमेरिका किसी भी युद्ध मे अपने सैनिक मरवाना नहीं चाहता। लडने और मरने के लिए अफगानिस्तान के उत्तरी गठबधन के लडाके तैयार थे, परन्तु अमेरिका यह भी नही चाहता था कि तालिबान को हराने के बाद उत्तरी गठबधन अफगानिस्तान पर कब्ज़ा कर ले, इसलिए वह बहुत नाप तोल कर बम गिरा रहा था।

जब यह लगा कि उत्तरी गठबधन की सहायता के बिना युद्ध जीता नही जा सकता, तब अमेरिका ने तालिबान के अग्रिम मोर्चो पर बम गिराये और पाच दिन मे ही उत्तरी गठबधन की सेनाओ ने राजधानी काबुल समेत आधे से अधिक कन्धार पर कब्ज़ा कर लिया। जिहादी तालिबान बिना लडे ही हार गये।

अफगान कभी हारता नही

कहा जाता था कि अफगान कभी हारता नही, क्योकि वह हारने की सभावना देखते ही पाला बदल विजेता के पक्ष मे हो जाता है। अफगानो के लिए लडाई एक पेशा है। जिधर से अधिक पैसा मिले, वे उसी पक्ष के साथ हो जाते है।

अफगान वीर उतने नही होते, जितने कि क्रूर होते है। प्रतिद्वन्द्वी के हारते ही वे उसको मार डालते है। उसी से उनके वीर होने का भ्रम हो जाता है। इस युद्ध मे तालिबान ने कुछ प्रतिद्वन्द्वियो को पकडते ही उन्हे मार डाला। उत्तरी गठबधन के सैनिको ने कई सौ तालिबानो को पकडने के बाद मजार ए शरीफ मे किला ए जगी मे यह कह कर मार डाला कि कैदियो ने बगावत कर दी थी।

उग्र प्रदर्शनो का दौर

लडाई के शुरू के दिनो मे तालिबान के पक्ष मे सभी मुस्लिम देशो मे उग्र प्रदर्शन हुए। एक बार तो लगा कि उन देशो मे अमेरिका समर्थक सरकारे ही पलट दी जायेगी। यह खतरा पाकिस्तान मे सबसे अधिक था, जो उग्रपथी इस्लाम का सबसे बडा गढ है। परन्तु वहा भी कुछ नहीं हुआ। कढी के उफान की तरह उग्र प्रदर्शन शान्त हो गये। जो हजारो जिहादी फूल मालाए पहन कर, राइफल उठाये अफगानिस्तान मे तालिबान के पक्ष मे लडने गये थे, वे एक सप्ताह मे ही जान बचाने के लिए भाग भाग कर वापस आने लगे। उन्हे शहीद होने का भी मौका नही मिला। लडाई हुई ही नही, इकतरफा पिटाई हुई। अमेरिकी विमान इतनी ऊचाई से बम गिराते थे कि उनका कुछ भी बिगाडा नही जा सकता था। इस तरह चूहे की मौत मरने के बजाय जिहादियो ने पीठ दिखा कर भागना ही भला समझा।

तालिबान का हौआ समाप्त हो गया। केवल एक शहर कन्धार उनके कब्ज़े मे बचा है, वहा भी उनके आत्म समर्पण के लिए बातचीत चल रही है। आत्मसमर्पण न करने की दशा मे उन्हे भी बम बरसा कर तहस नहस कर दिया जायेगा।

आत्म समर्पण

कुदुज शहर मे लगभग तीस हजार तालिबान लडाके घिर गये थे। उन्होने आत्मसमर्पण के लिए शर्त रखी कि वे सयुक्त राष्ट्र सघ की सेनाओ के समक्ष आत्मसमर्पण करने को तैयार है, उत्तरी गठबधन की सेना के समक्ष नही, क्योकि वे लोग उन्हे तुरन्त मार डालेगे। अमेरिका ने कहा कि हम तालिबान को कैदी बनाना ही नही चाहते। इतने कैदियो को सभालने लायक हमारे पास सैनिक ही नही है। विवश तालिबान को उत्तरी गठबधन के सामने ही आत्मसमर्पण करना पडा। इन आत्मसमर्पण करने वालो मे पाकिस्तानी, चेचेन, अरब तथा अन्य विदेशी सैनिक भी थे। इन विदेशी सैनिको पर अमेरिका

(शेष पृष्ठ ९ पर)

वर्ण व्यवस्था तथा जात-पांत का प्रभाव

❑ श्री माचन्द रिवाडिया

प्राचीन काल मे भारतीय अर्थ व्यवस्था के अन्तर्गत श्रम विभाजन के रूप मे वर्ण व्यवस्था स्वीकार की गई थी– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। समाज का यह चतुर्विभाजन कर्म के आधार पर किया गया था जिसका स्पष्ट निर्देश मनु ने अपने स्मृति ग्रथ मे किया है।

१. मनु के अनुसार ब्राह्मण के कर्तव्य और गुण निम्न है :

पढना-पढाना, यज्ञ करना-कराना, दान लेना और देना, ये छह कर्म है।

२. क्षत्रिय के कर्तव्य कर्म और गुण निम्न है :

न्याय से प्रजा की रक्षा अर्थात् पक्षपात छोड कर श्रेष्ठो का सत्कार और दुष्टो का तिरस्कार करना। विद्या, धर्म की प्रवृत्ति और सुपात्रो की सेवा मे धनादि पदार्थो का व्यय करना। वेदादि शास्त्रो का पढना और पढाना और विषयो मे न फस कर जितेन्द्रिय रहकर सदा शरीर और आत्मा से बलवान् रहना।

३. वैश्य के कर्तव्य कर्म और गुण निम्न है :

व्यापार करना, कृषि पशुपालन करके देशवासियो का भरण पोषण करना, विद्या धर्म की वृद्धि करने के लिए धनादि की व्यवस्था करना आदि।

४ शूद्रों के कर्म

समाज के सब वर्गो की सेवा करना इनका एकमेव मुख्य कर्तव्य है और इसी सेवा के आधार पर अपना जीवन निर्वाह करना।

मनु महाराज की उपरोक्त उक्तियो से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल मे वर्ण विभाजन गुण, कर्म के आधार पर किया गया था। कोई जन्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं होता, कर्म के आधार पर होता है।

यजुर्वेद के ३१वे अध्याय का ११वा मन्त्र है। इसमे कहा गया है कि ब्राह्मण अपने गुणो के कारण समाज का मुख होता है। क्षत्रिय रक्षक गुणो के कारण बाहु होता है। वैश्य अपने कृषि आदि कार्यो के कारण समाज का उदर होता है। शूद्र अपनी सेवा के कारण पग होता है। जिस प्रकार इन अगो का शरीर मे महत्व है, उसी प्रकार समाज मे इन चारो वर्णो का महत्व है।

मनु महाराज ने यह भी लिखा है कि शूद्रकुल मे जन्म ले कर अपने कर्म के आधार पर शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य भी बन सकता है और ब्राह्मण अपने कर्मो के आधार पर शूद्र भी बन सकता है अर्थात् चारो वर्णो मे जिस जिस वर्ण के पुरुष स्त्री अपने अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार होगे उसी वर्ण मे गिने जायेगे।

इसी तरह का भाव आपस्तम्ब धर्म सूत्र मे भी व्यक्त किया गया है— धर्माचरण से युक्त वर्ण अपने से उत्तम वर्ण को प्राप्त कर लेता है और वह उसी वर्ण मे गिना जाता है जिसके वह योग्य होता है। वैसे ही अधर्माचरण से युक्त उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे वाले वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण मे गिना जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास मे लिखा है— ऐसी सुन्दर वर्ण व्यवस्था के रहते हुए भी स्वार्थी एव अहकार के वश मदोन्मत्त हुए तथाकथित ब्राह्मणो ने मिथ्या कल्पना का विस्तार करके नाना प्रकार की जटिलताओ का विकास किया जिसको ब्राह्मणवाद कहते है।

प्राचीन काल मे गुरुकुल के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। चारो वर्णो के बच्चे साथ-साथ गुरुकुल मे विद्या प्राप्त करते थे। विद्या प्राप्ति के बाद जो जैसा होता था, उसी वर्ण मे जा कर अपना कर्तव्य निभाता था। जब से जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था कायम हुई है, तब से इस देश मे विघटन पैदा हो गया है। ब्राह्मण कुल मे जन्म लेकर ब्राह्मण दुष्टतापूर्ण कार्य करता है फिर भी ब्राह्मण है और शूद्र धर्मानुसार यज्ञ, हवन, पठन-पाठन करता है फिर भी शूद्र है। इसी से सामाजिक व्यवस्था चरमरा गई है।

आज जात-पात ने हमारे देश को पगु बना दिया है। जात-पात की राजनीति का देश मे बोलबाला है। जात-पात के आधार पर ही बडे बडे नेता बन रहे है। हर वर्ग इन्ही राजनेताओ के पीछे बिना विचारे भाग रहा है। समाज उन व्यक्तियो और सस्थाओ को सम्मान नही देता, जो प्राचीन वर्ण व्यवस्था पर आज भी कार्य कर रहे है। आज सार्वजनिक जीवन मे खोटे सिक्को का चलन इतना अधिक हो गया है कि अब अच्छे सिक्के यदि कहीं दिखाई भी देते है, तो वे नकली मालूम पडते है। आज जो जितना अधिक भ्रष्ट और आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा, वह उतना ही प्रतिष्ठित नेता होगा। जिसके पीछे कोई सम्प्रदाय, जाति, वर्ग होता है, उसके सकेत पर सत्ता प्रतिष्ठान उठक-बैठक लगाते है। देश का गद्दार देशभक्ति का उपदेश देता है और विदेशी धन पर पलने वाला स्वदेशी का प्रवक्ता बनता है। देश की अखण्डता को खडित करने वाले राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार समझे जाते है।

वैदिक वर्ण व्यवस्था ने समाज के सामने यह शर्त रखी थी कि तुम्हारे लिए सम्मान, सत्ता और सम्पदा के अवसर समान रूप से उपलब्ध है। तुम स्वय ही अपना मार्ग चुन लो कि तुम्हे क्या चाहिए। सम्मान चाहिए या सम्पदा या राजसिहासन। इस चुनाव करने तक तो व्यक्ति स्वतत्र रहता था। बाद मे यह शर्त रखी थी कि सम्मान उसे मिलेगा, जो प्रबुद्ध एव त्यागी होगा। सभी को त्यागी व्यक्तियो का सम्मान करना होता था क्योकि वह अपने लिए नही जीता था बल्कि समाज के लिए जीता था। जब तक देश मे प्राचीन वर्ण व्यवस्था कायम रही, तब तक देश का चरित्र तथा सुन्दर सगठन बना रहा। जब से यह व्यवस्था बिगडी, तब से देश भी बिगड़ता गया।

आज देश मे चारो तरफ हाहाकार मचा हुआ है। पुन जाति सघर्ष होने की सभावनाए बढ गई हैं। चारो तरफ वोट की राजनीति ने समाज मे विघटन पैदा कर दिया है। दलितो, शोषितो पर अत्याचार बढ गये है। वे सामूहिक रूप से धर्मान्तिरण कर रहे है। मेरी मान्यता है कि जब धर्मान्तिरण होता है, तो किसी सीमा तक राष्ट्रीयतान्तरण भी होता है।

आगरा जिले के पनवाडी गाव मे हरिजनो की बारात नही निकलने दी, जिसके कारण बडा भारी जाति सघर्ष हुआ। रिवाडी जिले के कालडावास गाव मे दलितो की इसलिए पिटाई की गई कि वह घोडी पर क्यो चढा?

मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के तलैया गाव मे हरिजन औरतो की बुरी तरह पिटाई इसलिए हुई कि उन्होने नगे होकर नाचने से मना कर दिया था। फतेहपुर जिले के धर्मपुर मे धनराज हरिजन को इसलिए जिन्दा जला दिया गया कि उसने अपनी पत्नी कुच्ची देवी को सामंतो की हवश शात करने के लिए उनके साथ भेजने को मना कर दिया था।

वैदिक वर्ण व्यवस्था पुन स्थापित करने तथा जात पात को समाप्त करने के लिए देश मे ऐसा सगठन बनाने की आवश्यकता है, जिसमे चरित्रवान, निष्ठावान तथा निःस्वार्थ भाव से काम करने वाले पूर्णकालिक व्यक्ति हों जो देश मे जा कर इस कार्य को करें। गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर अन्तरजातीय विवाह भी वर्ण व्यवस्था तथा जात-पात रहित समाज का निर्माण करने मे सहायक हो सकता है।

श्री रामराज ने भारत की राजधानी दिल्ली मे ४ ११ २००१ को हजारो की सख्या मे दलित समाज के व्यक्तियो का हिन्दू धर्म से धर्मान्तिरण कराकर यह सिद्ध कर दिया है कि अब भी हिन्दुओ के नेता नही जागे, तो हिन्दू धर्म अल्पसख्यक मे आ जायेगा।

जी-४१, डी० डी० ए० फ्लैट्स,
अजमेरी गेट, दिल्ली-११०००६

जीवन और मृत्यु एक ही वस्तु के दो अंश हैं

बहुत पुरानी बात है। बद्रीनाथ के मार्ग मे एक धर्मशाला मे दो साधु तीर्थ यात्री आ कर रुके। शाम को रूखा सूखा खा कर उन्होने सोने की तैयारी की। उनमे से एक ने दूसरे से पूछा 'आप किस आशा से तीर्थ यात्रा पर जा रहे है?'

दूसरे ने कहा 'मै किसी तीर्थ यात्रा पर नहीं जा रहा। मुझे किसी मन्दिर मे भगवान के दर्शन नहीं करने। मुझे एक बाबा ने बताया है कि इन्ही ऊचे पहाडो मे एक अमृत का कुड है। उसका जल जो पी लेता है, वह फिर मरता कभी नही। कई महीने से मै भटक रहा हू। कभी इस पहाड पर जाता हू, कभी उस पहाड पर। अभी तक मिला नहीं। पर शीघ्र ही मिल जायेगा। आप बताइये कि आप किस इरादे से यात्रा पर निकले है।'

पहले ने कहा 'आप कहते है कि यहा अमृत का कुड है। परन्तु मुझे किसी ने बताया कि यहा पहाड पर एक मृत्यु बूटी मिलती है। उसे घिस कर माथे पर लगाते ही मृत्यु का रहस्य पता चल जाता है। मै उसी बूटी की खोज मे लगा हू। अभी तक तो हाथ आई नही।'

दूसरे साधु ने कहा 'यह बडे आश्चर्य की बात है कि मै अमृत कुड को खोज रहा हू और आप मृत्यु के रहस्य की बूटी को ढूढ रहे हो। मुझे भी अभी तक अमृत कुड मिला नहीं है। अब हमे किधर जाना चाहिए?'

पहले ने कहा 'हमारे रास्ते ठीक उल्टे होने चाहिए। अमृत उत्तर मे हो, तो मृत्यु दक्षिण में होनी चाहिए।'

उन दोनो की बाते धर्मशाला का चौकीदार भी सुन रहा था। दाल भात मे मूसलचन्द की तरह वह बोला 'वैसे लोग मुझे पागल कहते हैं। पर यदि आप दोनो मेरी बात माने, तो मैं यही कहूंगा कि आप दोनो को एक ही दिशा मे जाना चाहिए। जहा अमृत कुंड होगा, उसके बिल्कुल आसपास ही मृत्यु के रहस्य की बूटी भी होगी। क्योकि मृत्यु और अमृत (जीवन) एक ही वस्तु के दो अश है— उत्तरी और दक्षिणी छोर। जीवन को पा लिया तो समझो कि मृत्यु का रहस्य भी जान लिया।

जो सही अर्थो मे जीवन जी लेता है, उसे फिर मृत्यु से भय नहीं लगता।

असुर संस्कृति और देव संस्कृति में विरोध

(गतांक से आगे)

□ श्री ज्येष्ठ वर्मन

आर्य समाज का नियम ८ कहता है, "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।" गुरुकुल, विद्यालय, पुस्तकालय, उपदेश, शास्त्रार्थ, सम्मेलन, साहित्य आदि माध्यमो द्वारा इस नियम का पालन किया जाता है। आर्य समाजेतर सस्थाओ मे यह योग्यता नही होती। जो आर्य समाज विधिवत् चलता है, उसके वार्षिक अधिवेशन मे ऐसी योजनाए और उपलब्धियो के विवरण अवश्य होगे।

आर्य समाज का नियम चार (४) कहता है

"सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" पूर्वाग्रह, दुराग्रह, पक्षपात इत्यादि अनार्यो के लक्षण है। ऐसे लोग आर्य समाज मे अनपेक्षित है (undesirable)।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने का तात्पर्य सत्य के पक्ष का समर्थन करना और असत्य के पक्ष का विरोध करना अथवा उसका समर्थन वापस लेना है। असत्य के प्रति आर्य समाज की पूर्ण असहिष्णुता की नीति है। इस नीति का पालन किये बिना सत्य की रक्षा नही हो सकती। सत्य की रक्षा के बिना न्याय की रक्षा, न्याय की रक्षा के बिना सुख और शाति असम्भव है। विश्व मे जो भी बुद्धिमान मनुष्य ससार मे सुख और शाति चाहता है, उसके लिये आर्य समाज से अधिक उत्तम सस्था दूसरी कोई भी नही मिल सकती।

प्रभुत्व लोलुपों के हथकडे

जहा लोभी, सत्तालोलुप, अनार्य, छल कपट और कुटिलतापूर्वक परद्रव्य का अपहरण करते है, अथवा सत्ता हडप लेते है, वहा इन लोगो को सदा सच्चाई सामने आने का भय रहता है, अपनी प्रतिष्ठा को धक्का लगने का डर बना रहता है। इसलिए ऐसे लोग अपने अपराधो को छिपाने और लोगो का ध्यान अन्यत्र आकर्षित करने हेतु प्राय झूठे प्रचार, अपनी आलोचना करने वालो पर झूठे आरोप लगाना और इस घृणित कार्य के लिए अपने विरोधियो के विरुद्ध भौकने के लिए कुत्ते पालते है।

प्रत्यक्ष गुणवादी य· परोक्षे चापि निन्दकः।
स मानवः श्ववल्लोके नष्टलोक परावरः॥
तस्मात्प्राज्ञो नर. सद्यस्तादृशं पापचेतसम्।
वर्जयेत् साधुभिर्वर्ज्यं सारमेयामिष यथा॥

महाभारत शातिपर्व११४ १२,१४

अर्थात् सामने से लोगो की स्तुति करना और पीछे से उनकी बुराई करना जिसकी आदत है, उसको कुत्ते के समान समझना चाहिए। अथवा आर्यो के लिए योग्य है कि वे परनिन्दा के स्वभाव वाले मनुष्यो को कुत्ते के मास के समान अपवित्र समझ कर अपने पास फटकने भी न दे। स्वामी दयानन्द ने कहा है कि जब हम किसी के व्यवहार मे दोष देखते है और उससे समाज को हानि होती है, तब सभ्यता का पालन करते हुए सम्बन्धित व्यक्ति के सामने यह दोष बताना और उसके पीछे उसके अच्छे गुणो की ही चर्चा करनी चाहिए। यही आर्योचित व्यवहार है। इसका तात्पर्य यह है कि आर्यो को परनिन्दक चुगलखोर अथवा झूठ का प्रचार करने वाले अनार्यो से सदा सावधान रहना चाहिए।

आर्य निष्कपट

आर्य समाज का नियम सात (७) कहता है

"सबसे से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।" प्रीतिपूर्वक व्यवहार मे छल या कपट नही होता। कृतक नम्रता भी नही होती। यथायोग्य व्यवहार का अर्थ है, मान सम्मान करते समय अथवा स्वागत करते समय, प्रथम विद्वान्, उसके बाद धर्मात्मा व्यक्ति (सत्कर्म करने वाला मनुष्य), उसके बाद उम्र मे बडे (वयोवृद्ध स्त्री पुरुष), पश्चात् बन्धुजन अन्त मे धनवान् की गिनती होनी चाहिए।

वित्तबन्धुर्वयः कर्म विद्याभवति पञ्चमी।
एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम्।
मनुस्मृति २ १११॥

"धन से उत्तम बन्धु, बन्धु से अधिक आयु, आयु से अधिक श्रेष्ठ कर्म और कर्म से पवित्र विद्या वाले, उत्तरोत्तर अधिक माननीय है।" (स्वामी दयानन्द सरस्वती) धनवान और राजनेताओ को विद्वानो से अधिक मान देना आर्य सस्कृति नही है।

लात के भूत बातो से नही मानते

दुष्ट पापी असुरो के सामने साम, दान और भेदोपाय काम नही आते। ये तो केवल दण्ड (प्रहार) की भाषा को ही समझते है। (**न हि दण्डादृते शक्यः कर्तुं पापविनिग्रहः॥** मनुस्मृति ९ २६३)

अस्य पीत्वा शतक्रतो धनो वृत्राणामभवः। (ऋग्वेद १ ४ ८)

इस वेद मत्र के भाष्य मे स्वामी दयानन्द ने लिखा है **"यो मनुष्यः दुष्टैः सह धर्मेण युद्ध्यन्ति तस्यैव विजयो भवति।"** इन शब्दो द्वारा स्वामी जी ने आर्यो के लिए दुष्ट अनार्यो को धर्मयुद्ध द्वारा मारने की प्रेरणा दी है।

दुष्टो पर क्रोधकारी बने

सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास मे प्रार्थना विषयक चर्चा करते समय स्वामी जी ने लिखा है "हे अग्ने अर्थात् प्रकाश स्वरूप परमेश्वर, आप दुष्ट काम और दुष्टो पर क्रोधकारी है मुझको भी वैसा ही कीजिये।" इसी ग्रथ मे, षष्ठ समुल्लास मे, राजधर्म की चर्चा करते हुए मनुस्मृति के आधार पर आपने लिखा है "दुष्ट पुरुषो के मारने मे हन्ता को पाप नही होता, चाहे प्रसिद्ध मारे, चाहे अप्रसिद्ध "

इस समय देश की कानून व्यवस्था बिल्कुल दोषपूर्ण है। इसी कारण देश के अन्दर अपराधो की वृद्धि और आतकवाद का विस्तार हो रहा है। आर्य लोग ही इसको ठीक कर सकते है।

धन से बध जाता है

पुणे मे अपने प्रवचन मे स्वामी दयानन्द ने कहा था "भीष्म जैसे विद्वान् और धर्मवादी पुरुष पक्षपात के रोग मे ग्रस्त हो गये। उनको उचित तो यह था कि वे मध्यस्थ हो कर दोनो पक्षो का न्याय करते और अपराधियो और अन्यायियो को दण्ड दिलाते। ऐसा न करके उन्होने अन्यायियो का पक्ष करके कुरु वश का नाश होने दिया। देखिये भीष्म क्या कहता है – **अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्। इति मत्त्वा महाराज बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः।** 'धन का मनुष्य दास है, धन किसी का दास नही। ऐसा मान कर मै स्वार्थ मे बधा हुआ कौरवो के पक्ष मे हू।' इस प्रकार बुद्धिभ्रष्ट होने से और द्वेष बढने से भीष्म द्रोण और दुर्योधन आदि कौरव एक तरफ हुए और पाण्डव दूसरी तरफ हुए और बडा भारी युद्ध हुआ " (बारहवा व्याख्यान)

भीष्म एक बडे विद्वान्, श्रेष्ठ योद्धा, धर्मज्ञ और परिवार के सबसे बडे व्यक्ति होने पर भी स्वार्थ से मुक्त न हो पाये। उसने अन्यायकारी कौरवो का पक्ष लिया। न्याय की रक्षा की उपेक्षा की। यह कैसा विद्वान्? कैसा धर्मज्ञ? वह तो लार्ड डेवीस के शब्दो मे प्रच्छन्न असुर (passive barbarian) था। उसके निकम्मेपन का दृष्टान्त देखिये जिस समय कौरवो की सभा मे द्रौपदी रो रो कर कह रही थी कि जिस सभा मे बडे बडे शास्त्रज्ञ, इन्द्र के समान शूरवीर और गुरुजन विद्यमान है उस सभा मे मै उनके सामने नग्नावस्था मे कैसे खडी हो सकती हू? रोको कोई दुष्ट दु शासन को। लेकिन, इस पाप कर्म को होते देख कर सब मौन ही रहे। तब द्रौपदी ने रोष और जुगुप्सा व्यक्त करते हुए कहा, कि धिक्कार है आप सब लोगो को। भरतवश के क्षत्रिय वीर आज अपने धर्म को भूल गये है। द्रोण, भीष्म, युधिष्ठिर प्रभृति वीर पुरुष अब निर्वीर्य हो गये है। अपनी आखो के सामने अन्याय, पाप को होते हुए देख कर भी ये चुप है।

यह सुन कर भीष्म ने कहा "धर्म की बात बहुत सूक्ष्म है अत मै तुम्हारी बातो का उत्तर देने मे असमर्थ हू।" (**न धर्मसौक्ष्म्यात्सुभगे विवक्तु शक्नोमि ते प्रश्नमिम यथावत्**) विद्वान् और धर्मज्ञ लोग भी लोभ मे फस कर कैसे दुष्टो की सहायता करते है, इस बात के लिये महाभारत का भीष्म एक अच्छा दृष्टान्त था। आज हमारे देश मे इस प्रकार के विद्वान्, धर्मोपदेशक हजारो की सख्या मे है। लेकिन स्वार्थवश ये प्रच्छन्न दस्युओ की भूमिका निभाते है, हमेशा सम्पन्न, शक्तिशाली दुष्ट दस्युओ की सहायता करते है। सत्य और न्याय का पक्ष कोई नहीं लेता। श्रीकृष्ण ने इसी कारण भीष्म को मरवा डाला। वह जिस दुर्गति के योग्य था, वह उसको मिल गई। अन्य पक्षपाती लोग भी अवश्य ऐसी ही दुर्गति को पायेगे।

आसुरी शक्तियों को पहचानो

आर्यो के लिए आसुरी शक्तियो का परिचय बहुत आवश्यक है। इसीलिए श्रीकृष्ण ने रणभूमि मे अर्जुन को आसुरी सम्पत् के लक्षणो को समझाया था। अन्यथा वह शायद भीष्म को मारने का दृढ सकल्प धारण नही करता। आश्चर्य की बात है कि आज देश विदेशो मे करोडो लोग भगवद्गीता के भक्त है, लेकिन लगभग सभी ने गीता पाठ को मनोरजन, कालक्षेप और लोकैषणा की पूर्ति का साधन बना दिया है। गीता के भक्तो मे अधिकाश लोग प्रच्छन्न असुर (passive barbarians) है। गीता मे वर्णित आसुरी सस्कृति और इस वर्णन के प्रयोजन की ओर किसी का भी ध्यान नही जाता। शायद आधुनिक इतिहास मे केवल स्वामी दयानन्द एक ऐसे विद्वान् थे, जिसने महाभारत के युद्ध के कारण और भीष्म जैसे विद्वान् और बडे व्यक्ति के दोषो की ओर लोगो का ध्यान आकर्षित किया था। यह आधुनिक समय मे भी बिल्कुल प्रासगिक है क्योकि सारे विश्व मे आज न केवल दुष्ट दैत्य (Active barbarians) अपितु ऐसे प्रच्छन्न असुर (passive barbarians) भी राज्य कर रहे है। यदि इन आसुरी शक्तियो से, इस आसुरी सस्कृति के प्रभाव से, विश्व को बचाना है, तो यह कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है– स्वामी दयानन्द के बतलाये गये मार्ग पर चल कर, आर्य समाज को मजबूत बना कर।

लेकिन आर्य समाज को एक बडा खतरा है। यह खतरा विश्व के किसी भी कोने से नही। यह खतरा आर्य समाज के अन्दर से –घुसपैठी अनार्यो से।

वर्णापेतमविज्ञात नर कलुषयोनिजम्।
आर्यरूपमिवानार्य कर्मभि स्वैर्विभावयेत्॥

मनुस्मृति १०-१०

(विशेष जानकारी के लिए पढिये भगवद्गीता का अध्याय १६)

३०, पचवटी कृष्णानन्द नगर, बगलौर

पत्र जगत्

आर्य जगत् में पठनीय सामग्री

आर्य जगत् अक ७ १० २००१ पढा। सभी लेखो ने बहुत प्रभावित किया। पूरा अक पढा। श्री जगदीश प्रसाद जी वैदिक का लेख, डा० रामकृष्ण जी आर्य का लेख, आपकी नाथद्वारा की यात्रा, प्रो० चन्द्रप्रकाश जी का हिन्दी के साथ अन्याय, श्री दयाराम पोद्दार जी व श्री हरिदत्त के लेख पढने व मनन करने योग्य हैं। आपका सम्पादकीय लेख तो ऐसा लग रहा है कि सामने बैठा कोई दार्शनिक सरल भाषा मे सत्य और असत्य का विवेचन करता हुआ कहता है कि जो पान गल जाये, उसे फेक देना ही श्रेष्ठ है। आर्य जगत् पत्र मे सभी प्रकार की सामग्री उपलब्ध होती है। बुढापे के रोगो के लिये श्री छाजूराम शर्मा वैद्य जी का लेख बहुत ही उपयोगी है।

राजेन्द्र आर्य, हासी (हरियाणा) पिन-१२५०३३

मास्टर लक्ष्मण जी की स्मृति

मैने आपके पत्र मे श्री विश्वनाथ का लेख 'मास्टर लक्ष्मण' पढा। बहुत प्रभावित हू। मेरे विचार मे शाहआलमी दरवाजे के बाहर यह भोजनालय अमृतसरी भोजनालय भी कहलाता था। बहुत उत्तम प्रकार का था। मै भी १९३० से १९३३ तक वहा भोजन करता रहा। न केवल वह परन्तु सब कर्मचारी बडे कुशल और ईमानदार थे।

इस लेख मे सर्जन डा० गणेशदास कपूर का भी नाम आया है। वह उस समय लाहौर के मेयो अस्पताल मे कर्नल भरुचा के साथ सह सर्जन थे। उनका अपना क्लिनिक निश्वत रोड पर था। उन्होने १९३४ मे, जब मै डी० ए० वी० हाई स्कूल लाहौर के बोर्डिंग हाउस का अधीक्षक था, मेरे एक निकट सम्बन्धी की नि:शुल्क अपने क्लिनिक मे चिकित्सा की थी। उनके दामाद का नाम भी खेमचन्द आई ए ऐस था। मै अपनी पुरानी यादो के याद आने के लिये आपका तथा श्री विश्वनाथ जी का आभारी हू।

खेमचन्द मेहता, डी-१७२, सरस्वती विहार, दिल्ली-११००३४

आपके सम्पादकीय में मेरे मन की बातें

आपके सम्पादकीय पढ कर मुझे बडा सन्तोष होता है। यो तो आपके सभी सम्पादकीय यदि मै अपने शब्दो मे कहू, तो आखे खोलने वाले और प्रेरक है। विशेष रूप मे उल्लेख करना चाहता हू ३० सितम्बर का "धर्म अधर्म का निर्णय कौन करे" तथा अन्य एक सम्पादकीय 'विद्वान् और धार्मिकता' के सम्बन्ध मे मुझे मेरे अपने मन की बाते लगी। जबसे आर्य समाजो मे धनी व्यापारी प्रधान बनने लगे और विद्वान् उनकी कृपा मे जीने लगे, तब मे काफी कुछ विपर्यय सामने आने लगे है। "**प्रतिबध्नाति श्रेय. पूज्यापूज्य विपर्यय:।**" ऐसे मूर्ख, जिनको न धर्म का ज्ञान है न कानून का पता है, क्या ठीक है, क्या गलत है, इसका निर्णय कर लेते है। दूसरी बात विद्वानो की धर्मभ्रष्टता अर्थात् नैतिक पतन ही आर्य जाति के पतन का मुख्य कारण था और आज भी विद्वानो का नैतिक पतन (प्रामाणिकता न्यायप्रियता का अभाव और जडता अथवा मौढ्य) ही आर्य समाज की शिथिलता का मुख्य कारण है। विद्वान् कायर भी है, कमजोर भी। यह जानते हुए मूर्ख अधिकारी उनका आदर नही करते है। इसके बदले चाटुकारो को पालते है। ये सब दु ख की बाते है। लेकिन मै तो इस सिद्धान्त पर चलने का प्रयत्न कर रहा हू कि चिन्तन विश्व स्तर पर, कर्म स्थानीय स्तर पर।

ज्येष्ठ वर्मन्, ३०, पचवटी कृष्णानन्द नगर, बगलौर

आर्य समाज के संरक्षक

शब्दो ही से विचार बनते है। जिसमें विचार न उठे, उसे जिन्दा लाश कहे अथवा कुछ भी/विडम्बना है अब आर्य समाज मे कोरा तर्क रह गया है। बुद्धिशीलता व सुतर्क कम हो रहा है। जैसे कि सरक्षक शब्द अभी २५-३० वर्षो से अधिक प्रयोग होने लगा तथा इसके प्रति किसी भी बुद्धिजीवी व विवेकशील ने न विचारा, यह शोचनीय विषय है।

परम पिता परमात्मा ही सबका सरक्षक है, मरणधर्मा मनुष्य क्या हो सकता है? फिर, आर्य समाज के विधान तथा उपनियमो आदि मे भी यह पद नहीं है तो बताये लाहौर (अब पाकिस्तान) मे महर्षि जी को प्रधान पद (सम्मान रूप मे देने की) ग्रहण करने की प्रार्थना की गई थी। प्रधान पद बडा महत्वपूर्ण साथ ही बडी जिम्मेदारी का भी है। प्रचारार्थ मुझे सर्वत्र जाना पडता है। यह लोकल को देना चाहिए। तब विचार विमर्श बाद सरक्षक बनने को कहा गया, तो तपाक से कहा 'आप मुझे सरक्षक मानने लगे, तो फिर परम पिता परमात्मा को क्या कहोगे? सब चुप। कभी युग था कि बस मत्री, प्रधान तथा अतरग सदस्य होते थे। अब पदो की भरमार फिर महामत्री पद, सग कई उपप्रधान कई मत्री आदि एव अपने नामो के प्रचार की धुन लगी है।

यश, शोभा, कीर्ति की भूख स्वाभाविक है दानियो मे, परन्तु साधुओ को तो यश की भूख न होनी चाहिए। कभी साधु भी कुछ सस्थाओ के सरक्षक बने है। फिर एक ही सस्था के दो साधु सरक्षक जैसे परोपकारिणी सभा अजमेर के सरक्षक शब्द का दुरुपयोग नही। यह आशा मग विश्वास भी है कि आर्य जगत् के सभी विद्वान् इस विषय पर खुल कर अपने विचार देगे, उनकी पहल छोटे मुह भले जो भी कुछ कहे, मुझे। विचारे बार बार।

राम पथिक भिक्षु, आर्य समाज अजनाला (अमृतसर) पजाब

यह चाटुकारिता का फल है। चाटुकारिता तब पनपती है, जब उच्च पदस्थ अधिकारी उसे पसन्द करते है। खुशामदी सदा सब जगह होते है। अधिकारियो का काम है कि उन्हे कठोरतापूर्वक दुत्कार दे। पदाधिकारियो के लिए सरक्षक, पूज्य, श्रद्धेय आदि शब्दो का प्रयोग नही होना चाहिए। —स०

मुस्लिम महिलाओं के लिए रोजमर्रा के ये फतवे?

मेरे करीबी दोस्त, इब्राहीम की दो पुत्रिया कालेज मे पढती है। कल अचानक मेरे पास आई और बोली 'अकल, हमारा क्या होगा? तालिबानो के कट्टरपथी रवैये तथा इस्लामी जिहाद की आग से बचा कर हमारे पिता जी हमे यहा ले आए तथा मेरे चाचा जी हमारे एक पुराने रिश्तेदार की मदद से कश्मीर मे रह रहे है। उन्हीं के साथ मेरी बूआ, चाची और ताई रहती हैं। भारत मे आ कर हमे बहुत अच्छा लगा। यहा सभी को अपने अपने ढग से जीने की स्वतत्रता है। महिला हो या पुरुष, खान पान, वेश भूषा, पूजा पाठ, रहन सहन, किसी मे भी कोई किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही करता। कभी कभी हम मन बना रहे थे कि उच्च शिक्षा के लिए कश्मीर जा कर श्रीनगर मे (जिसे धरती का स्वर्ग कहते है) रहेगे।

'किन्तु कल ही चाची जी का पत्र मिला है। उनका कहना है कि जिन परेशानियो और मजहब के नाम पर औरतो के साथ घुटन वाले भेदभावपूर्ण वातावरण से बचने के लिए अफगानिस्तान से इस मुल्क मे आए और आ कर कुछ राहत महसूस की थी, अब तो यहा भी वही तालिबानी मजहबी फरमान और फतवे जारी होने लगे है। लगता है यहा भी न तो प्रजातत्र है और न ही धर्मनिरपेक्षता। न सरकार की तरफ से कोई सुरक्षा है। कहा गया मानव अधिकार आयोग? कहा है समानता का अधिकार? कहा धार्मिक सहिष्णुता? कहा है मातृशक्ति के लिए आदर मान? कहा गई भारतीय मान मर्यादाए? महिला शक्तिकरण वर्ष मे महिलाओ पर होने वाले इस अत्याचार के बारे मे भारत के मुल्ला और मौलवी क्यो नही कुछ बोलते? विश्व महिला जागृति मिशन को क्या हुआ? ऐसी घुटन तो पाकिस्तान मे भी नही है, जहा पूर्णत इस्लाम का बोलबाला है। लगता है ये सभी लोग औरतो को अपना गुलाम ही बनाए रखना चाहते है। जब से अपनी बूआ के चेहरे पर डाले गए तेजाब की खबर सुनी है, हमारा तो दिल कापने लगा है। लगता है कही भारत भी अफगानिस्तान तो नही बन जाएगा? ऐसा न हो कि ये फरमान सारे देश की महिलाओ पर लागू कर दिए जाए? हमारे तो आगे बढने के, उच्च शिक्षा प्राप्त करके कुछ कर दिखाने के अरमान ही मिट्टी मे मिलते जा रहे है। क्या भारतीय सरकार तथा कश्मीर की सरकार ऐसे मानवता विरोधी तत्वो का कोई इलाज नही कर सकती? लगता है, अब तो भारतीय सविधान भी इन आतकवादियो का गुलाम हो गया है। सारी सुरक्षा व्यवस्था लुज पुज हो गई है। आश्चर्य तो तब होता है, जब आये दिन सुरक्षा ठिकानो मे ही घुस कर सैनिको तक को गोलियो से भून दिया जाता है। कश्मीर मे हिन्दू हो या मुसलमान हर शरीफ परिवार सहमा हुआ है।

'अकल आप ही बताइये, अब हमारे लिए कहा ठिकाना है? अब भारत को छोड कर भी जाए, तो कहा जाए? अब तो खुदा ही रखवाला है। ये जिहादी इस प्रकार के फतवे जारी करके तथा आतक फैला कर न केवल इस्लाम को बदनाम कर रहे है, बल्कि मुस्लिम ससार की भोली भाली महिलाओ के दिलो मे नफरत की ऐसी आग सुलगा रहे है, जो एक दिन इस्लाम को भस्म कर देगी।

'अत अकल कुछ कीजिये, भटके हुओ को राह दिखाइये। परवरदिगार सारे मुस्लमीन को नेकी के रास्ते पर लाए और रहनुमाओ को हिम्मत और कुव्वत दे, ताकि खलके खुदा अमन चैन से जिन्दगी बसर कर सके। आमीन- आमीन-आमीन।'

सरकार नही, तो जनता उठे और अत्याचार पीडित महिलाओ की रक्षा की जिम्मेदारी अपने सिर ले। कोई आततायी किसी अबला को सता कर बिना दड पाये न भाग सके।

डा० सत्यदेव, ३-ए/१२४, एन. आई. टी. फरीदाबाद

आर्यों में असुरों की पहचान—गीता के द्वारा

असौ मया हत: शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि। ईश्वरोऽहमह भोगी सिद्धोऽह बलवान्सुखी।

मैने सबको हराया, मै सबको हरा डालूगा, मै प्रभुता वाला हू। मै अपने मायाजाल से लोगो को अपने पक्ष मे कर लूगा। मै सम्पन्न हू। मै सिद्ध पुरुष हूं। मै ही सुखी हूं। मेरे से बलवान् बुद्धिमान् ससार मे या समाज मे कोई नहीं है ऐसे पुरुष समाज मे असुर हैं। ऐसे मनुष्य को आर्य कहना पाप होगा।

कर्मेन्द्रियाणि सयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचार: स उच्यते॥

जो घमडी मूढ व्यक्ति इन्द्रियो को ज्ञान से वश मे न करके बलात् वश में करके भीतर ही भीतर मन से इन्द्रियो के विषयो को ललचायी दृष्टि से स्मरण करता है, वह दुष्टाचारी कहलाता है। अर्थात् जो क्रोधी, लोभी, कामी, मोही, अहंकारी मनुष्य अपने मुखमडल को बलात् प्रसन्न तथा दयावान् रखने का ढोंग करता है किन्तु भीतर ही भीतर क्रोधादि विषयों को छिपाये रखता है तथा धार्मिक बन आर्य समाजी बनने का ढोंग करता है, वह दुष्टाचारी असुर प्रवृत्ति वाला मनुष्य है। ऐसा जानना चाहिए।

रघुनाथ आर्य, बेतिया (बिहार)

स्वदेशी आन्दोलन से ही नई गुलामी से बचा जा सकता है

❑ श्री अखिलेश आर्येन्दु

आज हमारा समाज स्वसस्कृति, स्वभाषा, स्वचिन्तन, कर्तव्यपरायणता, देशधर्म, पुरुषार्थ और सकल्पबद्ध उद्देश्य जो देशहित मे हो, सभी पतन की राह पर आगे बढते जा रहे है। धर्म, मत, मजहब, नए नए भगवानो के नाम पर, मुक्ति दिलाने के नाम पर, सही राह दिखाने के नाम पर (जबकि दिखाने वाले खुद ही भ्रमित अल्पज्ञ है) अनगिनत और सरकारी सस्थाए ऐन जी ओ कुकुरमुत्ते की तरह गली मुहल्लो मे उग आयी है, जो लोगो को भ्रमित कर अपने निहित स्वार्थ मे (धन, मान, प्रतिष्ठा, ऐश आराम, सुविधाए इकट्ठा करने मे) लगी है। इनमे अनेक धार्मिक, सामाजिक, सास्कृतिक सस्थाए ज्यादा है।

ऐसा ही समय आज से सवा सौ बरस पहले भी था, जब वेदोद्धारक, अखण्ड तेजस्वी, ब्रह्मचारी, तपस्वी, परम देशभक्त, युग निर्माता, युगाधार स्वामी दयानन्द ने सिहगर्जना की थी। एक तरफ धर्म के नाम पर व्यापार करने वाले भ्रष्टाचारी और देश, सस्कृति व समाज के दुश्मन थे, तो दूसरी तरफ महर्षि दयानन्द सूर्य के समान अधकार को समूल नाश करने के लिए डटे थे। महर्षि दयानन्द ने वेद, आर्यावर्त एव सस्कृति समाज के लिए तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए कितना, क्या किया, सभी आर्य भाई जानते है। महर्षि दयानन्द ने जो योजना सम्पूर्ण विश्व को स्वर्ग बनाने के लिए तैयार की थी, यदि कुछ बरस और जीवित रहते, तो उनकी योजना पूर्ण हो गई होती। आर्य समाज एव महर्षि दयानन्द ने देश को अग्रेजी पराधीनता से मुक्ति दिलाने सहित जितने भी कार्य किए उनका मूल्याकन न पूर्ण रूप से आर्य समाजियो ने किया और न पाश्चात्य देशो से प्रभावित भारतीय इतिहासकारो ने ही।

आजादी के बाद (सत्ता परिवर्तन कहना मुनासिब होगा) काग्रेस के हाथो मे (नेहरू वाली काग्रेस) जब सत्ता आई, उस समय आर्य समाज राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एव धार्मिक रूप से खुल कर अपना दायित्व एव कर्तव्य को निर्वाह कर (कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की भूमिका तैयार करने मे) सकता था, लेकिन ध्यान नहीं दिया गया। परिणाम सामने है। चौवन साल सत्ता परिवर्तन के बाद आज देश पुन नई बहुराष्ट्रीय गुलामी मे फसता जा रहा है। या कहे कि हम सास्कृतिक, आर्थिक एव भाषाई रूप से (मानसिक रूप से) गुलाम होते जा रहे है। और आर्य समाज और आर्य समाजी 'किं कर्तव्यविमूढता' की दशा मे पडा हुआ है। आज पूरे देश की जो बदतर हालत है, उससे ज्यादा हालत हमारी खराब है। कहने को तो देश भर मे तकरीबन ५००० आर्य समाजे है, लेकिन किसी भी समस्या या मुद्दे पर हमारी स्थिति मात्र मूक दर्शक की बन कर रह गई है। यानी

हालते जिस्म, सूरते जा और भी खराब
है सब जगह खराब, यहा और भी खराब।

हमने हर समस्या एव समाज या देश मे हो रही उथल पुथल से तटस्थता की नीति अपना ली है। हमारी स्थिति द्रौपदी के चीर हरण के समय पाडवो एव वहा बैठे सभी जिम्मेदार (बुजुर्ग— ज्ञान एव शरीर वृद्ध) जनो जैसी (भूमिका अदा कर रहे) हो गई है। यह तटस्थता जितनी आर्य समाज के लिए घातक है, उतनी ही देश, समाज, सस्कृति, भाषा, कला, संवाद एव मानव मूल्यो के लिए भी हो रही है। इसलिए आपसी मतभेदो, निहित स्वार्थो, धन, पद, मान, यश, लोलुपता एव कुर्सी दौड से ऊपर उठ कर वर्तमान समय की आवाज को सुनते हुए हम देश को पुन गुरुदेश बनाने मे जुट जाए और जो नई गुलामी आ रही है उसको काटने छाटने के लिए बलिदान देने के लिए एक बार फिर तैयार हो जाए।

हमारी दशा और दिशा

आज आर्य समाज की चर्चा न समाज मे होती है, न मीडिया मे और न मौजूदा इतिहास मे ही। इसकी तह मे जाए, तो जहा एक ओर हमारी अकर्मण्यता है, वही पर आपसी मतभेद एव स्वप्रतिष्ठा की अतिशय आकाक्षा। महर्षि द्वारा रोपित वट वृक्ष की यह हालत शायद महर्षि ने स्वप्न मे भी नही सोची होगी।

आज तकरीबन देश भर मे ५ हजार आर्य समाजे है और इन आर्य समाजो से सम्बन्ध रखने वाले लाखो आर्य समाजी यदि एक होकर सकल्प एव दृढ विश्वास के साथ नई उपनिवेशवादी गुलामी के विरुद्ध अपना सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, आर्थिक बल एव समय लगा दे, तो पाश्चात्य देशो से आ रहे कचरो से निजात पाई जा सकती है। कहना न होगा दूसरो को उपदेश देने वाले, सुधार करने वाले, वैदिक परम्परा का पोषण करने वाले, परोपकारी, चिन्तक आर्य भाई की दशा एवं दिशा दोनो पर चार आसू बहा कर अफसोस ही जताया जा सकता है।

आज ज्यादातर आर्य भाई व आर्य समाजी आर्य समाज मे अपनी ऊर्जा (धन, समय एव चिन्तन) न लगा कर (यदि लगा भी रहे है तो मात्र निहित मान, प्रतिष्ठा एवं स्वार्थ मे अधे हो कर) विभिन्न भ्रष्ट एव स्वार्थी मत-मतान्तरो, सगठनो एव सस्थाओ मे नष्ट कर रहे है। अनेक आर्य समाजी राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ, विश्व हिन्दू परिषद्, बजरग दल, गायत्री परिवार, सिखो द्वारा चलाए गए तमाम धार्मिक सस्थानो, आन्दोलनो एव स्वय सेवी सस्थाओ के सदस्य है और आर्य समाज मे भी सदस्य या पदाधिकारी हैं।

स्वदेशी आन्दोलन

विगत दस वर्षो से स्वदेशी को बढावा देने और बहुराष्ट्रीय कम्पनियो को भगाने के नाम पर 'स्वदेशी जागरण मच' (आर ऐस ऐस का) एव 'आजादी बचाओ आन्दोलन' देश मे चलाए जा रहे है। ये दोनो आन्दोलन पौराणिक मान्यताओ पर आधारित है। इन आन्दोलनो मे तमाम आर्यजन अपना कीमती समय, धन एव विचार लगा रहे है, जबकि स्वदेशी, स्वसस्कृति एव स्वभाषा के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। जो ऊर्जा इन सस्थाओ एव आन्दोलनो मे आर्य जनो की लग रही है, यदि वह आर्य समाज के सचालन मे चले स्वदेशी के आन्दोलन मे लगे, तो देश, समाज एव सस्कृति का भला तो होगा ही, आर्य समाज मे नई ऊर्जा, उत्साह, विचार, सकल्प, धारा एव स्फूर्ति का सचार होगा। इतिहास के पन्नो में नई गुलामी को तोडने का श्रेय भी आर्य समाज केहिस्से मे दर्ज किया जाएगा। आर्य समाज जो क्षीणता की राह पर बढ रहा है, उसमे नई चेतना, बुलन्दी, सकल्प, निष्ठा और सुबह जैसी ताजगी का समावेश होगा। यदि आप सच्चे मन, वाणी एव कर्म से देश सेवा, सस्कृति रक्षा एव वेद प्रचार करना चाहते है, महर्षि दयानन्द के सच्चे सिपाही एव विचारक है, स्वदेशी के प्रति अटूट निष्ठा है और यह मानते है कि आर्य समाज मे नई ऊर्जा का सचार हो, तो अपनी ताकत (स्वदेशी आन्दोलन के जरिए) आर्य समाज मे लगाइए। नही तो इतिहास के पन्नो मे यही लिखा जाएगा कि

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ है, समय लिखेगा उनका भी इतिहास॥

महर्षि दयानन्द के स्वदेशी चिन्तन को ही आगे बढ़ाने की जरूरत

दुनिया मे और भारत मे विगत दस वर्षो से भूमण्डलीकरण, उदारीकरण एव निजीकरण का सत्यनाशी खेल देश मे खेला जा रहा है। सरकार कह रही है इस विकास के माडल से देश पाश्चात्य देशो के साथ घुडदौड कर सकेगा यानी देश का सर्वागीण विकास इस माडल के अपनाने से होगा। लेकिन इस माडल को अपना कर मैक्सिको, वियतनाम सहित दुनिया के तमाम देश अपना सत्यानाश कर चुके है। आज इन देशो की दशा सबसे गरीब, बदहाल एव भिखारी देश के रूप मे हो गयी है।

महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण विश्व एव देश के विकास का जो वैदिक माडल दिया था, वही निरापद एव सम्पूर्ण विकास के लिए उपयुक्त है। स्वदेशी, सादगी, स्वावलम्बन, शाकाहार, सदाचार, स्वधर्म, भाषा एव स्वसस्कृति (वैदिक) को अपनाने से ही विकास हो सकता है। इस समय जरूरत है हम अपनी अपनी डफली अपना अपना राग अलापना बन्द करे एव स्वप्रतिष्ठा लेने तथा महर्षि के आर्य समाज का व्यापारीकरण होने से बचा कर पुन आर्य समाज द्वारा स्वदेशी, स्वसस्कृति, स्वभाषा के मुद्दे को ले कर आन्दोलन चलाए। यह समय की माग है। जो आन्दोलन स्वदेशी की स्थापना एव विदेशी कम्पनियो के विरोध मे चलाए जा रहे है, वे वैदिक परम्परा के पोषक नही, अपितु गाधीवाद एव हेडगेवार की चिन्तन परम्परा एव विचारधारा के अनुरूप है। आज जरूरत है 'सम्पूर्ण क्रान्ति' के लिए सकल्पबद्ध योजना एव आन्दोलन चलाने की। यदि आर्य समाज राष्ट्र को नई गुलामी से बचाने के लिए 'राष्ट्ररक्षा आन्दोलन' चलाए, तो देश पुन अपने गौरव को प्राप्त कर सकता है।

टी-३३, ग्रीन पार्क (मेन) नई दिल्ली-१६

हिन्दू संस्कृति से अनुराग

दिसम्बर २००१ के पहले सप्ताह मे विश्वविख्यात बीटल गायक जार्ज हैरिसन का इग्लैड मे निधन हो गया। उनकी आयु केवल ३८ वर्ष की थी और वह कैसर से ग्रस्त हो गये थे। उनका सम्पर्क अन्तरराष्ट्रीय श्रीकृष्ण चेतना आन्दोलन से था। उसमे प्रभावित हो कर श्री हैरिसन ने अपनी वसीयत मे लिखा कि उनकी अन्त्येष्टि हिन्दू रीति से शव दाह करके की जाये। इस बात को ले कर कोई खीचातानी न हो, इसलिए श्री हैरिसन के घनिष्ठ लोगो ने तुरत फुरत उनकी अन्त्येष्टि हिन्दू विधि से कर दी।

इतना ही नही, श्री हैरिसन यह इच्छा भी प्रकट कर गये कि उनकी अस्थिया गगा नदी मे प्रवाहित की जाये। अत उनकी भस्म गगा मे बहाने के लिए भारत लाई जायेगी।

श्री हैरिसन की २१ करोड ४० लाख पौड की सम्पत्ति मे से दसवा भाग अन्तरराष्ट्रीय कृष्ण चेतना सस्था को मिलेगा।

परिवार कैसे संगठित और सुखी रहे

❑ प्रतापसिंह शास्त्री, ऐम० ए०

वेदो के आधार पर ऋषियो ने मानव जीवन को चार आश्रमो मे (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास) बाटा है। वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य किसी भी मत-मतान्तर मे जीवन का यह वैज्ञानिक वर्गीकरण नही पाया जाता। यह वैदिक विचारधारा की महान् विशेषता है। यह जीवन मानो गणित का एक प्रश्न है, जिसमे इन आश्रमो के माध्यम से जोड व घटा, गुणा और भाग, चारो का ममन्वय पाया जाता है। यदि परिवार के सदस्य इस प्रश्न को समझ ले तो "परिवार कैसे सगठित और सुखी रहे" यह विषय सम्यक्तया समझ मे आ सकता है। ऋग्वेद मे एक मन्त्र है

इहैव स्त मा वि यौष्ट विश्वमायुर्व्यश्नुतम।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।

ऋ० १० ८५ ४२

वेद मन्त्र पति और पत्नी को आशीष दे रहा है "तुम दोनों यही रहो, तुम एक दूसरे से अलग न होवो, तुम दोनो सम्पूर्ण आयु को प्राप्त करो, अपने घर मे पुत्र पौत्र और नातियो के साथ खेलते हुए आनन्दपूर्ण (प्रसन्न) रहो।"

गृहस्थ मे सचित शक्तियो का व्यय

ब्रह्मचर्य आश्रम मे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियो को इकट्ठा किया जाता है। गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश करके इन सचित शक्तियो को गृहस्थ के विभिन्न कामो मे खर्च करना पडता है। वानप्रस्थ आश्रम मे खर्च की हुई शक्तियो को ब्रह्मचर्य (सयम से), स्वाध्याय, जप एव तप द्वारा गुणीभूत करता है और सन्यास आश्रम मे अपने सगृहीत ज्ञान विज्ञान एव अनुभव को समाज मे वितरित करने के लिए कृत सकल्प होना ही वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था का सक्षिप्त सार है।

गृहस्थ को अपनाकर ही मनुष्य जीवन मे सौन्दर्य एव निखार आता है। काम मनुष्य की एक प्रबल प्रवृत्ति है, जिसे आज के वैज्ञानिक साधनो टेलीविजन, वी० मी० आर०, इन्टरनैट, सत्सग व वैदिक शिक्षा के अभाव, वैदिक दृष्टि वाले मनोरजन के साधनो का अभाव आदि कारणो ने और अधिक प्रबलतर बना दिया है। किन्तु इस काम प्रवृत्ति का शोभन रूप गृहस्थ मे ही प्रकट होता है। यदि गृहस्थ आश्रम का विधान न होता, तो काम अपना भयकर एव बीभत्स रूप धारण करके समाज के सुन्दर एव स्वस्थ रूप को कुरूप बना देता। महर्षि दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" मे चतुर्थ समुल्लास केवल मात्र इसीलिए लिखा है ताकि इसे पढ कर इस पर आचरण करके आर्य परिवार अपने गृहस्थ जीवन को सुखी बना सके।

पति पत्नी प्रसन्न रहे

"सत्यार्थ प्रकाश" के चतुर्थ समुल्लास मे महर्षि दयानन्द 'स्त्री पुरुष परस्पर प्रसन्न रहे' इस विषय का वर्णन मनुस्मृति के **'सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता, भर्त्रा भार्या तथैव च'** आदि कई श्लोको द्वारा करते हुए कहते है "जिस परिवार मे पत्नी से पति और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहते है उसी परिवार मे सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते है। जहा कलह होता है वहा दौर्भाग्य और दारिद्र्य स्थिर होता है।"

वैदिक विवाह मे व्यक्तियो के साथ साथ सामाजिक पक्ष पर भी बल दिया जाता है। न पुरुष को अत्याचारी कहा जा सकता है, न स्त्री को उसकी दासी माना जा सकता है। व्यावहारिक जीवन मे कोई भी दम्पती ऐसे नही मिलेगे, जो प्रत्येक दृष्टि मे एक दूसरे मे मेल खाते हो। एक दूसरे की भावनाओ का सम्मान करते हुए समन्वय और सामजस्य के द्वारा ही दाम्पत्य जीवन सुखी हो सकता है। एक सामान्य लक्ष्य ही दोनो को जोडे रह सकता है।

विवाह धार्मिक सस्कार

वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार विवाह एक धार्मिक सस्कार है। जीवन पर्यन्त यह सम्बन्ध बना रहेगा। **'इहैव स्तम्'** विवाह यज्ञ मे विनियुक्त यह वेद मत्र विवाह के सुखी परिवार के उच्च आदर्श को दर्शाता है। पति पत्नी के सम्बन्ध विच्छेद का सर्वथा निषेध करता है। सभा मडप मे उपस्थित विद्वान् लोग इस सम्बन्ध के साक्षी है। हम दोनो स्वेच्छा से वृद्धावस्था तक एक दूसरे का साथ निभाने की प्रतिज्ञा करते है।

पाश्चात्य देशो मे पत्नी और पति के होते हुए भी पुरुष अन्य स्त्रियो के साथ ओर स्त्री अन्य पुरुषो के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित कर सकती है। वैदिक मान्यता के अनुसार यह निषिद्ध है। पाश्चात्य जगत् के विचारक भी अब इन रीतियो से क्षुब्ध है। मनु महाराज ने इस उच्छृखलता को रोकने के लिए यह प्रतिबन्ध रख दिया

"स्वदार निरत: सदा" (मनु ३/५०) मनुष्य को सदा "अपनी पत्नी मे ही प्रसन्न रहना चाहिए।"

गृहस्थ त्याग सिखाता है

गृहस्थ आश्रम मनुष्य मे त्याग की भावना लाता है। स्त्री के त्याग का तो कहना ही क्या है! वह तो त्याग की साक्षात् मूर्ति है। पत्नी गृहस्थ मे प्रवेश करते समय अपने माता पिता, भाइयो और बहिनो का त्याग करती है। साथ उस वातावरण का भी त्याग करती है, जिसमे उसका पालन पोषण हुआ है। गृहस्थ व्यक्ति यह ध्यान करता है कि परिवार मे उसके साथ पत्नी भी है, बच्चे भी है। सन्तान के लिए दोनो त्याग करते है। बच्चो की आवश्यकताओ का पहले ध्यान रखते है। जिन भारतीय परिवारो मे पाश्चात्य सभ्यता की हवाए जहा तहा प्रवेश कर रही है, वहा भी इकट्ठे मिल बैठ कर अभी तक खा रहे है। यह त्याग की भावना परिवार को सगठित और सुखी रखने का मूल मत्र है।

वैदिक परिवार गृहस्थ आश्रम के माध्यम से सम्बन्धो की स्थापना करता है। रिश्ते गृहस्थ आश्रम के ही परिणाम है। ये रिश्ते व्यक्ति के जीवन मे किस प्रकार शक्ति प्रदान करते है। इनसे परिवार सगठित होता है सुखी रहता है। यज्ञोपवीत, मुडन, विवाह आदि सस्कारो, किसी पर्व विशेष पर यज्ञ आदि के समय प्रसन्नता का वातावरण दर्शनीय होता है।

गाड़ी के दो पहिये

गृहस्थ की गाडी के पति और पत्नी दो पहिये है। जब दोनो पहिये सुचारु चलेगे, तो गृहस्थ रूपी गाडी ठीक ढग से चलेगी। दो शरीरो के मिलने का नाम गृहस्थ नही है, अपितु दो दिलो के मिलने का नाम गृहस्थ है।

परिवार सगठित रखना है तो "छल कपट" का प्रवेश किसी भी बात मे न होने दे। मद्यपान, जूआ आदि भी परिवार को तोडते है। क्रोध भी पति पत्नी के सम्बन्ध को बिगाडता है। इसका त्याग करके मधुर बोलने का, धैर्य रखने का, स्वभाव बनाये। लोभ और अहकार, ईर्ष्या और द्वेष छोड कर प्रसन्न रहने का स्वभाव बनाए। परिवार को सगठित और सुखी रखने के लिए मिथ्या अहकार त्याग कर विनम्रता धारण करनी चाहिए।

दूसरे के दृष्टिकोण को समझे

एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझना भी परिवार को सगठित रखने का अटूट साधन है। पति पत्नी को, सास और बहू को एक दूसरे का आदर सम्मान करना चाहिए।

धन कमाना आवश्यक

परिवार सुख का एक महत्वपूर्ण आधार है—अर्थोपार्जन के पवित्र साधन जुटाना। वैदिक धर्म की आश्रम मर्यादा के अनुसार केवल गृहस्थ ही धनं कमाता है, शेष तीन आश्रम नहीं। धन कमाने के साधन निर्दोष हो। प्राय सासो मे पुत्र वधुओ के प्रति प्रेम का अभाव होता है। वे अपनी बेटियो के प्रति जैसा स्नेह भाव दिखाती है, वैसा ही वे अपनी पुत्रवधुओ के प्रति नहीं दिखाती। तब पुत्रवधुओ मे सास के लिए श्रद्धाभाव कैसे उत्पन्न होगा? बुद्धिमान सास श्वसुर वही है, जो अपनी बेटियो से भी अधिक पुत्रवधुओ को सम्मान व प्रेमभाव प्रदान करते है।

टोका टाकी से बचें

माता पिता और सास-श्वसुर के टोकने की आदत भी कलह का कारण है। छोटे त्रुटिया करते है और बडे व्यक्ति टोकते है। इस टोका टाकी से ही परिवार मे झगडे होते है। विवाहित बच्चो को कम से कम टोके, अपने पुत्र व पुत्रवधू की कमिया दूसरो के सामने न कहे और सेवा की आशाए कम रखे। नई पीढी को चाहिए कि माता पिता के अनुभव से लाभ प्राप्त करे। माता पिता की सेवा अवश्य करे।

मनुष्य दुःखी क्यो होता है? इसका एक कारण तो यह है कि उसे जो कुछ जीवन मे मिला है, उसकी नज़र उस पर कम जाती है और जो नही मिला है उस पर उसकी दृष्टि बार बार जाती है। सन्तुष्ट होना सबसे बडा सुख है। परिवार को सगठित रख सके और सुखी बना सके इसके लिए परिवार मे परम्परा डाले, **"इदन्न मम"** भावना से परिवार मे रहे। **"सगच्छध्व सवदध्व सवो मनासि जानताम्"** वेदोपदेश से परिवार मे सौहार्द बना रहे।

२५, गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार
(हरियाणा)

शोक समाचार

श्री सत्यानन्द मुंजाल जी की सुपुत्री का देहावसान

आर्य जनों को यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि आर्य समाज के प्रसिद्ध समाजसेवी एव उद्योगपति श्री सत्यानन्द मुजाल, ऐल-२४, माडल टाउन, लुधियाना की सुपुत्री श्रीमती सुषमा चोपडा धर्मपत्नी श्री जितेन्द्र चोपडा का रविवार दिनाक ४ ११ २००१ को लम्बी बीमारी के उपरान्त स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु केवल ५५ वर्ष थी और कुछ समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नही चल रहा था। उनकी अन्त्येष्टि उसी दिन वैदिक रीति से लुधियाना मे की गई और रविवार दिनाक ११ ११ २००१ को साय ३ बजे से ५ बजे तक आर्य सीनियर सैकेडरी स्कूल के प्रागण मे अन्तिम शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमे आर्य समाज, आर्य समाज से सम्बन्धित सस्थाओ जैसे गुरुकुल, डी० ए० वी० विद्यालय तथा अन्य समाजसेवी सस्थाओ के हजारो व्यक्तियो ने भाग ले कर श्रीमती सुषमा चोपडा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके साथ ही विभिन्न सस्थाओ से प्राप्त शोक सदेश पढकर सुनाये गये।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्राप्त हो और मुजाल परिवार एवं चोपडा परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

स्वस्थ कैसे रहें?

बहुत बार लोग आ कर गठिया, दमा, बवासीर, मधुमेह जैसी बीमारियो का इलाज पूछते है। इन रोगो का इलाज होना कठिन होता है। जो दवाइया दी जाती है, उनसे लक्षण कुछ समय के लिए दब जाते है, रोग दूर नहीं होता।

इस लेख मे हम केवल यह बता रहे है कि इन सभी कष्टदायक रोगो से बचा किस प्रकार जा सकता है। कपडा फटने के बाद सिया जाये, इससे अच्छा यह है कि इतनी सावधानी बरती जाये कि कपड़ा फटे ही नही। रोग का पहले से निवारण चिकित्सा की अपेक्षा सदा ही भला है।

प्राकृतिक चिकित्सको का एक सुन्दर सिद्धान्त है सब लोगो को एक ही रोग है, और उसकी एक ही चिकित्सा है। इसका आशय यह है कि दमा, गठिया, मधुमेह आदि रोग एक ही मूल कारण से उत्पन्न होते है, और उनका शमन भी एक चिकित्सा से हो जाता है।

रोग का एक ही कारण

रोग का एक ही कारण यह है कि अनेक कारणो से लोगो की पाचन क्रिया गडबडा जाती है। इस कारण खाया हुआ भोजन पचता नही। जब तक खाया हुआ भोजन पच न जाये, तब तक भूख नही लगती। परन्तु लोग आदतवश, या किन्ही विवशताओ के कारण बिना भूख के भी भोजन कर लेते है। जब पिछला ही अन्न पचा नही है, तब यह नया खाया हुआ कैसे पचेगा? स्थिति बिगडती जाती है। पर लोग खाये जाते है। बिना भूख खाये जाते है। जब शरीर और अधिक बोझ उठाने मे असमर्थ हो जाता है, तब वह खतरे की घटी बजा देता है। बुखार, पेटदर्द, सिरदर्द, दस्त, कुछ भी हो जाता है। बीमारी खतरे की घटी है अब भी न सभले, तो मृत्यु हो सकती है।

अधिकाश बीमारियो मे भूख बिल्कुल समाप्त हो जाती है। रोगी कुछ खाना नही चाहता। वह पड़े रह कर विश्राम करना चाहता है। यदि रोग हो जाने पर एक दो दिन कुछ न खा कर, केवल पानी पी कर लेटे रह कर विश्राम कर लिया जाये, तो अधिकांश रोग स्वय ठीक हो जाते हैं। आयुर्वेद में इसे 'लघन' (उपवास) कहते है। 'लघन परममौषधम्' (उपवास सबसे बडी दवाई है।)

परन्तु डाक्टर और वैद्य कहते है कि भूखे रहने से कमजोरी आ जायेगी, इसलिए कुछ न कुछ खाते रहो, हल्का सुपच भोजन करो। सही बात यह है कि जब तक भूख न लगे, तब तक कुछ नहीं खाना चाहिए। जब अन्दर पिछला इकट्ठा हुआ अनपचा भोजन निपटा दिया जायेगा, तब भूख अवश्य लगेगी।

भूख लगने पर क्या खाये?

अगली बात यह है कि हमने अपनी खाने की आदते बिगाड ली है। खाने के लिए प्रकृति ने फल, सब्जिया, मेवे, दूध, शहद और अनाज बनाये है। सबसे अच्छा भोजन तो फल और सब्जिया है। दूध और शहद भी सुपच और पौष्टिक भोजन है।

फल और सब्जिया इतने सुपच भोजन है कि खाने के घटे भर बाद ही फिर भूख लग आती है। आदमी बन्दर और हाथी की तरह सारा समय तो खाने मे नही बिता सकता। उसे काम करना होता है। इसलिए उसने रोटी बनाई। रोटी खाने से चार छह घटे कुछ और खाने की आवश्यकता नही होती।

जब अनाज को पीस कर पकाने की विद्या शुरू हुई, तब पूरा पाक शास्त्र ही बन गया। तरह तरह के स्वादिष्ट भोजन बनने लगे, पकवान और मिठाइया ये सभी भोजन दुष्पच होते है और स्वादिष्ट होने के कारण आवश्यकता से अधिक खाये जाते है। तले, भुने, मसालेदार भोजनो से बचना ही भला है।

क्षारीय और अम्लीय भोजन

आटा, दाले, चीनी और चिकनाई, ये रक्त मे अम्लता बढाती है। इसके विपरीत फल और सब्जिया रक्त को क्षारीय बनाती है। रक्त क्षारीय रहना चाहिए। अम्लता बढने से अनेक कष्ट होते है।

भोजन इतना करना चाहिए कि कुछ भूख बची रहे। वे लोग सुखी है, जिन्हे भरपेट खाने को नही मिलता।

पानी दिन मे कम से कम दो लिटर (आठ गिलास) पीना ही चाहिए। इससे शरीर का बहुत विषैला तत्व मूत्र तथा पसीने के मार्ग से बाहर निकल जाता है। पर्याप्त पानी पीने से कब्ज भी नहीं होती।

व्यायाम

भोजन और पानी के बाद आवश्यक है व्यायाम। सभी स्वस्थ प्राणी खेलकूद, भाग दौड पसन्द करते है। स्वस्थ व्यक्ति भी खेलते कूदते है और उनकी व्यायाम हो जाती है। पर अधिकाश किसान, मजदूर और क्लर्क ऐसे कामो मे लगे होते है कि पूरी व्यायाम नहीं होती। श्रम व्यायाम नही है।

व्यायाम से सब अगो मे रक्त का सचार सही हो जाता है। सास तेज चलता है, तो फेफडो मे वायु पूरी पहुचती है और रक्त शुद्ध होता है। जिन लोगो को खेल और व्यायाम की सुविधा नहीं है, वे आसनो और प्राणायाम से भी काम चला सकते है।

धूप स्नान

भोजन मे पृथ्वी तत्व है, जल मे जल तत्व है, वायु मे वायु तत्व है। अग्नि तत्व हमे सूर्य की धूप से प्राप्त होता है। कपडे पहनने की आदत डाल कर हमने स्वय को सूर्य की धूप से वचित कर लिया है। प्रतिदिन कुछ समय (आधा घटे) कपडे उतार कर धूप मे बैठने से भी जीवनी शक्ति बढती है।

खुला आकाश

आकाश तत्व इन सबसे महत्वपूर्ण है। जितना समय मनुष्य खुले आकाश के तले बिता सके, उतना स्वास्थ्य के लिए हितकर है। रात को खुले आकाश के तले सोना लाभकारी है। अवश्य ही इसमे मौसम का ध्यान रखना होगा।

उचित नीद बहुत आवश्यक

पाचो तत्वो की सहायता के अलावा उचित विश्राम भी मनुष्य के लिए आवश्यक है। दिनभर दौड धूप और परिश्रम के बाद उसे यथेष्ट विश्राम भी मिलना चाहिए। यह विश्राम नीद से मिलता है। इसलिए स्वस्थ रहने के इच्छुक मनुष्य को आठ घटे सोना ही चाहिए। धन कमाने के लोभ मे बहुत लोग भोजन और नीद की उपेक्षा कर देते है। भोजन और शयन समय पर होना ही चाहिए, नही होगा, तो कई गुनी कीमत चुकानी पडेगी। सूर्योदय से पहले नीद पूरी करके उठ जाना चाहिए।

जीविका के लिए परिश्रम हर व्यक्ति को करना ही चाहिए। जिन्हे बुद्धि बल से बैठे बिठाये धन प्राप्त हो जाता है, उन्हे भी स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक परिश्रम करना लाभदायक होगा।

यदि उचित भोजन, यथेष्ट जल, स्वच्छ वायु, खेल कूद, व्यायाम, उचित निन्दा और समय पर (सूर्योदय से पूर्व) जागने का व्यक्ति नियम बना ले, तो वह रोगो से बचा रह सकेगा।

(पृष्ठ ३ का शेष)

जिहाद! जिहाद!

तथा उत्तरी गठबधन का विशेष कोप था और अधिक सम्भावना यह है कि इनमे से अधिकाश मारे जा चुके है या मार दिये जायेगे। पराजित हो कर घर लौटने का कलक उनके सिर न लगेगा।

भारत की ओर रुख

अफगानिस्तान मे हार कर हजारो तालिबान पाकिस्तान मे आ घुसे है और पाकिस्तान उन्हे कश्मीर मे उपद्रव करने के लिए भेज रहा है। निश्चय ही यह सब अमेरिका के जानते बूझते हो रहा है। पाकिस्तान के साथ अमेरिका का क्या सम्बन्ध बनता है, यह अभी देखना है। आतकवादी देश होने के काण अमेरिका उसका दमन करता है, या 'आतकवाद के विरुद्ध' केवल एक दिखावटी नारा था, जिसका उद्देश्य अफगानिस्तान मे से ओसामा को पकडना मात्र था। शेष दुनिया के आतकवाद से अमेरिका को कुछ लेना देना नही?

अफगानिस्तान के युद्ध मे अमेरिका ने अपने नये शस्त्रास्त्रो की परख कर ली। अपने देश से हजारो मील दूर अपने विमानवाहक जहाजो द्वारा विमान और सैनिक भेज कर उसने तालिबान जिहादियो का भुर्ता बना दिया।

परन्तु भारतवासियो के लिए यह बुरी खबर है कि अमेरिकी सेना ने पाकिस्तान और अफगानिस्तान मे डेरा डाल दिया है और अब वह वहा से कब वापस लौटती है यह उसकी इच्छा पर निर्भर है। वह पाक भारत सम्बन्धो पर अपना प्रभाव और दबाव डाल सकती है। उसका हिन्द उपमहाद्वीप मे न रहना ही भला है।

परमाणु बम का खतरा

एक सकट पाकिस्तानी परमाणु बम का भी है। भय यह है कि कही उग्रपन्थी इस्लामी दल परमाणु शस्त्रो पर कब्जा करके उन्हे अन्तरराष्ट्रीय आतकवादियो को न दे दे। अखबारो मे खबरे छप रही है कि अफगानिस्तान के बाद अमेरिका ईराक पर हमले का इरादा कर रहा है। यदि ईराक पर हमला होता है, तो पाकिस्तान के उग्रपथी इस्लामी दल फिर जोर पकड सकते है। पाकिस्तानी सेना ही बेकाबू हो जा सकती है। पडोसी होने के कारण उसका सबसे विकट परिणाम भारत को भुगतना पड सकता है।

इतने बडे सकट का सामना करने के लिए हमारी तैयारी नाम को भी नही है।

स्थितप्रज्ञ मुनि

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥

दु ख आ पडने पर जिसका मन बेचैन न होता हो और सुख पाने की जिसे लालसा न हो, जिसे न किसी से अनुराग हो, न किसी से भय हो, न किसी पर क्रोध हो, वह स्थितप्रज्ञ मुनि कहलाता है।

जब चित्त की ऐसी अवस्था आ जाये कि दु ख कष्टदायक न लगे और सुख पाने की चाह जाती रहे, तब मनुष्य मुनि बन जाता है। न उमे भय होता है, न क्रोध, न प्रेम। —*गीता*

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य समाज धर्म ही नहीं ....

उन्होने कानून मे जनता पर शासन करने का ठेका जो ले रखा है। चुनाव के समय एक दूसरे का विरोध करने वाले अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए आपस मे हाथ मिला लेते है और जनता देखती ही रह जाती है। वे जनता की कीमत पर मिल कर शासन सूत्र सम्भाल लेते है और मनमाने ढग से जनता पर टैक्स बढा कर और कानून का सहारा लेकर अपने स्वार्थ सिद्ध करने का इन्तजाम करते है। उदाहरणार्थ, महाराष्ट्र मे जनता ने शिवसेना बीजेपी को बहुमत मे नही आने दिया, साथ ही काग्रेस और राष्ट्रवादी काग्रेस को भी बहुमत मे नही आने दिया। पर मजेदार बात यह कि दोनो विरोधियो— काग्रेस और राष्ट्रवादी काग्रेस ने एक दूसरे के विरोध मे चुनाव लडने के बावजूद जनता की कीमत पर हाथ मिला लिये। मत्रियो की सख्या बढी, टैक्स बढे, क्योकि मत्रियो का भरण पोषण होना जरूरी है। ऐसी स्थिति मे जनता का सरकार बनाने का अधिकार कहा रहा? सरकार कैसे भी बनाओ, पर १० प्रतिशत मिनिस्टर का फार्मूला कायम रहना चाहिए।

बिहार की दुर्दशा

ऐसी ही हालत बिहार मे हुई। किसी को बहुमत नही मिला। वहा भी दोनो (एक दूसरे के विरोध मे चुनाव लडने वाली) काग्रेस और लालूप्रसाद यादव की राजद ने हाथ मिलाया जनता के शोषण के लिए, जो चालू है। बडे आकार का मत्रिमडल बना, उसी का भरण पोषण बिहार की आमदनी के साथ साथ केन्द्रीय सहायता राशि से किसी तरह से हो रहा है। विकास के सारे कामकाज ठप्प है, अध्यापको को वेतन नही, सडको की मरम्मत नही, सरकारी खजाने मे पैसा बचता ही नही, अब जनता करे, तो क्या करे? यही विचारणीय प्रश्न है। कुछ दिन पहले श्री नितीश कुमार प्रधानमत्री जी से मिले कि बिहार की सहायता बढा दी जाये, ताकि बडे मत्रिमडल का पोषण हो सके। क्या बिहार के बटवारे से पहले बिहार की हालत अच्छी थी, जो अब बिगड गई? केन्द्र को कोई सहायता राशि नहीं बढानी चाहिए, जब तक उसका उपयोग जनहित मे नही होता। साथ ही बिहार मे लालूप्रसाद ने जो द्विष वपन अगडे पिछडे का कर रखा है, उसके कारण आये दिन हत्याओ का सिलसिला जारी रहेगा, क्योकि वहा पर राष्ट्रपति शासन लागू नही किया जा सकता, क्योकि लालू के पीछे काग्रेस खडी है।

केन्द्र का भी वही हाल

केन्द्र की हालत भी कुछ ऐसी ही है। चुनाव मिल कर लडा, फिर उस मेल मिलाप का लाभ सभी घटक दल अपने अपने अनुपात से अधिक मत्री बनवा कर ले रहे है। खर्च घटाने की बात की जाती है, परन्तु मत्री घटाने की कोई योजना नही। गुजरात की भूकम्प समस्या से निपटने के लिए नये नये टैक्स लगाने की योजना है, परन्तु मत्री कम करने की कोई योजना नही, जिसे होना ही चाहिए, अगर सकट मे बचना है। सरकारी खर्चे कैसे कम होगे? हम बचन कैसे कर सकेगे?

भूखो की साक्षरता और प्रौढ शिक्षा

आजकल की तथाकथित सरकारे प्रचार पर अत्यधिक खर्च करती है। पर नतीजा, 'खोदा पहाड और निकली चुहिया' वाली कहावत चरितार्थ होती है। ऐसा ही काम सरकारी अफसर दिखावे के लिए करना पसन्द करते है, जिसमे उनका कमीशन निश्चित हो सकने की गुजायश हो। उदाहरण के लिए प्रौढ शिक्षा और प्राइमरी शिक्षण पर जोर देने की बात चल रही है। परन्तु कही ऐसी व्यवस्था नही की जा रही है कि जिससे लोगो की भूख मिटाई जा सके और हमारे देश मे कोई भूखा न रहे। आज समय की आवश्यकता जनता की भूख मिटाने की है, बच्चो और बूढो के शिक्षण की व्यवस्था करना कोई मायने नही रखता। अगर जनता का पेट भरा न होगा तो कोई अपने बच्चो के शिक्षण की आवश्यकता को सोच ही नही सकता। जब तक घर मे पेट भरने की व्यवस्था न होगी, कोई बच्चा या बूढा अगर जबरन लालच देकर स्कूल भेजा भी गया, तो ज्यादा दिन तक न जा सकेगा।

नगों को शिक्षा

पिछले दिनो नलिनीसिह (आखो देखी की प्रोड्यूसर) ने बिहार का दौरा किया। उसके अन्वेषक वृत्तात को पढ कर हम अपने को धिक्कार करने के सिवाय क्या कर सकते है? जबकि आज ५४ वर्ष आजादी मिले हो गये, परन्तु ऐसी स्वार्थी सरकारो का क्या उपयोग जो अपने स्वार्थ के सिवाय कुछ और नही देख सकती? श्रीमती नलिनीसिह का अन्वेषक वृत्तात, जो टाइम्स आफ इडिया मुम्बई सस्करण दिनाक १६ जुलाई २००० मे १४ पृष्ठ पर छपा था "राजद्रोह होने की इन्तजारी मे" का एक अश यहा दे रहे है। "बिहार की नारी जाति को सर्वप्रथम अपने जिन्दा रहने के बारे मे सोचना है फिर बदल के लिए सोचना है। मै ऐसी स्त्रियो के सम्पर्क मे आई जिनके पास अपने तन ढकने के लिए पेपर के सिवाय कुछ नही था—इलैक्शन का पोस्टर, समाचार पत्र, पेपर का पैकेट जैसी कोई वस्तु जो उनके गुप्तागो को ढक सके। मेरी एक अन्वेषक भेट के दौरान मै एक गाव मे गई। सिर्फ साडी मे लिपटी पेटीकोट ब्लाऊज के बिना एक स्त्री जो मुझे मिलने आई थी (गरीबी ने उन्हे पेटीकोट के बिना साडी पहनने के तरीकों का आविष्कार करवा दिया), मुझे अपनी सास से मिलाने की इच्छुक थी। मैने पूछा कि वह अपनी सास को साथ मे ले कर क्यो नहीं आई?" उसने कहा "हमारे पास कपडे का एक टुकडा मात्र यह साडी है। मै वापस जब जाऊगी, तो वह इसी साडी को पहन कर आपको मिल सकेगी।" मुझे उसके कहने पर विश्वास नही हुआ। अभी वह क्या पहने हुए है? मैने पूछा। "कागज, उसने जबाव दिया।

देश के हर राज्य में गरीब वर्ग है

बिहार का उदाहरण लगभग सारे देश पर लागू समझा जा सकता है। सारे समाज के एक हिस्से की हालत बिहार जैसी है। देश के तथाकथित शासको ने कभी इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता ही नही समझी। बेकारी, गरीबी और भूख के कारण ही देश मे हत्याओ लूटपाट के साथ माफिया का राज धडल्ले के साथ चल रहा है। इस दुर्दशा को बदलने के लिए सर्व प्रथम भूख मिटाने की व्यवस्था की जानी आवश्यक ही नही, प्रथम प्राथमिकता से उससे निपटना जरूरी है, क्योकि **"बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्"** (भूखा क्या पाप नही करेगा)? देखिए, कैसी विडम्बना है कि कार, घर के लिए कम से कम दर पर कर्ज सब ओर से मिल सकता है, परन्तु जिससे लोगो को रोटी मिल सकती है, उसके लिए कर्ज लेने के लिए बहुत कठिनाइयो का सामना करना पडता है। इस दिशा मे व्यवस्था होनी ज़रूरी है। दूसरी आवश्यकता स्वास्थ्य रक्षण की है। बडे बडे अस्पताल बन रहे है परन्तु सफाई और पर्यावरण सुधारने की ओर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। इस ओर ध्यान देना बहुत ही जरूरी है क्योकि स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मन काम कर सकता है।

दान नही, काम दो

प्रधानमत्री जी ने अभी हाल ही मे अपने जन्म दिन पर अत्यन्त गरीब लोगो को दो रुपये किलो गेहू और तीन रुपये किलो चावल देने की घोषणा की है परन्तु यह विचारणीय प्रश्न है कि जिसके पास यह दो-तीन रुपये की व्यवस्था न होगी, वह क्या करे? लोगो की भूख मिटाने के लिए उन्हे काम देना आवश्यक है। बिना काम के मुफ्त खाना देना नही चाहिए, क्योकि उससे अकर्मण्यता बढेगी। जो अनाज गोडाउनो मे सड रहा है, उसको सडने के बजाय भूख मिटाने मे लगाना चाहिए। देश मे काम बहुत पडे है, उन पर लोगो को लगा देना होगा। समस्या केवल व्यवस्था की है बुद्धिमानी से उसे करना कोई कठिन काम नही है। पिछले दिनो प्रधानमत्री जी ने घोषणा की कि सन् २००७ तक देश को भुखमरी से छुटकारा दिलाया जायेगा। यह कार्य यदि सच्चे सकल्प से किया जाय, तो एक दो महीने मे ही यह कार्य पूरा हो सकता है। आवश्यकता है दृढ सकल्प की।

दो महा सकट

आज देश के सामने दो प्रकार के भयकर सकट उपस्थित हो गये है। एक— हमारा पडोसी देश पाकिस्तान परमाणु बम से सुसज्जित है। उसका शासन इन्सानो के हाथो मे नही है। कभी भी ये सिरफिरे हमारे ऊपर ऐटम बम गिरा कर हमे तबाह करके खुद भी तबाह हो सकते है। दूसरी ओर सरकारी कहे जाने वाले कर्मचारी कामचोरी करके अपनी मनमानी मागो को मनवा लेते है। ये लोग काम करना ही नही चाहते, इसलिए निजीकरण का विरोध करते है। सरकार के सामने उनकी मागो को मानने के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता, क्योकि उसके लिए दो ही बातें है या तो मागे स्वीकार कर लो या सरकार का पतन होने दो। स्वार्थी शासक अपने स्वार्थ के लिए सरकारी कर्मचारियो की नाजायज मागे मान कर अपनी स्वार्थसिद्धि करने मे ही अपना जीवन सार्थक समझ लेते है। कर्मचारियो के साथ न्याय होना चाहिए, परन्तु कर्मचारियो को भी अपने कर्तव्य को अजाम देना चाहिए।

कारगिल की स्थिति फौज की अकर्मण्यता का परिणाम थी। कितनी हानि हुई, सभी जानते है। सरकार फौज को दोषी करार न देकर चुप हो कर रह गई। उसी अकर्मण्यता की कडी मे भरतपुर डिपो मे आग सुबह साढे तीन बजे लगी, कानपुर डिपो मे आग लगी, पूना के पास खडकी मे आग लगी। ऐसा सुनने मे आया है कि ये आगे जानबूझ कर लगाई जाती है, ताकि चोरी छुपे जो हथियार डिपो से चले जाते है, उनका हिसाब बराबर रहे।

अभी अभी देहली के लाल किले के अन्दर फौजी छावनी मे घुस कर आतकवादी फौजियो को मार कर फरार हो गये। ये सब घटनाए सतर्कता के अभाव के ही कारण हुई, जो किसी समय देश को बहुत ही महगी पड सकती है। देश के माहौल को देख कर ही फौज भी अपना कार्य करती है। जब देश मे अकर्मण्य, अय्याश शासक होते है, तब ऐसे ही होता है। फौज को सदा अपने कर्तव्य की याद दिलाते रहना आवश्यक है। इसकी व्यवस्था होनी आवश्यक है। देश के हित मे सेना को जहा बलिदान के लिए तैयार होने की आवश्यकता है, उसके साथ उसमे देशभक्ति भी कूट कूट कर भरी होनी आवश्यक है।

कृषि ही नही उद्योग भी

देश की अर्थ व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त करने के लिए केवल कृषि पर सब भार देना कतई ठीक नही। जिस वस्तु पर 'मेड इन इण्डिया' की छाप लगी हो उसे भी विशेष उत्तम दर्जे का होना आवश्यक है। आज भारत के बाजार मे चीन, जापान, ताइवान छाये जा रहे है क्योकि उनकी वस्तुए आकर्षक और कम कीमत मे उपलब्ध होती है। व्यापारी ज्यादा लाभ कमाने के लिए विदेशी वस्तुए रखने को प्राथमिकता देते है। इस दिशा मे कार्य करने की बडी आवश्यकता है, नही तो जिस प्रकार भारत टी वी बनाने के क्षेत्र मे बाहर सा हो गया है, वैसे ही अन्य वस्तुओ के बाजार से भी गायब हो जायेगा। वस्तु निर्माताओ मे राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का ध्यान होना जरूरी है जिससे वे ईमानदारी के साथ गुणवत्ता वाली वस्तुए बना कर देश का गौरव बढा सकते है। इस दिशा मे सरकार को निर्माताओ को हर सम्भव सुविधा देने के लिए तैयार रहना होगा जो अत्यन्त आवश्यक है।

देश को स्वतत्र हुए ५४ वर्ष बीत चुके है, परन्तु आज बाढ नियत्रण, सूखा निवारण, गगा कावेरी प्रोजेक्ट, जल ससाधनो के दोहन का प्रबन्धन आदि (जो हमारी अर्थव्यवस्था सुधारने के लिए परम आवश्यक है) जैसी समस्याओ का समाधान स्वार्थी सरकारो के कारण नहीं हो सका है। टी वी पर जनसख्या वृद्धि दिखा कर सरकार समाधान करना चाहती है, जो हास्यास्पद है। उसके लिए तो ठोस कदम उठाने की आवश्यकता होती है। अत इन समस्याओ के समाधान की तुरन्त व्यवस्था की जानी आवश्यक है। अगर केन्द्र बाध के कारण विस्थापितो के पुनर्वसन का कार्य अपने हाथ मे ले ले, तो नर्मदा आदि बाधो का कार्य अपनी समय सीमा मे पूर्ण हो जायेगा। इस कार्य को प्रान्तीय सरकारो का कार्य बता कर केन्द्र अपने दायित्व से नहीं बच सकता। देश को आगे ले जाना है तो इन समस्याओं का समाधान समय पर होना जरूरी है।

अपराधीकरण और भ्रष्टाचार निवारण के लिए सारे देश मे राष्ट्रपति शासन लगा कर विशेष अदालते स्थापित कर राजनीति को शुद्ध करना परमावश्यक है। जब तक सफाई का काम चालू रहे तब तक देश मे छोटी सी राष्ट्रीय सरकार सच्चरित्र और बुद्धिमान लोगो की काम करे।

१४०, साने गुरुजी मार्ग, मुम्बई-४०००११

समाचार जगत्

श्रीमती करनवाई डी० ए० वी० सेन्टीनरी पब्लिक स्कूल, फाजिल्का में यज्ञशाला का शिलान्यास

२८ ११ २००१ को प्रात काल उपरोक्त विद्यालय के चेयरमैन श्री नागपाल जी द्वारा दिये गये ५१,००० रुपये दान के उपलक्ष्य मे विद्यालय के प्रागण मे भव्य यज्ञशाला की आधारशिला विधिवत् रखी गई। इस समारोह मे आर्य समाज फाजिल्का और अन्य सामाजिक सस्थाओ के नागरिक सम्मिलित हुए।

विद्यालय के छात्र-छात्राओ, स्टाफ, पूर्व प्रि० श्री आर० ऐल० सचदेवा की उपस्थिति मे वर्तमान रीजनल डायरेक्टर श्री के० ऐल० मनुजा जी की अध्यक्षता मे शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमे मुख्य अतिथि के रूप मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सहमत्री श्री हरवशलाल कपूर को आमत्रित किया गया था। उन्होंने सारगर्भित प्रवचन दिया और श्री नागपाल जी का आभार व्यक्त करते हुए अन्य डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ मे भी यज्ञशालाओ के निर्माण का आह्वान किया।

डी० ए० वी० सैन्टीनरी कालेज, जलालाबाद के प्रिसिपल डा० बी० सी० जोसन, डी० ए० वी० सैन्टीनरी पब्लिक स्कूल—आर्य अनाथालय फीरोजपुर कैट की प्रिसिपल श्रीमती वीना शर्मा, डी० ए० वी० कालेज फीरोजपुर की प्रिसिपल श्रीमती सतनाम कौर एव डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, मलोट के प्रिसिपल श्री प्रभाकर भी इस कार्यक्रम मे उपस्थित थे। डी० ए० वी० कालेज फार वूमेन फीरोजपुर कैट मे भी यज्ञशाला का निर्माण एक वर्ष पूर्व हुआ था। बाकी प्रिसिपलो ने भी अपने अपने विद्यालय मे यज्ञशाला के निर्माण का सकल्प लिया।

इस यज्ञशाला के निर्माण के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा कार्यालय दिल्ली से लाया हुआ बिल्डिग प्लान प्रिसिपल श्रीमती राज सचदेवा को दिया गया और सभा प्रधान पद्मश्री ज्ञानप्रकाश जी चोपडा एव महामत्री श्री प्रबोध महाजन जी की ओर से शुभकामनाओ का सदेश दिया।

फरीदाबाद आर्य समाज नं० ३ की स्वर्ण जयन्ती

ईश कृपा मे २२ ११ २००१ से २५ ११ २००१ तक आर्य समाज न० ३ का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया है। इसमे दिनाक २२ ११ २००१ को महिला आर्य महासम्मेलन हुआ, जिसमे परोपकारिणी सभा के महामत्री प्रो० धर्मवीर जी ने पति पत्नी मे सखा भाव जैसी समानता को वैदिक सशक्तिकरण बताया। श्री सुरेशकुमार शास्त्री ने नारी की महत्ता को वैदिक ऋचाओ से सिद्ध किया। इसका सफल सचालन श्रीमती राजकरणी अरोडा ने किया तथा डा० सत्यदेव प्रधान ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

२३ ११ २००१ को डा० धर्मवीर ने धर्म को सरलतम तथा सुखतम बताते हुए वैदिक धर्म (मानव धर्म) को सार्वभौमिक, शाश्वत तथा अपरिहार्य अग बताया।

२४ ११ २००१ को प्रात युवा सम्मेलन मे आर्यवीर दल, आर्य युवक परिषद्, स्कूल तथा कालेजो के नवयुवको को आचार्य आर्य नरेश जी ने ध्वजारोहण करते हुए मानवता की सेवा करने का सकल्प दिलाया। श्री रामचन्द्र वैद्य जी ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे रचनात्मक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया। २५ ११ २००१ को १०१ यज्ञकुडो पर यज्ञ दशहरा मैदान मे हजारो श्रद्धालुओ द्वारा प्राणीमात्र के उपकारार्थ आचार्या अन्नपूर्णा जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् राष्ट्ररक्षा सम्मेलन हुआ जिसमे दिल्ली, उत्तर प्रदेश, गुडगाव तथा हरियाणा के सभी आर्य बन्धुओ ने भाग लिया। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल मझावली, गुरुकुल गदपुरी, डी० ए० वी० स्कूलो तथा दयानन्द स्कूलो के अध्यापको ने विद्यार्थियो के साथ भाग लिया। श्री रामचन्द्र जी वैदा ससद सदस्य ने शिक्षा को राष्ट्ररक्षा का अनिवार्य अग बताया तथा आर्यो से एकत्रित हो कर समाज को सही दिशा देने की प्रेरणा दी। आचार्य आर्य नरेश ने मत, मजहब, पथों से ऊपर उठ कर वैदिक धर्म (मानव धर्म) अपनाने का आह्वान किया। डा० धर्मवीर जी ने सहिष्णुता, सद्भाव के साथ सभी को सत्पथ पर लाने के लिए प्रेरित किया। डा० श्रीमती विमला मेहता ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इसका सफल सचालन डा० सत्यदेव प्रधान आर्य समाज ने किया।

पथरगामा में महर्षि दयानन्द गुरुकुल की स्थापना

ब्रह्मचर्य को शिक्षा का अनिवार्य अग बताते हुए वेद और सस्कृत की शिक्षा देने के लिए पथरगामा मे महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल की स्थापना की गयी, जिसकी प्रबन्ध समिति के मुख्य सरक्षक आचार्य हरिदेव जी तथा अध्यक्ष ब्रजकिशोर टेकरीवाल (मटू बाबू) बनाये गये। विद्यालय की स्थापना हेतु आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुए आचार्य हरिदेव ने कहा कि वैदिक शिक्षा पद्धति ही भारत तथा अन्य देशो की समस्या का समाधान करने मे सक्षम हो पायेगी। उन्होने कहा कि इस विद्यालय की स्थापना का उद्देश्य ब्रह्मचर्य को शिक्षा का आधार बना कर भारतीय सस्कृति को सशक्त बनाना है। समिति के उपाध्यक्ष गोवर्द्धन प्रसाद ने कहा कि इस विद्यालय मे आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को अगीकार करते हुए वैदिक और भारतीय सस्कृति के विभिन्न आयामो की शिक्षा को अनिवार्य बनाया जायेगा। बच्चो को छात्रवृत्ति देना तथा सरल जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देना भी स्कूल का लक्ष्य है। समिति के सचिव उमेश प्रसाद तथा सयुक्त सचिव शिवनारायण आर्य को बनाया गया। डा० अशोक कुमार को कोषाध्यक्ष बनाया गया। विद्यालय के निर्माण हेतु जगन्नाथ साह ने अपनी जमीन देने की घोषणा की। श्री साह ने बताया कि शिक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए कि गुरु-शिष्य मे पिता-पुत्र का सम्बन्ध हो। उन्होने कहा कि बालको के चरित्र का निर्माण करने की आज आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द आर्ष विद्यालय गुरुकुल पथरगामा (झारखड) का निर्माण पथरगामा मेन रोड पर होने जा रहा है। यह आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रचारित गुरुकुलीय प्रणाली पर आधारित है। इस गुरुकुल के उद्देश्य है

ब्रह्मचर्य को शिक्षा का आधार बना कर भारतीय सस्कृति को पुनर्जीवित करना, बालको का चरित्र निर्माण करना, सादा एव सरल जीवन की प्रेरणा देना, गुरु शिष्य मे पिता-पुत्र का सम्बन्ध बनाना। आप भी इसकी स्थापना मे अपना योग दे।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बकेवर जिला इटावा (उ० प्र०) का ८६वा वार्षिक उत्सव १८, १९ एव २० नवम्बर २००१ को बडी धूमधाम से समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी अग्निव्रत महाराज नालन्दा (बिहार), आचार्य स्वदेश जी नैष्ठिक मथुरा, श्रीमती सरला देवी महोपदेशिका कानपुर देहात, श्री रघुनाथ देव वैदिक भूषण एटा एव श्री प्रेमसिह आर्य भजनोपदेशक बकेवर (इटावा) के प्रेरणादायक पुरोगम होते रहे, जिन्हे सुन कर क्षेत्र के हजारो लोगो ने ज्ञान-लाभ प्राप्त किया।

डी० ए० वी० स्कूल में सैमीनार आंयोजित

फतेहाबाद मे स्थानीय सेठ बद्रीप्रसाद डी० ए० वी० स्कूल फतेहाबाद की बीघड रोड पर स्थित शाखा मे डी० ए० वी० स्कूलो का सामूहिक स्तर पर सैमीनार आयोजित किया गया, जिसमे फतेहाबाद, सिरसा, रानिया, डबवाली व कालावाली के डी० ए० वी० स्कूलो के अध्यापक, अध्यापिकाओ ने भाग लिया। यह सैमीनार २३ अक्टूबर से २५ अक्टूबर तक तीन दिन चला, जिसमे विज्ञान, सोशल साइस, हिन्दी, गणित इत्यादि विभिन्न विषयो पर चर्चा की गई व अध्यापको की समस्याओ का समाधान किया गया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य आर० के सेठी ने कहा कि इस प्रकार के सैमीनार डी० ए० वी० सस्थाओ द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाते है ताकि अपने अध्यापको की अध्यापन कला की गुणवत्ता मे सुधार लाया जा सके। सभी अध्यापको ने इस कार्यशाला की सराहना करते हुए कहा कि वे इस कार्यशाला मे अपना उद्देश्य पाने मे सफल रहे है।

कादियां में ऋषि निर्वाण उत्सव

अमर शहीद प० लेखराम स्मारक कादिया की लेखराम यज्ञशाला मे ऋषि निर्वाण उत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया, जिसमे आर्य शिक्षण सस्थाओ तथा आर्य समाज लेखराम नगर तथा स्मारक ने सक्रिय भाग लिया। बडी श्रद्धापूर्वक यज्ञ सम्पन्न किया गया। तदुपरान्त ऋषि के चरणा मे श्रद्धाजलि समर्पित की गई। श्री योगीराज जी ने अपने प्रवचन मे युवको को शिथिलता दूर करके सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध लडने की प्रेरणा दी।

आचार्य चैतन्य जी को बनारसी दास वर्मा साहित्य सम्मान से सम्मानित किया जायेगा

आर्य जगत् के लेखक आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य' जी को उनकी साहित्यिक सेवाओ के लिए सस्कार भारती अनुष्ठान समिति द्वारा श्री बनारसी दास वर्मा साहित्य सम्मान २००१ के लिए चुना गया है। उन्हे यह सम्मान २७ जनवरी, २००२ को हापुड (उत्तर प्रदेश) मे एक विशेष समारोह मे प्रदान किया जायेगा।

वर की आवश्यकता

१९ वर्षीय सुशिक्षित आर्य कन्या के लिए योग्य वर की आवश्यकता है। अधिकतम आयु २७ वर्ष। इच्छुक विवरण सहित सम्पर्क करे मत्री, दयानन्द बाल सदन, अजमेर

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-10:/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R No D L 11082/2001
POSTED AT N D P O ON 12/13-12-2001 दिनाक १६-१२-२००१

आर्य युवक समाज का चरित्र निर्माण शिविर

पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा, श्री पूनम सूरी और आर्य युवक समाज के प्रधान आचार्य दिनेश एक शिविरार्थी छात्र को पुरस्कार देते हुए।

आर्य युवक समाज, दिल्ली ने वैदिक मोहन आश्रम हरिद्वार मे १८ अक्टूबर मे २५ अक्टूबर तक एक सप्ताह के चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया। मुख्यतया नवगठित उत्तराचल राज्य के डी० ए० वी० विद्यालयो के विद्यार्थियो ने भाग लिया।

शिविर का प्रारम्भ यज्ञ मे हुआ, जिसमे विद्यालयो से आए छात्रो तथा आश्रम के सभी साधको ने भाग लिया। यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण हुआ। आर्य युवक समाज के महासचिव श्री यशवीर आर्य ने सगठन के एक वर्ष के कार्यो का सक्षिप्त लेखा-जोखा प्रस्तुत किया और प्रधान आचार्य दिनेश ने मुख्य अतिथि को अभिनन्दन पत्र भेट किया।

चरित्र निर्माण शिविर में मुख्य अतिथि श्री अशोक राजन अग्रवाल ध्वजारोहण करते हुए।

चरित्र निर्माण शिविर के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री अशोक राजन अग्रवाल ने कहा कि अनुशासन अपने भीतर से पैदा होता है। विद्यार्थी बचपन से ही अनुशासित ढग अपना कर सफलता की सीढिया बिना किसी बाधा के चढता चला जाता है।

आचार्य विद्यारत्न ने बताया कि दुनिया मे जितने भी बदलाव आए उनमे से अधिकाश की शुरुआत किसी न किसी रूप मे विद्यार्थियो ने ही की। इसलिए विद्यार्थियो को अच्छे सस्कार अर्जित करके अपने देश और समाज को बेहतर बनाने की क्षमता ग्रहण करनी चाहिए।

आचार्य सूर्यदेव शास्त्री एव श्री कृष्णपाल सिह ने विद्यार्थियो को शिविर की रूपरेखा, गतिविधियो और उद्देश्यो की जानकारी दी। अगले दिन शिविरार्थियो को व्यायाम के विभिन्न अभ्यास कराए। स्वामी रामदेव ने शिविरार्थियो को प्राणायाम का महत्व बताया। श्री यशवीर आर्य ने शिविरार्थियो को यज्ञोपवीत ग्रहण कराया। आचार्य सूर्यदिव शास्त्री ने वैदिक अभिवादन के सदर्भ मे विशेष प्रवचन दिया।

शिविर के तीसरे दिन शिविरार्थियो को जूडो कराटे तथा लाठी चलाने मे प्रशिक्षण श्री अजय वत्स, श्री हरिसिह एव श्री कृष्णपाल ने प्रदान किया। माता श्रीमती प्रेमलता ने भारतीय सस्कृति तथा वैदिक धर्म की विशेपताओ का ज्ञान दिया। स्वामी चन्द्रदेव ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन तथा कार्यो से शिविरार्थियो को अवगत कराया। सभी शिविरार्थी सहस्त्रधारा गए और वहा प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लिया।

चौथे दिन डा० धर्मवीर विद्यार्थी का प्रवचन हुआ। उन्होने जीवन मे सफलता के लिए साधनो की पवित्रता पर बल दिया और बताया कि विनम्रता और करुणा के अभाव मे मनुष्य सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। इस दिन दोपहर बाद हुई भाषण प्रतियोगिता मे १९ शिविरार्थियो ने भाग लिया। प्रतियोगिता का सचालन श्री शोभा राम आर्य तथा सुबोध कुमार कल्याण ने किया। श्री विश्वबन्धु तथा डा० योगेश्वर कल्याण निर्णायक थे। प्रतियोगिता मे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलो— कोटद्वार के श्री अमितसिह, देहरादून के श्री विवेक थपलियाल तथा अल्मोडा के श्री क्षितिज टमटा ने क्रमश प्रथम, द्वितीय एव तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए।

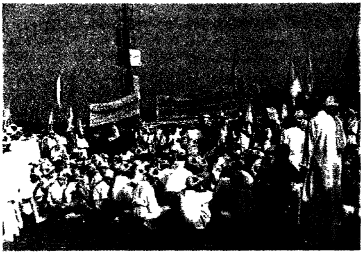

आर्य युवक समाज के चरित्र निर्माण शिविर के शिविरार्थी हरकी पैड़ी पर।

कार्यक्रमो मे आर्य जगत् के वरिष्ठ एव सक्रिय सदस्य शामिल हुए। वैदिक मोहन आश्रम के प्रबन्धक श्री रामस्नेही आर्य ने डी० ए० वी० प्रबन्ध समिति के सचिव श्री पूनम सूरी, श्री टी० आर० गुप्ता, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के उपप्रधान जस्टिस आर० ऐन० मित्तल, श्री रामफल बसल तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियो का स्वागत किया। पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरला चोपडा के आगमन से शिविर के गौरव और शोभा मे वृद्धि हुई।

बौद्धिक गोष्ठी मे प्रो० रत्नसिह ने महात्मा हसराज, महात्मा आनन्द स्वामी एव प्रिसिपल दीवानचन्द के जीवन से सम्बन्धित अनेक प्रेरक प्रसगो की जानकारी दी। पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा जी ने आर्य समाज तथा डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के त्यागी महानुभावो के अनेक सस्मरण प्रस्तुत करते हुए बताया किएक बार मिलाप समाचार पत्र मे छपी एक खबर के कारण अग्रेज सरकार ने उस पर पाबदी लगा दी। महात्मा आनन्द स्वामी ने कहा कि काट छाट कर समाचार छापने से बेहतर तो अखबार को बन्द करना है। उन्होने अखबार को बद कर दिया। हम उन्हे कभी नही भुला सकते। उन्होने महात्मा हसराज, लाला लाजपत राय तथा पडित गुरुदत्त विद्यार्थी द्वारा डी० ए० वी० आन्दोलन की स्थापना मे निभाई गई भूमिका का उल्लेख किया। उन्होने कहा कि उनके द्वारा रोपे गए बिरवे की शाखाए अब दुनिया के बहुत से हिस्सो तक फैल गई है।

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के उपप्रधान जस्टिस आर० ऐन० मित्तल ने शिविरार्थी छात्रो का आह्वान किया कि वे जीवन में अनुशासित रहे। डी० ए० वी० के भगतसिह, हरगोविन्द खुराना, प्रो० यशपाल, कपिल देव जैसे विद्यार्थियो की गौरवशाली परम्परा मे शामिल होने का प्रयास करे।

शिविर के समापन समारोह तथा आर्य युवक समाज के वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि उत्तराचल राज्य के खेल एव सस्कृति मत्री श्री नारायण राणा थे। श्री राणा अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निशानेबाज हैं। श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री रामनाथ सहगल, श्री ऐस० सी० नन्दा, श्री टी० आर० गुप्ता, श्री रामफल बसल, श्री वाचस्पति कुलवत, श्री के० ऐल० मनूजा, श्रीमती ऐस० राय तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रेमलता गर्ग ने स्वागत भाषण मे कहा कि कार्यक्रम मे उपस्थित महानुभावो के प्रेरक उदबोधनो से शिविरार्थी बालको का उत्साह बढेगा और आर्य युवक समाज के पदाधिकारियो और सदस्यो का अपने ऊपर भरोसा मजबूत होगा।

आर्य युवक समाज के राष्ट्रीय सयोजक तथा डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धक समिति के सचिव श्री पूनम सुरी ने चरित्र निर्माण शिविरो के आयोजन को सामाजिक विकास तथा राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की दृष्टि से बेहद उपयोगी बताया।

प्रतियोगिताओ मे सफल शिविरार्थियो को पुरस्कार दिए गए। मुख्य अतिथि श्री नारायण राणा ने डी० ए० वी० प्रबन्धक समिति द्वारा ज्ञान विज्ञान के प्रसार और सामाजिक विकास के कार्यो की सराहना करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को राइफल और बन्दूक जैसे हथियारो के सचालन का भी प्रशिक्षण देना चाहिए। उन्होने कहा कि अगले शिविर मे उन्हे राइफल और बन्दूक वह स्वय उपलब्ध कराएगे। श्री राणा ने प्रतियोगिताओ मे सफल विद्यार्थियो को पुरस्कार भी प्रदान किए।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा ने एक वर्ष के दौरान आर्य युवक समाज द्वारा किए कार्यो की सराहना की और कहा कि अब वे सब सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध सफलता प्राप्त कर के ही रुकेगे। समस्त आर्य जगत् उनके साथ कोई समझौता नही करेगा।

आर्य युवक समाज के प्रधान आचार्य दिनेश के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

मुद्रक व प्रकाशक - श्री **प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक—उदयवीर **'विराज'**

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान : आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
संस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये
विदेशो में ३० पौंड या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये
वर्ष ६६, अक ४३
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, २३ दिसम्बर, २००१
मार्गशीर्ष शु०-८-वि० स०-२०५८
सप्ताह २३ दिसम्बर से २९ दिसम्बर

महान गुरु दयानन्द के महान शिष्य श्रद्धानन्द

यह विचित्र सयोग है कि स्वामी दयानन्द जी के पिता भी तहसीलदार के समकक्ष पद (जमादार) पर नियुक्त सरकारी अधिकारी थे और श्रद्धानन्द जी के पिता श्री नानकचन्द शहर कोतवाल थे। धन और प्रभुता की दृष्टि से दोनो उच्च मध्यम वर्ग के कहे जा सकते है।

मूलशकर (स्वामी दयानन्द) के पिता पौराणिक कर्मकाड मे रुचि रखने वाले धर्मपरायण पुरुष थे। मुख सुविधा से शान्त जीवन व्यतीत करना और अपने सरकारी कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करना उनका लक्ष्य था। देश की दीन हीन दशा और पराधीनता की ओर उनकी दृष्टि नही जाती थी। उस घर मे जन्मे बालक मूलशकर की क्रान्तिकारिणी दृष्टि देश की धार्मिक रूढियो, सामाजिक विषमताओ और पराधीनताजन्य चरम निर्धनता की ओर गई। पिता ने चाहा कि उनका पुत्र भी उसी ढर्रे पर चल कर सुविधा एव प्रभुता सम्पन्न गृहस्थ बने, परन्तु मूलशकर ने अलग मार्ग चुना। उसने २१ वर्ष की आयु मे घर छोड दिया और सर्वस्व त्यागी परिव्राजक का जीवन अपना लिया।

मुशीराम (श्रद्धानन्द) के पिता मूलशकर के पिता से एक कदम आगे थे। सन् १८५७ के महाविद्रोह मे उन्होने अग्रेज़ो की सहायता की थी। इसके पुरस्कार स्वरूप उन्हे पुलिस कोतवाल की नौकरी मिली थी। अपने हिसाब से वह भी धर्मपरायण थे। नियमपूर्वक पूजा प्रार्थना करते थे और यथाशक्ति न्यायपूर्वक शासन करते थे। अपने पुत्र मुशीराम को उन्होने अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलानी चाही। परन्तु मुशीराम बुरे युवको की सगति मे पड गये।

भक्त भी, व्यसनी भी

यद्यपि मुशीराम मद्यपान करने लगे, मासं भी खाने लगे, गायिकाओ के मुजरो मे भी गये, फिर भी उन्होने प्रातःस्नान, व्यायाम और रामायण पाठ का क्रम कभी नही छोडा। उनके अपने कथनानुसार, ब्रह्मचर्य पालन का उनका पूर्ण प्रयत्न रहा। बाद मे जब कभी यह खडित हो गया, तो उसके लिए उन्हे घोर पश्चात्ताप हुआ।

मुशीराम जी ने मूलशकर की अपेक्षा अधिक दुनिया देखी थी। उन्होने अग्रेज़ी शिक्षा भी पाई थी, जिसके फलस्वरूप वह अपने पिता की दृष्टि मे नास्तिक बन चले थे। उनकी नास्तिकता से पिता नानकचन्द दुखी थे, परन्तु पुत्र-मोह वश कुछ कहते नहीं थे। प्यार से समझा सकने वाली मा मुशीराम को छोटी आयु मे ही छोड गई थी। कोई आश्चर्य न होता, यदि हज़ारो शराबियो की तरह मुशीराम जी की नैया भी दुर्दशा के भवर मे डूब जाती। परन्तु उनमें कही अन्तरात्मा की ज्योति विद्यमान थी, जिसने उन्हे सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित किया।

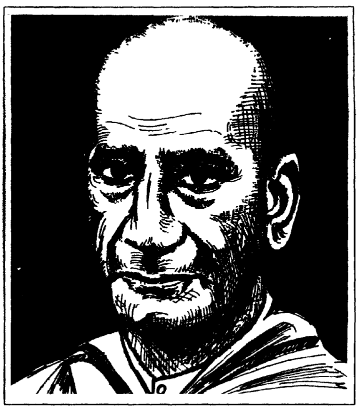

एकागी शिक्षा

स्वामी दयानन्द जी ने जो भी शिक्षा प्राप्त की, वह केवल व्याकरण तथा प्राचीन आर्ष ग्रथो तक ही सीमित थी। उसे एकागी भी कहा जा सकता है। आधुनिक ज्ञान विज्ञान की बाते उन्होने अपनी यात्राओ मे लोगो से सुन कर ही जानी थी। परन्तु मुशीराम जी ने बाकायदा कालेज मे पढ कर और बाद मे वकालत के दिनो मे स्वाध्याय करके यथेष्ट ज्ञानार्जन किया था। उनकी शिक्षा बहुमुखी थी। यही कारण था कि जहा स्वामी दयानन्द जी ने केवल आर्ष ग्रथो के अध्ययन अध्यापन की बात कही, वहा श्रद्धानन्द जी ने 'सर्वोत्तम प्राचीन साहित्य और सर्वोत्तम आधुनिक ज्ञान विज्ञान के समन्वय' पर जोर दिया। श्रद्धानन्द जी स्वामी दयानन्द जी की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक थे।

आर्य समाज मे बाद मे जो मुस्लिम विरोध पनपा, वह न स्वामी दयानन्द जी मे था, न स्वामी श्रद्धानन्द जी मे। स्वामी दयानन्द जी के अनेक मुसलमानो से घनिष्ठ प्रेम सम्बन्ध थे। यहा तक कि जब लाहौर मे निमत्रण दे कर बुलाने वाले ब्रह्मसमाजियो ने स्वामी दयानन्द जी को अपना स्थान छोड कर चले जाने को कहा, तब लाहौर के ही एक मुसलमान डाक्टर रहीम खा ने अपनी कोठी मे उन्हे अतिथि बनाया और उन्हे व्याख्यान देने की सुविधा दी। मुसलमानो के प्रसिद्ध नेता सर सैयद अहमद खा से भी स्वामी दयानन्द जी के अच्छे सम्बन्ध थे। मुसलमानो को वह बिछुडे भाई समझते थे, जिन्हे शुद्ध करके फिर हिन्दू समाज मे मिला लेना देश हित की दृष्टि से आवश्यक था। इस्लाम मूर्ति पूजा का विरोधी है, आर्य समाज भी मूर्तिपूजा मे विश्वास नहीं करता, इससे मुसलमानो को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने । सुविधा हो सकती थी।

व्यापक दृष्टिकोण

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव बढाने की भरसक चेष्टा की। श्रद्धानन्द जी का न केवल हृदय उदार था, उनका दृष्टिकोण भी व्यापक था। डा० अन्सारी, हकीम अजमल खा आदि अनेक मुस्लिम नेताओ से श्रद्धानन्द जी के घनिष्ठ प्रेम सम्बन्ध थे। एक बार ये कई मुस्लिम नेता श्रद्धानन्द जी से मिलने पुराने गुरुकुल कागडी मे गये। वहा उन्होने ब्रह्मचारियो को सध्या हवन करते देखा। जब सध्या हवन हो चुका, तब इन अतिथियो ने कहा 'आपका हवन बहुत अच्छा लगा। अब हमारा भी नमाज का समय हो गया है। कोई जगह बताइये, जहा हम नमाज पढ सके।'

गुरुकुल मे शान्त एकान्त स्थान कई थे, जहा नमाज़ पढी जा सकती थी। महाविद्यालय की पक्की इमारत की विस्तृत छत थी। परन्तु श्रद्धानन्द जी ने कहा 'आप हमारी यज्ञशाला मे ही नमाज पढिये। भगवान् का नाम ही तो लेना है। यज्ञशाला तो बनी ही इसलिए है।' और उन निष्ठावान् मुसलमानो ने यज्ञशाला मे नमाज पढी। न इससे यज्ञशाला भ्रष्ट हुई, न उन अतिथियो का धर्म दूषित हुआ। इस धार्मिक उदारता और सौहार्द का परिणाम था कि सन् १९२० के तूफानी

(शेष पृष्ठ १० पर)

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

उपनिषत्सुधा

मृत्यु का पाश (जाल) ईश्वर के ज्ञान से ही कटता है

□ स्वामी श्रद्धानन्द

स एव काले भुवनस्य गोप्ता विश्वाधिप. सर्वभूतेषु गूढ.।

यस्मिन् युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च तमेव ज्ञात्वा मृत्युपाशाश्छिनत्ति॥

श्वेताश्वतर० ४ १५

अर्थ — (**स एव काले**) वही समय पडने पर (**भुवनस्य गोप्ता**) इस भुवन अर्थात् विश्व ब्रह्माड की रक्षा करने वाला है। (**विश्वाधिप**) वह ससार का या सब किमी का स्वामी, राजा, शासक है। (**सर्व भूतेषु गूढ**) वह सब वस्तुओ मे, चराचर मे छिपा हुआ, रमा हुआ है। (**यस्मिन् ब्रह्मर्षयो देवताश्च युक्ता.**) ब्रह्मज्ञान की साधना मे रत ऋषि और दिव्य स्वभाव वाले लोग जिसमे योग साधना द्वारा लगे रहते है, (**त एव ज्ञात्वा**) उसको जान कर ही (**मृत्यु पाशान् छिनत्ति**) व्यक्ति अपने मृत्युपाश को काटने मे समर्थ होता है।

मनन— दु ख और क्लेश से पीडित पापात्मा यह मानने के लिए तैयार नही होता कि सर्वरक्षक शक्ति इस ससार मे उपस्थित है। जब उसका दु ख दूर नही होता, जब पाप का परिणाम उसे क्लेश पहुचा रहा है तो वह कैसे मान सकता है कि सर्वरक्षक की रक्षा के क्षेत्र मे वह भी अन्तर्गत है? पुराणो के जानने वाले उसे महाभारत के युद्ध मे हाथी के घटे के नीचे पक्षियो के बच्चो की रक्षा का हाल सुनाते है। दुर्योधन की सभा मे द्रौपदी के वस्त्र के बढने का चमत्कार दर्शाते है। पापी फिर चिल्ला उ.ता है, "यदि परमात्मा सर्वरक्षक है तो मरा क्लेश क्यो दूर नही होता?" वैदिक मतावलम्बी उसे प्राचीन और नवीन दोनो समयो के दृष्टान्तो से ढाढस बधवाना चाहते है परन्तु उसका वही उत्तर चला आता है, "यदि सर्वरक्षक है तो मेरे दु ख क्यो दूर नही होते?" इतने मे ऋषि आ पहुचते है और दीन की दशा पर दया करके उसकी अविद्या पर हस कर इस प्रकार उसके भ्रम को दूर करते है, "तू क्यो निराश होता है और यथार्थता को न समझ कर क्यो नास्तिक बनता है? क्या वाममार्ग ने इस देश के अन्दर घोर अत्याचार नही मचा रखा था? क्या हजारो-लाखो पशुओ की गर्दने धर्म के नाम पर नही काटी जाती थी? क्या धर्म की ओट मे मनन शक्ति रखने वाले मनुष्यो की भी तलवार के वार से बलि नही चढाई जाती थी? क्या उससे बरसो हाहाकार नही मचा रहा? फिर यदि कोई सर्वरक्षक न होता तो बुद्धदेव के कोमल हृदय को कौन प्रेरित करता और इसी वर्तमान समय मे मूर्तिपूजा तथा कब्रपरस्ती का किस प्रकार जोड था? ब्रह्मचर्य का नाश हो चुका था। कौन समझ सकता था कि सीधा मार्ग किधर है? क्या यह सब दु ख एक दिन मे दूर हो गये थे? क्या विक्रमी सवत् के आरम्भ मे ही किसी आचार्य का प्रादुर्भाव हुआ? कदाचित् नहीं। अपितु १९०० वर्षो की दुर्दशा के उपरान्त कही ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ जिसने अधेरे को उजाले मे परिवर्तित कर दिया। इस प्रबन्ध के लिए कोई कारण है। मनुष्यो और इसी तरह मनुष्य समाजो के कर्मो का फल जब तक पूर्ण रीति से न मिले तब तक उनकी अवस्था मे परिवर्तन करने से उनकी अवस्था नही सुधरती। इसी प्रकार मूर्ख, तेरी अवस्था है। सर्वरक्षक समय पर ही रक्षा करते है। बात स्पष्ट हो गई। परमात्मा सर्वरक्षक है परन्तु उसकी रक्षा का प्रबन्ध हमारे सकल्पो और हमारी इच्छाओ से परिमित नही है, अपितु उसके असीम ज्ञान के अन्दर जैसा प्रबन्ध उपस्थित है वैसा ही कार्य होता है। समय पर ही वह सबकी रक्षा करता है। जिसे हम रक्षा समझते है सम्भवत उसकी दृष्टि मे वह रक्षा नही है। उसके प्रबन्ध को वही जान सकता है। हम तुच्छ जीव उसके प्रबन्ध की वास्तविकता को कब समझ सकते है! वही सबका ईश्वर है। उससे बढ कर ऐश्वर्य इस ब्रह्माण्ड मे किसका है? जब सारे ऐश्वर्य उसी के दान के परिणाम है तो कौन धनाढ्य अपने धन से उसका मुकाबला कर सकता है? वह केवल धन का भडार ही नही, वह केवल जड जगत् के रचने वाला ही नही, वह केवल वायु को चलाने वाला और जल को बरसाने वाला ही नही, अपितु प्राणियो की प्राणक्रिया का आश्रय भी वही है। न केवल यही, अपितु एक एक प्राणी के अन्तकरण की सब अवस्थाओ का ज्ञाता होने के कारण अगर उसी को परमेश्वर कहे तो यथार्थ है। फिर क्या सन्देह है बिना उसको जाने, बिना उसको प्राप्त किए मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को पूर्ण नही कर सकता! यहा तक तो मामला साफ है परन्तु इससे आगे चल कर ही कठिनाइयो का सामना होता है। यह सत्य है कि बिना उसको जाने हुए इस विक्षिप्त मन को शान्ति नही मिल सकती। इसमे सन्देह नही कि उसकी प्राप्ति से जन्म-मरण का दु ख दूर हो सकता है। परन्तु वह है कहा? उसका पता किससे पूछे? गगा और गोदावरी, काशी और प्रयाग, बद्रीनारायण और जगन्नाथपुरी, कोई धाम और कोई तीर्थ तो छोडा नही परन्तु इष्ट की प्राप्ति अब तक कोसो दूर है। गिरजा और मस्जिद, मन्दिर और धर्मशाला, कौन से स्थान को नही खोज डाला? परन्तु परिणाम क्या हुआ? यह मन उसी प्रकार अशान्त है। आत्मा उसी तरह अशान्त है। परन्तु वह देखो! सुखासन जमाये, प्राण चढाये कौन शान्त मूर्ति स्थित है? और उसके पास ही दिव्य मस्तक, हसता हुआ मुख किस सज्जन पुरुष का दृष्टिगोचर होता है? अहा! एक नहीं, दो नही, यह तो अनगिनत मुखो का दृश्य दिखाई दे रहा है। और सुनो उस गम्भीर किन्तु मधुरवाणी को, जो एक स्वर से सहस्रो तथा लाखो उपस्थित महात्माओ की जिह्वा से निकल रही है— "ब्रह्म एक है। वही सर्वेश्वर है। उसी की भक्ति से हमने शान्तिलाभ की है। तुम भी उसी की शरण मे पहुच कर शान्त हो सकते हो।" प्रिय पाठकगण! आओ, हम सब बडे प्रेम से एक दूसरे के साथ मिल कर ऋषियो तथा देवताओ की शरण मे पहुचें और उनके चरणो मे श्रद्धा और विश्वास से बैठ उनसे इस सीधे मार्ग का पता पूछे जिस पर चल कर उन्होने इन दुर्गम मार्गो को पार किया है, जिनके एक एक पग पर दस दस ठोकरे खानी पडती थी।

भारत की संसद् पर मुस्लिम उग्रपंथी हमला

बृहस्पतिवार, १३ दिसम्बर २००१ को रमज़ान के महीने मे, जिसे पवित्र मान कर भारत सरकार इकतरफा युद्ध विराम करती रही है, पाच मुस्लिम आतकवादियो ने पुलिस की वर्दी मे, लाल बत्ती वाली कार मे बैठ कर भारतीय ससद् पर धावा बोल दिया। कार बेरोकटोक ससद् के अहातें मे पहुच गई। बडे लोगो की कार समझ कर किसी ने पूछताछ नही की, पहचान पत्र नही देखे। बमो और ए० के० ४७ राइफलो से भरी कार ससद् केअहाते मे पहुच गई। खुशामदी, दासवृत्ति का यह दुष्परिणाम हुआ। ससद् भवन मे घुसने के प्रयास मे आततायियो ने बम फोडे और गोलिया चलाई, जिसमे पाच पुलिसकर्मी मारे गये और २६ घायल हुए। घाराये हुए सुरक्षाकर्मियो ने आक्रमणकारियो को घायल करके जीवित पकडने की चेष्टा नही की, मार ही डाला।

इस साहस भरे आक्रमण से भारत की सुरक्षा व्यवस्था की और गुप्तचर विभाग की पोल खुल गई है। चादनी चौक, कनाट प्लेस, सदर बाजार, करौल बाग आदि के भीड भरे बाजारो मे कभी भी आतकवादी हमला हो सकता है। नही हो रहा, इसका कारण यह है कि मामूली लोगो की हत्या पर वे लोग कीमती गोला बारूद खर्च करना नही चाहते।

मत्रियो ने इस हमले की निन्दा की है। निन्दा करने से आतकवादियो के हौसले पस्त हो जायेगे! दस साल से निन्दा करते करते इन नेताओ की जीभ नही थकी। लाल किले मे आतकवादी हमले की निन्दा की, काठमाडो से दिल्ली आ रहे विमान अपहरण की निन्दा की, कारगिल मे घुसपैठ की निन्दा की, कश्मीर विधान सभा पर हमले की निन्दा की, ये अन्तिम सास रहने तक निन्दा करते रहेगे।

बूढी गाय को यदि कच्चे तागे से भी बाध दिया जाये, तो वह भूखी प्यासी खडी रहती है, रम्भाती है, पर उस तागे को तोडती नही। हमने भी नियत्रण रेखा से अपने आपको बाधा हुआ है। मानव अधिकार, सर्वधर्म समभाव, धर्मनिरपेक्षता, अल्पसख्यक आयोग जैसे तागे हमने अपने गले मे बाधे है, जिनके कारण हम आतकवाद की जड पर कुल्हाडा नही चला पा रहे।

अहिसक, शान्तिलोलुप, चरित्रहीन लोग आत्मघाती दस्तो का साम्ना कैसे कर पायेगे? पाचो आतकवादियो को मार डालना सतोष की बात नही है, क्योकि यह पता नहीं कि अभी कितने पाच हजार, पाच लाख या पाच करोड आत्मघाती हमले की घात मे बैठे है।

आदिम जातियो मे तो यह रिवाज था कि जब कोई सिह, बाघ या तेदुआ नरभक्षी हो जाता था, तब सब लोग मिल कर तीर कमान और बर्छे ले कर उसे ढूढने निकलते थे और उसकी माद मे जा कर उसे मारने के बाद ही घर लौटते थे, भले ही इस हाके मे उन्हे दस पाच लोगो की जाने भी क्यों न गवानी पडे। उसके बाद ही वे चैन की नीद सो पाते थे।

पाकिस्तान ने इस हमले की निन्दा की है। फिर उग्रपथी मुस्लिमो को ये हथियार किसने दिये है? कौन इनका पृष्ठपोषक है? अफगानिस्तान के तालिबान का सगठन ध्वस्त हो चुका है। शोचनीय दृश्य है कि हम यह आशा बाधे बैठे है कि अमेरिका आतकवादियो से हमारी रक्षा करेगा।

यह आशा करना मूर्खता होगी कि हम तो दफ्तरो मे बैठ कर हर काम के लिए रिश्वत लेते रहे और हमारे सुरक्षाकर्मी कर्तव्य पालन करते हुए प्राण दे दे। ऐसी व्यवस्था देर तक नही चल सकती। कीचड मे कमल खिल सकता है, पर दुश्चरित्रता के बीच सच्चरित्रता नही पनप सकती।

हमारे नेता यह कब समझेगे कि छापामार युद्ध मे विजय पाने का एक ही उपाय है कि छापामारो के अड्डो को नष्ट कर दिया जाये, जैसा कि अमेरिका ने अफगानिस्तान मे किया है। रैड ऐलर्ट करके छापामारो से बचाव कभी नही हो सकता।

वर्तमान भयातुर जीवन परमाणु बम की यत्रणा से भी अधिक कष्टदायक सिद्ध होगा।

भावुक जुआरी स्वामी श्रद्धानन्द

कुछ लोग बुद्धि प्रधान होते है। वे हर विषय को बुद्धि से सोचते है और तर्क वितर्क करके किसी निर्णय पर पहुचते है। अपने हिसाब से वे सही निर्णय पर ही पहुचते है और उसके कुपरिणाम सुपरिणाम के स्वय ही उत्तरदायी होते है। ये लोग हानि से बचना चाहते है और लाभ के लिए प्रयत्नशील रहते है। आवश्यक नहीं कि वे स्वार्थ परायण हो, वे समाज का, देश का, मानव मात्र का हित भी चाह सकते है। उसके लिए कष्ट सह सकते है और त्याग तथा बलिदान भी कर सकते है। परन्तु उनका हर काम बुद्धि और तर्क से होता है। वे व्यर्थ की भावुकता मे नही बहते। सुदृढ सत्य के आधार पर खडे होते है।

हृदय प्रधान

इनसे भिन्न एक दूसरे प्रकार के लोग होते है, जिनमे मस्तिष्क उतना काम नहीं करता, जितना कि हृदय करता है। उन्हे जो वस्तु या व्यक्ति पसन्द आ जाता है, उस पर वे रीझ जाते है और जो पसन्द नही आता, उस ओर वे रुख ही नही करते। ऐसे लोग वास्तविक लोक के कम और काल्पनिक लोक के अधिक निवासी होते है। वे हवा मे किले बनाते है। उन हवाई किलो को बनाने के लिए वे बहुत कुछ गवाने या लुटाने को भी तैयार रहते है। वे भयकर जुआरी होते है, जो अनिश्चित दाव पर सर्वस्व लगा देते है।

स्वाभाविक तो यही होता कि ऐसे भावुक, कल्पना लोक के निवासी अपने कार्यो मे निष्फल ही रहते। परन्तु यह दुनिया चमत्कारो से भरी है। ये भावुक जुआरी भी बहुत बार सफल हो जाते है, दृढ सत्य के आधार पर बुद्धि और तर्क के सहारे चलने वाले लोगो से भी अधिक सफलता प्राप्त कर लेते है।

हृदय अन्तरात्मा है

महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) इनमे से दूसरे प्रकार के, अर्थात् हृदय प्रधान, भावुक पुरुष थे। उनका मार्ग-दर्शन बुद्धि नही, अपितु अन्तरात्मा करती थी।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे बुद्धू थे और दुनियादारी के मामलो को समझते नही थे। उन्होने वकालत पढी थी। कोतवाल का पुत्र होने के नाते आधी वकालत तो उन्हे घर के व्यवहार से ही आ गई थी। फिर भी उन्होने बाकायदा कालेज मे भर्ती हो कर वकालत पढी। न्यायालय मे वकालत की। उसके भले बुरे अनुभव लिये। क्या करने से क्या होगा और क्या करने से हानि की आशका है, यह उन्हे पता होता था, फिर भी वह ऐसे कदम उठाते थे, जिन्हे उनकी सनक के सिवाय कुछ नहीं कहा जा सकता था।

आर्य समाज की धुन

अच्छी भली वकालत चल रही थी। कोठी, बग्घी, प्रतिष्ठा सब कुछ प्राप्त थी। तभी उन्हे आर्य समाज के प्रचार की धुन लग गई। वह सब लोगो को आर्य बनाने मे जुट गये। ऋषि दयानन्द के स्मारक के रूप मे डी० ए० वी० स्कूल और कालेज बने, तो उनके निर्माण मे उन्होने जी जान से योग दिया। डी० ए० वी० किस दिशा मे बढे, इसे ले कर मतभेद हो गया। डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति मे उनके विचार के लोगो का बहुमत हो जाये, इसके लिए उन्होने प्रयत्न किया। जब इसमे सफलता न मिली, तब उन्होने गुरुकुल बनाने का सकल्प किया।

डी० ए० वी० और गुरुकुल मे मतभेद दो बातो पर था मासाहार और प्राचीन वैदिक शिक्षा। डी० ए० वी० कालेज पार्टी मासाहार को निषिद्ध नहीं मानती थी। मुशीराम जी (तब तक वह श्रद्धानन्द नही बने थे) मास खाते रहे थे, शराब भी पीते रहे थे, परन्तु एकाएक उन्होने वह सब त्याग दिया था और उसके कट्टर विरोधी बन गये थे। उनका मानो काया-कल्प हो गया था।

गुरुकुल का स्वप्न

उनका विचार था कि डी० ए० वी० सस्था मे सस्कृत और प्राचीन वैदिक साहित्य की शिक्षा को उतना स्थान नही मिला है, जितना मिलना चाहिए। इस लिए उन्होने गुरुकुल खोलने की योजना बनाई। डी० ए० वी० सस्था की कल्पना भी इस रूप मे की गई थी कि वह सरकारी नियत्रण से बाहर रहेगी और वहा राष्ट्रीय शिक्षा दी जायेगी। परन्तु व्यावहारिकता की दृष्टि से डी० ए० वी० ने शुरू से ही स्वय को पजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कर लिया और इस प्रकार सरकार का नियत्रण स्वीकार कर लिया।

मुशीराम जी इससे सहमत नहीं थे। उन्होने ऐसा गुरुकुल कागडी बनाया, जिसमे सरकार का हस्तक्षेप बिल्कुल नही था। इसलिए सरकार ने इसे सरकार विरोधी माना।

गुरुकुल के लिए सब कुछ त्यागा

यह बहुत बडा जूआ था। वकालत छोड कर गुरुकुल बनाना घर का खा कर वन के भैसे चराने जैसा था। पर मुशीराम जी ने यह दाव लगा दिया।

बहुत सभव था कि गुरुकुल बनाने के लिए धन ही न जुटता। मुशीराम जी ने ३० हजार रुपये चन्दा करने का सकल्प किया था, जो आजकल के ३० लाख रुपये से भी अधिक था। परन्तु ३० के बजाय ४० हजार जमा हो गये।

अब शहर से दूर जगल मे गुरुकुल के लिए भूमि कहा मिले? मुशीराम जी गगा और हिमालय के निकट भूमि चाहते थे। हरिद्वार से छह किलोमीटर दूर ठेठ जगल मे उन्हे १२०० बीघा भूमि दान मे मिल गई। फिर ऐसे मा बाप चाहिए, जो अपने पुत्रो को इस बियाबान जगल मे पढने के लिए भेजे। ऐसे माता पिताओ का न मिलना ही स्वाभाविक था। परन्तु लीलामय भगवान् ने वे भी जुटा दिये। मुशीराम जी ने अपने दोनो पुत्रो को गुरुकुल का पहला छात्र बनाया। अपने खब्ती कार्यक्रम पर उन्हे इतनी आस्था थी कि सम्पत्ति से भी बडी धरोहर को उन्होने इस हवन कुड मे झोक दिया। पता था कि पढाई पूरी करने पर उन्हे सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी, पर विचार था कि वेद प्रचार करेगे। यह जूआ नहीं, तो क्या था?

बड़े काम जूए से ही होते हैं

दाल आटे की परचून की दूकान बिना जूआ खेले चल सकती है, पर राष्ट्रो का निर्माण बिना जूआ खेले नहीं हो सकता। अकबर से लोहा लेते हुए राणा प्रताप ने, औरगज़ेब को ललकारते हुए शिवाजी ने, अग्रेज़ो को धकियाते हुए हिटलर ने, सावरकर और सुभाष ने, रामप्रसाद बिस्मिल और भगतसिह ने जूआ ही तो खेला था। महत् की सिद्धि जूए के बिना नही हो सकती।

मुशीराम जी ने अपना सब कुछ एक विचारधारा के लिए दाव पर लगा दिया। दाव विफल नही रहा। गुरुकुल की ऐसी धूम मची कि तहसीलदार और कलक्टर ही नही, गवर्नर और वायसराय गुरुकुल को देखने के लिए हाथी घोडो पर चढ कर आने लगे। देश का कोई राजनेता ऐसा न रहा, जो जगल मे बने उस गुरुकुल को देखने न गया हो। जो भी गये, सभी ने गुरुकुल की और गुरुकुल को चलाने वाले की मुक्तकठ से प्रशसा की। इग्लैड के भावी प्रधानमत्री श्री रैम्ज़े मैकडानल्ड ने तो यहा तक कह दिया कि 'यदि किसी को ईसा की छवि देखनी हो, तो वह महात्मा मुशीराम को देख ले।' एक ईसाई के मुख से किसी भी मनुष्य के लिए इससे बडी स्तुति और कोई हो नहीं सकती। और रैम्ज़े मैकडोनल्ड कोई साधारण व्यक्ति नहीं था।

गुरुकुल से भी सन्यास

जो लोग महात्मा मुशीराम के गुरुकुल की सफलता से जलते थे, उन्होने महात्मा जी को सुझाया कि अब आपको सन्यास ले लेना चाहिए। वे चल पडी सस्था गुरुकुल पर अपना अधिकार चाहते थे। भावुक मुशीराम जी के हृदय की तन्त्री के न जाने किस तार को इस सुझाव ने टकोर दिया। और उन्होने सन्यास ले लिया। सतान की तरह प्यार से पोसे गुरुकुल को एकदम छोड ही दिया। यह एक और दाव था।

गुरुकुल छोड कर सन्यास ले कर श्रद्धानन्द जी देश की राजनीति मे कूद पडे। वहा भी उन्हे खूब सफलता मिली। मूर्धन्य राजनेताओ मे उनकी गिनती होने लगी।

गांधी जी से पटी नही

परन्तु गाधी जी मे श्रद्धानन्द जी की पटी नही। गाधी जी हर शर्त पर मुसलमानो का सहयोग लेना चाहते थे, जबकि श्रद्धानन्द जी का कहना था कि यह सहयोग न्यायोचित शर्तों पर ही लेना चाहिए। गाधी जी जब अपने किसी विचार के समर्थन मे तर्क नहीं दे पाते थे, तब कहते थे कि 'यह मेरी अन्तरात्मा की आवाज़ है।' श्रद्धानन्द जी का कहना था 'अन्तरात्मा तो हमारी भी है और उसकी भी आवाज होती है।'

जहा मन न मिलता हो, वहा श्रद्धानन्द जी नही रह सकते थे। श्रद्धानन्द जी ने बार बार कहा कि काग्रेस अछूतोद्धार के लिए कुछ करे, नही तो वे एक नई समस्या खडी कर देगे, परन्तु मौलाना मुहम्मद अली कहते थे कि अछूतो की समस्या का हल यह है कि उनमे से आधे मुसलमान बन जाये और आधे ईसाई। काग्रेस मौलाना को नाराज नही कर सकती थी। श्रद्धानन्द जी ने काग्रेस छोड दी और हिन्दू महासभा मे चले गये। बुद्धि प्रधान होते, तो काग्रेस मे बने रहते।

शुद्धि आन्दोलन

स्वामी श्रद्धानन्द जी का अन्तिम और सबसे बडा काम शुद्धि आन्दोलन का था। मल्काने राजपूत बडी सख्या मे फिर हिन्दू बनना चाहते थे। हिन्दू राजपूत उन्हे फिर अपने मे मिलाने को तैयार नही थे। स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज तथा अन्य राजपूत नेताओ के प्रयत्नो से शुद्धि आन्दोलन सफल हुआ। एक लाख से अधिक मल्काने फिर हिन्दू बन गये।

इसी शुद्धि आन्दोलन से चिढ कर कट्टरपथी मुस्लिम सगठनो ने षड्यत्र रचा और अब्दुल रशीद नामक एक व्यक्ति ने २३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे, जहा स्वामी जी रह रहे थे, छल से स्वामी जी को गोली मार दी।

हृदय प्रधान बने

स्वामी जी की मृत्यु के बाद हमने 'स्वामी श्रद्धानन्द अमर रहे' के नारे तो बहुत लगाये, परन्तु जिस शुद्धि आन्दोलन को बढाने के लिए स्वामी जी ने प्राण दिये थे, वह ठप पड गया। उस आन्दोलन को पुन जीवित करना ही स्वामी जी को सच्ची श्रद्धाजलि होगी। इसके लिए मुसलमानो को नही, हिन्दुओ को समझाने की आवश्यकता है कि वे अपना 'अत्यधिक पवित्रता' का दम्भ त्यागे और शुद्ध होने के इच्छुक मुसलमान आत्मीयो को खुले दिल से स्वीकार करे।

जो घर फूंके आपनो, चले हमारे साथ

❑ श्री मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस समय चक्र के अनुसार आता है और चला जाता है। भारतीय इतिहास के क्रम मे २३ दिसम्बर १९२६ अपना विशेष महत्व रखता है। अमेरिका के ऐण्ड्र्यू जैक्सन डेविस नामक विद्वान् ने ठीक ही लिखा था "मै भारत मे महर्षि दयानन्द द्वारा जागृत एक आधी देख रहा हू। उस आधी को शान्त करने के लिए हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी आदि दौडे, पर उन्हे निराशा ही हाथ लगी। मुझे यह प्रतीत होता है कि यह सत्य पर आधारित एक बार सम्पूर्ण विश्व को झकोर कर असत्य को जला कर राख कर देगी। इस आधी के शात होने के पश्चात् यह सम्पूर्ण विश्व सत्य, शिव और सुन्दर तत्वो का दर्शन कर शाति अनुभव करेगा।"

आधी युग

हम समस्त आर्यगण उस आधी युग की देन है। यदि यह आधी युग का प्रादुर्भाव नहीं होता, तो न तो मोहनदास करमचन्द गाधी और न गाधी युग आया होता। सम्भव है, मि० मोहनदास मिस्टर मैकमोहन होते। भारतीय इतिहास के उन पृष्ठो की स्याही अभी सूखी नहीं है, जिनमे लिखा है ' मोहनदास गाधी का ज्येष्ठ पुत्र हीरालाल शराब, कबाब और औरत" के लालच मे मुसलमान बन कर अब्दुल्ला हो गया था। यह तो महर्षि दयानन्द का आर्य समाज है, जिसने मुम्बई मे अब्दुल्ला गाधी को फिर शुद्ध कर माता कस्तूरबा की गोद मे उनका बडा बेटा सौप दिया। यह महान कार्य उस आधी युग की देन थी, जब गाधी युग का नामो निशान तक नहीं था। हा, जवाहरलाल नेहरू केवल यही कहते रहे कि मै दुर्भाग्य से जन्म से हिन्दू हू, शिक्षा से अग्रेज और सस्कृति मे मुस्लिम हू।" बस, इससे अधिक वे आगे बढ न सके। उन्हे दयानन्द की आधी इससे अधिक कुछ भी कहने की अनुमति नही देती थी। नेहरू परिवार की प्रतिष्ठा, मान मर्यादा एव कीर्ति को स्वामी श्रद्धानन्द और महामना मदनमोहन जी मालवीय ने ही बचाया था। यह भी दयानन्द की आधी का महान प्रसाद था। इस प्रकार उस आधी युग की अनेक महान उपलब्धिया है, जिनकी बैसाखी से गाधी युग कुछ डग चला और सम्प्रति लडखडा रहा है। आगे इसका भविष्य कैसा होगा, यह देखने का विषय है।

प्रथम कन्या विद्यालय

उसी महान आधी युग की स्वामी श्रद्धानन्द महान देन थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। आधी युग का यह सपूत जिस ओर डग भरने लगता था, एक अजीबोगरीब आधी चलने लगती थी। "ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल" सुन कर उनके हृदय मे साम्प्रदायिकता के विरुद्ध विद्रोह उठ खडा हुआ और भारत मे सर्वप्रथम "कन्या महाविद्यालय" स्थापित कर स्त्री शिक्षा के प्रति क्रातिकारी कार्य का शुभारम्भ किया। तभी से नारी शिक्षा की नीव पडी।

गुरुकुल की स्थापना

महर्षि दयानन्द लिखित कालजयी ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश के शिक्षा सम्बन्धी तीसरे समुल्लास को पढ कर कार्ल मार्क्स के विकासवादी सिद्धान्तो तथा मैकाले के शिक्षा मन्तव्यो के विरोध में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली हेतु कार्यारम्भ किया। वे इसके दीवाने हो गये कि उन्होने अपनी कोठी बेच दी, चन्दे से ३८,००० रु० इकट्ठा कर दिया। इतना ही नहीं, कथनी और करनी मे समानता, स्थिरता और निष्ठा हेतु अपने दोनो लाडले पुत्र हरिश्चन्द्र तथा इन्द्र को गुरुकुल मे प्रवेश करा दिया।

पुत्री का अन्तरजातीय विवाह कर सामाजिक क्राति का ध्वज लहरा दिया। पजाबी समाज मे इस क्राति से उथल पुथल मच गई, जाति बहिष्कार, हुक्का पानी बद, जाजम पर बैठने का निषेध आदि बातो को तनिकभी महत्व नहीं दिया। महर्षि दयानन्द के विचारो की आधी को और गति दे कर "आधी युग" स्थापित कर दिया। क्या हम उनके सच्चे आध्यात्मवादी उत्तराधिकारी बनने का दावा कर सकते है। जरा थोडा सा सोचे।

आधी युग की विशेषताए

जहा तक गुरुकुल शिक्षा, पठन पाठन प्रणाली, प्रबन्धन आदि का सम्बन्ध है, आधी युग के इस महापुरुष मे अनेक विशेषताए थी। महर्षि दयानन्द ने अपने सुप्रसिद्ध क्रातिकारी ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय एव चतुर्थ समुल्लास मे जिन विधेय-ग्रथो का अनुमोदन किया है, उसे अक्षरश अपनाते हुए उन्होने गुरुकुल शिक्षा के पाठ्यक्रम मे स्थान दिया। गुरुवर महर्षि दयानन्द ने जिन ग्रथो का निषेध किया था, उन्हे वहा तनिक भी स्थान नही दिया गया। मिस्टर मोहनदास करमचन्द गाधी को स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना अनुज माना था। एक बार जब मि० मो० क० गाधी गुरुकुल आये, तब बडे भाई महात्मा मुशीराम (कालान्तर मे स्वामी श्रद्धानन्द) ने अपना सम्पूर्ण भ्रातृ स्नेह गाधी पर उडेल दिया और वात्सल्य भाव से अपना 'महात्मा' शब्द भी सार्वजनिक सभा मे मच पर उन्हे समर्पित कर दिया। तभी से मिस्टर के स्थान पर 'महात्मा' शब्द गाधी के नाम के साथ मृत्यु केक्षण तक जुडा रहा। कतिपय नकली सैक्यूलरवादी इस ऐतिहासिक सत्य को स्वीकार करने का साहस नही कर पाते है। ऐसे ही नकली गाधी भक्तो ने इस 'महात्मा' शब्द के प्रदाता को विवादास्पद बना दिया। किन्तु सत्य असत्य के सम्बन्ध मे उपनिषदो मे ठीक ही कहा है – असत्य अतिशीघ्र अकुरित हो कर खूब फलता फूलता है, किन्तु समय आने पर जड (मूल) सहित सदा के लिए नष्ट हो जाता है, जबकि सत्य की जडे (मूल) बहुत गहरी होती हैं। वे प्रकृति के नियमानुसार विकसित हो कर फलती फूलती है और दृढता के साथ अपना मस्तक ऊचा उठाये रखता है। यहा सत्य असत्य में अन्तर होता है। यह वही स्वामी श्रद्धानन्द थे कि जब सन् १९१९ के भयकर हत्या काड के पश्चात्, जलियावाला बाग के नरसहार के पश्चात् किसी भी काग्रेसी की हिम्मत वहा काग्रेस अधिवेशन करने की नहीं हुई, तब जिन्होने स्वय अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का दायित्व ले कर काग्रेस का अधिवेशन सफल बनाया। आधुनिक सैक्यूलरवादियो के पास इस बात का कोई उत्तर नहीं है कि काग्रेस के इस बृहत् अधिवेशन को एक वीतराग आर्य सन्यासी श्रद्धानन्द ने राष्ट्रभाषा हिन्दी मे सम्बोधित कर सफलता मे चार चाद लगा दिये। यहा मै आर्य समाज के सर्वोच्च सगठन का ध्यान निम्नलिखित महत्वपूर्ण घटना की ओर आकर्षित करना चाहता हू। इसे रेखाकित समझना चाहिए।

आंधी युग की देन

कुछ लोग अपने युग को "गाधी युग" कह कर अत्यन्त गर्व करते है। गाधी युग के पूर्व भी एक श्रेष्ठ युग था, उस युग या उस काल खण्ड को "आधी युग" कहा जा सकता है। यदि महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रवर्तित 'आधी युग' नही लाया जाता, तो गाधी युग कदापि नही आ सकना था। इसलिए स्वामी श्रद्धानन्द जी 'आधी युग' (महर्षि दयानन्द युग) की देन थे। प्रत्येक आर्य को आधी युग की उपज कहना चाहिए।

असगरी बेगम महगी पडी

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा कराची की असगरी बेगम को 'शान्ति देवी' बना देने का साहस अति प्रशसनीय था। लेकिन उसकी कृपणता के कारण ही स्वामी श्रद्धानन्द का वध २३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली के नये बाजार स्थित बडे भवन की दूसरी मजिल मे दिन दहाडे हो गया। इस तथ्य को केन्द्रीय बिन्दु बनाकर इस लेखक ने आज से प्राय दो दशक पूर्व एक लेख 'सार्वदेशिक' मे लिखा। लेख का शीर्षक था "आखिर असगरी बेगम आर्य समाज को बहुत महगी पडी।" इस लेख की बात मुम्बई की किसी एक मुस्लिम अभिनेत्री, जो कि असगरी बेगम (शान्ति देवी की वशज) थीं, उन पर बहुत बुरी पडी। वे क्रुद्ध हो उठी तथा उसने (लेखक एव सार्वदेशिक पर) मुकदमा दायर करने का निश्चय कर लिया। सौभाग्य मे उनका वकील मुम्बई के एक बहुत पुराने आर्य कार्यकर्ता का पुत्र था। उसके घर पर ही इन्दौर के स्वर्गीय पडित वीरसेन जी वेदश्रमी अतिथि के रूप मे विराजमान थे। यह लेखक स्वर्गीय पडित जी का शिष्य तथा नगर का सुपरिचित पत्रकार था। अन्ततोगत्वा यह बात जब प० वेदश्रमी जी को उक्त वकील ने बताई, तब वे चिन्तित हो उठे। मुम्बई के काकडवाडी आर्य समाज के कार्यकर्ताओ के हस्तक्षेप से अन्तत' वे सारे कागज आदि मुस्लिम अभिनेत्री द्वारा वापस ले लिये गये। इस घटना का उल्लेख करना इसलिए आवश्यकसमझा गया है कि आज भी स्वामी श्रद्धानन्द के द्वारा असगरी बेगम बनाम शाति देवी की शुद्धि वर्तमान स्वतत्र भारत के कथित मुस्लिम सेक्यूलरो को आख की किरकिरी केसमान चुभ रही है। इतना ही नही, स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद को जब जेल मे बन्द कर रखा गया था, तब राष्ट्र के एक भूतपूर्व मुस्लिम शिक्षा मत्री ने उस हत्यारे के हाथ जेल जा कर चूमे थे। कालान्तर मे इसी मुस्लिम शिक्षामत्री ने अपनी पुस्तक 'इडिया विन्स फ्रीडम' के ४४ पृष्ठो मे सरदार वल्लभभाई पटेल की नीति की कटु आलोचना कर अपना कलुषित मन मस्तिष्क प्रकट किया था। आश्चर्य है कि ससद मे लगे इन्ही मुस्लिम शिक्षा मत्री की पुण्य तिथि पर इस्लाम के सिद्धान्त के विपरीत इनके चित्र पर फूलमालाए चढाई तथा फूल बरसाये जाते है, जो कि मूर्ति पूजा का एक अग है। यह पुष्प वर्षा मुस्लिम सासदगण भी सम्पन्न कर बुतपरस्त हो जाते है।

निर्भीक सन्यासी

स्वामी श्रद्धानन्द पर उन दिनो यह आरोप लगाये जाते थे कि वे अग्रेजी शासन से बहुत घबराते थे। इस कारण वे समय समय पर अनेक अग्रेज मत्रियो तथा अधिकारियो को गुरुकुल मे आमत्रित करते थे। ये ही अग्रेज मत्री अधिकारी इग्लैड लौट कर इग्लैड की हाउस आफ कामन्स (लोकसभा) मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली तथा गुरुकुल कागडी के अनुशासन, प्रबन्धन, शिक्षण, खेलकूद आदि की प्रशसा करते तथा स्वामी श्रद्धानन्द के गुणगान किया करते थे। किन्तु महर्षि दयानन्द का वह दीवाना तथा आधी युग का वह नेता इन सभी विपत्तियो मे तनिक भी नही घबराता था। एक लेखक ने उनके सम्बन्ध मे ठीक ही लिखा था "स्वामी श्रद्धानन्द के वाहन मे रिवर्स गीयर था ही नही।' उनकी गाडी कभी पीछे नही चलती थी। स्वामी श्रद्धानन्द के पैर जिस दिशा मे एक ओर चल पडते थे, उसी ओर आधी चलने लग जाती थी और उनके पैर थमने का नाम नही लेते थे। वे आधी युग के महान नेता थे, इस आधी युग के बाद ही 'गांधी युग' अस्तित्व मे आया।

प्रासगिकता

इस प्रकार गुरुकुल कागडी ने समाज और राष्ट्र की अनेक उल्लेखनीय सेवाये की। आज भी स्वामी श्रद्धानन्द के कार्य और विचार बहुत प्रासगिक है। देश मे जबकि नकली धर्मनिरपेक्षता का प्रचार किया जा रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द के कार्य ही पथ-निरपेक्षता को सही मार्गदर्शन दे सकते है।

'सुकिरण', अ/१३, सुदामा नगर,
इन्दौर-४५२००७ (म० प्र०)

बलिदान के क्षण

२३ जनवरी १९२६। दोपहर बाद साढे चार बजे के आसपास का समय था। नया बाजार (जिसे अब श्रद्धानन्द बाजार कहा जाता है) मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे स्वामी श्रद्धानन्द जी शौचादि से निवृत्त हो कर अपनी रोग शय्या पर लेटे थे। सेवक धर्मसिह आगन मे था। और स्वामी जी के निजी सचिव श्री धर्मपाल विद्यालकार दूसरे कमरे मे बैठे काम कर रहे थे।

सीढियो से ऊपर चढते एक मुसलमान दीख रहे युवक से धर्मसिह ने पूछा 'क्या चाहिए?'

'स्वामी जी से मिलना है,' आगन्तुक ने उत्तर दिया।

'क्या काम है?'

'उनसे धर्म के बारे मे कुछ बातचीत करनी है।'

'स्वामी जी बीमार है। इस समय वह किसी से नही मिलेगे', धर्मसिह ने सिपाही की सी रुखाई से कहा।

आवाज कमरे मे स्वामी जी ने सुन ली, पूछा 'कौन है?'

धर्मसिह कुछ कहे, इससे पहले ही आगन्तुक ने आगे बढ कर कहा 'मै हू। आपसे इस्लाम के बारे मे कुछ चर्चा करना चाहता हू।'

'भाई मेरे, तुमसे बात करके मुझे बडी खुशी होती, पर तुम देख रहे हो कि मै बीमार हू। पर अब जल्दी ही ठीक हो जाऊगा। कुछ दिन बाद आना तो बातचीत करेगे', स्वामी जी ने कहा।

धर्मसिह को आगन्तुक पसन्द नही आया। इसलिए वह भी सतर्क हो कर स्वामी जी के पास आ गया।

स्वामी जी का नरम रुख देख कर आगन्तुक, जिसका नाम अब्दुल रशीद था, कमरे के अन्दर घुस आया। उसने ऐसा दिखाया कि स्वामी जी की विवशता को उसने अनुभव कर लिया है। उसने कहा 'ठीक है। जैसा आप कहते है, मै फिर आ जाऊगा।'

पर उसने लौटने की कोई चेष्टा नही दिखाई। उल्टे उसने कहा 'क्या पीने को थोडा पानी मिलेगा?' स्वामी जी ने धर्मसिह से कहा 'इन्हे पानी पिला दो।'

धर्मसिह को आगन्तुक पर सदेह तो था, पर उसे यह ध्यान नही आया कि वह उसे अपने साथ ले जा कर पानी पिला दे। वह पानी लेने के लिए कमरे से निकला।

उसके निकलते ही अब्दुल रशीद ने कोट की जेब से पिस्तौल निकाली और बिल्कुल निकट से स्वामी जी की छाती पर गोलिया चला दी।

गोली की आवाज़ सुनते ही धर्मसिह तुरन्त पलटा और उसने भागते हुए अब्दुल रशीद को पकडने की चेष्टा की। अब्दुल रशीद की पिस्तौल मे गोलिया बाकी थी। उसने हाथ मोड कर धर्मसिह पर गोली चलाई, जो उसकी जाघ मे लगी। दर्द से धर्मसिह तडप उठा। उसकी पकड ढीली हो गई और वह छूट कर भागा।

पर गोलियो की आवाज कमरे मे बैठे धर्मपाल जी ने भी सुन ली थी। वह हट्टे कट्टे पहलवान जवान थे। उन्होने लपक कर अब्दुल रशीद को टगडी मारी तो वह औंधे मुह फर्श पर गिरा। इससे पहले कि वह सभले, धर्मपाल जी उस पर चढ बैठे। अद्भुत सूझबूझ से उन्होने हत्यारे के दाये हाथ को, जिसमे भरा पिस्तौल था, इस तरह कस कर दबा दिया कि वह उसे बाल बराबर भी हिला नही सकता था।

धर्मसिह ने सीढियो मे जा कर शोर मचा दिया 'पकडो, पकडो! इसने स्वामी जी को गोली मार दी है।'

गोली की आवाज़ से चौंके लोग इस पुकार को सुनते ही दौडते हुए आ पहुचे। धर्मपाल जी इतने भारी थे कि उनके नीचे दबा हत्यारा दिखाई ही नही पड रहा था। स्वामी जी के भक्त लोग हत्यारे का वही काम तमाम कर देने को बेचैन थे, पर समझदार लोगो ने सलाह दी कि तब सरकार बहादुर उल्टा इल्जाम हिन्दुओ पर ही लगा देगी, और मामला कुछ का कुछ बन जायेगा।

इसलिए धर्मपाल जी आधे घटे तक उसे जहा का तहा दबाये पडे रहे। जब पुलिस का गोरा अफसर आ गया और उसने हत्यारे के हाथ से पिस्तौल अपने कब्जे मे ले ली, तब धर्मपाल जी ने उसे छोडा।

श्रीमती सतोष परमार
६०-ए, कमला नगर, दिल्ली-७

जब श्रद्धानन्द जी ईर्ष्या के शिकार हुए

जब आग जलती है, तब प्रकाश होता है, गर्मी भी उत्पन्न होती है, पर साथ ही धुआ भी होता है, जो आखो मे काटता है और सास मे कष्ट देता है। श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल चलाया, इससे उनका बडा नाम हुआ। गुरुकुल सफलतापूर्वक चल निकला और श्रद्धानन्द जी आर्य समाज के सबसे बडे नेता बन गये, इससे कई प्रमुख आर्य नेताओ को बहुत ईर्ष्या होने लगी। यह ईर्ष्या कालेज पार्टी के लोगो को नही, अपितु श्रद्धानन्द जी की अपनी गुरुकुल पार्टी के लोगो को थी। ये थे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान राय ठाकुरदत्त धवन, लाला रलाराम और उनके कुछ साथी।

गुरुकुल की समृद्धि से जलन

गुरुकुल को बने अभी कुल पाच ही बरस हुए थे, परन्तु छात्रो की सख्या बढ रही थी, और चन्दा खूब आ रहा था। गुरुकुल की भूमि पर पक्की, बढिया इमारते बन रही थी। लोगो को यदि विश्वास हो कि उनके दिये धन का सदुपयोग होगा, तो भारत मे दानदाताओ की कमी न कभी रही, न कभी होगी। यह स्थिति सभा के उच्च पदाधिकारियो को असह्य हो उठी।

२६ मई १९०५ को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा की बैठक मे सात सदस्यो ने यह प्रस्ताव पेश किया कि इस बात की जाच के लिए एक समिति बनाई जाये कि 'लाला मुशीराम पर सार्वजनिक कार्यो के लिए दिये गये धन का सही उपयोग करने के बारे मे विश्वास नही किया जा सकता, क्योकि उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा का १४ हजार रुपया गबन कर लिया है। लाला मुशीराम किसी भी धार्मिक सस्था मे किसी भी बडे पद पर नियुक्त किये जाने के योग्य नही है, क्योकि वह अपने विरोधियो पर मनगढन्त झूठे अभियोग लगाने की आदी है, जिससे जनसाधारण मे वे बदनाम हो जाये।'

इस प्रस्ताव मे मुशीराम जी के नाम से 'महात्मा' शब्द हटा कर 'लाला' शब्द का प्रयोग किया गया। कहा गया कि वह 'महात्मा' कहे जाने योग्य नही है। वह गुरुकुल के लिए सभा द्वारा दिये गये धन से ऐश कर रहे है।

समर्थक भी थे

श्रद्धानन्द जी के समर्थक भी बहुत लोग थे। महाशय कृष्ण जी और मेहता जैमिनि उनमे प्रमुख थे। कृष्ण जी के अपने अखबार 'प्रकाश' और मेहता जैमिनि के अखबार 'सुधारक' मे श्रद्धानन्द जी के पक्ष मे लेख छपते थे। इनका प्रतिवाद करने के लिए विरोधियो ने 'हितकारी' नामक अखबार निकाला, जिसमे श्रद्धानन्द जी को खूब कोसा जाता था।

प्रस्ताव अस्वीकृत

अन्तरग सभा मे उक्त प्रस्ताव के पक्ष मे १७ वोट आये, जबकि विपक्ष मे ४४ वोट थे। प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया। कोई और होता, तो इतने वोट से जीत जाना उसके लिए प्रसन्नता की बात होती, परन्तु महात्मा मुशीराम के लिए यह डूब मरने की बात हो गई कि उन पर किसी ने ऐसे आरोप लगाये। उनके दिल पर इतनी चोट लगी कि सात ही दिन मे उनके बाल सफेद हो गये। पन्द्रह दिन वह अपने बगले मे एकान्तवास मे रहे लोगो से मिलना जुलना बन्द। इन दिनो मे उन्होने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम था —एक दुखी दिल की पुरदर्द दास्ता। इसमे उन्होने विस्तार से अपनी सफाई दी और उन सब आरोपो का खडन किया, जो विरोधियो ने उन पर लगाये थे।

महात्मा मुशीराम जी ने गुरुकुल अपने प्रयत्न से स्थापित किया था। उसे उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को सौप दिया। सभा कभी भी उनके उच्च आदर्शो को समझ नही पाई और सदा उनके काम मे रोडे अटकाती रही। महात्मा जी का उद्देश्य श्रेष्ठ मानव, (शूर, निर्भीक, बलिदानी, तपस्वी नागरिक) तैयार करना था, सभा आर्य समाज के उपदेशक तैयार करना चाहती थी। यही टकराव था। जब सन् १९०७ मे गुरुकुल मे कालेज की श्रेणिया खोली गई, जिसमे अग्रेजी, आधुनिक विज्ञान आदि विषय पढाये जाने थे, तब महाशय कृष्ण जी जैसे उनके समर्थक भी उनके विरोधी बन गये।

अच्छा यह होता कि गुरुकुल के सचालन के लिए एक अलग न्यास बनाया जाता, जिसमे व्यापक और उदार दृष्टिकोण वाले लोग सदस्य होते।

वल्लभगढ आर्य महासम्मेलन मे जाते समय मार्ग मे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल सैक्टर ३७ फरीदाबाद के शिक्षको द्वारा सभा प्रधान पद्मश्री जी० पी० चोपडा जी का स्वागत।

पत्र जगत्

न सर्वसम्मत - न बहुमत सार्वदेशिक का चुनाव

आर्य समाज की सर्वोच्च सत्ता– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव ३ नवम्बर २००१ को आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली मे सम्पन्न हुआ। मै वोटर तो नहीं था, लेकिन जैसा कि मुझे शका थी, तमाशा देखने के लिए दिल्ली गया था। लगभग १२ बजे जब हम लोग दीवान हाल पहुचे, तब वहा पुलिस लगी हुई थी और दरवाजो पर ताले लगे थे। किसी को अन्दर नहीं घुसने दिया गया। कई लोग वापिस चले गये, जो वोटर भी थे और चुनाव मे भाग लेने आये थे। अगर सभी लोग अन्दर जाते और प्रेमपूर्वक बैठ कर कोई सर्वसम्मत रास्ता निकालते, तो कुछ भी असम्भव नहीं था। सर्वसम्मति से ही चुनाव हो जाता। और यदि वोट के द्वारा भी होता, तो सम्भव है सौहार्द एव प्रेम पूर्वक होता। कम से कम चुनाव तो कहलाता। न सर्वसम्मत हुआ, न बहुमत, इसे आप क्या कहेगे?

प्रतिनिधियो को अन्दर नहीं घुसने दिया

मैने कुछ लोगो से पूछा कि जो लोग चुनाव मे भाग लेने आये थे, उन्हे अन्दर क्यो नही जाने दिया? पता चला ये लोग एक घटे लेट आये थे, इस लिए इन्हे अन्दर हाल मे नहीं जाने दिया। इसलिए उन्हे वोट देने से भी वचित कर दिया गया। प्रश्न पैदा होता है कि किसी कारणवश कोई व्यक्ति अगर एक घटा लेट हो जाता है, तो क्या वह १२ बजे के बाद चुनाव मे भाग नही ले सकता? जबकि लोकसभा और विधान सभाओ तथा नगरनिकायो के चुनावो मे ३ और ४ बजे तक भी वोटिग होती रहती है। लेकिन समझ के बाहर है कि १२ बजे ही चुनाव का समय समाप्त कर दिया गया। यह कौन सा नियम है? यह सारा तमाशा देख कर अन्तरात्मा मे बहुत दु ख हुआ। हृदय मे बार बार विद्वानो की वे पक्तिया याद आ रही थी 'जमाना गौर से सुन रहा था, हमी सो गये दास्ता कहते कहते।' वास्तव मे आर्य समाज मे बडी आशाए थी और देश को आर्य समाज की महती जरूरत थी।

आर्य समाज की प्रतिष्ठा

एक जमाना था जब अग्रेज़ अफसर भी आर्य समाज के लोगो की इज़्ज़त करते थे। अगर किसी मुकदमे मे एक आर्य समाजी की गवाही हो जाती थी, तो दूसरे गवाह की ज़रूरत ही नही समझी जाती थी। न्यायाधीश कह देते थे कि एक आर्य समाजी की गवाही काफी है। यह था ऋषि दयानन्द के मिशन, आर्य समाज का चरित्र। अब क्या हो गया इन आर्यसमाजियो को, जो चरित्रहीन भ्रष्टाचारी राजनेताओ की तरह पदो के लिए आपम मे लड रहे है? क्या इस देश की गदी राजनीति की हवा से धार्मिक और सामाजिक सगठन भी अछूते नहीं बचेगे? दरअसल धार्मिक और सामाजिक सगठन देश के मार्गदर्शक होते है, यदि वही मार्ग से भटक गये, तो देश को रसातल मे जाने से कोई रोक नही सकता।

आर्य समाज देश का प्रहरी

आर्य समाज देश का प्रहरी था। लेकिन पहरेदार ही यदि चोर हो जाये, तो देश फिर कैसे बच सकेगा। बात कडवी है पर सत्य है। जब आर्य समाज मे चरित्रवान और विद्वानो का बोलबाला था, तब पदो के लिए इतनी मारामारी नही थी। परन्तु जैसे जैसे आर्य समाज की सम्पत्ति बढती गई, चरित्र घटता चला गया।

सम्पत्ति हडपने की चाल

लगता है, अब आर्य समाज के अन्दर अनार्य लोगो का जमघट इकट्ठा हो गया है। वे लोग आर्य समाज की सम्पत्ति को पदो के माध्यम से हडपना चाहते है या उसका दोहन करना चाहते है। कुछ लोग आर्य समाज के द्वारा अपना राजनैतिक उल्लू सीधा करते है। इस प्रकार की स्थिति देश के लिए तो हानिकारक है ही, आर्य समाज के लिए भी अत्यन्त अशोभनीय है। त्यागी, तपस्वी और चरित्रवान् विद्वान् मनीषियो के लिए यह चिन्ता और चिन्तन का विषय है। श्री योगेश्वर देव हरियाणा वालो ने इस चुनाव के पहले ही लिखा था कि रोग की सही दवा होनी चाहिए। असल बात वास्तव मे यही है किइस प्रकार की चुनाव पद्धति रोग की सही दवा नहीं है। चाहे वह सस्था हो या राजनीति, अथवा कोई भी पार्टी और दल, सबमे अन्दर ही अन्दर कटुता पैदा होती है। यह विदेशी पद्धति है, जो हमारे देश पर लादी गई है। इसमे बाहुबली और धनबलियो को ही सफल होते देखा गया है। सीधे सच्चे लोगो का तो आजकल चुनाव लडना और विजयी होना सम्भव ही नहीं है।

चरित्रवान् लोगो का वरण किया जाये

ध्यान देना चाहिए कि राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ ने अगर इस प्रकार की चुनाव प्रक्रिया अपनाई होती, तो सघ कभी का बिखर गया होता। आर्य समाज को भी सघ का अनुकरण करना चाहिए। योग्य और चरित्रवान् व्यक्तियो को मनोनीत करने की प्रक्रिया अपनानी चाहिए।

समाज का पुनर्गठन

यही स्थिति रही, तो आर्य समाज का भविष्य चिन्तनीय है। समय रहते आर्य समाज के वरिष्ठ लोगो को इस गम्भीर विषय पर ध्यान देना अति आवश्यक है। मेरा सुझाव यह है कि आर्य समाज के बुद्धिजीवियो की राष्ट्रीय स्तर की एक बैठकहो, जिसमे निर्वाचन के मुद्दे तय होना चाहिए। दूसरी बात महत्वपूर्ण यह है कि ऊपर से नीचे तक सारी ही सभाओ का पुनर्गठन होना चाहिए। सार्वदेशिक सभा तो विश्व सभा है, लेकिन राष्ट्रीय (भारतीय) आर्य प्रतिनिधि सभा कहा है? यदि है तो प्रान्तीय सभाओ को, इसी से जोडा जाना चाहिए और यदि नही है, तो अविलम्ब भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन करना चाहिए। इसी प्रकार जिला सभाए नही है। जिले भर की सारी आर्य समाजो को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा से जोडना उपयुक्त होगा। प्रान्तीय सभाओ का भी पुनर्गठन होना चाहिए, क्योकि अब कई नये राज्य बन गये है। राज्यवार प्रान्तीय सभाए हो, तभी कुछ व्यवस्था सही बन सकेगी। विश्व सभा कार्य विश्व स्तर पर करे और विश्व स्तर पर ही उसका निर्वाचन होना चाहिए। भारतीय सभा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करे और सार्वदेशिक के अन्तर्गत रहे। प्रान्तीय सभाए भारतीय सभा के अन्तर्गत रह कर कार्य करें, और जिला सभाए प्रान्तीय सभा के अन्तर्गत रहना चाहिए।

आर्य समाज के कर्णधार इस प्रकार की व्यवस्था यदि कर सके, तो सम्भवत यह पदलोलुपता की समस्या किसी हद तकनिपट सकती है। ऐसा करने से बहुत सारे पद और नये निकल आयेगे। एक पक्ष सार्वदेशिक मे कार्य करे और दूसरा पक्ष भारतीय सभा के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर के कार्य करे। ईश्वर से प्रार्थना है कि आर्य नेताओ को सद्बुद्धि प्रदान करे।

सीताराम आर्य, दयानन्दपुर, बैरसिया रोड, जिला विदिशा (म० प्र०)

आर्य समाज की रक्षा के लिए आर्यजन जागें

सार्वदेशिक का निर्वाचन ३ नवम्बर को हो गया। दो सार्वदेशिक बन गयीं। सत्ता की दलगत होड जनतन्त्र की नियति के साथ जुडी हुई है। निर्वाचन की दलगत लडाई मे दक्षिण, वाम, उचित अनुचित, भद्र अभद्र, शिव अशिव का चिन्तन यदि दुर्लभ दिखाई पडे, तो यह भी युग प्रवृत्ति, निर्वाचन परम्परा की प्रकृति और हमारे उपनियमो मे निहित तात्कालिक समस्याओ से निपटने के अदूरदर्शी प्रावधानो का फल ही समझ मे आता है। किसी भी कालखण्ड की कोई भी घटना अपने अतीत की भूमिका से अछूती नही रहती। जो कुछ आज हो रहा है, वह दशाब्दियो से चल रही सगठन की आन्तरिक गतिविधि, क्रियाकलापो का समन्वित परिणाम है।

आज के कालखण्ड मे सगठन की डोर जिन वर्गो-दलो (व्यक्ति नही) के हाथ मे दिखाई पड रही है, उनमे सगठन के प्रति समर्पण कम, पद और स्वार्थ के प्रति लिप्सा, कभी कभी लोभ लाभ भी अधिक है। फलत छल-छद्म-दुश्चक्र आदि का प्रवेश विरल नही, सरल हो गया है। प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ मे दो-दो समानान्तर सगठन अनेक प्रान्तो मे हो गये है। अभी कुछ वर्षो से सार्वदेशिक सभा मे भी समानान्तर दो सगठन होने लगे है। प्रान्तीय समानान्तर सगठन भी चिन्ता के विषय है और सार्वदेशिक के दो समानान्तर सगठन अत्यधिक चिन्ता के विषय है। जिसके हाथ मे कार्यालय, बैंक, पत्र आदि होते है, वह प्रभावी हो जाता है। किन्तु सगठन के दो चेहरो के दो रूप एक दूसरे के विरोधी हो जाते है। आलोचनाओ प्रत्यालोचनाओ का बाजार गर्म रहने लगता है। जो शक्ति सगठन के उत्थान मे लगनी चाहिए, वह एक दूसरे को बदनाम करने मे लगने लगती है। फलत सर्वनाशी, सत्यानाशी मुसलयुद्ध होने लगता है। सगठन अवनति नहीं, अध पतन, विनाश की ओर उन्मुख हो जाता है।

समानान्तर नेतृत्व का विभाजन आगे भी हुआ है। डी० ए० वी० और गुरुकुल या गुरुकुल का पाठ्यक्रम, पजाब मे प्रान्तीय और प्रादेशिक। सार्वदेशिक के पूर्व चुनाव के साथ दो समानान्तर सार्वदेशिक अस्तित्व मे आई, किन्तु इस बार केनिर्वाचन की परिणति सगठन के लिए अधिक आत्मघाती जान पड रही है। दोनो धडे प्राणवान है, अत सगठन (पुरुष) निष्प्राण नही, तो अल्पप्राण, निर्बल, अल्प प्रभाव, अल्प सामर्थ्य का हो जायेगा। जिस दल के हाथ कार्यालय भवन, बैंक पत्र आदि है, उसकी सुविधाए निश्चित ही अधिक है। महाप्राण या अल्पप्राण, टकराने के लिए शक्ति दोनों ओर है। लगता है कि सगठन शरीर बीच मे फट कर दो भागो मे खडा हो रहा है। प्रान्तीय सगठनो मे भी प्राय अनेक प्रान्तो मे दो-दो दल है। अब लग यह रहा है कि प्रान्तो का एक एक दल सार्वदेशिक के एक एक दल से जुड जायेगा और इकाई से सार्वदेशिक तक सगठन के दो फलक खडे हो जायेगे। बौद्धो का लोप हीनयान महायान के विभाजन से हुआ था। हमारी भी लगभग वही स्थिति होती लग रही है। अत एकीकरण के लिए गम्भीर प्रयास की आवश्यकता है। इस प्रयास की आवश्यकता तो सर्वसम्मत होगी। किन्तु प्रयास का क्या रूप बने, इस सम्बन्ध मे हमारे ध्यान मे दो मार्ग लगते है

(१) कुछ ४-६ सन्यासी विद्वान् दोनो सगठनो के ३-३, ४-४ प्रतिनिधियो के साथ ३-४ परोपकारिणी के अधिकारियो को ले कर बैठे और एकऔर एकता प्रयास की चेष्टा की जाय। एकता का क्या फार्मूला बने, यह वही तय कर के एकता के रूप को रूपायित करे। सयोजन का कष्ट सन्यासी मडल के श्री मंत्री जी उठाने की कृपा करे। अथवा,

(२) परोपकारिणी सभा महर्षि की उत्तराधिकारिणी है। महर्षि की यह सगठनात्मक वाटिका आत्मघाती द्वन्द्व मे फस गयी है। इस परिस्थिति मे महर्षि की उत्तराधिकारिणी का दायित्व बनता है कि वह सक्रिय हो कर एक प्रयास की चेष्टा करे। प्रयास की चेष्टा का रूप वे ही निश्चित करे।

समय की शिला पर मधुर चित्र इतने, किसी ने बनाये, किसी ने बिगाडे।

बन्धुओ,

महर्षि हमारे सगठनरूपी शरीर के पिता है और आर्य समाज हमारी माता है। उनके यश की रक्षा आर्यो का धर्म है। कहीं ऐसा न हो कि पिता के यश शरीर और माता के सगठन शरीर की हत्या का पाप हमे लग जाय। प्रयास करना हमारा परम पुनीत आवश्यक कर्तव्य है।

उमाकान्त उपाध्याय, आर्य समाज कलकत्ता

२३ दिसम्बर को जन्म दिवस पर

आर्य समाज के निष्ठावान सेवक डा० मेहरचन्द महाजन

न्यायमूर्ति श्री महाजन के नाम से विख्यात डा० मेहरचन्द महाजन एक बहुपार्श्वीय हीरे के समान थे, जिनके हर पार्श्व से निराली द्युति विकीर्ण होती थी। एक ओर वह भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने, तो दूसरी ओर वह सन् १९४७ मे उस समय जम्मू कश्मीर राज्य के प्रधानमत्री थे, जिस समय पाकिस्तान के सैनिक कबाइलियो के भेष मे कश्मीर पर धावा बोल कर उसे बलात् पाकिस्तान मे मिलाने के लिए लूटमार कर रहे थे। आज जो जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अग है, उसका सम्पूर्ण श्रेय डा० महाजन को ही है। डी० ए० वी० सस्था से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। सन् १९१३ मे २४ वर्ष की आयु मे वह डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के अवैतनिक सचिव बने और २० वर्ष तक उस पद को सभालते रहे। सन् १९३५ से १९६४ तक वह डी० ए० वी० का० प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष रहे। इस अवधि मे देश का विभाजन हुआ। डी० ए० वी० की विशाल सम्पत्तिया पाकिस्तान मे रह गई। परन्तु डा० महाजन के नेतृत्व मे यह सस्था न केवल पुनर्जीवित हो गई, अपितु पहले से भी कही अधिक विशाल और सुगठित बन गई। वह सुदक्ष प्रशासक होने के साथ साथ नम्र इतने थे कि आर्य समाज के उत्सवो मे अनेक बार उन्हे दरिया बिछाते देखा गया था।

अन्धविश्वास का कुपरिणाम

डा० महाजन का जन्म सन् १८८९ मे हिमाचल प्रदेश के कागडा जिले के गाव टिक्का नगरोहटा मे हुआ था। उनके पिता श्री ब्रजलाल महाजन अच्छे सम्पन्न पुरुष थे। परन्तु किसी ज्योतिषी ने उन्हे बता दिया कि यह पुत्र उनके लिए अशुभकारी होगा। इस कारण उन्होने बालक मेहरचन्द को पालने के लिए एक राजपूत आया श्रीमती रगटू को सौप दिया। जैसे मथुरा मे जन्म ले कर कृष्ण गोकुल मे यशोदा के यहा पले, वैसे ही मेहरचन्द जी गाव मे भेड बकरी चराते हुए बडे हुए।

दिन फिरे

जब मेहरचन्द जी बारह वर्ष के थे, तब उनके बडे भाई का देहान्त हो गया। जिन ज्योतिषी जी ने बालक को अशुभ घोषित किया था, उन्होने ही कुछ सकटमोचन अनुष्ठान करके बालकमेहरचन्द को वापस बुलाने का रास्ता भी निकाल दिया। मेहरचन्द जी फिर अपने सम्पन्न पिता के घर वापस लौट आये।

मेहरचन्द जी की शिक्षा दीक्षा पहले धर्मशाला मे और उसके बाद पालमपुर मे हुई। कागडा भूकम्प के बाद वह लाहौर भेजे गये, जहा वह श्री बख्शी टेकचन्द जी की देखरेख मे रहे। बख्शी जी प्रतिष्ठित वकील थे और आर्य समाज के भी प्रमुख नेता थे। उनके कारण मेहरचन्द जी आर्य समाज के उत्सवो मे जाने लगे। वहा उनका परिचय लाला लाजपतराय, लाला साईदास, महात्मा हसराज, श्री दीवानचन्द जैसे उत्साही कार्यकर्ताओ से हुआ, और मेहरचन्द जी भी आर्य समाज के रग मे रग गये।

वकालत मे सफलता

सन् १९१२ मे उन्होने कानून की परीक्षा पास की, और गुरदासपुर मे वकालत शुरू की। ५ वर्ष बाद वह लाहौर आ गये। वकालत मे उन्हे अच्छी सफलता मिली। सन् १९३४ मे उन्हे लाहौर हाईकोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त किया गया।

वकालत का कार्य करने के साथ साथ मेहरचन्द जी डी० ए० वी० तथा आर्य समाज की गतिविधियो से निरन्तर जुडे रहे। पजाब नेशनल बैक की स्थापना और सचालन मे उनका योग रहा। सन् १९३४ तक वह इस बैक के निदेशक बोर्ड मे तो रहे ही, निदेशक भी रहे।

आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता

सन् १९३९ मे हैदराबाद मे आर्य समाज ने सत्याग्रह छेडा था, क्योकि निजाम शाही ने आर्य समाज पर कठोर प्रतिबन्ध लगा दिये थे और अनेक अत्याचार किये थे। इस आन्दोलन मे आर्य समाज तथा निजाम सरकार मे समझौता कराने मे न्यायमूर्ति श्री महाजन ने सहायता की। वह आर्य नेताओ से जेल मे मिले और इग्लैड जा कर वहा के प्रधानमत्री को आर्य समाज का पक्ष समझाया।

सन् १९४७ मे हुआ देश विभाजन एकबडा राजनीतिक भूकम्प था। उस समय भारत पाकिस्तान सीमा तय करने के लिए रेडक्लिफ आयोग बनाया गया था। उसकी सहायता के लिए एक समिति बनाई गई थी। उसमे एक सदस्य न्यायमूर्ति श्री महाजन भी थे। उनकी इस समिति मे उपस्थिति भारत के लिए अत्यन्त हितकारी रही।

कश्मीर की समस्या

पाकिस्तान बनते समय जम्मू कश्मीर राज्य की स्थिति कुछ पेचदार थी। हिन्दुस्तान का विभाजन हिन्दू मुस्लिम के साम्प्रदायिक आधार पर हुआ था। माना यह गया था कि हिन्दूबहुल क्षेत्र भारत को और मुस्लिम बहुल क्षेत्र पाकिस्तान को मिले। पजाब और बगाल प्रान्तो का भी विभाजन काफी कुछ इसी आधार पर किया गया था।

पर देशी राज्यो की स्थिति इससे भिन्न थी। देशी राज्यो के शासको की ब्रिटिश सम्राट् से सीधी सधिया थीं। अत उन राज्यो के शासको को यह अधिकार दिया गया था कि वे भारत या पाकिस्तान मे से जिसके भी साथ मिलना चाहे, मिल सकते है। या चाहे, तो स्वतत्र भी रह सकते है।

जम्मू कश्मीर की सीमाए भारत और पाकिस्तान दोनों से छूती थी। वहा की अधिकाश प्रजा मुस्लिम थी, पर शासक राजा हरिसिह हिन्दू था। यदि राजा हरिसिह तत्काल मन बना कर भारत मे सम्मिलित होने की घोषणा कर देता, तो कोई समस्या न होती। परन्तु राजा अपने नासमझ सलाहकारो की सलाह पर स्वतत्र कश्मीर की योजनाए बनाता रहा। स्वतत्र कश्मीर भारत और पाकिस्तान दोनो की पूर्ण सहमति के बिना टिक नही सकता था। पाकिस्तान स्वतत्र कश्मीर का नाम भी सुनना नही चाहता था।

जम्मू कश्मीर के प्रधानमत्री

परिणाम यह हुआ कि १५ अगस्त १९४७ को विभाजन हो जाने के बाद भी कश्मीर स्वतत्र राज्य बना रहा। उस सक्रान्ति काल मे राजा हरिसिह ने अपने प्रधानमत्री श्री रामचन्द्र काक को हटा कर श्री मेहरचन्द महाजन को अपना प्रधानमत्री बनाया। रामचन्द्र काक पाकिस्तान से कुछ साठगाठ मे लगा था।

श्री महाजन ने कश्मीर का भारत मे सम्पर्क बढाया। २४ अक्टूबर १९४७ को पाकिस्तान (प्रेरित कबाइलियो) ने कश्मीर पर धावा बोल दिया और बढते हुए श्रीनगर से १२ मील दूर तक आ पहुचे। तब राजा हरिसिह ने श्री महाजन को दिल्ली भेजा कि वे कश्मीर की रक्षा के लिए भारत से सहायता मागे।

नेहरू जी से तनातनी

श्री जवाहरलाल नेहरू कश्मीर को अपनी पूर्वज भूमि मानते थे। पर राजा हरिसिह से वह बुरी तरह चिढे हुए थे। श्री महाजन ने उनसे भेट की तो श्री नेहरू ने बहुत बेरुखी से बात की। श्री महाजन ने कहा कि स्थिति ऐसी है कि कश्मीर को सैनिक सहायता तुरन्त भेजी जानी चाहिए। यदि आप वह न भेजते हो, तो वैसा कहिये। तब मै पाकिस्तान जा कर श्री जिन्ना से बात करू। मुझे अपने राज्य को ध्वस्त नही होने देना है। इस पर श्री नेहरू आपे से बाहर हो गये और उन्होने श्री महाजन को कमरे से बाहर चले जाने को कहा। और श्री महाजन कमरे से बाहर निकल गये।

उसके बाद स्वाभाविक था कि श्री महाजन सीधे हवाई अड्डे जाते और कराची जा कर श्री जिन्ना से बातचीत करते। कुछ न कुछ समझौता हो ही जाता और कश्मीर समस्या हल हो गई होती।

पर ऐसा होना नहीं था। बरामदे मे कुछ कदम चलने के बाद सामने से आते हुए सरदार वल्लभ भाई पटेल और शेख अब्दुल्ला मिल गये। उनके पूछने पर श्री महाजन ने सारा वृत्तान्त और अपना आगे का कार्यक्रम बता दिया। उन दोनो ने श्री महाजन को समझा बुझा कर शान्त किया और श्री नेहरू से बात की। लार्ड माउटबेटन की सलाह से तय हुआ कि यदि कश्मीर का राजा भारत के साथ अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर कर दे तो तुरन्त सेना वहा भेजी जा सकती है, क्योकि तब जम्मू कश्मीर भारत का अग बन जायेगा।

कश्मीर का भारत में विलय

राजा ने रातो रात अधिमिलन पत्र पर हस्ताक्षर किये और सवेरे तक भारतीय सेना की टुकडिया श्रीनगर हवाई अड्डे पर जा उतरी। हमलावरो को पीछे धकेल दिया गया।

नेहरू जी और शेख अब्दुल्ला ने न केवल राजा हरिसिह को अपदस्थ किया, अपितु श्री महाजन को भी जम्मू कश्मीर के प्रधानमत्री पद से हटा दिया। परन्तु जून १९४८ मे वह उच्च न्यायालय मे न्यायाधीश नियुक्त किये गये। तीन महीने बाद ही सितम्बर १९४८ मे वह भारत के सघीय न्यायालय के (जो बाद मे उच्चतम न्यायालय कहलाया) के न्यायाधीश बने। ४ जनवरी १९५४ को वह उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने और २२ दिसम्बर १९५४ को उस पद से सेवा निवृत्त हुए।

सरकारी सेवा मे रहते हुए श्री महाजन आर्य समाज के सेवा कार्यो मे भाग लेते रहे थे। सेवा निवृत्ति के बाद तो वह पूरी तरह आर्य समाज और डी० ए० वी० सगठन को समर्पित ही हो गये। उनके प्रयत्नों से दिल्ली मे हसराज कालेज, मन्दिर मार्ग पर दयानन्द माडल स्कूल, पी० जी० डी० ए० वी० कालेज का निर्माण हुआ, चडीगढ मे डी० ए० वी० कालेज बना। आज जो देश भर मे डी० ए० वी० शिक्षा सस्थाओ का जाल बिछा हुआ है, उसमे न्यायमूर्ति श्री मेहरचन्द महाजन का भारी योगदान है।

निरहकार व्यक्तित्व

श्री महाजन का व्यक्तित्व निराला था। वह स्वभाव से सौम्य एव निरहकार थे। परन्तु किसी भी उचित कार्य के लिए लडना और अडना उन्हे आता था। उसमे समझौते की गुजाइश कही नही थी। कालिदास ने राजा दिलीप के लिए जो **'अधृष्यश्चाभिगम्यश्च'** (हर कोई उससे मिल तो सकता था, पर कोई भी उसे दबा नही सकता था) विशेषण 'अधृष्य' और 'अभिगम्य' प्रयुक्त किये है, वे श्री महाजन पर सही बैठते थे।

डी० ए० वी० का० प्रबन्ध समिति ने उनकी स्मृति मे उनके गृह नगर कागडा मे खोले गये कालेज का नाम श्री महाजन के नाम पर रखा है। चडीगढ मे भी उनके नाम पर एक कन्या महाविद्यालय खोला गया है।

सन् १९६७ मे उनके सफल जीवन का अवसान हुआ। उस समय उनकी आयु ७८ वर्ष थी।

महात्मा मुंशीराम के गुणी अध्यापक

❑ श्रीमती सुनीति

मुशीराम जी ने सत्रह वर्ष की आयु मे बनारस के क्वीन्स कालेज में द्वितीय वर्ष मे प्रवेश लिया था। 'क्वीन्स 'कालेज', जिसे आज लोग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के नाम से जानते है, स्थापत्य की दृष्टि से भी बहुत सुन्दर और बडा है। इसके साथ ही अपनी पढाई और ज्ञान विज्ञान के लिए भी यह बहुत प्रसिद्ध था। इलाहाबाद या आगरा कोई भी विद्यालय इसकी तुलना मे नही ठरते थे।

वेद पडित प्रोफेसर ग्रिफिथ

श्री राल्फ टी ऐच ग्रिफिथ यहा के प्रिसिपल थे। वे कवि हृदय थे। उन्होने चारो वेदो का अनुवाद इग्लिश पद्य मे किया था।

ये तथा अन्य कई अध्यापकगण कैसे थे और व विद्यार्थियो की पढाई के ऊपर कितना ध्यान देते थे, जिनके कारण विद्यालय का मापदण्ड इतना ऊचा था? विद्यार्थियो के साथ उनकी कितनी आत्मीयता थी तथा हिन्दू मुस्लिम का कोई भेदभाव नही था?

मुशीराम जी ने अपने अध्यापको के बारे मे जो कुछ लिखा, उससे इसकी झाकी मिलती है। प्रस्तुत है कुछ प्रसग।

वेदो का अग्रेजी पद्यानुवाद

ग्रिफिथ साहब विद्याव्यसनी थे। उन्हे हिन्दी साहित्य से भी प्रेम था। चारो वेदो के साथ वाल्मीकि रामायण का अनुवाद भी उन्होने इग्लिश पद्य मे किया था। ग्रिफिथ साहब का कद बहुत छोटा था— कुल पाच फीट का। परन्तु शरीर से ये खूब स्वस्थ और फुर्तीले थे। उन्होने अपनी टमटम गाडी खूब ऊची बनवाई थी। एक बार उसे घुमाते हुए इनका गला सडक की तार मे फस गया। उसे छुडाते छुडाते नीचे गिरे, तो टाग ही टूट गई। बेचारे लगडे हो गये, पर उन्होने हिम्मत नही हारी। अपनी उस टूटी टाग के लिए स्पेशल एडी वाला जूता बनवाया, ताकि देखने वालो को कुछ पता न चले। उनका सेवक भी उनके जैसा बौना था। ग्रिफिथ साहब कपडे पहनने के बहुत शौकीन थे। नया कोट या पैन्ट अगर जरा भी फिट न हो, तो ये उसे दुबारा हाथ नही लगाते थे। उसे इनके सेवक ही पहनते थे। उनकी खूब मौज रहती थी।

अपना बगला इतना सजा कर रखते थे कि बहुत से लोग उसे देखने आते। उसमे नरम गद्दो वाली काउच और कुर्सिया बिछी थी। जिन पर बैठने मे सबको मजा आता था। इन्होने विवाह नही किया था। स्वभाव मे ये बहुत नाजुक थे। किसी को अपने से बहुत अन्तरगता नही बढाने देते थे। बहुत धीरे बोलते थे। परन्तु जब पढाते थे तो इतना स्पष्ट कि इनका बोला एक एक शब्द स्पष्ट सुनाई देता था।

मुशीराम जी केअग्रेजी के प्रोफेसर बीमार हो गये, तब इन्होने उनकी क्लास मे पढाया। इनका पढाना वे कभी नही भूले। इनके चले जाने पर इनकी जगह डाक्टर थी‶वी जर्मनी से आये थे। वे भी बडे विद्याव्यसनी तथा परिश्रमी थे। गर्मियो की रात मे लैम्प जला कर देर तक पढते लिखते रहते। एक बार एक व्यक्ति ने उनसे पूछा कि "आप रात मे क्या पढते है?" उन्होने बताया कि वे अपने ज्ञान को ताजा बनाये रखने के लिए रात्रि मे विद्याभ्यास (गणित का) करते है।

गणित के अध्यापक रौजर्स

गणित के प्रोफेसर मि० रौजर्स भी अपने विषय मे निपुण थे। उनके पढाये हुए लक्ष्मीनारायण मिश्र सहायक प्रोफेसर बन गये।

इग्लिश के प्रोफेसर किबल साहब का कद ग्रिफिथ साहब से भी छोटा था परन्तु वे स्वभाव के बडे हसमुख थे। उनसे पढते हुए विद्यार्थी का जी कभी नही उकताता था।

इनकी जगह चार्ल्स डाड प्रोफेसर बनकर आये। ये पहले पल्टन मे क्लर्क थे। फिर स्कूल मे अध्यापक बने। इसके बाद उन्नति करते हुए कालेज मे प्रोफेसर बन गये। ये उच्चारण की शुद्धता पर बहुत जोर देते थे।

इतिहास के प्रोफेसर इग्लैड से किसी की सिफारिश पर आये थे। इन्हे इतिहास बिल्कुल नही आता था। समय समय पर विद्यार्थी इनकी पोल खोलते रहते थे।

श्री बालकृष्ण भट्ट

अग्रेज़ी उन दिनो मुख्य भाषा समझी जाती थी। इसके दो भारतीय सहायक प्रोफेसर थे। बालकृष्ण भट्ट ऐम ए, दूसरे उमाचरण मुखर्जी। दोनो ही अपने विषय मे बहुत योग्य थे।

सस्कृत शिक्षक श्री रामजसन

सस्कृत के उपाध्याय रामजसन जी थे। इन्होने वाल्मीकि रामायण का अनुवाद करते समय ग्रिफिथ साहब की बहुत सहायता की थी। इसलिए इनके बडे पुत्र लक्ष्मीशकर मिश्र ऐम ए करते ही प्रोफेसर बन गये। दूसरे उमाशकर मिश्र ताजपुर के राजा के बेटो को जा कर पढाने लगे। तीसरे रमाशकर मिश्र ऐम ए करते ही बनारस मे गणित के सहायक प्रोफेसर बने। फिर अलीगढ मे ऐग्लो मोहम्मडन कालेज मे गणित के मुख्य प्रोफेसर बन कर चले गये।

स्नेह भरे मौलवी साहब

फारसी अरबी के मुख्य उपाध्याय को सब मौलवी साहब कह कर जानते थे। वे अपने शिष्यो को 'बरखुरदार' कह कर पुकारते थे। मौलवी साहब जरा सी देर के लिए भी कमरे से बाहर जाते कि लडके खूब शोर मचाते थे। मौलवी साहब लौट कर ये शोर शराबा देख कर कहते 'हश्श्श्' सब लोग अपनी अपनी जगह बैठ जाते। अगर फिर भी कोई शरारत करता तो वे कहते 'कामता प्रसाद बिच पर खडे हो जाओ।' कामता मुस्कराता हुआ एक पैर बेंच पर और एक पैर जमीन पर रख कर कहता "मौलवी साहब अनखुर्दा खता अज बुजुरगा अता।' अर्थात् छोटे अपराध करते है। बडे उन्हे माफ कर देते है। मौलवी साहब कहते 'अच्छा बैठ जाओ।' एक नटखट लडके ने ऐसा कई बार किया। मौलवी साहब ने कहा 'हर रोज ईदनेस्त किहलवा खुरद कैसे।' लडका था हाजिर जवाब। हाथ बाध कर बोला, मेरे बुजुर्गवार मौलवी साहब, करम होये, तो मारा कर्द गुस्ताख।" मौलवी साहब की आखे डबडबा आई, बोलने का साहस न हुआ। हाथ के इशारे से कहा 'बैठ जाओ।' पढाने के समय भी शोर मचता रहता, परन्तु जब कोई आवश्यक नोट देना होता तो मौलवी साहब कहते 'बरखुरदार, अब मतलब की बात आई। जरा होश गोश से सुनो।' तब सन्नाटा हो जाता। उस समय रुमाल भी गिरता, तो उसकी आवाज भी सुनाई देती। जब वे नोट लिखा चुकते तो बच्चो की चहचहाट फिर शुरू हो जाती।

पिता समान प्रेमी

मुशीराम जी लिखते है 'जब मौलवी साहब के पिता के समान प्यार की याद आती है, तो दिल भर आता है। हिन्दू मुसलमानो के झगडे बडा कष्ट देते है। सन् १९२३ मे चन्द्रनगर मे फ्रेंच चीफ जस्टिस लुइस जकालियट ने काशी पहुच कर लिखा था 'मेरा बजरा बनारस मे गगा नदी पर बने शिव जी के घाट पर बाधा गया। मैने उतर कर देखा कि वहा हिन्दू और मुसलमान बिना किसी भेदभाव के एक साथ नहा रहे थे।' यह सब मौलवी साहब जैसे लोगो की बदौलत था।

मुख्याध्यापक श्री मथुराप्रसाद मिश्र

बनारस के स्कूल के मुख्याध्यापक थे श्री मथुराप्रसाद मिश्र। अग्रेजी मे वे अपना नाम ऐम पी ऐम लिखते थे। उनकी आकृति कुछ विचित्र थी। वे छह फीट से भी अधिक लम्बे थे। सावला रग, बहुत दुबले पतले। उनके शरीर के एक एक अजर पजर को गिना जा सकता था। सिर पर पडितो जैसी पगडी, पैरो मे सफेद जुराबो पर भारतीय जूते, चढी हुई धोती, जिसका छोर खूब लम्बा होता था। अगरखा और अगरखे के ऊपर बहुत पुराने समय का, लगभग मान्धाता के समय का लम्बा चोगा फैला कर ऊपर से बिना खोले हुए दुपट्टे को कन्धे पर डाले लम्बे लम्बे डग बढाते जब वे आते, तब किसे विश्वास होता था कि ये डाक्टर वैलेन्टाइन के समान प्रसिद्ध भाषाभाषी, अपूर्व विद्वान् के अपूर्व शिष्य है, जो बनारस के कालेजियेट स्कूल के हैडमास्टर है। परन्तु जब उनकी आखो पर दृष्टि पडती, तब सहज ही समझ मे आ जाता था कि धाराप्रवाह अग्रेजी और हिन्दी बोलने वाला सस्कृत साहित्य का भी उतना ही ज्ञान रखने वाला व्यक्तित्व और किसका है?

प्रबन्ध मे भी दक्ष

केवल वाणी मे ही नही प्रबन्ध करने मे भी ये इतने ही निष्णात थे कि विद्यार्थी और अध्यापक दोनो उनकी निपुणता के कायल थे। दोनो पर उनका तेज छा जाता था। जब कभी वे अपने कमरे से हाल की ओर निकलते, तो कालेज के कमरो मे भी सन्नाटा छा जाता था। वे पढाने के समय सदा खडे रहते। हरेक विद्यार्थी को लगता कि वे गहरी सतर्क दृष्टि से उसे देख रहे है। वे न तो बी ए थे न ऐम ए। पर जब कोई साहित्यसेवी या अग्रेजी के बडे अफसर आ जाते तो उनके शुद्ध उच्चारण, ललित भाषा का प्रभाव देख कर चकित हो जाते थे। सारी बातचीत ये ही करते।

इनका लिखा हुआ त्रैभाषिक कोश स्कूल मे काम देता। एक वर्ष तक मुशीराम जी को भी इनसे पढने का सौभाग्य मिला। वे कहते थे कि इन्ही के कारण बनारस के विद्यार्थियो की इग्लिश इतनी शुद्ध होती थी।

२७, राजपुर रोड, दिल्ली–५४

सेवा का चमत्कार

इलाहाबाद मे मुशीराम जी ने सुना था कि त्रिवेणी पार एक सिद्ध महात्मा रहते है। रात मे एक शेर उनके पैर छूने आता है। अपने एक मित्र के साथ मुशीराम जी उस महात्मा के दर्शन के लिए गये। कौपीनधारी साधु समाधिस्थ बैठे थे। ये दोनो प्रणाम करके बैठ गये। रात मे तीन बजे शेर आया और महात्मा के पैर चाटने लगा।

पूछने पर महात्मा ने बताया कि यह शेर घायल हो गया था और चल नही सकता था। तब मैने इसे पानी पिलाया और घाव पर लेप लगाया। तब से यह मेरे पास आने लगा।

घायल शेर की सेवा करने के लिए भी बडा कलेजा चाहिए।

शिक्षा और विज्ञान के नाम पर पाखण्ड का प्रचार

❑ डा० भवानीलाल भारतीय

सभी विचारशील पुरुषो की धारणा है कि शिक्षा और विशेषत वैज्ञानिक शिक्षा केद्वारा मनुष्य की चिन्तनशक्ति और उसके विवेक को बढ़ावा मिलता है। विज्ञान का लक्ष्य ही सृष्टि मे व्याप्त सत्य का उद्घाटन करना है। स्वामी दयानन्द ने विज्ञान को 'पदार्थ विद्या' का नाम दिया था और शिक्षा मे पदार्थ विद्या का पाठ्यक्रम रखने की पुरजोर हिमायत की थी। यद्यपि स्वामी जो के युग मे भौतिक विज्ञान ने अधिक उन्नति नही की थी, तथापि स्वामी जी चाहते थे कि इस देश के नवयुवक नवीन विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी से परिचित हो तथा राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि मे उसका उपयोग करे।

फलित ज्योतिष पाठ्यक्रम में

आज भारत सरकार के शिक्षा मत्री डा० मुरली मनोहर जोशी, जो स्वय भौतिक विज्ञान के विद्वान् है, विश्वविद्यालयो मे फलित ज्योतिष, पौराणिक कर्मकाण्ड तथा वैदिक गणित के नाम से प्रसिद्ध कुछ कल्पित फार्मूलो को पढाने की जबरदस्त वकालत कर रहे है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विभिन्न विश्वविद्यालयो को आर्थिक सहायता देने की बात कही है, जो उपर्युक्त विषयो को अपने पाठ्यक्रम मे रखते है। यह भी कहा गया है कि ये सभी विषय वैकल्पिक है और किसी छात्र को इन्हे पढना अनिवार्य नही है।

विपक्ष द्वारा विरोध

उधर काग्रेस तथा वामपथी विचारधारा के दल शिक्षा के क्षेत्र मे प्रविष्ट किये जाने वाले नये विषयो का विरोध कर रहे है तथा इसे शिक्षा का भगवाकरण (Saffronisation of Education) कह कर इसकी आलोचना कर रहे है। आश्चर्य तो यह है कि भगवा या 'काषाय' का शब्दार्थ भी न समझने वाली काग्रेस अध्यक्षा सोनिया गाधी पानी पी पी कर सरकार को इसलिए कोस रही है कि वह शिक्षा का भगवाकरण कर रही है।

भगवा रग सम्मानसूचक

हम इस बात को प्रारम्भ मे ही स्पष्ट कर देना आवश्यक समझते है कि भगवा रग को बदनाम करने वाले इस राजनैतिक मुहाविरे 'भगवाकरण' के प्रयोग पर हमे सख्त आपत्ति है। भारतीय सस्कृति मे भगवा रग आदरसूचक है। वह त्याग, वैराग्य, सेवा तथा विश्व मैत्री का प्रतीक है। आर्य जाति के साधु सन्त, त्यागी, तपस्वी, महात्मा एव सन्यासी भगवा रग के वस्त्र पहनते है। शकराचार्य से लेकर स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थ पर्यन्त सन्यासियो के वस्त्र भगवा होते थे। समर्थ रामदास भी भगवा वस्त्रधारी थे। आज भी हमारा मस्तक भगवा वस्त्रधारी साधु सन्यासी के सामने स्वत ही झुक जाता है। अत पवित्र और आदरणीय समझे जाने वाले भगवा रग को राजनैतिक चोला पहनाना तथा उसे बदनाम करना भारतीय सस्कृति का अपमान है। क्यो हमारे साधु, सन्त, महन्त और मण्डलेश्वर इस बात को लेकर क्षुद्र राजनीतिज्ञो को फटकार नहीं लगाते कि वे एक दूसरे पर कीचड बेशक डाले, किन्तु त्याग और वैराग्य के प्रतीक भगवा रग को बीच मे कदापि न लाये।

जन्मपत्र शोक पत्र

किन्तु हमारे इस चिन्तन के साथ कुछ और सवाल जुडे है। आर्य समाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द ने फलित ज्योतिष को मिथ्या पाखण्ड बताया है। उनकी दृष्टि मे जन्मपत्र 'शोक पत्र' है तथा शीघ्र बोध, मुहूर्त चिन्तामणि आदि फलित ज्योतिष के ग्रथ अनार्ष है फलत त्याज्य है। गणित ज्योतिष की स्थिति इससे भिन्न है। गणित ज्योतिष पूर्णतया वैज्ञानिक है और उसके द्वारा निकाले गये निष्कर्ष पूर्णतया सत्य होते है। इस सदर्भ मे स्वामी जी लिखते है "दो वर्ष मे ज्योतिषशास्त्र सूर्यसिद्धान्तादि जिसमे बीज गणित, अकगणित, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है इसको यथावत् सीखे। परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र, जन्मपत्र, राशि, मुहूर्त आदि के फल के विधायक (फलित ज्योतिष) ग्रथ है उनको झूठा समझ के न पढे और न पढावे।" (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)। स्वामी जी ने शीघ्र बोध के 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी' आदि बाल विवाह विधायक श्लोको की कटु आलोचना की है। फलित ज्योतिष के द्वारा ससार मे अधविश्वास, पाखड, भाग्यवाद, अकर्मण्यता, पुरुषार्थहीनता को तो बढावा मिलता ही है, झूठे ज्योतिषियो के पाखण्ड जाल मे फस कर लोग अपने धन, स्वास्थ्य तथा आत्मिक बल को खो बैठते है। स्वामी सत्यप्रकाश जी एक बहुत तथ्यपूर्ण बात कहते थे। पचास-साठ वर्ष पूर्व छपने वाले हिन्दी तथा अन्य भाषाओ के समाचार पत्रो मे कही भी साप्ताहिक फल, राशियो के अनुसार व्यक्तियो के सम्बन्ध मे भारतीय कथन आदि नही छपते थे। किन्तु अब प्रत्येक दैनिक अथवा साप्ताहिक पत्र का पाठक सबसे पहले साप्ताहिक राशिफल को देखता है तथा उसके आधार पर झूठे सच्चे सपने देखने लगता है। पत्रो से हम यह अपेक्षा रखते है कि वह पाठको मे बुद्धिवाद तथा विवेक को जागृत करेगा। किन्तु इससे उल्टा हो रहा है। कादम्बिनी जैसी पत्रिकाए भूत, प्रेत तथा तत्र मत्रो की मिथ्या कथाओ से भरे विशेषाक छाप कर पाठको को पाखण्ड और अधविश्वास के गर्त मे ढकेलती है।

फलित ज्योतिष मिथ्या है

हमारा निवेदन है कि गणित ज्योतिष (Astronomy) तो सदा से ही विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रमो मे रहा है। स्वामी जी ने तो इस विज्ञान के अन्तर्गत एरिथमेटिक, ज्यामिति, बीजगणित, यहा तक कि भूगर्भ विद्या तक का समावेश कर उसे व्यापक अर्थवत्ता प्रदान की है। फलित ज्योतिष के खडन मे प० वेदव्रत मीमासक ने जो ग्रथ लिखे है, उनसे स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि भविष्य कथन, हस्तरेखा, सामुद्रिक विद्या, मुहूर्त विचार, दिशा शूल तथा दिनो का शुभारम्भ मानना, नक्षत्रो के शुभाशुभ फलो को मानना, नवग्रहो को शुभाशुभ समझना, राशियो का विचार, कुण्डली विचार आदि फलित ज्योतिष के अन्तर्गत आने वाले सभी विषय मिथ्या तथा कपोलकल्पित है। यहा विस्तार मे न जाकर यही कहना उचित है कि आज के वैज्ञानिक युग मे फलित ज्योतिष जैसे पाखड को बढाने वाले विषयो को विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रम मे समाविष्ट करना छात्रो को मध्य युग मे ढकेलने तुल्य है। इस फलित विद्या को सीख कर हमारे नवयुवक भी सडकछाप ज्योतिषी बन कर ससार को ठगते रहेगे। ज्योतिष के नाम पर पाखड तथा पापाचार को बढाने वाले कथित ज्योतिषी डा० नारायणदत्त श्रीमाली का कच्चा चिट्ठा यदि लोग पढेगे, तो जान सकेगे कि आज के इस बुद्धिवाद के युग मे भी भोले भाले लोगो को ज्योतिष के नाम पर मूर्ख बनाना कितना सरल है।

पौरोहित्य विद्या

अब पौराहित्य विद्या को ले। डा० जोशी तथा उनके समानधर्मा लोगो का कथन है कि इस पौराणिक विद्या को पढ कर नवयुवको को रोज़गार मिलेगा। हमारा निवेदन है कि पौरोहित्य तथा कर्मकाण्ड के अन्तर्गत इस पाठ्यक्रम मे क्या पढाया जायगा? क्या उन्हे आश्वलायन, पारस्कर, गोभिल आदि गृह्यसूत्रो की शिक्षा दे कर वैदिक कर्मकाण्ड सिखाया जायगा? क्या उन्हे दयानन्द सरस्वती प्रणीत सस्कारविधि के आधार पर सोलह सस्कारो का प्रशिक्षण दिया जायगा? ऐसा नही है। उन्हे गणेशपूजन, घट स्थापन, नवग्रह पूजन, शिव, विष्णु आदि पचदेवो की पूजा, दुर्गासप्तशती के अनुसार हवन, (जिसमे 'गर्जगर्ज क्षण मूढ' मधु यावत् पिबाम्यहम्' श्लोक के विनियोग मे यज्ञवेदी मे शराब की आहुति का विधान है) मृतक श्राद्ध, शिवपिडी पर पचगव्यो की धारा आदि पौराणिक कृत्य सिखाये जायेगे। इस विधि को सीखे पुरोहित विवाहो को वैसा ही तमाशा बनायेगे, जैसा हम हिन्दी फिल्मो मे हिन्दू विवाह तथा हिन्दू पुरोहित की दुर्दशा देखते है।

यही पुरोहित मदिरो मे मूर्ति स्थापना करायेगे, पाषाण प्रतिमाओ मे देवताओ का आवाहन करेगे। पत्थरो मे प्राण प्रतिष्ठा का आडम्बर कर लोगो का धन हरण करेगे। यदि गरुड पुराण बाच कर यजमानो के धन का हरण करना ही पुरोहितो का इति कर्तव्य माना जाये तब तो इस पौरोहित्य प्रशिक्षण से तौबा कर लेनी चाहिए।

गणित विद्या की वैदिक शाखा

अब गणित विद्या की कथित वैदिक शाखा को देखे। कुछ वर्ष पहले पुरी के एक दिवगत शकराचार्य भारती कृष्णतीर्थ रचित वैदिक मैथेमेटिक्स नामक अग्रेजी पुस्तक छपी। इसमे वैदिक गणित के कुछ सूत्रो को उद्धृत कर गणित के कुछ प्रसगो की चर्चा की गई। जब मेरे एक परिचित ने ये वैदिक सूत्र मुझे बताये और कहा कि ये अथर्ववेद के मत्र है। मैने इन सूत्रो को देखते ही कह दिया कि ये अथर्ववेद के मत्र नही है। भारती कृष्णतीर्थ के कल्पित वाक्य है। रुडकी विश्वविद्यालय के किसी प्राध्यापक ने इस वैदिक गणित का प्रचार किया। इसकी अनेक कार्यशालाए आयोजित की तथा इस पुस्तक का प्रचार किया। हमारा निवेदन है कि स्वामी दयानन्द ने गणित विद्या का मूल वेदो मे दर्शाया है तथा इसी के आधार पर परवर्ती गणितज्ञो ने अपने ग्रथो की रचना की है। गणित जैसी विद्या को किसी दायरे मे बाधना इस विद्या का अपमान करना है। जोड, बाकी, गुणा भाग, ज्यामिति, त्रैराशिक आदि के नियम सार्वकालिक तथा सार्वदेशिक है।

वास्तुशास्त्र

अब वास्तु शास्त्र के नाम का एक नया पाखड चला है और पढे लिखे लोग भी इस धूर्त विद्या के शिकार हो रहे है। वचक वृत्ति के लोगो ने वास्तु शास्त्र के नाम पर जो ठग विद्या चलाई है उसमे बडे बडे धनीमानी, कारखानो के मालिक, उच्च पदस्थ सरकारी अफसर तथा साधारण मध्य वित्त के लोग ठगे जा रहे है। यदि कोई वास्तविक वास्तु शास्त्र सचमुच कुछ है तो वह सिविल इजीनियरिंग ही है जिसमे भवन निर्माण तथा तत्सम्बद्ध विषयो का विवेचन रहता है। घरो, कारखानो तथा फैक्टरियो के निर्माण मे इन्ही वास्तुविदो (इजीनियरो) का परामर्श मान्य होना चाहिए। किन्तु धनी लोगो को ठगने वाले तथाकथित वास्तुशास्त्री बने बनाये भवनो और

(शेष पृष्ठ १० पर)

(पृष्ठ १ का शेष)

महान गुरु दयानन्द के ....

दिनो मे, जब पजाब और दिल्ली मे सरकार हिन्दुओ और मुसलमानो पर गोलिया चला रही थी, तब स्वय मुस्लिम नेताओ और जनता ने आग्रह करके श्रद्धानन्द जी को जामा मस्जिद मे भाषण देने के लिए बुलाया और उन्होने मिम्बर (प्रवचन पीठ) से अपना भाषण दिया।

स्वामी दयानन्द निर्भीक थे। अकेले ही सबका सामना करने की हिम्मत रखते थे। उनका विश्वास था कि ईश्वर उनके साथ है। वह उनका रक्षक है। वैसा ही प्रबल ईश्वर विश्वास श्रद्धानन्द जी मे भी था। गुरुकुल खोलने का विचित्र कार्य उनके दृढ ईश्वर विश्वास के कारण ही पूरा हो सका। जब दिल्ली मे घटाघर पर स्वामी जी ने मणिपुरी सैनिको की सगीनो के सामने छाती खोल दी थी, तब भी ईश्वर विश्वास ही उनको निर्भीक बनाये हुए था। जिसे ईश्वर पर ऐसा विश्वास हो जाता है, ईश्वर को भी उसकी रक्षा करनी ही पडती है।

विदेशी शासन अप्रिय

अग्रेज़ो का विदेशी शासन स्वामी दयानन्द जी और स्वामी श्रद्धानन्द जी, दोनो को ही अत्यन्त अप्रिय था। जो लोग स्वामी दयानन्द जी को मात्र समाज सुधारक, कुरीति निवारक मानते है, उनसे हमारा मतभेद है। स्वामी दयानन्द मूलत स्वराज्य और स्वसस्कृति के आराधक थे। सन् १८५७ का महाविद्रोह उनके पूर्ण यौवन काल मे हुआ था उस समय उनकी आयु ३३ वर्ष की थी। उसकी विफलता से वह बहुत छटपटाये थे। उनकी यह छटपटाहट उनके 'सत्यार्थप्रकाश' तथा अन्य ग्रथो मे जगह जगह फूट पडी है। विद्वान् लोग कैसे उसे आखो से ओझल कर देते है? विद्रोहोत्तर उस आतक भरे समय मे जितना जोर से विदेशी शासन का विरोध किया जा सकता था, उतना दयानन्द जी ने किया, आर्य समाज के १० साल बाद बनी काग्रेस से कही अधिक मुखर हो कर किया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी भी कहते रहे कि आर्य समाज राजनीतिक सस्था नही है, और गुरुकुल तो मात्र एक शिक्षण सस्था है। परन्तु अग्रेज़ी सरकार ने कभी इस पर विश्वास नही किया। श्री सी० ऐफ० ऐड्रयूज़ न होते, तो गुरुकुल सन् १९१८-१९ मे ही बद हो गया होता। सरकार की इतनी क्रूर दृष्टि थी। श्री ऐड्रयूज की मध्यस्थता से उत्तर प्रदेश के अग्रेज गवर्नर श्री जेम्स मेस्टन और बाद मे वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड और सासद श्री रैम्जे मैकडोनल्ड गुरुकुल मे आये और वहा किये गये स्वागत सत्कार से सतुष्ट हो कर लौटे। श्री मैकडोनल्ड तो इतने अभिभूत हो गये कि उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द को ईसा की जीवन्त प्रतिमूर्ति ही कह दिया।

इस सबके बाद भी यह कह देना उचित होगा कि गुरुकुल मे जो शिक्षा दी जाती थी, वह अग्रेज़ो के विरुद्ध घृणा उपजने वाली थी। अधिकाश अध्यापक उग्र राष्ट्रवादी थे और छात्रो मे प्रचड राष्ट्रीयता और आत्म बलिदान की भावना भरी जाती थी। वायसराय का जो गुरुकुल मे स्वागत किया गया और वहा इग्लैड के राजा-रानी के चित्र टागे गये, उससे छात्रो मे बहुत रोष फैला।

बाद मे तो स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल छोड कर खुल्लमखुल्ला राजनीति मे कूद पडे, जिससे प्रकट हो गया कि उनका असली उद्देश्य विदेशी शासन को उखाड फेकना था। उसी के लिए वह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली द्वारा त्यागी, तपस्वी, कष्टसहिष्णु, आत्म बलिदानी स्वातत्र्य योद्धा युवक तैयार करना चाहते थे। स्वामी श्रद्धानन्द काग्रेस के सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलनो मे भी अग्रणी रहे।

स्वातत्र्य सग्राम मे इतना भाग लेने के बाद भी स्वाधीनता मिलने के बाद आर्य समाज इतना गौण क्यो हो गया? स्वातत्र्य योद्धाओ मे ७५ प्रतिशत आर्य समाजी थे, तो सासदो और विधायको मे वे ६० प्रतिशत भी क्यो नही रहे?

इसके दो प्रमुख कारण रहे। आर्य नेता आर्य जनता से उल्टी दिशा मे चले। आर्य नेता पद रायबहादुर, राय साहिब आदि उपाधि प्राप्त सरकारी पिट्ठुओ और सरकारी कर्मचारियो ने हथिया लिये। उन्होने शोर मचाया कि आर्य समाज को राजनीति से दूर रहना चाहिए। आर्य जन व्यक्तिश राजनीति मे भले ही भाग ले, परन्तु सस्था के रूप मे आर्य समाज राजनीति से दूर रहे। इसके परिणामस्वरूप आर्य समाज को सस्था के रूप मे विदेशी सरकार का समर्थक मान लिया गया।

दूसरा कारण रहा काग्रेस की तुष्टीकरण नीति। गाधी-नेहरू गुट का कहना था कि अग्रेज़ो के विरुद्ध मुसलमानो का समर्थन पाने के लिए हमे मुसलमानो की हर शर्त मान लेनी चाहिए। इस नीति से लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, वीर सावरकर, मदनमोहन मालवीय आदि अनेक राष्ट्र नेता सहमत नहीं थे। उन्हे काग्रेस से निकल जाना पडा। गाधी-नेहरू गुट और अग्रेज़ी सरकार, दोनो ने मुस्लिम साम्प्रदायिकता को भडकाया। ज्यो ज्यो मुसलमान अधिकाधिक कट्टर होते गये, त्यों त्यों आर्य समाज उनकी आखो मे खटकने लगा। आर्य समाज प्राचीन भारतीय सस्कृति का पोषक था और मुसलमान अरबी फारसी सस्कृति यहा लाना चाहते थे। काग्रेस उन्हे मनाने रिझाने मे लग गई। मुसलमान ९ करोड थे, आर्य समाजी एक करोड भी नही थे।

स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द, दोनो ही देश और समाज का हित इसमे समझते थे कि मुसलमानो को आत्मसात् कर लिया जाये। परन्तु अग्रेज़ी सरकार ने उन्हे पृथक् मताधिकार दे कर पाकिस्तान की नीव डाली। काग्रेस ने मुसलमानो को आखे मूद कर रियायते दी, फिर भी उनकी मागे सुरसा के मुह की तरह बढती गई। परिणाम हुआ देश का विभाजन।

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान शुद्धि आन्दोलन के कारण हुआ। स्वामी जी मानते थे कि देश और देशवासियो का हित इसमे है कि जिनके पूर्वज हिन्दू थे, उन्हे फिर हिन्दू बना लिया जाये। इसके लिए न काग्रेस तैयार थी, न अग्रेज़ तैयार थे, न सारे विश्व को मुस्लिम बनाने के व्रती मुसलमान। मज़े की बात यह है कि कट्टरपथी हिन्दू भी ऐसे शुद्ध हुए मुसलमानो को पूरी तरह अपनाने के लिए तैयार नही थे। स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज के सम्मिलित प्रयत्नो से एक लाख मल्काने राजपूतो को शुद्ध करके हिन्दू बनाया गया था। उसके विरुद्ध मुसलमानो ने और गाधी जी तक ने उत्तेजक लेख लिखे। श्रद्धानन्द जी को हत्या की धमकिया मिलने लगीं।

जो सैनिको की सगीनो से नही डरा, वह धमकियो से कहा डरने वाला था? स्वामी जी को निमोनिया हो चुका था, उसमे भी उनकी मृत्यु हो सकती थी। परन्तु उनके भाग्य मे रोग से नही, अपितु हत्यारे की गोली से मृत्यु लिखी थी।

उनकी शव यात्रा मे जितना जनसमूह एकत्र हुआ, उतना उससे पहले किसी अन्त्येष्टि मे नहीं हुआ था।

डा० योगेश्वर देव
१३७, विराट नगर, पानीपत (हरियाणा)

(पृष्ठ ९ का शेष)

शिक्षा और विज्ञान के नाम पर ......

कर्मशालाओ को तोडने के लिए कहते है, लाखो का नुकसान कराते है तथा वास्तु शान्ति के नाम पर धनिको के धन का अपहरण करते है। मेरे सामने राजस्थान पत्रिका के एक रविवारीय अक मे प्रकाशित डा० भोजराज द्विवेदी का 'रेमेडियल वास्तु शास्त्र' शीर्षक एक लेख है। अग्रेजी शब्द 'रेमेडियल' और सस्कृत शब्द 'वास्तुशास्त्र' से बना यह वर्णसकरी शीर्षक लेख आद्यन्त आख के अधे और गाठ के पूरो को ठगने का महामत्र है। इस वचक शास्त्र के कुछ सूत्रो को देखे

१ शुद्ध चादी का बना अभिमत्रित श्रीयत्र स्थापित करने से आपके घर या कारखाने मे लक्ष्मी (धन) की वर्षा होगी।

२ मारुति यत्र दुर्घटनाओ से बचाता है।

३ सूर्य यत्र राँजकोप से बचाता है।

४ घुडनाल यत्र— मकान को बुरी नज़र से बचाता है।

५ कृत्यानाशक यत्र— तात्रिक टोने टोटके तथा अभिचार से बचाता है।

६ वास्तु मगलकारी तोरण— बुरी आत्माओ तथा अशुभ योनियो से बचाता है।

मूढ विश्वास

आश्चर्य है कि आज के वैज्ञानिक युग मे पढे लिखे लोग ऐसे मूढ विश्वासो और अध धारणाओ को मानते है। ऐसे ही लोग जलाभिषेक तथा शिव मत्र के जाप से मन्दिर का निर्माण करने की बात करते है।

निष्कर्षत हम कहना चाहते है कि हमारा आचार्य दयानन्द विशुद्ध तर्काधारित बुद्धिवाद का प्रचारकथा। वह मनुष्यो मे वैज्ञानिक सोच और विवेक पैदा करना चाहता था। जिसे आप वैज्ञानिक चिन्तन या सोच कहते है, स्वामी जी उसे सृष्टिक्रम से अविरोधी तथ्य कहते है। सृष्टिक्रम के विरुद्ध मिथ्या विश्वासो और चमत्कारो के वे घोर विरोधी थे। आर्य समाज और आर ऐस ऐस तथा विश्व हिन्दू परिषद् की अवधारणाओ मे मौलिक विरोध है। हम मूर्तियो और मन्दिरो मे किचित् मात्र श्रद्धा नही रखते। पाषाण पूजको और ध्वजपूजको (स्वामी जी इन्हे लक्कडपूजक कहते थे) से हमारा प्रत्यक्ष विरोध है। किसी ईट पत्थर के मन्दिर का निर्माण हमारे जातीय गौरव की वृद्धि नही करता। किसी विध्वस्त इमारत या पुराने खण्डहरो को तोडने मे हमे कोई गौरवानुभूति नही होती। उसी प्रकार करोडो व्यय कर अभ्रस्पर्शी मन्दिरो का निर्माण भी आडम्बर और पाखण्ड को प्रश्रय देने की क्रिया है। हम मूर्तियो की स्थापना करना तथा उनमे पाषाण पूजन को प्रोत्साहन देना अनार्योचित मानते है। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश मे जहा मूर्तिपूजा का शास्त्रीय प्रमाणो से खण्डन किया है, वहा उसे देश की सामाजिक, आर्थिक तथा राष्ट्रीय उन्नति का घातक सिद्ध किया है। इस प्रसग मे उन्होने गिना कर मूर्तिपूजा के सोलह दोष वर्णित किये है। स्वामी जी की दृष्टि मे मूर्तिपूजा दुराचार है (द्रष्टव्य— उपदेशमजरी का अन्तिम व्याख्यान)। फलित ज्योतिष, पौराणिक पौरोहित्यवाद तथा वास्तु शास्त्र इसी मूर्ति पूजा की अवैध सन्ताने है।

८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

समाचार जगत्

वल्लभगढ़ में क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन में यज्ञशाला मे यज्ञ का एक दृश्य।

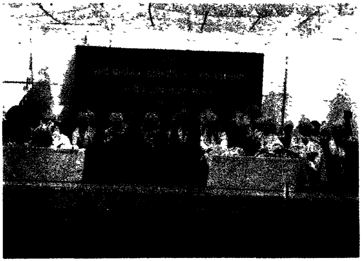

क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन बल्लभगढ़ मे मच पर बैठे आर्य नेतागण।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के तत्वावधान मे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, वल्लभगढ मे २ १२ २००१ को क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमे हज़ारो नर-नारी सम्मिलित हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता डा० राजकुमार चौहान ने की। सम्मेलन के मुख्य अतिथि पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा थे। उनको एक शोभा यात्रा के साथ डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल मे लाया गया। उन्होने नवनिर्मित यज्ञशाला तथा डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, वल्लभगढ के भवन का उद्घाटन किया।

श्री ऐस० ऐस० चौधरी जी ने आये हुए अतिथि महानुभावो का स्वागत किया। श्रीमती राजकरण अरोडा ने स्वामी दयानन्द जी के स्त्री जाति पर उपकारो की विस्तार से चर्चा की और कहा कि यदि स्वामी दयानन्द जी इस देश मे न आते, तो नारी जाति की और दुर्दशा होती।

आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने वेद मार्ग पर चलने का उपदेश दिया और कहा कि यदि लोग वेद मार्ग पर नही चलते तो विश्व मे शान्ति नही हो सकती। परमात्मा ने हम लोगो का विधान बनाया है—वेद। स्वामी दयानन्द की मान्यता थी कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। स्वामी दयानन्द ने अपना पूरा जीवन भारतीय समाज को पाखडो, अधविश्वासो व कुरीतियो से मुक्त करने मे लगाया।

श्री राजेन्द्र सिह बीसला (विधायक बल्लभगढ) का प्रभावशाली भाषण हुआ और उन्होने कहा कि वह चुनाव जीते है, तो आर्य समाज के बलबूते पर। यदि देश मे सभी आर्य समाजी इकट्ठे हो कर जाए, तो देश मे आर्यसमाजियो का राज्य हो जाए।

गुरुकुल धरारी के स्वामी शिवानन्द जी ने कहा कि यदि ससार से आतकवाद को मिटाना है, तो हमे इसका डट कर मुकाबला करना चाहिए। प्रि० मोहनलाल जी ने उपसभा हरियाणा के कार्य की प्रशसा की और कहा कि देहली से बाहर इतना बडा सम्मेलन उन्होने आज तक नही देखा।

श्री चमनलाल आर्य मत्री एव श्री गोपाल शर्मा सहमत्री ने उपसभा हरियाणा की वार्षिक रिपोर्ट दी। इस वर्ष फरीदाबाद मे एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई, जिसका श्रेय प्रि० आर्यवीर भल्ला जी को है। महेन्द्रगढ मे आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका श्रेय प्रि० अशोक शर्मा जी को है। पुण्डरी मे आर्य समाज की शताब्दी वर्ष मनाया गया जिसका श्रेय प्रिं० कुलदीप गुप्ता और श्री गोपाल शर्मा जी को है। नारायणगढ के दो दिन के आर्य महासम्मेलन का श्रेय प्रि० सी० ऐम० बहल को है। श्री वसु जी की देखरेख मे फरल गाव मे फलगू मेले के उपलक्ष्य मे एक विशाल शिविर का आयोजन किया गया।

श्रीमती राजकरणी अरोडा, आर्य तपस्वी सुखदेव, स्वामी शिवानन्द और श्री राजेन्द्र सिह बीसला का शाल ओढा कर अभिनन्दन किया गया।

पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा ने अपने भाषण मे आर्य समाज तथा डी० ए० वी० सस्थाओ के कार्य की चर्चा की और कहा कि स्वामी दयानन्द जी के अनन्य भक्त महात्मा हसराज ने डी० ए० वी० विद्यालयो तथा महाविद्यालयो की नीव रखी, जिन्होने बहुत प्रगति की है। इन्ही शिक्षण सस्थाओ आदि ने सरदार भगतसिह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद आदि देश पर मर मिटने वाले परवानो को तैयार किया और अभी तक नवयुवको को तैयार कर रही हैं। उन्होने कहा कि डी० ए० वी० की विदेशो मे भी शाखाए है और अब तक कुल ६०० शिक्षण सस्थाए है। डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल बल्लभगढ की छात्राओ ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर आधारित एक नृत्य नाटिका "अनुभूति" प्रस्तुत की।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा द्वारा श्रीमती हेमलता चौधरी, श्री ऐस० ऐस० चौधरी, श्री ऐम० ऐल० गुम्बर तथा प्रि० मोहनलाल जी का अभिनन्दन किया गया और उन्हे दोशाले भेट की गई।

शान्ति पाठ के साथ समारोह समाप्त हुआ।

नेमदारगज मे मिलन समारोह

कोडरमा (झारखड) कार्तिक पूर्णिमा ३० नवम्बर रविवार को श्रीराम नरेशसिह जी के आमत्रण पर एक दिवसीय मिलन समारोह नवादा जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे आर्य समाज नेमदारगज के प्रधान श्री सजय कुमार सत्यार्थी, (उपप्रधान जिला सभा) रजौली आर्यसमाज एव जिला सभा के मत्री श्री रामप्यारे आर्य तथा डा० बुद्धदेव आर्य ने उत्साहवर्द्धन करते हुए यज्ञोपरान्त उपस्थित जनसमूह के साथ कोडरमा डोमचाच मार्ग पर अवस्थित आर्य समाज की जमीन, जिस पर अवैध कब्जा होने का सुराग मिला था, उस स्थान पर जाकर स्थानीय लोगो की बैठक की और आर्य समाज का नवगठन किया। प्रत्येक रविवार को उपरोक्त जमीन पर जाकर यज्ञ करने का आश्वासन स्थानीय लोगो ने अधिकारियो को दिया। लोग निर्माण कार्य प्रारम्भ करने पर जोर दे रहे थे। एक व्यक्ति ने एक गाडी ईट देने की स्वेच्छया घोषणा की। समीपवर्ती जयनगर के श्री रामदेव शास्त्री ने भी अपने गाव मे समाज को जमीन देने का आश्वासन दिया।

ऐस० डी० ऐस० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल कुमारहट्टी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

डी० ए० वी० सैन्टीनरी पब्लिक स्कूल कुमारहट्टी का वार्षिकोत्सव ११ ११ २००१ को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय स्कूल शिक्षा बोर्ड के प्रादेशिक अधिकारी श्री योगराज सचदेव ने की। विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसमे विद्यालय की वार्षिक उपलब्धियो को दर्शाया गया। विद्यार्थियो को पढाई, खेलकूद व अन्य विभिन्न क्रियाकलापो मे भाग लेने व अव्वल आने के लिए पुरस्कृत किया गया।

नन्हे नन्हे बच्चो द्वारा प्रस्तुत की गई पितृभक्ति से प्रेरित श्रवण कुमार की झाकी निकाली गई, जो उपस्थित जनता के लिए प्रेरणा स्रोत थी।

वैदिक आश्रम व्यवस्था के अनुरूप चल रहे इस विद्यालय के छात्रावास मे देश के विभिन्न भागो से एक बडी सख्या मे छात्र व छात्राए विद्याध्ययन करते है। छात्रावास के इन विद्यार्थियो द्वारा इस अवसर पर छात्रावास मे प्राप्त पूर्व प्रशिक्षण के अनुरूप एक सुन्दर कराटे शो प्रस्तुत किया गया, जिसमे प्रतिभा सम्पन्न उन छात्रो की मेहनत व लगन साफ साफ नजर आई।

वार्षिक परीक्षा मे अव्वल आने व नए शैक्षणिक कीर्तिमान स्थापित करने के लिए स्थानीय विधायक ने बच्चो को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया व भविष्य मे सुन्दर शैक्षणिक परिणाम की कामना की।

वन्देमातरम् की गूज के साथ यह उत्सव समाप्त हुआ।

आर्य

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103/2001
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई 39/57
Delhi Postal R. No D L 11082/2001
POSTED AT N D P.O ON 21/22 12-2001 दिनाक २३-१२-२००१

"डी.ए. वी. सैक्टर ४९ मे यज्ञशाला का उद्घाटन"

वार्षिकोत्सव पर दीप प्रज्वलित करते श्री ऐन० के० पाडेय तथा श्री प्रबोध महाजन।

डी ए वी पब्लिक स्कूल सै-४९ सैनिक कॉलोनी फरीदाबाद के वार्षिकोत्सव पर दिनाक २४ ११ २००१ को विद्यालय के प्रागण मे भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मत्री श्री प्रबोध महाजन जी के कर-कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। इस विद्यालय के भवन का शिलान्यास १० नवम्बर १९९२ को पद्मश्री श्री जी पी चोपडा जी प्रधान डी ए वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ था। वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता डा ऐन के पाडे ने की। मुख्य अतिथि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सचिव श्री बी आर शर्मा थे। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ मे प्राचार्य श्री आर्य वीर भल्ला, श्री सुरेन्द्र चौधरी, प्राचार्य श्री पी पी नन्दा और विद्यालय के प्रबधक श्री ऐस ऐल गुम्बर आदि अतिथियो और अभिभावको ने भाग लिया। स्कूल के छात्रो ने सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की मुख्य प्रस्तुति रही जन जागरण जागृत करने के उद्देश्य से स्कूली बच्चो द्वारा "आओ हम युग बदल डालें" नृत्य नाटिका, जिसने दर्शकों मे नवचेतना भर दी। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती नीलम भल्ला ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। स्कूल प्रबधक श्री ऐस ऐल गुम्बर ने सभी आगतुको का आभार व्यक्त किया।

वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता

पातडा मे नवनिर्मित विद्यालय भवन का उद्घाटन करते आ०प्रा०प्र०सभा के सहमत्री श्री हरवशलाल कपूर।

डी ए वी पब्लिक स्कूल पातडा, जिला पटियाला ने बाल दिवस के अवसर पर दिनाक १२ ११ २००१ एव १३ ११ २००१ को अपने स्कूल के नव निर्मित प्रागण मे वार्षिक खेल-कूद समारोह का आयोजन बहुत धूमधाम से किया। १३ ११ २००१ को पारितोषिक वितरण श्री हरबस लाल जी कपूर सहमत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, के कर-कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। मन्त्रोच्चारण एव ओ३म् की ध्वनि से सारा वातावरण गूज उठा।

मुख्य अतिथि श्री हरबस लाल कपूर ने विजयी छात्रो एव टीमो को पुरस्कृत किया तथा हवन यज्ञ एव वैदिक सस्कृति पर एक विस्तृत व्यख्यान दिया।

श्री सुरेन्द्रमोहन जी वशिष्ठ प्राचार्य डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल टोहाना भी विशिष्ट अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। उन्होने विद्यार्थियो को आशीर्वाद दिया तथा आर्य समाज के प्रसार प्रचार के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

आर्य समाज हनुमान रोड का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ७९वा वार्षिकोत्सव २६ नवम्बर से २ दिसम्बर २००१ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ हुआ। ईश्वर भक्ति के भजनो का रसास्वादन श्री सत्यपाल पथिक जी (अमृतसर) द्वारा कराया गया।

स्वामी दिव्यानन्द मरस्वती जी द्वारा प्रतिदिन प्रात ६ ३० से ७ ३० बजे तक योग साधना शिविर लगवाया गया, जिसमे अनेक लोगो ने लाभ उठाया। सायकालीन सत्सग मे प्रतिसाय श्री सत्यपाल पथिक के मनोहारी तथा सारगर्भित भजनोपदेश तथा स्वामी दिव्यानन्द जी के वेद एव योग पर प्रवचन होते रहे।

२७ नवम्बर २००१ को मध्याह्न मे आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। शनिवार १ दिसम्बर २००१ को "श्री रतन लाल सहदेव स्मारक भाषण प्रतियोगिता" सम्पन्न हुई, जिसमे विभिन्न स्कूलो एव गुरुकुलो के छात्र/छात्राओ ने भाग लिया। प्रथम पुरस्कार कन्या गुरुकुल नरेला की छात्रा कुमारी ममता, द्वितीय पुरस्कार डी० ए० वी० स्कूल दयानन्द विहार के छात्र श्री गौरव अब्रोल, तृतीय पुरस्कार रघुमल आर्य कन्या सी० सै० स्कूल राजा बाजार की छात्रा कु० गीतिका एव चतुर्थ विशेष पुरस्कार श्री आजाद आलम, हरकोर्ट बटलर सी० सै० स्कूल, मन्दिर मार्ग ने प्राप्त किया।

रविवार २ दिसम्बर २००१ को "राष्ट्र समृद्धि र म्मेलन" सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता पद्मश्री डा० श्याम सिह शशि ने की। जिसमे मुख्य वक्ता स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, श्री सोमपाल जी (पूर्व केन्द्रीय मत्री) श्री रासासिह रावत (सासद), ब्रिगेडियर चितरजन सावत्त, डा० वीरपाल विद्यालकार एव डा० महेश विद्यालकार ने राष्ट्र की समृद्धि के सम्बन्ध मे ओजस्वी भाषण दिए। श्री हरवशलाल कोहली ने उग्रवाद की भर्त्सना मे एक कविता प्रस्तुत की। सम्मेलन का सयोजन श्री बनारसीसिह ने किया।

हासी मे क्रीडा दिवस समारोह

दिनाक ९ १२ २००१ को मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय हासी के प्रागण मे विद्यालय का क्रीडा दिवस समारोह उत्साह व उल्लास के साथ मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता नगर के श्री नरेश नरवाल ने की। विद्यालय के उपप्रधान श्री ओमकुमार गर्ग, प्रबन्धक श्री सतीशकुमार मुजाल, श्री राजेन्द्र सिह आर्य, श्रीमती कुसुम आहुजा व नगर के प्रतिष्ठित महानुभावों ने समारोह मे भाग लिया। छात्राओं व छोटे छोटे बच्चो की विभिन्न प्रकार की खेल-कूद प्रतियोगिताए एक मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करती थीं। विद्यालय की प्राचार्या सुश्री विजया कुमारी व आर्य पब्लिक स्कूल के प्राचार्य श्री डी० डी० शर्मा ने विद्यालय के कार्य कलापो की जानकारी दी।

विद्यालय के प्रबन्धक श्री सतीश कुमार मुजाल ने आगन्तुको का धन्यवाद किया।

डी० ए० वी० हेहल में बाल दिवस मेला आयोजित

१३ नवम्बर २००१ को डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल हेहल, राची के प्रागण मे बाल दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डी० ए० वी० स्कूल्स झारखड क्षेत्र के निदेशक श्री ऐल० आर० सैनी, प्रबन्ध समिति के चेयरमैन श्री प्रेमप्रकाश आर्य, प्राचार्य श्री ऐन० मडल (अनपरा), प्राचार्य श्री ऐस० आर० मोदगील आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्यालय के नन्हे बच्चो के द्वारा अनेक सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमे फैन्सी ड्रैस प्रतियोगिता, नृत्य नाटिका प्रतियोगिता, भाषण, योग, गीत आदि प्रमुख थे।

मुख्य अतिथि श्री प्रेमप्रकाश आर्य ने बाल दिवस की प्रासगिकता एव बाल मनोदशा पर अपने विचार व्यक्त किये। निदेशक श्री ऐल० आर० सैनी ने बच्चो को शुभकामना देते हुए कहा कि आज के बच्चे, कल के राष्ट्र एव जगत् के कर्णधार है। इनको ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे विश्व मे व्याप्त वर्तमानकालिक विद्रूपता का शमन हो और विश्व मे शान्ति स्थापित हो।

धन्यवाद ज्ञापन प्राचार्य श्री ऐस० आर० मोदगील ने किया एव सभा का सचालन श्रीमती मधुश्री एव श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने किया। विभिन्न प्रतियोगिताओ मे सफल प्रतिभागियो को पुरस्कृत किया गया।

रुड़का कलां में जन चेतना यात्रा

समाज में बढ रही कुरीतियो के विरुद्ध डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के निदेशानुसार शुरू किये गये आन्दोलन को प्रचारित करने के लिये ए० ऐस० हाई स्कूल रुडकाकला जिला जालन्धर ने गाव रुडकाकलां मे बडे जोर शोर से जन चेतना यात्रा आयोजित की, जिसमे गाव के प्रतिष्ठित सज्जनो के अलावा सरपच श्री मेलामिह ने भी भाग लिया।

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718 3362110) सम्पादक—**उदयवीर 'विराज'**

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वयं श्रेष्ठ बनो और सबको श्रेष्ठ बनाओ

आर्य जगत्

प्रकाशन स्थान . आर्य जगत् कार्यालय, आर्य समाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य—७५ रुपये
आजीवन—५०० रुपये
सस्थागत सदस्यता वार्षिक शुल्क—५०० रुपये
विदेशो मे ३० पौंड या ५० डालर
इस अक का मूल्य—२०० रुपये
वर्ष ६६, अक ४४
दयानन्दाब्द १७८
दूरभाष ३३६३७१८
३३६२११०
फैक्स ३३६००५९
रविवार, ३० दिसम्बर, २००१
मार्गशीर्ष शु०-१५-वि० स०-२०५८
सप्ताह ३० दिसम्बर से ५ जनवरी

११ सितम्बर और १३ दिसम्बर के आतंकवादी हमले

११ सितम्बर २००१ का दिन विश्व के प्रचार माध्यमो द्वारा काला दिवस घोषित किया गया। उस दिन अलकायदा नामक एक मुस्लिम आतकवादी सगठन के १९ आत्मघाती युवको ने सयुक्तराज्य अमेरिका मे चार विशाल यात्री विमानो का अपहरण कर लिया, विमान चालक को हटा कर स्वय विमान चालक बन कर विमानो को चलाया और अत्यन्त कुशलतापूर्वक दो को न्यूयार्क के विश्व व्यापार केन्द्र की दो सबसे ऊची ११० मजिल मीनारनुमा इमारतो से ले जा कर टकरा दिया, जिससे इमारतो की ऊपरी कई मजिले ढह गई, भीषण आग लग गई, जिससे बचा हुआ भवन भी ध्वस्त हो गया। तीसरा विमान अमेरिका की राजधानी वाशिगटन मे स्थित पेटागन (अमेरिकी सेना के मुख्यालय) के भवन से जा कर टकराया, जिससे वहा भी जान माल की भारी हानि हुई। कुल मिला कर ५००० से अधिक लोग मारे गये। अरबो डालर की सम्पत्ति नष्ट हो गई। अमेरिकी नागरिको की सुरक्षा की भावना लुप्त हो गई। यह विश्वास, कि अमेरिका किसी भी आक्रमणकारी शत्रु की पहुच से बाहर है, समाप्त हो गया।

चौथा अपहृत विमान अपने लक्ष्य पर नही पहुच सका। वह दुर्घटनाग्रस्त हो कर पैसील्वेनिया राज्य मे एक खेत मे गिरा हुआ मिला। यात्रियो और चालक दल मे कोई जीवित नहीं बचा। यह विमान कहा पहुचना चाहता था, पक्का पता नही चला, परन्तु अनुमान किया गया है कि यह अमेरिका के राष्ट्रपति भवन 'व्हाइट हाउस' पर आत्मघाती आक्रमण करना चाहता था। यह किसी कारण विफल रहा।

अमेरिका को चुनौती

इन चारो आक्रमणो का उद्देश्य अमेरिका को चुनौती देना और अमेरिका को दहला देना था। यह उद्देश्य भली भाति पूरा हो गया। न केवल अमेरिका, अपितु सारा विश्व आतकित हो गया। आतकवादी कभी भी कहीं भी हमला कर सकते है। उनकी योजनाओ की पहले से कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए उनसे बचाव का उपाय भी नही किया जा सकता। मास्को, लदन, पेरिस, रोम, नई दिल्ली, कोई भी सुरक्षित नही है। नई दिल्ली विशेष खतरे मे थी, क्योकि अलकायदा के नेता ओसामा बिन लादेन ने अमेरिका और भारत, दोनो को ही मुसलमानो का शत्रु नम्बर एक घोषित किया था और उनके विरुद्ध खुल्लमखुल्ला जिहाद की घोषणा की थी।

अमेरिका का कडा उत्तर

अमेरिका ने आतकवादियो की चुनौती को स्वीकार किया और राष्ट्रपति जार्ज बुश ने विश्व भर के आतकवाद के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। २५ दिन की तैयारी के बाद अमेरिकी विमानो ने अफगानिस्तान मे स्थित अल कायदा और तालिबान के ठिकानो पर बम वर्षा शुरू कर दी। शुरू मे तो ऐसा भ्रम हुआ कि बम वर्षा का कोई प्रभाव नही हो रहा, पर तीन सप्ताह बाद भ्रम सहसा टूट गया, जब काबुल की तालिबान सरकार बिना लडे ही राजधानी को छोड कर भाग खडी हुई। उत्तरी, पश्चिमी, दक्षिणी, पूर्वी सभी मोर्चो पर मरते दम तक लडते रहने का दम भरने वाले तालिबानो और जिहादियो ने भयभीत हो कर हथियार डाल दिये।

मुस्लिम जगत् ने अपील की कि रमज़ान (रामज्ञान) के पवित्र महीने मे अमेरिका अफगानिस्तान पर अपनी भीषण, निर्मम बमबारी रोक दे, परन्तु अमेरिका ने इतिहास के उदाहरण देते हुए कि स्वय मुसलमान रमज़ान के महीने मे औरो पर आक्रमण करते रहे है, बमबारी रोकने से स्पष्ट इन्कार कर दिया और रमजान का महीना बीतने से पहले ही अफगानिस्तान मे तालिबान और अल कायदा का सगठन ध्वस्त और पराजित हो गया। वहा नई सरकार बन गई। ओसामा बिन लादेन और उसे शरण देने वाले तालिबान प्रमुख मुल्ला मुहम्मद उमर को जिन्दा या मुर्दा पकडने का अभियान जारी है।

११ सितम्बर से पहले अमेरिका को आतकवादी हमलो की कोई चेतावनी नही थी। ऐसी गुप्त योजनाओ की पूर्व चेतावनी हो भी नही सकती। परन्तु भारत को आये दिन चेतावनिया मिल रही थी कि मुस्लिम आतकवादी भारत मे कोई बडी दुर्घटना करने वाले है। ससद् भवन या प्रधानमत्री या गृहमत्री उनके हमलो का निशाना बन सकते है। इससे पहले श्रीनगर मे विधान सभा भवन पर आतकवादियो ने विस्फोटको से भरी कार ले जा टकराई थी, जिसमे २६ व्यक्ति मारे गये थे और तीसियो घायल हुए थे। अपनी ओर से सरकार पूरी तरह चौकन्नी थी।

भारत पर आतकवादी हमला

इसके बाद भी १३ दिसम्बर को पाच या छह आतकवादी एक सफेद ऐम्बेसेडर कार मे बैठ कर ठाठ से ससद् भवन के अहाते मे जा घुसे। कार के ऊपर प्रतिष्ठासूचक लाल नीली बत्ती लगी थी। आतकवादियो ने कमाडो की खाकी वर्दी पहनी हुई थी। कहने को ससद् पर पूरी चौकसी थी। पर लाल नीली बत्ती वाली कार की कोई पडताल नही की गई। की जाती तो पता चल जाता कि उसमे ३० किलो आर० डी० एक्स० विस्फोटक, हथगोले, विदेशी ए के ४७ राइफले भरी थी, जो ससद् के अहाते मे नही ले जाई जा सकती थी।

विजय चौक की ओर वाले प्रवेश द्वार से अहाते मे घुसने के बाद कार ससद् भवन की मुख्य इमारत की ओर बढ गई। उसने राज्य सभा वाले प्रवेश द्वार पर खडी एक गाडी को टक्कर मारी। वहा से दो मिनट बाद ही उपराष्ट्रपति बाहर निकलने वाले थे।

जब सुरक्षाकर्मियो ने डाटा, तो आतकवादियो ने गोली मारने की धमकी दी। तब सुरक्षाकर्मियो को स्थिति समझ आई। वे तुरन्त भूमि पर लेट गये, जो गोलीबारी से बचने के लिए सबसे सही स्थिति है। तब आतकवादी गाडी से उतर पडे और ससद् मे घुस जाने के लिए दौडे। उन्होने सामने दीख रहे सुरक्षाकर्मियो पर गोलिया भी चलाई, जिसमे छह सात सुरक्षाकर्मी वीरगति को प्राप्त हुए।

सुरक्षाकर्मियो का साहस

सुरक्षाकर्मियो का सराहनीय कार्य यह रहा कि उन्होने पहली गोली चलते ही स्थिति को भाप लिया और तत्काल अवसरोचित कार्रवाई की। एक आतकवादी ने अपनी कमर से विस्फोटक बाधा हुआ था। उसने यत्न किया कि दौड कर ससद् भवन के द्वार मे घुस जाये और भीतर पहुच कर विस्फोट कर दे। परन्तु सुरक्षाकर्मियो ने उसे द्वार तक पहुचने ही नही दिया। तब उसने बाहर ही विस्फोट कर दिया, जिसमे वह स्वय मारा गया।

सुरक्षाकर्मियो ने ओट ले ली और आतकवादियो पर गोलिया चलाई। चार आतकवादियो मे से तीन को तो

(शेष पृष्ठ १० पर)

यह ठिठुरती शाम आई

बर्फ पर्वत पर पडी है,
लहर सर्दी की कडी है,
हवा चलती सनसनाती मौत की सौगात लाई।
कुछ सडक पर सो रहे है,
ठिठुर जीवन खो रहे है,
'वर्ष नूतन' कुछ मनाते ऊधमी धनवान् भाई।
फुलझडी वे छोडते है,
बम पटाखे फोडते है,
काश, देते दीन को वे एक कम्बल या रजाई!
उठो, सोतो को जगा दो;
आग महलो को लगा दो,
कहो 'हमने तापने के लिए धूनी है जलाई।'

'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एव दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

अग्नि की उपासना से नवजीवन प्राप्त होता है

पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन् पुन. प्राणः एुनरात्मा म ऽआगन् पुनश्चक्षु पुनः श्रोत्र मऽ आगन्। वैश्वानरोऽअदब्धस्तनूपाऽ अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्। यजु० ४ १५

अर्थ (**पुन मन·**) फिर मेरा मन अर्थात् मेरा मनोबल और (**मे आयुः पुनः मे आगन्**) फिर मेरी आयु मेरे पास लौट आये। (**पुनः प्राण. पुन· आत्मा मे आगन्**) फिर मेरी प्राणशक्ति और फिर मेरा आत्मबल मुझमे लौट आये। (**पुन चक्षुः पुनः श्रोत्र मे आगन्**) फिर मेरी दृष्टि शक्ति और मेरी श्रवण शक्ति मुझमे लौट आये। (**अदब्धः**) बाधा रहित, अव्याहत (**वैश्वानरः**) सब मनुष्यो के शरीर मे निवास करने वाला (**तनूपाः**) शरीर की रक्षा या पालन पोषण करने वाला (**अग्निः**) अग्नि (न) हम सबकी (**अवद्यात् दुरितात्**) निन्दनीय, कुत्सित रोग से (**पातु**) रक्षा करे।

मनन— यहा प्रार्थना की गई है कि सब मनुष्यो के शरीर मे निवास करने वाला और शरीर की रक्षा करने वाला अग्नि अबाध रूप से दुष्ट रोगो से हमारी रक्षा करे।

यहा अग्नि का अर्थ ईश्वर नही, अपितु प्राणिज (बायोलौजिकल) अग्नि है। हम सभी प्राणियो के शरीर मे अग्नि रहती है, जो शरीर को गर्म और स्वस्थ रखती है। अनेक कारणो से, रोगो से या आघात या विषैले जन्तु के दश आदि के कारण यह अग्नि बाधित या क्षीण हो जाती है। ऐसा क्षय रोग (टी बी या एड्स) न केवल शरीर को क्षीण कर देता है, अपितु मनोबल और आत्मबल को घटा कर आयु को कम कर देता है। देखने की शक्ति और सुनने की शक्ति घटती चली जाती है। अग्नि की उपासना ही उस दुष्ट रोग से मुक्ति पाने का उपाय है।

वैद्यराज चरक ने लिखा है कि **'नित्यमग्निमुपचरेत्'** नित्य प्रति अग्नि का उपचार करे, अर्थात् इस बात का ध्यान रखे कि शरीर की अग्नि यथोचित बनी रहे, न ज्वर का उत्ताप हो और न अग्नि की मन्दता हो।

वेद मे हजारो मत्रो का देवता अग्नि है। ऋग्वेद तो अग्नि का ही वेद कहा जाता है। यह अग्नि ही उपास्य अर्थात् निरन्तर ध्यान देने योग्य है।

किसी रोग के कारण या वृद्धावस्था के कारण शरीर की अग्नि मन्द हो जाती है। जब भी कोई रोग होता है, तब सबसे पहले भूख मर जाती है, अर्थात् जठराग्नि मन्द हो जाती है। भोजन की इच्छा नही होती। जब भोजन नहीं खाया जाता, तब शरीर मे रस और रक्त नही बनता। रक्त के अभाव मे शरीर के सभी अग अशक्त होने लगते है।

अग्नि मद होते ही सबसे पहला प्रभाव मन पर पडता है—घबराहट और बेचैनी अनुभव होती है, उदासी छा जाती है, उल्लास और उत्साह नष्ट हो जाता है। जितना रोग तीव्र होगा, या बढता जायेगा, उतना ही मन निर्बल होता जायेगा। मन निर्बल होने के साथ प्राण शक्ति (श्वासोच्छ्वास) भी गडबडा जायेगी। प्राण शक्ति घटने के साथ आत्मबल (आत्मविश्वास) जाता रहेगा। यह भयानक स्थिति है। इसके बाद मृत्यु के पजे अपनी ओर बढते दिखाई पडने लगते है। किसी भी बडे चिकित्सालय मे जाने पर इस अवस्था के रोगियो को देखा जा सकता है।

ऐसी दशा मे केवल ईश्वर प्रार्थना से यथेष्ट लाभ नही होता, जैविक अग्नि को बढाने से लाभ होता है। कुछ लोग है जो दवा से अधिक दुआ को महत्व देते हैं, परन्तु अधिकतर लोग प्रार्थना के साथ साथ चिकित्सा का भी प्रबन्ध करते है।

वैश्वानर अग्नि के साथ साथ जातवेदस् (ज्ञानाग्नि) की उपासना भी आवश्यक है। हम अध्ययन और अवेक्षण द्वारा रोग का सही निदान करे, कारण को जाने और तदनुसार चिकित्सा करे, जिससे जैविक अग्नि बाधारहित हो जाये और वह रोग से हमारी रक्षा कर सके।

शरीर अपनी चिकित्सा स्वय ही करता है, वैद्य, हकीम या डाक्टर तो केवल उसकी सहायता ही कर सकते है। परन्तु यदि समय पर उचित सहायता न दी जाये, तो शरीर रोग के कारण निष्प्राण भी हो सकता है।

अग्नि मद हो जाने पर पहला कार्य तो यह है कि रोगी विश्राम करे। उसके साथ ही भूख न लगने तक कोई भोजन न करे। भूख लगने पर सुपथ भोजन करे। यथेष्ट गर्म या शीतल जल पिये। ठीक ढग से प्राणायाम करे, क्योकि प्राणवायु ही फेफडो मे जा कर रक्त मे उष्णता भरती है। यथोचित रीति से सूर्य की धूप का सेवन करे।

ऋग्वेद अग्नि का वेद है, यजुर्वेद वायु का वेद है और सामवेद आदित्य अर्थात् सूर्य का वेद है। अग्नि, वायु और सूर्य ही वे ऊर्जाए है, जिनसे प्राणी जीवित और स्वस्थ रहते है। अत इन तीनो से ही हमे ऊर्जा ग्रहण करने के उपाय खोजने चाहिए। यही सही वेदाध्ययन है।

अग्नि का पूरक तत्व सोम (जल) है। अग्नि उत्तेजक, दाहक तत्व है, सोम शामक तत्व है। अग्नि मानो मोटर को चलाने वाला इजिन है, सोम उसे रोकने वाला ब्रेक है। स्वस्थ शरीर और मन के लिए अग्नि और सोम दोनो की ही आवश्यकता है। अग्नि मन्यु है, सोम दया और क्षमा है। जीवन मे दोनो का सतुलन रहना चाहिए।

अग्नि, वायु, सूर्य और सोम के सहारे शरीर को क्षीण करते जाने वाले रोगो पर विजय पाई जा सकती है। ज्यो ज्यो जैविक अग्नि प्रदीप्त होने लगती है, त्यो त्यो शरीर की कान्ति वापस लौटने लगती है, मनोबल बढ़ने लगता है, आख, कान आदि अग प्रत्यग फिर सक्रिय होने लगते है। यदि इन्हीं प्राकृतिक तत्वो के सहारे उपचार किया जाये तो गई हुई दृष्टि शक्ति और श्रवण शक्ति भी वापस लौट आती है। उसकी विधि क्या हो, यह खोजना और बताना चिकित्सा विज्ञान का काम है। प्राकृतिक चिकित्सको ने इस दिशा मे काफी काम किया है और उनके उपचार से स्वस्थ हुए रोगी शरीर और मन, दोनो की दृष्टि से अधिक समर्थ और सुखी होते है।

यह मत्र प्रार्थना के साथ साथ अपने मनोबल को बढाने वाला भी है। 'आगन्' का अर्थ यह कर लिया जाये कि 'मेरा मनोबल वापस लौट आया है, मेरा प्राण, आयु, आत्मबल वापस लौट आया है' आदि तो उसे आत्म-आश्वासन का बढिया प्रयोग कहा जा सकता है। उस दशा मे इस मत्र के दिन मे दो चार बार पाठ से भी मन का उत्साह और उल्लास बढेगा।

अग्नि, वायु, सूर्य और सोम का स्वास्थ्य अर्जन के लिए किस प्रकार उपयोग किया जाये, यह इस विषय के अनुभवी विज्ञ लोगो से पूछ कर या पुस्तके पढ कर जान लेना चाहिए। एकाएक स्वय प्रयोग करने से हानि भी हो सकती है।

श्रद्धानन्द सी श्रद्धा अपने मन में हमे जगानी है

❑ **श्री सुभाषचन्द्र गुप्ता**

धर्म देश और सस्कृति की हमको लाज बचानी है,
श्रद्धानन्द सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।

ढूढ रही है भारत मा वीर, शिवा, प्रताप कहा?
भगतसिह, बिस्मिल, सुभाष का, देश प्रेम आलाप कहा?
झासी की रानी की गाथा, फिर हमको दुहरानी है।
श्रद्धानन्द सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।

जाग उठा भारत, जब ऋषिवर दयानन्द ने की हुकार।
देश-प्रेम जन जन मे उमडा, श्रद्धानन्द की सुन ललकार।

गुरुकुल शिक्षा से चारित्रिक सुगन्ध देश मे लानी है।
श्रद्धानन्द सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।

एक समय था भारत, जब सारे जग का सिरताज था।
वैदिक मान्यताओ का तब, सभी दिलो पर राज था।
भय से आतकित धरती को शान्ति पुन दिलानी है।
श्रद्धानन्द सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।

गौ माता, हिन्दी भाषा, दलित, अनाथ, अबलाओ से,
आर्त दुखी, भूखे, नंगे, असहाय, रोती ललनाओ से,
थी श्रद्धानन्द की असीम प्रीत, जो हर दिल मे उपजानी है।
श्रद्धानन्द सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।

तपोपूत उस महामानव को, गांधी जी ने किया प्रणाम।
रैम्जे मैक्डानल्ड ने ईसा सम कह कर निज किया सलाम।
'सुभाष' गुणो की श्रद्धानन्द ने छोडी अमिट निशानी है।
श्रद्धानन्द सी श्रद्धा अपने मन मे हमे जगानी है।

१५९, ए. जी. सी. आर. ऐन्क्लेव, दिल्ली–११००९२

संन्यास और कर्मयोग

दो विचारधाराए रही है वैराग्य की और कर्मठता की। सन्यासियो का ध्यान मृत्यु पर रहा और कर्मयोगियो का जीवन पर।

सन्यासियो का कहना है कि जब जीवन नश्वर है और मृत्यु अवश्यम्भावी है, तब इहलोक की चिन्ता न करके परलोक का का चिन्तन करना चाहिए। इस लोक के सुख भोग जुटाने की क्या आवश्यकता है?

कर्मयोगियो का कहना है कि जब तक मृत्यु नही होती, तब तक तो हमे जीना ही है। इसलिए क्यो न ठाठ से जिया जाये। जब हम ससार से जायें, तो इसे उससे अच्छा छोड़ कर जाये, जैसा कि हमने इसे पाया था। इसके लिए हमे मरते दम तक निरन्तर शारीरिक और मानसिक श्रम करते रहना चाहिए।

सन्यासियो का कहना है कर्म करने से कर्मफल मे आसक्ति होती है और आसक्ति बन्धन है। कर्मयोगियो का कहना है कि **'न कर्म लिप्यते नरे'** (कर्म व्यक्ति से चिपट नहीं जाता), इसलिए कर्म करते रहना ही श्रेष्ठ है।

देव पूजा और मनुष्य पूजा

सम्पादकीय

मनुष्य बलवान् है, बुद्धिमान् है, धनवान् है। बल, बुद्धि, और धन किसी के पास कम है, किसी के पास अधिक। लोगो मे स्पर्धा बनी रहती है। हर कोई अपने पडौसी से अधिक, ऊपर रहना चाहता है। यह प्रकृति का नियम है।

पशुओ मे भी, जहा केवल बल ही प्रमुख होता है, औरो पर प्रभुत्व स्थापित करने की इच्छा और प्रवृत्ति रहती है। शक्ति परीक्षा होती है और निर्बल या तो सबल से दब कर रहता है, या झुड को छोड कर चला जाता है।

प्रभुत्व के लिए स्पर्धा

प्रभुत्व का एक परिणाम था पत्नियो पर, मादाओ पर अधिकार। पशु जगत् मे केवल सबसे सशक्त सदस्य को ही प्रजनन का अधिकार होता है। अशक्तो को वह तरुणी मादाओ से दूर रखता है। जो पत्नी को छीनना चाहे, या उसमे हिस्सा बाटना चाहे, उसे 'सपत्न' कहा जाता है, जिसका अर्थ है शत्रु।

स्पर्धा से नस्ल सुधार

स्पर्धा की इस भावना से सर्वोत्तम प्राणियो का चयन होने लगा, जैसे समझिये कि विश्व चैम्पियन का। इन सर्वोत्तम प्राणियो से उत्पन्न सतान भी सुधरती गई। लोग अधिक बलिष्ठ, मेधावी और समृद्ध होते गये।

परन्तु बली से बली व्यक्ति भी रोगी हो जात. था। बुद्धिमान् से बुद्धिमान् व्यक्ति भी बूढा हो जाता था। बडे से बडा धन कुबेर भी एक दिन अर्थी पर लिटाया जाता था। मनुष्य को स्वय अल्पता, हीनता, क्षुद्रता अनुभव होती थी।

लोकोत्तर सत्ताओ की कल्पना

कवियो की कल्पना ने उडान भरी। उन्होने अपनी कल्पना मे ऐसे प्राणी रचे, जो इस भौतिक जगत् की अक्षमताओ से, दुर्बलताओ से रहित थे। पशु पक्षियो और मनुष्यो को भूख प्यास सताती थी। परन्तु कवियो द्वारा कल्पित इन प्राणियो को न भूख लगती थी, न प्यास। उन्हे कोई रोग भी नहीं होता था-- न सिर दर्द, न पेट दर्द, न दस्त, न बुखार। इससे भी बडी बात यह कि वे कभी बूढे नहीं होते थे। वे सदा युवा रहते थे। युवा व्यक्ति स्वस्थ, प्रसन्न, निश्चिन्त, सुखी रहता है। वह दूसरो को भी सुखी करना चाहता है। उसके पास सुख का भडार होता है, उसे वह दूसरो से बाट लेना चाहता है। बाटने से दुख घट जाता है, किन्तु सुख बढ जाता है। अकेले बैठ कर बीस लड्डू खाने से जितना आनन्द आता है, दस आदमियो को साथ बिठा कर दो दो लड्डू खाने से उससे कही अधिक आनन्द आता है।

देव अजर, अमर

इन कल्पित प्राणियो को, अभौतिक जीवो को कवियो ने, ऋषियो ने 'देव' नाम दिया। ये कभी मरते भी नहीं थे। मृत्यु मनुष्य की सबसे बडी विभीषिका है। देव मृत्यु से ऊपर थे। वे अजर तो थे ही, अमर भी थे।

बलवान् से बलवान् मनुष्य मे जितना बल होता है, छोटे से छोटे देव मे उससे अधिक था। बुद्धिमान् से बुद्धिमान् मनुष्य मे जितनी बुद्धि हो सकती है, छोटे से छोटे देव मे उससे कहीं अधिक थी। वे इच्छानुसार जल, थल और वायु मे कहीं भी तुरन्त आ जा सकते थे। वे कहीं का भी कोई हाल बैठे बैठे जान सकते थे। वे मनुष्य को कोई भी वरदान दे सकते थे। दुष्कर्म करने पर वे उसे दड भी दे सकते थे।

देव और असुर

ऐसी सत्ताए कहीं थीं नही, परन्तु मेधावी, प्रतिभाशाली, कल्पनाशील कवियो ने गढ ली। मनुष्य मे प्रेम, सहानुभूति, परोपकार, दया, क्षमा आदि दैवीय भावनाए है, परन्तु साथ ही उसमे महत्वाकाक्षा, हिसा, क्रूरता, लोभ, द्वेष, छल, कृतघ्नता जैसी आसुरी भावनाए भी है। इन आसुरी भावनाओ से युक्त मनुष्य औरो को आतकित तो कर सकता है, परन्तु उनके प्रेम और श्रद्धा का भाजन नही बन सकता।

प्रार्थना की आवश्यकता

मनुष्य दुर्बल है। जब वह स्वस्थ होता है, जवान होता है, तब वह भले ही बली और समर्थ होने का अभिमान कर ले, पर जब उसे तेज सिर दर्द होता है, बुखार चढ जाता है, दस्त लग जाते है, मिर्गी का दौरा पड जाता है, तब उसे अपनी दुर्बलता भली भाति अनुभव हो जाती है। उससे भी बुरी दशा तब होती है, जब पत्नी, पुत्र या पुत्री रोग शय्या या मृत्यु शय्या पर पडा होता है। चक्रवर्ती सम्राट् भी स्वय को नवजात शिशु जैसा बेबस और असहाय अनुभव करता है। उन क्षणो मे उसके हृदय मे प्रार्थना के स्वर फूटते है, याचना की पुकार उठती है। वह पूजा करना चाहता है किसी ऐसी शक्ति की, जो उसे इस सकट से, इस यातना से उबार सके।

कवियो ऋषियो के गढे गये कल्पित देव तब काम आते है। जब वैद्य, चिकित्सक निराश हो कर हथियार छोड बैठते है, तब अदृश्य शक्ति से प्रार्थना की जाती है हे भगवान्, अब तुम्हीं कुछ करो।'

भगवान् की कल्पना सार्वभौम

देवो की, भगवान् की कल्पना केवल भारत मे ही नहीं, ससार के सभी भागो मे की गई। हमारे देश मे इन्द्र, वरुण, सूर्य, वायु, अग्नि आदि की धारणाए बनी, तो यूनान मे ज़ियस, आरेस, अपोलो, पोसीडौन आदि की पूजा होती थी। ज़ियस देवताओ का राजा था, आरेस युद्ध का देवता था, अपोलो बल और बुद्धि का, पोसीडौन समुद्र का देवता था। रोम मे भी इन्हीं के समकक्ष देवगण थे। पूरा का पूरा देवमडल था। समूचा यूरोप अपने अपने ढग से इनकी पूजा करता था।

राजा देवाश बन गये

कालान्तर मे देवो के प्रति मनुष्यो की पूजा भावना का लाभ उठाने के लिए राजाओ ने स्वय को देवो का अश कहना शुरू कर दिया। राजा शस्त्र बल से प्रभुता प्राप्त करता है। परन्तु धर्म की भावना से उपजी प्रजा की वशवर्तिता अधिक विश्वसनीय होती है। राजाओ का आदर ही नहीं, पूजा भी होने लगी।

ईश्वर के पुत्र या सदेशवाहक

कुछ लोगो ने देवो का पुत्र या सदेशवाहक होने का दावा किया। ईसा ने स्वय को ईश्वर का पुत्र और मुहम्मद ने स्वय को ईश्वर का दूत (सदेशवाहक) बताया। वे दोनो ही क्रमश ईसाइयो और मुसलमानो के पूज्य बन गये।

इस तरह दो प्रकार की पूजाए, देवपूजा और मनुष्य पूजा, शुरू हो गई। देव दुर्गुणो से रहित थे, परन्तु मनुष्य का पूरी तरह निर्दोष हो पाना असभव है।

देव मूर्तिया

कालान्तर मे देवो की कल्पना को चित्रो और मूर्तियो मे साकार कर लिया गया। यूनान मे और रोम मे भी कल्पित देवताओ के सुन्दर चित्र और भव्य मूर्तिया बनीं। भारत मे भी देवी देवताओ की विशद कल्पना की गई। विष्णु, शिव, अग्नि, इन्द्र आदि के न केवल रूप, रग, अस्त्र, आयुध कल्पित किये गये, अपितु उनके वाहन भी बनाये गये।

मूर्ति पूजा (देव पूजा) और मनुष्य पूजा मे टकराव हुआ। ईसा और मुहम्मद से पहले फिलस्तीन मे मन्दिरो (उपासना स्थलो) मे मूर्ति पूजा होती थी। मक्का के काबे (काव्य मन्दिर) मे ढेरो मूर्तिया थीं। यह मूर्ति पूजा मनुष्य पूजा मे बाधक थी। शिव या विष्णु की तुलना मे ईसा या मुहम्मद का प्रभाव कही टिकता नहीं था।

मूर्ति पूजा का विरोध

ईसाइयो ने मूर्ति पूजा का विरोध किया और मुहम्मद ने तो मूर्तियो को तोडना ही परम धर्म मान लिया। मुसलमानो ने जहा जहा भी विजय प्राप्त की, वही देव मन्दिरो और मूर्तियो को तोडा और लूटा। यह केवल सयोग था या अल्लाह की शक्ति थी कि मुसलमान बहुत समय तक जीतते गये। दूर दूर तक उनका प्रभुत्व हो गया। सिद्धान्त मे वे निराकार ईश्वर के उपासक रहे, परन्तु व्यवहार मे वे मुहम्मद की ही पूजा करते रहे, उसके वचनो को ईश्वर की वाणी मानते रहे।

मनुष्य मनुष्य की पूजा कर रहा हो, उसके पैरो पर अपना सिर रगड रहा हो, यह ससार का सबसे शोचनीय दृश्य है। मनुष्य के लिए मनुष्य कदापि पूजनीय नहीं है। दिव्य ज्योति सब मनुष्यो मे एक जैसी है। ऊच-नीच के सब भेद बनावटी और मिथ्या है। हर मनुष्य मे यह अनुभूति विद्यमान है कि वह अन्य सबसे अधिक बुद्धिमान् है।

सब मनुष्य बराबर हैं

कुछ लोग मेधावी होते है, और कुछ निरे बुद्धू, यह बात गलत है। कुछ लोग किसी एक क्षेत्र मे आगे बढे होते है, तो अन्य लोग किसी अन्य क्षेत्र मे आगे होते है। सारी सृष्टि मे हर प्राणी ऐसी विशेषताओ से सम्पन्न है कि वह सबल विरोधियो के होते भी जीवित रहता है। सिह बलवान हैं, तो खरगोश चपल है, हिरन तेज दौडता है, बन्दर पेडो पर छलाग लगा सकता है, कौआ उड सकता है और मगरमच्छ पानी मे डुबकी लगा सकता है। कही ऊच नीच नही है। अपनी जगह सभी सर्वोच्च है।

मेधा अनेक रूपो मे

अष्टाध्यायी या न्यायदर्शन पढ लेना ही मेधाविता नही है। अनपढ व्यक्ति बडा पहलवान हो सकता है, अन्धा कुशल गायक और लगडा निपुण चित्रकार हो सकता है। प्रतिभा और बुद्धि के लिए अनगिनत क्षेत्र है। इसलिए किसी भी एक मनुष्य को दूसरे से श्रेष्ठ या निकृष्ट मानने के लिए यथेष्ट आधार नहीं है। उचित शिक्षा और साधनो का अभाव ही दिखाई पडने वाली ऊच नीच का कारण है।

मनुष्य राक्षस बन सकता है

देव पूजा मनुष्य पूजा से सदैव अच्छी है। देवो की कल्पना ही निर्दोष सत्ताओ के रूप मे की गई है, जबकि अच्छे मनुष्य केवल वे होते है, जिनके अवगुण किसी कारण छिपे रह गये होते हैं। मनुष्य दोषो का पुतला है। भले से भला मनुष्य परिस्थितिवश, काम, क्रोधवश एक क्षण मे राक्षस बन जा सकता है, परन्तु देवो के साथ यह नही हो सकता।

जब हम किसी की पूजा करते है, प्रार्थना करते है, तो साकार मूर्ति या निराकार भगवान् हमे कुछ प्रदान नही करता, अपितु उस पूजा द्वारा हम केवल अपने क्षीण हो गये मनोबल और आत्मबल को जगा रहे होते है। पूजा के पश्चात् हमे जो सन्तोष और समाधान अनुभव होता है, उसका कारण यही है कि हमारा आत्मबल जाग जाता है।

विश्वास, यहा तक कि अन्धविश्वास भी पूजा मे फलदायक होता है। कभी कभी साधुओ की भभूत से रोगियो के स्वस्थ हो जाने की यही व्याख्या है।

'स्वाहा- ओम् स्वाहा' पर निवेदन

❑ श्री उमाकान्त उपाध्याय

मार्च २००१ मे २३ से २६ तारीख तक मुम्बई मे विश्व आर्य महासम्मेलन का बहुत सुन्दर आयोजन हुआ था। उसमे 'राष्ट्र समृद्धि' नामक एक बृहद् यज्ञ का आयोजन भी था। उसमे प्रति मत्र मन्त्रान्त मे स्वाहा बोल कर आहुति देने के स्थान पर "ओ३म् स्वाहा" बोल कर आहुतिया दिलवाई गई। इस 'स्वाहा या ओम् स्वाहा" पर तभी से विचार विनिमय, कभी मधुर कभी कटु रूप मे चालू है। हमने तो "आर्य समार" "आर्य समाज कलकत्ता की मासिक पत्रिका" का मई २००१ का अक इस सम्मेलन को अर्पित कर दिया था। हमने भी अपना व्यक्तिगत आकलन उस अक मे प्रकाशित कर दिया था। उसे हम शब्दश यहा दे रहे है।

मुम्बई का यज्ञ

यज्ञ स्थल – पडाल मे दक्षिण पश्चिम के विस्तृत भाग मे ३१-३२ कुडो का बृहद् यज्ञ स्थल, जहा १२५ यजमान दम्पति एक साथ बैठते थे। १२५ की सख्या के यजमान आर्य समाज के १२५ वर्षो की पूर्ति के प्रतीक थे। यज्ञस्थल मे ब्रह्मा और वेदपाठियो एव अन्य गण्यमान्य विद्वानो के बैठने का मच दक्षिण दिशा मे उत्तराभिमुख बना हुआ था। इस पर १५०-२०० व्यक्तियो के बैठने के लिए स्थान था।

आचार्य सोमदेव द्वारा बहिष्कार

यज्ञ के ब्रह्मा डा० स्वामी सत्यम् जी थे। यज्ञ के आचार्य मुम्बई के दो प्रसिद्ध विद्वान् डा० सोमदेव जी शास्त्री और डा० आचार्य वागीश जी को मनोनीत किया गया था। किन्तु यज्ञस्थल पर डा०ं वागीश जी ही आचार्य के रूप मे उपस्थित हुए। पता चला कि डा० सोमदेव जी ने ब्रह्मा जी से यज्ञ की विधि पर मतभेद होने के कारण, आचार्य का आसन अस्वीकार कर दिया था। प्रसग चाहे जैसा गुरु हो या लघु, किन्तु विद्वानो के लिए अवश्य ही विचारणीय है। यज्ञ पद्धति मे मनमानी, अराजकता इतने विशाल सगठन के लिए विचारणीय ही नहीं, चिन्ताजनक भी है।

यह "राष्ट्र समृद्धि" यज्ञ था। वेद पाठ गुरुकुल गौतमनगर के विद्यार्थी और कन्या गुरुकुल हाथरस की कन्याए कर रही थी। यज्ञ की व्यवस्था का भार मुख्य रूप से उपदेशक विद्यालय टकारा के विद्यार्थी सभाल रहे थे। १२५ यजमान, ३१-३२ कुडो पर व्यवस्था भारी काम था। जलपात्र, समिधा, घी, सामग्री, यज्ञपात्र, कपूर-माचिस आदि पहुचाना, कुड की अग्नि और समिधा की व्यवस्था, सब अच्छी तरह सम्पन्न हो रहा था। यह यज्ञ व्यवस्था की सुकरता थी।

राष्ट्र समृद्धि यज्ञ एक नई कल्पना

राष्ट्र समृद्धि यज्ञ – राष्ट्रभृत् यज्ञ की आहुतिया विवाह सस्कार मे डाल जाती है। किन्तु राष्ट्र समृद्धि यज्ञ हमने इससे पूर्व सुना ही नही था। मन था कि इस यज्ञ की विधि व्यवस्था का कोई साहित्य मिल सकेगा। किन्तु कुछ न मिला।

यज्ञ और वेद के प्रचार मे आर्य समाज ने एक अभिनन्दनीय क्रान्ति की है। यह परम्परा से प्राप्त यज्ञो की पद्धति से हटकर है। यह आर्य समाज के प्रचार की आकाक्षा आवश्यकता के अनुरूप रहा है। अत परम्परा प्राप्त यज्ञो से हटकर पृथक्ता ग्रहण करके भी ये "नव उपज्ञ यज्ञ" हमारी दृष्टि मे अभिनन्दनीय और यज्ञ और वेद के प्रचार मे अति सहयोगी प्रमाणित होते रहे है।

लोकार्पण के लिए नई विधिया

परम्परा प्राप्त यज्ञो मे देव यज्ञ अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त सभी यज्ञ व्यक्तिगत है, जिनमे एक यजमान होता है, अन्य उसके सहयोगी होते है। आर्य समाज मे सामूहिक यज्ञ प्रचार की दृष्टि से उपयोगी समझ कर चालू हुए। एक से अधिक यजमान बनने लगे। यज्ञ के व्यय का भार व्यक्ति से हट कर समाज पर आ गया। कुड भी अनेक बनने लगे। वेद पारायण यज्ञ तो बहुत पहले से ही चल रहे थे। केवल गायत्री मत्र से आहुतिया, फिर 'वेद शतकम्' से आहुतिया, फिर 'चतुर्वेद शतकम्' आदि भी मत्र पाठ मे आ गए। उदयपुर मे जब अपूर्व ग्रथ रत्न सत्यार्थ प्रकाश की शताब्दी मनाई गई, तो "सत्यार्थभृत्" यज्ञ बडी धूमधाम से सम्पन्न किया गया। यह सत्यार्थभृत् यज्ञ स्वामी दीक्षानन्द जी की स्वोपज्ञता से सम्पन्न हुआ। वे ही इस सत्यार्थभृत् यज्ञ के ब्रह्मा थे। स्वामी दीक्षानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे वर्णित सिद्धान्तो के पोषण मे कई सौ वेद मत्रो का सग्रह किया, उन्ही से आहुतिया दिलवाई। यह एकउपयोगी कार्य हुआ। इस सग्रह की एक प्रति उन्होने स्नेह से मुझे भी दी थी।

अपनी ढपली, अपना राग

सो, प्राचीन आचार्यो से निर्दिष्ट यज्ञो से पृथक् होकर अनेक प्रकार के यज्ञ चल पडे। सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे, कोई ४० वर्ष पूर्व धर्मार्य सभा के तत्कालीन मत्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास जी ने एक 'बृहद् यज्ञ पद्धति' प्रकाशित की। किन्तु 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना रुचिर्भिन्ना', सभी अपनी चलाने का मन रखते है। मै २२-२६ मार्च को मुम्बई मे था। राष्ट्र समृद्धि यज्ञ का कोई साहित्य न पा सका। पुरानी नई पीढी के विद्वान्, यजमान अपनी बात मुझे भी बताते। मेरा एक ही पक्ष था – सार्वजनिक रूप मे मतभेदो को हवा देना उचित नही है। रही विधि व्यवस्था, उसका निर्णय धर्मार्य सभा करे। विद्वान् विचार विमर्श के पश्चात् निर्णय ले। घातक विधि पार्थक्य घातक ही है। इसी मुम्बई महासम्मेलन मे सन्ध्या कराने के लिए दो व्यक्तियो की ध्वनि माइक पर आ रही थी। एक ने **'अमृतोपस्तरणमसि'** से आरम्भ किया, तो दूसरे ने **'शन्नोदेवीरभिष्टये'** से। आचार्य डा० सोमदेव जैसे समर्पित विद्वान् क्षुब्ध हो कर उदासीन ही हो गए। यज्ञ के आचार्य थे—यज्ञ मडप मे ही नहीं गए। अस्तु, यज्ञ विधि मन्त्रोच्चारण विधि मे एकरूपता एव उचितता का प्रश्न विद्वज्जन के लिए विचारणीय है। काम निकल जाने पर उपेक्षा या उदासीनता सगठन के भविष्य के लिए घातक होगी। अन्तत महासम्मेलन का इतना बृहद् यज्ञ साधारण यज्ञ कराने वाले पुरोहित और यज्ञ करने वाली जनता का कुछ दूर तक मार्गदर्शन भी तो करता है। विधि विधान का दायित्व, मार्गदर्शन का दायित्व, कहीं तो आश्रय खोजना चाहेगा।

पत्र पत्रिकाओं में चर्चा

इधर ओ३म् स्वाहा को केन्द्र करके कई लेख पत्रो मे प्रकाशित हुए। मै सोचता रहा कि सम्भव है कि धर्मार्य सभा मे निर्णयार्थ यह प्रश्न उठे। यह सोच कर अपने आकलन को ही "कथ्य कथितम्" मान लिया था। अभी अक्टूबर २००१ के "दयानन्द सदेश" मे श्री सत्यानन्द वेद वागीश जी का एक लेख इसी सम्बन्ध मे प्रकाशित हुआ है। उसमे उत्थापित एक-दो बिन्दुओ पर कुछ निवेदन करना आवश्यक लगा।

नई विधि के समर्थक

१ श्री आचार्य जी ने लिखा है "पृष्ठ १० पर लिखा है "मचस्थ विद्वज्जन कुलबुला कर तथा मन मसोस कर रह गए। भगवन् यदि आप लोगो की दृष्टि मे इतना घोर अशास्त्रीय और अपसिद्धान्त कर्म हो रहा था, तो उसी समय उसका सशक्त विरोध करके उसे रुकवा देते। पीछे लेख लिखने से क्या लाभ?"

यदि सम्मेलन मे उसका मुखर उग्र विरोध न करना भूल थी, तो इस भूल का उत्तरदायी मै भी हू। डा० सोमदेव शास्त्री जी को मै अपने मच का गौरव, सशक्त प्रतिनिधि विद्वान् मानता हू। मैने उनसे और उन जैसे ४-६ विद्वानो से तथा अनेको यज्ञ प्रेमियो से साग्रह निवेदन किया था कि खुल्लमखुल्ला मुखर विरोध न किया जाये। धर्मार्य सभा के सयोजक बन्धुवर महेश जी विद्यालकार से इस मुद्दे पर विचारार्थ धर्मार्य सभा का अधिवेशन बुलाने की भी बात दो तीन बार हुई थी। विधिहीनता या अराजकता सगठन के गौरव के लिए निश्चित ही अप्रशस्त है। अत्र विद्वान्स प्रमाणम्।

२ आचार्य जी ने एक और बिन्दु उभारा है "महर्षि दयानन्द ने कई कर्मकाडी विधान बनाये है, जो पूर्व विधानो मे नहीं हैं। अत स्वामी सत्यम् जी जैसे व्यक्तियो ने कोई नवीन व्यवस्था दे दी, तो क्या बुरा हो गया?"

नये पाखड

यह बात कोई आर्य समाज के बाहर का व्यक्ति कहता, तो हमारा निवेदन और प्रकार का होता। किन्तु महर्षि के समकक्ष हम किसे बैठा रहे हैं? हमारी अल्प विद्या मे महर्षि परिपूर्ण अधिकारी कलाकार थे। उन्होने जो भी विधान किया है, वह भी पूर्ण शास्त्रीय विधान है। इसी आधार पर आज के याज्ञिको का स्वोपज्ञ विधान स्वीकरणीय नही है। इन्ही से "वसो पवित्रमसि शतधारम्" से पूर्णाहुति के पश्चात् शेष घृत को यज्ञ कुड मे देने की व्यवस्था चल पडी। धर्मार्य सभा ने इसे विधि विपरीत घोषित किया। किन्तु कुछ याज्ञिको की स्वच्छन्दवृत्ति, उन्होने यज्ञ वेदी की छत से, सैकडो छिद्र कराके, घडे लटका कर घी भर कर सहस्रधारा यज्ञ चालू कर दिया। कुछ ने बास के पोपले मे एक छोर पर छलनी बाध कर दूसरे छोर से घी उडेल कर सहस्रधारा यज्ञ आरम्भ कर दिया। विधि व्यवस्था का एक सुनिश्चित आधार होना ही प्रशस्त है। स्वच्छन्दता की कोई सीमा नही होती। व्यवस्था की एकरूपता के लिए धर्मार्य सभा के निर्णयो का सम्मान करना ही सगठन और वैदुष्य की शोभा है।

३ "ओ३म् स्वाहा" का इतिहास थोडा सा मुझे भी ध्यान मे है। मै सन् १९४७-४८ से वेद पाठ करने लगा था। १९५१-५२ से कलकत्ता के वेद पारायण यज्ञो मे मुझे भी ऋत्विज बनाया जाने लगा। १९६८-६९ से ब्रह्मा का दायित्व निभाने लगा। कलकत्ता के अतिरिक्त भी कई प्रान्तो, नगरो मे कभी कभी वेद पारायण यज्ञ कराना पडता रहा। पचास के दशक के अन्त या साठ के प्रारम्भ मे रानीगज या उधर ही कही यजुर्वेद पारायण यज्ञ था। श्री गगाधर शास्त्री (बिहार) और मै एक साथ पढते थे। यज्ञ के अध्यक्ष सम्भवत महात्मा आनन्द भिक्षु थे। वहीं **"ओ३म् स्वाहा"** **"सख्ये न इन्द्रवाजिन्"** आदि व्यवस्थाओ से प्रथम मिलन हुआ था। हम तो अध्यक्ष जी के आदेशो के अनुगामी थे। प० गगाधर जी अच्छे वैयाकरण साहित्यिक है। **'अचोन्त्यादि टि·'** और **'प्रणवष्टे.'** हम लोगो के लिए असुविधाकर न थे। किन्तु सबके लिए तो यह 'टि' के प्रणव आदेश का पालन सम्भव न था। पुण्यार्थी वेदपाठियो की दुर्गति थी। कुछ वर्ष यह "ओ३म् स्वाहा" कलकत्ता मे भी विद्वानो के मध्य छाया रहा। सामान्य प्रकरण मे केवल स्वाहा और वेद पाठ आरम्भ होते ही "ओ३म् स्वाहा" विचित्र स्थिति थी। उत्तर की जगह केवल 'प्रणवष्टे' का आग्रह मात्र था।

धर्मार्य सभा का निर्णय

अब धर्मार्य सभा का निर्णय आया। इतनी अव्यवस्था होती थी कि सभी हैरान हो जाते थे। धर्मार्य सभा ने सुस्पष्ट निर्णय लिया कि यज्ञो मे मन्त्रान्त मे केवल स्वाहा ही बोलना उचित है। रही बात 'प्रणवष्टे' की, सो इस प्रसग मे उस सूत्र की प्राप्ति ही नही है। विस्तार के लिए धर्मार्य सभा का निर्णय देखना चाहिए।

अपने विद्वान् बन्धुओ से एक अनुरोध करने का मन हो रहा है **"परस्परं भावयन्त श्रेयः परमवाप्स्यथ"** और परम प्रभु की कृपा हो **"वयं देवाना सुमतौ स्याम।"**

आर्य समाज कलकत्ता, १९ बिधान सरणी, कोलकाता-६

क्या मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है?

❑ श्री प्रवीणकुमार

स्थापना यह है कि मनुष्य कर्म करने मे स्वतत्र है, किन्तु अपने किये हुए कर्म का फल भोगने मे परतत्र है। यह बात किन्ही ग्रथो मे लिखी गई है। यह सुनने मे आकर्षक भी लगती है। अब विचार कर यह देखना है कि इसमे कुछ सचाई भी है या नहीं।

अच्छे कर्म का अच्छा, बुरे का बुरा फल

इस स्थापना वाक्य मे यह अर्थ निहित है कि अच्छे या बुरे कर्म करना मनुष्य के अपने हाथ मे है, यदि वह अच्छे कर्म करेगा, तो उसे अच्छा फल मिलेगा और यदि वह बुरे कर्म करेगा, तो उसे उनका बुरा फल भुगतना पडेगा, क्योकि कर्मो का फल भुगतने मे वह परतत्र है।

यह वाक्य सदाशयतापूर्ण है। इसका उद्देश्य सभी लोगो को सुपथ पर चलाना, और बुरे कर्म करने से रोकना है। परन्तु क्या यह वाक्य सही है?

किस आयु में मनुष्य स्वतत्र बनता है?

मनुष्य कर्म करने मे स्वतत्र है। जन्म के कितने समय बाद मनुष्य मनुष्य बनता है कि उसे कर्म करने मे स्वतत्र कहा जा सके? नवजात शिशु को निश्चय ही कर्म करने मे स्वतत्र नही कहा जा सकता। जो बोल नही सकता, खडा नही हो सकता, चल नहीं सकता, उसे कर्म करने मे स्वतत्र कहना स्वतत्रता का उपहास करना है।

जन्म से पहले मनुष्य यह चुनने मे स्वतत्र नहीं है कि उसके मा-बाप कौन होगे? वे सदाचारी होगे, या शराब पी कर गाली गलौज करने वाले दुष्ट लोग होगे। जन्म के बाद उसके भाई बहिन, हमजोली साथी, सहपाठी कौन होगे, जिनसे वह अच्छी या बुरी आदते सीखेगा?

भूख प्यास स्वतत्रता हर लेती है

वह इस बात मे स्वतत्र नहीं है कि खाये या न खाये। उसे भूख लगेगी और उसे खाना पडेगा ही। उसे प्यास लगेगी और पानी पीना पडेगा। उसे सास लेना ही पडेगा नहीं तो वह मर जायेगा। इसी प्रकार उसे मल मूत्र का त्याग भी करना ही पडेगा। इन कर्मो मे वह स्वतत्र नहीं है। यदि कर्म इच्छा न होते हुए, न करने का दृढ सकल्प करने के बाद भी करना पडे, तो उसे कर्म करने की स्वतत्रता नहीं कहा जा सकता।

अज्ञान की बाधा

फिर मनुष्य का सीमित ज्ञान उसके अच्छे या बुरे कर्म करने की स्वतत्रता मे बाधक है। जिसे यह पता ही नही है कि क्या कर्म करने का क्या फल होगा, उसे कर्म करने मे स्वतत्र कैसे कहा जाये?

हम फिर पहली बात पर वापस लौटते है : किस आयु मे मनुष्य कर्म करने मे स्वतत्र हुआ माना जा सकता है? शिशु को छोडिये, क्या चार पाच बरस का बालक कर्म करने में स्वतत्र होता है? उसके लिए भोजन मा-बाप जुटाते है। उनका गलत या सही कहना मान कर उसे चलना पडता है। न मानने पर डाट फटकार और ताडना सहनी पडती है।

'अच्छी' शिक्षाए

फिर, बचपन मे ही उसे बहुत सी 'अच्छी' बाते सिखा दी जाती है माता पिता और गुरुओ का कहना मानो, सदा सच बोलो, चोरी मत करो, जीव जन्तुओ को सताओ मत। उसका अपना रुझान इन 'अच्छी' बातो को न मानने की ओर रहता है। हिन्दुओ को देवी देवताओ, मुसलमानो को पीर पैगम्बरो, ईसाइयो को ईसा, उसके पिता परमात्मा और पवित्र आत्मा पर श्रद्धा करना सिखाया जाता है। मनुष्य बचपन मे लादी गई इन मान्यताओ से जीवन भर उबर नही पाता। भूत प्रेत, चमत्कारो की कहानिया उस पर हावी हुई रहती है। वह स्वतत्र चिन्तन ही नही कर पाता, स्वतत्र कर्म कहा से करेगा?

पुलिस और सेना मे अनुशासन कितना कडा और अच्छा होता है और सैनिक या सिपाही उसके कितने आदी हो जाते हैं, यह दिखाने के लिए एक कहानी गढी गई है। एकं सिपाही दही की मटकी लिये जा रहा था। किसी शरारती छोकरे ने एकाएक चिल्ला कर आदेश के स्वर मे कहा 'सावधान!' आदत के वशीभूत सिपाही तुरन्त परेड की सावधान मुद्रा मे खडा हो गया। दही की मटकी उसके हाथ से गिर कर फूट गई। हम सब परम्परा से चली आ रही मान्यताओ मे इससे भी अधिक बुरी तरह जकडे हुए है। मन्दिर के सामने से गुजरते हुए हिन्दू अभ्यासवश सिर झुकाता है, ईसाई सलीव को प्रणाम करता है, मुसलमान मक्के की ओर मुह करके नमाज़ पढता है। कोई स्वतत्र चिन्तन करने की स्थिति मे ही नहीं है।

यह मान लिया जाये कि वयस्क (बालिग) होने से पहले तक मनुष्य नासमझ, अबोध, मूर्ख रहता है, उसे अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी नहीं माना जाता, बालक है, नादान है, कह कर उसके अपराधो की उपेक्षा कर दी जाती है, इसलिए समझना चाहिए कि वयस्क (अठारह वर्ष का) हो जाने पर उसे कर्म करने मे स्वतत्र माना जा सकता है।

क्या वयस्क व्यक्ति स्वतत्र होता है?

किन्तु वयस्क पुरुष की भी कितनी बाध्यताए है? अवयस्क रहने तक वह केवल भूख और प्यास का शिकर था, अब उसमे कामेच्छा जाग जाती है, जो भूख से अधिक अदम्य होती है। **'बुभुक्षितः किं न करोति पाप'** (भूखा आदमी हर तरह का पाप करने को तैयार रहता है) तो **कामी दोष न पश्यति'** (कामी पुरुष को कोई बुराई बुराई ही नही लगती)। गीता मे प्रश्न उठाया गया है **'अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः?'** (मनुष्य किससे प्रेरित हो कर पाप करता है?) फिर उत्तर दिया गया है **'काम एष, क्रोध एष लोभमोह समुद्भव.'** (काम, क्रोध, लोभ और मोह से प्रेरित हो कर मनुष्य पाप कर्म मे प्रवृत्त होता है)।

पाप का मूल मनुष्य की रचना मे है

काम, क्रोध, लोभ और मोह, चारो मनुष्यो की रचना मे ही विद्यमान है। ये उसके अस्तित्व और जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक तत्व है। यदि इनके वशीभूत हो कर उसे ऐसे कर्म करने पडते है, जिन्हे वह करना नही चाहता, तो उसे स्वतत्र कैसे कहा जा सकता है?

यदि यह पता हो कि बुरा कर्म करने से कष्ट उठाना, दु ख भोगना पडेगा, तो कोई भी व्यक्ति स्वतत्र इच्छा से बुरे कर्म करना नही चाहेगा। फिर भी हम विवेकशील लोगो को कहते पाते है **जानामि धर्म न च मे प्रवृत्तिः, जानाम्यधर्म न च मे निवृत्ति.'** (मै यह जानता हू कि धर्म, अच्छा कर्म है, पर उसे करने का मेरा मन नही होता। मै यहं भी जानता हू कि अधर्म, बुरा कर्म क्या है, उससे बचने का मेरा मन होना चाहिए, पर नही होता।) फिर मनुष्य कर्म करने मे स्वतत्र कहा रहा?

यदि मनुष्य को सही गढा गया है, तो उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति धर्माचरण की होनी चाहिए। यदि नही है, तो दो ही बाते सभव है या तो मनुष्य की गढन ही सदोष है, या फिर हमारी धर्म अधर्म, भले बुरे की धारणाए ही गलत है। मनुष्य की गढन के बारे मे हम कुछ भी नही कर सकते। वह गढने वाले के हाथ मे है। धर्म अधर्म की धारणाओ मे हम सुधार अवश्य कर सकते है।

निकम्मे धर्मगुरु

मनुष्य जाति के धर्मगुरु निकम्मे रहे है। कुछ ने धर्म भावना का उपयोग निजी स्वार्थ साधन के लिए किया है। ईसा का स्वय को ईश्वर का पुत्र कहना और मुहम्मद का स्वय को ईश्वर का सदेशवाहक कहना अपनी महिमा बढाने के लिए था। उन पर विश्वास करने से उनके भक्तो के पाप क्षमा कर दिये जायेगे, यह बात भी समझ आने वाली नहीं है। स्त्री को पाप की जड बताना, स्त्री पुरुष सम्भोग को पाप कहना, आजन्म ब्रह्मचर्य की महिमा बखानना, दान की प्रशसा, सब स्वार्थ प्रेरित भ्रान्त प्रचार है। जो ईसा या मुहम्मद पर विश्वास न लाये (उन्हे ईश्वर का पुत्र या पैगम्बर न माने), वह अविश्वासी है, काफिर है, उसे मार डालो, यह धर्म की दूषित धारणा है। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के तालिबान तो स्त्रियो का बुर्के के बिना घर से निकलना भी पाप, बुरा काम समझते है और इसके लिए नाक, हाथ काट देना, या मुह पर तेजाब फेक देना उचित दड मानते है। ऐसी धार्मिक धारणाओ को क्या कहा जाये?

गृहस्थी के बन्धन

फिर कर्म स्वतत्रता पर आये। अविवाहित पुरुष अपनी इच्छा से कोई भी काम कर सकता है, परन्तु विवाहित पुरुष को पत्नी की सलाह पर भी ध्यान देना पडता है। कुछ पुरुष पत्नी की सलाह की अवहेलना कर देते है, परन्तु सत्पुरुष वही माने जाते है, जो पत्नी की इच्छा का आदर करते है। रामायण के राम सीता के कहने से ही स्वर्ण मृग को पकडने गये थे। पत्नी की इच्छा से चलने वाला पुरुष कर्म करने मे स्वतत्र कहा रहा?

भीड का दबाव

जब पुरुष तरुण, सशक्त, समृद्ध रहता है, तब भी उसे अपने से बडे प्रभुताशाली लोगो की इच्छाओ का ध्यान रख कर चलना पडता है, पडोसियो की इच्छा, अनिच्छा, सुविधा असुविधाओ का ध्यान रख कर चलना पडता है। मित्रो की ही नही, शत्रुओ की भी इच्छा को देख कर कोई कदम उठाना पडता है। फिर, भीड के सामने किसी की स्वतत्र इच्छा नही चलती। यदि किसी भीड मे सब लोग किसी मूर्ति को सिर नवा रहे हो, तो सिर नवा देना ही व्यावहारिक होता है, न नवाने पर सिर कटने की सभावना रहती है। सिर कटा देने वाला यशस्वी हो सकता है, जीवित नही रहता।

माता पिता परतत्र हैं

जब मनुष्य बेटे बेटियो के पिता या माता बन जाते है, तब उनकी कर्म करने की स्वतत्रता और कम हो जाती है। अपनी रुचि अरुचि से अधिक बच्चो की रुचि अरुचि का ध्यान रखना होता है। ध्यान न रखने से कलह होता है और परिणाम भयकर होते है। बच्चे चढते सूर्य होते है और मा बाप ढलते सूर्य। वृद्धावस्था मे उन्हे सन्तान की सद्भावना पर ही जीवित रहना होगा।

फिर असामाजिक तत्वो, चोरो, डाकुओ, अपहरणकर्ताओ, फिरौती मागने वालो, दादाओ, नेताओ का दबाव भी आज के नागरिक को झेलना होता है। यदि आपके पास अपने निर्वाह के लिए ही धन नही है, तब तो कोई भय नही, परन्तु यदि आपकी जेब मे चार पैसे हो,

(शेष पृष्ठ १० पर)

पत्र जगत्

त्याग और बलिदान की आवश्यकता है

आर्य जगत् २ दिसम्बर के अक का सम्पादकीय यथार्थ का दिग्दर्शन है, चिन्तनीय है, प्रेरक है, आचरण करना ही आपके इस लेख के पढने का लाभ है।

जन चेतना यात्रा के अनेक चित्र देखने को मिले। आपने लिखा है कि एक दिन की यात्रा से बुराइया नही मिट सकेगी। 'पहले हमे अपनी बलि देनी होगी।' अभी तो आर्य नेताओ मे एक भी दिखाई नही दे रहा है, जो अपनी बलि देने का विचार भी कर रहा हो। पद प्राप्त करने के लिए युद्ध कर रहे है। दैनिक समाचार पत्रो मे युद्ध के समाचार प्रकाशित हो रहे है, जिनसे आर्य समाज की बदनामी हो रही है।

सत्ता प्राप्त करने का त्याग जो नही कर सकते है, वे बलि कैसे दे सकते है। जो व्यक्ति बलि देता है, वह तो ससार से विदा हो जाता है। उसका शारीरिक अस्तित्व समाप्त हो जाता है। लेकिन वह अमर हो जाता है। जनता उसके गुणगान करती है और वह सिद्धान्तो की रक्षा हेतु बलि देने के कारण अमर हो जाता है।

आर्य समाज के ये आर्य नेता पद प्राप्त करने हेतु छल, कपट, असत्य का व्यवहार करते हुए सत्य की बलि देकर रावण, कस के समान अमर जीवित अवस्था मे और मरणोपरान्त भी अमर हो जावेगे। आर्य समाज के नेता प्रमुख रूप से दो वर्गो के है एक वकील,दूसरे सरकारी कर्मचारी। दोनो वर्गो से सत्य हजारो किलोमीटर दूर है। इसलिए आर्य समाज मरणासन्न स्थिति मे है और गृहयुद्ध मे उन्नति कर रहा है।

आर्य समाज के लगभग १७०० विद्यालय तथा लगभग ७० गुरुकुल है। इनके छात्र या स्नातक इदौर और उसके आसपास आर्य समाज के प्रसार प्रचार मे रुचि नही लेते। यह जन चेतना यात्रा एक दिन का प्रदर्शन हो गया। वास्तव मे आर्य जन चेतना होनी चाहिए। आपके लेख का यही महत्व है।

जगदीश प्रसाद वैदिक, वैदिक सदन, भवर कुआ, महू मार्ग, इन्दौर-४५००१७

मृतकों को श्रद्धांजलि

प्रतिष्ठित लोगो की आकस्मिक और असामयिक मृत्यु होने पर दिवगत व्यक्ति की स्मृति मे विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रतिष्ठान बन्द हो जाते है। कई दिनो तक राजकीय शोक मनाया जाता है। ऐसे दुखद मौके पर यदि कोई व्यक्तिगत स्तर पर कुछ भी करे तो उसका औचित्य हो सकता है, पर सरकारी स्तर पर जो कुछ भी किया जाता है, उसकी प्रासगिकता पर राष्ट्रहित मे पुनर्विचार करने की बहुत अधिक जरूरत है। किसी भूतपूर्व या वर्तमान सासद या विधायक की मृत्यु के कई महीने के पश्चात् लोकसभा या विधान सभा की कार्यवाही को श्रद्धाजलि अर्पित करके आये दिन सदन को स्थगित किया जाना मेरे विचार मे उचित नही है।

क्या यह उचित नही होगा कि किसी जनप्रतिनिधि की मृत्यु होने पर कई दिनो के पश्चात् होने वाले विधान सभा या ससद् के प्रथम दिन दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करने के पश्चात् अन्य कार्य दिवसो की तरह लोकसभा की कार्यवाही को जारी रखा जाये और निर्धारित कार्य पूरा किया जाये। मेरे विचार मे मृतक के लिए यही सच्ची श्रद्धाजलि होगी। क्या माननीय सासद, विधायक या सम्बन्धित लोग इस विषय पर विचार कर राष्ट्रहित मे कार्यवाही करेगे?

दयाराम पोद्दार, झारखड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, राची

एक बडा प्रश्न धर्मनिरपेक्षता का है। क्या सरकार अधिकृत रूप से आत्मा, परमात्मा, परलोक, मद्गति, दुर्गति मे विश्वास रखती है? क्या वह सविधान के अनुसार ऐमा कर सकती है? दो मिनट मौन रह कर मृतक के लिए प्रार्थना करना किस धर्म, या सम्प्रदाय की विधि है? क्या इसका कुछ भी प्रभाव हो सकता है? कुख्यात मृतको के लिए ऐसी प्रार्थना करना और भी बडी विडम्बना है। कम्यूनिस्ट सासद कैसे इस मौन प्रार्थना मे भाग लेते है? प्रार्थना के बाद दिन भर छुट्टी मना लेना सरासर कामचोरी है। —स०

कुछ निवेदन

आपकी पत्रिका को नियमित रूप से पढता हू। आपकी पत्रिका मे लेखको के विचार खुले रूप से दिये जाते है। यह एक शुभ लक्षण है मगर कुछ विचार ऐसे भी देखे गये है जिनमे अतिशयोक्ति होती है या वे पाठको, विशेष कर आर्यजनो मे गलतफहमी पैदा कर देते है। बहुकुडी यज्ञ, ओम् स्वाहा का उच्चारण करके आहुति देना। लादेन के विचारो के पक्ष मे ऐसे विचार जो भ्रम पैदा करते है, क्योकि लादेन का प्रचार का तरीका आसुरी है। उसकी तुलना करना अच्छा नही। दूसरा लादेन जैसे व्यक्ति के समान सम्पत्ति और साधन की कामना करना एक अनार्यपन है। अगर हमारे अन्दर इच्छाशक्ति हो, तो महर्षि दयानन्द की भाति एक 'लक्ष्य' बना कर आर्य विचारो का प्रचार करना होगा। आजकल आर्य समाजो को "क्रान्तिकारी" व्यक्तियो की आवश्यकता है, जो प्रेम-प्यार की भाषा से अन्य धर्मावलम्बियो का दिल जीते। "महात्मा प्रभु आश्रित" जैसे व्यक्ति चाहिए, जो न केवल स्वय आर्य बने, बल्कि अपने खानदान/बिरादरी और इलाके को आर्य बनाया। इसके लिए सामूहिक यज्ञो का आयोजन चाहे बहु "हवन कुड" द्वारा हो, तो अधिक लाभ है। क्योकि यज्ञो मे अभी आस्था बनी है।

दूसरा आपके द्वारा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मत्री को कहना चाहूगा कि डी० ए० वी० स्कूलो या उनके अन्तर्गत आर्य समाजो मे वेद प्रचार को बढावा देने के लिये "उपदेशको और भजनोपदेशको" की मडली/मडलिया बना कर प्रचार करे और प्रार्थना में सध्या/हवन को सम्मिलित करे ताकि इन स्कूलो से निकलने वाले विद्यार्थी भगतसिह, रामप्रसाद बिस्मिल बने।

सत्यप्रकाश आर्य, आर्य समाज विशाखा ऐन्क्लेव, उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली-८८

समान नागरिक संहिता और धारा ३७०

"राम" को आदर्श मान कर उनके नाम का सहारा ले कर सत्ता मे पहुची भाजपा ने न जाने क्यो "राजा" बन कर राजा राम को भुला दिया। अपने समस्त वायदो व राष्ट्र को सुदृढ एव शक्तिशाली बनाने के स्वप्नो को गौण करके भाजपा सरकार केवल गठबन्धन के घटक दलों को खुश रखकर अपने अपने स्वार्थ सिद्ध करने मे लगी हुई है। आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि "राममद" से मिली सत्ता "राजमद" मे विलीन होती जा रही है।

आज भाजपा की सहयोगी सस्थाओ—रा० स्व० सघ व वि०हि०प० आदि— के कार्यकर्ताओ से लेकर अधिकारियो तक का यही मानना है कि "प्रधानमत्री जी" उनके अपने है। वे यह नही सोचते कि प्रधानमत्री बनाया क्यो था? सत्ता मे आने की राष्ट्रीय सोच क्या थी? वे केवल एक बार अपने आदमी को प्रधानमत्री बनाने से ही सतुष्ट हो गये लगते है। परन्तु क्या वे कश्मीर मे मारे गये हजारो हिन्दुओ की आत्माओ को शान्त करा पाये या फिर वहा से लाखो बेघर हुए हिन्दुओ के आसुओ को पोछ पाये? नही, शायद वे ऐसा कदापि न कर पायें।

धारा ३७० के दुष्परिणामो का प्रचार समझा कर अगर जनता के सामने रखा जाये, तो कोई भी देशभक्त इस धारा को सहन नहीं करेगा। शेष भारत के नागरिक कश्मीर मे स्थायी रूप से नही बस सकते तथा वहा वोट भी नही डाल सकते, जबकि कश्मीर के गुलाम नबी आजाद महाराष्ट्र से व मुफ्ती मोहम्मद सईद उत्तर प्रदेश से चुनाव लड कर केन्द्रीय मत्री तक बनते रहे है? वाह कैसा कानून है, जिसके कारण आज कश्मीर की यह दुर्दशा हो गई है? डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान व्यर्थ हो रहा है। अत कश्मीर मे शेष भारत से आवश्यकतानुसार व्यापारियो व उद्योगपतियो को बसाया जाये, जिससे वहा रोजगार के अवसर उपलब्ध हो और शेष भारत के लोगो को भी वहा रोजगार मिले और वे कश्मीर मे बस सके और वहा की जनता से भी घुल मिल कर राष्ट्र की मुख्य धारा को पोषित करे।

इसके साथ ही "समान नागरिक सहिता" की भी व्याख्या जनता के सामने स्पष्ट करनी चाहिए। इसमे मुख्य रूप से सभी देशवासियो को एक विवाह की ही अनुमति होनी चाहिए, जिससे परिवार नियोजन का उद्देश्य भी सफल रहेगा तथा राष्ट्र को धर्म के आधार पर पुन बाटने वालो का भी सपना चकनाचूर होगा। नही तो हिन्दू एक व मुसलमान चार शादिया करके जनसख्या का सारा सतुलन बिगाड देंगे जो कि भविष्य मे बहुत ही खतरनाक साबित होगा तथा धीरे धीरे भारत भी पाकिस्तान दिखाई देने लगेगा। इसके साथ ही सभी धर्मो के लिए एक समान शिक्षा प्रणाली रखी जाय, धर्म के आधार पर अल्पसख्यको द्वारा अपनी अपनी अलग अलग शिक्षा सस्थाए व मदरसे आदि खोलने की परम्परा को बन्द किया जाये, जिससे तालिबानी प्रवृत्ति पर भी अकुश लगेगा और सभी धर्मो के लोग आपस मे मेल मिलाप बढा कर रह सकेगे।

अत भाजपा व उसके सहयोगी दलो का यह दायित्व है कि उपरोक्त बिन्दुओ की व्याख्या करके उसको प्रचारित करके जनता को जाग्रत करे और राष्ट्र को लाभान्वित करे। हमारे देश मे बहुसख्यको के वोटो से जीतने वाली समस्त पार्टियो को अब तुष्टीकरण की आड मे पलने वाले आतकवाद के नगे नाच से सबक लेना चाहिए और "समान नागरिक सहिता", "धारा ३७०" व "राम मन्दिर" जैसे प्रश्नों के राष्ट्रीय महत्व को समझना चाहिए।

विनोदकुमार सर्वोदय, नया गज, गाजियाबाद

आतंकवाद क्या है?

❑ श्री ज्येष्ठ वर्मन

आज सारा विश्व आतकवाद से चिन्तित है। यदि इस समस्या का समाधान समय रहते नही किया जाय, तो विश्व भर मे निश्चित रूप से अराजकता फैलेगा, मानव सस्कृति का महाविनाश होगा। दुख की बात यह है कि यद्यपि दुनिया भर मे आज आतकवाद की चर्चा है, तथापि आतकवाद की परिभाषा क्या है, यह कोई भी नही बताता। इस विषय मे कोई एक मत नही है। ऐसी स्थिति मे, आतकवाद को समाप्त करने के लिए विश्व मानव समुदाय का एकजुट होकर कार्य करना असम्भव है।

आतकवाद की परिभाषा

सन् १९८६ मे अप्रैल मास मे, अबर्डीन विश्वविद्यालय (स्काटलैड) मे आतकवाद के बारे मे एक त्रिदिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमे लगभग बीस देशो के एक सौ चालीस प्रतिनिधियो ने भाग लिया था। लेकिन, इस गोष्ठी मे आतकवाद की परिभाषा क्या है, इस विषय पर कोई एकमत या समान विचार वहा सामने नही आया। क्या किसी विदेशी या स्वदेशी तानाशाही के विरुद्ध, अथवा स्वराज्य की प्राप्ति के लिए किये जाने वाले सघर्ष को आतकवाद कहा जा सकता है? दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया आदि देशो के लोगो के सघर्ष भयोत्पादक हैं? इस प्रश्न को यो ही टाल दिया गया।

फिर १३ मार्च १९९६ मे, मिस्र देश मे शान्ति स्थापको की एक शिखर बैठक हुई, उसमे विश्व के २७ देशों के प्रतिनिधियो ने भाग लिया था। वहा भी यही बात हुई कि आतकवाद वास्तव मे क्या है, इस पर कोई स्पष्ट विचार सामने नही आये। इस्राइल के विरुद्ध फिलस्तीन के लोगो के सघर्ष को आतकवाद का नाम देने के लिए अरब देशो के प्रतिनिधि तैयार नही थे। अत प्रश्न ऐसे ही रह गया।

आतंकवाद का प्रसार

आज सारा विश्व आतकवाद से परेशान है। आयरलैड, युगोस्लाविया, श्रीलका, फिलिपाइन, कम्बोडिया, दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया आदि देश आतकवाद के शिकार है। गत वर्ष २७ अप्रैल को भारत के कानून आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जीवन रेड्डी द्वारा पत्रकारो के सामने दिये गये वक्तव्यो के अनुसार, हमारे देश के अन्दर २९,१५१ लोग आतकवादियो के हाथो मारे गये है, ५१०१ सुरक्षा दल के जवान हताहत हुए हैं, देश के विभिन्न भागो मे २७३० बम विस्फोट हुए है और आइ ऐस आइ की राष्ट्र विरोधी गतिविधियो को रोकने के लिए भारत सरकार ने कुल रु० ६४००० करोड खर्च किया है।

गत ५ अक्टूबर को देश के सभी राज्यो के मुख्य सचिवो और डायरेक्टर जनरल आफ पोलीस, इनको देश की आतरिक सुरक्षा के सम्बन्ध मे सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय गृहमत्री श्री लालकृष्ण आडवानी ने बताया कि देश के अन्दर कभी भी, कहीं भी आणविक बम्ब विस्फोट, रासायनिक और जैविक अस्त्रो का प्रयोग हो सकता है, और जैसे ११ सितम्बर को अमेरिका पर आक्रमण किया गया था, वैसे ही भारत पर भी हमला हो सकता है। अत इसको रोकने के लिए कोई कठोर कानून बनाने का विचार सरकार के मन मे है। इस सम्बन्ध मे सरकार अमेरिका के फेडरल ब्यूरो आफ इन्वेस्टिगेशन (ऐफ बी आई) की तरह कोई व्यवस्था बनाने वाली है।

लेकिन यहा कई प्रश्न उठते है। यद्यपि अमेरिका और ब्रिटेन मे, भारत जैसी आतकवादी समस्या नही है, तथापि उन देशो मे आतकवाद के विरुद्ध कठोर कानून व्यवस्था पहले से ही है। भारत मे क्यो नही? कानून आयोग की सिफारिश के अनुसार भारत सरकार ने अब तक आतकवाद निषेध प्रस्ताव को लोकसभा के सामने क्यो नही रखा है? फिर, और एक महत्वपूर्ण बात यह है कि अमेरिका की सामाजिक परिस्थिति दिन ब दिन बिगडती जा रही है, अमेरिका और ब्रिटेन मे अपराधो की घटनाए दिन ब दिन बढती जा रही है। इस समस्या को रोकने मे ये दोनो देश विफल हो गये है। ऐसी स्थिति मे उन देशो से भारत को क्या सीखने को मिलेगा?

भारत एक बहुत प्राचीन देश है। यह किसी समय जगद्गुरु माना जाता था। आज भी इस देश के पास जटिल से जटिल समस्याओ के परिहार है। इसका अपना अपार ज्ञान और अनुभव का भडार दुनिया को घोर निराशा के अधेरे मे भी प्रकाश दे सकता है, मार्गदर्शन कर सकता है। इस प्रयोजन से कुछ विचार प्रस्तुत करता हू।

आतकवाद का अर्थ

आतकवादियो को हमारे देश मे, अग्रेज़ो की कानून व्यवस्था जारी होने के पूर्व, आततायी, साहसिक, भयोत्पादक आदि नामो से जाना जाता था। आतक शब्द का अर्थ है शाति भग, मानसिक या शारीरिक पीडा। (**आतङ्को रोग सन्ताप शङ्कासु मुरजध्वनौ**। मेदिनी कोश) अत पर हिसा, परपीडा मे प्रवृत्त दुष्ट पापी आतकवादी हैं। अनधिकृत रूप से शस्त्र धारण करके लोगो को भयभीत करते हुए घूमने वाले, क्रूर, हिंसक, अत्याचारी, इनको आततायी कहते है। (**आततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं शीलमस्य इति**) दुनिया मे छह प्रकार के आततायी होते है। (१) आग लगाकर या बम्ब विस्फोट आदि उपायो से घर, नगर, गाव आदि को नष्ट करने वाले (२) जहर फैलाने वाले (३) निर्दोष निहत्थे लोगो को घातक शस्त्रो से मारने वाले, (४) बलपूर्वक किसी का धन लूटने वाले (५) जबर्दस्ती से पराई जमीन और (६) पराई स्त्रियो का अपहरण करने वाले (**अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापह । क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते ह्याततायिनः॥**) ये सारे भयोत्पादक बडे दुष्ट पापी है। इनको सहन करना या क्षमा करना बिल्कुल गलत है। अत मित्रता के कारण, या किसी लोभ के कारण (पैसे या अधिकार के लोभ के कारण) इनको क्षमा करना आत्मघात के समान होगा। ऐसे शासक या सरकार अधिक समय रहेगी नही। (**न मित्रकारणाद्राजा विपुलाद्वाधनागमात्। समुत्सृजेत्साहसिकान् सर्वभूतभयावहान्॥** मनुस्मृति ८ ३४७) डाकुओ को साहसिक कहते है। ये चोरो से भी बहुत बडे दुष्ट पापी होते है। इनको भी कभी क्षमा नही करना चाहिए। ये बाते करने के योग्य भी नही है। इनके पक्ष मे मानवाधिकारो का तर्क देना बडी भूल होगी। (**स्यात्साहस त्वन्वयवत् प्रसभ कर्म**)।

इस चर्चा का मार यही है कि आतकवादी, आततायी, माहसिक, भयोत्पादक आदि समान रूप से बडे दुष्ट और पापी है। इनको देखते ही मार गिराना चाहिए, अन्यथा ये हमे मार गिरायेगे।

मानवाधिकार?

आतकवाद की जड अज्ञान (मूर्खता) और लोभ है। इस पर धर्म, राजनीति या मानवाधिकारो का जामा पहना कर प्रतिष्ठित करना मूर्खता है।

अन्त मे, एक दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे देश मे बार बार लेखन, पुस्तक, नाटक, सिनेमा, चित्र, भाषण आदि पर प्रतिबन्ध लगाये जाते है और इसका कारण यह बताया जाता है कि इससे किसी विशिष्ट जनसमुदाय के लोगो की भावना को चोट पहुचती है। लेकिन इस देश के अन्दर माल भर, दिन रात, ध्वनिवर्धको का भी उपयोग करके अन्य मतावलम्बियो के विरुद्ध द्वेष, घृणा, हिमा के लिए आतकवाद और साहस के कर्मो के लिए प्रेरित किया जा रहा है। उसके प्रति हमारे नेता और बुद्धिजीवी, सैक्यूलरिज्म की आड मे, उष्ट्र पक्षी का सा व्यवहार करते है। यह बन्द होना चाहिए और ऐसे हिसा प्रचारक ग्रथो पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।

**30, Panchvati, Krishnanand
Nagar, Nandini Layout Post,
Banglore-560096**

नव वर्ष जनवरी से नहीं चैत्र से शुरू होता है

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह मे ईसाइयो का क्रिसमस पर्व पडता है। उसके बाद ही भारत के नव धनाढ्य नववर्ष की पूर्व सध्या की तैयारी करने लगते है। ३१ दिसम्बर और १ जनवरी के बीच की रात धूमधडाके और हगामे मे बिताने का रिवाज चला दिया गया है। कितना रुपया पटाखो और शराब पर, होटलो मे डिनर पर खर्च किया जाता है। नया वर्ष क्या आया, गुडो को शराब पी कर दुर्व्यवहार करने की खुली छूट मिल गई।

पहली बात तो यह है कि भारत मे जनवरी मे कोई वर्ष शुरू नही होता। वर्ष शब्द से प्रकट है कि किसी समय साल की गिनती वर्षा ऋतु मे शुरू होती थी। वर्षा ऐसी ऋतु थी, जो प्रकट दिखाई पडती थी। बाद मे शरद ऋतु से साल की गणना होने लगी। उसके भी बाद ज्योतिर्विदो ने सूर्य के सक्रान्ति कालो के हिसाब से वर्ष के आरम्भ की गणना शुरू की।

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, उसके फलस्वरूप ऋतुए आती है। ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर, और वसन्त ये मुख्य ऋतुए है। शरत् और हेमन्त उतनी स्पष्ट दिखाई नही पडती।

भारतीय ज्योतिर्विदो ने वर्ष का आरम्भ वसन्त ऋतु के मध्यकाल चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से माना है। इस समय शिशिर ऋतु समाप्त हो जाती है और मौसम सुखद होता है। न केवल दक्षिण दिशा से हल्का ठडा पवन चलने लगता है, अपितु पेड, पौधे, लताए, क्षुप सभी फूलो से लद जाते है। ये फूल ही ग्रीष्म मे फल बनेगे। यह मानो नये सृजन का आरम्भ है।

सर्दियो मे ठिठुरन के मारे घूमना फिरना कम हो जाता है। वसन्त आते ही हर प्राणी मे नया उत्साह, नई चेतना भर उठती है।

कोयल कूकती है, भौंरे खिले फूलो पर गुजार करते है। नर नारी गाते और नाचते है।

अपने उत्साह को उसी नववर्ष के स्वागत के लिए बचा कर रखिये। इस दिसम्बर की ठडी रात मे नव वर्ष का स्वागत करने मे कोई तुक नही है। भारतीय नव वर्ष दिन के उजाले मे हस खेल कर, गा नाच कर, सुपच स्वादिष्ट भोजन करके मनाया जाता है। रात मे शराब पी कर ऊधम करके नववर्ष का स्वागत करना निशाचरी सस्कृति है। उससे दूर रहना ही भला है।

जैसे मद्यपान, धूम्रपान आदि को त्यागना है, वैसे ही ३१ दिसम्बर और १ जनवरी वाले वर्षान्त और नव वर्ष की परम्परा को भी यत्न करके त्यागना है। यह पश्चिमी सस्कृति का भूत उतारना ही है। अच्छाइयो को ग्रहण करना है, पर बुराइयो से दूर रहना है।

ग्रहों के प्रभाव का सच?

❑ श्री दत्तात्रेय तिवारी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालयो को ज्योतिर्विज्ञान का पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की अनुमति दी है तथा इसके लिए आयोग उनको आर्थिक अनुदान भी देगा। ज्योतिर्विज्ञान का एक विषय फलित ज्योतिष भी होगा, इसी विषय को लेकर सैक्युलरवादियो ने शिक्षा के भगवाकरण का आरोप लगा कर आकाश पाताल एक कर दिया है। भारत की सभ्यता और सस्कृति के विरोधी अग्रेजी पत्रो ने योजनाबद्ध तरीके से इनके लेखो को प्रमुखता से छापा है तथा सम्पादकीय भी लिखे है। पर फलित ज्योतिष का विरोध करने वाले ये पत्र स्वय प्रति सप्ताह ग्रह नक्षत्रो के आधार पर व्यक्ति के शुभ-अशुभ की भविष्यवाणी छापते है। कुछ वैज्ञानिको ने भी इस विषय को पाठ्यक्रम मे सम्मिलित करने को प्रगति विरोधी कदम बताया है।

फलित ज्योतिष का विरोध

फलित ज्योतिष मे विश्वास तथा उसका विरोध कोई नई बात नहीं है। महर्षि दयानन्द ने हिन्दू समाज से अन्धविश्वासो को उखाड फेकने के अपने अभियान मे फलित ज्योतिष का भी विरोध किया। वे मानते थे कि इससे भाग्यवाद और अकर्मण्यता को बढावा मिलता है।

सतुलित चितन

१९४१ मे जब हम स्नातक होने वाले थे, उस ग्र्ष आर्य जगत् के चिन्तक और मनीषी देवराज विद्याल्कार, जो देवराज मुनि के नाम से विख्यात थे, गुरुकुल के उत्सव मे आये थे। वे हम छात्रो से मिलने छात्रावास आए तथा सौभाग्य से जिस कमरे मे मै रहता था वही आ कर बैठ गए। बातचीत विविध विषयो पर काफी देर तक होती रही। उन्होने सध्या पर अपनी पुस्तक की अनेक बातो पर भी प्रकाश डाला।

बातचीत मे हमारे एक साथी ने एक प्रश्न पूछ डाला, जिससे लगा कि कुछ अशिष्टता हो गई है। प्रश्न था 'आप गुरुकुल के स्नातक होने पर भी, सुना है फलित ज्योतिष मे विश्वास करते है। आप मानव के भविष्य का निर्धारण ग्रह नक्षत्रो को गति एव स्थिति पर आधारित मानते है। यह तो एकदम मिथ्या और अन्धविश्वास है।' आज सोचता हू तो लगता है कि लोक व्यवहार से अनभिज्ञ मेरे साथी का व्यवहार शिष्ट नही था।

गुरुकुल का स्नातक ज्योतिष का विश्वासी?

मुनिजी ने अपने स्वभाव के अनुसार बिना किसी उत्तेजना के शात एव सयत स्वर मे कहा 'तुम्हे यह बात अटपटी लगती है कि गुरुकुल का स्नातक होने पर भी मै फलित ज्योतिष मे विश्वास करता हू। मुझे ऐसा लगता है कि तुम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व को पूरी तरह हृदयगम नही कर पाये। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मनुष्य के मन, बुद्धि, चित्त को, उसकी दृष्टि को विकसित करती है। इसका लक्ष्य गतानुगतिक, अन्धानुकरण या लकीर का फकीर बनाना नही है। महर्षि दयानन्द ने भी अपनी बातो को तभी स्वीकार करने को कहा है, जब वे वेदो की तुला पर खरे उतरे। पर वेदो के बारे मे, मत्रो के अर्थो के बारे मे भी विवाद है। दस विद्वान् एक ही मत्र के दस अर्थ करते है। यास्क को इसीलिए निरुक्त लिखना पडा। जहा वाद है, वहा विवाद अवश्य है। अद्वैत, द्वैत, विशिष्टाद्वैत, त्रैत आदि सब वाद है। सब मे विचार भेद है। फिर भी **'वादे वादे जायते तत्वबोध.'** विचार मन्थन से ही सत्य का बोध होता है। सत्य क्या है, यह भी तो विवाद का विषय बन गया है। हम परमात्मा की सत्ता को परम और चरम सत्य मानते है। हम अदृष्ट की अनिर्वचनीय की सत्ता को मानते है, पर चार्वाक सम्प्रदाय के अनुयायी ईश्वर की सत्ता को धूर्तो की कल्पना बताते है। किसी एक बात को अनेक दृष्टियो से देखा जा सकता है। जो वस्तु मेरे पूर्व मे है, मेरे सामने वाले के लिए वह पश्चिम मे है। एक ही दृष्टि ठीक है, यह मानना चिन्तन के विकास मे बाधक है। वेद मे भी कहा है **'एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।'** इसलिए याद रखो, अब तुम स्नातक होने वाले हो, अत अपनी आखो को सदा खुला रखो।

सत्य की ओर से आखे मीचना कठिन

'जहा तक विश्वास अन्धविश्वास का प्रश्न है, इसकी विभेदक रेखा अत्यधिक क्षीण है। विश्वास की कसौटी का आधार तर्क हो सकता है, पर कार्य कारण सम्बन्ध को अधिक महत्व दो। जिस दिन इस कार्य कारण सम्बन्धी परिणाम मे व्यत्यय आयेगा, हमारे विश्वास में शिथिलता आ जायेगी। यदि तुम्हे कुछ ऐसी घटनाए बताई जाये कि जिनसे कुण्डलियो की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हो, तो तुम क्या करोगे? निश्चय से तुम्हारा विश्वास डगमगा जायेगा। पर इसमे हताश होने की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है सत्य को जानने का प्रयत्न जारी रखने की। परीक्षण और पुनरीक्षण वैज्ञानिक प्रक्रिया के अनिवार्य अग है। मैं स्वय भी अपने विश्वास के डगमगाने पर सतत सत्य को जानने का प्रयत्न जारी रखता हू। महत्व अविश्वास विश्वास का नहीं, महत्व सत्य को जानने का है।

ग्रह नक्षत्रो का पृथ्वी पर प्रभाव

'जहा तक ग्रह नक्षत्रो की गति एव स्थिति के मानव को प्रभावित करने की बात है, मै तुमसे एक सीधा प्रश्न पूछता हू "सर्दी गर्मी क्यो होती है? ऋतुए क्यो बदलती है? विश्व मे विभिन्न स्थानो पर समय और मौसम मे अन्तर क्यो होता है?"'

हमने महाज्ञानी के रूप मे तत्काल उत्तर दिया 'यह सब परिवर्तन सूर्य के अपने अयन मार्ग पर तथा पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने का परिणाम है।' हम अपने उत्तर से स्वय सन्तुष्ट थे और मुनिजी ने बाद मे इसी उत्तर से हमे निरस्त्र कर दिया।

मुनिजी ने कहा 'तुमने यह स्वय स्वीकार कर लिया है कि सूर्य, पृथ्वी आदि की गति स्थिति से ऋतुए बनती हैं। अर्थात् ग्रह नक्षत्र हमारी पृथ्वी के वातावरण को प्रभावित करते है। अन्य ग्रहो से होने वाले विकिरण का प्रभाव पृथ्वी के वनो वनस्पतियो को प्रभावित करता है। यह क्यो नही मानते कि वह मनुष्यो को भी प्रभावित करता होगा। तुम यह तो जानते ही हो कि पूर्णमासी पर समुद्र मे ज्वार आता है, अमावस को क्यो नही आता? जब निर्जीव चन्द्रमा निर्जीव समुद्र मे उत्ताल तरगे पैदा करता है, तब वह क्या मनुष्य को प्रभावित नही कर सकता। सूरजमुखी का फूल सूर्य की ओर ही क्यो घूमता है? त्वचा की एक बीमारी का सम्बन्ध सूरज से क्यो माना जाता है? चन्द्रमा आह्लाद देता है, पर अग्रेजी का 'ल्यूनैटिक' (पागल) शब्द क्या है?'

मनुष्यों पर भी

इसके बाद वे स्वय प्रश्न करते और स्वय उसका उत्तर देते गए। उन्होने कहा 'गरम देशो के लोगो को आलसी और सुस्त क्यो कहा जाता है? ठण्डे देशो के लोग उद्यमी और परिश्रमी कहलाते है? इसका अर्थ यह है कि सूर्य न केवल पृथ्वी के वातावरण को, अपितु मनुष्य को भी प्रभावित करता है। मनुष्य की त्वचा के रग को प्रभावित करता है। उसके कार्य को और उसके तन और मन को प्रभावित करता है। ऐसी स्थिति मे हमे इतना तो मानना ही होगा कि ग्रह नक्षत्र मानव के जीवन को प्रभावित करते है। इसी क्रम मे हमे यह भी मानना होगा कि वे मानव की बुद्धि को भी प्रभावित करते होगे।'

जन्म कुंडली

एक अन्य साथी ने प्रश्न किया 'आपकी अब तक की बात कुछ समझ मे आती है। पर ग्रह नक्षत्रो की स्थिति के आधार पर कुंडली बना कर किसी व्यक्ति के सप्ताह, मास या वर्ष की भविष्यवाणी करने का क्या औचित्य है?' इसका उत्तर उन्होने कुछ घुमाफिरा कर दिया।'

उन्होने कहा 'आयुर्वेद मे वात, पित्त, कफ के आधार पर व्यक्ति के रोग का निदान और उपचार किया जाता है। आजकल के डाक्टर भी कहते है कि सर्दियो मे जन्मे बालक को सर्दी जुकाम का अधिक खतरा होता है। इसी बात को कुछ विस्तार मे ले जाकर आप यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि जब कभी भी शीत का अधिक प्रकोप होगा, उस व्यक्ति के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पडेगा। यह प्रभाव तत्काल भी हो सकता है, सप्ताह के बाद या वर्ष के बाद भी हो सकता है व्यक्ति की रोग प्रतिरोधी क्षमता के आधार पर।'

एक अन्य साथी ने प्रश्न किया 'आप निष्कर्ष की बात कर रहे है, निष्कर्ष तो अनेक परीक्षणो के बाद ही निकाला जा सकता है। क्या अब तक ऐसा कोई अध्ययन व्यापक स्तर पर किया गया है? इसके साथ ही ग्रह नक्षत्रो से किसी दुर्घटना, पुत्र-पुत्री का और यहा तक किसी आयु मे मृत्यु आदि का योग है आदि बाते भी क्या ठीक होती है?'

मृत्यु योग

मुनिजी ने कहा 'आयु या मृत्यु की बात हस्तरेखा विशेषज्ञ भी बताने का दावा करते है। हम यहा हस्तरेखा की बात नही कर रहे। मै इस बारे मे कुछ नही कह सकता, पर जहा तक ग्रह नक्षत्रो के आधार पर कुण्डली बनाकर मास, वर्ष आदि की भविष्यवाणी की जाती है, उस पर विचार भेद हो सकता है। वर्षो पूर्व जब कि हमारे देश मे आज की तरह अन्धविश्वास व्याप्त नहीं था, हमारे शास्त्रो मे व्यक्ति केभावी जीवन के सौभाग्य सूचक के रूप मे ग्रह नक्षत्रो की स्थिति का विवरण देने की परम्परा थी। जैसा तुमने पढा है कि रघुवश मे कालिदास ने रघु के जन्म के भाग्य सम्पद सूचक के रूप मे **"ग्रहैस्तत: पचभि रुच्चसश्रयैरसूर्यभि:"** को उद्धृत किया है। जन्म के समय के आधार पर कुडली बनाना कब से प्रारम्भ हुआ, नही कह सकते, किन्तु यह निश्चित है कि भारत मे यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इसी परम्परा के आधार पर हमारी यह भी मान्यता है कि कोई शुभ कार्य मुहूर्त देख कर किया जाना चाहिए। मुहूर्त का अर्थ है देश काल की परिस्थितिजन्य अनुकूलता। हम मुहूर्त भी पडित से निकलवाते है जो पचांग देख कर निकालता है अर्थात् ग्रह नक्षत्रो की स्थिति देख कर। स्वामी जी ने मुहूर्त शब्द का प्रयोग न कर शुभ कार्यों के लिए "उपयुक्त अवसर" का प्रयोग किया है।'

मुनिजी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा 'जहा तक मुहूर्त पर विश्वास की बात है, मेरा उस पर पूरा विश्वास है,

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची श्रद्धांजलि दें

❑ डा० महेश विद्यालकार

हर साल स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस आर्य समाज, सभा, सगठन, सस्थाए, गुरुकुल आदि बडी धूमधाम से मनाते है। स्वामी जी का योगदान, तप, त्याग, तपस्या, सेवा व बलिदान उल्लेखनीय एव वन्दनीय हैं। वे हमारे जीवन और जगत् के लिए प्रकाश स्तम्भ है। यदि हम सीखना, सुधरना तथा तप, त्याग, सेवा, बलिदान आदि का पाठ पढना चाहे, तो स्वामी श्रद्धानन्द का प्रेरक व्यक्तित्व एव कृतित्व हमारे लिए आदर्श बन सकता है। शून्य से शिखर पर चढना कोई सीखे, तो स्वामी श्रद्धानन्द से सीख सकता है। स्वामी जी हमारी श्रद्धा गौरव और सम्मान के केन्द्र है। उनका जीवन हमारे लिए मील का पत्थर है। उनका जीवन आज के आर्यसमाजियो, अधिकारियो, उपदेशको, नेताओ आदि के लिए खुली किताब है।

प्रेरणा ले

पढो! सोचो! समझो! कुछ करो! अपना जीवन और जगत् सुधार लो! यदि मुशीराम श्रद्धानन्द बन सकते है, तो हम क्यो नही सुधर सकते? सुधरने के लिए व्रत, सकल्प और लगन व पुरुषार्थ चाहिए। स्वामी जी का जीवन चरित्र हमे बार बार पुकार रहा है। निराश हताश नही होना। हिम्मत नही हारना है। मन को गिराना नही। सत्य, श्रद्धा तथा सकल्प लेकर आगे बढो!

ऋषि दयानन्द पारस मणि

जीवन चलने का नाम है। जब तक दम मे दम रहे, बेदम नही होना है। चलने से मजिल जरूर मिलेगी। ससार मे लाखों पतितो ने जीवन सुधारे है। अनेक डाकू से सन्त बन गए। ऋषि दयानन्द जैसा अमूल्य पारसमणि तुम्हारे पास है। फिर चिन्ता और निराशा कैसी? उस पारसमणि का स्पर्श करो, तुम्हारा जीवन तथा जगत् बदल जायेगा। जीवन से सारी दुर्गन्ध निकल जायेगी। जीवन सुगन्धित हो उठेगा। जितना तुम ऋषिवर के आसपास होते जाओगे, उतने ही ढोग, पाखड, बुराइयो, समस्याओ तथा उलझनो से छूटते जाओगे।

मुशीराम को श्रद्धानन्द बनाने वाले ऋषि ही तो थे। एक प्रवचन ने कायाकल्प कर दिया। हमारा भी कायाकल्प तथा कल्याण हो सकता है। यदि हम ईमानदारी और सच्चाई से ऋषिवर देव दयानन्द को अपना ले। उनके बताए मार्ग पर चल पडे। यदि इस दिशा मे हम अपने जीवन व जगत् मे कुछ परिवर्तन, नवीनता कर सके तो स्वामी श्रद्धानन्द का स्मरण सार्थक होगा।

श्रद्धानन्द का स्मारक गुरुकुल कागड़ी

स्वामी श्रद्धानन्द का अमर स्मारक गुरुकुल कागडी हरिद्वार है। गुरुकुल को बने सौ वर्ष हो चुके है। यह वर्ष गुरुकुल का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। दुर्भाग्य है कि गुरुकुल के शताब्दी वर्ष मे सर्वस्व त्यागी स्वामी श्रद्धानन्द के हरे भरे गुरुकुल की १९८ बीघा जमीन चन्द पैसो मे बेच दी गई। यह कलक समूची आर्य जनता, गुरुकुल हितैषियो, सभा अधिकारियो, गुरुकुल के उच्चाधिकारियो सभी पर आ गया है। हम अपने पूर्वजो की वसीयत तथा विरासत को बचा नही सके? यदि आज स्वामी श्रद्धानन्द हमारे सामने आकर खडे हो जाये और पूछे "गुरुकुल की स्वर्णमयी भूमि को क्यो बेचा? किसने बेचा? किसलिए बेचा? क्या कमी थी? हमने तुम्हे भूमि का रखवाला बनाया था, तुम्ही भक्षक बन गए। तुमने भूमि नही बेची, मेरी आत्मा को बेचा और मेरी हत्या की है।" हमारे पास कोई सीधा उत्तर न होगा? शर्म से सिर छिपाने की जगह न मिलेगी।

भूमि बेचने मे घोटाला

गुरुकुल की भूमि बिकने पर पिछले दिनो बडा करुण क्रन्दन अखबारो, चर्चाओ, सभाओ तथा मीटिगो मे हुआ। बहुत कुछ कहा सुना गया। जो भूमि के पहरेदार थे, वे लाभ और लोभ मे फस गए। उन्हे कुल भूमि को बेचते हुए, गलत तरीके से पैसा लेते हुए, आत्मग्लानि व पाप बोध नही हुआ? इससे बढ कर पतन क्या होगा? यदि यह बिकी हुई भूमि खरीददार के पास चली गई, तो निश्चय ही गुरुकुल खत्म हो जायेगा। वहा रिहायसी कालोनी बनेगी। बचा खुचा गुरुकुलत्व, वातावरण तथा व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगी। स्वामी श्रद्धानन्द का प्रेरक स्मारक उजड जायेगा।

भूमि बचनी चाहिए

यह स्पष्ट हो गया है कि गुरुकुल की भूमि बेचने मे कुछ अवैध लेन देन भी हुआ है। किसी व्यक्ति, विशेष पार्टी व धडे पर आक्षेप करने का रचमात्र भी उद्देश्य यहा नहीं है। यहा तो पीडा यह है कि गुरुकुल की अमूल्य भूमि बचनी चाहिए। इसके लिए हम सबको कितनी भी कठिनाइया आये, समष्टि के लिए सह लेनी चाहिए। गुरुकुल जनता की विरासत व सम्पत्ति है। उसकी रक्षा करना और ठीक व्यवस्था करना हमारा, सबका कर्त्तव्य है। जिन्होने गुरुकुल भूमि बेचने मे पैसा लिया है, उन पर आर्य जगत् नैतिक, सामाजिक, धार्मिक, व्यावहारिक तथा सगठनात्मक दबाव बनाये। वे अपनी भूल को सुधार ले, रुपये वापिस कर दे। इससे वे पुन समाज मे प्रतिष्ठित हो जायेगे। गलती हो गई है, सुधार ली, बात खत्म हो गई।

यदि वे ऐसा नहीं करते, तो आर्य जनता उनका सामाजिक, सभा सगठन, सस्थाओ आदि से बहिष्कार करे। उनके विरुद्ध सगठनात्मक व अनुशासनात्मक कार्यवाही करे। व्यावहारिक दबाव बनाया जाये। उन्हे उपेक्षित किया जाय।

भूमि अभी गुरुकुल के कब्जे मे है

इससे भी काम न बने, तो आर्य जनता धनी मानी व्यक्तियो से, सस्थाओ व सभाओ मे जमा राशि से, तथा चन्दा इकट्ठा करके रुपयो की भरपाई करके जमीन वापिस कराने का सकल्प ले। असभव कुछ भी नही है। कब्जा सच्चा होता है, दावा झूठा बनता है। आज भी बिकी हुई भूमि पर कब्जा गुरुकुल का है। जनता का अधिकार है। जनता के सामने व्यक्ति कमजोर पड जाता है। सभी की सहानुभूति गुरुकुल के साथ है। खरीददार की भावना भी आपके पक्ष मे हो जायेगी। कानूनी पक्ष भी गुरुकुल के अनुकूल है।

भूमि बचाई जा सकती है

यह सब सभव तब होगा, जब आर्य जनता सच्चाई, ईमानदारी, स्वार्थ, पद, लोभ, गुट, पार्टी आदि को छोड कर एक ही नारा दे "हमे स्वामी श्रद्धानन्द के स्मारक की भूमि को बिकने नही देना है। हर हालत मे वापिस लेना है। हम सब तरह से कुर्बानिया देने को तैयार है।"

सतोष और बल मिलता है कि इसके लिए पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प० हरवशलाल शर्मा भूमि वापसी के लिए जी जान से लगे हुए है। उनकी प्रबल इच्छा है कि यह बिकी हुई भूमि हर हालत मे गुरुकुल को वापिस होनी चाहिए। इसके लिए जो भी धन की पूर्ति करनी पडेगी, हम करेगे।

जिन्होने गुरुकुल भूमि के सौदे मे रुपया लिया उन्हे दण्ड मिलना चाहिए, जिससे आगे आने वाले लोग सचेत रहे और सबक ले कि यदि हमने ऐसा किया तो हमारा भी यही हाल होगा। गुरुकुल का इतिहास बताता है कि जिन्होने गुरुकुल का पैसा खाया, वे जीवन मे सुख चैन, शान्ति व सम्मान से जी न सके।

आर्यो, गुरुकुल की भूमि को बचा लो! अभी समय है। सगठित होकर, मिलकर अभियान चलाओ। यदि गुरुकुल की भूमि बच गई तो यही स्वामी श्रद्धानन्द को सच्ची भेट और श्रद्धाजलि होगी। यह ऐतिहासिक कार्य होगा।

शालीमार बाग, दिल्ली

डी.ए.वी. कालेज प्रबन्ध समिति के लिए आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग के प्रतिनिधियों का चुनाव

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली की ओर से डी ए वी कालेज प्रबन्ध समिति के लिए २६ प्रतिनिधि तीन वर्ष के लिए चुने जाते है। १६ दिसम्बर २००१ को प्रात काल ११ बजे आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग के सभागार मे वर्ष २००२, २००३ और २००४ के लिए नये प्रतिनिधियो का चुनाव करने के लिए इलैक्टोरल कमेटी [आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग की ओर से डी ए वी कालेज ट्रस्ट ऐड मैनेजमेट सोसाइटी के मैम्बरो] की एक सभा श्री शान्तिलाल सूरी, प्रधान आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, की अध्यक्षता मे हुई।

गायत्री मत्र से इस सभा का आरम्भ किया गया। मत्री श्री डी आर गुप्ता ने प्रतिनिधियो के चुनाव के लिए नाम मागे। पद्मश्री जी पी चोपडा जी ने निम्नलिखित २६ प्रतिनिधियो को चुनने का प्रस्ताव किया

१ श्री शान्तिलाल सूरी
२ श्री डी ऐन चोपडा
३ श्री विश्वनाथ
४ जस्टिस ऐन डी कोछड
५ डा आर पी सिघल
६ श्री बी डी बाली
७ श्री सत्यानन्द मुजाल
८ डा ऐस ऐस खन्ना
९ श्री ऐल ऐम सिघवी
१० श्री पूनम सूरी
११ श्री टी आर गुप्ता
१२ श्री आर आर भल्ला
१३ श्री ज्ञानदेव तायल
१४ श्री रामनाथ सहगल
१५ श्री डी बी आनन्द
१६ श्री अमृतलाल अग्रवाल
१७ श्री ऐच ऐल कपूर
१८ श्री वी ऐन चावला
१९ श्री सुरेन्द्रमोहन गुप्ता
२० श्री भूषणकुमार लाल
२१ कर्नल दीवान इन्द्रसेन साहनी
२२ कविराज खजान चन्द
२३ श्री ऐम सी गुप्ता
२४ श्री ऐस सी गोयल
२५ श्री सत्यानन्द आर्य
२६ श्री विलायतीराम गुप्ता

आदरणीय श्री विश्वनाथ व श्री मदनलाल खन्ना ने इसका अनुमोदन किया। इलैक्टोरल कमेटी ने सर्वसम्मति से इन २६ प्रतिनिधियो को निर्वाचित किया और तालियो की हर्षध्वनि से सभागार गूज उठा।

इसके पश्चात् आर्य समाज के प्रधान श्री शान्तिलाल सूरी व मत्री श्री डी आर गुप्ता ने इन २६ प्रतिनिधियो को वर्ष २००२, २००३ और २००४ के लिए डी ए वी कालेज प्रबन्ध कर्त्री समिति का सर्वसम्मति से निर्वाचित सदस्य घोषित किया। आदरणीय श्री शान्तिलाल सूरी ने सभी सदस्यो का धन्यवाद किया और शान्ति पाठ के बाद सभा समाप्त हुई।

जलपान की भी व्यवस्था की गई।

सवाल गुरुकुल की ज़मीनों का

गुरुकुल कागडी की जमीने बेची गई। इससे पहले आन्ध्र प्रदेश मे गुरुकुल घटकेश्वर की जमीने औने पौने दामो मे बेची गई थी। बडे आरोप प्रत्यारोप लगे थे, पर न जमीने वापस आई, न रुपया सस्था को मिला। रक्षक ही खा गये।

गुरुकुल कागडी की जमीने पहले भी बिकी है। वे क्यो बेची गई? सम्पत्ति दान के धन से खरीदी गई थी। उसका दाम निरन्तर बढ रहा था। उसे गुरुकुल के किस हित मे लगाया गया?

हाल मे जो गुरुकुल की १९८ बीघे जमीन बिकी है, उसमे गडबड हुई है। मुख्याधिष्ठाता के होते हुए सहायक मुख्याधिष्ठाता को जमीन की रजिस्ट्री कराने का अधिकार दिया गया। क्यो? क्योकि मुख्याधिष्ठाता दिल्ली मे रहते है। दिल्ली से हरिद्वार कुल २०० किलोमीटर दूर है। यदि रजिस्ट्री कराना आवश्यक और उचित हो, तो वह दिल्ली से हरिद्वार पहुच सकते है।

रजिस्ट्री बहुत जल्दबाजी मे की गई। क्यो? क्योकि यदि हम न करते, तो हमारे प्रतिद्वन्द्वी उसे ३६ लाख मे ही बेच देते। हमने ७० लाख मे बेची। सस्था का लाभ हुआ।

खरीदार का कहना है कि उसने ७० लाख से बहुत अधिक मे खरीदी है। यदि उसकी रकम उसे वापस मिल जाये, तो वह जमीन वापस दे देगा। फिर अडचन क्या है?

इस प्रकार के सौदो मे कमीशन के रूप मे दी गई रकम का कोई प्रमाण नही होता। वह चैक से नही, नकद दी जाती है और उसकी कोई रसीद या लिखत पढत भी नहीं होती। यह बिक्रेता और खरीदार की समस्या है कि वे आपस में फैमला करे कि दी गई सही रकम क्या है।

गुरुकुल के पास जमीन फालतू नही थी। यह इससे स्पष्ट है कि इसके बाद गुरुकुल ने जिस भाव बेची, उससे महगे दामो पर दूसरी जमीन खरीदी। वह कीमती जमीन बेच कर घटिया जमीन महगे भाव पर क्यो खरीदी गई? आरी आते हुए भी कांटती है, जाते हुए भी।

(पृष्ठ ८ का शेष)

ग्रहों के प्रभाव का सच?

ऐसा मैने नही कहा। मेरे सामने ऐसे कई उदाहरण हैं, जब शादी के मुहूर्त वाले दिन वर मर गया, मडप मे आग लग गई, कन्या किसी और के साथ भाग गई, किसी रिश्तेदार की मृत्यु से विवाह स्थगित करना पडा। मै मानता हू कि जहा विश्वास करने के अनेक कारण है, वहा अविश्वास करने के भी अनेक कारण है। इसलिए विश्वास करना या न करना व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है। मेरा क्या विश्वास है, इससे आप प्रभावित न हो कर स्वय जैसा मैने पहले कहा है परीक्षा और पुनरीक्षा करते रहिए। विश्वासो का बनना बिगडना मनुष्य के चिन्तन का स्वाभाविक क्रम है।

वैज्ञानिको से भी गणना मे भूल सभव

'कुडली के आधार पर—कुडली का अर्थ है ग्रह नक्षत्रो की स्थिति—मनुष्य की आयु, स्वास्थ्य, विपत्ति आदि निर्धारित करने का प्रश्न बहुत गभीर है और इसका सम्बन्ध ग्रह नक्षत्रो की गति के गणित तथा सुदीर्घ कार्य कारण सम्बन्धो के परिणाम पर निर्भर करता है। दूसरे शब्दो मे कुडली बनाने वाले के अनुभव और ज्ञान पर निर्भर करता है।'

त्रुटियो को सुधारे

एक बात जिस पर शका की जा सकती है वह है ग्रहो के अच्छे बुरे परिणाम या प्रभाव की। ग्रह नीचे है या ऊपर, दाए हैं या बाए। एक साथ हैं या उन पर शनि की दृष्टि कैसी है, राहू केतु की छाया कितनी है, कौन ग्रह किसे कमजोर या बल प्रदान कर रहा है आदि बाते है। इन बातो पर कोई भी सहसा विश्वास नही करेगा। मेरे पास भी इसका कोई सप्रमाण उत्तर नही है। मै इतना ही कह सकता हू कि वर्षो नही, शताब्दियो के परीक्षणो, अनुभवो और निष्कर्षो के बाद ही हमारे वैज्ञानिक ज्योतिषियो ने ग्रह नक्षत्रो की स्थिति से होने वाले प्रभावो का आकलन कर उन्हे निर्णयो के रूप मे सूचीबद्ध कर दिया है। इनमे और वैज्ञानिक अन्वेषण के बाद सशोधन और समायोजन किया जा सकता है। इस बारे मे यही मेरा मत है।

टी–८, ग्रीन पार्क ऐक्सटैंशन, नई दिल्ली–१६

(पृष्ठ ५ का शेष)

क्या मनुष्य कर्म करने में ....

तो आप इन लोगो की लुब्ध दृष्टि से बच नही सकते और आपकी कर्म करने की स्वतत्रता पूरी तरह समाप्त हो जाती है। चाकू की नोक जो इशारा करती है, वही अधिकाश लोगो को करना पडता है। 'ऐसा करना नही चाहिए, बल्कि अड कर मर जाना अधिक भला है' इस आदर्श का उपदेश करने वाले लोग तो पाये जाते है, परन्तु इस पर आचरण करने वाले बहुत ही दुर्लभ है।

वृद्धावस्था मे, रुग्ण अवस्था मे मनुष्य नितान्त असहाय और पराश्रित हो जाता है' वह कुटुम्बियो और पडोसियो की सदाशयता पर ही जीता है। उस दशा मे उसके कर्म करने मे स्वतत्र होने का प्रश्न ही नहीं उठता। 'अदीना स्याम' की प्रार्थना इसी लिए है।

उत्तराधिकारी भी परतत्र

मरने के बाद भी उसके उत्तराधिकारियो को अजीबोगरीब रूढियो का पालन करना होता है। उसकी अन्त्येष्टि करनी होती है, ब्रह्मभोज करना होता है, अस्थिया गगा मे विसर्जित करनी होती हैं, कई जगह पिडदान करना होता है। मरने के बाद भी कर्म करने की स्वतन्त्रता नही रहती, रूढिया, परम्पराए अष्टभुज (आक्टोपस) की तरह उसे जकड कर चूसती रहती है।

ऐसी दशा मे यह कहना विडम्बना ही है कि मनुष्य कर्म करने मे स्वतत्र, किन्तु फल भोगने मे परतत्र हैं। मनुष्य कर्म करने मे भी उतना ही परतंत्र है, जितना कि कर्मो का फल भोगने मे। बहुत बार तो न किये हुए का भी फल भोगना पड जाता है।

उपहार जनरल स्टोर, रेलवे रोड, हरिद्वार

(पृष्ठ १ का शेष)

११ सितम्बर और १३ दिसम्बर ......

विजयबहादुर सिह यादव ने ही मार गिराया। चौथे को एक अन्य यादव सतोष सिह ने ढेर कर दिया।

गोलीबारी आधा घटे तक चलती रही। आतकवादियो ने हथगोले भी फेके। ससद् भवन के सब द्वार बद कर दिये गये, जिससे न कोई बाहर आ सके, न भीतर जा सके। कुछ समय तक कही की खबर कही नही पहुच सकी। जब पाच आतकवादी मारे जा चुके और कही से नई गोली नही चली, तब दरवाज़े खोले गये। आतकवादियो की कार की छानबीन की गई। क्योकि सब आतकवादी मार दिये गये थे, इसलिए सुराग ढूढने मे कठिनाई हुई। एक भी जीवित पकडा जाता, तो बहुत कुछ पता चल सकता था। पर उस समय तो ससद् और सासदो को बचाने का प्रश्न था। अन्दर घुसने से पहले ही उन आततायियो को काबू कर लेना चरम लक्ष्य था। इसलिए जो हुआ, ठीक ही हुआ।

भारतीय प्रतिक्रिया ढीली

जैसे अमेरिका के माथे पर ईट मारी गई थी, वैसे ही भारत के माथे पर भी मारी गई। परन्तु भारत की प्रतिक्रिया अमेरिका से बिल्कुल भिन्न रही। लगभग सभी मन्त्रियो ने इस आतकवादी हमले की कडी निन्दा की। जब यह प्रश्न उठा कि भारतीय सेना को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर मे और पाकिस्तान की सीमा मे घुस कर आतकवादी प्रशिक्षण शिविरो पर आक्रमण करना चाहिए, तब अनेक सासदो ने कहा कि इस विषय मे भारत को सयम से काम लेना चाहिए, क्योकि पाकिस्तान के पास परमाणु बम है। परमाणु बम भारत के पास भी है, परन्तु उससे डर कर पाकिस्तान आतकवादियो को शस्त्रास्त्र देने और भारत भेजने से नहीं हिचकता। आतकवाद से पिछले १५ वर्षो मे भारत मे ६० हज़ार व्यक्ति मर चुके है और कश्मीरी हिन्दू और मुसलमान सतत आतक मे जी रहे है। क्या परमाणु बम इससे भी भयकर होगा?

अब आतकी हमले पजाब या कश्मीर के सीमावर्ती राज्यो तक ही सीमित नही रहे, अब वे भारत के सभी राज्यो मे जोर शोर से हो रहे है। बिहार, आन्ध्र प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, झारखड, सभी जगह आतकवाद पनप रहा है।

घर में ही भेदी

भारत आतकवादियो के लिए उपजाऊ भूमि है। यहा आतकवादियो को शरण देने वाले, उनका समर्थन करने वाले, उन्हे बलिदानी वीर मानने वाले करोडो नागरिक है। लाखो बगलादेशी घुसपैठिये अवैध रूप से भारत मे बस गये है। वे हर शहर मे है। उनकी निष्ठा भारत के प्रति नही है। वे शरीर मे कैसर के जीवाणुओ की भाति है, जो राष्ट्र के शरीर को क्षीण करते है। जब भी उन्हे वापस बगला देश भेजने का यत्न किया जाता है, तब अनेक राजनीतिक दल, जो उनके वोटो पर जीतते है, शोर मचाते है कि निर्दोष मुसलमानो को साम्प्रदायिक द्वेषवश भारत से खदेडा जा रहा है।

स्वतत्रता सीमित करनी होगी

अब आतकवादियो की रोकथाम के लिए कुछ उपाय तो करना होगा। लोकतत्र, वोट का अधिकार, मानव अधिकार, अल्पसख्यक आयोग जैसे सिद्धान्त और सस्थाए शान्तिकाल के लिए तो हितकर हो सकते है, परन्तु आपातकाल मे, जैसा कि इस समय है, इन अधिकारो को सीमित करने की आवश्यकता है। परन्तु कई राजनीतिक दल आतकवाद विरोधक कानून बनाने का इस आधार पर विरोध करते है कि उससे पुलिस और सेना को बहुत अधिकार मिल जायेगे, जिनका दुरुपयोग किया जा सकता है।

मन्त्रियो और विपक्ष के राजनेताओ को तो अधिकतम सुरक्षा प्राप्त है, इसलिए वे मानव अधिकारो और नागरिक स्वतत्रता की ऊची बाते कर सकते है, पर आम नागरिक क्या करे? वह चुपचाप उन मृतको की सख्या बढाता रहे, जिनकी मृत्यु पर उनके परिवार को एक लाख रुपये दे दिये जाते है? क्या हमारे सैनिक आतकवादियो के घात लगा कर किये गये हमलो मे मरने के लिए ही है? आखिर यह क्रम कब तक जारी रहेगा? हम कब कहेगे कि 'बस, अब और नही?' पाकिस्तानी परमाणु बम से हम कब तक डरते रहेगे?

समाचार जगत्

बिलासपुर में वैदिक प्रशिक्षण शिविर

आधुनिक भारत के महान पथ-प्रदर्शक, समाज सुधारक, युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द की पुण्य स्मृति मे १८८६ ई० मे डी० ए० वी० आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। आज यह सस्था न केवल भारत मे बल्कि विदेशो मे भी वैदिक सभ्यता, सस्कृति, आधुनिक शिक्षा तथा सेवा कार्यो द्वारा अपनी पहचान बनाये हुए है। सस्था की नींव मे महात्मा हसराज की सेवा तथा उनके त्यागी प्राचार्यो तथा प्रबन्धको की निष्ठा काम कर रही है। इनमे मुख्य रूप से मेहरचन्द महाजन, लाला साईदास, भाई परमानन्द, प्रि० सूरजभान, प्रि० भगवानदास, प्रि० ज्ञानचद, श्री जी० ऐल० दत्ता, प्रि० शातिनारायण, बाबू दरबारी लाल का योगदान रहा। वर्तमान मे पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा जी के प्रधानत्व मे ६०० से अधिक शैक्षणिक तथा तकनीकी सस्थाये नूतन चेतना तथा वैदिक सस्कृति के प्रचार प्रसार मे प्रयत्नशील है।

मध्य प्रदेश एव छत्तीसगढ क्षेत्र मे २६ डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल सचालित है, जिनमे लगभग पचास हजार विद्यार्थी अध्ययनरत है जो अपनी दिनचर्या की शुरूआत वेदमत्रो से करते है।

शिक्षा के साथ-साथ बच्चो को राष्ट्र एव चरित्र निर्माण की भावना से ओत-प्रोत करना भी हमारा नैतिक कर्तव्य है। इसी उपलक्ष्य मे वैदिक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम मे डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, वसत विहार, बिलासपुर मे २१ से २३ दिसम्बर २००० तक कक्षा ६ठी से ९वी तक के बालको का वैदिक प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है, जिसमे मध्यप्रदेश एव छत्तीसगढ क्षेत्र के प्रत्येक डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल से ५ बालक एव १ शिक्षक भाग लेगे। इस शिविर मे कई वैदिक विद्वान् प्रशिक्षण प्रदान करेगे।

आर्य संस्कृति के उपासक श्री सीताराम आर्य

आर्य समाज कलकत्ता विधान सरणी के पूर्व प्रधान, महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तो के अनन्य उपासक एव प्रचारक तथा महान समाज सेवी श्री सीताराम आर्य का निधन ६ दिसम्बर २००१ प्रात ४ बजे हृदय गति रुक जाने के कारण कीर्ति नगर, नई दिल्ली मे हो गया। उनका अन्तिम सस्कार पजाबी बाग श्मशान घाट पर हुआ। ज्येष्ठ पुत्र श्री ओम्प्रकाश आर्य ने पिता की चिता को अग्नि दी। इस अवसर पर बडी सख्या मे आर्यगण उपस्थित थे।

श्री सीताराम आर्य का जीवन आर्य समाज की सेवा एव उत्थान मे समर्पित था। वह कई धार्मिक एव सामाजिक सस्थानो से जुडे रहे। आर्थिक रूप से भी वह पूर्ण सहयोग देते थे। आपने फूलपुर (टाण्डा) मे श्री रामनारायण हाईस्कूल की स्थापना की। आपने टाण्डा स्थित श्री मिश्रीलाल आर्य कन्या इटर कालेज के प्रधान पद को सुशोभित किया था। इसी प्रकार कलकत्ता आर्य समाज के प्रधान पद पर १६ वर्षो तक आपने निष्ठापूर्वक कार्य किया। सन् १९९९ मे आप आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के प्रधान भी रहे। शिक्षा मडल ट्रस्ट, आर्य विद्यालय ट्रस्ट, वैदिक अनुसधान ट्रस्ट एव आर्य सुन्दरादेवी जनकल्याण ट्रस्ट के ट्रस्टी के रूप मे आपने लम्बी अवधि तक कार्य किया। गुरुकुल वैदिक आश्रम एव अनाथालय पानपोस राउरकेला सुन्दरगढ के प्रधान पद पर भी आपने कार्य किया। इस सस्था का कोष जो ५० हजार था इनके प्रयत्न से आज ५० लाख का हो गया है। इसलिए उडीसा सरकार ने इजीनियरिग कालेज की स्थापना के लिए जमीन दी है। इस राशि से इजीनियरिग कालेज का निर्माण कार्य हो रहा है।

आपकी आर्य समाज सेवा को देखते हुए सन् १९८५ मे राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह द्वारा राष्ट्रपति भवन मे आपको सम्मानित किया गया था।

कीर्तिनगर (नई दिल्ली) आर्य समाज द्वारा ८ दिसम्बर को एक शोक सभा का आयोजन किया गया। पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी ने श्री आर्य को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनके निधन से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। समाज के लोगो को उनके कर्मठ जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। ससद सदस्य श्री शकर प्रसाद जायसवाल वाराणसी ने आपकी समाजसेवा का उल्लेख करते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की।

पुस्तकालय का नया भवन

अमृतसर मे स्वतत्रतानन्द पुस्तकालय हीरा मार्केट गुरुबाजार के नव निर्मित भवन का शुभारम्भ स्थानीय विधायिका बहिन लक्ष्मी कान्ता जी चावला द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री स्वामी सदानन्द जी, श्री दर्शनकुमार जी, राकेश मेहरा, श्री जुगलकिशोर उपस्थित थे। हवन के पश्चात् स्वामी जी ने पुस्तकालयो के महत्व पर प्रकाश डाला और लोगो को प्रेरणा की कि अपने बच्चो को पुस्तकालयो मे भेजें ताकि उन्हे वैदिक सस्कार मिल सके। इस अवसर पर नगर के पुलिस अधीक्षक श्री राजेश कुमार जायसवाल भी उपस्थित थे। इस पुस्तकालय का सचालन दयानन्द मठ दीनानगर के सचालक स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की देखरेख मे चलता है। इसमे अनेक विषयो पर बहुत ही अमूल्य साहित्य उपलब्ध है। शोधकर्ता इससे लाभ उठा सकते है।

आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कलकत्ता के ११६वे वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर आयोजित अथर्ववेद पारायण यज्ञ, नगर कीर्तन तथा वेद प्रचार के विभिन्न कार्यक्रमो मे आप सपरिवार सादर आमन्त्रित है। यह २२ से ३० दिसम्बर २००१ तक मुहम्मद अली पार्क, चितरजन ऐवैन्यू कोलकाता-७ मे होगा।

गुरुकुल गौतमनगर का ६९वां वार्षिक समारोह

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतमनगर, नई दिल्ली का ६९वा वार्षिक समारोह एव २२वा चतुर्वेद महायज्ञ एव सत्यार्थभृत् यज्ञ रविवार २५ नवम्बर २००१ को आरम्भ हुआ, जिसकी पूर्णाहुति रविवार १६ दिसम्बर २००१ को सम्पन्न हुई।

८, १० दिसम्बर को प्रात १० ३० बजे से १२ ३० बजे तक प० क्षितीश वेदालकार स्मृति स्मारक प्रतियोगिताए, १० दिसम्बर को साय ४ बजे से ६ ३० बजे तक गुरुकुल एव सस्कृत सम्मेलन तथा प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह, ११ दिसम्बर को दोपहर २ बजे से ४ बजे तक प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे महिला सम्मेलन एव रविवार दिनाक १५ १२ २००१ को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान मे आर्य सम्मेलन का आयोजन समारोहपूर्वक किया गया।

१६ दिसम्बर को आर्य नेताओ द्वारा उद्बोधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमे श्री रामनाथ सहगल, स्वामी इन्द्रवेश जी, डा० महावीर मीमासक, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रो० धर्मवीर, स्वामी सुमेधानन्द, श्री प० सत्यपाल पथिक, श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री बृजपाल कर्मठ आदि विद्वानो ने पधारे हुए आर्य जनो को अपने विचारो से सम्बोधित किया।

मुख्य अतिथि भारत सरकार के मुख्य प्रवक्ता प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा ने वर्तमान मे तोड मरोड कर प्रस्तुत किये जा रहे इतिहास की कमियो का वर्णन करते हुए कहा कि आर्य समाज को सकल्प लेना चाहिए कि वर्तमान मे जो इतिहास पढाया जा रहा है, उसका विरोध प्रस्ताव भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमत्री, मानव ससाधन मत्री को भिजवाये। पधारे हुए आर्य जनो ने इसका समर्थन किया।

इसी समारोह मे डा० मदनमोहन परिवार अभिनन्दन किया गया। उन्होने पधारी हुई आर्य जनता का धन्यवाद करते हुए कहा कि उन्होने लाजपतनगर मे अपने पूज्य पिताजी की स्मृति मे धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आरम्भ किया है, जो आर्य जन इसका लाभ उठाना चाहते है, लाभ उठा सकते है।

दोपहर १ बजे से ३ बजे तक गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया गया।

प्राचार्या नीलम गांधी द्वारा पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा का स्वागत

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल सै० ३७ की प्राचार्या श्रीमती नीलम गाधी तथा उनके सहयोगियो ने डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के प्रधान श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा जी का रविवार २ १२ २००१ प्रात ८ ३० पर फरीदाबाद मे आने पर भव्य स्वागत किया। समारोह मे डी० ए० वी० ३७ के नन्हे मुन्ने बच्चो ने चोपडा जी के साथ आये श्री आर० ऐस० शर्मा, श्री ऐम० ऐल० खन्ना, श्री जी० डी० जिन्दल, प्रि० मोहनलाल, श्री हरवशलाल कपूर, श्री पी० ऐन कौल का स्वागत किया।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती नीलम गाधी ने सभी अतिथियो का पुष्पो के द्वारा स्वागत किया।

खगड़िया में वैदिक धर्म प्रचार

खगडिया गौशाला (बिहार) के वार्षिकोत्सव पर दिनाक २३, २४ एव २५ नवम्बर २००१ को स्वामी अग्निव्रत जी के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन किया गया।

श्री कमलासिंह आर्य का निधन

आर्य समाज मुसाढी के कर्मठ सदस्य श्री कमलासिह आर्य का देहावसान ९५ वर्ष की आयु मे ८ दिसम्बर २००१ को हो गया। आर्य समाज मुसाढी नालन्दा, बिहार के सदस्यो ने एक शोक प्रस्ताव पारित कर दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए सामूहिक प्रार्थना की।

आर्य जगत्

बिना टिकट भेजने का लाइसेन्स न० U(C)-103
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई
Delhi Postal R No D L 11082
POSTED AT N D P O ON 26/27-12-2001 दिनाक ३०-१२-२

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

वार्षिकोत्सव का दीप प्रज्वलित करती हुई निगम पार्षद श्रीमती लता वर्मा। साथ मे प्रसन्न मुद्रा मे श्री नरेन्द्रनाथ, श्री ऐम० ऐल० खन्ना, श्री ऐस० पी० वेदी एव प्रधानाचार्या श्रीमती मधु कोचर।

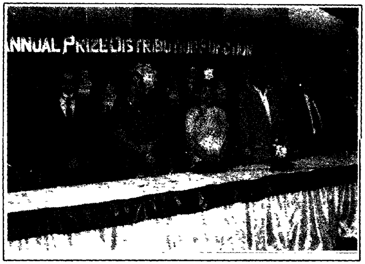

वार्षिकोत्सव मे "गायत्री मत्र" का शुद्ध उच्चारण करते हुए श्री प्रबोध महाजन, श्रीमती लता वर्मा, श्रीमती शीतल शर्मा, श्री नरेन्द्रनाथ, श्री ऐम० ऐल० खन्ना एव श्री पुष्करना।

विद्यालय मे चलाए गए "स्वच्छता अभियान" मे प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली सातवी कक्षा की छात्राए मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्रनाथ एव श्री पुष्करना से पुरस्कार प्राप्त करते हुए। साथ मे प्रधानाचार्या श्रीमती मधु कोचर।

डी० ए० वी० कैलाश हिल्स, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव पहली दिसम्बर २००१ को विद्यालय के प्रागण मे बडी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री मत्र के उच्चारण द्वारा किया गया। तत्पश्चात् दिल्ली के शिक्षा मत्री श्री नरेन्द्रनाथ जी ने मुख्य अतिथि के रूप मे दीप प्रज्वलित किया। समारोह की अध्यक्षता श्री ऐम० ऐल० खन्ना, महामत्री डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति ने की। श्रीमती शीतल शर्मा, निदेशक पब्लिक विद्यालय एव श्री प्रबोध महाजन, सचिव डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति ने भी इस अवसर की शोभा बढाई। इस शुभावसर पर निगम पार्षद श्रीमती लता वर्मा जी एक सम्मानित अतिथि के रूप मे आमन्त्रित थी। इसके अतिरिक्त उपाध्यक्ष श्री पु जी एव प्रबधक श्री ऐस० पी० वेदी मुख्य अतिथि का अभिनन्दन किया

प्रधानाचार्या श्रीमती मधु को ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट का दिया। विद्यालय के बच्चो ने बडे उत्स अनेक शिक्षाप्रद रगारग सास्कृतिक का प्रस्तुत किए। इस अवसर पर मुख्य अ एव अध्यक्ष महोदय द्वारा शै उपलब्धियो के लिए श्रेणी "अ" और के ६०० प्रतिभाशाली विद्यार्थियो पुरस्कृत किया गया। अनेक अध्यापक भी उनकी विशिष्ट सेवाओ के सम्मानित किया गया। शाति पाठ के इस भव्य समारोह का समापन हुआ।

बिछुड़े भाई पुन: आर्य बने

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन पर गत अनेक वर्षो से उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत श्री स्वामी धर्मानन्द जी की देखरेख मे शुद्धि आन्दोलन चला रही है। इसी शृखला मे गत ९ दिसम्बर को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता मे वैदिक सत्सग आश्रम कटगझरिया जिला सुन्दरगढ मे १६८ ईसाई परिवारो के ३०० से अधिक व्यक्तियो ने श्री प० विशिकेसन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे श्रद्धापूर्वक वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस अवसर पर इन दीक्षित लोगो को आशीर्वाद देने तथा प्रीतिभोज मे भाग लेने के लिए भारी सख्या मे स्थानीय आदिवासी जनता उपस्थित थी। इस अवसर पर स्थानीय सरपच श्री गगाधर जी, श्री कुलमणि आर्य, श्री डीलेश्वर पटेल भस्मा, श्री वासुदेव होता पामरा, श्री भगतसिह, श्री गेवरा, ब्र० वीरेन्द्र व ब्र० वेदमित्र आदि अनेक विद्वान् वक्ता कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस कार्यक्रम मे श्री रामजीवन जी आर्य एव श्री धनेश्वर जी ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

वार्षिकोत्सव

गुरुकुल आश्रम आमसेना का ३४वा वार्षिक महोत्सव माघ शुक्ल द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी तदनुसार ९, १०, ११ फरवरी २००२ शनि, रवि, सोमवार को अत्यन्त उत्साहमय वातावरण मे समारोह के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर अनेक उच्चकोटि के साधु महात्मा और विद्वान् पधार रहे है। ७ फरवरी से ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का प्रारम्भ होगा। इसकी पूर्णाहुति ११ फरवीर को प्रात कांल होगी।

१० फरवरी को चौ० शीशराम की स्मृति मे चौ० मित्रसेन जी आर्य न्यास की ओर से आर्ष पाठविधि के गुरुकुलो की सेवा मे सलग्न तीन विद्वान्, त्यागी ब्रह्मचारियो का सम्मान ग्यारह-ग्यारह हजार रु० की थैली, शाल, श्रीफल आदि देकर करेगे।

गुरुकुल के कुछ नवयुवक, स्नातक विद्वान् ब्रह्मचारी नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना जीवन वैदिक धर्म की सेव लिए समर्पित करेगे।

महोत्सव के अवसर पर शास्त्री उत्तीर्ण, कन्या गुरुकुल की कुछ कन्याओ गुरुकुल के ब्रह्मचारियो का दीक्षान्त समा भी किया जाएगा तथा गुरुकुल ब्रह्मचारियो के अनेक आकर्षक कार्य प्रतिवर्ष की तरह होगे।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज सरस्वती विहार दि मे सोमवार २४ दिसम्बर से ३० दिस २००१ तक यजुर्वेद पारायण महा होगा। वेदपाठी गुरुकुल शुक्रत (मुजफ्फरनगर) के ब्रह्मचारी होगे। शनिव २९ दिसम्बर को प्रात १० ३० बजे भाष प्रतियोगिता होगी।

पिनगवां आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

पिनगवा (मेवात) जिला गुडगा (हरियाणा) का वार्षिक उत्सव दिनाक १ १० २००१ से दिनाक २१ १० २००१ त बडी धूमधाम एव हर्षोल्लास के साथ मना गया। इस अवसर पर प्रतिदिन देवय (हवन) किया गया। प्रतिदिन ब्रह्मचा जयदेव आर्य, श्री मानकचन्द्र आर्य, श्र नत्थीराम शर्मा, श्री मगलदेव आर्य के भज व श्री राजू वैज्ञानिक के भिन्न भिन्न विषय पर प्रवचन होते रहे। रविवार को "मह दयानन्द के संसार पर उपकार" विषय प पडित नन्दलाल निर्भय ने अपने उपदेश मे महर्षि दयानन्द को विश्व का सबसे महान विद्वान् एव त्यागी, तपस्वी, ईस्वर भक्त, उच्च कोटि का नेता बताया। स्वामी दयानन्द जी ने स्त्रियो, शूद्रो को वेद पढने का अधिकार दिलाया, गऊ सेवा का ससार को पाठ पढाया। बाल विवाह, अनमेल विवाह बन्द कराए। सस्कृत को देव वाणी बताया और हिन्दी को आर्य भाषा का दर्जा दिलाया।

इस समारोह को श्री मनीष मगला ने भी सम्बोधित किया। श्रीमती राम आर्य ने अन्त मे वक्ताओ व श्रोताओ का धन्यवाद किया।

मुद्रक व प्रकाशक - **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मत्री द्वारा **राकेश भार्गव** के प्रबन्ध मे **मयक प्रिन्टर्स** 2199/63 नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (दूरभाष 5783409, 5751330) दिल्ली से छपवाकर कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व - आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (फोन 3363718, 3362110) सम्पादक—**उदयवीर 'विराज'**

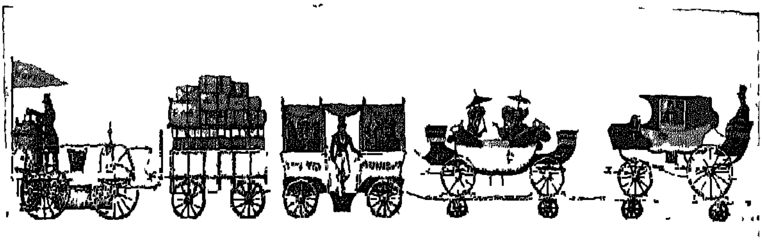

FIG 165.—Early Train, drawn by the primitive "Novelty" Locomotive, with Omnibus and owners' Coaches

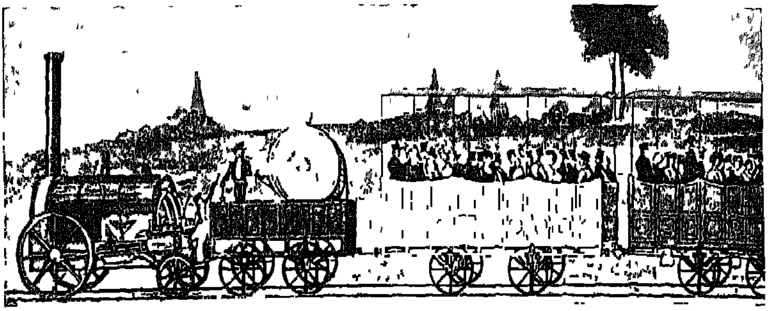

FIG 166.—The "North Star" and Train of early Carriages

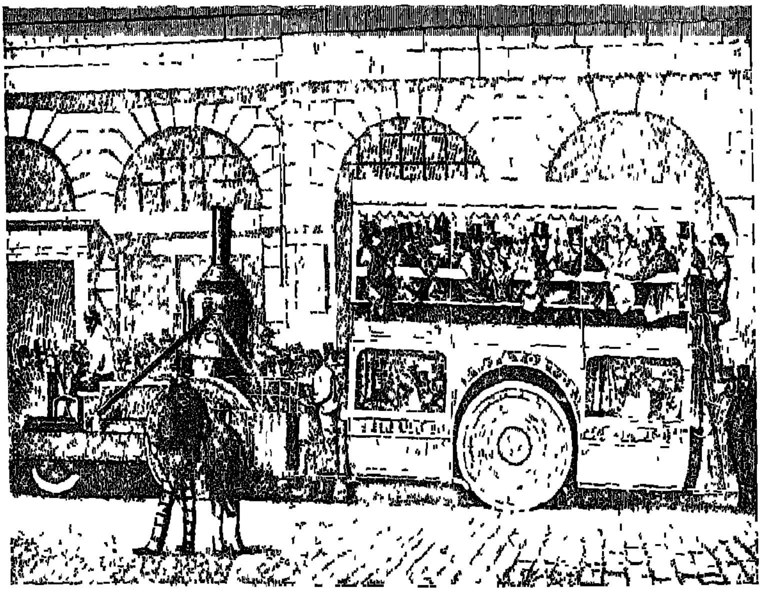

FIG 167.—Steam Omnibus, Edinburgh to Leith, c 1860

The best description we know of a coach ride is the one in "Tom Brown's Schooldays," which, though it was published in 1857, deals with the period when Tom first went to Rugby, about 1837—that is, just at the end of the great coaching period, when the railways were beginning to drive the coaches off the road. Tom comes up from the Vale the day before with his father, and they stay the night at the Peacock Inn, Islington, so as to catch the Tally-ho for Leicester. Tom has beef-steak with oyster sauce for supper, and drinks brown stout. As the coach leaves Islington at 3 a.m., Tom is called at 2.30, and has a three-hours' drive, on the top, before dawn. Just as we have forgotten dust, we cannot remember now how cold it could be driving in an open carriage. But the Tally-ho is a tip-top goer and averages ten miles an hour, and Tom experiences the thrill, which we all do, of driving along at night when the world is asleep. Then the dawn comes, and the world wakes up and the road comes to life, and appetite as well, but this is stayed by a twenty-minutes' halt at an inn famous for its breakfasts. Pigeon pie, ham, cold boiled beef, kidneys, steak, bacon and eggs, buttered toast and muffins is the fare offered to Tom.

Fig. 168 shows the first omnibus introduced into England by G. Shillibeer, a coach-builder. Two started to run on July 4th, 1829, between *The Yorkshire Stingo*, public house, Marylebone Road, and the Bank, in London, and the fare was 1*s*. Each omnibus carried twenty-two passengers inside and was drawn by three horses.

This led to the introduction of a steam omnibus. In *The Times* of April 25th, 1833, an account was given of one that started running then from Paddington to the Bank. It was stated that "there can be no possibility of explosion," and "the guide, who sits in front, has complete control, and can arrest its progress instantaneously." Starting at six miles an hour, when it cleared the crowd "the velocity was increased to the rate of ten miles an hour." The authorities, however, refused to license "the

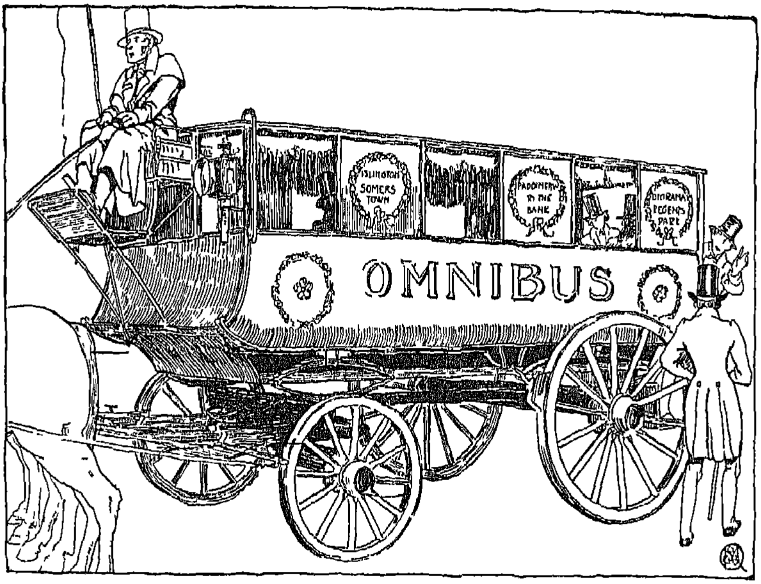

FIG. 168.—Shillibeer's Omnibus, 1829.
(*Model in Science Museum, London.*)

Enterprise Steam Coach," so it died the death. This was built by Hancock, but Gurney designed one to run between London and Bath (Fig. 164). We wonder if the varied steam vehicles of Fig. 163 ever ran.

We illustrated a post-chaise, perch-phaeton and a gig in Vol. II., and the two first, with the Victorian landau, were suspended by springs over an under-framing like the timber carriage. It was the brougham, as Fig. 170, which introduced the new principle of building a rigid body and attaching the springs and wheels to this, without the connecting pole or perch. The specimen at the Science Museum is the original built for Lord Chancellor Brougham by Messrs. Robinson and Cook in 1838. It created a great sensation then and remained in use until the motor-car age.

Joseph Hansom, the architect, designed his cab in 1834, but this did not resemble the hansom which became very popular during the nineteenth century.

Unfortunately we can only deal with beginnings, but space must be found for the hobby horse, as Fig. 176,

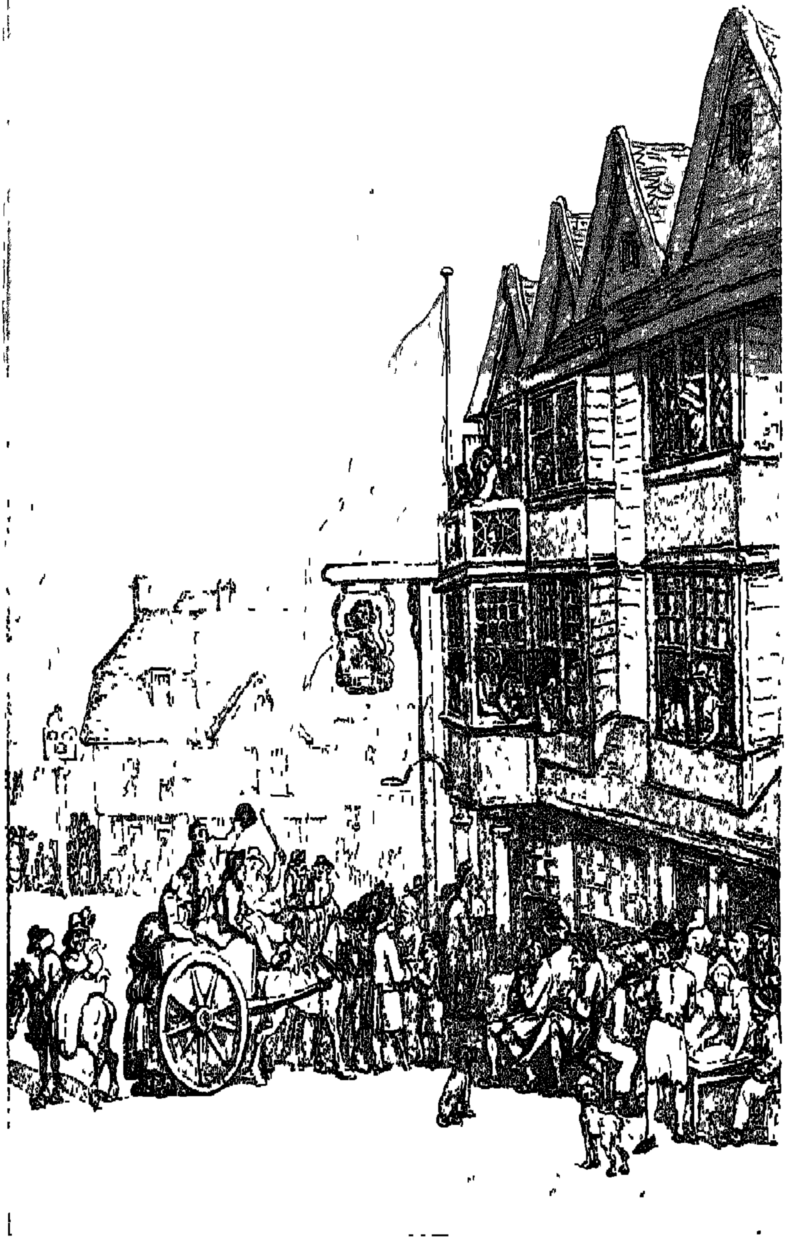

FIG 169—Market Day outside the Old "Red Lion" at Greenwich

By Thomas Rowlandson

introduced into England from France in 1818, when it was described as a "Pedestrian Curricle." Hobby horses became all the rage, and there are old prints of the period showing the schools where you could learn to ride them. Round and round the riders go before their admiring friends, and some of the greatly daring ones actually lift both legs off the ground, and so experience the thrill of balancing in a spread-eagled fashion. This discovery that it was possible to balance yourself and progress on two wheels led to the early bicycle of 1839, as Fig. 180. This was designed by Kirkpatrick Macmillan, a blacksmith of Courthill, Dumfriesshire, and the propulsion by treadles and cranks is very ingenious. It was really in advance of the "boneshaker" of 1868, but, on the other hand, you could not have turned at all sharply without fouling your feet against the wheel. Probably to go straight ahead was quite thrilling enough. Any readers who are interested should go to the Science Museum, where there is a fine collection of early cycles, all dated, so that their development can be traced.

Railway Locomotives.—Actually there were railways long before there were locomotives. A print of 1754 shows stone from the quarries at Bath being transported in low trucks whose wheels run on rails This was long before man invented the locomotive, which derived its name from *locus*, place, and *motio*, motion, because it performed the miracle of moving itself from place to place. Hitherto man had never been able to make anything which moved itself. His ships depended on the wind, and his coaches on the horse. Watt's steam engine puffed and grunted but stayed put, which was perhaps just as well.

Puffing Billys and the Rockets of a little later must have been bad to meet on the road, but imagination refuses to conceive what a Watt's locomotive would have been like. We often watch the behemoth at the Science Museum in action ; the great beams rock, the gears grind round, and it really does puff and grunt. Originally

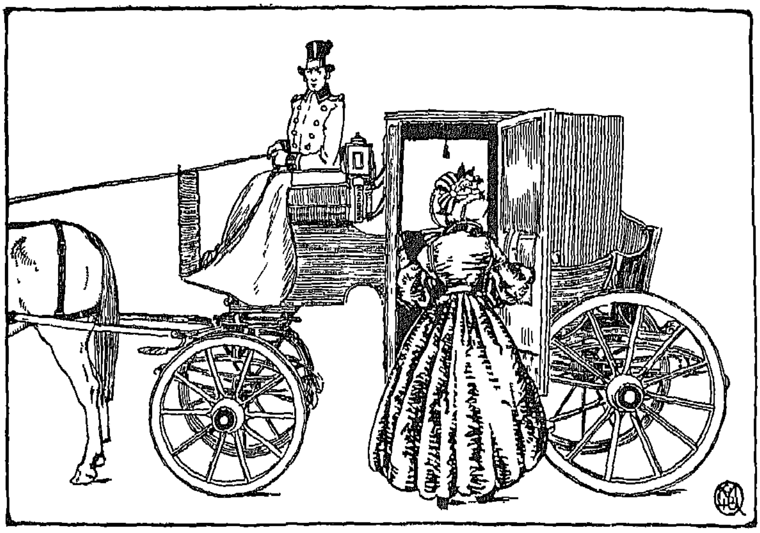

FIG. 170.—The Original Brougham (1838).
(*Science Museum, London*)

working at a very low pressure of 4 or 5 lb. per square inch, owing to the risk of explosion with the badly-made boilers of the time, it is not at all lively (Fig. 171).

It was Richard Trevithick (1771–1833) who altered all this by introducing a boiler which worked to a pressure of over 100 lb., and once this was done movement was suggested. Trevithick, who was the son of a Cornish mine manager, was born at Camborne, in Cornwall, so that during his boyhood he was to be much in touch with things mechanical. In 1797, when he was twenty-six, he had made the model of a road locomotive which can be seen at the Science Museum, London, and we illustrate this in Fig. 172. That it is only a model makes no difference to the fact that it was and is a locomotive possessing the power to move itself. True it only ran around Trevithick's table, but that does not matter; imagine what your own feelings would have been had you been Trevithick.

The next step was the completion, on Christmas Eve, 1801, of a steam carriage to run on the roads, and the Dictionary of National Biography says that this carriage

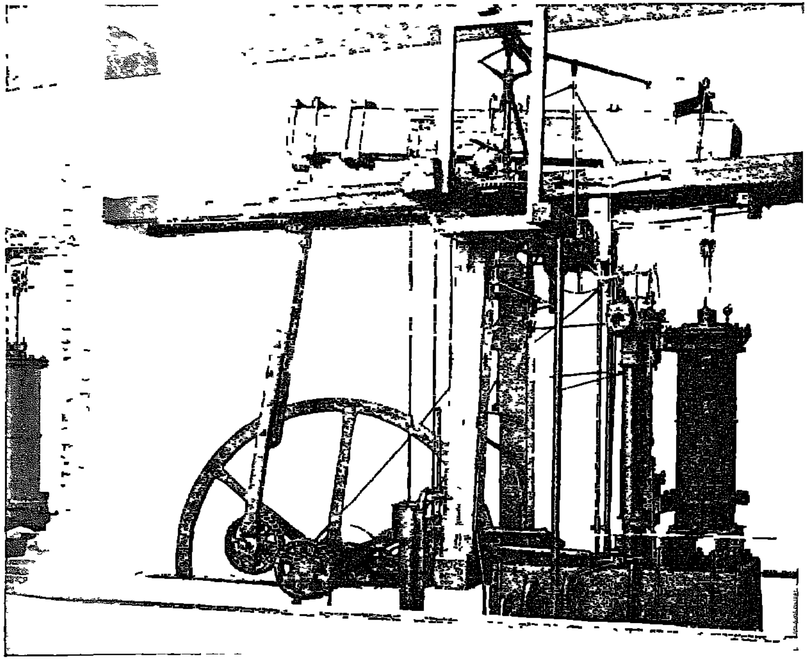

FIG 171 —Boulton and Watt's Rotative Engine (1797)

(*Science Museum, London*)

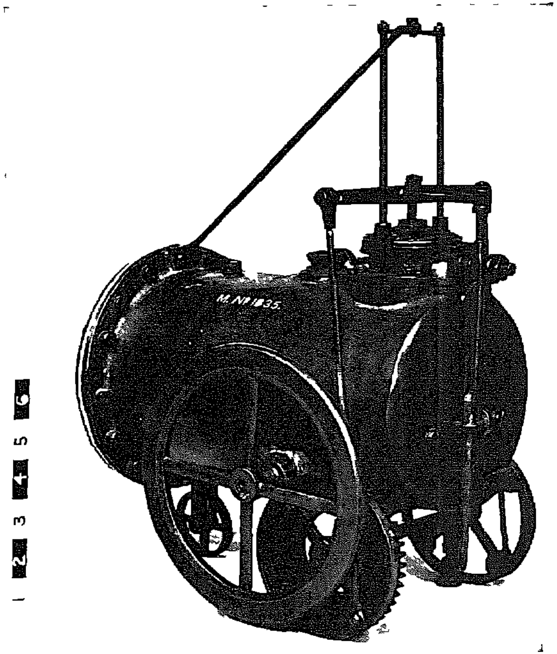

FIG 172 —Trevithick's Road Locomotive Model, *c* 1800

(*Science Museum, London*)

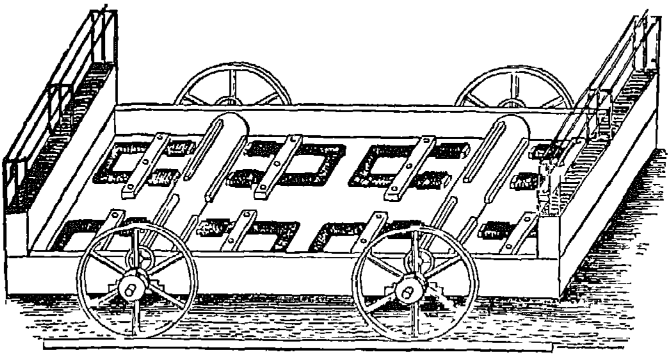

FIG 173 —Davidson's, 1842, the first to run on a railway.

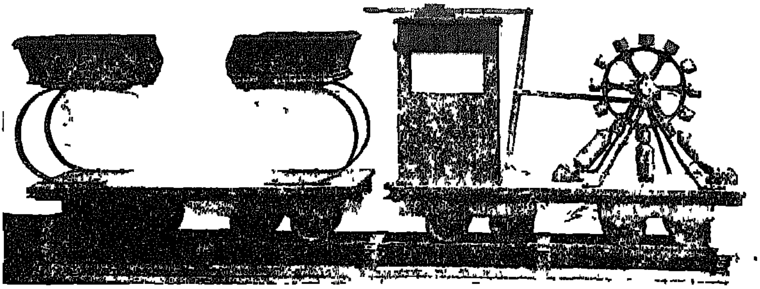

FIG 174 —Farmer's Model Electric Train, 1847, from the inventor's reconstruction for the Chicago Fair, 1893 (*see p* 219)

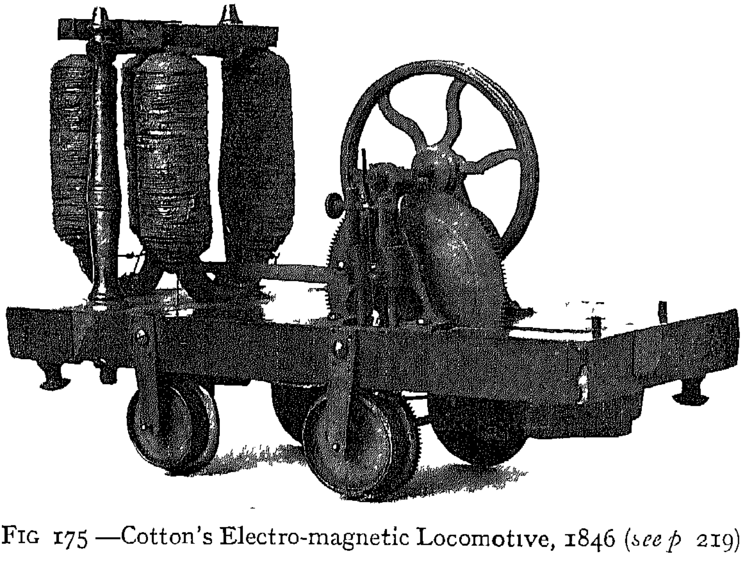

FIG 175 —Cotton's Electro-magnetic Locomotive, 1846 (*see p* 219)

Early Electro-magnetic Locomotives

conveyed the first load of passengers ever moved by the force of steam. We should say that this was rather a risky statement. Cugnot had experimented with a traction engine in 1770, and a model of his machine is preserved at the Conservatoire des Arts et Métiers, Paris. There is another model of Murdoch's locomotive in the Birmingham Art Gallery; this dates from 1781–86, and Oliver Evans's was at work in Philadelphia.

Whether these moved passengers or not we do not know, but Trevithick's did, and was known as the "Puffing Devil"; unfortunately it was burnt out while Trevithick and his friends were in an inn celebrating the success of this first run. 1803 saw another steam carriage, and then in February, 1804, Trevithick produced the first railway locomotive. This hauled 10 tons of iron and seventy men, in five waggons, at nearly five miles an hour for nine and a half miles over the rails used by the horse trams in the mines at Penydarran, near Merthyr Tydvil, South Wales.

Trevithick must have been possessed of humour, because in 1808 he brought a new locomotive to London, hired some land near Euston, put up a circular track and fenced it in, and charged 1*s*. a head for joy-rides at fifteen miles an hour (see Fig. 177).

The engine was called "Catch-me-who-can" and was backed to beat any horse running at Newmarket.

It will be well for any young Trevithick who may read these pages to take stock of the state of affairs which is revealed by the recital of achievement and dates which we have given above. Had the people had eyes to see, from the very moment at which Trevithick made his little model run round the table they might have foreseen the possibilities of his invention; had they had imagination they might have realized the enormous importance of the invention and the changes it was to make, not only in running around our little island, but in crossing the continents of the Old and New Worlds. This iron horse was destined to drive all the other horses off the road.

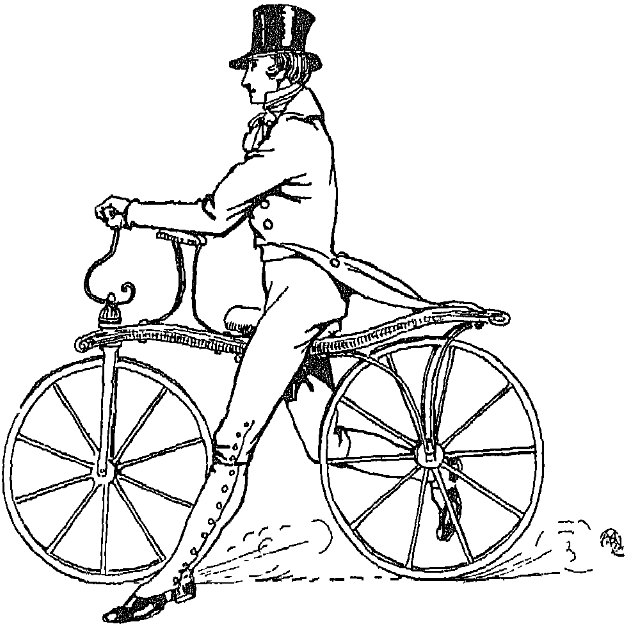

FIG. 176.—The Hobby Horse (1818)
(*Science Museum, London*)

Surveyors had to go before it, spy out the land, scheme the gradients and make ready the way. The descendants of the navvies who had made the canals had a bigger task than their forebears and followed on the trail to dig and embank, and when the rails could not be taken over the mountains they had to tunnel through them. The engineers made the bridges, the iron-founders the rails, the builders the stations. New towns were to arise, and old ones which were passed by dwindled away. Man could peddle his goods over a continually expanding area, and trade and industry were to be revolutionized. The very character of the country was altered because men lost the road sense, and towns became a congeries of houses grouped around railway stations. All this was hidden from the riders in " Catch-me-who-can."

Trevithick seems to have exercised his inventive genius as well on steam-boats, dredgers and threshers. Any

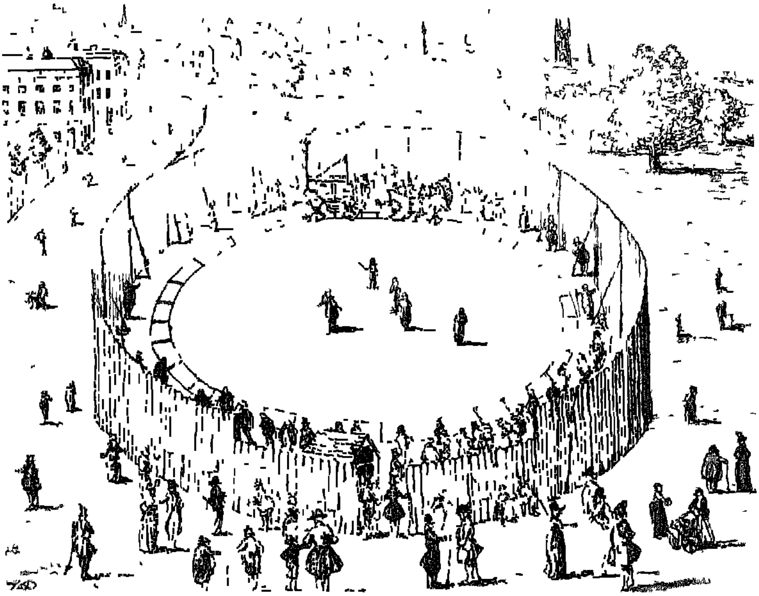

Fig 177—Trevithick's 'Catch-me-who-can' on the Site of Euston Square, London (1809)

By Thomas Rowlandson

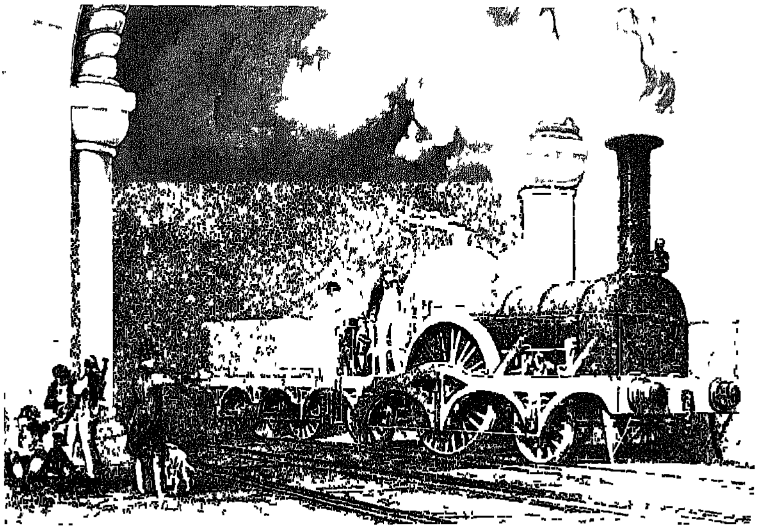

Fig 178—A G W R "single-wheeler" Locomotive, c 1845, of the earlier Broad Gauge Type, which ran (with eight wheels) till 1892

By J C Bourne

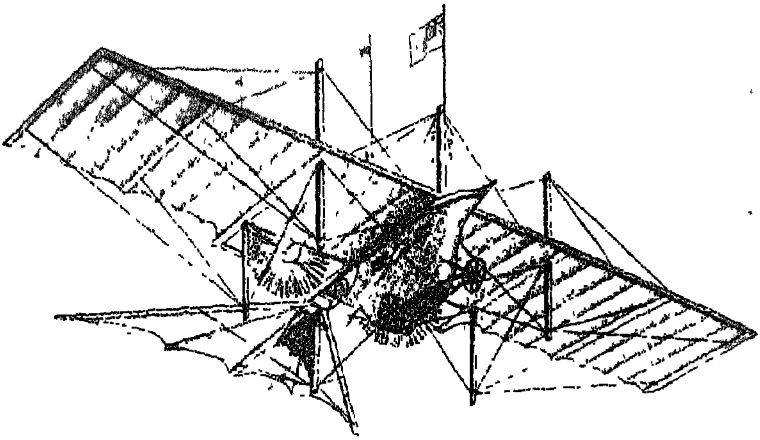

Fig. 179.—Henson's design for an 'Aerial Steam Carriage', 1842-3. The design for an aeroplane which was publicized the world over, and which led to widespread research and experiment.

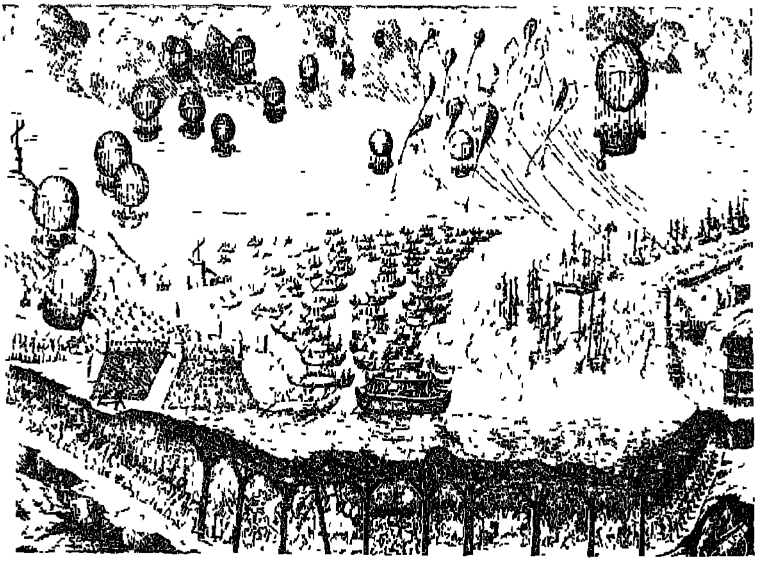

Fig. 179a.—A French dream of the invasion of England, c. 1805. The French orces invade by balloon and tunnel, and the English fly armed single-seater kites in defence.

problem attracted him, and then about 1816 he went to Peru, made a fortune there, lost it in a revolution, and came back some years later to find that others had benefited by his work. Blenkinsop and Hedley had followed in his tracks with colliery locomotives, and then George Stephenson (1781–1848) appeared on the scene. He had been appointed engine-wright at the Killingworth Colliery in 1812, and began his experiments in 1813, and completed his first engine in 1814. This work led to him being appointed, in 1822, engineer to the Stockton and Darlington Railway, which had started the year before and was the first public steam railway to be made in the world; but it was only employed for carrying goods. A new Act of Parliament was obtained in 1823, authorizing the railway to carry passengers as well, but railways as we understand them had not yet come into being. The Liverpool and Manchester Railway was authorized in 1826, and when it was approaching completion in 1829 the directors, wishing to be quite sure that they were on the right side, appointed Messrs. Rastrick and Walker to visit all existing railways and report on the respective merits of locomotives or stationary engines drawing the trains by cables! Their report was rather in favour of the latter method of traction. The directors, however, very wisely determined to have a competition, and offered a prize of £500 for the best locomotive, and this led to the Rainhill trials, nine miles from Liverpool, on October 6th, 1829, at which the "Rocket" won the prize, and the "also rans" were the "Novelty," "Sans Pareil" and others. The locomotive had at last come into its own, thirty-two years since Trevithick's little model, Fig. 172, had run round the table and settled the principles. The world went railway mad. The "Best Friend" made its first trip in the U.S.A. on January 15th, 1831.

To return to the subject of our sketch, Trevithick on his return was not able to take his place again. Whether he had lost courage or the spark of his genius had died out

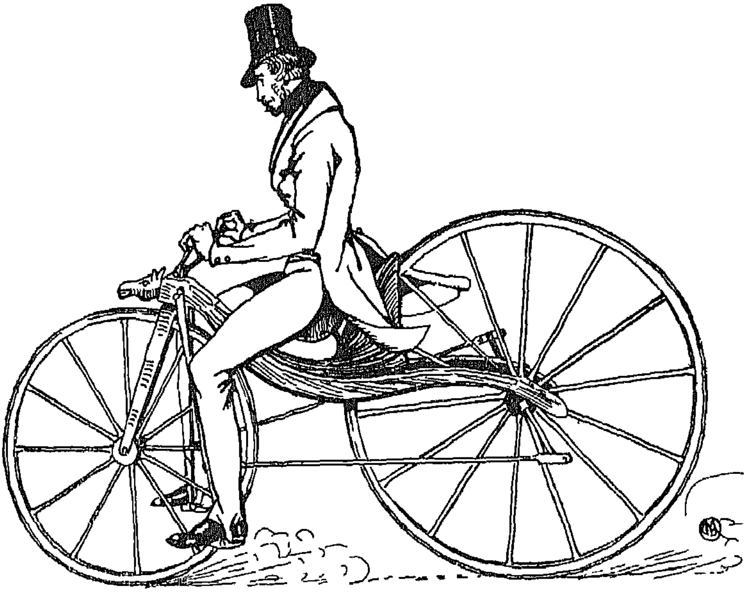

FIG. 180 —Macmillan Bicycle (1839).
(*Science Museum, London*)

we cannot say, but he died in poverty and was buried in a grave for poor persons at the parish church of Dartford, in Kent, in 1833. He does not seem to have been esteemed in his own time, but the wheel has turned full circle and in 1933 the centenary of his death was commemorated by an exhibition of his work at the Science Museum in London, and the Bishop of Rochester conducted a memorial service at the Dartford church where he lies buried. Hence our warning to young Trevithicks of to-day: it takes time to knock ideas into the heads of Englishmen; the inventors may not be esteemed, and somebody else will make the money, but the wheel turns, and in a hundred years you are honoured and bishops praise you as a famous man.

But what is still more pleasant is that the celebrations of his fellow-countrymen were forestalled by the action of two American gentlemen, F. R. Low, the President of the American Society of Mechanical Engineers, New York, and

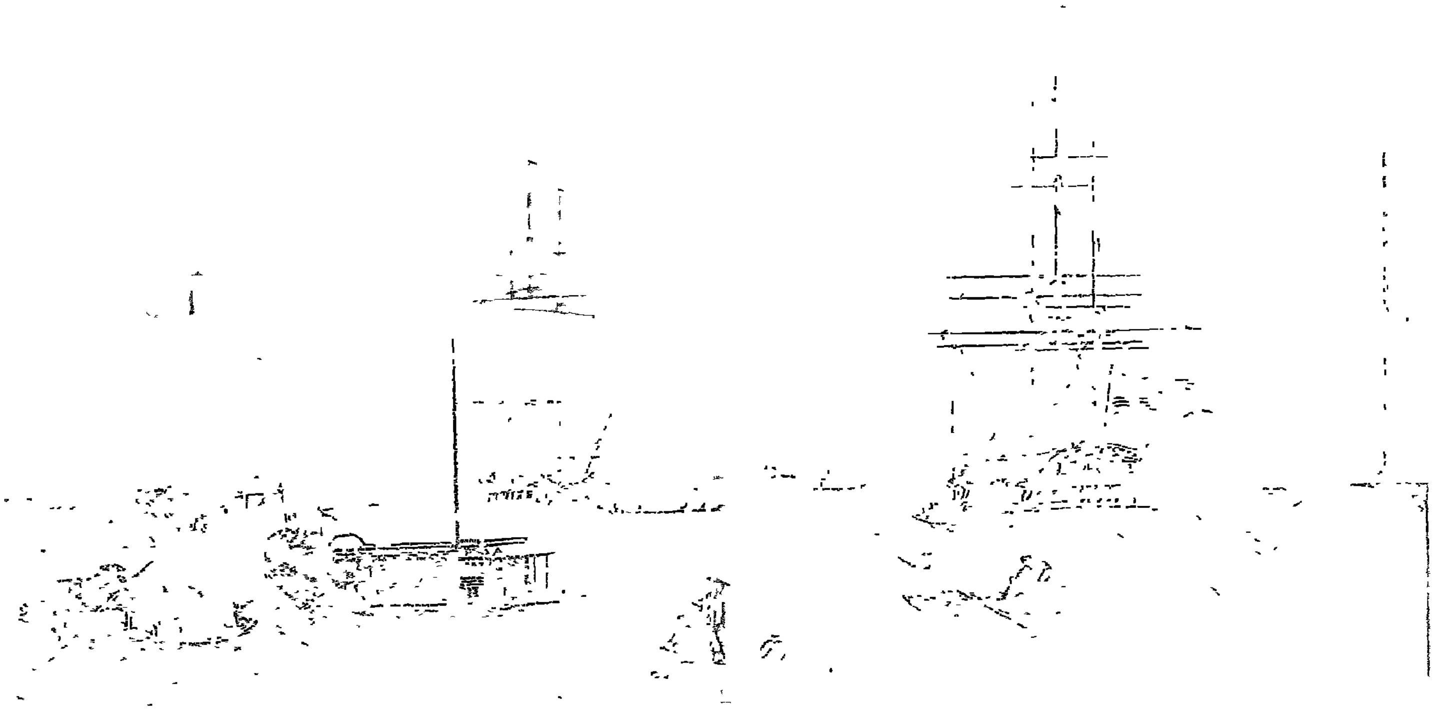

FIG 181.—View of Whampoa Canton River, China, showing on the right the East Indiaman *Waterloo*, of 1315 tons, built in 1816 and broken up in 1834

the Editor of *Power*, and R. C. Beadle, the Assistant President of International Combustion Engineering Corporation, New York, and editor of *Combustion*, who caused a tablet to be erected in the church at Dartford, setting out the facts we have given, in July, 1924.

STEAMBOATS.—While the locomotive engineers were at work others were experimenting with the application of the steam engine to water transport. The first practical steamboat seems to have been the *Charlotte Dundas*, made by Symington in 1801 for use on the Forth and Clyde Canal. In 1815 steamers appeared on the Thames. Then they began to be used for coasting and cross-Channel work, and gradually the voyages became longer. The Peninsular Steam Navigation Company was founded in 1837, and they bought the wooden paddle steamer, the *William Fawcett*, as Fig. 183, which had been built in 1829, and started running between Falmouth and Gibraltar, calling at ports between. In 1840 they extended their line to Egypt, later India and the Far East, and became the Peninsular & Oriental Steam Navigation Co

It was not till 1838 that steamers began to sail regularly across the Atlantic. The paddle steamer *Sirius* began then, and took nineteen days, and ninety-four passengers. She was 178 feet long by 25.6 feet broad by 18 feet deep.

To go back to the *William Fawcett*, the length on deck was 74.3 feet, breadth 15.1 feet, and depth 8.4 feet. In fact, she could not have been very much bigger than the "penny steamers" which used to run on the Thames when we were children. These were paddle steamboats, with a funnel so arranged that it could be lowered when going under a bridge. The steamers had their own bridges, on which the captain walked and looked very nautical. The mate threw the mooring ropes to the men on the piers, and they attended to the gangways. Below decks were the engineers and engines, all working visibly and distilling an excellent odour into the air—something compounded of water, oil and steam, which was redolent to us of the ocean. It was a wonderful trip to zigzag down the Thames from Chelsea to Greenwich—let no one say they have seen London if they have not seen it from the Thames—and then below bridges, in the Pool, were real sea-going boats with the brine dripping off them.

Now the war is over there is a service of "River Buses" with a number of other boats, so that it is possible to go by steamer again from Westminster to Greenwich, and we hope you will all do it. Other steamers will take you from Westminster up the river to Hampton Court or Richmond but no boat goes right through London, and the unknown, shadowy, but all-powerful and narrow-minded authorities refuse to allow the little steamers to go on beyond Greenwich to Barking, when it really gets interesting past the docks. Paddle steamers, however, are, with a new screw one, again running from London Bridge to Southend, Margate and Clacton.

Our penny steamers were well enough for the Thames, but we should hardly have liked to cross the Bay of Biscay in them, or for that matter the *William Fawcett*, as Fig. 183. Nevertheless, we hear that later one Thames steamer was sold to someone in the Balkans and they managed to make the voyage out to there.

The *Great Britain* was the first screw steamer to cross the Atlantic, and this she did in fifteen days in 1845. She was as well the first large ship to be built of iron. The Americans, with their magnificent inland waterways, were ahead of us in steamship design. Robert Fulton's first successful steamer, the *Clermont*, was running on the Hudson in 1807, and Stevens had preceded him with a screw-driven boat. English design, however, produced an amazing *tour de force* in the *Great Eastern*, designed by Scott Russell and Isambard K. Brunel, the famous G.W R. engineer, launched in 1858. She was nearly 700 feet long and her dimensions were not exceeded until 1899. She had six masts, and was propelled both by screw and paddle wheels; she cost £640,000 to build. She had a

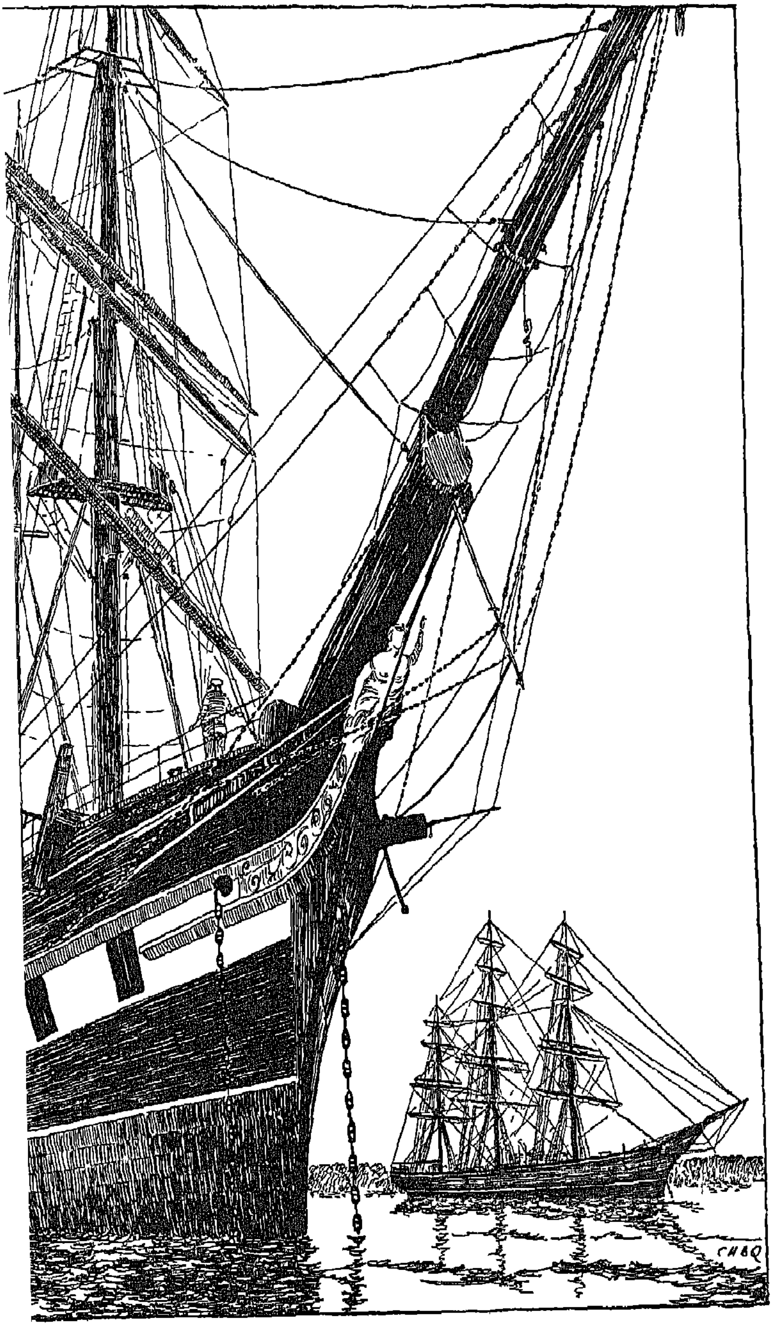

FIG. 182.—The *Cutty Sark* (1869) 921 tons, in Falmouth Harbour, from under her own Bows.

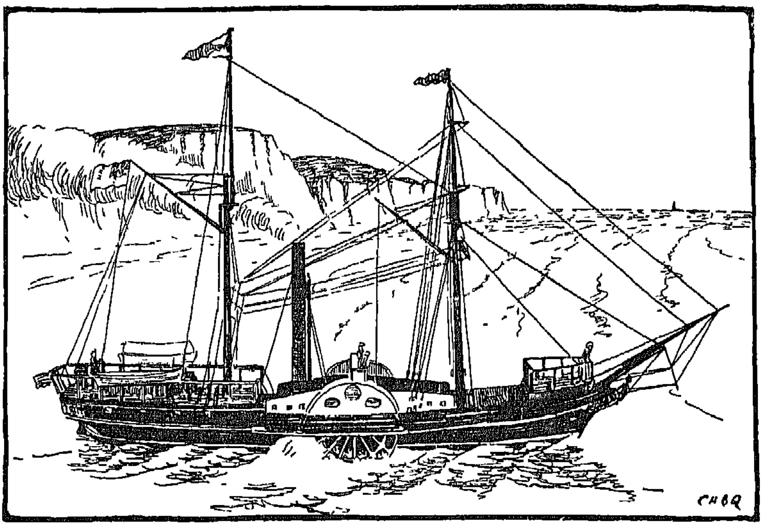

FIG. 183—The First P. & O., the *William Fawcett* (1829).
(*Model in Science Museum, London*)

record of consistent bad luck, and after helping on the Atlantic cable laying was broken up. (*V.* account in Vol. IV, E.D.T.)

SAILING SHIPS.—This heading seems a little out of place, coming after steamships. One might have imagined that immediately the steamer was invented the sailing ship would have been abandoned; but this was not the case. There was some sentiment in the contest; a sailing ship is one of the most beautiful things invented by man, and so long as it did not spell absolute ruin there were men who would send them sailing for the love of it. In the first part of the nineteenth century it was the ambition of the captain to become the owner of a ship, and then, if successful, others would be bought and a small line or fleet founded. Captain John Willis, who gave the order for building the *Cutty Sark*, as Fig. 182, came of just such stock. His father had started as a captain and built ships out of his savings, and the son, John, had sailed his father's ships until he succeeded to the business. So the salt of the sea was in his blood, and when he built the *Cutty* as late as 1869, it was as

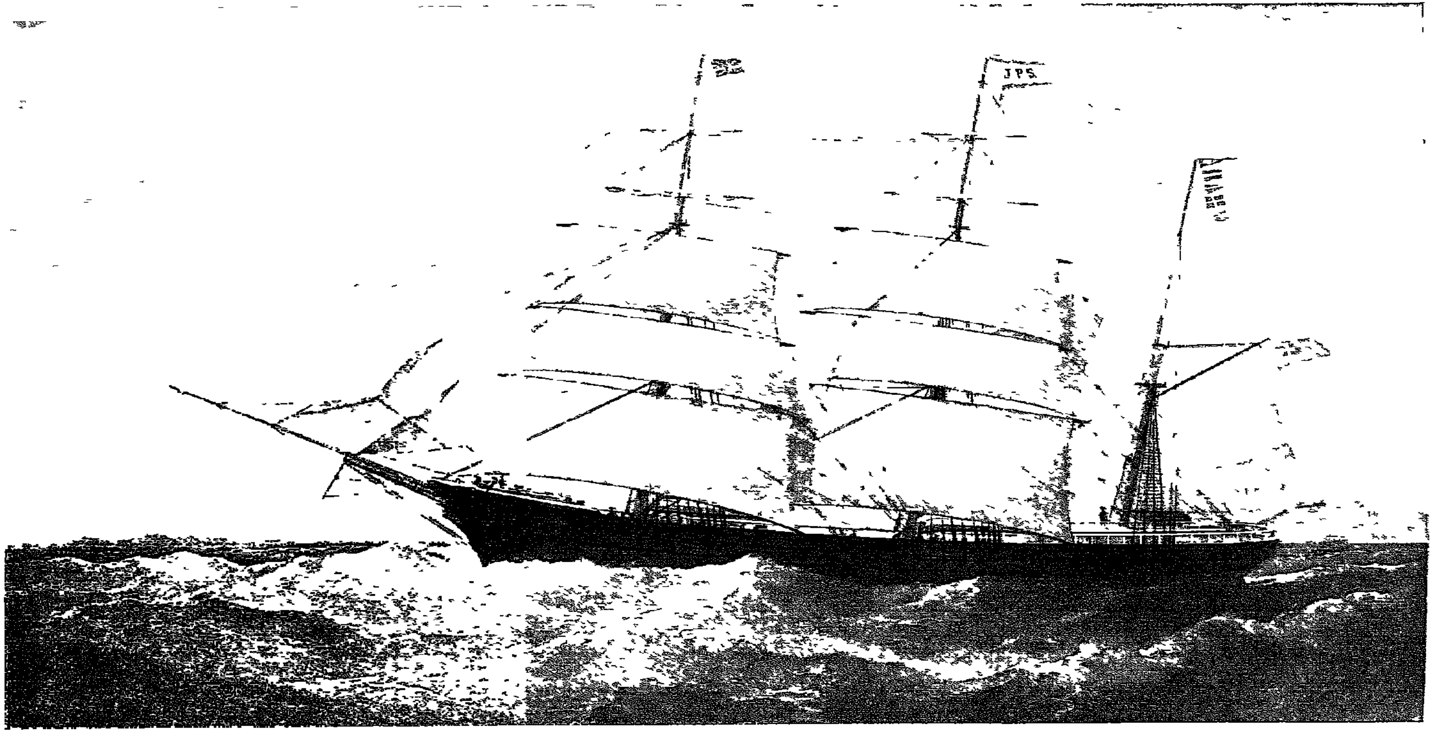

FIG 184 —The *Joseph Cunard*, a barque of 680 tons, built probably about 1830 She traded between Liverpool and New Orleans, and was making voyages to India for a Scottish firm as late as 1855

a sailing ship. The designer was Hercules Linton, who had just started ship-building with a partner called Scott. The *Cutty's* length is 212 feet 6 inches, breadth 36 feet, depth 21 feet, and she turned out to be a wonderful ship. That is one of the extraordinary things about shipbuilding —you can build two ships to the same plans and specification, and one will sail much better than the other. Given a good wind the *Cutty* could outsail most of the steamers of her day, they had to be content with eleven to twelve knots, while the *Cutty* was capable of seventeen to seventeen and a half knots, and on several occasions did 363 miles in the twenty-four hours. Such performances, however, could not have been obtained unless the man in command had been a fine seaman.

In course of time the machine won, and the *Cutty* fell on evil days and was sold to the Portuguese; they re-rigged her as a barquentine and painted false ports on her sides, as shown in the drawing of her bows in Fig. 182. Time passed, and then it happened that the *Cutty* sailed into Falmouth Harbour round about 1922, and though she did not know it Falmouth was to be for a time a haven of refuge for her. Captain Wilfred Dowman, a retired master mariner, lived in a house overlooking Falmouth Harbour, and he and Mrs. Dowman determined to buy the *Cutty* and preserve her as an example of superb ship-building. She was thoroughly overhauled and found to be as sound as when she was built in 1869, and then she was re-rigged as shown in the small drawing in Fig. 182. This, by the way, gives very little idea of the ship's beauty.

Perhaps the best thing to do would be to read Mr. Lubbock's book, "The Log of the *Cutty Sark*," to get an idea of what she did, and imagine her with all her sails set racing home under Captain Woodget's command from Sydney in sixty-seven days.

However, the *Cutty Sark* has made one more voyage—her last—to start a fresh and very individual career of usefulness, and rest for good at the mouth of the Thames, her home river in the days of her great voyages. She has now been appointed a successor to the famous old H.M S. *Worcester*, which for many years trained young officers for the merchant navy, off Greenhithe, and lately sank at her moorings. Freshly painted and fitted, and manned by *Worcester* cadets, she was towed round from Falmouth under the command of Commander Steele, V.C., R.N., the Captain-Superintendent of the *Worcester*, and very fittingly Captain Dowman's son was on board. Is it not a fitting fate for this lovely creation of man's hands and skill, and will not those who read these lines go down to admire her as she lies at her anchored rest, with the ships of all nations passing up and down ?

We include three coloured plates of sailing ships ; one is of vessels in the Canton River, China, with the East Indiaman *Waterloo* (Fig. 181) with her elaborate stern. She was of earlier type like the vessels of Nelson's day, and had a short life—let us hope it was a merry one ! The *Joseph Cunard* (Fig. 184) was a barque, that is, she had no square sails or yards on the mizzen-mast. She was only half the size of the *Waterloo* or two-thirds of *Cutty*, but crossed the Atlantic to New Orleans and later sailed to India.

The third plate (Fig. 187) we are glad to include, as it shows from a water-colour a fully-rigged tea clipper under full sail. The *Spindrift* was built on the Clyde in 1867 and wrecked two years after, in the year the *Cutty Sark* came into being. We have been able to ascertain her tonnage, which is given as 899.

It is one of the most remarkable things in the history of navigation, this rise of the clipper ships both sides of the Atlantic , at its last hour the sailing vessel attained its perfection of design, and made its fastest passages forty years after steamers started regular ocean runs.

To mention just a few other famous clippers there were the *Ariel*, *Taeping* and *Serica*, which had a famous race from China in 1866, and made the passage in ninety-nine days. Then there was the *Thermopylæ*, and *Sir Lancelot*. of 886 tons, with a crew of thirty and a canvas spread of

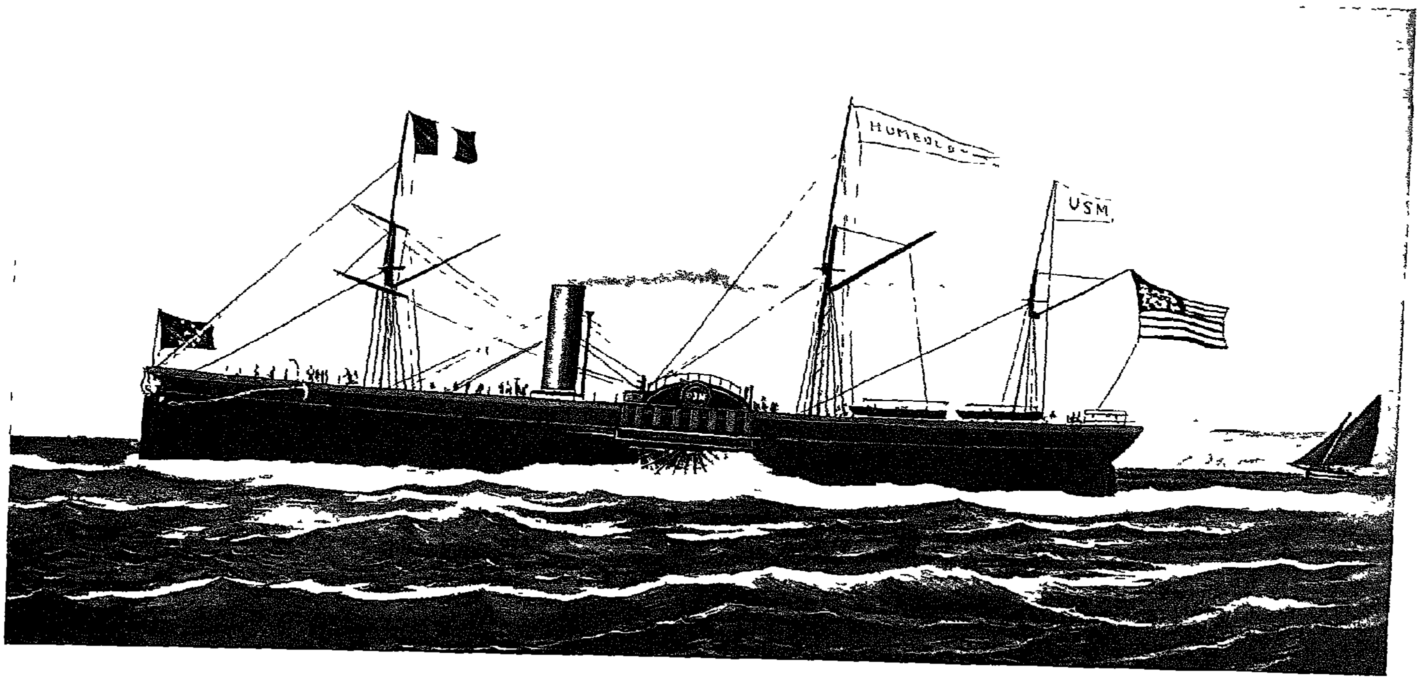

FIG 185 —The U S Mail Steamship *Humboldt*, built at New York, 1850

From Bowen's "The Sea Its History & Romance" (Halton & Co)

By Lemercier

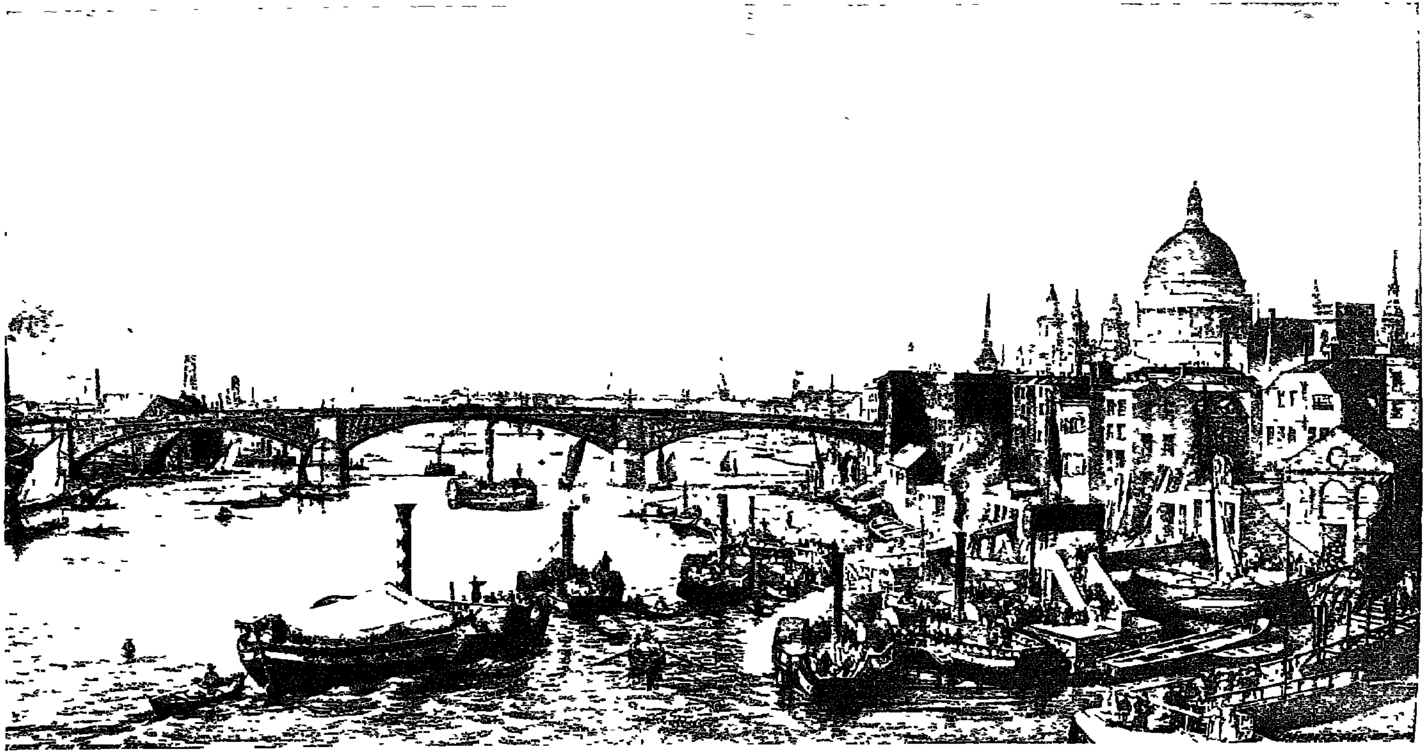

FIG 186 —Embarking in Pleasure-Steamers near Southwark Bridge (1841)

By W Parrott

over an acre. One of these ships sailed 1000 miles in three days, and the *Taeping* and her fellows averaged thirteen knots over long periods.

It was a magnificent swan-song, but it could not last. The Suez Canal was opened in the *Cutty's* birth year, and as steamers increased in size, with more reliable and speedier engines of triple expansion type, the economic scales were too heavily weighted against the windjammer, and the future of carrying traffic, cargo and passenger, passed for good to the engineer.

EMIGRATION.—There were great developments in transport during the nineteenth century because of emigration. We have seen (p. 122) how Cobbett remarked, the "sensible fellows," with a little money, who packed up their traps and went Westward Ho—400 from Norfolk in 1830, and this was going on all over the northern part of Europe.

Wherever the steam engine and industrialism went it meant a great dislocation of existing conditions and a break in the traditions of life, and the land was full of enmities and strife. Let us try and imagine the frame of mind of one of the " sensible fellows " of 1830 in Norfolk; perhaps he was a hand-loom weaver from Norwich who found his occupation gone, or a ploughwright who could no longer make ploughs like Fig. 85, or one of those men who had lost their holdings through the enclosures. Then letters began to find their way back from America, and tales were told in the inn of this great New World where land could be had for the asking, and men were free and the pursuit of happiness possible

To help us into the frame of mind of the nineteenth-century emigrants let us take an atlas to give us an idea of the size of America, which it is so easy to forget. Take a pair of compasses and place one leg round about Boston, and stretch the other across the continent to Vancouver Island; now take the compasses and place one leg on Brest, in the west of Brittany, and you will find the other spans to the east of the Caspian Sea. In this vast area were all the animal, vegetable and mineral riches which man desires, and they were to be had for the asking.

The growth of the United States can be seen by looking up the dates of the constitution of the various States. Here is a list. The government of the original thirteen on the Eastern Seaboard was ratified round about 1787-88 and 1789. Then followed Kentucky (1792), Tennessee (1796), Ohio (1803), Louisiana (1812), Indianapolis (1816), Mississippi (1817), Illinois (1818), Alabama (1819), Missouri (1821). Then Arkansas became a State in 1836, Michigan 1837, Florida and Texas 1845, Iowa 1846, Wisconsin 1848, and California 1850. That is to say that by the time of our Great Exhibition in 1851 roughly only one-half of the country was settled in States, and in the remainder the hardy pioneer and frontiersman were pushing out into the wilderness.

This peaceful penetration of a great continent is one of the miracles of history. Coming back from America on a great liner a few years ago we passed a schooner going to the fishing on the Newfoundland Banks—the merest cockle-shell of a boat—and the men waved to us, and we waved back, and thought at the time of the hardihood of the small crew, and then of all the other crews that have sailed across in every variety of ship, with all their possessions and full of hope—sensible if you like, and very courageous.

Which brings us to our next point—the influence all this movement was to have on the Old World, because it stands to reason that you cannot found a new world and expect the old one to remain the same. It is a sound mechanical law that if you exert a force in one direction, a reaction is set up in another.

Let us now follow our " sensible fellows " to America in 1830—the carpenters, wheelwrights, millwrights, smiths and bricklayers. When they arrived people were beginning to be interested in the Pacific coast as a place for settlement, and the Oregon Trail, a great unmade road 2000 miles long, from Independence to Oregon City, was being worn

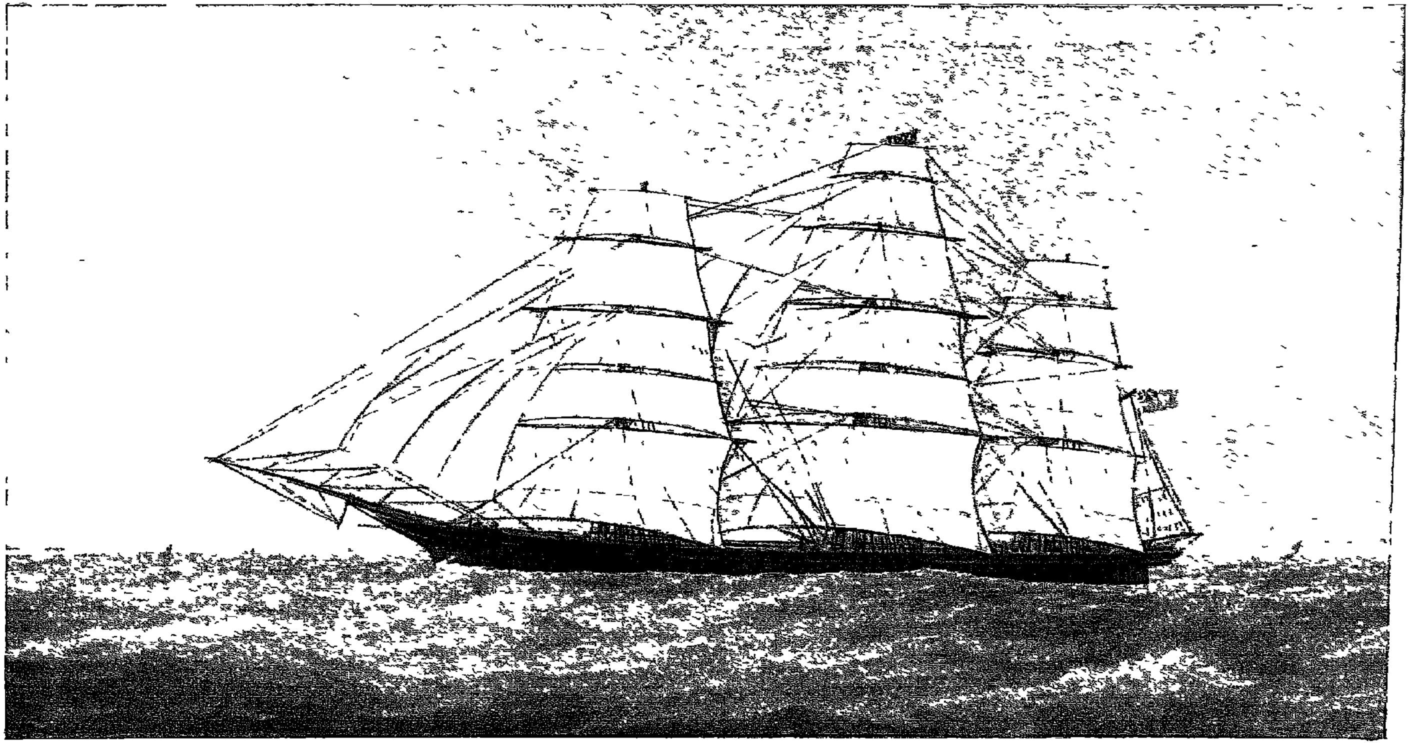

FIG 187 —The Tea Clipper *Spindrift*, built at Glasgow 1867, wrecked on Dungeness 1869

smooth by the waggon-wheels of the immigrants, and our sensible fellows, if they went this way, would have been pioneers, because thousands followed them. Nothing like it has ever been seen before—nothing like it can ever happen again. Where our friends went we cannot say, but wherever it was—the Pacific Coast or one of the frontier States—they would have found that they were in a land without any traditions. At home, before the coming of Industrialism, there had been no reason to do a thing very quickly; if you built a waggon you did it as well as you could and made it to last 100 years. Mass production would have been ridiculous in a village or country town. But when he got to the States man was pigmy when compared with the countryside. It was not a question of 100 men doing the work of 100 men, but 100 men confronted with the possibilities of employment for thousands. It was a virgin country; all you had to do was to walk in and help yourself with two hands and wish you had twenty. So all the old traditions were cast on one side and every possibility was explored for saving labour. A perfectly proper thing to do.

Then there were the women to be considered, and though we hear much of the Pilgrim Fathers, not so much is said of the Pilgrim Mothers, yet they exercised an enormous influence. No race of women ever played a greater part in history than the wives and mothers who followed the trail in the covered waggon, and bred a new race and did all the chores at the same time. Had they stayed at home and lived in such a house as we have described in Chapter II they would have found their joy in running their houses as we have described; but in a new world this was not possible, and so the ingenuity of their menfolk went to providing them with every labour-saving appliance that would ease their unremitting toil. Labour-saving was necessary in the New World, where the frontier was always ahead, but it was a fatal doctrine for the over-populated Old World, and it may even be that, now the frontier of the New World has been reached, they too may have to consider whether Quantity is better than Quality.

ELECTRICITY.—The last name that we shall mention in this book is that of Michael Faraday (1791–1867), who in 1831, by his discovery of electro-magnetic induction, brought electricity into use. Faraday was a blacksmith's son, who left school at thirteen and began work by selling newspapers. His opportunity came when, after attending lectures by Sir Humphrey Davy, he called on the lecturer with his notes, and as a result was appointed a laboratory assistant at the Royal Institution at 25*s.* a week.

There is hardly a modern development in electrical engineering which cannot be traced back to Faraday. Many men followed in his footsteps; Joseph Henry, an American, nearly anticipated Faraday's discovery. Lord Kelvin was the pioneer of submarine telegraphy, James Clerk Maxwell put the discoveries into mathematical form; Charles Wheatstone's experiments led to the electric telegraph; David Edward Hughes invented the microphone; Joseph Wilson Swan the incandescent filament lamp; and Thomas Alva Edison is another name in the brilliant band—and the end is not yet. The latest development of Faraday's discovery is the distribution of electric power by means of the Grid in England, and it may be the most important.

Through the kindness of Mr. J. H. R. Body and the Newcomen Society we give some particulars of early electro-magnetic engines, from an interesting paper read by him recently before the Society. William Sturgeon evolved the electro-magnet in 1825 and seven years later he designed a machine in which a central shaft carrying two horizontal permanent bar magnets was made to revolve between four vertical electro-magnets energised with current from a battery. A reproduction of this machine is in the Science Museum. Soon after Davenport, in America, made a rudimentary electric locomotive which is really more like an electric merry-go-round. A little later Robert Davidson, of Aberdeen, made an electric locomotive which actually ran at four miles per hour on a stretch of the Edinburgh and Glasgow railway (Fig. 173), electro-magnetic engines were also designed in America by Cotton in 1846 and Farmer in 1847 (Figs. 174, 175). All these ingenious machines failed in competition with steam from the weight and cost of the batteries which supplied their power; electric traction did not really become practicable until the invention and application of the dynamo, but these early experiments are of intense interest as precursors of the enormous present day developments in electric traction on rail and road.

Watt's steam engine gathered men together because they had to go where the power was, and so the industrial towns came into being, electric energy, cheaply distributed, may take men back to the village and the countryside.

This brings us to our CONCLUSION. What hope is there for boys and girls of fourteen to eighteen who may read this book and wish to find interesting and useful work?

Whether we like it or not, the world *to-day* is still accepting the American tradition of mass-production and labour-saving which came about owing to the conditions we described on p. 216. Some while ago we were talking to a Japanese and asked him why in his country they were abandoning their own charming ways of making things and following Western fashions. "Oh," he said, "we must have lifts and things; we must all be like America."

This is a question of primary importance. We had an extraordinarily interesting trip to America some years ago to inspect factories. We got as far west as Detroit, the home of mass production. Everybody was prosperous—dollar bills were as evident as leaves in the autumn—yet it all seemed unreal to us, this monstrous factory development, and we were happier motoring through New England and dining at the "Wayside Inn."

If mass production is to continue there are fearful dangers ahead. Carried to its logical conclusion, it means entirely automatic plants and very little work for anybody, and a dull grey world, with the " dole " for consolation.

Again, there is the argument that all these things must be accepted because of our export trade; but nowadays all the nations are sellers, not buyers. That wise old man Johnson, when he was travelling in Scotland with Boswell, told him, in 1773: " Depend upon it, this rage of trade will destroy itself. You and I shall not see it; but the time will come when there will be an end of it. Trade is like gaming. If a whole company are gamesters, play must cease; for there is nothing to be won. When all nations are traders, there is nothing to be gained by trade, and it will stop first where it is brought to the greatest perfection. Then the proprietors of land will be the great men." This prophecy has not been fulfilled; we realise that export trade is essential for our existence, and it is now being encouraged and stimulated in every way.

It may be thought by our readers that we detest machinery. This is not the case at all, we are very interested in it. It is the products of machinery which are so generally detestable. We speak with some experience, because one of the authors, when young, spent a year in a carpenter's shop where all the work was done by hand. Anybody who has spent a long summer's day rip-sawing 2-inch deals or jack-planing English oak is in the mood to accept the assistance of the machine—but it is a dangerous master. In its place the machine is a useful servant, and if work can be so organized with its aid that men can find an interest in their work, well and good. Given cheap electric power, the small tradesman of the village might come to life again and restore the balance of life there. How is this to be done?

The remedy is in the hands of our readers, who in a few years will be men and women, running the world themselves. Trade and industry cannot be changed by Acts of Parliament, but they can be stimulated and altered by Demand.

Take the case of women, who really run the world. They are the great spenders, not spendthrifts. The married woman decides what food the family shall eat, guided somewhat by her husband's grumbles; she has a distinct say in house-building, as any architect with an experience of clients' wives knows, and the woman decides what clothes she and her children will wear, and drives her husband to his tailor when he becomes too tramp-like.

Now, after the end of a second world war, the housewives are suffering from the shortage of almost all those things which used to be on sale so plentifully in the shops. These shortages are caused by the lack of the goods which we might have been making during the war, and by the loss of our overseas investments, which used to enable us to buy freely from abroad, and they can only be made good by increased production at home and by the greatest possible trade between the nations.

Still, the time will come, perhaps not till the readers of this book have grown up, when the shops are once again full of things to buy, and woman, the great spender, will be able to choose once more between goods which are shoddy and ugly (although cheap) and goods which are well-made and well-designed (although perhaps a little dearer). What an important choice that will be. On it will depend not only whether each home is individual, with furnishings of every kind which are good to look at and good in use, but also, what is even more important, it will decide the kind of work which we do to earn our living. If the choice goes in favour of goods which are sound and attractive we shall be able to do work in the making of them which will be a source of satisfaction and pride, as we all know that work may be, and not a mere day to day drudgery. In the meantime we must hope that the day will not be long delayed before such a choice again becomes possible.

N.B.—We have continued the tale in Vol. IV of this series which deals with Everyday Things from 1851 to 1914.

INDEX

The numerals indicated in black type refer to the illustrations, which are referred to under their **figure-numbers.**

Acacia tree, 113
Adam, Robert, 50, 62, 76
Agriculture, 3, 9, 11, 24, 109, 113, 116, 119, 124, 134
Ague, 85
Albert, Prince, 172
Almerico, 44
America, 214, 219
Antrim, 134
Aqueduct, **72,** 77
Arbury, "Gothick" at, 48
Arkwright, 70
Ashridge Park, **107, 108,** 149
Ayot St. Lawrence, **43-5,** 60

Back-to-back houses, **116, 118**
Bailiff, **82**
Bakewell, 22
Baking, 32
Balloons, 79, **179A**
Bank of England, **106**
Banks and Barry, 43
Barbers, 84
Barges, **74, 74A**
Bath, 88
Bath buns, 156
Baths, 88
Bay windows, 52
Bayeux tapestry, 13, 149
Bazalgette, Sir J., 105
Beckford, 151
Bed, **36, 172**
Bedford Row, 91
Belhus, 48
Bell, Adrian, 147
Bell's Reaper, **86, 87,** 126
Belton House, 40
Berkhampstead, **3,** 3, 164
"Best Friend," the, 207
Bethnal Green Museum, 197
Bicycle, **177,** 203
Blankets, 121
Bleeding, 85
Blenkinsop, 207
Bonnet, 74
Bookcase, **126**
Boston tea-party, 107
Boswell, 34, 220
Botley, 113
Boulton, 80
Boulton and Watt's rotative engine, **171**
Boxing, **143**
Bramah, 97
Bread, 32, 108
Brettingham, Matthew, 22
Brewing, 28
Bridges, **71,** 79, 80, 200
Bridgewater, Duke of, 77
Brighton, **109,** 161
Brindley, 77
Brougham, **170**
Brown, "Capability," 49
Buonaparte, 107
Burghclere, 119
Burlington, 43
Burton, Decimus, 161
Butter, 34

Calash, 73
Campbell, Colen, 43
Canals, **72, 73, 74, 74A,** 77
Candles, 37
Carding, **46**
Carlton House Terrace, 154
Carts, 9, 92, 134
Cartwright, 72
Castles, 149
"Catch-me-who-can," **178,** 205
Cattle rearing, 19, 22
Cellar dwellings, 166
Cesspools, 91
Chadwick, 169
Chairs, **121-123**
Chaises, **32A,** 78
Chambers, Sir Wm., 49
"Charlies," **142**
Chelsea Embankment, 106
Chinese design, 49
Cholera, **80**
Churches, **44, 45, 60-62**
Churn, **28**
Cisterns, **76,** 93
Clipper ships, **182, 187,** 210, 213
Closets, water, **77,** 96
Clothing, 63, 184
Coaches, **32, 32A, 32B,** 78, **162,** 198, 200

INDEX

Cobbett, 7, 19, 23, 111, 162
Coke of Holkham, 22, 46
Common Fields, 3
Cooking, 30, **133-136,** 177
Corn Law, 111
Costume, *v* Dress
Cotswolds, 5, 119
Country Life, 3, 11, 109, 116, 119, 134
Cowpox, 83
Cravats, 195
Crinoline, 194
Criminals, *v* Prisoners
Crompton, 71
Cruzie, **30**
Cugnot, 205
Cutty Sark, **182,** 210

Dance, George, 52
Dancing, **146, 147, 160**
Dartford, 208
Davidson, Robert, 218
Dentistry, 85
Diary, Woodforde, 9, 24, 73, 83
Dibbling, **17,** 25
Digesters, 31
Diseases, 9, 84
Diviners, 90
" Doctor's Visit," the, **130**
Dog madness, 86
Dole, 110
Doultons, 91
Drainage systems, **78, 79,** 100
Drains, 87, 91, 97
Dress, **36, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 65A, 66,** 73–6, **150, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158,** 191
Drills, 12, **15, 16**
Dust, 200
Dwellings, workmen's, **124, 125,** 174

Electric traction, **173-5,** 218
Electricity, 217
Electro-magnetic engines, **174,** 218
Emigration, 122, 213
Empire State Building, 102
Enclosure Acts, 20, 24, 110
Engineering, 77
Evelyn, John, 31
Executions, 58
Exhibition, Great, 152, 174

Factory System, 80
Factoryscape, **117**
Fairs, 120
Falmouth, 212
Family Party, **120**
Faraday, 217
Fares, coach, 78
" Farmers' Glory," 124
Farming, 3, **16A,** 20, 25, 109
Farnham, 111
Fencing, **144**
Fever, 55, 84
Fields, 3
Fiennes, Celia, 7, 8, 40, 77, 89, 198
Fire of London, 40
Fireplaces, 48, 52
Fish diet, 28
Fishing, **145**
Flail, 130
Flaxman, 51
Fleet, the, 91
Flogging, 9, 113
Flying, **179**
Fogs, 180
Folding Sheep, 20
Fonthill, 151
Food, 27, 28
Foundry, 124
Four-course system, 21
Furniture, **121-123, 126-132**

Game Laws, 19
Gaol Fever, 53, 84
Garden Cities, 167
Garderobes, 89
Gas, 182
Gates, **103, 104**
Geese, 116
Geffrye museum, 197
Gibbs, James, 46
Girdle, **27**
Glove-making, 121
Gothic Revival, 148, 154
" Gothick," 49, 151
" Great Britain," the, 210
" Great Eastern," the, 210
Grecian Dress, 74
Greek style, building in, 60
Grid lines, 183

Hairdressing, 193
Hampton Court, 40
Hansom, 202
Hardy, Thomas, 143
Hargreaves, **55,** 65, 68
Harington, Sir John, 96
Harvest, 26
Hats, 193

INDEX

Haymakers, 120
Healds, 66
Heating, steam, 158
Hedley, 207
Hellyer, Stevens, 96
Herbert, A P., 210
Hexham, 120
Hobby-horse, **176**, 203
Hoeing, 12
Holkham, 22, **34**, **36A**, 46
Holland, Henry, 52
Hot plates, 178
Hours, working, 104
Houses, **33**, **112**, **113**, **114**, 158, 165
Humboldt, U.S steamship, **185**
Hunter, John, 84
Hydrophobia, 86

Ice houses, **137**, 181
Icknield Way, 78
Idle-back, **24**
Implement, **8**
Industrial Revolution, 2, 83
Industrial Towns, 164
Industrialism, 10, 213
Inns, 79, **169**, 201
Interiors, **36A**, B, 43, 46, **120**, 183, 197
Inoculation, 83

Jacquard apparatus, **47A**, **148**, 184
Jam, 33
Jefferson, 107, 113
Jenner, 83
Jesty, 84
Johnson, Samuel, 220
Jones, Inigo, 39
Joseph Cunard barque, 182, **184**
Journeys, 78, 201

Kay, John, 63, 68
Kedleston, 46
Kent, W., 44
Kew Gardens, 112
Kettle, **24**, 31
Kitchen, **20**, **21**
Knee-breeches, 195

Labourers, farm, 115, 120
Labour-saving, 217
Lamps, 37
Langley, Batty, 48
Lark story, 119
" Leather-legged chap," **83**
Leverton, 51
Lighting, 37, 182
Linen, 121
Locomotives, electric, **173–5**, 218
Locomotives, steam, **165**, **166**, **172**, **178**, **179**, 203
Locust tree, 113
Lodges, Hyde Park, **114**
London, 7
London Museum, 197
Looms, **47**, **49**, 63, 66, 72, **138**, **141**, **149**, 184

Macadam, 198
Machinery, 220
Mackintosh, 195
Macmillan, 203
Mail coach, **32**, **162**
Manufactures, 8
Markets, 4, 81, **169**
Mass production, 217
McCormick, Cyrus, 127
Mead, 29
Meals, 28
Meat-eating, 28
Measure, **29**
Medicine, 83
Menai Bridge, 200
Mereworth, 44
Merry-go-round, **159**
Milkman, **81**
Mills, steam, 80, 131
Milton House, Berkshire, 48
Miners, 123
Mistley Church, Essex, 62, 76
Monmouth St , Soho, **79A**
Moustaches, 196
Mowers, 120

Nash, 154
Navvies, 78
Needles, 188
Newgate, **38**, **39**, **40**, **42**, 52, 113
New River Co , 93
North Shields, 123
" North Star," **166**
Northumberland Avenue, 106

Omnibus, **167**, **168**, 201
Organ, **14**
Oseberg, 135
Osterley House, 96
Ovens, **26**, 32

Pack-horses, 7, 77
Paddle steamers, **186**, 209

INDEX

Palladian style, **33C–F**, **36A**, 43–6
Pan, Frying, **25**
Papier maché, **128**, **132**, 175
Parasols, 193
Parliament Street (1829), **105**
Pasteur, 86
Pedlar, **16B**
Pavilion, Brighton, **1**, **80A**, **80B**, **108**, **115**; kitchen, **133**, 178
" Pedestrian Curricle," 203
" Peter Porcupine," 112
Piano, **128**, **131**
Picking stick, 188
Pigs, 36
Pilgrim Fathers, 214, Mothers, 214
Planning, 164
Ploughing, 6, 13, 25
Ploughs, **10**, **11**, **12**, **13**, **85**, **100**, 124
Plumbers, 101, 104
Poke bonnets, 193
Poor Laws, 171
Port wine, 29, 85
Post chaise, **32A**
Power, *v* Steam, Loom, 72, **138**, **141**, **149**, 185
Prices, 28, 109, 120, 145
Prisoners, 55, 57, 58
Prisons, 53
Puddings, 33
Pugins, the, 151
Pumps, 93
Punishment, 9, 59
Putney Bridge, 106

Quadrille, **147**

Railways, 123, 203, 205
Rainhill Trials, 207
Ranges, 31, **133–6**, 179
Ransome, 124
Rattle, **5**
Reaping, **86**, **87**, **88**, 126
" Red Lion," Greenwich, **169**
Red Lion Square, 91, 93
Reed, 186
Refrigeration, 181
Regency style, **36B**, **80A**, **80B**, 112–4, 158, 162
Regent, the, 154, 161
Regent Street, 156
Rents, 27
Repton, 161
Revett, N, architect, 60–2
Riding dress, **157**
Roads, 6, 78, 198
" Rocket, The," 207
Rolling, **100**
Rooms, **119**, **120**, **130**
Rotation Club, 27
Rotten boroughs, 114
Rumford, Count, 181
" Rural Rides," 111

Sailing ships, **181–4**, **187**, 210
St Pancras Church, 152
Salisbury Cathedral, 149
Sanitation, 53, 87
Saucepan, 33
Scoop, **7**
Screw steamers, 210
Scurvy, 84
Scythes, 129
Sea bathing, 86
" Seed Time," 119
Serge trade, 81
Sessions House, **41**
Sewage disposal, 89
Sewers, 91
Sewing machine, **139**, 188
Shaw, Norman, 101, 152
Shed, 67
Shillibeer's omnibus, **168**, 201
Shoes, 74, 194
Shops, **30A**, **30B**, **110**, **111**
Shuttles, **52**, **53**, **54**, 68
Sickles, **18**, 26
Silchester, 1
Singer, I M, 191
" Sirius," the, 209
Skansen, 145
Skating, **65A**
Skim milk, 36
Skirts, 194
Slide car, 134
Slums, **80C**, 83, 104, **116**, 165
Small-pox, 83, 172
Smelting, 80
Smith, **4**
Smithfield Horse Show, **161**
Snuffers, 37
Soane, 156
Socrates, 113
Souse, 36
Sowing, 11, **84**, **100**
Spindrift, clipper, **187**, 214
Spinning, **48**, **50**, **51**, **55**, **56**, **57**, **140**
Spinning jenny, **51**, **55**, 65, 69
Spinning machine, **48**, **56**
Spinning wheel, 65

Squire and parson, 38
Stage-coaches, **32, 32B**
Staircases, **35, 37,** 43, 46
Steamboats, 123, **185, 186,** 209
Steam coaches, **163, 164,** 202, 205
Steam engine, 82
Steam omnibus, **163, 167**
Steam power, 80
Stephenson, George, 207
Stoves, 31
Strand, the, 7
Straw plaiting, 120
Strawberry Hill, **37,** 48
Street, A G , 147
Stuart, " Athenian," 59
Suburbs, **22**
Surgeons, 84
Sweeps, 34

Table, **126**
Table-ware, 29
Tailings, 131
Tailor, **151**
Taxes, 85, 114
Tea, 29
Telford, 198
Textiles, pre-factory, 8
Threshing, 27, **89, 90,** 120, 129
Tijou, Jean, 40
Tillage, 11
Timber carriage, **98,** 146
Timber truck, **99,** 146
Tips, 28, 30
Tithes, 27
" Tom Brown's Schooldays," 201
Town-planning, 82, 164
Towns, 3, **101, 102,** 164, 183
Townshend, 21
Traffic, **105**
Trains, **165, 166, 180**
Trams, 205
Transport, 77, 134, 198
Traps, drain, 97
Travelling, 7, 78, 198
Trenchers, **19,** 29
Trevithick, 204
Trevithick's model, **172**
Trough, **6**
Trousers, 196
Truck System, 123
Tull, Jethro, 3, 10, 20, 116
Tumbrils, **92, 93**
Turnips, 20, 26
Turnpikes, 122, 198
Turnspit, **20, 23**

Typhoid, 101
Typhus, 85

Vaccination, 83
Vails, 28, 30
Valve closets, **77,** 96
Valves, ball, 93
Vehicles (*v.* coaches, omnibus, steam, etc.), 78, 198
Viaduct, **74**
Victoria Embankment, 106
Viking ship, 135
Village amusements, **159, 160**
Villas, **112**

Wages, 25, 30, 109, 120, 123
Waggons, **31, 92, 94, 95, 96,** 135, **163**
Waistline, 193
Wallpapers, 50
Walpole, Horace, 148
Warp, 66
Washing, 33
Washington, George, 23
Waste or Common, 4
Water frames, 70
Water mills, 120
Water pipes, 93
Water supply, 90, 92, 166
" Waterloo," East Indiaman, **181**
Watt, James, 10, 80, 203
Weaving, **47, 49,** 63, 66, **149,** 184
Wedgwood, 51
Well winch, **75**
Wells, 92
Westminster, 104
Wheat, 27, 109, 119
Wheels, 136
Wheelwright, **97,** 136
Whiskers, 196
" William Fawcett," the, **183**
Windmills, 132
Window tax, 85
Winnowing, **91,** 130
Witney, 121
Woodforde Diary, 9, 24, 73, 83, 109
Woodforde, James, 24, 27, 78, 109
Woodforde, Nancy, 29, 33
Woodget, Capt , 212
Woodlands, 116
Woodwork, 43
Wren, 40
Wyatt, James, 149

Young, Arthur, 23, 25, 120